पात्र परिचय

छः महीने हो गए हैं मुझे घर से आए हुए। पिछली बार जब गया था तो हर चीज़ को अपने हिसाब से ब्यवस्थित करके ही आया था। कभी कभी मन में ख़याल आता है कि काश मैं कोई सुपर हीरो होता तो कितना अच्छा होता। हर नामुमकिन चीज़ को पल भर में मुमकिन बना देता मगर ये तो मन के सिर्फ खयाल हैं जिनका वास्तविकता से दूर दूर तक कोई नाता नहीं। पिछले दो सालों में इतना कुछ हो गया है कि सोचता हूं तो डर लगता है। मैं वो सब याद नहीं करना चाहता मगर यादों पर मेरा कोई ज़ोर नहीं।

मॉ ने फोन किया था, कह रही थी जल्दी आ जाऊॅ उसके पास। बहुत रो रही थी वह, वैसा ही हाल मेरी छोटी बहेन का भी था। दोनो ही मेरे लिए मेरी जान थी। एक दिल थी तो एक मेरी धड़कन। बात ज़रा गम्भीर थी इस लिए मजबूरन मुझे छुट्टी लेकर आना ही पड़ रहा है। इस वक्त मैं ट्रेन में हूॅ। बड़ी मुश्किल से तत्काल का रिज़र्वेशन टिकट मिला था। सफ़र काफी लम्बा है पर ये सफर कट ही जाएगा किसी तरह।

ट्रेन में खिडकी के पास वाली सीट पर बैठा मैं खिड़की के बाहर का नज़ारा कर रहा था। काम की थकान थी और मैं सीट पर लेट कर आराम भी करना चाहता था, इस लिए ऊपर वाले बर्थ के भाई साहब से हाथ जोड़ कर कहा कि आप मेरी जगह आ जाइए। भला आदमी था वह तुरंत ही ऊपर के बर्थ से उतर कर मेरी जगह खिड़की के पास बड़े आराम से बैठ गया। मैं भी जल्दी से उसकी जगह ये सोच कर बैठ गया कि वो भाई साहब मेरी जगह नीचे बैठने से कहीं इंकार न कर दे।

पूरी सीट पर लेटने का मज़ा ही कुछ अलग होता है। बड़ा सुकून सा लगा और मैंने अपनी आंखें बंद कर ली। आॅख बंद करते ही बंद आॅखों के सामने वही सब दिखना शुरू हो गया जो न देखना मेरे लिए दुनियां का सबसे कठिन कार्य था। इन कुछ सालों में और कुछ दिखना मानो मेरे लिए कोई ख़्वाब सा हो गया था। इन बंद आॅखों के सामने जैसे कोई फीचर फिल्म शुरू से चालू हो जाती है।

चलिए इन सब बातों को छोंड़िए अब मैं आप सबको अपनी बंद आॅखों में चल रही फिल्म का आॅखों देखा हाल बताता हूॅ।

मेरा नाम विक्रम है, विक्रम सिंह भाटी। अच्छे परिवार से था इस लिए किसी चीज़ का अभाव नहीं था। कद काठी किसी भी एंगल से छः फीट से कम नहीं है। मेरा जिस्म गोरा है तथा नियमित कसरत करने के प्रभाव से एक दम आकर्षक व बलिस्ठ है। मैंने जूड़ो कराटे एवं मार्शल आर्ट्स में ब्लैक बैल्ट भी हासिल किया है। ये मेरा शौक था इसी लिए ये सब मैंने सीखा भी था मगर मेरे घर में इसके बारे में कोई नहीं जानता और न ही कभी मैंने उन्हें बताया।

मेरा परिवार काफी बड़ा है, जिसमें दादा दादी, माता पिता बहेन, चाचा चाची, बुआ फूफा, नाना नानी, मामा मामी तथा इन सबके लड़के लड़कियॉ आदि।

कहने को तो मैं इतने बड़े परिवार का हिस्सा हूं मगर वास्तव में ऐसा नहीं है। ख़ैर कहानी को आगे बढ़ाने से पहले आप सबको मैं अपने पूरे खानदान वालों का परिचय दे दूँ।

मेरे दादा दादी का परिवार.....

देवेंद्र सिंह भाटी *(* दादा६ ७ *)* एवं सावित्री सिंह भाटी *(* दादी६ ० *)*

१. सत्यम सिंह भाटी *(* दादा दादी के बड़े बेट े *) (* ५ ० *)*

२. शिवम सिंह भाटी *(* दादा दादी के दूसरे बेट े *) (* ४ ५ *)*

३. सुंदर सिंह भाटी *(* दादा दादी के तीसरे बेट े *) (* ४ ० *)*

४. सीता सिंह भाटी *(* दादा दादी की बड़ी बेट ी *) (* ३ ५ *)*

५. गीता सिंह भाटी *(* दादा दादी की सबसे छोटी बेट ी *) (* २ ८ *)*

१ *,* सत्य म सिंह भाट ी का परिवा र .....

सत्यम सिंह भाटी *(*मेरे बड़े पापा*)*

सोनिया सिंह भाटी *(* बड़े पापा की पत्न ी *)*

● साक्षी सिंह भाटी *(* बड़ी बेट ी *)*

● मानुषी सिंह भाटी *(* दूसरी बेट ी *)*

● जयदीप सिंह भाटी *(* बेट ा *)*

२ *,* शिव म सिंह भाट ी का परिवा र ....

शिवम सिंह भाटी *(*मेरे पापा*)*

रेणुका सिंह भाटी *(* मेरी मा ॅ *)*

● विक्रम सिंह भाटी *(* विक्र म *)....* *(* मै ं *)*

● निशा सिंह भाटी *(* मेरी छोटी बहे न *)*

३ *,* सुंद र सिंह भाट ी का परिवा र ....

सुंदर सिंह भाटी *(*मेरे चाचा*)*

अपर्णा सिंह भाटी *(* मेरी चाच ी *)*

● सृष्टि सिंह भाटी *(* मेरे चाचा चाची की बेट ी *)*

● रणदीप सिंह भाटी *(* मेरे चाचा का बेटा जो दिमाग से डिस्टर्ब ह ै *)*

४ *,* सीत ा सिंह भाट ी का परिवा र *.....*

सीता सिंह भाटी *(*मेरी बड़ी बुआ*)* जो कि शादी के बाद उनका सर नेम बदल गया। अब वो सीता सिंह हैं।

* रमेश सिंह *(* सीता बुआ के पति और मेरे फूफा ज ी *)*

● अक्षय सिंह *(* सीता बुआ का बेट ा *)*

● आरुषि सिंह *(* सीता बुआ की बेट ी *)*

५ *,* गीत ा सिंह भाट ी *(* मेरी छोटी बुआ *)* जो शादी के बाद अब गीत ा सिंह हैं। इनकी शादी अभी दो साल पहले हुई है। अभी तक कोई औलाद नहीं है इनके। गीत ा बुआ के पति का नाम अम र सिंह है।

तो ये था मेरे खानदान वालों का परिचय। मेरे नाना नानी लोगों का परिचय कहानी में आगे दूंगा जहां इन लोगों का जिक्र आएगा।

मेरे दादा जी के पास बहुत सी पुस्तैनी ज़मीन जायदाद थी। दादा जी खुद भी दो भाई थे। दादा जी अपने पिता के दो बेटों में बड़े बेटे थे। उनके दूसरे भाई के बारे में किसी को कुछ भी पता नहीं। दादा जी बताया करते थे कि उनका छोटा भाई राजेंद्र सिंह भाटी जब २० वर्ष का था तभी एक दिन घर से कहीं चला गया था। पहले सबने इस पर ज्यादा सोच विचार नहीं किया किन्तु जब वह एक हप्ते के बाद भी वापस घर नहीं आया तो सबने उन्हें ढूँढ़ना शुरू किया। ये ढूँढ़ने का सिलसिला लगभग दस वर्षों तक जारी रहा मगर उनका कभी कुछ पता न चला। किसी को ये भी पता न चल सका कि राजेंद्र सिंह आख़िर किस वजह से घर छोंड़ कर चला गया है? उनका आज तक कुछ पता न चल सका था। सबने उनके वापस आने की उम्मीद छोंड़ दी। वो एक याद बन कर रह गए सबके लिए।

दादा जी उस जायदाद के अकेले हक़दार रह गए थे। समय गुज़रता गया और जब मेरे दादा जी के बेटे पढ़ लिख कर बड़े हुए तो सबने अपना अपना काम भी संभाल लिया। बड़े पापा पढ़ने में बहुत तेज़ थे उन्होंने वकालत की पढ़ाई पूरी की और सरकारी वकील बन गए। मेरे पिता जी पढ़ने लिखने में हमेशा ही कमज़ोर थे, उनका पढ़ाई में कभी मन ही नहीं लगता था। इस लिए उन्होंने पढ़ाई छोंड़ दी और घर में रह कर इतनी बड़ी जमीन जायदाद को अकेले ही संभालने लगे। छोटे चाचा जी बड़े पापा की तरह तो नहीं थे किन्तु पढ़ लिख कर वो भी सरकारी स्कूल में अध्यापक हो गए।

उस समय गॉव में शिक्षा का बहुत ज्यादा क्रेज नहीं था। किन्तु इतना कुछ जो हुआ वो सब दादा जी के चलते हुआ था। आगे चल कर सबकी शादियां भी हो गई। बड़े पापा सरकारी वकील थे वो शहर में ही रहते थे, और शहर में ही उन्हें एक लड़की पसंद आ गई जिससे उन्होंने शादी कर ली। हलॉकि बड़े पापा के इस तरह शादी कर लेने से दादा जी बहुत नाराज

हुए थे। किन्तु बड़े पापा ने उन्हें अपनी बातों से मना लिया था।

छोटे चाचा जी ने भी वही किया था यानि अपनी पसंद की लड़की से शादी। दादा जी उनसे भी नाराज हुए किन्तु फिर उन्होंने कुछ नहीं कहा। चाचा जी से पहले मेरे पिता जी ने दादा जी की पसंद की लड़की से शादी की। मेरे पिता पढ़े लिखे भले ही नहीं थे लेकिन मेहनती बहुत थे। वो अकेले ही सारी खेती बाड़ी का काम करते थे और इतना ज्यादा ज़मीनों से अनाज की पैदावार होती कि जब उसे शहर ले जा कर बेचते तो उस समय में भी हज़ारो लाखों का मुनाफ़ा होता था।

मेरे पिता जी बहुत ही संतोषी स्वभाव वाले इंसान थे। सबको ले कर चलने वाले व्यक्ति थे, सब कहते कि शिवम बिलकुल अपने बाप की तरह ही है। मेरी मॉ एक बहुत ही सुन्दर लेकिन साधारण सी महिला थीं। वो खुद भी पढ़ी लिखी नहीं थी लेकिन समझदार बहुत थी। मेरे माता पिता के बीच आपस में बड़ा प्रेम था। बड़े पापा बड़े ही लालची और मक्कार टाईप के इंसान थे। वो हर चीज़ में सिर्फ़ अपना फायदा सोचते थे। जबकि छोटे चाचा ऐसे नहीं थे। वो ज्यादा किसी से कोई मतलब नहीं रखते थे। अपने से बड़ों की इज्ज़त करते थे। लेकिन ये भी था कि अगर कोई किसी बात के लिए उनका कान भर दे तो वो उस बात को ही सच मान लेते थे।

बड़े पापा सरकारी वकील तो थे लेकिन उस समय उन्हें इससे ज्यादा आमदनी नहीं हो पाती थी। वो चाहते थे कि उनके पास ढेर सारा पैसा हो और तरह तरह का ऐशो आराम हो। लेकिन ये सब मिलना इतना आसान न था। दिन रात उनका दिमाग इन्हीं सब चीज़ों में लगा रहता था। एक दिन किसी ने उन्हें खुद का बिजनेस शुरू करने की सलाह दी। लेकिन बिजनेस शुरू करने के लिए सबसे पहले ढेर सारा पैसा भी चाहिए था। जिस ने उन्हें खुद का बिजनेस शुरू करने की सलाह दी थी उसने उन्हें बिजनेस के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण चीज़ें भी बताई थी।

बड़े पापा के दिमाग में खुद का बिजनेस शुरू करने का जैसे भूत सवार हो गया था। वो रात दिन इसी के बारे में सोचते। एक रात उन्होंने इस बारे में अपनी बीवी सोनिया को भी बताया। बड़ी मां ये जान कर बड़ा खुश हुईं। उन्होंने बड़े पापा को इसके लिए तरीका भी बताया। तरीका ये था कि बड़े पापा को खुद का बिजनेस शुरू करने के लिए दादा जी से पैसा मॉगना चाहिए। दादा जी के पास उस समय पैसा ही पैसा हो गया था ये अलग बात है कि वो पैसा मेरे पिता जी की जी तोड़ मेहनत का नतीजा था।

अपनी बीवी की ये बात सुन कर बड़े पापा का दिमाग दौड़ने लगा। फिर क्या था दूसरे ही दिन वो शहर से गॉव दादा जी के पास पहुंच गए और दादा जी से इस बारे में बात की। दादा जी उनकी बात सुन कर नाराज भी हुए और पैसा देने से इंकार भी किया। उन्होंने कहा कि तुमने अपनी नौकरी से आज तक हमें कितना रुपया ला कर दिया है? हमने तुम्हें पढ़ाया लिखाया और इस काबिल बनाया कि आज तुम शहर में एक सरकारी वकील बन गए तथा अपनी मर्ज़ी से शादी भी कर ली। हमने कुछ नहीं कहा। सोच लिया कि चलो जीवन तुम्हारा है तुम जैसा चाहो जीने का हक़ रखते हो। मगर ये सब क्या है बेटा कि तुम अपनी नौकरी से संतुष्ट नहीं? और खुद का कारोबार शुरू करना चाहते हो जिसके लिए तुम्हें ढेर सारा पैसा चाहिए?

दादा जी की बातों को सुन कर बड़े पापा अवाक् रह गए। उन्हें उम्मीद नहीं थी कि दादा जी पैसा देने की जगह ये सब सुनाने लगेंगे। कुछ देर बाद बड़े पापा ने उन्हें समझाना शुरू कर दिया। उन्होंने दादा जी को बताया कि वो ये बिजनेस साइड से शुरू कर रहे हैं और वो अपनी नौकरी नहीं छोंड़ रहे। बड़े पापा ने दादा जी को भविष्य के बारे में आगे बढ़ने की बहुत सी बातें समझाईं। दादा जी मान तो गए पर ये जरूर कहा कि ये सब रुपया शिवम(मेरे पिता जी) की जी तोड़ मेहनत का नतीजा है। उससे एक बार बात करना पड़ेगा। दादा जी की इस बात से बड़े पापा गुस्सा हो गए बोले कि आप घर के मालिक हैं या शिवम? किसी भी चीज़ का फैसला करने का अधिकार सबसे पहले आपका है और आपके बाद मेरा क्योंकि मैं इस घर का सबसे बड़ा बेटा हूं। शिवम होता कौन है कि आपको ये कहना पड़े कि आपको और मुझे उससे बात करना पड़ेगा?

बड़े पापा की इन बातों को सुनकर दादा जी भी उनसे गुस्सा हो गए। कहने लगे कि शिवम वो इंसान है जिसकी मेहनत के चलते आज इस घर में इतना रुपया पैसा आया है। वो तुम्हारे जैसा ग्रेजुएट होकर सरकरी नौकरी वाला भले ही न बन सका लेकिन तुमसे कम नहीं है वह। तुमने अपनी नौकरी से क्या दिया है कमा कर आज तक ? जबकि शिवम ने जिस दिन से पढ़ाई छोंड़ कर ज़मीनों में खेती बाड़ी का काम संभाला है उस दिन से इस घर में लक्ष्मी ने अपना डेरा जमाया है। उसी की मेहनत से ये रुपया पैसा हुआ है जिसे तुम मॉगने आए हो समझे ?

दादा जी की गुस्से भरी ये बातें सुन कर बड़े पापा चुप हो गए। उनके दिमाग में अचानक ही ये ख़याल आया कि मेरे इस प्रकार के व्यवहार से सब बिगड़ जाएगा। ये ख़याल आते ही उन्होंने जल्दी से दादा जी से माफी मॉगी और फिर दादा जी के साथ मेरे पिता जी से मिलने खेतों की तरफ बढ़ गए।

खेतों में पहुॅच कर दादा जी ने मेरे पिता जी को पास बुला कर उनसे इस बारे में बात की और कहा कि सत्यम(बड़े पापा) को खुद का कारोबार शुरू करने के लिए रुपया चाहिए। इस पर पिता जी ने कहा कि वो इन सब चीज़ों के बारे में कुछ नहीं जानते आप जो चाहें करें। आप घर के मुखिया हैं हर फैसला आपको ही करना है। पिता जी की बात सुन कर दादा जी खुश हो गए। उन्हें मेरे पिता जी पर गर्व भी हुआ। जबकि बड़े पापा मन ही मन मेरे पिता को गालियां दे रहे थे।

ख़ैर उसके बाद बड़े पापा ने खुद का कारोबार शुरू कर दिया। जिसके उद्घाटन में सब कोई शामिल हुआ। हलाकि उन्होंने मेरे माता पिता को आने के लिए नहीं कहा था फिर भी मेरे माता पिता खुशी खुशी सबके साथ आ गए थे। दादा जी के पूछने पर बड़े पापा ने बताया था कि एक शेठ की वर्षों से बंद पड़ी कपड़ा मील को उन्होंने सस्ते दामों में ख़रीद लिया है अब इसी को नए सिरे से शुरू करेंगे। दादा जी ने देखा था उस कपड़ा मील को, उसकी हालत ख़राब थी। उसे नया बनाने में काफी पैसा लग सकता था।

चूँकि दादा जी देख चुके थे इस लिए मील को सही हालत में लाने के लिए जितना पैसा लगता दादा जी देते रहे। करीब छः महीने बाद कपड़ा मिल सही तरीके चलने लगी। ये अलग बात थी उसके लिए ढेर सारा पैसा लगाना पड़ा था।

इधर मेरे पिता जी की मेहनत से काफी अच्छी फसलों की पैदावार होती रही। वो खेती बाड़ी के विषय में हर चीज़ का बारीकी से अध्ययन करते थे। आज के परिवेश के अनुसार जिस चीज़ से ज्यादा मुनाफा होता उसी की फसल उगाते। इसका नतीजा ये हुआ कि दो चार सालों में ही बहुत कुछ बदल गया। मेरे पिता जी ने दादा जी की अनुमति से उस पुराने घर को तुड़वा कर एक बड़ी सी हवेली में परिवर्तित कर दिया। हलाँकि दो मंजिला विशाल हवेली को बनवाने में भारी खर्चा लगा। घर में जितना रुपया पैसा था सब खतम हो गया बाँकि का काम करवाने के लिए और पैसों की ज़रूरत पड़ गई। दादा जी ने बड़े पापा से बात की लेकिन बड़े पापा ने कहा कि उनके पास रुपया नहीं है उनका कारोबार में बहुत नुकसान हो गया है। दादा जी को किसी के द्वारा पता चल गया था कि बड़े पापा का कारोबार अच्छा खासा चल रहा है और उनके पास रुपयों का कोई अभाव नहीं है।

बड़े पापा के इस प्रकार झूँठ बोलने और पैसा न देने से दादा जी बहुत दुखी हुए। मेरे पिता जी ने उन्हें संभाला और कहा कि ब्यर्थ ही बड़े भैया से रुपया माँगने गए थे। हम कोई दूसरा उपाय ढूंढ़ लेंगे।

छोटे चाचा स्कूल में सरकारी शिक्षक थे। उनकी इतनी सैलरी नहीं थी कि वो कुछ मदद कर सकते। मेरे पिता जी को किसी ने बताया कि बैंक से लोंन में रुपया ले लो बाद में ब्याज के साथ लौटा देना।

उस आदमी की इस बात से मेरे पिता जी खुश हो गए। उन्होंने इस बारे में दादा जी से बात की। दादा जी कहने लगे कि कर्ज़ चाहे जैसा भी हो वह बहुत ख़राब होता है और फिर इतनी बड़ी रकम ब्याज के साथ चुकाना कोई गुड्डा गुड्डी का खेल नहीं है। दादा जी ने कहा कि घर का बाकी का बचा हुआ कार्य बाद में कर लेंगे जब फसल से मुनाफ़ा होगा। मगर मेरे पिता जी ने कहा कि हवेली का काम अधूरा नहीं रहने दूंगा, वो हवेली को पूरी तरह तैयार करके ही मानेंगे। इसके लिए अगर कर्ज़ा होता है तो होता रहे वो ज़मीनों में दोगुनी मेहनत करेंगे और बैंक का कर्ज़ चुका देंगे।

दादा जी मना करते रह गए लेकिन पिता जी न माने। सारी काग़ज़ी कार्यवाही पूरी होते ही पिता जी को बैंक से लोंन के रूप में रुपया मिल गया। हवेली का बचा हुआ कार्य फिर से शुरू हो गया। मेरे पिता जी पर जैसे कोई जुनून सा सवार था। वो जी तोड़ मेहनत करने लगे थे। जाने कहां कहां से उन्हें जानकारी हासिल हो जाती कि फला फसल से आजकल बड़ा मुनाफ़ा हो रहा है। बस फिर क्या था वो भी वही फसल खेतों में उगाते।

इधर दो महीने के अन्दर हवेली पूरी तरह से तैयार हो गई थी। देखने वालों की आंखें खुली की खुली रह गईं। हवेली को जो भी देखता दिल खोल कर तारीफ़ करता। दादा जी का सिर शान

से उठ गया था तथा उनका सीना अपने इस किसान बेटे की मेहनत से निकले इस फल को देख कर खुशी से फूल कर गुब्बारा हुआ जा रहा था।

हवेली के तैयार होने के बाद दादा जी की अनुमति से पिता जी ने एक बड़े से भण्डारे का आयोजन किया जिसमें सम्पूर्ण गॉव वासियों को भोज का न्यौता दिया गया। शहर से बड़े पापा और बड़ी मॉ भी आईं थीं।

बड़े पापा ने जब हवेली को देखा तो देखते रह गए। उन्होंने स्वप्न में भी उम्मीद न की थी कि उनका घर कभी इस प्रकार की हवेली में परिवर्तित हो जाएगा। किन्तु प्रत्यक्ष में वे हवेली को देख देख कर कहीं न कहीं कोई कमी या फिर ग़लती निकाल ही रहे थे। बड़ी मॉ का हाल भी वैसा ही था।

हवेली को इस प्रकार से बनाया गया था कि भविष्य में किसी भी भाई के बीच किसी प्रकार का कोई विवाद न खड़ा हो सके। हवेली का क्षेत्रफल काफी बड़ा था। भविष्य में अगर कभी तीनो भाईयों का बॅटवारा हो तो सबको एक जैसे ही आकार और डिजाइन का हिस्सा समान रूप से मिले। हवेली काफी चौड़ी तथा दो मंजिला थी। तीनो भाईयों के हिस्से में बराबर और समान रूप से आनी थी। हवेली के सामने बहुत बड़ा लॉन था। कहने का मतलब ये कि हवेली ऐसी थी जैसे तीन अलग अलग दो मंजिला इमारतों को एक साथ जोड़ दिया गया हो।

इसी तरह सबके साथ हॅसी खुशी समय गुज़रता रहा। बड़े पापा और बड़ी मॉ का व्यवहार दिन प्रतिदिन बदलता जा रहा था। उनका रहन सहन सब कुछ बदल गया था। इस बीच उनको एक बेटी भी हुई जिसका नाम साक्षी रखा गया, साक्षी सिंह भाटी। बड़े पापा और बड़ी मॉ अपनी बच्ची को लेकर शहर से घर आईं और दादा दादी जी से आशीर्वाद लिया। उन्होंने एक बढ़िया सी कार भी ख़रीद ली थी, उसी कार से वो दोनों आए थे।

दादा जी बड़े पापा और बड़ी मॉ के इस बदलते रवैये से अंजान नहीं थे किन्तु बोलते कुछ नहीं थे। वो समझ गए थे कि बेटा कारोबारी आदमी हो गया है और उसे अब रुपये पैसे का घमण्ड होने लगा है। दादा जी ये भी महसूस कर रहे थे कि उनके बड़े बेटे और बड़ी बहू का मेरे पिता के प्रति कोई खास बोलचाल नहीं है। जबकि छोटे चाचा जी से उनका संबंध अच्छा था। इसका कारण शायद यह था कि छोटे चाचा भले ही किसी से ज्यादा मतलब नहीं रखते थे लेकिन स्वभाव से बहुत गुस्से वाले थे। वो अन्याय बरदाश्त नहीं करते थे बल्कि वो इसके खिलाफ़ लड़ पड़ते थे।

अपने अच्छे खासे चल रहे कारोबार के पैसों से बड़े पापा ने शहर में एक बढ़िया सा घर भी बनवा लिया था जिसके बारे में बहुत बाद में सबको पता चला था। दादा जी बड़े पापा से नाराज भी हुए थे इसके लिए। पर बड़े पापा ने उनको अपनी लच्छेदार बातों द्वारा समझा भी लिया था। उन्होंने दादा जी को कहा कि ये घर बच्चों के लिए है जब वो सब बड़े होंगे तो शहर में इसी घर में रह कर यहॉ अपनी पढ़ाई करेंगे।

समय गुज़रता रहा, और समय के साथ बहुत कुछ बदलता भी रहा। साक्षी दीदी के पैदा होने के चार साल बाद बड़े पापा को एक और बेटी हुई जबकि उसी समय मैं अपने माता पिता द्वारा पैदा हुआ। मेरे पैदा होने के एक दिन बाद ही बड़े पापा को दूसरी बेटी यानी मानुषी पैदा हुई थी। उस समय पूरे खानदान में मैं अकेला ही लड़का था। मेरे पैदा होने पर दादा जी ने बहुत बड़ा उत्सव किया था तथा पूरे गॉव वालों को भोज करवाया था। हलॉकि मेरे माता पिता ये सब बिल्कुल नहीं चाहते थे क्यों कि इससे बड़े पापा और बड़ी मॉ के दिल ओ दिमाग में ग़लत धारणा पैदा हो जानी थी। लेकिद दादा जी नहीं माने बल्कि इन सब बातों की परवाह किए बग़ैर वो ये सब करते गए। इसका परिणाम वही हुआ जिसका मेरे माता पिता जी को अंदेशा था। मेरे पैदा होने की खुशी में दादा जी द्वारा किये गए इस उत्सव से बड़े पापा और बड़ी मॉ बहुत नाराज हुईं। उन्होंने कहा कि जब उनको बच्चियां पैदा हुई तब ये जश्न क्यों नहीं किया गया? जिसके जवाब में दादा जी ने नाराज हो कर कहा कि तुम लोग हमें अपना मानते ही कहॉ हो? सब कुछ अपनी मर्ज़ी से ही कर लेते हो। कभी किसी चीज़ के लिए हमारी मर्ज़ी हमारी पसंद या हमारी सहमति के बारे में सोचा तुम लोगों ने? तुम लोगों ने अपनी मर्ज़ी से शहर में घर बना लिया और किसी को बताया भी नहीं, अपनी मर्ज़ी या पसंद से गाड़ी खरीद ली और किसी को बताया तक नहीं। इन सब बातों का कोई जवाब है तुम लोगों के पास? क्या सोचते हो तुम लोग कि तुम्हारी ये चीज़ें कहीं हम लोग मॉग न लें? या फिर तुमने ये सोच लिया है कि जो तुमने बनाया है उसमे किसी का कोई हक़ नहीं है?

दादा जी की गुस्से से भरी ये सब बातें सुन कर बड़े पापा और बड़ी मॉ चुप रह गए। उनके मुख से कोई लफ्ज़ नहीं निकला। जबकि दादा जी कहते रहे, तुम लोगों ने खुद ही हम लोगों से खुद को अलग कर लिया है। आज तुम्हारे पास रुपया पैसा आ गया तो खुद को तोप समझने लगे हो। मगर ये भूल गए कि जिस रुपये पैसे के नशे में तुमने हम लोगों को खुद से अलग कर लिया है उस रुपये पैसे की बुनियाद हमारे ही खून पसीने की कमाई के पैसों से तैयार की है तुमने। अब चाहे जितना आसमान में उड़ लो मगर याद रखना ये बात

दादा जी और भी जाने क्या क्या कहते रहे । बड़े पापा और बड़ी मॉ कुछ न बोले। दूसरे दिन वो लोग वापस शहर चले गए। लेकिन इस बार अपने दिल ओ दिमाग में ज़हर सा भर लिया था उन लोगों ने।

छोटे चाचा और चाची सब जानते थे और उनकी मानसिकता भी समझते थे लेकिन सबसे छोटे होने के कारण वो बीच में कोई हस्ताक्षेप करना उचित नहीं समझते थे। वो मेरे माता पिता की बहुत इज्ज़त करते थे। वो जानते थे कि ये सब कुछ मेरे पिता जी के कठोर मेहनत से बना है। हमारी सम्पन्नता में उनका ही हाथ है। मेरी मॉ और पिता बहुत ही शान्त स्वभाव के थे। कभी किसी से कोई वाद विवाद करना मानो उनकी फितरत में ही शामिल न था।

मेरे जन्म के दो साल बाद बड़े पापा और बड़ी मॉ को एक बेटा हुआ था। जिसका नाम जयदीप सिंह रखा गया था। उसके जन्म पर जब वो लोग घर आए तो दादा जी ने जयदीप के जन्म की खुशी में उसी तरह उत्सव मनाया तथा पूरे गॉव वालों को भोज करवाया जैसे मेरे जन्म की खुशी में किया था। मगर इस बार का उत्सव पहले के उत्सव की अपेक्षा ज़्यादा ताम झाम

वाला था क्योंकि बड़े पापा यही करना या दिखाना चाहते थे। दादा जी इस बात को बखूबी समझते थे।

समय गुज़रता रहा और यूं ही पॉच साल गुज़र गए। मैं पॉच साल का हो गया था। सब घर वाले मुझे बहुत प्यार करते थे। मेरे जन्म के चार साल बाद ही मुझे मेरे माता पिता द्वारा एक बहेन मिल गई थी। उसका नाम निशा रखा गया। छोटे चाचा और चाची को भी एक बेटी हो गई थी जो अब एक साल की थी। उसका नाम सृष्टि था। सृष्टि ऊम्र में मेरी बहेन निशा से मात्र दस दिन छोटी थी। दोनों एक साथ ही रहती। उन दोनों की किलकारियों से पूरी हवेली में रौनक रहती। सृष्टि बिल्कुल चाची पर गई थी। एक दम गोरी चिट्टी सी। दिन भर मैं उनके साथ खेलता, वो दोनो मेरा खिलौना थीं। हमेशा उनको अपने पास ही रखता था।

बड़े पापा और बड़ी मॉ मेरी बहेन निशा और चाचा चाची की बेटी सृष्टि दोनो के जन्म पर उन्हें देखने आए थे। खास कर छोटे चाचा चाची की बेटी को देखने। सबकी मौजूदगी में उन्होंने मुझे भी अपना प्यार दिया। वो सबके लिए उपहार स्वरूप कपड़े लाए थे। इस बार उनका रवैया तथा वर्ताव पहले की अपेक्षा बहुत अच्छा था। वो सबसे हस बोल रहे थे। उनकी बड़ी बेटी साक्षी जो मुझसे चार साल बड़ी थी वो बिल्कुल अपनी मॉ पर गई थी। उसके स्वभाव में अपनी मॉ की तरह ही अकड़पन था जबकि उसकी छोटी बहेन जो मेरी ऊम्र की थी वो उसके विपरीत बिलकुल साधारण थी। ख़ैर दो दिन रुकने के बाद वो लोग वापस शहर चले गए।

मैं पॉच साल का हो गया था इस लिए मेरा चाचा जी के स्कूल में ही पढ़ाई के लिए नाम लिखवा दिया गया था। मेरा अपने खिलौनों अर्थात् निशा और सृष्टि को छोंड़ कर स्कूल जाने का बिलकुल मन नहीं करता था जिसके लिए मेरी पिटाई भी होती थी। छोटे चाचा को उनके गुस्सैल स्वभाव के चलते सब डरते भी थे। मैं भी डरता था उनसे और इसी डर की वजह से मुझे उनके साथ ही स्कूल जाना पड़ता। हलॉकि चाचा चाची दोनों ही मुझ पर जान छिडकते थे लेकिन पढ़ाई के मामले में चाचा जी ज़रा स्ट्रिक्ट हो जाते थे।

मेरे माता पिता दोनो ही पढ़े लिखे नहीं थे इस लिए मेरी पढ़ाई की जिम्मेदारी चाचा चाची की थी। चाचा चाची दोनो ही मुझे पढ़ाते थे। इसका परिणाम ये हुआ कि मै पढ़ाई में शुरू से ही तेज़ हो गया था। जब मैं दो साल का था तब मेरी बड़ी बुआ यानी सीता सिंह की शादी हुई थी जबकि छोटी बुआ गीता सिंह स्कूल में पढ़ती थीं। मेरी दोनों ही बुआओं का स्वभाव अच्छा था। छोटी बुआ थोड़ी स्ट्रिक्ट थी वो बिलकुल छोटे चाचा जी की तरह थीं। मैं जब पॉच साल का था तब बड़ी बुआ को एक बेटा यानी अक्षय पैदा हुआ था।

पूरे गॉव वाले हमारी बहुत इज्ज़त करते थे। एक तो गॉव में सबसे ज्यादा हमारे पास ही ज़मीनें थी दूसरे मेरे पिता जी की मेहनत के चलते घर हवेली बन गया तथा रुपया पैसा हो गया। हमारे घर से दो दो आदमी सरकारी सर्विस में थे। खुद का बहुत बड़ा कारोबार भी चल रहा था। उस समय इतना कुछ गॉव में किसी और के पास न था। दादा जी और मेरे पिता जी का व्यवहार गॉव में ही नहीं बल्कि आसपास के गावों में भी बहुत अच्छा था। इस लिए सब लोग हमें इज्ज़त देते थे।

इसी तरह समय गुज़रता रहा। कुछ सालों बाद मेरे छोटे चाचा चाची और बड़ी बुआ को एक एक संतान हुईं। चाचा चाची को एक बेटा यानी रणदीप सिंह भाटी और बड़ी बुआ को एक बेटी यानी आरुषि सिंह हुई। चाचा चाची का बेटा रणदीप बड़ा ही सुन्दर था। उसके जन्म में भी दादा जी ने बहुत बड़ा उत्सव मनाया तथा पूरे गॉव वालों को भोज कराया। बड़े पापा और बड़ी मॉ ने भी कोई कसर नहीं छोंड़ी थी खर्चा करने में। सबने बड़ी बुआ को भी बहुत सारा उपहार दिया था। सब लोग बड़ा खुश थे।

कुछ सालों बाद छोटी बुआ की भी शादी हो गई। वो अपने ससुराल चली गईं। हम सभी बच्चे भी समय के साथ बड़े हो रहे थे। बड़े पापा और बड़ी मॉ ज्यादातर शहर में ही रहते। वो लोग तभी आते थे गॉव जब कोई खास कार्यक्रम होता। उनके कारोबार और उनके पैसों से किसी को कोई मतलब नहीं था। मेरे माता पिता के प्रति उनके मन में हमेशा एक द्वेश तथा नफरत जैसी बात कायम रही। हलॉकि वो इसका कभी दिखावा नहीं करते थे लेकिन सच्चाई कभी किसी पर्दे की गुलाम बन कर नहीं रहती। वो अपना चेहरा किसी न किसी रूप से लोगों को दिखा ही देती है। दादा जी सब जानते और समझते थे लेकिन बोलते नहीं थे कभी।

मेरे माता पिता के मन में बड़े पापा और बड़ी मॉ के प्रति कभी कोई बुरी भावना या ग़लत विचार नहीं रहा बल्कि वो हमेशा उनका आदर तथा सम्मान ही करते थे। मेरे पिता जी उसी तरह ज़मीनों में खेती करके फसल उगाते थे, अब फर्क ये था कि वो ये सब मजदूरों से करवाते थे। ज़मीनों में बड़े बड़े आमों के बाग़ हो गए थे, साग सब्जियों की भी पैदावार होने लगी थी। खेतों के बीच एक बड़ा सा घर भी बनवा लिया गया था। कहने का मतलब ये कि हर सुविधा हर साधन हो गया था। पहले जहॉ दो दो बैलों के साथ हल द्वारा खेतों की जुताई होती थी अब वहॉ ट्रैक्टर द्वारा जुताई होने लगी थी। हमारे पास दो दो ट्रैक्टर हो गए थे। दादा जी के लिए पिता जी ने एक कार भी खरीद दी थी तथा छोटे चाचा जी के लिए एक बुलेट मोटर साइकिल जिससे वे स्कूल जाते थे। दादा दादी बड़े गर्व व शान से रहते थे। मेरे पिता जी से वो बहुत खुश थे।

मगर कौन जानता था कि इस हॅसते खेलते परिवार की खुशियों पर एक दिन एक ऐसा तूफ़ान कहर बन कर बरपेगा कि सब कुछ एक पल में आईने की तरह टूट कर बिखर जाएगा????

१

" ओ भाई साहब ! क्या आप मेरे इस समान को दरवाज़े तक ले जाने में मेरी मदद कर देंगे ?" सहसा किसी आदमी के इस वाक्य को सुन कर मैं अपने अतीत के गहरे समंदर से बाहर आया। मैंने ऊपर की सीट से खुद को ज़रा सा उठा कर नीचे की तरफ देखा।

एक आदमी ट्रेन के फर्श पर खड़ा मेरी तरफ देख रहा था। उसका दाहिना हाथ मेरी सीट के किनारे पर था जबकि बॉया हाथ नीचे फर्श पर रखी एक बोरी पर था। मुझे कुछ बोलता न देख उसने बड़े ही अदब से फिर बोला "भाई साहब प्लेटफारम आने वाला है, ट्रेन बहुत देर नहीं रुकेगी यहॉ और मेरा सारा सामान यहीं रह जाएगा। पहले ध्यान ही नहीं दिया था वरना सारा सामान पहले ही दरवाजे के पास ले जा कर रख लेता।"

उसकी बात सुन कर मुझे पूरी तरह होश आया। लगभग हड़बड़ा कर मैंने अपने बाएं हाथ पर बॅधी घड़ी को देखा। घड़ी में दिख रहे टाइम को देख कर मेरे दिलो दिमाग़ में झनाका सा हुआ। इस समय तो मुझे अपने ही शहर के प्लेटफार्म पर होना चाहिए। मैं जल्दी से नीचे उतरा, तथा अपना बैग भी ऊपर से निकाला।

" क्या ये ट्रेन रामगंज पहुॅच गई ?" फिर मैंने उस आदमी से तपाक से पूॅछा।

" बस पहुॅचने ही वाली है भाई साहब। " उस आदमी ने कहा " आप कृपा करके जल्दी से मेरा ये सामान दरवाजे तक ले जाने में मेरी मदद कर दीजिए। "

" ठीक है , क्या क्या सामान है आपका ?" मैंने पूॅछा।

" चार बोरियॉ हैं भाई साहब और एक बड़ा सा थैला है। " उसने अपने सभी सामानों पर बारी बारी से हाथ रखते हुए बताया।

मैंने एक बोरी को एक हाथ से उठाया किन्तु भारी लगा मुझे। मैंने उस बोरी को ठीक से उठाते हुए उससे पूछा कि क्या पत्थर भर रखा है इनमें? वह हॅसते हुए बोला नहीं भाई साहब इनमें सब में गेहूॅ और चावल है। पिछली रबी बरसात न होने से हमारी सारी फसल बरबाद हो गई। अब घर में खाने के लिए कुछ तो चाहिए ही न भाई साहब इस लिए ये सब हमें हमारी ससुराल वालों ने दिया है। ससुराल वालों से ये सब लेना अच्छा तो नहीं लगता लेकिन क्या करें मुसीबत में सब करना पड़ जाता है।"

ट्रेन स्टेशन पर पहुॅच ही चुकी थी लगभग, हम दोनों ने मिल कर शीघ्र ही सारा सामान दरवाजे पर रख चुके थे। थोड़ी ही देर में ट्रेन प्लेटफार्म पर पहुचकर रुक गई। वो आदमी जल्दी से उतरा और मैंने ऊपर से एक एक करके उसका सामान उसे पकड़ाता गया। सारा सामान सही सलामत नीचे उतर जाने के बाद मैं भी नीचे उतर गया। वो आदमी हाथ जोड़ कर मुझे धन्यवाद

करता रहा। मैं मुस्कुरा कर एक तरफ बढ़ गया।

स्टेशन से बाहर आने के बाद मैंने बस स्टैण्ड जाने के लिए एक आॅटो पकड़ा। लगभग बीस मिनट बाद मैं बस स्टैण्ड पहुॅचा। यहाॅ से बस में बैठ कर निकल लिया अपने गाॅव 'सोनपुर'।

सोनपुर पहुॅचने में बस से दो घण्टे का समय लगता था। बस में मैं सीट की पिछली पुस्त से सिर टिका कर तथा अपनी दोनो आॅखें बंद करके बैठ गया। आॅख बंद करते ही मुझे मेरी माॅ और बहन का चेहरा नज़र आ गया। उन्हें देख कर आॅखें भर आईं। बंद आॅखों में चेहरे तो और भी नज़र आते थे जो मेरे बेहद अज़ीज़ थे लेकिन मैं उनके लिए अब अज़ीज़ न था।

सहसा तभी बस में कोई गाना चालू हुआ। दरअसल ये बस वालों की आदत होती है जैसे ही बस किसी सफर के लिए निकलती है बस का ड्राइवर गाना बजाना शुरू कर देता है ताकि बस में बैठे यात्रियों का मनोरंजन भी होता रहे।

ख़ैर वक़्त को तो गुज़रना ही था आख़िर, सो गुज़र गया और मैं अपने गाॅव सोनपुर पहुॅच गया। ये वही गाॅव है जिसके किसी छोर पर मेरे पिता जी द्वारा बनवाई गई हवेली मौजूद है। मगर मैं,मेरी माॅ और बहन अब उस हवेली में नहीं रहते। मेरे पिता जी तो अब इस दुनियाॅ में हैं ही नहीं। जी हाॅ दोस्तो मेरे पिता जी अब इस जहां में नहीं हैं।

हम तीन लोग यानी मैं मेरी माॅ और बहन अब खेतों के पास बने घर में रहते हैं। मगर बहुत जल्द हम लोगों का अब यहाॅ से भी तबादला होने वाला है।

उस समय शाम होने लगी थी जब मैं अपनी माॅ बहन के पास पहुॅचा। मुझे देख कर दोनो ही मुझसे लिपट गईं और फूट फूट कर रोने लगीं। मैंने थोड़ी देर उन्हें रोने दिया। फिर दोनो को खुद से अलग करके पास ही रखी एक चारपाई पर बैठा दिया। मेरी छोटी बहन निशा ने पास ही रखे एक घड़े से ग्लास में मुझे पानी दिया।

" माॅ , क्या फिर बड़े पापा ने ?" अभी मेरी बात पूरी भी न हुई थी कि माॅ ने कहा " बेटा अब हम यहाॅ नहीं रहेंगे। हमें अपने साथ ले चल। हम तेरे साथ मुंबई में ही रहेंगे। यहाॅ हमारे लिए कुछ नहीं है और न ही कोई हमारा है। "

" माॅ , क्या फिर बड़े पापा ने आपको कुछ कहा है ?" मेरे अंदर क्रोध उभरने लगा था।

" सब भाग्य की बातें हैं बेटा। " माॅ ने गंभीरता से कहा " जब तक हमारे भाग्य में दुख तक़लीफें लिखी हैं तब तक ये सब सहना ही पड़ेगा। "

" माॅ चुप बैठने से कुछ नहीं होता। " मैंने कहा " किसी के सामने झुकना अच्छी बात है लेकिन इतना भी नहीं झुकना चाहिये कि हम झुकते झुकते एक दिन टूट ही जाएं। अपने हक़ के लिए लड़ना पड़ता है माॅ। ये मान मर्यादा की बातें सिर्फ़ हम ही बस क्यों सोचें ? वो क्यों नहीं

सोचते ये सब ?"

" सब एक जैसे अच्छे विचारों वाले नहीं होते बेटा। " मॉ ने कहा " अगर वो ये सब सोचते तो क्या हमें इस तरह यहॉ रहना पड़ता ?"

" यहॉ भी कहॉ रहने दे रहे हैं मॉ।" मैं आवेश मे बोला " उन्होंने हमें इस तरह निकाल कर बाहर फेंक दिया है जैसे कोई दूध पर गिरी मक्खी को निकाल कर फेंक देता है। सारा गॉव जानता है कि वो हवेली मेरे पिता जी के खून पसीना बहा कर कमाए हुए रुपयों से बनी है। और उनका वो कारोबार भी मेरे पिता जी के रुपयों की बुनियाद पर ही खड़ा है। ये कहॉ का न्याय है मॉ कि सब कुछ छीन कर हमें दर दर का भिखारी बना दिया जाए ?"

" हमें कुछ नहीं चाहिए बेटे। " मॉ ने कहा " मेरे लिए तुम दोनों ही मेरा सब कुछ हो। "

" आपकी वजह से मैं कुछ कर नहीं पाता मॉ। " मैंने हताश भाव से कहा" वरना इन लोगों को इनकी ही ज़ुबान से सबक सिखाता मैं। "

" किसी को कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है बेटे। " मॉ ने कहा " जो जैसा करेगा उसे वैसा ही एक दिन फल भी मिलेगा। ईश्वर सब देखता है। "

" तो क्या हम हर चीज़ के लिए ईश्वर का इन्तज़ार करते बैठे रहें ?" मैने कहा " ईश्वर ये नहीं कहता कि तुम कोई कर्म ही न करो। अपने हक़ के लिए लड़ना कोई गुनाह नहीं है। "

" भैया कल बड़े पापा ने। " निशा ने अभी अपनी बात भी पूरी न की थी कि मॉ ने उसे चुप करा दिया " तू चुप कर , तुझे बीच में बोलने को किसने कहा था ?"

" उसे बोलने दीजिए मॉ। " मैंने कहा मुझे लगा निशा कुछ खास बात कहना चाहती है। " तू बता गुड़िया क्या किया बड़े पापा ने कल ?"

" कुछ नहीं बेटा ये बेकार ही जाने क्या क्या अनाप सनाप बकती रहती है। " मॉ ने जल्दी से खुद ही ये कहा।

" मैं अनाप सनाप नहीं बक रही हूॅ मॉ। " इस बार निशा की आखों में आॅसू और लहजे में आवेश था बोली " कब तक हर बात को सहते रहेंगे हम ? कब तक हर बात भैया से छिपाएंगी आप ? इस तरह कायर बन कर जीना कहॉ की समझदारी है ?"

दूसरे दिन लगभग आठ बजे। विक्रम अपनी मॉ रेणुका और बहन निशा को लेकर घर से बाहर निकल कर आया ही था कि सामने से उसे एक मोटर साइकिल आती नजर आई।

" फिर आ गया कमीना। " निशा ने बुरा सा मुह बनाते हुए कहा।

" गुड़िया। " मॉ यानि रेणुका ने लगभग डाटते हुए निशा से कहा _" ऐसे गंदे शब्द किसी को भी नहीं बोलना चाहिए और वो तो फिर भी तुम्हारा भाई है। "

" मॉ जयदीप भैया ने भाई होने का कौन सा फर्ज़ निभाया है ?" निशा ने कहा _" और वो हमें अपना समझते ही कहॉ हैं ? उनके लिए तो हम बाजार की रं ....। "

" गुड़िया .....। " रेणुका जोर से चीखी थी। अभी वह कुछ और भी कहती कि उससे पहले ही उसने देखा कि सामने से मोटर साईकिल से आता हुआ जयदीप पास आ गया था। उसने सख्ती से अपने होंठ भींच लिए।

जयदीप ने एक एक नज़र उन सब पर डाली और बहुत ही कमीने ढंग से मुस्कुराते हुए बोला_"अरे भाई भी आ गया। वाह भाई वाह लगता है धंधे का समय हो गया है तुम लोगों का। सुबह सुबह दुकान तो सभी खोलते हैं मगर मुझे जरा ये तो बताओ कि तुम लोगो की दुकान किस जगह खुलेगी? वो दरअसल क्या है न कि मैं सोच रहा हूॅ कि तुम लोगों की दुकान की बोहनी मैं ही कर दूॅ अपने कुछ दोस्तों को साथ लाकर।"

जयदीप की बातें ऐसी नहीं थी जिनका मतलब उनमें से कोई समझ न सकता था। विक्रम का चेहरा गुस्से से आग बबूला हो चुका था। उसकी मुट्ठियॉ कस गई थीं। ये देख रेणुका ने फौरन ही अपने बेटे का हाथ पकड़ लिया था। उसे पता था कि विक्रम ये सब सहन नहीं कर सकता और गुस्से में न जाने क्या कर डाले।

" देखो तो कैसे फड़फड़ा रहा है भाई। " विक्रम को गुस्से में उबलता देख जयदीप ने चहकते हुए कहा _" अरे ठंड रख भाई ठंड रख। तुम्हारे इस धंधे में इसकी कोई जरूरत नहीं है। बल्कि इस धंधे में तो बडे प्यार और धैर्य की ज़रूरत होती है। ज़बान में शहद सी मिठास डालनी होती है जिससे ग्राहक को लुभाया जा सके। ख़ैर छोंड़ो ये बात .. सब सीख जाओगे भाई। धीरे धीरे ही सही मगर धंधा करने का तरीका आ ही जाएगा। अच्छा ये तो बता दो यार कि अपनी मॉ बहन को लेकर किस जगह दुकान खोलने वाले हो ?"

" आपको ज़रा भी शर्म नहीं आती भैया ऐसी बातें कहते हुए। " निशा ने रूॅधे गले से कहा _" आपको ज़रा भी एहसास नहीं है कि हम आपके अपने हैं और आप अपनों के लिए ही ऐसा बोल रहे हैं ?"

" अलेलेलेले। " जयदीप ने पुचकारते हुए कहा _" मेरी निशा डार्लिंग ये कैसी बातें कह रही है ? मैं तो अपना समझ कर ही ऐसा बोल रहा हूॅ। तुम सबका भला चाहता हूॅ तभी तो

चाहता हूँ कि तुम्हारी दुकान की बोहनी सबसे पहले मैं ही करू। "

इससे पहले कि कोई कुछ और बोल पाता जयदीप मोटर साईकिल से नीचे औंधा पड़ा नज़र आया। उसके मुह से खून की धारा बहने लगी थी। किसी को समझ ही नहीं आया कि पलक झपकते ही ये कैसे हो गया। रेणुका और निशा हैरत से आंखें फाड़े जयदीप को देखने लगी थी। होश तब आया जब फिज़ा में जयदीप की चीखें गूँजने लगी थी। दरअसल जयदीप की अश्लीलतापूर्ण बातों से विक्रम ने गुस्से से अपना आपा खो दिया था और माँ के हाथ से अपना हाथ छुड़ा कर जयदीप पर टूट पड़ा था। रेणुका को तो पता भी नहीं चला था कि विक्रम ने उसके हाथ से अपना हाथ कब छुड़ाया और कब वह जयदीप की तरफ झपटा था?

उधर जयदीप की दर्दनाक चीखें वातावरण में गूँज रही थी। विक्रम बुरी तरह जयदीप की धुनाई कर रहा था। ऐसा नही था कि जयदीप कमजोर था बल्कि वह खुद भी तन्दुरुस्त तबियत का था किन्तु विक्रम मासल आर्ट में ब्लैक बैल्ट होल्डर था। जयदीप उसे छू भी नही पा रहा था जबकि विक्रम उसे जाने किस किस तरह से मारे जा रहा था। रेणुका और निशा मुह और आखें फाड़े देखे जा रही थी। निशा की खुशी का तो कोई ठिकाना ही न था। उसने ऐसी मार धाड़ भरी फाइटिंग फिल्मों में ही देखी थी और आज तो उसका अपना सगा बड़ा भाई खुद ही किसी हीरो की तरह फाईटिंग कर रहा था। उसका मन कर रहा था कि वह ये देख कर खुशी से नाचने लगे किन्तु माँ के रहते उसने अपने जज़्बातों को सख्ती से दबाया हुआ था।

" न नहीं .....। " अचानक ही रेणुका चीखी , उसे जैसे होश आया था। दोड़ कर उन दोनो के पास पहुँची वह और विक्रम को पकड़ने लगी _" छोंड़ दे बेटा उसे। भगवान के लिए छोंड़ दे। वो मर जाएगा तुझे मेरी कसम छोंड़ दे उसे। "

माँ की कसम सुनते ही विक्रम के हाथ पॉव रुक गए। मगर तब तक जयदीप की हालत ख़राब हो चुकी थी। लहूलुहान हो चुका था वह। जिस्म का ऐसा कोई हिस्सा नही बचा था जहाँ से खून और चोंट न नज़र आ रही हो। अधमरी सी हालत में वह जमीन पर पड़ा था। मुह से कोई आवाज़ नहीं निकल रही थी शायद बेहोश हो चुका था वह।

विक्रम के रुकते ही रेणुका ने जाने किस भावना के तहत विक्रम के दोनो गालों पर थप्पड़ों की बरसात कर दी।

" ये तूने क्या किया , तू इतना क्रूर और निर्दयी कैसे हो गया ?" रेणुका रोए जा रही थी _" क्या मैंने तुझे यही संस्कार दिए थे कि तू किसी को इस तरह क्रुरता से मारे ?"

" ये इसी लायक था माँ। " माँ का मारना जब रुक गया तो विक्रम कह उठा , उस पर गुस्सा अब भी विद्यमान था बोला _" इसने आपको और मेरी गुड़िया को कितना गंदा बोला था माँ। किसी के सामने इतना भी नहीं झुक सकता मैं। मेरे सामने कोई आपको और गुड़िया को ऐसी सोच के साथ अपशब्द कहे मैं हर्गिज भी बरदाश्त नहीं करू गा। मैं ऐसी गंदी जुबान बोलने वाले का किस्सा ही खतम कर दूँगा। "

" ये तूने ठीक नहीं किया बेटे। " रेणुका की आखें नम थी _" उसकी हालत तो देख। ऐसी हालत में उसे जब उसके मॉ बाप देखेंगे तो वो चैन से नहीं बैठेंगे। "

" क्या करेंगे वो ?" विक्रम के लहजे मे पत्थर सी कठोरता थी _" मैं किसी से नहीं डरता। जिसे जो करना है करे अब मैं भी पीछे हटने वाला नहीं हूॅ मॉ और ..... और आप भी अब मुझे अपनी कसम देकर रोकेंगी नहीं। हर बार आपकी कसम मुझे कुछ भी करने से रोंक लेती है। आपको ये एहसास भी नहीं है मॉ कि उस हालत में मुझ पर क्या गुज़रती है ? मुझे खुद से ही नफरत होने लगती है मॉ। मैं अपने आपसे नज़रें नहीं मिला पाता। मुझे ऐसे बंधन में मत बॉधा कीजिए मॉ वरना मैं जी नहीं पाऊॅगा। "

" नहीं मेरे बच्चे। " रेणुका उसे अपने सीने से लगा कर रो पड़ी _" ऐसा मत कह मैं मॉ हू तेरी। तुझे कुछ हो न जाए इस लिए डर कर तुझे अपनी कसम में बॉध देती हूॅ। मुझे माफ कर दे मेरे लाल , मैं जानती हूॅ कि मेरा बेटा एक सच्चा मर्द है। मेरी कसम में बॅध कर तेरी मरदानगी व खुद्दारी को चोंट लगती है। मगर , मैं तेरे पिता और अपने सुहाग को खो चुकी हूॅ अब तुझे नहीं खोना चाहती। तू हम दोनो मां बेटी का एक मात्र सहारा है बेटा। इस दुनिया में कोई हमारा नहीं है। "

" मुझे कुछ नहीं होगा मॉ। " विक्रम ने मॉ के सीने से अलग हो कर तथा अपने दोनों हाथो से मां का मासूम सा चेहरा सहलाते हुए बोला _" इस दुनिया की कोई भी ताकत मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। अब समय आ गया है ऐसे बुरे लोगों को उनके किये की सज़ा देने का। "

" ये तू क्या कह रहा है बेटा ?" रेणुका के चेहरे पर न समझने वाले भाव उजागर हो उठे _" नही नही , हमें किसी को कोई सज़ा नहीं देना है बेटा। हम यहॉ अब एक पल भी नहीं रुकेंगे। इससे पहले कि जयदीप की हालत के बारे में किसी को कुछ पता चले हमें यहॉ से निकल जाना चाहिए। "

" मॉ सही कह रही हैं भैया। " निशा ने भी पास आते हुए कहा _" अब हमें यहॉ एक पल भी नहीं रुकना चाहिए। आप नहीं जानते हैं हम लोगों की पल पल की ख़बर बड़े पापा को होती है और इसमें कोई शक नहीं कि उन्हें अब तक ये न पता चल गया हो कि यहॉ क्या हुआ है ?"

" हॉ बेटा चल जल्दी चल यहा से। " रेणुका ने घबराते हुए कहा _" उनका कोई भरोसा नहीं है कि वो कब यहा आ जाएं। "

" मैं भी देखना चाहता हूं मॉ कि बड़े पापा क्या कर लेंगे मेरा और आप दोनों का ?" विक्रम ने कहा _" बहुत हो गया अब। वो समझते होंगे कि हम उनसे डरते हैं। आज मैं उन्हें दिखाऊंगा कि मैं कायर और डरपोंक नहीं हूॅ। अब तक इस लिए चुप था क्योंकि आपने मुझे अपनी कसम से बॉधे रखा था। मगर अब और नही माॅ , मैं कायर और डरपोंक नहीं बन सकता। मेरा ज़मीर मुझे चैन से जीने नहीं देगा। क्या आप चाहती हैं मॉ कि मैं घुट घुट कर जिऊॅ ?"

" नहीं मेरे लाल। " रेणुका मानो तड़प उठी , बोली _" मैं ये कैसे चाह सकती हूं भला कि मेरे जिगर का टुकड़ा मेरी आॅखों का नूर यूँ घुट घुट कर जिये वो भी सिर्फ मेरी वजह से ? मगर तू तो जानता है बेटा कि मै एक माॅ हूं , दुनिया की कोई भी माॅ ये नहीं चाहती कि उसके लाल के ऊपर किसी भी तरह का कोई संकट आए। "

" फिक्र मत कीजिए माॅ। " विक्रम ने कहा _" आपका प्यार और आशीर्वाद इतना कमज़ोर नहीं है जिससे कोई भ ला मुझे किसी तरह का नुकसान पहुॅचा सके। "

" बहुत बड़ी बड़ी बातें करने लगा है तू तो। " रेणुका ने विक्रम के चेहरे को अपने दोनो हाथो में लेकर कहा _" लगता है मेरा बेटा अब बड़ा हो गया है। "

" हाॅ माॅ , भैया अब बहुत बड़े हो गए हैं। " निशा ने मुस्कुराते हुए कहा _" और इतना ही नहीं मेरे भैया किसी सुपर हीरो से कम नहीं हैं। मेरे अच्छे और प्यारे भैया। " कहने के साथ ही निशा विक्रम की पीठ से चिपक गई।

" ये कितना ही बड़ा हो गया हो गुड़िया।" रेणुका ने कहा _" मगर मेरे लिए तो ये आज भी मेरा छोटा सा बच्चा ही है। "

" और मैं ?" निशा ने विक्रम की पीठ से चिपके हुए ही शरारत से कहा।

" तू तो हम सबकी छोटी सी गुड़िया है। " विक्रम ने कहा और उसे अपनी पीठ से खींच कर गले से लगा लिया। ये देख रेणुका की आखें भर आईं।

" ऐसे ही तुम दोनो भाई बहन में स्नेह और प्यार बना रहे मेरे बच्चों।" रेणुका ने अपनी छलक आई आखों को अपने आॅचल के छोर से पोंछते हुए कहा _" मगर इस स्नेह और प्यार में अपनी इस अभागन माॅ को न भूल जाना तुम दोनो। "

विक्रम ने अपनी माॅ की इस बात को जब सुना तो उसने अपना एक हाथ फैला दिया। रेणुका ने जब ये देखा तो वो भी अपने बेटे के चौड़े सीने से जा लगी। कुछ देर यू ही सब एक दूसरे से गले मिले रहे फिर सब अलग हुए।

" अब हमें चलना चाहिए बेटा। " रेणुका ने गंभीर भाव से कहा _" ज्यादा देर यहाॅ पर रुकना अब ठीक नहीं है। "

" पर माॅ , । " विक्रम अपनी बात भी न पूरी कर पाया था कि रेणुका ने उसकी बात को काटते हुए कहा _" अभी यहां से चलो बेटा। अभी सही समय नहीं है ये किसी चीज़ के लिए। यहाॅ हम उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते क्योकि यहा उनकी ताकत ज्यादा है। पुलिस प्रशासन भी उनका ही कहना मानेंगे इस लिए कह रही हूं कि यहां रह कर कुछ भी करना ठीक नहीं है। मैं जानती हूं कि तुम्हारे अंदर प्रतिशोध की आग है और जब तक वो आग तुम्हारे अंदर रहेगी तुम चैन से जी नही सकोगे। इस लिए अब मैं तुम्हें किसी बात के लिए रोकूँगी नहीं , हाॅ इतना जरूर कहूँगी कि जो कुछ भी करना ये ध्यान में रख कर ही करना कि तुम्हारे बिना हम माॅ बेटी का क्या होगा ?"

" आप दोनो की सुरक्षा मेरी पहली प्राथमिकता होगी मॉ। " विक्रम को जैसे उसकी मन की मुराद मिल गई थी। अंदर ही अंदर कुछ भी करने की आज़ादी के एहसास को महसूस करके ही वह खुश हो गया था किन्तु प्रत्यक्ष में बोला _" अब वह होगा मॉ जिससे आपको अपने इस बेटे पर गर्व होगा। चलिए अब चलते हैं यहॉ से। "

इसके बाद तीनों ही चल पड़े वहॉ से। सामान ज्यादा कुछ था नहीं। पैदल चलते हुए लगभग बीस मिनट में तीनो मेन रोड के उस जगह पहुँचे जहॉ से बस मिलती थी। हलाकि ये जगह उनके गॉव के पास की नहीं थी किन्तु रेणुका ने ही घूम कर इधर से आने को कहा था। शायद उसके मन में इस बात का अंदेशा था कि अगर जयदीप की पिटाई का पता उसके घर वालों को हो गया होगा तो वो लोग उसे ढूँढ़ते हुए आ भी सकते थे।

हलाकि ये रेणुका के मन का वहम ही साबित हुआ। क्योकि अभी तक कोई भी उन्हें ढंढ़ने नहीं आया था जबकि वो बस में सवार हो कर शहर के लिए निकल भी चुके थे। कदाचित जयदीप की हालत के बारे में अब तक किसी को पता न चला था। वरना अब तक वो शहर के लिए निकल न पाते। मगर रेणुका के मन में उन लोगों के आ जाने का ये डर तब तक बना ही रहा जब तक कि ट्रेन में बैठ कर मुंबई के लिए निकल न गए थे। जबकि विक्रम और निशा ऐसे वर्ताव कर रहे थे जैसे उन्हें इस सबका कोई भय ही न था।

ट्रेन जब स्टेशन से बहुत दूर निकल गई तब जा कर रेणुका के मन से थोड़ा भय कम हुआ और वह भी सामान्य हो गई। दिलो दिमाग मे विचारों का बवंडर सा चल रहा था। कैसा समय आ गया था उनके जीवन में जिसकी शायद उन्होंने स्वप्न में भी कल्पना न की थी। अपने ही घर से बेदखल कर दिया गया था उन्हें और आज ये आलम था कि उन्हें अपनी जान तथा इज्जत बचाने के लिए भी बहुत दूर कहीं छिप जाने पर विवश होना पड़ रहा था। रेणुका विचारों के सागर में गोते लगा रही थी। उसका चेहरा बेहद ही विचलित और उदास हो उठा था। आखों में आसू तैरने लगे थे। विक्रम अपनी मॉ को ही देखे जा रहा था। उसे एहसास था कि उसकी मॉ के दिलो दिमाग मे इस समय क्या चल रहा है। उसके माता पिता हमेशा ही उसके लिए एक आदर्श थे। वह अपनी मॉ और बहन को एक पल के लिए भी विचलित या उदास नहीं देख सकता था। उसकी बहन निशा उसकी एक बाह थामे उसके कंधे में अपना सिर टिकाए बैठी थी। आज उसे अपने बड़े भाई पर पहले से कहीं ज्यादा स्नेह और प्यार आ रहा था। उसे लग रहा था कि उसके भैया के रहते अब दुनिया की कोई बला उन पर अपना असर नहीं दिखा सकती थी।

विक्रम का चेहरा एकाएक पत्थर की तरह सख्त हो गया। मन ही मन उसने शायद कोई संकल्प सा ले लिया था। आखों में खून सा उतरता हुआ नजर आया। नथुने फूलने पिचकने लग गए थे। सहसा रेणुका की नजर अपने बेटे पर पड़ी। बेटे की हालत का अंदाजा होते ही उसकी आखें भर आईं। उसने शीघ्रता से विक्रम को अपने सीने में छुपा लिया। मॉ का ह्रदय ममता के विशाल सागर से भरा होता है जिसकी ठंडक से तुरंत ही विक्रम शान्त हो गया। 'फिक्र मत कीजिए मॉ अब ऐसा तांडव होगा कि हमारा बुरा करने वालों की रूह कॉप जाएगी।' विक्रम ने मन ही मन कहा और अपनी आखें बंद कर ली।

विक्रम अपनी मॉ और बहन को लेकर मुंबई के लिए निकल चुका था। जबकि यहॉ हवेली में माहौल बड़ा ही गर्म था। जयदीप का जब शाम तक कोई अता पता न चला तो उसके पिता सत्यम सिंह तथा मॉ सोनिया को चिंता हुई। सत्यम सिंह ने अपने आदमियों को जयदीप की तलाश मे पूरे गॉव तथा आस पास के गावों में भेज दिया और खुद अपने खेत में बने मकान की तरफ चल दिया। उसके साथ कुछ आदमी और थे।

सत्यम सिंह अपनी वकील की नौकरी छोंड़ चुका था। अब वह बिजनेस मैन था तथा सारी जमीनों पर मजदूरों द्वारा फसल उगाता था। उसने अपने सबसे छोटे भाई सुंदर को भी अपनी तरफ कर लिया था। ये कैसे हुआ ये तो खैर बाद में पता चलेगा।

सत्यम सिंह अपने आदमियों के साथ जब खेत वाले मकान पर पहुचा तो वहा का नजारा देख कर हक्का बक्का रह गया। मकान में जो कमरा विक्रम की मॉ और उसकी बहन के लिए दिया गया था वो खुला पड़ा था और बाहर जयदीप की मोटर साईकिल एक तरफ पड़ी थी। कुछ दूरी पर सत्यम सिंह का बेटा अधमरी हालत मे पड़ा था खून से लथपथ। अपने बेटे की ऐसी हालत देख कर सत्यम सिंह की मानो नानी मर गई।

सत्यम सिंह को समझ न आया कि उसके बेटे की ये हालत कैसे हो गई? उसने शीघ्र ही अपने बेटे को उठाया और अपनी गोंद मे लिया। एक आदमी जल्दी ही ट्यूब बेल से पानी लाया और जयदीप के चेहरे पर हल्के हल्के छिड़का। थोड़ी ही देर मे जयदीप को होश आ गया। सत्यम सिंह ने अपने आदमियों से कह कर उसे अपनी कार मे बिठाया और हॉस्पिटल की तरफ बढ़ गया।

रास्ते में सत्यम सिंह के पूछने पर जयदीप ने सुबह की सारी राम कहानी अपने पिता को बताई। सत्यम सिंह ये जान कर चौंका कि उसका भतीजा विक्रम यहा आया था और उसने ही जयदीप की ये हालत की है। इतना ही नही वो ये सब करने के बाद उसकी जानकारी में आए बग़ैर बड़ी आसानी से अपनी मॉ और बहन को अपने साथ ले भी गया। सत्यम सिंह को ये सब जानकर बेहद गुस्सा आया। उसने तुरंत ही किसी को फोन लगाया और कुछ देर बात करने के बाद फोन काट दिया।

" तुम फिक्र मत करो बेटे। " फिर उसने जयदीप से कहा _" बहुत जल्द वो हरामज़ादा तुम्हारे कदमों के नीचे होगा। मैंने पुलिस को इनफार्म कर दिया है और कह दिया है कि उन सबको किसी भी हालत में पकड़ कर हमारे पास ले कर आए। "

" उस कमीने ने मुझे बहुत मारा है डैड। " जयदीप ने कराहते हुए अपने पिता से कहा _" मैं उसे छोड़ूँगा नही , जान से मार दूँगा उस हरामजादे को। "

" चिन्ता मत करो बेटे। " सत्यम सिंह ने भभकते हुए लहजे में कहा था _" सबका हिसाब देना पड़गा उसे। अभी तक मै नरमी से पेश आ रहा था। मगर अब मै उन्हें दिखाऊंगा कि मुझसे और मेरे बेटे से उलझने का अंजाम क्या होता है ?"

" मालिक हम हॉस्पिटल पहुँच गए हैं। " ड्राइविंग करते हुए एक आदमी ने कहा।

उस आदमी की बात सुन कर सत्यम सिंह ने कार से उतर कर जयदीप को भी सहारा देकर नीचे उतारा और हॉस्पिटल के अंदर की तरफ बढ़ गया।

एक घंटे बाद सत्यम सिंह अपने बेटे के साथ हवेली मे पहुचा। जयदीप की हालत अब बेहतर थी क्योकि हॉस्पिटल में उसकी ड्रेसिंग हो गई थी। सत्यम सिंह ने अपनी पत्नी सोनिया को सब बताया कि क्या क्या हो गया है आज। सारी बाते सुन कर सोनिया की भी भृकुटी तन गई। उसने तो सर पर आसमान ही उठा लिया।

" ये सब आपकी वजह से हो रहा है। " सोनिया ने गुस्से से कहा _" मैं तो उस दिन भी कह रही थी कि नाग नागिन और उनके सँपोलों को कुचल दीजिए मगर आप ही नहीं माने। "

" धीरे बोलो सोनिया। " सत्यम ने सहसा तपाक से बोला _" दीवारों के भी कान होते हैं। "

" मुझे किसी की परवाह नही है। " सोनिया ने कहा _" आज अगर मेरे बेटे को कुछ हो जाता तो आग लगा देती इस हवेली को। "

" मैने उनका इंतजाम कर दिया है।" सत्यम सिंह ने कहा _" वो हमसे बच कर कहीं नही जा पाएंगे। बस इंतजार करो वो सब तुम्हारे सामने होंगे फिर जो दिल करे करना उन सबके साथ। "

" डैड मैं तो बस निशा को चाहता हू। " जयदीप कमीने ढंग से मुस्कुराया था बोला _" बाकी का आप और मॉम जानो। "

" जो कुछ करना सोच समझ कर करना बेटे। " सत्यम सिंह ने राजदाराना लहजे में कहा _" तुम्हारे दादा दादी की चिन्ता नहीं है हमें। बस अपने चाचा सुंदर से जरा सावधान रहना। उसे ये सब पता न चल पाए कि हम क्या कर रहे हैं ? हमने बड़ी मुश्किल से उसे अपनी तरफ किया है। "

" वो तो ठीक है डैड। " जयदीप ने कहा _" लेकिन ऐसा कब तक चलेगा ? आखिर चाचा लोगो को हम अपने सभी कामों मे शामिल कब करेंगे ?"

" बेटा ये इतना आसान नहीं है। " सत्यम ने कहा _" तुम्हारे चाचा और चाची लोग जरा अलग तबियत के हैं। "

" अगर ऐसा नही हो सकता तो। " सोनिया ने कहा _" तो फिर हमारे पास एक ही रास्ता है। "

" हमें कोशिश करते रहना चाहिए।" सत्यम ने कहा _" तुम भी अपर्णा पर कोशिश करती रहो। "

तभी सत्यम का मोबाइल बजा।

" लो लगता है उन लोगों को ढूँढ़ लिया गया है। " सत्यम सिंह ने अपनी कोट की जेब से मोबाइल निकालते हुए कहा और मोबाइल की कॉल को रिसीव कर कान से लगा लिया। उधर से जाने क्या कहा गया जिसे सुन कर सत्यम के चेहरे पर गुस्से के भाव आ गए।

" ऐसा कैसे हो सकता है ?" सत्यम सिंह गुर्रया _" वो लोग ट्रेन से कैसे गायब हो गए ? तुम उन्हें ढूँढ़ो और शीघ्र हमारे पास लेकर आओ वरना ठीक नहीं होगा समझे ?"

"----------"

" अरे जाएगे कहाँ ?" सत्यम ने कहा _" ठीक से ढूँढ़ो उन्हें। " कहने के साथ ही सत्यम ने फोन काट दिया।

" क्या हुआ ?" सोनिया ने पूछा _" किससे बात कर रहे थे आप ?"

" डीसीपी रवि राणा से। " सत्यम ने बताया _" उसका कहना है कि विक्रम अपनी माँ और बहन सहित ट्रेन से गायब हैं। "

" क् क्या ...???" सोनिया और जयदीप एक साथ उछल पड़े __" ऐसा कैसे हो सकता है भला ? वो सब मुंबई के लिए ही निकले थे। "

" हो सकता है कि वो लोग ट्रेन में बैठे ही न हों। " सोनिया ने सोचने वाले भाव से कहा _" कदाचित उन्हे ये अंदेशा रहा हो कि उनकी करतूत का पता चलते ही उन्हे पकड़ने के लिए आप उनके पीछे पुलिस को या अपने आदमियों को लगा देंगे। इस लिए वो ट्रेन से सफर करना बेहतर न समझे हों। "

" ऐसा नहीं है। " सत्यम ने कहा _" क्योकि विक्रम ने तत्काल रिज़र्वेशन की तीन टिकटें ली थीं। रेलवे कर्मचारियों के पास इसका सबूत है कि उन्होने तत्काल रिजर्वेशन की तीन टिकटें ली थी मुंबई के लिए। "

" तो फिर वो कहाँ गायब हो गए ?" जयदीप ने कहा _" उन्हे ये जमीन खा गई या आसमान निगल गया ?

" चिंता मत करो। " सत्यम सिंह ने कहा _" हम उन्हें जरूर ढूंढ् लें गे।

२

विक्रम अपनी मॉ और बहन को ट्रेन से उतार कर अब बस पकड़ चुका था। उसका खयाल था कि बस से वह किसी अन्य शहर जाएगा और फिर वहॉ से किसी दूसरी ट्रेन से मुंबई जाएगा।

" तुम हमें ट्रेन से उतार कर बस में क्यों लाए बेटा ?" मॉ रेणुका ने सबसे पहले यही सवाल पूछा था।

" ट्रेन में जाने से खतरा था मॉ। " विक्रम ने कहा _" बड़े पापा ने हमें पकड़ने के लिए अपने आदमी भेजे थे जो सभी जगह चेक कर रहे थे। "

" क् क्या ..???" रेणुका बुरी तरह चौंकी __" पर तुम्हें कैसे पता ?"

" मुझे इस बात का पहले से अंदेशा था मॉ। " विक्रम ने कहा _" इस लिए मैंने अपने एक दोस्त को बड़े पापा की हर गतिविधि की खबर रखने के लिए कह दिया था फोन के जरिए। जब हम लोग ट्रेन मे बैठ कर चले थे तब तक ठीक था। आप जानती है ट्रेन वहा से निकलने के बाद एक जगह रुक गई थी और फिर छ : घंटे रुकी रही। क्योंकि उसमें कोई तकनीकी खराबी थी। मेरे दोस्त का फोन शाम को आया था उसने बताया कि बड़े पापा ने हमे ढूढ़ने के लिए हर जगह अपने आदमी भेज दिये हैं। मुझे पता था ट्रेन मे उनके आदमी हमे बड़ी आसानी से ढूढ़ लेंगे क्योकि उन्हे रेल कर्मचारियो से हमारे बारे में पता चल जाता और हम पकड़े जाते। इस लिए मैंने आप सबको ट्रेन से उतार कर किसी अन्य तरीके से मुंबई ले जाने का सोचा। "

" आपने बहुत अच्छा किया भैया।" निशा ने कहा _" अब वो हमें नही ढूढ़ पाएंगे। "

" इतना लम्बा चक्कर लगाने का यही मतलब है कि वो हमें उस रूट पर ढूढ़ेगे जबकि हम यहा हैं। " विक्रम ने कहा _" मैं अकेला होता तो ये सब नही करता बल्कि खुल कर उन सबका मुकाबला करता मगर आप लोगों की सुरक्षा जरूरी थी। "

" अभी मुकाबला करने का समय नही है बेटा। " रेणुका ने कहा _" जब सही समय होगा तब मैं खुद तुझे नही रोकूँगी। "

" आप बस देखती जाओ मॉ। " विक्रम ने कहा _" कि अब क्या करता हूँ मैं ?"

" हॉ भैया आप उन्हें छोंड़ना नहीं। " निशा ने कहा _" बहुत गंदे लोग हैं वो सब। हमे बहुत दुख दिया है उन्होने। "

" फिक्र मत कर मेरी गुड़िया। " विक्रम ने कहा _" मैं उन सबसे चुन चुन कर हिसाब लूँगा। "

ऐसी ही बातें करते हुए ये लोग दूसरे दिन मुंबई पहुँच गए। विक्रम उन दोनो को सुरक्षित अपने फ्लैट पर ले गया। ये फ्लैट उसे कम्पनी द्वारा मिला था जिसमें दो कमरे एक ड्राइंग रूम एक डायनिंग रूम एक लेट्रिन बाथरूम तथा एक किचेन था। पीछे की तरफ बड़ी सी बालकनी थी।

कुल मिलाकर इन सबके लिए इतना पर्याप्त था रहने के लिए।

विक्रम चूँकि यहाँ अकेला ही रहता था इस लिए वो साफ सफाई से ज्यादा मतलब नही रखता था। हलाँकि सफाई वाली आती थी लेकिन वो सफाई नही करवाता था ऐसे ही रहता था। फ्लैट की गंदी हालत देख कर दोनो माँ बेटी ने पहले फ्लैट की साफ सफाई की। विक्रम ने कहा भी कि सफर की थकान है तो पहले आराम कीजिए, सफाई का काम वह कल करवा देगा जब सफाई वाली बाई आएगी तो लेकिन माँ बेटी न मानी और खुद ही साफ सफाई में लग गईं।

इस बीच विक्रम मार्केट निकल गया था किराना का सामान लाने के लिए। हलाकि कंपनी से रहने खाने का सब मिलता था लेकिन विक्रम बाहर ही होटल मे खाना खाता था। फ्लैट में गैस सिलेंडर और चूल्हा वगैरा सब था किन्तु राशन नही था। दो कमरों मे से एक कमरे में ही एक बेड था। किचेन बड़ा था जिसमें एक फ्रिज़ भी था। ड्राइंग रूम मे एक बड़ा सा एल सी डी टीवी भी था।

लगभग दो घंटे बाद विक्रम मार्केट से लौटा। उसने देखा कि फ्लैट की काया ही पलट गई है। हर चीज अपनी जगह ब्यवस्थित तरीके से रखी गई थी। विक्रम को इस तरह हर जगह आँखें फाड़े देखता देख निशा ने कहा_"न आप खुद का खयाल रखते हैं और न ही किसी और चीज का। लेकिन अब ऐसा नही होगा, अब हम आ गए हैं तो आपका अच्छे से खयाल रखेंगे।"

" ओहो क्या बात है।" विक्रम मुस्कुराया _" हमारी गुड़िया तो बड़ी हो गई लगती है। "

" हाँ तो ?" निशा विक्रम के बगल से सट कर खड़ी हो गई _" देखिए आपके कंधे तक बड़ी हो गई हूँ। "

" हाँ हाँ तू तो मेरी भी अम्मा हो गई है न। " रेणुका ने कहा _" धेले भर की तो अकल है नहीं और बड़ी बड़ी बाते करने लगी है। "

" देखिए भैया जब देखो माँ मुझे डाँटती ही रहती हैं।" निशा ने बुरा सा मुह बनाते हुए कहा।

" मत डाँटा कीजिए माँ गुड़िया को। " विक्रम ने निशा को अपने सीने से लगाते हुए कहा _" ये जैसी भी है मेरी जान है ये। "

" सुन लिया न माँ आपने ?" निशा ने विक्रम के सीने से सिर उठा कर अपनी माँ रेणुका की तरफ देख कर कहा _" मैं भैया की जान हूँ और हाँ ... भैया भी मेरी जान हैं ... । "

" अच्छा ठीक है बाबा। " रेणुका ने हँस कर कहा _" अब भाई को छोंड़ और जा जाकर नहा ले , फिर मुझे भी नहाना है और खाना भी बनाना है। "

" मैं खाना बाहर से ही ले आया हूँ माँ। " विक्रम ने कहा _" आप लोग खा पी कर आराम

कीजिए कल से यहीं खाना पीना बनाना। "

" अब ले आया है तो चल कोई बात नहीं। " रेणुका ने कहा _" लेकिन आज के बाद बाहर का खाना पीना बंद। ठीक है न ??"

" जैसा आप कहें मॉ। " विक्रम ने कहा और सारा सामान अंदर किचन में रख दिया।

रेणुका के कहने पर निशा नहाने चली गई। जबकि विक्रम वहीं ड्राइंग रूम में रखे सोफे पर बैठ गया। अचानक ही उसके चेहरे पर गंभीरता के भाव गर्दिश करने लगे थे। रेणुका

किचेन में सामान सेट कर रही थी।

विक्रम के मोबाइल पर किसी का कॉल आया। उसने मोबाईल की स्क्रीन पर फ्लैश कर रहे नाम को देखा तो होठों पर एक अजीब सी मुस्कान उभर आई।

" मैं आ गया हूॅ। " विक्रम ने कहा _" और अब मैं तैयार हूॅ उस काम के लिए , बोलो कहॉ मिलना है ?""

"_____"

" ठीक है फिर। " विक्रम ने कहा और फोन काट दिया। ' सत्यम सिंह भाटी अब अपनी बरबादी के दिन गिनने शुरू कर दे क्योकि अब विक्रम का क़हर तुम पर और तुमसे जुड़ी हर चीज़ पर टूटेगा '

उस व्यक्ति का नाम उमाकांत पाटिल था। ऊम्र यही कोई पचपन(५५) के आसपास की। सिर के नब्बे प्रतिशत बाल सिर से गायब थे। शरीर भारी भरकम था उसका किन्तु उसे मोटा नही कह सकते थे क्योकि कद की लम्बाई के हिसाब से उसका शरीर औसतन ठीक नजर आता था। भारी भरकम शरीर पर कीमती कपड़े थे। गले में सोने की मोटी सी चैन तथा दाएं हाथ की चार उॅगलियों में कीमती नगों से जड़ी हुई सोने की अॅगूठियॉ। इसी उसकी आर्थिक स्थित का अंदाजा लगाया जा सकता था कि वह निहायत ही कोई रुपये पैसे वाला रईस व्यक्ति था।

" तो तुम तैयार हो बरखुर्दार ?" उमाकांत पाटिल ने कीमती मेज के उस पार कीमती सोफे पर बैठे विक्रम की तरफ एक गहरी सास लेते हुए पूछा।

" जी बिलकुल सर। " विक्रम ने सपाट स्वर में कहा।

" तुम हमें सर की जगह अंकल कह सकते हो विक्रम बेटे। " उमाकांत ने अपनेपन से कहा _" वैसे भी हम तुम्हें अपने बेटे की तरह ही मानते हैं। बल्कि ये कहें तो ज्यादा अच्छा होगा कि तुम हमारे लिए हमारे बेटे ही हो। "

" आप मुझे अपना समझते हैं ये बहुत बड़ी बात है अंकल।" विक्रम ने गंभीर होकर कहा _" वरना अपने कैसे होते हैं ये मुझसे बेहतर कौन जानता होगा ?"

" इस युग में कोई किसी का नहीं होता बेटे। " उमाकांत ने कहा _" हर इंसान अपने मतलब के लिए रिश्ते बनाता है और रिश्तों को तोड़ता है। हम भी इसी युग में हैं इस लिए हमने भी अपने मतलब के लिए तुमसे एक रिश्ता बना लिया। ये आज के युग की सच्चाई है बेटे। "

" आपके मतलबीपन में एक अच्छाई है अंकल।" विक्रम ने कहा _" आप अपने मतलबीपन में किसी का अहित नहीं करते हैं और न ही किसी को तकलीफ देकर खुद के लिए कोई खुशी हासिल करते हैं। "

" ये तुम्हारा नज़रिया है बेटा। " उमाकांत ने कहा _" जो तुम हमारे बारे में ऐसा बोल रहे हो। मगर सोचो सच्चाई तो कुछ और ही है , हम जो करते हैं उससे भी तो सामने वाले को तकलीफ होती है फिर भले ही वह खुद कोई देश समाज के लिए किसी अभिशाप से कम न हो। "

" बुरे लोगों को मार कर या उन्हें तकलीफ देकर अच्छे लोगों को खुशिया देना कोई अपराध तो नहीं है।" विक्रम ने कहा।

" ख़ैर , छोड़ो इन बातों को। " उमाकांत ने पहलू बदला _" हम अपने मुख्य विषय पर बात करते हैं। "

" जी अंकल। " विक्रम ने अदब से कहा।

" हमने सारे कागजात तैयार करवा दिये हैं बेटे। " उमाकांत ने बड़ी सी मेज पर रखे अपने एक

छोटे से ब्रीफकेस को खोलते हुए कहा _" तुम एक बार खुद देख लो। फिर हम आगे की बात करेंगे। "

" इसकी क्या जरूरत थी अंकल। " विक्रम ने कहा।

" जरूरत थी बेटे। " उमाकांत ने कहा _" इतने बड़े बिजनेस एम्पायर को हमारे बाद संभालने वाला हमारा अपना कोई नहीं है। तुम तो सब जानते हो कि एक हादसे ने हमारा सब कुछ तबाह कर दिया था। हम नहीं जानते कि हमारे साथ ईश्वर ने ऐसा क्यों किया ? हमने तो कभी किसी का बुरा नहीं चाहा ... हॉ शायद ये हो सकता है कि हमारे पिछले जन्मों में किये गए किन्हीं पापों का ये फल मिला है हमें। "

विक्रम कुछ न बोला, बस देखता रह गया उस शख्स को जिसके चेहरे पर इस वक्त ज़माने भर का ग़म छलकने लगा था।

तुम हमारी कंपनी में दो साल पहले आए थे।" उमाकांत पाटिल कह रहा था_"तुम्हारे काम से हर कोई प्रभावित था जिसमे हम भी शामिल थे। कंपनी की जो ब्रॉच अत्यधिक नुकसान में चल रही थी वो तुम्हारी मेहनत और लगन से काफी मुनाफे के साथ आगे बढ़ गई। तुमने उन सभी का पर्दाफाश किया जो कंपनी को नुकसान पहुँचा रहे थे और मज़े की बात ये कि किसी को पता भी नहीं चल पाया कि किसने उनका भंडाफोड़ कर दिया।" उमाकांत ने कुछ पल रुक कर एक गहरी सास ली फिर बोला_"हम तुमसे बहुत प्रभावित थे बेटे और बहुत खुश भी। हमने तुम्हारे बारे में अपने तरीके से पता लगाया और जो जानकारी हमें मिली उससे हमें बहुत दुख भी हुआ। हमें तुम्हारे बारे में सब कुछ पता चल चुका था। हम जान चुके थे कि सबके सामने खुश रहने वाला ये लड़का अंदर से कितना और क्यों दुखी है? हमारा हमेशा से ही ये ध्येय रहा था कि हम हर उस सच्चे व्यक्ति की मदद करेंगे जो अपनो तथा वक्त के द्वारा सताया गया हो। हमने फैसला किया कि हम तुम्हारे लिए कुछ करेंगे। हम एक ऐसे इंसान की तलाश में भी थे जिसे हम खुद अपना बना सकें और जो हमारे इतने बड़े बिजनेस एम्पायर को हमारे बाद संभाल सके।"

" आज के समय में किसी ग़ैर के लिए इतना कुछ कौन सोचता और करता है अंकल ?" विक्रम गंभीर था बोला _" जबकि आज के युग में अपने ही अपने अपनों का बुरा करने में ज़रा भी नहीं सोचते या हिचकिचाते हैं। मेरे साथ मेरे अपनों ने जो कुछ किया है उसका हिसाब मैं सिर्फ अपने दम पर करना चाहता था अंकल। "

" हम तुम्हारी हिम्मत और बहादुरी की कद्र करते हैं बेटे। " उमाकांत ने कहा _" लेकिन ये हिम्मत और बहादुरी बिना किसी मजबूत आधार के सिर्फ हवा में लाठियॉ घुमाने से ज्यादा कुछ नहीं होता। तुम जिनसे टकराना चाहते हो वो आज के समय में तुमसे कहीं ज्यादा ताकतवर हैं। उनके पास ऊँची पहुँच तथा किसी भी काम को करा लेने के लिए रुपया पैसा है। जबकि तुम इन दोनो चीज़ों से विहीन हो बेटे। किसी से जब भी जंग करो तो सबसे पहले अपने पास एक ठोस और मजबूत बैकप बना के रखो जिससे तुम्हारे आगे बढ़ते हुए कदमों पर कोई रुकावट न आ सके। "

विक्रम कुछ न बोला जबकि उमाकांत ने उसके चेहरे पर उभर रहे सैकड़ों भावों को देखते हुए कहा_"हम जानते हैं कि तुम खुल कर पूरी निडरता से उनका मुकाबला करना चाहते हो वो भी उनके ही तरीके से। कुछ चीज़ें अनैतिक तथा पाप से परिपूर्ण तो हैं लेकिन चलो कोई बात नहीं। तुम सब कुछ अपने तरीके से करना चाहते हो मतलब 'जैसे को तैसा' वाली तर्ज पर।"

" मैं आपके कहने का मतलब समझता हूँ अंकल। " विक्रम ने अजीब भाव से कहा _" और यकीन मानिये ये सब करने में मुझे कोई खुशी नहीं होगी पर फिर भी वही करूं गा जिसे आप अनैतिक और पाप से परिपूर्ण कह रहे हैं। आज के समय में जैसे को तैसा वाली तर्ज पर अमल करना पड़ता है अंकल तभी सामने वाले को ठीक से समझ और एहसास हो पाता है कि वास्तव में उसने क्या किया था। "

" खैर छोड़ो इन बातों को। " उमाकांत ने पहलू बदला _" ये बताओ कि उनके खिलाफ तुम्हारा पहला कदम क्या होगा ?"

" मेरा पहला कदम उनके उस ताकत और पहुँच का मर्दन करना होगा जिसके बल पर वो ये सब कर रहे हैं।" विक्रम ने कठोर स्वर में कहा।

" तुम्हारी सोच ठीक है। " उमाकांत ने कहा _" मगर हम ये चाहते थे कि तुम वैसा करो जिससे उन्हें ये पता ही न चल सके कि ये क्या और कैसे हुआ ?"

" पता तो ऐसे भी न चलेगा अंकल। " विक्रम ने कहा _" आप बस वो कीजिएगा जो करने का मैं आपको इशारा करूं। "

" ठीक है बेटे। " उमाकांत ने कहा _" वही होगा जो तुम कहोगे। हम तुम्हारे साथ हैं। " कहने के साथ ही उमाकांत ने विक्रम की तरफ एक कागज बढ़ाया _" इस कागज पर साइन कर दो बेटे और अपने पास ही रखो इसे। "

" इस सबकी क्या जरूरत है अंकल ?" विक्रम ने कागज को एक हाथ से पकड़ते हुए कहा।

" हमारे जीवन का कोई भरोसा नहीं है बेटे। " उमाकांत ने कहा _" दो बार हमें हर्ट अटैक आ चुका है , अब कौन जाने कब अटैक आ जाए और हम इस दुनियाँ से ....."

" न नहीं अंकल नहीं। " विक्रम तुरंत ही उमाकांत की बात काटते हुए बोल पड़ा _" आपको कुछ नहीं होगा। ईश्वर करे आपको मेरी उमर लग जाए। आप हमेशा मेरे सामने रहें और मेरा मार्गदर्शन करते रहें। "

" हा हा हा बेटे तुम्हारी इन बातों ने हमें ये बता दिया है कि तुम्हारे दिल में हमारे लिए क्या है ?" उमाकांत के चेहरे पर खुशी के भाव थे _" तुम हमें यकीनन अब अपना मानने लगे हो और हमें ये जान कर बेहद खुशी भी हुई है। एक मुद्दत हो गई थी अपने किसी अज़ीज़ के ऐसे अपनेपन का एहसास किये हुए। तुम मिल गए तो अब ऐसा लगने लगा है कि हम अब अकेले नहीं हैं वरना इतने बड़े बंगले में तन्हाईयों के सिवा कुछ न था। सारी दुनिया धन दौलत के पीछे रात दिन भागती है बेटे वो भूल जाती है कि इंसान की सबसे बड़ी दौलत तो उसके अपने

होते हैं। "

" ये बातें कोई नहीं समझता अंकल। " विक्रम ने कहा _" समझ तथा एहसास तब होता है जब हमें किसी चीज़ की कमी का पता चलता है। जिनके पास अपने होते हैं उन्हें अपनों की अहमियत का एहसास नहीं होता और जिनके पास अपने नहीं होते उन्हें संसार की सारी दौलत महज बेमतलब लगती है , वो चाहते हैं कि इस दौलत के बदले काश कोई अपना मिल जाए। "

" संसार में हमारे पास किसी चीज़ का जब अभाव होता है तभी हमें उसकी अहमियत का एहसास होता है बेटे। " उमाकांत ने कहा _" हलाँकि दुनियाँ में ऐसे भी लोग हैं जिनके पास सब कुछ होता है मगर वो सबसे ज्यादा अपनों को अहमियत देते हैं , धन दौलत तो महज हमारी आर्थिक जरूरतों को पूरा करने का जरिया मात्र होती है। "

विक्रम कुछ न बोला ये अलग बात है कि उसके चेहरे पर कई तरह के भाव उभरते और लुप्त होते नज़र आ रहे थे।

" हम चाहते हैं कि। " जबकि उमाकांत कह रहा था _" तुम अपनी माँ और बहन के साथ अब हमारे साथ इसी घर में रहो बेटे। कम से कम हमें भी ये एहसास होता रहेगा कि हमारा भी अब एक भरा पूरा परिवार है। "

" मैं इसके लिए माँ से बात करू गा अंकल। " विक्र म ने कहा।

" हम खुद चल कर तुम्हारी माँ से बात करेंगे बेटे। " उमाकांत ने गंभीरता से कहा _" हम उससे कहेंगे कि वो हमें अपना बड़ा भाई समझ कर हमारे साथ ही रहे। "

" आप फिक्र न करें अंकल। " विक्रम ने कहा _" मैं माँ से बात कर लूँगा। वो इसके लिए इंकार नहीं करेंगी।

" ठीक है बेटे। " उमाकांत ने कहा _" हम तुम सबके यहाँ आने का इंतज़ार करेंगे। "

कुछ देर और ऐसी ही कुछ बातें हुईं फिर विक्रम वहाँ से अपने फ्लैट के लिए निकल गया। विक्रम ने अपनी माँ रेणुका से उमाकांत से संबंधित सारी बातें बताई, जिसे सुन कर रेणुका के दिलो दिमाग में एक सुकून सा हुआ।

" आज के समय में इतना कुछ कौन करता है बेटा ?" रेणुका ने गंभीरता से कहा _" मगर हमारे साथ हमारे अपनों ने इतना कुछ किया है जिससे अब आलम ये है कि किसी पर भरोसा नहीं होता। "

" उमाकांत पाटिल बहुत अच्छे इंसान हैं माँ। " विक्रम ने कहा _" इस संसार में उनका अपना कोई नहीं है , वो मुझे अपने बेटे जैसा मानते हैं। अपनी सारी दौलत तथा सारा कारोबार वो

मेरे नाम कर चुके हैं , अगर उनके मन में कोई खोट होता तो वो ऐसा क्यों करते भला ?"

" ये क्या कह रहे हो तुम ?" रेणुका बुरी तरह चौंकी _" उसने अपना सब कुछ तुम्हारे नाम कर दिया ?"

" हॉ मॉ। " विक्रम ने कहा _" यही सच है और इस वक्त वो सारे कागजात मेरे पास हैं जिनसे ये साबित होता है कि अब से मैं ही उनके सारे कारोबार तथा सारी दौलत का मालिक हूॅ। अब आप ही बताइए माॅ ... क्या अब भी उनके बारे में आपके मन में कोई शंका है ?"

" यकीन नहीं होता बेटे। " रेणुका के जेहन में झनाके से हो रहे थे , अविश्वास भरे लहजे में कहा उसने _" एक ऐसा आदमी अपनी सारी दौलत व कारोबार तुम्हारे नाम कर दिया जिसके बारे में न हमें कुछ पता है और न ही हमारे बारे में उसे। "

" सब ऊपर वाले की माया है मॉ। " विक्रम ने कहा _" ऊपर वाले ने कुछ सोच कर ही ये अविश्वसनीय तथा असंभव सा कारनामा किया है। उमाकांत अंकल इसके लिए मुझे बहुत पहले से मना रहे थे किन्तु मैं ही इंकार करता रहा था। फिर उन्होंने मुझे समझाया कि बिना मजबूत आधार के हम कोई लड़ाई नहीं लड़ सकते। उन्होंने ये भी कहा कि उनकी सारी दौलत उनके बाद किसी ट्रस्ट या सरकार के हाथ चली जाती। इससे अच्छा तो यही है कि वो ये सब किसी ऐसे इंसान को दे दें जिसे वो अपना समझते भी हों और जिसे इसकी सख्त जरूरत भी हो। मैं उनकी कंपनी में ऐज अ मैनेजर काम करता था , वो मुझसे तथा मेरे काम से खुश थे। उनके दिल में मेरे लिए अपनेपन का भाव जागा। उन्होंने मेरे बारे में सब कुछ पता किया और जब उन्हें मेरी सच्चाई व मेरे साथ मेरे अपनों के किये गए अन्याय का पता चला तो एक दिन उन्होंने मुझे अपने बंगले में बुला कर मुझसे बात की। "

" तुमने ये सब मुझे पहले कभी बताया क्यों नहीं बेटा ?" रेणुका ने विक्रम के चेहरे की तरफ देखते हुए कहा _" इतना कुछ हो गया और तमने मुझसे छिपा कर रखा। क्या ये अच्छी बात है ?"

" आपने भी तो मुझसे वो सब कुछ छुपाया मॉ। " विक्रम ने सहसा गमगीन भाव से कहा _" जो बड़े पापा और छोटे चाचा लोगों ने आपके और मेरी बहन के साथ किया। मेरे पिता जी की मौत कैसे हुई ये छुपाया गया मुझसे। मगर मैं सब जानता हूॅ माॅ , आपने भले ही मुझसे छुपाया मगर मैं सब जानता हूॅ। "

" क् क् क्या जानते हो तुम ?" रेणुका हड़बड़ा गई।

" जाने दीजिये मॉ। " विक्रम ने फीकी मुस्कान के साथ कहा _" अब इन सब बातों का समय नहीं है , अब समय है उन लोगों से बदला लेने का। "

" जाने कैसे दूॅ बेटा ?" रेणुका ने अजीब भाव से कहा _" मुझे जानना है कि तुम्हें ये सब कैसे पता चला ?"

" इतना कुछ हो गया। " विक्रम कह रहा थ ा _" एक हॅसता खेलता संसार कैसे इस तरह तिनका तिनका हो कर बिखर गय ा ? मैं कोई बच्चा नहीं था मॉ जिसे इन सब बातों का एहसास नहीं था बल्कि सब समझता था मैं। "

" हमारे भाग्य में यही सब कुछ लिखा था बेटे। " रेणुक ा की आ ॅखें छलक पड़ ी _" शायद ऊपरवाला हमसे ख़फा हो गया था। "

" कोई बात नहीं मॉ। " विक्रम ने कह ा _" अब उन लोगों का भाग्य मैं लिखूॅगा। सॉपों से खेलने का बहुत शौक है न तो मैं उन्हें बताऊगा कि सॉप को जो दूध पिलाते हैं एक दिन वही सॉप उन्हें भी डस कर मौत दे देता है। "

" क्या कहना चाहते हो तुम ?" रेणुक ा मुह और आखें फाड़े देखने लगी थी विक्रम को।

" हॉ मॉ। " विक्रम कह रहा थ ा _" मुझे सब पता है। मेरे पिता जी की मौत सर्प के काटने से हुई थी लेकिन वो स्वाभिक रूप से नहीं हुआ था बल्कि सब कुछ पहले से सोचा समझा गया एक प्लान था। एक साजिश थी म ा ॅ , मेरे पिता जी को अपने रास्ते से हमेशा के लिए हटा देने की। "

" ये तुम क्या कह रहे हो बेट े ?" रेणुक ा उछल पड़ ी , आखों से झर झर आ ॅसू बहने लगे उसक े _" ये सब उन लोगों की साजिश थ ी ?"

" हॉ यही सच है मॉ। " विक्रम ने कह ा _" आपको इस बात का पता नहीं है लेकिन मुझे है। मैं तो ये भी जानता हूॅ मॉ कि ये सब क्यों हुआ ?"

" क् क् क्या जानते हो तुम ?" रेणुक ा के चेहरे पर अविश्वास के भाव थे।

" वही जो आप भी जानती हैं। " विक्रम ने अपनी मॉ रेणुक ा की आखों मे झॉकते हुए कह ा _" कहिये तो बता भी दूॅ आपको। "

" न नहीं नही ं " रेणुक ा के चेहरे पर घबराहट के साथ साथ लाज और शर्म की लाली छाती चली गई। उसका सिर नीचे की तरफ झुक गया।

" आपको नजरें चुराने की कोई जरूरत नहीं है मॉ। " विक्रम ने अपने दोनों हाथ ो से मॉ रेणुक ा का शर्म से लाल किन्तु खूबसूरत सा बेदाग़ चेहरा थामते हुए कह ा _" आपने ऐसा कोई काम नहीं है जिससे आपको मुझसे ही नहीं बल्कि किसी से भी नज़रें चुराना पड़े। आप तो गंगा की तरह पवित्र हैं म ा ॅ , जिसकी सिर्फ पूजा की जा सकती है। "

" ब बेटे। " रेणुक ा बुरी तरह रोते हुए अपने बेटे के चौड़े सीने से जा लगी। उसने कस कर विक्रम को जकड़ा हुआ था। विक्रम ने भी मॉ को च ी पका लिया फिर बोल ा _" नहीं म ा ॅ , अब आप रोएंगी नहीं। रोने धोने वाला वक्त गुज़र गया। अब तो रुलाने वाला वक्त शुरू होगा। "

" कितनी नासमझ थी मैं। " रेणुका ने विक्रम के सीने से लगे हुए ही गंभीरता से कहा _" मैं जिस बेटे को छोटा और अबोध समझ रही थी तथा ये भी कि वो बहुत मासूम है नासमझ है अभी वो तो अपनी छोटी सी ऊम्र में भी कहीं ज्यादा समझदार और जिम्मेदार हो गया है। मैंने सब कुछ अपने बेटे से छुपाया , सिर्फ इस लिए कि मैं अपने बेटे को खो देने से डरती थी। "

" आप एक माँ हैं माँ। " विक्रम ने कहा _" और आपने जो कुछ भी किया अपनी ममता से मजबूर हो कर किया। इस लिए इसके लिए मुझे आपसे कोई शिकायत नहीं है। लेकिन हाँ एक शिकायत जरूर है। "

" अच्छा। " रेणुका ने विक्रम के सीने से अपना सिर अलग किया तथा ऊपर बेटे के की आखों मे प्यार से देखते हुए कहा _" ऐसी क्या शिकायत है मेरे बेटे को मुझसे , जरा मुझे भी तो पता चले। "

" शिकायत यही है कि। " विक्रम ने कहा _" आप हर पल खुद को दुखी रखती हैं और अपनी आँखों पर तरस खाने की बजाय उन्हें रुलाती रहती हैं। ये हर्गिज़ भी अच्छी बात नहीं है। "

" अब से ऐसा नहीं होगा। " रेणुका ने मुस्कुराते हुए कहा _" अब मैं न तो खुद को दुखी रखूँगी और न ही अपनी आखों को रुलाऊँगी। अब ठीक है न ?"

" यही बात आप मेरी कसम खा कर कहिए। " विक्रम ने कहने के साथ ही माँ रेणुका का दाहिना हाथ पकड़ कर अपने सिर पर रखा।

" न नहीं नहीं। " रेणुका ने विक्रम के सिर से तुरंत ही अपना हाथ खींच लिया _" मैं इसके लिए तुम्हारी कसम नहीं खा सकती मेरे लाल। तुम तो जानते हो एक माँ अपने बच्चों के लिए कितना संवेदनशील होती है। उसका ममता से भरा हुआ ह्रदय इतना कोमल और कमजोर होता है कि अपने बच्चों के लिए एक पल में पिघल जाता है। सीने में पल भर में भावना का ऐसा तूफान उठ पड़ता है कि उसे रोंकना मुश्किल हो जाता है , और आंखें तो जैसे इस इंतजार में ही रहती हैं कि कब वो छलक पड़ें। "

विक्रम माँ की बात सुन कर मुस्करा उठा। माँ के सुंदर चेहरे और नील सी झीली आखों में खुद के लिए बेशुमार स्नेह व प्यार देखता रहा और हौले से झुक कर पहले उन आखों को फिर माँ के माथे को प्यार से चूँम लिया।

" क्या बात है ?" रेणुका विक्रम के इस कार्य पर मुस्कुराई तथा अपनी आखों की दोनो भौहों को ऊपर नीचे करके कहा _" आज अपनी इस बूढ़ी माँ पर बड़ा प्यार आ रहा है मेरे बेटे को। "

" प्यार तो हमेशा से था माँ। " विक्रम ने कहा _" और हमेशा रहेगा भी। मगर आपने खुद को बूढ़ी क्यों कहा ?"

" अरे पगले ! अब मैं बूढ़ी हूँ तो बूढ़ी ही कहूँगी न खुद को। " रेणुका ने हँस कर कहा।

" नहीं माँ। " विक्रम कह उठा _" आप बूढ़ी बिलकुल भी नहीं हैं। आप तो गुड़िया की बड़ी बहन लगती हैं। आप खुद देख लीजिए। " कहने के साथ ही विक्रम ने माँ रेणुका को कमरे में एक तरफ दीवार से सटे एक बड़े से आदम कद आईने के सामने ला कर खड़ा कर दिया।

" ये ये सब क्या कर रहा है बेटा ?" रेणुका हँसते हुए बोली , उसने सामने लगे आईने में खुद को देखा। उसके पीछे ही विक्रम उसे उसके दोनो कंधों से पकड़े हुए खड़ा था।

" अब गौर से देखिए माँ। " विक्रम ने आईने में अपनी माँ को देखते हुए मुस्कुरा कर कहा _" देखिए अपने आपको। आप अब भी मेरी माँ नहीं बल्कि मेरी बड़ी बहन लगती हैं न ?"

" हे भगवान !" रेणुका ने हँसते हुए कहा _" तुम्हें मैं तुम्हारी बड़ी बहन लगती हूँ ? कोई और सुने तो क्या कहे ?"

" मुझे किसी से क्या मतलब ?" विक्रम ने कहा _" जो सच है वो बोल रहा हूँ। गुड़िया आपकी ही फोटो कॉपी है माँ। मतलब आप जब गुड़िया की उमर में रहीं होंगी तब आप बिलकुल गुड़िया जैसी ही दिखती रही होंगी। "

" हाँ तुम्हारी ये बात तो सच है बेटे कि गुड़िया मुझ पर ही गई है। " रेणुका ने कहा _" सब कोई यही कहता था कि गुड़िया की शक्लो सूरत मुझसे मिलती जुलती है। लेकिन मैं उसके जैसी अल्हड़ और मुहफट नहीं थी। "

" वो अभी बच्ची हैं माँ।" विक्रम ने कहा _" उसमें अभी बहुत बचपना है। उसे यूँ ही हँसने खेलने दीजिए , वो ऐसे ही अच्छी लगती हैं। "

" उसकी उमर में मैंने जिम्मेदारी और समझदारी से रहना सीख लिया था बेटा। " रेणुका ने सहसा गंभीर होकर कहा _" अब वो बच्ची नहीं रही , भले ही दिल और दिमाग से वह बच्ची बनी रहे। मगर ,,,,,"

" वैसे दिख नहीं रही वो। " विक्रम ने चहा _" कहाँ है वह ?"

" ऊपर छत पर गई थी कपड़े डालने। " रेणुका ने कहा।

" कोई हमें याद करे और हम तुरंत उसके सामने न आएं ऐसा कभी हो सकता है क्या ?" सहसा कमरे के दरवाजे से अंदर आते हुए निशा ने कहा _" वैसे किस लिए याद किया गया है हमें ? जल्दी बताया जाए क्योंकि हम बहुत बिजी हैं , हमें अभी कपड़े डालने जाना है ऊपर छत पर। "

" इस लड़की का क्या करू मैं ?" रेणुका ने अपना माथा पीट लिया।

" बस प्यार कीजिए माँ प्यार। " निशा ने अपने दोनो हाथो को इधर उधर घुमाते हुए कहा _" हम आपके बच्चे हैं , हमें बस प्यार कीजिए। "

" तू रुक अभी तुझे बताती हूँ मैं। " रेणुका उसे मारने के लिए निशा की तरफ लपकी , जबकि निशा जिसे पहले ही पता था कि क्या होगा इस लिए वह तुरंत ही विक्रम के पीछे जा छुपी और बोली _" भईया बचाइए मुझे नहीं तो माँ मारेंगी मुझे। मैं आपकी जान हूँ न ? अब बचाइये अपनी जान को , । "

" रुक जाइए माँ। " विक्रम ने माँ को रोंक लिया _" मत मारिए इसे। आपने देखा न इसके आते ही वातावरण कितना खुशनुमा हो जाता है। "

" हाँ माँ। " निशा तुरंत बोल पडी _" मेरी बात ही अलग है। आप समझती नहीं हैं जबकि भैया मुझे अच्छे समझते हैं , । "

" तेरे भैया ने ही तुझे बिगाड़ रखा है। " रेणुक ा ने कहा _" अब जा कपड़े डाल कर आ जल्दी। "

" आपकी जान का इतना बड़ा अपमान। " निशा ने पीछे से विक्रम की तरफ अपना सिर करते हुए कहा _" बड़े दुख की बात है कि आप कुछ नहीं कर सकते मगर , हम चुप नहीं रहेंगे एक दिन इस बात का बदला जरूर लेंगे , देख लीजियेगा , । "

" क्या बड़बड़ा रही है तू ?" रेणुका ने आखें दिखाते हुए कहा।

" कुछ नही माँ। " निशा ने जल्दी से कहा _" वो भैया को हनुमान चालीसा का रोजाना पाठ करने को कह रही थी। "

" वो क्यों भला ?" रेणुका के माथे पर बल पड़ता चला गया। जबकि निशा की इस बात से विक्रम की हँसी छूट गई। वो ठहाके लगा कर जोर जोर से हँसे जा रहा था। निशा अपनी हँसी को बड़ी मुश्किल से रोंके इस तरह मुह बनाए खड़ी थी जैसे वो महामूर्ख हो। इधर विक्रम के इस प्रकार हँसने से रेणुका को कुछ समझ न आया कि उसका बेटा किस बात इतना हँसे जा रहा है ?

इसी तरह एक हफ्ता गुज़र गया। इस बीच विक्रम अपनी मॉ और बहन को लेकर उमाकांत पाटिल के बंगले में आकर रहने लगा था। उमाकांत पाटिल इन लोगों के आने बहुत खुश हुआ था। रेणुका को अपनी छोटी बहन के रूप में पाकर उसे बेहद खुशी हुई, रेणुका भी उसे अपने बड़े भाई के रूप में पाकर खुश हो गई थी। निशा तो सबकी लाडली थी ही, अब उमाकांत के लिए भी वह एक गुड़िया ही थी।

निशा का स्वभाव चंचल था। उसमे बचपना था तथा वह शरारती भी बहुत थी किन्तु पढ़ाई लिखाई में उसका दिमाग बहुत तेज़ था। उसने दसवी क्लास ९०% मार्क्स के साथ पास किया था। इसके आगे वह पढ़ न सकी क्योकि तब तक हालात बहुत खराब हो चुके थे। गॉव में दसवीं तक ही स्कूल था। आगे पढ़ने के लिए उसे पास के शहर जाना पड़ता, हलॉकि शहर जाने में उसको कोई समस्या नहीं थी किन्तु हालात ऐसे थे कि उन मॉ बेटी का घर से निकलना मुश्किल हो गया था। आए दिन सत्यम सिंह का बेटा जयदीप गलत इरादों से उसे छेंड़ता था। ये दोनो बाप बेटे एक ही थाली में खाने वाले थे। सत्यम सिंह की नीयत रेणुका पर खराब थी। जबकि रेणुका उसके मझले स्वर्गीय भाई शिवम सिंह की बेवा थी तथा निशा उसकी बेटी समान थी। ये दोनो बाप बेटे अपने ही घर की इज्जत से खेलना चाहते थे। पैसे और ताकत के घमंड में दोनो बाप बेटे रिश्तों की मान मर्यादा भूल चुके थे।

उमाकांत पाटिल ने निशा की पढ़ाई को ध्यान में रखते हुए उसका एडमीशन सबसे अच्छे स्कूल में करवा दिया था। अभी वक्त था इस लिए स्कूल में दाखिला बड़ी आसानी से हो गया था। अब निशा रोजाना स्कूल जाती थी। अपनी पढ़ाई के पुनः प्रारम्भ हो जाने से निशा बहुत खुश थी।

विक्रम अब चूँकि खुद ही उमाकांत पाटिल की सारी सम्पत्ति का इकलौता मालिक था इस लिए अब वह कंपनी में मैनेजर के रूप में नहीं बल्कि कंपनी के एम डी के रूप में जाता था। कंपनी में काम करने वाला हर व्यक्ति ये जान कर आश्चर्य चकित था कि कंपनी में काम करने वाला एक मैनेजर आज इस कंपनी का मालिक है, यानी उन सबका मालिक। किसी को ये बात हजम ही नही हो रही थी। हर व्यक्ति विक्रम और विक्रम की किस्मत से रक़्श कर रहा था। विक्रम के उच्च अधिकारी जो पहले विक्रम को हुक्म देते थे तथा उसे तुच्छ समझते थे वो अब विक्रम के सामने उसके महज एक इशारे से किसी गुलाम की तरह सर झुकाए खड़े हो जाते थे। कोई भी उच्च अधिकारी विक्रम के सामने किसी गुलाम की तरह झुकना नही चाहता था और न ही उसको अपना बॉस मानना चाहता था किन्तु अब ये संभव नही था। सच्चाई सबके सामने थी और उस सच्चाई को स्वीकार करके उसको अपनाना सभी के लिए अब अनिवार्य था। विक्रम ये सब बातें अच्छी तरह जानता था। इस लिए उसने सबसे पहले एक मीटिंग रखी जिसमें कंपनी के सभी उच्च अधिकारी शामिल थे। मीटिंग में विक्रम ने बड़ी शालीनता से सबके सामने ये बात रखी कि अगर किसी के दिलो दिमाग में कोई बात है तो वो खुल कर जाहिर करे। वो अब पाटिल कंपनीज का मालिक है इससे अगर किसी को कोई तकलीफ हो तो वो बता दे अन्यथा बाद में किसी का भी गलत व्यवहार या किसी भी तरह की गलत बात का पता चलते ही उसे कंपनी से आउट कर दिया जाएगा।

विक्रम ने ये भी कहा कि आज वह भले ही पाटिल कंपनीज़ का मालिक बन गया है लेकिन वह कंपनी में काम करने वाले सभी कर्मचारियों को हमेशा अपना दोस्त या भाई ही समझेगा।

विक्रम की इन बातों से मीटिंग रूम में बैठे काफी उच्च अधिकारी प्रभावित हुए और कुछों के चेहरे पर अब भी अजीब से भाव थे। सबके चेहरों के भावों को बारीकी से जॉचने के बाद विक्रम ने अंत मे ये भी कहा कि अगर किसी के दिलो दिमाग में ऐसी बात है कि वो इस सच्चाई को स्वीकार नहीं कर रहे हैं तो वो शौक से अपना अपना ईस्तीफा देकर जा सकते हैं।

कुछ लोग हालातों से बड़ा जल्दी समझौता करके आगे बढ़ जाते हैं किन्तु कुछ ऐसे भी होते हैं जो बिना मतलब का खोखला सम्मान और गुरूर लेकर खाली हाथ बैठे रह जाते हैं। कहने का मतलब ये कि मीटिंग के बाद एक हप्ते के अंदर अंदर कंपनी के काफी उच्च अधिकारियों ने ईस्तीफा दे दिया। विक्रम जैसे जानता था कि यही होगा। इस लिए उसने पहले से ही ऐसे लोगों को उनकी जगह फिट किया जो उसकी नज़र में इमानदार व वफादार होने के साथ साथ उसके अपने मित्र भी थे।

ऐसे ही पन्द्रह बीस दिन गुज़र गए। विक्रम अब कुशलतापूर्वक कंपनी का सारा कारोबार संभालने लगा था। उमाकांत पाटिल उसकी हर तरह से मदद भी कर रहा था। उसने एक ग्राण्ड पार्टी रखी जिसमें शहर के सभी बड़े बड़े लोग आमंत्रित थे। यहॉ तक कि मंत्री मिनिस्टर तथा पुलिस के उच्च अधिकारी वगैरा सब। इस पार्टी को रखने का एक मकसद था और वो था विक्रम को प्रमोट करना। उमाकांत ने स्टेज में जा कर तथा एनाउंसमेन्ट कर सबको बताया कि उसकी सारी मिल्कियत का अब से विक्रम ही अकेला वारिस तथा मालिक है। सब ये सुन कर हैरान भी थे और खुश भी। सभी बड़े बड़े लोगों से विक्रम को मिलवाया गया।

अब विक्रम कोई आम इंसान नहीं रह गया था बल्कि अब उसे सारा शहर जानता था। प्रेस और मीडिया वालों को कुछ सोचकर उमाकांत ने पार्टी में आने नहीं दिया था। अब उसका सम्मान और रुतबा वैसा ही हो गया था जैसे खुद उमाकांत पाटिल का था। रेणुका व निशा इस सबसे बहुत खुश थी। उनके मन में उमाकांत के प्रति बड़ा आदर और सम्मान हो गया था। अब ये सब उमाकांत को पूरी तरह अपना मानने लगे थे। उन्होंने ये ख्वाब में भी नहीं सोचा था कि ऐसा असंभव कार्य भी कभी होगा लेकिन सच्चाई अब उनके सामने थी। आज रेणुका का बेटा हज़ारों करोड़ रूपये की सम्पत्ति का मालिक था। रेणुका इस बात के लिए भगवान का लाख लाख शुक्रिया कर रही थी।

उमाकांत पाटिल हार्ट का मरीज़ था। उसने अपने जीवन में एक ही झटके में अपनों को खोया था। उसके एक ही बेटा था, अजित पाटिल। अजित की नई नई शादी हुई थी और वो अपनी बीवी के साथ हनीमून के लिए इटली जा रहा था। किन्तु इटली जा रहा विमान क्रैश हो गया और एक ही झटके में विमान में बैठे सभी पैसेंजर मौत को प्राप्त हो गए थे। उस हादसे से उमाकांत की मुकम्मल दुनिया ही तबाह हो गई थी। उसका अपना कोई नहीं बचा था। उसकी इतनी बड़ी दौलत और इतने बड़े कारोबार को संभालने वाला कोई नहीं बचा था। उसकी पत्नी तो पहले ही गुज़र गई थी जिससे वह बेहद प्यार करता था। इस सबसे उमाकांत दिल का

मरीज़ बन गया था, उसे दो बार दिल का दौरा पड़ चुका था जिसमें वह बड़ी मुश्किल से बचा था। वह रात दिन इसी सोच में मरा जा रहा था कि उसके बाद उसकी मिल्कियत का अब क्या होगा? उसके कम्पटीटर कहीं न कहीं इस बात से खुश थे और जो उसके घनिष्ठ मित्र थे वो उमाकांत की इस हालत से दुखी थे। वह चाहता तो इस उमर में भी दूसरी शादी कर सकता था जिसके लिए उसके खास चाहने वाले मित्रों ने सुझाव भी दिया था। किन्तु उमाकांत ने दूसरी शादी करने से साफ मना कर दिया था। उसका कहना था कि इस उमर में वह किसी से शादी नहीं करेगा, लोग उसके बारे में क्या सोचेंगे कि उसने अपनी बेटी की उमर वाली लड़की शादी की।

अपनों के खोने का दुख और उसके द्वारा रात दिन सोचते रहने की वजह से वह दिल का मरीज़ बन गया था। इतने बड़े बंगले में वह अकेला रहता था, ये अकेलापन उसे किसी सर्प की भाँति रात दिन डसता रहता था। नौकर चाकर तो बहुत थे लेकिन जिनसे उसके मन को तथा आत्मा को सुकून व तृप्ति मिलती वो उसके अपने नहीं थे। विक्रम के आने से उसे ऐसा लगा जैसा उसे उसका खोया हुआ बेटा अजित मिल गया था। उसने विक्रम के बारे में गुप्त रूप से सारी मालुमात की थी। विक्रम के अपनों ने उसके और उसकी माँ बहन के साथ क्या अत्याचार किया ये उसको पता चला था। विक्रम का नेचर उसे बहुत अच्छा लगा। विक्रम एक होनहार तथा मेहनती लड़का था। उमाकांत ने फैसला कर लिया था कि विक्रम ही अब उसका 'अपना' होगा। उसने विक्रम को अपने बंगले में बुलवाया और तसल्ली से उससे बात की। उसने विक्रम से उसके बारे में सब बातें पूछी और खुद भी अपने मन की बात विक्रम को बताई कि वह क्या चाहता है। अपने बॉस व मालिक की ये बातें सुन कर विक्रम चकित था, उसे यकीन ही नही हो रहा था कि कोई ऐसा भी कर सकता है।

विक्रम ने उमाकांत की बातें सुनकर ये कहा कि उसे सोचने के लिए वक्त चाहिए। उमाकांत ने उसे वक्त दिया और विक्रम वहा से चला आया था। उसने अकेले में इस बारे में बहुत सोचा। उसे उमाकांत के प्रति ऐसा कुछ भी नहीं लगा कि इस सबके पीछे उमाकांत का कोई गलत इरादा या मकसद हो। कंपनी में काम करने वाले सभी कर्मचारियों की तरह वह भी ये बात जानता था कि उसके मालिक उमाकांत पाटिल निहायत ही एक सच्चे व नेकदिल इंसान हैं। उनकी नेकनीयती व नरमदिली का कंपनी के कुछ उच्च अधिकारी लोग गलत फायदा उठा रहे थे। जिनका उसने बड़ी सफाई से पर्दाफाश किया था। किसी को इस बात का पता तक न चला था। विक्रम ने पक्के सबूत इकट्ठा करके सीधा उमाकांत पाटिल के सामने रख दिया था। उमाकांत पाटिल विक्रम के इस कार्य और उसकी इस इमानदारी से बेहद प्रभावित हुए थे। उन्होंने विक्रम को अपनी सभी कंपनियों की गुप्तरूप से जॉच पड़ताल का काम सौंप दिया किन्तु प्रत्यक्ष रूप में वह कंपनी का एक मैनेजर ही रहा।

उमाकांत पाटिल के द्वारा सौंपे गए इस गुप्त कार्य को उसने बड़ी ही कुशलता तथा सफाई से अंजाम दिया। एक महीने के अंदर अंदर ही उन सबको तगड़े नोटिश के साथ कंपनी से तत्काल निकाल दिया गया। किसी को कुछ सोचने समझने का मौका तक नहीं मिला और न ही किसी को ये समझ आया कि ये अचानक उनके साथ क्या और कैसे हो गया? सबूत क्योंकि पक्के थे इस लिए उन सबको वो सब भारी हरजाने के साथ देना पड़ा जो उन सबने कंपनी से खाया था। एक झटके में ही सबके सब भीख मॉगने की हालत में आ गए थे। बात अगर इतनी ही

बस होती तो भी ठीक था किन्तु उनके द्वारा किये गए इन कार्यों के लिए उन सबको जेल का दाना पानी भी मिलना नसीब हो गया था।

विक्रम द्वारा किये गए इस अविश्वसनीय कार्य से उमाकांत पाटिल बहुत खुश हुए। उनके मन में विचार आया कि विक्रम के बारे में उन्होंने जो फैसला लिया है वो हर्गिज भी गलत नही है।

३

" डैड मुझे इसके आगे की पढ़ाई मुंबई से करना है।" मानुषी ने बड़ी मासूमियत से कहा था _" मेरी सब दोस्त भी वहीं जा रही हैं। "

" अरे बेटा। " सत्यम सिंह चौंका था _" मगर यहॉ क्या परेशानी है भला ? यहॉ भी तो पास के शहर में बहुत अच्छा कॉलेज है ?"

" यहॉ के कॉलेजों में कितनी अच्छी शिक्षा मिलती है ये तो आप भी अच्छी तरह जानते हैं डैड। " मानुषी ने कहा _" मुझे अपनी डाक्टरी की बेहतर पढ़ाई के लिए बेहतर शिक्षा की आवश्यकता है। "

" अच्छी बात है बेटी। " सत्यम सिंह ने कहा _" लेकिन मुंबई से अच्छा तो तुम्हारे लिए दिल्ली रहेगा। क्योकि दिल्ली में तुम्हारी बड़ी बुआ भी है। तुम अपनी सीता बुआ के साथ रह कर वहॉ बेहतर पढ़ाई कर सकती हो। "

" नहीं डैड। " मानुषी ने बुरा सा मुह बनाया _" मैं मुंबई में अपनी मौसी के यहॉ रह कर पढ़ाई करू गी। आप तो जानते हैं कि मौसी की बड़ी बेटी मनीषा दीदी आजकल मुंबई में ही एक बड़े हॉस्पिटल में एज अ डाक्टर काम करती हैं। उनके पास रहूँगी तो उनसे मुझे बहुत कुछ सीखने को भी मिलेगा। "

" ये सही कह रही है डैड। " साक्षी ने कहा _" मनीषा दीदी के पास रह कर इसे अपनी पढ़ाई के लिए काफी कुछ जानने समझने को भी मिल जाएगा। आप इसे बड़ी मौसी के पास ही जाने दीजिए। "

" ठीक है बेटी। " सत्यम सिंह ने कहा _" तुम्हारी भी यही राय है तो मानुषी अब मुंबई ही जाएगी। "

" ओह थैंक्यू सो मच डैड एण्ड। " मानुषी ने खुश हो कर सत्यम सिंह से कहने के बाद साक्षी की तरफ पलट कर कहा _" एण्ड थैंक्स यू टू दीदी। "

" कौन कहॉ जा रहा है डैड ?" बाहर से ड्राइंग रूम में आते हुए जयदीप ने कहा।

" तुम्हारी मानुषी दीदी मुंबई जा रही है अपनी बड़ी मौसी अस्मिता के पास। " सत्यम सिंह ने कहा _" ये वहीं रह कर अपनी डाक्टरी की पढ़ाई करेगी। "

" क क्या ..???" जयदीप उछल पड़ा _" मानुषी दीदी मुंबई जाएंगी ? नहीं डैड आप इन्हें मुंबई कैसे भेज सकते हैं ? जबकि आप जानते हैं कि हमारा सबसे बड़ा दुश्मन विक्रम मुंबई में ही है। "

" अरे उससे कोई फर्क नहीं पड़ता बेटे। " सत्यम सिंह ने कहा _" और उससे डरने की भी कोई जरूरत नहीं है। और वैसे भी उसे क्या पता चलेगा कि मानुषी कहॉ है ? वो तो किसी होटल या ढाबे में कप प्लेट धो रहा होगा। उसे इस काम से फुर्सत ही कहॉ मिलेगी कि वो मानुषी को खोजेगा ?"

" हा हा हा आप सच कहते हैं डैड। " जयदीप ठहाका लगा कर जोरों से हॅसते हुए कहा _" वो यकीनन किसी होटल या ढाबे में कप प्लेट ही धो रहा होगा। "

" ख़ैर छोंड़ो। " सत्यम सिंह ने मानुषी की तरफ देख कर कहा _" तो तुम्हें कब जाना है मुंबई ?"

" मैं तो कल ही जाने का सोच रही हूॅ डैड। " मानुषी ने कहा _" मैंने सारी तैयारी भी कर ली है। "

" चलो ठीक है। " सत्यम सिंह ने कहा _" मैं तुम्हारे लिए ट्रेन की टिकट का बोल देता हूॅ। "

" जी डैड। " मानुषी ने कहा और ऊपर अपने कमरे की तरफ पलट कर चली गई।

" तू भी कुछ करेगा कि ऐसे ही आवारागर्दी करता इधर उधर घूमता रहेगा ?" सहसा किचेन से आती हुई सोनिया ने कहा _" सीख कुछ इनसे। ऐसे कब तक चलेगा ?"

" इतना ज्यादा पढ़ लिख कर क्या करना है मॉम ?" जयदीप ने बेशर्मी से खीसें निपोरते हुए कहा _" डैड की दौलत काफी है मेरे उज्वल भविष्य के लिए। मैंने सही कहा न डैड ?" अंतिम वाक्य उसने सत्यम सिंह की तरफ देखते हुए कहा था।

" बात तो तुम्हारी ठीक है शहज़ादे। " सत्यम सिंह पहले मुस्कुराया फिर थोड़ा गंभीर हो कर बोला _" लेकिन जीवन में उच्च शिक्षा का होना भी बहुत जरूरी होता है। माना कि मैने तुम्हारे लिए बहुत सारी दौलत बना कर जोड़ दी है लेकिन ये दौलत कब तक तुम्हारे लिए बची रहेगी ? दौलत कभी किसी के पास टिकी नहीं रहती। उसको बनाए रखने के लिए काम करके उसे कमाना भी जरूरी है। आज जितना हम उसे खर्च करते हैं उससे कहीं ज्यादा उसे प्राप्त करना भी जरूरी है। "

" ओह डैड आप तो बेकार का लेक्चर देने लगे मुझे। " जयदीप ने बुरा सा मुह बनाते हुए कहा _" इतना तो मुझे भी पता है कि दौलत को पाने के लिए काम करना भी जरूरी है और अच्छे काम के लिए अच्छी शिक्षा का होना जरूरी है। तो डैड , मैं पढ़ तो रहा हूॅ न ?"

" जिस तरह की तुम पढ़ाई कर रहे हो न। " सोनिया ने तीखे लहजे में कहा _" उसका पता है मुझे। "

" ओह मॉम अब आप भी डैड की तरह लेक्चर मत देने लग जाना। " जयदीप ने कहा।

" ये लेक्चर तुम्हारे भले के लिए ही दिया जा रहा है बेटे। " सत्यम सिंह ने कहा _" इस पर ग़ौर करो और अमल भी करो। "

" जी डैड कर तो रहा हूँ न ?" जयदीप ने कहा और सोफे से उठ कर अपने कमरे की तरफ चला गया। किन्तु वह ये न देख सका कि उसके पैन्ट की बॉई पॉकेट से उसकी कौन सी चीज़ गिर कर सोफे पर रह गई थी।

सत्यम सिंह और सोनिया की नज़रें एक साथ उस चीज़ पर पड़ीं। और उस चीज़ को पहचानते ही दोनो अपनी अपनी जगह बैठे उछल पड़े। सोनिया ने अपना हाथ आगे बढ़ा कर उस चीज को उठा लिया। वो कण्डोम का पैकिट था। पैकिट खुला हुआ था मतलब उसमे मौजूद कण्डोमों में से कुछ का इस्तेमाल हो चुका था। सोनिया ने अपने पति सत्यम सिंह की तरफ अजीब भाव से देखा।

" ये है आपके शहजादे की पढ़ाई। " सोनिया के लहजे में कठोरता थी बोली _" और ये सब सिर्फ आपके लाड प्यार का नतीजा है। "

" इस उमर में ये नेचुरल बात है सोनिया। " सत्यम सिंह ने कहा _" क्या तुम भूल गई कि हम दोनों ने खुद शादी के पहले इसका कितना इस्तेमाल किया था ?"

" हॉ मगर तब आप नौकरी पेशा थे। " सोनिया के चेहरे पर कुछ पल के लिए शर्म की लाली छाई थी किन्तु उसने शीघ्र ही खुद को नॉर्मल करते हुए कहा था _" लेकिन जयदीप अभी पढ़ रहा है। अगर इसी तरह चलता रहा तो वो क्या कर पाएगा भविष्य में ?"

" तुम बेवजह छोटी सी बात को इतना तूल दे रही हो यार। " सत्यम सिंह ने कहा _" मुझे तुमसे ज्यादा चिंता है उसके भविष्य की , अगर नहीं होती तो ये सब नहीं करता। और अब इस बारे में कोई बात नही होगी समझी न ?"

सोनिया कुछ न बोली। इसके साथ ही ड्राइंग रूम में सन्नाटा छा गया। कुछ देर की ख़ामोशी के बाद सत्यम सिंह ने कहा_"अब यूँ मुह न फुलाओ मेरी जान, आज रात तुम्हें खुश कर दूँगा चिन्ता मत करो।"

" क्या सच में ?" सोनिया के चेहरे पर खुशी छलक पड़ी _" लेकिन दो राउण्ड से पहले नहीं सोने दूँगी मैं आपको ये सोच लेना। "

" ठीक है मेरी जान। " सत्यम सिंह मुस्कुराया _" एक एक राउण्ड तुम्हारे आगे पीछे से अच्छे से लूँगा। "

" अच्छा जी ?" सोनिया मुस्कुराई _" आप तो जब देखो मेरे पिछवाड़े के पीछे ही पड़े रहते हो। "

" औरत को पीछे से रगड़ रगड़ कर ही ठोंकने में हम मर्दों को मज़ा आता है डियर। " सत्यम

सिंह ने कहा _" और तुम्हारे पिछवाड़े की तो बात ही अलग है यार। "

" और किसके किसके पिछवाड़े की बात अलग है ?" सोनिया ने अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कुराते हुए कहा _" ज़रा ये भी तो बताइए। "

" तुम अच्छी तरह जानती हो मेरी जान। " सत्यम सिंह के चेहरे पर अजीब से भाव थे _" फिर क्यों पूँछ रही हो ?"

" बताने में हर्ज़ ही क्या है ?" सोनिया हँसी _" बता ही दीजिए। "

" तुम्हारे बाद अगर किसी और के पिछवाड़े में अलग बात है तो वो है हमारी बड़ी बेटी साक्षी । हाय क्या पिछवाड़ा है ज़ालिम का बिलकुल तुम्हारी तरह ही है उसका पिछवाड़ा। "

" अपनी ही बेटी पर नीयत बुरी है आपकी ?" सोनिया ने कहने के साथ ही मैक्सी के ऊपर से अपने एक हाथ से अपनी योनी को बुरी तरह मसला फिर बोली _" मगर ये जान लीजिए कि साक्षी का पिछवाड़ा इतनी आसानी से मिलने वाला नही है आपको। "

" यही तो रोना है यार। " सत्यम सिंह आह सी भरते हुए बोला _" तुमको मेरी ख्वाहिश का पता है फिर भी अब तक कुछ नहीं किया। "

" चिंता मत कीजिए। " सोनिया ने कहा _" आपके लिए एक नई योनी और एक नए पिछवाड़े का इंतजाम कर दिया है मैंने। "

" क् क्या सच में ..???" सत्यम सिंह खुशी से झूम उठा _" ओह डियर आखिर तुमने कर ही दिया। मगर , ये तो बताओ किसकी योनी और पिछवाड़े का इंतजाम किया है तुमने ?"

" अभी थोड़ी कसर बाकी है जनाब। " सोनिया ने कहा _" मगर मुझे यकीन है कि एक दो दिन में काम हो जाएगा आपका। "

" काश ! रेणुका को हासिल कर पाता मैं। " सत्य म सिंह बोला _" उस पर तो मेरी तब से नज़र थी जब वह ब्याह कर इस घर में आई थी। एक झलक उसके जिस्म की देखा थी मैंने। एक दम दूध सा गोरा रंग था उसका और बनावट ऐसी कि उसके सामने कुदरत की हर कृति फीकी पड़ जाए। "

" कम से कम मेरे सामने उसकी खूबसूरती का बखान मत किया कीजिए आप। " सोनिया ने तीखे भाव से कहा _" आपको कितनी बार ये कहा है मैने। फिर भी आप उस हरामजादी की तारीफ करके मेरा खून जलाने से बाज नहीं आते हैं। "

" क्या करू मेरी जान ?" सत्यम सिंह कह उठा _" तुम्हारे बाद मुझे अगर किसी से प्यार हुआ है तो वो थी रेणुका । मैं चाहता तो कब का उसकी खूबसूरती का रसपान कर लेता किन्तु मैने ऐसा नही किया। मैं उसे प्यार से हासिल करना चाहता था। तभी तो मैंने ये सब

कियाा , उसको इतने दुख दिए और उसके लिए सारे रास्ते बंद कर दिए। मगर फिर भी कुछ हासिल नहीं हुआ और अब होगा भी कि नहीं क्या कहा जा सकता है ?"

" आपने तो उन लोगों की खोज में अपने आदमी लगाए थे न ?" सोनियाा ने कहाा _" उन लोगों ने क्या रिपोर्ट दी उनके बारे मेंं ?"

" मेरे आदमी खाली हाथ वापस आ गए थे। " सत्यम सिंह के चेहरे पर कठोरता के भाव उजागर हुए _" वो हरामी की औलाद विक्रम बड़ा ही चतुर व चालाक निकला। उसने अपनी मॉ और बहन को किसी दूसरे शहर के रूट से उन्हें मुंबई ले जाने में कामयाब हो गया था। "

" शायद उसे अंदेशा था कि आप उन्हें पकड़ने के लिए अपने आदमियों को भेजेंगे। " सोनियाा ने सोचपूर्ण भाव से कहा।

" हॉ यही बात रही होगी। " सत्यम सिंह बोलाा _" वरनाा वो ऐसा काम क्यों करताा ? मगर कब तक मुझसे छिपा कर रखेगा वो अपनी मॉ और बहन काो ? मैं चैन से बैठा नहीं हूॅ सोनियाा , बल्कि आज भी मेरे आदमी उनकी खोज में मुंबई की खाक़ छान रहे हैं। "

" ये आपने अच्छा किया है। " सोनियाा ने सहसा आवेशयुक्त स्वर में कहा थाा _" जब आपके आदमी उन सबको पकड़ कर यहा लाएंगे तो मैं अपने हाथाो से उस कुत्ते को गोली मारूंगी जिसने उस दिन मेरे बेटे का वो हाल किया था। "

" तुम्हारी ये इच्छा जरूर पूरी होगी डियर। " सत्यम सिंह ने भभकते लहजे में कहाा _" और अब मैं भी रेणुकाा की बीच चौराहे पर रगड़ रगड़ कर ठोंकूॅगा। अब बात प्यार की नहीं रह गई बल्कि अब प्रतिशोध की है। मेरे उस प्रण की है जो मैंने वर्षों पहले लिया था। "

" किस प्रण की बात कर रहे हैं डैड ?" साक्षीी ऊपर से सीढ़िया उतरते हुए पूछी।

" कुछ नहीं बेटी बस ऐसे ही बात कर रहे थे हम लोग। " सोनियाा ने जल्दी से बात को टालने की गरज से कहा। जबकि सत्यम सिंह अपनी बड़ी बेटी को एकटक देखे जा रहा था।

साक्षी नहा धो कर तथा एक दम फ्रेश होकर आई थी। इस वक्त उसके गोरे किन्तु मादकता से भरे जिस्म पर एक दम टाइट फिटिंग वाले कपड़े थे। जिसमें उसकी भरपूर जवानी साफ उभरी हुई नजर आ रही थी। सत्यम सिंह मंत्रमुग्ध सा उसे देखे जा रहा था। उसकी आखों में हवस और वासना के कीड़े गिजबिजाने लगे थे। अपने पति को अपनी ही बेटी की तरफ यूं हवस भरी नज़रों से देखते देख सोनिया ने तुरंत ही उसे खुद को संभालने की गरज से कहा_"आपको आज पिता जी और माता जी से मिलने जाना था न?"

सत्यम सिंह सोनिया के इस वाक्य को सुन कर चौंका तथा तुरंत ही वास्तविक माहौल में लौटते हुए कहा_"हा जाना तो है। क्या तुम साथ नहीं चलोगी?"

" नहीं आप हो आइए। " सोनिया ने कहाा _" पिछली बार गई थी उनसे मिलने आपके साथ।

उनसे मिलने का कोई फायदा तो है नहीं। न वो कुछ बोलते हैं और न ही हिलते डुलते हैं फिर क्या फायदा उनसे मिलने का ?"

" डैड क्या कुछ संभावना है कि कब तक दादा दादी ठीक होंगे ?" साक्षी ने पूछा।

" बेटा डॉ. की तरफ से यही कहना है कि कुछ कहा नही जा सकता इस बारे में। " सत्यम सिंह बोला _" याददाश्त का मामला होता ही ऐसा है। "

" डैड आपके दोस्त कमिश्नर अंकल तो अब तक पता नहीं लगा पाए कि दादा दादी की कार को किसने और क्यो टक्कर मारी थी ?" साक्षी ने सहसा तीखे भाव से कहा _" आज दो साल हो गए इस बात को और पुलिस के हाथ कोई छोटा सा सुराग तक नही लगा। बड़ा गुस्सा आता है मुझे अपने दैश की इस निकम्मी पुलिस पर। आज अगर मैं होती पुलिस डिपार्टमेन्ट में तो इस केस को कब का क्लियर करके मुजरिमों को जेल की सलाखों के पीछे पहुँचा दिया होता। लेकिन कोई बात नहीं डैड ... जल्द ही इस निकम्मी पुलिस के बीच मुझ जैसी एक तेज तर्रार पुलिस ऑफिस र इन्ट्री करेगी। फिर मैं खुद इस केस पर काम करू गी , और केस को पूरा साल्व करू गी। "

साक्षी की ये बातें सुनकर सत्यम सिंह और सोनिया को सॉप सा सूँघ गया। चेहरे पर घबराहट के भाव गर्दिश करते नज़र आने लगे थे। किन्तु जल्द ही उन दोनों ने खुद को संभाला।

" मतलब मेरे लाख मना करने और समझाने पर भी तुमने पुलिस फोर्स ज्वाइन करने का अपना इरादा नहीं बदला ?" सत्यम सिंह ने नाराजगी भरे स्वर में कहा _" तुम जानती हो बेटी कि मुझे तुम्हारा पुलिस फोर्स ज्वाइन करने का फैसला बिलकुल भी पसंद नही है। तुम्हें कोई जरूरत नहीं थी कोई नौकरी करने की , भला क्या कमी की है हमने तुम्हें कछ देने में ?"

" ये नौकरी मैं किसी चीज के अभाव में नही कर रही हूँ डैड। " साक्षी ने शान्त भाव से कहा _" आप जानते हैं कि पुलिस ऑफिस र बनना मेरा एक ख्वाब था। पुलिस ऑफिस र बन कर मैं उन लोगों का वजूद मिटाना चाहती हूं जो इस इस देश और समाज के लिए अभिशाप हैं। "

" तुम ये भूल रही हो बेटी कि तुम एक लड़की हो , एक औरत ज़ात जिसे खुद कदम कदम पर किसी मर्द के द्वारा मजबूत सुरक्षा की आवश्यकता होती है। " सोनिया ने समझाने वाले भाव से कहा _" और पुलिस फोर्स तो ऐसी है कि इसमें रोज एक से बढ़ कर एक खतरनाक अपराधियों का सामना करना पड़ता है जिसकि मुकाबला करना तुम्हारे लिए बेहद मुश्किल है। "

" आप मुझे एक आम लड़की समझकर कमजोर समझती हैं मॉम जबकि साक्षी सिंह भाटी कोई आम लड़की नहीं है। " साक्षी के चेहरे पर कठोरता थी _" बल्कि मैं मिस्टर सत्यम सिंह भाटी की शेरनी बेटी हूँ। और मुझसे टकराने में किसी अपराधी को हजार बार सोचना

पड़ेगा। आप जानती मॉम मैंने मार्शल आर्ट्स में ब्लैक बैल्ट हासिल किया है। क्योकि मुझे पता है कि एक आम लड़की पुलिस में किसी अपराधी का सामना नहीं कर सकती। इसी लिए मैंने किसी भी तरह के अपराधियों से डॅटकर कर मुकाबला करने के लिए मार्शल आर्ट्स की ट्रेनिंग ली थी। "

सत्यम सिंह और सोनिया दोनो जानते थे कि साक्षी अपने कदम अब वापस नही करेगी। इस लिए चुप रह गए किन्तु अंदर से ये सोच सोच कर घबरा भी रहे थे कि अगर साक्षी पुलिस ऑफिसर के रूप में अपने दादा दादी के एक्सीडेंट वाला केस अपने हाथ में लेगी तो क्या होगा?????"

सत्यम सिंह अपने ऑफिस के शानदार केबिन में रिवाल्विंग चेयर पर बैठा कुछ फाइलों को इधर उधर रख रहा था कि तभी उसके केबिन का डोर नॉक हुआ।

" कम इन। " उसने बिना सर उठाए ही कहा।

इसके साथ ही केबिन का डोर खुला और एक व्यक्ति अंदर दाखिल हुआ। पचास से पचपन की उमर का वो मोटा सा आदमी था, आखों पर मोटे लैंस का चश्मा लगा रखा था उसने। उसके दाहिने हाथ में एक फाइल थी। चेहरे पर बारह बजे हुए थे। बड़ी ही दयनीय स्थिति में अपनी जगह खड़ा था।

केबिन के अंदर पैना सन्नाटा छाया रहा। सत्यम सिंह को जब ध्यान आया कि अभी कोई उसके केबिन में आया है तो उसने सिर उठा कर सामने देखा। नजर केबिन में आने वाले व्यक्ति पर पड़ी, साथ ही उसकी वस्तुस्थिति पर तो सत्यम सिंह चौंका।

" क्या बात है हरिप्रसाद ?" सत्यम सिंह ने पूछा _" तुम्हारे चेहरे पर इतना पसीना क्यों आ रहा है ? तुम्हारी तबियत तो ठीक है न ?"

" स सर व वो वो। " हरिप्रसाद हकलाते हुए बोलना चाहा।

" क्या हुआ ?" सत्यम सिंह बोला _" तुम इस तरह हकला क्यों रहे हो भई ?"

" सर बहुत बड़ी गड़बड़ हो गई। " हरिप्रसाद रो देने वाले लहजे में बोला था _" हम बरबाद हो गए। "

" ये क्या बक रहे हो तुम ?" सत्यम सिंह बुरी तरह चौंका _" तुम होश में तो हो न ?"

" मैं पूरी तरह होश में हू सर। " हरिप्रसाद बोला _" सब कुछ बरबाद हो गया सर। "

" साफ साफ बोलो हरिप्रसाद। " सत्यम सिंह तीखे स्व र में बोला _" यू पहेलियॉ न बुझाओ। ऐसा क्या हुआ है जिससे तुम सब कुछ बरबाद हो जाने की बात कर रहे हो ?"

" सर पिछले महीने। " हरिप्रसाद बोला _" हमें जो करोड़ों का टेंडर मिला था वह सब महज एक फ्राड था। "

" क क्या मतलब ?" सत्यम सिंह बुरी तरह चौंका था।

" मतलब साफ है सर। " हरिप्रसाद बोला _" हमें जिस फॉरेन की पार्टी से करोड़ों का टेंडर मिला था वो सब झूठ था। हमें बरबाद करने के लिए यह किसी की सोची समझी चाल थी। हमने उस टेंडर के हिसाब से आज एक महीने से भारी मात्रा में कपड़े तैयार किये हैं जिसके लिए हमें करोड़ों की लागत का खर्च करना पड़ा किन्तु अब सब कुछ बरबाद हो गया। "

सत्यम सिंह ये सुनकर किसी स्टेचू की तरह बिना हिले डुले बैठा रह गया। ऐसा लग रहा था

जैसे ये सब जानकर उसे सॉप सूँघ गया था। चेहरा निस्तेज हो गया था उसका।

" हमने यकीनन बहुत बड़ा धोखा खाया है सर। " हरिप्रसाद हताश भाव से बोलता _" हमें इस बारे में सोचना चाहिये था। अब क्या होगा सर , हम इतने बड़े नुकसान की भरपाई कैसे कर सकेंगे ?"

" उसके बारे में कुछ पता किया तुमने ?" सत्यम सिंह ने अजीब भाव से पूछा।

" एक हप्ते से मैं सिर्फ इसी काम में लगा हुआ था सर। " हरिप्रसाद ने कहता _" मगर उस फॉरेनर का कहीं कुछ पता नहीं चल सका। उसकी हर एक बात झूठी निकली सर। होटल सनशाइन में पता किया तो होटल के मैनेजर ने बताया कि जोनाथन रोड्रिग्ज व जूलिया रोड्रिग्ज नाम के कोई भी फॉरेनर यहॉ पिछले एक महीने से नहीं ठहरे थे। ये दोनो पति पत्नी जिस कंपनी को अपनी कह रहे थे उसका कहीं कोई वजूद ही नहीं , जबकि अब से एक हप्ते पहले कंपनी की बाकायदा वेबसाइट हमने खुद देखी थी , जिसमें सब डिटेल्स थी। "

" कौन ऐसा कर सकता है हमारे साथ ?" सत्यम सिंह मानो खुद से ही पूछ रहा थता _" हमारी तो किसी से इस तरह की कोई दुश्मनी भी नहीं है फिर कौन इतना बड़ा नुकसान कर सकता है ?"

" जिसने भी ये सब किया है सर। " हरिप्रसाद बोलता _" उसने इस सबकी तैयारी बहुत पहले से कर रखी थी। हर चीज सोची समझी थी। एक एक प्वाइंट को बारीकी से जॉच कर उस पर काम किया गया था वरनता क्या हमें कुछ पता न चलता ? "

" नुकसान तो हो ही गया हरिप्रसाद। " सत्यम सिंह बोलता _" लेकिन इसका पता करना भी सबसे जरूरी है। हमें हर हाल में पता करना है कि वो दोनों कौन थे तथा हमारे साथ इतना बड़ा धोखा करके आखिर क्या मिला उन्हें ?"

" एक बुरी खबर और भी है सर। " हरिप्रसाद दीन हीन लहजे के साथ बोलता _" समझ में नहीं आता कि कैसे कहूँ आपसे ?"

" आज क्या हो गया है तुम्हें हरिप्रसाद ?" सत्यम सिंह एक झटके से अपनी चेयर से उठते हुए बोलता _" ये क्या मनहूस खबरें लेकर आए हो आज हमारे पास ?"

" माफ कीजिए सर। " हरिप्रसाद ने सर झुका लियता _" मगर मैं क्या करू ? मुझे खुद भी समझ में नहीं आ रहा है कि ये सब क्या हो रहा है ?"

" अब बताओ भी कि तुम्हारी दूसरी बुरी खबर क्या है ?" सत्यम सिंह ने कहा।

" सर अनिल खुरानता जी हमारी कंपनी से अपनी पार्टनरशिप तोड़ रहे हैं। " हरिप्रसाद ने ये कह कर जैसे धमाका सा किया था।

" क् क्या ..????" सत्यम सिंह बुरी तरह चौंका _" ये क्या कह रहे हो हरिप्रसाद ? भला खुराना हमसे पार्टनरशिप क्यों तोड़ रहा है ? उसने इसके बारे में हमसे तो कोई बात नहीं की अब तक ? खुराना को फोन लगाओ हम उससे बात करेंगे अभी। "

" सर वो यहीं आ रहे हैं। " हरिप्रसाद ने कहा _" मुझे फोन करके उन्होंने मुझसे आपके बारे में पूछा की आप कहां हैं तो मैंने बता दिया कि आज आप यहीं हैं तो बोले ठीक है आ रहे हैं। उनका लहजा बड़ा अजीब था सर , मैंने वजह पूछी तो बोले कि आपसे पार्टनरशिप तोड़ना है। उनकी ये बात सुन कर मेरा तो दिमाग ही सुन्न पड़ गया था "

अभी सत्यम सिंह कुछ कहने ही वाला था कि केबिन के डोर में नॉक हुआ। हरिप्रसाद ने कहा_"लगता है मिस्टर खुराना ही हैं।"

" ठीक है तुम जाओ अब। " हम बाद में तुमसे बात करेंगे। "

" ओके सर। " हरिप्रसाद ने कहा और केबिन का डोर खोला तो बाहर से खुराना अंदर दाखिल हुआ जबकि हरिप्रसाद खुराना को नमस्कार कर बाहर निकल गया।

" आओ आओ खुराना। " सत्यम सिंह ने खुराना का इस्तकबाल करते हुऐ कहा और हैण्डशेक किया उससे।

" कैसे हो सत्यम सिंह ?" खुराना ने हाथ मिलाने के बाद कहा।

" बेहतर। " सत्यम सिंह ने संक्षिप्त सा जवाब दिया।

" मेरे यहॉ आने की वजह तो तुम्हें पता चल ही गई होगी ?" खुराना ने कहा।

" हॉ मुझे हरिप्रसाद अभी यही बता रहा था। " सत्यम सिंह ने गंभीरता से कहा _" और ये जानकर दुख भी हुआ कि तुम मुझसे पार्टनरशिप तोड़ रहे हो। जहॉ तक मेरा अंदाज़ा है मैंने ऐसा कुछ नहीं किया है जिसकी वजह से तुम पार्टनरशिप तोड़ रहे हो। "

" मुझे पता है कि तुमने वाकई कुछ नहीं किया। " खुराना ने सपाट लहजे में कहा _" लेकिन फिर भी मैं ये पार्टनरशिप तोड़ रहा हूॅ , क्योकि मुझे अब विदेश में सेटल होना है अपने परिवार के साथ। यहा का सब कुछ बेच कर अब विदेश में ही रहूगा तथा वहीं कारोबार करूगा। "

" तो पार्टनरशिप तोड़ने की ये वजह है ?" सत्यम सिंह ने कहा।

" बिलकुल। " खुराना ने कहा _" और अब मैं चाहता हूॅ कि तुम मेरा सब कारोबार खुद खरीद लो तथा मेरे हिस्से का जो कुछ है उसे मुझे देकर मुझे जाने दो। "

" अब जब तुमने मन बना ही लिया है तो कोई क्या कर सकता है भला ?" सत्यम सिंह बोला _" खैर कब जा रहे हो ?"

" तुम हिसाब किताब क्लियर कर लो।" खुरानाा ने कहाा _" तब तक मैं कुछ और इंतजाम कर लेता हूॅ "

" ठीक है खुरानाा। " सत्यम सिंह ने कहाा _" हिसाब किताब भी हो जाएगा। मगर यार मेरा कुछ तो खयाल किया होता। "

" क्या करूॅ यार ?" खुरानाा ने कहाा _" तुम्हारे लिए अफसोस तो हो रहा है मगर अब और नहीं रुक सकता। ये सब तो मैं बहुत पहले से करने की सोच रहा था किन्तु हर बार तुम्हारा खयाल आ जाने से मैंने खुद को रोंके रखा। "

" हिसाब किताब तो ठीक है। " सत्यम सिंह ने कहाा _" लेकिन कुछ समय की मोहलत चाहता हूॅ क्योंकि इस वक्त पैसे का बड़ा लोचा हो रखा है। "

" हॉ पता चला है मुझे इस बारे में। " खुरानाा ने कहाा _" पर यार इतने नुकसान से क्या फर्क पड़ता है तुम्हेंा ? और वैसे भी कारोबार में नफा नुकसान तो चलता ही रहता है। "

" बात ये नहीं है कि क्या फर्क पड़ता हैै ?" सत्यम सिंह ने कहाा _" बात है रेपुटेशन की। लोग क्या सोचेंगे कि सत्यम सिंह भाटीी को कोई व्यक्तिि चुतिया बना कर चला गया और उसे पता भी नहीं चला। "

" हॉ ये सही कहा तुमने।" खुरानाा ने कहाा _" इज्जत का कचरा हो गया। "

" मैं उस हरामजादे को छोंड़ूॅगा नहीं खुरानाा। " सत्यम सिंह ने एकाएक गुस्से में बोलाा _" उसको ढूॅढ़ कर उसे ऐसी मौत दूॅगा कि उसकी रूह फिर दुबारा ऐसे किसी शरीर को धारण नहीं करेगी। मुझे अपने नुकसान का कोई ग़म नहीं है खुरानाा, ये करोड़ों का नुकसान मेरे लिए कोई मायने नहीं रखता। मगर मेरी इज्जत को शहर भर में यॅू दाग़दार करके उसने अच्छा नहीं किया। उसे इसकी कीमत अपनी जान दे कर चुकानी पड़ेगी। "

" उसके साथ ऐसा होना भी चाहिए सत्यम सिंह। " खुरानाा ने एक सिगरेट सुलगाई और उसका एक गहरा कस लेकर धुआॅ ऊपर की तरफ उछालते हुए कहाा _" वैसे क्या लगता है तुम्हेंा , ये किसका काम हो सकता हैै ?"

" ये तो पक्की बात है खुरानाा कि वो दोनों विदेशी नहीं थे। " सत्यम सिंह बोलाा _" बल्कि वो दोनों हमारे ही देश के और हमारे ही शहर के कोई पहचान वाले ही थे। "

" ये बात तुम इतने विश्वास और दावे के साथ कैसे कह सकते हो सत्यम सिंह ?" खुरानाा हल्के से चौंका था फिर बोलाा _" जबकि तुम्हारे पास इस बात का कोई छोटा सा सबूत तक नहीं है। "

" ग़लती मेरी भी है खुरानाा। " सत्यम सिंह ने कहाा _" एक महीने पहले जब उनसे हमें ये टेंडर मिला था तब हमें ये अंदाज़ा नहीं थाा , बल्कि हम सोच भी नहीं सकते थे कि हम इन

लोगों द्वारा किसी साजिश का शिकार होने जा रहे हैं। हम तो खुश थे कि हमारे कपड़ों की खासियत से प्रभावित होकर कोई विदेशी हमसे डील कर रहा है और इतनी ज्यादा मात्रा में हमसे कपड़े की मॉग कर रहा है। उस समय दिलो दिमाग में यही था कि अब हमारा संबंध विदेशी लोगों से हो रहा है जिससे निकट भविष्य में हमारे कारोबार को और भी फायदा होगा। किसी साजिश का हम सोच ही नहीं सके थे क्योकि उन लोगों का सब कुछ परफेक्ट था। और वैसे भी हमें इससे क्या लेना देना था कि वो कितनी बड़ी कंपनी के मालिक थे , हमें तो उनकी डील से मतलब था जिसके लिए हमे करोड़ों का मुनाफा होने वाला था। "

" वो सब तो ठीक है सत्यम। " खुरानां बीच में ही सत्यम की बात काट कर कह उठां _" मगर तुम कह रहे हो कि वो विदेशी नहीं थे ये बात तुम दावे के साथ कैसे कह सकते हो ?"

" मैं बताते हुए वहीं आ रहा था खुरानां। " सत्यम सिंह बोलां _" ख़ैर अब जबकि ये सब हो गया उससे यही समझ आता है कि ये काम किसी फॉरेनर का नहीं है। क्योंकि आज तक हमारा किसी भी तरह का लेन देन किसी विदेशी से नहीं हुआ और जब कोई लेन देन ही नहीं हुआ किसी विदेशी से तो किसी तरह की रंजिश के तहत किसी फॉरेनर का ये सब करने का सवाल ही पैदा नहीं होता। अब सोचने वाली बात है कि जब हमारा किसी विदेशी से कोई व्यावसायिक संबंध ही नहीं था तो कोई विदेशी किस वजह से हमारे साथ इतनी बड़ी साजिश करके हमें धोखा देगा अथवा हमारा इतना बड़ा नुकसान करेगा ?"

" तुम्हारा तर्क बिलकुल दुरुस्त है सत्यम। " खुरानां सोचपूर्ण भाव के साथ बोलां _" फिर तो यकीनन ये काम किसी ऐसे व्यक्ति का है जो तुम्हें अच्छी तरह जानता भी है और तुम्हारा बुरा भी चाहता है। कौन हो सकता है ऐसा व्यक्ति ?"

" यही तो सोच रहा हूँ खुरानां। " सत्यम सिंह बोलां _" मगर जेहन में ऐसे किसी व्यक्ति का चेहरा नहीं आ रहा। "

" ये काम तुम्हारे किसी कम्पटीटर का ही हो सकता है। " खुरानां ने कहां _" ये एक व्यावसायिक मामला है सत्यम । व्यवसाय से जुड़े तुम्हारे किसी कम्पटीटर ने ही इस काम को अंजाम दिया होगा। अच्छी तरह सोचो कि ये किसने किया हो सकता है ?"

" मुझे तो कुछ और ही लगता है खुरानां। " सत्यम सिंह ने सोचपूर्ण भाव से कहां _" ये काम मेरे किसी कम्पटीटर का भी नहीं है क्योकि इन सबसे मेरे बहुत अच्छे संबंध हैं। "

" ये क्या कह रहे हो तुम ?" खुरानां चौंकां _" अगर ये सब तुम्हारे किसी कम्पटीटर का नहीं है तो फिर किसका है ? कहीं तुम इन सबके लिए मुझे तो नहीं जिम्मेदार ठहरा रहे हो ?"

" हो सकता है खुरानां। " सत्यम सिंह ने सपाट लहजे में कहां _" इस सब में सबसे पहले उँगली तो तुम पर ही उठेगी। "

" क्या मेरे बारे में तुम ऐसा सोचते हो कि मैं अपने घनिष्ठ मित्र के साथ ऐसा नीच काम करू

गा ?" खुरानाा ने कहा _" तुम मेरे बारे में अच्छी तरह जानते हो सत्यम कि मैं ऐसा किसी के भी साथ नहीं कर सकता। मेरी फितरत इस तरह किसी को धोखा देने की नहीं है। "

" रुपये पैसे के लिए कोई भी व्यक्ति किसी के भी साथ कुछ भी कर सकता है खुरानाा। " सत्यम सिंह ने अजीब भाव से कहा _" मैं तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं लगा रहा लेकिन इस तरह का सवाल तो खड़ा होगा ही। कानून का कोई भी नुमाइंदा तुमसे ये सवाल कर सकता है कि तुम अचानक ही सत्यम सिंह से पार्टनशिप तोड़ कर तथा अपना हिसाब किताब करके हमेशा के लिए विदेश क्यों जा रहे हो जबकि हाल ही में सत्यम सिंह के साथ ऐसा संगीन वाक्या हो गया ?"

" तुम तो मुझ पर साफ साफ इल्जाम लगाते हुए कानून के लपेटे में डालने की बात कर रहे हो सत्यम सिंह। " खुरानाा दुखी भाव से बोलाा _" जबकि भगवान जानता है कि मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया। "

" भगवान तो सबके विषय में सब जानता है खुरानाा। " सत्यम सिंह ने कहा _" लेकिन इंसान नहीं जानता। इंसान तो वही जानता है जो उसे या तो नजर आता है या फिर समझ आता है। आज जो हालात बने हैं उससे साफ तौर पर यही समझ आता है कि ये सब तुम्हारे अलावा दूसरा कौन और क्यों कर सकता है ?"

अनिल खुराना मूर्खों की तरह देखता रह गया सत्यम सिंह को। उसके चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे कि वह अभी अपने सिर के बाल नोंचने लगेगा।

" मुझे समझ नहीं आ रहा सत्यम सिंह कि मैं तुम्हें कैसे इस बात का यकीन दिलाऊॅ ?" खुरानाा असहाय भाव से बोलाा _" कि ये सब मैं करने के बारे में सोच तक नहीं सकता। तुम जानते हो हम दोनो ऐसे हैं कि एक दूसरे का सब कुछ जानते हैं। हम दोनों के संबंध तो ऐसे हैं कि हम अपनी अपनी बीवियों को भी आपस में बॉट लेते हैं। क्या कोई इतना भी घनिष्ठ मित्र हो सकता है किसी का ? जिसके साथ ऐसे संबंध हों वो भला अपने दोस्त का इतना बड़ा अहित कैसे कर देगा यार ?"

" तुम तो यार एक दम से सीरियस ही हो गए खुरानाा। " सत्यम सिंह ने मुस्कुराते हुए कहा _" मैं तो बस एक तर्कसंगत बात कह रहा था कि इस वाक्ये के बाद किसी भी व्यक्ति के मन में सबसे पहले यही विचार उठेगा जो अभी मैने कहा था। "

" तुम मुझे जान से मार दो सत्यम सिंह मुझे जरा भी फर्क नहीं पड़ेगा लेकिन ऐसे इल्जाम लगा कर मारोगे तो मैं मर कर भी कहीं चैन नहीं पाऊॅगा। " खुरानाा ने कहा।

" छोड़ो इस बात को और ये बताओ कि विदेश कब जा रहे हाो ?" सत्यम सिंह ने पूछा।

" दो दिन बाद। " खुरानाा ने कहा _" कल तक यहॉ के सारे कारोबार का रुपया मेरे

एकाउंट में आ जाएगा और परसों यहॉ से निकल जाऊँगा। लेकिन .....। "

" लेकिन ..??" सत्यम सिंह ने पूछा।

" लेकिन उससे पहले मैं चाहता हूँ कि। " खुरानाा ने कहाा _" हम लोगों का एक शानदार प्रोग्राम हो जाए। "

" जाने से पहले मेरी बीवी के मजे लेना चाहते हो। " सत्यम सिंह हॅसा।

" हॉ तो बदले में तुम्हें भी तो मेरी बीवी से मजे लेना है। " खुरानाा ने भी हॅसते हुए कहाा _" और वैसे भी मेरी बीवी तो रात दिन तुम्हारा ही नाम जपती रहती है। पता नहीं क्या जादू कर दिया है तुमनेे ? साली मुझे बड़ी मुश्किल से हाथ लगाने देती है। "

" अच्छा ऐसा क्याा ?" सत्यम सिंह जोरों से हॅसा।

" हॉ यार। " खुरानाा बोलाा _" और पता है विदेश जाने के लिए तो मान ही नहीं रही थी वो। जब मैने उसे ये कहा कि तुम हर महीने हमसे मिलने तथा मस्ती करने आओगे तब कहीं जाकर मानी थी वो। "

" मतलब कि अब मुझे हर महीने तुम्हारे पास इस सबके लिए आना पड़ेगाा ?" सत्यम सिंह मुस्कुराया।

" हॉ बिलकुल। " खुरानाा ने कहाा _" और वो भी भाभी के साथ। "

" सोचना पड़ेगा खुरानाा। " सत्यम सिंह बोलाा _" और वैसे भी अभी मेरे पास सिर्फ एक ही अहम काम हेै , और वो है उन लोगों का पता लगाना जिनकी वजह से आज मुझे करोड़ों का नुकसान हुआ है तथा मेरी इज्जत की धज्जियॉ उड़ी हैं। "

" हॉ ये तो है। " खुरानाा ने कहाा _" अगर कभी मेरी जरूरत पड़े तो बेझिझक याद करना सत्यम , तुम्हारे एक बार के कहने पर मैं तुम्हारे पास आ जाऊँगा। "

" ठीक है खुरानाा। " सत्यम सिंह बोलाा _" कल तक मैं तुम्हारा हिसाब किताब करके तुम्हारे एकाउंट में पैसे डाल दूँगा। "

ऐसी ही कुछ और औपचारिक बातों के बाद खुराना वहॉ से चला गया। जबकि सत्यम सिंह ये न देख सका कि जाते समय खुराना के होठों पर कितनी जानदार मुस्कान थी?

" ये सब क्या है डैड ?" जयदीप ड्राइंग रूम में दाखिल होते हुए तथा उत्तेजित से स्वर में बोलाा _" देखिए आज के अख़बार में क्या ख़बर छपी हैै ?"

" क्या हुआ बेटे ?" सोफे पर बैठे सत्यम सिंह ने सहसा चौंकते हुए पूँछाा _" कैसी ख़बर की बात कर रहे हो तुम ?"

" आप खुद ही देख लीजिए डैड। " जयदीप ने अपने हाथ में लिए अख़बार को अपने पिता की तरफ एक झटके से बढ़ाते हुए कहाा _" देख लीजिए कि किस तरह अख़बार वालों ने आपकी इज्ज़त की धज्जियाँ उड़ाई हैं ?"

सत्यम सिंह जयदीप के हाथ से अख़बार लेने के बाद उस पर नज़रें दौड़ाई। अख़बार के फ्रंट पेज पर ही बड़े अच्छरों में छपी हेडलाइन को पढ़ कर उसके होश उड़ गए। अख़बार में छपी हेडलाइन कुछ इस प्रकार की थी।

" मशहूर बिजनेसमैन सत्य म सिंह किसी अग्यात शख्स द्वारा धोखे का शिका र "

सोनपुर*(*रामगंज*)***:** शहर के मशहूर बिजनेसमैन सत्यम सिंह को किसी अग्यात व्यक्ति द्वारा करोड़ों रुपये का चूना लगाने का संगीन मामला सामने आया है। प्राप्त सूत्रों के अनुसार ये जानकारी मिली है कि मशहूर बिजनेसमैन सत्यम सिंह किसी विदेशी व्यक्ति के साथ पिछले महीने करोड़ों रुपये की डील की थी। उस डील के तहत सत्यम सिंह द्वारा विदेशी व्यक्ति को करोड़ों रुपये के बेहतरीन कपड़ों के थान सौंपे जाने थे। किन्तु पिछले दिन ही शाम को सत्यम सिंह के पीए को ये पता चला कि उनका जिस विदेशी व्यक्ति के साथ करोड़ों का सौदा हुआ था वो दरअसल सिरे से ही फर्ज़ी था। कहने का मतलब ये कि विदेशी व्यक्ति ने करोड़ों के कपड़े तैयार करवाए और उन कपड़ों के थान को लेने की बजाय बिना कुछ बताए लापता हो गया। मिली जानकारी के अनुसार विदेशी व्यक्ति ने खुद को दूसरे देश का मशहूर बिजनेसमैन बताया जिसके सबूत के तौर पर खुद सत्यम सिंह द्वारा उस विदेशी व्यक्ति की कंपनी प्रोफाइल भी देखी गई थी। विश्वस्त सूत्रों द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार सत्यम सिंह को करोड़ों रूपये के धोखे का पता तब चला जब उनकी फैक्ट्री में तैयार कपड़ों का करोड़ों रुपये के थान जिनमें और भी बहुत सी चीज़ें शामिल थी डील के लिए तैयार था। किन्तु उस सब को लेने वाला विदेशी नदारद था। उसके साथ कंटैक्ट करने की सारी कोशिशें जब नाकाम हो गईं और जब दो दिन तक भी विदेशी डीलर का पता न चला तो तब सत्यम सिंह को समझ आया कि उनके साथ कोई गेम खेल गया। मगर अब हो भी क्या सकता था*?* मिली जानकारी के अनुसार सत्यम सिंह की फैक्ट्री से तैयार करोड़ों की थान का अब कोई लेनदार न होने की वजह से भारी नुकसान हुआ है। ये विचार करने योग्य बात है कि विदेशी बिजनेसमैन के साथ व्यावसायिक संबंध बनाने के चक्कर में सत्यम सिंह जैसे पढ़े लिखे व सुलझे हुए बिजनेसमैन बिना सोचे समझे करोड़ों की डील करके खुद का नुकसान कर बैठे। कदाचित् बाहरी मुल्कों से व्यावसायिक संबंध बनाने के लालच में ही इतने बड़े धोखे और नुकसान के भागीदार बन बैठे।

अख़बार में छपी इस ख़बर को पढ़कर सत्यम सिंह का दिमाग़ सुन्न सा पड़ गया था। उसे समझ नहीं आया कि ये बात अख़बार वालों को किसने बताया हो सकता है? काफी देर तक

सत्यम सिंह के दिमाग के घोड़े इस बात की खोज में भटकते रहे।

" किस सोच में पड़ गए डैड ?" सहसा जयदीप ने पिता की तरफ गौर से देखते हुए कहा _" और ये सब आख़िर है क्या ? अख़बार में छपी इस ख़बर का क्या मतलब है डैड ??

सत्यम सिंह को समझ न आया कि अपने बेटे को क्या जवाब दे। फिर पता नहीं जाने क्या सोच कर उसने अपना मोबाइल निकाला और किसी को फोन लगा कर मोबाइल कान से लगा लिया।

कुछ देर कानों में रिंग जाने की आवाज़ सुनाई देती रही फिर उधर से काल रिसीव की गई।

" ये सब क्या है हरिप्रसाद ?" काल रिसीव होते ही सत्यम सिंह लगभग आवेश में बोला _" आज के अख़बार में हमारे संबंध में ये क्या बकवास छापा है अख़बार वालों ने ??"

"----------" उधर से जाने क्या कहा गया।

" हम कुछ नहीं सुनना चाहते। " सत्यम सिंह पूर्वत आवेश में ही बोला _" आख़िर इस बात की ख़बर अख़बार वालों को किसने दी ?"

"_____"

" अरे तो पता लगाओ हरिप्रसाद। " सत्यम सिंह ने कहा _" अख़बार वालों को क्या कोई ख़्वाब चमका है जो उन्हें इस बारे में ये सब पता चला ?"

"_____"

" वही तो कह रहे हैं हम हरि के प्रसाद। " सत्यम सिंह बोला _" अख़बार वालों को ये ख़बर देने वाला वही है जिसने इस साजिश को रच कर इसे अंजाम दिया है। तुम जल्द से जल्द पता लगाओ कि कौन है ये नामुराद जो हमारी इज्ज़त की धज्जियाँ उड़ाने पर तुला हुआ है ?"

"_____"

" हम कुछ नहीं जानते हरिप्रसाद। " सत्यम सिंह इस बार गुर्राया _" २४ घंटे के अंदर उस शख्स को ढूँढ़ कर हमारे सामने हाज़िर करो। वरना तुम्हारे लिए अच्छा नहीं होगा। "

इतना कहने के बाद सत्यम सिंह ने फोन काट कर मोबाइल को सोफे पर लगभग फेंक दिया था। इस वक्त सत्यम सिंह के चेहरे पर क्रोध और अपमान का मिला जुला भाव गर्दिश करता नज़र आ रहा था।

" क्या बात है डैड ?" जयदीप अपने पिता के चेहरे के भावों को गौर से देखते हुए बोला _" आप कुछ परेशान से लग रहे है ?"

" अभी हम किसी से बात करने के मूड में नहीं हैं बेटे। " सत्यम सिंह ने अजीब लहजे मे कहा _" इस लिए तुम जाओ यहॉ से , हमें कुछ देर अकेले में रहना है। "

जयदीप पूछना तो बहुत कुछ चाहता था किन्तु अपने पिता का खराब मूड देख कर चुपचाप वहॉ से अपने कमरे की तरफ बढ़ गया।

" बेटे को तो टाल दिया आपने। " सहसा सोनिया ने ड्राइंग रूम में आते हुए कहा _" मगर मुझे इस तरह टाल नहीं सकते आप। "

" सोनिया प्लीज़। " सत्यम सिंह ने झुझलाते हुए कहा _" मैं इस वक्त किसी से कोई बात नहीं करना चाहता। "

" ये तो कोई बात न हुई। " सोनिया ने कहा _" किसी बात को लेकर अगर आप परेशान हैं तो आपको देखकर हम सब भी परेशान हो जाएंगे। इस लिए जो भी बात है बता दीजिए कम से कम मन को शान्ति तो मिलेगी। "

सत्यम सिंह जानता था कि सोनिया बात को बिना जाने नहीं मानेगी, इस लिए उसने उसे सबकुछ बता देना ही बेहतर समझा। एक गहरी सास लेकर उसने सोनिया को सारी बातें बता दी जो पिछले महीने से अब तक उसके साथ हुआ था। सब कुछ जानने के बाद सोनिया भी गंभीर हो गई।

" लेकिन आप ये कैसे पता लगाएंगे कि किसने आपके साथ ये सब किया है ?" सोनिया ने कहा _" जबकि आपके पास उसके बारे में कोई सबूत नहीं है। अगर आप ये समझते हैं कि उनके चेहरे की बिना पर उन्हें खोजेंगे तो तब भी आप उन्हें नहीं खोज पाएंगे। "

" तुम ऐसा कैसे कह सकती हो भला ?" सत्यम सिंह चौंकते हुए बोला था।

" सीधी सी बात है। " सोनिया ने कहा _" वो जो भी थे आपसे या आपके पीए से हमेशा फॉरेनर की वेशभूषा या शक्ल में ही मिले थे। मतलब साफ है कि वो लोग शुरू से ही आपसे या आपके पीए से अपनी असलियत छुपाना चाह रहे थे , ये भी कि आपको तथा आपके पीए को उनके बारे में ज़रा सा भी किसी प्रकार का शक न हो। आज ये आलम है कि वो अपने मकसद में उसी तरह कामयाब हो कर गायब हो गए जैसा उन्होंने कर गुज़रने का प्लान बनाया रहा होगा। "

सत्यम सिंह अपनी बीवी की इस बात को सुन कर अवाक् सा रह गया। सोनिया को इस तरह देखने लगा था वह जैसे सोनिया की गर्दन अपने धड़ से अलग हो कर हवा में कत्थक करने लगी हो।

" क्या मैंने कुछ ग़लत कहा डियर ?" सोनिया ने मुस्कुराते हुए पूछा।

" कभी कभी तुम्हारा दिमाग़ भी किसी सफल जासूस की तरह चलता है। " सत्यम सिंह

बोलाा _" यकीनन तुम्हारा ये तर्क अपनी जगह एक दम दुरुस्त है। तुम्हारी बातों में वजन है , और अगर तुम्हारी इस बात के अनुसार सोचा जाए तो अब हमारे लिए ये बेहद मुश्किल काम है उन लोगों को ढूँढ़ पाना। "

" वकालत की पढ़ाई आपने ही नहीं बल्कि मैंने भी की है जनाब। " सोनियाा ने हॅस कर कहाा _" ये अलग बात है कि मैंने इस पढ़ाई के बाद वकील बन कर किसी कोर्ट में किसी के पक्ष में वकालत नहीं की। "

" अच्छा ही किया न। " सत्यम सिंह ने भी हॅस कर कहाा _" वरनाा बड़े बड़े वकीलों की छुट्टी हो जाती। "

" ऐसा आप कह सकते हैं। " सोनियाा ने अर्थपूर्ण लहजे में कहाा _" क्योंकि आपको ही अपनी छुट्टी हो जाने का अंदेशा हुआ नज़र आया है। "

" तुम ऐसा सोचती हो तो चलो ऐसा ही सही। " सत्यम सिंह बोलाा _" लेकिन इस बारे में अब तुम्हारा क्या खयाल है , मेरा मतलब कि अब हम कैसे उन लोगों का पता लगाएंगे ?"

" सब कुछ बहुत सोच समझ कर पहले से ही प्लान बना लिया था उन लोगों ने। " सोनियाा ने सोचने वाले भाव से कहाा _" इस लिए इस बारे में पक्के तौर पर कुछ कहा नहीं जा सकता कि वो हमारे द्वारा पता कर ही लिए जाएंगे। "

सत्यम सिंह का खयाल भी यही था इस लिए कुछ बोला नहीं वह।जबकि,,,,

" वैसे आपका अपने उस भतीजे के बारे में क्या खयाल है ?" सोनियाा ने कहाा _" हो सकता है ये सब उसी का किया धरा हो ?"

" नहीं यार। " सत्यम सिंह कह उठाा _" उससे इस सब की उम्मीद मैं नहीं करता। क्योंकि जिस तरह से सोच समझ कर तथा प्लान बना कर हमसे धोखा किया गया है वैसा करना विक्रम के बस का रोग़ नहीं है। वो साला तो किसी होटल या ढाबे में अपने साथ साथ अपनी मॉ बहन को भी कप प्लेट धोने के काम में लगा दिया होगा। इतना कुछ करने के लिए दिमाग़ चाहिए और फॉरेनर लुक पाने के लिए ढेर सारा पैसा जो उसके पास होने का कोई चान्स ही नहीं है। तुम बेवजह ही इस सबके पीछे उसको ही जिम्मेदार ठहरा रही हो सोनियाा। "

" हमें हर पहलू पर गौर करना चाहिए डियर हस्बैण्ड। " सोनियाा ने कहाा _" एक अच्छा इन्वेस्टिगेटर वही होता है जो हर पहलू के बारे में सोच विचार करे। ज़रा सोचिए ... इस तरह की घटनाएं तभी से शुरू हुईं हैं जबसे विक्रम अपने साथ अपनी मॉ बहन को लेकर यहॉ से मुंबई गया है। इसके पहले आज तक कभी भी ऐसी कोई बात नहीं हुई। उसका हमारे बेटे को बुरी तरह मार पीटकर यहॉ से जानाा , ट्रेन से अपनी मॉ बहन सहित रहस्यमय तरीके से गायब हो जानाा , और अब यहे ..... आपका किसी के द्वारा इस तरह धोखा खा कर

नुकसान हो जाना। ये तो आपको भी पता है कि कोई दूसरा आपके साथ ऐसा नहीं कर सकता फिर बचता कौन है ??"

सत्यम सिंह के दिलो दिमाग़ में अचानक ही मानो धमाके से होने लगे। सोनिया द्वारा कहा गया एक एक शब्द उसके मनमस्तिष्क पर गहरी चोंट कर रहा था। जबकि....

" वर्तमान समय में अगर कोई आपके खिलाफ खड़ा हो सकता है तो वो है विक्रम। " सोनिया गंभीरता से कह रही थी _" आपसे जिसे सबसे ज्यादा तक़लीफ है तो वो है विक्रम । बात भी सही है डियर हस्बैण्ड ... हमने उनके साथ क्या क्या बुरा नहीं किया। हर दुख दिये उन्हें , यहां तक कि हमारी वजह से आज वो अपने ही घर से बेघर हैं। ख़ैर ... इन सब बातों के कहने का मतलब यही है कि मौजूदा हालात में इस सबके पीछे अगर किसी पर सबसे ज्यादा उँगली उठती है तो सिर्फ विक्रम पर। "

सत्यम सिंह के पास कहने के लिए जैसे कुछ था ही नहीं, जबकि उसकी खामोशी और उसके चेहरे पर तैरते हज़ारों भावों को बारीकी से परखते हुए सोनिया ने पुन: कहा_"आप हमेशा इस बात पर ज़ोर देते हैं कि विक्रम मुंबई में किसी होटल या ढाबे में कप प्लेट धोता होगा और अब अपनी मॉ बहन को भी इसी काम में लगा दिया होगा। लेकिन क्या आपके पास अपकी इस बात का ठोस सबूत है? क्या आपने कभी अपनी आॅखों से देखा है कि विक्रम मुंबई में किसी होटल या ढाबे में कप प्लेट धोने का काम करता है...नहीं न?? बल्कि ये सिर्फ आपकी अपनी सोच है जो ग़लत भी हो सकती है।"

" तुमने तो यार मेरा ब्रेन वाश ही कर दिया। " सत्यम सिंह गहरी सास ली , उसकी आॅखों में अपनी पत्नी के प्रति प्रशंसा के भाव थे _" यकीनन तुममें एक अच्छे इन्वेस्टिगेटर होने के गुण हैं। तो तुम्हारे मतानुसार ये सब जो कुछ हुआ है उसका जिम्मेदार सिर्फ विक्रम है ?"

" मै ये नहीं कहती डियर हस्बैण्ड कि ये सब विक्रम ने ही किया है। " सोनिया ने अजीब भाव से कहा _" बल्कि मैं तो सिर्फ संभावना व्यक्त कर रही हूॅ कि किसने क्या किया हो सकता है। पक्के तौर पर तो तभी कहा जाता है न जब हमारे पास किसी बात का ठोस व पुख्ता सबूत हो ??"

" आई एग्री विद यू माई डियर। " सत्यम ने मुस्कुराते हुए कहा _" तो हम अब इस थ्योरी के साथ चलेंगे कि ये सब विक्रम ने किया हो सकता है। लेकिन अब सवाल ये है कि ... कैसे ?? इतना कुछ वो कैसे कर सकता है भला जबकि इतना कुछ कर गुजरने की काबिलियत उसमे है ही नहीं इतना तो मुझे यकीन है ?"

" आपका ये यकीन बेमतलब भी तो हो सकता है डियर हस्बैण्ड। " सोनिया ने तर्क किया _" क्योकि आपके पास अपने इस यकीन की भी ठोस वजह नहीं है ये मुझे पता है। "

" अब बस भी करो यार। " सत्यम सिंह ने बुरा सा मुॅह बनाया _" आज क्या मूॅग की दाल में

भीमसेनी काजल मिला कर खाया है तुमने ? मेरी हर बात की हर विचार की धज्जियॉ उड़ाए जा रही हो तुम। "

" मेरा ऐसा करने का कोई इरादा नहीं था डियर हस्बैण्ड। " सोनिया मुस्कुराई _" मैने तो बस अपने विचार और तर्क पेश किये हैं , और अपने डियर हस्बैण्ड को सही राह की तरफ जाने का मार्ग बताने की कोशिश की है। "

सत्यम सिंह को सोनिया पर बेहद प्यार आया, और उसने आगे बढ़ कर अपनी पत्नी को अपनी बॉहों मे भर लिया। कुछ पल उसकी आॅखों में झॉकने के बाद उसने झुक कर सोनिया के रस भरे अधरों को अपने होठों के बीच भर कर उन्हें चूमने चूसने लगा।

सोनिया के जिस्म में आनंद की मीठी मीठी लहरें तैरने लगी। उसने भी अपने दोनो हाथ सत्यम सिंह के गले में डालकर इन होठों के चुंबन तथा चुसाई का भरपूर आनंद लेने लगी। वे दोनो भूल गये कि इस वक्त वे अपने बेडरूम में नहीं बल्कि ड्राइंग रूम में हैं जहॉ पर किसी के भी द्वारा देख लिए जाने का खतरा था।

सत्यम सिंह बुरी तरह सोनिया के होठों को चूस रहा था। उसका बॉया हाथ सरकते हुए सीथा सोनिया के दॉएं स्तन पर आकर बड़े आकार के स्तन को सख्ती से अपनी मुट्ठी में भर कर मसलना शुरू कर दिया। अपनी स्तन को इस तरह मसले जाने से सोनिया के मुॅह से एक दर्दयुक्त किन्तु आनंद से भरी हुई आह निकल गई जो सत्यम सिंह के होठों के बीच ही दब कर रह गई। ये दोनों जैसे सब कुछ भूल चुके थे, ये भी कि अपने कमरे से ड्राइंग रूम की तरफ आता हुआ उनका बेटा जयदीप अपने मॉम डैड को इस हालत में देख कर भी वापस नहीं पलटा था बल्कि वहीं छुपकर इस नज़ारे का मज़ा लेने लगा था। उसके होठों पर बेशर्मी से भरी मुस्कान तैरने लगी थी तथा साथ ही अपने दाएॅ हाथ से पैन्ट के ऊपर से ही सही मगर अपने लिंग को मसले भी जा रहा था।

४

" तुम दोनों ने बहुत ही बेहतर तरीके से इस काम को अंजाम दिया है मेरे बच्चो। " ड्राइंग रूम में सोफे पर बैठे उमाकांत पाटिल ने मुस्कुराते हुए कहा _" सत्यम सिंह सोच भी नहीं सकता है कि उसके साथ ये खेल खेलने वाले वो दो फॉरेनर कौन थे ?"

" खेल ऐसा ही होगा अंकल जो किसी को समझ में ही न आए। " विक्रम ने प्रभावशाली स्वर में कहा _" और सत्यम सिंह के साथ अब वो होगा जो उसने सोचा भी न होगा। "

" मैं तो बेवजह ही तुम्हें इसके लिए किसी ऐक्टर या मॉडल का सजेशन दे रहा था बेटे। " उमाकांत ने कहा _" मुझे लगता था कि इस काम के लिए एक ऐक्टर ही बेहतर हो सकता है क्योकि उन्हें हर तरह के किरदार निभाने का तरीका और अनुभव होता है। जबकि तुमने खुद ही इस काम को करने का ज़ोर दिया। "

मेरे ज़ोर देने की वजह आप अच्छी तरह जानते हैं अंकल।" विक्रम ने कहा_"आप जानते हैं कि ये जंग मेरी है और इस जंग में मुझे ही हिस्सा लेकर इसे इसके अंजाम तक पहुचाना है। रही बात फॉरेनर बन कर सत्यम सिंह से खेल खेलने की तो इसमें फॉरेनर के रोल के लिए किसी ऐक्टर की ज़रूरत ही नहीं थी, हॉ फॉरेनर लुक की आवश्यकता ज़रूर थी तो उसके लिए आपने मेकअप आर्टिस्ट को बुलवाया ही था। उसने मुझे जोनाथन रोड्रिग्ज और गुड़िया(निशा) को एॅजिला रोड्रिग्स का मेकअप करके लुक दे दिया। उसके बाद आपने देखा ही कि कैसे हम दोनों भाई बहन ने सत्यम सिंह के साथ ये खेल खेला। मुझे गुड़िया(निशा) की फिक्र ज़रूर थी लेकिन उसने भी अपना एॅजिला रोड्रिग्स का रोल बेहतरीन तरीके से अदा किया। हलाकि मैं ये नहीं चाहता था कि एॅजिला रोड्रिग्स के रूप में मेरी पत्नी का किरदार गुड़िया निभाए क्योंकि वो मेरी बहन है, लेकिन गुड़िया की ही ज़िद थी कि ये किरदार वही निभाएगी। ख़ैर जो हुआ अच्छे तरीके से हो गया।"

" सत्यम सिंह उन दोनो फॉरेनर को ढूॅढ़ने की जी तोड़ कोशिश कर रहा होगा। " उमाकांत ने कहा _" मगर ढूॅढ़ नहीं पाएगा। ढूॅढ़ भी कैसे पाएगा , जबकि जोनाथन रोड्रिग्ज और एॅजिला रोड्रिग्स नाम के इन लोगों का कहीं कोई वजूद ही नहीं है। ये बात तो वो सोच ही नहीं सकता कि जिन दो फॉरेनर से वह मिला था वो कोई और नहीं बल्कि उसके ही अपने हैं जिनके साथ उसने बुरा करने में कोई कसर नहीं छोंड़ी। "

" हर चीज़ का हिसाब लूॅगा अंकल हर चीज़ का। " विक्रम ने कहा _" ये तो अभी ट्रेलर है , अभी आगे खुलकर खेल होगा। "

" अनिल खुराना को इस खेल में कैसे शामिल किया तुमने ?" उमाकांत के मन में ये सवाल पहले से था _" वो तो सत्यम सिंह का ही बिजनेस पार्टनर है न ?"

" खुरान◌ा को इस खेल में शामिल नहीं किया अंकल। " विक्रम जाने क्या सोच कर मुस्कुराया था बोल◌ा _" बल्कि उसे सत्यम सिंह से अलग हो जाने के लिए मजबूर किया था मैंने। "

" क्या मतलब ?" उमाकांत ने चौंकते हुए कह◌ा _" और वह तुम्हारे द्वारा भला कैसे इस सबके लिए मजबूर हो गय◌ा ??"

" किसी की कमज़ोर नस अगर आपके पास आ जाए तो आप उससे कुछ भी करा सकते हैं अंकल। " विक्रम ने कह◌ा _" खुरान◌ा के साथ वही मामला हुआ है। "

" बात कुछ समझ में नहीं आई बेटे। " उमाकांत ने उलझन भरे भाव से कह◌ा _" ज़रा बात को स्पष्ट करके बताओ। "

" दरअसल बात ये है अंकल कि सत्यम सिंह और खुरान◌ा बिजनेस पार्टनर के अलावा भी बहुत कुछ हैं। " विक्रम ने कह◌ा _" आप यूँ समझिए कि ये दोनो हर चीज़ मिल बॉटकर खाते पीते हैं। फिर वो चीज़ चाहे कितनी ही पर्सनल क्यों न हो। अगर स्पष्ट रूप से कहा जाए तो ये कि उन दोनों में उस तरह का संबंध है जिसे ये समाज अनैतिक करार देता है। ये दोनों अपनी खुशी और आनंद को पाने के लिए एक दूसरे की बीवियों के साथ जिस्मानी संबंध बनाते हैं। "

" क् क्य◌ा ?????" उमाकांत पाटिल ये बात सुनकर इस तरह उछला था जैसे कि जिस सोफे पर वह बैठा था वो अचानक ही गर्म शोलों में तब्दील हो गया ह◌ो , बोल◌ा _" ये तुम क्या कह रहे हो बेट◌े ?"

" यही सच है अंकल। " विक्रम ने ज़ोर दे कर कह◌ा _" अब आप समझ सकते हैं कि सत्यम सिंह किस हद तक कमीना इंसान है। "

उमाकांत पाटिल मुह और आखें फाड़े देखता रह गया था विक्रम को। उसे यकीन नही हो रहा था कि सत्यम सिंह इस हद तक गिर सकता है। जबकि,,,,

" मेरे पास खुरान◌ा की यही कमज़ोरी थी अंकल। " विक्रम कह रहा थ◌ा _" मैंने बड़ी मुश्किल से किसी के द्वारा खुरान◌ा के कुछ ऐसे फोटोग्राफ्स हासिल कर लिए थे जिनमें खुरान◌ा की अपनी बीवी किसी गैर के साथ सहवास कर रही थी और खुरान◌ा एक दूसरे आदमी द्वारा सहवास(नितंब मरवा रहा थ◌ा) कर रहा था। इन फोटोग्राफ्स के आधार पर ही मैंने खुरान◌ा को मजबूर किया कि वो सत्यम सिंह से अलग हो जाए वरन◌ा उसके इन फोटोग्राफ्स को सार्वजनिक कर दिया जाएगा। फिर क्या थ◌ा , खुरान◌ा को सत्यम सिंह से अलग होना पड़ा। सत्यम सिंह तो ये भी नहीं जानता कि खुरान◌ा के ही द्वारा अभी और क्या होने वाला ह◌ै ?"

" क्या मतलब ?" उमाकांत चौंक◌ा _" अभी और क्या करवा रहे हो तुम खुरान◌ा स◌े ?"

" आपको भी पता चल जाएगा अंकल। " विक्रम ने मुस्कुराते हुए कहा _" बस इंतज़ार कीजिए थोड़ा। "

" कम से कम मुझे बताने में तो तुम्हें कोई हर्ज़ नहीं होना चाहिए। " उमाकांत ने हॅस कर कहा।

" इन बातों में मज़ा तभी आता है अंकल जब वो चीज़ हो जाए जो हम चाहते हैं। " विक्रम ने कहा _" और वैसे भी सस्पेन्स नाम की चीज़ कुछ समय तक तो रहना ही चाहिए। "

" तुम और तुम्हारी बातें। " उमाकांत ने मुस्कुरा कर कहा _" इतना जल्दी समझ में कहॉ आती हैं ? ख़ैर तुम्हारे लिए एक ख़बर है हमारे पास। "

" कैसी ख़बर अंकल ?" विक्रम ने पूॅछा।

" सत्यम सिंह की बड़ी बेटी साक्षी अब पुलिस ऑफिस र बन गई है। "

" ये तो अच्छी बात है न उनके लिए। " विक्रम ने कहा _" वैसे भी बहुत जल्द उन्हें नए पुलिस वालों से संबंध बनाना पड़ेगा जिससे उसके किसी काम में किसी तरह की रुकावट न हो सके। "

" जो भी हो। " उमाकांत ने कहा _" मुझे पता चला है कि तुम्हारे दादा दादी का केस बहुत जल्द साक्षी अपने हाथ में लेने वाली है। "

" उससे कुछ नहीं होगा अंकल। " विक्रम के चेहरे पर गंभीरता थी _" सत्यम सिंह अपनी पहुॅच और पावर से इस केस को इसके अंजाम तक पहुॅचने ही नहीं देगा। साक्षी दीदी अपने सीनियर के आदेश के खिलाफ कुछ नहीं कर सकती। "

" देखते हैं क्या होता है ?" उमाकांत ने कहा _" ख़ैर छोंड़ो ये सब ... अभी ऑफिस जा रहे हो क्या ?"

" हॉ कुछ ज़रूरी काम भी है। " विक्रम कुछ सोचते हुए बोला।

उमाकांत ने बड़े गौर से विक्रम के चेहरे की तरफ देखा, जिसमें कभी कभी पीड़ा के भाव आते और लुप्त होते नज़र आ रहे थे। विक्रम ने उमाकांत को जब इस तरह अपनी तरफ देखते पाया तो कह उठा_"ऐसे क्यों देख रहे हैं अंकल?"

" देख रहा हूॅ कि कितनी सफाई से तुम अपने उस दर्द को छुपा लेते हो जो तुम्हारे दिल में है। " उमाकांत ने कहा _" वो दर्द पारिवार से संबंधित नहीं है वो तो किसी से बेपनाह मोहब्बत करने वाला है। "

" ऐसा कुछ नहीं है अंकल। " विक्रम ने नजरें चुरा कर कहा और एक झटके से सोफे से उठ कर खड़ा हो गया।

" आखें सब बयां कर देती हैं बेटे। " उमाकांत ने कहा _" हमने बहुत दुनियॉ देखी है , इतना तो हम महसूस कर सकते हैं कि सामने वाले के दिल में क्या है ? और वैसे भी मोहब्बत एक ऐसी चीज़ होती है जो हर हाल में अपने होने का सबूत देती है। "

" पता नहीं आप क्या कह रहे हैं अंकल ?" विक्रम ने कहा _" चलता हूॅ मैं। "

विक्रम वहॉ से बाहर निकल गया, जबकि उमाकांत वहीं बैठा रहा आॅखों में आॅसुओं के कतरे लिए।

५

" आइये दीदी। " अपर्णा ने दरवाज़े से हटकर सोनिया को अंदर की तरफ आने का रास्ता देते हुए कहा _" मैं कल आपका इंतज़ार कर रही थी लेकिन आप आई ही नहीं। "

" हॉ वो कमर में दर्द था तो नहीं आ पाई। " सोनिया ने कहा और अंदर की तरफ आ कर ड्राइंग रूम में रखे सोफे पर बैठ गई , फिर अपर्णा की तरफ देख कर कहा _" अगर कोई ज़रूरी काम था तो तुम ही आ जाती मेरे पास। अब इतना दूर भी तो नहीं है कि तुम आ न सको। "

" आप तो जानती हैं दीदी कि इन्हें(सुंदर सिंह भाटी) मेरे कहीं आने जाने से तक़लीफ होती है। " अपर्णा ने कहा _" और वैसे भी घर का इतना सारा काम हो जाता है कि उसी में सारा समय निकल जाता है। "

" मैंने तो सुंदर से जाने कितनी बार कहा है कि घर के काम के लिए एक दो नौकरानी रखवा दो। " सोनिया ने कहा _" मगर न वो मेरी सुनते हैं और न ही अपने बड़े भाई सत्यम की सुनते हैं। आख़िर हम कोई ग़ैर नहीं अपने ही तो हैं। भला क्या ज़रूरत है सुंदर को स्कूल में पढ़ाने की ? माना कि सरकारी नौकरी है मगर इस नौकरी मिलता क्या है ? अपना परिवार भी ढंग से नहीं चला सकते इस नौकरी के रुपये पैसे से। सत्यम ने कितनी बार कहा है कि सुंदर बिजनेस में उनका हाथ बॅटाए जिससे रुपये पैसे की कोई कमी न आए। मगर ,,,,,

" जाने दीजिए दीदी। " अपर्णा ने बेचैनी से पहलू बदला _" आप तो जानती हैं कि वो इस नौकरी और इस नौकरी से मिलने वाली तनख्वाह से खुश हैं। मैंने भी तो उन्हें बहुत समझाया है मगर वो हमेशा की तरह मेरी बात पर मुझे नसीहतें देने लगते हैं कि ' मैं एक शिक्षक हूॅ , गुरू हूॅ ..... स्कूल में बच्चों को अच्छी शिक्षा देकर उनका उज्वल भविष्य बनाना मेरा फर्ज़ है। स्कूल के बच्चे हमारे देश का भविष्य हैं। और भी न जाने क्या क्या भाषण देने लगते हैं। "

" हॉ जानती हूॅ मुझे भी कभी कभी जब मैं उससे बात करू गी तो इसी तरह भाषण देने लगते हैं। " सोनिया ने कहा _" सृष्टि तो अभी सुंदर के साथ ही स्कूल में होगी न ?"

" जी वो तो शाम को उनके साथ ही आएगी। " अपर्णा ने कहा _" और सुनाइए क्या हो गया था आपकी कमर को ??"

" मत पूछो अपर्णा। " सोनिया ने अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कुराते हुए कहा _" कल तो सारा बदन टूट रहा था लेकिन .... हाय मज़ा भी बहुत आया था। "

" मतलब भाई साहब ने कल आपकी हालत बिगाड़ दी। " अपर्णा मुस्कुराई।

" और नहीं तो क्या। " सोनिया ने कहा _" पूरे चार राउण्ड में बुरी तरह रगड़े हैं मुझे। "

" अच्छा तो है न। " अपर्णा ने एकाएक कुछ उदास भाव से कहा _" आपको शान्ति तो मिल जाती है। "

" सुंदर से उसके इलाज के संबंध में बात किया कि नहीं तुमने ?" सोनिया ने पूँछा।

" वो नहीं मानते हैं दीदी। " अपर्णा ने अजीब भाव से कहा _" कहते हैं कि अब ज़रूरत ही क्या है ? दो बच्चे तो हो ही गए हैं हमारे। अब इलाज़ की कोई ज़रूरत नहीं है। "

बात दरअसल ये है कि दो साल पहले सुंदर सिंह अपनी मोटर साइकिल *(*बुलेट जो विक्रम के पिता ने खरीद कर दी थी*)* से स्कूल जा रहा था, पता नहीं उसका ध्यान कहाँ था, उसे पता ही नहीं चला और मोटर साइकिल सड़क से नीचे उतर गई। सुंदर सिंह कुछ कर न सका क्योंकि तब तक देर हो चुकी थी। भारी भरकम बुलेट के साथ लुढ़कते हुए सुंदर सिंह नीचे पहुँच गया। ज़मीन से काफी ऊँची सड़क थी। इस छोटे से एक्सीडेन्ट में सुंदर सिंह को काफी चोंटें लगी तथा दाहिना हाथ भी टूट गया। ख़ैर ये सब तो इलाज़ में ठीक हो जाना था किन्तु दो दिन बाद जब सुंदर सिंह अपनी पत्नी अपर्णा के साथ सहवास करना चाहा तो उसका लिंग ही न खड़ा हुआ। अपर्णा ने कई तरह से लिंग को खड़ा करने की कोशिश की किन्तु कोई फायदा न हुआ। तब ये बात सामने आई कि एक्सीडेन्ट में सुंदर सिंह के प्राइवेट पार्ट में भी अंदरूनी चोंट लगी थी, सुंदर सिंह चूँकि बेहोश हो गया था इस लिए उसे पता ही नहीं चला। ख़ैर अब समस्या हो गई कि सुंदर सिंह का लिंग ही नहीं खड़ा हो रहा, इस बात से सुंदर सिंह से ज्यादा अपर्णा परेशान हो गई। अपर्णा ने इसके लिए सुंदर सिंह को इलाज़ करवाने का कहा लेकिन लाज और शरम के कारण सुंदर सिंह इसके लिए तैयार ही न हुआ। अपर्णा ने उसे बहुत समझाया, ये तक कहा कि वो सहवास के बिना कैसे रह पाएगी*?* इस पर सुंदर सिंह नाराज भी हुआ, और कहा कि दो बच्चे हो गए हैं। रही बात सहवास की तो खुद पर काबू रखना सीखो, जीवन में सहवास ही सब कुछ नहीं होता। सुंदर सिंह वैसे भी गुस्सैल स्वभाव का था इस लिए अपर्णा बेचारी मन मार रह गई। ये बात सुंदर के अलावा सिर्फ अपर्णा ही जानती थी, बाकी किसी को कुछ पता नहीं था। फिर ऐसे ही लगभग एक साल बाद बेध्यानी में ये राज की बात अपर्णा के मुख से सोनिया के सामने निकल गई। बाद में अपर्णा ने विनती करते हुए सोनिया से कहा भी कि ये बात वो किसी से न बताएं। औरत ज़ात के पेट में कहाँ देर तक कोई बात रह पाती है, नतीजतन उसने उसी दिन सत्यम सिंह से ये सब बता दिया। सत्यम सिंह ये जानकर हैरान हुआ कि उसका छोटा भाई सुंदर सिंह अब अपनी बीवी के साथ सहवास करने के काबिल नहीं रहा। किन्तु अगले ही पल उसे खुशी भी हुई इस बात से। वो जानता था कि अपर्णा अभी भरपूर जवानी में है और वो सहवास के बिना रह नहीं पाएगी। हलाँकि ये उसकी सोच ही थी, और इसी सोच के आधार पर वह जाने क्या क्या ख्वाब सजा बैठा। उसने सोनिया से इस बारे में बात की कि वह अपर्णा को उसके साथ सहवास के लिए तैयार करे। सोनिया अपने पति को अच्छी तरह जानती थी कि सत्यम सिंह औरत की योनी का कितना दिवाना है, अगर नहीं होता तो अपनी ही बेटी पर नीयत ख़राब नहीं करता। ख़ैर सोनिया तो खुद ही चाहती थी कि सुंदर व अपर्णा उनके साथ हर काम में शामिल हो जाएं। इस लिए उसने दूसरे दिन से ही अपर्णा से नज़दीकियाँ बढ़ाना चालू कर दिया। अपर्णा किसी भी मामले में सोनिया से कम न

थी। बल्कि ऊपर ही थी, सोनिया के मुकाबले वह अभी जवान ही थी। किन्तु स्वभाव से सरल व बहुत कम बोलने वाली औरत थी। सुंदर सिंह से उसने प्रेम विवाह किया था। सुंदर के अलावा किसी दूसरे मर्द के बारे में वह सोचना भी गुनाह मानती थी।

सोनिया पढ़ी लिखी तथा खेली खाई औरत थी, किसी को कैसे फॅसाना है ये उसे अच्छी तरह आता था। काम मुश्किल तो था लेकिन असंभव नहीं। मगर सोनिया की सारी कोशिशें बेकार गईं अर्थात् वह अपर्णा को इस सबके के लिए तैयार न सकी। दरअसल वह खुल कर ये तो कह नहीं सकती थी कि 'आओ और मेरे पति से सहवास कर लो।' इस लिए उसने उससे सहवास से संबंधित अपनी लाइफ के बारे में बता बता कर ही अपर्णा के मन में सहवास की फीलिंग्स भरने का प्रयास करती रही। वह सत्यम के साथ अपनी सहवास लाइफ के बारे में खुल कर उससे बात करती थी। शुरू शुरू में तो अपर्णा ऐसी बातें सुनती ही नहीं थी कदाचित उसे सोनिया के मुख से ऐसी अश्लीलतापूर्ण बातों से बेहद शरम आती थी। इस लिए हर बार वह सोनिया के सामने हाथ जोड़ कर उससे ऐसी बातें न करने को कहने लगती थी, लेकिन सोनिया भला कहॉ मानने वाली थी? वह तो उसके पास आती ही एक मकसद के साथ थी। ख़ैर धीरे धीरे अपर्णा को भी इन सब बातों को सुनने की आदत हो गई।

" ये तो कोई बात न हुई अपर्णा। " सोनिया कह रही थी _" आखिर कब तक ऐसा चलेगा ? सुंदर को तुम्हारे बारे में कुछ तो सोचना चाहिए। उसे सोचना चाहिए कि अभी तुम्हारी उमर ही क्या हुई है ? अभी तो तुम जवान हो , और शादीशुदा जवान औरत बिना सहवास के कैसे रहेगी ?"

" जाने दीजिए दीदी। " अपर्णा ने एक गहरी सास ली _" अब तो आदत हो गई है। अब इन बातों की तरफ ध्यान ही नहीं जाता मेरा। घर के काम और बच्चों में ही सब समय निकल जाता है। "

" और जब रात होती है तथा सुंदर के साथ एक ही बिस्तर पर लेटती हो तब क्या इस तरफ ध्यान नहीं जाता होगा ?" सोनिया ने कहा _" जरूर जाता होगा छोटी , और ये सोच कर दुख भी होता होगा कि कुछ हो ही नहीं सकता। "

" ऐसा नहीं है दीदी। " अपर्णा ने भावहीन स्वर में कहा _" मैं तो इनके(सुंदर) साथ सोती ही नहीं। बल्कि मैं तो हमेशा अपने बेटे रणदी प के साथ ही सोती हूॅ। आप तो जानती हैं वो दिमाग से डिस्टर्ब है , रात में उसे देखना पड़ता है वरना जागने के बाद वह कब किधर चला जाए पता ही नहीं चलता। "

" फिर भी अपर्णा। " सोनिया ने कहा _" मन को कितना भी बहला लो लेकिन जो तक़लीफ और दुख का कारण है उसका ख्याल तो आ ही जाता है। जवान औरत को अपनी सहवास की गर्मी को बर्दाश्त कर पाना ज़रा मुश्किल होता है। "

" किया भी क्या जा सकता है ? अपर्णा ने सिर झुकाते हुए कहा _" इन्होंने तो जैसे

कसम खा ली है कि इलाज़ नहीं करवाएंगे। क्या उनकी इच्छा नहीं होती होगी इसकी ? मगर जैसे उन्होंने खुद की इच्छाओं को दबा लिया है वैसे ही मैने भी दबा लिया है। "

" हाय कैसे रह लेती हो तुम ?" सोनिया ने कहने के साथ ही साड़ी के ऊपर से अपर्णा की नज़र में अपनी योनी को मसला _" मुझसे तो एक दिन भी बगैर लिंग के नहीं रहा जाता। हर रात रगड़ रगड़ कर ठुकवाना पड़ता है जयदीप के डैड से। मौका मिलता है तो दिन में भी ठुकवा लेती हूँ। कसम से अपर्णा जयदीप के डैड का लिंग घोड़े जैसा है और जब तक उस घोड़े जैसे लिंग से अपने आगे पीछे पेलवा नहीं लेती न तब तक चैन नहीं आता। "

" आपके मज़े हैं फिर तो। " अपर्णा ने हँसते हुए कहा _" आपका भाग्य अच्छा है दीदी , जो आपको इतना कुछ मिल रहा है। "

" भाग्य बनाना पड़ता है छोटी। " सोनिया ने कहा _" तुमने अपना भाग्य खुद ही बिगाड़ रखा है तो कोई क्या कर सकता है ?"

" मैंने कैसे अपना भाग्य बिगाड़ लिया भला ?" अपर्णा के माथे पर अनायास ही बल पड़ता चला गया _" आप तो जानती हैं कि .... ये ,

" एक ही बात है। " सोनिया ने अपर्णा की बात को काटकर कहा _" वरना चार दिन की ज़िन्दगी में हर चीज़ का मज़ा लिया जा सकता है। "

" मतलब ???" अपर्णा ने नासमझने वाले भाव से पूँछा।

" अब अगर मैं कुछ कहूँगी तो तुम्हें लगेगा कि ये मैं क्या ऊल जलूल बक रही हूँ ?" सोनिया ने अजीब भाव से कहा था।

" मैं ऐसा क्यों कहूँगी दीदी ?" अपर्णा ने हँस कर कहा।

" तुम भी जानती होगी कि बड़े बड़े शहरों में कैसे लोग हर पल का आनंद लेते हैं ?" सोनिया ने धड़कते दिल के साथ कहा _" वहाँ शहरों में कोई औरत तुम्हारी तरह इस तरह नहीं बैठी नहीं रह जाती हैं बल्कि ऐसे हालात में भी अपने जिस्म की भूँख को मिटाने के लिए रास्ता खोज लेती हैं। "

" क्या मतलब ??" अपर्णा ने हैरानी से पूँछा था _" किस तरह का रास्ता दीदी ??"

" ज्यादा भोली न बनो तुम। " सोनिया ने कहने के साथ ही अजीब सा मुँह बनाया फिर मुस्कुरा कर बोली _" तुम भी अच्छी तरह जानती हो कि मेरे कहने का क्या मतलब था ?"

" कसम से दीदी मेरी कुछ समझ में नहीं आया कि आप क्या कह रही हैं ?" अपर्णा ने कहा।

" जैसे लड़के लड़कियाँ गर्लफ्रैण्ड बॉयफ्रेंड बना कर शादी के पहले ही सब कुछ कर लेते हैं न। " सोनिया ने कहा _" उसी तरह शादीशुदा औरत मर्द भी करते हैं। फर्क ये है कि कोई

खुशी खुशी करता है और कोई यही सब मजबूरी में करता है। "

" ओह ! तो आप ये कहना चाहती हैं कि जैसे शहर के औरत मर्द शादी के बाद भी किसी को गर्लफ्रैण्ड व ब्वायफैण्ड बना कर सब कुछ करते हैं। " अपर्णा कह रहक थी _" वैसे ही उनकी तरह मुझे भी करना चाहिए ?"

" तो इसमें ग़लत क्या है ?" सोनिया ने कह दिया ये अलग बात है कि इसके साथ ही उसके दिल की धड़कन भय वश बढ़ गई थी।

" क्या ???" अपर्णा ने बुरी तरह उछलते हुए कहा _" मतलब आप इस चीज़ को ग़लत नहीं मानती हैं ??"

" बिलकुल। " सोनिया ने स्पष्ट लहजे में कहा _" हर इंसान की अपनी ज़रूरतें और चाहतें हैं , और ज़रूरतों तथा अपनी चाहतों को पूरा करना ग़लत नहीं हो सकता। "

" मतलब आप अगर मेरी जगह होतीं तो वो सब ज़रूर करतीं ?" अपर्णा ने चकित भाव से कहा _" जो आज के समय में शहर वाले करते हैं ?"

" बेशक। " सोनिया ने कहा _" जैसा कि मैने पहले ही बताया कि अपनी ज़रूरतों और चाहतों को पूरा करना कोई ग़लत नहीं है। जैसे मर्द अपनी खुशी के लिए हम पत्नियों के रहते हुए भी बाहरी औरत से जिस्मानी संबंध बना लेते हैं वैसे ही हम औरते किसी गैर मर्द से संबंध क्यों नहीं बना सकतीं ? आख़िर इन सबके लिए हम औरतों पर ही पाबंदी क्यों ? क्या हमारी इच्छाओं तथा ख्वाहिशों का कोई मोल नहीं ?"

अपर्णा चकित थी सोनिया की बातें सुन कर। उसका मुँह भाड़ की तरह खुला रह गया था।

" इतना हैरान न हो छोटी। " सोनिया कह रही थी _" आज के समय की यही सच्चाई है और यही माँग भी है। ये सब बातें ऐसी नहीं हैं जिनके बारे में तुम्हें पता नहीं होगा। "

" हाँ सुना तो मैंने भी है दीदी। " अपर्णा ने कहा _" मगर ये भी जानती हूँ कि हर इंसान की अपनी अपनी सोच होती है , जिसे जो अच्छा लगता है वो वही करता है। "

" अपनी इच्छाओं का गला घोंट कर जीना कोई बुद्धिमानी नहीं है। " सोनिया ने एक लम्बी सास खींचते हुए कहा _" मर्द अगर हमारी ज़रूरत पूरी नहीं कर सकता तो ये उसकी ग़लती है। किसी चीज़ की कुर्बानी देना अच्छी बात है लेकिन इस तरह नहीं .... अगर इलाज़ संभव है तो उसका इलाज़ करवाना ही चाहिए। "

अपर्णा भला क्या कहती? उसका दिमाग़ तो जैसे जाम हो गया था। सोनिया बड़े ग़ौर से अपर्णा को देखने लगी थी। उसने मन ही मन सोचा कि ऐसा क्या करू कि ये शीशे में उतर

जाए? कुछ समय तक जब कोई कुछ न बोला तो सहसा अपर्णा चौंकी, जाने किन खयालों में खो गई थी वह?

" आप बैठिए दीदी। " अपर्णा ने सहसा उठते हुए कहा _" मैं आपके लिए चाय बना कर लाती हूँ। "

" अरे रहने दो छोटी। " सोनिया ने कहा _" मैं चाय पीकर आई थी। "

" तो क्या हुआ दीदी। " अपर्णा ने हँस कर कहा _" मेरे हाथ की भी पी लीजिए चाय। "

" अच्छा ठीक है मगर एक शर्त पर। " सोनिया ने मुस्कुराकर कहा।

" शर्त ???" अपर्णा चकराई _" कैसी शर्त दीदी ?"

" यही कि चाय स्पेशल दूध की होनी चाहिए। " सोनिया ने कहा।

" दूध तो अच्छा ही है दीदी। " अपर्णा ने हँस कर कहा _" ये(सुंदर) सुबह शाम भैंस का ताज़ा दूध ही लेकर आते हैं , उसमें पानी नहीं डालते। "

" ओफ्फो। " सोनिया ने बुरा सा मुह बना कर कहा _" भैंस का दूध स्पेशल कहाँ हुआ ?"

" हाँ तो मेरे पास भैंस का ही दूध है। " अपर्णा ने कहा _" आप कहें तो दुकान से कोई दूसरा दूध मँगवा दूँ चाय के लिए। "

" अरे जब घर में ही स्पेशल दूध है तो दुकान से मँगवाने की क्या ज़रूरत है ?" सोनिया ने द्विअर्थी भाव से कहा।

" घर में तो भैंस का ही है। " अपर्णा ने भोलेपन से कहा _" आपको बताया तो था अभी। "

" अरे मैं तुम्हारे दूध की बात कर रही हूँ छोटी। " सोनिया हँसी _" तुम्हारे अपने दूध की। "

" मेरे अपने दू .....?" अपर्णा को जब समझ आया तो बुरी तरह झेंप गई वह। लाज और शरम की लाली चेहरे पर फैलती चली गई। फिर खुद को संभाल कर बोली _" क्या दीदी आप भी। "

" अरे ठीक ही तो कह रही हूँ मैं। " सोनिया ने हँसते हुए कहा _" तुम्हारे अपने दूध से स्पेशल कोई और दूध भला कहाँ होगा ?"

" इस तरह तो आपका भी दू .... ध। " अपर्णा ने मुस्कुरा कर कहा _" स्पेशल हुआ न ?"

" अरे मेरा दूध अब स्पेशल कहाँ रहा मेरी प्यारी बहन। " सोनिया ने आह सी भरी।

" क्यों क्या हुआ आपके द्ू .... ध क्ो ?" दूध शब्द पर अपर्ण्ा की ज़ुबान लड़खड़ा जाती थी कदाचित ये सोच कर कि ये दूध वाली बात खुद के ही दूध की थी।

" क्या बताऊँ छोट्ी ?" सोनिय्ा ने कह्ा _" मेरे दूध की तो हालत ही ख़राब रहती है। "

" ऐसा क्यों दीद्ी ?" अपर्ण्ा चकरा गई।

" क्योंकि रात भर जयदीप के डैड मेरे दूध को बुरी तरह मसलते जो हैं। " सोनिय्ा ने कहने के साथ ही अपने दोनों हाथ्ो से अपने बड़े बड़े स्तनों को पहले ज़ोर से मुट्ठियों में मसला फिर हल्के हल्के सहलाने लगी। ये देख कर अपर्ण्ा बुरी तरह शरमा गई।

" देख न अपर्ण्ा। " सोनिय्ा ने अपने स्तनों को दोनों हाथ्ो से तौलते हुए कह्ा _" कैसे मसल मसल कर इतने बड़े बड़े कर दिये हैं वो। "

" आपके दिमाग में तो जब देखो तब यही सब बातें होती हैं। " कहने के साथ ही अपर्ण्ा किचेन की तरफ बढ़ गई। उसके पीछे पीछे सोनिय्ा भी चल दी।

" तुम्हारे भी दूध खरबूजे जैसे ही हैं अपर्ण्ा। " सोनिय्ा ने किचेन में पहुँच कर तथा अपर्ण्ा के सीने की तरफ गौर से देखते हुए कह्ा _" बस मसले कम गए हैं ये। जाने कब से सुंदर ने इन्हें देखा तक न होग्ा , है न छोट्ी ??"

" अब बस भी कीजिए दीदी। " अपर्ण्ा लाज व शरम से गड़ी जा रही थी।

" ओये होये। " सोनिय्ा ने उसे पीछे से पकड़ कर अपनी बाहों में ले लिया तथा पीछे से ही अपने गालों को अपर्ण्ा के गालों से रगड़ते हुए कह्ा _" देखो तो कैसे नई नवेली दुल्हन की तरह शरमा रही है। सच कहती हूँ छोटी तुम्हें देखकर कोई नहीं कह सकता कि तुम दो बच्चों की मॉ हो। "

" अच्छा तो फिर चार बच्चों की मॉ कहेंगे। " अपर्ण्ा ने शरारत से कहा।

" चार क्योंं ?" सोनिय्ा ने कहने के साथ ही अपर्ण्ा के पेट में चिहुँटी काट्ी _" बल्कि दस कहेंगे। अब ठीक है न ?"

" आआआआहहह दीदी। " चिहुँटी काटने से अपर्ण्ा एक दम से चीखते हुए उछल पड़ी थी बोल्ी _" प्लीज दीदी चिहुँटी मत काटिये न। "

" अच्छा तो फिर क्या काटूँ ?" सोनिय्ा ने कहने के साथ ही अपने दाहिने हाथ की अँगुली को अपर्ण्ा के सपाट नंगे पेट में हौले हौले तथा गोल गोल घुमाना शुरू कर दिया।

" उउउउफफफफफ दीदी। " अपर्ण्ा ने कसमसाते हुए कह्ा _" ये क्या कर रही हैं आप ?"

" तुम चाय बनाने पर ध्यान दो छोटी। " सोनिय्ा ने उसी हालत में कह्ा _" मैं तो अपनी प्यारी बहन को लाड कर रही हूँ। "

" ये लाड नहीं है दीदी। " अपर्णा ने बड़ी ही चतुराई से खुद को सोनिया के बाहुपाश से आज़ाद करते हुए कहा _" ये तो कुछ और ही लगता है। और अब आप मुझे तसल्ली से चाय बनाने दीजिए , कोई छेड़खानी नहीं करेंगी आप। "

" ठीक है। " सोनिया ने मन ही मन हज़ारों गालियाँ दी उसे किन्तु प्रत्यक्ष में कहा _" तुम्हें तो मेरा यानी अपनी बड़ी बहन का प्यार भी कुछ और लगता है। "

" ऐसा नहीं है दीदी। " आप तो बेवजह ही नाराज हो रहीं हैं। "

" रहने दो। " सोनिया ने छोटे बच्चे की तरह तुनक कर कहा _" सब जानती हूँ मैं। "

तब तक चाय बन चुकी थी। अपर्णा ने चाय को दो कप में डाला तथा एक कप अपर्णा को थमाया और एक कप खुद लेकर उसे धीरे धीरे पीने लगी। जबकि सोनिया के मन में यही चल रहा था कि 'आज फिर एक बार मेरी कोशिश बेकार रही।'

६

मुंबई में इस वक्त ड्राइंग रूम में रखे सोफों पर क्रमशः उमाकांत पाटिल, विक्रम, रेणुका तथा निशा आदि बैठे हुए थे।

" इस सब की क्या ज़रूरत है अंकल ?" विक्रम ने कहा _" आप जानते हैं कि जीवन में मेरा सिर्फ एक ही मकसद है और वो है सत्यम सिंह का खात्मा। मैं अपने इस मकसद को पूरा करने के लिए अब किसी भी प्रकार का ब्यवधान नहीं चाहता। "

" उमाकांत भैया ठीक ही कह रहे हैं बेटे। " रेणुका ने समझाने वाले लहजे से कहा _" उच्च शिक्षा का होना भी ज़रूरी है। इस लिए तुम अपनी पढ़ाई को भी पूरा करो। हम में से कोई तुम्हें ये नहीं कह रहा कि तुम अपने मकसद से पीछे हटो , बल्कि वो तो तुम्हारा अब प्रण बन गया है उसे तुम ज़रूर पूरा करो। लेकिन साथ साथ अपनी पढ़ाई भी करते रहोगे तो कुछ ग़लत नहीं हो जाएगा। "

" हॉ भैया। " निशा ने विक्रम के दाहिने बाजू को मजबूती से पकड़ते हुए कहा _" मॉ और अंकल सही कह रहें हैं आपको अपनी पढ़ाई कान्टीन्यू रखनी चाहिए। और फिर हम दोनों साथ में ही कॉलेज जाया करेंगे। कॉलेज में अगर मुझे कोई छेड़े तो आप उसकी जम कर धुनाई भी किया करना बिलकुल फिल्म के हीरो की तरह । "

" गुड़िया ने भी कह दिया तो ठीक है अंकल मैं अपनी पढ़ाई जारी करता हूँ। " विक्रम ने निशा के सिर पर प्यार से हाथ फेर कर कहा _" मैं कल ही किसी मेडिकल कॉलेज में एडमीशन करवा लेता हूँ। "

" उसकी ज़रूरत नहीं है बेटे। " उमाकांत ने हॅस कर कहा _" मैंने आलरेडी तुम्हारा एडमीशन एक बढ़िया से मेडिकल कॉलेज में करवा दिया है। "

" क् क्या ???" विक्रम ने चौंकते हुए कहा।

" हॉ बेटे। " उमाकांत ने हॅस कर कहा _" मुझे पता था कि तुम्हें इसके लिए मानना ही पड़ेगा , इस लिए मैंने पहले ही तुम्हारा एडमीशन करवा दिया है। कल कॉलेज जा कर सबसे पहले प्रिंसिपल से मिल लेना। दरअसल एडमीशन तो मैंने करवा दिया है किन्तु फार्म वगैरा में साइन तो तुम्हारे ही लगेंगे न। इस लिए जा कर पहले ये सब क्लियर कर लेना। बाकी किसी चीज़ की फिक्र मत करना। यूँ समझना कि अपना ही कॉलेज है। "

" शुक्रिया अंकल। " विक्रम एकाएक सहसा गंभीर हो गया _" आपने इतना कुछ हमारे लिए कर दिया है जिसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता। आप हमारे जीवन में भगवान बन कर आए हैं वरना हर चीज़ से बेबस व लाचार हम आखिर क्या कर पाते ?? ये मेरे ऊपर आपका कर्ज़ है जिसे मैं किसी भी जनम में उतार नहीं सकता। "

" ये सब कह कर तुमने मुझे पराया कर दिया बेटे। " उमाकांत भावुक होकर बोला था _" जबकि मैं तुम सबको अपना परिवार ही मानने लगा हूँ। "

" नहीं अंकल। " विक्रम सोफे से उठ कर तुरंत ही उमाकांत के पैर पकड़ लिया , बोला _" मेरे कहने का मतलब वो नहीं था। आप पराए कैसे हो जाएंगे भला ? आप हमारे लिए पराए हो भी नहीं सकते हैं। आप तो अपने व पराए से परे हैं अंकल। आप इस कलियुग के अद्वतीय इंसान हैं जिनके अंदर सिर्फ और सिर्फ नेकदिली और सच्चाई है। "

" ये सच है भैया। " रेणुका की आँखों में आँसू थे , बोली _" आप हमारे लिए अपनों से भी बढ़ कर हैं , अपने कैसे होते हैं ये भी हमने देखा है मगर आप ग़ैर होकर भी अपने से बढ़ कर हैं। विक्रम तो नासमझ है आप उसकी बात पर ये बिलकुल न समझें कि हम आपको पराया समझते हैं। बल्कि अगर दिल की सच्चाई बताऊँ तो वो ये है कि अब आपके लिए अपनी जान तक कुर्बान करने का मन करने लगा है। हमारे ह्रदय में आपका स्थान बहुत ऊँचा है भैया ... बहुत ऊँचा। "

" तुमने ये सब कह कर मुझे वो खुशी दी है बहन जो संसार भर की दौलत मिल जाने पर भी न होती। " उमाकांत ने अपनी आँखों में छलक आए आँसुओं को पोंछते हुए कहा _" इसके पहले ऐसा लगता था जैसे ये संसार महज एक कब्रिस्तान है जहाँ कोई इंसान तो क्या परिंदा तक नहीं है। कदाचित् सब कुछ खोकर और अकेलेपन में ऐसा ही महसूस होता है। मगर तुम सबके आ जाने से ये वीरान सा जीवन जैसे फिर से हरा भरा और खुशहाल हो गया है। "

" मैं तो आपको अपने भाई के रूप में पाकर धन्य ही हो गई हूँ भैया। " रेणुका ने कहा _" मेरा अपना कोई भाई न था , एक भाई के लिए तथा उसकी कमी से हमेशा दिल में दर्द रहा था। आपके मिलने से अब मन को तृप्ति मिल गई है। "

" ये सब ईश्वर की ही कृपा है बहन। " उमाकांत ने कहा _" वो जो भी करता है बहुत कुछ सोच कर ही करता है। इसके पहले कौन किसे जानता था किन्तु आज ऐसा है जैसे हम सब कभी गैर थे ही नहीं। सच कहता हूँ बहन ईश्वर की इस इनायत से बहुत खुश हूँ मैं। "

" अच्छा अब बहुत हो गया ये इमोशनल ड्रामा। " निशा ने भोलेपन से कहा _" कुछ खाने पीने की बात कीजिए न। मेरे पेट में पता नहीं कितने चूहे हैं जो काफी देर से उछल कूद कर रहे हैं। आप में से किसी को इसका खयाल ही नहीं है .... जाओ नहीं बात करना किसी से अब । "

" चूहे तो मेरे पेट में भी कूद रहे हैं गुड़िया। " विक्रम ने अजीब सा मुह बना कर कहा _" मुझे भी किसी से बात नहीं करना अब। "

" क्या ??????" निशा उछल पड़ी _" आपने मेरी नकल की ? मतलब आपने मुझे चिढ़ाया ? जाओ आपसे तो बिलकुल बात नहीं करनी । "

" ठीक है फिर। " विक्रम ने सोफे पर से उठते हुए कहा _" मैं अकेले ही चला जाता हूँ आइसक्रीम खाने। "

" नननहीहीं। " निशा चीखी और उछल कर फौरन ही खड़ी हो गई _" आप अकेले आइसक्रीम खाने नहीं जा सकते मैं भी चलूँगी आपके साथ और अगर आप अपने साथ मुझे न ले गए तो सोच लीजिएगा । "

" जो मुझसे बात नहीं करता मैं उसे अपने साथ कहीं नहीं लेकर जाता। " विक्रम ने अकड़ते हुए कहा _" तुम मुझसे बात नहीं कर रही तो तुम्हें अपने साथ लेकर क्यों जाऊँ ??"

" अरे मैं तो ऐसे ही कह रही थी। " निशा ने चापलूसी वाले अंदाज़ में कहा _" और वैसे भी मैं आपकी जान हूँ न ? आप अपनी जान के बिना कैसे चले जाएँगे , । "

" कोई कहीं नहीं जाएगा। " रेणुका ने कहा _" चुप चाप बैठो दोनो , मैं खाना लेकर आती हूँ। "

" नहीं नहीं। " निशा ने बच्चों की तरह कूदते हुए इंकार किया _" मुझे आइसक्रीम ही खाना है,। "

" हा हा हा इन्हें जाने दो बहन। " उमाकांत ने हँसते हुए कहा _" जाओ बेटे , तुम गुड़िया को आइसक्रीम खिला कर आओ। "

" भैया आप नहीं जानते हैं। " रेणुका ने उमाकांत से कहा _" इसे आइसक्रीम की लत फिर से पड़ जाएगी। पहले ये बिना आइसक्रीम के एक दिन नहीं रहती थी। बड़ी मुश्किल से तो इसकी आइसक्रीम छूटी है। "

" एक दिन में कुछ नहीं होता। " उमाकांत ने रेणुका से कहने के बाद निशा की तरफ मुखातिब हो कर कहा _" और हाँ बेटी , ज्यादा आइसक्रीम मत खाना। सेहत के लिए अच्छी नहीं होती। "

" जी अंकल। " कहने के साथ ही निशा ने विक्रम का बाजू पकड़ा और बाहर की तरफ खींचते हुए ले जाने लगी।

दूसरे दिन विक्रम कॉलेज पहुँचा। निशा उसके साथ ही थी। हलाँकि ये उसका कॉलेज नहीं था किन्तु फिर भी उत्सुकतावश वह विक्रम के साथ ज़िद करके आई थी।

कॉलेज को देखकर दोनो भाई बहन चकित रह गए। विक्रम की आँखों में जाने क्या सोच कर आँसू आ गए जिसे उसने बड़ी ही सफाई से पोंछ लिया था। निशा तो कॉलेज की खूबसूरती में ही खोई हुई थी।

कुछ देर कॉलेज को देखने के बाद विक्रम निशा के साथ कॉलेज के अंदर गया। कॉलेज में थोड़ी देर इधर उधर घूमने के बाद निशा को विक्रम ने कॉलेज की कैंटीन में बैठा कर खुद प्रिंसिपल से मिलने उसके ऑफिस की तरफ बढ़ गया।

रास्ते में एक आदमी से उसने प्रिंसिपल का ऑफिस पूँछा और आगे बढ़ गया। कुछ देर बाद ही वह प्रिंसिपल के ऑफिस में प्रिंसिपल के सामने खड़ा था। उसने अपना नाम बताया, हलाँकि उमाकांत पाटिल ने सबकुछ पहले ही सेट कर दिया था। इस लिए विक्रम को ज्यादा परेशानी नहीं हुई।

सारी फारमेलिटी पूरी करने के बाद तथा अपने कोर्स से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण जानकारी लेने के बाद वह प्रिंसिपल के ऑफिस से बाहर आकर कॉलेज की कैंटीन की तरफ बढ़ गया। कैंटीन से निशा को साथ लेकर वह कॉलेज से बाहर आ गया।

" तो आख़िर आपको आपके पसंद का कॉलेज मिल ही गया न भैया ?" रास्ते में बाइक पर पीछे बैठी निशा ने विक्रम से सट कर तथा विक्रम के कान के पास मुह ले जाकर बोली _" एक ऐसा कॉलेज जिसमें पढ़ने की कभी आपने तमन्ना की थी , और आज जब आपकी तमन्ना पूरी हुई तो आपकी आँखों से आँसू छलक पड़े। है न ?"

" न नहीं तो। " बाइक चला रहा विक्रम निशा की बात पर बुरी तरह चौंका था , बोला _" ऐसा कुछ नहीं है। "

" आप समझते हैं कि। " निशा ने कहा _" मुझे कुछ पता ही नहीं चला जबकि मैंने अपनी आँखों से देखा भी और दिल से महसूस भी किया। "

" बहुत बड़ी बड़ी बातें करने लगी है गुड़िया। " विक्रम ने हँस कर कहा _" ऐसी जैसे कि कोई सयाना हो जाने पर करता है। "

" हाँ तो मैं बड़ी हो गई न। " निशा ने भोलेपन से कहा _" आपने देखा था न उस दिन ? मैं आपके कंधे से थी , और अब कुछ दिन बाद आपके कॉन से भी हो जाऊँगी .. देख लीजिएगा , । "

" हाँ तू तो कुछ दिन में मेरे सिर के ऊपर से भी निकल जाएगी गुड़िया। " विक्रम ने हँसते हुए

कहा।

" मुझे ऐसा क्यों लगता है जैसे ये कह कर आपने मेरा मज़ाक उड़ा दिया है ?" निशा ने सोचने वाले भाव से कहा _" और अगर ऐसा ही है तो बहुत गंदे हैं आप। जाइए नहीं बात करना अब आपसे , । "

" अरे ये क्या बात हुई गुड़िया ??" विक्रम बुरी तरह हड़बड़ा गया।

" बात मत कीजिए अब। " निशा जो अब तक विक्रम से चिपकी हुई थी अब पीछे हट गई , फिर बोली _" वैसे तो बड़ा कहते हैं कि मैं आपकी जान हूॅ , और अब अपनी ही जान का मज़ाक उड़ा रहे हैं , । "

" अच्छा बाबा ग़लती हो गई। " विक्रम ने खेद भरे स्वर में कहा _" क्या अपने भैया को माफ़ नहीं करेगी गुड़िया ??"

" अब आप माफ़ी मत माॅगिए। " निशा तुरंत ही खिसक कर विक्रम से फिर चिपक गई _" मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता। "

" तू सचमुच मेरी जान है गुड़िया। " विक्रम ने भावुक होकर कहा _" तेरी एक पल की भी बेरुखी मैं सह नहीं सकता। मुझसे अगर कोई ग़लती हो जाए तो तू मुझे उसकी सज़ा दे देना लेकिन न ही कभी मुझसे नाराज होना और न ही ये कहना कि मुझसे बात नहीं करना। "

" भैया ...। " निशा की रुलाई फूट गई , उसने अपने दोनो हाथ विक्रम के दोनो साइड से निकाल कर विक्रम के पेट पर कस लिया। फिर बोली _" आपसे नाराज होकर या आपसे बात न करके क्या मैं भी एक पल रह पाउॅगी ? अगर मैं आपकी जान हूॅ तो आप भी तो मेरी जान हैं भैया। "

" चल अब तू रो मत गुड़िया। " विक्रम ने माहौल को बदलने की गरज से कहा _" हम दुकान के पास आ गए हैं। यहां पर मुझे कुछ किताबें वगैरा लेनी हैं। तू बता तुझे क्या चाहिए ?"

" मुझे न। " निशा ने खुशी से कहा _" मुझे न एक टच स्क्रीन वाला मोबाइल लेना है और हाॅ आप भी टच स्क्रीन वाला मोबाइल ले लीजिए। ये की- पैड को अब रिटायर कर दीजिए , । "

" क्यों अच्छा तो है ये मोबाइल। " विक्रम ने कहा _" इसमें क्या खराबी है भला ? तुझे पता है इसकी बैटरी हप्तों तक चलती है। "

" मैं कुछ नहीं जानती। " निशा ने कहा _" मैंने कह दिया है कि लेना है तो लेना है बस , । "

" अब तो लेना ही पड़ेगा। " विक्रम ने मुस्कुरा कर कहा _" मेरी गुड़िया , मेरी जान ने कह दिया है तो। "

निशा खुश हो गई।

" चलो पहले मोबाइल ही ले लेते हैं। " विक्रम ने कहा _" उसके बाद किताबें खरीद लूँगा। "

ये कह विक्रम ने बाइक को मोबाइल स्टोर की तरफ मोड़ लिया। लगभग पॉच मिनट बाद ही वो दोनो मोबाइल स्टोर में थे।

" गुड़िया। " विक्रम ने धीरे से कहा _" किस कंपनी का लेना है मोबाइल और कितने रुपये वाला ??"

" मैं क्या बताऊॅ ?" निशा ने भी विक्रम की तरह धीरे से ही कहा _" मुझे इस बारे में तो वैसे भी कुछ नहीं पता। "

" फिर अब क्या करें ??" विक्रम ने कहा _" ये तो कमाल ही हो गया गुड़िया। मोबाइल खरीदने आ गए हैं लेकिन हमें यही पता नहीं है कि कौन सी कंपनी का तथा कितने रुपये तक का मोबाइल लेना है ?"

" दुकान वाले से पूँछ लेते हैं न। " निशा ने बुद्धि दी _" उसे तो सब कुछ पता ही होगा। "

" अरे हॉ गुड़िया। " विक्रम ने अपने सिर में हाथ की थपकी लगा कर कहा _" ये तो मैने सोचा ही नहीं था। अच्छा हुआ तुमने बता दिया वरना यहॉ से वापस जाना पड़ता। है न ???"

" अब ज्यादा ड्रामा मत कीजिए। " निशा ने हॅस कर कहा _" मुझे पता है आप बुद्धू बनने का नाटक कर रहे हैं। "

" मतलब तूने पकड़ लिया ??" विक्रम मुस्कुराया।

" और नहीं तो क्या। " निशा हॅसी _" सरलॉक होम्स एक ज़माने में हमसे जासूसी की ट्रेनिंग लेने आता था , । "

" एक्सक्यूज़मी सर। " तभी सहसा उन लोगों के पास शोरूम का एक व्यक्ति आकर बोला _" व्हाट कैन आई हेल्प यू ??"

" हमें किसी अच्छी कंपनी का सबसे अच्छा मोबाइल या आईफोन दिखाइए। " विक्रम ने उस व्यक्ति से कहा।

उस व्यक्ति ने आज के चलन के हिसाब से कई तरह के मोबाइल लाकर टेबल पर रख दिया तथा उन डिब्बों पर लिखी बातों को बता बता कर मोबाइल फोन की खासियत बताने लगा। फिर उसने आईफोन के कुछ सेट दिखाने लगा।

लगभग आधे घंटे बाद दोनो ही शोरूम से बाहर निकले। उन दोनों के हाथ में एक एक मोबाइल था।

" भैयाा आप मुझे सिखा दीजियेगा कि कैसे चलाते हैं ??" निशाा ने रास्ते में कहा।

" ठीक है गुड़िया। " विक्रम ने कहाा _" चल अभी किताबें भी लेना है। "

" वैसे आपका कॉलेज कब से शुरू होगाा ?" निशाा ने पूॅछा।

" एक हप्ते बाद। " विक्रम ने कहा।

" भैयाा मुझे भी आपके साथ इसी कॉलेज में पढ़ना है। " निशाा ने कहा।

" अगले साल से तू भी इसी कॉलेज में आ जाना। " विक्रम ने कहा।

ऐसी ही बातें करते हुए दोनो बहन भाई बाइक से घर पहुॅच गए। विक्रम अपने मन पसंद कॉलेज में पढ़ने से बेहद खुश था। मगर वह नहीं जानता था कि अब आगे क्या होने वाला था??????

७

उस वक्त रात के एक बज रहे थे। सत्यम सिंह अपने कमरे में अपनी बीवी सोनिया के साथ घमासान सहवास करने में व्यस्त था। दोनो ही नंगे थे। इस वक्त सत्यम सिंह सोनिया को पिछवाड़े से ठोंके जा रहा था।

" ले मेरी जान और ले। " सत्यम सिंह सोनियाा को घोड़ी बनाकर तथा एक हाथ से उसके सिर के बाल पकड़े उसके पिछवाड़े में दनादन पेलते हुए बोलाा _" अपने पिछवाड़े को और टाइट कर मेरी रंडी साली। "

" आहहहहह ऐसे ही आआआहहहह और जोर से अंदर तक घुसा न भड़वे साले। " सोनियाा मजे में बोलती जा रही थी _" आआहहह हॉ ऐसे ही .. हुमच हुमच के बजा मेरी नितंब को वरनाा तेरे लिंग को काट कर फेंक दूँगी आआआहहहहह। "

" साली मेरा लिंग काट कर फेंक देगी तो फिर किससे अपनी योनी और नितंब मरवाएगी बोल मादर--- साली रंडी ?" सत्यम सिंह ने सोनियाा के गोरे गोरे किन्तु गद्देदार नितंब पर जोर से थप्पड़ मारते हुए कहा।

" आआआहहहह उसकी चिंता तू मत कर सत्यम सिंह। " सोनियाा ने कहाा _" दुनियॉ बहुत बड़ी है , जिसको भी अपनी योनी और नितंब दिखाऊँगी वो साला कुत्ते की तरह अपनी लार टपकाते हुए दौड़ा चला आएगा। "

" अच्छाा .... मतलब तू सारी दुनिया से अपनी योनी और नितंब मरवा लेगी ?" सत्यम सिंह ने फिर से उसके पिछवाड़े पर जोर से थप्पड़ मारते हुए कहाा _" और किस किस से मरवाएगी साली ?"

" आआआहहहह और जोर से पेल न भड़वे की औलाद साले दम नहीं है क्याा ?" सोनियाा ने अपने सिर को उठा पीछे सत्यम सिंह की तरफ देख कर कहाा _" मैं तो शिवम से भी अपनी योनी और नितंब मरवाना चाहती थी और इसके लिए मैंने कितनी कोशिश की , मगर वो हरामी साला हरिश्चंद्र था न। उसने हर बार मुझे इज्जत मर्यादा का पाठ पढ़ा कर दुत्कार दिया। मेरे जैसी खूबसूरत सेक्सी औरत को दुत्कार दिया था उस हिंजड़े ने। आआहहहह तभी तो मर गया हरामी। "

" अरे सही सही बोल कुतिया। " सत्यम सिंह ने सोनियाा की नितंब से अपने हथियार को निकाल कर उसे पलटा कर बिस्तर पर सीधा लेटाया और फिर उसकी दोनो टॉगों को उठा कर सोनियाा के सिर के दोनो तरफ झुका दिया जिससे उसका पिछवाड़ा अच्छे से उठकर पोजीशन में आ गया। सत्यम सिंह ने फिर से उसकी नितंब में लिंग डाल कर पेलना शुरू कर दिया।

" आआहहहह हॉ सही से ही तो बोल रही हूँ आआआहहह। " सोनिया ने मजे में आहें भरकर कहा।

" सही सही कहॉ बोल रही है साली ?" सत्यम सिंह अपने एक हाथ से सोनिया की एक स्तन को जोर से मसल कर कहा _" मेरा भाई क्या ऐसे ही मर गया था ??"

" आआआहहहह और जोर जोर से मसल न साले भड़वे। " सोनिया ने अपने एक हाथ को नीचे से बढ़ा कर अपनी योनी के दाने को मसलते हुए मजे में कहा _" आआआहहहह हॉ ऐसे ही ... हाय इस मज़े के लिए तो मैं सबकी रंडी बनने को तैयार हूँ सत्यम । मेरी वो ख्वाहिश कब पूरी करोगे तुम ??"

" कर दूँगा मेरी जान। " सत्यम सिंह झुक कर सोनिया के होठों पर एक जोरदार चुंबन लिया फिर बोला _" मुझे याद है .... तेरी ख्वाहिश ... कि तू तीन तीन लिंग से एक साथ मज़े करना चाहती है ... अपने सभी छेंद पर एक साथ लिंग डलवाना चाहती है। रुक जा कुछ दिन करता हूँ कुछ। मगर पहले ये तो बता कि कैसे मेरा भाई मर गया था ?"

" आआआहहहहहह मरना ही था उस कमीने को .. आआहहह मेरी बात मान लेता तो आज ज़िंदा होता और ऐस भी करता। मगर सत्यवादी बने रह कर मर जाना ही नियति में लिखा लिया था उसने .... आआआहहह मगर एक बात है उसका लिंग तुमसे भी बड़ा था .. पूरा का पूरा सांड था वो। "

" तुमने कब देखा उसके लिंग को ?" सत्यम सिंह ने एक पल रुक कर पूछा और फिर से धक्के लगाने लगा।

" आआआहहह एक दिन दोपहर में खेत पर गई थी अपनी गरमा गरम योनी लेकर। " सोनिया ने कहा _" सोच लिया था कि आज इस कमीने से अपनी योनी और नितंब दोनो मरवा कर ही जाऊँगी। उस समय खेत मे कोई नहीं था। खेत के मकान के एक कमरे में वो शिवम कमीना दोपहर को आराम फरमा रहा था। मैं चुपके से अंदर कमरे मे पहुँची ... आआआहहहह .... देखा तो वो गहरी नींद में सोया हुआ नज़र आया। बदन में ऊपर एक बनियान तथा नीचे लुंगी लगा रखी थी उसने। मुझे लगा इससे बढ़िया सुनहरा मौका इससे ठुकने का फिर नहीं मिलेगा। ये सोचकर मैंने जल्दी से अपने बदन से सारे कपड़े उतार कर नंगी हो गई और चुपके से शिवम की तरफ बढ़ी जो पास ही चारपाई पर सोया हुआ था। "

" क्या हुआ रुक क्यों गई ?" सत्यम सिंह सोनिया के एकाएक चुप हो जाने पर कहा _" आगे क्या हुआ था फिर ??"

" तुम रुक गए तो मैं भी रुक गई। " सोनिया ने कहा _" तुम मेरी कुटाई करते रहो ... तभी तो मजे में बताऊगी न। "

" ओह हॉ। " सत्यम सिंह चौंका और फिर से धक्के लगाते हुए बोला _" अब बताओ। "

" आआहहहहह हॉ ऐसे ही आआआहहह जोर जोर से ठोको मुझे। " सोनिया ने मजे से

आंखें बंद करते हुए कहा _" शिवम चारपाई पर चूँकि गहरी नींद में सोया हुआ था इस लिए उसे ये पता नहीं चला कि उसके कमरे में कौन क्या करने आया है ? मैं उसके हट्टे कट्टे शरीर को देख कर आहें भरने लगी थी। चारपाई के पास पहुँच कर मैंने दोनों हाथो से शिवम की लुंगी को उसके छोरों से पकड़ कर आहिस्ता से इधर और उधर किया। जिससे शिवम के नीचे वाला हिस्सा नग्न हो गया। लुंगी के अंदर उसने कुछ नहीं पहन रखा था। मैंने देखा गहरी नींद में उसका घोंड़े जैसा लिंग भी गहरी नींद में सोया पड़ा था। लेकिन उस हालत में भी वह लम्बा चौड़ा नज़र आ रहा था। उसका लिंग काला या सॉवला बिलकुल नहीं था बल्कि गोरा था बिलकुल अंग्रेजों के लिंग जैसा गोरा। कसम से सत्यम उसे देख कर मेरे मुँह में पानी आ गया था। मैंने बड़ी सावधानी से उसे अपने दाहिने हाथ से पकड़ा। उसको इधर उधर से अच्छी तरह देखा। वो बिलकुल किसी मासूम से छोटे बच्चे जैसा सुंदर और प्यारा लगा मुझे। मैंने उसे मुट्ठी में पकड़ कर ऊपर नीचे किया तो उसका बड़ा सा सुपाड़ा जो हल्का सिंदूरी रंग का था चमकने लगा और साथ ही उसमें कुछ हलचल सी महसूस हुई मुझे। मैंने ये महसूस करते ही नज़र ऊपर की तरफ करके गहरी नींद में सोये पड़े शिवम की तरफ देखा। वो पहले की तरह ही गहरी नींद में सोया हुआ लगा। मैंने चैन की सास ली और फिर से अपनी नज़रें उसके लिं ग पर केंद्रित कर दी। मेरे हाथ के स्पर्श से तथा लिंग को मुट्ठी में लिए ऊपर नीचे करने से लिंग का आकार धीरे धीरे बढ़ने लगा था। ये देख कर मुझमें अजीब सा नशा भी चढ़ता जा रहा था , मेरी सास ें तेज़ होने लगी थी। मैंने देखा कि कुछ ही पलों में शिवम का लिंग किसी घोड़े के लिंग जैसा बड़ा होकर हिनहिनाने लगा था। मुझे लगा कहीं ऐसा तो नहीं कि शिवम जाग रहा हो और ये देखने की कोशिश कर रहा हो कि उसके साथ आगे क्या क्या होता है ? मगर मुझे ये भी पता था कि अगर शिवम जाग रहा होता तो इतना कुछ होने ही न पाता क्योंकि वह उच्च विचारों तथा मान मर्यादा का पालन करने वाला इंसान था। वो कभी किसी को ग़लत नज़र से नहीं देखता था , ऐसा सोचना भी वो पाप समझता था। मेरे बारे में वो जान चुका था कि मैं क्या चाहती हूँ उससे इस लिए वो हवेली में अब कम ही रहता था। दिन भर खेत में ही मजदूरों के साथ वक्त गुज़ार देता था और देर रात हवेली में आता तथा खाना पीना खा कर अपने कमरे में रेणुका के साथ सो जाता था। वह मुझसे दूर ही रहता था। इस लिए ये सोचना ही ग़लत था कि इस वक्त वह जाग रहा होगा। मैंने देखा कि उसका लिंग मेरी मुट्ठी में नहीं आ रहा था तथा गरम लोहे जैसा प्रतीत हो रहा था। अब तक मेरी हालत उसे देख कर खराब हो चुकी थी। मुझे लग रहा था कि जल्दी से उछल कर इसको अपनी योनी के अंदर पूरा का पूरा घुसेड़ लूँ। किन्तु जल्दबाजी में सारा खेल बिगड़ जाता इस लिए अपने पर नियंत्रण रखा और उसके सुंदर मगर बिकराल लिंग को मुट्ठी में लिए आहिस्ता आहिस्ता सहलाती रही। उसको अपने मुह में भर कर चूसने के लिए मैं पागल हुई जा रही थी , जिसका सबूत ये था कि मैं अपने एक हाथ से कभी अपनी बड़ी बड़ी स्तनों को मसलने लगती तो कभी अपनी योनी को। मेरे अंदर वासना अपने चरम पर पहुँच चुकी थी। मुझसे बरदाश्त न हुआ और मैंने एक झटके से नीचे झुक कर शिवम के लिंग को अपने मुह में भर लिया .... और यही मुझसे ग़लती हो गई। मैंने ये सब अपने आपे से बाहर हो कर किया था। शिवम का लिंग जितना बड़ा था उतना ही मोटा भी था। मैंने जैसे ही उसे झटके से अपने मुह में लिया तो मेरे ऊपर के दॉत तेज़ी से लिंग में गड़ते चले गए और शिवम के मुख से चीख निकल गई साथ ही वह हड़बड़ा कर तेज़ी से चारपाई पर उठ कर बैठ गया। अपने लिंग को मेरे मुख में देख वह भौचक्का सा रह गया किन्तु तुरंत ही वह मेरे मुह से अपना लिंग निकाल कर तथा चारपाई से उतरकर दूर खड़ा हो गया। उसका चेहरा एक दम गुस्से और घ्रणा से भर

गया। ये सब इतना जल्दी हुआ कि कुछ देर तो मुझे कुछ समझ ही न आया कि ये क्या और कैसे हो गया। होश तो तब आया जब शिवम की गुस्से से भरी आवाज़ मेरे कानों से टकराई।

" ये क्या बेहूदगी है ?" शिवम लुंगी को सही करके तथा गुस्से से दहाड़ते हुए कह रहा था _" अपनी हवस में तुम इतनी अंधी हो चुकी हो कि तुम्हें ये भी ख़याल नहीं रहा कि तुम किसके साथ ये नीच काम कर रही हो ? अपने ही देवर से मुह काला कर रही हो तुम। अरे देवर तो बेटे के समान होता है ये ख़याल नहीं आया तुम्हें ?"

मैं चूँकि रॅगे हाथो ऐसा करते हुए पकड़ी गई थी उस दिन इस लिए मेरी ज़ुबान में जैसे ताला सा लग गया था। उस दिन शिवम का गुस्से से भरा वह खतरनाक रूप मैंने पहली बार देखा था। वह गुस्से में जाने क्या क्या कहे जा रहा था मगर मैं सिर झुकाए वहीं चारपाई के नीचे बैठी रही उसी तरह नंगी हालत में। मुझे ख़याल ही नहीं रह गया था कि मैं नंगी ही बैठी हूँ। जबकि,,,

" आज तुमने ये सब करके बहुत बड़ा पाप किया है। " शिवम कहे जा रहा था _" और मुझे भी पाप का भागीदार बना दिया। क्या समझता था मैं तुम्हें और तुम क्या निकली ? एक ऐसी नीच और कुलटा औरत जो अपनी हवस में अंधी होकर अपने ही देवर से मुह काला करने लगी। तुम्हारी नीयत का तो पहले से ही आभास हो गया था मुझे इसी लिए तुमसे दूर रहा। मगर ये नहीं सोचा था कि तुम अपनी नीचता और हवस में इस हद तक भी गिर जाओगी। तुममें और बाज़ार की रंडियों में कोई फर्क नहीं रह गया अब। चली जाओ यहॉ से ... और दुबारा मुझे अपनी ये गंदी शकल मत दिखाना वरना मैं भूल जाऊँगा कि तुम मेरे बड़े भाई की बीवी हो। आज से मेरा और तुम्हारा कोई रिश्ता नहीं ... अब जा यहॉ से कुलटा औरत ... देखो तो कैसे बेशर्मों की तरह नंगी बैठी है ?"

शिवम की बातों से ही मुझे ख़याल आया कि मैं तो अभी नंगी ही बैठी हुई हूँ तब से। मैंने शीघ्रता से अपनी नग्नता को ढॅकने के लिए अपने कपड़ों की तरफ नज़रें घुमाई। पास में ही मेरे कपड़े पड़े थे। मैंने जल्दी से अपनी साड़ी ब्लाउज पेटीकोट तथा ब्रा पैन्टी को समेटा किन्तु फिर मेरे मन में जाने क्या आया कि मैं वहीं पर रुक गई।

शिवम की बातों ने मेरे अंदर ज़हर सा घोल दिया था। जो हमेशा मुझे इज्ज़त और सम्मान देता था आज वही मुझे आप की जगह तुम और तुम के बाद तू कहते हुए मेरी इज्ज़त की धज्जियॉ उड़ाए जा रहा था। मुझे बाजार की रंडी तक कह रहा था। मेरे दिल में आग सी धधकने लगी थी। मुझे ये डर नहीं था कि शिवम ये सब किसी से बता देगा तो मेरा क्या होगा। बल्कि अब तो सब कुछ खुल ही गया था इस लिए मैंने भी अब पीछे हटने का ख़याल छोंड़ दिया था।

मैने उसी हालत में खिसक कर शिवम के पैर पकड़ लिए और फिर बोली_"तुम्हारे लिए मैं कुछ भी बनने को तैयार हूँ शिवम। मुझे इस तरह अब मत दुत्कारो। मैं तुम्हारी शरण में हूँ, मुझे अपना लो शिवम। मुझे अपनी दासी बना लो, मैं वही करूगी जो तुम कहोगे। मगर इस तरह

मुझे मत दुत्कारो...देख लो मैंने ये सब तुम्हारा प्रेम पाने के लिए किया है। माना कि मैंने ग़लत तरीके से तुम्हारे प्रेम को पाने की कोशिश की लेकिन मैं क्या करती शिवम? मुझे और कुछ सूझ ही नहीं रहा था। पहले भी मैंने तुम्हें ये सब जताने की कोशिश की थी लेकिन तुमने समझा ही नहीं इस लिए मैंने वही किया जो मुझे समझ में आया। अब तो सब कुछ जाहिर ही हो गया है,अब तो मुझे अपना लो शिवम...मुझे तुम्हारा प्यार चाहिए।"

" बंद करो अपनी ये बकवास। " शिवम ने अपने पैरों को मेरे चंगुल से एक झटके में छुड़ा कर तथा दहाड़ते हुए कहा _" तुझ जैसी गिरी हुई औरत के मैं मुह नहीं लगना चाहता। मुझे हैरत है कि बड़े भैया ने तुझ जैसी नीच और हवस की अंधी औरत से शादी कैसे की ? ज़रूर तूने ही मेरे भाई को अपने जाल में फसाया होगा। "

" जो मर्ज़ी कह लो शिवम। " मैंने सहसा आखों में आॅसू लाते हुए कहा _" मगर मुझे अपने से दूर न करो। दिन रात तुम्हारी सेवा करू गी। मैं तुम्हें उस रेणुका से भी ज्यादा प्यार करू गी शिवम। "

" ख़ामोशशशश। " शिवम इस तरह दहाड़ा था कि कमरे की दीवारें तक हिल गईं _" अपनी गंदी ज़ुबान से मेरी रेणुका का नाम भी मत लेना वरना हलक से ज़ुबान खींचकर हाथ में दे दूॅगा। तू है क्या बदजात औरत ... तेरी औकात आज पता चल गई है मुझे। तेरे जैसी रंडियाॅ कौड़ी के भाव में ऐरों गैरों को अपना जिस्म बेंचती हैं गली चौराहे में। और तू रेणुका की बात करती है ... अरे वो देवी है देवी ... जिसकी मैं इबादत करता हूॅ। तू उसके पैरों की धूल भी नहीं है समझी ?? अब जा यहाॅ से वरना धक्के मार कर इसी हालत में तुझे यहाॅ से बाहर फेंक दूॅगा। "

मैं समझ चुकी थी कि मेरी किसी भी बात का शिवम पर अब कोई प्रभाव पड़ने वाला नहीं था। उल्टा उसकी बातों ने मुझे और मेरे अंतर्मन को बुरी तरह शोलों के हवाले कर दिया था। उसने जिस तरीके से मुझे दुत्कार कर मेरा अपमान किया था उससे मेरे अंदर भीषण आग लग चुकी थी और मैंने मन ही मन एक फैंसला कर लिया था उसके और उसके परिवार के लिए।

" ठीक है शिवम सिंह। " फिर मैंने अपने कपड़े समेटते हुए ठण्डे स्वर में कहा था _" मैं तो जा रही हूं यहाॅ से मगर जिस तरह से तुमने मुझे दुत्कार कर मेरा अपमान किया है उसका परिणाम तुम्हारे लिए कतई अच्छा नहीं होगा। ईश्वर देखेगा कि एक औरत जब इस तरह अपमानित होकर रुष्ट होती है तो भविष्य में उसका क्या परिणाम निकलता है ??"

इतना कह कर मैं वहाॅ से कपड़े वगैरा पहन कर चली आई थी। फिर उसके बाद क्या हुआ ये तो तुम्हें पता ही है सत्यम।

" हाॅ मेरी जान। " सत्यम सिंह जो जाने कब से रुका हुआ था अब फिर से सोनिया की नितंब में लिंग डाल कर धक्के लगाने लगा था , बोला _" मेरे कहने पर तुमने इस सबकी कोशिश तो बहुत की मगर वो बेवकूफ का बेवकूफ ही रहा। सोचा था कि मिल बाॅट कर सब

खाएंगे पियेंगे मगर उसकी किस्मत में मरना ही लिखा था तो मर गया। "

" आआआआहहहह अब जरा मेरी योनी का भी कुछ ख़याल करो। " सोनिया ने सहसा सिसकते हुए कहा _" इसके साथ भी इंसाफ करो न आआआहहहह। "

सत्यम ने सोनिया के पिछवाड़े से लिंग निकाल कर उसकी योनी में एक ही झटके से पेल दिया और दनादन धक्के लगाने लगा।

" आआआहहहहह अअअअजजजययययय ऐसे ही जोर से करते रहो। " सोनिया ने आनंद में सिसकते हुए कहा _" आआहह बहुत मज़ा आ रहा है। "

" ले मेरी रंडी और ले। " सत्यम के धक्कों की रफ्तार बढ़ती जा रही थी _" अपर्णा की योनी और नितंब कब दिलाओगी यार। अब इंतज़ार नहीं होता मुझसे। "

" आआआआहहह कोशिश तो कर ही रही हूँ मैं। " सोनिया ने कहा _" कल भी गई थी उसके पास। पहले तो कुछ समय के लिए मुझे लगा कि वह शीशे में उतर गई है लेकिन जल्द ही मेरी सारी कोशिशों पर पानी भी फिर गया। "

" मुझे लगता है तुम्हारी सारी कोशिशें यू ही बेकार जाती रहेंगी। " सत्यम ने जोर का शॉट मारते हुए कहा _" जबकि मैं अब और इंतज़ार नहीं कर सकता। कसम से जब भी उसे देखता हूँ तो लगता है कि अभी उसे जबरजस्ती अपने नीचे लेटा कर उसकी योनी और नितंब की ठोंकाई शुरू कर दूँ। "

" आआआआहहहहह थोड़ा और जोर से धक्के मारो। " सोनिया ने कहा _" ऐसा सोचना भी मत सत्यम । वो ऐसी वैसी औरत नहीं है। जबरजस्ती करने से मुसीबत भी हो सकती है। सुंदर को ज़रा भी पता चला तो अंजाम अच्छा नहीं होगा। "

" तो फिर क्या करू मैं ?" सत्यम ने आवेश में कहने के साथ ही पूरी रफ्तार से धक्के लगाने लगा था _" तुमसे तो कुछ हो ही नहीं रहा। "

" आआआआहहहहहहह मेरे पपपपास एएएक प्लललान है सत्यम। " सोनिया धक्कों की वजह से बुरी तरह पड़ी पड़ी हिल रही थी _" उससे शायद तुम्हाहारा काम होहोहो सकता है। "

" अरे तो जल्दी बताओ न डियर। " सत्यम सिंह अपने चरम पर पहुँचते हुए बोला _" क्या प्लान है तुम्हारे पास ?"

" आआआआआहहहहह सत्यम और जोर से करो मैं छूटने वाली हूँ आआआहह। " सोनिया ने कहने के साथ ही जबरदस्त झटका खाया। उसकी कमर कमान की तरह झटके खाते हुए

तनी हुई थी और कुछ ही पल में वह शान्त पड़ गई।

" आआआहहह सोनिया मैं भी आया। " सत्यम सिंह भी झड़ते हुए सोनिया के ऊपर पसर गया।

अभी ये दोनो अपनी अपनी सासें बहाल ही कर रहें थे कि बेड के एक तरफ टेबल पर रखे लैण्डलाइन फोन की घण्टी घनघना उठी। फोन की घण्टी से दोनों ही चौंके।

" इतनी रात को भला किसका फोन हो सकता है ?" दोनो के मन में एक ही सवाल उभरा।

" उठ कर देखो न किसका फोन है ?" सत्यम के नीचे दबी सोनिया ने कसमसाते हुए कहा।

सत्यम सिंह किसी तरह उठ कर केड्रिल से रिसीवर को उठाकर कॉन से लगाने के साथ ही कहा_"ह हैलो।"

"....."

" क क्या ???" उधर से कुछ कहा गया जिसे सुन कर सत्यम बुरी तरह उछल पड़ा था।

"....."

" ये तुम क्या कह रहे हो ?" सत्यम का चेहरा सफेद फक्क पड़ता चला गया _" और और कैसे हुआ ये सब ?"

"....."

" ओके ओके हम आ रहे हैं। " कहने के साथ ही सत्यम ने रिसीवर को वापस केड्रिल पर पटका और तुरंत ही उठ कर बाथरूम की तरफ बढ़ गया।

कुछ देर बाद सत्यम सिंह बाथरूम से हाथ मुँह धोकर निकला और आनन फानन में अपने कपड़े पहने उसने।

" अरे क्या बात है सत्यम ?" सोनिया बुरी तरह चौंकते हुए बेड पर उठकर बैठते हुए बोली _" इतनी रात को कहॉ जा रहे हो तुम ? और और अभी किसका फोन आया था ?"

" अभी कुछ बताने का समय नहीं है। " सत्यम सिंह कार की चाभी अपने एक हाथ में थामते हुए बोला _" अभी मुझे यहॉ से फौरन ही निकलना होगा , मेरा इंतज़ार मत करना। "

कहने के साथ ही सत्यम सिंह कमरे से बाहर निकल गया जबकि सोनिया नंगी हालत में ही भाड़ की तरह अपनी आॅखें और मुँह फाड़े दरवाजे की तरफ देखती रह गई इस बात से बेख़बर की दो आॅखें निरंतर उसके नंगे जिस्म को देखे जा रही हैं।

सत्यम सिंह को शहर में अपनी कपड़ा मील की फैक्टरी पहुॅचते पहुॅचते लगभग सुबह हो गई थी। देर रात तक तो वह खुद ही अपनी पत्नी सोनिया के साथ मौज मस्ती में व्यस्त रहा था।

सत्यम सिंह ने जब फैक्टरी के सामने अपनी कार रोंकी तो वहॉ का माहौल ही अलग था। हर तरफ आग और धुएॅ का साम्राज्य नज़र आ रहा था। फैक्टरी के चारो तरफ भीषण आग की लपटें आसमान को छूती नज़र आ रही थी। दमकल की कई गाड़ियॉ इस आग को बुझाने की कोशिश में लगी हुई थी। फैक्टरी में काम करने वाले कुछ मजदूर भी इधर उधर नज़र आ रहे थे।

सत्यम सिंह की हालत तो फोन में मिली जानकारी से ही खराब थी किन्तु खुद अपनी आॅखों से ऐसा भयानक मंज़र देख कर उसकी रही सही कसर भी काफूर हो गई। उसके चेहरे पर उसी तरह के भाव थे जैसे सब कुछ लुट जाने पर होते हैं।

सत्यम सिंह लुटे पिटे भाव के साथ कार से नीचे उतरा और फैक्टरी की तरफ चल दिया। अभी वह कुछ ही कदम आगे बढ़ा था कि उसका पीए हरिप्रसाद शर्मा उसकी तरफ ही आता हुआ नज़र आया। उसके चेहरे पर भी बड़े अजीब से भाव थे।

" सब कुछ बरबाद हो गया सर। " हरिप्रसाद करीब पहुॅचते ही हताश भाव से बोलाॅ _" कुछ भी शेष नहीं बचा। फैक्टरी के हर हिस्से में भीषण आग लगी हुई है। पिछले दो घंटे से फायर ब्रिगेड वाले इस आग पर काबू पाने की कोशिश में लगे हुए हैं। "

" क ..क.. कैसे हुआ हरिप्रसाद ?" सत्यम सिंह की आवाज़ ऐसी थी जैसे किसी गहरे कुएॅ से बोल रहा होॅ _" आख़िर कैसे हुआ ये सब ? फैक्टरी में आग कैसे लग गई ?"

" मुझे खुद भी कुछ समझ में नहीं आ रहा सर कि ये सब कैसे हो गयाॅ ?" हरिप्रसाद दीन हीन लहजे से ही कहाॅ _" फैक्टरी के अंदर आग लगने का सवाल ही नहीं था क्योकि इसके काफी तगड़े इतजामात थे। यहॉ तक कि फैक्टरी में काम करने वाले मजदूरों को भी फैक्टरी के अंदर बीड़ी सिगरेट तम्बाकू या गुटका खाने की इजाज़त नहीं थी। "

" तो फिर कैसे लगी ये आग ?" सत्यम सिंह आवेश मे बोलाॅ _" मुझे इस बारे में ठोस सबूत के साथ जानकारी चाहिए हरिप्रसाद । तुम जानते हो कि इससे हमें कितना बड़ा नुकसान हुआ है। जिस तरह आग लगी हुई नज़र आ रही है उससे साफ ज़ाहिर होता है कि फैक्टरी के अंदर की हर चीज़ ख़ाक़ में मिल चुकी है। तुम अंदाज़ा लगा सकते हो कि कितना नुकसान हो गया है। "

" मैं जानता हूॅ सर। " हरिप्रसाद ने कहाॅ _" पूरी की पूरी फैक्टरी ही जल गई हैॅ , ये कोई मामूली बात नहीं है। ये करोड़ों से भी ऊपर का नुकसान है। "

" पुलिस को सूचित कियाा ?" सत्यम सिंह ने पूॅछा।

" जी सर पुलिस को सूचित कर दिया गया है और पुलिस का एक इन्स्पेक्टर अंदर आपकी ही प्रतीक्षा कर रहा है। " हरिप्रसाद ने कहाा _" वो कह रहा है कि आज के बाद से यहॉ के थाने से उसका तबादला हो जाएगा और अब उसकी जगह पर आपकी बेटी साक्षी सिंह भाटी इंस्पेक्टर का चार्ज संभाल ेंगी। "

" ओह आई सी। " सत्यम सिंह के चेहरे पर सोचपूर्ण भाव नुमायां हुए _" तो वही हुआ जो हम नहीं चाहते थे , ख़ैर। "

कहने के साथ ही सत्यम सिंह फैक्टरी की तरफ बढ़ गया। उसके पीछे पीछे ही उसका पीए हरिप्रसाद भी बढ़ गया था।

कुछ देर में ही सत्यम सिंह उस इंस्पेक्टर के सामने था जिसकी पुलिस की वर्दी पर लगी नेम प्लेट पर उसका नाम अक्षय त्रिपाठी लिखा नज़र आया। कद काठी से ठीक ठाक ही नज़र आ रहा था वह। तीस से बत्तीस की उमर का रहा होगा। उसने सत्यम सिंह को देख कर बड़े ही अदब से नमस्ते किया।

" ठाकुर साहब बड़े ही अफसोस की बात है। " फिर उस इंस्पेक्टर ने कहाा _" कि आपकी फैक्टरी में लगी आग से दूर दूर तक कुछ भी साबुत बचा हुआ नज़र नहीं आ रहा है। इससे इस बात का अंदाज़ा लगाना ज़रा भी मुश्किल नहीं है कि इस हादसे से आपको भारी भरकम नुकसान हो गया है , अगर ...। "

सत्यम सिंह ने उसके 'अगर' पर अचानक ही कहते हुए रुक जाने पर उसकी तरफ सवालिया निगाहों से देखा।

" अगर आपने अपनी इस फैक्टरी का बीमा पहले से नहीं करवाया हुआ है तो। " फिर उसने ये कह कर अपने पिछले कथन को पूरा कियाा _" वैसे पूछना तो नहीं चाहिए मगर फिर भी आपसे पूॅछने की ये हिमाक़त कर ही लेता हूॅ , ड्यूटी इज ड्यूटी भले ही आज ही बस के लिए यहां के एरिये का इंचार्ज हूॅ कल से तो आपकी बेटी ही इस सबकी तहकीक़ात करेंगी न। ख़ैर , तो मैं ये पूछने की हिमाक़त कर रहा था कि .. क्या लगता है आपको ... ये आग किसने लगाई हो सकती है आपकी इस विशाल फैक्टरी में ?"

" ये पता लगाना तो तुम्हारा काम है इंस्पेक्टर। " सत्यम सिंह ने तनिक कठोरता से कहा थाा , उसे इस इंस्पेक्टर का बिहैवियर आज कुछ बदला हुआ लगा थाा , इसके पहले तो ये सब खुद उसके ही पालतू कुत्ते जैसे थे , बोलाा _" और अगर नहीं पता लगा सकते तो यहॉ तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं है समझे ?"

" अरे आप तो नाराज हो गए लगते हैं ठाकुर साहब। " इंस्पेक्टर ने मुस्कुराकर कहाा _" माफ

कीजियेगा। पर सवाल तो मैंने ठीक ही पूँछा था आपसे। "

" हॉ तो हमें भी इस बारे में भला कैसे पता होगा कि ये आग किसने लगाई है ?" सत्यम सिंह उखड़े हुए लहजे से बोला _" अगर पता होता तो क्या वो अब तक ज़िन्दा बचा होता ?"

" हॉ ये तो है। " इंस्पेकटर ने अजीब भाव से अपने सिर को हिलाया _" आपके हाथो अब तक तो उसका कल्याण हो जाना निश्चित ही था। "

" वैसे ये तुम कैसे कह सकते हो ?" सहसा इस बीच हरिप्रसाद ने सवाल किया _" कि फैक्टरी में लगी ये आग किसी के द्वारा लगाई गई है ?"

" देखा आपने ठाकुर साहब। " इंस्पेक्टर ने तपाक से कहा _" आपका ये पीए कितना दिमाग़दार है ? मेरे पूँछने पर जो सवाल आपको पहले ही मुझसे पूँछना चाहिये था वो आपने नहीं पूँछा लेकिन आपके इस हरि के प्रसाद ने पूँछ लिया। ख़ैर , अब जबकि पूँछ ही लिया है तो मुझे भी सवाल का जवाब देने में कोई ऐतराज नहीं है। बात दरअसल ये है ठाकुर साहब कि फैक्टरी में लगी आग अगर साधारण रूप से लगी होती तो उसका रूप इतना उग्र न होता , ऐसा मेरा मानना है .. जोकि बॉकि सबके नज़रिये से ग़लत भी हो सकता है। ख़ैर .... अब जबकि आग इस प्रकार भीषण रूप से लगी हुई है कि फैक्टरी का कोई कोना तक खाली नहीं बचा है तो कहीं न कहीं मन में ये बात आ ही जाती है कि हो सकता है ये आग किसी के द्वारा सोच समझ कर तथा तसल्ली से इस प्रकार लगाई गई हो कि आपकी फैक्टरी का कोई भी हिस्सा राम नाम सत्य होने से न बच सके। "

सत्यम सिंह को इंस्पेक्टर की ऊल जलूल बातों से गुस्सा तो बहुत आ रहा था किन्तु वो उसकी इन सब बातों से सहमत भी था। यकीनन ऐसा हो सकता था। क्योंकि पिछले कुछ समय से जिस तरह की घटनाएं उसके साथ घट रही थी उससे यही ज़ाहिर होता था कि एक बार फिर किसी ने उसके साथ इस प्रकार का नुकसानदायी खेल खेला है। ये अलग बात है कि इस बार इस खेल में उसकी समूची फैक्टरी को ही आग के हवाले कर दिया गया था। सत्यम सिंह को समझ नहीं आ रहा था कि आख़िर कौंन है जो उसके साथ ये सब कर रहा है?

" ठाकुर साहब इसी दुनियॉ में हैं न आप ?" उधर इंस्पेक्टर ने सत्यम सिंह को गहरी सोच में डूबे हुए देखकर कहा _" अगर हैं तो प्लीज ज़रा ग़ौर फरमाइये , मुझे आपसे कुछ सवालात करने हैं। "

" कैसे सवालात इंस्पेक्टर ?" सत्यम सिंह बोला।

" यही कि फैक्टरी में लगी इस भीषण आग में किसी की जान तो नहीं गई न ?" इंस्पेक्टर ने पूछा _" क्योंकि अगर ऐसा हो गया तो आपके लिए मुसीबत हो सकती है। फैक्टरी तो जल ही गई ऊपर से इस आग में जिनकी जान चली गई होगी उससे लम्बा बखेड़ा भी खड़ा हो जाएगा। अच्छा खासा केस बनेगा और आपको कानून की गिरफ्त में भी लेना पड़ सकता है। "

" ज्यादा बकवास करने की ज़रूरत नहीं है इंस्पेक्टर। " सत्यम सिंह गुर्रायाा _" जो भी होगा हम देख लेंगे। तुम अपना काम करो और यहासे चलते बनाो , समझाे ??"

" जैसी आपकी मर्ज़ी ठाकुर साहब। " इंस्पेक्टर ने कहा और एक तरफ बढ़ गया।

" हरिप्रसाद। " इंस्पेक्टर के जाने के बाद सत्यम सिंह हरिप्रसाद से मुखातिब होकर कहाा _" इस सबका न्यूज और मीडिया वालों को पता नहीं चलना चाहिए। "

" वैसे तो अब तक ये बात लगभग फैल ही चुकी होगी सर। " हरिप्रसाद ने कहाा _" फिर भी न्यूज और मीडिया वालों से कुछ भी छुपा नहीं रह सकेगा। क्योंकि ये कोई साधारण मामला नहीं हाै , वो तो अच्छा हुआ कि हमारी फैक्टरी शहर से हट कर तथा शहर की आबादी से बहुत दूर थी जिससे फैक्टरी के अलावा बाकी और किसी का कुछ भी नुकसान नहीं हुआ। वरनाा सोचिए अगर ये फैक्टरी शहर में किसी आबादी वाली जगह पर होती तो क्या होताा ? आग की भीषण लपटों से आस पास के मकानों या और भी बहुत सी चीज़ों पर आग लग जाती जिसके परिणाम की कल्पना ही बड़ी भयंकर है। इस सबके बाद हम कहीं मुँह छुपाने के काबिल नहीं रह जाते। जनता और कानून हमारे पीछे ही पड़ जाते। "

" जो नहीं हुआ उसके बारे में बात करने का कोई मतलब नहीं है हरिप्रसाद।" सत्यम सिंह ने गहरी सास लीी _" यूँ तो कानूनी रूप से इस बात की जॉच तो होगी ही कि फैक्टरी में आग लगने की मुख्य वजह क्या थीी ? मगर .... हमें तो पहले से ही इस बात का अंदेशा है कि इस सबमें उसी का हाथ है जिसने पिछले कुछ समय से हमारे साथ खेल खेलना शुरू किया है। समझ में नहीं आता कि आख़िर क्यों कर रहा है वो ऐसाा ? क्यों हमें बरबाद करने पर तुला हुआ है वाो ?"

" हैरत की बात है सर। " हरिप्रसाद ने गंभीरताा से कहाा _" हमें अब तक उसके बारे में कुछ पता नहीं चल पाया। वो हर बार धोखे से हमारा कुछ न कुछ नुकसान कर देता है और हम कुछ नहीं कर पाते। "

ये दोनो ऐसे ही अपना माथा पच्ची करने में लगे रहे। फैक्टरी के अंदर अब काफी हद तक आग पर काबू पा लिया गया था।

८

उधर मुंबई में आज एक बार फिर सब लोग एक साथ ड्राइंग रूम में रखे कीमती सोफों पर बैठे हुए थे।

" शहर के मशहूर बिजनेस मैन सत्य म सिंह की फैक्टरी में लगी आ ग , जिसमें सबकुछ जल कर खाक़ हो गया । " निशा ने अखबार में छपी ख़बर को पढ़ते हुए कहा _

" मिली जानकारी के अनुसार ये आग उस समय लगी जब सारा शहर रात के अँधेरे में गहरी नींद सोया पड़ा था। रात दो से तीन बजे के बीच फैक्टरी में आग लग ी , और धीरे धीरे समूची फैक्टरी भीषण आग की चपेट में आ गई। फैक्टरी में मौजूद वर्कर खुद इस बात से अंजान हैं। फैक्टरी में लगी आग के उग्र रूप धारण करने से पहले ही फायर ब्रिगेड वालों को सूचित किया गय ा , जब तक दमकल की गाड़ियाँ वहाँ पहँची तब तक फैक्टरी में लगी आग भयंकर रूप धारण कर चुकी थी। लगभग चार घंटे की मशक्क त के बाद फायर ब्रिगेड द्वारा इस भयंकर आग पर काबू पाया गया। फैक्टरी में आग लगने की सूचना फैक्टरी के मालिक सत्य म सिंह भाट ी को दे दी गई थी। फैक्टरी में आग लगने से जो करोड़ों का नुकसान हुआ है उससे फैक्टरी के मालिक सत्य म सिंह गहरे सदमे में हैं। हमें विश्वस्त सूत्रों द्वारा ये पता चला है कि फैक्टरी के मालिक सत्य म सिंह ने अपनी फैक्टरी का कोई जीवन बीमा वगैरा नहीं करवा रखा थ ा , इस लिए अब आप समझ सकते हैं कि आग लगने की वजह से फैक्टरी के मालिक सत्य म सिंह का कितना नुकसान हुआ होगा। फैक्टरी में आग लगने की वजह अभी तक सामने नहीं आई है। इस बारे में अभी पुलिस द्वारा जाँच पड़ता ल की जा रही हैं । "

" कैसी रही अंकल ?" विक्रम ने होठों पर मनमोहक मुस्कान बिखेरते हुए कहा _" सत्यम सिंह को एक और झटका दे दिया मैंने। "

" तो क्या यही वो काम था जिसे तुम सत्यम सिंह के बिजनेस पार्टनर अनिल खुरान ा द्वारा अंजाम देने की बात कह रहे थे ?" उमाकांत ने हैरत से कहा _" पर कैसे हुआ ये सब ?"

" हाँ विक्रम कैसे किया तुमने ये सब ?" रेणुका ने भी चौंकते हुए पूछा।

" सब कुछ शुरू से और अच्छे से आप लोगों को बताता हूँ। " विक्रम ने एक लम्बी सास खींचते हुए कहा _" जब सत्यम सिंह का बिजनेस पार्टनर अनिल खुरान ा अपने उन फोटोग्राफ्स की वजह से मेरे इशारों पर काम करने को तैयार हो गया तो मैने उससे सत्यम सिंह के बिजनेस से संबंधित और भी कुछ महत्वपूर्ण जानकारी हासिल की जिसका किसी को कुछ पता नहीं था। "

" क्या मतलब ??" विक्रम की इस बात पर सब एक साथ चौंके थे _" कैसी जानकार ी ??"

" अनिल खुराना के अनुसार। " विक्रम ने इत्मीनान से कहा _" सत्यम सिंह कपड़ा मील की आड़ में गैर कानूनी धंधा भी करता है। जिसमें गॉजा , अफीम , चरस , आदि कई चीज़ें शामिल हैं। इन सबसे उसे लाखों करोड़ों का भारी मुनाफा होता है। चूँकि ये गैर कानूनी धंधा है इस लिए इसमें उसे कानून का भी डर था मगर उसने अपनी चतुराई से कानून को भी इसमें शामिल कर लिया। कहने का मतलब ये कि इस धंधे से होने वाले मुनाफे में पुलिस और कानून के कई सारे नुमाइंदों का भी हिस्सा होता था। पुलिस और कानून का साथ मिलते ही ये धंधा और भी जोर शोर से चलने लगा मगर छिप छिपाकर ही। सत्यम सिंह की फैक्टरी शहर से बाहर ऐसी जगह पर है जहॉ आबादी न के बराबर ही है इस लिए फैक्टरी में ही इन सब चीज़ों का भी एक अलग से कारखाना बनाया गया था जो फैक्टरी के नीचे तहखाने में था। अब आप समझ सकते हैं कि सत्यम सिंह क्या है ? कपड़ा मील की कमाई से इतना मुनाफा नहीं था जितना इस गैर कानूनी धंधे से था। ये तो ख़ैर शुरूआत है , अभी और भी बहुत सी चीज़ें हैं जिनके बारे में कोई नहीं जानता। "

" तुम तो जान ही गए होगे न ?" उमाकांत ने कहा _" फिर तो कोई समस्या ही नहीं है। "

" मुझे भी उतना ही पता है जितना खुराना को पता था। " विक्रम ने कहा।

" क्या मतलब ??" उमाकांत चौंका।

" खुराना सत्यम सिंह का पार्टनर ज़रूर था अंकल। " विक्रम कह रहा था _" लेकिन उसे खुद ये नहीं पता था कि उसका बिजनेस पार्टनर सत्यम सिंह वास्तव में है क्या ? अनिल खुराना एक फट्टू किस्म का इंसान था तथा साफ दिल का , ये अलग बात है कि उसका कैरेक्टर बाकी चीज़ में सत्यम सिंह से जुदा नहीं था। हॉ ये जरूर था कि खुराना गैर कानूनी काम करने से डरता था , और शायद यही वजह रही थी कि सत्यम सिंह ने इस धंधे में खुराना को शामिल न करके उसे इससे दूर ही रखा। ख़ैर , एक दिन खुराना को किसी वजह से ये पता चल गया कि सत्यम सिंह गैर कानूनी धंधा भी करता है। उसने अपनी आखों से फैक्टरी के बेसमेंट में बने एक अलग ही कारखाने को देखा था। सत्यम सिंह को ये पता नहीं था कि खुराना उसकी असलियत जान चुका है। खुराना ने कभी सत्यम सिंह से इस बात का ज़िक्र भी नहीं किया। क्योकि वह जानता था कि इस धंधे में कोई किसी का नहीं होता , अगर बात इधर से उधर हो गई तो उसकी जान भी जा सकती है। खुराना उस दिन से परेशान भी रहने लगा किन्तु उसने ये सब सत्यम सिंह पर ज़ाहिर न होने दिया। वो अब किसी तरह सत्यम सिंह से पार्टनरशिप तोड़कर उससे कहीं दूर चला जाना चाहता था , मगर सवाल था कि कैसे करे ये सब ? फिर एक दिन वो मेरी पकड़ में आ गया , मैने जब उसे अपने तरीके से टार्चर करके उससे सत्यम सिंह के बारे में पूँछा तथा उससे पार्टनरशिप तोड़ने की बात कही तो वह कुछ देर न नुकुर करने के बाद इसके लिए तैयार हो गया। उसने मुझसे शर्त रखी कि इस सबमें उसका नाम नहीं आना चाहिए और उसे सुरक्षित इस देश से बाहर परिवार सहित भेज दिया जाए। मुझे उसकी शर्त से कोई आपत्ति नहीं थी इस लिए मैंने भी उसकी शर्त मान ली। "

" तो सत्यम सिंह का एक सच ये भी बाहर आ गया कि वह अपने इस बिजनेस की आड़ में

गैर कानूनी काम भी करता है। " उमाकांत ने गहरी सास लेते हुए कहा _" खैर तो तुमने इस सबके बाद खुरानाा से कैसे इस काम को अंजाम दिलवाया ?"

" हे भगवान। " रेणुका आश्चर्यचकित भाव के साथ कह उठी _" कितना गिरा हुआ इंसान है ये , ऐसा कोई काम नहीं बचा जो इसने किया नहीं है। "

" मेरा बस चले तो। " निशा ने बुरा सा मुँह बनाते हुए कहा _" ऐसे व्यक्ति को बीच चौराहे पर गोली मार दूँ , । "

" खुरानाा के बाकी जो छोटे मोटे कारोबार थे उन्हें मैंने आपके द्वारा खरीद लिया। " विक्रम कह रहा था _" और उसके एकाउन्ट में पैसा भी डलवा दिया गया। साथ ही उसको उसके परिवार सहित विदेश जाने का इंतजाम भी कर दिया गया था। अब खुरानाा के पास एक ही काम रह गया था जिसे वो मेरे कहने पर करने वाला था। कल रात उसने फैक्टरी जा कर बेसमेंट में तीन टाइम बम्ब फिट किये थे। ये काम उसने बड़ी सावधानी से तथा किसी की नज़र में आए बिना किया था। इस बात का खयाल किया गया था कि उस समय फैक्टरी में कोई न हो क्योंकि इससे बाकी तमाम वर्कर्स की या बहुत से बेकसूर लोगों की जान जाने का भी भीषण खतरा था। फिर खुरानाा ने बताया कि फैक्टरी में हप्ते में एक दिन का अवकाश होता है और इत्तेफाक़ से कल अवकाश ही था। तीन घंटे के टाइम के बाद बमों को फटना था। बमों के फटने से पहले ही खुरानाा अपने परिवार के साथ विदेश जाने वाली फ्लाइट पर बैठ कर निकल लिया था और इधर तीन घंटे बाद फैक्टरी के अंदर धमाका हो जाना था और खेल खतम। "

" बहुत खूब बेटे। " उमाकांत के चेहरे पर प्रशंसाा के भाव थे , बोलाा _" जब दिमाग़ से ही काम हो जाए तो हाथ पैर चलाने की ज़रूरत ही क्या है ? वेल डन बेटे .... आई एम प्राउड आफ यू। "

" वाह भैयाा वाह आपने तो कमाल ही कर दिया। " निशाा ने खुशी में झूमते हुए कहाा _" और साड़ी को फाड़ कर रुमाल कर दियाा , । "

" बेटा जो कुछ भी करना बहुत सोच समझ कर करना। " रेणुकाा अंदर ही अंदर अपने बेटे के इस सराहनीय कार्य से खुश तो थी किन्तु प्रत्यक्ष में उसने यही कहाा _" क्योंकि तुम जिसके साथ ये जंग कर रहे हो वो बहुत खराब आदमी है। "

" फिक्र मत कीजिए मॉ। " विक्रम ने सहसा ठंडे स्वर में कहाा _" उस खराब आदमी के पर ही तो कुतर रहा हूँ और एक दिन उसे अपाहिज भी कर दूँगा। उसके लिए बहुत कुछ सोच रखा है मैंने। समय आने पर आप देखेंगी कि उसका क्या हस्र करता हूँ मैं। "

" इस धमाके के बाद तो उसकी हालत खराब हो गई होगी बेटे। " उमाकांत ने कहाा _" संभव है कि इस हादसे की जॉच ही न करवाए वो। "

" आपने बिलकुल ठीक कहा अंकल। " विक्रम ने कहा _" फैक्टरी में हुए इस भीषण काण्ड की जॉच नहीं करवाएगा वो। क्योकि इससे उसे मिलेगा तो कुछ नहीं बल्कि उल्टा जॉच से फॅस ज़रूर जाएगा। पुलिस और फॉरेंसिक डिपार्टमेंट वाले हर चीज़ को बारीकी से जॉचेंगे परखेंगे। उस दौरान वो लोग फैक्टरी का चप्पा चप्पा छान मारेंगे और इस सबसे उन्हें वो सबूत भी मिलेंगे जो इस बात की चीख चीख कर गवाही देंगे कि शहर का मशहूर बिजनेस मैन ग़ैर कानूनी धंधा भी करता था। बस खेल खतम। "

" देखते हैं क्या होता है ?" उमाकांत ने कहने के साथ ही पहलू बदला _" वैसे अब आगे का क्या करने का विचार है ?"

" अभी और कुछ नहीं करना है। " सहसा रेणुका ने हस्ताक्षेप किया _" अपनी पढ़ाई पर भी ध्यान देना कुछ , ये काम तो होता ही रहेगा। "

" रेणुका बहन सही कह रही है विक्रम। " उमाकांत ने अपनेपन से कहा _" कुछ दिन में तुम्हारा कॉलेज भी शुरू हो जाएगा इस लिए अपने मन को थोड़ा शान्त भी रखो। "

" मैं भी यही सोच रहा हूॅ। " विक्रम ने मुस्कुरा कर कहा _" कुछ दिन सत्यम सिंह को भी अपनी हालत पर काबू पा लेना चाहिए। वरना कहीं ऐसा न हो कि हादसे पर हादसे देख कर वह हार्ट अटैक से ही मर जाए। फिर किससे मैं अपने तरीके से इंतकाम ले सकूॅगा ?"

" एक के मर जाने से क्या होता है भैया ?" निशा ने कहा _" सब उसके जैसे ही तो हैं , उनका भी वही हाल करना , । "

निशा की बात पर सब मुस्कुरा कर रह गए।

९

सत्यम सिंह की हवेली में इस वक्त बड़ा ही अजीब सा माहौल था। ड्राइंग रूम में रखे सोफों पर इस वक्त परिवार के लगभग सभी सदस्य बैठे हुए थे। सत्यम सिंह, सोनिया, जयदीप, सुंदर सिंह, अपर्णा, सृष्टि तथा सुंदर व अपर्णा का दिमाग़ से डिस्टर्ब बेटा रणदीप। रणदीप अपनी मॉ अपर्णा के साथ की इस वक्त शान्त बैठा था कदाचित सब कोई खामोश व गुमसुम बैठे हुए थे इस लिए उन सबको देखकर वह भी चुपचाप बैठा था वरना आम तौर पर वह कोई न कोई विचित्र सी हरकतें करता ही रहता था। इन लोगों के बीच परिवार के दो सदस्य अभी अनुपस्थित थे, और वो थीं सत्यम सिंह व सोनिया की दोनों बेटियॉ। सत्यम की छोटी बेटी मानुषी मुंबई में है, हलॉकि उसे फैक्टरी में लगी आग की वजह से हुए भारी नुकसान की सूचना दे दी गई थी और वह मुंबई से निकल भी चुकी थी यहॉ आने के लिए। जबकि सत्यम सिंह की बड़ी बेटी साक्षी सुबह पुलिस स्टेशन चली गई थी, क्योंकि आज उसे चार्ज संभालना था। साक्षी को अपने पिता के साथ हुए हादसे का दुख तो था लेकिन वो कर भी क्या सकती थी? हॉ ये ज़रूर उसके दिमाग़ में था कि इस केस की छान बीन वो बारीकी से खुद करेगी तथा इसके साथ ही यह पता भी लगाएगी कि ये सब कैसे हुआ??

" क्या कुछ पता चला भैया कि फैक्टरी में किस वजह से आग लगी थी ?" सहसा वहॉ पर फैले इस सन्नाटे को सुंदर सिंह ने अपने कथन से चीरते हुए कहा _" आपने तो कहा था न कि पुलिस और फॉरेंसिक डिपार्टमेंट के लोग इसकी बारीकी से छान बीन कर रहे थे ?"

" किसी को कोई सुराग़ नहीं मिला छोटे। " सत्य म सिंह ने गंभीरता से कहा _" सबका यही कहना है कि शार्ट सर्किट की वजह से फैक्टरी में आग लगी थी। उस दिन क्योंकि अवकाश था इस लिए फैक्टरी में काम करने वाले वर्कर्स नहीं थे। फैक्टरी के अंदर कोई नहीं था और जो वहॉ पर गार्ड्स वगैरा थे वो सब तो बाहर ही रहते हैं इस लिए किसी को पता ही नहीं चला कि फैक्टरी के अंदर कब क्या हुआ ? जब तक पता चला तब तक फैक्टरी के अंदर भरे कपड़ों के स्टाक में आग पकड़ चुकी थी। फैक्टरी का इन्ट्री गेट बाहर से लॉक था जिसकी चाभी मैनेजर के पास थी उस रात। मैनेजर किसी काम से बाहर था , तो आनन फानन में लॉक तोड़ने की कोशिश की गई। लाक ऐसा था कि दरवाजे के अंदर से कनेक्टेड था जिसे खोल पाना आसान न था इस लोहे के दरवाजे को फिर किसी तरह ट्रक द्वारा तोड़ना पड़ा। इस काम में समय लग गया जिस वजह से आग ने उग्र रूप धारण कर लिया। फिर फायर ब्रिगेड वालों को सूचित किया गया। जब तक दमकल की गाड़ियॉ वहॉ पहुॅची तब तक फैक्टरी के अंदर लगी आग बेकाबू हो चुकी थी और फिर सब कुछ खाक़ हो गया। "

" मैं इस बात को नहीं मानती डैड। " सहसा तभी ड्राइंग रूम में इंस्पेक्टर की वर्दी पहने हुए सत्यम सिंह की बेटी इंस्पेक्टर साक्षी ने दाखिल होते हुए कहा।

पुलिस इंस्पेक्टर की वर्दी में बला की खूबसूरत लग रही थी साक्षी। ऐसा लगता था जैसे ये पुलिस की वर्दी जन्म जन्मांतर से बनी ही उसके लिए थी। उसे इस रूप में देखकर वहॉ बैठे सब

लोगों की आॅखें फटी की फटी रह गईं। एकटक, अपलक देखते ही रह गए थे सब लोग उसे। वर्दी की टाइट फिटिंग में उसके बदन के वो सब उभार स्पष्ट नज़र आ रहे थे जिससे उसके भरपूर जवान हो जाने का पता चल रहा था। सत्यम सिंह तथा जयदीप की आंखें कुछ अलग ही नज़ारा कर रही थी। ये बात किसी ने महसूस की हो या न की हो किन्तु उन बाप बेटों की फितरत से बखूबी परिचित सोनिया ने साफ तौर पर महसूस किया। और सुंदर व अपर्णा की मौजूदगी को ध्यान में रखते हुए उसने तुरंत ही उन बाप बेटों को उनकी वास्तविक स्थित में ले आने की गरज से किन्तु सावधानी से कहा_"वाह मेरी बेटी पुलिस की वर्दी में कितनी सुन्दर लग रही है, कहीं किसी की नज़र न लग जाए तुझे। चल मैं तेरे कान के नीचे नज़र का काला टीका लगा देती हूॅ।"

" इसकी कोई ज़रूरत नहीं है मॉम। " साक्षी ने हॅस कर कहा _" यहॉ पर सब अपने ही तो बैठे हैं। भला अपनों की भी कहीं नज़र लगती है क्या ?"

" क्या पता ?" सोनिया ने एक सरसरी सी नज़र अपने पति व बेटे पर डाली फिर बोली _" लग भी सकती है। "

सत्यम सिंह और जयदीप दोनो ही सोनिया की इस बात पर चौंके और सम्हल कर बैठ गए। ये देख सोनिया मन ही मन मुस्कुराई थी।

" बहुत बहुत बॅधाई हो साक्षी। " अपर्णा ने मुस्कुराकर कहा _" आज से तुम पुलिस वाली बन गई हो। "

" धन्यवाद चाची जी। " साक्षी ने कहा तथा एक हाथ में पकड़े हुए पुलिस रुल को अपने दूसरे हाथ की हॅथेली पर हल्के से मारते हुए कहा _" मैं आपकी इस बात को नहीं मानती डैड कि आपकी फैक्टरी में लगी आग किसी शार्ट सर्किट की वजह से लगी है। "

" ये तुम क्या कह रही हो बेटी ?" सत्यम सिंह मन ही मन उसकी इस बात से चौंका था किन्तु चेहरे पर उन भावों को उजागर न करते हुए प्रत्यक्ष में कहा _" अगर आग शार्ट सर्किट की वजह से नहीं लगी है तो फिर किस वजह से लगी है ? जबकि पुलिस और फॉरेंसिक डिपार्टमेंट के लोग अपनी छान बीन में इसी बात की पुष्टि करके गए थे ?"

" यही तो हैरानी की बात है डैड। " साक्षी ने चहलकदमी करते हुए कहा _" वो लोग उस बात की पुष्टि कर गए जिसका कहीं कोई वजूद ही नहीं था , जबकि उस तरफ उन लोगों ने ज़रा भी ग़ौर नहीं किया जिस तरफ किसी बात के प्रमाण मिल जाने के किसी हद तक चान्सेस थे। "

" क्या मतलब है तुम्हारा ?" सत्यम सिंह इस बार लाख कोशिशों के बाद भी अपने चेहरे पर बुरी तरह चौंकने के भाव न छिपा सका। वह तो चकित भी हो गया था कि उसकी बेटी जो अब तक साधारण सी थी वो अब इस रूप में ऐसी बातें भी करने लगी थी। उसे समझ न आया कि उसकी बेटी के अंदर कौन सा जासूसी कीड़ा समा गया है ?

" मेरा मतलब तो स्वीमिंगपुल में भरे पानी की तरह साफ ही है डैड। " उधर साक्षी अजीब से अंदाज़ में अपने ही बाप की धड़कने बढ़ाते हुए कह रही थी _" मुझे तो ऐसा लगता है जैसे फैक्टरी में छान बीन करने आए पुलिस तथा फॉरेंसिक डिपार्टमेंट के लोग छान बीन की महज औपचारिकता निभा कर चले गए हैं। वरना इतने भीषण काण्ड की इतनी मामूली सी वजह बता कर नहीं चले जाते बल्कि कुछ और ही पता करते। "

सत्यम सिंह अपनी पुलिस की वर्दी पहने बेटी को मुँह बाए देखता रह गया। कानों में कहीं दूर से हथौड़े की चोंट का एहसास करने लगा था वो। फिर सहसा जैसे उसे वस्तुस्थित का ख़याल आया तो बोला_"मतलब क्या है बेटी? क्या तुम ये कहना चाहती हो कि तुम्हारे ही पुलिस डिपार्टमेंट के लोगों ने अपनी छान बीन में ग़लत रिपोर्ट दी है? जबकि तुम्हारे अनुसार उनकी इस रिपोर्ट के उलट कुछ और ही रिपोर्ट निकल सकती थी? इससे तो यही ज़ाहिर होता है कि तुम्हें अपने ही पुलिस डिपार्टमेंट की इस छान बीन के फलस्वरूप बनाई गई रिपोर्ट पर शक है?"

" मैंने ये कब कहा डैड कि मुझे अपने डिपार्टमेंट द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट पर शक ह ै ?" साक्षी ने कहा _" मैंने तो सिर्फ अपनी बात रखी है इस सिलसिले कि अगर औपचारिकता की बजाय ठीक तरह से छान बीन की जाती तो शायद निष्कर्ष कुछ और ही निकलता। "

" तुम्हारे कहने का मतलब तो वही हुआ बेटी। " सत्यम सिंह जाने क्या सोच कर पल भर को मुस्कुराया था , फिर बोला _" तुम्हें लगता है कि तुम्हारे डिपार्टमेंट वालों ने अपनी छान बीन में महज अपनी औपचारिकता निभाई है। इसका मतलब तो यही हुआ कि उन्होंने तुम्हारी नज़र में गंभीरता से छानबीन ही नहीं की। "

" बिलकुल। " साक्षी ने कहा _" पर ये उन पर मेरा कोई आरोप नहीं है डैड। क्योंकि मुझे पता है सबका अपना अपना दिमाग़ होता ह ै , और सब अपने उसी दिमाग़ की वजह से किसी भी चीज़ का रिजल्ट निकालते हैं। जिसका जितना दिमाग़ चलता है वो उतना ही बता पाता ह ै , मगर ज़रूरी नहीं होता कि कोई सच उतने ही दिमाग़ से निकलने वाला सच कहलाए। ख़ैर जाने दीजिए ... मैं आपको ये खुशख़बरी सुनाने आई हूँ कि इस केस को मैंने रीओपन किया है जिसके लिए मैंने कमिश्नर से बड़ी मिन्नते की थी। मुझे अंदेशा है कि मेरे डिपार्टमेंट ने ठीक तरह से छान बीन नहीं की। इस लिए अब ये केस मैंने खुद अपने हाथ में लिया है और अब मैं खुद इसकी छानबीन कर ू गी। "

" क क्य ा ????" सत्यम सिंह उछल पड़ा , चेहर े पर पसीने की बूँदे झिलमिला उठीं। फिर जल्दी ही उसने खुद को संभालत े हुए कहा _" भला इसकी क्या ज़रूरत थी बेट ी ? मेरा मतलब है कि मान लो ये पता लग भी जाए कि फैक्टरी में आग वास्तव में किस वजह से लगी थी तो भी क्या होग ा ? क्या इससे वो सब वापस मिल जाएगा जो जल कर खाक़ मे मिल चुका ह ै ?"

" मैं मानती हूँ डैड कि अब वो सब कुछ नहीं मिल सकता जो जल कर खाक़ हो गया है। "

साक्षी ने कहा _" लेकिन छान बीन से हकीक़त का पता भी तो चलना चाहिए। आखिर पता तो चलना ही चाहिए कि फैक्टरी में आग खुद लगी थी या किसी के द्वारा लगाई गई थी ?"

" किसी के द्वारा ?" सहसा इस बीच सुंदर ने कहा _" इसका क्या मतलब हुआ साक्षी बेटी ?"

" मतलब साफ है चाचा जी। " साक्षी ने सुंदर से मुखातिब होकर कहा _" फैक्टरी में आग अगर खुद नहीं लगी रही होगी तो ज़ाहिर है किसी के द्वारा आग लगाई गई थी। उस सूरत में सवाल यही उठता है कि किसने और किस वजह से फैक्टरी में आग लगाई ? आप ही बताइए क्या ये जानना ज़रूरी नहीं है कि हम ऐसे इंसान का पता लगाएं जिसने हमारी फैक्टरी को आग लगा कर हमारा सब कुछ बरबाद कर दिया ?"

" बिलकुल बेटा। " सुंदर ने कहा _" अगर छानबीन में यही सच सामने आता है तो इसका पता तो चलना ही चाहिए कि किसने ये सब किया और क्यों किया ?"

सत्यम सिंह के कॉनों में सीटियॉ सी बजने लगी थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि अब वह ऐसा क्या करे कि उसकी बेटी फैक्टरी की दुबारा छानबीन न करे? क्योंकि उसे पता था कि अगर साक्षी ने दुबारा छानबीन शुरू की तो वो सच्चाई भी सामने आ जाएगी जिसको वह किसी भी कीमत पर सामने नहीं लाना चाहता। पहले जो छानबीन हुई थी उसमें सत्यम सिंह ने ऊपर ऊपर से ही फैक्टरी की छानबीन करवाई थी वो भी सिर्फ औपचारिकता के लिए। सब उसके ही आदमी थे, पुलिस भी और फॉरेंसिक डिपार्टमेंट के लोग भी। किन्तु अब ये केस फिर से रीओपन हो गया, वो भी उसकी अपनी ही बेटी के द्वारा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि अपनी बेटी को दुबारा से छानबीन करने से कैसे रोंके?

" साक्षी दीदी ठीक ही कह रही हैं डैड। " सहसा इस बीच काफी देर से चुपचाप बैठा जयदीप भी अपने अंदाज़ में कह उठा _" फैक्टरी की दुबारा से छानबीन तो होनी ही चाहिए। कम से कम असलियत तो सामने आ ही जाए कि किसने ये सब किया है ? कसम से डैड ... जिसने भी ये किया होगा उसको छोड़ूँगा नहीं मैं। कुत्ते से भी बदतर मौत मारूँगा उसे। "

" खामोशशशशश। " सत्यम सिंह लगभग चीखते हुए कहा था _" चुपचाप बैठो , नहीं तो कमरे में जाओ अपने। तुम्हें बीच में बोलने की कोई ज़रूरत नहीं है समझे ??"

" पर डैड मैंने ऐसा क्या ग़लत कह दिया ?" जयदीप ने बुरा सा मुँह बनाते हुए कहा _" जिसकी वजह से आप मुझे इस तरह डॉटकर चुप करा रहे हैं। "

सत्यम सिंह का जी चाहा कि वह अपने इस नालायक बेटे को गोली मार दे, किन्तु फिर बड़ी मुश्किल से अपने गुस्से को काबू में किया उसने।

" मैं तो कहता हूँ बेटी कि बेवजह ही तुम इसके लिए परेशान हो रही हो। " सत्यम सिंह ने बात को किसी तरह संभालने की गरज से कहा _" क्योंकि अगर ये पता चल भी गया कि फैक्टरी में आग खुद नहीं लगी थी बल्कि किसी के द्वारा लगाई गई थी तो तब भी ये कैसे पता लगाओगी कि किसने ये सब किया ? वो जो कोई भी रहा होगा वो इतना बेवकूफ नहीं रहा होगा कि इतना बड़ा काण्ड करने बाद अपने पीछे अपने ही खिलाफ कोई सबूत या कोई सुराग़ छोंड़ गया होगा। क्योकि ये तो उसे भी भली भाँति पता होगा कि इतना कुछ करने के बाद अगर वह पकड़ा जाएगा तो उसके लिए अच्छा नहीं होगा , बल्कि पकड़े जाने पर जेल की सलाखों के पीछे पहुँचा दिया जाएगा। "

" जुर्म चाहे जितनी होशियारी या सफाई से किया जाए डैड। " साक्षी ने कहा _" वह कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में ऐसा सबूत या सुराग़ ज़रूर छोंड़ जाता है जिसकी बिना पर जुर्म करने वाले को कानून के हाथो पकड़ कर जेल की सलाखों के पीछे पहुँचा दिया जा सके। मुझे पूरा यकींन है डैड ... जिसने भी ये सब किया है वो अपने पीछे अपने ही खिलाफ सबूत या सुराग़ ज़रूर छोंड़ कर गया होगा। आप खुद सरकारी वकील रह चुके हैं इस लिए ये बात आप भी अच्छी तरह जानते हैं कि मुजरिम के खिलाफ जब कोई एक सबूत या सुराग़ कानून के हाथ लग जाता है तो फिर ज्यादा समय नहीं लगता उस मुजरिम को पकड़ कर जेल की सलाखों के पीछे डाल देने में। "

सत्यम सिंह हैरान भी था और परेशान भी। हैरान इस लिए कि उसकी बेटी के मुख से जिस तरह के डायलॉग निकल रहे थे उसकी उसने कल्पना तक न की थी और परेशान इस लिए कि अपनी ही बेटी द्वारा इस छानबीन को करने से वह किसी भी तरीके से रोंक नहीं पा रहा था। अपनी बेटी द्वारा छानबीन करने की उसकी ज़िद को देख उसका दिल बैठा जा रहा था। हलाँकि वह चाहता तो बेटी को ठेस लहजे में कह कर इसके लिए मना कर देता किन्तु तब हालात और बात दोनो ही बिगड़ जाते। उसकी बेटी के मन में ये बिचार ज़रूर उठता कि उसका बाप उसके द्वारा इस छानबीन को न करने पर इतना ज़ोर क्यों दे रहा है? बेटी क्योंकि अब पुलिस वाली बन चुकी थी इस लिए अब उसके सोचने का नज़रिया बदल चुका था। उसे तो अब हर आदमी में एक मुजरिम नज़र आने लगा था जिससे उसकी निगाह अब सबको शक की दृष्टि से देखने लगी थी। इस लिए सत्यम सिंह अब ये किसी कीमत पर भी नहीं चाह सकता था कि किसी भी वजह से उसके प्रति उसकी बेटी के सोचने का नज़रिया बदल जाए।

" चलती हूँ डैड। " सहसा साक्षी ने अपनी खूबसूरत कलाई पर बँधी एक कीमती घड़ी पर नज़रें डालते हुए कहा _" मैं आपका पुलिस स्टेशन में इंतज़ार करू गी। " फिर उसने सुंदर की तरफ भी देख कर कहा _" चाचा जी आपका भी। "

इतना कहने के बाद ही वह खूबसूरत बला पलटी और लंबे लंबे डग भरती हुई ड्राइंग रूम से बाहर निकल गई। किन्तु उसके जाते ही वहाँ पर ब्लेड की धार जैसा पैना सन्नाटा भी खिंच गया।

सत्यम सिंह का दिल जैसे धड़कना भूल गया था। उसे अपनी आंखों के सामने अंधेरा सा नज़र

आने लगा। जाने क्या सोचकर वह तनिक चौंका तथा साथ ही घबरा भी गया। फिर एक ठंडी सास खींचते हुए, तथा अपनी आॅखों को मूॅद कर सोफे की पिछली पुश्त से अपना पीठ व सिर टिका दिया। आॅख बंद करते ही उसे फैक्टरी के बेसमेंट मे बने उस कारखाने का मंज़र दिख गया जहां पर सिर्फ और सिर्फ ग़ैर कानूनी चीज़ें मौजूद थी। ये सब नज़र आते ही सत्यम सिंह ने पट से अपनी आंखें खोल दी तथा एक झटके से सोफे पर से उठा और अपने कमरे की तरफ भारी कदमों से बढ़ गया।

उस वक्त दोपहर के लगभग साढ़े ग्यारह या बारह के आसपास का समय था जब सत्यम सिंह, सोनिया व सुंदर सिंह साक्षी के कहे अनुसार फैक्टरी पहुँचे। इन लोगों के साथ सत्यम सिंह का बेटा जयदीप भी आना चाहता था किन्तु सत्यम सिंह उसे अपने साथ नहीं लाया था। उसे डर था कि कहीं वह किसी समय ऐसा वैसा न बोल बैठे जिससे कोई बात बिगड़ जाए। जयदीप इस बात से अपने स्वभाव के चलते नाराज तो हुआ लेकिन पिता के द्वारा सख़्ती से मना कर देने पर वह मन मसोस कर रह गया था।

फैक्टरी के अंदर जाने से पहले की तरह ही कानूनन अभी प्रतिबंध लगा हुआ था। हलाँकि पहले हुई छानबीन के मुताबिक प्रतिबंध हटाया ही जा रहा था कि ऐन समय पर साक्षी के द्वारा जब केस फिर से रीओपन हो गया तो प्रतिबंध पूर्वत् लगा ही रहा। इसके साथ ही जाने क्या सोच कर इंस्पेक्टर साक्षी ने वहाँ की सिक्योरिटी भी टाइट करवा दी थी।

सत्यम सिंह ने अपनी तरफ से कोशिश तो बहुत की कि उसे एक बार फैक्टरी के अंदर जाने दिया जाए लेकिन उसकी एक न चली थी। उसे इस बात ने भी बुरी तरह हैरान व परेशान कर दिया था कि इस शहर का पूरा पुलिस डिपार्टमेंट ही बदल दिया गया है। ऊँची रैंक के सभी अफसरों का तबादला हो चुका था एक दिन पहले ही। सब-इंस्पेक्टर से लेकर कमिश्नर तक सबका तबादला कर दिया गया था। सत्यम सिंह इस बात से बेहद परेशान हो गया था, पुलिस कमिश्नर उसका पक्का यार था जिसके एक इशारे पर उसका हर काम चुटकियों में हो जाता था। सत्यम सिंह अपनी हार न मानते हुए प्रदेश के मुख्यमंत्री से भी संबंध स्थापित कर इस केस को रफा दफा करने का दबाव बढ़ाने को कहा किन्तु मुख्यमंत्री ने ये कह कर अपने हाथ खड़े कर दिये थे कि वह ऐसा चाह कर भी नहीं कर सकता क्योंकि ऊपर से हाई कमान का सख्त आदेश था कि इस केस से संबंधित किसी भी प्रकार की बात किसी के द्वारा नहीं सुनी जाएगी और न ही किसी के द्वारा कोई हस्ताक्षेप किया जाएगा। पुलिस को पूरी इमानदारी के साथ इस केस की छानबीन करने की छूट दी जाए।

प्रदेश के मुख्यमंत्री की इस बात ने सत्यम सिंह की रही सही उम्मीद को भी तोड़ दिया था। उसकी हालत उस व्यक्ति से भी कहीं ज्यादा गई गुज़री हो गई थी जिसे चलने के लिए दो दो बैसाखियों का भी मोहताज होना पड़ता है। सत्यम सिंह की समझ में नहीं आ रहा था कि एक ही दिन में ये क्या हो गया है? शहर के सारे पुलिस डिपार्टमेंट का क्यों तबादला कर दिया गया?? और....और ऐसा क्या है जिसके चलते प्रदेश के सीएम तक को अपने हाथ मजबूरीवश खड़े कर देने पड़े? लाख सिर खपाने के बाद भी ये सब बातें सत्यम सिंह की समझ में नहीं आ रही थीं। वह इतना ज्यादा परेशान व हताश हो गया था कि उसे हर तरफ सिर्फ और सिर्फ अंधेरा ही अंधेरा दिखाई देने लगा था। ऐसा लगता था कि वह चक्कर खा कर अभी गिर जाएगा। हलाँकि वो ये सब अपने चेहरे पर से ज़ाहिर नहीं होने देना चाहता था किन्तु वह इसका क्या करे कि लाख कोशिशों के बाद भी दिलो दिमाग़ में ताण्डव कर रहे इस तूफान को वह अपने चेहरे पर उभर आने से रोंक नहीं पा रहा था।

इंस्पेक्टर साक्षी पुलिस की वर्दी पहने कुछ ऐसे पोज में खड़ी थी कि सत्यम सिंह को वह किसी यमराज की तरह नज़र आ रही थी।

सत्यम सिंह अपनी ही बेटी से बुरी तरह भयभीत हुआ जा रहा था। बार बार वह अपने रुमाल से चेहरे पर उभर आते पसीने को पोछ रहा था।

" मैं आप सबको ये बताना चाहती हूँ कि फैक्टरी की इसके पहले हुई छानबीन से मेरा कोई मतलब नहीं है। " साक्षी ने सत्यम सिंह के साथ आए बाकी सब पर एक एक नज़र डालने के बाद सत्यम सिंह से कहा _" अब क्योंकि ये केस फिर से मेरे द्वारा रीओपन हुआ है तो इस केस की छानबीन मैं शुरू से और नए सिरे से ही करू गी। उम्मीद करती हूँ कि आपको इस सबसे कोई ऐतराज नहीं होगा बल्कि इस छानबीन में आप खुद पुलिस का पूरा पूरा सहयोग देंगे। "

" तुमने बेकार ही इस केस को रीओपन किया है बेटी। " सत्यम सिंह ने नपे तुले भाव से कहा _" मैं तो कहता हूँ कि अभी भी कुछ नहीं हुआ है , अभी भी इस केस की फाइल बंद की जा सकती है। कोई ज़रूरत नहीं है इस सबकी , क्योंकि इससे वो सब कुछ मुझे वापस तो मिलने से रहा जो जल कर खाक़ हो गया है। "

" अब ये केस रीओपन हो चुका है ठाकुर साहब। " साक्षी ने अपने ही बाप को ठाकुर साहब कह कर संबोधित किया। सत्यम सिंह इस बात से हैरान रह गया , जबकि साक्षी कह रही थी _" और जब तक इस केस से संबंधित कोई रिजल्ट सामने नहीं आता तब तक ये केस क्लोज नहीं हो सकता। केस को क्लोज करना मेरे बस में नहीं है बल्कि ये ऊपर से ही आदेश है कि केस को अब अच्छी तरह से ही किसी नतीजे के साथ बंद किया जाए। "

" ठीक है साक्षी बेटी। " सहसा सोनिया ने कहा _" तुम अपनी ड्यूटी निभाओ , हम भी देखना चाहते हैं कि इस सबके पीछे किसका हाथ है ?"

" माफ कीजिये , इस वक्त मैं आपकी बेटी नहीं बल्कि एक पुलिस आॅफिसर हूँ और अपनी ड्यूटी कर रही हूँ। " साक्षी ने सपाट लहजे से कहा _" एनीवे , तो शुरू करें ठाकुर साहब ??"

साक्षी की बात से जहाँ सोनिया को एक झटका सा लगा वहीं सत्यम सिंह की घबराहट बढ़ने लगी थी।

" मेरा सबसे पहला सवाल। " साक्षी ने कहा _" फैक्टरी में आग लगने की सूचना सबसे पहले आपको कैसे हुई ?"

सत्यम सिंह क्योंकि समझ चुका था इस लिए अब उसने भी अपने आपको इस केस से संबंधित किसी भी प्रकार की छानबीन या तहकीकात के लिए तैयार कर लिया।

" फैक्टरी में आग लगने की सूचना उस रात लगभग तीन बजे मेरे पीए के द्वारा मुझे मिली। "

सत्यम सिंह ने कहा _" मैं अपनी पत्नी के साथ अपने कमरे में उस वक्त सोया हुआ था , जब मेरे पीए का फोन आया था। उसने ही बताया कि हमारी फैक्टरी में आग लग गई है। "

" इसके बाद आपने क्या किया ?" साक्षी ने पूछा।

" मैने वही किया। " सत्यम सिंह कह रहा था _" जो हर इंसान इन हालातों में करता है। अपने पीए के द्वारा फोन पर मिली सूचना के तुरंत बाद ही मैं वहां से शहर के लिए निकल पड़ा। जब सुबह के प्रहर मैं यहॉ पहुँचा तो सब कुछ तबाह हो चुका था। "

" फैक्टरी पहुँच कर आपने क्या ऐक्शन लिया ?" साक्षी ने पूछा।

" किसी प्रकार का ऐक्शन लेने की हालत ही नहीं थी उस वक्त मेरी। " सत्यम सिंह बोला _" अपनी आॅखों के सामने अपना सब कुछ खाक़ में मिल गया देख होश ही नहीं था मुझे। कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था कि क्या करू क्या न करू ? वो तो मेरे पीए ने ही बताया कि फैक्टरी में आग लगने के बाद उसने इस संबंध में क्या क्या किया है ?"

" मैं आपके पीए का बयान लेना चाहती हूॅ। " साक्षी ने कहा _" आप उन्हें बुला दीजिए प्लीज। "

सत्यम सिंह को बुलाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी क्यों पीए वहीं था, और पीए ही बस क्यों बल्कि फैक्टरी के स्टाफ का लगभग हर व्यक्ति वहॉ मौजूद था। सबको पता हो चुका था कि फैक्टरी की दुबारा छानबीन हो रही है इस लिए हर व्यक्ति उत्सुकतावश वहॉ मौजूद था।

सत्यम सिंह ने इशारे से पीए को बुलाया। वह तुरंत ही हाज़िर हो गया।

" आपका नाम ?" साक्षी ने पीए के हाज़िर होते ही सवाल किया।

" जी मेरा नाम हरिप्रसाद शर्मा है। " पीए ने बताया।

" ठाकुर साहब की फैक्टरी में कब से ऐज अ पीए काम कर रहे हैं ?" साक्षी ने पूछा।

" जी लगभग छः साल हो गए। " हरिप्रसाद ने कहा।

" छः साल काफी लम्बा समय होता है ये तो आप भी जानते होंगे ?" साक्षी ने अजीब भाव से कहा _" कहने का मतलब ये कि इन छः सालो में आपको अपने मालिक और उनके काम के बारे अच्छी तरह जानकारी होगी। "

" जी शायद। " हरिप्रसाद ने अनिश्चित भाव से कहा _" शायद शब्द इस लिए कहा कि छः साल अपने मालिक के नजदीक रह कर भी ये बात मैं दावे के साथ नहीं कह सकता कि मैं उनके और उनके काम के बारे में पूरी तरह ही जानता हूॅ। बहुत सी बातें ऐसी होती हैं जो कोई भी मालिक अपने किसी नौकर को बताना ज़रूरी नहीं समझता। "

" आपने बिलकुल ठीक कहा। " साक्षी ने कहा _" खैर , तो अब आप बताइये कि उस रात क्या क्या और किस तरह हुआ ?"

" ज जी क्या मतलब ?" हरिप्रसाद चकराया।

" मेरे कहने का मतलब है कि जिस रात फैक्टरी में लगी थी। " साक्षी ने कहा _" उस रात की सारी बातें आप विस्तार से बताइए। "

हरिप्रसाद ने कुछ पल सोचा फिर वो सब बताता चला गया जो उस रात हुआ था।

सब कुछ सुनने के बाद साक्षी ने गहरी सास ली और वहीं पर चहलकदमीं करते हुए कहा_"तो आपकी और पुलिस की छानबीन के बाद तैयार की गई रिपोर्ट के अनुसार फैक्टरी में आग लगने की मुख्य वजह सिर्फ सार्ट शर्किट ही है?"

" जी पुलिस ने तो अपनी यही रिपोर्ट छानबीन के बाद तैयार करके दी थी। " हरिप्रसाद ने कहा।

" क्या आपने इस बात पर विचार नहीं किया या फिर क्या आपने इस नज़रिये से नहीं सोचा कि फैक्टरी में आग किसी के द्वारा लगाई गई भी हो सकती है ?" साक्षी ने पूछा था।

" इस बारे में न सोचने की भी वजह थी इंस्पेक्टर। " सहसा सत्यम सिंह ने कमान संभालते हुए कहा _" दरअसल जिस दिन फैक्टरी में आग लगी थी उस दिन सभी वर्कर्स के लिए अवकाश था। इस लिए उस रात फैक्टरी में कोई था ही नहीं। और जब कोई था ही नहीं तो भला इस बारें में कैसे कह सकते थे किसी अन्य के द्वारा फैक्टरी में आग लगी ?"

" चलिए मान लिया कि उस रात अवकाश के चलते कोई भी वर्कर फैक्टरी में नहीं था। " साक्षी ने कहा _" किन्तु सवाल ये है कि अवकाश के चलते क्या कोई भी फैक्टरी में नहीं था ? जहॉ तक मुझे पता है तो इतनी बड़ी फैक्टरी में अवकाश के चलते हर कोई फैक्टरी से नदारद नहीं हो सकता। मतलब फैक्टरी की सुरक्षा व्यवस्था के लिए वहॉ गार्ड्स मौजूद होते हैं और बहुत मुमकिन है कि फैक्टरी के स्टाफ में से भी कोई न कोई फैक्टरी में मौजूद रहता है। "

" बिलकुल इंस्पेक्टर। " सत्यम सिंह ने कहा _" हप्ते में एक दिन फैक्टरी बंद रहती है इस लिए फैक्टरी में काम करने वाले मजदूरों को अवकाश दे दिया जाता है। लेकिन उस अवकाश वाले दिन ऐसा नहीं होता कि पूरी फैक्टरी सुनसान हो जाती है , बल्कि फैक्टरी की देख रेख और उसकी सुरक्षा व्यवस्था के लिए वहॉ पर चौबीसों घंटे सिक्योरिटी गार्ड्स रहते हैं तथा फैक्टरी स्टाफ के भी कई मेंबर फैक्टरी में रहते हैं। " इतना कहने के बाद सत्यम सिंह एक पल रुका फिर कुछ सोच कर बोला _" अगर तुम्हारा ख़याल ये है इंस्पेक्टर कि इन्हीं सब लोगों में से ही किसी ने फैक्टरी में आग लगाई हो सकती है तो तुम्हारा ख़याल ग़लत है। क्योकि ये सब मेरे सबसे ज्यादा भरोसेमंद आदमी हैं जिनकी ईमानदारी पर मुझे लेस मात्र भी

शक नहीं है। "

" अपने आदमियों पर भरोसा करना बहुत अच्छी बात है ठाकुर साहब। " साक्षी ने कहा _" लेकिन अंधा विश्वास करना कोई समझदारी नहीं है। ख़ैर , तो आपके कहने का मतलब है कि फैक्टरी से रिलेटेड किसी भी व्यक्ति ने फैक्टरी में आग नहीं लगाई हो सकती ?"

" बिलकुल। " सत्यम सिंह ने जोर देकर कहा _" इन पर मेरा ये भरोसा ही है वरना अगर भरोसा नहीं होता तो मैं पहले ही इन सब पर इस सबके लिए शक ज़ाहिर करता और तुम्हारे पुलिस डिपार्टमेंट से इस बारे में तहकीकात करने की बात कहता। और एक पल के लिए अगर मैं ये मान भी लूँ कि मेरे आदमियों में से ही किसी ने ये काम किया हो सकता है तब भी ये साबित नहीं हो सकता। क्योकि अवकाश वाले दिन फैक्टरी में ताला लगा होता है और बाकी के फैक्टरी स्टाफ मेंबर फैक्टरी से अलग अपनी अपनी डेस्क या केबिन में होते हैं। यहाँ पर अगर ये तर्क दिया जाए कि अवकाश से पहले ही या फैक्टरी में ताला लगने से पहले ही किसी ने ऐसा कुछ कर दिया हो जिससे फैक्टरी के अंदर आग लग जाए तब भी ये तर्कसंगत नहीं है। क्योकि ये तो हर स्टाफ मेंबर जानता है कि फैक्टरी में हुए किसी भी हादसे से सबसे पहले उन्हीं पर ही शक किया जाएगा , उस सूरत में उन पर कड़ी कार्यवाही भी की जाएगी और अंततः वो पकड़े ही जाएँगे। इस लिए कोई भी स्टाफ मेंबर जानबूझ कर अपने ही पैर में कुल्हाड़ी मार लेने वाला काम करेगा ही नहीं। "

" आपके तर्क अपनी जगह बिलकुल ठीक हैं ठाकुर साहब। " साक्षी ने एक हाथ में पकड़े हुए पुलिसिया रुल को अपने दूसरे हाथ की हॅथेली पर हल्के से मारते हुए कहा _" अब इसी बात को अपने फैक्टरी स्टाफ के नज़रिये से देख कर ज़रा ग़ौर कीजिए। कहने का मतलब ये कि मान लीजिए कि मैं ही वो फैक्टरी की स्टाफ मेंबर हूँ जिसने फैक्टरी में आग लगाई है और मैं ये बात अच्छी तरह जानती हूँ कि मेरे द्वारा किए गए काण्ड से आपका शक सबसे पहले मुझ पर ही जाएगा जो कि स्वाभाविक ही है , इस लिए आपके मुताबिक मैं ये काम नहीं कर सकती , क्योंकि सबसे पहले मुझ पर ही शक जाने से मैं फॅस जाऊँगी , ये आप सोचते हैं। जबकि मैंने आपकी सोच के उलट ये काम कर ही दिया है और आप सोचते रहें कि मैंने ये काम नहीं किया हो सकता। "

" दिमाग़ तो तुमने काबिले- तारीफ़ लगाया है इंस्पेक्टर। " सत्यम सिंह ने मुस्कुराकर कहा _" यकीनन तुमने दोनो पहलुओं के बारे में बारीकी से सोच कर तर्कसंगत विचार प्रकट किया है लेकिन ये एक संभावना मात्र ही है , कोई ज़रूरी नहीं कि इसमें कोई सच्चाई ही हो। "

" सच्चाई का ही तो पता लगाना है ठाकुर साहब। " साक्षी ने कहा _" और उसके लिए हर किसी के बारे में दोनों पहलुओं पर सोचना ही पड़ेगा। ख़ैर , मुझे ऐसा लगता है कि आप ही इस प्रकार से सोच विचार नहीं करना चाहते , जबकि ऐसा होना नहीं चाहिए। ये सोचने वाली बात है। "

सत्यम सिंह ये सुन कर एक पल के लिए गड़बड़ा सा गया। फिर तुरंत ही संभल कर

बोला_"ऐसा कुछ नहीं है इंस्पेक्टर। मैं तो बस इस लिए नहीं सोच विचार कर रहा क्योंकि मेरे हिसाब से इस सबका रिजल्ट पहले निकाला जा चुका है।"

सत्यम सिंह की इस बात से साक्षी ने कुछ न कहा बल्कि बड़े ग़ौर से अपने पिता के चेहरे की तरफ देखती रही। ऐसा लगा जैसे कि वह अपने पिता के चेहरे पर उभर रहे कई तरह के भावों को समझने की कोशिश कर रही हो। वहीं सत्यम सिंह ने जब अपनी बेटी को अपनी तरफ इस तरह गौर से देखते हुए देखा तो उसे बड़ा अजीब सा महसूस हुआ। उससे नज़रें मिलाने में उसकी हिम्मत जवाब देने लगी। उसे लगा कहीं ऐसा तो नहीं कि उसकी बेटी उसके चेहरे के भावों को पढ़ कर ही सारा सच जान गई हो। इस एहसास ने उसे अंदर तक कॅपकॅपा कर रख दिया। बड़ी मुश्किल से उसने खुद को संभालते हुए कहा_"क्या हुआ इंस्पेक्टर, इस तरह क्यों देख रही हो मुझे? अपनी कार्यवाही को आगे बढ़ाओ।"

" देख रही हूॅ कि आपके चेहरे पर उभरते हुए अनगिनत भाव किस बात की गवाही दे रहे हैं ?" साक्षी ने अजीब से भाव से कहा।

" क .. क्या मतलब ??" सत्यम सिंह बुरी तरह चौंका था।

" जाने दीजिए। " साक्षी ने कहा _" देखिए फारेंसिक डिपार्टमेंट वाले भी आ गए। आइए फैक्टरी के अंदर चलते हैं। "

सत्यम सिंह एकाएक अंदर ही अंदर बुरी तरह घबरा सा गया। उसे तो लगने लगा था कि बातें अब तक उसके पक्ष में ही हैं और इतनी पूछताॅछ के बाद कार्यवाही बंद कर दी जाएगी। लेकिन उसे अब महसूस हुआ कि ये सब तो महज एक औपचारिक पूछताॅछ थी असली छानबीन तो अब शुरू होगी।

फॉरेंसिक डिपार्टमेंट की टीम आ चुकी थी तथा खोजी दस्ता भी। गाड़ियों से निकल कर सब बाहर आ गए। सत्यम सिंह उस वक्त और बुरी तरह चौंका जब गाड़ियों के अंदर से कुछ कुत्ते बाहर निकले। सत्यम सिंह को समझते देर न लगी कि ये कुत्ते इस सबकी छानबीन मे उन सबकी सहायता के लिए ही हैं।

पल भर में ही सत्यम सिंह की हालत ख़राब हो गई। इस सबके बारे में उसने ख्वाब तक में न सोचा था। आज पहली बार उसे लगा कि अपनी बेटी साक्षी को पैदा करके उसने बहुत बड़ी भूल की थी।

इंस्पेक्टर साक्षी के निर्देशानुसार पुलिस और बाकी विभाग की टीम्स फैक्टरी की तरफ बढ़ चली, और साथ ही बढ़ चली थी सत्यम सिंह की हृदय गति। हलाॅकि उसके साथ आए बाकी

सब नार्मल थे। सोनिया और सुंदर के चेहरे पर गंभीरता के भाव ज़रूर थे किन्तु ये दोनो सत्यम सिंह की तरह अपनी हालत से लाचार या परेशान नहीं थे।

छानबीन करने आई बाकी सब टीमों के पीछे पीछे सत्यम, सोनिया व सुंदर भी चल रहे थे किन्तु सत्यम सिंह के कदम बड़ी मुश्किल से उठ रहे थे।

" सब ठीक हो जाएगा सत्यम। " सहसा सोनिया ने सत्यम की हालत देख उसे दिलासा देने की गरज से कहा _" अब तो हमारी बेटी ने खुद ही इस केस को अपने हाथ में ले लिया है। मुझे पूरा यकीन है कि वो सब कुछ पता कर लेगी। हमारी फैक्टरी में आग लगाने के पीछे तथा हमें बरबाद करने के पीछे जिस किसी का भी हाथ होगा वह उसे ज़रूर पकड़ लेगी। तुम बस खुद को संभाल ो और अपनी ऐसी शकल न बनाए रखो। "

" भाभी बिलकुल ठीक कह रही हैं बड़े भैया। " सुंदर ने कहा _" आपको अब इस तरह परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं है। यकीनन साक्षी बेटी के चलते सब कुछ ठीक हो जाएगा। मुझे अपनी भतीजी पर गर्व है कि उसने पुलिस फोर्स ज्वाइन किया और ज्वाइन करते ही उसे अपनी ही फैक्टरी में लगी आग का ये केस मिल गया। मुझे उसकी काबिलियत पर पूरा भरोसा है। आप बेफिक्र हो जाइए भैया ... एवरीथिंग विल वी आलराइट। "

सत्यम सिंह इन दोनो को भला क्या कहता??? वह भला क्या कहता कि वह किस बात से परेशान है? वह भला क्या कहता कि जिस भतीजी पर वह गर्व कर रहा है उसकी उसी भतीजी की वजह से आज वह पल पल इस हालत से मरा जा रहा है। हालात ने कितना बेबस व लाचार बना दिया था उसे कि सक्षम होने के बावजूद भी वह कुछ नहीं कर सकता था। जितने भी देवी देवताओं का उसे पता था उसने उन सबको मन ही मन याद करके उनसे ये फरियाद कर डाली थी कि ये केस तथा ये छानबीन बस यहीं पर रुक जाए मगर ऐसा होता उसे अब तक नज़र नहीं आया था। इतना बेबस तथा इतना परेशान आज से पहले वह अपनी ज़िन्दगी में कभी न हुआ था। उसने तो ये तक सोच लिया था कि अगर ये छानबीन रुक जाए तथा ये केस बंद हो जाए तो वह अब से इस गैर कानूनी काम को करने से हमेशा के लिए तौबा कर लेगा। मगर ये भी सच है न दोस्तो कि जब हम किसी चीज़ के बीज बो चुके होते हैं तो फिर बाद में हमें उस बीज के द्वारा उत्पन्न हुई फसल को काटना भी पड़ता है या उस बीज से उग आए फल को खाना भी पड़ता है। यही नियति बन गई थी सत्यम सिंह की, मगर अब वह अपने ही द्वारा बोये हुए बीज से उत्पन्न हुए फल को खाना नहीं चाहता था।

उधर फैक्टरी के इंट्री गेट पर लगे ताले को पुलिस के एक हवलदार ने अपनी जेब से चाभी निकाल कर खोला। ताला खोलने के बाद भारी भरकम लोहे के गेट को दो आदमी की मदद से खोला गया। गेट के खुलते ही सब अंदर की तरफ बढ़ गए। पुलिस के साथ आए खोजी कुत्ते भी एक पुलिस वाले के हाथ में थमी जंजीर के सहारे फैक्टरी के अंदर चले गए। इन सबके पीछे सत्यम, सोनिया व सुंदर भी अंदर चले गए।

ये एक बहुत बड़ा फार्म हाउस हुआ करता था पहले। सत्यम सिंह ने जब इस बिजनेस की

शुरुआत की थी तो किसी दूसरे सेठ की वर्षों से बंद कपड़ा फैक्टरी को सस्ते दामों में खरीदा था। उस समय ये कपड़ा फैक्टरी शहर के बीच ही बनी हुई थी। कुछ सालों बाद जब सत्यम सिंह की इस बिजनेस से अच्छे खासे मुनाफे के रूप में तरक्की हुई तो उसने इस फैक्टरी को नये सिरे से तथा नई मशीनों के साथ शुरू करने का विचार किया। सत्यम सिंह क्योंकि बहुत ही लालची व महत्वाकांक्षी आदमी था, और बढ़ती आय के साथ उसकी बुरी आदतों में भी इज़ाफा हुआ इस लिए पैसे के लिए वह उन रास्तों को भी अपना लिया जिसे गैर कानूनी कहा जाता है। इस रास्ते में उसके कई अपने गैर कानूनी लोग भी थे। किन्तु गैर कानूनी काम में रिस्क बहुत था तथा शहर के बीच उस छोटी सी फैक्टरी में इस काम को अंजाम देने में आसानी नहीं होती थी। कभी भी लोगों के बीच खुद की असलियत सामने आ जाने का खतरा बना रहता था। इस लिए उसने बहुत सोच समझ कर शहर से बाहर एक बहुत बड़ी ज़मीन ख़रीदी तथा वहॉ पर इसने नये तरीके से फैक्टरी का निर्माण किया। फैक्टरी काफी बड़ी थी तथा उसके नीचे एक बड़ा बेसमेंट भी बनवाया गया था जो सिर्फ गैर कानूनी चीज़ों के उपयोग में ही आता था। यहॉ पर उसे किसी चीज़ का खतरा नहीं था। फैक्टरी में मजदूरों को हफ्ते में एक दिन अवकाश देने के पीछे भी उसका एक मकसद था। वो मकसद ये था कि अवकाश वाले दिन ही वह स्वतंत्र रूप से अपने गैर कानूनी धंधे को चलाता था। जिसके बारे में कभी किसी को भनक तक न लगी थी। फैक्टरी को बहुत सोच समझ कर ही बनवाया गया था। फैक्टरी के अंदर सिर्फ मशीनें थी जहॉ पर मजदूर काम करते थे, जबकि फैक्टरी के आला अफसर या बाकी स्टाफ फैक्टरी से दूर कुछ फॉसले पर बने एक बड़े से ऑफिस में होते थे।

सत्यम सिंह ने कदाचित ख़्वाब में भी न सोचा था कि कभी ऐसा भी समय उसके जीवन में आ जाएगा जब उसकी इस विशाल फैक्टरी में आग लग जाएगी और इस सबकी छानबीन खुद उसकी ही बेटी पुलिस इंस्पेक्टर बन कर करेगी। कानून का डर उसे कभी नहीं था क्योंकि उसने कानून के नुमाइंदों को अपने वश में कर लिया था। हर महीने वह अच्छी खासी रकम पुलिस के आला अफसरों तक पहुॅचवा देता था। उसके मंत्री तक से अच्छे संबंध थे इस लिए उसे इस धंधे में किसी का कोई डर नहीं था। मगर होनी को कौन टाल सकता था भला? होनी तो अटल होती है, बिना बताए तथा बिना किसी सूचना के वो अपना काम कर डालती है। यही सत्यम सिंह के साथ हुआ था।

फैक्टरी के अंदर का नज़ारा ही कुछ अलग था। फैक्टरी में भीषण आग लगी हुई थी जिसमें सब कुछ जल कर खाक़ में मिल चुका था। अंदर हर चीज़ कोयला बन चुकी थी। हर जगह पानी में सनी हुई राख तथा टूटे हुए बहुत से टुकड़े पड़े थे। कुछ पल के लिए तो साक्षी को भी समझ न आया कि इस राख में वह क्या तलाश करे? किन्तु कुछ तो करना ही था, केस रीओपन हुआ था। इस लिए बिना किसी नतीजे के वह बंद नहीं हो सकता था। ऊपर से आदेश था कि छानबीन अच्छे से होनी चाहिए।

पुलिस के खोजी कुत्ते तथा फॉरेंसिक डिपार्टमेंट के लोग अपने अपने काम में लग गए। खुद साक्षी भी वहॉ की हर चीज़ को बारीकी से देख देख कर जॉच करने लगी। जबकि इधर सत्यम, सोनिया व सुंदर चुपचाप उन सबकी कार्यप्रणाली को देखते रहे।

बड़ी बड़ी मशीनों पर जले हुए कपड़ों की राख तथा टुकड़े लिपटे हुए थे। कहीं कहीं पर पिघले हुए शीशे एवं प्लास्टिक नज़र आ रहे थे। सत्यम सिंह ये सब होने के बाद पहली बार ये सब ध्यान से देख रहा था तथा साथ ही अंदर ही अंदर दुखी भी हो रहा था। कुछ भी हो आखिर उसकी मेहनत का पैसा था वह, फिर चाहे गैर कानूनी वाला हो या फिर सच्चाई वाला।

" मैडम , यहॉ पर कुछ है। " सहसा एक हवलदार साक्षी को दूर से ही चिल्लाते हुए कहा।

साक्षी के साथ साथ सबके कान खड़े हो गए। सत्यम सिंह की बढ़ी हुई धड़कन मानों उसे रुकती हुई प्रतीत हुई। चेहरे पर तुरंत ही ढेर सारा पसीना उभर आया, तथा चेहरा भय व घबराहट की वजह से पीला पड़ता चला गया। उसने जल्दी से खुद को संभाला। अपने दाहिने हाथ में लिए रुमाल से उसने तुरंत ही अपने चेहरे का पसीना पोंछा और सरसरी तौर पर इधर उधर देखा। सोनिया उसे देख कर तुरंत ही उसके करीब गई तथा हौले से पूछा_"क्या बात है सत्यम, तुम इतना परेशान और घबराए हुए क्यों लग रहे हो?"

" म ... मैं .. क .. कहॉ परेशान हूॅ ?" सत्यम सिंह हकलाते हुए बोला _" मैं ठीक हूॅ ? ऐसा क्यों लगता है तुम्हें कि मैं परेशान व घबराया हुआ हूॅ ?"

सोनिया ने उसे बड़े ग़ौर से देखा, फिर कहा_"मुझे ऐसा क्यों लगता है सत्यम कि जैसे तुम मुझसे कुछ छुपा रहे हो? या फिर ऐसा कि तुम किसी बात से इस लिए घबरा रहे हो कि किसी को वो बात पता न चल जाए।"

सत्यम सिंह हड़बड़ा गया, आॅखें फाड़े सोनिया को देखने लगा। मन में विचार उभरा 'बेटी क्या कम थी जो अब उसकी मॉ भी मेरी जान लेने पर उतारू हो गई है'।

" ऐसे क्यों देख रहे हो मुझे ?" सोनिया ने कहा _" क्या मैंने कुछ ग़लत कह दिया है ?"

" देखो सोनिया। " सत्यम सिंह ने खुद को संभाल कर कहा _" मैं इस वक्त किसी से कुछ नहीं कहना चाहता , इस लिए बेहतर होगा कि तुम भी मुझसे कोई सवाल जवाब न करो। "

" मैं तुम्हारी पत्नी हूॅ सत्यम। " सोनिया ने एकाएक अधीरता से कहा _" तुम्हें इस तरह परेशानी की हालत में नहीं देख सकती। तुम जानते हो कि हर काम में मैं तुम्हारे साथ हुॅ , फिर चाहे वो काम कैसा भी क्यों न हो। तुम्हारी खुशी के लिए हर वो काम कर जाती हूॅ जिसे करने का तुम मुझसे कहते हो। मैं ये भी जानती हूॅ कि तुम मुझसे कोई भी बात नहीं छुपाते फिर ऐसी क्या बात हो गई है जिसे तुम मुझसे छुपा कर खुद अंदर ही अंदर घुटे जा रहे हो ?"

" ऐसी कोई बात नहीं है। " सत्यम सिंह ये सोच कर घबराया जा रहा था कि कहीं कोई ये सब बातें सुन न ले , इस लिए वह बोला _" अब चुप हो जाओ प्लीज। "

" अगर ऐसी कोई बात नहीं है तो यही बात तुम मेरे सिर पर हाथ रख कर कहो। " सोनिय ा ने कहने साथ ही सत्यम सिंह का एक हाथ पकड़ कर अपने सिर पर रख लिया।

" ये क्या पागलपन है यार ?" सत्यम सिंह ने तुरंत ही सोनिय ा के सिर से अपना हाथ एक झटके में खींच कर थोड़ी ऊँची आवाज़ में कहा था। उसकी आवाज़ सुन कर सुंदर का ध्यान उनकी तरफ गया तो वह शीघ्र ही उनके पास आकर ब्याकुलता से बोल ा _" क्या हुआ भैय ा ? कुछ परेशानी है क्य ा ?"

" न नहीं छोटे। " सत्यम सिंह मन ही मन झुंझला उठा था किन्तु प्रत्यक्ष मे उसने यही कह ा _" ऐसी कोई बात नहीं है। "

सुंदर ने उसके चेहरे की तरफ कुछ पल देखा फिर वह वापस अपनी जगह पर आकर खड़ा हो गया। जबकि सुंदर के जाते ही सत्यम सिंह ने सोनिया की तरफ देख कर कहा_"भगवान के लिए..अब कुछ मत बोलना।"

" ये तुम बिलकुल भी अच्छा नहीं कर रहे हो सत्यम। " सोनिय ा ने कह ा _" अगर कोई बात है तो तुम्हें मुझसे बेझिझक बता देना चाहिए , हो सकता है कि मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकूँ। "

" अगर कोई बात है भी तो। " सत्यम सिंह ने गहरी सास ल ी _" तो इस वक्त नहीं बता सकत ा , बट बिलीव मी तुम्हें सब कुछ ज़रूर बताऊँगा। अब जाओ यहॉ से और मुझे अकेला मेरे हाल पर छोंड़ दो। "

सोनिया ने कुछ देर सत्यम की आंखों में देखा और फिर पलट कर सुंदर के पास आ गई। उसके मन में हज़ारों विचार किसी बिच्छू की तरह डंक मार मार कर उछल कूद कर रहे थे।

उधर हवलदार के चिल्लाने पर साक्षी तेज़ी से उसके करीब पहुँची। साक्षी के आते ही हवलदार ने सामने की तरफ इशारा किया। साक्षी ने हवलदार की बताई हुई जगह को देखा तो चौंक गई। दरअसल पिघले हुए प्लास्टिक के नीचे कोई चीज़ थी लाल रंग की। साक्षी फर्श पर बैठ कर उसे ध्यान से देखने लगी। अपने हाथो में ग्लव्स पहन कर उसने उस लाल रंग की चीज़ को उठा लिया। अभी वह उसे ध्यान से देख ही रही थी कि फॉरेंसिक टीम का एक व्यक्ति उसके नज़दीक आकर बोला_"मैडम, यहॉ पर एक बेसमेंट भी है।"

" क्य ा ??" साक्ष ी चौंकी।

" यस मैडम। " उस व्यक्त ि ने कह ा _" खोजी कुत्ते के द्वारा पता चला है। "

" चलो दिखाओ। " साक्ष ी तुरंत ही उठकर चल दी। कुछ देर में ही वो व्यक्त ि साक्ष ी को लेकर उस जगह पहुँचा। साक्ष ी ने देखा सचमुच वो तहखाना ही था। किन्तु वह ये देख कर

चौंकी कि वह अस्त व्यस्त हुआ लग रहा था जैसे किसी चीज़ से उसे उड़ाया गया हो। उसे तुरंत ही अपने हाथ में ली हुई चीज़ का खयाल आया। उसने अपने हाथ में ली हुई चीज़ को उस व्यक्ति को दिखाकर पूछा _" इस चीज़ को देखो और बताओ ये क्या है ?"

" सत्यम यययय। " अचानक ही एक ज़ोरदार चीख फिज़ा को चीरती हुई सबके कानों से टकराई।

चीख बाहर से आई थी, साक्षी के साथ साथ सबने सुना किन्तु साक्षी बाहर की तरफ ये कह कर दौड़ पड़ी कि_"मॉम।"

यकीनन ये चीख सोनिया की ही थी। साक्षी ने बाहर आकर देखा उसकी मॉ और सुंदर चाचा उसके डैड के पास अजीब हालत में बैठे थे। सत्यम सिंह जमीन में पड़ा था। सुंदर ने तुरंत ही उसे अपनी गोंद मे लिटा लिया था।

" मॉम। " साक्षी करीब पहुॅचते ही बोली _" ये क्या हुआ ? डैड इस तरह जमीन में कैसे ?"

" पता नहीं बेटा अचानक ही खड़े खड़े धड़ाम से गिर गए। " सोनिया ने रोते हुए कहा _" शायद फैक्टरी की ये हालत देख इन्हें गहरा सदमा लगा है जिसके चलते ये चक्कर खाकर गिर गए हैं। "

सत्यम सिंह पानी से सनी राख पर गिरा था। जमीन में हर तरफ छोटे बड़े पत्थर भी पड़े थे जो सत्यम सिंह के सिर पर लगे थे और उसके सिर से खून बहने लगा था।

" इन्हें हॉस्पिटल लेकर जाना पड़ेगा साक्षी बेटा। " सुंदर ने कहने के साथ ही सत्यम सिंह को दोनो हाथो से पकड़ कर उठा लिया और तेज़ कदमों के साथ लोहें वाले गेट से बाहर निकल गया।

" मैं भी उनके साथ हॉस्पिटल जा रही हूं बेटी। " सोनिया ने कहा _" तुझे अपनी ड्यूटी करना है तो कर या तू भी अपने डैड के साथ चल। "

" सॉरी मॉम। " साक्षी की आॅख में आॅसू आ गए _" इस वक्त मैं आनड्यूटी पर हूॅ और केस के सिलसिले में यहॉ अपनी टीम्स के साथ हूॅ इस लिए मैं डैड के साथ नहीं जा सकती। लेकिन डैड से कहना कि मुझे उनकी इस हालत से बहुत तकलीफ हो रही है। "

" अच्छी बात है। " सोनिया ने कहा और बाहर की तरफ दौड पड़ी। जबकि अपने आॅसू पोंछते हुए साक्षी पलटी और फैक्टरी के अंदर की तरफ बढ़ गई।

" मैडम ये तो किसी टाइम बम्ब के टुकड़े जैसा लगता है। " साक्षी के आते ही फारेंसिक टीम के उस आदमी ने कहा।

" क्या ???" साक्षी उछल पड़ी _" ये क्या कह रहे हैं आप ??"

" जी पक्के तौर पर तो नहीं कह सकता मगर ज्यादातर संभावना यही है। " उस आदमी ने कहा _" और अगर इस संभावना को सच मान लिया जाय तो ऐसा भी लगता है कि किसी टाइम बम्ब द्वारा ही इस बेसमेंट को उड़ाया गया है। बेसमेंट की हालत इस बात का सबूत है मैडम। "

साक्षी को उस आदमी की बात में सच्चाई के ढेर सारे अंश महसूस हुए। क्योकि बेसमेंट की हालत सचमुच ऐसी थी जैसे उसे बम्ब के द्वारा उड़ाया गया हो।

" अगर ऐसा है तो। " साक्षी ने कहा _" ये साबित हो गया कि फैक्टरी में लगी आग महज सार्ट शर्टिक से नहीं बल्कि किसी के द्वारा बम्ब से लगाई गई। "

" बिलकुल। " उस आदमी ने कहा।

" मतलब साफ है कि किसी ने टाइम बम्ब को तहखाने में फिट किया। " साक्षी कह रही थी _" और वो बम्ब अपने निर्धारित समय पर फट गया। बम्ब के फटते ही बेसमेंट उड़ गया और इसके साथ ही उसके अंदर से तेज़ी से आग का झोंका बाहर आकर यहाँ चारो तरफ फैले कपड़ों और मशीनों से टकराया। कपड़ों पर लगी आग ने तेज़ी से अपना काम किया और देखते देखते सारी फैक्टरी में आग ने अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया। "

" निःसंदेह। " आदमी ने कहा _" और क्योंकि फैक्टरी बाहर से अवकाश के चलते बंद थी इस लिए जब तक किसी को पता चलता तब तक आग ने उग्र रूप धारण कर सबकुछ बरबाद कर दिया। "

" बेसमेंट के अंदर की क्या पोजीशन है ?" साक्षी ने कहा _" अगर अंदर जाने लायक है तो चलकर जॉच शुरू करते हैं। देखते हैं और क्या पता चलता है ?"

कहने के साथ ही साक्षी और वो आदमी बेसमेंट के अंदर की तरफ देखने लगे। बेसमेंट के अंदर पुलिस और फॉरेंसिक के कुछ लोग थे। साक्षी भी उनके बीच पहुँच गई।

उधर सत्यम सिंह को आनन फानन में सुंदर ने कार में पिछली सीट पर सोनिया की गोंद में लिटाया और खुद ड्राइविंग सीट पर बैठकर कार स्टार्ट की। लगभग बीस मिनट बाद वो सब हॉस्पिटल में थे।

सत्यम सिंह को तुरंत ही एक रूम में ले जाया गया और डाक्टर ने उसका चेकअप शुरू कर दिया।

शाम होने से पहले पहले सत्यम सिंह को हॉस्पिटल से डिस्चार्ज कर दिया गया था। डॉक्टर ने बताया था कि सत्यम सिंह को किसी गहन चिन्ता तथा किसी सदमे की वजह से चक्कर आया था। बाकी उन्हें कोई बीमारी नहीं है। हॉस्पिटल से डिस्चार्ज होने के बाद सत्यम सिंह अपनी पत्नी सोनिया तथा छोटे भाई सुंदर के साथ सीधा हवेली ही आ गया था। फैक्टरी में हो रही छानबीन का क्या नतीजा निकला ये उसे पता नहीं था। हलाँकि उसका पीए और बाकी स्टाफ फैक्टरी में ही थे। हॉस्पिटल से हवेली लौटते समय सारे रास्ते सत्यम सिंह ख़ामोश रहा। सुंदर सिंह कार को ड्राइव कर रहा था जबकि सत्यम सिंह व सोनिया कार की पिछली सीट पर बैठे थे।

सोनिया ने इस समय सुंदर की मौजूदगी में सत्यम सिंह से कुछ भी पूँछना उचित नहीं समझा था इस लिए वह भी चुप ही रही। ये अलग बात है कि उसके दिलो दिमाग़ में विचारों का बवंडर चल रहा था।

हवेली पहुँच कर वो सब कुछ देर ड्राइंग रूम में बैठे रहे। सुंदर सिंह थोड़ी देर बाद अपने घर की तरफ चला गया। सत्यम सिंह व सोनिया का बेटा जयदीप इस वक्त हवेली में नहीं था।

सोफे पर बैठा सत्यम सिंह खामोश था किन्तु अब उसके चेहरे पर गहन सोच और चिन्ता के भाव फिर से नुमायाँ होने लगे थे। उसका ध्यान फैक्टरी में हो रही छानबीन पर ही लगा हुआ था।

" इस तरह चिन्ता करने से कुछ नहीं होगा सत्यम। " सोनियाा अपने सोफे से उठकर सत्यम वाले सोफे पर उसके करीब ही बैठ कर बोलीी _" अब जो होना है वो तो होकर ही रहेगा। हलाँकि मैं ये नहीं जानती कि ऐसी कौन सी बात है जिसकी वजह से तुमने अपनी ये हालत बना ली है किन्तु इतना ज़रूर समझ गई हूँ कि ये चिन्ता या ये सदमा सिर्फ फैक्टरी में आग लगने से हुए नुकसान बस का नहीं हैै , बल्कि इसकी वजह कुछ और ही है। "

सत्यम सिंह कुछ न बोला, बल्कि ऐसा लगा जैसे उसने सोनिया की बात सुनी ही न हो। वह पूर्वत उसी तरह सोफे पर बैठा रहा। जबकि उसके चेहरे की तरफ ग़ौर से देखते हुए तथा उसके दोनो कंधों को पकड़ कर झिंझोड़ते हुए सोनिया ने ज़रा ऊँचे स्वर में कहा_"होश में आओ सत्यम, क्या हो गया है तुम्हें? प्लीज मुझे बताओ कि ऐसी कौन सी बात है जिसकी चिन्ता से तुमने खुद की ऐसी हालत बना ली है?"

सोनिया के इस प्रकार झिंझोड़ने पर सत्यम सिंह चौंकते हुए गहन सोच और चिन्ता से बाहर आया। उसने अजीब भाव से अपनी पत्नी की तरफ देखा फिर एकाएक ही उसके चेहरे के भाव बदले।

" इस छानबीन को होने से रोंक लो सोनियाा। " सत्यम सिंह भर्राए से स्वर में कहता चला गयाा _" अपनी बेटी से कहो कि वह फैक्टरी की छानबीन न करेे , वरनाा सब कुछ बरबाद हो जाएगा। ये सब रोंक लो सोनियाा , मैं तुम्हारे पैर पड़ता हूँ। प्लीज रोंक लो अपनी बेटी

को। "

सोनिया हैरान रह गई अपने पति का ये रूप देख कर। किसी के सामने न झुकने वाला तथा किसी से न डरने वाला और न ही किसी से हार मानने वाला इंसान इस वक्त दुनिया का सबसे कमज़ोर व दीन हीन नज़र आ रहा था। सोनिया को कुछ पल तो समझ ही न आया कि वह क्या करे किन्तु फिर तुरंत ही जैसे उसे वस्तुस्थित का आभास हुआ।

" कैसे इस सबको रोंकूँ सत्यम ?" सोनियां ने अधीरता से कहां _" तुमने तो मुझे कुछ बताया भी नहीं कि बात क्या हैं ? आज तक अपनी हर बात मुझसे शेयर करते रहे मगर ऐसी क्या बात थी जिसे तुमने मुझसे कभी शेयर करने के बारे में सोचा तक नहीं ? क्या तुम ये समझते थे कि तुम्हारी किसी बात से मुझे कोई ऐतराज होता ? या फिर तुम ये समझते थे कि मैं तुम्हें किसी काम को करने से रोंक देती ?? तुम जानते हो सत्यम कि मैं तुमसे कितना प्यार करती हूँ तथा ये भी जानते हो कि तुम्हारे कहने पर दुनियाँ का हर नामुमकिन व असंभव काम करने को तुरंत तैयार हो जाती हूँ , फिर वो काम चाहे जैसा भी हो। मगर इसके बावजूद तुमने मुझसे कोई बात छुपाई सत्यम । क्यों किया तुमने ऐसा ?"

" मुझे माफ कर दो सोनिया। " सत्यम सिंह ने सोनिया के दोनो हाथों को थाम कर कहा _" मुझसे बहुत बड़ी ग़लती हो गई। तुम चाहो तो इस सबके लिए मुझे जो चाहे सज़ा दे दो लेकिन इस सबको रोंक लो सोनिया ... वरना बहुत बड़ा अनर्थ हो जाएगा। मैं अपनी ही बेटी की नज़रों में गिर जाऊँगा , उसका और उसके कानून का मुजरिम बन जाऊँगा। "

" ऐसी क्या बात है सत्यम ?" सोनिया ने झुँझलाकर कहा _" आखिर तुम कुछ बताते क्यों नहीं ? जब तक मुझे बताओगे नहीं तो कैसे मुझे समझ आएगा कि आगे क्या करना होगा मुझे ?"

" क्या बताऊँ सोनिया। " सत्यम सिंह ने हताश भाव से कहा _" और किन शब्दों से बताऊँ ? मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है। "

" भला ये क्या बात हुई सत्यम ?" सोनिया ने उलझ कर कहा _" जो जैसा है उसे वैसा ही बताओ न। "

सत्यम सिंह ने एक गहरी सास ली। अंदाज़ ऐसा था उसका जैसे किसी जंग के लिए खुद को तैयार कर रहा हो।

" मुझसे वादा करो सोनिया। " सहसा सत्यम सिंह ने सोनिया का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा _" कि मेरे द्वारा सब कुछ जानने के बाद तुम मुझसे न तो नाराज होओगी और ना ही मुझे ग़लत समझोगी। "

" ठीक है मैं वादा करती हूँ। " सोनिया ने कहा _" अब बताओ क्या बात हैं ??"

" म मैं अपने इस बिजनेस के साथ साथ ही। " सत्यम सिंह ने धड़कते दिल के साथ कहा _" एक और बिजनेस करता हूँ सोनिया लेकिन वो बिजनेस गैर कानूनी है। "

" क क्या ????" सोनिया बुरी तरह उछल पड़ी _"य .. ये तुम क्या कह रहे हो सत्यम ? तुम गैर कानूनी बिजनेस भी करते हो ??"

" मुझे माफ कर दो सोनिया। " सत्यम सिंह ने भारी स्वर में कहा _" पर यही सच है। मैं शुरू से ही इस धंधे में था। "

सोनिया आश्चर्यचकित अवस्था में मुह और आँखें फाड़े सत्यम सिंह को देखे जा रही थी। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि सत्यम सिंह गैर कानूनी काम भी करता है। कुछ देर तक वह अवाक् सी देखती रही उसे फिर एक गहरी सास लेते हुए गंभीरता से बोली_"क्यों सत्यम क्यों...आख़िर क्या ज़रूरत थी तुम्हें ऐसा काम करने की? तुम्हें तो पता था कि ऐसे काम का एक दिन बुरा ही नतीजा निकलता है। फिर क्यों किया ऐसा?? आखिर किस चीज़ की कमी रह गई थी सत्यम जिसके लिए तुम्हें गैर कानूनी काम भी करना पड़ गया??"

" ये सब मेरी ही ग़लती से हुआ है सोनिया। " सत्यम सिंह ने कहा _" मेरी ही महत्वकांक्षाओ के चलते हुआ है। मैं हमेशा इसी ख्वाहिश में रहा कि मेरे और मेरे बच्चों के पास धन दौलत व ऐश्वर्य की कोई कमी न हो। मेरा एक बहुत बड़ा नाम हो और सारी दुनियाँ मुझे पहचाने। इसके लिए मैं कुछ भी करने को तैयार था , इस बारे में कभी नहीं सोचा कि मेरी इन चाहतों से कभी मुझे ऐसा भी दिन देखना पड़ सकता है। "

" अब क्या होगा सत्यम ?" सोनिया ने कहा _" तुम्हारी ख्वाहिशों ने आज क्या सिला दिया है तुम्हें और तुम्हारे साथ साथ हम सबको भी। क्या होगा जब सबको ये मालूम होगा कि तुम गैर कानूनी धंधा भी करते हो ?"

" मुझे और किसी की परवाह नहीं है सोनिया। " सत्यम सिंह बोला _" मुझे तो बस इस बात की चिन्ता है कि इस सबके बाद मैं अपनी ही बेटी की नज़रों में गिर जाऊँगा। कानून के प्रति उसकी ईमानदारी और आस्था देख कर यही लगता है कि वह मुझे इस काम की वजह से जेल की सलाखों के पीछे भी डाल सकती है। "

" ये कैसे कह सकते हो तुम ?" सोनिया ने चौंकते हुए कहा _" हमारी बेटी भला ऐसा कैसे कर सकती है ?"

" वो यकीनन ऐसा ही कर सकती है सोनिया। " सत्यम सिंह ने कहा _" क्यों कि फैक्टरी में हो रही छानबीन में उसे वो सब मिल जाएगा जो ये साबित करेगा कि मैं गैर कानूनी धंधा करता हूँ। "

" तुम्हारे कहने का मतलब है कि फैक्टरी में ही तुमने अपने गैर कानूनी धंधों के सबूत छोंड़ रखे

हैं ?" सोनिया की धड़कनें रुकती सी प्रतीत हुई उसे _" और वो सब सबूत अब साक्षी के हाथ लग जाएंगे ?"

" बिलकुल। " सत्यम सिंह के चेहरे पर चिंता के भाव थे _" यही सच है सोनिया । फैक्टरी में ही मैंने एक गुप्त तहखाना बनवाया हुआ था , और उसी तहखाने में मैं गुप्तरूप से अपना ये गैर कानूनी धंधा करता था। इस धंधे में कानून के द्वारा पकड़े जाने का मुझे कोई डर नहीं था क्योंकि मेरे संबंध कानून तथा मंत्रियों से थे। ये सब मेरे इस धंधे से होने वाले मुनाफे से हिस्सा पाते थे। अगर ये कहूँ तो ग़लत न होगा कि इन्हीं लोगों की कृपा से मेरा ये धंधा चल रहा था। "

" अगर ऐसी बात है तो तुम्हें इतना परेशान और चिन्ता करने की क्या ज़रूरत है ?" सोनिया ने कहा _" ये सब तुम रुकवा भी तो सकते हो। कानून और मंत्रियों में तो सब तुम्हारे ही आदमी हैं , तो उनसे कह कर इस छानबीन को रुकवाया भी तो जा सकता है ?"

" अब ऐसा नहीं हो सकता सोनिया। " सत्यम सिंह बोला _" क्योंकि इसके पहले जो छानबीन हुई थी वो मेरे अनुरूप हुई थी। उसमें सब मेरे ही आदमीं थे लेकिन अब जो छानबीन हो रही है उसमें मैं कुछ नहीं कर सकता। "

" क्यों ?" सोनिया चौंकी _" क्यों नहीं कर सकते ? अब क्या हो गया है ऐसा ?"

" अब वो हुआ है सोनिया। " सत्यम सिंह ने गहरी सास छोंड़ी _" जिसके बारे में मैं कभी सोच भी नहीं सकता था। "

" क्या मतलब ??" सोनिया हैरान।

" मतलब कि रातों रात सारे पुलिस डिपार्टमेंट को बदल दिया गया। " सत्यम सिंह कह रहा था _" पुलिस में कमिश्नर तक जो भी मेरे आदमी थे उन सबका तबादला कर दिया गया है। अब तुम समझ सकती हो कि इन हालात में मैं क्या कर सकता हूँ। मंत्री से मदद माँगी लेकिन उसने भी अपने हाथ खड़े कर लिए। मंत्री ने कहा कि वो कुछ नहीं कर सकता क्योंकि ये सब ऊपर हाई कमान के आदेश पर हो रहा है। "

" हे भगवान !" सोनिया चकित भाव से बोली _" ये तो बहुत ही सीरियस मामला हो गया है। "

" वही तो। " सत्यम सिंह ने कहा _" मुझे समझ में नहीं आ रहा कि ऐसा क्यों हो रहा है ? आखिर क्या वजह है जो इस सबके लिए हाई कमान से आदेश दिया गया ? आखिर किस वजह से रातों रात इस शहर के सारे पुलिस विभाग का तबादला कर दिया गया ?"

" यकीनन सत्यम। " सोनिया ने कुछ सोचते हुए कहा _" ये तो बड़ा ही पेंचीदा मामला हो गया है। लेकिन साक्षी ने तो कहा था कि इस केस को उसने रीओपन करवाया है , उस सूरत में मामले को इतना सीरियस नहीं होना चाहिए था। कहीं ऐसा तो नहीं कि हमारी बेटी ने ही हाई कमान को किसी ज़रिये इस सबके लिए सूचित किया हो ?"

" हो भी सकता है और नहीं भी ?" सत्यम सिंह ने सोचने वाले अंदाज़ से कहा।

" क्या मतलब ?" सोनिया के माथे पर सिलवटें उभरी।

" साधारण रूप से अगर हम ये सोच कर चलें। " सत्यम सिंह बोला _" कि साक्षी ने सिर्फ अपने पिता की फैक्टरी में आग लगने से हुए भारी नुकसान के चलते ये सोच कर इस केस को रीओपन करवाया है कि कदाचित ये सब हमारे किसी दुश्मन के द्वारा ही किया गया हो सकता है तो इस मामले की छानबीन साधारण तरीके से ही होती। लेकिन अगर हम ये सोचें कि हो सकता है साक्षी को किसी वजह से ये पता चला हो कि उसका बाप इस बिजनेस की आड़ में गैर कानूनी धंधा भी करता है तो यकीनन इस केस की छानबीन का ये मामला संगीन है। "

" बात तो तुम्हारी बिलकुल दुरुस्त है सत्यम। " सोनिया ने कहा _" लेकिन सवाल ये उठता है कि साक्षी को ये कैसे पता चल सकता है कि उसका बाप ये सब भी करता है ??"

" संभव है कि पुलिस में आते ही थाने में उसने बारीकी से सभी फाइलों का अध्ययन किया हो ?" सत्यम सिंह ने कहा _" उन्हीं फाइलों में कहीं उसे कोई ऐसा सबूत मिला हो जिससे उसे इस सबका पता चल गया हो। कानून में आस्था रखने वाली हमारी बेटी ने इस सबके पता चलते ही ये सोच लिया हो कि उसे अपने बाप को गैर कानूनी धंधा करने के जुर्म में गिरफ्तार करके जेल की सलाखों के पीछे डाल देना चाहिए। "

" ये सब तो ठीक है सत्यम। " सोनिया ने कहा _" लेकिन क्या ये संभव है कि किसी थाने में तुम्हारे खिलाफ कोई ऐसा सबूत फाइल के रूप में कहीं दबा हो सकता है ? जैसा कि तुमने कहा था कि इसके पहले इस शहर में पुलिस महकमें में कमिश्नर तक की रैंक का कानूनी नुमाइंदा तुम्हारा ही आदमी था , तो क्या ये संभव है कि पुलिस के तुम्हारे ही आदमियों ने अपने थाने में कहीं तुम्हारे ही खिलाफ़ कोई सबूत बना कर रखा हुआ हो सकता था ?"

" इस बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। " सत्यम सिंह ने कहा _" ऐसा हो भी सकता है। संभव है किसी पुलिस के नुमाइंदे ने गुप्त रूप से मेरे खिलाफ़ किसी प्रकार का सबूत बना कर रखा रहा हो। आखिरकार पुलिस तो पुलिस ही होती है , वो न तो किसी की दोस्त हो सकती है और न ही दुश्मन। "

" इन सब बातों के बाद तो यही निष्कर्ष निकलता है। " सोनिया ने गंभीरता से कहा _" कि हमारी बेटी को किसी वजह से अपने पिता के खिलाफ कोई सबूत मिला और अब वह पक्के तौर पर बारीकी से छानबीन करके कुछ और ठोस सबूत हासिल करना चाहती है जिससे उसे तुमको जेल की सलाखों के पीछे डालने में कोई अड़चन न हो सके। "

" हो सकता है सोनिया। " सत्यम सिंह ने कुछ सोचते हुए कहा _" लेकिन एक बात समझ

में नहीं आ रही। "

" कौन सी बात सत्यम ?" सोनिया ने ना समझने वाले भाव से सत्यम सिंह की तरफ देखते हुए कहा था।

" यही कि रातों रात सारे पुलिस डिपार्टमेंट का तबादला क्यों कर दिया गया ?" सत्यम सिंह बोला _" ये छानबीन तो वैसे भी हो जाती। कोई भी पुलिस का अफसर इस छानबीन में किसी भी प्रकार का हस्ताक्षेप नहीं करता। फिर क्यों तबादला कर दिया गया सबका ?"

" अगर इस बात को हम अपनी इंस्पेक्टर बेटी के हिसाब से सोचें तो संभव है उसी ने इस सबके लिए ऊपर हाई कमान को अर्जी लिख कर गुज़ारिश की हो या फिर इसकी मॉग की हो ?" सोनिया ने संभावना व्यक्त की _" क्योकि शायद उसे इस बात की खबर हो कि इस शहर का सारा पुलिस विभाग तुम्हारे हाथो में है। "

" नहीं सोनिया। " सत्यम सिंह ने मजबूती से अपने सिर को इंकार के भाव से हिलाते हुए कहा _" रातों रात शहर के सारे पुलिस विभाग का तबादला कर देना कोई मामूली बात नहीं है , और उस सूरत में तो बिलकुल भी नहीं जबकि हमारी बेटी ने अभी अभी पुलिस फोर्स ज्वाइन किया हो। किसी भी नये पुलिस वाले के लिए इतनी दूर तक पहुॅच रखना नामुमकिन है सोनिया । पुलिस में रह कर बहुत दिन तक पहले पुलिस के दॉव पेंच सीख कर उसका अनुभव करना पड़ता है। मैं ये बात मानता हूॅ कि हमारी बेटी ने पुलिस में आते ही किसी मॅझे हुए पुलिस अफसर की भाति पुलिसिया तौर तरीका अपना लिया है और उसका अंदाज़ भी अनुभवी लगता है लेकिन फिर भी इस बात को हजम करना मुश्किल है कि उसने ही शहर के सारे पुलिस विभाग को बदल देने की अपील की हो सकती है। "

" तो फिर। " सोनिया ने कहा _" तुम्हारे ख़याल से ये सब किसने किया हो सकता है ?"

" यही तो समझ नहीं आ रहा। " सत्यम सिंह ने कहा _" दिमाग़ की न से दर्द करने लगी हैं इस सबके बारे में सोचते सोचते। "

" तुम एक शख्स को तो भूल ही गए हो सत्यम। " सोनिया ने मानो धमाका करने वाले भाव से कहा _" ये सब उसने भी तो किया हो सकता है ?"

" किसकी बात कर रही हो तुम ?" सत्यम सिंह चौंका था।

" तुम्हारे भतीजे विक्रम की बात कर रही हूॅ मैं। " सोनिया ने कहा।

" वो साला इस मामले में कहॉ से फिट होता है सोनिया ?" सत्यम सिंह ने अजीब भाव से कहा।

" बात इस मामले में उसके फिट होने की नहीं है सत्यम। " सोनिया ने गहरी सास लेकर कहा _" बल्कि बात है ऐसे मामले में हर तरह की संभावना की। हमें भले ही लगता है कि

विक्रम का इस मामले में कोई हाथ नहीं हो सकता किन्तु सवाल है कि क्यों नहीं हो सकता उसका हाथ ?"

" बेवकूफों की तरह बात मत करो सोनिया। " सत्यम सिंह ने झुंझलाते हुए कहा _" मामले की गंभीरता और उसकी पेंचीदगियों को समझो। उसकी कोई औकात नहीं हो सकती इस सबमें शहर के सारे पुलिस विभाग का तबादला करवा देने की और न ही ये औकात हो सकती है कि वह सीधा हाई कमान से इस सबके लिए बात कर सके। तुम्हारा दिमाग़ फिर गया लगता है। "

" चलो मान लिया कि उसकी कोई औकात नहीं हो सकती इन सब कामों को करवाने की। " सोनिया ने ज़ोर देकर कहा _" मगर क्या ये नहीं हो सकता कि उसने ही हमारी फैक्टरी में बम्ब लगा कर सब कुछ आग के हवाले कर दिया हो ? तुम हर बार उसकी औकात की बात करके उसे तुच्छ समझ लेते हो सत्यम जबकि उसे तुच्छ समझ लेने का भी तुम्हारे पास कोई सबूत नहीं है। जबकि कम से कम उसकी इतनी तो औकात हो ही सकती है कि वह फैक्टरी में किसी भी तरह ही सही लेकिन आग लगा सके। "

सत्यम सिंह खामोश रह गया। सोनिया की बातों में उसे सौ मन की सच्चाई नज़र आई। और इस एहसास ने ही उसे हिला कर रख दिया कि ये सब उसके भतीजे विक्रम ने किया हो सकता है।

" ये तो तुम भी अच्छी तरह समझते हो सत्यम कि वो हमें अपना सबसे बड़ा दुश्मन समझता है। " सोनिया कह रही थी _" उसे लगता है कि हमने उसे और उसके परिवार को बरबाद कर दिया है। इस लिए इस सबका प्रतिशोध लेने के लिए वह क्या नहीं कर सकता ? वह हर उस काम को कर गुज़रने पर अमादा हो सकता है जिस काम से वह हमारा बाल भी बॉका कर सके। "

सत्यम सिंह कुछ कह न सका। किसी गहरी सोच में डूबा नज़र आने लगा था वह।

" तुमने कहा था कि तुम्हारे आदमी उन्हें ढूँढ़ने के लिए मुंबई की खाक़ छान रहे है। " सोनिया मजबूत लहजे में कहती जा रही थी _" जबकि आज तक तुम्हारे आदमियों के हाथ में उनसे संबंधित कोई छोटा सा सुराग़ भी नहीं लग सका। इस बारे में क्या कहोगे तुम , बताओ ?"

" क्या कहूँ यार ?" सत्यम सिंह के चेहरे पर कठोर भाव उभरे _" जाने कहॉ गुम हो गए हैं वो सब ? उन सुअर की औलादों को ये ज़मीन खा गई है या आसमान निगल गया है। एक बार .... सिर्फ एक बार मेरे हाथ लग जाएँ फिर देखना क्या हस्र करता हूँ मैं उन सबका। "

" मुझे नहीं लगता सत्यम कि तुम उन लोगों का कुछ कर लोगे। " सोनिया ने अजीब भाव से कहा _" जबकि लग ये रहा है कि वो कमीना रंडी की औलाद विक्रम हमारा ही बेड़ा गर्क़ कर रहा है। "

अभी ये सब बातें ही कर रहे थे कि बाहर से किसी के आने की आहट सुनाई दी। कुछ ही पल में इंस्पेक्टर साक्षी ड्राइंग रूम में दाखिल हुई। उसके चेहरे पर थकान के भाव गर्दिश करते नज़र आ रहे थे। सत्यम सिंह अपनी बेटी को देखकर घबरा सा गया। उसे लगा फैक्टरी की छानबीन में साक्षी को उसके काले कारनामों का सारा काला चिट्ठा मिल गया है और अब वह उसे गिरफ्तार करने आई है।

" आई एम सॉरी डैड। " साक्षी ने आते ही सत्यम सिंह का हाथ पकड़ कर तथा खेद भरे लहजे में कहा _" मैं आपके साथ हॉस्पिटल नहीं जा सकी। आप तो मेरी मजबूरी समझ सकते हैं डैड , उस वक्त मैं अपनी ड्यूटी को छोंड़ कर नहीं जा सकती थी आपके साथ। उस सूरत में तो हर्गिज़ नहीं जब किसी केस की छानबीन चल रही हो। एनीवे , अब आपकी तबियत कैसी है ?"

सत्यम सिंह को समझ नहीं आ रहा था कि साक्षी को देख कर अब वह कैसा रिऐक्ट करे? मानो-मस्तिष्क में हज़ारों ख़याल मानो ताण्डव सा करने लगे थे। पल भर में ढेर सारा पसीना उसके सफेद पड़ चुके चेहरे पर उभर आया था। दोनो कानों में दिल पर धम्म धम्म करके पड़ने वाली किसी भारी हथौड़े की चोंट उसकी हृदय की गति को रोंक देने के लिए काफी थी जो सुनाई दे रही थी। जबकि उसके अंदर की हालत से अनभिज्ञ साक्षी ने अपने पिता को खामोश देख कर पुनः कहा_"प्लीज डैड, अब माफ भी कर दीजिए न अपनी इस बेटी को। आपको पता है आपकी उस हालत से मैं कितना परेशान और दुखी हो गई थी। लेकिन घटना स्थल पर मौजूद रहना मेरी मजबूरी थी, आप तो समझ सकते हैं न डैड? लेकिन इस सबसे फुर्सत होकर मैं शीघ्र ही पुलिस स्टेशन से भागी भागी आपसे मिलने आई हूँ।"

सत्यम सिंह के मन मस्तिष्क में एकाएक मानो झनाका सा हुआ। दिमाग़ की सारी बत्तियॉ जल उठीं। दिमाग़ ने सही तरीके से काम करना शुरू कर दिया। मन में बिजली की सी तेज़ी से ये ख़याल उभरा कि 'उसकी बेटी इस तरह बिहैव क्यों कर रही है जैसे कहीं कुछ हुआ ही न हो? इसके मासूम बर्ताव से तो यही लग रहा है जैसे छानबीन करते हुए तहखाने में इसे कुछ नहीं मिला वरना उसके हाथ अगर कोई गैर कानूनी चीज़ लग गई होती तो ये यहॉ अपने पीछे पुलिस फोर्स लेकर तथा अपने हाथ में हॅथकड़ी लेकर उसे गिरफ्तार करने आती। लेकिन ऐसा तो दूर दूर तक होता हुआ दिखाई नहीं देता। इसका क्या मतलब हो सकता है?'

सत्यम सिंह के दिमाग़ में एकाएक जैसे हज़ार तरह के सवाल खड़े हो गए थे लेकिन जवाब किसी का नहीं था उसके पास। मन में ये ख़याल बार बार किसी हथौड़े की भॉति चोंट मार रहे थे कि आख़िर क्या हुआ फैक्टरी की छानबीन में? उसकी बेटी को तहकीकात में उसके खिलाफ क्या कोई गैर कानूनी चीज़ मिली?

" क्या बात है डैड ?" अपने पिता को गहरे समुद्र में डूबे देख साक्षी ने इस बार अपने दोनों हाथो की मदद से झिंझोड़ते हुए कहा था _" आप कुछ बोलते क्यों नहीं है ? कहॉ खोए हुए हैं आप ?"

" आॅ .. हाॅ ... तु .. तुमने कुछ कहा क्या बेटी ?" सत्यम सिंह बुरी तरह चौंकते हुए कहा था। एकाएक ही उसके मन में ये ख़याल उभरा कि ' ये क्या बेवकूफी कर रहा है सत्यम सिंह , अपने आपको संभाल वरना तेरी हालत और तेरे चेहरे की ये हालत देख कर तेरी बेटी को कहीं सचमुच कुछ पता न चल जाए। ' इस ख़याल के द्वारा खुद को समझाए जाने पर सत्यम सिंह ने तुरंत ही अपने आपको संभाला । और फिर मुस्कुरा कर उसने अपनी बेटी की तरफ देखा।

" मैं ये कह रही हूॅ डैड कि आप कुछ बोल क्यों नहीं रहे थे ?" साक्षी कह रही थी _" पता नहीं कहाॅ खोए हुए थे आप ?"

" कुछ नहीं बेटा। " सत्यम सिंह ने एक नज़र अपनी पत्नी की तरफ डालने के बाद कहा _" तुम सुनाओ , कैसा रहा पुलिस के रूप में आज का तुम्हारा पहला दिन ?"

सत्यम सिंह ये पूॅछने से हिचकिचाने के साथ साथ डर भी रहा कि 'आज तहकीकात में क्या हुआ?' इस लिए ये न पूछ कर कुछ और ही पूॅछ बेठा था।

" बहुत अच्छा था डैड। " साक्षी ने मुस्कुरा कर कहा _" बस थोड़ा थक गई हूॅ। "

" अभी आदत नहीं है न। " सहसा इस बीच सोनिया कह उठी _" जब इस सबकी आदत हो जाएगी तो सब ठीक हो जाएगा। "

" आप ठीक कहती हैं मॉम। " साक्षी ने कहा _" धीरे धीरे सब ठीक हो जाएगा। लेकिन अभी तो आप मुझे मस्त गरमा गरम कॉफी पिलाइए प्लीज। "

" अभी बना कर लाती हूॅ बेटी। " सोनिया ने हॅस कर कहा और सोफे से उठ कर अंदर किचेन की तरफ चली गई।

इधर सत्यम सिंह सोच रहा था कि आज की छानबीन के संबंध में उसकी बेटी ने अभी तक कोई बात क्यों नहीं की?? वह खुद इस बारे में पूॅछने से हिचकिचा भी रहा था और डर भी रहा था। लेकिन ये भी सच था कि उसके लिए इस सबके बारे में जानना निहायत ही ज़रूरी था। मगर सबसे बड़ा सवाल था कि वह अपनी बेटी से पूॅछें कैसे???

" डैड , आपने अभी तक मुझसे पूछा नहीं। " सहसा साक्षी ने अजीब से अंदाज़ में कहा _" कि आज फैक्टरी में हुई छानबीन में क्या नतीजा निकला ??"

सत्यम सिंह मन ही मन बुरी तरह चौंका भी और घबरा भी गया, किन्तु अपने किसी भी भाव को चेहरे पर उभरने नहीं दिया। खुद को मजबूती से संभाल कर संतुलित लहजे से कहा_"पूॅछ कर क्या करूगा बेटी? इस सबसे कुछ होने वाला तो है नहीं। क्या इस सबसे वो सब कुछ वापस मिल जाएगा जो जल कर खाक़ में मिल चुका है?"

" बात सब कुछ मिल जाने की नहीं है डैड। " साक्षी ने कहा _" बल्कि इस बात की है कि ये सब किसने और किस वजह से किया ? आपको ये जानकर हैरानी के साथ साथ शायद खुशी भी होगी कि फैक्टरी में आग किसी सार्ट शर्किट की वजह से नहीं बल्कि फैक्टरी के तहखाने में किसी के द्वारा लगाए गए टाइम बम्ब के भीषण धमाके से उत्पन्न हुई आग से लगी थी। "

" क् क्या ????" सत्यम सिंह बुरी तरह चौंकने का बेहतरीन नाटक किया था फिर बोला _" ये ये क्या कह रही हो तुम ?"

" ये सच है डैड। " साक्षी ने कहा _" मगर मैं इस बात से हैरान हूँ कि इसके पहले हुई छानबीन में ये सब क्यों नहीं बताया पुलिस ने अपनी रिपोर्ट में ? जबकि ये सब बातें कोई भी साधारण व्यक्ति जॉच करके बता सकता था। ये अपने आप में एक बहुत बड़ा सवाल है डैड। ख़ैर पुलिस इंक्वायरी में इस सबका जवाब उन पुलिस ऑफिस र्स को ही देना पड़ेगा जिन्होंने इसके पहले फैक्टरी की छानबीन की थी। मगर इस सबका जवाब आपको भी देना पड़ेगा डैड। मुझे पक्का यकीन है कि पुलिस द्वारा इस प्रकार की छानबीन करके रिपोर्ट आपके कहने पर ही बनाई गई थी। "

सत्यम सिंह अवाक् सा देखता रह गया अपनी बेटी को। फिर तुरंत ही खुद को संभालते हुए कहा_"ये सब झूँठ है बेटी। हमने ऐसी कोई रिपोर्ट बनाने के लिए नहीं कहा।"

" आप अपनी इस बात को साबित नहीं कर पाएंगे डैड। " साक्षी ने कहा _" सारे हालात इस बात की चीख चीख कर गवाही दे रहे हैं कि इसके पहले की गई छानबीन महज एक औपचारिकता बस थी। वरना कोई भी पुलिस वाले अंधे नहीं थे जो उन्हें ये न दिखता कि फैक्टरी में लगी आग किसी के द्वारा लगाए गए टाइम बम्ब की मेहरबानी थी। इसके बावजूद उन्होंने अपनी रिपोर्ट में यही दिखाया कि फैक्टरी में आग सिर्फ शार्ट शर्किट की वजह से लगी थी। यहॉ पर कोई भी सवाल खड़ा कर सकता है डैड कि सब कुछ स्पष्ट नज़र आते हुए भी पुलिस ने ऐसी रिपोर्ट क्यों बनाई ? इसमें पुलिस का क्या मकसद था ? या फिर एक ही बात हो सकती है कि पुलिस को ऐसी ही रिपोर्ट बनाने के लिए खुद आपने कहा हो। अगर यही सच है तो फिर यहॉ पर सवाल खड़ा हो जाता है कि आपने पुलिस को ऐसी रिपोर्ट बनाने के लिए क्यों कहा ??? बात यहीं पर खत्म नहीं हो जाती डैड , बल्कि ऐसी स्थिति में फिर और भी सवाल खड़े होने लगते हैं जिनका जवाब मिलना ज़रूरी हो जाता है। "

सत्यम सिंह को लगा कि अभी ज़मीन फटे और वह उसमें पाताल तक समाता चला जाए। हलॉकि साक्षी ने कोई तीर नहीं मार लिया था ये सब करके क्योंकि फैक्टरी की छानबीन अगर पहले ही पूरी ईमानदारी से की गई होती तो पहले ही पुलिस को ये सब पता चल जाता। लेकिन क्योंकि ऐसा हुआ नहीं था। बल्कि सत्यम सिंह अपने तरीके से रिपोर्ट बनवा कर चैन से बैठ गया था। वो भला कैसे इस बात की कल्पना कर लेता कि अगले ही दिन उसकी अपनी बेटी इन गड़े मुर्दों को निकाल कर उसकी हालत को खराब करना शुरू कर देगी।

" आपकी ख़ामोशी इस बात का सबूत है डैड कि आप ही ने पुलिस को ऐसी रिपोर्ट बनाने को कहा था। " साक्षी ने कहा _" क्या आप बताने का कष्ट करेंगे कि आपने ऐसा क्यों किया ?"

सत्यम सिंह क्योंकि जानता था कि इस संबंध में अब झूँठ बोलने का कोई मतलब नहीं है इस लिए सच बताना ही बेहतर समझा उसने।

" ये सच है बेटी कि मेरे ही कहने पर पुलिस ने वैसी रिपोर्ट बनाई थी। " सत्यम सिंह ने गंभीरता से कहा _" लेकिन ये सब करना मेरी मजबूरी थी बेटी क्योंकि मैं इस सबको और अधिक उछालना नहीं चाहता था। मैं नहीं चाहता था बेटी कि मेरी इज्जत का अब और कचरा हो। सब कुछ तो जल ही गया था , कुछ मिलना तो था नहीं , इस लिए कम से कम अपनी इज्जत को तो नीलाम होने से बचा लेता। इसी वजह से बेटी ... सिर्फ इसी वजह से मैंने पुलिस अधिकारियों से मिन्नतें कर करके ऐसी रिपोर्ट बनाने को कहा था। "

साक्षी देखती रही अपने पिता के चेहरे की तरफ। अंदाज़ ऐसा था जैसे परख रही हो कि उसके बाप की बातों में कितनी सच्चाई है? जबकि अपनी बेटी को इस तरह अपनी तरफ देखते हुए देख सत्यम सिंह के दिल की धड़कनें तेज़ हो गईं थी।

" वाह डैड वाह !" साक्षी ने अजीब भाव से कहा _" आपने तो ये सब करके कमाल ही कर दिया। मतलब आपने ये भी नहीं सोचा कि अगर इस सबकी पुलिस द्वारा बारीकी से तहकीकात करवाई जाए तो इससे आपको कुछ हासिल भी हो सकता है ?"

तभी सोनिया हाथ में ट्रे लिए ड्राइंग रूम में दाखिल हुई। उसने एक एक कप सबको पकड़ाया और खुद भी एक कप लेकर वहीं सोफे पर बैठ गई।

" इससे भला क्या हासिल होता बेटी ?" सत्यम सिंह ने कहा था।

" छानबीन से ये तो पता चल ही गया है डैड कि फैक्टरी में आग टाइम बम्ब के फटने से लगी थी। " साक्षी ने कप में भरी कॉफी का एक सिप लेकर कहा _" अब ये पता लगाना पुलिस का काम है कि फैक्टरी में टाइम बम्ब किसने फिट किया था ? आपके अनुसार उस दिन और रात अवकाश के चलते फैक्टरी बंद थी तथा बाहर से फैक्टरी में ताला भी लगा था। अब सोचने वाली बात है कि कोई बाहरी आदमी कैसे ये सब कर सकता है ? क्योंकि सबसे पहले तो उसे फैक्टरी के अंदर पहुँच पाना ही नामुमकिन था , कारण फैक्टरी में जो ताला लगा था वो कोई साधारण झूलने वाला ताला नहीं था जिसे आराम से तोड़ कर फैक्टरी अंदर जाया जा सके , बल्कि गेट पर जो ताला था वो लोहे वाले गेट के अंदर फिक्स था। "

" ताला खोलना कोई बड़ी बात या कोई समस्या नहीं है बेटी। " सहसा सोनिया ने हस्ताक्षेप किया _" आज के समय में एक से बढ़ कर एक खलीफा हैं जो पलक झपकते ही कोई भी ताला खोल भी सकते हैं और उसे तोड़ भी सकते हैं। "

" यू आर अब्सोल्यूटली राइट मॉम। " साक्षी ने मुस्कुरा कर कहा _" पर उस स्थिति में ये संभव नहीं है जबकि फैक्टरी के गेट पर दरबान मौजूद हों। मैंने इसकी जॉच की है और पता चला है कि गेट पर दरबान मौजूद था। अब सवाल ये है कि दरबान की मौजूदगी में कोई बाहरी आदमी अंदर कैसे जा सकता है ?"

" इसका मतलब तो यही हुआ कि गेट पर तैनात दरबान झूँठ बोल रहा है। " सोनिया ने कहा _" या फिर ऐसा भी हो सकता है कि फैक्टरी का ही कोई स्टाफ मेंबर फैक्टरी के अंदर गया हो। स्टाफ के अंदर जाने पर गेट में मौजूद दरबान को कोई ऐतराज नहीं हो सकता था। "

" अगर कोई स्टाफ का ही आदमी फैक्टरी के अंदर गया था। " साक्षी ने कहा _" तो दरबान को इस बात की जानकारी पुलिस के पूछने पर देनी चाहिए थी। मगर इस संबंध में दरबान का हर बार यही कहना है कि रात कोई भी व्यक्ति फैक्टरी के अंदर नहीं गया। "

" बड़ी हैरत की बात है ये। " सोनिया कह उठी _" जब फैक्टरी के अंदर कोई गया ही नहीं तो तहखाने में टाइम बम्ब क्या कोई भूत लगा कर चला गया था ???"

" यही तो सोचने वाली बात है मॉम। " साक्षी ने हॅस कर कहा _" खैर , पता चल ही जाएगा देर सवेर ही सही। मैं तो डैड से ये कह रही थी कि उन्होंने इस सबके बारे में जानना ज़रूरी क्यों नहीं समझा ? आखिर ये जानना तो ज़रूरी ही था कि किसने ये सब किया ?"

सत्यम सिंह के मन में सिर्फ यही सवाल चकरा रहे थे, और वो ये थे कि 'तहखाने में उसकी बेटी को और क्या मिला? क्या उसके हाथ कोई ऐसी चीज़ लगी जिससे उसकी असलियत साक्षी को पता चल सके? इस बारे में साक्षी ने अभी तक कोई बात नहीं की, इसका मतलब उसे कुछ भी नहीं मिला। मगर ऐसा कैसे हो सकता है???? तहखाने में तो गैर काननी वस्तुओं का अच्छा खासा स्टाक था। क्या वह सब भी आग में जल गया है??? कहीं ऐसा तो नहीं कि साक्षी को सब पता चल गया हो किन्तु इस वक्त वह अंजान बनी होने का नाटक कर रही हो? हे भगवान! कैसे पता चले इस सबके बारे में??? मेरे गले में तो अभी भी जैसे कोई तलवार लटक रही है।

अभी ये सब बातें ही कर रहे थे कि बाहर से किसी के आने की आहट सुनाई दी उन्हें। पलट कर देखा तो सुंदर और जयदीप के साथ मानुषी अपने हाथ में एक हैण्डबैग लिए आ रही थी।

" डैड ...। " अपने पिता को देखते ही मानुषी दौड़ कर आई और सत्यम सिंह से लिपट गई। सत्यम सिंह ने उसके सिर पर प्यार से हाथ फेर कर कहा _" कैसी है मेरी बेटी ??"

" मैं बिलकुल अच्छी हूँ डैड। " मानुषी ने कहा _" आपकी याद बहुत आती थी वहॉ। "

" ओह अच्छा जी। " सत्यम सिंह ने मुस्कुरा कर कहा और फिर मानुषी को साइड से ची

पका लिया।

सुंदर व जयदीप भी आकर वहॉ पर रखे सोफों पर बैठ गए। अपने डैड से अलग होने के बाद मानुषी अपनी मॉ और बहन से गले मिली।

" कॉंग्रेट्स दी। " मानुषी ने साक्षी के गले मिलते हुए कहा _" आख़िर आपकी ख़्वाहिश पूरी हो ही गई। आप अब एक पुलिस इंस्पेक्टर बन गई हैं। "

" थैंक्यू छोटी। " साक्षी ने मुस्कुरा कर कहा _" और बता , मुंबई में तेरी पढ़ाई कैसी चल रही है ? कॉलेज अच्छा है न ? और मॉसी लोग सब कैसे हैं ?"

" सब अच्छे हैं दी। " मानुषी ने मुस्कुराते हुए कहा _" और कॉलेज भी अच्छा ही होगा ?"

" अच्छा होगा ?" साक्षी ने ना समझने वाले भाव से कहा _" इस बात से क्या मतलब है तेरा ?"

" मतलब ये कि कॉलेज जाना अभी शुरू नहीं किया है मैने। " मानुषी ने कहा _" क्योंकि कॉलेज खुलने में अभी पॉच दिन का समय शेष है। "

" ओह। " साक्षी ने कहा _" चल कोई बात नहीं। तू बैठ , मैं ज़रा कपड़े चेन्ज कर लूँ। अभी भी पुलिस की यूनीफार्म ही पहन रखी हूँ मैं। "

" ओके दी। " मानुषी ने कहा और एक बार फिर अपने पिता की तरफ पलटते हुए कहा _" डैड , ये सब कैसे हुआ ?"

" बस हो गया बेटी। " सत्यम सिंह भला अब उसे क्या बाताता _" सब नसीब की बातें हैं। "

" ऐसा क्यों कहते हैं डैड ?" मानुषी ने सत्यम सिंह का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा _" बिना वजह के कैसे हमारी फैक्टरी में आग लग सकती है ? ज़रूर कोई वजह रही होगी। आप पुलिस के द्वारा पता लगवाइए डैड। "

" पुलिस पता लगा रही है दी। " सहसा जयदीप कह उठा _" और आपको पता है , साक्षी दीदी ही इस सबका पता लगा रही हैं ? देखना सब कुछ पता लग जाएगा जल्द ही। जिसने भी ये सब किया होगा न मैं उसे छोंड़ूगा नहीं। "

" ज़्यादा सूरमा बनने की ज़रूरत नहीं है तुम्हें। " मानुषी ने कहा _" अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो। और ये तो अच्छी बात है कि इस सबकी जॉच दीदी कर रही हैं , है न डैड ?" अंतिम वाक्य उसने अपने पिता की तरफ देख कर कहा था।

"ह .. हॉ बेटी। " सत्यम सिंह चौंकते हुए बोला थ◌ा _" यकीनन इस सबका पता चल ही जाएगा। "

" क्या अभी तक कुछ पता नहीं चला भैय◌ा ?" सुंदर ने कह◌ा _" मेरा मतलब है कि साक्ष◌ी ने इस बारे में अभी तक क्या कुछ नहीं बताया कि उसकी छानबीन में क्या नतीजा निकल◌ा ?"

" नतीजा सिर्फ इतना ही निकला है चाचा जी कि हमारी फैक्टरी में आग किसी के द्वारा फैक्टरी के तहखाने में लगाए गए टाइम बम्ब से लगी थी। " अंदर की तरफ से आते हुए साक्ष◌ी ने कह◌ा _" और आपको ये जानकर हैरानी होगी कि फैक्टरी के तहखाने में लगभग दो से तीन टाइम बम्ब लगाए गए थे। "

" क्य◌ा ??????" लगभग वहॉ मौजूद हर कोई बुरी तरह चौंका थ◌ा , फिर सुंदर ने पूॅछ◌ा _" लेकिन फैक्टरी के अंदर तहखाना कहॉ से आ गया और तो और उस तहखाने के अंदर जाकर किसने टाइम बम्ब लगाया हो सकता ह◌ै ??"

" ये सवाल तो मेरे पास भी है चाचा जी कि फैक्टरी में कोई तहखाना कैसे थ◌ा ?" साक्ष◌ी ने सुंदर से कहने के बाद अपने पिता की तरफ देख◌ा _" क्या आप बताए◌ॅगे डैड कि फैक्टरी में तहखाने का क्या काम थ◌ा ?"

सत्यम सिंह बुरी तरह घबरा गया, लेकिन तुरंत ही सहल कर बोला_"फैक्टरी के अंदर अगर कोई तहखाना था तो इसमें कौन सी बड़ी बात है बेटी? मैंने तो बस शौक के लिए बनवाया था। क्या तहखाना बनवाना भी कोई कानूनन जुर्म है?"

" जुर्म तो नहीं है डैड। " साक्ष◌ी ने सपाट लहजे में कह◌ा _" लेकिन तहखाने का निर्माण आम तौर पर लोग अपनी किसी प्राइवेसी के चलते बनवाते हैं। ख़ैर , क्योंकि तहखाने में तीन तीन टाइम बम्ब लगाए गए थे और जब वो फटे तो सब कुछ जल कर खाक़ में मिल गया। हलॉकि तहखाने में शायद कुछ नहीं था क्योंकि अगर होता तो हमारे हाथ कुछ न कुछ ज़रूर लगता। वहॉ तो बस फैक्टरी के जले हुए कुछ अवशेष ही पड़े थे। "

साक्षी की ये बात सुन कर कि 'तहखाने में कुछ नहीं था' सत्यम सिंह बुरी तरह मन ही मन चौंका था। उसके दिमाग़ का फ्यूज उड़ गया। फिर जब दिमाग़ ने काम करना शुरू किया तो सबसे पहले उसके दिमाग़ में यही सवाल उभरा कि ऐसा कैसे हो सकता है? तहखाने में मौजूद उसकी गैरकानूनी चीज़ें कहॉ गईं? क्या सब कुछ जल गया??? मगर सवाल ये है कि अगर जल गया होता तो साक्षी को कुछ तो उसके अवशेष सबूत के तौर पर मिलते?

सत्यम सिंह कुछ समझ नहीं पा रहा था कि ये सब क्या है? कहीं ऐसा तो नहीं कि उसकी बेटी इस बारे में झूॅठ बोल रही हो कि तहखाने में उसे कुछ नहीं मिला है? मगर साक्षी उससे झूॅठ क्यों बोलेगी? बल्कि होना तो ये चाहिए था कि अगर उसके खिलाफ कोई सबूत उसे मिल

जाता तो अब तक साक्षी को उसे हॅथकड़ी लगा कर गिरफ्तार कर लेना चाहिए था। मगर उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया, क्यों? आख़िर क्या चक्कर है ये? सत्यम सिंह जितना सोचता उतना ही उलझता जा रहा था। यहॉ तक कि सोचते सोचते उसका दिमाग़ हैंग सा होने लगा था।

" ये तो बहुत ही गंभीर बात है साक्षी बेटी। " सुंदर ने कहा _" फैक्टरी में बम्ब लगाया किसी ने और सब कुछ जला कर खाक़ कर दिया। भला ये सब किसने किया होगा ? क्या ये किसी दुश्मन का किया धरा है ?"

" ये तो डैड ही बता सकते हैं। " साक्षी ने कहा _" डैड को ये अच्छी तरह पता होगा कि इस बिजनेस में उनका कौन दुश्मन है ? जिसने इतने बड़े काम को अंजाम दिया है। "

" मैं खुद इस बात से हैरान व परेशान हूॅ बेटी। " सत्यम सिंह बोला _" क्योंकि मेरी समझ में मेरा ऐसा कोई भी शत्रू नहीं है जिसने ये सब किया हो। मेरे सबसे बहुत अच्छे संबंध थे और हैं बेटी। भला मैं बिना वजह और बिना सबूत के किसका नाम लूॅ कि हॉ इसी ने मेरी फैक्टरी में आग लगाई है ?"

" लेकिन बिना वजह के ये भी तो संभव नहीं है भैया कि कोई भी शख्स हमारे साथ इतना बड़ा कारनामा करे ?" सुंदर ने कहा _" मैं समझ सकता हूॅ और जानता हूॅ कि यकीनन आपका कोई दुश्मन नहीं है लेकिन आप खुद सोचिए कि बिना किसी वजह के ये सब कोई क्यों करेगा ?"

" मैं नहीं जानता छोटे। " सत्यम सिंह हताश भाव से बोला _" मैं नहीं जानता कि किसने ये सब करके मुझसे अपनी दुश्मनी निकाली है ? अगर जानता तो क्या मैं इस तरह चुप चाप बैठा होता ? बल्कि अगर जानता कि ये सब किसने किया है तो अपने हाथो से उसे गोली मार देता। ये भी न पूॅछता गोली मारने से पहले उससे कि ये सब उसने क्यों किया था ?"

" आप परेशान मत होइए डैड। " साक्षी ने कहा _" मैं इस सबका पता लगा कर ही रहूॅगी कि किसने ये सब किया है ?"

इसके साथ ही ड्राइंग रूम में सन्नाटा छा गया। कुछ देर बाद सब वहॉ से चले गए।

सत्यम सिंह अपने कमरे में चला आया, उसका सिर बड़ा ज़ोरों से दर्द कर रहा था। कमरे में आकर वह बेड पर आखें बंद करके लेट गया।

" क्या हुआ सत्यम ?" कमरे के अंदर आते ही सोनियाा ने कमरे का दरवाज़ा बंद करने के बाद कहाा _" तबीयत तो ठीक है न तुम्हारी ?"

" सिर में बड़ा दर्द हो रहा है सोनियाा ज़रा कोई टेबलेट तो दो। " सत्यम सिंह ने कहाा _" ऐसा लगता है जैसे सिर फट जाएगा। "

सोनिया ने पास ही रखी आलमारी से एक बाक्स मे रखी कुछ दवाइयों से एक गोली निकाली और सत्यम सिंह की तरफ बढ़ा दिया।

" अरे क्या गोली ऐसे ही खाऊँगाा ?" सत्यम सिंह बोलाा _" पानी भी दो न। "

" पानी बगल से टेबल में रखा है। " सोनियाा ने कहाा _" मैं पहले पानी ही लाई थी यहाॅ , जानती थी कि तुम्हारा सिर दर्द कर रहा है और तुम्हें इसके लिए गोली खानी पड़ेगी। "

सत्यम सिंह कुछ न बोला। बगल में टेबल पर रखे पानी के ग्लास को एक हाथ से उठाया और गोली को मुह में डालने के बाद उसे पानी के साथ निगल गया। जबकि सोनिया बेड पर उसके समीप ही बैठ गई।

" अब तो तुम्हें इतना परेशान नहीं होना चाहिए सत्यम। " सोनियाा ने हल्के स्वर में कहाा _" क्योंकि तुम जिस बात से डर रहे थे वो तो हुई ही नहीं। हमारी बेटी को फैक्टरी के तहखाने में कुछ भी ऐसा नहीं मिला जिससे ये साबित हो कि तुम गैर कानूनी धंधा भी करते हो। इस लिए अब जब ऐसा कुछ उसे मिला ही नहीं तो किसी बात से डरने या परेशान होने की अब कोई ज़रूरत नहीं है तुम्हें। बस शुकर मनाओ कि फैक्टरी के साथ साथ वो सब भी जल गया। "

" तुम सबसे बड़ी बात पर ग़ौर ही नहीं कर रही हो सोनियाा। " सत्यम सिंह ने कहाा _" तुम इस बात की तरफ ध्यान क्यों नहीं दे रही हो कि फैक्टरी के तहखाने में बम्ब फिट किया था किसी नेे ?"

" हॉ तोो ?" सोनियाा ने लापरवाही से कहा।

" तो ये कि जिसने भी तहखाने में बम्ब लगाया। " सत्यम सिंह बोलाा _" क्या उसने न देखा होगा कि तहखाने में क्या क्या चीज़ें मौजूद हैं ? बल्कि यकीनन देखा होगा उसने। अब अगर हमारी बेटी ये कह रही है कि उसे तहखाने में कुछ नहीं मिला तो इसका क्या मतलब हो सकता हैै ? इसके तो दो ही मतलब हो सकते हैं , और वो ये कि या तो हमारी बेटी हमसे झूॅठ बोल रही है कि उसे तहखाने में कुछ नहीं मिला या फिर ऐसा हो सकता है कि जिसने तहखाने में बम्ब लगाया उसने ही तहखाने में मौजूद सारी गैर कानूनी चीज़ों को गायब कर दिया। "

सोनिया चकित सी देखती रह गई सत्यम सिंह को। कुछ देर यूँ ही देखने के बाद उसने कहा_"ओह माई गॉड सत्यम, ये तो मैंने सोचा ही नहीं था। हद हो गई, भला इस बात पर मेरा ध्यान क्यों नहीं गया?"

" क्योंकि औरतों का दिमाग़ उसके घुटनों में होता है न। " सत्यम सिंह हॅस पड़ा।

" ज्यादा सुधांशु घोष बनने की कोशिश मत करो। " सोनिया ने बुरा सा मुह बनाया था।

" शु सुधांशु घोष ???" सत्यम सिंह चकरा गया _" ये किस चिड़ीमार का नाम है ?"

" तुम सुधांशु घोष को नहीं जानते ?" सोनिया ने हैरत से कहा _" अरे ये बहुत बड़ा डिटेक्टिव है। जासूसी टाइप के उपन्यास भी लिखता है ये। इसके आगे जेम्स बॉण्ड वगैरा सब फेल हैं। ऐसा इसका मानना है , हलॉकि मैं इसे ज्यादा भाव नहीं देती "

" हाहाहाहा ज्यादा भाव देना भी नहीं मेरी जान। " सत्यम सिंह हॅसा _" वरना उसका जासूसी दिमाग़ तुम्हारे पिछवाड़े में घुस जाएगा। "

" उसके बारे में ऐसा मत बोलो डियर। " सोनिया ने कहा _" वो बड़ा शरीफ लड़का है। "

" लड़का है ???????" सत्यम सिंह चौंका _" ये क्या कह रही हो ?"

" अरे अभी वो लड़का ही है। " सोनिया ने कहा _" बेचारा अभी कुवॉरा है न इस लिए। "

" हाहाहाहा अच्छा अब छोड़ो इस लड़के की बात को। " सत्यम सिंह ने एकाएक गंभीर होकर कहा _" मैं ये कह रहा था कि हमारी बेटी को अगर तहखाने से कुछ नहीं मिला तो इसकी यही दो वजह हो सकती हैं। "

" लेकिन साक्षी इस बात को क्यों छुपाएगी भला ?" सोनिया ने कहा _" बल्कि अगर उसके पास कोई ऐसा सबूत होता तो वह किसी भी समय तुम्हारे हाथ में हॅथकड़ी डाल देती। मुझे तो लगता है कि साक्षी को सचमुच तहखाने से कुछ नहीं मिला है। बल्कि तुम्हारा ये ख़याल ज्यादा सही लगता है कि तहखाने में टाइम बम्ब लगाने वाले ने ही उन सब चीज़ों को गायब किया है। "

" लेकिन ये हैरत के साथ साथ अविश्वास वाली बात भी है कि बंद फैक्टरी के अंदर तथा तहखाने का भी लॉक तोड़ कर वो शख्स अंदर पहुॅच कैसे गया ?" सत्यम सिंह ने कहा _" और तहखाने से सारी चीज़ें गायब कैसे किया उसने ? क्या वो सब चीज़ें वह अपने साथ ले गया ? जबकि फैक्टरी के गेट पर तैनात दरबान के अनुसार गेट पर बाहर से ताला ही लगा था। कहने का मतलब ये कि ये सब अगर उसने ही किया है तो कैसे किया ये ?"

" यकीनन सत्यम। " सोनिया ने गहरी सास लेते हुए कहा _" ये बड़े ही आश्चर्य की बात

है। कोई बंद फैक्टरी के तहखाने में आसानी से पहुॅच गया और अपना सारा काम बड़ी आसानी से ही करके उड़नछू हो गया। किसी को इस सबकी कानों कान भनक तक न लगी। यकीन नहीं होता। "

" अगर ऐसा ही है। " सत्यम सिंह कह रहा थ ा _" तो सबसे बड़ी परेशानी की बात तो अब हुई है सोनिय ा । ज़रा सोचो जिसने भी ये सब किया है वो कभी भी हमारे खिलाफ वो सब चीजें पुलिस तक पहुॅचा सकता ह ै , या फिर उन सब चीज़ों के आधार पर वह कभी भी हमें ब्लैकमेल कर सकता है। हमारा जीना हराम कर सकता है सोनिय ा ... समझ में नहीं आता कि अब क्या कर ू मै ं ??"

" अब तो यही कर सकते हैं कि हम उस शख्स के ब्लैकमेल करने का इंतज़ार करें। " सोनिय ा ने कह ा _" इसके सिवा दूसरा कोई रास्ता भी नहीं है। "

सत्यम सिंह चिंता व परेशान सा बैठा रह गया। उसे क्या पता था कि ये सब चक्कर चलाने वाला वही है जिसे वह होटल या ढाबे में कप प्लेट धोने वाला समझता है।

१०

" ये क्या कह रहे हो तुम ?" उमाकांत ने चौंकते हुए सामने सोफे पर बैठे विक्रम की तरफ देख कर कहा _" सत्यम सिंह की फैक्टरी के तहखाने से वो सारी चीज़ें तुमने गायब करवाई थी ???"

" यही सच है अंकल। " विक्रम ने अजीब भाव से कहा _" और ये सब करने के पीछे भी मेरा एक मकसद था। "

" कैसा मकसद विक्रम ?" रेणुका ने हैरानी से अपने बेटे की तरफ देखते हुए कहा।

" मैं नहीं चाहता था कि सत्यम सिंह अपनी ही बेटी की वजह से इतना जल्दी कानून के हाथ लग जाए। " विक्रम ने कहा _" अगर ऐसा हो जाता तो खेल का मज़ा ही ख़राब हो जाता अंकल। जेल में पहुँच कर सत्यम सिंह को वो मज़ा नहीं मिल पाता जो मज़ा आने वाले समय में मेरे द्वारा उसे मिलने वाला है। उसकी जगह जेल में नहीं है अंकल बल्कि जेल के बाहर ही है। मैं उसे कभी भी कोई शिकायत का मौका नहीं देना चाहता , वरना जेल में बंद होने पर वो ये कहेगा कि मुझे तो अपने हाथ पैर चलाने का मौका ही नहीं दिया गया। अब आप ही बताइए अंकल , क्या ऐसा करना सही होगा ? नहीं न ..... इसी लिए मैंने उसे उसकी बेटी द्वारा जेल जाने से बचा लिया। "

" वो सब तो ठीक है बेटे। " उमाकांत ने कहा _" मगर मुझे ये समझ नहीं आ रहा कि तहखाने से वो सब चीज़ें तुमने कैसे और कब गायब करवाई ?"

" आपके सभी सवालों का जवाब आपको दूँगा अंकल। " विक्रम ने हँस कर कहा _" लेकिन उससे पहले मैं गरमा गरम चाय पीना चाहता हूँ। फिर तसल्ली से आपको समझा समझा कर सब कुछ बताऊँगा। "

" ये तो चीटिंग है भैया। " निशा ने बुरा सा मुँह बना कर कहा _" कितना अच्छा मज़ा आ रहा था मुझे और आपने इंटरवल करके सारा मज़ा ही ख़राब कर दिया मेरा। जाइए मुझे बात ही नहीं करना आपसे। "

" तुमने बिलकुल ठीक कहा बेटी इसने सारा मज़ा ख़राब कर दिया। " उमाकांत ने हँस कर कहा _" मैं भी अब इससे बात नहीं करू गा। अपने आपको बड़ा सूरमा समझने लगा है ये। है न बेटी ?"

" बिलकुल। " साक्षी ने मुँह फुला कर कहा _" । "

" चुप कर। " सोफे से उठते हुए रेणुका ने निशा को झिड़का _" की बच्ची , वरना लगाऊँगी एक। "

" भैयाा। " निशाा ने विक्रम की तरफ मासूमियत से देखकर कहाा _" देख लीजिए आपकी जान को माॅ एक लगाने को कह रही हैं। आप ऐसे कैसे चुप बैठ सकते हैं ? । "

रेणुका तब तक अंदर किचेन की तरफ जा चुकी थी। जबकि निशा की इस बात से विक्रम बोला_"मैं चुप नहीं बैठा हूॅ लेकिन माॅ को कुछ कह भी तो नहीं सकता न गुड़िया। समझा कर न।"

" हांएॅ। " निशाा एक दम से विक्रम से दूर हटते हुए बोलीी _" अब तो पक्का आपसे बात नहीं करू गी। देख लेनाा , । " इतना कहने के बाद वह उठी और उमाकांत वाले सोफे पर जा कर उमाकांत के बिलकुल पास बैठ गई मुॅह फुला कर।

" आपको पता है अंकल। " विक्रम ने निशाा की तरफ देखते हुए कहाा _" आज शाम को मैं शिप द्वारा समंदर में घूमने का मज़ा लेने की सोच रहा था गुड़िया के साथ , लेकिन कोई बात नहीं मैं माॅ को लेकर चला जाऊॅगा। ठीक रहेगा न अंकल .. माॅ भी समंदर में घूमने का आनंद ले लेंगी। "

" वाॅव , समंदर में बहुत मज़ा आएगा न भैयाा ?" निशाा बिजली की स्पीड से उमाकांत वाले सोफे से उठकर विक्रम के पास उससे चिपक कर बैठते हुए बोलीी _" मैं न शिप के ऊपर बैठूॅगी जैसे फिल्मों में हीरो हिरोईन बैठते हैं , । "

" तू कैसे बैठ जाएगी भलाा ?" विक्रम ने कहाा _" तू तो मेरे साथ जाएगी ही नहीं। मैं माॅ को लेकर जाऊॅगा। "

" ऐसा नहीं हो सकता। " निशाा ने अकड़ कर कहाा _" मैं जाऊॅगी और आपके ही साथ जाऊगीी , और अगर आप मुझे अपने साथ नहीं जाएॅगे तो ये आपके लिए अच्छा नहीं होगा। देख लेनाा , । "

" नहीं वो माॅ कह रही थीं कि गुड़िया यहीं रह कर अपनी पढ़ाई करेगी। " विक्रम ने कहाा _" और वो मेरे साथ शिप में घूमने जाएंगी। इस लिए तुम मेरे साथ नहीं जा पाओगी। "

" मैं कुछ नहीं जानती। " निशाा ने सहसा रुआॅसे होकर कहाा _" मैं आपके साथ ही जाऊॅगी। क्या आप मुझे नहीं ले चलेंगे अपने साथ ..... मैं आपकी जान हूॅ नाा ?" कहते कहते निशाा की आॅखों से आॅसू छलक गए , ये देख विक्रम का कलेजा हाहाकार कर उठा। उसे खुद पर बेहद गुस्सा आया कि वो अपनी गुड़िया को इस तरह भला कैसे रुला सकता है ?

विक्रम ने उसे अपने सीने से छुपका लिया, निशा खुद भी उससे किसी फेवीकोल की तरह चिपक गई थी।

" मुझे माफ कर दे मेरी गुड़िया। " फिर विक्रम ने भर्राए गले से कहा _" मैं तो बस मज़ाक कर रहा था। तुझे चिढ़ा रहा था और कुछ नहीं। चल अब रोना नहीं ... तू जानती है न कि मैं अपनी जान की आँखों में आँसू नहीं देख सकता। और हाँ ... शिप में जाने का कोई प्रोग्राम नहीं था वो तो बस ऐसे ही कह रहा था मैं लेकिन अब ज़रूर हम दोनो संडे को शिप में बैठ कर समंदर में घूमेंगे और खूब मज़ा करेंगे ठीक है न ?"

निशा ने हल्का सा सिर उठा कर विक्रम की तरफ मुस्कुरा कर कहा और फिर से उसके सीने में अपना चेहरा छुपा लिया। सामने बैठा उमाकांत पाटिल ये सब देख कर मुस्कुरा रहा था। उसकी आँखों में भी आँसू थे।

" कहाँ घूमने जाने और मज़ा करने की बात कर रहे हो तुम दोनो ?" हाथ में ट्रे लिए आते हुए रेणुका ने कहा।

" पता है माँ। " निशा ने विक्रम के सीने से सिर उठा कर तथा मारे खुशी के कहा _" संडे को मैं और भैया समुंदर में शिप में बैठ कर घूमेंगे और खूब मस्ती करेंगे। । " निशा की इस बात से विक्रम ने अपना सिर पीट लिया जबकि .....

" क्या ???" रेणुका ने हैरानी से निशा और विक्रम की तरफ देख कर कहा _" नहीं तुम लोग कहीं नहीं जाओगे। समुंदर में तो बिलकुल भी नहीं। "

रेणुका ने सबको चाय दी और खुद भी एक कप लेकर वहीं सोफे पर बैठ गई। जबकि उसकी इस बात से निशा का चेहरा उतर गया। उसने कातर भाव से विक्रम की तरफ देखा। विक्रम ने इशारे से कहा कि 'तू चिन्ता मत कर हम ज़रूर चलेंगे'। विक्रम के इस इशारे से निशा का चेहरा फिर से खिल उठा। और अब वह मुस्कुराते हुए आराम से चाय पीने लगी। उसे यूँ मुस्कुराता देख रेणुका का माथा ठनका, बोली_"अब इस तरह मुस्कुरा क्यों रही है? चुप चाप चाय पी।"

" अब क्या मैं मुस्कुरा भी नहीं सकती माँ ?" निशा ने हँस कर कहा _" आप भी कमाल करती हैं। " इतना कहने के बाद एकाएक ही उसने विक्रम की तरफ देखा और धीरे से बोली _" । "

उसकी इस क्रिया से चाय पी रहे विक्रम को ज़ोर का ठस्का लग गया और वह खाँसने लगा। खाँसने के साथ साथ वह हँस भी रहा था। जबकि उसके इस प्रकार एकाएक खाँसने से निशा हड़बड़ा गई। जानती तो वह भी थी कि उसके भाई को अचानक ठस्का क्यों लगा था जिसकी वजह से उसे खाँसी आने लगी थी इस लिए पकड़े जाने के डर से हड़बड़ा गई थी वह।

" क्या हुआ बेटा ?" रेणुका ने चौंकते हुए पूछा।

" ये दोनो एक नम्बर के शैतान हैं रेणुका बहन। " उमाकांत ठहाका लगा कर हँसते हुए बोला था _" तुम नहीं समझ पाई कि इन दोनो ने आपस में क्या खिचड़ी पका ली है ?"

" मैं सब जानती हूँ भैया। " रेणुका ने भी हँस कर कहा _" ये दोनो सोचते हैं कि ये मुझे बेवकूफ बना लेते हैं। ये दोनो ये भूल जाते हैं कि इन्होंने मुझे नहीं बल्कि मैंने इन दोनो को पैदा किया है। "

विक्रम और निशा ने एक दूसरे की तरफ अजीब भाव से इस तरह देखा जैसे चोरी पकड़ी गई हो।

" ख़ैर , अब बताओ विक्रम। " उमाकांत ने कहा _" कि फैक्टरी के तहखाने से वो सब चीज़ें तुमने कब और कैसे गायब करवाई थी और ये भी कि किसके द्वारा ?"

" आपको याद होगा अंकल। " विक्रम ने कहना शुरू किया _" मैंने आपसे कहा था कि ' सत्यम सिंह तो ये सोच भी नहीं सकता कि मैं अनिल खुराना के द्वारा अभी और क्या खेल खेले लने वाला हूँ' । जैसा कि मैने आपको बताया था कि खुराना की कमज़ोरी फोटोग्राफ्स के रूप में मेरे पास थी। इस लिए वह मेरे कहने पर कुछ भी करने को मजबूर था , और बदले में मैं उसे उसके परिवार सहित सुरक्षित विदेश भेजवा दूँगा। सत्यम सिंह की नज़र में खुराना पहले ही उससे अपना हिसाब किताब करके विदेश जा चुका था जबकि सच्चाई कुछ और ही थी। खुराना तो उस दिन विदेश जाने वाली फ्लाइट पर बैठा था जिस रात सत्यम सिंह की फैक्टरी में आग लगी थी। मुझे खुराना के द्वारा ये पता था कि हप्ते में एक दिन व रात फैक्टरी में मजदूरों का अवकाश रहता है , यानी फैक्टरी बंद रहती है। इसी बात का ख़याल रख कर ही प्लान बनाया गया था। खुराना के अनुसार फैक्टरी का मेन गेट जो कि लोहे से बना हुआ है , उसकी चाभी मैनेजर या सत्यम सिंह के पीए के पास रहती है। खुराना ने उस चाभी की डुप्लीकेट चाभी पहले ही बनवा ली थी। इस लिए फैक्टरी के अंदर जाने की समस्या नहीं रह गई थी। समस्या थी तहखाने के अंदर पहुँचने की। क्योंकि तहखाने के गेट पर पिनकोड सिस्टम वाला लॉक था , जिसका पिनकोड सिर्फ सत्यम सिंह ही जानता था। इस लिए पिनकोड हासिल करने के लिए दिमाग़ का प्रयोग किया गया। खुराना को ये तो पता ही था कि सत्यम सिंह अवकाश वाले दिन या रात ही अपने गैर कानूनी धंधे वाला काम करता था। मैने खुराना के द्वारा पिनकोड हासिल करने के लिए उस रात तहखाने के पिनकोड लॉक सिस्टम पर एक पॉलिथिन नम्बरों के ऊपर इस प्रकार चिपकवा दी कि सत्यम सिंह ग़ौर से देखने पर भी ताड़ न पाए कि सिस्टम के ऊपर पॉलिथिन चढ़ी हुई है। सत्यम सिंह जब तहखाने के अंदर जाने के लिए सिस्टम पर पिन नम्बर डालता तो वो सब पिन नंबर्स उस पॉलिथिन में सत्यम सिंह के फिंगर प्रिंट्स के रूप में छप जाते। यहाँ पर एक सवाल ये भी था कि अगर पिन का कोई नम्बर यानी संख्या एक से दो या तीन बार सत्यम सिंह के द्वारा डाल दी जाती तो कैसे पता चलता कि उस संख्या के कितने नंबर थे ? एक्सपर्ट ने बताया था कि जो नंबर एक बार डाला जाएगा वो पॉलिथिन पर कम दबाव के साथ छपेगा जबकि अगर कोई नंबर दो या तीन बार दबाया जाएगा वो ज्यादा दबाव के साथ छपेगा। इसके बाद उन नंबरों को चेक कर लिया जाएगा। मैं एक्सपर्ट की इस बात से मुतमईन न था क्योंकि इससे नंबर इधर उधर भी हो सकते थे। इस लिए पॉलिथिन के साथ साथ मैने वहाँ पर एक मिनी कैमरा इस प्रकार लगवाया कि उसमें सत्यम सिंह का पिन कोड डालना स्पष्ट दिखाई दे। बस फिर क्या था .. सत्यम सिंह जब वहाँ आया तो सब कुछ रिकार्ड हो गया। सत्यम सिंह कभी सोच भी नहीं सकता था कि कोई उसके लिए कितना बड़ा खेल रच रहा है। ये सब काम तब हुआ था

जब खुरानाा ने पार्टनरशिप नहीं तोड़ी थी सत्यम सिंह से। "

" तुम्हारे कहने का मतलब है। " उमाकांत ने बीच में ही विक्रम की बात काटते हुए कहाा _" कि ये सब तुम खुरानाा से पहले ही करा चुके थेे ? लेकिन इस बीच अगर सत्यम सिंह पिनकोड बदल देता तो क्या करते तुम ?"

" मेरे दिमाग़ में भी यही सवाल था अंकल। " विक्रम ने कहाा _" इस लिए जब दूसरा अवकाश हुआ फैक्टरी में तो खुरानाा ने मेरे कहने पर फिर से वहॉ पर मिनी कैमरा लगा दिया थाा , कारण यही जानना था कि सत्यम सिंह ने पिनकोड बदल दिया है या पहले वाला ही है। मगर बाद में पता चला कि पिनकोड पहले वाला ही था। "

" चलो ये तो ठीक है। " उमाकांत ने कहाा _" लेकिन इतना कुछ पता करने के बाद तुमने ये सब पहले ही क्यों नहीं कर दिया थाा ? मेरा मतलब है कि पहले ही फैक्टरी में आग क्यों नहीं लगवाई थीी , इतने दिन बाद ही क्यों किया ऐसाा ?"

" इसमें भी एक मज़ेदार खेल छुपा था अंकल। " विक्रम ने मुस्कुरा कर कहा थाा _" मुझे पता था कि सत्यम सिंह की बेटी पुलिस की ट्रेनिंग कर रही हैै , उसकी ट्रेनिंग के बाद सीधा उसे किसी थाने में चार्ज संभाल लेना था। मैंने सोचा क्यों न सत्यम सिंह की बेटी को उसके थाना इंचार्ज बनते ही उसके बाप की फैक्टरी का केस सौंप कर उसे एक तोहफा दिया जाए। बस यही सोच कर कुछ दिन रुका रहा था मैं। आपसे कहा था कि मंत्री जी से बात करके साक्षीी सिंह भाटीी को वहीं का थाना उसकी पहली पोस्टिंग में मिले। बस सब कुछ सेट करने के बाद प्लान के अनुसार काम शुरू हो गया। फैक्टरी के बाहर गेट पर एक ही दरबान था उस रात , दूसरा दरबान नहीं था। पता चला था कि उस रात उसकी बीवी को बच्चा होने वाला था इस लिए वह छुट्टी लेकर चला गया था। उसकी जगह दूसरा कोई दरबान था ही नहीं। एक दरबान बचा था वह भी डबल ड्यूटी की वजह से उस रात आधी रात के समय कुर्सी में बैठा बार बार जम्हाई ले रहा था। उसे इस तरह जम्हाई लेता देख खुरानाा ने उसे क्लोरोफॉम डाला हुआ रुमाल सुँघा दिया। कुछ ही पल में बेचारा अंटा गाफिल हो गया। उसके बाद कोई समस्या ही नहीं थी। खुरानाा डुप्लीकेट चाभी की सहायता से फैक्टरी का गेट खोल कर अंदर गया उसके साथ चार आदमी और थे उसकी सहायता के लिए। सबके अंदर आते ही खुरानाा ने अंदर से गेट भी बंद कर लिया। तहखाने के पास पहुँच कर उसने तहखाने के गेट पर लगे पिन सिस्टम पर कोड नंबर डाला और दरवाजा खोल कर तहखाने के अंदर पहुँच गया। सभी ने तहखाने में मौजूद गैर कानूनी सामान को अपने साथ लाई हुई बोरियों में भरना शुरू कर दिया। एक घंटे बाद वो सब लोग तहखाने में रखी हर गैर कानूनी चीज़ को बोरियों में भर लिया था। उसके बाद वहॉ तीन टाइम बम्ब लगा कर वो सब सुरक्षित बाहर आ गए। फैक्टरी का बाहर वाला गेट उसी तरह बाहर से लॉक करके वो सब वहॉ से लौट आए। अपने पीछे कोई सबूत नहीं छोंड़ा था उन्होने। हलॉकि बम्ब के फटने पर कोई सबूत रह ही नहीं जाना था लेकिन बाहर गेट पर सबूत हो सकते थे इसके लिए उन लोगों ने पहले से ही अपने हाथाो में दस्ताने पहन रखे थे। इतनी बड़ी बात को अंजाम दिया गया लेकिन किसी को उस रात कोई भनक तक न हुई। कारण एक तो रात का समय , दूसरे बाकीी स्टाफ फैक्टरी से दूर बने ऑफिस ों में था

और सबसे बड़ी बात किसी को गुमान ही नहीं था कि कोई इस सबके लिए शहर से दूर यहॉ आएगा। "

" तो आख़िर इस तरह तुमने खुरानॉ और कुछ आदमियों के द्वारा ये सब करवाया थॉ ?" उमाकांत पाटिल ने कहॉ _" खुरानॉ तो उसी रात अपने परिवार के साथ बम्ब फटने के तीन घंटे पहले ही विदेश जाने के लिए फ्लाइट में बैठ चुका थॉ , किन्तु वो आदमी कौन थे ? उन सबको इस बारे में पता हैं , हो सकता है वो इस सबका कभी भॉडा फोड़ दें तो क्या करोगे तुम ?"

" पहली बात तो वो ये सब करेंगे नहीं क्योंकि वो यही जानते हैं कि ये सब उन्होने किसी माफिया गैंग के लिए किया है। " विक्रम ने कहॉ _" खुरानॉ भी उन सबकी तरह ही उस रात अपने चेहरे पर नकाब पहना हुआ था। खुरानॉ ने उनसे यही कहा था कि वो माफिया का आदमी है। इस सबका कोई डर नहीं है। दूसरी बात ये है कि मैं खुद भी ज्यादा दिनों तक इस सबको सत्यम सिंह से छुपा कर नहीं रखूँगा। बल्कि डंके की चोंट पर उसके सामने जाकर उसे बताऊँगा कि उसके साथ जो कुछ भी अब तक हुआ है वो सब मैंने किया है। "

" वो सब तो ठीक है विक्रम। " उमाकांत ने कहॉ _" लेकिन इंस्पेक्टर साक्षी तो छानबीन कर ही रही है न ? संभव है कि वह किसी तरह इस सबका पता लगा ले कि ये सब तुमने किया है तो ??"

" उससे कुछ भी फर्क नहीं पड़ता अंकल। " विक्रम ने कहॉ _" क्योंकि आगे चल कर मैं खुद ही ये सब उन लोगों को बताऊँगा कि मैंने ही ये सब किया है। और यकीन मानिए अंकल उनमें से कोई भी मेरा बाल भी बॉका नहीं कर सकेगा। रही बात उस पुलिस वाली की तो वो भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती , क्योंकि सब कुछ जान लेने से या पता कर लेने से कुछ नहीं होता। बल्कि किसी भी चीज़ को साबित करने के लिए उस कानून वाली के पास सबूत और गवाह होने चाहिए , बिना सबूत के वो मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। और सबूत उसे इस जनम में तो क्या किसी भी जनम में नहीं मिलेंगे। "

" जुर्म चाहे जितनी सफाई से किया जाए विक्रम। " उमाकांत ने कहॉ _" वो अपने पीछे कोई न कोई ऐसा सबूत ज़रूर छोंड़ जाता है जिसकी वजह से वो एक दिन कानून की गिरफ्त में आ जाता है। "

" आप बताइए अंकल। " विक्रम ने मुस्कुराते हुए कहॉ _" मैंने इस सबके पीछे क्या सबूत छोड़ा हैं ? जबकि मैंने अभी तक जो कुछ भी किया वो भी यहीं बैठे बैठे किया है। इस सबको अंजाम देने वाले तो कोई और ही थे। "

" अनिल खुरानॉ तुम्हारे लिए एक कमज़ोर प्वाइंट है बेटे। " उमाकांत ने कहॉ _" मान लो तहकीकात में साक्षी को ये पता चल जाए कि इस सबमें खुरानॉ का हाथ है तो ? वह खुरानॉ को शक की बिना पर धर लेगी और फिर उससे सारा सच उगलवा लेगी। खुरानॉ

को पुलिस के सामने ये कबूल करना ही पड़ेगा कि ये सब उसने तुम्हारे कहने पर किया था। "

" इतनी दूर तक जाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी अंकल। " विक्रम ने कहा _" क्यों कि उससे पहले मैं ही मैदान में आ जाऊँगा। मैं खुद उन लोगों के सामने इस सबका इकबाले जुर्म करूगा। और पता है अंकल , सत्यम सिंह को ये भी एहसास दिलाऊँगा कि उसका गैर कानूनी सामान अभी भी मेरे पास ही है , तथा उसके खिलाफ ऐसे ऐसे सबूत भी हैं मेरे पास जिससे उसको कानून के लपेटे में आने के लिए ज़रा भी देर नहीं लगेगी। बेचारा खुद ही इस सबके डर से अपनी इंस्पेक्टर बेटी से मेरी पैरवी करने लगेगा। "

" बात तो तुम्हारी ठीक है। " उमाकांत हॅस पड़ा _" संभावनाओं पर कुछ नहीं होता , कानून को तो सबूत चाहिए। और सबूत कोई है नहीं। वाह .... ये तो कमाल हो गया बेटे। "

" अभी तो दिमाग़ से ही उनकी हालत खराब कर रखी है अंकल। " विक्रम ने कहा _" जबकि मैदान में खुल कर आना अभी बाकी है। जिस दिन आमने सामने का खेल होगा न उस दिन से सत्यम सिंह हर पल रोएगा , गिड़गिड़ाएगा , रहम की भीख मॉगेगा मुझसे और मेरी मॉ से। "

" उसके साथ यही होना चाहिए विक्रम बेटे। " उमाकांत ने कहा _" जो अपने मॉ बाप और भाई का न हुआ बल्कि उनके साथ इतना घिनौना कर्म किया ऐसे गंदे इंसान के साथ किसी भी कीमत पर रहम नहीं होना चाहिए। "

" उनके लिए रहम शब्द मैंने अपनी डिक्शनरी से निकाल कर फेंक दिया है अंकल। " विक्रम ने एकाएक ठंडे स्वर में कहा _" एक एक चीज़ का हिसाब लूँगा मैं। "

" मैं तो उस कमीने जयदीप को अपने हाथो से कुत्ते की तरह मारूँगी। " सहसा निशा ने तपाक से कहा _" मुझे उसकी शकल से भी नफरत है। । "

निशा के इस बात को सुन कर सब मुस्कुरा कर रह गए।

११

ऐसे ही कुछ दिन गुज़र गए। सत्यम सिंह अब अपनी हालत पर काबू पा चुका था। बल्कि ये कहिये कि हर बात से काफी हद तक बेफिक्र हो चुका था। उसकी बेटी साक्षी द्वारा उसे पता चल चुका था कि तहखाने में बाकी कुछ नहीं मिला था। हलॉकि साक्षी को इस बात के पता होने का सवाल ही नहीं था कि उसका बाप गैर कानूनी काम करता है। उसने तो फॉरेंसिक रिपोर्ट को देखकर यही बताया था कि फैक्टरी में आग टाइम बम्ब के द्वारा ही लगी थी। अब उसकी तहकीकात सिर्फ इसी तरफ थी कि फैक्टरी के अंदर जाकर तहखाने में टाइम बम्ब किसने लगाया था??

साक्षी को एक सवाल ये भी परेशान कर रहा था कि इस केस की बारीकी से जॉच पड़ताल कराने के पीछे होम मिनिस्टर का क्या मकसद था?? उसने तो सिर्फ केस को रीओपन करने की अप्लीकेशन बस दी थी। उसका मकसद तो सिर्फ ये पता करना था कि इस केस में पुलिस ने इस प्रकार की रिपोर्ट क्यों बनाई थी?? दूसरी बात ये थी कि उसे लगता था कि फैक्टरी में लगी आग महज कोई इत्तेफाक़ की बात नहीं थी। बल्कि उसके पिता के किसी दुश्मन द्वारा लगाई गई थी। इस लिए वह इस सबका पता करके उस व्यक्ति द्वारा अपने पिता के हुए भारी नुकसान की भरपाई करना चाहती थी। उसे तो इस बात से भी हैरानी थी कि रातों रात इस शहर के सारे पुलिस डिपार्टमेंट का तबादला क्यों कर दिया गया था??? इसके पीछे क्या सिर्फ ये वजह थी कि इस केस की पुलिस ने अपनी पूरी ईमानदारी के साथ छानबीन नहीं की, बल्कि किसी के कहने पर ऐसी रिपोर्ट तैयार की?? क्या सिर्फ यही वजह थी या फिर इसके पीछे भी कोई ऐसा कारण है जो फिलहाल अभी उसकी समझ से बाहर नज़र आ रहा है??

सत्यम सिंह बेफिक्र ज़रूर हो गया था किन्तु इस बात का उसे एहसास था कि एक तलवार अभी भी उसकी गर्दन पर लटकी हुई है, जो कभी भी उसका गला रेत सकती है। वह पक्के तौर पर समझ चुका था कि तहखाने से वह सब चीज़ें तहखाने में टाइम बम्ब लगाने वाले ने ही गायब की हैं। वह नहीं जानता था कि ये सब किसने किया है लेकिन इतना अवश्य जानता था कि देर सवेर उस व्यक्ति का इस संबंध में कोई न कोई मैसेज ज़रूर आएगा। सत्यम सिंह उसी मैसेज के इन्तज़ार में था। दूसरी बात अपने बिजनेस को फिर से खड़ा करने के लिए वह कार्यरत भी हो गया था। फैक्टरी भले ही जल गई थी उसकी लेकिन उसके पास पैसों की कमी नहीं थी। गैर कानूनी धंधे में उसने बड़ी धन दौलत इकट्ठी कर ली थी। उसने फैक्टरी को फिर से शुरू करने के लिए उसकी मरम्मत का काम शुरू करवा दिया था। इस समय वह रात दिन इसी में व्यस्त रहता था। उसकी छोटी बेटी मानुषी वापस मुंबई जा चुकी थी। सत्यम सिंह फैक्टरी को फिर से शुरू करने के लिए कार्यरत था, इस बात से अंजान कि उसके पीछे उसका बेटा जयदीप अपने आचरण से क्या हंगामा खड़ा करने जा रहा था???

जयदीप का ज्यादातर समय अपने आवारा दोस्तों के साथ मस्ती करने और गॉव की किसी न किसी लड़की को पटा कर उनके साथ अपने अंदर की हवस मिटाने में जाता था। मॉ बाप की तरह वो भी अपने ही घर की औरतों व लड़कियों को गंदी नज़रों से देखता था और रात दिन

अपनी ही मॉ बहनों तथा चाची को अपने नीचे लेटाने की सोचता रहता था।

ऐसे ही एक दिन उसकी हरकतों की वजह से हंगामा हो गया। अपने बाप की तरह ही उसकी नीयय अपनी चाची अपर्णा पर बिगड़ी हुई थी। अपर्णा की बेटी सृष्टि भी जवान हो रही थी, हलॉकि अभी वह स्कूल में पढ़ती थी किन्तु आज की जनरेशन ज़रा एडवॉस होती है, ये अपनी ऊम्र से पहले ही जवान हो जाते हैं। जयदीप चाची की बेटी सृष्टि को भी हवस भरी नज़रों से देखता था। चाची के गदराए व खूबसूरत जिस्म का वह शुरू से ही दिवाना था। किन्तु कुछ कर नहीं सकता था क्योंकि वह अपने चाचा सुंदर के गुस्सैल स्वभाव के चलते डरता था, दूसरी बात उसकी चाची अपर्णा भी ऐसी वैसी औरत नहीं थी जिससे वह अपने इरादों में कामयाब हो पाता। उससे जितनी हो सकती थी उतनी कोशिश वह फिर भी किया करता था। मतलब चाची के पास उठना बैठना तथा उनके द्वारा दिये गए हर काम को खुशी खुशी करना। उनसे हॅसना बोलना, बातों के बीच यदा कदा मज़ाक भी कर लेना। अपर्णा ज्यादातर दिन में अकेली ही होती थी, उसके साथ उसका बारह साल का दिमाग़ से डिस्टर्ब बेटा रणदीप रहता था। उसका पति और बेटी सृष्टि सुबह स्कूल चले जाते थे, फिर शाम चार बजे के आस पास ही आते थे। सुबह दस बजे से चार बजे तक अपर्णा अकेली ही घर में रहती थी। हलॉकि दिन भर वह कोई न कोई काम करती ही रहती थी ताकि उसका टाइम पास हो जाए।

एक दिन की बात है, उस दिन गुरूवार था। सुंदर व सृष्टि रोज़ की तरह स्कूल गए हुए थे। जयदीप की आदत थी कि वह अपर्णा के घर तभी जाता था जब उसका चाचा और सृष्टि स्कूल चले जाते थे। उसे अपनी चाची अपर्णा की दिनचर्या का बखूबी पता था। वह जानता था कि के स्कूल जाने के बाद ही अपर्णा नहाने जाती थी बॉथरूम में। बाहर मेन गेट बंद रहता था किन्तु अंदर से कुंडी नहीं लगी होती थी। अपर्णा कुंडी नहीं लगाती क्योंकि उसे पता होता था कि जयदीप आएगा। ख़ैर, रोज़ की तरह ही जयदीप उस दिन भी अपने निर्धारित समय पर पहुॅचा। दरवाजे को हल्के से खोल कर वह अंदर दाखिल हो गया। अपनी चाची के नहाने के समय पर वह इसी लिए आता था कि वह किसी तरह अपनी चाची को बाथरूम में नहाते हुए देख सके। हलॉकि ऐसा कभी हुआ नहीं था बल्कि वह हमेशा अपने मनसूबों में नाकामयाब रहा था। यानी उसकी चाची कमरे से अटैच बाथरूम में जाने से पहले अपने उस कमरे का दरवाजा बंद करके अंदर से कुंडी लगा देती थी। जयदीप को अपनी चाची को नहाते देखने के लिए पहले चाची के कमरे में जाना पड़ता फिर बाथरूम में। जबकि दरवाजा ही बंद रहता था इस लिए वह कुछ कर ही नहीं सकता था। वह अपनी चाची से कह भी नहीं सकता था कि आप अपने कमरे का दरवाजा अंदर से बंद मत किया कीजिए।

मगर कहते हैं न कि होनी अटल होती है। यानी जिस वक्त जो होना होता है वो होकर ही रहता है। कहने का मतलब ये कि अपर्णा बाथरूम में नहाने जाने से पहले आज अपने कमरे का दरवाजा अंदर से बंद करना भूल गई, या यूॅ कहिए कि नियति के चलते उससे ये भूल हो गई।

जयदीप जब भी आता था तो सबसे पहले ये ज़रूर चेक करता था कि उसकी चाची ने दरवाजा अंदर से बंद किया है या नहीं। हलाकि वह जानता था कि चाची दरवाजा खुला रखने की ग़लती कभी नहीं करती हैं, फिर भी वह अपनी तसल्ली के लिए एक बार ज़रूर चेक करता

था। आज भी उसने ऐसा ही किया, और दरवाजा जब उसकी उम्मीद के विपरीत उसके द्वारा दिए गए हल्के से दबाव में बेआवाज़ तथा बिना किसी विरोध के खुलता चला गया तो वह पहले तो हैरान हुआ मगर जल्द ही उसका मन मयूर खूशी से नाचने भी लगा। वह दबे पॉव कमरे में दाखिल हुआ। उसकी धड़कने एकाएक बढ़ गई थीं जिसके धक धक करने की हर थाप उसे अपनी कनपटियों में बजती महसूस हो रही थी।

कमरे में पहुॅचते ही उसने देखा कि बेड पर उसकी चाची के वो कपड़े रखे हैं जिन्हें उसकी चाची नहाने के बाद पहनने वाली थी। जयदीप ने आगे बढ़ कर उन कपड़ों को ग़ौर से देखा। साड़ी ब्लाउज पेटीकोट व ब्रा पैन्टी सब बड़े सलीके से रखे हुए थे। जयदीप की नज़र ब्रा और पैन्टी पर पड़ी। उसने बिना कुछ सोचे समझे तथा बिना एक पल गवॉए अपना हाथ बढ़ा कर बेड से चाची की लाल रंग की ब्रा को उठा लिया। ब्रा अच्छी क्वालिटी की थी, उसके कप देख कर जयदीप की आॅखों में अजीब सी चमक आ गई। उसने ब्रा को अच्छी तरह से उलटा पलटा कर देखा। ब्रा पर नज़र पड़ते ही वह अजीब तरह से मुस्कुराया और फिर उस ब्रा को अपनी नॉक के पास लाकर उसे सूॅघने लगा। ब्रा की सुगंध ने अपना असर दिखाया और जयदीप की आॅखें एक अजीब सी खुमारी से बंद होती चली गई। उसका रोम रोम रोमॉच से भरता चला । कुछ देर इसी तरह वह ब्रा को सूॅघता रहा फिर उसने अपनी आॅखें खोली और ब्रा से नज़र हटा कर उसने बेट पर पड़ी चाची की पैन्टी की तरफ देखा। तुरंत ही उसने पैन्टी को उठा लिया और उसे भी उलट पलट कर देखने लगा। वह अजीब तरह से मुस्कुराया और फिर शीघ्र ही पैन्टी के उस भाग को अपनी नॉक के पास लाकर सूॅघने लगा जिस भाग में उसकी चाची का योनी भाग होता है। पैन्टी के योनी भाग को सूॅघते ही उसकी आॅखें पुनः बंद होती चली गई। वह अपनी नॉक से ज़ोर ज़ोर से सासे खींचने लगा। तभी वह किसी आहट से बुरी तरह चौंका, उसने तुरंत अपनी आॅखें खोल कर इधर उधर देखा किन्तु कहीं कोई नहीं था, बस कानों में कमरे से अटैच बाथरूम में पानी गिरने की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

जयदीप को सहसा ख़याल आया कि चाची तो अंदर बॉथरूम में है। जिसे नहाते हुए देखने के लिए वह न जाने कब से तड़प रहा था। आज उसे ये सुनहरा मौका मिला है तो उसे ये मौका किसी भी कीमत पर गवॉना नहीं चाहिए। ये सोचते ही उसने अपने हाथ में ली हुई ब्रा पैन्टी को बेड पर उसी तरह सलीके से रख दिया और फिर पलट कर दबे पॉव बाथरूम के दरवाजे की तरफ बढ़ा।

बाथरूम के दरवाजे के पास पहुॅच कर उसने देखा कि बाथरूम का दरवाजा बंद तो था किन्तु अंदर से कुंडी नहीं लगी थी। बल्कि हल्का सा खुला ही नज़र आ रहा था। अपर्णा ने शायद इस लिए बाथरूम की कुंडी अंदर से नहीं लगाई थी कि उसकी समझ में कमरे का दरवाजा अंदर से बंद है, इस लिए किसी के अंदर आने का कोई सवाल ही नहीं है। जबकि इधर जयदीप ये देख कर हैरानी के साथ साथ खुश हो गया कि उसकी चाची ने आज हर तरफ से उसका रास्ता खुला रखा है।

जयदीप ने अपने ज़ोर ज़ोर से धड़क रहे दिल के साथ बाथरूम के दरबाजे में बाहर इस तरफ लगे हैण्डल को आहिस्ता से पकड़ कर दरवाजे को बाथरूम की तरफ हल्के से ढकेला।

परिणामस्वरूप दरवाजा बेआवाज़ खुलता चला गया किन्तु जयदीप ने दरवाजे को ज्यादा खोलना मुनासिब न समझा बल्कि उतना ही खोला जितने में वह अंदर नहाती हुई अपनी चाची को आराम से देख सके। जयदीप ने धाड़ धाड़ बजती हुई अपने दिल की धड़कनों के साथ बाथरूम के अंदर की तरफ देखा....और यहीं पर दो चीज़ें एक साथ हुईं। इधर जयदीप ने अंदर नहाती हुई अपनी चाची के बेपर्दा जिस्म को देखा और उधर बाहर से कमरे में दाखिल होकर सुंदर ने बाथरूम में अंदर की तरफ झाँकते अपने भतीजे जयदीप को देखा। और....और.....

" जयदीप ऽऽऽऽऽऽऽ। " सुंदर ने शेर की तरह दहाड़ते हुए आकर जयदीप को पीछे से उसके शर्ट की कालर से पकड़ कर अपनी तरफ एक झटके से खींचा , और खींचते हुए ही कमरे से बाहर बड़े से ड्राइंग रूम में ले गया। और इसके बाद शुरू हुई जयदीप की लात घूँसों से धुनाई।

" तेरी हिम्मत कैसे हुई हरामखोर अपनी चाची को बाथरूम में इस तरह नहाते हुए देखने की ??" सुंदर ने गुस्से से कहने के साथ ही जयदीप को उठा कर पक्के फर्श पर पटक दिया। जयदीप की दर्द भरी चीख पूरे घर में गूँज गई।

" बोल हरामजादे बोल। " फर्श पर दर्द से कराहते जयदीप के पेट में सुंदर ने ज़ोर से लात जमाते हुए कहा _" तेरी हिम्मत कैसे हुई ये नीच काम करने की ?? बोल वरना यहीं पर जिंदा दफन कर दूँगा। "

" मु मुझे माफ आहहहह कर दीऽऽजिए चाचा जी। " लात घूँसों के निरंतर पड़ने से कराहते हुए जयदीप ने अपने हाथ जोड़ने का प्रयास करते हुए कहा _" मुझे माफ कर दीजिए , मुझसे ग़लती हो गई। आहहहहह माफ कर दीजिए चाचा जी ... अब दुबारा ऐसा कभी नहीं करूगा चाचा जी। आहहहहह एक बार माफ कर दीजिए आहहहह। "

" तुझे माफ कर दूँ कुत्ते ???" जयदीप को कालर से पकड़ कर उठाते हुए सुंदर ने गुर्राते हुए कहा _" नहीं हर्गिज़ नहीं। तू माफी के लायक नहीं है। तूने जो नीच काम करने का दुस्साहस किया है उसके लिए तो तुझे जिंदा मार देना चाहिए। "

इधर सुंदर लात घूँसों से जयदीप की कुटाई किये जा रहा था उधर अपर्णा की हालत भी खराब हो गई थी। दरअसल सुंदर जब पहली बार कमरे में आकर जयदीप को बाथरूम में झाँकते देख दहाड़ा था तभी अपर्णा उछल पड़ी थी। सुंदर के मुख से जयदीप का नाम सुनते ही वह समझ गई थी कि क्या माज़रा है? उसे इस ख़याल ने ही बुरी तरह हिला कर रख दिया था कि उसकी जेठानी का लड़का जयदीप जो खुद भी उसके बेटे के समान ही है वो उसे नंगी हालत में नहाते हुए बाहर से छिप कर देख रहा था। इतना ही नहीं वह सुंदर के द्वारा ये नीच काम करते हुए रँगे हाथो पकड़ा भी गया था।

अपर्णा मारे शर्म के तथा इस हादसे से बाथरूम के फर्श में उसी तरह नंगी हालत में बैठी तथा अपने दोनो घुटनों के बीच मुँह छुपाए बुरी तरह रोए जा रही थी। उसकी मारे शर्म और सुंदर के डर से हिम्मत ही नहीं हो रही थी कि वह यहाँ से बाहर कमरे में जाए। उसे जैसे खुद का होश ही नहीं रहा था कि वह इस वक्त किस हालत में है। उसके कानों में बाहर से आती आवाज़ें

साफ सुनाई दे रही थी। जिन आवाज़ों में जयदीप की दर्द भरी चीखें और सुंदर का शेर की तरह गरजना शामिल था।

इधर सुंदर सिंह जयदीप को लात घूँसों से मारते मारते अधमरा कर दिया। जयदीप इतनी कुटाई के बाद बेहोश हो चुका। उसके जिस्म में कई जगह नीले निशान पड़ चुके थे। आॅख नॉक मुँह सब फूल गए थे, तथा नॉक व होंठ फट गए थे जहॉ से खून बह रहा था। जयदीप के बेहोश होने के बाद भी सुंदर सिंह का गुस्सा शान्त नहीं हुआ था। उसने जयदीप को उठा कर अपने कंधे में डाला और घर से बाहर निकल गया।

घर से बाहर आकर सुंदर अपने बड़े भाई सत्यम सिंह के घर की तरफ बढ़ता चला जा रहा था। कछ ही देर में वह सत्यम सिंह के घर के अंदर ड्राइंग रूम में पहुँच गया। ड्राइंग रूम में इस वक्त कोई नज़र न आया।

" भाभीऽऽऽऽ। " अपने कंधे पर जयदीप को उसी तरह लिए हुए सुंदर ड्राइंग रूम में खड़े होकर पूरी शक्ति से चिल्लाया था।

उसके इस तरह चिल्लाने का असर ये हुआ कि दो पल में ही कमरे से बाहर लगभग दौड़ती हुई सोनिया ड्राइंग रूम में दाखिल होती नज़र आई।

" क् क्या हुआ सुंदर ???" सोनिया ने आते ही सुंदर से पूछा _" क्या बात है तुम इस तरह चिल्लाए क्यों ???"

सोनिया की बात सुन कर सुंदर सिंह ने अपने कंधे से जयदीप को उतार कर सामने रखे सोफे के पास जाकर सोफे पर जयदीप को लगभग पटक दिया। सोनिया की नज़र जैसे ही अपने बेटे की अधमरी हालत पर पड़ी तो उसके हलक से चीख निकल गई।

" ये ये क्या हो गया मेरे बेटे को ?" सोनिया दौड़ कर जयदीप के चेहरे को अपने हाथो में लेकर रोते हुए बोली _" किसने की मेरे बेटे की ऐसी हालत ??? सुंदर इसे कहॉ से लेकर आए हो तुम ?? प्लीज बताओ क्या हुआ है इसे ?? किसने किया ये सब ??"

" मैंने की है इसकी ये दुर्दशा। " सुंदर ने बर्फ की मानिंद ठंडे स्वर में कहा _" और जी तो चाहता है कि इसे अभी जान से मार दूँ। "

" सुंदऽऽऽर। " सोनिया एक झटके में खड़ी होकर चिल्लाते हुए कहा _" तुम होश में तो हो ? ये क्या बोल रहे हो तुम ??"

" शुकर मनाइए भाभी कि मैंने अपना होश नहीं खोया था। " सुंदर ने पहली बार अपनी भाभी की आॅखों में आॅखें डाल कर तथा गुर्राते हुए कहा _" वरना जिस बेटे को बेटा कहते

हुए आपकी ज़ुबान नहीं थकती न उसे आज ज़िन्दा ही ज़मीन के अंदर दफन कर दिया होता। "

" तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझसे इस लहजे में बात करने की ?" सोनिया ने चीखते हुए कहा _" तुम भूल गए हो कि तुम किससे बात कर रहे हो ? अपने से बड़ों की तमीज़ भूल गए हो तुम ? और ..... और मेरे बेटे के बारे में ऐसा बोलने की हिम्मत कैसे हुई तुम्हारी ??"

" मुझे तमीज़ और संस्कार न बताइए भाभी। " सुंदर ने कठोर भाव से कहा _" बल्कि इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत आपके बेटे को है , इस हरामज़ादे को सिखाइए तमीज़ और संस्कार। आज इसने जो नीच हरकत की है , इसकी जगह कोई और होता तो अब तक मेरे हाथो जान से मार दिया गया होता। आपका और बड़े भैया का ख़याल कर लिया इस लिए इसे ज़िन्दा छोंड़ दिया है मैंने। मगर आइंदा अगर इसने मेरे घर की तरफ देखने की भी ज़ुर्रत की तो इसके लिए अच्छा नहीं होगा। "

सोनिया को एकाएक झटका सा लगा। सारा गुस्सा सारा चीखना चिल्लाना साबुन के झाग की तरह डण्डा पड़ता चला गया। सुंदर की इस बात ने उसे अंदर ही अंदर बुरी तरह चौंका दिया कि उसके बेटे ने कोई नीच हरकत की है। अपने पति व बेटे की रॅग रॅग से वाकिफ सोनिया समझ गई कि उसके बेटे ने कोई ग़लत हरकत की है, मगर क्या??

" आख़िर ऐसा क्या किया है मेरे बेटे ने सुंदर ??" सोनिया ने तनिक हल्के लहजे से कहा _" जो तुम इसे जान से मार देने की बात कर रहे हो ?"

" क्या बताऊँ आपको ?" सुंदर ने अजीब भाव से कहा _" मुझे तो आपसे बताने में भी शर्म आती है लेकिन इस हरामज़ादे को उस नीच काम करने में ज़रा भी शर्म नहीं आई। "

" सुंदर प्लीज , बताओ मुझे कि क्या किया है इसने ??" सोनिया का दिल बुरी तरह धड़कने लगा था किसी आशंकावश।

" ये अपर्णा को उसके बाथरूम में छिप कर नहाते हुए देख रहा था। " सुंदर ने गुर्राते हुए कहा _" आज स्कूल में एक मास्टर की मृत्यु हो गई थी इस लिए स्कूल में सभी बच्चों की छुट्टी कर दी गई। मैं भी घर लौट आया , मगर मुझे क्या पता था कि घर आते ही मुझे इसकी गंदी करतूत देखने को मिलेगी ? जैसे ही मैं कमरे में दाखिल हुआ तो मेरी नज़र बाथरूम के दरवाजे से छिप कर बाथरूम में देखते आपके इस नीच बेटे पर पड़ी। ये अपर्णा को नहाते हुए जाने कब से देख रहा था। इसे इस बात का भी ख़याल नहीं रहा कि अपर्णा इसकी चाची है जो खुद इसके मॉ के ही समान है उसे यह इस नीचता से कैसे देख सकता है ??"

" सचमुच सुंदर। " सोनिया ने सारी बात सुनते ही दुखी भाव से कहा _" इसने बहुत बड़ा पाप किया है। इसे ऐसा करने की तो बात दूर बल्कि ऐसा करने की सोचना भी नहीं चाहिए था। अच्छा किया तुमने जो इसे इसकी नीचता की सज़ा दे दी। ये माफी के लायक नहीं है सुंदर .... मगर मैं तुमसे हाथ जोड़ कर माफी मॉगती हूँ इसकी तरफ से। आइंदा ये ऐसा कुछ

नहीं करेगा। "

" जिसके मन में इस तरह के नीच और बुरे विचार एक बार पैदा हो जाते हैं वो इतना जल्दी ज़हन से नहीं जाते। " सुंदर ने कहा _" इस लिए इससे मेरा भरोसा अब उठ चुका है , और अब अगर ये मेरे घर के आस पास भी नज़र आया तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा ?"

" अब ये कुछ भी ऐसा वैसा नहीं करेगा सुंदर। " सोनिया ने कहा _" मैं इस बात का वचन देती हूँ तुम्हें। मैं बहुत शर्मिंदा हूँ कि मेरे बेटे ने ऐसी नीच व घटिया हरकत की। "

" ये सब आप और बड़े भैया के लाड़ प्यार का नतीजा है भाभी। " सुंदर ने कहा _" आप लोगों ने हमेशा इसकी ग़लतियों पर पर्दा डाला है , वरना ये ऐसा न बनता। मुझे इसकी करतूतों के बारे में सब पता है , ये गॉव की हर लड़की और औरत पर गंदी नज़र रखता है। लेकिन मुझे ये नहीं पता था कि इसकी गंदी नज़र अपनी ही मॉ समान चाची पर भी हैं , और क्या पता इसकी ये गंदी नज़रें परिवार की किन किन लड़कियों और औरतों पर हैं ??? जिसे अपनी हवस के आगे रिश्तों का कोई ख़याल ही न हो वो परिवार की किसी भी औरत के बारे में कुछ भी सोच और कर सकता है। "

" ऐसा नहीं है सुंदर। " सोनिया की ये सोच कर अब हालत ख़राब होने लगी थी कि सुंदर उसके बेटे की करतूतों को जानता है और उसके बारे में अब ऐसा बोल रहा है। वो तो जानती ही थी कि उसका बेटा अपने बाप की तरह ही परिवार की हर लड़की व औरत को अपने नीचे लेटाना चाहता है। उसका बस चले तो वो अपनी मॉ को भी अपने नीचे लेटाने में एक पल भी जाया न करे। आज उसी बेटे की करतूतों से सारा बना बनाया खेल बिगड़ गया था। सुंदर के सामने ये सब हो गया इस लिए हालातों को संभालने की गरज़ से उसने कहा _" मेरा बेटा इतना नीच और गिरा हुआ नहीं है कि वो परिवार की औरतों के बारे में ऐसा सोचे। मैं मानती हूँ कि उसने ग़लती की है , और इस उमर में ऐसा हो जाता है , लेकिन ये सच है कि उसे अपनी मॉ समान चाची को ऐसे छिप कर नहाते हुए नहीं देखना चाहिए था। मैं समझाऊँगी उसे कि ऐसा सोचना भी पाप है। तुम प्लीज ये सब बातें सत्यम से मत कहना वो इस सबके लिए इसे माफ नहीं करेंगे , बल्कि इसे मार मार कर घर से निकाल देंगे। "

" आप अब भी इसे बचाने के बारे में सोच रही हैं ?" सुंदर ने एकाएक आवेशयुक्त लहजे से कहा _" इसकी ऐसी नीच हरकतों को बड़े भैया से छुपाने की बात कर रही हैं आप ? नहीं भाभी नहीं ... इसने जो किया है उसका पता बड़े भैया को भी चलना चाहिए। उन्हें भी तो पता चले कि उनका सपूत कितने बड़े बड़े काम करता है , ताकि उनका सिर गर्व से उठ जाए। "

सोनिया उससे क्या कहती??? उससे क्या कहती कि जिन बातों को वह अपने बड़े भाई से बताने की बात कर रहा है, उन सब बातों का उसके भाई को पहले से ही सब पता है। बल्कि अगर ये कहा जाए तो ज़रा भी ग़लत न होगा कि इस सबका असली कर्ता धर्ता ही वही है। मगर सोनिया ये सब सुंदर से कह नहीं सकती थी बल्कि उसने तो प्रत्यक्ष में बस यही

कहा_"मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ती हूॅ सुंदर, प्लीज इस सबके बारे में तुम सत्यम से कुछ मत कहना। वो इसे घर से निकाल देंगे। मैं मानती हूॅ कि इसने जो किया है वो माफी के काबिल नहीं है लेकिन प्लीज सुंदर इसे इसकी पहली और आख़िरी ग़लती समझ कर माफ़ कर दो, और इस सबको भूल जाओ। मैं तुमसे वादा करती हूॅ कि अब से ये तुम्हारे घर की तरफ कभी देखेगा भी नहीं।"

सुंदर गुस्से से भरी आॅखों से सोनिया की तरफ देखता रहा। कुछ बोला नहीं उसने जबकि उसके इस प्रकार गुस्से से देखने पर सोनिया ने कहा_"सुंदर, शान्त हो जाओ प्लीज। तुम चाहो तो इसके कुकर्म की मुझे जो चाहे सज़ा दे दो। इसने तुम्हारी पत्नी व अपनी चाची को जिस नीचता से छिप कर नहाते हुए देखा है उसके लिए तुम जो चाहे मुझे सज़ा दे दो। तुम्हारी हर सज़ा को मैं बिना कुछ बोले स्वीकार कर लूॅगी। मगर इस सबको भूल कर इसे माफ कर दो प्लीज।"

" भगवान जानता है कि मैंने कभी अपने परिवार के बारे में ग़लत नहीं सोचा , बल्कि हमेशा सबको अपना मान कर उन्हें यथोचित सम्मान दिया है। " सुंदर कह रहा था _" शिवम भैया की मौत तथा मॉ बाबू जी के कोमा में चले जाने के बाद इस हवेली में रहने वालों की सोच को न जाने क्या हो गया है ?? मुझे नहीं पता कि रेणुका भाभी , तथा उनके बच्चों ने ऐसा क्या कर दिया था कि उन्हें उसकी कीमत इस हवेली से तथा सबसे रिश्ता तोड़ कर चुकानी पड़ी। मुझे यकीन नहीं होता कि शिवम भैया और रेणुका भाभी ने कभी कोई ग़लत कदम उठाया रहा होगा। बल्कि वो तो ऐसे थे कि उन्हें अगर देवी देवता की तरह पूजा भी जाता तो ग़लत न होता। शिवम भैया की मौत के बाद ऐसा क्या हो गया था कि रेणुका भाभी को उनके बच्चों सहित इस हवेली से बाहर हमारे खेत में बने मकान के सिर्फ एक ही कमरे में रह कर अपना जीवन यापन करना पड़ा। बात यहीं पर खत्म नहीं हो जाती बल्कि सोचने वाली बात ये भी है उन लोगों ने इस सबके बाद भी ऐसा क्या कर दिया था कि उन्हें खेत के उस कमरे को भी छोंड़ कर जाना पड़ा ??? जहॉ तक मुझे पता है विक्रम आया था अपनी मॉ और बहन से मिलने। सुबह जयदीप के साथ उसकी मार पीट हुई थी। शायद यही वजह रही होगी कि वो लोग इस डर से वहॉ से भी पलायन कर गए कि जयदीप के साथ मार पीट करने से सत्यम भैया उन पर गुस्सा करेंगे। मैं सोचता था कि विक्रम ने जयदीप के साथ मार पीट क्यों की थी ?? मगर अब समझ गया हूॅ कि जयदीप को मार मार कर अधमरा कर देने की वजह इसकी ही कोई नीच हरकत रही होगी। इस नीच की गंदी नज़र रेणुका भाभी या निशा बिटिया पर भी रही होगी। रेणुका भाभी ने अपने बेटे को इसकी इन नीच हरकतों के बारे में बताया होगा और कहा होगा कि बेटा हमें यहॉ से ले चल। यकीनन यही सब बातें हुई रही होंगी। "

सुंदर सिंह क्या क्या बोले जा रहा था ये सब अब सोनिया के सिर के ऊपर से जाने लगा था। उसके पैरों तले से ज़मीन कब की निकल चुकी थी। दिलो दिमाग़ में भयंकर विस्फोट हो रहे थे। दिल की धड़कनें रुक रुक कर इस तरह चल रही थीं जैसे उसे ज़िंदा रखने के लिए उस पर कोई एहसान कर रही हों। आॅखों के सामने अंधेरा छाने लगा था। ज़हन में एक ही ख़याल कत्थक कर रहा था कि 'सब कुछ खत्म'।

" आज इसने ये सब करके मुझे इस सबके बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया है भाभी। " सुंदर सिंह नॉनस्टाप कहे जा रहा था _" और अब मैं खुद पता करू गा कि सच्चाई क्या है ? मैं रेणुका भाभी और उनके बच्चों को खोजूँगा , और उनसे पूँछूँगा कि उन्होंने ऐसा क्या किया था कि उन लोगों को अपने ही घर से सब कुछ छोंड़ कर जाना पड़ा ?? अब से मेरे पास सिर्फ यही एक काम होगा भाभी , मैं हर कीमत पर इस सच्चाई का पता लगाऊँगा। "

इतना कह कर सुंदर सिंह वहाँ से चला गया अपने घर की तरफ, इस बात से अंजान कि घर में कौन सी आफत उसका इन्तज़ार कर रही है?? जबकि उसकी इन बातों से सोनिया को लगा कि उसे चक्कर आ जाएगा। उसने बड़ी मुश्किल से खुद को संभाला और असहाय अवस्था में धम्म से सोफे पर लगभग गिर सी पड़ी।

इधर अपर्णा अब अपने कपड़े वगैरा पहन चुकी थी। तथा बेड पर गुमसुम सी बैठी थी। उसके पास ही उसकी बेटी सृष्टि बैठी थी। सृष्टि उमर में छोटी भले ही थी किन्तु हमेशा शान्त रहने वाली ये लड़की सब बातों को समझती थी। उसे अपने बड़े पापा व बड़ी माँ का ये बेटा जयदीप कभी पसंद नहीं आया था। वह इतनी नासमझ नहीं थी कि जयदीप की हरकतों तथा उसकी आँखों में गिजबिजाते हवस के कीड़ों को पहचान न पाती। उसने हज़ारों बार अपनी आँखों से देखा था कि जयदीप हमेशा उसकी माँ और खुद उसे भी कभी कभी गंदी नज़र से देखता था। वह उसकी हवस से भरी नज़रों को हमेशा अपने सीने पर मौजूद छोटे छोटे उभारों पर महसूस करती थी। किन्तु डर व संकोच की वजह से वह कभी इस सबके बारे में अपनी माँ से नहीं बताती थी।

सुंदर और सृष्टि दोनो साथ ही स्कूल से घर आए थे। और आते ही जो हंगामा हुआ था उस सबको सृष्टि ने अपनी डरी सहमी आँखों से देखा था। वह समझ गई थी कि उसका बाप जयदीप को किस बात पर इतनी बुरी तरह मार रहा था। उसने चुपके से अपनी माँ के कमरे में जा कर बाथरूम में देखा था। बाथरूम में उसकी माँ नग्न अवस्था में फर्श पर अपने दोनो घुटनों के बीच मुह छुपाए बैठी रो रही थी। अपनी माँ को नग्न अवस्था में बैठे इस तरह रोते देख वह हैरान रह गई थी। पहली बार अपनी ही माँ को नंगी हालत में देखा था उसने। जबकि खुद के जिस्म को अपने सामने भी देखने का कभी उसे ख़याल ही नहीं आया था।

डरी सहमी हालत में वह कुछ देर अपनी माँ को देखती रही फिर हिम्मत करके वह पलटी और बेड से अपनी माँ के सारे कपड़े उठा कर उसने बाथरूम के बाहर से ही अपर्णा की तरफ उछाल दिया। अपने नंगे बदन पर अचानक कपड़ों के पड़ने से अपर्णा बुरी तरह हड़बड़ा गई। उसकी नज़र पहले खुद के ऊपर गिरे हुए कपड़ों पर पड़ी फिर बाथरूम के गेट पर डरी सहमी खड़ी अपनी बेटी पर। सृष्टि पर नज़र पड़ते ही वह चौंकी। एकाएक ही उसे अपनी नग्नता का एहसास हुआ। उसने हड़बड़ाकर अपने नंगे बदन को छिपाने के लिए उन कपड़ों से अपने बदन के गुप्तांगों को ढँका। जबकि बाथरूम के गेट पर खड़ी सृष्टि शीघ्र ही अपनी नज़रें अपनी माँ पर से हटा कर वापस पलट गई। बाहर जयदीप की धुनाई और उसकी दर्द में डूबी हुई चीखें चालू थी। कुछ देर बाद अपर्णा अपने कपड़े पहन कर बाथरूम से बाहर निकली और बेड पर बैठी अपनी बेटी सृष्टि को देख कर उसके जिस्म में एक अजीब सी झुरझुरी महसूस होती चली गई।

चेहरे पर लाज और शर्म की लाली फैल गई और उसका सिर झुक गया। अपनी ही बेटी से नज़र मिलाने की हिम्मत न हुई उसमें।

" मम्मी। " सृष्टि बेड से उठकर तथा दौड़ते हुए आकर अपनी मॉ से लिपट गई। उसकी आॅखों से आॅसू बहने लगे थे। अपर्णा को समझ न आया कि वह अपने सीने से लिपटी तथा आॅसू बहाती बेटी से क्या कहे ?? उसके दिलो दिमाग़ में अंधड़ सा मचा हुआ था। कमरे के बाहर से अब कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। शायद सुंदर जयदीप को लेकर जा चुका था।

अपर्णा कुछ पल बुत बनी खड़ी रही फिर जाने क्या सोच कर उसने अपने सीने से सृष्टि को अलग करके कहा_"जाओ अपने कमरे में और अपनी इस स्कूली ड्रेस को चेंज कर लो।"

सृष्टि ने अजीब भाव से अपनी मॉ के चेहरे की तरफ देखा, और फिर पलट कर कमरे से बाहर निकल गई। इधर सृष्टि के जाते ही अपर्णा के चेहरे पर एकाएक पत्थर जैसी कठोरता आ कर ठहर गई। ऐसा लगा जैसे उसने किसी बात का बहुत बड़ा फैंसला कर लिया हो।

सुंदर गुस्से में तथा भभकते हुए सत्यम सिंह के घर से बाहर आकर अपने घर की तरफ जाने लगा। अभी वह अपने घर की बाउंड्री पार ही किया था कि उसे उसकी बेटी सृष्टि भागते हुए घर से बाहर उसकी तरफ ही आती दिखी। बुरी तरह रोये जा रही थी वह। सुंदर को देख कर वह उससे रोते हुए लिपट गई, फिर तुरंत ही अपने पिता से अलग हुई।

" पापा वो म मम्मी ... मम्मी ने। " सृष्टि रोये जा रही थी। उसके मुख से कुछ निकल ही नहीं रहा था।

" क्या हुआ बेटी ... क्या कह रही है तू ?" सुंदर अंजानी आशंका से घबरा गया।

" पापा , वो मम्मी कमरे का दरवाजा ही नहीं खोल रही हैं। " सृष्टि ने रोते हुए कहा _" मैने बहुत बार मम्मी को पुकारा लेकिन मम्मी न तो दरवाजा खोल रही हैं और ना ही कुछ बोल रही हैं। पापा मम्मी ने कहीं कुछ कर तो नहीं लिया ? आप उन्हें बचा लीजिए जल्दी से। "

" क्याऽऽऽ ???" सुंदर बुरी तरह चौंका , और साथ ही दौड़ पड़ा घर के अंदर की तरफ। उसके पीछे सृष्टि भी रोते हुए दौड़ पड़ी थी।

सुंदर जितना तेज़ दौड़ सकता था उतना तेज़ दौड़ कर ही उस कमरे के पास पहुॅचा था जिस कमरे के अंदर अपर्णा थी।

" अपर्णा ऽऽऽ दरवाजा खोलो। " सुंदर ने चीखते हुए कहा _" ये क्या बेवकूफी है ??? दरवाजा खोलो जल्दी। अपर्णा ऽऽऽ। "

सुंदर के चिल्लाने का कोई असर न हुआ। वह कुछ देर इसी तरह अपर्णा को पुकारता रहा।

मगर ना तो दरवाजा खुला और ना ही अंदर से अपर्णा ने कुछ कहा। सुंदर को किसी अनिष्ट की आशंका हुई। उसने दरवाजे को तोड़ने की कोशिश करने लगा।

" अपर्णा , प्लीज दरवाजा खोलो। " सुंदर दरवाजे को तोड़ने के साथ साथ कहता भी जा रहा था _" ये तुम क्या पागलपन कर रही हो ? अगर तुम ये समझती हो कि इस सबमें तुम्हारा कोई दोष है तो तुम ग़लत समझ रही हो अपर्णा । तुम मेरी अपर्णा हो , मुझे तुम पर खुद से भी ज्यादा भरोसा है। तुम कभी ग़लत नहीं हो सकती। मैं जानता हूँ कि उस हरामज़ादे ने ही तुम्हें ग़लत इरादे से देखने की कोशिश की है। तुम तो उसे अपना बेटा ही मानती हो अपर्णा । तुम कहीं भी ग़लत नहीं हो , प्लीज ऐसा वैसा कुछ मत करना। "

सुंदर पूरी शक्ति से कमरे के दरवाजे को तोड़ने के लिए धक्के मार रहा था। पास में ही उसकी बेटी सृष्टि भी खड़ी थी, जो सिसक सिसक कर रोये जा रही थी। अंदर ही किसी कमरे में रणदीप के रोने की भी आवाज़ आ रही थी। लेकिन उसके रोने की तरफ किसी का ध्यान नहीं था।

" तुम मुझे सुन रही हो न अपर्णा ?" सुंदर अधीर भाव से कह रहा था _" तुम्हें मेरी कसम है , तुम कोई भी ग़लत क़दम नहीं उठाओगी। तुम मेरी जान हो अपर्णा , तुम्हारे बिना जीने की मैं सोच भी नहीं सकता। तुम्हें ये सब करने की या सोचने की कोई ज़रूरत नहीं है। तुम मेरी नज़र में उसी तरह गंगा की तरह पवित्र हो अपर्णा । प्लीज ऐसा वैसा कुछ मत करना , वरना तुम्हारी कसम सारी दुनियाँ को आग लगा दूँगा मैं। "

बड़ी मुश्किल से और भीषण प्रहार के बाद आख़िर दरवाजा टूट ही गया। कमरे के अंदर की तरफ टूट कर गिरा था दरवाजा। सुंदर ने एक भी पल नहीं गँवाया। बिजली की सी तेज़ी से वह कमरे के अंदर दाखिल हुआ। और.....

" न नहींऽऽऽऽ। " सुंदर के हलक से चीख निकल गई। कमरे में पहुँचते ही उसने देखा कि अपर्णा कमरे की छत पर लगे पंखे के नीचे रस्सी के सहारे झूल रही थी। रस्सी का फंदा उसके गले में था तथा रस्सी का दूसरा सिरा कमरे की छत पर बीचो बीच लगे लोहे के कुंडे में फँसा था। नीचे फर्श पर एक स्टूल लुढ़का हुआ पड़ा था।

स्पष्ट था कि अपर्णा ने आत्म हत्या करने के लिए ही ये सब किया था। वह इस घटना के बाद खुद को ही इस सबका दोषि मानती थी। वो समझती थी कि अब वह किसी को मुँह दिखाने के काबिल नहीं रही है। वह समझती थी कि इस सबके बाद उसके पति उसे ग़लत समझेंगे। शायद इसी वजह से उसने ये क़दम उठाया था।

सुंदर बुरी तरह उसके पैरों से लिपटा रोये जा रहा था, उसकी बेटी सृष्टि का भी वही हाल था। अचानक सुंदर को जाने क्या सूझा कि उसने तुरंत ही बेड को खींचा और अपर्णा के पैरों के नीचे उसी लुढ़के पड़े स्टूल को रखा। जिससे अपर्णा के गले में फँसा रस्सी का फंदा टाइट न हो। सुंदर खुद बेड पर चढ़ गया और अपर्णा के गले से रस्सी के फंदे को छुड़ाने लगा।

कुछ ही पल में अपर्णा के गले से रस्सी का फंदा निकल गया। अपर्णा के गले में फंदा फॅसा हुआ था जिसकी वजह से अपर्णा की आॅखें व जीभ बाहर आ गई थी। सुंदर ने अपर्णा को अपने दोनो हाथो से संभाल कर उसी बेड पर आहिस्ता से लिटाया, और अपर्णा की नब्ज चेक करने लगा। सुंदर ये महसूस करते ही खुश हो गया कि अपर्णा की नब्ज अभी चल रही है। मतलब उसने अपर्णा को सही समय पर सही सलामत बचा लिया था। अगर थोड़ी देर और हो जाती तो शायद भगवान भी अपर्णा को मौत से बचा नहीं पाते। सुंदर ने खुश हो कर अपर्णा को खुद से चिपका लिया। सृष्टि भी दौड़ कर अपनी मॉ से लिपट गई।

अपर्णा अभी बेहोशी की अवस्था में थी। सुंदर के कहने पर सृष्टि ने तुरंत ही एक ग्लास में पानी लाकर सुंदर को दिया। सुंदर उस पानी से हल्के हल्के छीटे डालकर अपर्णा को होश में लाने की कोशिश करने लगा। कुछ ही देर में अपर्णा को होश आ गया। उसने गहरी गहरी सासे लेते हुए अपनी आॅखें खोली। सबसे पहले नज़र अपने पति पर ही पड़ी उसकी। वस्तुस्थित का ख़याल आते ही उसका चेहरा बिगड़ने लगा। आॅखों से आॅसू बहने लगे।

" मुझे क्यों बचाया सुंदर आपने ?" फिर उसने उठकर रोते हुए कहा _" मुझे मर जाने दिया होता न। इस सबसे मुक्ति तो मिल जाती मुझे। "

" तुमने ये सब करने से पहले क्या एक बार भी नहीं सोचा था अपर्णा कि तुम्हारे बाद मेरा और हमारे बच्चों का क्या होता ?" सुंदर ने भर्राए स्वर में कहा _" तुमने क्या सोच कर ये सब किया अपर्णा ? क्या तुम ये समझती थी कि इस सबकी वजह से मैं तुम पर किसी प्रकार का शक या तुम पर कोई लांछन लगाऊॅगा ?? नहीं अपर्णा नहीं .. हमारा प्यार इतना कमज़ोर नहीं है जो इतनी सी बात पर तुम्हें मुझसे जुदा कर देगा। मुझे तो हर हाल में तुम पर यकीन है अपर्ण ा लेकिन शायद तुम्हें मुझ पर यकीन नहीं रहा। तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं था , अगर होता तो इतना बड़ा फैसला नहीं करती तुम। "

" मुझे माफ कर दीजिए सुंदर। " अपर्णा ने रोते हुए कहा _" मैं जानती हूॅ कि आपको मुझ पर हर तरह से भरोसा है। मगर हालात ऐसे बन गए थे कि मुझे यही लग रहा था कि इस सबकी वजह से मैं अब कहीं भी किसी को मुह दिखाने के काबिल नहीं रही। इसी लिए मैं इस सबको सहन नहीं कर पाई और खुद को खत्म करने का फैसला कर लिया था। "

" आज अगर तुम्हें कुछ हो जाता तो। " सुंदर ने एकाएक ठंडे स्वर में कहा _" मैं उस हरामज़ादे को ज़िंदा नहीं छोंड़ता जिसकी वजह से ये सब हुआ। "

" मुझे नहीं पता था सुंदर कि वो कमीना मुझे इस नज़र से देखता है। " अपर्णा ने कहा _" अगर पता होता तो कभी उसे इस घर में घुसने ही नहीं देती। "

" पापा , जयदीप भैया बहुत गंदे हैं। " सहसा इस बीच सृष्टि ने भी हिम्मत करके कहा _" वो अक्सर अकेले में मुझे गंदी नज़र से देखते हैं। "

" क्याऽऽ ???" सुंदर बुरी तरह उछल पड़ा , फिर गुर्राते हुए बोला _" उस हरामखोर की ये हिम्मत थी की वो मेरी बेटी को भी गंदी नज़र से देखता था ?? नहीं छोंड़ूॅगा उस नीच और

घटिया इंसान कोे , अभी उसे जान से मार दूँगा मैं। "

सुंदर ये सब कह कर बेड से उठने ही लगा था कि अपर्णा ने हड़बड़ा कर तुरंत ही सुंदर का हाथ पकड़ लिया, फिर बोली_"नहीं सुंदर, आप ऐसा कुछ भी नहीं करेंगे। जो कुछ हुआ उससे ये तो पता चल ही गया है कि वो कैसा लड़का है। इस लिए अब उससे कोई मतलब नहीं रखेंगे हम, और ना ही उसे इस घर में आने देंगे।"

" अपर्णाा उस नीच की हिम्मत तो देखोे, वो हमारी इस नन्हीं सी बच्ची के बारे में भी ऐसी नीयत रखता है। " सुंदर ने मारे गुस्से के उफनते हुए कहाा _" उसने एक बार भी नहीं सोचा होगा कि वो ये सब क्या सोचता है और करने का इरादा रखता हैै ? नहीं अपर्णाा , ऐसे नीच और गिरी हुई सोच वाले लड़के को एक पल भी जीवित रखना पाप है। मुझे भैयाा भाभी की कोई परवाह नहीं हैै , मैं उसे किसी भी कीमत पर अब ज़िंदा नहीं छोंड़ूँगा। "

" नहीं सुंदर , प्लीज रुक जाइए। आपको मेरी कसम। " अपर्णाा ने भारी स्वर में कहाा _" सबसे पहले हमें उसके माता पिता से इस बारे में बात करना चाहिए। उन्हें बताना चाहिए कि उनका बेटा कैसी सोच रखता है अपने ही घर की माॅ बहनों के लिए। जल्दबाज़ी में उठाया हुआ क़दम अच्छा नहीं होता सुंदर । खुद को शान्त कीजिए "

" मैं भाभी से बोल आया हूँ कि आज के बाद अगर उनके इस नीच बेटे ने मेरे घर की तरफ देखा भी तो उसके लिए अच्छा नहीं होगा। " सुंदर ने कहा।

" ये आपने अच्छा किया। " अपर्णाा ने कहाा _" दीदी ज़रूर इस संबंध में बड़े भैयाा से बात करेंगी। "

" हमसे बहुत बड़ी ग़लती हुई है अपर्णाा। " सुंदर ने एकाएक अधीर होकर कहाा _" आज मुझे एहसास हो रहा है कि क्यों मेरी देवी समान रेणुकाा भाभी हम सबको छोंड़ कर इस हवेली से अलग खेतों में बने उस मकान पर रहती थीी ? सिर्फ इसी हरामज़ादे की वजह से अपर्णाा । उस रात विक्रम आया था मुंबई सेे , और सुबह उसने ही जयदीप को मार मार कर अधमरा किया था। तब हमने सोचा था कि उसने बेवजह ही किसी खुंदक में जयदीप को मारा था। जबकि अब मुझे सब बातों की समझ आई है कि क्यों विक्रम ने जयदीप को मारा थाा ?"

" क्या मतलब है आपकाा ?" अपर्णाा चौंकी।

" इसी नीच की वजह से अपर्णाा। " सुंदर ने आवेश में कहाा _" ये तो समझ ही गई हो तुम कि जयदीप अपने ही घर की माॅ बहनों के बारे में ऐसी नीयत रखता है। उसने उसी नीयत से रेणुकाा भाभी और हमारी फूल सी बच्ची निशाा पर भी यही सब किया रहा होगा। इसी वजह से ये सब हुआ है। "

" लेकिन अगर ऐसी बात थी तो। " अपर्णाा ने सोचने वाले भाव से कहाा _" रेणुकाा दीदी

को इस बारे में बड़ी दीदी और बड़े भैयाा को बताना चाहिए था। अगर वो ये सब उनसे बताती तो वो अपने बेटे पर लगाम लगाती। लेकिन वो तो हवेली ही छोंड़ कर खेतों वाले मकान में गुड़िया के साथ रहने लगी थी। क्या सिर्फ इतनी सी बात की वजह सेे ??"

" वजह तो हमें यही बताया था भैयाा भाभी ने कि रेणुकाा भाभी ने सोनियाा भाभी के कमरे से उनके जेवर चुराए थे। " सुंदर ने कहाा _" और इतना ही नहीं बल्कि बड़े भैयाा को अपने रूप जाल में फसाने की कोशिश भी की थी। इस लिए बड़े भैयाा ने उन लोगों को हवेली से निकाल दिया था। "

" हॉ तो ग़लत क्या था सुंदर ?" अपर्णाा ने अजीब भाव से कहाा _" रेणुकाा दीदी ने तो सच में बड़े भैयाा के साथ ग़लत करने की कोशिश की थी। इस सबका सबूत भी दिखाया था सोनियाा दीदी ने हम लोगों को। उन फोटोग्राफ्स में साफ साफ दिखता था कि कैसे रेणुकाा दीदी ने बड़े भैयाा को उनके ही कमरे में अपनी बाहों में जकड़ा हुआ था। "

" क्या ये स्वाभाविक बात लगती है अपर्णाा कि बड़े भैयाा रेणुकाा भाभी के साथ उस स्थित में हों और दूसरा कोई उस स्थिति में उनकी फोटो खींचेे ?" सुंदर ने सोचने वाले भाव से कहाा _" जबकि उस स्थिति में होना तो ये चाहिए था कि अगर रेणुकाा भाभी ने बड़े भैयाा को ग़लत नीयत से जकड़ा हुआ था तो इस सबका बड़े भैयाा विरोध करतेे , और रेणुकाा भाभी को इस सबके लिए डॉटते। दूसरी बात उन लोगों की उस वक्त की फोटो बनाने वाला कौन थाा ?? अगर फोटो खींचने वाली सोनियाा भाभी थी तो उन्हें फोटो खींचने की बजाय इस सबको रोंकना था। आखिर फोटो खींचने के पीछे उनका क्या उद्देश्य थाा ? क्या सिर्फ ये कि हम सब उन फोटोज़ को देख कर ये यकीन कर सकें कि रेणुकाा भाभी सच में बड़े भैयाा के साथ ये सब करने की नीयत रखती हैं या ये सब करती भी हैंं ???"

" आप कहना क्या चाहते हैं सुंदर ??" अपर्णाा ना समझने वाले भाव से बोली।

" आज के इस हादसे से मेरे सोचने का नज़रिया बदल गया है अपर्णाा। " सुंदर ने गंभीर लहजे में कहाा _" हम सब जानते थे कि शिवम भैयाा और रेणुकाा भाभी किसी देवी देवता से कम नहीं थे। उन्होंने भूल से भी किसी के साथ कभी भी कुछ ग़लत नहीं किया था। वो पढ़ाई लिखाई में भले ही कमजोर थेे , लेकिन जब से उन्होने खेती बाड़ी का काम संभालाा था तब से हमारे घर के हालात हज़ार गुना बेहतर हो गए थे। यहॉ तक कि उनकी मेहनत और लगन से किसी भी चीज़ की कभी कोई कमी न रही थी। उनकी ही मेहनत और रुपये पैसे से इतनी बड़ी हवेली बनी और उनके ही पैसों से बड़े भैयाा ने अपने कारोबार की बुनियाद रखी थी। मॉ बाबूजी शिवम भैयाा और रेणुकाा भाभी को सबसे ज्यादा मानते थे। शिवम भैयाा और रेणुकाा भाभी ने कभी भी मुझे किसी बात के लिए कुछ नहीं कहाा , बल्कि शिवम भैयाा ने तो उस समय के हिसाब से मुझे एक बुलेट मोटर साइकिल खरीद कर दी थी। पूरे गॉव में किसी के पास बुलेट नहीं थी। इतना ही नहीं उन्होंने अपने ही पैसों से बाबूजी के लिए एक शानदार कार खरीदी थी ताकि बाबूजी बड़े शान से उसमें सवारी करें। घर का बड़ा बेटा होने का जो फर्ज़ सत्यम भैयाा को निभाना चाहिये था वो फर्ज़ शिवम भैयाा निभा रहे थे वो भी अपनी पूरी निष्ठा के साथ। मुझे याद है अपर्णाा कि सत्यम भैयाा और सोनियाा भाभी

कभी भी शिवम भैयाा और रेणुकाा भाभी से ठीक से बात नहीं करते थे। बल्कि उनके हर काम में कोई न कोई नुक्स निकालते ही रहते थे। फिर समय गुज़रा और एक रात शिवम भैयाा को किसी ज़हरीले सर्प ने काट लिया और वो इस दुनिया से चल बसे। उनके इस दुनिया से जाते ही हम सबकी खुशियों पर ग्रहण सा लग गया अपर्णाा । माॅ बाबूजी को उनकी मौत से गहरा सदमा लगा था। हम सब उनके सदमे की वजह से परेशान हो गए थे। बड़े भैयाा और भाभी ने ही उन्हें संभालाा था। एक दिन माॅ बाबूजी उसी कार से शहर जा रहे थे तो रास्ते में उनका एक्सीडेंट हो गया और वो दोनो उस एक्सीडेंट की वजह से कोमा में चले गए। समझ में नहीं आ रहा था कि ये सब क्या हो रहा था हम सबके साथ ?"

" इन सब बातों को सोचने का क्या मतलब है सुंदर ?" अपर्णाा ने कहाा _" जो होना था वो तो हो ही गया। इसमें कोई क्या कर सकता था भलाा ?"

" मैं ये सब कभी नहीं भूला अपर्णाा। " सुंदर ने कहाा _" मैं कभी किसी से कुछ कहता नहीं मगर मेरे अंदर हमेशा ये सब गूॅजता रहता है। आज के इस हादसे ने मेरी आॅखें खोल दी है अपर्णाा । इस हादसे ने ये सोचने पर मजबूर कर दिया है मुझे कि ये जो कुछ भी हुआ वो सब क्या सच था या फिर किसी झूॅठ को छुपाने के लिए उस पर इन सब बातों को गढ़ कर पर्दा डाला गया थाा ? ये तो सच है अपर्णाा कि माॅ बाप का खून और उनके अच्छे संस्कारों की वजह से ही कोई औलाद सही रास्तों पर चलते हुए भविष्य में अपने अच्छे काम और नाम की वजह से अपने माॅ बाप और कुल का नाम रोशन करते हैं। जयदीप को देख कर अंदाज़ा लगाना कोई मुश्किल नहीं है कि उसकी परवरिश और उसके खून में कितनी गंदगी है। दुनियाॅ में बहुत से ऐसे माॅ बाप हैं जिनके एक ही बेटा होता है मगर वो अपने एक ही बेटों को क्या ऐसे संस्कार देते हैं जिसकी वजह से वो अपने ही घर की माॅ बहनो पर बुरी नीयत रखे ?? नहीं अपर्णाा नहीं .... कम से कम मेरी जानकारी में तो ऐसे माॅ बाप और ऐसे बेटे नहीं हैं। ज़रूर इनमें ही कहीं न कहीं कोई ख़राबी है। मैने फैंसला कर लिया है कि मैं खुद सारी सच्चाई का पता लगाऊॅगा। "

" सच्चाई ???" अपर्णाा चौंकी _" कैसी सच्चाई सुंदर ?"

" वहीं सच्चाई अपर्णाा। " सुंदर ने मजबूत लहजे में कहाा _" जो हमसे छुपाई गई और उसके बदले कुछ और ही हमें दिखाया गया। उस समय मैंने इस सबका पता करने की कोशिश इस लिए नहीं की थी क्यों जो कुछ मुझे सबूत के साथ दिखाया गया था उससे मैं अत्यधिक क्रोध और गुस्से में था। उस सूरत में मैं उन लोगों की शकल तक नहीं देखना चाहता था। मगर अब नहीं , अब मैं पता लगाऊॅगा इस सबका। मैं मुंबई जाऊगा अपर्णाा ... और रेणुकाा भाभी तथा उनके दोनो बच्चों को ढूढूॅगा। उनसे ही सच्चाई का पता चलेगा। मैने अपने गुस्से और नाराज गी की वजह से इतने साल बर्बाद कर दिये। कभी सोचा तक नहीं कि एक बार रेणुकाा भाभी से भी पूछ लेना चाहिए कि उन पर जो आरोप लगाया गया था वो सच भी था या झूॅठ ? काश ! मैंने ये सब उनसे पूछा होता। अरे कानून भी हर मुजरिम को अपनी सफाई में कुछ कहने का अवसर देता है , जबकि मैंने तो पूॅछा तक नहीं था। मान लो कि अगर रेणुकाा भाभी पर लगाए गए सारे आरोप सिरे से ही ग़लत हों तो सोचो क्या होगा अपर्णाा ?

मैं अपनी ही नज़रों में गिर जाऊँगा। कितना बड़ा पापी कहलाऊँगा कि अपनी देवी समान भाभी पर लगे झूँठे आरोपों को सच मान कर उनके बारे में क्या क्या सोच लिया था मैंने ?? मुझे नरक में भी जगह नहीं मिलेगी अपर्णा .... मैं तो शर्म से ही मर जाऊँगा। "

" खुद को संभाल िए सुंदर। " अपर्णा की आॅखें छलक पड़ी थी _" यकीनन हमसे बहुत बड़ी भूल हो गई है। मगर अब जो हो गया उसे लौटाया भी तो नहीं जा सकता न ? ईश्वर जानता है कि इस सबके बाद भी हमने कभी उनका बुरा नहीं चाहा है। हमें जो कुछ बताया गया था उससे हमें दुख ज़रूर पहुॅचा मगर इसके बावजूद हमने कभी उनके बारे में बुरा नहीं चाहा। आज आपने अगर इस सबका पता लगाने का फैसला कर ही लिया है तो ये अच्छी बात है सुंदर । सच्चाई का पता तो चलना ही चाहिए। "

" तुम चिन्ता मत करो अपर्णा। " सुंदर ने कहा _" मैंने अब इस बात को जानने का फैसला कर लिया है कि इस सबके पीछे की सच्चाई क्या है। मैं कल ही स्कूल में लम्बी छुट्टी की अर्ज़ी दे दूॅगा। अब मेरे पास सिर्फ यही काम रहेगा .. किसी भी हाल में सच्चाई का पता लगाना। "

" आप हर सच्चाई का ज़रूर पता लगाइये सुंदर। " अपर्णा ने कहा _" लेकिन इस बात का भी ध्यान दीजिए कि वो लोग भी शान्त नहीं बैठेंगे जिन्होंने रेणुका दीदी पर ये सब आरोप लगाये थे। संभव है कि अपनी पोल खुल जाने के डर से वो कोई भी कठोर कदम उठा लें। इस लिए उन लोगों से सतर्क और सावधान रहिएगा। "

" चिन्ता मत करो अपर्णा। " सुंदर ने कठोर भाव से कहा _" मुझे पता है कि अपने रास्ते पर आने वाली रुकावट से कैसे निपटना है। "

" फिर भी सावधान रहिएगा। " अपर्णा ने कहा _" क्योंकि इस सबसे ये तो समझ आ ही गया है कि वो लोग किसी के साथ कुछ भी कर सकते हैं। "

" कुछ भी करने वालों को मैं देख लूॅगा अपर्णा। " सुंदर ने कहा _" मेरे मुंबई जाने के बाद तुम यहॉ सबकी देख भाल अच्छे से करना। सृष्टि तब तक स्कूल नहीं जाएगी जब तक मैं मुंबई से लौट नहीं आता। "

" क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हम सब ही मुंबई चलें ?" अपर्णा ने कहा _" कौन जाने आपके जाने के बाद यहॉ कैसे हालात बन जाएॅ ? उस स्थिति में मैं अकेली औरत भला किसी का कैसे मुकाबला करू गी ??"

" मैं तुम सबको मुंबई नहीं ले जा सकता क्योंकि मुंबई में तुम लोगों को लिए मैं कहॉ कहॉ भटकूॅगा ? अंजान शहर में अपना कहीं कोई ठिकाना भी तो होना चाहिए। " सुंदर ने कहा _" इस लिए तुम ऐसा करो कि कुछ दिन के लिए सृष्टि और रणदीप को लेकर अपने मायके चली जाओ। वहॉ तुम सब सुरक्षित रहोगे , और मैं भी तुम लोगों के लिए निश्चिंत रहूॅगा। "

" हॉ ये ठीक रहेगा। " अपर्णा ने कहा _" आप मेरे भाई को फोन कर दीजिए वो आ जाएगा और हम लोगों को अपने साथ ले जाएगा। "

" ठीक है। " सुंदर ने कहा _" मैं बात करता हूॅ तुम्हारे भाई से , तब तक तुम ज़रा चाय तो बना कर पिला दो मुझे। "

" जी अभी लाई। " अपर्णा ने बेड से उठते हुए कहा।

जैसा कि सुंदर ने निर्णय ले लिया था इस लिए उसने ससुराल में अपने साले चंद्रभान सिंह को फोन कर दिया था और उसे जल्द से जल्द यहॉ से अपर्णा के साथ सृष्टि तथा रणदीप को ले जाने के लिए कह दिया था। सुंदर के साले चंद्रभान ने अचानक इस तरह यहॉ आने और फिर अपने साथ उसकी बहन व भांजा भांजी को घर ले जाने का कारण पूँछा तो सुंदर ने कुछ नहीं बताया। बस यही कहा कि वह कुछ दिनों के लिए बाहर जा रहा है।

सुंदर ने अपर्णा तथा सृष्टि से भी कह दिया था कि इस बात की चर्चा वो लोग अपने मायके तथा ननिहाल में किसी से नहीं करेंगी। सुंदर की ससुराल सोनपुर से ज्यादा दूर नहीं थी। बल्कि एक घंटे की दूरी पर थी। इस लिए उसके साले को आने में ज़्यादा देर नहीं हुई।

अपर्णा ने अपने पति सुंदर के लिए शाम का खाना बना कर रख दिया था जिसे वह गरम करके शाम को खा लेगा और खुद भारी मन से अपने बच्चों को लेकर अपने भाई के साथ अपने मायके बिलासपुर चली गई थी। सुंदर ने उसे बता दिया था कि वह अगले दिन सुबह ही यहॉ से मुंबई के लिए निकलेगा। सुंदर ने अपनी पत्नी और बच्चों को अपने साले के साथ बेहद ही गुप्त रूप से भेजा था। किसी को भनक तक न लगने दी थी कि उसकी पत्नी और बच्चे किसके साथ कब कहॉ गए हैं?

अपर्णा ने सुंदर से कहा था कि वह आज रात यहॉ हवेली में न रहे बल्कि अपने किसी दोस्त या मित्र के यहॉ रात रुक जाए और सुबह वहीं से मुंबई के लिए रवाना हो जाएं। अपर्णा ये सब किसी अंजानी आशंका की वजह से कह रही थी जबकि उसकी इस सलाह पर सुंदर ने आवेश में कहा था_"मैं किसी से बाल बराबर भी नहीं डरता अपर्णा। मैंने किसी के साथ कोई ग़लत काम नहीं किया है, इस लिए किसी से डरने का सवाल ही नहीं है। रही बात बड़े भैया की तो उन्हें भी देख लूँगा। मैं भी तो देखूँ कि कितने बड़े तीसमारखॉ हैं वो???" अपर्णा सुंदर की इस बात पर कुछ न बोल सकी थी।

उधर सोनिया ने अपने पति सत्यम सिंह को फोन करके आज हुई इस घटना के बारे में सब कुछ बता दिया था। जिसे सुन कर सत्यम सिंह के पैरों तले से ज़मीन निकल गई थी। उसे अपने बेटे पर बेहद गुस्सा आ रहा था। उसी की वजह से ये सब हुआ था वरना सुंदर ये सब कभी न सोचता कि उससे क्या कुछ छुपाया गया था??

सत्यम सिंह अपने बेटे के इस कार्य पर गुस्सा तो बहुत हुआ था किन्तु वह ये भी जानता था कि अब गुस्सा करने का कोई मतलब नहीं है। यानी जो होना था वो तो हो ही चुका था। अब तो उसे ये करना था कि इससे आगे कोई बात बढ़े ही न और ना ही उस पर कोई बात आए।

सत्यम सिंह अपनी फैक्टरी को फिर से चालू करने की कोशिशों में लगा हुआ था इस लिए वह ज्यादातर हवेली से बाहर ही रहता था। किन्तु आज हुई इस घटना की जानकारी जब उसकी पत्नी द्वारा फोन के माध्यम से उसे मिली तो वह शहर से हवेली आने के लिए कह दिया था सोनिया से। उसने ये भी हिदायत दी थी कि आज की घटना के बारे में उसकी बेटी साक्षी को

पता न चले। जबकि अपने बेटे जयदीप को कुछ दिन के लिए शहर में बने मकान पर रहने के लिए कह दिया था। ऐसा इस लिए था क्योंकि जयदीप की बुरी हालत देखकर कोई भी ढेरों सवाल पूँछने लगता। जबकि साक्षी तो अब पुलिस वाली थी, हर बात पर शक करना उसका पेशा था। दूसरी बात वह अपने भाई की आवारा गर्दी करने वाली इस असलियत से अंजान भी नहीं थी। इस लिए वह कई तरह के सवाल पूछने लगती सबसे। सत्यम सिंह ने सोनिया से ये भी कह दिया था कि वह हवेली में रहने वाले नौकर व नौकरानियों को भी इस बात की ठोस शब्दों में हिदायत दे दे कि वो लोग आज हुई इस घटना के बारे में एक लफ्ज़ भी साक्षी से न कहें या उनके द्वारा किसी तरह साक्षी के कानों तक ये बात न पहुँचे।

सत्यम सिंह शाम को हवेली पहुँचा था। हवेली में शमशान की तरह सन्नाटा फैला हुआ था। ऐसा लगता था जैसे इतनी बड़ी हवेली में किसी जीव का कहीं कोई वजूद ही न हो। सत्यम सिंह समझ सकता था कि हवेली में ये सन्नाटा क्यों फैला हुआ है। उसकी बेटी साक्षी किसी केस के सिलसिले में बाहर ही थी, यानी अभी तक वह हवेली नहीं लौटी थी पुलिस थाने से। जबकि जयदीप सत्यम सिंह के पालतू कुछ आदमियों के साथ शहर वाले मकान में कुछ दिन रहने के लिए चला गया था।

सत्यम सिंह खामोशी से अपने कमरे की तरफ बढ़ गया। कमरे में पहुँचते ही सत्यम सिंह ने देखा कि उसकी बीवी सोनिया बेड पर पड़ी है। बेड पर पड़ी सोनिया एकटक व निरंतर कमरे की छत पर झूल रहे पंखे को घूरे जा रही थी। बल्कि अगर ये कहें तो ज़रा भी ग़लत न होगा कि वह पंखे को भी नहीं घूर रही थी वह तो बस शून्य में ही देखे जा रही थी। उसका मन कहीं और ही भटका हुआ नज़र आ रहा था। कदाचित् यही वजह थी कि उसे कमरे में सत्यम सिंह के दाखिल होने का ज़रा भी एहसास न हुआ था।

सत्यम सिंह ने गौर से अपनी बीवी की तरफ देखा फिर उसने अपने जिस्म पर मौजूद कोट को उतार कर उसे दीवार पर लगे एक हैंगर पर लटका दिया। इसके बाद वह बेड की तरफ बढ़ा। सोनिया अभी भी कहीं खोई हुई शून्य में घूरे जा रही थी।

" ऐसे किन ख़यालों में गुम हो सोनिया ?" सत्यम सिंह ने उसे देखते हुए कहा _" जिसकी वजह से तुम्हें ये भी एहसास नहीं हो रहा कि मैं कब से इस कमरे में आया हुआ हूँ ?"

" सब कुछ खत्म हो गया सत्यम। " सोनिया उसी मुद्रा में तथा अजीब से भाव के साथ बिना सत्यम की तरफ देखे ही बोली _" सब कुछ खत्म हो गया। कुछ भी शेष नहीं बचा। हमने गुज़रे हुए कल में जो कुछ भी अपने हित के लिए किया था वो सब अब बेपर्दा हो चुका है। कैसी अजीब सी स्थित हो गई है हमारी। मैं और तुम ज़िंदा तो हैं मगर ऐसा लगता है जैसे हमारी एक एक सास हमारे मरे हुए होने की गवाही दे रही है। हम ऐसे जी रहे हैं सत्यम जैसे हर सास हमने किसी से उधार ली हुई है। आज आलम ये है कि हम अपने ही बच्चों के बीच डर डर कर जीवन का एक एक पल गुज़ार रहे हैं। कहीं ऐसा तो नहीं सत्यम कि हमने जो कुछ भी अपने सुख सुविधा के लिए अपनों के साथ किया है उसी का प्रतिफल आज हमें इस रूप में मिल रहा है ?"

" ये तुम क्या कह रही हो सोनिया ?" सत्यम सिंह पहले तो चौंका था फिर अजीब भाव से सोनिया की तरफ देखते हुए कहा _" यकीन नहीं होता यार। अरे इतनी सी बात पर तुम इतना हताश व विचलित हो गई ??? नहीं डियर , तुम इतनी निराशावादी बातें नहीं कर सकती। तुमने तो गुज़रे हुए कल में मेरे कहने पर ऐसे ऐसे कठिन व हैरतअंगेज कामों को अंजाम दिया है जिसे करने के लिए कोई साधारण औरत सोच भी न सके। "

" मैं भी तो एक इंसान हूॅ , एक औरत ही हूॅ सत्यम। " सोनिया ने बेड से उठ कर तथा गंभीर होकर कहा _" भले ही गुज़रे हुए कल में मैंने तुम्हारे कहने पर या हमारे हित के लिए हैरतअंगेज कामों को अंजाम दिया हो मगर मुझे इस बात का भी एहसास है कि वह सब जो मैने किया था वो निहायत ही ग़लत था। ये एक सच्चाई है सत्यम कि इंसान जो कुछ भी कर्म करता है उसके बारे में वो इंसान भी भली भाॅति जान रहा होता है कि वह किस प्रकार का कर्म कर रहा है ? इंसान जान रहा होता है कि वह ग़लत कर्म कर रहा है इसके बावजूद वह रुकता नहीं है बल्कि ग़लत कर्म को करता ही चला जाता है। कदाचित् इस लिए कि उसमें ही उसका हित होता है। जब इंसान सिर्फ अपने ही हित के लिए ज़ोर देता है तब वह ये नहीं देखता कि अपने हित में उसने किस किस की खुशियों की या किस किस के जीवन की बलि चढ़ा दी है ?"

" ये आज तुम्हें क्या हो गया है सोनिया ?" सत्यम सिंह हैरान परेशान होकर बोला _" कैसी बहकी बहकी बातें कर रही हो तुम ?"

" सच्चाई किसी भी तरह की हो सत्यम उसे सुन कर ऐसा ही लगता है सबको। " सोनिया ने फीकी सी मुस्कान के साथ कहा _" क्या ये सच नहीं है कि हमने सिर्फ अपने स्वार्थ व हित के लिए अपने ही रिश्तों के साथ अहित किया है ? ये बात तुम भी भली भाॅति जानते और समझते हो सत्यम । हाॅ ये अलग बात है कि तुम इस सब को स्वीकार न करो। "

" इन सब बातों का अब कोई मतलब नहीं रह गया है सोनिया। " सत्यम ने बेचैनी से पहलू बदलते हुए कहा _" और मत भूलो इसके पहले तुमने भी इन सब बातों के बारे में नहीं सोचा था। आज ऐसा क्या हो गया है जिसकी वजह से तुम किसी के साथ सही ग़लत और हित अहित की बातें करने लगी ? "

" आज हालात बदल गए हैं सत्यम। " सोनिया ने कहा _" पहले हम दूसरों के साथ अहित कर रहे थे इस लिए कुछ भी नहीं सोच रहे थे। मगर आज जब हमारे साथ अहित होने लगा है तब हमें इन सबका एहसास होना स्वाभाविक ही है। ये इंसानी फितरत है सत्यम , जब तक कोई बात खुद पर नहीं आती तब तक हमें किसी बात का एहसास ही नहीं होता। "

" ये सब बेकार की बातें हैं सोनिया। " सत्यम सिंह ने कहा _" आज की घटना से तुम ज़रा विचलित हो गई हो। जबकि इस सबसे इतना परेशान या दुखी होने की कोई ज़रूरत नहीं है। "

" तुम्हें आज के समय की वस्तुस्थित का एहसास ही नहीं है सत्यम। " सोनिया ने कहा _"

अगर होता तो समझते कि हालात किस कदर बिगड़ गए हैं। ज़रा सोचो सत्यम ... जो सुंदर आज तक हमारी ही कही बातों पर आॅख बंद करके यकीन करता आया था वही आज हमारी हर बात पर शक करने लगा है। इतना ही नहीं उसने तो हर सच्चाई का पता लगाने के लिए कदम भी उठाने की बात कर रहा था। अगर उसने ऐसा किया और इस सबसे उसे सारी सच्चाई का पता चल गया तो सोचो क्या होगा सत्यम ?"

" कुछ नहीं होगा सोनिया। " सत्यम ने बड़ी सहजता से कहा _" तुम बेकार ही इतना परेशान हो रही हो। तुम्हें मैंने बताया नहीं है ... हमारी सारी ज़मीन और ज़ायदाद अब सिर्फ हमारे ही बच्चों के नाम पर हैं। ये हवेली भी मैंने तुम्हारे नाम पर करवा दी है। मैं जब चाहूॅ तब सुंदर को इस हवेली और सारी ज़मीनों से बेदखल कर सकता हूॅ। यूॅ समझो कि वो सिर्फ मेरे रहमो करम पर इस हवेली पर है। मुंबई में किसी होटल या ढाबे पर अपनी माॅ बहन के साथ कप प्लेट धोने वाले उस हरामज़ादे विक्रम का तो पत्ता ही साफ है। इस लिए कानूनन कोई कुछ भी नहीं कर सकता मेरा। सुंदर को अगर सच्चाई का पता चल भी गया तो क्या कर लेगा हमारा ??"

सोनिया अवाक् सी देखती रह गई सत्यम की तरफ। उसे कुछ कहने के लिए तुरंत कुछ सूझा ही नहीं। जबकि.....

" मैने कहा था न कि तुम बेकार ही इतना परेशान हो रही हो। " सत्यम सिंह ने मुस्कुराते हुए सोनिया के खूबसूरत चेहरे को सहला कर कहा _" तुमने तो खुद मेरे साथ कानून की एल एल बी की है। इस लिए जानती हो कि कानूनन कोई कुछ नहीं कर सकता। मैंने सारी ज़मीनें हमारे बच्चों के नाम कर दी हैं। और अगर कोई बात होगी भी तो इनमें से किसी के पास इतनी क्षमता ही नहीं है कि ये लोग ज़मीन ज़ायदाद को पाने के लिए मेरे साथ कोई मुकदमा वगैरह कर सकें। और अगर इन लोगों ने मुकदमा चलाने की कोशिश भी की तो सारी ज़िन्दगी इनसे कोर्ट कचहरी का चक्कर लगवाऊॅगा। इतने में ही इन सबका मूत निकल जाएगा। "

" वो सब तो ठीक है सत्यम। " सोनिया के चेहरे पर पहली बार राहत के भाव उभरे थे , किन्तु फिर तुरंत ही असहज होकर बोली _" लेकिन हम अपनी बेटियों को इस सबके लिए कैसे कन्विंस करेंगे ? मानुषी का तो भरोसा है कि वो हमसे कोई सवाल जवाब नहीं करेगी , लेकिन साक्षी का कुछ कह नहीं सकते। वो शुरू से ही तेज़ तर्रार रही हैं और न्यायप्रिय भी। अब तो वह पुलिस वाली भी बन गई है इस लिए इस सबका पता चलते ही वह कहीं हम पर ही न कोई केस ठोंक दे। "

" हद करती हो यार। " सत्यम सिंह ठहाका लगा कर हॅसते हुए बोला _" अपनी ही बेटी से इतना डरने लगी हो तुम। "

" ज्यादा शेखी न बघारो तुम। " सोनिया ने अजीब भाव से कहा _" आज भले ही इतना हॅस रहे हो तुम , मगर थोड़े दिन पहले तुम्हारी भी जान हलक में अटकी पड़ी थी जब साक्षी ने फैक्टरी वाला केस रीओपन किया था। "

" यार सच कह रही हो तुम। " सत्यम सिंह ने मुस्कुराते हुए कहा _" यकीनन उस समय मेरी हालत की वाट लगी हुई थी। कितनी अजीब बात थी कि मेरी ही बेटी मेरी ही ***** मारने पर तुली हुई थी। भला उस बेचारी को क्या पता था कि उसके द्वारा इस प्रकार से मेरी ***** मारने से मुझे कितनी तक़लीफ हो रही थी। "

" अब आए न लाइन पर। " सोनिया खिलखिला कर हँसते हुए बोली _" बड़ा उड़ने लगे थे अभी तो। "

" यार मेरा तो के एल पी डी भी हो गया। " सत्यम सिंह ने उदास भाव से कहा _" मेरे बेटे ने ही सारा काम खराब कर दिया वरना अपर्णा की आगे पीछे से लेने का चान्स बन ही जाना था। अब तो ये असंभव नहीं तो नामुमकिन ज़रूर हो गया है। "

" असंभव क्यों नहीं ??" सोनिया चौंकी।

" असंभव इस लिए नहीं क्यों कि मैं चाहूँ तो अभी भी उसको आगे पीछे से ठोंक सकता हूँ। " सत्यम सिंह ने कहा _" लेकिन ये सब अब प्यार या उसकी रज़ामंदी से नहीं हो सकेगा बल्कि इसके लिए मुझे बल का प्रयोग करना पड़ेगा। "

" क्या मतलब है तुम्हारा ?" सोनिया हैरान।

" साली को उठवा लूँगा किसी दिन। " सत्यम सिंह सहसा कठोर भाव से बोला _" और शहर में अपने नये वाले फार्महाउस पर रखूँगा उसे। वहीं रात दिन उसकी आगे पीछे से लूँगा। इतना ही नहीं अपने आदमियों को भी मज़ा करने का कह दूँगा। मेरे आदमी उसकी आगे पीछे से बजा बजा कर उसकी ***** का ****** बना देंगे। "

" ऐसा सोचना भी मत। " सोनिया ने आँखें फैलाकर कहा _" वरना सुंदर तुम्हें कच्चा चबा जाएगा। "

" सुंदर की माँ की ***** साले की। " सत्यम ने कहा _" उसने अगर ज्यादा उछल कूद करने की कोशिश की तो उसका भी वही अंजाम होगा जो शिवम का हुआ था , लेकिन ज़रा अलग तरीके से। "

" उसकी छोंड़ो सत्यम। " सोनिया ने सहसा पहलू बदलते हुए कहा _" हमारी बेटी साक्षी के बारे में सोचो। उसे इस झमेले के लिए कैसे मनाएंगे ?"

" उसकी भी फिक्र मत करो डियर। " सत्यम सिंह ने कुछ सोचते हुए कहा _" तुम तो जानती हो कि मुझे अपने रास्तों पर किसी तरह के काँटें पसंद नहीं हैं। हम दोनो उसे इस सबके लिए पहले प्यार से समझाएंगे , अगर उसे हमारी बातें समझ आ गईं तो ठीक है वरना मजबूरन उसके साथ भी हमें बल का प्रयोग करना ही पड़ेगा। "

" न नहीं सत्यम नहीं। " सोनिया ने सहसा घबरा कर कहा _" तुम उसके लिए ऐसा कैसे

कह सकते हो ? वह हमारी अपनी बेटी है। हर व्यक्ति की अपनी एक फितरत होती है , साक्षी की फितरत हम जैसी नहीं है तो इसमें उसकी क्या ग़लती है ? इंसान का स्वभाव जन्म से ही बनने लगता है , और फिर हर इंसान का अपना एक प्रारब्ध भी तो होता है। सब एक जैसी सोच विचार के नहीं हो सकते सत्यम , ये प्रकृति के नियमों के खिलाफ है। "

" मुझे पता है सोनिया। " सत्यम सिंह ने गंभीरता से कहा _" मैं जानता हूँ कि हमारी बेटी उनमें से है जिनकी रॅगों में सच्चाई और ईमानदारी का खून दौड़ता है। लेकिन हमारे साथ मामला ज़रा जुदा है , यानी हमारी बेटी का ये सच्चाई और ईमानदारी वाला खून भविस्य में हमारे लिए बड़ी मुसीबत भी खड़ी कर सकता है। "

" ऐसा कुछ नहीं होगा सत्यम। " सोनिया ने मजबूती से कहा _" मैं अपनी बेटी को अपने तरीके से समझाऊँगी। वो ज़रूर मेरी बात को समझेगी और मानेगी भी। "

" अच्छी बात है। " सत्यम ने कहा _" तुम उसे अपने तरीके से ज़रूर समझा देना। क्योंकि तुम्हारे बाद अगर मुझे समझाना पड़ा उसे तो हो सकता है मेरा समझाना तुम्हें पसंद न आए। "

" मैं ज़रूर समझाऊँगी सत्यम। " सोनिया के जिस्म में ठण्डी सी सिहरन दौड़ती चली गई थी , फिर बोली _" लेकिन अब सुंदर के बारे में भी तो सोचो। उसने साफ शब्दों में कहा है कि वह इस सच्चाई का पता लगाएगा कि रेणुका और उसके बच्चों के साथ वास्तव में हुआ क्या था ? इस लिए वह इस सबका पता लगाने के लिए मुंबई में विक्रम तथा विक्रम की मॉ बहन के पास जाने का बोल रहा था। अगर उसे सारी बातों का पता चल गया तो क्या होगा सत्यम ??"

" उसे जाने दो मेरी जान। " सत्यम ने अजीब से लहजे में कहा _" उसे सारी सच्चाई का पता लग भी जाएगा तो अब कोई कुछ भी नहीं कर सकेगा। जिस चीज़ के लिए हमने ये सब किया था वो तो हमें हासिल हो ही चुका है। इस लिए जाने दो जिसे जहॉ जाना हो। विक्रम के साथ साथ उसकी मॉ बहन को तो मेरे आदमी भी ढूँढ़ रहे हैं। अच्छा है कि सुंदर भी उन्हें तलाश करेगा वहॉ मुंबई में। साला इतनी बड़ी मुंबई में कहॉ ढूँढेगा उन कप प्लेट धोने वालों को ?"

" इस बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। " सोनिया ने कहा _" संभव है किसी संयोग के चलते सुंदर उन लोगों को ढूँढ़ ही ले। "

" अगर ऐसा है तो मैं अपने कुछ आदमियों को सुंदर के पीछे लगा देता हूँ। " सत्यम ने कुछ सोचते हुए कहा _" यदि सुंदर उन लोगों को ढूँढने में कामयाब हो जाएगा तो मेरे आदमी तुरंत ही इस बात की मुझे सूचना दे देंगे। "

" हॉ ये बिलकुल ठीक रहेगा सत्यम। " सोनिया ने खुश होकर कहा _" उस सूरत में तुम अपने आदमियों को आदेश दे देना कि वो इन सबको किसी भी तरह यहॉ हमारे पास ले आएं। उसके बाद हम अपने तरीके से उन सबका कल्याण करेंगे। "

" ऐसा ही होगा मेरी जान। " सत्यम सिंह ने मुस्कुराते हुए कहा _" सब कुछ हमारे हिसाब से ही होगा और सुंदर के यहॉ से जाते ही मैं उसकी खूबसूरत बीवी अपर्णा को भी अपने आदमियों के द्वारा उठवा लूँगा। "

" ऐसा करना हमारे लिए कहीं खतरे का सबब न बन जाए सत्यम। " सोनिया ने सत्यम को अजीब भाव से देखते हुए कहा _" मुझे लगता है कि इस काम में तुम्हें अभी इतनी जल्दी इतना बड़ा क़दम नहीं उठाना चाहिए। "

" एक दिन तो ये होना ही है सोनिया। " सत्यम सिंह ने कहा _" और वैसे भी आज जिस तरह के हालात बन गए हैं उससे सारी बातें सबके सामने आ ही जाएँगी। इस लिए जब सारी बातों को खुल ही जाना है तो इस काम में मैं देरी क्यों करू ? मुझे हर हाल में अपनी ख्वाहिशों को परवान चढ़ाना है डियर। मेरी शुरू से ही ये ख्वाहिश थी कि मैं रेणुका तथा अपर्णा को अपने इसी बेड पर अपने नीचे लिटाऊँ और उन दोनो के खूबसूरत किन्तु गदराए हुए मादक जिस्म का भोग करू। "

" ख्वाहिश तो तुम्हारी अपनी बेटियों को भी अपने नीचे लिटाने की है सत्यम। " सोनिया ने मुस्कुराते हुए कहा _" तो क्या अपनी बेटियों के साथ भी अपने छोटे भाईयों की बीवियों की तरह जबरदस्ती करोगे ?"

" अगर ज़रूरत पड़ी तो ऐसा भी करुँगा मेरी जान। " सत्यम ने स्पष्ट भाव से कहा _" लेकिन हमारी बेटियों को मेरे नीचे लाने की जिम्मेदारी तुम्हारी है। तुम अगर इस काम में सफल हो जाती हो तो अच्छी बात है वरना घी निकालने के लिए मुझे अपनी उँगली को टेंढ़ा करना ही पड़ेगा। "

सोनिया हैरान परेशान सी देखती रह गई अपने पति को। वह समझ नहीं पा रही थी कि उसका पति किस तरह का इंसान है??????

१२

उधर मुंबई में।

विक्रम अपने वादे के अनुसार रविवार यानी स्कूल की छुट्टी के दिन निशा को बड़े से शिप में समुंदर घुमाने ले आया था। निशा बेहद खुश थी इस सबसे। पता नहीं क्या क्या उसके दिमाग़ में चलता रहता था। कदाचित् फिल्में देखने का असर ज्यादा हो गया था उस पर।

पिछली सारी रात वह विक्रम के कमरे में रही थी। सारी रात उसने तरह तरह की योजनाएं बना बना कर विक्रम को बताती रही थी कि कल समुंदर में किस किस तरह से हम मस्ती करेंगे। उसकी ऊल जुलूल बातों से विक्रम बुरी तरह परेशान हो गया था। किन्तु वह उसे कुछ कह नहीं सकता था क्योंकि निशा उसकी जान थी। उसकी खुशी के लिए वह कुछ भी कर सकता था। विक्रम ने उसकी सभी बातों पर अमल करने का उसे वचन दिया और फिर प्यार से उसे अपने सीने से छुपका कर कहा था_"गुड़िया अब हम लोग सो जाते हैं, कल सुबह हमें जल्दी निकलना भी है न।" विक्रम की इस बात से और उसको इस तरह सीने से छुपका लेने से निशा खुश हो गई और खुशी खुशी ही नींद की आगोश में चली गई थी।

सुबह हुई तो दोनो ने नास्ता पानी किया और कुछ ज़रूरी चीज़ें लेकर घर से निकल पड़े। रेणुका के द्वारा उन्हें सख्त हिदायतें भी दी गई थी कि वहॉ पर सावधानी से ही काम लेना और शाम होने से पहले पहले घर वापिस आ जाना। विक्रम निशा को लेकर कार से निकल गया था।

उमाकांत पाटिल की अच्छी जान पहचान थी जिसकी वजह से विक्रम को किसी बात की कोई परेशानी नहीं हुई थी। कहने का मतलब ये कि विक्रम ने एक बेहतरीन सुख सुविधा सम्पन्न शिप को शाम तक के लिए बुक करवा लिया था।

शिप मे दो चालक और एक गाइड करने वाला था बाकी पूरा शिप खाली ही था। इस खूबसूरत शिप में चढ़ कर निशा खुशी से फूली नहीं समा रही थी। उसका बस चलता तो वह मारे खुशी के आसमान में उड़ने लगती। वह विक्रम से चिपकी हुई थी। फिर वह उससे अलग होकर शिप के किनारे पर आ गई तथा यहीं से हर तरफ का नज़ारा करने लगी थी। विक्रम उसे इस तरह खुश होते देख खुद भी खुश था। उसे आज पहली बार यहॉ खुले आसमान के नीचे समुंदर में इस तरह अपनी बहन के साथ आकर खुशी हुई थी। वह अपनी बहन को ही देख रहा था, जो कभी कहीं देखती तो कभी कहीं और देखने लगती। उसके लिए ये सब नया था, हलॉकि फिल्मों में उसने जाने कितनी दफा एक से बढ़कर एक सीन्स देखे थे। किन्तु यह नज़ारा उसके जीवन का पहला और वास्तविक था। विक्रम अपनी गुड़िया को इस तरह खुश होते देख खुद भी खुश था। फिर एकाएक ही जाने क्या सोच कर उसकी आॅखों में आंसू आ गए। कदाचित् ये सोच कर कि इसके पहले उन लोगों ने ऐसी किसी खुशी को पाने की कल्पना भी न की थी। उसके अपनों ने किस तरह उसे और उसकी मॉ बहन को हर चीज़ से बेदखल कर दिया था। कुछ दर्द ऐसे भी थे जो अक्सर तन्हाई में उसे रुलाते थे।

अभी वह ये सब सोच कर आॅसू बहा ही रहा था कि निशा उसके सामने आ गई। उसने निशा को देखकर जल्दी से मुह फेर लिया ताकि वह उसकी आॅखों में आॅसू न देख सके।

" आप क्या समझते हैं मुझे कुछ पता नहीं चलता ??" निशा ने भर्राए गले से कहा _" अगर आप ऐसा समझते हैं तो ग़लत समझते हैं आप। संसार की ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसे देख कर मैं अपने होश खो दूॅ और मुझे ये भी न पता चल सके कि जो मेरी जान है उसे किस पल किस दर्द ने आकर रुला दिया है। आप कहीं भी रहें लेकिन मैं ये महसूस कर लेती हूॅ कि आप किस लम्हें में किस दर्द से गुज़रे हैं। "

" ये सब क्या बोल रही है पगली ?" विक्रम ने खुद को संभालते हुए तथा हॅसते हुए कहा _" चल छोंड़ ये सब और आ हम दोनों एंज्वाय करते हैं। "

" आप बातों को टालिये मत। " निशा ने विक्रम के चेहरे की तरफ एकटक देखते हुए कहा _" मुझे वचन दीजिए कि आज के बाद आप कभी भी अपनी आॅखों में आॅसू नहीं लाएॅगे। "

" जिन चीज़ों पर किसी इंसान का कोई बस ही न हो उन चीज़ों के लिए कैसे भला कोई वचन दे सकता है गुड़िया ?" विक्रम ने फीकी सी मुस्कान के साथ कहा _" हॉ इतना ज़रूर कह सकता हूॅ कि आइंदा ऐसा न हो ऐसी कोशिश करू गा। "

निशा एक झटके से विक्रम से लिपट गई, उसकी आॅखों में आॅसू थे, बोली_"क्यों उन सब चीज़ों के बारे में इतना सोचते हैं आप जिनके बारे में सोचने से हमें सिर्फ दुख और आॅसू मिलते हैं? मत सोचा कीजिए न वो सब...आप नहीं जानते कि आपको इस तरह दुख में आॅसू बहाते देख कर मुझ पर और मॉ पर क्या गुज़रती है? सबसे ज्यादा मुझे तक़लीफ होती है...आप उसे भूल जाइए न भाईया...क्यों उसे इतना याद करते हैं जिसे आपकी पाक मोहब्बत की कोई क़दर ही न थी कभी।"

विक्रम के दिलो दिमाग़ को ज़बरदस्त झटका लगा। ये क्या कह गई थी उसकी गुड़िया?? उसे ऐसा लगा जैसे उसके पास में ही कोई बम्ब बड़े ज़ोर से फटा हो और फिर सब कुछ खत्म व शान्त। कानों में सिर्फ सॉय सॉय की ध्वनि गूॅजती महसूस हो रही थी। विक्रम किसी बुत की तरह खड़ा रह गया था। उसकी पथराई सी आॅखें निशा के उस चेहरे पर जमी हुई थी जिस चेहरे को आॅसुओं ने धो डाला था। फिर सहसा जैसे उसे होश आया। उसने निशा के मासूम से चेहरे को अपनी दोनों हॅथेलियों के बीच लिया और झुक कर उसके माथे पर एक चुबन लिया। इसके बाद वह पलटा और शिप के अंदर की तरफ चला गया। जबकि निशा वहीं पर खड़ी रह गई।

जब काफी देर हो जाने पर भी विक्रम अंदर से न आया तो निशा के चेहरे पर चिंता व परेशानी के भाव गर्दिश करने लगे। उसे अपने भाई के लिए चिन्ता होने लगी और उसका दिलो दिमाग बेचैन हो उठा। वह तुरंत ही अंदर की तरफ बढ़ गई। समुंदर में उठती हुई लहरों के बीच तैरता

हुआ शिप बढ़ता ही जा रहा था। निशा जब अंदर पहुँची तो शिप में मौजूद गाइड करने वाला आदमी बाहर की ही तरफ आता दिखाई दिया। निशा ने उससे विक्रम के बारे में पूछा तो उसने हाथ के इशारे से एक तरफ संकेत किया और बाहर निकल गया। जबकि निशा उसकी बताई हुई दिशा की तरफ बढ़ गई। एक कमरे में दाखिल होते ही उसकी नज़र जैसे ही अपने भाई पर पड़ी तो उसे झटका सा लगा। उसके पॉव वहीं पर ठिठक गए। उसकी आॅखों से बड़े तेज़ प्रवाह से आॅसू बहने लगे। उसका दिल बुरी तरह हाहाकार कर उठा था।

कमरे के दरवाजे पर अपनी आॅखों से डबडबाते आॅसू के साथ खड़ी निशा अपने भाई विक्रम को देखे जा रही थी जो अपने दाहिने हाथ में मॅहगी शराब की बोतल को मुॅह से लगाए गटागट पिये जा रहा था। देखते ही देखते सारी बोतल खाली हो गई। विक्रम ने खाली बोतल को बार काउंटर पर पटका और फिर से एक बोतल उठा ली उसने।

निशा को जैसे होश आया, वह बिजली की सी तेज़ी से कमरे के अंदर विक्रम के पास पहुँची और हाथ बढ़ा कर एक झटके से विक्रम के हाथ से बोतल खींच ली।

" ये क्या पागलपन है भैयाा ?" निशाा ने रोते हुए किन्तु चीख कर कहाा _" आप शराब को हाथ कैसे लगा सकते हैं ? क्या उसका ग़म इतना बड़ा है कि उसके ग़म को भुलाने और मिटाने के लिए आपको इस शराब का सहारा लेना पड़ रहा हैै ? क्यों भैयाा क्योें ... क्यों उसको याद करके घुट घुट के जी रहे हैं ? एक ऐसी बेवफा के लिए जिसको आपके सच्चे प्यार की कोई कद्र ही न थी। जिसने आपकी गुरबत को देख कर आपका साथ देने की बजाय आपका साथ छोंड़ दिया। क्यों भैयाा .... क्यों ऐसे इंसान को याद करनाा ? क्यों ऐसे इंसान की यादों में तड़पना जिसको प्यार और मोहब्बत के मायने ही पता नहीं ?"

विक्रम ख़ामोश खड़ा था। उसका चेहरा आॅसुओं से तर था। चेहरे पर ज़माने भर का दर्द जैसे तांडव कर रहा था। आॅखें शराब के नशे में लाल सुर्ख हो चली थीं। निशा क्या बोल रही थी उसकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था। जबकि निशा ने उसे पकड़ कर आराम से वहीं रखे एक सोफे पर बिठाया और खुद भी उसके पास ही बैठ गई।

" तु तुझे ये सब कैसे पता चला गुड़ियाा ?" फिर विक्रम ने लरजते हुए स्वर में कहा।

" आप सारी दुनियॉ को बहला सकते हैं भैयाा, लेकिन अपनी गुड़िया को नहीं। " निशाा ने कहाा _" मुझे इस बात का आभास तो पहले से ही था कि आप जो हम सबको दिखा रहे हैं वैसा असल में है नहीं। मैंने अक्सर रातों में आपको रोते हुए देखा था। एक दिन जब आप किसी काम से बाहर गए हुए थे तो मैंने आपके कमरे की तलाशी ली। उस समय मैं खुद नहीं जानती थी कि आपके कमरे में मैं क्या तलाश कर रही थी ? किन्तु इतना ज़रूर जानती थी कि कुछ तो मिलेगा ही ऐसा जिससे ये पता चल सके कि आप अक्सर रातों में क्यों रोते हैं ? काफी तलाश करने के बाद जो चीज़ मुझे मिली उसने अपनी आस्तीन में छुपाई हुई सारी दास्तां को मेरे सामने रख दिया। मेरे हाथ आपकी डायरी लग गई थी .... उसी से मुझे सारी बातें पता चलीं। डायरी में आपके द्वारा लिखा गया एक एक हर्फ़ ऐसा था जिसने मुझे और

मेरी अंतर्आत्मा तक को झकझोर कर रख दिया था भैया । अच्छा हुआ कि वो डायरी मुझे मिल गई थी वरना भला मैं कैसे जान पाती कि आप अपने सीने में कितना बड़ा दर्द छुपा कर हम सबके सामने हॅसते बोलते रहते हैं ?"

" ये सब मॉ से मत बताना गुड़िया। " विक्रम ने बुझे स्वर में कहा _" वरना मॉ को बहुत दुख होगा। उन्होंने बहुत दुख सहे हैं , मैं उन्हें अब किसी भी तरह दुखी नहीं देख सकता। "

" और मुझे ???" निशा ने विक्रम की आॅखों में बड़ी मासूमियत से देखते हुए कहा _" क्या मुझे दुखी सकते है आप ??"

" नहीं , हर्गिज़ नहीं गुड़िया। " विक्रम ने कहने के साथ ही निशा के चेहरे को अपनी दोनों हथेलियों के बीच लिया _" तू तो मेरी जान है रे। तेरी तरफ तो दुख की परछाई को भी न फटकने दूॅ। "

" अगर ऐसी बात है तो क्यों खुद को इतनी तकलीफ़ देते हैं आप ?" निशा ने रुआॅसे स्वर में कहा _" आप भी तो मेरी जान हैं , और मैं भला अपनी जान को दुख में देख कर कैसे खुश रह सकती हूॅ , कभी सोचा है आपने ? आप तो हमेशा उसी की याद में दुखी रहते हैं , उसी के बारे में सोचते रहते हैं। आपको इस बात का ख़याल ही नहीं रहता कि जो सचमुच आपसे प्यार करते हैं वो आपको इस तरह दुखी देख कर कैसे खुश रह सकते हैं ?"

विक्रम कुछ न बोला। सोफे की पिछली पुश्त से पीठ टिका लिया उसने और अपनी आॅखें बंद कर ली। उस पर अब नशा हावी हो गया था। दुख दर्द जब असहनीय हो जाता है तो वह कुछ भी कर गुज़रने पर उतारू हो जाता है। आज तक उसने शराब को हाथ भी न लगाया था। अपने इस दर्द को किसी से बयां भी न किया था, किन्तु आज अपनी ये सच्चाई जब निशा के मुख से सुनी तो उसे जाने क्या हुआ कि उसके जज्बात हद से ज्यादा मचल गए और उसने शराब पी। हलाकि वह अंदर इस लिए आया था क्योंकि वह निशा के सामने खुद को इस हाल में नहीं दिखा सकता था। जब वह कमरे में आया तो नज़र कमरे में ही एक तरफ लगे बार काउंटर पर पड़ी। अपनी हालत को छुपाने के लिए उसने पहली बार शराब की तरफ अपना रुख किया था। जुनून के हवाले हो चुके उसने शराब की बोतल ही मुख से लगा ली और सारी बोतल डकार गया। किन्तु अब उस पर शराब का नशा तारी हो चुका था।

निशा कोई बच्ची नहीं थी बल्कि सब समझती थी। उसे एहसास था कि शराब ने उसके भाई पर अपना असर दिखा दिया है। क्या सोच कर आए थे दोनो यहॉ लेकिन क्या हो गया था। निशा को अपने भाई की इस हालत पर बड़ा दुख हो रहा था। वह आॅखे बंद किये अपने भाई को ही देखे जा रही थी। उसने उसे झकझोर कर पुकारा, तो विक्रम हड़बड़ा कर उठा। इधर उधर देखा फिर नज़र निशा पर पड़ी तो एकाएक ही वह चौंका। उसे निशा के चेहरे पर किसी और का ही चेहरा नज़र आ रहा था। वह एकटक देखे जा रहा था उसे। फिर एकाएक ही उसके चेहरे के भाव बदल गए।

" अब यहॉ क्या देखने आई हो प्राची ?" विक्रम भावावेश में कह रहा था _" देख लो तुमने जो ग़म दिये थे वो थोड़ा कम पड़ गए वरना आज मैं ज़िंदा नहीं रहता बल्कि कब का मर गया होता या फिर पागल हो गया होता। लेकिन चिन्ता मत करो , क्योंकि ज़िन्दा भी कहॉ हूँ मैं ? हर पल घुट घुट कर जीता हूँ मैं। इससे अच्छा तो ये होता कि तुम मुझे ज़हर दे देती। कम से कम एक बार में ही मर जाता। "

इधर विक्रम जाने क्या बोले जा रहा था जबकि उधर निशा पहले तो बुरी तरह चौंकी थी फिर जब उसे सब कुछ समझ आया तो उसका दिल तड़प उठा। उसने कुछ कहा नहीं बल्कि अपने भाई को बोलने दिया ये सोच कर कि ये उसके अंदर का गुबार है। इस गुबार का निकलना भी बहुत ज़रूरी है। उसे जाने क्या सूझी कि उसने इस सबके लिए खुद प्राची का रोल प्ले करने का सोच लिया।

" क्यों किया ऐसा प्राची ?" विक्रम भर्राए गले से कह रहा था _" क्या यही प्यार था ? क्या तुम्हें मेरे धन दौलत से प्यार था ? और जब तुमने देखा कि मेरे अपनों ने मुझे मेरी मॉ बहन सहित हर चीज़ से बेदखल कर दिया है तो तुमने भी मुझे दुत्कार दिया ? क्यों किया ऐसा प्राची ....?"

" प्यार व्यार ये सब फालतू की बाते हैं मिस्टर विक्रम। " प्राची का रोल कर रही निशा ने अजीब भाव से कहा _" समझदार आदमी इनके चक्करों में पड़ कर अपना समय बर्बाद नहीं करता। मैने तुमसे प्यार किया था क्योंकि तुम उस समय अमीर थे। तुम्हारे पास धन था दौलत थी। उस समय तुम मेरे लिए कुछ भी खरीद कर दे सकते थे। तुमसे शादी करती तो सारी ज़िन्दगी ऐश करती। मगर तुम तो अपनों के द्वारा दर दर का भिखारी बना दिये गए। भला कोई भिखारी मेरी ज़रूरतों को कैसे पूरा कर पाता ? इस लिए मैंने समझदारी से काम लिया और तुमसे जो प्यार का चक्कर चलाया था उसे खत्म कर दिया। हर व्यक्ति अपने सुख और हित के बारे में सोचता है। मैं ने भी तो यही सोचा था , इसमें भला मेरी क्या ग़लती ?"

" कितनी आसानी से ये सब कह दिया तुमने ?" विक्रम के अंदर जैसे कोई हूक सी उठी थी , बोला _" क्या एक पल के लिए भी तुम्हारे मन में ये ख़याल नहीं आया कि तुम्हारे इस तरह के कठोर बर्ताव से मुझ पर क्या गुज़री रही होगी ? क्या तुम्हें एक पल के लिए भी नहीं लगा कि तुम ये जो कुछ कर रही हो वह कितना ग़लत है ? क्या तुझे एक पल के लिए भी नहीं लगा था कि तेरे इस तरह दुत्कार देने से सारी ऊम्र मैं सुकून से जी नहीं पाऊँगा ? बता बेवफा .... बता बेहया लड़की ?"

विक्रम एकाएक ही बुरी तरह चीखने चिल्लाने लगा था। जुनून और पागलपन सा सवार हो गया था उस पर। उसने एक झटके में निशा की गर्दन को अपने दोनो हाथो से दबोच लिया। निशा को इस सबकी उम्मीद नहीं थी। इस लिए जैसे ही विक्रम ने अपने दोनो हाथो से उसकी गर्दन दबोची वैसे ही वह बुरी तरह घबरा गई। जबकि विक्रम जुनूनी हो चुका। इस वक्त उसके चेहरे पर नफरत घृना और गुस्सा जैसे कत्थक करने लगा था। आँखें तो नशे में वैसे ही लाल सुर्ख हो गई थी पहले से अब चेहरा भी सुर्ख पड़ गया था।

निशा ने तो स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि ऐसा भी हो सकता है। विक्रम ने उसकी गर्दन को सख्ती से दबोचा हुआ था। निशा बुरी तरह सहम गई थी। डर और भय के चलते उसका चेहरा निस्तेज़ का हो गया था। जबकि.....

" अब बोलती क्यों नहीं खुदगर्ज़ लड़की ? बोल क्यों किया मेरे दिल के साथ इतना बड़ा खिलवाड़ ?" विक्रम भभकते स्वर में बोले जा रहा था _" बोल क्यों मेरी पाक भावनाओं को पैरों तले रौंदा था ? बोल कितनी धन दौलत चाहिए तुझे ? आज तो मैं फिर से अमीर हो गया हूँ .... मेरे पास आज इतनी दौलत है कि तेरे जैसी जाने कितनी लड़कियों को एक साथ उस दौलत से तौल दूँ। कहीं ऐसा तो नहीं कि तुझे पता चल गया हो कि मैं फिर से धन दौलत वाला हो गया हूँ और इस लिए तू फिर से अपना फरेबी प्यार मेरे आगे परोसने आ गई ? नहीं नहीं ... अब मुझे तेरे इस घिनौने प्यार की ज़रूरत नहीं है। बल्कि अब तो मैं तेरे जैसी लड़कियों को अपनी उसी दौलत से दो कौड़ी के दामों में खरीद कर अपने नीचे सुलाऊँगा और रात दिन रगड़ूँगा उन्हें समझी तू ???"

" भ भैया ... ये क् क्या हो गया है आ आपको ?" निशा बड़ी मुश्किल से बोल पा रही थी _" मैं प्राची नहीं बल्कि मैं आ आपकी गुड़िया हूँ भैया ऽऽ। "

विक्रम इस तरह रुक गया जैसे स्टैचू में तब्दील हो गया हो। कानों में सिर्फ एक यही वाक्य गूँज रहा था 'मैं प्राची नहीं बल्कि मैं आ आपकी गुड़िया हूँ भैयाऽऽ।' बार बार यही वाक्य कानों में गूँज रहा था। एक झटके से विक्रम ने निशा की गर्दन से अपने हाथ खींचे। एक पल में ही उसकी बड़ी अजीब सी हालत हो गई। आँखें फाड़ कर निशा को देखा उसने। और फिर फूट फूट कर रो पड़ा वह। निशा को अपने सीने से छुपका लिया उसने।

" मुझे माफ कर दे ... माफ कर दे मुझे। " विक्रम ने निशा को अपने सीने से अलग करके अपने दोनो हाथ जोड़ कर कहा _" ये मैं क्या कर रहा था गुड़िया ? अपने इन्हीं हाथो से अपनी जान से भी ज्यादा प्यारी अपनी गुड़िया का गला दबा रहा था मैं। मुझे माफ कर दे गुड़िया , मुझसे कितना नीच काम हो गया ... तू तू मुझे इस सबके लिए कठोर से भी कठोर सज़ा दे गुड़िया। "

" भैया ऽऽ। " निशा का दिल हाहाकार कर उठा , उसने एक झटके से विक्रम को खुद से चिपका लिया। बुरी तरह रोये जा रही थी वह। वह जानती थी कि ये जो कुछ भी हुआ उसमें विक्रम की कहीं कोई ग़लती नहीं थी। वो तो बस एक गुबार था , जो इस प्रकार से निशा को ही प्राची समझ कर उसके अंदर से फट पड़ा था।

जाने कितनी ही देर तक यही आलम रहा। निशा अपने भाई को शान्त कराती रही। शराब के नशे में विक्रम वहीं निशा की गोंद में सिर रख कर सो गया था। निशा बड़े प्यार से उसके सिर के बालों पर उँगलियाँ फेरती जा रही थी। उसकी नज़रें अपने भाई के उस चेहरे पर जमी हुई थी जिस चेहरे पर इस वक्त संसार भर की मासूमियत विद्यमान थी।

' आप चिन्ता मत कीजिए भैयाा , आपकी ये गुड़िया आपको इतना प्यार करेगी कि आप संसार के सारे दुख सारे ग़म भूल जाएॅगे। आप मेरी जान हैं और मैं आपकी जान हूॅ। इस लिए आज से आपकी खुशी के लिए मैं वो सब कुछ करू गी जिससे आपको खुशी मिले।

विक्रम को लगभग चार घंटे बाद होश आया। निशा की गोद में सिर रखे वह उसी तरह लेटा हुआ था। उसके सिर पर निशा का हाथ था और वह खुद भी वहीं पर यूॅ ही सो गई थी। दोनो ही नहीं जानते थे कि जिस शिप में वो दोनो इस वक्त थे वह कहाॅ से कहाॅ घूमते हुए पहुॅच गया था।

विक्रम को जब होश आया तो उसने अपने सिर को निशा की गोद में टिका हुआ पाया। उसने देखा कि उसकी जान उसके सिर पर अपना हाथ रखे यूॅ ही सो गई थी। उसके खूबसूरत चेहरे पर संसार भर की मासूमियत विद्यमान थी। विक्रम को उस पर बड़ा प्यार आया। वह आहिस्ता से निशा की गोद से उठा और फिर निशा को बड़ी ही आसानी से अपनी बाजुओं में उठा लिया। पास में ही एक तरफ रखे सोफे पर उसने निशा को आहिस्ता से लिटाया। उसके बाद वह खुद भी उसके चेहरे के समीप ही बैठ गया और अपनी गुड़िया को सोते देखने लगा। कुछ देर यूॅ ही देखने के बाद वह झुका और निशा के माथे पर आहिस्ता से चूॅमा फिर उठ कर बाथरूम की तरफ बढ़ गया।

विक्रम के जाते ही निशा ने मुस्कुराते हुए पट से अपनी आाॅखें खोल दी। कुछ पल जाने क्या सोचती रही फिर उसने बहुत ही धीमे स्वर में कहा_"आपको तो ये भी नहीं पता जान जी कि किस किसी लड़की के माथे पर नहीं बल्कि उसके होंठो पर किया जाता है। लेकिन आप चिन्ता मत कीजिए....आप ये भी जानने लगेंगे...मैं सब बताऊॅगी न आपको, ।" ये कह कर वह हॅस पड़ी फिर सहसा शर्मा भी गई वह। अपने दोनो हाथो द्वारा तुरंत ही अपना चेहरा छुपा लिया उसने।

कुछ देर बाद विक्रम जब बाथरूम से वापस आया तो उसने अपनी गुड़िया को अपने ही हाथो अपने चेहरे को छुपाये हुए पाया। उसे लगा गुड़िया अभी भी उसके लिए दुखी है, इस लिए वह तुरंत ही उसके पास पहुॅचा और फर्श पर उसके घुटनों के पास बैठ गया।

" तू दुखी मत हो गुड़िया। " विक्रम ने अपने हाथाो द्वारा निशाा के चेहरे से उसके हाथाो को हटाते हुए कहाा _" मैं तुझसे वादा करता हूॅ कि अब से मैं खुद को दुखी नहीं करू गा। उसकी यादों पर तो मेरा कोई ज़ोर नहीं है लेकिन अब उसकी यादों से मैं खुद को विचलित नहीं करू गा। "

" ये तो बहुत अच्छी बात है भैयाा। " निशाा ने कहाा _" उस लड़की को याद करके अपने दिल को क्यों तकलीफ़ देना जिसे प्यार की परिभाषा का ज्ञान ही न हो। "

" तू सही कह रही है गुड़िया। " विक्रम के चेहरे पर एकाएक ज़लज़ले के से भाव आए , बोलाा _" लेकिन इसका हिसाब तो मैं उससे लूॅगा गुड़िया। उसे मेरे साथ इस खिलवाड़ को करने की सज़ा ज़रूर मिलेगी मेरे हाथाो । ऐसा हाल करू गा उसका कि फिर किसी के साथ

ऐसा करने की हिम्मत भी नहीं करेगी वो। "

" क्या आपका ऐसा करना मेरा मतलब है कि उसे सज़ा देना उचित है भैयाा ?" निशाा ने कहाा _" उसने जो किया उसे उसका फल भगवान खुद ही दे देगा। आपने उससे सच्चा प्यार किया थाा , इस लिए आप उसके लिए अपने मन में ऐसा विचार कैसे रख सकते हैं ??"

" मैं जानता हूॅ गुड़िया कि प्यार में बदले की ऐसी भावना या विचार रखना उचित नहीं है। " विक्रम ने कहाा _" लेकिन किसी को आईना दिखाना तो सर्वथा उचित है न। वही करना चाहता हूॅ मैं। "

" ठीक है आपको जो अच्छा लगे वो कीजिये भैयाा। " निशाा ने कहाा _" शायद इससे आपके दिल को सुकून मिल जाए। "

" माफ़ करना गुड़िया। " विक्रम ने खेद भरे स्वर में कहाा _" मैं तुझे यहॉ किस लिये लाया था और क्या हो गया। लेकिन तू फिक्र मत कर , अभी तो बहुत समय है। चल हम दोनो अब इस टूर का आनन्द लेते हैं। "

" कोई बात नहीं भैयाा। " निशाा ने प्यार भरे लहजे में कहाा _" आपसे बढ़ कर मेरे लिए कुछ भी नहीं है। आप मेरी जान हैं , और जब मेरी जान ही खुश नहीं रहेगी तो भला मैं कैसे किसी चीज़ से खुश रह सकती हूॅ ?"

" तू और तेरी ये बातें। " विक्रम ने मुस्कुरा कर कहाा _" मेरी समझ से बाहर हैं गुड़िया। "

" ऐसा क्योंं ?" निशाा ने विक्रम की तरफ गौर से देखते हुए कहा था।

" कभी कभी मुझे ऐसा लगा करता है जैसे तेरे अलावा भी तुझ में कोई और कैरेक्टर है जो कुछ और कहने लगता है। " विक्रम ने कहाा _" कुछ ऐसा कहने लगता है जो मेरी समझ में ही नहीं आता। "

" अच्छाा , ऐसा आपको क्यों लगता है भैयाा ?" निशाा ने धड़कते दिल से कहाा _" कि मेरे अंदर कोई और भी कैरेक्टर है जो कुछ और ही कह डालता हैै ?"

" पता नहीं गुड़िया। " विक्रम ने कहाा _" कभी कभी लगता है जैसे तू अब मेरी वो गुड़िया नहीं रही जो हर चीज़ को अपनी मधुर व चुलबुली बातों से हस कर उड़ा देती थी बल्कि अब तू बड़ी हो गई लगती है। इतनी बड़ी कि तेरी बातों में अब किसी रहस्य तथा किसी दूसरे ही अर्थ का आभास होता है जो समझ से परे होता है। "

निशा अपलक देखती रह गई विक्रम को। उसके दिल की धड़कने अनायास ही बढ़ गई थी। उसे समझ में न आया कि वो क्या जवाब दे???

" मैं सच कह रहा हूॅ न गुड़िया ?" उसे चुप देख विक्रम ने कहा _" ऐसी ही बात है न तुझ मे ं ?"

" पता नहीं भैया। " निशा ने सिर झुका कर कहा _" जाने क्यों ऐसा लगता है आपको , जबकि ऐसी तो कोई बात ही नहीं है। "

" चल कोई बात नहीं गुड़िया। " विक्रम ने निशा के चेहरे को अपने दोनो हाथो में लेते हुए कहा _" पर तू इतना समझ ले कि तेरा ये भाई तुझसे बहुत प्यार करता है और तुझे हमेशा खुशियों से चहकती व फुदकती हुई ही देखना चाहता है। "

विक्रम की बातें सुन कर निशा की आॅखें भर आई। उसके दिल में भावना का एक तीव्र भूचाल सा आ गया। उसी भावना के वशीभूत होकर वह विक्रम से लिपट गई। विक्रम के सीने में चेहरा छुपाए हुए ही बोली_"पर ये तभी संभव है जब आप भी खुश रहेंगे। अगर आप किसी बात से दुखी होंगे तो मैं भी दुखी हो जाऊॅगी।"

" ऐसा क्यों भला ?" विक्रम ने कुछ सोचते हुए पूछा था।

" क्योंकि मैं आपसे प्या ....। " निशा कहते हुए अचानक ही रुक गई। उसे एकाएक ही ध्यान आया था कि वह ये क्या बोलने वाली थी। उसकी हालत पल भर में ख़राब हो गई। दिल की धड़कने इतनी तीव्र हो गई उसकी धमक कनपटियों में स्पष्ट सुनाई देने लगी थी। उसने तुरंत ही बात को संभालते हुए बड़ी मुश्किल से कहा _" क्यों कि आप हमारे लिए सब कुछ हैं भ भैया ... अगर आप ही इस तरह दुखी रहेंगे तो हम मॉ बेटी कैसे खुश रह सकेंगे भला ?"

निशा ने भले ही अपनी समझ में बात को संभाल लिया था किन्तु उसके पहले अधूरे वाक्य ने ही सारी सच्चाई स्पष्ट कर दी थी। विक्रम ने पूछा ही इस तरह था कि जल्दबाजी और बेध्यानी में उसके मुख से वो निकल गया था जो वर्षों से उसके दिल में पनप रहा था। विक्रम ये सुन कर तथा ये जान कर बुरी तरह हिल गया था कि उसकी जान उसकी गुड़िया उससे प्यार करती है। यही वो बातें थी जो द्विअर्थी होती थी और विक्रम को समझ में नहीं आती थी। किन्तु आज संयोगवश सब कुछ सामने आ गया था। निशा खुद ही बेख़याली में बोल गई थी।

अपने भाई को खामोश जान कर निशा को झटका सा लगा। उसे समझते देर न लगी कि सब गड़बड़ हो चुका है। मतलब उसका भाई उसके पहले ही अधूरे वाक्य को सुन कर समझ चुका है कि उसकी सच्चाई क्या है। बात को संभालने की उसकी कोशिश बेकार हो चुकी थी। हालत ये हो गई उसकी कि अपने भाई से नज़र मिलाने की उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी अब। भाई के सीने में चेहरा छुपाए वह वैसी ही खड़ी रही। उसे लग रहा था कि ये ज़मीन फटे और वह पाताल तक उसमे समाती चली जाए। मगर चाह कर भी तो वह ऐसा न कर सकी। उसके होंठ घबराहटवश बुरी तरह थरथरा रहे थे।

वातावरण में अजीब सी शान्ति छा गई थी। काफी देर तक यही आलम रहा। दोनो में से कोई

भी कुछ न बोल रहा था। विक्रम तो जैसे वहॉ था ही नहीं बल्कि किसी गहरे ख़यालों के समंदर में डूबा हुआ नज़र आ रहा था। बार बार उसके ज़ेहन में यही बात गूँज रही थी कि उसकी गुड़िया उसकी अपनी बहन उससे प्यार करती है।

" भ भैय ा। " सहसा निश ा ने हिम्मत जुटा कर तथा विक्रम के सीने से अपना चेहरा उठा कर विक्रम की तरफ देखते हुए धीमे स्वर में कह ा _" क्या बात ह ै ... आप एकदम से चुप क्यों हो गए ? क्या मुझसे कोई ग़लती हो गई ? अगर ऐसा है तो मुझे माफ़ कर दीजिए प्लीज़। "

विक्रम के कानों में निशा की जब ये बातें पड़ीं तो वह ख़यालों के गहरे समुद्र से बाहर आया। वस्तुस्थित का आभास होते ही उसने निशा की तरफ अजीब भाव से देखा। निशा खुद भी उसी की तरफ देख रही थी किन्तु शीघ्र ही उसकी नज़रें झुक गईं। जाने क्यों अपने भाई की आॅखों से आॅखें न मिला सकी वह। कदाचित् इस लिए कि उसके दिल का भेद उसके भाई के सामने खुल चुका था।

" आज का पिकनिक टूर यहीं पर खत्म हो चुका गुड़िया। " सहसा विक्रम ने सपाट भाव से कह ा _" अब हम वापस घर चल रहे हैं। "

इतना कह कर विक्रम ने निशा को खुद से अलग किया और बाहर की तरफ चल दिया। निशा को जाने क्यों ऐसा लगा जैसे उसका सब कुछ लुट गया है, उसके सीने में बड़ा तेज़ दर्द उठा। आॅखों के सामने अंधेरा सा छा गया। ऐसा लगा जैसे वह अभी गश खा कर वहीं फर्श पर गिर पड़ेगी। लेकिन अंतिम समय में उसने बड़ी मुश्किल से खुद को संभाल लिया। दिल में उमड़ते हुए जज़्बातों में प्रबलता आ गई जिसकी वजह से उसकी रुलाई फूट गई। वह जी जान से विक्रम की तरफ दौड़ी और पीछे से विक्रम की पीठ से लिपट कर ज़ार ज़ार रोने लगी।

१३

" ये तुम क्या कह रहे हो हरियाा ?" सत्यम सिंह बुरी तरह चौंका थाा _" तुमने अच्छी तरह पता किया तो है न ?"

" जी हॉ मालिक। " हरिया नाम का एक आदमी जो कि सत्यम सिंह का ही आदमी था बोलाा _" मैने अच्छी तरह पता किया है। आपके छोटे भाई कल ही यहॉ से बम्बई के लिए निकल गए थे। उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चों को कल ही बिलासपुर भेज दिया था। मेरे एक खास आदमी ने अपनी आॅखों से उनको जाते हुए देखा था। उसी ने बताया कि छोटी मालकिन(अपर्णाा) के भाई उनके साथ ही थे। "

सत्यम सिंह ये सब जान कर बुरी तरह भिन्ना गया। उसने तो सोचा था कि सुंदर के जाते ही वह अपर्णा को उठवा लेगा और उसे अपने नये फार्महाउस पर रखेगा। उसके बाद वह जिस तरह चाहेगा अपर्णा के गदराए हुए व मादक से जिस्म का मज़ा लूटेगा। किन्तु हरिया की इस ख़बर ने उसके सभी अरमानों पर पानी नहीं फेरा था बल्कि बाल्टी भर पेशाब कर दिया था। उसे इस बात की कतई उम्मीद नहीं थी कि उसका छोटा भाई सुंदर इतना शातिर दिमाग़ निकलेगा जो इतना आगे का सोच कर अपना खेल खेल जाएगा।

सत्यम सिंह चाहता तो अपर्णा को उसके मायके से भी उठवा सकता था किन्तु उस सूरत में बहुत बड़ा बवाल हो जाता। इस लिए अब वह अपने हाथ मलने के अलावा कुछ नहीं कर सकता था। अपर्णा नाम की खूबसूरत चिड़िया अब उसके हाथ से निकल गई थी।

सत्यम सिंह ने सोचा था कि सुंदर के पीछे अपने आदमियों को लगा देगा किन्तु वो भी न कर सका वह। क्योंकि उसे पता ही न चल पाया था कि सुंदर सिंह ने कब क्या किया था?

" तुम पता करो हरिया। " फिर उसने कुछ सोचते हुए कहाा _" सुंदर मुंबई जा चुका है या नहीं ?"

" वो तो कल ही यहॉ से चले गए थे मालिक। " हरिया ने कहाा _" और आज तो वो बम्बई पहुॅच भी गए होंगे। "

" अरे बेवकूफ कल वो मुंबई कैसे जा सकता है ?" सत्यम सिंह ने हुड़की दी _" शाम से पहले तक तो वो यहीं थाा , और शाम को भला कौन सी ट्रेन इस शहर से मुंबई जाती है। वह तो दोपहर को जाती है। मतलब साफ है कि सुंदर कल नहीं आज गया होगा मुंबई। "

" ये तो मैने सोचा ही नहीं मालिक। " हरिया ने सिर झुका कर कहाा _" छोटे मालिक अगर आज गए होंगे तो कल ही पहुॅचेंगे बम्बई। अब हम क्या करें मालिक ?"

" अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है हरिया। " सत्यम सिंह ने कहाा _" ये तो तुम्हें भी मालूम है कि

हमारे कुछ आदमी मुंबई में ही हैं जो विक्रम और उसकी मॉ बहनों की खोज में लगे हुए हैं। हम अपने उन आदमियों को फोन करके कह देंगे कि वो सुंदर पर नज़र रखें। सुंदर कल मुंबई पहुँचेगा। मुंबई में जैसे ही वह ट्रेन से उतरेगा वैसे ही हमारे आदमी उसके पीछे लग जाएंगे। "

" ये तो बहुत बढ़िया आइडियवा है मालिक। " हरिया ने इंग्लिश की मॉ बहन एक करते हुए कहा _" छोटे मालिक जहॉ जहॉ जाएॅगे हमारे आदमीं भी उनके पीछे जाएॅगे। "

" अब तुम जाओ हरिया। " सत्यम सिंह ने कहा _" हम भी किसी ज़रूरी काम से बाहर जा रहे हैं। "

" ठीक है मालिक। " कहते हुए हरिया चला गया वहॉ से।

सत्यम सिंह ने मोबाइल निकाल कर मुंबई में स्थित अपने आदमियों को फोन लगाया। अपने आदमियों को सारी बातें समझाने के बाद उसने फोन काट दिया।

अभी वह इस सबसे फारिग़ ही हुआ था कि सामने से उसकी इंस्पेक्टर बेटी साक्षी आती हुई दिखी। सत्यम सिंह उसे देख कर बस आह सी भर कर रह गया। पुलिस की चुस्त दुरुस्त वर्दी में उसकी बेटी ग़ज़ब ढा रही थी। जिस्म का एक एक उभार साफ नज़र आ रहा था। सत्यम सिंह की आॅखें एकटक साक्षी के सीने पर टिकी हुई थी। जहॉ पर साक्षी के सीने के दो ठोस किन्तु बड़े बड़े वक्ष उसके चलने के कारण एक रिदम पर ऊपर नीचे कूद से रहे थे।

सत्यम सिंह अपनी बेटी के वक्षों को ललचाई नज़रों से देख ही रहा था कि तभी अंदर से आती हुई सोनिया की नज़र सत्यम सिंह पर पड़ी। अपने पति को अपनी ही बेटी के बड़े बड़े पर्वत शिखरों को ललचाई नज़रों से देखते देख वह मन ही मन कह उठी 'उफ्फ सत्यम तुम कभी नहीं सुधर सकते।'

" अरे ... तुम अभी तक यहीं बैठे हो ?" सोनिया ने तुरंत ही सत्यम सिंह का ध्यान भंग करने की गरज से कहा _" तुम तो कह रहे थे कि शहर जाना था ?"

सत्यम सिंह चौंका, उसने तुरंत ही अपनी बेटी पर से नज़रे हटा ली। कुछ पल के लिए उसके चेहरे पर ऐसे भाव उभरे जैसे इस सबसे वह बेहद शर्मसार हुआ हो किन्तु फिर अगले ही पल खुद को संभाल कर बोला_"ह हॉ हॉ बस निकल ही रहा हूँ मैं।"

तब तक साक्षी भी आकर वहॉ पर रखे एक सोफे पर लगभग पसर सी गई। अपने सिर से पुलिस की कैप उतार कर तथा हाथ में लिए पुलिस रुल को उसने एक तरफ रख दिया और फिर अपनी मॉ की तरफ देखते हुए कहा_"मॉम एक कप कॉफी मिलेगी क्या??"

" अभी लाई बेटी। " कहते हुए सोनिया वापस पलट गई और किचेन की तरफ चली गई।

" लगता है मेरी बेटी के सीने में काम और जिम्मेदारी का बोझ बहुत ही ज्यादा है। " सत्यम

सिंह ने पुनः साक्षी के सीने की तरफ एक नज़र डाल कर कहा था।

" सीने पर ?????" साक्षी ने चकरा कर कहा _" काम और जिम्मेदारी का बोझ तो कंधों पर होता है ना डैड ??"

" ओह हॉ हॉ बेटी। " सत्यम सिंह बुरी तरह हड़बड़ा गया। उसके चेहरे पर घबराहट के भाव भी उभरे किन्तु फिर तुरंत ही सम्हल कर बोला _" यू आर राइट .... अब्सोल्यूटली राइट। "

" डैड कल से जयदीप कहीं नज़र नहीं आ रहा ?" साक्षी ने पहलू बदलते हुए कहा _" और ना ही चाचा चाची जी वगैरा कहीं नज़र आ रहे हैं ?"

" जयदीप तो शहर में है बेटी। " सत्यम ने राहत की सास लेते हुए कहा _" बॉकियों का मुझे पता नहीं। सब अपनी मर्ज़ी के मालिक हैं। कहीं आने जाने के लिए वो किसी से पूछना ज़रूरी नहीं समझते। ख़ैर तुम बताओ , तुम्हारे केस का क्या हुआ ? मेरा मतलब है कि क्या ये पता चल सका कि हमारी फैक्टरी में किसने बम्ब फिट किया था ?"

" नहीं डैड। " साक्षी ने कहा _" बड़ा ही पेंचीदा मामला है। इस मामले में कुछ भी पता नहीं चल सका कि वो कौन था ? हॉ इतना जरूर पता किया कि फैक्टरी के गेट के बाहर मौजूद गार्ड झूठ बोल रहा था। दरअसल जिस रात ये हादसा हुआ था उस रात गेट पर एक ही गार्ड था और वो भी चौबीस घंटे की ड्यूटी पर। इस लिए रात में वह गेट के बाहर रखी कुर्सी पर बैठा बैठा ही ऊँघ रहा था। इसके बाद उसने ये बताया कि उसे ये आभास हुआ कि कोई चीज़ उसकी नॉक के पास लाई गई थी। जिसके असर से उसे पता ही नहीं चला कि वह कब बेहोश हो गया था ? उसके बाद तब उसे होश आया जब फैक्टरी में लगी आग से अफरा तफरी मची हुई थी। यकीनन जो चीज़ उसके नॉक के पास लाई गई थी वह क्लोरोफॉम डाला हुआ कोई रुमाल रहा होगा या फिर खुद क्लोरोफॉम की बॉटल। इस हादसे से वह गार्ड बहुत ज्यादा डर गया था इसी लिए शुरू में उसने यही कहा था कि वह रात भर जागता रहा था और उसके सामने कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं आया था जो फैक्टरी के अंदर गया हो। "

" तो फिर क्या फायदा हुआ तुम्हारे द्वारा केस को रिओपन करने से ?" सत्यम सिंह ने साक्षी की तरफ अजीब भाव से देखते हुए कहा _" आख़िर क्या नतीजा निकला बेटी ? वरना जिस तरह से तुमने इस केस को रिओपन किया था उससे तो यही ज़ाहिर हो रहा था कि इस बार कोई न कोई सुराग़ ज़रूर पुलिस के हाथ लगेगा। दूसरी बात ये भी मुझे पता चली थी कि इस केस के रिओपन होने के तुरंत बाद ही रातों रात शहर के सारे पुलिस डिपार्टमेन्ट का तबादला कर दिया गया था। सवाल है कि ऐसा क्यों हुआ था ?"

" ये सवाल तो मेरे लिए भी सोचने का विषय बना हुआ है डैड। " साक्षी ने सोचने वाले भाव से कहा _" मुझे खुद ये बात समझ में नहीं आ रही कि गृह मंत्री ने शहर के सारे पुलिस विभाग का रातों रात तबादले का आदेश किस वजह से दिया था ? अगर हम ये सोचें कि इसकी वजह ये है कि पिछली बार फैक्टरी के केस में पुलिस ने अपनी पूरी ईमानदारी से

तहकीकात नहीं की थी बल्कि ग़लत रिपोर्ट तैयार की थी तो भी ये इतनी बड़ी वजह नहीं हो सकती कि इसकी वजह से शहर के सारे पुलिस विभाग का इस तरह तबादला कर दिया जाए। पिछली रिपोर्ट पर ऊपर से इंक्वायरी भी हुई थी। जिसमें पुलिस के उस अफसर ने ये बयान दिया था कि ऐसी रिपोर्ट बनाने के लिए आपने कहा था क्यों कि आप नहीं चाहते थे कि इसकी वजह से आपकी इज्जत नीलाम हो जाए। ख़ैर , आपके कहने पर उस अफसर ने भले ही ग़लत रिपोर्ट बनाई थी लेकिन इसके लिए उसे ज्यादा से ज्यादा सस्पेंड किया जा सकता था मगर ऐसा नहीं हुआ बल्कि शहर का सारा पुलिस विभाग ही बदल दिया गया। यही वो बात है डैड जिसने दिमाग़ का दही किया हुआ है। "

" हम्म ... यकीनन। " सत्यम सिंह ने गहन सोच के साथ कहा _" बात तो वाकई बड़ी ही चक्करदार है बेटी। और सबसे बड़ी समस्या तो ये है कि इस बारे में गृहमंत्री से पूछा भी नहीं जा सकता। "

तभी सोनिया हाथ में ट्रे लिए हुई आई। उसने काफी का कप साक्षी को दिया और चाय का एक कप सत्यम सिंह को और चाय का ही एक कप खुद लेकर वहीं सोफे पर बैठ गई।

" क्या बातें हो रही हैं बाप बेटी के बीच ?" सोनिया ने मुस्कुरा कर कहा था।

सत्यम सिंह ने संक्षेप में उसे बता दिया। सुन कर सोनिया ने कहा_"ये तो सचमुच बड़ी सोचने वाली बात है। इस केस में आख़िर ऐसा क्या था जिसके लिए खुद गृहमंत्री को भी हस्ताक्षेप करना पड़ा? इतना ही नहीं बल्कि उन्होंने रातो रात शहर के सारे पुलिस विभाग का तबादला भी कर दिया था।"

सोनिया की इस बात के बाद वहॉ पर सन्नाटा छा गया। कोई कुछ न बोला, कदाचित् इस लिए कि किसी के पास इसका कोई जवाब नहीं था। ये अलग बात थी सबके मन में ये बात गहन रूप से विचाराधीन थी।

१४

" नहीं ... प्लीज़ रुक जाइये ... आप इस तरह कैसे जा सकते हैं ?" निशा ने रोते हुए कहा था _" हम तो पिकनिक टूर पर आए थे न , फिर इतनी जल्दी ये टूर कैसे समाप्त हो जाएगा ? और .... और ये अचानक क्या हो गया है आपको जो ये कह रहे हैं कि हम अब घर चलेंगे ???"

" मुझे कुछ नहीं हुआ है। " विक्रम ने अजीब भाव से कहा _" हम घर जा रहे हैं बस और कोई बात नहीं। "

ये कह विक्रम ने निशा को अपनी पीठ पर से अलग कर आगे बढ़ने के लिए कदम बढ़ाया। किन्तु ज्यादा दूर जा नहीं सका वह। क्योंकि उसके कानों में तुरंत ही निशा का करुणायुक्त वाक्य टकराया_"आपको मेरी कसम है अगर आपने एक क़दम भी आगे बढ़ाया तो मैं अपनी जान दे दूँगी। मुझे बताइये कि आख़िर क्या हो गया है ऐसा जिसकी वजह से आप अचानक ही इस तरह का बर्ताव करने लगे। अगर मुझसे कोई ग़लती हो गई है तो आप उसके लिए मुझे जो चाहे सज़ा दे दीजिए....मुझे आपकी हर सज़ा मंजूर है। लेकिन अपने प्रति आपकी ऐसी बेरुखी मैं सह नहीं सकती।"

" मेरी इस बेरुखी की वजह तुम अच्छी तरह जानती हो। " विक्रम ने एक झटके में पलट कर कहा था _" तुम जानती हो कि किस वजह से मेरा बर्ताव अचानक ही बदल गया है। अगर नहीं जानती तो इस तरह रोती नहीं और ना ही मुझे अपनी कसम देती। "

निशा देखती रह गई विक्रम को। उसे तुरंत कोई जवाब न सूझा था। आँखों में आँसू लिए वह बड़ी मुश्किल से अपने दिल के जज़्बातों को काबू में करने की नाकामयाब कोशिश कर रही थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वो विक्रम से क्या कहे?

" तुम ऐसा कैसे कर सकती हो गुड़िया ?" उसे चुप देख विक्रम ने कहा _" क्या एक बार भी तुम्हें ये ख़याल नहीं आया कि तुम ये क्या कर रही हो ? क्या एक बार भी ये नहीं सोचा कि मैं तुम्हारा सगा भाई हूँ ? क्या एक बार भी नहीं सोचा कि जो रिश्ता तुम बना रही हो वो भाई बहन के बीच नहीं हो सकता ? क्यों गुड़िया , क्यों किया ऐसा ?"

" मुझे माफ कर दीजिये। " निशा की रुलाई फूट गई , बोली _" मैंने जान बूझ कर ये सब नहीं किया। ये तो बस हो गया। कब कैसे मुझे खुद पता नहीं चला। आप यकीन कीजिए भैया , मैने ये नहीं किया। आप तो जानते हैं न कि कोई किसी से जान बूझ कर या सोच समझ कर प्यार नहीं करता बल्कि लोगों को किसी खास व्यक्ति से प्यार खुद ही हो जाता है। और उसे स्वयं इस बात का पता नहीं चल पाता। वैसा ही मेरे साथ हुआ है भैया। "

" लेकिन ये ग़लत है मेरी गुड़िया। " विक्रम ने कहा _" क्या तू नहीं जानती ये बात ?"

" मैं जानती हूँ कि ये ग़लत है। " निशा ने नज़रें झुका कर किन्तु भारी स्वर में कहा _" ये भी जानती हूँ कि देश समाज भाई बहन के बीच इस रिश्ते को कभी मान्यता नहीं दे सकता बल्कि ऐसे रिश्ते को पाप समझ कर ऐसा रिश्ता रखने वाले को गॉव समाज से बहिष्कृत कर देता है। इसी लिए मैने कभी आपके सामने ये ज़ाहिर नहीं होने दिया कि मेरे दिल में आपके लिए क्या है ? मैने अकेले में खुद को लाखों बार समझाया कि मुझे अपने दिलो दिमाग़ से आपके प्रति ऐसे ख़याल निकाल देना चाहिए क्यों कि ये ग़लत था। मगर मेरा दिल खुद के द्वारा लाखों बार समझाने के बाद भी मेरी नहीं सुनता। मैं क्या करू भैया .... हाय कितनी बुरी हूँ मैं और कितनी बद्किस्मत भी हूँ कि जिससे मुझे जीवन में पहली बार दिलो जान से प्यार हुआ वो मेरे भाई हैं तथा एक ही मॉ की कोख से जन्में हैं। मेरे दिल ने जिनकी अटूट चाहत व हसरत पाल बैठा वो उसे कभी मिल ही नहीं सकते। "

कहते कहते निशा वहीं फर्श पर असहाय अवस्था में बैठ कर ज़ार ज़ार रोने लगी। जाने कब से उसके दिल में ये गुबार बाहर निकलने के लिए मचल रहा था। आज उस गुबार ने दिल की कैद से बाहर निकल आने का जैसे रास्ता ढूँढ़ लिया था। हमेशा हॅसती खेलती व शरारतें करने वाली निशा आज जैसे इस सबके बाद दुख का दर्पण बन गई थी। जिस दिन उसे इस बात का एहसास हुआ था कि उसे अपने ही भाई से प्यार हो गया है उस दिन वह खूब रोई थी। क्योंकि वह इस बात को भली भॉति जानती और समझती थी कि ये ग़लत है। अपने ही भाई को अपना महबूब बना लेना कतई उचित नहीं है। इस संबंध को समाज निम्न दृष्टि से देखता है। उसने इस बारे में अपने आपको बहुत समझाया था। सबके सामने उसी तरह हॅसती मुस्कुराती रहती किन्तु अपने कमरे में रात की तन्हाई में जब उसका मन भटकते हुए अपने भाई तक पहुँच जाता तो सहसा उसको झटका सा लग जाता था। धड़कने रुक सी जाती उसकी और ये ख़याल उसे पल में रुला देता कि ये उसके दिल ने क्या कर दिया? वह रात रात भर इस बारे में सोचती रहती और भावना व जज़्बातों के भॅवर में खुद को रुलाती रहती। दिल के हाथो मजबूर हो चुकी थी वह। छोटी सी इस ऊम्र में उसके दिल ने ये कैसा रोग़ लगा लिया था, और लगाया भी था तो किसका.....खुद अपने ही भाई का? जो उसका कभी हो ही नहीं सकता था।

उस दिन तो वह बहुत रोई थी जिस दिन उसे ये पता चला था कि उसका भाई किसी ऐसी लड़की से प्यार करता है जिसने उसके भाई को सिर्फ इस लिए दुत्कार कर छोंड़ दिया है कि अब वह धन दौलत वाला नहीं रहा। इस बात ने निशा के दिल में जाने क्यों जलन पैदा कर दी थी उस वक्त। लेकिन वहीं इस बात से उसके मन को थोड़ा राहत भी हुई थी कि वह लड़की अब उसके भाई को छोंड़ कर उसके जीवन से जा चुकी है। निशा खुद से ये सवाल करती कि उसको इस बात से क्या फर्क पड़ता है कि उसके भाई के जीवन से कोई लड़की जा चुकी है या नहीं। पर दिल के किसी कोने से उसे ये आवाज़ भी आती कि 'बहुत फर्क पड़ता है....विक्रम सिर्फ मेरे हैं'

अपने दिल की इस आवाज़ को सुन कर उसके रोंगटे खड़े हो जाते। उसका मन मयूर नाचने लग जाता था। मगर जब उसे इस बात का बोध होता कि वो जिसे प्यार करती है तथा जिसको अपना बनाने की हसरत रखती है वो तो उसका सगा भाई है जिसे वो किसी भी कीमत पर अपना नहीं बना सकती तो उसका दिल बैठ जाता। ये एहसास उसे एक ही पल में ज़िन्दा लाश

में तब्दील कर देता। उसके अंदर एक हूक सी उठती और फिर आॅखों से मानो गंगा जमुना बहने लग जातीं। उसे लगता कि इस दुनिया में उससे ज्यादा कोई दुखी नहीं है।

निशा को इस तरह ज़ार ज़ार रोते देख विक्रम तड़प कर रह गया। आख़िर थी तो उसकी बहन ही। ऐसी बहन जिसकी आॅखों में आॅसू का एक कतरा भी वह नहीं देख सकता था। हालातों ने भले ही अपना चेहरा बदल लिया था और ये बता दिया था कि उसकी बहन के मन में वो जाने कब से एक महबूब बन कर बैठा हुआ था लेकिन वह तो अभी भी यही समझता था न कि निशा उसकी बहन ही है। जिसको वह किसी भी तरह दुख में नहीं देख सकता। इस लिए इसके पहले जो उसने बेरुखी का आवरण धारण कर लिया था उस आवरण को उसने शीघ्र ही दरकिनार कर दिया और तुरंत ही झुक कर फर्श पर बैठी रो रही अपनी बहन को उसके दोनो कंधों से पकड़ कर हौले से उठाया और अपने सीने से लगा लिया।

" बस कर अब। " विक्रम ने भर्राए हुए गले से कहा _" तू जानती है ना कि मैं तेरी आॅखों में आॅसू का एक कतरा भी नहीं देख सकता। इस तरह रो कर क्यों मेरे हृदय को चोंट पहुॅचा रही है गुड़िया ? चल अब शान्त हो जा। "

" मुझे माफ़ कर दीजिए भैया। " निशा ने विक्रम के सीने से लगे हुए कहा _" लेकिन ये सच है कि मैं आपसे बेइंतहा प्यार करती हूॅ और आपके बिना एक पल भी जीने का सोच भी नहीं सकती। मैं जानती हूॅ भैया कि ये ग़लत है पर आप मेरी बेबसी को भी समझिये। आप मेरे मन मंदिर में इस हद तक बस चुके हैं कि अब मैं ही क्या बल्कि खुद भगवान भी मेरे मन मंदिर से आपको नहीं निकाल सकता। आप मेरे नहीं हो सकते और ना ही मैं आपको इस बात के लिए मजबूर करू गी कि आप मेरे हो जाइये। बस एक ही विनती है आपसे कि आप मुझे ये नहीं कहेंगे कि मैं आपसे प्यार का रिश्ता न रखूॅ , क्योंकि ये मेरे बस में नहीं है भैया। "

" ये हमारे भाग्य की कैसी विडम्बना है गुड़िया ?" विक्रम ने अत्यंत गंभीर होकर किन्तु दुखी भाव से कहा _" मैं समझ सकता हूॅ तेरे दिल की हालत को क्योंकि मैं उस हालत से आज भी गुज़र रहा हूॅ। मगर ज़रा हम दोनो भाई बहन के नसीब का खेल तो देखो ... जिसको मैने टूट कर चाहा उसने मुझे सिर्फ इस लिए ठुकरा दिया कि मैं रुपये पैसे वाला नहीं रहा था और जिसे तुम टूट कर चाहती हो वो तुम्हारा हो ही नहीं सकता। ये प्यार मोहब्बत क्यों ऐसी होती है ? इसके नसीब को क्यों इस तरह का बना दिया है भगवान ने कि ये जिस किसी से होगी वो उसका हो ही नहीं सकेगा ? क्यों ऐसी मोहब्बत बनाई बनाने वाले ने ? क्या सिर्फ इस लिए कि मोहब्बत करने वाले अपने महबूब के विरह में जीवन भर तड़पें ??"

" शायद इसी लिए विक्रम। " निशा ने कहीं खोए हुए कहा था। उसे इस बात का आभास ही नहीं था कि वह अपने बड़े भाई को उसके नाम से संबोधित कर ये कहा था। जबकि ...

" विक्रम ..???" विक्रम बुरी तरह चौंका था। उसने निशा को खुद से अलग कर उसके चेहरे की तरफ हैरानी से देखा।

" क क्या हुआ भैया ??" निशा चौंकी , उसको कुछ समझ न आया कि उसके भाई ने

अचानक उसे खुद से अलग क्यों किया।

" क्या बताऊॅ ??" विक्रम ने अजीब भाव से उसे देखते हुए कहा _" सुना है इश्क़ जब किसी के सर चढ़ जाता है तो उस व्यक्ति को कुछ ख़याल ही नहीं रह जाता कि वह किससे क्या बोल बैठता है ?"

" आप ये क्या कह रहे हैं ?" निशा ने उलझन में कहा _" मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा ?"

" अरे पागल तूने अभी अभी मुझे मेरा नाम लेकर पुकारा है। " विक्रम ने कहा _" हाय मेरी बहन प्रेम में कैसी बावली और बेशर्म हो गई है कि अब वो अपने बड़े भाई का नाम भी लेने लगी। "

" क क्याऽऽ ????" निशा बुरी तरह उछल पड़ी। हैरत और अविश्वास से उसका मुॅह खुला का खुला रह गया। फिर सहसा उसे एहसास हुआ कि उसके भाई ने अभी क्या कहा है। उसका चेहरा लाज और शर्म से लाल सुर्ख पड़ता चला गया। नज़रें फर्श पर गड़ गईं उसकी। छुईमुई सी नज़र आने लगी वह। उसे इस तरह खड़े न रहा गया। कहीं और मुह छुपाने को न मिला तो पुनः वह विक्रम से छुपक कर उसके सीने में चेहरा छुपा लिया अपना। विक्रम को ये अजीब तो लगा किन्तु अपनी बहन की इस अदा पर उसे बड़ा प्यार आया। जीवन में पहली बार वह अपनी बहन को इस तरह और इतना शर्माते देखा था।

विक्रम अपनी बहन को अभी इस तरह शर्माते देख ही रहा था कि उसकी पैन्ट की पॉकेट में पड़ा मोबाइल बज उठा। दोनो ही मोबाइल की रिंगटोन सुन कर चौंके।

" आपका मोबाइल भी न। " निशा ने बुरा सा मुह बना कर कहा _" ग़लत समय पर ही बजता है। "

" अरे ! ऐसा क्यों कह रही है तू ?" विक्रम ने पॉकेट से मोबाइल निकालते हुए कहा था।

" अब जाने दीजिए। " निशा विक्रम से अलग होकर बोली _" आप देखिये , जाने कौन कबाब में हड्डी बन गया है । "

विक्रम उसकी बात पर मुस्कुराया और मोबाइल की स्क्रीन पर फ्लैश कर रहे नाम को देख तनिक चौंका फिर मुस्कुरा कर कॉल को रिसीव कर कानों से लगा लिया।

".....। " उधर से जाने क्या कहा गया जिसे सुन कर विक्रम बुरी तरह चौंका।

" ये क्या कह रहे हो तुम ?" विक्रम ने हैरानी से कहा था।

".....। " उधर से फिर कुछ कहा गया।

" भाई तूने बहुत अच्छी ख़बर दी है। " विक्रम खुश होकर बोलाा _" चल ठीक है मैं देख लूँगा। "

".....□ "

" ओह तो ये बात है। " विक्रम ने सहसा सपाट भाव से कहाा _" चल कोई बात नहीं भाई। देख लेंगे सबको। और हाँ ... सुन , मैने तेरा काम कर दिया है ठीक है न ? चल रख फोन। "

" किससे बात कर रहे थे आप ?" निशाा ने उत्सुकतावश पूछा।

" अपना ही एक आदमी था गुड़िया। " विक्रम ने कहाा _" उसने फोन करके बहुत अच्छी ख़बर सुनाई है। हमें अब इस टूर को यहीं खत्म करना होगा। क्योंकि बहुत ज़रूरी काम से मुझे कहीं जाना है। "

" क्या मुझे नहीं बताएॅगे ?" निशाा ने तिरछी नज़र से देखते हुए किन्तु इक अदा से कहाा _" कि ऐसी क्या ख़बर सुनाई आपके उस आदमी ने जिसकी वजह से आपको अब जल्दी यहाँ से निकलना होगाा ??"

" अरे पागल तुझसे भला क्यों कोई बात छुपाऊँगा मैं ?" विक्रम हॅसाा _" चल रास्ते में बताता हूँ सब कुछ। "

इसके बाद दोनो भाई बहन शिप के पायलट को सूचित कर शिप को वापस लौटने के लिए कह दिया। लगभग आधे घंटे बाद वो समुंदर के किनारे पर पहुॅचे। इस बीच विक्रम ने निशा को फोन पर हुई बातों के बारे में बता दिया था जिसे सुन कर वह भी खुश हो गई थी।

शिप से बाहर आकर विक्रम उस जगह निशा को लेकर गया जहाँ पर उसकी कार पार्क की हुई थी। दोनो कार में बैठ कर घर की तरफ तेज़ी से बढ़ गए थे। इस बीच विक्रम ने फोन लगा कर किसी से बातें भी की थी।

शाम होने से पहले ही जब दोनो घर के अंदर पहुॅचे तो माॅ रेणुका को ड्राइंग रूम में एक तरफ की दीवार पर लगी बड़ी सी एल ई डी टीवी पर सीरियल देखते पाया। रेणुका ने जब अपने बच्चों को देखा तो पहले तो वो चौंकी फिर मुस्करा कर बोली_"आ गए तुम दोनो? चलो अच्छा किया जो जल्दी ही आ गए। जाओ दोनो खुद को साफ सुथरा कर लो तब तक मैं चाय बना कर लाती हूँ।"

निशा और विक्रम दोनो अपने अपने कमरे की तरफ बढ़ गए। कुछ ही देर में दोनो फ्रेश होकर आए और सोफों पर बैठ गए। तभी रेणुका हाथ में ट्रे लिए आई और दोनो को चाय दी और खुद भी एक कप चाय लेकर वहीं सोफे पर बैठ गई।

" माॅ चाचा जी आ रहे हैं आज। " विक्रम ने चाय की एक चुश्की लेकर कहाा _" और मुझे जल्द ही रेलवे स्टेशन जाना होगा उन्हें रिसीव करने के लिए। "

" क्या कह रहा है तू ..... सुंदर आ रहा है ???" रेणुका बुरी तरह चौंकी थी , बोली _" पर तुझे कैसे पता इसका ?"

" गॉव के एक दोस्त ने मुझे फोन पर इस बात की सूचना दी है मॉ। " विक्रम ने सहसा गंभीर होकर कहा _" उसने बताया कि सुंदर चाचा चुपचाप ही हमसे मिलने के लिए गॉव से निकले हैं। उसने ये भी बताया कि पिछले दिन हवेली में कोई बातचीत हो गई थी और सुंदर चाचा बहुत गुस्से में भी थे। "

" ऐसी क्या बातचीत हुई होगी ?" रेणुका ने मानो खुद से ही सवाल किया था , फिर तुरंत ही बोली _" और क्या बताया तेरे उस दोस्त ने ?"

" मुझे तो ऐसा लगता है मॉ कि कोई गंभीर बात है। " विक्रम ने कहा _" मेरा दोस्त कह रहा था कि बड़े पापा ने सुंदर चाचा के पीछे अपने आदमियों को लगाया हुआ है। इससे तो यही लगता है कि वो सुंदर चाचा के द्वारा हम तक पहुॅचना चाहते हैं। "

" ठीक कहता है तू। " रेणुका ने कहा _" ऐसा ही होगा। और अगर कोई बात हो गई है तो उससे सुंदर और उसके बीवी बच्चों पर ख़तरा भी होगा। उन्हें पता नहीं है कि उनका बड़ा भाई कितना बड़ा कमीना है। "

" इसी लिए तो मैं उन्हें लेने जा रहा हूँ मॉ। " विक्रम ने कहा _" चाचा जी को तो शायद इस बात का अंदेशा भी न होगा कि उनके पीछे उनके बड़े भाई साहब ने अपने आदमी लगा रखे हैं। "

" अगर ये सच है कि सुंदर के पीछे तेरे बड़े पापा ने अपने आदमी लगा रखे हैं तो तू कैसे सुंदर को उन आदमियों की नज़रों से बचा कर लाएगा ?" रेणुका ने कहा _" तुझे तो पता भी नहीं है कि वहाँ पर किन जगहों पर वो आदमी मौजूद होकर सुंदर पर नज़र रखे हुए हैं ?"

" आप फिक्र मत कीजिए मॉ। " विक्रम ने कहा _" मैं चाचा जी को सुरक्षित वहाँ से ले आऊॅगा और उन आदमियों को इसकी भनक भी नहीं लगेगी। "

" ठीक है बेटे। " रेणुका ने सहसा फिक्रमंद हो कर कहा _" सम्हल कर जाना और अपने चाचा को सुरक्षित लेकर आना। "

" ऐसा ही होगा मॉ। " विक्रम ने कहा _" आप बिलकुल भी फिक्र मत कीजिए। मैं उन्हें सुरक्षित ही लेकर आऊॅगा। "

ये कह विक्रम सोफे से उठ कर बाहर की तरफ चला गया। कुछ ही देर में उसकी कार हवा से बातें कर रही थी। लगभग पन्द्रह मिनट बाद उसकी कार मेन रोड से उतर कर एक तरफ को मुड़ गई। कुछ दूर जाने के बाद विक्रम ने कार को सड़क के किनारे लगा कर उसे बंद कर दिया और बॉई कलाई पर बॅधी रिस्टवाच पर ज़रा बेचैनी से नज़र डाली। उसके बाद राइट साइड की तरफ बनी हुई सड़क की तरफ देखने लगा। उसके चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे किसी के आने

का इन्तज़ार कर रहा हो।

कुछ ही देर में उस सड़क से उसे चार आदमी आते हुए दिखे। उन चारो आदमियों में एक की वेशभूषा सामान्य थी किन्तु बाकी के तीनों आदमियों के जिस्म पर कुली की पोशाख थी। थोड़ी ही देर बाद वो चारो विक्रम की कार के ड्राइविंग डोर के पास आकर खड़े हो गए।

" आने में इतना समय क्यों लगा दिया तुम लोगों ने ?" विक्रम ने कहा _" मैने तुम लोगों को फोन पर बोला था न कि मुझे एकदम तैयार होकर यहीं पर मिलना। "

" साहब वो रामू की बेटी की तबियत बहुत ख़राब थी। " एक आदमी ने कहा _" इस लिए उसे अस्पताल लेकर जाना पड़ गया था। उसके पास पैसे नहीं थे तो हम सबने पैसों की व्यवस्था की फिर उसे अस्पताल ले गए। उसी में समय लग गया साहब। "

" क्या हुआ उसकी बेटी को ?" विक्रम ने चौंकते हुए पूछा था।

" पता नहीं साहब। " उस व्यक्ति ने कहा _" एक हप्ते से बुखार थी उसे। थोड़ी बहुत गोली दवाई करवाई थी रामू ने। लेकिन आज दोपहर उसकी तबीयत कुछ ज्यादा ही बिगड़ गई इस लिए उसे अस्पताल लेकर जाना पड़ गया। "

" चलो कोई बात नहीं। " विक्रम ने कहा _" रामू को बोलो कि पैसों की चिन्ता न करे। उसकी बेटी के इलाज में जो भी पैसा लगेगा उसे हमारी कंपनी देगी। उसको बोलो कि वो अपनी बेटी का इलाज बेहतर तरीके से करवाए। "

" जी साहब। " उस आदमी ने खुश होकर कहा _" मैं अभी उसे बोलता हूँ। "

कहने के साथ ही उस आदमी ने अपनी सर्ट की पॉकेट से एक छोटा सा कीपैड वाला फोन निकाला और उस पर रामू का नम्बर देख उसे लगा दिया। उसने रामू को सारी बात बताई। उसके बाद उसने फोन बंद कर दिया।

विक्रम ने कार की डैशबोर्ड पर रखा एक लिफाफा उठाया। उसमे से उसने जो चीज़ें निकाली वो कोई फोटोग्राफ्स थे।

" इनमें से एक एक फोटोग्राफ्स तुम चारो अपने पास रखो। " विक्रम ने कहा _" इस फोटो में जो आदमी है उसे अच्छी तरह देख लो। क्योंकि इस आदमी को बड़ी सावधानी से रेलवे स्टेशन के बाहर लाना है तुम लोगों को। "

" पर साहब इतनी भीड़ में हम उन्हें खोजेंगे कैसे ?" एक आदमी ने कहा _" दूसरी बात क्या पता कौन से डिब्बे में होंगे वो ?"

" वो जनरल डिब्बे में ही हैं। " विक्रम ने कहा _" इस लिए तुम लोग सिर्फ जनरल डिब्बे में

ही उन्हें खोजोगे। कहीं और खोजने की ज़रूरत नहीं है। बाकी तो सब कुछ तुम्हें फोन पर समझा ही दिया था मैने। "

" ठीक है साहब। " दूसरे आदमी ने कहा _" हम सब इस बात का ख़याल रखेंगे कि उनके पीछे लगे हुए उन आदमियों को पता न चल सके कि वो जिनका पीछा कर रहे हैं वो उनकी आँखों के सामने से कैसे गायब हो गया ??"

" वैरी गुड शंकर। " विक्रम ने कहा _" अभी ट्रेन के आने में समय है। तब तक मैं तुम्हें एक किराए की टैक्सी का इन्तजाम भी कर देता हूँ। तुम उन्हें रेलवे स्टेशन से बाहर लाओगे , एक आदमी बाहर टैक्सी में बैठा तुम लोगों का इन्तज़ार करेगा। जैसा कि अभी तुम में से एक आदमी को छोंड़ कर बाकी तीनो कुली के वेश में हो इस लिए तुम तीनो में से जिसे भी वो मिलें तो उनके पास जाकर बड़ी सावधानी से सिर्फ वही कहना जो फोन पर समझाया था। "

" ऐसा ही होगा साहब। " एक अन्य आदमी ने कहा _" आप बेफिक्र रहिए। "

" अच्छी बात है। " विक्रम ने कहा _" चलो बैठो सब , हमें निकलना भी है अब। "

विक्रम के कहने पर चारो आदमी खुशी से बैठ गए जबकि विक्रम ने कार को स्टार्ट कर आगे बढ़ा दिया।

मुंबई जाने वाली ट्रेन के उस जनरल कोच में भीड़ तो इतनी नहीं थी किन्तु नाम तो जनरल ही था। कोई किसी को भी बैठने के लिए सीट देने को तैयार नहीं था। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो ज़बरदस्ती लड़ झगड़ कर अपने बैठने के लिए सीट का जुगाड़ कर ही लेते हैं। यहाँ प्यार इज्जत या अनुनय विनय करने वाले को कोई सीट नहीं देता और ना ही सीट के ज़रा से भी हिस्से में कोई बैठने देता है। जनरल कोच में तो ऐसा है कि अगर आप गाली गलौच या लड़ना जानते हैं या फिर तुरंत ही किसी भी व्यक्ति पर हावी हो जाना जानते हैं तो बेहतर है। क्योंकि उससे आपको जल्द ही कहीं न कहीं सीट मिल जाती है बैठने के लिए। लेकिन उसमें भी शर्त ये होती है कि आपके पास अपनी सुरक्षा के लिए अपने साथ कुछ लोगों का बैकप होना ज़रूरी है वरना अगर आप अकेले हैं और अकेले ही तोपसिंह बनने की कोशिश कर रहे हैं तो समझिये आपका बुरी तरह पिट जाना तय है।

सुंदर सिंह गरम मिज़ाज का आदमी था। उसे कब किस बात पर क्रोध आ जाए ये बात वो खुद ही आज तक जान नहीं पाया था। मगर आज उस पर कोई क्रोध हावी न हुआ था। उसने सीट के लिए किसी से कुछ नहीं कहा था, बल्कि हाँथ में एक छोटा सा थैला लिए वह दरवाजे के पास ही एक तरफ कभी खड़ा हो जाता तो कभी वहीं पर बैठ जाता। सारी रात ऐसे ही निकल गई थी उसकी।

ट्रेन अपने नियमित समय से चार घंटे लेट थी। यद्यपि सुंदर को समय का आभास ही इतना नहीं हुआ था क्योंकि वो तो अपने परिवार और अपने बीवी बच्चों के बारे में ही सोचता रहा था। रह रह कर उसके मन में ये विचार उठता कि उसने अपनी देवी समान भाभी के साथ

अच्छा नहीं किया। उसे अपने भतीजे का भी ख़याल आता कि कैसे वह उसे हमेशा इज्जत व सम्मान देता था। परिवार में वही एक लड़का था जिस पर संस्कार और शिष्टाचार कूट कूट कर भरे हुए थे। उसे अपने इस भतीजे पर बड़ा स्नेह और फक्र भी होता था। उसकी भतीजी निशा उसकी लाडली थी। वह परिवार में सबसे ज्यादा निशा को ही प्यार और स्नेह देता था। सब जानते थे कि सुंदर गुस्सैल स्वभाव का था किन्तु उसका गुस्सा कपूर की तरह उस वक्त काफूर हो जाता जब उसकी लाडली भतीजी अपनी चंचल व नटखट बातों से उसे पहले तो मनाती फिर खुद ही रूठ जाती उससे। उसका अपनी किसी भी बात के अंत में 'हाँ नहीं तो' जोड़ देना इतना मधुर और हृदय को छू लेने वाला होता कि सुंदर का सारा गुस्सा पल में दूर हो जाता और वह अपनी लाडली भतीजी को खूब प्यार करता। परिवार की बाकी दो भतीजियॉ उसके पास नहीं आती थी, क्यों कि वो सब उससे डरती थी।

सुंदर का दिलो दिमाग़ गुज़री हुई बातों को सोच सोच कर बुरी तरह दुखी होता और उसकी आँखें भर आतीं। वह अपने मन में कई तरह के संकल्प लेता हुआ खुद के मन को हल्का करने की कोशिश करता रहा था।

आख़िर वह समय भी आ ही गया जब ट्रेन मुंबई के कुर्ला स्टेशन पर पहुॅची। सुंदर अपनी सोचों के अथाह समुद्र से बाहर आया और उठ कर गेट की तरफ चल दिया। काफी भीड़ थी अंदर, लोग जल्द से जल्द नीचे उतरने के लिए जैसे मरे जा रहे थे। सुंदर खुद भी लोगों के बीच धक्के खाते हुए गेट की तरफ आ रहा था। हलॉकि खड़ा वह गेट के थोड़ा पास ही था किन्तु वह इसका क्या करता कि पीछे से आँधी तूफान बन कर आते हुए लोग बार बार उसे पीछे धकेल कर खुद आगे निकल जाते थे। वह बेचारा बेज़ुबान सा हो गया था। कदाचित् उसकी मानसिक स्थित उस वक्त ऐसी नहीं थी कि वह लोगों के द्वारा खुद को बार बार पीछे धकेल दिये जाने पर कोई प्रतिक्रिया कर सके।

कुछ देर बाद आख़िर वह गेट के पास पहुॅचा और ट्रेन से नीचे उतर गया। प्लेटफार्म पर आदमी ही आदमी नज़र आए उसे। उसे समझ न आया कि किस तरफ जाए? इतने बड़े मुंबई शहर में वह अपनी भाभी व उनके दोनो बच्चों को कहाँ और कैसे ढूॅढ़ेगा? उसका तो खुद का कहीं ठिकाना नहीं था। उसे अब महसूस हुआ कि वो कितना असहाय और थका हुआ लग रहा है। भूख और प्यास ने जैसे उस पर अब अपना असर दिखाना शुरू कर दिया था। वह अपने साथ खाने पीने की कोई चीज़ लेकर नहीं चला था। कल अपने दोस्त के घर से खाकर ही चला था। हलॉकि इतने बड़े सफर के लिए उसके दोस्त की बीवी ने खाने का एक टिफिन तैयार कर दिया था किन्तु सुंदर ने जाने क्या सोच कर मना कर दिया था।

ट्रेन से उतर कर सुंदर ने उसी तरफ चलने के लिए अपने कदम बढ़ाए जिस तरफ सारे लोग जा रहे थे। अभी वह कुछ कदम ही चला था कि एक कुली उसके पास आया और उसके अत्यंत निकट आकर बड़े ही रहस्यमय किन्तु संतुलित स्वर में बोला_"साहब जी! आपके भतीजे विक्रम जी आपको लाने के लिए हमें भेजे हैं। कृपया आप मेरे साथ जल्दी चलें।"

सुंदर सिंह को पहले तो कुछ समझ न आया फिर जब उसके विवेक ने काम किया तो कुली

की इस बात को समझ कर वह बुरी तरह चौंका। उसके चेहरे पर अविश्वास के भाव नाच उठे। उसके मुख से हैरत में डूबा हुआ स्वर निकला_"क् कौन हो तुम? और कहाँ है मेरा भतीजा?"

" साहब जी अभी आप ज्यादा कुछ न बोलिए। " उस कुली ने कहा _" बस मेरे साथ चलिए और अपना ये बैग मुझे दीजिए। और हाँ , आप चेहरे से ऐसा ही दर्शाइये जैसे आप अपना सामान कुली को देकर उसके साथ बाहर जा रहे हैं। इधर उधर कहीं मत देखिएगा। "

" अरे ... ऐसे कैसे भाई ?" सुंदर को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि ये क्या हो रहा है उसके साथ _" कौन हो तुम और ये सब क्या है ?"

" ओह साहब जी समझने की कोशिश कीजिए। " कुली ने चिन्तित स्वर में कहा _" यहाँ पर ख़तरा है आपके लिए। इस लिए जल्दी से चलिए मेरे साथ। स्टेशन से बाहर आपके भतीजे विक्रम जी आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। "

सुंदर के दिलो दिमाग़ में झनाका सा हुआ। एकाएक ही उसके दिमाग़ की बत्ती जल उठी। उसके मन में विचार उठा कि ये आदमी मुझे जानता है और मेरे लिए ही आया है, वरना दूसरे किसी आदमी को ये सब भला कैसे पता होता? दूसरी बात ये विक्रम का नाम ले रहा है और कह रहा है कि मेरा भतीजा स्टेशन से बाहर मेरी प्रतीक्षा कर रहा है। लेकिन ख़तरा किस बात का है यहाँ??

सुंदर को पूरा मामला तो समझ न आया किन्तु उसने इतना अवश्य किया कि अपना बैग उस कुली को दे दिया। कुली उसका बैग लेकर तुरंत ही पलटा और स्टेशन के बाहर की तरफ चल दिया। उसके पीछे पीछे सुंदर भी चल दिया। दिमाग़ में कई तरह के विचारों का अंधड़ सा मचा हुआ था उसके।

स्टेशन से बाहर आकर वो कुली सुंदर को लिए एक टेक्सी के पास पहुँचा। टैक्सी के अंदर बैग रख कर कुली ने सुंदर को टैक्सी के अंदर बैठने को कहा। लेकिन सुंदर न बैठा, उसने सशंक भाव से देखा कुली की तरफ। तब कुली ने एक तरफ हाँथ का इशारा किया। सुंदर ने उस तरफ देखा तो चौंक गया, क्योंकि जिस तरफ कुली ने इशारा किया था उस तरफ उसका भतीजा विक्रम खड़ा था। विक्रम ने दूर से ही टैक्सी में बैठ जाने के लिए इशारा किया।

सुंदर अपने भतीजे को देख खुश हो गया और उसने राहत की सास भी ली। वह जल्द ही टैक्सी में बैठ गया। टैक्सी के अंदर चार आदमी थे। सुंदर के बैठते ही टैक्सी तुरंत आगे बढ़ गई। सुंदर को ऐसा प्रतीत हुआ जैसे ये सब पहले से ही प्लान बनाया हुआ था। किन्तु उसे ये समझ न आया कि इस सबकी क्या ज़रूरत थी? आख़िर ये क्या चक्कर है?

" तुम सब लोग कौन हो भाई ?" टैक्सी के कुछ दूर जाते ही सुंदर ने पूछा _" और ये सब क्या चक्कर है ? मेरा मतलब है कि मुझे इस तरह रहस्यमय तरीके से क्यों ले जाया जा रहा है ?"

" साहब जी ये तो हम भी नहीं जानते कि क्या चक्कर है ?" कुली बने शंकर ने कहा _" हम तो वही कर रहे हैं जो करने के लिए विक्रम साहब ने हमे आदेश दिया था। "

सुंदर ये सुन कर मन ही मन चौंका कि ये विक्रम को साहब क्यों कह रहा है? किन्तु फिर प्रत्यक्ष में बोला_"ओह, तो अभी हम कहाँ चल रहे हैं? और मेरा भतीजा विक्रम कहाँ गया? वो इस टैक्सी में क्यों नहीं आया?"

" वो अपनी कार में हैं साहब जी। " शंकर ने कहा _" वो हमें आगे एक जगह मिलेंगे। "

" अ अपनी ..क .. कार में ?" सुंदर लगभग उछल ही पड़ा था। उसे इस बात ने उछाल दिया कि उसके भतीजे के पास कार कहाँ से आ गई ? वह तो खुद भी यही समझ रहा था कि विक्रम कोई मामूली सा काम करता होगा यहाँ।

" जी साहब जी। " उधर सुंदर के मनोभावों से अंजान शंकर ने कहा _" आगे एक जगह पर हमें विक्रम साहब मिल जाएँगे। फिर आपको उनके साथ उनकी कार में बैठा कर हम इस टैक्सी को वापस कर देंगे जहाँ से लाए थे। "

" क्या मतलब ?" सुंदर चौंका , झटके पर झटके खाते हुए पूछा _" कहाँ से लाए थे इसे ? क्या ये टैक्सी तुम्हारी नहीं है ?"

" नहीं साहब जी , ये टैक्सी तो हमने किराए पर ली थी। " शंकर ने कहा _" विक्रम साहब ने ऐसा ही कहा था। बाकी सारी बातें वही बताएँगे आपको। "

सुंदर उसकी बात सुनकर चुप रह गया। उसे समझ में आ चुका था कि सारी बातें विक्रम से ही पता चलेंगी। क्योंकि इन्हें ज्यादा कुछ पता नहीं है। शायद विक्रम ने इन्हें नहीं बताया था। पर ये लोग विक्रम को साहब क्यों कह रहे हैं? क्या वो इन लोगों का साहब है? सुंदर का दिमाग़ जैसे जाम सा हो गया था।

सुंदर को ये बात हजम नहीं हो रही थी। लेकिन उसने फिर कुछ न कहा। टैक्सी तेज़ रफ्तार से कई सारे रास्तों में इधर उधर चलती रही। कुछ ही देर में टैक्सी एक जगह पहुँच कर रुक गई। टैक्सी के रुकते ही शंकर नीचे उतरा और पीछे का गेट खोल कर सुंदर को उतरने का संकेत दिया। सुंदर उसके संकेत पर टैक्सी से उतर आया। अभी वह टैक्सी से उतर कर ज़मीन पर खड़ा ही हुआ था कि तभी।

" प्रणाम चाचा जी। " सुंदर के उतरते ही एक तरफ से आकर विक्रम ने सुंदर के पैर छूकर कहा _" माफ़ कीजिएगा आपको इस तरह यहाँ लाना पड़ा। "

" अरे विक्रम तुम ?? सदा ही खुश रहो। " सुंदर ने कहा और एकाएक ही भावना में बह कर उसने विक्रम को अपने गले से लगा लिया , फिर बोला _" आ मेरे गले लग जा मेरा शेर पुत्तर। कदाचित् मेरे दिल को ठंडक मिल जाए। "

सुंदर की आँखों में आँसू छलक आए थे। उसने बड़े ज़ोर से विक्रम को भींच लिया था। विक्रम को भी आज अपने चाचा जी के इस तरह गले लगने से बड़ा सुकून मिल रहा था। आज मुद्दतों बाद कोई अपना इस तरह मिला था। शिकवे गिले तो बहुत थे लेकिन सब कुछ भूल गया था विक्रम। कुछ देर ऐसे ही दोनो गले मिले रहे। फिर अलग हुए। सुंदर अपने दोनो हाँथों से विक्रम का सुंदर सा चेहरा सहला कर उसके शरीर के बाकी हिस्सों को देखने लगा।

" कितना दुबला हो गया है मेरा बेटा। " सुंदर ने भर्राए स्वर में कहा _" पगले अपना ठीक से ख़याल क्यों नहीं रखता है तू ? और भ भाभी कैसी हैं ... और ... और वो मेरी लाडली गुड़िया कैसी है .. बता मुझे ??"

" सब लोग एकदम ठीक हैं चाचा जी। " विक्रम ने कहा _" चलिए हम वहीं चलते हैं। "

" हाँ हाँ चल विक्रम। " सुंदर ने तुरंत ही कहा _" मुझे जल्दी से ले चल उनके पास। मुझे भाभी के पास ले चल ... मुझे उनसे ....। "

वाक्य अधूरा रह गया सुंदर सिंह का..क्यों कि दिलो दिमाग़ में एकाएक ही तीव्रता से जज्बातों का उबाल सा आ गया था। जिसकी वजह से उसका गला भारी हो गया और उसके मुख से अल्फाज़ न निकल सके।

विक्रम अपने साथ सुंदर को लिए कुछ ही दूरी पर खड़ी अपनी कार के पास पहुँचा। फिर उसने कार का दूसरी तरफ वाला गेट खोल कर अंदर सुंदर को बैठाया। इस बीच शंकर ने सुंदर का बैग विक्रम की कार के अंदर रख दिया था। विक्रम खुद ड्राइविंग डोर खोल कर ड्राइविंग सीट पर बैठ गया। खिड़की के पास आ गए शंकर से उसने कहा_"उस टैक्सी को वापस कर देना। और ये पैसे रामू को दे देना, और ये तुम सब के लिए।"

विक्रम ने कार में ही रखे एक छोटे से ब्रीफकेस को खोल कर उसमे से दो हज़ार के नोटों की एक गड्डी शंकर को पकड़ाया था जो रामू की बेटी के इलाज़ के लिए था बाकी अलग से दो सौ के नोटों की एक गड्डी उन चारों के लिए। पैसे लेकर चारो ही खुशी खुशी वहाँ से चले गए।

विक्रम ने कार स्टार्ट की और आगे चल दिया। सुंदर ये सब देख कर हैरान भी था और खुश भी।

" ये सब क्या चक्कर था विक्रम ?" सुंदर ने पूछा _" उन लोगों ने बताया कि ये सब करने के लिए उन्हें तुमने कहा था , लेकिन इस सबकी क्या ज़रूरत थी भला ?"

" ऐसा करना ज़रूरी था चाचा जी। " विक्रम ने ड्राइविंग करते हुए कहा _" क्योंकि आपके पीछे कुछ ऐसे आदमी लगे थे जो आपकी निगरानी के लिए लगाए गए थे , बड़े पापा जी के द्वारा। "

" क क्या मतलब ??" सुंदर बुरी तरह चौंका था , बोला _" बड़े भैया ने अपने आदमी मेरे पीछे लगा रखे थे ? लेकिन क्यों और कैसे ? और ... और तुझे कैसे पता ये सब ?"

" मुझे सबका पता रहता है चाचा जी। " विक्रम ने कहा _" वक्त और हालात ने सब कुछ सिखा दिया है आपके इस बेटे को। कल जब आप गॉव से चले थे तब आपके वहाँ से चलने की सूचना मुझे मेरे एक दोस्त ने फोन पर दी थी। उसने बताया था कि हवेली में कुछ बातचीत हो गई थी और आप हम लोगों से मिलने के लिए मुंबई निकल चुके हैं। उसने ये भी बताया कि आपके पीछे बड़े पापा ने अपने आदमी भी लगा दिये हैं जो यहीं मुंबई में हमारी खोज में न जाने कब से मौजूद थे। "

" ओह तो भैया ने ऐसा भी कर दिया मेरे पीछे ?" सुंदर का चेहरा एकाएक सुलगता सा प्रतीत हुआ _" खैर कोई बात नहीं , उनसे उम्मींद भी क्या की जा सकती है ? ख़ैर , तो तुम्हें इस सबकी जानकारी तुम्हारे दोस्त ने दी थी फोन के माध्यम से ?"

" जी चाचा जी। " विक्रम ने कहा _" मुझे लगा कहीं आप पर किसी प्रकार का कोई ख़तरा न हो इस लिए मैने ऐसा किया। मैं खुद स्टेशन के अंदर नहीं गया क्योंकि संभव है बड़े पापा के आदमियों की नज़र मुझ पर पड़ जाती , उसके बाद उनके लिए हर काम आसान हो जाता। इस लिए मैंने उन सबसे बचने का ये उपाय किया। कुली के वेश में मेरे आदमी आपको सुरक्षित स्टेशन से बाहर ले आएँगे। उसके बाद आपको टैक्सी में बैठा कर मेरे आदमी शहर में तब तक इधर उधर सड़कों में घूमते जब तक कि उन्हें ये एहसास न हो जाए कि किसी के द्वारा उनका पीछा अब नहीं किया जा रहा है। कहने का मतलब ये कि अगर बड़े पापा के आदमी किसी तरह आपको देख लिये हों और आपका पीछा करने लगे हों तो मेरे आदमी टैक्सी को तेज़ रफ्तार में इधर उधर घुमा कर उन आदमियों को गोली दे देंगे। उसके बाद मेरे आदमी सीधा वहाँ आ जाते जहाँ पर मैंने उन्हें अपने पास आने को बोला था। यहाँ से मैं आपको अपनी कार में बैठा कर ले जाता। बड़े पापा के आदमी ढूँढ़ते ही रह जाते उस टैक्सी को। "

" ओह तो ये प्लान था तुम्हारा ?" सुंदर ये सोच सोच कर हैरान था कि उसका इतना संस्कारी और भोला भाला भतीजा आज इतना कुछ सोचने लगा है , बोला _" बहुत अच्छा किया तुमने विक्रम । मैं तुम्हारी इस समझदारी से बहुत खुश हूँ। " सुंदर कुछ पल रुका और फिर एकाएक ही उसके चेहरे पर दुख के भाव आ गए , बोला _" कितना ग़लत था मैं .... अपने क्रोध और अविवेक के कारण कभी नहीं सोच सका कि वास्तव में क्या सही था क्या ग़लत ? अपने देवता जैसे शिवम भैया और देवी जैसी अपनी रेणुका भाभी पर शक किया और उनसे ये भी न जानने की कोशिश की कभी कि उन पर लगाए गए आरोप सच भी हैं या ये सब आरोप किसी साजिश के तहत उन पर थोपे गए थे ? विक्रम बेटे , अपने देवी देवता जैसे भईया भाभी के साथ मैने ये अच्छा नहीं किया। भगवान मुझे इस सबके लिए कभी माफ़ नहीं करेगा। "

ये कहने के साथ ही सुंदर की आवाज़ भर्रा गई। उसका चेहरा दुख और ग्लानिवश बिगड़ गया।

उसकी आँखों से आँसू बह चले। विक्रम अपने चाचा जी के इस रूप को देख कर खुद भी दुखी हो गया था। वह जानता था कि उसके चाचा चाची का कहीं कोई दोष नहीं था। उनका अपराध तो सिर्फ इतना था कि उन्हें जो कुछ बताया और दिखाया गया था उसी को उन्होंने सच मान लिया था। अपने क्रोध की वजह से चाचा ने कभी ये जानने की कोशिश ही नहीं की थी कि सच्चाई वास्तव में क्या थी?

खैर कुछ ही समय में विक्रम अपने घर पहुँच गया। एक बड़े से मेन गेट पर दो गार्ड खड़े थे। विक्रम की कार देखते ही दोनो गार्ड्स ने मेन गेट खोला। उसके बाद विक्रम ने कार को अंदर की तरफ बढ़ा दिया। लंबे चौड़े लान से चलते हुए उसकी कार पोर्च में आकर खड़ी हो गई। दोनो चाचा भतीजा अपनी अपनी तरफ का गेट खोल कर नीचे उतरे। सुंदर की नज़र जब सामने बड़े से बँगला टाइप घर पर पड़ी तो वह आश्चर्यचकित सा होकर देखने लगा उसे। इधर उधर दृष्टि घुमा कर देखने लगा हर चीज़ों को।

" विक्रम बेटा ये कहाँ आ गए हम ?" सुंदर ने अजीब भाव से पूँछा _" ये तो किसी बहुत ही बड़े आदमी का बँगला लगता है। "

" आपने बिलकुल सही कहा चाचा जी ये किसी बहुत बड़े आदमी का ही बँगला है लेकिन। " विक्रम ने कहा _" लेकिन अब ये बँगला और ये सब प्रापर्टी आपके इस विक्रम बेटे की ही है। "

" क् क्याऽऽ ?????" सुंदर बुरी तरह चौंका था। आश्चर्य और अविश्वास से उसका मुह खुला का खुला रह गया , बोला _" ये ये सब तेरा है ?? लेकिन ये सब तेरा कैसे हो गया विक्रम ? क्या तू सच कह रहा है ?"

" चलिए अंदर चलते हैं। " विक्रम ने हल्के से मुस्कुरा कर कहा _" माँ और गुड़िया आपका इन्तज़ार कर रही हैं। "

सुंदर विक्रम की इस बात पर उसके साथ बंगले के अंदर की तरफ बढ़ा ही था कि कोई तेज़ी से आया और एक झटके से उससे लिपट गया। सुंदर इस सबसे पहले तो हड़बड़ाया फिर जब उसकी नज़र लिपटने वाले पर पड़ी तो अनायास ही मुस्कुरा उठा वह।

" अरे ये तो मेरी लाडली गुड़िया है। " सुंदर ने निशा के सिर पर स्नेह से हाथ फेरते हुए कहा _" विक्रम , ये मेरी गुड़िया है , ये ...। "

सुंदर का गला भर आया, उसके जज्बात उसके काबू में न रहे। उसने निशा को अपने से से छुपका लिया और रो पड़ा वह। उसे इस ख़याल ने बुरी तरह रुला दिया कि आज मुद्दतों के बाद उसने अपनी गुड़िया पर अपना प्यार लुटाने को मिला है। इसके पहले तो वह जैसे पत्थर का बन गया था। उसके दिलो दिमाग़ में इन सबके लिए क्रोध और घृणा भर दी गई थी। पहले जब उसकी भाभी और गुड़िया खेतों पर बने मकान के एक कमरे में रहती थीं तो वह किसी किसी दिन जाता था लेकिन फिर जैसे ही उसे उस सबका ख़याल आता वैसे ही उसका मन क्रोध

और गुस्से से भर जाता और वह पत्थर का बन कर वापस चला आता। अपनी लाडली को प्यार व स्नेह देने के लिए वह तड़प जाता लेकिन आगे बढ़ने से हमेशा ही खुद को रोंक लेता था वह।

" आप आ गए न चाचू " निशा ने रोते हुए कहा _" मैं जानती थी कि आप मेरे बिना ज्यादा दिन नहीं रह सकेंगे वहाँ पर। लेकिन आने में इतनी देर क्यों कर दी आपने ? जाइये आपसे बात नहीं करना मुझे । "

ये कह कर निशा अपने चाचू से अलग हो गई और रूठ कर एक तरफ को मुह कर लिया। सुंदर को लगा कि उसका हृदय फट जाएगा। अपनी गुड़िया के मुख से बस यही सुनने के लिए तो तरस गया था वह। जाने इन शब्दों में ऐसा क्या था कि सुन कर सुंदर को लगा कि इन शब्दों को सुनने के बाद इस वक्त अगर उसे मृत्यु भी आ जाए तो उसे कोई ग़म न होगा।

" तू रूठ जाएगी तो मैं समझूँगा कि मुझसे ये सारा संसार रूठ गया मेरी बच्ची। " सुंदर ने तड़प कर कहा _" यहाँ तक कि वो ईश्वर भी। और फिर उसके बाद मेरे लिए एक पल भी जीने का कोई मतलब नहीं रह जाएगा। "

" न नहीं चाचू नहीं। " निशा तुरंत ही सुंदर से लिपट गई। उसकी आँखों से आँसू बह चले। रोते हुए बोली _" प्लीज ऐसा मत कहिए। आप तो मेरे सबसे अच्छे चाचू हैं। मैं आपसे नाराज नहीं हूँ। और हाँ आज के बाद ऐसा कभी मत बोलियेगा नहीं तो सच में मैं आपसे बात नहीं करू गी । "

जाने कितनी ही देर तक सुंदर अपनी लाडली को स्नेह और प्यार के वशीभूत हुए खुद से छुपकाए रहा। उसके सिर पर प्यार से हाँथ फेरता रहा। विक्रम ये सब नम आँखों से देखता रहा।

" अगर अपनी लाडली भतीजी से मिलना जुलना हो गया हो तो अपनी भाभी से भी मिल लो सुंदर। " सहसा रेणुका की ये आवाज़ गूँजी थी वहाँ। वह काफी देर से बंगले के मुख्य दरवाजे पर खड़ी ये सब देख रही थी। उसकी आँखों में भी आँसू थे।

रेणुका की इस आवाज़ को सुन कर सुंदर और निशा एक दूसरे से अलग हुए। सुंदर ने पलट कर रेणुका की तरफ देखा। जो उसी की तरफ करुण भाव से देख रही थी। उसकी आँखों में अपने लिए वही आदर वही स्नेह देख कर सुंदर का दिलो दिमाग़ अपराध बोझ से भर गया। उसे खुद पर इतनी शर्म और ग्लानी महसूस हुई कि उसे लगा ये धरती फटे और वह उसमें रसातल तक समाता चला जाए। दिलो दिमाग़ में भावनाओं का तेज़ तूफान चलने लगा। हृदय की गति तीव्र हो गई। उसे अपनी जगह पर खड़े रहना मुश्किल सा प्रतीत होने लगा।

बड़ी मुश्किल से उसने खुद को संभाला और नयनों में नीर भरे वह तेज़ी से रेणुका की तरफ बढ़ा। रेणुका के पास पहुँचते ही वह अपनी देवी समान भाभी के पैरों में लगभग लोट सा गया।

उसके जज्बात उसके काबू से बाहर हो गए। फूट फूट कर रो पड़ा वह। मुह से कोई वाक्य नहीं निकल रहे थे उसके।

अपने पुत्र समान देवर को इस तरह बच्चों की तरह रोते देख रेणुका का हृदय हाहाकार कर उठा। वह जल्दी से नीचे झुकी और सुंदर को उसके दोनो कंधों से पकड़ कर बड़ी मुश्किल से उठाया उसने। सुंदर उससे नज़र नहीं मिला पा रहा था। उसका समूचा चेहरा आसुओं से तर था।

" अरे ऐसे क्यों रहे हो पागल ?" रेणुका खुद भी रोते हुए बोली _" चुप हो जाओ। तुम जानते हो कि मैने हमेशा तुम्हें अपने बेटे की तरह समझा है। इस लिए तुम्हें इस तरह रोते हुए नहीं देख सकती। चुप हो जाओ सुंदर । अब बिलकुल भी नहीं रोना। "

ये कह कर रेणुका ने सुंदर को अपने सीने से लगा लिया। अपनी भाभी की ममता भरी इन बातों से सुंदर और भी सिसक सिसक कर रो पड़ा। उसकी आत्मा चीख चीख कर जैसे उससे कह रही थी 'देख ले सुंदर जिस देवी समान भाभी पर तूने शक किया था और उनके ऊपर लगाए गए आरोपों को सच समझ कर उनसे मुह मोड़ लिया था, आज वही देवी समान भाभी तुझे अपने बेटे की तरह प्यार व स्नेह देकर अपने सीने से लगा रखी है। उसके मन में लेश मात्र भी ये ख़याल नहीं है कि तुमने उनके और उनके बच्चों से किस तरह मुह मोड़ लिया था?'

सुंदर अपनी आत्मा की इन बातों से बहुत ज्यादा दुखी हो गया। उसे खुद से बेहद घृणा सी होने लगी थी।

" मुझे इस प्रकार अपने ममता के आचल में मत छुपाइये भाभी। " सुंदर रेणुका से अलग होकर बोला _" मैं इस लायक नहीं हूँ। मैं तो वो पापी हूँ जिसके अपराधों के लिए कोई क्षमा नहीं है। अगर कुछ है तो सिर्फ सज़ा। हाँ भाभी .... मुझे सज़ा दीजिए। मैं आप सबका गुनहगार हूँ। "

" ये कैसी पागलपन भरी बातें कर रहे हो सुंदर ?" रेणुका ने दोनो हाँथों के बीच सुंदर का चेहरा लेकर कहा _" किसने कहा तुमसे कि तुमने कोई अपराध किया है ? अरे पगले , मैंने तो कभी ये समझा ही नहीं कि तुमने कोई अपराध किया है। और जब मैने ऐसा कुछ समझा ही नहीं तो क्षमा किस बात के लिए ? हाँ ये दुख अवश्य होता था कि जिस सुंदर को मैं अपने बेटे की तरह मानती थी वह जाने क्यों अपनी भाभी मॉ से अब मिलने नहीं आता ? क्या उसकी भाभी मॉ इतनी बुरी बन गई थी कि वो अब मुझसे बात करने की तो बात ही दूर बल्कि नज़र भी ना मिलाए ?"

" इसी लिए तो कह रहा हूँ भाभी। " सुंदर रो पड़ा _" इसी लिए तो .... कि मैं अपराधी हूँ। मेरा ये अपराध क्षमा के लायक नहीं है। मुझे इसके लिए सज़ा दीजिए। "

" मैंने तुम्हें हमेशा अपना बेटा ही समझा है सुंदर। " रेणुका ने सुंदर की आँखों से आँसू पोंछते

हुए कहा _" इस लिए मॉ अपने बेटे की किसी ग़लती को ग़लती नहीं मानती। बल्कि वह तो उसे नादान समझ कर प्यार व स्नेह ही करने लगती है। चलो , अब अंदर चलो। "

रेणुका ने ये कह सुंदर को उसके कंधों से पकड़ कर अंदर की तरफ चल दी। उसके पीछे विक्रम और निशा भी अपनी अपनी आँखों से आँसू पोंछ कर चल दिये।

१५

" तुम लोग सब के सब एक नम्बर के निकम्मे हो। " उधर हवेली में सत्यम सिंह फोन पर दहाड़ते हुए कह रहा थ ा _" किसी काम के नहीं हो तुम लोग। पिछले एक महीने से तुम लोग वहाँ पर केवल मेरे रुपयों पर ऐश फरमा रहे हो। एक अदना सा काम सौंपा था तुम लोगों को और वह भी तुम लोगों से नहीं हुआ। हर बार अपनी नाकामी की दास्तान सुना देते हो तुम लोग। "

".....। " उधर से कुछ कहा गया।

" कोई ज़रूरत नहीं है। " सत्यम सिंह ग ु स्से में गरजते हुए बोल ा _" तुम लोगों के बस का कुछ नहीं है। इस लिए फौरन चले आओ वहाँ से। "

ये कह कर सत्यम सिंह ने मारे गुस्से के लैंड लाइन फोन के रिसीवर को केड्रिल पर लगभग पटक सा दिया था। उसके बाद ड्राइंग रूम के फर्श पर बिछे कीमती कालीन को रौंदते हुए आकर वह वहीं सोफे पर धम्म से बैठ गया।

सामने के सोफे पर बैठी सोनिया क्रोध और गुस्से में उबलते अपने पति को एकटक देखती रही। इस वक्त कुछ भी बोलने की हिम्मत नहीं हुई थी उसमे। जबकि सत्यम सिंह का चेहरा गुस्से में तमतमाया हुआ लाल सुर्ख पड़ गया था। कुछ पल शून्य में घूरते हुए वह लम्बी लम्बी सासें लेता रहा। उसके बाद उसने कोट की जेब से सिगारकेस निकाला और उससे एक सिगार निकाल कर होठों के बीच दबा कर उसे लाइटर से सुलगाया। दो चार लंबे लंबे कश लेने के बाद उसने उसके गाढ़े से धुए ॅ को अपने नाक और मुह से निकाला।

" तुझे तो कुत्ते से भी बदतर मौत दूँगा हरामज़ादे। " सहसा वह दाँत पीसते हुए कह उठ ा _" बस एक बार मेरे हाँथ लग जा तू। उसके बाद देख कि क्या हस्र करता हूँ तेर ा ?"

" क्या बात है सत्यम ?" सोनिय ा ने सहसा मौके की नज़ाक़त को देखकर पूछ ा _" फोन पर क्या बातें बताई तुम्हारे आदमियों न े ?"

" सबके सब हरामज़ादे निकम्मे हैं। " सत्यम सिंह कुढ़ते हुए बोल ा _" आने दो सालों को एक लाइन से खड़ा करके गोली मारूँगा मै ं "

" अरे पर बात क्या हुई सत्यम ?" सोनिय ा चौंकी थ ी _" तुम इतना गुस्से में क्यों पगलाए जा रहे ह ो ?"

" तो क्या कर ू मै ं ?" सत्यम सिंह जैसे बिफर ही पड़ ा , बोल ा _" अपने आदमियों की एक और नाकामी की बात सुन कर क्या मैं कत्थक करने लग जाऊ ॅ ?"

" एक और नाकामी ???" सोनिया उछल सी पड़ी थी , बोली _" ये क्या कह रहे हो तुम ?"

" हाँ सोनिया। " सत्यम सिंह बोला _" फोन पर मेरे आदमियों ने बताया कि सुंदर उन्हें गच्चा दे गया। "

" गच्चा दे गया ??" सोनिया ने ना समझने वाले भाव से कहा _" इसका क्या मतलब हुआ ?"

" मेरे आदमियों के अनुसार। " सत्यम सिंह ने कहा _" सुंदर उन्हें ट्रेन से उतरते हुए दिखा। उसके बाद वह किसी कुली को अपना बैग देकर उसके साथ स्टेशन के बाहर चला गया। बाहर आकर वह एक टैक्सी में बैठा और वहाँ से आगे बढ़ गया। मेरे आदमी भी उस टैक्सी के पीछे लग गए। लेकिन उसके बाद वो टैक्सी अचानक ही कहीं गायब हो गई। मेरे उन आदमियों ने उस टैक्सी को बहुत ढूँढ़ा मगर कहीं उसका पता नहीं चल सका। "

" ये तो बड़ी ही अजीब बात है। " सोनिया ने हैरानी से कहा _" कहीं ऐसा तो नहीं कि सुंदर को इस बात का शक़ हो गया हो कि कोई उसका पीछा कर रहा है और उसने टैक्सी वाले से कहा हो कि वह पीछा करने वालों को गच्चा दे दे। "

" हो सकता है। " सत्यम सिंह ने सोचने वाले भाव से कहा _" मेरे आदमी ने बताया कि सुंदर के पास जब कुली आया तो उनके बीच पता नहीं क्या बातें हुईं थी जिसकी वजह से सुंदर के चेहरे पर चौंकने वाले भाव उभरे थे। ऐसा लगा जैसे वह किसी बात पर चौका हो और वह उस कुली के साथ जाने के लिए तैयार न हुआ था। लेकिन फिर बाद में वह आसानी से अपना बैग कुली को दे दिया और चुपचाप उसके पीछे पीछे चल भी दिया था। चलते समय भी उसके चेहरे पर गहन सोच व उलझन के भाव थे। "

" हाँ तो इसमें इतना विचार करने की क्या बात है भला ?" सोनिया ने कहा _" ऐसा तो होता ही है कि आम तौर पर कुलियों की बात पर यात्री लोग इतनी आसानी से आते नहीं हैं। दूसरी बात सुंदर की उस समय की मानसिक स्थित भी ऐसी नहीं रही होगी कि वह इस तरह किसी कुली के साथ कहीं चल दे। "

" हो सकता है कि तुम्हारी बात ठीक हो लेकिन। " सत्यम सिंह बोला _" लेकिन इसमें भी सोचने वाली बात तो है ही कि कुली ने ऐसा क्या कहा कि सुनकर सुंदर बुरी तरह चौंका था और फिर बाद में रहस्यमय तरीके से उस कुली के साथ चल दिया था ? कहने का मतलब ये कि उसकी हर एक्टीविटी रहस्यमय लगी थी। "

" अगर ऐसा है भी तो इसमें हम क्या कर सकते हैं ?" सोनिया ने कहा _" क्योंकि सुंदर नाम का पंछी तो आपके आदमियों की आँखों के सामने से गायब ही हो चुका है अब। "

" ये सब मेरे उन हरामज़ादे आदमियों की वजह से ही हुआ है सोनिया । खैर छोड़ो ये सब। "

सत्यम सिंह ने गहरी सास लेकर कहा _" ये बताओ कि तुमने अपना काम कहाँ तक पहुँचाया ?"

" अ अपना काम ??" सोनिया ने ना समझने वाले भाव से कहा _" कौन से काम की बात कर रहे हो तुम ?"

" तुम अच्छी तरह जानती हो सोनिया कि मैं किस काम के बारे में पूछ रहा हूँ तुमसे ?" सत्यम सिंह का लहजा सहसा पत्थर की तरह कठोर हो गया _" और अगर तुम इस काम में सीरियस नहीं हो तो बता दो मुझे। अपने तरीके से शिकार करना भली भाँति आता है मुझे। "

" ओह तो तुम उस काम के बारे में पूछ रहे हो ?" सोनिया को जैसे ख़याल आया _" यार तुम तो जानते हो कि ये करना इतना आसान नहीं है। भला मैं कैसे अपनी बेटी से ये कह सकूँगी कि बेटी अपने बाप के पास जा और उनके नीचे लेट जा। ताकि तेरे मदमस्त यौवन का तेरा बाप भोग कर सके। "

" अच्छी बात है सोनिया। " सत्यम सिंह ने ठंडे स्वर में कहा _" अब तुम कुछ नहीं करोगी। जो भी करुँगा अब मैं ही करू गा। "

" न नहीं नहीं सत्यम। " सोनिया बुरी तरह घबरा गई , बोली _" तुम खुद से कुछ नहीं करोगे। मैं अति शीघ्र ही अपनी बेटी को तुम्हारे नीचे सुलाने के लिए तैयार कर लूँगी। "

" अब तुम्हारी इन बातों पर ज़रा भी यकीन नहीं है मुझे। " सत्यम ने कहा _" बहुत देख ली तुम्हारी कोशिशें। तुमने अपर्णा के बारे में भी यही कहा था और अब अपनी बेटी के लिए भी यही कह रही हो। तुम्हारी कोशिशों का क्या नतीजा निकलता है ये मैं देख चुका हूँ। इस लिए अब मैं खुद ये काम करू गा और तुम मुझे रोंकने की कोशिश नहीं करोगी। "

" पर सत्यम ये तुम ठीक ...। " सोनिया का वाक्य बीच में ही रह गया।

" बस सोनिया , अब कुछ नहीं सुनना चाहता हूँ मैं। " सत्यम सिंह कह उठा _" अब तुम सिर्फ देखो और उसका मज़ा लो। "

सोनिया देखती रह गई सत्यम को। उसका दिल बुरी तरह घबराहट के कारण धड़कने लगा था। चेहरा अनायास ही किसी भय के कारण पीला पड़ गया था उसका। मन ही मन ईश्वर को याद कर उसने अपनी बेटी की सलामती की दुवा की।

१६

सुंदर को अपने साथ लिए रेणुका ड्राइंग रूम में दाखिल हुई , उसके पीछे पीछे विक्रम और निशा भी थे। रेणुका ने सुंदर को सोफे पर बैठाया और खुद भी उसी सोफे पर उसके पास बैठ गई। विक्रम और निशा सामने वाले सोफे पर एक साथ ही बैठ गये।

सुंदर सिंह का मन बहुत भारी था। उसका सिर अभी भी अपराध बोझ से झुका हुआ था। रेणुका इस बात को बखूबी समझती थी, कदाचित इसी लिए उसने बड़े प्यार से अपने एक हाथ से सुंदर का चेहरा ठुड्डी से पकड़ कर अपनी तरफ किया।

" ये क्या है सुंदर ?" फिर रेणुका ने अधीरता से कहा _" इस तरह सिर झुका कर बैठने की कोई आवश्यकता नहीं है। तुम अपने दिलो दिमाग़ से ऐसे विचार निकाल दो जिसकी वजह से तुम्हें ऐसा लगता है कि तुमने कोई अपराध किया है। तुम्हारी जगह कोई दूसरा होता तो वह भी वही करता जो उन हालातों में तुमने किया। इस लिए मैं ये समझती ही नहीं कि तुमने कोई ग़लती की है या कोई अपराध किया है। इस लिए अपने मन से ये ख़याल निकाल दो सुंदर और अपने दिल का ये बोझ हल्का करो , जो बोझ अपराध बोझ बन कर तुम्हें शान्ति और सुकून नहीं दे पा रहा है। "

" भाभी आप तो महान हैं इस लिए इस सबसे आप पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। " सुंदर ने भारी स्वर में कहा _" किन्तु मैं आप जैसा महान नहीं हूँ और ना ही मेरा हृदय इतना विशाल है कि उसमें किसी तरह के दुख सहजता से जज़्ब हो सकें। मैं तो बहुत ही छोटी बुद्धि और विचारों वाला हूँ जिसे कोई भी व्यक्ति जब चाहे और जैसे भी चाहे अपनी उँगलियों पर नचा देता है। शायद इसी लिए तो .... इसी लिए तो मैं समझ ही नहीं पाया कि कभी कभी जो दिखता है या जो सुनाई देता है वह सिरे से ग़लत भी हो सकता है। "

" ये तुम कैसी बातें कर रहे हो सुंदर ?" रेणुका ने दुखी भाव से कहा _" भगवान के लिए ऐसा कुछ मत कहो। अपने अंदर ऐसी ग्लानी मत पैदा करो और ना ही इन सबसे खुद को इस तरह दुखी करो। "

" मुझे कहने दीजिए भाभी। " सुंदर ने करुण भाव से कहा _" शायद ये सब कहने से मेरे अंदर की पीड़ा में कुछ इज़ाफा हो। आप तो मुझे सज़ा नहीं दे रही हैं तो कम से कम मैं खुद तो अपने आपको सज़ा और तकलीफ़ दे लूँ। मुझे भी तो इसका एहसास होना चाहिए न भाभी कि जब हृदय को पीड़ा मिलती है तो कैसा लगता है ? हमारे अपने जब अपनों को ही ऐसी तक़लीफ़ देते हैं तो उससे हमारी अंतर्आत्मा किस हद तक तड़पती है ?"

" नहीं सुंदर नहीं। " रेणुका ने रोते हुए सुंदर को एक बार फिर से खींच कर खुद से छुपका लिया , बोली _" ऐसी बातें मत करो। मैं नहीं सुन सकती तुम्हारी ये करुण बातें। मैंने तुम्हें अपने बेटे की तरह हमेशा स्नेह दिया है। भला , मैं अपने बेटे को कैसे इस तरह तड़पते हुए

देख सकती हूँ ? हर्गिज़ नहीं ....। "

देवर भाभी का ये प्यार ये स्नेह ये अपनापन आज ढूँढ़ने से भी शायद कहीं न मिले। विक्रम और निशा आँखों में नीर भरे उन्हें देखे जा रहे थे। कितनी ही देर तक रेणुका सुंदर को खुद से छुपकाए रही। सचमुच इस वक्त ऐसा लग रहा था जैसे सुंदर दो दो बच्चों का बाप नहीं बल्कि कोई छोटा सा अबोध बालक हो।

" विक्रम। " सहसा रेणुका ने विक्रम की तरफ देख कर कहा _" तुम अपने चाचा जी को उनके रूम में ले जाओ। लंबे सफर की थकान बहुत होगी। नहा धो कर फ्रेश हो जाएँगे तो मन हल्का हो जाएगा। "

" जी माँ। " विक्रम तुरंत ही सोफे से उठ कर सुंदर के पास पहुँच गया। रेणुका के ज़ोर देने पर सुंदर को विक्रम के साथ कमरे में जाना ही पड़ा। जबकि सुंदर और विक्रम के जाने के बाद रेणुका उठी और अपनी आँखों से बहते हुए आँसुओं को पोंछते हुए किचेन की तरफ बढ़ गई।

१७

हवेली में डोर बेल की आवाज़ सुनकर सोनिया ने जाकर दरवाजा खोला। दरवाजे के बाहर खड़े जिस चेहरे पर उसकी नज़र पड़ी उसे देख कर वह बुरी तरह चौंकी।

" अरे गीत◌ा तुम ??" सोनिय◌ा का हैरत में डूबा हुआ स्वर _" आओ आओ अंदर आओ। आज इतने महीनों बाद तुम्हें देख कर मुझे बेहद खुशी हुई। "

गीता जैसे ही दरवाजे के अंदर आई सोनिया ने उसे अपने गले से लगा लिया। सोनिया ने महसूस किया कि गीता के हाव भाव बदले हुए हैं। सोनिया की बात का उसने मुख से कोई जवाब नहीं दिया था बल्कि वह सिर्फ हल्का सा मुस्कुराई थी। उसकी मुस्कान भी शायद बनावटी ही थी। क्योंकि चेहरे के भाव उसकी मुस्कान से बिलकुल अलग थे।

" दामाद जी कहाँ है◌ं ?" गीत◌ा से अलग होकर सोनिय◌ा ने दरवाजे के बाहर झाँकने के बाद पूछा था।

" मैं अकेली ही आई हूँ भाभी। " गीत◌ा ने अजीब भाव से कह◌ा _" सब कुछ छोंड़ कर। "

" क्याऽऽ ???" गीत◌ा की बात सुनकर सोनिय◌ा ने चौंकते हुए कह◌ा _" सब कुछ छोंड़ कर से क्या मतलब है तुम्हार◌ा ??

" मैंने अमर को तलाक दे दिया है। " गीत◌ा ने कठोरता से कह◌ा _" अब उससे और उसके घर वालों से मेरा कोई रिश्ता नहीं रहा। "

" त तलाऽऽक ????" सोनिय◌ा बुरी तरह उछल पड़◌ी _" ये क्या कह रही हो तुम ?"

" हाँ भाभी। " गीत◌ा ने कह◌ा _" मैने उस बेवफा को तलाक दे दिया ह◌ै , और उससे सारे रिश्ते नाते तोड़ कर वापस अपने माँ बाप व भैय◌ा भाभी के पास आ गई हूँ। "

सोनिया की अजीब हालत हो गई उसकी बातें सुनकर। हैरत व अविश्वास से मुह फाड़े वह अपनी छोटी ननद गीता को अपलक देखे जा रही थी। फिर सहसा उसकी तंद्रा तब भंग हुई जब उसके कानों में अंदर से आई उसके पति सत्यम की आवाज़ गूँजी। अंदर से सत्यम सिंह ने आवाज़ लगा कर पूछा था कि कौन आया है बाहर?

सत्यम सिंह की आवाज़ से सोनिया को होश आया जबकि गीता अपने हाँथ में पकड़ा हुआ बड़ा सा बैग वहीं छोंड़ कर अंदर की तरफ भागी। गीता को इस तरह भागते देख सोनिया चौंकी फिर पलट कर पहले दरवाजे को बंद किया उसके बाद गीता के बैग को उठा अंदर की तरफ बढ़ गई।

उधर भागते हुए गीता ड्राइंग रूम में पहुँची। उसी समय सत्यम सिंह भी अपने कमरे से इधर ही आता दिखा। गीता अपने बड़े भाई को देख एक पल को ठिठकी फिर तेज़ी से दौड़ती हुई जा कर सत्यम सिंह से लिपट गई।

" भैयाऽऽ। " गीता सत्यम से लिपट कर बुरी तरह रोने लगी थी। सत्यम सिंह उसे इस तरह देख पहले तो चौंका फिर उसे अपनी बाँहों में ले प्यार व स्नेह से उसके सिर व पीठ पर हाँथ फेरने लगा।

" अरे क्या हुआ तुझे ?" सत्यम सिंह उसकी पीठ को सहलाते हुए बोला _" इस तरह क्यों रोये जा रही है तू ?"

सत्यम सिंह के इस सवाल का गीता ने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि वह ज़ार ज़ार वैसी ही रोती रही। गीता अपने भाई के सीने से कस के लगी हुई थी। ऐसा लगता था जैसे उसे इस बात का अंदेशा था कि अगर वह अपने भाई से अलग हो जाएगी तो कयामत आ जाएगी।

सोनिया भी तब तक पहुँच गई थी। अपने भाई से लिपटी अपनी ननद को इस तरह रोते देख उसकी आँखों में भी पानी आ गया। काफी देर तक यही आलम रहा। सत्यम सिंह ने उसे बड़ी मुश्किल से चुप कराया। फिर उसे उसके कंधे से पकड़ कर चलते हुए आया और उसे सोफे पर आराम से बैठा कर खुद भी उसके पास ही बैठ गया।

" सोनिया दामाद जी कहाँ हैं ?" फिर सत्यम ने सोनिया की तरफ देखते हुए पूछा _" उन्हें अपने साथ अंदर क्यों नहीं लाई तुम ?"

" दामाद जी नहीं आए सत्यम। " सोनिया ने गंभीरता से कहा _" गीता अकेली ही आई है। "

" क्या ???" सत्यम चौंका _" लेकिन क्यों ? दामाद जी साथ क्यों नहीं आए ? मेरी फूल जैसी बहन को अकेली कैसे आने दिया उन्होंने ? रुको मैं अभी बात करता हू उनसे। "

" अब फोन करने की कोई ज़रूरत नहीं है सत्यम। " सोनिया ने कहा _" गीता अब हमारे पास ही रहेगी ....। "

" हमारे पास ही रहेगी ??" सत्यम चकराया , बोला _" इसका क्या मतलब हुआ भला ?"

" वो ... वो गीता ने दामाद जी को तलाक दे दिया है। " सोनिया ने धड़कते दिल के साथ कहा _" इस लिए अब ये यहीं रहेंगी। "

" व्हाऽऽट ???" सत्यम सिंह सोफे पर बैठा हुआ इस तरह उछल पड़ा था जैसे उसके पिछवाड़े के नीचे सोफे का वह हिस्सा अचानक ही किसी बड़ी सी नोंकदार सुई में बदल गया हो , बोला _" ये सब क्या ... ये तुम क्या कह रही हो सोनिया ? गीता ने दामाद जी को

तलाक दे दिया है ? अरे लेकिन क्यों ??"

सोनिया के कुछ बोलने से पहले ही गीता एक झटके से उठी और रोते हुए अंदर की तरफ भाग गई। सत्यम सिंह मूर्खों की तरह उसे जाते देखता रहा।

" सोनिया सच सच बताओ। " फिर सत्यम ने उद्विग्नता से कहा _" आख़िर ऐसी क्या बात हो गई है जिसकी वजह से गीता ने दामाद जी को तलाक दे दिया है ?"

" सारी बातें मुझे भी नहीं पता सत्यम। " सोनिया ने कहा _" गीता ने अभी कुछ भी नहीं बताया है इस बारे में। "

" उससे पूछो सोनिया। " सत्यम सिंह ने कहा _" उससे पूछो कि क्या मैटर है ? उसने अपने पति को किस बात पर तलाक दे दिया है ?"

" ठीक है मैं बात करती हूँ उससे। " सोनिया कहने के साथ ही उठ कर उस दिशा की तरफ बढ़ गई जिधर गीता गई थी। जबकि सत्यम सिंह किसी गहरी सोच में डूबा नज़र आने लगा था।

१८

" मिस्टर वाजपेयी। " हॉस्पिटल की गैलरी पर दीवार से सटी बेंच पर बैठे एक ऐसे शख्स के कानों से ये वाक्य टकराया जिसके चेहरे पर इस वक्त गहन परेशानी व दुख के भाव थे। उसने सिर उठा कर देखा। उसके सामने एक डाक्टर खड़ा उसी की तरफ संजीदगी से देख रहा था।

" मिस्टर वाजपेयी। " डाक्टर ने कहा _" प्लीज आप मेरे साथ आइए। मुझे आपसे कुछ ज़रूरी बातें करनी है। "

" डाक्टर मेरी बेटी कैसी है अब ?" बेन्च से एक ही झटके में उठते हुए उस शख्स ने हड़बड़ाहट से पूछा था _" वो अब ठीक तो है ना ?"

" अब वो बिलकुल ठीक है मिस्टर वाजपेयी लेकिन। " डाक्टर का वाक्य अधूरा रह गया।

" ल लेकिन क्या डाक्टर ?" शख्स ने असमंजस से पूछा।

" आप प्लीज़ मेरे साथ आइए। " डाक्टर ने ज़ोर देकर कहा _" मुझे आपसे अकेले में बात करनी है। प्लीज़ कम हेयर ...। "

कहने के साथ ही डाक्टर एक तरफ बढ़ गया। उसे जाते देख वो शख्स भी तेज़ी से उसके पीछे लपका। चेहरे पर हज़ारों तरह के भाव एक पल में ही गर्दिश करते नज़र आने लगे थे उसके। कुछ ही देर में डाक्टर के पीछे पीछे वह उसके केबिन में पहुँचा।

" मिस्टर वाजपेयी। " डाक्टर अपनी चेयर के पास पहुँच कर तथा अपने सामने बड़ी सी टेबल के पार रखीं चेयर की तरफ हाथ के इशारे के साथ कहा _" हैव ए सीट प्लीज़। "

डाक्टर के कहने पर वो शख्स जिसे डाक्टर उसके सर नेम से संबोधित कर रहा था किसी यंत्रचालित सा आगे बढ़ा और एक हाथ से चेयर को पीछे कर उसमें बैठ गया। उसके बैठ जाने के बाद केबिन में दोनो के बीच कुछ देर के लिए ख़ामोशी छाई रही।

" कहो डाक्टर। " फिर खामोशी को चीरते हुए उस शख्स ने भारी स्वर में कहा _" क्या ज़रूरी बातें करनी थी आपको ?"

" मिस्टर वाजपेयी। " डाक्टर ने भूमिका बनाते हुए किन्तु संतुलित लहजे में कहा _" मैं चाहता हूँ कि आप मेरी बातों को शान्ती और बड़े धैर्य के साथ सुनें। "

" आख़िर बात क्या है डाक्टर ?" शख्स ने सहसा अंजाने भय से घबरा कर कहा था , बोला _" मुझे पता है कि मेरी बेटी के साथ किसी ने रेप किया है जिसकी वजह से उसकी आज ये हालत है। मैं धरती आसमान एक कर दूँगा उस हरामज़ादे को ढूढ़ने में जिसने मेरी बेटी

को आज इस हालत में पहुँचाया है। उसे ऐसी मौत दूँगा कि फरिश्ते भी देख कर थर थर काँपेंगे। "

" प्लीज़ कंट्रोल योरसेल्फ मिस्टर वाजपेयी प्लीज। " डाक्टर ने कहा _" आपको इसके आगे जो भी करना हो आप करते रहियेगा , लेकिन उसके पहले शान्ती और धैर्य के साथ आप मेरी बातें सुन लीजिए। "

" ठीक है कहिए। " उस शख्स ने गहरी सास ली।

" ये तो आप जानते ही हैं कि आपकी बेटी के साथ क्या हुआ है। " डाक्टर ने कहा _" पर ये आधा सच है। "

" क्या मतलब ?" वाजपेयी चौंका।

" आपकी बेटी के साथ एक से ज्यादा लोगों ने रेप की वारदात को अंजाम दिया है ?" डाक्टर ने संजीदगी से कहा _" उसने खुद शराब पी थी या फिर उसे पिलाई गई थी। ऐसी शराब जिसमें ड्रग्स मिला हुआ था। इससे यही साबित होता है कि ये सब जिन लोगों ने भी किया है पहले से ही सोच समझकर किया है। "

" ये आप क्या कह रहे हैं डाक्टर ?" वाजपेयी की हालत खराब थी , बोला _" मेरी बेटी के साथ इतना कुछ किया उन हरामज़ादों ने। "

" ये सब तो कुछ भी नहीं है। " डाक्टर ने गंभीरता से कहा _" बल्कि अब जो बात मैं आपको बताना चाहता हूँ वो बहुत ही गंभीर बात है। मैं चाहता हूँ कि आप मेरी उस बात को सुनकर अपना धैर्य नहीं खोएंगे। "

" आख़िर ऐसी क्या बात है डाक्टर ?" वाजपेयी हतोत्साहित सा बोला _" क्या कहना चाहते हैं आप ? साफ साफ बताओ क्या बात है ?"

" आपकी बेटी प्रेग्नेन्ट है। " डाक्टर ने मानो धमाका सा किया था _" वह भी दो महीने की। "

" क्याऽऽ ????" चेयर पर बैठा वाजपेयी ये सुन कर उछल पड़ा था , बोला _" ये आप क्या कह रहे हैं डाक्टर ? ऐसा कैसे हो सकता है ?"

" इस बारे में भला मैं कैसे बता सकता हूँ मिस्टर वाजपेयी ?" डाक्टर ने कहा _" ये तो आपकी बेटी को ही पता होगा। मैंने तो आपको वही बताया है जो आपकी बेटी की जॉच से हमें पता चला है। "

वाजपेयी भौचक्का सा डाक्टर को देखता रह गया था। उसके दिलो दिमाग़ में अभी तक

धमाके हो रहे थे। असहाय अवस्था में बैठा रह गया था वह।

तभी केबिन का गेट खुला और एक नर्स अंदर दाखिल हुई।

" सर वो पुलिस बाहर आपका इन्तज़ार कर रही है। " नर्स ने डाक्टर की तरफ देख कर कहा था।

" ठीक है हम आते हैं। " डाक्टर ने उससे कहा फिर वाजपेयी की तरफ देख कर कहा _" मिस्टर वाजपेयी आइए चलते हैं। "

उसके बाद दोनो केबिन के बाहर आ गए। वाजपेयी के चेहरे से ही लग रहा था कि वह दुखी है, किन्तु अपने इस दुख को वह जज़्ब करने की कोशिश कर रहा था।

बाहर गैलरी में आते ही डाक्टर को पुलिस के कुछ सिपाई दिखाई दिये। वह वाजपेयी के साथ चलता हुआ रिसेशन पर पहुँचा। जहाँ पर इंस्पेक्टर की वर्दी में साक्षी खड़ी थी। सिर पर पी-कैप व दाहिने हाँथ में पुलिसिया रुल था जिसे वह कुछ पलों के अन्तराल में अपनी बॉई हथेली पर हल्के से मार रही थी।

" हैलो इंस्पेक्टर। " डाक्टर साक्षी के पास पहुँचते ही बोला था।

" क्या उस लड़की को होश आ गया डाक्टर ?" साक्षी ने पुलिसिया अंदाज़ में पूछा _" मुझे उसका स्टेटमेन्ट लेना है। "

" मिस साक्षी। " डाक्टर ने कहा _" बस कुछ ही समय में उसे होश आ जाएगा फिर आप उसका बयान ले सकती हैं। " डाक्टर ने कहने के साथ ही वाजपेयी की तरफ इशारा करते हुए कहा _" ये उस लड़की के पिता हैं। मिस्टर पुरुषोत्तम वाजपेयी। "

" ओह आई सी। " साक्षी ने वाजपेयी की तरफ देखते हुए कहा _" मुझे दुख है अंकल कि आपकी बेटी के साथ ऐसा हादसा हुआ ?"

" सब भाग्य की बातें हैं बेटा। " वाजपेयी ने हारे हुए खिलाड़ी की तरह बोला _" हम चाहे सारी ऊम्र सबके साथ अच्छा करते रहें और सबका अच्छा भला सोचते रहें लेकिन हमें हमारे भाग्य से जो मिलना होता है वो मिल ही जाता है। "

" हाँ ये तो है अंकल। " साक्षी ने कहा _" ख़ैर , आपकी बेटी का ये केस फाइल हो चुका है , बस आपके साइन की ज़रूरत है। लड़की के बयान के बाद पुलिस इस केस को अच्छी तरह देख लेगी। जिसने भी इस घिनौने काम को अंजाम दिया है उसको बहुत जल्द जेल की सलाखों के पीछे अधमरी अवस्था में पाएंगे आप। "

" उससे क्या होगा बेटी ?" वाजपेयी ने गंभीरता से कहा _" क्या वो सब वापस हो जाएगा जो लुट गया या बरबाद हो गया है ?"

" आप ये कैसी बातें कर रहे हैं अंकल ?" साक्षी ने हैरत से कहा _" क्या आप नहीं चाहते कि जिसने भी आपकी बेटी के साथ ये किया है उसे कानून के द्वारा सख्त से सख्त सज़ा मिले ?"

" उसे कानून नहीं। " वाजपेयी के चेहरे पर अचानक ही हाहाकारी भाव उभरे _" उसे मैं खुद अपने हाथो से सज़ा दूँगा। तभी मेरी और मेरी बेटी की आत्मा को शान्ती मिलेगी। "

" तो क्या आप कानून को हाथ में लेंगे ?" साक्षी ने कहा _" नहीं अंकल , ये पुलिस केस है और उसे कानूनन ही सज़ा प्राप्त होगी। "

" तुम अपना काम करो बेटी। " वाजपेयी ने कहा _" और मुझे मेरा काम अपने तरीके से करना है। "

तभी वहाँ पर एक नर्स आई। उसने बताया कि उस लड़की को होश आ गया है और उसे दूसरे रूम में शिफ्ट कर दिया गया है। नर्स की बात सुनकर डाक्टर ने साक्षी को उससे बयान लेने की परमीशन दी किन्तु ये भी कहा कि पेशेन्ट को ज्यादा किसी बात के लिए मजबूर न करें। वाजपेयी साथ में जाना चाहता था किन्तु साक्षी ने ये कह कर उसे रोंक लिया कि ये पुलिस केस है इस लिए पहले पुलिस उससे मिलेगी और उसका बयान लेगी।

इंस्पेक्टर साक्षी अपने साथ एक महिला सिपाई को लिए उस कमरे में पहुँची जिस कमरे में उस लड़की को शिफ्ट किया गया था। डाक्टर खुद भी साथ आया था। किन्तु फिर एक नर्स को कमरे में छोंड़ कर वह बाहर चला गया था।

हॉस्पिटल वाले बेड पर लेटी वह लड़की आँखें बंद किये लेटी थी। ये अलग बात है कि उसकी बंद आँखों की कोरों से आँसूँ की धार सी बहती दिख रही थी। उसके शरीर का गले से नीचे का सारा हिस्सा एक चादर से ढ्का हुआ था। कमरे में कुछ लोगों के आने की आहट से भी उसने अपनी आँखें नहीं खोली थी। बल्कि उसी तरह पुर्वत् लेटी रही थी वह।

" अब कैसी तबियत है तुम्हारी ?" साक्षी उसके करीब ही एक स्टूल पर बैठती हुई बोली थी। उसके इस प्रकार पूँछने पर लड़की ने अपनी आँखें खोली और साक्षी की तरफ चेहरा मोड़ कर देखा उसे। साक्षी पर नज़र पड़ते ही उसकी आँखों में हैरत के भाव उभरे। ये बात साक्षी ने भी महसूस की थी।

" अब कैसा फील कर रही हो ?" साक्षी ने पुनः उसकी तरफ देख कर किन्तु इस बार हल्के से मुस्कुराते हुए पूछा _" अगर अच्छा फील कर रही हो तो अच्छी बात है। मुझे तुमसे इस वारदात के बारे में कुछ पूछताँछ करनी है। लेकिन उससे पहले मैं तुम्हें ये बता दूँ कि तुम्हें मुझसे भयभीत होने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं भी तुम्हारी तरह एक लड़की ही हूँ और हाँ तुम मुझे अपनी दोस्त समझ सकती हो , ठीक है ना ?"

लड़की के चेहरे पर कई सारे भाव आए और चले भी गए। उसने साक्षी की बातों का अपनी पलकों को झपका कर जवाब दिया।

" ओकं , तो अब तुम मुझे सबसे पहले अपना नाम बताओ। " साक्षी ने मुस्कुरा कर कहा।

" प्र प्र ... प्राची। " उस लड़की के थरथराते होठों से आवाज़ आई।

उसका नाम सुन कर साक्षी को झटका सा लगा। मस्तिष्क में जैसे बम्ब सा फटा था। चेहरे पर एक ही पल में कई तरह के भाव आए और फिर लुप्त हो गए। साक्षी ने शीघ्र ही खुद को नार्मल कर लिया।

" ओह .... कितना खूबसूरत सा नाम है तुम्हारा। " साक्षी ने कहा। उसके दिमाग़ में कुछ और ही ख़याल था , बोली _" प्राची ... प्राची वाजपेयी , राइट ?"

लड़की की आँखों में एक बार पुनः चौंकने के भाव आए थे। एकाएक ही उसका चेहरा सफेद फक्क सा पड़ गया था। चेहरे पर घबराहट के चिन्ह नज़र आए। उसने अपनी गर्दन को दूसरी तरफ मोड़ लिया।

" तो प्राची। " साक्षी ने कहा _" अब तुम मुझे बेझिझक बताओ कि क्या हुआ था तुम्हारे साथ ?"

साक्षी की बात पर प्राची ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। वह दूसरी तरफ मुह किये लेटी रही। जबकि उसकी ख़ामोशी को देख कर साक्षी ने कहा_"देखो ये ग़लत बात है प्राची। अगर तुम कुछ बताओगी नहीं तो मैं कैसे उस अपराधी को सज़ा दिला पाऊँगी जिसने तुम्हारी यानी मेरी दोस्त की ऐसी हालत की है? इस लिए बताओ मुझे....सारी बातें विस्तार से बताओ कि क्या और कैसे हुआ था?"

" मु मुझे कुछ नहीं पता। " प्राची ने दूसरी तरफ मुह किये हुए ही कहा _" मैं नहीं जानती कि किसने कब कैसे मेरे साथ ये सब किया ?"

" तुम झूँठ बोल रही प्राची। " साक्षी की आवाज़ सहसा तेज़ हो गई _" भला ऐसा कैसे हो सकता है कि तुम्हारे साथ इतना कुछ हुआ और तुम्हें इस सबके बारे में थोड़ा सा भी पता न हुआ हो ?"

" भला मैं झूँठ क्यों बोलूँगी आपसे ?" प्राची ने इस बार साक्षी की तरफ पलट कर कहा था।

" हाँ लेकिन सच भी तो नहीं बोल रही हो तुम ?" साक्षी ने कहा _" आख़िर वो सब बताने में परेशानी क्या है ? देखो अगर तुम नहीं बताओगी तो सच जानने के लिए पुलिस के पास और भी तरीके हैं। कहने का मतलब ये कि , हम ये पता लगा ही लेंगे कि तुम्हारे साथ ये सब किसने किया है ?"

बेड पर लेटी प्राची के चेहरे पर असमंजस व बेचैनी के भाव उभरे। कदाचित् समझ नहीं पा रही थी कि वह साक्षी की बातों का क्या और कैसे जवाब दे?

" तुम्हारे चेहरे के भाव बता रहे हैं प्राची कि तुम मेरे सवालों से बेचैन हो गई हो। " साक्षी ने कहा _" तुम जानती हो कि तुम्हारे साथ ये सब किसने किया है। लेकिन बताने में शायद डर रही हो या फिर हिचकिचा रही हो। "

प्राची ने कमरे में मौजूद लेडी सिपाई व नर्स की तरफ एक एक दृष्टि डाली फिर वापस साक्षी की तरफ दयनीय भाव से देखने लगी। साक्षी को उसका आशय समझते देर न लगी। उसने तुरंत ही लेडी सिपाई व नर्स को बाहर जाने का इशारा किया। नर्स ने बाहर जाते हुए इतना ही कहा कि पेशेन्ट को किसी बात के लिए ज्यादा मजबूर मत कीजिएगा क्योंकि इससे उसके दिलो दिमाग़ पर बुरा असर पड़ सकता है। नर्स तथा लेडी सिपाई के बाहर जाने के बाद साक्षी ने पलट कर प्राची की तरफ देखा।

" देखो प्राची , अब इस कमरे में हम दोनो के सिवा दूसरा कोई नहीं है। " साक्षी ने प्यार भरे लहजे से कहा _" अब तुम मुझे यानी अपनी दोस्त को बता सकती हो कि ये सब तुम्हारे साथ कब और किसने किया है ?"

"क .. क कल मैं अपने एक दोस्त की बर्थडे पार्टी में गई थी। " प्राची ने मानो कहना शुरू किया , उसकी आवाज़ में लड़खड़ाहट थी _" वहाँ पर हमारे कॉलेज की कुछ और लड़कियाँ थी जो हमारे ही ग्रुप की फ्रैण्ड्स थी और साथ में कुछ लड़के भी। पार्टी में सब एंज्वाय कर रहे थे। मेरी दोस्त परिधि ने मनोरंजन का सारा एरेन्जमेन्ट किया हुआ था। जिसमें बियर और शराब भी थी। दोस्त के ज़ोर देने पर मैंने थोड़ा बहुत बियर पिया था। लेकिन मुझे याद है कि उस बियर से मैने अपना होश नहीं खोया था। हम सब डान्स कर रहे थे , तभी मेरी एक फ्रैण्ड ने मेरे हाँथ में कॉच का प्याला पकड़ाया और मस्ती के ही मूड में मुझे पीने का इशारा किया। मैंने भी मुस्कुरा कर उसके दिये हुए प्याले को अपने मुह से लगा लिया और उसे धीरे धीरे करके पीने लगी। किन्तु इस बार इसका टेस्ट पहले वाले से अलग था। फिर भी मैंने उसे पी लिया। कुछ ही देर बाद मेरा सर भारी होने लगा। वहाँ की हर चीज़ मुझे धुंधली सी दिखने लगी थी। उसके बाद मुझे नहीं पता कि किसने मेरे साथ क्या किया ? हाँ बेहोशी में मुझे असह पीड़ा का एहसास ज़रूर हो रहा था , इसके सिवा कुछ नहीं। जब मुझे होश आया तो मैंने अपने आपको यहाँ हॉस्पिटल में पाया। मुझे नहीं पता कि यहाँ पर मैं कैसे आई ? लेकिन इतना जान चुकी हूँ कि मेरा सबकुछ लुट चुका है , मैं किसी को मुह दिखाने के काबिल नहीं रही। "

इतना सब कहने के साथ ही प्राची बेड पर पड़े ही ज़ार ज़ार रोने लगी थी। उसकी आँखों से आँसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे। इंस्पेक्टर साक्षी उसकी बात सुनकर पहले तो हैरान रही फिर उसने उसे बड़ी मुश्किल से शान्त कराया।

" तुम्हें यहाँ पर मैं लेकर आई थी प्राची। " साक्षी ने गंभीरता से कहा _" पुलिस थाने में

किसी अंजान व्यक्ति ने फोन करके हमें सूचित कर बताया कि शहर से बाहर मेन सड़क के नीचे कुछ दूरी पर एक लड़की बहुत ही गंभीर हालत में पड़ी है। वो जगह सोनपुर की अंतिम सीमा के पास थी , जहाँ से हम तुम्हें उठा कर यहाँ हॉस्पिटल लाए थे। "

" ये आपने अच्छा नहीं किया। " प्राची ने सिसकते हुए कहा _" उस हालत में मुझे वहीं पर मर जाने दिया होता। कम से कम उस सूरत में मुझे किसी के सामने अपना मुह तो न दिखाना पड़ता। मेरे घर वाले , मेरे माता पिता को मुझे देख कर शर्म से अपना चेहरा तो न झुका लेना पड़ता। "

" देखो प्राची। " साक्षी ने समझाने वाले भाव से कहा _" इस सबमें तुम्हारी कोई ग़लती नहीं है और ये बात तुम्हारे पैरेन्ट्स भी जानते और समझते हैं। ग़लती जिनकी है उन्हें इस सबकी सख्त से सख्त सज़ा मिलेगी। तुम्हारे साथ ये अत्याचार करने वालों को मैं कानून की सलाखों के पीछे जल्द ही पहुचाऊँगी। "

प्राची कुछ न बोली। वह बस अपनी आँखों में नीर भरे देखती रही साक्षी को।

" अच्छा ये बताओ कि तुम्हारी दोस्त की पार्टी में उस वक्त कौन कौन मौजूद था जिनके बारे में तुम जानती हो ?" साक्षी ने पूछा _" साथ ही ये भी बताओ कि तुम्हें उनमें से किन पर ये शक़ है कि उन्होने तुम्हारे साथ ऐसा किया हो सकता है ? तुम बेझिझक होकर मुझे उन सबका नाम पता बताओ। "

प्राची कुछ देर सोचती रही फिर उसने पार्टी में मौजूद कुछ लड़के लड़कियों के बारे में साक्षी को बता दिया। साक्षी ने एक काग़ज पर उन सबका नाम पता लिख लिया। उसके बाद कुछ और पूछताछ करने के बाद साक्षी कमरे से बाहर आ गई।

साक्षी को डाक्टर ने बताया कि वो लड़की दो महीने की प्रैग्नेन्ट है। ये सुन कर साक्षी बुरी तरह चौंकी थी। हलॉकि मिस्टर वाजपेयी ने डाक्टर को मना किया था कि ये बात वह किसी को न बताए। किन्तु डाक्टर ने अपना फर्ज़ समझ कर पुलिस के रूप में साक्षी को बता दिया था।

साक्षी ने मिस्टर वाजपेयी को एक बार थाने में आने का कह कर हॉस्पिटल से निकल गई थी। उसके मस्तिष्क में एक ही ख़याल उछल कूद मचा रहा था कि 'क्या ये वही प्राची है जिसे विक्रम प्यार करता था'???? साक्षी ने कभी प्राची को देखा नहीं था, और नाही उसके बारे में उसके भाई विक्रम ने कभी बताया था। उसे तो बस कहीं से ये पता चला था कि उसका भाई विक्रम किसी प्राची नाम की लड़की से प्यार करता है। इस लिए आज जब उसने उस लड़की के मुख से उसका नाम प्राची सुना तो उसके दिमाग़ में तुरंत ही उस प्राची का ख़याल आ गया जिस प्राची नाम की लड़की से उसका भाई प्यार करता है। साक्षी के मन में पहले ये विचार ज़रूर आया कि वह एक बार उससे ये जानने की कोशिश करे कि क्या वह विक्रम को जानती है? लेकिन फिर उसने तुरंत ही अपने मन में आए इस विचार के तहत उससे इस बारे में पूछने का ख़याल निकाल दिया। उसे लगा ये वक्त अभी इसके लिए सही नहीं है।

१९

रात में डिनर करने के बाद एक बार फिर से सब ड्राइंग रूम में एकत्रित हुए। सुंदर किसी सोच में डूबा हुआ था। रेणुका ने उसे सोच में डूबा देख कर कहा_"अपर्णा और बच्चे कैसे हैं सुंदर?"

" आं .. हाँ सब ठीक हैं भाभी। " सुंदर ने चौंकते हुए कहा था।

" रणदीप कैसा है ?" रेणुका ने पूछा _" क्या अभी भी वैसी ही शरारतें करता है वह ? अपर्णा तो उसकी शरारतों से परेशान हो जाती होगी न ? और ... और मेरी बेटी सृष्टि कैसी है ... उसकी पढ़ाई कैसी चल रही है ?"

" सब अच्छे हैं भाभी। " सुंदर ने नज़रें चुराते हुए कहा _" सृष्टि की पढ़ाई भी अच्छी चल रही है। "

" क्या बात है ?" रेणुका उसे नज़रें चुराते देख चौंकी _" तुम मुझसे क्या छुपा रहे हो सुंदर ? घर में सब ठीक तो हैं ना ? मुझे बताओ सुंदर .... मेरा दिल घबराने लगा है। "

" कोई ठीक नहीं है भाभी कोई भी। " सुंदर के अंदर से मानो गुबार फट पड़ा _" हवेली में कोई भी ठीक नहीं हैं। अपर्णा और बच्चों को मैं अपर्णा के मायके भेज कर ही यहाँ आया हूँ। इस समय घर के हालात बहुत ख़राब हैं भाभी। किसी पर भरोसा करने लायक नहीं रहा अब। "

" आख़िर हुआ क्या है सुंदर ?" रेणुका के चेहरे पर चिन्ता के भाव उभर आए _" साफ साफ बताते क्यों नहीं ?"

सामने सोफे पर बैठे विक्रम और निशा भी परेशान हो उठे थे। दिल किसी अंजानी आशंकाओं से धड़कने लगा था उनका।

" क्या बताऊँ भाभी ?" सुंदर ने असहज भाव से कहा _" मुझे तो बताने में भी आपसे शरम आती है। "

" क्या मतलब ?" रेणुका ही नहीं बल्कि सुंदर की इस बात से विक्रम और निशा भी बुरी तरह चौंके थे।

" एक दिन की बात है। " फिर सुंदर कहता चला गया। उसने वो सारी बातें बताई जो जयदीप ने किया था। उसने बताया कि कैसे जयदीप उसके न रहने पर उसके घर आया था और अपनी चाची को बाथरूम में नहाते देखने की कोशिश कर रहा था। इस सबके बाद कैसे अपर्णा ने आत्म हत्या करने की कोशिश की थी। सुंदर ये सब बताए जा रहा था और बाकी सब आश्चर्य से मुह फाड़े सुनते जा रहे थे।

" हे भगवान। " रेणुका ने रोते हुए कहा _" ये सब क्या हो गया ? मेरी फूल सी बहन को भी नहीं बक्शा उस नासपीटे ने। "

" ये तो कुछ भी नहीं है भाभी। " सुंदर ने भारी स्वर में कहा _" उस हरामज़ादे ने तो आपकी बेटी सृष्टि पर भी अपनी गंदी नज़रें डालने में कोई संकोच नहीं किया। "

" क्या ?????" रेणुका उछल पड़ी।

" हाँ भाभी। " सुंदर ने कहा _" ये बात खुद सृष्टि ने मुझे बताई थी। "

" जैसे मॉ बाप हैं वैसा ही तो बेटा होगा। " रेणुका ने कहा _" मॉ बाप खुद ही अपने बेटे को इस राह पर चलने की शह दे रहे हैं सुंदर। "

" क्या मतलब ?" इस बार बुरी तरह उछलने की बारी सुंदर की थी , बोला _" ये आप क्या कह रही हैं ?"

" यही सच है सुंदर। " रेणुका ने गंभीरता से कहा _" आपके बड़े भाई साहब और भाभी बहुत ही शातिर और घटिया किस्म के हैं। तुम उनके बारे में कुछ नहीं जानते। लेकिन मैं और माँ बाबू जी उनके बारे में अच्छी तरह जानते हैं। तुम्हें तो वही बताया और दिखाया गया जो उन्होंने गढ़ कर तुम्हें दिखाना था। ताकि तुम उनके खिलाफ न जा सको। "

" उस हादसे के बाद से मुझे भी ऐसा ही कुछ लगने लगा है भाभी। " सुंदर ने बुझे स्वर में कहा _" उस हादसे ने मेरी आँखें खोल दी। तथा मुझे इस सबके बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया। इसी लिए तो मैं सारी बातों को जानने के लिए आप सबके पास आया हूँ। मुझे दुख है कि मैंने सारी बातें पहले ही आप सबसे जानने की कोशिश क्यों नहीं की ? अगर ये सब मैने पहले ही पता कर लिया होता तो आप सबको इतनी तक़लीफ़ें नहीं सहनी पड़ती। मैं आप सबके लिए बड़े भैया भाभी से लड़ता और उन्हें उनके इस कृत्य की सज़ा भी देता। "

" तुम उनका कुछ भी न कर पाते सुंदर। " रेणुका ने कहा _" बल्कि अगर तुम उनके रास्ते का कॉटा बनने की कोशिश करते तो वो तुम्हें भी उसी तरह अपने रास्ते से हमेशा हमेशा के लिए हटा देते जैसे उन्होंने विक्रम के पिता को हटा दिया था। "

" क्या ???????" सुंदर बुरी तरह उछला था , बोला _" मॅझले भैया को .....???"

" हाँ सुंदर। " रेणुका की आँखें छलक पड़ी _" तुम सब यही समझते हो कि तुम्हारे मॅझले भैया की मौत खेतों में सर्प के काटने से हुई थी। ये सच है लेकिन ये सब सोच समझ कर किया गया था। वरना ये बताओ कि खेत पर बने मकान के कमरे में कोई सर्प कहाँ से आ जाता और उन्हें डस कर मौत दे देता ? सच तो ये है कि कमरे में लेटे तुम्हारे भैया को सर्प से कटाया गया और जब वो मृत्यु को प्राप्त हो गए तो उन्हें कमरे से उठा कर खेतों के बीच उस जगह डाल दिया गया जिस जगह खेत में पानी लगाया जा रहा था। ये सब इस लिए किया गया ताकि सबको यही लगे कि खेतों में पानी लगाते समय ही तुम्हारे भैया को किसी ज़हरीले सर्प ने काटा और वहीं पर उनकी मृत्यु हो गई। "

" हे भगवान। " सुंदर अपने दोनो हाथो को सिर पर रख कर रो पड़ा _" मेरे देवता जैसे भाई को इन अधर्मियों ने इस तरह मार दिया था। नहीं छोंड़ूँगा .... ज़िंदा नहीं छोड़ूँगा उन लोगों को मैं। "

" नहीं सुंदर। " रेणुका ने कहा _" उन्हें उनके कुकर्मों की सज़ा ज़रूर मिलेगी। "

" पर ये सब आपको कैसे पता भाभी कि मॅझले भैया को इन लोगों ने ही सर्प से कटवा कर मारा था ?" सुंदर ने पूछा _" और वो सब भी बताइए भाभी जो इन लोगों ने आपके साथ किया है ? मैं जानना चाहता हूँ कि इन लोगों ने मेरे देवी देवता जैसे भैया भाभी पर क्या क्या अनाचार किये हैं ? मैं जानना चाहता हूँ कि शेर की खाल ओढ़े इन भेड़ियों का सच क्या है ?"

" मैं जानती हूँ कि तुम जाने बग़ैर रहोगे नहीं सुंदर। " रेणुका ने गहरी सास ली _" और तुम्हें जानना भी चाहिए। आख़िर हक़ है तुम्हारा। "

" तो फिर बताइए भाभी। " सुंदर ने उत्सुकता से कहा _" मुझे इन लोगों का घिनौना सच सुनना है। "

सुंदर की बात सुन कर रेणुका ने एक गहरी सास ली। उसके चेहरे पर अनायास ही ऐसे भाव उभर आए थे जैसे अपने आपको इस परिस्थिति के लिए तैयार कर रही हो।

२०

सोनिया हवेली में ऊपरी हिस्से पर बने उस कमरे में पहुँची जिस कमरे के बेड पर इस वक्त गीता औंधी पड़ी सिसकियाँ ले लेकर रोये जा रही थी। सोनिया उसे इस तरह रोते देख उसके पास पहुँची और बेड के एक साइड बैठ कर उसे उसके कंधों से पकड़ अपनी तरफ खींच कर पलटाया। गीता ने पलटने के बाद जैसे ही अपनी भाभी को देखा तो झटके से उठ कर उससे लिपट कर रोने लगी। सोनिया ने किसी तरह उसे चुप कराया।

" शान्त हो जाओ गीता। " सोनिया ने गंभीरता से कहा _" और मुझे बताओ कि आख़िर ऐसा क्या हुआ है जिसकी वजह से तुमने दामाद जी को तलाक दे दिया है ? देखो पति पत्नी के बीच थोड़ी बहुत अनबन तो होती ही रहती है। इस लिए इसमें तलाक दे देना कोई समझदारी नहीं है। बल्कि हर बात को तसल्ली से और समझदारी से सुलझाना चाहिए। "

" भाभी इसमे मेरी कहीं भी कोई ग़लती नहीं है। " गीता ने दुखी भाव से कहा _" मैं तो हमेशा ही अमर को दिलो जान से प्यार करती रही थी। सब कुछ ठीक ठाक ही था लेकिन पिछले छः महीने से हमारे बीच संबंध ठीक नहीं थे। इसकी वजह ये थी अमर किसी दूसरी लड़की से संबंध रखने लगे थे। जब मुझे इस बात का पता चला और मैंने उनसे इस बारे में बात की तो वो मुझ पर भड़क गए। कहने लगे कि मैं बाँझ हूँ इस लिए अब वो मुझसे कोई मतलब नहीं रखना चाहते हैं। मैने उनसे हज़ारो बार कहा कि अगर मैं बाँझ हूँ तो मुझे एक बार डाक्टर को दिखा दीजिए। पर वो मेरी सुनने को तैयार ही नहीं थे। तब मैने खुद एक दिन डाक्टर से चेक अप करवाया। बाद में डाक्टर ने कहा कि मैं बिलकुल ठीक हूँ यानी बाँझ नहीं हूँ। मैंने डाक्टर की वो रिपोर्ट लाकर उन्हें दिखाया और कहा कि मैं बाँझ नहीं हूँ। बल्कि बच्चे पैदा कर सकती हूँ। इस लिए एक बार आप भी अपना चेक अप करवा लीजिए। मेरी इस बात से वो गुस्सा हो गए और मुझे गालियाँ देने लगे। कहने लगे कि तू क्या कहना चाहती है कि मैं ही नामर्द हूँ ? बस भाभी इसके बाद तो पिछले छः महीने से यही झगड़ा चलता रहा हमारे बीच। इस सबका पता जब मेरे सास ससुर को चला तो वो भी अपने बेटे के पक्ष में ही बोलने लगे और मुझे उल्टा सीधा बोलने लगे। अब आप ही बताइए भाभी मैं क्या करती ? ऐसे पति और ससुराल वालों के पास मैं कैसे रह सकती थी ? इस लिए जब मुझमें ज़ुल्म सहने की सहन शक्ति न रही तो तंग आकर एक दिन मैने उन्हें तलाक दे दिया। "

गीता की सारी बातें सुनने के बाद सोनिया भौचक्की सी उसे देखती रह गई। काफी देर तक कोई कुछ न बोला।

" ये तो सच में बहुत ही गंभीर बात हो गई गीता। " फिर सोनिया ने गहरी सास लेकर कहा _" तो क्या अमर ने तलाक के पेपर्स पर अपने साइन कर दिये ?"

" पहले तो नहीं कर रहा था। " गीता ने अधीरता से कहा _" फिर जब मैंने ये कहा कि मेरे भैया भाभी खुद भी एक वकील हैं और वो जब आपको कोर्ट में घसीट कर ले जाएँगे तब

पता चलेगा उन्हें। कोर्ट में सबके सामने मैं चीख चीख कर बताऊँगी कि अमर सिंह नामर्द है और बच्चा पैदा नहीं कर सकता तब तुम्हारी इज्जत दो कौड़ी की भी नहीं रह जाएगी। बस मेरे इस तरह धमकाने से उसने फिर तलाक के पेपर्स पर अपने साइन किये थे। "

" लेकिन मुझे ये समझ में नहीं आ रहा कि तुम्हें इस बात का पता पहले क्यों नहीं चला कि अमर नामर्द है ?" सोनिया ने उलझन में कहा _" बल्कि ये सब अब क्यों हुआ ? क्या अमर का पेनिस बहुत छोटा है या फिर उसके पेनिस में इरेक्शन नहीं होता ? आख़िर प्राब्लेम क्या है उसमें ?"

" और सबकुछ ठीक है भाभी। " गीता ने सिर झुकाते हुए कहा _" लेकिन मुझे लगता है कि उसके स्पर्म में कमी है। जिसकी वजह से बच्चा नहीं हो पा रहा है। मैंने बहुत कहा कि एक बार वो डाक्टर से चेक अप करवा लें लेकिन वो इस बात को मानने के लिए तैयार ही नहीं हैं। "

" ओह , चलो कोई बात नहीं। " सोनिया ने उसके चेहरे को सहलाते हुए कहा _" अब तुम फ्रेश हो जाओ तब तक मैं तुम्हारे लिए गरमा गरम खाना तैयार कर देती हूँ। "

गीता ने सिर को हिला कर हामी भरी। जबकि सोनिया उठ कर कमरे से बाहर निकल गई। बाहर आते ही वह चौंकी क्योंकि सत्यम सिंह दरवाजे की बाहरी साइड दीवार से चिपका हुआ खड़ा था। सोनिया को देख कर वह अजीब ढंग से मुस्कुराया और फिर सोनिया के साथ ही नीचे चला गया।

२१

रेणुका को एक दम से चुप और कुछ सोचते हुए देख सुंदर सिंह से रहा न गया। उसके चेहरे पर बेचैनी और उत्सुकता प्रतिपल बढ़ती ही चली जा रही।

" आप चुप क्यों हो गईं भाभी ?" सुंदर ने अधीरता से कहा _" बताइये न , मेरे मन में वो सब कुछ जानने की तीव्र उत्सुकता जाग उठी है। मैं जल्द से जल्द सब कुछ आपसे जानना चाहता हूँ। "

सुंदर की उत्सुकता और बेचैनी देख रेणुका के चेहरे पर अजीब से भाव उभरे तथा गुलाब की कोमल कोमल पंखुड़ियों जैसे होठों पर फीकी सी मुस्कान उभर आई। उसने सुंदर की तरफ देखने के बाद अपने सामने कहीं शून्य में देखने लगी।

" तुम मेरे बच्चों की तरह ही हो। " रेणुका शून्य में घूरते हुए ही बोली _" और कोई भी माँ अपने बच्चों के सामने या फिर खुद बच्चों से ऐसी बातें नहीं कर सकती जिन्हें कहने के लिए रिश्ते और मर्यादा इसकी इज़ाज़त ही न दे। लेकिन फिर भी कहूँगी सुंदर । वक्त और हालात हमारे सामने कभी कभी ऐसा रूप लेकर आ जाते हैं कि हम फक़त बेबस से हो जाते हैं। हमें वो सब कुछ करना पड़ जाता है जिसे करने के बारे में हम कभी कल्पना भी नहीं करते। ख़ैर , अब जो कुछ भी मैं कहने जा रही हूँ उसमें कई सारी बातें ऐसी भी हैं जिन्हें मैं स्पष्ट रूप से तुम लोगों के सामने नहीं कह सकती , किन्तु हाँ तुम लोग उन बातों का अर्थ ज़रूर समझ सकते हो। "

इतना कह कर रेणुका ने एक गहरी सास ली और फिर से उसी तरह शून्य में घूरते हुए कहने लगी_"ये सब तब से शुरू हुआ था जब मैं ब्याह कर अपने पति यानी शिवम सिंह जी के घर आई थी। उस समय हमारा घर घर जैसा ही था आज की तरह हवेली में तब्दील नहीं था। मैं एक ग़रीब घर की लड़की थी। मेरे माँ बाप ग़रीब थे, खेती किसानी करते थे। अपने माता पिता की मैं अकेली ही संतान थी। मेरा ना तो कोई भाई था और ना ही कोई बहन। ईश्वर ने मेरे सिवा मेरे माँ बाप को दूसरी कोई औलाद दी ही नहीं थी। इसके बाद भी मेरे माँ बाप को भगवान से कोई शिकायत नहीं थी। वो मुझे दिलो जान से प्यार व स्नेह करते थे। जब मैं बड़ी हुई तो सभी बच्चों की तरह मुझे भी मेरे माँ बाप ने गाँव के स्कूल में पढ़ने के लिए मेरा दाखिला करा दिया। मैं खुशी खुशी स्कूल जाने लगी थी। किन्तु एक हप्ते बाद ही मेरा स्कूल में पढ़ना लिखना बंद हो गया। दरअसल मैं छोटी सी बच्ची ही तो थी। एक दिन मास्टर जी ने मुझसे क ख ग घ सुनाने को कहा तो मैं सुनाने लगी। लेकिन मुझे आता नहीं था इस लिए जैसे आता वैसे ही सुनाने लगी तो मास्टर जी मुझे ज़ोर से डाँट दिया। उनकी डाँट से मैं डर कर रोने लगी। मैं अपने माँ बाप इकलौती लाडली बेटी थी। मेरे माँ बाप ने कभी मुझे डाँटा नहीं था शायद यही वजह थी कि जब मास्टर जी ने मुझे ज़ोर से डाँटा तो मुझे बेहद दुख व अपमान सा महसूस हुआ और मैं रोने लगी थी। मुझे रोते देख मास्टर जी ने मुझे चुप कराने के लिए फिर से ज़ोर से डाँटा। उनके द्वारा फिर से डाँटे जाने से मैं और भी तेज़ तेज़ रोने लगी थी। मास्टर जी

ने देखा कि मैं चुप नहीं हो रही हूँ तो उन्होंने मुझ पर छड़ी उठा दी। दो तीन छड़ी लगते ही मेरा रोना जैसे चीखों में बदल गया। पूरे स्कूल में मेरा रोना चिल्लाना गूँजने लगा। मेरे इस तरह रोने और चिल्लाने से मास्टर जी बहुत ज्यादा गुस्से में आ गए। उसी वक्त एक दूसरे मास्टर जी मेरा रोना औ र चिल्लाना सुन कर आ गए। दूसरे मास्टर जी को देख कर पहले वाले मास्टर जी रुक गए और इस बीच मैं रोते हुए ही स्कूल से भाग कर अपने घर आ गई। घर में उस वक्त मेरे पिता जी भोजन कर रहे थे। मुझे इस तरह रोता बिलखता देख वो चौंके। मैं रोते हुए आई और अपने पिता जी से लिपट गई। मेरे पिता मुझसे पूछने लगे कि किसने मुझे रुलाया है तो मैंने रोते रोते सब कुछ बता दिया। सारी बात सुन कर मेरे पिता जी बड़ा गुस्सा हुए लेकिन मॉ के समझाने पर शान्त हो गए। लेकिन इस सबसे हुआ ये कि मेरे पिता जी ने दूसरे दिन से मुझे स्कूल नहीं भेजा। उन्होंने साफ कह दिया था कि जिस स्कूल में मेरी बेटी मार कर रुलाया गया है उस स्कूल में मेरी बेटी अब कभी नहीं पढ़ेगी। बस इसके बाद मैं घर में ही पलती बढ़ती रही। उस समय मेरी उमर पन्द्रह साल थी जब एक दिन बाबू जी(देवेंद्र सिंह भाटी) हमारे घर आए। बाबू जी को आस पास के सभी गॉव वाले जानते थे। उन्हें कहीं से पता चला था कि इस गॉव में हेमराज सिंह(पिता जी) की बेटी है जो बहुत ही सुंदर व सुशील है। बाबू जी अपने मॅझले बेटे शिवम सिंह जी के लिए लड़की देखने आए थे। मेरे पिता जी ने बाबू जी को बड़े आदर व सम्मान के साथ बैठाया। घर में जो भी रुखे सूखे जल पान की व्यवस्था उन्होंने वो सब बाबू जी के लिए किया। बाबू जी ने मेरे पिता जी का मान रखने के लिए थोड़ा बहुत जल पान किया उसके बाद उन्होने अपनी बात रखी। मेरे पिता ये जान कर बड़ा खुश हुए कि ठाकुर साहब अपने बेटे के लिए उनकी लड़की का हाँथ खुद ही मॉगने आए हैं। भला कौन बाप नहीं चाहेगा कि उसकी बेटी इतने बड़े घर में न ब्याही जाए? और फिर रिश्ता जब खुद ही चलकर उनके द्वार पर आया था तो इंकार का सवाल ही नहीं था। किन्तु पिता जी की आर्थिक स्थित अच्छी नहीं थी इस लिए लेने देने वाली बात से घबरा रहे थे। बाबू जी जानते थे इस बात को इस लिए उन्होंने साफ कह दिया था कि हेमराज हमें सिर्फ तुम्हारी लड़की चाहि ए जिसे हम अपनी बेटी और बहू बना सकें। बस फिर क्या था। सब कुछ तय हो गया और एक अच्छे व शुभ मुहूर्त को मेरी शादी हो गई। मुझे नहीं पता था कि मैं किस तरह के घर में और किस तरह के लोगों के बीच आ गई हूँ? मॉ बाप ने बस यही सीख दी थी कि अपने पति को परमेश्वर मानना। अपने सास ससुर की मन से सेवा करना। बड़ों का आदर व सम्मान करना तथा छोटों को प्यार व स्नेह देना।

एक लड़की का नसीब कितना अजीब होता है कि बचपन से जवानी तक अपने मॉ बाप के पास हॅसी खुशी से रहती है और फिर शादी हो जाने के बाद वह एक नये घर में अपने पति के साथ एक नया संसार बनाने के लिए चली जाती है। अपने मॉ बाप के घर में उनका निश्छल प्यार और स्नेह पा कर पली बढ़ी वो लड़की एक दिन उन सबसे दूर चली जाती है।

शादी के बाद जब मैं इस घर में आई तो मेरे मन में डर व भय के सिवा कुछ न था। अपने मॉ बाप से यूँ अचानक ही दूर हो जाने से हर पल बस रोना ही आ रहा था। पर ये सब तो हर लड़की की नियति होती है। हर लड़की के साथ एक दिन यही होता है। ख़ैर , रात हुई तो एक ऐसे इंसान से मिलना हुआ जो किसी फरिश्ते से कम न था। उन्होंने मुझे प्यार दिया इज्जत दी और इस क़ाबिल बनाया कि जब सुबह हुई तो मुझे लगा जैसे ये घर शदियों से मेरा ही था। मुझे लग ही नहीं रहा था कि मैं किसी दूसरे के घर में किसी अजनबी के पास आ गई हूँ।

विक्रम के पिता ऐसे थे कि उन्होने मुझे इतना बदल दिया था। मुझे उनसे प्रेम हो गया और मैं जानती थी कि उन्हें भी मुझसे उतना ही प्रेम हो गया था।

मेरी दोनो ननदें यानी सीता और गीता दिन भर मेरे पास ही जमी रहती थी। उन्होने ये एहसास ही नहीं होने दिया कि वो दोनो मेरे लिए अजनबी हैं। मॉ बाबू बड़ा खुश थे। आख़िर उनकी पसंद की लड़की उनकी बहू बन कर उस घर में आई थी। ऐसे ही एक हप्ता गुज़र गया। इन एक हप्तों में मेरे मन से पूरी तरह डर व झिझक जा चुकी थी। मुझे घर के सभी लोग अच्छे लगने लगे थे। शिवम जी से इतना प्रेम हो गया था कि उनके बिना एक पल भी नहीं रहा जाता था। वो दिन भर खेतों पर काम में व्यस्त रहते और शाम को ही घर आते। जब वो कमरे में मेरे पास आते तो मुझे रूठी हुई पाते। फिर वो मुझे मनाते। हर दिन मेरे लिए छुपा कर फूलों का गजरा खुद बना कर लाते और मेरे बालों में खुद ही लगाते। आईने के सामने ले जाकर मुझे खड़ा कर देते और मेरे पीछे खड़े होकर तथा आईने में देखते हुए मुझसे कहते "मैं सारे संसार के सामने चीख चीख कर ये कह सकता हूँ कि इस संसार में तुमसे खूबसूरत दूसरा कोई नहीं। मैं तो बेकार व निकम्मा था जाने किन पुन्य प्रतापों का ये फल था जो तुम मुझे मिली हो" उनकी इन बातों से मैं गदगद हो जाती। मुझे ध्यान ही न रहता कि मैं उनसे रूठी हुई थी। सब कुछ जैसे भूल जाती मैं।

इस बीच मैंने महसूस किया था कि बड़े भैया और बड़ी दीदी इन दोनो का व्यवहार सबसे अलग था। बड़े भैया शिवम जी से ज्यादा बात नहीं करते थे। उसी तरह सोनिया दीदी मुझसे ज्यादा बात नहीं करती थी। हलॉकि वो उस समय शहर में ही रहते थे। पर जब भी वो दोनो आते तो उनका व्यवहार ऐसा ही होता हम दोनो से।

ऐसे ही चलता रहा। हम सब खुश थे किन्तु ये सच था कि बड़े भैया और दीदी शिवम जी और मुझसे हमेशा से ही उखड़े से रहते। मैने अक्सर देखा था कि बड़े भैया किसी न किसी बात पर शिवम जी को उल्टा सीधा बोलते रहते थे। ये अलग बात थी कि शिवम जी उनकी किसी भी बात का बुरा नहीं मानते थे और ना ही पलट कर कोई जवाब देते थे।

एक दिन की बात है मैं अपने कमरे में नहाने के बाद कपड़े पहन रही थी, मुझे ऐसा लगा जैसे छिप कर कोई मुझे कपड़े पहनते हुए देख रहा है। मैंने पलट कर देखा तो कहीं कोई नहीं था। मैंने इसे अपना वहम समझ कर फिर से कपड़े पहनने लगी। तभी कमरे के बाहर से मेरी बड़ी ननद सीता की आवाज़ आई। वो कह रही थी "बड़े भैया आप यहाँ, भाभी के कमरे के दरवाजे के पास छिप कर क्यों खड़े हैं?" सीता की इस बात को सुन कर मैं सन्न रह गई। ये जान कर मेरे पैरों तले से ज़मीन निकल गई कि जेठ जी छिप कर मुझे कपड़े पहनते हुए देख रहे थे। मुझे ध्यान ही नहीं था कि मेरे कमरे का दरवाजा खुला हुआ है। मेरी हालत ऐसी हो गई जैसे काटो तो एक बूद भी खून न निकले। फिर जब मुझे होश आया तो अनायास ही जाने किस भावना के तहत मुझे रोना आ गया। सीता जब मेरे कमरे में आई तो उसने मुझे रोता पाया। वह मुझे रोते देख हैरान रह गई। उसे किसी अनिष्ट की आशंका हुई। उसने तो देखा ही था कि उसका बड़ा भाई मेरे कमरे के बाहर दरवाजे के पास छिप कर खड़ा था। उसे समझते देर न लगी कि कुछ तो हुआ है। उसने तुरंत ही मुझे शान्त करने की कोशिश की और पूछने लगी

क्या हुआ है? मैंने रोते हुए यही कहा कि मुझे तो कुछ पता ही नहीं था कि कौन दरवाजे के पास छिपकर मुझे कपड़े पहनते देख रहा है, वो तो तब पता चला जब तुमने बाहर जेठ जी से वो सब कहा था। मेरी बातें सुन कर सीता भी स्तब्ध रह गई। फिर उसने कहा कि ये बात मैं किसी से न कहूँ क्यों कि घर में हंगामा हो जाएगा। इस लिए इस बात को भूल जाऊँ लेकिन आइंदा से ये ख़याल ज़रूर रखूँ कि दरवाजा खुला न रहे।

उस दिन के बाद जेठ जी का मुझे देखने का नज़रिया बदल चुका था। वो किसी न किसी बहाने मुझे देख ही लेते। मैं पन्द्रह साल की नासमझ ही थी। मुझे सिर पर साड़ी द्वारा घूँघट करने का भूल जाता था। जेठ जी मुझे देखते और जब मेरी नज़र उन पर पड़ती तो वो बस मुस्कुरा देते। मुझे ये सब बड़ा अजीब लगता और मैं इस सबसे डर भी जाती।

उधर शिवम जी खेतों में दिन रात मेहनत करते और ज्यादा से ज्यादा मात्रा में फसल उगाते। शहर में बेंच कर जो भी मुनाफा होता वो उस सारे पैसों को बाबू जी के हाँथ में पकड़ा देते। उन पर तो जैसे पागलपन सवार था खेतों में दिन रात मेहनत करने का। उनकी मेहनत व लगन से अच्छा खासा मुनाफा भी होता। मैं अक्सर उनके पास खेतों में उन्हें खाना देने के बहाने चली जाती। मुझे उनके साथ रहना अच्छा लगता था फिर चाहे वो किसी भी जगह हों। हम दोनो खेतों में नये नये पौधे लगाते और खूब सारी बातें करते।

समय गुज़रता रहा। समय के साथ साथ उनका स्वभाव जो पहले से ही बदला हुआ था वो और ज्यादा बदल गया था। जेठ जी जब भी बड़ी दीदी के साथ शहर से आते तो उनका बस एक ही काम होता था...मुझे ज्यादा से ज्यादा देखना। घर में अगर कोई न होता तो वो मुझसे बातें करने की कोशिश भी करते। किन्तु मैं उनकी किसी बात को कोई जवाब न देती बल्कि अपने कमरे में आकर दरवाजा अंदर से लगा लेती। जैसा की गॉवों में होता है कि जेठ व ससुर के सामने घूँघट करके ही जाना है और उनके सामने कोई आवाज़ नहीं निकालना है, बात करने की तो बात दूर। इस लिए जेठ जी जब खुद ही मुझसे बातें करने और करवाने की कोशिश करते तो मैं डर जाती और भाग कर अपने कमरे में जाकर अंदर से दरवाजा बंद कर लेती। इतना तो मैं समझ गई थी कि जेठ जी की नीयत मेरे प्रति सही नहीं है। मगर किसी से कह भी नहीं सकती थी। मैं नहीं चाहती थी कि मेरी वजह से घर में कोई कलह शुरू हो जाए।

उधर शिवम जी की मेहनत से घर में ढेर सारा पैसा आने लगा था। बाबू जी अपने इस बेटे से बड़ा खुश थे। मुझसे भी खुश थे क्योंकि मैं उनकी नज़र में एक आदर्श बहू थी। एक बार जेठ जी फिर आए शहर से। किन्तु इस बार वो पैसों के लिए आए थे क्योंकि उन्हें शहर में खुद का कारोबार करना था। उन्होने बाबू जी से इस बारे में बात की और उनसे पैसे मागे। इस बाबूजी नाराज भी हुए। पैसों के बारे में उन्होने यही कहा कि ये सब पैसे शिवम की मेहनत का नतीजा है इस लिए उससे पूछना पड़ेगा। बाबू जी की इस बात ने जेठ जी के मन में शिवम जी के लिए और भी ज़हर भर गया। मुझे आज भी नहीं पता कि ऐसी क्या वजह थी जिसकी वजह से जेठ जी के मन में अपने इस भाई के लिए इतना ज़हर भरा हुआ था? जबकि सब जानते थे कि शिवम जी हमेशा उनका आदर व सम्मान करते थे। उनकी किसी भी बात का बुरा नहीं मानते थे। ख़ैर, पैसा लेकर जेठ जी शहर चले गए। इस बार जब वो आए थे तो किसी भी दिन उन्होंने

वो हरकतें नहीं की जो इसके पहले करते थे मुझे देखने की। शहर में जेठ जी ने खुद का कारोबार शुरू कर लिया। इधर शिवम जी के ज़ेहन में ये भूत सवार हो गया था कि घर को तुड़वा कर इसे नये सिरे से बनवा कर हवेली का रूप दिया जाए। उन्होने बाबू की सहमति से हवेली की बुनियाद रखी। हवेली को तैयार करने में भारी पैसा खर्च हुआ। यहाँ तक की बाद में हवेली का बाकी काम कर्ज लेकर करना पड़ा। जेठ जी ने पैसा देने से इंकार कर दिया।

इस बीच बड़ी दीदी को एक बेटी हुई। इसका पता भी हम सबको बाद में चला था। ख़ैर, जब वो शहर से आए तो बाबू जी इस खबर से नाराज तो हुए किन्तु फिर हमेशा की तरह ही चुप रह गए।

मैं इस बात से खुश थी कि जेठ जी अब चोरी छिपे मुझे देखने वाली हरकतें करना बंद कर दिये थे। इस बीच सुंदर ने भी अपनी पसंद की लड़की से शादी कर ली। बाबू जी इस बात से नाराज हुए लेकिन कर भी क्या सकते थे? लेकिन अपर्णा का आचरण बहुत अच्छा था, वो पढ़ी लिखी थी लेकिन उसमें संस्कार भी थे। मैं उसे अपनी छोटी बहन बना कर खुश थी। हम दोनों का आपस में बड़ा प्रेम था। कोई कह ही नहीं सकता था कि वो मेरी देवरानी है। सुंदर गुस्सैल स्वभाव के ज़रूर थे किन्तु उनके अंदर अपने से बड़ों का आदर सम्मान करने की भावना थी। प्रेम के चक्कर में छोटी ऊम्र ही उन्होने शादी कर ली थी। लेकिन बाबू जी शायद इस लिए चुप रह गए थे क्योंकि वो अपने पैरों पर खड़े थे। गॉव के ही सरकारी स्कूल में अध्यापक थे वो।

इधर हवेली बन कर तैयार हो चुकी थी। कर्ज़ भी काफी हो गया था लेकिन शिवम जी के लिए तो जैसे ये कर्ज़ कोई मायने ही नहीं रखता था। बाबू जी ने हवेली के तैयार होने पर बड़े धूमधाम से गृह प्रवेश का उत्सव मनाया। शहर से बड़े भैया और दीदी भी आईं। हवेली देख कर वो दोनो ही हैरान थे किन्तु प्रत्यक्ष में हमेशा की तरह ही ग़लतियॉ बता रहे थे। बाबू जी सब जानते भी थे और समझते भी थे किन्तु हमेशा चुप रहते।

ऐसे ही चार साल गुज़र गए और मुझे एक बेटा हुआ। मेरे बेटे के जन्म के चार दिन बाद बड़े भैया और दीदी को फिर से एक बेटी हुई। बाबू जी ने अपने पोते के जन्म पर बड़े धूमधाम से उत्सव मनाया। बड़े भैया और दीदी इससे नाराज हुए। उनका कहना था कि उनकी बेटियों के जन्म उत्सव नहीं मनाया जबकि शिवम के बेटे के जन्म पर बड़ा उत्सव मना रहे हैं आप। उनकी इन बातों से बाबू जी का गुस्सा उस दिन जैसे फट पड़ा था। उन्होंने गुस्से में बहुत कुछ सुना दिया उन दोनो को। बात भी सही थी। दरअसल वो दोनो खुद को हम सबसे अलग कर लिए थे। शहर में खुद का कारोबार और बड़ा सा एक घर था उनके पास। शायद इसी का घमंड होने लगा था उन्हें। वो सोचते थे कि कहीं हम लोग उनके कारोबार और शहर के मकान में हिस्सा न मागने लगें इस लिए वो हमेशा हम सबसे कटे कटे से रहते। जबकि यहा हवेली और ज़मीन जायदाद में अपना हक़ समझते थे।

रेणुका कुछ पल के लिए रुकी और गहरी सासें लेने लगी। सब लोग सास बाधे उसकी बातें सुन रहे थे।

" मैं जानती हूँ सुंदर कि मैने अभी जो कुछ कहा उस सबको तुम जानते हो। " रेणुका ने कहा _" तुम सोच रहे होगे कि मैं ये सब तुम्हें क्यों बता रही हूँ जबकि मुझे तो सिर्फ वो सब बताना चाहिए जो इन लोगों ने मेरे और मेरे पति के साथ किया था। ख़ैर , ये सब बताने का मतलब यही था कि जो कुछ हुआ उसकी बुनियाद उसकी शुरूआत यहीं से हुई थी। ज़हर के बीज यहीं से बोना शुरू हुए थे।

विक्रम जब दो साल का हुआ तो मेरी बड़ी ननद सीता की शादी की बात चली। बाबू जी ने बड़े भैया को संदेश भेजवाया और कहा कि वो अपनी बहन की शादी के लिए अपनी तरफ से क्या खर्चा कर सकते हैं? बाबू जी बात से बड़े भैया ने पैसा देने से साफ इंकार कर दिया था। उनका कहना था कि उनका कारोबार आजकल बहुत घाटे में चल रहा है इस लिए वो पैसे नहीं पाएँगे। बाबू जी उनकी इस बात से बेहद दुख हुआ। बाबू जी के दुख का जब शिवम जी को पता चला तो वो खेतों से आकर हवेली में बाबू जी से मिले। उन्होने बाबू जी से कहा कि आप किसी बात की फिक्र न करें, सीता की शादी बड़े धूमधाम से ही होगी। बाबू जी जानते थे कि हवेली बनाने में जो कर्जा हुआ था उसे शिवम जी ने कितनी मेहनत करके चुकाया था। इसके बाद कहीं फिर से न कर्ज़ा हो जाए। खैर, सीता की शादी हुई और वैसे ही धूमधाम से हुई जैसा कि शिवम जी ने बाबू जी से कहा था। शहर से बड़े भैया और दीदी भी थे, वो दोनो हैरान थे किन्तु सामने पर यही कहते फिलते बाबू जी से कि इतना खर्च करने की क्या ज़रूरत थी? इससे जो कर्ज़ हुआ है उसे मेरे सिर पर मत मढ़ दीजिएगा। बाबू जी इस बात से बेहद गुस्सा हुए। कहने लगे कि तुम तो वैसे ही खुद को सबसे अलग समझते हो, तुम्हें किसी बात की चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं है। मेरे दो दो सपूत अभी बाकी हैं जो मेरा हर तरह से साथ देंगे और दे भी रहे हैं। सीता की शादी के तीसरे दिन बड़े भैया ने बाबू जी से कहा कि अगर आप ये समझते हैं कि मैं आप सबसे खुद को अलग समझता हूँ तो आप मुझे सचमुच ही अलग कर दीजिए। ये रोज रोज की बेज्जती मुझसे नहीं सुनी जाती। बाबू जी ने कहा कि तुम तो अलग ही हो अब किस तरह अलग करें तुम्हें? तो बड़े भैया ने कहा कि मेरे हिस्से में जो भी आता हो उसे मुझे दे दीजिए। हवेली में और ज़मीनों में जो भी मेरा हिस्सा हो। बाबू जी उनकी इस बात पर गुस्सा हो गए। कहने लगे कि तुम्हारा हवेली में तभी हिस्सा हो सकता है जब तुम अपने हिस्से की कीमत दोगे। क्योंकि हवेली में तुमने अपनी तरफ से एक रुपया भी नहीं लगाया। हवेली में जो भी रुपया पैसा लगा और जो भी कर्ज़ा हुआ उस सबको अकेले शिवम ने चुकता किया है। हाँ अगर शिवम चाहे तो अपनी मर्ज़ी से तुम्हें बिना कीमत चुकाए हवेली में हिस्सा दे सकता है।

बाबू जी की बात से बड़े भैया नाराज हो गए। कहने लगे कि शिवम होता कौन है मुझे हिस्सा देने वाला। उस मजदूर के सामने मैं हाँथ फैलाने नहीं जाऊँगा। मुझे आपसे हिस्सा चाहिए। उनकी इन बातों से बाबू जी भी गुस्सा हो गए। कहने लगे कि अगर ऐसी बात है तो तुम्हें भी अपने कारोबार और शहर के मकान में दोनो भाइयों को हिस्सा देना होगा। तुम्हारा कारोबार तो वैसे भी शिवम के ही पैसों की बुनियाद पर खड़ा हुआ है। बाबू जी इस बात से बड़े भैया ने साफ कह दिया कि मेरे कारोबार और शहर के मकान में किसी का कोई हिस्सा नहीं है। तो बाबू जी ने भी कह दिया कि फिर तुम भी ये भूल जाओ कि तुम्हारा इस हवेली में और ज़मीनों में कोई हिस्सा है।

बाबू जी की इस बात से बड़े भैया गुस्सा हो गए। कहने लगे कि ये आप ठीक नहीं कर रहे हैं। आप बाप होकर भी अपने बेटों के बीच पक्षपात कर रहे हैं। बाबू जी ने कहा कि तुम अपने आपको होशियार समझते हो कि तुम सबके हिस्सा ले लो और तुमसे कोई न ले। ये कहाँ का न्याय कर रहे हो तुम? अरे तुम तो बड़े भाई हो, तुम्हें तो खुद सोचना चाहिए कि तुम अपने छोटे भाइयों का भला करो और भला ही सोचो।

बाबू जी की इन बातों से बड़े भैया कुछ न बोले और पैर पटकते हुए वापस शहर चले गए। उधर ये सारी बातें जब शिवम जी को पता चलीं तो वो बाबू जी से बोले कि आपको बड़े भैया से ऐसा नहीं कहना चाहिए था। भला क्या ज़रूरत थी उनसे ये कहने की कि हवेली में हिस्सा तभी मिलेगा जब वो अपने हिस्से की कीमत चुकाएॅगे? मैने ये सोच कर ये सब नहीं किया था कि बाद में मैं अपने ही भाइयों से हवेली की कीमत वसूल करू। बाबू जी बोले इतना महान मत बनो बेटे। ये दुनिया बहुत बुरी है, यहाँ बड़े खुदगर्ज़ लोग रहते हैं। समय के साथ खुद को भी बदलो बेटा। वरना ये दुनिया तुम जैसे नेक और सच्चे ब्यकित को जीने नहीं देगी। बाबू जी की इस बात पर शिवम जी बोले जैसे विवेक अपना रोशनी फैलाने वाला स्वभाव नहीं बदल सकता वैसे ही मेरा स्वभाव भी नहीं बदल सकता। आप और मॉ की सेवा करू छोटे भाई के लिए खुद की सारी खुशियॉ निसार कर दूँ। भला क्या लेकर जाऊँगा इस दुनियॉ से? सब यहीं तो रह जाएगा न बाबू जी। इंसान की सबसे बड़ी दौलत व पूँजी तो वो है जिसे पुन्य कहते हैं। एक यही तो लेकर जाता है वह भगवान के पास।

शिवम जी की इन बातों से बाबू जी अवाक् रह गए। कुछ देर बाद बोले तू तो कोई फरिश्ता है बेटे। मन से बैरागी है तू। तुझे किसी धन दौलत का मोह नहीं है। जब तू पढ़ता लिखता नहीं था न तो दिन रात कोसता था तुझे। सोचता था कि कैसा निकम्मा बेटा दिया था मुझे भगवान ने लेकिन भला मुझे क्या पता था कि वही निकम्मा बेटा एक दिन इतना महान निकलेगा। मुझे तुझपे गर्व है बेटे। लेकिन मेरी एक बात हमेशा याद रखना कि दूसरों खुश रखने के लिए खुद का बने रहना भी ज़रूरी होता है।

बाबू जी की इस बात को सुन कर शिवम जी मुस्कुराए और फिर से अपनी कर्मभूमि यानी खेतों पर चले गए। बाबू जी की बातों में छुपे किसी अर्थ को शायद शिवम जी समझ नहीं पाए थे। लेकिन बाबू जी को शायद भविष्य दिख गया था।

उधर शहर में बड़े भैया और दीदी इस बार कुछ और ही खिचड़ी पका रहे थे। सीता की शादी को एक महीना हो गया था जब बड़े भैया और दीदी को तीसरी औलाद के रूप में एक बेटा हुआ था। वो दोनो शहर से आए थे घर। इस बार बाबू जी ने उनके बेटे के जन्म पर विक्रम के जन्मोत्सव से भी ज्यादा उत्सव मनाया कारण यही था कि बड़े भैया और दीदी को ये न लगे कि हमें कोई खुशी नही हुई है उनके बेटे के जन्म पर। बड़े भैया खुद भी उत्सव में खूब पैसा बहा रहे थे। वो दिखाना चाहते थे कि वो किसी से कम नहीं हैं। ख़ैर, इस बार एक नई चीज़ देखने को मिली। वो ये थी कि बड़े भैया और दीदी हम सब से बड़े अच्छे तरीके से मिल जुल रहे थे। शिवम जी से भी उन्होने अच्छे तरीके से बातें की। एक दिन बड़े भैया खेतों पर घूमने गए। वहाँ पर उन्होने देखा कि ज़मीनों पर काफी अच्छी फसल उगी हुई थी। बगल से जो बंज़र

सा पहले बड़ा सा मैदान हुआ करता था अब वहाँ पर अच्छे खासे पेढ़ लगाए जा चुके थे। खेतों पर एक तरफ बड़ा सा मकान भी बन रहा था। खेतों पर बहुत से मजदूर काम कर रहे थे। शिवम जी ने बड़े भैया को वहाँ पर देखा तो वो भाग कर उनके पास आए और बड़े आदर व सम्मान से उन्हें खेतों के बारें में तथा फसलों से होने वाली आमदनी के के बारे में बताने लगे। उन्होंने ये भी बताया कि दूसरी तरफ जो बीस एकड़ की खाली ज़मीन पड़ी थी उसमें मौसमी फलों के बाग़ लगाने की तैयारी हो रही है। उससे काफी ज्यादा आमदनी होगी।

ऐसे ही बातें चलती रही फिर बातों ही बातों में जब हवेली का ज़िक्र आया तो शिवम जी ने खुद कहा कि हवेली में सबका बराबर का हिस्सा है वो जब चाहें ले सकते हैं। उन्हें कोई कीमत नहीं चाहिए। ये सब अपनो के लिए ही तो बनाया गया है। शिवम जी की इन बातों से बड़े भैया खुश हो गए। किन्तु उनके मन में शायद कुछ और ही था जो उस वक्त समझ नहीं आया था।

ऐसे ही वक्त गुज़रता रहा। इसी बीच मुझे एक बेटी हुई और दस दिन बाद अपर्णा ने भी एक सुंदर सी बच्ची को जन्म दिया। विक्रम उस वक्त चार साल का हो गया था। वो दिन भर अपनी उन दोनो बहनों के साथ ही रहता, और उनके साथ ही हॅसता खेलता। शहर से बड़े भैया और दीदी भी आए थे। सबके लिए कपड़े भी लाए थे। हम सब बेहद खुश थे इस सबसे।

इस बीच एक परिवर्तन ये हुआ कि बड़े भैया शहर से हप्ते में एक दो दिन के लिए हवेली आने लगे थे। मॉ बाबू जी से वो बड़े सम्मान से बातें करते और खेतों पर भी जाते। वहाँ देखते सुनते सब। मैं और अपर्णा घर के सारे काम करती। उसके बाद मैं खेत चली जाती शिवम जी के पास। खेतों में जो मकान बन रहा था वो बन गया था।

इस बीच बच्चे भी बड़े हो रहे थे। विक्रम पॉच साल का हुआ तो उसका स्कूल में दाखिला करा दिया सुंदर ने। गर्मियों में जब स्कूल की छुट्टियॉ होती तो बड़े भैया और दीदी के बच्चे भी शहर से गॉव हवेली में आ जाते। सब बच्चे एक साथ खेलते और खेतों में जाते। बड़े भैया की बड़ी बेटी साक्षी अपनी मॉ पर गई थी। वो ज्यादा हम लोगों से घुलती मिलती नहीं थी। जयदीप अपने बाप पर ही गया था। वह अपनी चीज़ें किसी को नहीं देता था और दूसरों की चीज़ें लड़ झगड़ कर ले लेता था। विक्रम से अक्सर उसकी लड़ाई हो जाती थी। बच्चे तो नासमझ होते हैं उन्हें अच्छे बुरे का ज्ञान कहाँ होता है। इस लिए अगर इनकी आपस में कभी लड़ाई होती तो जेठानी जी अक्सर नाराज हो जाती थीं। बड़ी मुश्किल से गर्मियों की छुट्टियॉ कटती और जेठानी जी अपने बच्चों को लेकर शहर चली जातीं।

सोनिया अपने पति के साथ जब अपने कमरे में पहुॅची तो अचानक ही पीछे से सत्यम ने उसे अपनी गिरफ्त में ले लिया साथ ही अपने होठों को उसकी गर्दन पर लगा कर करते हुए अपने दोनो हाथो से सोनिया के बड़े बड़े स्तनों को बुरी तरह मसलने लगा।

" आऽऽऽह धीरे से प्लीज़। " सोनिय ा की दर्द और मज़े में डूबी आह निकल गई थ ी , बोल ी __" ज़रा धीरे से आहहहहह मसलो न सत्यम । मुझे दर्द हो रहा है। "

" ये धीरे से मसलने वाली चीज़ नहीं है मेरी जान। " सत्यम सिंह ने उसी तरह सोनिया के स्तनों को मसलते हुए कहा _" इन्हें तो आटे की तरह गूँथा और मसला जाता है। देख लो मैं वही कर रहा हूँ। "

" वो तो मैं देख ही रही हूँ। " सोनिया ने आहें भरते हुए कहा __" पर मुझे ये नहीं समझ आ रहा कि इस समय तुम ये सब इतने उतावलेपन से क्यों कर रहे हो ? आख़िर किस बात का जोश चढ़ गया है तुम्हें ?"

" मत पूछो डियर। " सत्यम सिंह ने खुद आह सी भरते हुए कहा __" इस हवेली में आज एक और योनी आ गई है। मेरी छोटी बहन की प्यारी प्यारी सी योनी । हाय काश ! उसकी उस योनी को पेलने का मौका मिल जाए तो कसम से मज़ा आ जाए सोनिया। "

" हे भगवान। " सोनिया उछल पड़ी _" तो इस वजह से जोश चढ़ा हुआ है तुम्हें ? कसम से सत्यम तुम न कभी नहीं सुधर सकते। तुम्हारे ही नक्शे कदम पर हमारा बेटा भी चल रहा है। मैने हज़ार बार देखा है उसे , उसकी नज़रें अपनी बहनों पर ही नहीं खुद मुझ पर भी गड़ जाती हैं। उसे ये भी ख़याल नहीं कि मैं उसकी माँ हूँ। ये सब तुम्हारी वजह से है सत्यम । तुम खुद उसकी ग़लतियों को नज़रअंदाज़ करते रहते हो। "

" अरे तो क्या हो गया मेरी जान ?" सत्यम ने सोनिया को उठाकर बेड पर लेटा दिया और फिर उसके ऊपर आकर बोला __" नज़रें तो होती ही हैं नज़ारा करने के लिए। तुम तीनो माँ बेटियाँ हो ही इतनी हॉट एण्ड सेक्सी कि हमारे बेटे का भी इमान डोल गया। "

" तुम्हारे बेटे का बस चले तो अपनी माँ बहनों को भी अपने नीचे लेटा कर पेल दे। " सोनिया ने हँस कर कहा था।

" तो इसमें दिक्कत क्या है डियर ?" सत्यम ने बेशर्मी से हँसते हुए कहा _" उसे भी अपनी कुण्ड का अमृत पिला दो। शायद उसकी प्यास और तड़प मिट ही जाए। "

" ओह सत्यम कुछ तो शर्म करो। " सोनिया ने हैरानी से देखा _" भला ऐसा मैं कैसे कर सकती हूँ ? वो मेरा बेटा है , मैने उसे पैदा किया है। "

" तो क्या हुआ मेरी जान ?" सत्यम ने अपना एक हाँथ सरका कर सोनिया की साड़ी को ऊपर कर उसकी नंगी योनी को मसलते हुए कहा __" इसी रास्ते से ही पैदा किया ना अपने बेटे को ? अब इसी रास्ते का स्वाद भी चखा दो उसे। यकीन मानो मेरी जान उसके बाद तुम्हारा बेटा तुम्हारा गुलाम ना हो जाए तो कहना। "

" उफफफफ सत्यम तम्हें ज़रा भी एहसास नहीं है कि तुम क्या बकवास किये जा रहे हो ?" सोनिया ने नाराज गी भरे लहजे से कहा _" तुम मुझे ऐसा करने के लिए कैसे कह सकते हो ? क्या तुम्हें ज़रा सी भी इस बात से तक़लीफ़ नहीं होगी कि हमारा बेटा तुम्हारी चीज़ों का भोग करे ? किस मिट्टी के बने हो तुम ?"

" यार तो कौन सा घिस जाएगी तुम्हारी ये रस से भरी हुई योनी ?" सत्यम ने अपने हाँथ की दो उँगलियाँ सोनिया की रिस रही योनी में अंदर तक डाल कर कहा __" एक बार अपने बेटे का हथियार भी तो डलवा कर मज़ा लो। खुराना के साथ तो बड़ा मज़ा करती थी तुम। दो दो हथियारों से आगे पीछे से पेलवाती थी तुम। कसम से डियर , अगर ऐसा हो जाए तो मज़ा ही आ जाए। हम दोनो बाप बेटे एक साथ मिल कर तुम्हारी आगे पीछे से ठुकाई करेंगे। "

" आआआहहहहह सत्यम। " सोनिया ने मदहोशी में कहा __" मत करो ऐसी बातें। मुझे कुछ हो रहा है। "

" हाहाहाहा जब ऐसी बातों से ही तुम्हें कुछ होने लगा है तो ज़रा सोचो डार्लिंग। " सत्यम ने हँसते हुए कहा __" सोचो डियर तब क्या होगा जब हम दोनो बाप बेटों के हथियार तुम्हारी पेलाई करेंगे ?"

" शशशशशशश कुछ करो सत्यम। " सोनिया की हालत ख़राब __" जल्दी से कुछ करो। मेरी योनी में आग जलने लगी है। इसे बुझाओ जल्दी। वरना मैं इस आग में जल जाऊँगी। "

" क्या करू डियर ?" सत्यम मुस्कुराया था।

" कुछ भी करो। " सोनिया ने बेड सीट को दोनो हाथो की मुट्ठियों में भींचते हुए कहा __" पर मेरी इस आग को शान्त करो जल्दी। उफफफ ये आज क्या हो रहा है मुझे ??"

" आज बेटे के हथियार की बात चली है ना इस लिए शायद ऐसा हो रहा है तुम्हें। " सत्यम ने कहा _" पर बेटे का हथियार तो इस वक्त यहाँ नहीं है मेरी जान। कहो तो फोन करके शहर से बुला लूँ उसे ?"

" उसे तो आने में समय लगेगा सत्यम। " सोनिया ने आहें भरते हुए कहा __" तुम्हें ही इस आग को शान्त करना पड़ेगा। शशश जल्दी मुझे पेलो ना सत्यम। "

" इसका मतलब तुम्हें अपने बेटे से पेलवाने में अब कोई ऐतराज नहीं है। " सत्यम मुस्कुराया।

" मुझे तुम्हारी किसी बात से कभी कोई ऐतराज हुआ है क्या ?" सोनिया ने झटके से उठ कर सत्यम के कपड़े उतारना शुरू कर दिया था , बोली __" मैं तो तुम्हारी हर जायज़ नाजायज़ बात को अब तक मानती ही आ रही हूँ। अब जल्दी से मुझे आगे पीछे पेलो। बहुत आग लगी हुई है। "

" ठीक है फिर कल हम दोनो शहर चलेंगे और वहीं पर अपने बेटे के साथ थ्रीसम करेंगे। " सत्यम ने कहा।

" जो तुम्हारी मर्ज़ी लेकिन अभी तो मुझे शान्त करो। " सोनिया ने सत्यम को नंगा कर दिया था।

सत्यम ने सोनिया की दोनो टॉगों को अपने दोनों कंधों पर रखा और पोजीशन बना कर सोनिया पर छाता चला गया। कमरे के अंदर जैसे एकाएक कोई भारी तूफान आ गया था

२२

कुछ पल रुकने के बाद रेणुका ने गहरी साँस ली उसके बाद फिर से कहा__"ऐसे ही कुछ साल गुज़र गए। सब कुछ बहुत अच्छा चल रहा था। विक्रम अब बड़ा हो गया था। उस समय वह दस जमात में पढ़ रहा था। पढ़ने लिखने में वह शुरू से ही तेज़ था क्योंकि उसकी पढ़ाई की सारी जिम्मेदारी सुंदर और अपर्णा पर थी। शिवम जी ने बाबू जी के लिए एक बढ़िया सी कार खरीद दी थी तथा सुंदर के लिए एक बुलेट मोटर साइकिल।

अब की बार जब गर्मियों की छुट्टियाँ हुईं तो फिर से जेठ जेठानी अपने बच्चों के साथ शहर से गाव आए। किन्तु इस बार हालातों में बहुत बड़ा बदलाव हो चुका था।

रेणुका की नज़रें सामने एक बड़े से टेबल पर रखे कॉच के एक बड़े से जार में टिकी थी। जिस जार में भरे हुए पानी पर रंग बिरंगी मछलियाँ तैर रही थी। उसी कॉच के जार में रेणुका एकटक देखे जा रही थी। जैसे वहाँ कोई फिल्म चल रही हो। एक ऐसी फिल्म जो गुज़रे हुए कल का एक हिस्सा थी।

" कल से ही तुम अपने काम में लग जाओ मेरी जान। " अपने कमरे में बेड के एक तरफ बैठे सत्यम ने सोनिया से कहा __" हमें किसी भी कीमत पर उस मजदूर को अपने काबू में करना है। "

" और अगर उसने कोई हंगामा खड़ा कर दिया तो ?" सोनिया ने तर्क दिया __" तब तो मैं इस घर में किसी को मुह दिखाने के काबिल भी न रह जाऊँगी। "

" ऐसा कुछ नहीं होगा। " सत्यम ने पुरज़ोर लहजे में कहा __" मुझे पता है वो साला इस बारे में किसी को कुछ नहीं बताएगा। और अगर उसने इस सबमें ज्यादा चूँ चाँ की तो उसके इलाज़ के लिए भी फिर प्लान बी अपनाया जाएगा। "

" और प्लान बी क्या है ?" सोनिया ने मुस्कुराते हुए पूछा था।

" प्लान बी ये है कि तुम्हारी उन हरकतों से अगर वह घर में किसी से कुछ कहता है और अगर सारी बात तुम पर ही आती है तो तुम उल्टा उस पर ही इल्ज़ाम लगाना। " सत्यम सिंह उसे समझा रहा था __" चीख चीख कर सबसे यही कहना कि शिवम खुद कई दिन से तुम्हारी इज्जत लूटने के चक्कर में था। बाद में फिर मैं हूँ ही इन हालातों को अंजाम तक ले जाने के लिए। "

" तुम क्या करोगे उस सूरत में ?" सोनिया ने पूछा।

" वो सब तुम मुझ पर छोंड़ दो। " सत्यम ने कहा __" अभी उतना ही करो जितना कहा है। इधर मैं भी अपने काम में लग जाता हूँ। "

" ठीक है। " सोनिया ने कहा __" लेकिन सुंदर और अपर्णा से सावधान रहना। सुंदर की तरह अपर्णा भी ज़रा तेज़ तर्रार है। "

" चिन्ता मत करो। " सत्यम ने कहा __" सबको देख लूँगा एक एक करके। पहले इन दोनो से तो निपट लूँ। "

" ठीक है। " सोनिया ने कहा __" आज शिवम का खाना लेकर मैं जाऊँगी। रेणुका की तबियत बुखार के चलते परसो से कुछ खराब है। कल तो गीता गई थी शिवम को खाना देने। आज मैं जाऊँगी। "

" ठीक है। " सत्यम ने कहा _" और हाँ ब्लाउज बिलकुल बड़े गले वाला पहन कर जाना। बाकी तो तुम समझदार ही हो। "

सोनिया मुस्कुरा कर बेड से उठी और कमरे से बाहर निकल गई। जबकि सत्यम के होठों पर एक ज़हरीली मुस्कान तैर उठी। वह उसी बेड पर आराम से लेट कर ऊपर छत में कुंडे पर तेज़ रफ्तार से घूम रहे पंखे की तरफ घूरने लगा था।

सोनिया जब किचेन में पहुँची तो उसकी छोटी ननद गीता शिवम के लिए टिफिन तैयार कर रही थी। गीता उस वक्त बाइस तेइस साल की थी। उसने अपनी पढ़ाई छोड़ दी थी और बीएस सी करने बाद अब घर में ही रहती थी। उसकी शादी के लिए बाबू जी लड़का तलाश कर रहे थे।

" क्या कर रही हो गीता ?" सोनिया ने बड़े प्यार से गीता से पूछा था।

" मॅझले भैया के लिए खाने का टिफिन तैयार कर रही हूँ भाभी। " गीता ने कहा _" मॅझली भाभी की तबियत ठीक नहीं है न इस लिए ये टिफिन मैं ही ले जा रही हूँ कल से। ख़ैर छोड़िये आप बताइये आप किस काम से किचेन में आई हैं ?"

" मैं भी इसी लिए यहाँ आई थी कि अपने देवर के लिए खाना पहुँचा दूँ। " सोनिया ने मुस्कुराते हुए कहा __" बेचारी रात दिन जी तोड़ मेहनत करते हैं। "

" हीहीहीही आप तो शहर वाली हैं भाभी आप खेतों पर टिफिन लेकर जाएँगी तो लोग क्या कहेंगे ?" गीता ने हॅसते हुए कहा __" जाने दीजिए भाभी ये आपको शोभा नहीं देगा। टिफिन तैयार हो गया है अब चलती हूँ मैं। आज तो वैसे भी देर हो गई है। मॅझले भैया के पेट में तो अब तक चु हे भी कूदने लगे होंगे। "

" तो तुम भी मुझे ताना मारने लगी हो ?" सोनिया ने अपने चेहरे पर दुख के भाव प्रकट करते हुए कहा __" क्या मेरा इतना भी हक़ नहीं बनता कि मैं अपनी इच्छा से इस घर में कुछ कर सकूँ ?"

" ये आप क्या कह रही हैं भाभी ?" गीता ने हड़बड़ाते हुए कहा __" भला मैं क्यों आपको ताना मारूँगी। और बाकी सब भी कहाँ आपको ताना मारते हैं ?"

" सब समझती हूँ मैं। " सोनिया ने कहा __" लोग मेरे सामने मेरे मुख पर नहीं बोलते लेकिन मेरे पीठ पीछे तो सब यही बोलते हैं न। एक मैं हूँ जो हर बार यहीं सोच कर आती हूँ कि घर में इस बार सबका हाँथ बटाऊँगी और सबसे खूब हँसूँगी बोलूँगी। लेकिन हर बार यहाँ आने पर मेरी इन सभी इच्छाओं पर ग्रहण लग जाता है। "

" ओह भाभी प्लीज़। " गीता कह उठी _" आप ये सब बेकार ही सोचती हैं। आपके बारे कोई कुछ नहीं बोलता है और ना ही सोचता है ऐसा वैसा। "

" तो फिर क्यों मुझे इन सब कामों को करने से मना कर रही हो तुम ?" सोनिया ने कहा _" मुझे करने दो ना जिसे करने का मेरा बहुत मन करता है। मैं भी सबकी तरह ये सब काम खशी खुशी करना चाहती हूँ। "

" पर भाभी आप ये। " गीता का वाक्य अधूरा रह गया।

" देखा , फिर से वही शुरू कर दिया। " सोनिया ने कहा _" तुम अभी भी यही समझती हो कि मैं ये सब करू गी तो लोग क्या सोचेंगे। अरे हर काम की शुरूआत पर लोग ऐसा ही सोचते हैं। तो क्या हम लोगों की सोच को लेकर कोई काम ही ना करें ? दूसरे लोग सोचें या न सोचें किन्तु इस घर के लोग सबसे पहले सोच लेते हैं। "

गीता हैरान परेशान देखती रह गई सोनिया को। उसे समझ नहीं आ रहा था कि अपनी भाभी को क्या कहे।

" मैं तो ये सब इसी लिए कह रही थी भाभी क्योंकि आपको इन सब कामों की आदत नहीं है। " गीता ने कहा _" बाहर जिस्म को जला देने वाली धूप है और गर्मी इतनी कि पूछो ही मत। आप बेवजह इस धूप और गरमी में परेशान हो जाएँगी। "

" कुछ नहीं होगा मुझे। " सोनिया ने कहा _" और क्या अपने देवर के लिए इतना भी नहीं कर सकती मैं ?"

" अच्छा ठीक है भाभी। " गीता ने कहा _" पर मैं भी आपके साथ चलूँगी। आप अकेले इस धूप में परेशान हो जाएँगी। "

" नहीं गीता। " सोनिया ने कहा _" मुझे अकेले ही जाने दो। अकेली जाऊँगी तो देवर जी को भी लगेगा कि उनकी भाभी को उनकी फिकर है। वरना अगर तुम्हारे साथ जाऊँगी तो वो यही सोचेंगे कि मैं वहाँ कोई एहसान जताने आई थी। "

" शिवम भैया ऐसे नहीं हैं भाभी। " गीता ने हँस कर कहा _" वो किसी के भी बारे में कुछ भी बुरा नहीं सोचते। "

" चलो छोड़ो ये सब। " सोनिया ने कहने के साथ ही गीता के हाँथ से टिफिन ले लिया _" जब तक रेणुका अच्छी तरह से ठीक नहीं हो जाती तब तक खेतों में शिवम को खाना पहुँचाने की जिम्मेदारी मेरी है। और तुम्हारी जिम्मेदारी ये है कि तुम साक्षी और मानुषी यहाँ हैं तब तक उनको पढ़ाओ। "

" ठीक है भाभी जैसा आप कहें। " गीता ने हँसते हुए कहा _" आप सच में बहुत स्वीट हैं। आई लव यू माई स्वीट ऐण्ड ब्यूटीफुल भाभी। "

" ओह लव यू टू माई स्वीट ननद रानी। " सोनिया ने भी मुस्कुराकर कहा _" चलो अब मैं चलती हूँ। "

इतना कह कर सोनिया किचेन से बाहर आ कर अपने कमरे की तरफ बढ़ गई। जबकि गीता अपने कमरे की तरफ मुस्कुराते हुए चली गई। इधर कमरे में आकर सोनिया ने टिफिन को बेड के पास दीवार तरफ सटे एक टेबल पर रखा और फिर आलमारी की तरफ बढ़ गई।

" क्या हुआ तुम यहीं हो ?" सत्यम सिंह ने चौंकते हुए कहा था __" अभी तक खेतों पर गई नहीं ???"

" तुम तो इस सबको इतना आसान समझते हो जबकि तुम्हें पता होना चाहिए कि कहने और करने में ज़मीन आसमान का फर्क होता है। " सोनिया ने आलमारी से एक झीनी सी साड़ी निकालते हुए कहा था।

" वो तो मुझे भी पता है। " सत्यम सिंह ने कहा __" लेकिन मेरे कहने का मतलब ये था कि टिफिन तैयार करने में बेवजह इतना समय क्यों लगा दिया तुमने ?"

" यार जब मैं किचेन में गई तो वहाँ पर गीता आलरेडी टिफिन तैयार कर चुकी थी। " सोनिया ने कहा __" और वह टिफिन लेकर खेतों पर जाने ही वाली थी। इस लिए मुझे उसे इमोशनली ब्लैकमेल करना पड़ा। "

" क्या मतलब ??" सत्यम सिंह चौंका।

सोनिया ने उसे किचेन में गीता और खुद के बीच हुई सारी बातें बता दी। सारी बातें सुनने के बाद सत्यम सिंह बोला__"ये बिलकुल सही किया तुमने। और अब इसके आगे का भी ऐसा ही परफेक्ट हो तो मज़ा ही आ जाए।"

" ऐसा ही होगा डियर। " सोनिया ने अपने जिस्म से पहले वाले कपड़े उतार दिये। अब वह ऊपर मात्र ब्रा में थी जबकि नीचे पेटीकोट था।

" इस ब्रा को भी उतार दो ना डियर। " सत्यम सिंह मुस्कुराया _" अपने बड़े बड़े स्तनों के

ऊपर सिर्फ ये लोकट वाला ब्लाउज ही पहन कर जाओ। ताकि उस साले मजदूर को नज़ारा करने में आसानी हो। "

" बड़े बेशर्म हो सच में। " सोनिया ने हॅसते हुए कहा और अपने हाँथों को पीछे अपनी पीठ पर ले जाकर ब्रा का हुक खोल कर उसे अपने शरीर से अलग कर दिया।

" हाय , इन भारी भरकम स्तनों पर जब उस मजदूर की दृष्टि पड़ेगी तो यकीनन उस साले की आँखें फटी की फटी रह जॉएॅगी। " सत्यम ने आह सी भरते हुए कहा था __" सारा इमान पल भर में चकनाचूर हो जाएगा उसका। "

" काश ! ऐसा ही हो। " सोनिया ने ब्लाऊज को पहनते हुए कहा __" अगर बात बन गई तो मुझे भी एक नई चीज़ मिल जाएगी। "

" बिलकुल बात बनेगी डियर। " सत्यम सिंह ने ज़ोर देकर कहा __" तुम तो उर्वशी या मेनका से भी सुंदर व मालदार हो। भला तुम्हारे सामने वो मजदूर कब तक टिका रहेगा ?"

" तुम हर बात पर उसे मजदूर क्यों बोल रहे हो सत्यम ?" सोनिया ने कहा __" जबकि वह भी तुम्हारी तरह ठाकुर देवेंद्र सिंह भाटी की औलाद है और तुम्हारा सगा भाई है। "

" जो भी हो। " सत्यम सिंह बोला _" है तो एक मजदूर ही ना ? अब मजदूर को मजदूर ना कहूँ तो और क्या कहूँ ?"

" चलो अब मैं जा रहीं हूँ। " सोनिया ने आदमकद आईने में खुद को देखने के बाद कहा _" अब मेरा ड्रेस ठीक है ना ?"

" एकदम झक्कास है मेरी जान। " सत्यम सिंह ने कहा __" इस ड्रेस में तुम्हें देख कर अब तो मुझे ऐसा लग रहा है कि अभी एक बार तुम्हें इसी बेड पर पटक कर पेल दूँ पर जाने दो। "

सोनिया उसकी इस बात पर हॅस पड़ी और फिर टेबल से टिफिन उठा कर कमरे से बाहर जली गई।

२३

वर्तमान_____

सोनपुर पुलिस स्टेशन !

" तो क्या जानकारी मिली तुम्हें ?" अपनी कुर्सी पर बैठी साक्षी ने सामने खड़े हवलदार से पूछा था।

" मैडम जिन लड़के लड़कियों की लिस्ट आपने दी थी। " वह हवलदार कह रहा था जिसकी वर्दी की नेम प्लेट पर उसका नाम राम सिंह लिखा हुआ था , बोला __" उनमें से कुछ तो उसी कॉलेज के हैं जिस कॉलेज में वो पीड़िता यानी प्राची वाजपेयी पढ़ती है जबकि बाकी के सब बाहरी हैं। मेरा मतलब कि उस कॉलेज के नहीं हैं। "

" बाहर से कौन से लड़के लड़कियॉ हैं ?" साक्षी ने पूछा था।

" बाहर के तो सब लड़के ही हैं मैडम। " हवलदार रामसिंह ने कहा __" वो भी दो ही हैं। एक तो वही संपत है जो इसी इलाके का एक छोटा मोटा ग़ुडा मवाली है जबकि दूसरा संदीप अग्निहोत्री है , ये दूसरे कॉलेज में बीए लास्ट इयर का छात्र है। "

" ओके बाकी के सब लोगों के बारे में क्या पता चला ?" साक्षी ने पूछा।

" प्राची के साथ कॉलेज में पढ़ने वाली जिस लड़की की बर्थडे पार्टी थी उस रात , उसका नाम खुशी जिन्दल है। बड़े बाप की औलाद है। मॉ बाप पूणे में रहते हैं। यहाँ पर वह अपनी एक आया के साथ रहती है और वो मकान भी उसके बाप ने ही उसे खरीद कर दिया था। ताकि वह अपनी आया के साथ रह कर कॉलेज में पढ़ाई कर सके। पार्टी में दोस्तों के रूप में चार लड़के थे और पॉच लड़कियाॅ , जिनमे से एक लड़की खुशी जिन्दल की आया की थी। दो लड़के बाहरी थे। सभी लड़कों की डिटेल इस प्रकार है ___

१ , विवेक रस्तोगी , २२ साल का प्राची के ही कॉलेज में एम ए का छात्र है। इसके बाप का नाम रजतकुमार रस्तोगी है। ये शहर का पॉलिटिशियन है। इसके बारे में सारा शहर जानता है कि ये कैसा आदमी है। इसके कई गैर कानूनी धंधे भी कानून के नाक के नीचे से चलते हैं। विवेक रस्तोगी अपने बाप की बिगड़ी हुई औलाद है। पता चला है कि इसने कई लड़कियों की ज़िंदिगियॉ बरबाद की हैं। अपनी सुंदर पर्शनालिटी और पैसों की वजह से कोई भी लड़की इसकी तरफ आकर्षित हो जाती है। ये लड़कियों को प्यार के जाल में फॅसा कर उनकी अश्लील वीडियो बना कर उन्हें हर तरह के काम करने के लिए ब्लैकमेल करता है। प्राची वाजपेयी इससे प्यार करती है।

२ , अलोक त्रिपाठी , ये भी विवेक के साथ ही पढ़ता है। विवेक का पक्का यार है ये। बाप बहुत साल पहले गंभीर बीमारी से चल बसा था तब से यह अपनी विधवा मॉ के साथ ही रहता

है। इसकी मॉ किसी प्राइवेट कंपनी में काम करती है।

३ , अतुल मुखर्जी , ये भी विवेक के साथ ही कॉलेज में पढ़ता है। इसके बाप का नाम अवधेश मुखर्जी है। ये इसी शहर का एक क्रिमिनल लायर है। इसके रजतकुमार रस्तोगी से बड़े गहरे संबंध हैं। रजतकुमार रस्तोगी के हर ग़ैरकानूनी काम में ये उसकी हर तरह से मदद करता है।

४ , अनिकेत बासु , ये भी विवेक के साथ ही उस कॉलेज में पढ़ता है। इसके बाप का नाम अशोक बासु है। ये शहर का बिल्डर है। पैसों की कोई कमी नहीं है इसके पास। सुना है कई ज़मीनों पर इसने अवैध कब्जा किया हुआ है। इसके भी रजतकुमार रस्तोगी और वकील अवधेश मुखर्जी से बड़े गहरे संबंध हैं।

५ , नीता ब्यास , ये २० साल की है और प्राची के साथ ही उस कॉलेज में पढ़ती है। ये इन्दौर की रहने वाली है। यहाँ पर ये अपने मामा जी के यहाँ रह कर ही पढ़ाई कर रही है।

६ , अनीता ब्यास , ये नीता की जुड़वा बहन है तथा ये भी अपनी बहन के साथ ही मामा जी के यहाँ रहकर पढ़ाई कर रही है।

७ , स्नेहा शर्मा , ये २० साल की है , ये भी प्राची के साथ ही कॉलेज में पढ़ती है। इसका बाप सरकारी बैंक में मैनेजर है।

८ , संजना सिंह , ये २० साल की है , और प्राची के साथ ही कॉलेज में पढ़ती है। इसके बाप का इसी शहर में एक बड़ा सा मॉल है। ये दो भाई बहन है। इसका भाई संजय सिंह इससे छोटा है और अभी इस साल हाई स्कूल में है।

" मैडम ये थे उस कॉलेज में प्राची के साथ एक ग्रुप में रहने वाले लड़के लड़कियॉ। " रामसिंह ने कहा __" मैने अपने तरीके से पता किया है कि प्राची के साथ जो घटना घटित हुई उसमें विवेक रस्तोगी मुख्य आरोपी है। विवेक के साथ ही इस हादसे को अंजाम देने में उसके ये चारों दोस्त और उस बर्थडे गर्ल यानी खुशी जिन्दल का भी बराबर का हाँथ है। बात दरअसल ये थी कि प्राची एक अच्छे घर की और अच्छे संस्कारों वाली लड़की थी। वह खूबसूरत थी। कभी किसी लड़के को भाव नहीं देती थी। आज से दो तीन साल पहले वह किसी विक्रम सिंह नाम के लड़के से प्यार करती थी जो उसके साथ ही स्कूल में पढ़ता था। वो स्कूल और ये कॉलेज लगभग पास में ही थे इस लिए विवेक की नज़र इस पर बहुत पहले से ही थी। उसने बड़ी मुश्किल से किसी तरह इससे दोस्ती कर ली थी। उसके बाद ऐसे ही एक दिन इसने अपने जन्मदिन पर अपने सभी दोस्तों को फार्महाउस पर इन्वाइट किया था। प्राची को भी उसने खासतौर पर इन्वाइट किया था। प्राची जब इसके फार्महाउस पर उस शाम गई तो पार्टी में सब काफी एंज्वाय कर रहे थे। इस बीच विवेक ने प्राची को अपनी दोस्ती का वास्ता देकर इसे कोल्ड ड्रिंक पिला दिया। उस कोल्ड ड्रिंक में हल्का ड्रग्स भी मिला हुआ था। प्राची ने जब उस कोल्ड ड्रिंक को पिया तो उसे कुछ देर बाद चक्कर से आने लगे। विवेक

अपनी चाल में कामयाब हो चुका था , उसने अपनी एक दोस्त जिसका नाम रिया सचदेवा था उससे कह कर प्राची को कमरे में ले गई और उसे बेड पर लिटा दिया। प्राची को कुछ होश नहीं था। इधर विवेक कमरे में आया और प्राची के जिस्म से सारे कपड़े उतार कर और खुद भी पूरी तरह निर्वस्त्र होकर प्राची के साथ गंदा काम किया। इस सबकी वीडियो विवेक का ही एक दोस्त अलोक त्रिपाठी बना रहा था। ख़ैर जब प्राची को होश आया तो वह अपने घर में अपने ही बेडरूम थी। उसे पिछली शाम का सब कुछ याद आया। उसे इस बात की हैरानी हुई कि वह अपने घर कैसे आई ? तब उसकी माँ ने बताया कि उसकी एक दोस्त जिसका नाम रिया था वह उसे छोंड़ कर गई थी। प्राची की माँ ने उसे इस बात के लिए डाँटा भी था कि उसने शराब क्यों पी थी ? प्राची ने कहा वो शराब नहीं बस कोल्ड ड्रिंक ही था शायद किसी ने ग़लती से उसमें कुछ शराब मिला दी होगी। ख़ैर ये बात तो चली गई। लेकिन माँ के जाने के बाद जब प्राची बेड से उठकर बाथरूम की तरफ जाने के लिए बेड से नीचे उतरी तो उसकी चीख़ निकलते निकलते रह गई। अपने पैरों पर उससे खड़े ही ना हुआ गया। उसे समझते देर न लगी कि उसके साथ क्या हुआ है। किन्तु अब समझने से भला क्या हो सकता था ? वह तो लुट चुकी थी। बरबाद हो चुकी थी। वह इस बात को अपने माँ बाप से बता भी नहीं सकती थी। अकेले में वह खूब रोती। इस बात कई दिन गुज़र गए। वह स्कूल नहीं गई थी कई दिन से। माँ से उसने बता दिया था कि उसकी तबियत ठीक नहीं है। फिर एक दिन उसके मोबाइल पर एक अंजान नंबर से एम एम एस आया। जिसे देख कर उसके पैरों तले से ज़मीन निकल गई। उसे सारा संसार अंधकारमय दिखने लगा था। तभी उसी नंबर से कॉ ल भी आया। उसने जब उस काल को रिसीव किया तो सामने से विवेक की आवाज़ को सुन कर चौंक गई। वह उसे बड़ी बेशर्मी से कह रहा था कि कैसी लगी हम दोनो की फिल्म ? प्राची रोती गिड़गिड़ाती रही और पूछती रही कि उसने उसके साथ उसकी दोस्ती के साथ इतना बड़ा छल क्यों किया ? आख़िर क्यों उसने उसे इस तरह बरबाद कर दिया ? मगर वो तो शिकारी था। खूबसूरत लड़कियों का शिकारी। विवेक ने धमकी देते हुए कहा कि अगले दिन स्कूल आए और उसके साथ उसके फार्महाउस पर चले वरना वह ये एम एम एस उसके बाप के मोबाइल पर भेज देगा। प्राची मरती क्या न करती वाली स्थित में आ चुकी थी। बस यहीं से उसकी बरबादी की दास्तां शुरू हो गई। वह हर बार विवेक के द्वारा ब्लैकमेल होती रही। प्राची जिस विक्रम नाम के लड़के से प्यार करती थी उससे उसने संबंध तोड़ लिया था। ऐसे ही दिन महीने साल गुजर गए। प्राची पढ़ने में होशियार थी। कॉलेज में हमेशा वह अपनी ग्रुप की लड़कियों से टाप करती थी। खुशी जिन्दल इस बात से उससे बेहद जलती थी। इस लिए उसने विवेक के साथ मिलकर पिछली रात इस गंभीर हादसे को अंजाम दिया था। "

" मामला तो पूरी तरफ पहले ही साफ था रामसिंह। " साक्षी ने कहा __" मैने दूसरी मुलाक़ात में प्राची से इस सबकी सारी सच्चाई जानने की बहुत कोशिश की लेकिन उसने कुछ नहीं बताया। इस लिए मुझे तुम्हें इस काम में लगाना पड़ा। ख़ैर , यकीनन तुमने शानदार जानकारी हासिल की है। "

" शुक्रिया मैडम। " रामसिंह खुश हो गया , बोला __" पर मुझे ये समझ में नहीं आ रहा कि प्राची ने आपको इस सबकी सारी बातें क्यों नहीं बताई ? जबकि होना तो ये चाहिए था कि उसे अब ऐसे हरामियों के खिलाफ सारा सच उगल कर उन्हें कानून के लेपेटे में डलवा देना चाहिए था। "

" सबकी अपनी कुछ न कुछ मजबूरियॉ होती हैं रामसिंह। " साक्षी ने गंभीरता से कुछ सोचते हुए कहा __" कुछ ऐसी भी बातें होती हैं जिन्हें किसी भी हाल में कह पाना संभव नहीं हो पाता। या फिर ये सोच कर उसने मुझे कुछ नहीं बताया कि कानून भी भला उन लोगों का क्या कर लेगा ? वह जानती है कि जिन लोगों ने उसके साथ ये कुकर्म किया वो बड़े बड़े लोगों की बिगड़ी हुई औलादें हैं। कानून उन तक पहुॅच ही नहीं सकता। "

" तो क्या इस केस की फाइल ऐसे ही बंद कर दी जाएगी मैडम ?" रामसिंह चौंका __" क्या उस बेचारी लड़की के साथ इंसाफ नहीं हो पाएगा ?"

" मैने ऐसा तो नहीं कहा रामसिंह। " साक्षी कुर्सी से उठ कर तथा वहीं पर चहल कदमी करते हुए बोली __" लड़की के साथ इंसाफ ज़रूर होगा। फिर भले ही उसके लिए कोई दूसरा रास्ता ही क्यों ना चुनना पड़े। "

" मैं कुछ समझा नहीं मैडम ?" रामसिंह ने उलझनपूर्ण भाव से कहा।

" सब समझ जाओगे रामसिंह। " साक्षी के चेहरे पर कठोरता आ गई थी __" बस समय का इंतज़ार करो। "

रामसिंह को बिलकुल भी समझ ना आया कि उसकी ये आला अफसर क्या कहे जा रही है? जबकि साक्षी ने टेबल पर रखी पीकैप को उठा कर उसे सिर पाया ब्यवस्थित किया और फिर लंबे लंबे डग भरती हुई थाने से बाहर निकल गई।

२४

गीता ने सच ही कहा था कि बाहर तेज़ धूप और भयानक गर्मी में वह परेशान हो जाएगी। सोनिया की हालत ख़राब हो चली थी। सिर पर पड़ी तेज़ धूप और गर्मी ने उसका बुरा हाल कर दिया था। आसमान में सफेद बादल छाए थे और हवा भी न के बराबर ही चल रही थी। जिसकी वजह से वह पसीना पसीना हो चली थी।

पतली सी पिंक कलर की साड़ी तथा उसी से मैच करता बड़े गले का ब्लाउज। जिसमें कैद उसकी भारी भरकम स्तन उसके चलने पर एक लय से ऊपर नीचे थिरक रही थी। ब्लाउज के ऊपरी हिस्से से उसकी सुडौल स्तनों का एक चौथाई हिस्सा स्पष्ट दिख रहा था। गोरे सफ्फाक बदन पर ये लिबास उसकी खूबसूरती और मादकता पर जैसे चार चॉद लगाए हुए था। सोनिया तीन बच्चों की मॉ थी लेकिन मजाल है कि कोई ये ताड़ सके कि ये खूबसूरत बला तीन तीन बच्चों की मॉ है।

ऐसा नहीं था कि वह कभी खेतों पर नहीं गई थी। एक दो बार वह पहले ही कभी गई थी। इस लिए उसे खेतों के रास्ते का पता था। हवेली से एक किलो मीटर की दूरी पर खेत थे। इधर का हिस्सा गॉव के उत्तर दिशा की तरफ तथा गॉव से हट कर था।

सोनिया जब खेतों पर पहुॅची तो उसने देखा कि हर तरफ सन्नाटा फैला हुआ है। बहुत से खेतों पर गेहूँ की फसल पक कर तैयार खड़ी थी और एक तरफ से उसकी कटाई भी चालू थी। हलॉकि इस वक्त वहाँ पर कहीं भी कोई मजदूर फसल काटते हुए दिख नहीं रहा था। शायद तेज़ धूप के कारण काम बंद था या फिर सभी मजदूर दोपहर में खाना खाने के लिए गए होंगे।

सोनिया की हालत भले ही खराब हो चुकी थी किन्तु जब उसने खेतों पर हर जगह सुनापन देखा तो वह इससे खुश भी हो गई। उसे लगा चलो जिस मकसद से वह यहाँ आई है वह बेझिझक हो जाएगा। कोई देखने सुनने वाला भी नहीं है यहाँ। उसने देखा एक तरफ खेतों पर ही बड़ा सा पक्का मकान बना था। मकान के बाहर दो ट्रैक्टर व थ्रेशर मशीन खड़ी थी। मकान का मुख्य दरवाजा खुला हुआ था।

सोनिया ने धड़कते दिल से मुख्य दरवाजे के अंदर कदम रखा ही था कि किसी से बड़े ज़ोर से टकराई। उसकी भारी भरकम छातियों में किसी पुरूष का फौलाद जैसा सीना टकराया था। सोनिया इस अचानक हुई घटना से बुरी तरह घबरा गई। टक्कर लगते ही वह पीछे की तरफ बड़ी तेज़ी से गिरने ही लगी थी कि सामने नजर आए पुरूस ने बड़ी शीघ्रता से उसका हाँथ पकड़ कर उसे पीछे गिरने से बचा लिया।

सोनिया का दिल बुरी तरह धड़के जा रहा था। ख़ैर सम्हलने के बाद उसकी नज़र सामने खड़े शख्स पड़ी तो चौंक गई। सामने उसका देवर शिवम सिंह सिर झुकाए खड़ा था। उसे इस तरह सिर झुकाए देख सोनिया को समझ न आया कि ये सिर झुकाए क्यों खड़ा है?

" क्या बात है देवर जी ?" सोनिया ने मुस्कुराते हुए कहा __" ज़रा देख कर तो चला कीजिए। भला कोई इतनी भी ज़ोर से टक्कर मारता है क्या ??"

" माफ़ कर दीजिए भाभी। " शिवम सिंह ने सिर झुकाए हुए ही शर्मिंदगी से बोला _" मुझे उम्मीद ही नहीं थी कोई इस तरह सामने से आ जाएगा। "

" चलो कोई बात नहीं शिवम। " सोनिया ने माहौल को समान्य बनाने की गरज से कहा __" ग़लती सिर्फ तुम्हारी ही बस नहीं है , मेरी भी है क्योंकि मैने भी तो ये आशा नहीं की थी कोई मेरे सामने से इस तरह आ टकराएगा। "

" पर मुझे देख कर बाहर आना चाहिए था न भाभी। " शिवम सिंह ने खेद भरे भाव से कहा।

" ओहो शिवम। " सोनिया ने कहा __" इसमें इतना खेद प्रकट करने की कोई ज़रूरत नहीं है। लेकिन हाँ एक बात तो कहूँगी मैं। "

" जी कहिए भाभी। " शिवम ने कहा _" अगर आप कोई सज़ा देना चाहती हैं तो ज़रूर दीजिए। ऐसी धृष्ठता के लिए मुझे सज़ा तो मिलनी ही चाहिए। "

" ओफ्फो शिवम फिर वही बात। " सोनिया हैरान थी कि शिवम किस टाइप का इंसान है। क्या दुनियॉ में कोई इतना भी शरीफ़ हो सकता है ? फिर बोली __" मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है शिवम । मैं तो बस ये कहने वाली थी कि क्या फौलाद का सीना है तुम्हारा जो मेरी कोमल छातियों का कचूमर बना दिया था ?"

" ज जी क्या मतलब ?" शिवम बुरी तरह चौंका था। सिर उठाकर हैरानी से अपनी भाभी की तरफ देखने लगा था वह।

" इतने भोले ना बनो शिवम। " सोनिया ने हॅसते हुए कहा __" तुम भी अच्छी तरह समझ गए हो कि मेरे कहने का क्या मतलब था ?"

" अरे ये सब बेकार की बातें छोंड़िए भाभी और ये बताइये कि आप यहाँ इतनी धूप व गर्मी में क्यों आई हैं ?" शिवम ने बेचैनी से पहलू बदला था __" गीता क्यों नहीं आई ? और आपको भी इतना तकल्लुफ करने की क्या ज़रूरत थी भला ?"

" क्या तुम्हें मेरा यहाँ आना अच्छा नहीं लगा शिवम ?" सोनिया ने दुखी भाव का नाटक करके कहा __" क्या मैं यहाँ नहीं आ सकती ?"

" न नहीं भाभी ऐसी कोई बात नहीं है। " शिवम ने हड़बड़ाकर कहा __" मैं बस इस लिए ऐसा कह रहा हूँ क्योंकि तेज़ धूप और गर्मी बहुत है। ऐसे माहौल की आपको आदत नहीं है ना ?"

" देखो शिवम तुम भी गीता की तरह मुझे ताना मत मारने लग जाना। " सोनिया ने कहा _" तुम सब मुझे ऐसा कह कर दुखी क्यों करते हो ? मेरा भी दिल करता है कि मैं भी तुम

सबकी तरह ये सब करू । लेकिन तुम सब अपनी इन बातों से मुझे ये सब करने ही नहीं देते। मैं ही पागल हूँ जो बेकार में इस हवेली के लोगों को अपना मानती हूँ और चाहती हूँ कि सब मुझे भी अपना समझें। "

" ये आप क्या कह रही हैं भाभी ?" शिवम हैरान परेशान सा बोला __" भला हम सब आपके लिए ऐसा क्यों सोचेंगे ? मॉ बाबूजी के बाद आप दोनो ही तो हम सबसे बड़ी हैं इस लिए हम सब यही चाहते हैं आप कुछ ना करें बल्कि आराम से बैठ कर खाइये और हम छोटों को सेवा करने का भाग्य प्रदान करें। "

" बस बस सब समझती हूँ मैं। " सोनिया ने तुनकते हुए कहा _" अब क्या यहीं पर खड़े रहेंगे या अंदर भी चलेंगे ? चलिए अंदर और हाँ हाँथ मुह धोकर जल्दी से आइये। तब तक मैं थाली लगाती हूँ। "

" जी ठीक है भाभी। " शिवम ने कहा और बाहर की तरफ बढ़ गया। जबकि सोनिया अंदर की तरफ बढ़ गई।

थोड़ी ही देर में शिवम सिंह हाँथ मुह धोकर आया और जैसे ही वह अंदर एक बड़े हाल से होते हुए एक कमरे में दाखिल हुआ तो बुरी तरह चौंका। कारण कमरे के अंदर सोनिया लकड़ी की एक बेन्च पर झुक कर टिफिन से खाना निकाल निकाल कर उसे अलग अलग करके रख रही थी। किन्तु झुकने की वजह से उसकी साड़ी का आँचल कंधे से खिसक कर ज़मीन पर गिरा हुआ था। उसने आँचल को आलपिन के सहारे ब्लाउज पर फसाया हुआ नहीं था। ऐसा उसने जानबूझ कर ही किया था। ताकि वह जब चाहे बड़ी आसानी से झुक कर अपना आँचल गिरा कर शिवम को अपनी खरबूजे जैसी बड़ी बड़ी किन्तु ठोस स्तन दिखा सके। उसने जो ब्लाउज पहना था वह बड़े गले का था, पीठ पर भी काफी ज्यादा खुला हुआ था। अंदर ब्रा ना होने के कारण उसकी आधे से ज्यादा स्तन दिख रही थी। वह जानती थी कि शिवम हाथ मुह धोकर आ चुका है और अब वह कमरे के दरवाजे के पास उसके द्वारा दिखाए जाने वाले हाहाकारी नज़ारे को देख एकदम से बुत बन गया है।

सोनिया बिलकुल भी जाहिर नहीं कर रही थी कि वो ये सब जानबूझ कर रही है। बल्कि वह यही दर्शा रही थी कि उसे अपनी हालत का पता ही नहीं है। उसने एक बार भी सिर उठा कर दरवाजे पर खड़े शिवम की तरफ नहीं देखा था। बल्कि वह उसी तरह झुकी हुई टिफिन से खाना निकाल कर अलग अलग रख रही थी।

शिवम सिंह मुकम्मल मर्द था किन्तु उसमें शिष्टाचार और संस्कार कूट कूट कर भरे हुए थे। उसे अपने से बड़ों का आदर सम्मान करना ही आता था। अपनी पत्नी के अलावा वह किसी भी औरत पर ऐसी नज़र नहीं डालता था। खेतों पर काम करने वाली हर ऊम्र की औरतें भी थी मगर मजाल है जो शिवम सिंह ने कभी उन पर गंदी नज़र डाली हो। ये तो फिर भी उसकी सगी भाभी थी। कहते हैं बड़ी भाभी मॉ समान होती है, उस पर गंदी दृष्टि डालना पाप है।

शिवम सिंह को तुरंत ही होश आया। वह एकदम से हड़बड़ा गया और साथ ही उसके अंदर

अपराध बोझ सा बैठता चला गया। उसका मन भारी हो गया। अपने ज़हन से इस दृष्य को तुरंत ही झटक दिया उसने। मन ही मन भगवान से हज़ारों बार तौबा की उसने। उसके बाद वह बेवजह ही खॉसते हुए कमरे के अंदर दाखिल हुआ। उसका खॉसने का तात्पर्य यही था कि उसकी भाभी उसके खॉसने की आवाज़ से अपनी स्थिति को संभाल ले। मगर शिवम की हालत उस वक्त ख़राब हो गई जब उसके खॉसने का सोनिया पर कोई असर ही न हुआ। बल्कि वह तो अभी भी यही ज़ाहिर कर रही थी कि उसे अपनी हालत का पता ही नहीं है। उसने तो जब शिवम को देखा तो बस यही कहा__"लो शिवम मैने तुम्हारा स्वादिष्ट भोजन अलग अलग करके लगा दिया है। चलो शुरू हो जाओ, देख लो अभी गरमा गरम है।"

शिवम को सिर झुका चुपचाप बेन्च के इस तरफ ही रखी कुर्सी पर बैठ गया और चुपचाप खाना खाने लगा।

" उफ्फ शिवम यहाँ खेतों में इस गर्मी में भी कितनी मेहनत करते हो तुम। " सोनियाा ने आह सी भरते हुए कहाा __" पर शायद तुम्हारी इस सबकी आदत हो गई है। इस लिए तुम पर जैसे कुछ फर्क ही नहीं पड़ता। मेरा तो गर्मी के मारे बुरा हाल हुआ जा रहा है। ऐसा लगता है जैसे सारे कपड़े उतार कर फेंक दूँ अभी। "

सोनिया की इस बात से शिवम सिंह को ठसका लग गया। वह ज़ोर ज़ोर से खॉसने लगा।

" अरे क्या हुआ आराम से खाओ शिवम। " सोनिया मन ही मन मुस्कुराई थी।

उसे खॉसता देख सोनिया तुरंत ही एक तरफ मटके में रखे पानी को ग्लास में भर कर ग्लास शिवम के मुह से लगा दिया। शिवम की नज़र एक बार फिर से सोनिया के स्तनों पर पड़ गई। इस बार तो वह उसके बहुत ही पास थी। उसके खरबूजे शिवम की आँखों से बस एक फुट ही दूर थे। इतने पास से वह उन्हें स्पष्ट देख रहा था। गोरे गोरे स्तनों पर एक एक किन्तु छोटा सा तिल जो उन्हें और भी ज्यादा रसदार व हालत को खराब करने वाला बना रहा था। सोनिया इस सारी क्रिया में यही दर्शा रही थी कि उसे अभी भी अपनी हालत का कुछ पता नहीं है। और इस बार तो जैसे वह फिक्रवश ऐसा कर रही थी।

बड़ी मुश्किल से शिवम के गले से पानी नीचे उतरा। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? आज पहली बार वह ऐसी सीचुएशन के बीच फॅसा था। शिवम जब पानी पी चुका तो सोनिया ने भी उसके मुख से ग्लास हटा लिया, हलॉकि ये उसकी मजबूरी ही थी। क्योकि अगर वो ऐसा न करती तो शिवम को शक भी हो सकता था कि वह इस तरह उसके इतने पास झुकी क्यों है?

किन्तु शिवम सिंह पर रहम तो उसने अभी भी नहीं किया। वह अभी भी अपना आँचल गिराए हुए ही थी। अंदाज़ वहीं था जैसे उसे इसका पता ही न हो। वह जानती थी कि शिवम उसे इस तरह देख कर बहुत ज्यादा असहज महसूस कर रहा है।

उसके मन में आया कि कहीं शिवम ये न सोच बैठे कि मुझे अपनी हालत का इतने देर से पता

क्यों नहीं हो रहा? या फिर ऐसा मैं जानबूझ कर उसे दिखा रही हूँ। अगर शिवम को ये शक हो गया या उसने ऐसा महसूस कर लिया तो काम पहले ही ख़राब हो जाएगा। जबकि मुझे ये सब बहुत आगे तक करना है। शुरुआत में इतना ज्यादा दिखावा ठीक नहीं होगा। ये सोच कर ही वह सम्हल गई।

" हाय दैया। " उसने चौंकने और सकपकाने की बड़ी शानदार ऐक्टिंग की __" मेरा आँचल कैसे गिर गया। "

इतना कह कर उसने जल्दी से अपने आँचल को पकड़ कर उसे अपने स्तनों ढँकते हुए कंधे पर डाल लिया। फिर जैसे उसने माहौल को बदलने की गरज से शिवम से कहा__"कल से मैं तुम्हारे लिए दूध भी ले आया करूगी शिवम।"

" ज जी ,,,,। " शिवम बुरी तरह चौंका था __" दू दूध ... मगर किस लिए भाभी ?"

" तुम भी हद करते हो शिवम। " सोनिया ने कहा __" खेतों में रात दिन इतनी मेहनत करते हो और रूका सूखा खाओगे तो कमज़ोर नहीं पड़ जाओगे ? इस लिए मेहनत के हिसाब से उस तरह का आहार भी लेना चाहिए। "

" भाभी , इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। " शिवम ने झिझकते हुए कहा __" और वैसे भी मुझे दू दूध पसंद नहीं है। "

" क्याऽऽ ????" सोनिया ने चौंकने का नाटक किया __" हे भगवान ! कैसे आदमी हो तुम शिवम ? तुम्हें दूध नहीं पसंद ?? अरे दूध के लिए सारी दुनियॉ पागल है। "

" क्या मतलब ???" शिवम गड़बड़ा गया , बोला __" भला इसके लिए सारी दुनियॉ कैसे पागल हो सकती है ???"

" तुम भी ना बुद्धू के बुद्धू ही रहोगे। " सोनिया ने बुरा सा मुह बनाया __" ये बताओ कि आज कल दूध के बिना किसी का गुज़ारा है क्या ? नहीं ना ? सुबह उठते ही सबसे पहले दूध की ही बनी चाय चाहिए होती है। और इतना ही नहीं बल्कि एक दिन में कम से कम चार बार आदमी चाय पीता है। बाकी बहुत सी चीज़ें जो दूध से ही बनती हैं उनका तो हिसाब ही अलग है। अब जब यही दूध किसी को न मिलो तो सोचो दुनिया पागल हो जाएगी कि नहीं ?"

" हाँ ये तो है। " शिवम ने कहा।

" इसी लिए कहती हूँ। " सोनिया ने कहा _" कल से तुम्हारे लिए दूध लाया करू गी और फिर मैं खुद ही तुम्हें दूध पिलाऊँगी। देखूँगी कैसे नहीं पियोगे तुम ?"

शिवम सिंह की हवा शंट। वह हैरान परेशान सा सोनिया को देखने लगा। जबकि उसकी इस हालत को देख कर सोनिया मन ही मन हॅस रही थी। किन्तु प्रत्यक्ष में यही दिखा रही थी वो ये

सब उसकी सेहत का ध्यान में रख कर कह रही थी। पर चूँकि इन बातों में उसके दो अर्थ निकल रहे थे जो शिवम सिंह को असमंजस में डाल कर असहज कर रहे थे।

" क्या हुआ चुप क्यों हो गए शिवम ?" सोनियाा ने कहाा __" दूध की बातों से तो नहीं घबरा गए तुम ?"

" न न नहीं तो। " शिवम सकपका गया।

" देखो शिवम। " सोनियाा ने कहाा __" तुम जो मेहनत करते हो उसके लिए दूध घी का सेवन करना बहुत ज़रूरी है। वरना बुढ़ापे में किसी काम के नहीं रह जाओगे तुम। आज रेणुकाा को भी बोलूँगी कि तुम्हारे खाने पीने का अच्छी तरह से ख़याल रखा करे। अभी जब तक बच्चों की छुट्टियाँ हैं तब तक मैं रोज़ाना तुम्हें खुद अपने हाथ से टिफिन तैयार करके लाऊँगी। "

" आ आप तो बेवजह परेशान हो रही हैं भाभी। " शिवम ने बेचैनी से कहाा __" मैं रोज़ाना स्वादिष्ट और फायदेमंद भोजन ही करता हूँ। "

" वो तो मुझे दिख ही रहा है। " सोनियाा ने घूर कर देखा शिवम सिंह काो , बोलीी __" अगर वैसा ही भोजन करते तो अपने शरीर की ऐसी हालत नहीं बना लेते तुम। "

" ऐसी हालत ????" शिवम ने चौंकते हुए कहाा __" क्या हुआ भला मेरी हालत काो ?? अच्छा भला तो हूँ भाभी। "

" बस बस रहने दो तुम। " सोनियाा ने कहाा _" पोज तो ऐसे दे रहे हो जैसे दारा सिंह तुम्हीं हो। "

शिवम सिंह को समझ न आया कि वो क्या कहे? दरअसल उसे अपनी भाभी से ऐसी बात करने का ये पहला अवसर था। शादी के बाद कभी ऐसे मधुर संबंध ही नहीं रहे थे कि वो अपनी सोनिया भाभी से कभी बात करता या घुलता मिलता। ख़ैर शिवम सिंह ने किसी तरह खाना खाया और शीघ्र ही उठ कर कमरे से बाहर चला गया। कमरे से बाहर जब वह आया तब उसने जैसे राहत की साँस ली। वह बाहर भी रुका नहीं बल्कि खेतों की तरफ तेज़ तेज़ कदमों से बढ़ता चला गया। जबकि कमरे से भागते हुए बाहर आई सोनिया ने जब शिवम को दूर खेतों पर जाते देखा तो उसके होठों पर कमीनी मुस्कान रेंग गई।

" आज तो इतना ही काफी था शिवम। " सोनियाा ने अजीब भाव से कहाा __" मगर इतने से डोज में ही तुम्हारी ये हालत बता रही है कि तुम ज्यादा दिनों तक मेरे सामने टिक नहीं पाओगे। मेरे इस हुस्न के जाल में जल्द ही फॅस जाओगे। हाय शिवम , थोड़ा जल्दी फॅस जाना मेरी जान क्योंकि ज्यादा देर तक बर्दाश्त नहीं कर पाऊँगी मैं। "

यही सब बड़बड़ाती हुई सोनिया वापस कमरे में गई। और बेन्च से टिफिन वाले सब बर्तन इकट्ठा करके वह कमरे से बाहर आ गई। कमरे के दरवाजों को ढुलका कर वह मकान से बाहर आ गई और फिर हवेली की तरफ बढ़ चली। मन में कई तरह के ख़याल बुने जा रही थी वह।

इधर हवेली में दोपहर को हर कोई अपने अपने कमरे में होता था। बच्चों को भी दोपहर की धूप में कहीं बाहर नहीं जाने दिया छाता था। माॅ बाबूजी हमेशा की तरह नीचे वाले हिस्से पर बने अपने कमरे में ही रहते थे। बाबू जी को महाभारत पढ़ने का बड़ा शौक था। वो खाली समय में महाभारत की मोटी सी किताब लेकर आरामदायी कुर्सी पर बैठ जाते थे अपने कमरे में। जबकि माॅ जी बिस्तर पड़ी रहती। उनके घुटनों में बात की शिकायत थी इस लिए वो ज्यादा चलती फिरती नहीं थी।

विक्रम और गुड़िया ज्यादातर अपने चाचा चाची के पास ही रहते थे। अपर्णा उन दोनो को पढ़ाती थी। विक्रम से उसे बड़ा प्यार था। हवेली में सबका अपना अपना हिस्सा था। हलाॅकि उस वक्त बटवारा नहीं हुआ था लेकिन तीनो रहते उसी तरह थे अलग अलग। जबकि खाना पीना सबका साथ में ही होता था। उस समय हवेली में ऐसा था कि अंदर से ही सबके हिस्से में जाया जा सकता था। उसके लिए हर पार्टिशन में एक बड़ा सा दरवाजे थे जो ज्यादातर खुले ही रहते थे। शिवम सिंह जिस हिस्से पर रहता था उसी हिस्से में माॅ बाबूजी भी नीचे रहते थे। शिवम और रेणुका का कमरा ऊपर वाले फ्लोर पर था। सबका खाना भी यहीं पर बनता था। गीता सत्यम सिंह वाले हिस्से पर रहती थी। क्योंकि वो स्कूल के समय पर खाली ही रहता था इस लिए वह उस हिस्से में ही अकेली रहती थी। हलाॅकि उसके साथ बच्चों में से कोई भी रोज़ सोने के लिए चला जाता था।

शिवम सिंह दिन में खेतों पर ही रहता था और फिर रात में ही हवेली आता था। दोपहर का खाना उसे पहुॅचा दिया जाता था। हप्ते में एक दो दिन वह खेतों पर भी रात में रुक जाता था। पर ये तभी होता था जब रुकने की ज़रूरत हो अन्यथा नहीं।

सोनिया के जाने के कुछ देर बाद ही सत्यम सिंह बेड से उठा और कमरे से बाहर आ गया। इस वक्त वह अपने हिस्से की तरफ ही था। उसे पता था कि उसकी छोटी बहन गीता उसके हिस्से पर ही ऊपर अपने कमरे में है। वह कमरे से निकल कर ऊपर जाने के लिए सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया। सीढ़ियाॅ चढ़ते हुए वह ऊपर गीता के कमरे के पास पहुॅचा। उसने बंद दरवाजे पर आहिस्ता से हाॅथ रखा और उसे कमरे की तरफ पुश किया। किन्तु कमरा अंदर से बंद था। सत्यम सिंह ने झुक कर दरवाजे के की-होल सें अपनी दाहिनी आॅख सटा दी। कमरे के अंदर गीता बेड पर लेटी हुई दिखी उसे। उसके हाॅथ में कोई मोटी सी किताब थी जिसे वह मन ही मन पढ़ रही थी। ये देख सत्यम सिंह ने राहत की साॅस ली और फिर दबे पाॅव वह नीचे उतर आया।

नीचे आकर उसने पार्टीशन वाले दरवाजे के पास पहुॅचा। किन्तु उससे पहले वह बाएॅ साइड के पार्टीशन वाले दरवाजे की तरफ भी देखा। उसने ये दरवाजा बंद कर दिया था ताकि उधर से कोई इधर का देख न सके। बाएॅ साइड वाला हिस्सा सुंदर सिंह व अपर्णा का था, तथा दाएॅ साइड शिवम सिंह का जबकि बीच का हिस्सा सत्यम सिंह का था।

दाएॅ तरफ वाले हिस्से के पार्टीशन पर लगे दरवाजे को पार कर वह दबे पाॅव ऊपर की तरफ

जाने के लिए सीढ़ियों की तरफ बढ़ा। उसे पता था कि सीढ़ियों के पास जाने के लिए उसे मॉ बाबूजी के कमरे के सामने से होकर ही गुज़रना पड़ेगा। उसका दिल अनायास ही धड़कने लगा था। मॉ बाबूजी के कमरे के पास से होकर वह दबे पॉव ही सीढ़ियों के पास पहुॅचा। उसके बाद आहिस्ता से सीढ़ियॉ चढ़ता चला गया वह।

ऊपर आकर वह दाहिने साइड चौड़ी बालकनी से होते हुए रेणुका के कमरे के पास पहुॅचा। धाड़ धाड़ बजती धड़कनों को काबू में रखने की असफल कोशिश भी कर रहा था वह। किन्तु कहते हैं ना कि चोर का दिल बेहद कमज़ोर होता है, वही हाल सत्यम सिंह का था। कमरे के पास पहुॅच कर उसने दरवाजे पर हाँथ रख कर उसे कमरे की तरफ धकेला। कमरा बेआवाज़ अंदर की तरफ पुश हो गया।

ये देख कर सत्यम सिंह की आँखें चमक उठीं। उसने दरवाजे बहुत ही आहिस्ता से थोड़ा और अंदर की तरफ धकेला ताकि वह थोड़ी सी झिरी से ही पहले कमरे के अंदर की वस्तुस्थिति का पता लगा सके। ख़ैर, झिरी के बनते ही सत्यम सिंह ने कमरे के अंदर उस थोड़ी सी झिरी से देखा। अंदर एक कोने की तरफ रखे बेड पर रेणुका दूसरी तरफ को करवट लिए पड़ी थी। ऊपर छत पर पंखा मध्यम स्पीड से घूम रहा था जिसकी हवा से उसकी साड़ी का एक सिरा हिल रहा था। गर्मी के दिन थे इस लिए रेणुका ने साड़ी को अपने बदन के ऊपरी हिस्से से हटाया हुआ था। ऊपर सिर्फ ब्लाउज ही था। गर्दन के नीचे पीठ की तरफ वाला एक तिहाई भाग दिख रहा था तथा नीचे कमर दिख रही थी। कमर के नीचे उसका पिछवाड़ा था जो कि साड़ी से ढॅका हुआ ही था। उसके नीचे उसकी साड़ी पेटीकोट सहित उटनों तक ऊपर खिसकी हुई थी जिसके कारण उसकी दूध सी गोरी पिंडिलियॉ स्पष्ट दिख रही थी। पैरों में मोटी सी किन्तु घुंघुरूदार पायल थी।

सत्यम सिंह दरवाजे पर खड़ा न रह सका। वह आहिस्ता से दरवाजे को खोला और अंदर दबे पॉव कमरे के अंदर दाखिल हो गया। अंदर आकर वह दबे पॉव ही बेड की तरफ बढ़ा। उसके दिल की धड़कनें पूरी गति से दौड़ रही थी जिसकी धमक किसी हॅथौड़े की तरह उसे अपनी कनपटियों पर स्पष्ट बजती सुनाई पड़ रही थी।

बेड के बेहद करीब पहुॅच कर सत्यम सिंह रुक गया। कमरे में खिड़की से आता हुआ प्रकाश फैला हुआ था जिसकी वजह से कमरे में मौजूद हर चीज़ स्पष्ट दिखाई दे रही थी। बेड के करीब पहुॅच कर सत्यम सिंह ने देखा कि रेणुका दूसरी तरफ करवट लिए पड़ी थी। उसने अपना बायॉ हाँथ मोड़ कर अपनी बॉई कनपटी के नीचे रखा हुआ था जबकि दाहिना हाँथ उसके पेट के आगे बेड पर टिका हुआ था। सत्यम सिंह धड़कते दिल के साथ झुक कर रेणुका के चेहरे की तरफ देखा तो उसे पता चला कि रेणुका की आँखें बंद हैं। सत्यम सिंह को यकीन करना मुश्किल था कि रेणुका सो रही है या फिर उसने यूॅ ही अपनी आँखें बंद की हुई हैं।

रेणुका के चॉद जैसे चेहरे पर इस वक्त ज़माने भर की मासूमियत थी। आज कल उसकी तबीयत ज़रा नाशाद थी इस लिए उसके चेहरे पर वो नूर नहीं दिख रहा था जो हमेशा रहता था। किन्तु सत्यम सिंह को तो जैसे ऐसा चेहरा भी किसी नूर से कम न था। वह ये मान चुका

था कि रेणुका दुनियॉ की सबसे खूबसूरत औरत है। उसकी खुद की बीवी भी खूबसूरती में कम न थी लेकिन रेणुका के सामने उसकी खूबसूरती जैसे फीकी पड़ जाती थी। परिवार की हर औरत खूबसूरती में एक दूसरे को मात दे रही थी। लेकिन सत्यम सिंह का दिल रेणुका के लिए धड़कता था। वह समझ नहीं पा रहा था कि ये वह रेणुका की खूबसूरती पर हवस की वजह से आकर्शित था या फिर उसे रेणुका से प्रेम था।

सत्यम सिंह ने थोड़ा और आगे की तरफ झुक कर देखा तो एकाएक ही उसके मन में संगीत सा बज उठा। रेणुका के सीने के दोनो बड़े बड़े उभार आपस में दबे होने की वजह से उसकी ब्लाउज से बाहर झॉक रहे थे। सत्यम सिंह जैसे उनमें ही खो गया। तभी वह बुरी तरह डर भी गया। क्योंकि उसी वक्त रेणुका ने एक गहरी साँस लेते हुए पहले तो हल्की सी अॅगड़ाई ली और फिर सीधी लेट गई। सत्यम सिंह की धड़कन जो बुरी तरह बढ़ गई थी वो अब इस दृश्य को देख कर जैसे रुक ही गई। रेणुका सीधी लेट गई थी। जैसा कि बताया जा चुका है कि रेणुका ने गर्मी के चलते अपनी साड़ी को अपने ऊपरी भाग से हटाया हुआ था। इस लिए उसके सीधा लेटते ही ब्लाउज में कैद उसकी भारी छातियॉ एकदम से तन गई थी। नीचे दूध सा गोरा नंगा पेट और उस पर उसकी गहरी नाभी। सत्यम सिंह की हालत एक पल में खराब हो गई। उसका जी चाहा कि वह तुरंत झुक कर रेणुका के पेट और नाभी को अपनी जीभ से चूसना चाटना शुरू कर दे किन्तु वह ऐसा कुछ चाह कर भी नहीं कर सकता था।

रेणुका की छातियॉ बिना ब्रा के किसी कुतुब मीनार की तरह तनी हुई थी। सत्यम सिंह की नापाक नज़रें रेणुका के पूरे जिस्म को जैसे स्कैन सा कर रही थीं। उसका खूबसूरत चेहरा और बिना लिपिस्टिक के ही लाल सुर्ख होंठ थे उसके। जिन्हें अपने होंठो में भर लेने के लिए जैसे उसे आमंत्रित कर रहे थे। और सत्यम सिंह ने उस निमंत्रण को स्वीकार भी कर लिया। वह मानो सम्मोहित सा हो गया था। वह सम्मोहित सा होकर ही आहिस्ता आहिस्ता रेणुका के चेहरे की तरफ झुकने लगा। उसके हृदय की गति प्रतिपल रुकती हुई महसूस हो रही थी। वह रेणुका के चेहरे के बेहद करीब झुक गया। उसके नथुनों में रेणुका की गर्म सासें पड़ी। उसकी सासों की महक से जैसे वह मदहोश सा होने लगा। उसकी साँस भारी हो गई। उसने गहरी साँस खींचकर उसे तेज़ी से ही बाहर छोंड़ा और जैसे यहीं पर उससे बड़ी भारी ग़लती हो गई। एक तो गहरी साँस लेने की आवाज़ और दूसरी तेज़ी से ही उस लम्बी साँस को नाक के रास्ते बाहर निकालने से रेणुका के चेहरे पर गर्म साँस का तीव्र वेग से स्पर्श हुआ। जिससे रेणुका की नींद टूट गई। उसने पलकें झपकाते हुए अपनी आँखें खोल दी और....और अपने चेहरे के इतने करीब किसी को झुके देख वह बुरी तरह डर गई साथ ही हड़बड़ा भी गई। इधर सत्यम सिंह को भी जैसे सॉप सा सूँघ गया। वह बड़ी तेज़ी से सीधा खड़ा हो गया। किन्तु तब तक देर हो चुकी थी।

रेणुका ने जब देखा कि उसके चेहरे पर झुका हुआ शख्स कोई और नहीं बल्कि उसका जेठ है तो उसकी हालत खराब हो गई। मारे घबराहट के उसे समझ ही न आया कि क्या करे वह। फिर जैसे ही दिमाग़ ने काम किया तो उसने हड़बड़ा कर शीघ्रता से अपनी साड़ी को अपने बदन पर डाला।

" माफ़ करना रेणुकाा। " सत्यम सिंह मानो तब तक खुद को संभाल चुका थाा , इस लिए बड़ी शालीनता बोलाा __" वो मैं दरअसल देखने आया था कि क्या हुआ है तुम्हेंं ? मैने सुना कि कई दिन से तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है इस लिए देखने चला आया था। "

रेणुका बोली तो कुछ न। बोलने वाली हालत में ही नहीं थी वह। अपने सिर पर साड़ी का घूँघट डाल कर वह तेज़ी से ही बेड से नीचे उतर आई थी और सत्यम सिंह से दूर जाकर खड़ी हो गई थी। उसका दिल धाड़ धाड़ करके सरपट दौड़े जा रहा था। अपनी जगह पर खड़ी वह थरथर कॉप रही थी। उसे लग रहा था कि उसकी कॉपती हुई टॉगें उसका भार ज्यादा देर तक सह नहीं पाएॅगी। वह बड़ी मुश्किल से खुद को संभाले खड़ी थी।

" अरे घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है रेणुकाा। " उधर सत्यम सिंह उसकी हालत का बखूबी अंदाज़ा लगाते हुए बोलाा __" तुम मेरी छोटी बहन के समान हो। मैंने कहा न कि तुम्हें बस देखने आया था यहाँ। तुम आराम से सो रही थी तो मैने तुम्हें जगाना उचित नहीं समझा। मैं देख रहा था कि कैसे सारे संसार भर की मासूमियत अपने चेहरे पर लिए तुम सो रही हो। अगर तुम्हें मेरा इस तरह देखना अच्छा नहीं लगा तो माफ़ कर देना अपने इस बड़े भैयाा को। "

रेणुका ने इस बार भी कुछ नहीं कहा। बल्कि वह पूर्व की भॉति ही खड़ी रही। सत्यम सिंह उसका जेठ था और यहाँ का ये रिवाज़ था कि जेठ और ससुर के सामने घूँघट में ही रहना है और उनसे बोलना नहीं है।

" पता नहीं किस स दी में जी रहे हैं ये सब लोग ?" सत्यम सिंह कह रहा थाा __" आज भी वही पुरानी परंपराएॅ और फिज़ूल के नियम कानून व रीति रिवाज़ों में बॅधे हुए हैं सब। शहरों में ये सब रूढ़िवादिता नहीं है और ना ही वहाँ पर इस सबको उचित मानता है कोई। शहर में सब लोग एक दूसरे से बोलते हैं। किसी के ऊपर किसी तरह की कोई पाबंदी नहीं रहती। भारतीय कानून ने भी हर मर्द व औरत को समानता का अधिकार दिया हुआ है। इस लिए ये सब बेकार की परंपराएॅ छोड़ो तुम सब। इज्जत सम्मान देने के लिए ये ज़रूरी नहीं होता कि कोई बहू अपने जेठ या ससुर के सामने चार हाथ का घूँघट करे और उनसे बात न करे। बल्कि इज्जत सम्मान ये सब किये बग़ैर भी दिया जा सकता है। "

सत्यम सिंह की इन सब बातों का भला रेणुका क्या जवाब देती? हलॉकि उसे भी पता था कि शहर में वही सब नियम चलते हैं जिसके बारे में उसका जेठ उससे कह रहा है। किन्तु ये सब नियम कानून गॉव देहातों में लागू नहीं हो सकते थे। ये सब यहाँ इतना आसान नहीं था बल्कि ऐसा करने वाली बहू को समाज के ये लोग चरित्रहीन की संज्ञा दे देते हैं।

" ख़ैर छोंड़ो ये सब। " सत्यम सिंह ने कहाा __" गॉव देहात में तो ये सब चल ही नहीं सकता। पता नहीं कब समझेंगे ये लोग ? देश समाज की उन्नति में बाधा ऐसी सोच ही डालती है। ख़ैर , मैं सुंदर को बोल दूॅगा कि तुम्हें शहर ले जाए और वहाँ किसी अच्छे डाक्टर से तुम्हारा इलाज़ करवा दे। चलो जाओ अब तुम आराम करो। "

इतना सब कह कर सत्यम सिंह कमरे से बाहर की तरफ निकल गया। जबकि रेणुका उसके जाने के बाद भी काफी देर तक बुत बनी खड़ी रही। मन में यही ख़याल बार बार डंक मार रहा था कि जेठ जी यहाँ किस लिए आए थे? क्या फिर से पहले की तरह बुरी नीयत से या सच में वो उसकी तबीयत के बारे में ही जानने आए थे? वो इस तरह मेरे इतने करीब कैसे आ सकते थे? क्या मतलब हुआ इस सबका

रेणुका के पास से आकर सत्यम सिंह पुनः अपने कमरे में बेड पर लेट गया था। उसका दिल अभी तक सामान्य नहीं हुआ था। अंदर अभी भी घबराहट के निसां शेष थे। बेड पर पड़े पड़े वह इन्हीं सब बातों के बारे में सोचे जा रहा था। बार बार वह इस ख़याल से डर जाता था कि अच्छा हुआ समय रहते उसने वस्तुस्थिति को संभाल लिया था वरना कुछ भी हो सकता था। अपनी बातों से उसने रेणुका को जता दिया था कि वो सिर्फ उसकी तबीयत के बारे में ही जानने के लिए आया था उसके कमरे में। किन्तु उसके मन में बार बार ये सवाल भी उठ जाता था कि क्या वह अपनी बातों से रेणुका को संतुष्ट कर पाया था? कहीं ऐसा तो नहीं कि रेणुका को उस पर अभी भी कोई संदेह है? वह किसी निष्कर्ष पर न पहुँचा था।

अपने कमरे में वह जाने कितनी ही देर तक इस सबके बारे में सोचता रहा। उसे होश तब आया जब उसके कमरे का दरवाजा खोल कर उसकी पत्नी सोनिया अंदर दाखिल हुई। धूप और गर्मी से आने के कारण उसकी हालत खराब थी। पसीने से उसका जिस्म चमक रहा था। पतली सी साड़ी उसके शरापा बदन से चिपकी हुई थी। कमरे में आते ही सोनिया ने पहले कमरे का दरवाजा बंद किया उसके बाद सीधा बेड पर आकर चारो खाने चित्त होकर पसर गई। लेटते ही गहरी गहरी सासें लेने लगी वह। बड़े गले के ब्लाउज से उसकी भारी स्तन आधे से ज्यादा दिख रही थी।

सत्यम सिंह ने जब उसे इस हालत में देखा तो उससे रहा न गया। रेणुका को देखकर ही उसके अंदर आग सी लग गई थी और अब अपनी पत्नी को इस तरह देखा तो होश खो बैठा वह। सोनिया आँखें कर गहरी सासें ले रही थी जबकि सत्यम सिंह ने उसे पल भर में दबोच लिया। वह इतना उतावला हो चुका था कि वह सोनिया के ब्लाउज को उसके ऊपरी गले के भाग वाले सिरों को पकड़ कर एक झटके से फाड़ दिया। नाज़ुक सा ब्लाउज था बेचारा वह सत्यम सिंह झटका नहीं सह सका। ब्लाउज के सारे बटन एक साथ टूटते चले गए। सत्यम सिंह पागल सा हो गया था। ब्लाउज के अलग होते ही सोनिया की भारी भरकम स्तन उछल कर बाहर आ गईं। सत्यम ने उन दोनो फुटबालों को दोनो हाथो से सख्ती से दबोच कर उनके निप्पल को अपना मुह खोल कर भर लिया और बुरी तरह से उन्हें चुभलाने लगा।

सोनिया एकाएक ही हुए इस हमले से हतप्रभ सी रह गई। किन्तु सत्यम की रॅग रॅग से वाकिफ थी इस लिए बस मुस्कुरा कर रह गई। सत्यम सिंह उसकी स्तनों को बुरी तरह मसल रहा था और साथ ही साथ उनको अपने दॉतों से काटता भी जा रहा था। वह पल भर में जानवर नज़र आने लगा था।

" आहहहह धीरे से सत्यम। " सोनिया की दर्द में डूबी कराह निकल गई __" दर्द हो रहा है मुझे। ये कैसा पागलपन है ? क्या हो गया है तुम्हें ?"

" चुपचाप लेटी रह मेरी रांड़। " सत्यम सिंह मानो गुर्राया __" वरना ब्लाउज की तरह तेरा सब कुछ फाड़ कर रख दूँगा। "

" अरे तो फाड़ ना भड़वे। " सोनिया भी उसी लहजे में बोली __" लगता है रेणुका का भूत फिर से सवार हो गया तुझे। चल अच्छा हुआ , जब जब ये भूत सवार होता है तुझ पर तब तब तू मेरी मस्त पेलाई करता है। आहहहह हाय फाड़ दे रे .... मुझ पर भी बड़ी आग लगी हुई है। शशशश आहहहह रंडे के जने नीचे का भी कुछ ख़याल कर। क्या स्तनों पर ही लगा रहेगा ?"

" हरामज़ादी साली। " सत्यम सिंह उठ कर सोनिया की साड़ी को पेटीकोट सहित एक झटके में उलट दिया। साड़ी और पेटीकोट के हटते ही सोनिया नीचे से पूरी तरह नंगी हो गई।

" साली पेन्टी भी पहन कर नहीं गई थी उस मजदूर के पास। " सत्यम सिंह ने ज़ोर से सोनिया की योनी को अपने एक हाँथ से दबोच लिया। सोनिया की सिसकारी गूँज उठी कमरे में।

" आहहहह दबोचता क्या है रंडी के जने उसे मुह लगा कर चाट ना। " सोनिया अपने होशो हवाश में नहीं थी __" उस हरामी शिवम ने तो कुछ न किया। हाय अगर एक बार कहता तो क्या मैं उसे खोल कर दे न देती ? आहहह ऐसे ही चाट ..... शशशशश अंदर तक जीभ डाल भड़वे की औलाद। "

सत्यम सिंह पागल सा हो गया। उसे इस तरह की गाली गलौज वाला सहवास बहुत पसंद था। सोनिया को भी इससे बड़ा आता था। और आज तो दोनो पर आग जैसे भड़की हुई थी। सत्यम सिंह सोनिया की योनी में मानो घुसा जा रहा था। उसका एक हाँथ ऊपर सोनिया की एक चूची पर जिसे वह बेदर्दी से मसले जा रहा था जबकि दूसरा हाथ सोनिया की योनी की फाँकों पर था जिन्हें वह ज़रूरत के हिसाब से फैला रहा था।

कमरे में हवस व वासना का तूफान चालू था। सोनिया की सिसकारियाँ कमरे में गूँजती हुई अजीब सी मदहोशी का आलम पैदा कर रही थी। सत्यम सिंह उसकी योनी पर काफी देर तक अपनी जीभ से चुहलबाजी करता रहा।

" आहहहह ऐसे ही रे बड़ा मज़ा आ रहा है मुझे। " सोनिया बड़बड़ा रही थी। उसकी आँखें मज़े में बेद थी। बेड पर पड़ी वह बिन पानी के मछली की तरह छटपटा रही थी।

" शशशश आहहह अब उसे छोंड़ और जल्दी से पेल मुझे भड़वे हरामी। " सोनिया ने हाँथ बढ़ा कर सत्यम सिंह के सिर के बालों को पकड़ कर ऊपर उठाया। सत्यम सिंह उसके उठाने

पर उठा। उसका पूरा चेहरा सोनिया के योनी रस से भींगा हुआ था। ऊपर उठते ही वह सोनिया के होठों पर टूट पड़ा। सोनिया अपने ही योनी रस का स्वाद लेने लगी इस क्रिया से।

सोनिया ने खुद को अलग कर बड़ी तेज़ी से सत्यम सिंह के कपड़ों उतारना शुरू कर दिया। कुछ ही पल में सत्यम सिंह नंगा हो गया। उसका हथियार फनफना कर बाहर आ गया। सोनिया उकड़ू लेट कर तुरंत ही उसे एक हाथ से पकड़ कर मुह में भर लिया।

सत्यम सिंह की मज़े से आँखें बंद हो गई तथा मुह से आह निकल गई। वह सोनिया के बालों को मजबूती से पकड़ कर उसके मुह में अपनी कमर हिलाते हुए अपना हथियार पेलने लगा। वह पूरी तरह जानवर नज़र आने लगा था। ज़ोर ज़ोर से वह सोनिया के गले तक अपना हथियार पेल रहा था। सोनिया की हालत खराब हो गई। उसका चेहरा लाल सुर्ख पड़ गया। आँखें बाहर को आने लग जाती थी साथ ही आँखों से आँसू भी आने लगे। तभी सत्यम ने उसके सिर को पीछे की तरफ से पकड़ कर अपने हथियार की तरफ मजबूती से खींचा। नतीजा ये हुआ कि उसका हथियार पूरा का पूरा सोनिया के मुह मे गले तक चला गया। सोनिया की आँखें बाहर को उबल पड़ी। आँखों से आँसू बहने लगे। साँस लेना मुश्किल पड़ गया उसे। उसका जिस्म झटके खाने लगा। उसके मुह से लार टपकने लगी।

सोनिया को लगा कि उसकी सासें टूट जाएँगी। सत्यम सिंह उसे मजबूती से पकड़े हुए था। वह अपने मुह से उसके हथियार को निकालने के लिए छटपटाने लगी। सत्यम को उसकी इस हालत का ज़रा भी ख़याल नहीं था, वह तो मज़े में आँकें बंद किये ऊपर की तरफ सिर को उठाया हुआ था।

सोनिया के मुह से गूँ गूँ की अजीब सी आवाज़े निकल रही थी। जब उसने देखा कि सत्यम सिंह उसे मार ही डालेगा तो उसने अपने दोनो हाँथों से सत्यम सिंह के पेट पर पूरी ताकत से चिकोटी काटी।

" आहहहहहहह। " सत्यम सिंह के मुह से चीख निकल गई। वह एक झटके से उसके सिर को छोंड़ कर तथा उसके मुह से अपने हथियार को निकाल कर अलग हट गया। मज़े की जिस दुनियॉ में वह अभी तक परवाज़ कर रहा था उस दुनिया से गिर कर वह हकीकत की दुनियॉ में आ गया था। बेड के दूसरी तरफ घुटनो पर खड़ा वह अपने पेट के उस हिस्से को सहलाए जा रहा था जहाँ पर सोनिया ने चिकोटी काटी थी। उसे सोनिया की इस हरकत पर बेहद गुस्सा आया था किन्तु जब उसने सोनिया की हालत को देखा तो हैरान रह गया। सोनिया का चेहरा लाल सुर्ख तमतमाया हुआ था। वह बेड पर पड़ी अपनी सास ें बहाल कर रही थी।

" तुमको ज़रा भी अंदाज़ा है कि तुमने क्या किया है मेरे साथ ?" सोनिया ने गुस्से से फुंकारते हुए कहा __" तुम अपने मज़े में ये भी भूल गए कि मेरी जान भी जा सकती थी। तुम इंसान नहीं जानवर हो सत्यम । आज के बाद मेरे करीब भी मत आना वरना मुझसे बुरा कोई नहीं होगा। "

सत्यम सिंह उसकी ये बातें सुनकर हैरान रह गया था। किन्तु जब उसे एहसास हुआ कि वास्तव में उसने क्या किया था तो वह शर्मिंदगी से भर गया। वह जानता था कि सोनिया वह औरत थी जो उसके कहने पर दुनिया का कोई भी काम कर सकती थी और करती भी थी। ये उसका सत्यम के प्रति प्यार था वरना कौन ऐसी औरत है जो पति के कहने पर इस हद तक भी गिरने लग जाए कि वह किसी भी ग़ैर मर्द के नीचे अपना सब कुछ खोल कर लेट जाए???? सत्यम सिंह को अपनी ग़लती का एहसास हुआ। वह तुरंत ही आगे बढ़ कर सोनिया से माफी मॉगने लगा तथा उसको पकड़ने के लिए जैसे ही उसने हाथ बढ़ाया तो सोनिया ने झटक दिया उसे।

" डोन्ट टच मी। " सोनियाा गुर्राई और फिर उसी तरह गुस्से में तमतमाई हुई वह बेड से नीचे उतरी और बाथरूम के अंदर जाकर दरवाजा बंद कर लिया उसने। सत्यम सिंह शर्मिंदा सा उसे देखता रह गया। उसमें अपराध बोझ था इस लिए उसकी हिम्मत न हुई कि वह सोनियाा को रोंक सके। उधर थोड़ी ही देर में सोनियाा बाथरूम से मुह हाँथ धोकर निकली। आलमारी से एक नया ब्लाउज निकाल कर पहनाा , तथा उसी साड़ी को दुरुस्त करने के बाद उसने आदमकद आईने में देख कर अपने हुलिये को सही किया। सब कुछ ठीक करने के बाद वह बिना सत्यम की तरफ देखे कमरे से बाहर निकल गई। सत्यम सिंह समझ गया था कि सोनियाा उससे बेहद नाराज हो गई है। उसका नाराज होना जायज़ भी था। भला इस तरह कौन अपनी पत्नी की जान ले लेने वाला सहवास करता है ?? सत्यम सिंह असहाय सा नंगा ही बेड पर पसर गया था।

उस दिन और उस रात सोनिया ने सत्यम सिंह की तरफ देखा तक नहीं बात करने की तो बात दूर। सत्यम सिंह अपनी पत्नी के इस रवैये बेहद परेशान हो गया था, वह अपने किये पर बेहद शर्मिंदा था। वह जानता था कि उसने ग़लती की थी किन्तु अब जो हो गया उसका क्या किया जा सकता था? उसने कई बार सोनिया से उस कृत्य के लिए माफ़ी मॉगी लेकिन सोनिया हर बार उसे गुस्से से देख कर उससे दूर चली गई थी।

दूसरा दिन शुरू हुआ। आज सोनिया का रवैया एकदम सामान्य था। कदाचित् रात के बाद अब उसका गुस्सा उतर गया था। पिछली रात वह दूसरे कमरे में अंदर से कुंडी लगा कर सोई थी। वह जानती थी सत्यम उसे मनाने उसके पास आएगा और हुआ भी वही लेकिन सोनिया कमरे का दरवाजा नहीं खोला था। सत्यम सिंह मुह लटकाए वापस चला गया था। रात में सोनिया ने इस बारे में बहुत सोचा और इस निष्कर्ष पर पहुॅची कि सत्यम सिंह का इसमें भला क्या दोष हो सकता है? उस सूरत में कोई भी मर्द वही करता जो उसने किया। मज़े की चरम सीमा का एक रूप ऐसा भी हो सकता है कि वह उस सूरत में सब कुछ भूल बैठता है। सत्यम सिंह के साथ भी तो वही हुआ था। सोनिया उससे प्यार भी बहुत करती थी, वह उससे इस तरह बेरूखी अख्तियार नहीं कर सकती थी बहुत देर तक।

सुबह जब हुई तो सबसे पहले वह सत्यम सिंह से बड़े प्यार से मिली। सत्यम सिंह इस बात से बेहद खुश हुआ। ख़ैर, दोपहर में सोनिया फिर से शिवम सिंह के लिए खाने का टिफिन तैयार कर तथा एक प्लास्टिक के बोतल में पका हुआ दूध लेकर खेतों की तरफ चल दी। आज भी उसने पिछले दिन की ही तरह लिबास पहना हुआ था। खूबसूरत गोरे बदन पर आज उसने पतली सी पीले रंग की साड़ी और उसी से मैच करता बड़े गले का ब्लाउज पहना था। ब्लाउज के अंदर आज भी उसने ब्रा नहीं पहना था।

सोनिया मदमस्त चाल से तथा मन में हज़ारों ख़याल बुनते हुए खेतों पर बने मकान में पहुॅची। पिछले दिन की ही तरह आज भी आस पास खेतों पर कोई मजदूर नज़र नहीं आया उसे,अलबत्ता शिवम सिंह ज़रूर उसे दाईं तरफ लगे बोरबेल पर नज़र आया। वह बोर के पानी से हाँथ मुह धो रहा था।

सोनिया ने ग़ौर से उसे देखा फिर मुस्कुरा कर मकान के अंदर की तरफ बढ़ गई। कमरे में पहुॅच कर उसने पिछले दिन की ही तरह बेन्च पर टिफिन से निकाल कर खाना लगाने लगी। आज उसने अपना आँचल ढुलकाया नहीं था। शायद ये सोच कर कि शिवम कहीं ये न सोच बैठे कि रोज़ रोज़ मैं अपना आँचल क्यों गिरा देती हूँ?

कुछ ही देर में शिवम सिंह कमरे में आ गया। कमरे में अपनी भाभी को देख कर वह चौंका फिर सामान्य होकर वहीं बेन्च के पास कुर्सी पर बैठ गया।

" आज भी आपको ही कष्ठ उठाना पड़ा भाभी। " शिवम सिंह ने कहा __" कितनी तेज़ धूप और गर्मी होती है , कहीं आपको लू लग गई और आप बीमार हो गई तो ??"

" अरे कुछ नहीं होगा मुझे। " सोनिया ने कहा __" इतनी भी नाज़ुक नहीं हूँ जो इतने से ही बीमार हो जाऊॅगी। और अगर हो भी जाऊॅगी तो क्या हुआ ? मेरी दवाई करवाने तुमको ही जाना पड़ेगा। जाओगे न मुझे लेकर ?"

" अरे क्या बात करती हैं आप ?" शिवम सिंह गड़बड़ाया __" भगवान करे आपको कभी

कुछ न हो भाभी। "

" हमारे चाहने से क्या होता है ?" सोनिया ने कहा __" जिसको जब जो होना होता है वो हो ही जाता है। इस लिए कह रही हूँ कि अगर मैं बीमार पड़ जाऊँ तो तुम मुझे ले चलोगे न डाक्टर के पास ??"

" इसमें भला पूछने की क्या बात है ?" शिवम सिंह ने कहा __" और हाँ आपको डाक्टर के पास ले जाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी बल्कि डाक्टर को मैं खुद आपके पास ले आऊँगा। "

" ऐसा शायद तुम इस लिए कह रहे हो कि तुम मुझे अपने साथ ले जाना ही नहीं चाहते। " सोनिया ने बुरा सा मुह बनाया __" सोचते होगे कि मुझ बुढ़िया को कौन ढोता फिरेगा ?"

" बु बुढ़िया ???" शिवम सिंह को फिर से ठसका लग गया। वह ज़ोर ज़ोर से खाँसने लगा। सोनिया ने शीघ्रता से उठ कर मटके से ग्लास में पानी लिये उसके मुह से लगा दिया। इस बीच उसे सच में ध्यान न आया कि उसका आँचल नीचे गिर गया है।

" क्या हुआ आज भी ठसका लग गया तुम्हें ?" सोनिया ने कहा __" क्या रोज़ ऐसे ही होता है खाते समय ?"

शिवम सिंह कुछ बोल न सका। उसकी आँखों के बहुत पास सोनिया की बड़ी बड़ी स्तन आधे से ज्यादा ब्लाउज से झूलती दिख रही थी। शिवम सिंह की हालत पल भर में खराब हो गई। वह पानी पीना भूल गया था।

" क्या हुआ पानी पियो न ?" सोनिया ने कहा फिर अनायास ही उसका ध्यान इस तरफ गया कि शिवम उसके सीने की तरफ एकटक देखे जा रहा है। ये देख वह मुस्कुराई।

" आज दूध लेकर आई हूँ तुम्हारे लिए। " सोनिया ने मुस्कुराते हुए कहा __" और हाँ जहाँ देख रहे हो न वहाँ सूखा पड़ा है। इस लिए तो अलग से लाई हूँ। "

शिवम सिंह को जबरदस्त झटका लगा। सोनिया को लगा कहीं उसने ज्यादा तो नहीं बोल दिया। अंदर ही अंदर घबरा गई थी वह किन्तु चेहरे से ज़ाहिर न होने दिया उसने। बल्कि सीधी खड़ी होकर उसने अपने आँचल को सही कर लिया था।

" अरे ऐसे आँखें फाड़ फाड़ कर क्या देख रहे हो मुझे ?" सोनिया हँसी __" मैं तो मज़ाक कर रही थी तुमसे। देवर भाभी के बीच इतना तो चलता है न ? चलो अब जल्दी से खाना खाओ। "

शिवम सिंह चुपचाप खाना खाने लगा। इस बार वह बड़ा जल्दी जल्दी खा रहा था। ऐसा लगता था जैसे उसे कहीं जाने की बड़ी जल्दी थी।

" तुम खाना खाओ तब तक मैं बाहर घूम लेती हूँ। " सोनिया ने कहा __" और हाँ दूध ज़रूर पी लेना। "

" जी भाभी। " शिवम ने नीचे को सिर किये ही कहा था।

उधर सोनिया मुस्कुराती हुई कमरे से बाहर निकल गई। पता नहीं क्या चल रहा था उसके दिमाग़ में?"

२५

वर्तमान_____

" अरे गीता बुआ आप ??" साक्षी जैसे ही हवेली के अंदर ड्राइंग रूम में दाखिल हुई तो सोफे पर गीता बैठी दिखी __" ओह बुआ मैं बता नहीं सकती कि आपको यहाँ देख कर मैं कितना खुश हुई हूँ। "

" ओह माई गाड। " गीता सोफे से उठते हुए किन्तु हैरानी से बोली __" तू तो पुलिस वाली बन गई। कितनी सुन्दर लग रही है तेरे बदन पर ये पुलिस की वर्दी। आई एम सो प्राउड आफ यू। आ मेरे गले लग जा साक्षी। "

दोनो एक दूसरे के गले मिली। फिर दोनो एक साथ ही सोफे पर बैठ गई।

" मुझे डैड ने बताया ही नहीं कि आप आईं हैं यहाँ। " साक्षी ने खेद भरे भाव से कहा __" वरना मैं पुलिस थाने से भाग कर आपके पास आ जाती। ख़ैर , आब बताइये कैसी हैं आप और फूफा जी कैसे हैं ?"

" मैं तो ठीक ही हूँ साक्षी। " गीता ने सहसा गंभीर होकर कहा __" लेकिन तेरे फूफा जी का पूछो ही मत। "

" अरे ऐसा क्यों कह रही हैं आप ?" साक्षी ने चौंकते हुए कहा ___" फूफा जी के बारे में क्यों न पूछूँ भला ?"

" क्यों कि अब वो तेरे फूफा जी नहीं रहे। " गीता ने कहा __" मैने उस नामर्द को तलाक़ दे दिया है और अब यहीं रहूँगी अपने घर में। "

"त ... ला ... क़ ????" साक्षी बुरी तरह उछल पड़ी थी __" लेकिन क्यों बुआ ? ऐसी भी भला क्या बात हो गई कि आपने उन्हें तलाक़ दे दिया ?"

गीता ने कुछ पल सोचा और फिर सारी बात बता दी उसे जो उसने सोनिया को बताई थी। सारी बातें सुनने के बाद साक्षी सन्न रह गई।

" ठीक किया आपने। " फिर साक्षी ने कहा __" ऐसे आदमी के पास रहने का कोई मतलब ही नहीं है जो ऐसी सोच रखता हो। "

" साक्षी मैं सोच रही हूँ कि मैं कोई जॉब कर लूँ। " गीता ने हिचकिचाते हुए कहा __" अगर तेरी नज़र में मेरे लिए कोई जॉब हो तो दिलवा दे मुझे। "

" आपको जॉब करने की क्या ज़रूरत है बुआ ?" साक्षी ने हैरानी से कहा __" क्या आप ये समझती हैं कि आप हमारे लिए बोझ बन जाएँगी ?"

" ऐसी बात नहीं है साक्षी। " गीता ने कहा _" बस मेरा मन बहलता रहेगा। सारा दिन बेड पर पड़े पड़े इस सबके बारे में सोच सोच कर कुढ़ती रहूँगी। इस लिए अगर कोई जॉब करने लगूँगी तो मेरा दिन आराम से कट जाया करेगा। "

" क्या इस बारे में आपने डैड से बात की है ?" साक्षी ने कहा।

" भैया और भाभी से मैने अभी इस बारे में कोई बात नहीं की है। " गीता ने कहा __" पर मैं जानती हूँ कि भैया मुझे जॉब करने की इजाज़त कभी नहीं देंगे। वो भी यही समझेंगे कि मैं उनके लिए बोझ बन जाऊँगी ऐसा मैं सोच रही हूँ। "

" हाँ ये बात है ही। " साक्षी ने कहा __" हम में से कोई नहीं चाहेगा कि आप कोई जॉब करें। "

" नहीं साक्षी प्लीज़। " गीता ने साक्षी के हाँथ को अपने हाथ में लेकर कहा __" समझने की कोशिश कर मेरी बच्ची। क्या तू चाहती है कि तेरी बुआ उस सबके बारे में सोच सोच कर दुखी हो ?"

" नहीं बुआ हर्गिज़ नहीं। " साक्षी ने मजबूती से इंकार में सिर हिलाया __" मैं तो चाहती हूँ कि मेरी प्यारी बुआ हमेशा खुश रहें। "

" तो फिर कोई जॉब दिलवा दे मुझे। " गीता ने कहा __" मैं कोई भी काम करने को तैयार हूँ। बस काम ऐसा हो कि मुझे एक सेकण्ड के लिए भी कुछ सोचने का समय न मिले। "

" जॉब तो मैं आपको दिलवा दूँगी। " साक्षी ने कहा ___" लेकिन उससे पहले एक बार डैड से भी इसके लिए पूछना पड़ेगा। "

" ठीक है मैं बात करू गी भैया से। " गीता ने कहा __" अब जा तू भी चेन्ज कर ले तब तक मैं तेरे कुछ खाने का बंदोबस्त करती हूँ। "

" आप परेशान मत होइये बुआ। " साक्षी ने कहा ___" मॉम हैं ना इस सबके लिए। "

" इसमें परेशानी की क्या बात है ?" गीता ने कहा __" शादी से पहले भी तो मैं यही करती थी तेरे लिए भूल गई क्या ?"

" कैसे भूल सकती हूँ बुआ ?" साक्षी ने मुस्कुरा कर कहा __" मुझे सब याद है। आप हम तीनो बहन भाई को पढ़ाया करती थी और पिटाई भी करती थी। "

" अरे वो तो मैं प्यार से मारती थी। " गीता हॅस पड़ी __" और वो ज़रूरी भी तो था न ?"

" सही कह रही हैं आप। " साक्षी ने कहा _" जब तक हम बच्चे रहते हैं तब तक हमें ये सब बुरा लगता है और जब बड़े हो जाते हैं तो लगता है कि बचपन में पढ़ाई के लिए जो पिटाई

होती थी वो हमारे भले के लिए ही होती थी। "

" मैने घर के सभी बच्चों को पढ़ाया था। " गीता ने कुछ सोचते हुए कहा __" किन्तु उन सभी बच्चों में एक ही ऐसा बच्चा था जो मेरे हाँथों मार नहीं खाया और वो था हमारा विक्रम । मैं सोचा करती थी कि ऐसा कौन सा सवाल उससे करू जो उससे न बने और फिर मैं उसकी पिटाई करू मगर हाय रे कितना तेज़ था विक्रम । हर विषय उसका कम्प्लीट रहता था। छोटे भैया भाभी ने उसे बचपन से ही पढ़ाई में जीनियस बना रखा था। वैसी ही निशा भी थी। जाने कहाँ होंगे वो सब ?"

कहते कहते गीता की आँखों में आँसू आ गए। साक्षी के चेहरे पर बेहद ही गंभीर भाव आ गए थे। उसके मुख से कोई शब्द नहीं निकला बल्कि सख्ती से उसने मानो लब सी लिए थे।

" क्या हो गया है इस घर की खुशियों को ?" गीता ने गंभीरता से कहा __" न जाने किसकी नज़र लग गई इस घर के हॅसते मुस्कुराते हुए लोगो पर ? सब कुछ बिखर गया। शिवम भैया क्या गए जैसे इस घर की रूह ही चली गई। मॉ बाबू जी उनके सदमें में कोमा में चले गए। रेणुका भाभी और उनके बच्चे जाने दुनियॉ के किस कोने में जी रहे होंगे ? बड़ी भाभी ने बताया कि अपर्णा भाभी भी अपने बच्चों के साथ अपने मायके चली गईं हैं जबकि सुंदर भैया किसी काम से कहीं बाहर गए हैं। इतनी बड़ी हवेली में गिनती के चार लोग हैं। ये भाग्य की कैसी विडम्बना है साक्षी ???"

" ये सवाल ऐसा है बुआ जो हर शख्स की ज़ुबां पर रक्श करता है। " साक्षी ने कहा __" लेकिन उसका कोई जवाब नहीं है। "

" जबाव तो हर सवाल का होता है साक्षी। " गीता ने कहा __" संसार में ऐसा कुछ है ही नहीं जिसका जवाब न हो। "

" आप कहना क्या चाहती हैं बुआ ?" साक्षी ने हैरानी से देखा था।

" कहने को तो बहुत कुछ है साक्षी। " गीता ने गहरी साँस ली __" लेकिन कहने का कोई मतलब नहीं है। "

" प्लीज कहिए न बुआ। " साक्षी ने कहा _" अगर कोई बात है मन में तो बेझिझक कहिये। "

" जाने दे साक्षी। " गीता ने पहलू बदला __" तू सुना कैसी चल रही है तेरी पुलिस की नौकरी ??"

" बस ठीक ही है बुआ। " साक्षी की आँखों के सामने प्राची का चेहरा नाच गया __" आप तो जानती ही हैं इस नौकरी में दिन रात भागा दौड़ी ही होती रहती है। कभी इस मुजरिम के पीछे तो कभी किसी क़ातिल के पीछे। "

" हाँ ये तो है। " गीता ने कहा __" लेकिन पुलिस आफीसर बनने का सपना तो तूने ही देखा था न बचपन से। "

" बचपन में तो बस ये सब एक बचपना टाइप का था बुआ। " साक्षी ने कहा __" लेकिन जब बड़े होने पर हर चीज़ की समझ आई तो लगा कि सचमुच मुझे पुलिस आफीसर बनना चाहिए। मेरी ख्वाहिश थी कि पुलिस आफीसर बन कर मैं दादा दादी जी के एक्सीडेन्ट वाला केस फिर से रीओपन करके उसकी तहकीक़ात करू गी। मगर सब कुछ जैसे एक ख्वाहिश मात्र ही रह गया। "

" क्या मतलब ???" गीता चौंकी।

" मतलब ये बुआ कि मैं दादा जी के एक्सीडेन्ट वाले केस में कुछ नहीं कर सकती। " साक्षी ने असहाय भाव से कहा __" क्योंकि मैने उस केस की फाइल को बहुत बारीकी से पढ़ा है , उसमें कहीं पर भी ये नहीं दिखाया गया कि वो एक्सीडेन्ट एक सोची समझी साजिश का नतीजा था बल्कि ये रिपोर्ट बना कर फाइल बंद कर दी गई कि वो एक्सीडेन्ट महज एक हादसा या दुर्घटना थी जो कि सामने से आ रहे ट्रक से टकराने से हो गई थी। ट्रक का ड्राइवर नशे में था जिसकी वजह से उसने ध्यान ही नहीं दिया और साइड होने बजाय उसने दादा जी की कार से टकरा गया था। "

" लेकिन सवाल ये है कि तुझे ऐसा क्यों लगता है कि वो एक्सीडेन्ट महज दुर्घटना नहीं बल्कि किसी की सोची समझी साजिश थी ?" गीता ने हैरानी से कहा __" यानी कोई बाबूजी को जान से मार देना चाहता था। "

" मुझे शुरू में इस बात का सिर्फ अंदेशा था बुआ। " साक्षी कह रही थी __" वो भी इस लिए क्योंकि ऐसा शहरों में होता है। दादा जी की किसी से कोई दुश्मनी नहीं थी। फिर भी उनके साथ ये हादसा हुआ। उस समय इसके बारे में इस एंगल से मेरा सिर्फ सोचना था। मैं नहीं जानती थी मैं ऐसा क्यों सोचती थी ? शायद इस लिए कि शुरू से ही मेरे ज़हन में क्राइम के प्रति सोचने का ऐसा नज़रिया था। किन्तु पुलिस की नौकरी ज्वाइन करने बाद जब मैने उस केस की फाइल को बारीकी से अध्ययन किया तो मुझे यकीन हो गया कि वो एक्सीडेन्ट महज कोई दुर्घटना नहीं थी बल्कि जान बूझ कर दादाजी की कार में टक्कर मारी गई थी। "

" ऐसा क्या था उस फाइल मेंं ?" गीता की आँखें हैरत से फटी पड़ी थी ___" जिससे तुझे यकीन हो गया कि ये सब सोच समझ कर किया गया था ?"

" फाइल में जिस जगह पर एक्सीडेन्ट यानी कि दादा जी की कार का एक्सीडेन्ट हुआ था उस जगह पर जाकर मैने खुद निरीक्षण किया है। " साक्षी ने कहा __" मेन हाइवे पर उस जगह भले ही ज्यादातर वाहनों का आना जाना नहीं है लेकिन फिर भी इक्का दुक्का वाहन तो आते जाते ही रहते हैं वहाँ पर। इतनी चौड़ी सड़क पर कोई ट्रक वाला अपनी लेन से आकर कैसे किसी कार को टक्कर मार सकता है ? ये ठीक है कि वो टू- लेन सड़क नहीं थी बल्कि टू- इन- वन थी। फिर भी इतनी चौड़ी सड़क पर कोई ट्रक वाला अपनी लेन से हट कर कैसे

टक्कर मार देगा। फाइल में लिखा है कि ट्रक का ड्राइवर नशे में था तो सवाल है कि नशे की उस हालत में उसने एक ही एक्सीडेन्ट क्यों कियें किया ? बल्कि एक से ज्यादा एक्सीडेन्ट हो सकते थे उससे मगर ऐसा नहीं था। अब चूँकि फाइल में ना तो उस ट्रक वाले का कोई अता पता है और ना ही कोई ऐसा सबूत जिसके तहत आगे की कोई कार्यवाही की जा सके इस लिए मैं कुछ नहीं कर सकती। "

" क्या सिर्फ यही एक वजह है जिससे तुझे लगता है कि बाबू जी का एक्सीडेन्ट महज दुर्घटना नहीं थी ?" गीता ने कहा __" या फिर कोई और भी वजह है तेरे पास ??"

अभी साक्षी कुछ बोलने ही वाली थी कि उसकी पैन्ट की जेब में पड़ा मोबाइल बज उठा। उसने पॉकेट से मोबाइल निकाल कर स्क्रीन में फ्लैश कर रहें नंबर को देखा फिर काल रिसीव कर उसे कान से लगा कर कहा__"हाँ रामसिंह बोलो क्या बात है?"

"....." उधर से पता नहीं क्या कहा गया।

" ओह चलो ठीक है। " साक्षी ने कहा __" मैं फौरन पहुँच रही हूँ। "

फोन काटने के बाद साक्षी एक झटके से सोफे से खड़ी हो गई और फिर गीता से कहा_"माफ़ करना बुआ मुझे तत्काल पुलिस स्टेशन जाना होगा।"

" ठीक साक्षी आराम से जाना। " गीता ने कहा __" शाम को जल्दी आना। "

" जी बिलकुल बुआ। " साक्षी ने मुस्कुरा कर कहा __" रात में हम दोनो खूब सारी बातें करेंगे। "

इसके बाद साक्षी वहाँ से चली गई। जबकि गीता वहीं सोफे पर बैठी उसे बाहर की तरफ जाते देखती रही। इस बात से अंजान कि पीछे दीवार के उस तरफ खड़ा सत्यम सिंह इन दोनो की बातें सुन रहा था। उसके पीछे सोनिया भी खड़ी थी।

२६

भूतकाल अब आगे_____

शिवम सिंह खाना खाने के बाद तथा दूध पीने के बाद थोड़ी देर वहीं एक तरफ रखे बिस्तर पर आराम करना चाहता था। किन्तु उसने सोचा कि उसकी भाभी बाहर धूप में जाने कहाँ घूम रही होंगी? इस लिए उसे देखने के लिए तथा ये कहने के लिए कि वो अब घर जाएॅ बहुत धूप व गर्मी है, वह कमरे से निकल कर बाहर आ गया।

बाहर आकर उसने आस पास देखा लेकिन सोनिया उसे कहीं नज़र न आई। ये देख कर वह चिन्तित हो उठा। वह तुरंत ही आगे बढ़ते हुए आस पास देखने लगा। चलते चलते वह आमों के बाग़ की तरफ बढ़ गया। यहाँ लगभग दस एकड़ में आमों के पेड़ लगाए गए थे। आधुनिक प्रक्रिया के तहत बहुत कम समय में ही ये बड़े हो कर फल देने लगे थे। ये मौसम भी आमों का ही था।

शिवम सिंह जब बाग़ के पास पहुॅचा तो देखा कि सोनिया एक आम के पेड़ के पास खड़ी ऊपर की तरफ देख रही थी। उसने अपने पल्लू को कमर में घुमा कर खोंसा हुआ था। उसके दोनो हाँथ ऊपर थे। शिवम सिंह के देखते ही देखते वह ऊपर की तरफ उछली और फिर नीचे आ गई। शिवम सिंह उसे ये हरकत करते देख मुस्कुरा उठा। उसे देख कर कोई नहीं कह सकता था कि ये तीन तीन बच्चों की माॅ है बल्कि इस वक्त वह जिस तरह से उछल उछल कर ऊपर लगे आम को तोड़ने का प्रयास कर रही थी उससे यही लगता था कि वो अभी भी कोई अल्हड़ सी लड़की ही थी। वह बार बार पहले से ज्यादा ज़ोर लगा कर ऊपर उछलती लेकिन वह नाकाम होकर नीचे आ जाती। आम उसकी पहुच से दूर था किन्तु फिर भी वो मान नहीं थी। उछल कूद के चक्कर में वह पसीना पसीना हो गई थी। उसकी दोनो काख पसीने से भीगी हुई थी तथा ब्लाउज भी भीग गया था। चेहरे और कनपटियों पर भी पसीना रिसा हुआ था।

शिवम सिंह उसके पास जाकर बोला__"तो आप यहाँ आम तोडने का प्रयास कर रही हैं। मैं ढूॅढ रहा था कि जाने आप कहाँ गायब हो गई हैं?"

" अरे भला मैं अब कहाँ गायब हो जाऊॅगी शिवम ?" सोनिया ने मुस्कुरा कर कहा _" इस ऊम्र में तुम्हारे भैया को छोंड़ कर भला कहाँ जा सकती हूॅ ?"

" चलिये मैं आपको आम तोड़ कर दे देता हूँ फिर आप आराम से बैठ कर खाइयेगा। " उसकी बात पर ज़रा भी ध्यान दिये बग़ैर शिवम ने कहा था।

" नहीं शिवम। " सोनिया ऊपर थोड़ी ही दूरी पर लगे आम को देखती हुई बोली __" इसे तो मैं ही तोड़ूॅगी। "

" पर वो तो आपकी पहुॅच से दूर है भाभी। " शिवम भी आम की तरफ देखते हुए बोला __"

भला आप उस तक कैसे पहुँच पाएँगी ? और जब पहुँचेंगी ही नहीं तो उसे तोड़ेंगी कैसे ?"

" कह तो तुम भी ठीक ही रहे हो। " सोनिया ने बड़ी मासूमियत से दोनो हाथ कमर पर रख कर कहा __" सचमुच मैं काफी देर से प्रयास कर रही हूँ इस मुए को तोड़ने का लेकिन ये मेरे हाँथ ही नहीं लग रहा। "

" इसी लिए तो कहता हूँ कि मैं तोड़ देता हूँ भाभी। " शिवम ने कहा __" आप फालतू में ही इस गर्मी में परेशान हो रही हैं। "

" लेकिन मैं इसे अपने हाँथ से ही तोड़ना चाहती हूँ शिवम। " सोनिया ने कहा __" मुझे बहुत खुशी होगी अगर मैं इसे अपने से तोड़ कर खाऊँगी तो। "

" फिर तो ये संभव नहीं है भाभी। " शिवम ने कहा __" या फिर ऐसा कीजिए कि नीचे से एक पत्थर उठाइये और उस आम को निशाना लगा कर पत्थर मार कर तोड़ लीजिए। "

" उफ्फ शिवम ये तो मुझसे और भी नहीं होगा। " सोनिया ने आहत भाव से कहा __" क्या तुम मेरी मदद नहीं कर सकते ?"

" म मैं ...????" शिवम चौंका __" भला मैं कैसे आपकी मदद कर सकता हूँ ?"

" बिलकुल कर सकते हो शिवम। " सोनिया ने खुश होकर कहा __" तुम मुझे अपनी बाहों से ऊपर उठा सकते हो। उसके बाद मैं बड़े आराम से उस आम को तोड़ लूँगी। "

" क क्या ????" शिवम सिंह बुरी तरह उछल पड़ा , हैरत से उसकी आँखें फैलती चली गई थी , बोला __" ये आप क्या कह रही हैं भाभी ? नहीं नहीं ये मैं नहीं कर सकता। आप कोई दूसरा आम देख लीजिए जो आपकी पहुँच पर हो उसे तोड़ लीजिए। "

" अरे तो इसमें क्या है शिवम ?" सोनिया ने लापरवाही से कहा __" थोड़ी देर की तो बात है। तुम मुझे बड़े आराम से उठा सकते हो , मैं इतनी भी भारी नहीं हूँ। तुम्हारी रेणुका से तो कम ही हूँ। "

" पर भाभी मैं आपको कैसे उठा सकता हूँ ?" शिवम की हालत खराब __" नहीं भाभी ये मुझसे हर्गिज़ भी नहीं हो सकता। "

" क्यों नहीं हो सकता शिवम ?" सोनिया उसके पास आकर बोली __" बल्कि मुझे तो बड़ी खुशी होगी शिवम कि तुम्हारे द्वारा ही सही किन्तु मैं अपने हाँथों से उस आम को तोड़ूँगी। प्लीज़ शिवम .... मेरे लिए ... मेरी खुशी के लिए ये कर दो न ?"

शिवम सिंह को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? वह तो खुद को कोसे जा रहा था कि वह यहाँ आया ही क्यों था?

" उफ्फ शिवम पता नहीं क्या सोच रहे हो तुम ?" सोनिया ने कहा __" भला इसमें इतना सोचने की ज़रूरत है ? तुम कोई ग़ैर तो नहीं हो न और ना ही मैं तुम्हारे लिए कोई ग़ैर हूँ। हम दोनो देवर भाभी हैं और इतना तो बड़े आराम से चलता है। मैं तो कुछ नहीं सोच रही हूँ ऐसा वैसा। फिर तुम क्यों सोच रहे हो ?"

" पर भाभी किसी को पता चलेगा तो लोग क्या सोचेंगे हमारे बारे में ?" शिवम सिंह ने हिचकिचाते हुए कहा।

" सबसे पहली बात तो यहाँ पर हम दोनो के अलावा कोई तीसरा है ही नहीं। " सोनिया कह रही थी __" और अगर होता भी तो मुझे उसकी कोई परवाह नहीं होती क्योंकि हम कुछ ग़लत तो कर नहीं रहे होंगे फिर किसी से डरने की या किसी के कुछ सोचने से डरने की क्या ज़रूरत है ? देवर भाभी के बीच इतना प्यारवश चलता है। अब छोड़ों इस बात को और जल्दी से आओ मेरे पास। "

शिवम सिंह का दिल धाड़ धाड़ करके बज रहा था। उसे लग रहा था कि वह यहाँ से भाग जाए किन्तु फिर उसने भी सोचा कि इसमें इतना सोचने की भला क्या ज़रूरत है? उसकी भाभी ठीक ही तो कह रही है कि इतना तो देवर भाभी के बीच चलता है। फिर वो कौन सा कुछ ग़लत करने जा रहे हैं।

" ओफ्फो शिवम कितना सोचते हो तुम ?" सोनिया ने खीझते हुए कहा ___" तुम्हारी जगह अगर मैं होती तो एक पल भी न लगाती इसके लिए। "

" अच्छा ठीक है भाभी। " शिवम उसके पास जाते हुए बोला __" लेकिन इसके बारे आप किसी से कुछ मत कहियेगा। बड़े भैया से तो बिलकुल भी नहीं। "

" अरे मैं किसी से कुछ नहीं कहूँगी शिवम। " सोनिया हॅस कर बोली __" ये तो हमारी आपस की बात है न। अब चलो जल्दी से मुझे उठाओ। संभाल कर उठाना , गिरा मत देना मुझे। पता चले कि लॅगड़ाते हुए हवेली जाना पड़े। "

शिवम सिंह कुछ न बोला बल्कि झिझकते हुए वह सोनिया के पास पहुँचा। सोनिया की हालत ये सोच सोच कर रोमॉच से भरी जा रही थी कि शिवम उसे अपनी बाहों में उठाने वाला है। अंदर से थराथरा तो वह भी रही थी किन्तु दोनो की मानसिक अवस्था में अलग अलग हलचल थी।

शिवम सिंह झुक कर सोनिया को उसकी दोनो टॉगों को अपने दोनो बाजुओं से पकड़ कर ऊपर की तरफ खड़े होते हुए उठाना शुरू किया। सोनिया ने झट से अपने दोनो हाँथों को शिवम सिंह के दोनो कंधो पर रख दिया। वह एकटक शिवम को देखे जा रही थी। उस शिवम को जिसके चेहरे पर इस बात की ज़रा भी शिकन नहीं थी कि उसने कोई बोझ उठाया हुआ है। ये अलग बात थी कि दिल में बढ़ी घबराहट की वजह से उसके चेहरे पर पसीना छलछला

आया था।

सोनिया बड़ी शातिर औरत चालाक औरत थी। उसने शिवम को उसके कंधो पर से पकड़ा हुआ था। जैसे ही शिवम ने उसे ऊपर उठाना शुरू किया तो वह झट से खुद को संभालने के लिए अपने सीने के भार को शिवम के सिर पर टिका दिया। उसकी भारी भारी स्तन जो अब तक पसीने से भींग गई थी वो शिवम के माथे से जा टकराई। शिवम के नथुनों में सोनिया के जिस्म की तथा उसके पसीने की महक समाती चली गई। शिवम को किसी नशे के जैसा आभास हुआ।

" वाह शिवम तुमने तो मुझे किसी रुई की बोरी की तरह उठा लिया। " सोनिय ा ने ह॔ कर कह ा __" अब और ऊपर उठाओ ताकि मैं उस आम को तोड़ सकूँ। "

शिवम ने उसे पूरा ऊपर उठा दिया। सोनिया का नंगा पेट शिवम के चेहरे के पास था। उसकी गोरी सी किन्तु गहरी नाभी शिवम की ऑखों के बिलकुल पास थी। उसका पेट एकदम गोरा और बेदाग़ था। शिवम इस सबको देखना नहीं चाहता था मगर क्या करे मजबूरी थी। उसे अपने अंदर अजीब सी मदहोशी का एहसास हो रहा था। उधर सोनिया मन ही मन मुस्कुराए जा रही थी। आम का वो फल तो उसके हाँथ में ही छू रहा था जिसे वह बड़े आराम से तोड़ सकती थी किन्तु वह चाहती थी इस परिस्थिति में शिवम उसके साथ कुछ तो करे ही। ये सच था कि अगर शिवम उसे वहीं पर लेटा कर उसका भोग भी करने लग जाता तो उसे कोई ऐतराज न होता मगर ये संभव नहीं था।

शिवम सोनिया के पेट पर अपने चेहरे को छूने नहीं देना चाहता था। वह जानता था कि गर्मी किसी के संभाले नहीं सम्हलती। गर्मी जब सिर चढ़ने लगती है तो सबसे पहले विवेक का नास होता है। उसके बाद सब कुछ तहस नहस हो जाता है। उधर सोनिया बखूबी समझती थी कि शिवम कलियुग का हरिश्चन्द्र है, यानी वो किसी भी कीमत वो नहीं करेगा जो वह चाहती है। मतलब जो कुछ करना था उसे स्वयं ही करना था।

सोनिया ने महसूस किया कि शिवम उसके नंगे पेट से अपने चेहरे को दूर हटाने की कामयाब कोशिश कर रहा है। ये देख कर सोनिया ने अपने जिस्म को अजीब से अंदाज़ में इस तरह हिलाया कि शिवम को यही लगे कि वह अपना संतुलन बनाए रखने के लिए ही ऐसा किया है। सोनिया ने जैसे ही अपने जिस्म को हिलाया वैसे ही उसका पेट शिवम के चेहरे से जा लगा। उसका मुह और नॉक बिलकुल उसकी गहरी नाभी में मानो दब सा गया था। शिवम सिंह इससे बुरी तरह विचलित हो गया। उसने पुनः अपने चेहरे को दूर हटाने की कोशिश की किन्तु इस बार वह कामयाब न हुआ। क्योंकि सोनिया ऊपर से उससे चिपक सी गई थी। शिवम सिंह की हाँथ की पकड़ ढीली पड़ गई। परिणामस्वरूप सोनिया का जिस्म नीचे खिसकने लगा।

" क्या कर रहे हो शिवम ?" सोनिय ा ने शीघ्रत ा से कह ा __" ठीक से पकड़ो न मुझे। "

" आपने आम तोड़ लिया कि नही ं ?" शिवम ने उसे फिर सै ऊपर उठाते हुए कह ा __" जल्दी तोड़िये न भाभी। "

" क्या हुआ शिवम ?" सोनिया हॅस कर बोली __" मेरा भार नहीं संभाला जा रहा क्या तुमसे ?"

" ऐसी बात नहीं है भाभी। " शिवम ने झिझकते हुए कहा __" पर एक आम तोड़ने में कितना समय लगेगा आपको ?"

" अरे मैं एक आम थोड़ी न तोड़ रही हूँ शिवम। " सोनिया ने कहा __" कई सारे तोड़ रही हूँ ताकि तुम्हें बार बार उठाना ना पड़े मुझे। "

" ठीक है भाभी। " शिवम ने कहा __" पर ज़रा जल्दी कीजिए न क्योंकि खेतों में काम करने वाले मजदूरों के आने का समय हो गया है। "

" अच्छा ठीक है। " सोनिया ने कहा __" अब और आम नहीं तोड़ूँगी। अब आहिस्ता से नीचे उतारो मुझे। "

शिवम सिंह तो जैसे यही चाहता था। उसने अपनी पकड़ ढीली कर दी जिससे सोनिया नीचे खिसकने लगी। उसने दोनो हाँथों में आम लिया हुआ था इस लिए सहारे के लिए उसने कोहनी टिकाया हुआ था शिवम पर। सोनिया का भारी छातियाँ शिवम के चेहरे पर से रगड़ खाती हुई घप्प से उसके सीने में जा लगी। सोनिया के मुह से मादक सिसकारी निकल गई। शिवम ने उसकी इस सिसकारी को स्पष्ट सुना था।

" उफ्फ शिवम बड़े चालू हो तुम तो। " सोनिया ने हॅस कर कहा __" मेरे दोनो हाँथों में आम हैं इस लिए ठीक से संतुलन नहीं बना पाई और तुम इसी का फायदा उठा रहे हो। चलो कोई बात नहीं। कम से कम आम तो मिल ही गए मुझे। चलो दोनो बैठ कर खाते हैं यहीं पेड़ की ठंडी छॉव के नीचे बैठ कर। "

" आप खा लीजिए भाभी। " शिवम ने असहज भाव से कहा __" मैं तो रोज़ ही खाता हूँ। अभी ठीक से पके नहीं हैं। एक हप्ते बाद इनमें मीठापन आ जाएगा। "

" देखो न शिवम यहाँ कितना अच्छा लग रहा है। " सोनिया ने कहा __" पेड़ों की छॉव और मदमस्त करने वाली ठंडी ठंडी हवा। इस हवा के सामने तो एसी भी फेल है। मन करता है यहीं पर सारा दिन बैठी रहूँ। घर में पंखा और कुलर में भी गर्मी शान्त नहीं होती और ऊपर से बीच बीच में लाइट चली जाती हो तो फिर समझो कि प्राण ही निकलने लगते हैं। "

" हाँ गॉवों में तो लाइट का आना जाना लगा ही रहता है। " शिवम ने कहा __" मैं सोच रहा हूँ कि हवेली में एक दो जनरेटर रखवा देता हूँ ताकि अगर लाइन न रहे तो उसके द्वारा बिजली मिल सके और किसी को इस गर्मी में परेशान न होना पड़े। "

" ये तो तमने बहुत अच्छा सोचा है। " सोनिया ने कहने के साथ ही वहीं पेड़ के नीचे साफ करने के बाद साड़ी के पल्लू को बिछा कर बैठ गई। उसे इस तरह पल्लू को बिछाकर बैठते

देख शिवम हैरान रह गया। उसकी भारी छातियॉ उसके बड़े गले वाले ब्लाउज से स्पष्ट नुमायॉ हो रही थी।

" आओ न शिवम तुम भी मेरे पास ही बैठ जाओ। " सोनियाा ने एक आम को उठाकर कहाा _" ऐसा लगता है कि इन्हें पहले पानी से धोना पड़ेगा। "

" जी बिलकुल भाभी। " शिवम ने कहाा _" इन्हें धोना ही पड़ेगा वरना इनका जो रस होता है वो अखर बदन में लग जाएगा तो वहाँ इनफेक्शन होने की संभावना होती है। "

" तो अब क्या करें शिवम ?" सोनियाा ने कहाा _" मेरा मतलब पानी तो यहाँ पर है नहीं। "

" दीजिए मैं इन्हें धोकर लाता हूँ। " शिवम ने कहा और उन सारे आमो को उठा कर बाग़ से बाहर चला गया।

" कितने भोले हो शिवम। " शिवम के जाने के बाद सोनियाा बड़बड़ाई __" किन्तु समझते सब कुछ हो। और शायद ये भी समझ ही गए होगे कि तुम्हारी भाभी एक नंबर की छिनाल या रांड़ है। उफ्फ शिवम क्या करू तुम्हाराा ? तुम्हारी जगह कोई और होता तो अब तक मुझे मेरे आगे पीछे से पेल चुका होता था। तुम भी मुझे पेलोगे शिवम .... बस थोड़ा और मेहनत करनी पड़ेगी तुम्हें पटाने में। और अगर उससे भी न पटे तो फिर आख़िर में एक ही चारा रह जाएगा। हाय शिवम आ जाओ न .... समझ क्यों नहीं रहे हो कि तुम्हारी ये रांड़ भाभी यहाँ बाग़ में अकेले तुम्हारे साथ मज़े करना चाहती है। मुझे अपनी मजबूत बाहों में कस लो न शिवम .... मेरे जिस्म से ये कपड़े चीर फाड़ कर निकाल दो और टूट पड़ो मुझ पर। आहहहहहह शशशशश शिवम मुझे तब तक पेलो जब तक की मेरा दम न निकल जाए। देख लो शिवम .... तुम्हारी ये रांड़ भाभी सिर्फ तुम्हारे लिए यहाँ आई है। मुझे मसल डालाो ..... मुझे रगड़ डालाो ..... हाय मेरे अंदर की इस आग को शान्त कर दो शिवम। "

पेड़ के नीचे बैठी सोनिया हवस व वासना के हाथो अंधी होकर जाने क्या क्या बड़बड़ाए जा रही थी। कुछ ही देर में शिवम सिंह आ गया और उसने धुले हुए आमों को एक बाँस की टोकरी में रख कर लाया था। उसने सोनिया की तरफ देखा तो चौंक पड़ा।

" आपको क्या हुआ भाभाी ?" शिवम ने हैरानी से कहाा __" आपका चेहरा इतना लाल सुर्ख क्यों हो रखा हाै ? कहीं आपको लू तो नहीं लग गई। हे भगवान आपकी तबीयत तो ठीक है न भाभी। "

" मैं एकदम ठीक हूँ शिवम। " शिवम को अपने लिए फिक्र करते देख सोनियाा को पल भर के लिए अपनी सोच पर ग्लानी हुई उसके बाद उसने कहाा __" और मेरे लिए तुम्हारी ये फिक्र देख कर मुझे बेहद खुशी भी हुई। मैं जानती हूँ तुम सब हमें अपना समझते हो तथा हमारे लिए तुम्हारे अंदर कोई मैल नहीं है। एक हम थे कि अपनो से ही बेगाने बन गए थे। मुझे माफ़ कर दो शिवम .... । " कहने के साथ ही सोनियाा की आँखों में आँसू आ गए और वह एक झटके से उठ कर शिवम से लिपट गई।

शिवम उसकी इस हरकत से हैरान रह गया था। किन्तु सोनिया की सिसकियों का सुन कर वह यही समझा कि ये सब उसने भावना में बह कर किया है। लेकिन भला वह क्या जानता था कि औरत उस बला का नाम है जिसका रहस्य देवता तो क्या भगवान भी नहीं समझ सकते।

उस दिन के बाद से तो जैसे सोनिया का यह रोज़ का काम हो गया था। वह हर रोज़ शिवम सिंह के लिए खाने का टिफिन और दूध लेकर खेतों पर जाती और वहाँ पर शिवम को अपना अधनंगा जिस्म दिखा कर उसे अपने रूपजाल में फाँसने की कोशिश करती। किन्तु शिवम सिंह उसके जाल में फँस नहीं रहा था। ये बात सोनिया को भी समझ में आ गई थी कि शिवम सिंह उसके जाल में फँसने वाला नहीं है। उधर रेणुका की तबीयत अब ठीक हो चुकी थी इस लिए खाने का टिफिन वह खुद ही लेकर जाने लगी थी। सोनिया अपना मन मसोस कर रह गई थी। सत्यम सिंह खुद भी परेशान था इस बात से कि शिवम सिंह कैसे उसके जाल में फँसे?

सत्यम सिंह ये भी जानता था कि उसके भाई के जैसी ही उसकी मँझली बहू यानी रेणुका थी। वह भी उसके जाल में फँसने वाली नहीं थी। ऐसे ही दिन गुज़र रहे थे। रेणुका की तबीयत सही होने के बाद सोनिया को फिर खेतों में जाने का कोई अच्छा सा अवसर ही नहीं मिल पाता था। इधर रेणुका भी अपने पति शिवम सिंह को खाना लेकर हवेली से खेतों पर चली जाती और फिर वह वहीं रहती। शाम को ही वह वापस हवेली में आती थी। इस लिए सत्यम सिंह भी कोई मौका नहीं मिल पाता था उसे फँसाने के लिए।

पिछले एक महीने से सोनिया शिवम सिंह को अपने रूप जाल में फसाने की कोशिश कर रही थी। शुरू शुरू में तो उसने अपने मन की बातों को उससे उजागर नहीं किया था। बल्कि हर दिन वह शिवम सिंह से ऐसी बाते करती जैसे वह उसकी कितनी फिक्र करती है। भोला भाला शिवम सिंह यही समझता कि उसकी भाभी कितनी अच्छी है जो उसकी फिक्र करती है और हर रोज़ समय पर उसके लिए इतनी भीषण धूप व गर्मी में खाना लेकर आती है। इन बीस दिनों में शिवम सिंह भी कुछ हद तक सहज फील करने लगा था अपनी भाभी से। सोनिया उससे खूब हँसती बोलती और बात बात पर उसके गले लग जाती। शिवम सिंह को उसका इस तरह अपने गले लग जाना अच्छा तो नहीं लगता था किन्तु ये सोच कर वह चुप रह जाता कि सोनिया शहर वाली औरत है और इस तरह अपनो के गले लग जाना शायद उसके लिए आम बात है। ऐसे ही एक दिन बातों बातों में सोनिया ने शिवम सिंह से कहा_"हम दोनो देवर भाभी इतने दिनों से खुशी खुशी हँसते बोलते रहे और फिर एक दिन मैं चली जाऊँगी शहर। वहाँ मुझे ये सब बहुत याद आएगा। मुझे तुम्हारे साथ यहाँ इस तरह हँसना बोलना और मज़ाक करना बहुत अच्छा लग रहा है। रात में भी मैं तुम्हारे बारे में ही सोचती रहती हूँ। ऐसा लगा करता है शिवम कि कितनी जल्दी सुबह हो और फिर कितनी जल्दी मैं दोपहर में तुम्हारे लिए खाना लेकर जाऊँ? हाय ये क्या हो गया है मुझे? क्यों मैं तुम्हारी तरफ इस तरह खिंची चली आती हूँ शिवम? क्या तुमने मुझ पर कोई जादू कर दिया है?"

सोनिया की ये बातें सुन कर शिवम सिंह को ज़बरदस्त झटका लगा। उसकी तरफ देखते हुए इस तरह खड़ा रह गया था जैसे किसी ने उसे पत्थर बन जाने का श्राप दे दिया हो। मनो मस्तिष्क में धमाके से हो रहे थे उसके। जबकि उसकी हालत से बेख़बर सोनिया कहे जा रही थी__"इन चंद दिनों में ये कैसा रिश्ता बन गया है हमारे बीच? तुम्हारा तो पता नहीं शिवम लेकिन मुझे अपने अंदर का समझ आ रहा है। मुझे लगता है कि मुझे तुमसे प्रेम हो गया है। हे भगवान! कोई और सुने तो क्या कहे? प्लीज़ शिवम मुझे ग़लत मत समझना। ऐसा हो जाता है कि कोई हमें अच्छा लगने लगता है और उससे प्यार हो जाता है। कसम से शिवम मुझे

इसका पता ही नहीं चला।"

शिवम सिंह के दिलो दिमाग़ होने वाले धमाके अब और भी तेज़ हो गए थे। सोनिया का एक एक शब्द पिघले हुए शीशे की तरह उसके हृदय पर पड़ रहा था। उसकी हालत देखने लायक हो गई थी। चेहरे पर बारह क्या पूरे के पूरे चौबीस बजे हुए थे। पसीने से तर चेहरा जिसमें हल्दी सी पुती हुई थी।

सहसा सोनिया ने उसे ध्यान से देखा तो बुरी तरह चौंकी। उसे पहले तो समझ न आया कि शिवम सिंह की ये अचानक ही क्या हो गया है फिर तुरंत ही जैसे उसके दिमाग़ की बत्ती जल उठी। उसे समझते देर न लगी कि उसकी इस हालत का कारण क्या है? एक ऐसा इंसान जिसे रिश्तों की क़दर व उसकी मान मर्यादाओं का बखूबी ख़याल हो तथा जो कभी भी किसी कीमत पर किसी पराई औरत के बारे में ग़लत ख़याल तक न लाता हो उसकी हालत ये जान कर तो ख़राब हो ही जाएगी कि उसकी अपनी भाभी उससे प्रेम करती है। ये बात उससे कैसे पच सकती थी भला? अभी तक जितना कुछ हो रहा था वही उससे नहीं पच रहा था तो फिर इतनी संगीन बात भला कैसे पच जाती?

" शी.. शिवम। " सोनिया ने उसे उसके कंधों से पकड़ कर ज़ोर से झकझोरा __" ये ये क्या हो क्या हो गया है तुम्हें ?"

सोनिया के झकझोरने पर शिवम सिंह बुरी तरह चौंका। उसके मनो मस्तिष्क ने तेज़ी से काम करना शुरू कर दिया। अपने नज़दीक सोनिया को अपने दोनो कंधे पकड़े देख वह तेज़ी से पीछे हट गया। इस वक्त उसके चेहरे पर बहुत ही अजीब से भाव गर्दिश करते नज़र आने लगे थे।

" शिवम क्या हुआ तुम्हें ?" सोनिया ने चकित भाव से कहा __" देखो शिवम मुझे ख़लत मत समझना। इसमे मेरी कोई ग़लती नहीं है। "

" ये ये अच्छा नहीं हुआ भाभी। " शिवम सिंह ने आहत भाव से कहा __" आप ऐसा कैसे सोच सकती हैं ? जबकि आपको पता है कि ऐसा सोचना भी पाप है ?"

" मैं जानती हूँ शिवम। " सोनिया ने दुखी होने की ऐक्टिंग की , बोली __" मुझे पता है कि ऐसा सोचना भी ग़लत है। लेकिन ये कैसे हुआ मुझे नहीं पता शिवम । शायद इतने दिनों से एक साथ हँसने बोलने से ऐसा हुआ है। तुम्हारी मासूमियत , तुम्हारा भोलापन तथा तुम्हारी अच्छाईयाँ मेरे दिलो दिमाग़ में उतरती चली गईं हैं। किसी के लिए दिल में भावनाएँ जाग जाना भला किसके अख्तियार में होता है ? ये तो दिल का दखल होता है। उसे जो अच्छा लगता उसके लिए धड़कने लगता है। इसका पता इंसान को तब चलता है जब उसका दिल अंदर से अपने महबूब के लिए बेचैन होने लगता है। वही मेरे साथ हुआ है शिवम । कदाचित तुम मेरे इस नादान व नासमझ दिल को भा गए इस लिए ये सब हो गया। "

" आप जाइये भाभी यहाँ से। " शिवम सिंह ने कहा __" इस बात को यहीं पर खत्म कर दीजिए। अगर आपको अपने अंदर का पता चल गया है तो अब आप वहीं पर रुक जाइए।

अपने क़दमों को रोंक लीजिए। मैं आपके विनती करता हूँ भाभी। कृपया आप जाइये यहाँ से। "

" इतनी कठोरता से मुझे जाने के लिए मत कहो शिवम। " सोनिया ने मगरमच्छ के आँसू छलका दिये , बोली __" तुम भी समझ सकते हो इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। और अपने क़दमों को रोंकना इतना आसान नहीं होता। ये प्रेम बड़ा अजीब होता है शिवम । ये किसी की नहीं सुनता , खुद अपनी भी। "

" मैं कुछ सुनना नहीं चाहता भाभी। " शिवम सिंह ने कहा __" मैं सिर्फ इतना जानता हूँ कि ये ग़लत है और मैं ग़लत चीज़ों के पक्ष में कभी नहीं हो सकता। आप भी इस सबको अपने ज़हन से निकाल दीजिए और हो सके तो कभी भी मेरे सामने मत आइयेगा। "

" ऐसा तुम कैसे कह सकते हो शिवम ?" सोनिया ने रोने का नाटक किया _" मैने इतना बड़ा गुनाह तो नहीं किया है जिसकी सज़ा तुम इस तरह दे रहे हो ? प्रेम तो हर इंसान से होता है। क्या देवर भाभी के बीच प्रेम नहीं हो सकता ? बिलकुल हो सकता है शिवम ... प्रेम तो वैसे भी सबसे पाक होता है। "

" ये सब किताबी बातें हैं भाभी। " शिवम सिंह ने कहा __" आज के युग में प्रेम की परिभाषा कुछ और ही हो गई है। अगर नहीं होती तो आपको अपने पति के अलावा किसी और से प्रेम नहीं होता। प्रेम तो वही है जो किसी एक से ही एक बार होता है और फिर ताऊम्र तक वह सिर्फ उसी का होकर रहता है। किसी दूसरे के बारे में उसके दिल में विचार ही नहीं उठता कभी। "

" ये सबके सोचने का नज़रिया है शिवम कि वो प्रेम के बारे में कैसी परिभाषा को मानता है और समझता है ?" सोनिया ने कहा __" मेरा तो मानना ये है कि प्रेम बार बार होता है। दिल भले ही हज़ारों बार टूट कर बिखर जाए मगर वह प्रेम करना नहीं छोंड़ता। वह प्रेम करता ही रहता है। "

" सबकी अपनी सोच होती है भाभी। " शिवम सिंह ने कहा __" लोग अपने मतलब के लिए ग़लत को भी सही ठहरा देते हैं और उसे साबित भी कर देते हैं। मगर मेरी सोच ऐसी नहीं है। मेरे दिल में मेरी पत्नी के अलावा कोई दूसरा आ ही नहीं सकता। मैं उससे बेइंतहां प्रेम करता हूँ , उसे से मरते दम वफ़ा करू गा। किसी और से मुझे वैसा प्रेम हो ही नहीं सकता। प्रेम में सिर्फ दिल का ही नहीं दिमाग़ का भी दखल होना ज़रूरी है। मन में दृढ़ संकल्पों का होना भी ज़रूरी है। अगर ये सब है तो आपको किसी दूसरे प्रेम हो ही नहीं सकता। "

" हो सकता किसी और के पास तुम्हारे जैसी इच्छा शक्ति या दृढ़ संकल्प न हो। " सोनिया ने कहा __" और वह मेरे जैसे ही किसी दूसरे से भी प्रेम कर बैठे। "

" तो मैं यही कहूँगा कि उसका वो प्रेम निम्न दृष्टि का है। " शिवम सिंह ने कहा __" जो अपने पहले प्रेमी के लिए वफ़ा नहीं कर सका वह अपने दूसरे प्रेमी के साथ भी वफ़ा नहीं कर

सकेगा। क्योंकि संभव है कि कभी ऐसा भी समय आ जाए कि उसे किसी तीसरे इंसान से भी प्रेम हो जाए। तब उसके बारे में क्या कहा जाएगा ? सच्चा प्रेम और सच्ची वफ़ा तो वही है भाभी जो सिर्फ अपने पहले प्रेमी से ही की जाए। उसी हो कर रह जाए। "

सोनिया को समझ ना आया कि अब वह शिवम से क्या कहे? ये बात तो वह खुद भी समझती थी कि शिवम ठीक ही कह रहा है। किन्तु उसे तो शिवम को फॉसना था इस लिए भला कैसे वह हार मान लेती? ये दॉव बेकार चला गया तो कोई दूसरा दॉव सही।

" तो तुम ये कहना चाहते हो कि मैं तुम्हारे बड़े भैया और अपने पति के लिए वफ़ादार नहीं हूॅ ? सोनिया ने कहा __" क्योंकि मुझे उनके अलावा तुमसे प्रेम हुआ ?"

" मैं किसी एक के लिए नहीं कह रहा भाभी बल्कि हर किसी के लिए कह रहा हूॅ। " शिवम सिंह ने कहा __" क्योंकि मेरी सोच यही है। मैं इस जीवन में सिर्फ एक का ही होकर रहना चाहता हूॅ और भगवान से ये प्रार्थना भी करता हूॅ वो अगले जन्मों में भी मुझे मेरी रेणुका का ही रहने दे। "

" ठीक है शिवम। " सोनिया ने सहसा पहलू बदला __" मैं तुमसे ये नहीं कह रही कि तुम रेणुका को छोंड़ कर मुझसे प्रेम करो। किन्तु इतना ज़रूर चाहती हूॅ कि मुझे खुद से इस तरह दूर रहने की सज़ा न दो। मैं तुमसे कभी कुछ नहीं मागूॅगी बस दिल के किसी कोने में मेरे लिए भी थोड़ी जगह बनाए रखना। "

" ऐसा कभी नहीं हो सकता भाभी। " शिवम सिंह दृढ़ता से कहा __" क्योंकि ये रिश्ता ही मेरी नज़र में ग़लत है और ग़लत मैं कर नहीं सकता। हॉ आप मेरी भाभी हैं और मेरे लिए पूज्यनीय हैं इस लिए इस रिश्ते के लिए हमेशा मेरे अंदर सम्मान की भावना रहेगी। देवर भाभी के बीच जिस तरह का स्नेह होता है वो भी रहेगा। मगर वो नहीं जिसकी आप बात कर रही हैं। "

" ऐसा क्यों कह रहे हो शिवम ?" सोनिया ने रुआॅसे भाव की ऐक्टिंग की __" क्या मैं इतनी बुरी लगती हूॅ तुम्हें ? क्या मैं इस काबिल भी नहीं कि तुम्हारा प्रेम पा सकूॅ ?"

" ऐसी बातें आपको करनी ही नहीं चाहिए भाभी। " शिवम सिंह ने बेचैनी से पहलू बदला __" आप मुझसे बड़ी हैं हर तरह से। आपको खुद समझना चाहिए कि ये ग़लत है। जानते बूझते हुए भी आप ग़लत राह पर चलने की बात कर रही हैं। जबकि आपको करना ये चाहिए कि आप खुद को समझाएॅ और इससे पहले कि हालात बिगड़ जाएॅ आप उस माहौल से जल्द से जल्द निकल जाइये। "

सोनिया की सारी कोशिशें बेकार रहीं। शिवम सिंह को तो जैसे उसकी कोई बात ना माननी थी और ना ही माना उसने। थक हार कर सोनिया वहॉ से हवेली लौट आई थी। हवेली में उसने अपने पति से आज की सारी महाभारत बताई। उसकी सारी बातें सुन कर सत्यम सिंह हैरान रह गया। उसे समझ न आया कि उसका भाई आख़िर किस मिट्टी का बना हुआ है? किन्तु

आज की बातों से कहीं न कहीं उसे ये उम्मीद ज़रूर जगी कि आज नहीं तो कल शिवम सिंह सोनिया के सामने अपने हथियार डाल ही देगा। अगले दिन जब सोनिया फिर से शिवम के लिए टिफिन तैयार करने किचेन में गई तो रेणुका को उसने किचेन में टिफिन तैयार करते देखा।

" अब कैसी तबीयत है रेणुका ?" सोनिया ने किचेन में दाखिल होते हुए पूछा था।

" अब ठीक हूँ दीदी। " रेणुका ने पलट कर देखते हुए कहा __" इस लिए मैने सोचा कि उनके लिए टिफिन तैयार करके खेतों पर चली जाऊँ। "

" अरे तुम अभी थोड़े दिन और आराम करो रेणुका। " सोनिया ने कहा __" अभी अभी तो ठीक हुई हो। बाहर बहुत तेज़ धूप और गर्मी है। ऐसे में फिर से बीमार हो जाओगी तुम। मैं तो रोज़ ही शिवम को खाना दे आती हूँ। लाओ मुझे मैं देकर आती खाना शिवम को। "

" अरे अब मैं बिलकुल ठीक हूँ दीदी। " रेणुका ने कहा __" आप चिन्ता मत कीजिए। दो चार दिन से आराम ही तो कर रही थी मैं। "

" अरे तो अभी और कुछ दिन आराम कर लो रेणुका। " सोनिया ने कहा __" और वैसे भी मैं कुछ दिनों बाद चली जाऊँगी क्योंकि बच्चों के स्कूल खुलने वाले हैं। मुझे अच्छा लगता है खेतों में। वहाँ पर आम के बाग़ों में कितनी मस्त हवा लगती है। कितना सुकून मिलता है वहाँ। मैं तो शिवम को खाना देने के बाद वहीं चली जाती हूँ और वहीं पर पेड़ों की घनी छाँव में बैठी रहती हूँ। यहाँ से तो लाख गुना अच्छा है वहाँ। "

" हाँ ये तो आपने सही कहा दीदी। " रेणुका ने मुस्कुरा कर कहा __" वहाँ की बात ही अलग है। इसी लिए तो मैं दिन भर वहीं उनके पास ही रहती हूँ। "

" तुम तो हमेशा ही रहती हो रेणुका। " सोनिया ने मुस्कुरा कर कहा _" और वहीं पर तुम दोनो मज़ा भी करते हो। है ना ??"

" क्या दीदी आप भी कैसी बातें करती हं ?" रेणुका ने शरमा कर कहा __" ये सब खेतों में थोड़ी न अच्छा लगता है। "

" ख़ैर छोड़ो। " सोनिया ने कहा __" दो चार दिन बचे हैं तो मुझे वहाँ की ठंडी छाँव का आनन्द ले लेने दो। उसके बाद तुम जाती रहना। "

" हाँ तो ठीक है न दीदी। " रेणुका ने कहा _" हम दोनो चलते हैं और वहाँ की ठंडी छाँव का आनंद लेंगे। "

" तुम अभी अभी बीमारी से बाहर आई हो रेणुका। " सोनिया ने कहा __" इस लिए तुम्हें अभी इतनी धूप में बाहर नहीं निकलना चाहिए। मैं तुम्हारे स्वास्थ के भले के लिए ही कह रही हूँ और तुम हो ज़िद किये जा रही हो ? अपनी दीदी का बिलकुल भी कहा नहीं मान रही हो तुम। या फिर तुम्हारी नज़र में मेरी कोई अहमियत ही नहीं है। ठीक है रेणुका करो जो तुम्हें

अच्छा लगे। "

" अरे नहीं दीदी। " रेणुका ने जल्दी से कहा __" आपकी अहमियत तो बहुत ज्यादा है हम सबकी नज़र में। मैं तो बस इस लिए कह रही थी कि आप इतने दिनों से धूप और गर्मी में परेशान हो रही हैं। और भला मैं कैसे आपकी बात टाल सकती हूँ दीदी ? मुझे तो बेहद खुश हूँ कि आप मेरे हित की बारे में सोच रहीं हैं। "

" तो फिर लाओ वो टिफिन मुझे दो। " सोनिया ने जो इमोशनली उसे ब्लैकमेल किया था उसमें वह सफल हो गई थी , बोली __" मैं शिवम को खाना देने जा रही हूँ और तुम अभी आराम करो अपने कमरे में। "

" जी ठीक है दीदी। " रेणुका ने मुस्कुरा कहा और टिफिन सोनिया को पकड़ा दिया। सोनिया टिफिन लेकर किचेन से बाहर निकल गई। जबकि रेणुका खुशी खुशी ऊपर अपने कमरे की तरफ बढ़ गई।

सोनिया जब खेतों पर पहुँची तो वहाँ का माहौल देख कर उसके सारे अरमानों पर पानी फिर गया। दरअसल आज पिछले दिनों के विपरीत शिवम सिंह खेतों पर अकेला नहीं था। बल्कि उसके साथ कई मजदूर भी खेतों पर आज नज़र आ रहे थे। कदाचित शिवम सिंह को अंदेशा था कि सोनिया आज भी उसके लिए टिफिन लेकर आएगी और फिर यहाँ पर वह फिर से अपने प्रेम का बेकार ही राग अलापने लगेगी। इस लिए शिवम सिंह ने कुछ मजदूरों को कल ही बोल दिया था कि वो अपने लिए दोपहर का खाना घर से ही ले आएँगे और यहीं पर खाएँगे। शिवम सिंह के कहे अनुसार कई मजदूर आज यहीं पर थे।

सोनिया ये सब देख कर अंदर ही अंदर जल भुन गई थी। उसे शिवम सिंह से ऐसी उम्मीद हर्गिज़ नहीं थी। वह तो उसे निहायत ही शान्त और भोला समझती थी। किन्तु आज उसे भोले भाले शिवम ने अपना दिमाग़ चला दिया था जिसका असर ये हुआ था कि सोनिया अब कुछ नहीं कर सकती थी।

सोनिया जैसे ही मकान के पास पहुँची तो एक मजदूर उसके पास आया और बड़े अदब से बोला__"मालकिन, मॅझले मालिक हमका बोले कि आपसे उनके खाने का टिफिनवा ले आऊँ। काह है ना मालकिन आज मॅझले मालिक हम मजदूरों के साथ ही खाना खाय चाहत हैं। ई हमरे लिए बहुतै सौभाग्य की बात है। दीजिए मालकिन या टिफिनवा हम ले जात हैं।"

सोनिया भला क्या कह सकती थी। वह तो अंदर ही अंदर जल कर खाक़ हुई जा रही थी। उसने आए हुए मजदूर को टिफिन पकड़ाया और पैर पटकते हुए मकान के अंदर चली गई और कमरे में जाकर चारपाई पर पसर गई। गुस्से से उसका चेहरा लाल सुर्ख पड़ गया था।

" ये तुमने अच्छा नहीं किया शिवम। " सोनिया खुद से ही बड़बड़ा रही थी __" तुम जिस चीज़ को अपनी समझदारी या होशियारी समझ रहे हो वो दरअसल मेरा अपमान है। तुम दिखाना चाहते हो कि तुम्हारी नज़र में मेरी कोई अहमियत ही नहीं है। कितना अपने प्रेम का

मैने तुमसे कल रोना रोया था किन्तु तुमने उसे ठुकरा दिया ये कह कर कि ये ग़लत है। अरे सही ग़लत आज के युग में कौन देखता है शिवम ? चार दिन का जीवन है उसे हॅस खुशी और आनंद के साथ जियो। मगर तुम तो सच्चे प्रेम का राग अलापे जा रहे हो। क्या है इस सच्चे प्रेम मेंं ? बताओ शिवम क्या हासिल कर लोगे इस सच्चे प्रेम मेंं ? अरे एक ही औरत के पल्लू में बॅधे हो तुम। ये कैसा प्रेम है जिसने तुम्हें बॉध कर रखा हुआ हैै ?"

जाने कितनी ही देर तक सोनिया यूॅ ही बड़बड़ाती रही और ऐसे ही सो गई वह। फिर जब उसकी नीद खुली तो हड़बड़ा कर चारपाई से उठी वह। अभी वह उठ कर कमरे से बाहर ही जाने वाली थी कि तभी शिवम किसी काम से कमरे में आ गया।

कमरे में अपनी भाभी को देख कर शिवम सिंह हैरान रह गया। उसने तो सोचा था कि सोनिया उसी समय वापस चली गई होगी किन्तु यहॉ तो वह अभी भी है। सोनिया को देखकर शिवम हैरान हुआ फिर जल्द बाहर जाने के लिए पलटा।

" रुक जाओ शिवम। " सोनियाा ने सहसा ठंडे स्वर में कहाा __" क्या समझते हो तुम अपने आपकाे ? क्या सोच कर तुमने यहॉ मजदूरों को बुलाया हुआ था बताओ ?"

" क कुछ भी तो नहीं भाभी। " शिवम सिंह हड़बड़ा गया थाा __" मैंने उन्हें नये फलों की फसल के बुलाया था। ताकि खेतों को उनके लिए तैयार किया जा सके। "

" झूठ मत बोलो शिवम। " सोनियाा ने आवेश मेः कहाा __" मुझे अच्छी तरह पता है कि तुमने मजदूरों को यहॉ दोपहर में क्यों बुलाया थाा ? तुम समझते थे कि तुम्हें हर दिन की तरह यहॉ अकेले देख कर मैं फिर से अपने प्रेम की बातें तुमसे करूॅ गी। इसी सबसे बचने के लिए तुमने ये सब किया है नाा ?"

" आप बेवजह बातें बना रही हैं भाभी। " शिवम सिंह ने कहाा __" जबकि सच्चाई यही है कि मैने फलों की फसल के लिए ही मजदूरों को यहॉ बुलाया है। "

" झूठ , सरासर झूठ है ये। " सोनियाा एक झटके से चारपाई से उठ कर शिवम के पास आ गई , फिर बोलाी __" जो इंसान हमेशा सच बोलता है वो अगर कभी किसी वजह से झूठ बोले तो उसका वह झूठ तुरंत ही पकड़ में आ जाता है शिवम । मैं कोई अनपढ़ गवार नहीं हूॅ बल्कि कानून की पढ़ाई की है मैने। मनोविज्ञान का बारीकी से अध्ययन किया है मैने। मैं पल में बता सकती हूॅ कि कौन व्यक्तिि कब झूठ बोल रहा हैै ?"

" चलिये मान लिया कि यही सच है। " शिवम सिंह ने कहाा __" यानी मैने आपसे बचने के लिए ही मजदूरों को यहॉ बुलाया था। तब भी क्या ग़लत किया मैनेे ? मैने तो वही किया जो ऐसी परिस्थिति में किसी समझदार आदमी को करना चाहिए। मैं वो नहीं सुनना चाहता और ना ही होने देना चाहता जो आप कहना या करना चाहती हैं। मैने कल भी आपसे कहा था कि ये ग़लत है और हमेशा यही कहता भी रहूॅगा। मैं ख़ैर अनपढ़ ही हूॅ लेकिन आप तो पढ़ी लिखी हैं न ? आपको तो रिश्तों के बीच के संबंधों का अच्छी तरह पता होगा कि किन रिश्तों के बीच

किन रिश्तों को देश समाज सही ग़लत अथवा जायज़ नाजायज़ ठहराता है ? अगर पता है तो फिर ये सब सोचने व करने का क्या मतलब हो सकता है ? आपको तो पता है कि आपके दिल में मेरे प्रति क्या है तो क्यों नहीं उसे निकाल देती आप ? क्यों रिश्तों के बीच इस पाप को थोपना चाहती हैं आप ?"

" किस युग में तुम जी रहे हो शिवम किस युग मेां ?" सोनियाा ने कहाा __" आज के युग के अनुसार जीना सीखो। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। तुम भी प्रकृति के नियमों के अनुसार खुद को बदलो। जो समय के साथ नहीं बदलता उसे वक्त बहुत पीचे छोंड़ देता है। "

" अगर परिवर्तन इसी चीज़ के लिए होता है तो माफ़ करना भाभी। " शिवम ने कहाा _" मुझे आज के इस युग के अनुसार खुद को बदलना गवारा नहीं है। वक्त मुझे पीछे छोंड़ कर कहॉ चला जाएगा मुझे इसकी कोई चिन्ता नहीं है। मेरी आत्मा तथा मेरा ज़मीर जिस चीज़ को स्वीकार नहीं कर रहा उस चीज़ को मैं किसी भी कीमत पर अपना नहीं सकता। अब आप जा सकती हैं , क्योंकि इससे ज्यादा मैं इस बारे में कोई बात नहीं करना चाहता। "

इतना कह कर शिवम बाहर की तरफ जाने ही लगा था कि सोनिया झट से उसके पीछे से चिपक गई और फिर दुखी होने का नाटक करते हुए बोली__"ऐसे मुझे छोंड़ कर मत जाओ शिवम। मैं खुद को समझाऊॅगी इसके लिए। शायद मेरे दिल से तुम्हारा प्रेम मिट जाए। लेकिन तब तक तो हम कम से कम पहले जैसे हॅस बोल सकते है ना?"

" अब ये संभव नहीं है भाभी। " शिवम ने तुरंत ही खुद को उससे अलग करके कहाा _" अब हालात बदल चुके हैं। आप मुझे किसी बात के लिए मजबूर मत कीजिए। मैं नहीं चाहता कि ये बात हमारे बीच से निकल कर घर वालों तक पहुॅच जाए। "

शिवम सिंह के अंतिम वाक्यों में धमकी साफ तौर पर महसूस की जा सकती थी। सोनिया जैसी शातिर औरत को समझते देर न लगी कि अब इससे आगे कुछ भी करना उसके हित में नहीं होगा। इस लिए वह बिना कुछ बोले कमरे से टिफिन उठा कर हवेली के लिए निकल गई।

गर्मी में बच्चों के स्कूल की छुट्टियॉ खत्म होने में कुछ ही दिन शेष रह गए थे। शिवम सिंह शाम को हवेली आ जाता था। एक दिन ऐसे ही सोनिया शिवम के कमरे में पहुॅच गई। उस वक्त रेणुका किचेन में अपर्णा के साथ खाना बना रही थी। जबकि गीता सभी बच्चों को सत्यम सिंह वाले हिस्से में ऊपर अपने कमरें में पढ़ा रही थी। मॉ जी हमेशा की तरह अपने कमरे में थी और बाबू जी गॉव तरफ कहीं गए हुए थे। सुंदर सिंह भी हवेली में नहीं था।

अपने कमरे में शिवम सिंह लुंगी बनियान पहने हुए ऑख बंद किये लेटा था। तभी उसने किसी की आहट से अपने ऑखें खोली। नज़र सोनिया पर पड़ी तो वह बुरी तरह चौंका। एक झटके से वह बेड पर उठ कर बैठ गया। ये पहली बार था कि उसके कमरे में सोनिया आई थी वो भी इस तरह जबकि कमरे में वह अकेला ही था। उसे समझ न आया कि सोनिया यहॉ किस लिए आई है? उसके दिल की धड़कन रेल के इंजन की तरह दौड़ रही थी। उसे डर था कि कहीं

उसकी पत्नी रेणुका न आ जाए। हलॉकि इसमें इतना डरने या घबराने की बात नहीं किन्तु उनके बीच हालात ऐसे थे कि हर बात से डर लग रहा था उसे।

" क्या कर रहे हो शिवम ?" सोनिया ने मुस्कुरा कर कहा __" मैने सोचा एक बार तुम्हारा दीदार कर लूँ तो दिल को सुकून मिल जाए थोड़ा। कई दिन से देखा नहीं था तुम्हें तो दिल बड़ा बेचैन था। अब तो तुम्हारे लिए रेणुका ही टिफिन लेकर जाती है। पता नहीं क्यों तुम मुझसे कटे कटे से रहते हो। अपनी एक झलक भी देखने नहीं देते मुझे। सच कहती हूँ शिवम , तुमको तो ज़रा भी मेरी चिन्ता नहीं है। "

" ऐसी बातें करते हुए आपको शर्म नहीं आती भाभी ?" शिवम सिंह को जाने क्यों आज पहली बार उस पर गुस्सा आया था , उसी गुस्से वाले लहजे में बोला __" अपनी ऊम्र का कुछ तो लिहाज कीजिए। तीन तीन बच्चों की मॉ हैं आप और इसके बाद भी मन में ऐसी फालतू बातें लिए फिरती हैं आप। "

" इश्क़ की न कोई जात होती है शिवम और ना ही कोई ऊम्र होती है। " सोनिया ने दार्शनिकों वाले अंदाज़ में कहा __" इश्क़ तो कभी भी किसी से भी किसी भी ऊम्र में हो सकता है। मुझे एक बार फिर से इस ऊम्र में तुमसे हो गया तो क्या करूं मैं ? ये तो मेरे दिल की ख़ता है शिवम , इसमें मेरा कोई कसूर नहीं है। "

" देखिये भाभी। " शिवम ने कहा __" मैं आपकी बहुत इज़्ज़त करता हूँ। और मैं चाहता हूँ कि मेरे दिल में आपके लिए ये इज़्ज़त ऐसी ही बनी रहे। इस लिए बेहतर होगा कि आप खुद भी अपने मान सम्मान की बात सोचें। अब आप जाइये यहॉ से। "

" इतने कठोर तो नहीं थे शिवम तुम ?" सोनिया ने उदास भाव से कहा _" हमारे बीच कितना हॅसी मज़ाक होता था पहले। कितना खुश रहते थे न हम दोनो वहॉ खेतों पर ? वो भी तो एक प्रेम ही था शिवम । अगर नहीं होता तो क्या हमारे बीच वैसा हॅसना बोलना होता ?"

" वो सब देवर भाभी के पाक रिश्तों का प्रेम था भाभी। " शिवम ने कहा __" जबकि आज का आपका ये प्रेम उस पाक प्रेम से बहुत जुदा है। "

" कैसे जुदा है शिवम ?" सोनिया ने कहा _" वैसा ही तो है आज भी। तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि वो प्रेम इस प्रेम से बहुत जुदा हो ?"

" मैं इस बारे में कोई बात नहीं करना चाहता भाभी। " शिवम ने बेचैनी से कहा _" और अब आप जाइये यहॉ से। मैं आपके पैर पड़ता हूँ , कृपया जाइये यहॉ से। "

सोनिया देखती रह गई शिवम सिंह को। उस शिवम सिंह को जिसके इरादे तथा जिसके संकल्प किसी फौलाद से भी ज्यादा ठोस व मजबूत थे। कुछ देर एकटक शिवम को देखने के बाद सोनिया वहॉ से अंदर ही अंदर जलती भुनती चली आई।

२७

वर्तमान____

सोनपुर पुलिस स्टेशन!!

साक्षी अपनी पुलिस जिप्सी से नीचे उतरी और थाने के अंदर लंबे लंबे कदमों के साथ बढ़ गई। आस पास मौजूद पुलिस के सिपाहियों ने उसे सैल्यूट किया जिसका जबाव वह अपनी गर्दन को हल्का सा खम करते हुए दे रही थी। कुछ ही पल में वह अपने केबिन में पहुँची और टेबल के उस पार रखी कुर्सी पर बैठ गई। तभी उसके केबिन में हवलदार रामसिंह दाखिल हुआ।

" कहो रामसिंह क्या रिपोर्ट है लोकेशन की ?" साक्षी ने पूछा उससे।

" मैडम पक्की ख़बर है। " रामसिंह ने कहा _" उस नेता का वो हरामी कपूत अपने फार्महाउस पर अपने कुछ लफंगे दोस्तों के साथ ऐश फरमा रहा है। "

" ख़बर पक्की है ना ?" साक्षी ने गहरी नज़र से रामसिंह की तरफ देखा।

" सौ टका पक्की है मैडम। " रामसिंह ने खींसें निपोरते हुए कहा _" अपनी बेवफा बीवी की कसम। "

" बेवफ़ा बीवी ???" साक्षी ने हैरानी से रामसिंह की तरफ देखा __" ये क्या बोल रहे हो तुम रामसिंह ?"

" अब बेवफा को बेवफा न बोलूँ तो और क्या बोलूँ मैडम ?" रामसिंह ने सहसा दुखी भाव से कहा __" मेरा एक पड़ोसी है ... नाम है चालूराम। जैसा नाम वैसा ही है वो मैडम। चालूराम बड़ी चालाकी से मेरी बीवी को फँसा लेता है और फिर उसके साथ चालू हो जाता है। इतना ही नहीं मेरी बीवी भी उसके साथ चालू हो जाती है। इन दोनो के चालूपन ने मेरा जीना हराम कर रखा है मैडम। "

" ओफ्फो रामसिंह। " साक्षी का दिमाग़ मानो चकरा सा गया __" ये क्या बकवास कर रहे हो तुम ? कौन चालूराम और कैसा चालूपन ?"

" जाने दीजिए मैडम। " रामसिंह ने गहरी साँस ली __" मेरी तो बड़ी दुखभरी दास्तां है। "

" अच्छा छोड़ो ये सब। " साक्षी ने कहा __" दो चार हवलदार को लो हाथ में और मेरे साथ चलो जल्दी। "

" जी मैडम। " रामसिंह ने नाटकीय अंदाज़ में सैल्यूट बजाया और केबिन से बाहर निकल गया। उसके पीछे साक्षी भी बाहर आ गई।

बाहर चलते हुए साक्षी ने पॉकेट से मोबाइल फोन निकाला और उसमें कोई नंबर डायल कर

उसे कान से लगा लिया।

" जय हिन्द सर। " साक्षी ने कहा __" मुझे इमेडिएटली एक सर्च वारंट चाहिए। "

"....."

" आप फिक्र मत कीजिए सर। " साक्षी कह रही थी ___" मैं सब संभाल लूँगी। आप बस दो मिनट के अंदर मुझे वारंट का काग़ज फैक्स कर दीजिए। "

"....."

" डोन्ट वरी सर। " साक्षी ने कहा __" आई विल हैण्डल इट। "

"....."

" जय हिन्द सर। " साक्षी ने कहा और काल डिस्कनेक्ट करके मोबाइल पुनः पॉकेट में डाल लिया।

ठीक दो मिनट बाद ही फैक्स मशीन से एक कागज़ निकला। साक्षी के इशारे पर वहीं खड़े रामसिंह ने उस कागज़ को फैक्स मशीन से लेकर साक्षी को पकड़ा दिया। साक्षी ने ध्यान से कागज़ में लिखे मजमून को देखा और फिर उसे फोल्ड करके पॉकेट में डाल लिया।

" रामसिंह सबको लेकर मेरे साथ चलो। " साक्षी ने कहा थाने के बाहर खड़ी जिप्सी के पास आ गई। ड्राईविंग सीट पर खुद बैठी वह। चार हवलदारों के बैठते ही उसने जिप्सी को स्टार्ट कर मेन रोड की तरफ दौड़ा दिया।

लगभग आधे घंटे बाद वह सोनपुर की आबादी से बाहर दूर बने एक फार्महाउस के पास पहुँची। यहाँ पर रोड के दोनो साइड कई सारे फार्महाउस बने हुए थे। किन्तु साक्षी की जिप्सी जिस फार्महाउस के गेट के पास रुकी उस पर रस्तोगी फार्महाउस लिखा हुआ था तथा नाम के नीचे फार्महाउस का नंबर पड़ा था।

फार्महाउस के गेट पर दो बंदूखधारी गार्ड तैनात थे। पुलिस जिप्सी को देखते ही वो दोनो चौंके साथ ही दोनो के चेहरे सफेद फक्क भी पड़ गए। साक्षी जिप्सी से उतर कर तुरंत उन दोनो के करीब पहुँची। तब तक चारो हवलदार भी आ चौके थे।

एकाएक ही जैसे बिजली सी चमकी। पलक झपकते ही दोनो बंदूखधारियों के कंठ से घुटी घुटी सी चीख निकली और वो लहरा कर वहीं ज़मीन पर गिर पड़े। वो दोनो बेहोश हो चुके थे। ये सब इतनी तेज़ी से हुआ था कि कोई कुछ समझ भी न पाया था कि ये सब कब और कैसे हो गया। हुआ यूँ था कि साक्षी उनके पास पहुँची और बिना कोई बात किये बिजली की सी तेज़ी से उसने अपने दोनो हाथो को कराटे की शक्ल देकर दोनो बंदूखधारियों की कनपटी पर बिजली की स्पीड से प्रहार किया था। वो दोनो कुछ समझ ही नहीं पाए थे और ना ही उन्हें इस सबकी कोई उम्मीद थी।

" इन दोनो की बंदूखों को अपने कब्जे में ले लो। " साक्षी ने आदेश दिया __" और उसके बाद इन दोनो को उठा कर जिप्सी में डाल दो। "

साक्षी के आदेश का फौरन ही पालन हुआ। चारो हवलदार अभी तक हैरान थे कि उनकी मैडम ने पलक झपकते ही दो दो बंदूखधारियों को अचेत कर दिया। बेचारे क्या जानते थे कि बला की खूबसूरत ये लड़की कितनी खतरनाक भी है।

सब कुछ होने के बाद चारो हवलदार तेज़ी से गेट के अंदर की तरफ दौड़े क्योंकि साक्षी तब तक गेट के अंदर जा चुकी थी। फार्महाउस काफी बड़ा था और काफी खूबसूरत भी। हर तरफ रंग बिरंगे फूलों की क्यारियॉ लगी हुई थी तथा एक से बढ़ एक देशी विदेशी पेड़ पौधे लगे हुए थे। लंबे चौड़े लान में विदेशी घास लगी हुई थी। कुल मिलाकर ये कह सकते हैं कि रस्तोगी ने अपनी काली कमाई का अच्छा खासा उपयोग किया हुआ था।

गेट से लेकर फार्महाउस की इमारत के मुख्य द्वार तक लगभग आठ फुट चौड़ी सफेद मारबल की सड़क बनी हुई थी तथा इमारत के पास से ही लगभग बीस फुट की ही चौड़ाई पर भी इमारत के चारो तरफ मारबल लगा हुआ था। बाकी हर जगह लान में हरी घास, पेड़ पौधे व फूलों की क्यारियॉ थी।

मुख्य द्वार के बगल से जो कि पोर्च का ही एक हिस्सा था वहॉ पर दो कारें खड़ी थी इस वक्त। एक ब्लैक कलर की इनोवा थी तथा दूसरी स्विफ्ट डिजायर थी। मुख्य द्वार बंद था। साक्षी को कहीं पर बेल लगी हुई न दिखी। इस लिए उसने दरवाजे पर हाथ से ही दस्तक दी। किन्तु अंदर से कोई दरवाजा खोलने नहीं आया। साक्षी ने कई बार दस्तक दी। परंतु परिणाम वही। ऐसा तो हो ही नहीं सकता था कि अंदर कोई है ही नहीं क्योंकि बाहर खड़ी दो कारें इस बात का सबूत थी कि इनसे कोई आया है जो इस वक्त इमारत के अंदर है।

जब साक्षी की दस्तक का कोई परीणाम सामने नहीं आया तो उसने इमारत से थोड़ा दूर आकर इमारत की तरफ ध्यान से देखा। इमारत दो मंजिला थी। मुख्य द्वार के कुछ ही फासले पर दोनो साइड काच की बड़ी सी किन्तु ब्लैक कलर की खिड़कियॉ थी। जिनके ऊपर साइड बरसात के मौसम में पानी की बौछार से बचने के लिए रैक बनाया गया था। मुख्य द्वार पर एक लम्बा चौड़ा पोर्च था जो दोनो तरफ की उन कान की खिड़कियों तक था। पोर्च के ऊपर का भाग खाली था उसके बाद स्टील की रेलिंग लगी हुई थी।

अभी साक्षी ये सब देख ही रही थी कि मुख्य द्वार खुलने की आहट हुई। साक्षी ने बड़ी तेज़ी से चारो हवलदारों को इमारत के बगल साईड की दीवार के पीछे छुप जाने का इशारा किया जबकि खुद मुख्य द्वार के पास पहुॅच गई।

तभी दरवाजा खुला और सबसे पहले अनिकेत बासु बाहर निकला। उसके चेहरे पर अजीब से भाव थे, वह पीछे की तरफ ही देख कर हॅसते हुए बाहर आ रहा था। उसके पीछे अलोक

त्रिपाठी व अतुल मुखर्जी था और अंत में विवेक रस्तोगी था। इसका बाप रजतकुमार रस्तोगी शहर का एम एल ए था।

" भाई तुम सब यहीं रुको मैं अपनी वाली उस रांड को भी लेकर आता हूँ। " अनिकेत बासु ने कहा __" साली का फोन स्विच ऑफ बता रहा है। अब तो उसे लेने ही जाना पड़ेगा। आज तो इसकी अच्छे से बजाएँगे हम सब। "

" ठीक है जल्दी आना। " अलोक ने कहा __" तब तक हम इनके होश में लाने का प्रयास करते हैं। और हॉ सुन .....। " आगे बोलते बोलते वह रुक गया क्योंकि दरवाजे के पार खड़ी पुलिस की वर्दी पहने साक्षी पर उसकी नज़र पड़ गई।

" क्या हुआ बे बोलते बोलते रुक क्यों गया तू ?" अनिकेत बासु हॅसा __" कोई भूत देख लिया क्या ?"

" ऐसा ही समझ ले। " अलोक ने ऑखों से बाहर की तरफ इशारा किया।

उसके इशारे से सबने देखा बाहर की तरफ और पुलिस इंस्पेक्टर साक्षी पर नज़र पड़ते ही उन सबकी नानी मर गई। शराब और शबाब का सारा नशा हिरन हो गया उनका। किन्तु ये कुछ देर के लिए ही था अगले पल वो सब मुस्कुराने लगे।

" ले भाई तू अपनी वाली को लेने जा रहा था यहॉ तो एक ज़बरदस्त माल खुद ही पुलिस की वर्दी में चल कर आ गया। " अतुल ने हॅसते हुए कहा __" अब तुझे कहीं जाने की ज़रूरत नहीं है। हम सब इसके साथ ही अब मज़ा करेंगे। "

" सही कह रहा है यार। " अनिकेत बासु ने साक्षी को ऊपर से नीचे तक देखते हुए कहा _" क्या फाड़ू फिगर है इसका। कसम से मज़ा आ जाएगा आज तो। "

" तो फिर देर किस बात की भाई ?" अलोक ने कहा __" उठा ले चल इसे अंदर। "

" ओये एक मिनट। " अतुल ने कहा __" मत भूलो कि ये पुलिस वाली है। इस वक्त अकेली दिख रही है मगर संभव है इसके साथ कोई और भी पुलिस वाले हों। ऐसे में बड़ी प्रोब्लेम हो जाएगी। "

" अबे साले तू कब अपने वकील बाप की तरह सोचना बंद करेगा ?" अलोक घुड़का __" ये हमारा बाल भी बॉका नहीं कर सकती। अब चल उठा इसे और ले चल अंदर। "

साक्षी चुपचाप खड़ी इन सबकी बातें सुन रही थी। ये अलग बात थी कि अंदर ही अंदर वह गुस्से भभक रही थी। इधर सबसे आगे अनिकेत बासु ही था सो वही बढ़ा पहले। उसके बाद सभी दरवाजे के बाहर आ गए।

वो चारो साक्षी के चारो तरफ फैल गए और उसके चारो तरफ गोल गोल चक्कर लगाने लगे।

" भाई हर तरफ से पटाखा है ये तो। " अलोक ने कहा __" विवेक भाई पहले कौन इसकी ले .... आहहहहहह। "

अलोक के हलक से दर्द भरी चीख गूँज गई थी। साक्षी ने बिजली की सी फुर्ती से पलट कर बैक किक अलोक के सीने पर जड़ा था। किक पड़ते ही वह चीखते हुए तथा हवा में लहराते हुए पोर्च से बाहर जाकर गिरा था। साक्षीके सब्र का बॉध जैसे टूट गया था। वह इतने पर ही नहीं रुकी बल्कि पलक झपकते ही बाकी तीनों भी पोर्च के अलग अलग हिस्सों पर पड़े कराह रहे थे।

" तुम जैसे हिजड़ों की औलादों को सुधारने के लिए मैं आ गई हूँ। " साक्षी ने भभकते हुए कहा __" तुम चारों की ऐसी हालत करू गी कि दोबारा जन्म लेने से इंकार कर दोगे। "

" भाई ये क्या था ?" अतुल ने उठते हुए कहा _" ये तो लगता है करेंट मारती है। हमें इसे अलग तरीके से काबू में करना होगा। "

" सही कह रहा है तू। " अलोक ने कहा _" अब तो शिकार करने में मज़ा आएगा भाई लोग। "

" आ जाओ तुम चारो एक साथ। " साक्षी ने कहा __" मैंने तुम चारों का हुलिया न बिगाड़ दिया तो मेरा भी नाम साक्षी सिह भाटी नहीं। "

" चलो देख लेते हैं डियर। " विवेक ने पोजीशन में आते हुए कहा __" कि तुममें कोई बात है या हममें। "

चारों ने साक्षी को फिर से घेर लिया। किन्तु इस बार वो पूरी तरह सतर्क थे। उनकी पोजीशन से ही लग रहा था कि वो चारो जूड़ो कराटे जानते थे। साक्षी खुद भी पूरी तरह सतर्क थी।

चारो उसे घेरे हुए थे तथा उनके चेहरों पर कमीनेपन की मुस्कान थी। चारो ने ऑखों ही ऑखों में कोई इशारा किया और अगले ही पल चारो एक साथ साक्षी की तरफ झपटे किन्तु ये क्या??? वो जैसे ही एक साथ चारो तरफ से साक्षी पर झपटे वैसे ही साक्षी ने ऊपर की तरफ जम्प मारी और हवा में ही कलाबाज़ी खाते हुए उन चारों के घरे से बाहर आ गई। उसके बाहर आते ही चारो आपस में ही बुरी तरह टकरा गए। उधर साक्षी ने मानों उन्हें सम्हलने का मौका ही नहीं दिया बल्कि बिजली की सी स्पीड से उसने लात घूसों और कराटों की बरसात कर दी उन पर। वातावरण में चारों की चीखें गूँजने लगी। कुछ दूरी पर खड़े वो चारो पुलिस हवलदार भी ये हैरतअंगेज कारनामा देख रहे थे।

ऐसा नहीं था कि चारो लड़के कुछ कर नहीं रहे थे किन्तु उनका हर वार खाली जा रहा था जबकि साक्षी तो मानो रणचंडी बनी हुई थी। जूड़ो कराटे व मार्शल आर्ट के हैरतअंगेज दॉव

आजमाए थे उसने। परिणाम ये हुआ कि थोड़ी ही देर में उन चारो की हालत ख़राब हो गई। ज़मीन में पड़े वो बुरी तरह कराह रहे थे।

" क्यों सारी हेकड़ी निकल गई क्या ?" साक्षी ने अलोक के पेट में पुलिसिये बूट की तेज़ ठोकर मारते हुए कहा __" उठ सुअर की औलाद। दिखा न अपनी मर्दानगी। साला एक पल में ही पेशाब निकल गया तेरा। "

साक्षी सच कह रही थी, अलोक की पैन्ट गीली हो गई थी। बूट की ठोकर लगते ही वह हलाल होते बकरे की तरह चिल्लाया था। साथ ही अपने दोनो हाथ जोड़कर बोला__"मुझे माफ़ कर दो प्लीज़। आज के बाद मैं ऐसा वैसा कुछ नहीं कहूँगा।"

" कहेगा तो तब जब कहने लायक तू बचेगा भड़वे की औलाद। " साक्षी ने एक और ठोकर उसके पेट में जमा दी। वह फिर से चिल्ला उठा था। तभी साक्षी के हलक से चीख निकल गई। दरअसल उसका सारा ध्यान अलोक की तरफ था इस लिए वह देख ही नहीं पाई कि पीछे से अतुल ने उसकी पीठ पर चाकू का वार कर दिया था। पुलिस की वर्दी को चीरता हुआ चाकू उसकी पीठ को भी चीर दिया था। पलक झपकते ही उसकी वर्दी उसके खून से नहाने लगाने थी।

" साली हमसे पंगा ले रही है तू। " अतुल ने गुर्राते हुए कहा __" अब देख तेरी क्या हालत बनाते हैं हम ?"

बड़ी हैरानी की बात थी कि कुछ ही दूरी पर खड़े चारो हवलदार तमाशा देख रहे थे। उनकी हालत ऐसी थी जैसे जूड़ी के मरीज़ हों। हाथो में पुलिस की लाठी लिए वो चारो डरे सहमें से खड़े थे। और उस वक्त तो उनकी हालत और भी खराब हो गई जब अतुल ने पीछे से साक्षी की पीठ पर चाकू से वार किया था। चाकू का वार चीरा सा लगाते हुए निकल गया था, अगर अतुल उसे पीठ पर ही पेवस्त कर देता तो मामला बेहद ही गंभीर हो जाता।

" रुक क्यों गया अतुल ?" विवेक ने उठते हुए कहा __" चीर कर रख दे इस साली की वर्दी को। यहीं पर इसे नंगा करेंगे हम और यहीं पर इसकी इज्जत लूटेंगे। "

" विवेक सही कह रहा है अतुल। " अनिकेत भी उठ चुका था __" इसे सम्हलने का मौका मत दे और चाकू से चीर दे इसकी वर्दी को। "

अतुल ने फिर से अपना दाहिना हाथ हवा में उठाया साक्षी पर वार करने के लिए। उधर साक्षी की पीठ में तेज़ी से पीड़ा उठ रही थी। खून बुरी तरह रिस रहा था। जैसे ही अतुल ने उस पर वार किया उसने एक हाथ से उसके वार को रोंका और दूसरे हाथ से एक ज़बरदस्त मुक्का उसकी नॉक में जड़ दिया। अतुल के नॉक की हड्डी टूटने की आवाज़ आई साथ ही उसकी भयंकर चीख वातावरण में फैल गई। उसकी नाक से भल्ल भल्ल करके खून बहने लगा था। चाकू उसके हाथ से छूट गया और वह ज़मीन पर धड़ाम से गिरा। उधर अतुल की ये हालत देख कर बाकी तीनो हरकत में आ गए। साक्षी ने तेज़ी से झुक कर ज़मीन से चाकू उठाया और

जैसे ही वो तीनो उसके पास आए उसने चाकू वाला हाथ तेज़ी से चला दिया उन पर। सबकी चीखें निकल गई।

हालात बदल चुके थे। साक्षी जानती थी कि उसकी हालत खुद भी अच्छी नहीं है और अगर वह कमज़ोर पड़ गई तो ये चारो किसी कुत्ते की तरह नोच कर खा जाएँगे। इस लिए उसने अपने दर्द की परवाह न करते हुए एक बार से उन पर टूट पड़ी और तब तक उन्हें लात घूँसों पर रखा जब तक कि वो चारो अधमरे न हो गए।

साक्षी बुरी तरह हॉफ रही थी। उसकी वर्दी पीक की तरफ से खून में नहा चुकी थी। उसे कमज़ोरी का एहसास होने लगा था।उसने दूर खड़े अपने हवलदारों की तरफ देखा जो किसी पुतलों की तरह खड़े थे। साक्षी को उन्हें देख कर बेहद क्रोध आया। वह तेज़ी से उनके पास पहुँची और फिर दे दना दन थप्पड़ों की बरसात कर दी न पर। उन चारों के हलक से चीखें निकल गई।

" मैं तुमको यहॉ पर क्या तमाशा देखने के लिए लेकर आई थी नामर्दो ?" साक्षी किसी शेरनी की भॉती गरजी थी , बोली __" तुम चारो यहॉ पर खड़े बस तमाशा देख रहे थे। तुम दोनो को पुलिस में रहने का कोई हक़ नहीं है। आज और अभी से तुम चारो को डी समिस किया जाता है। अब दफा हो जाओ यहॉ से और कभी अपनी शकल मत दिखाना। "

साक्षी की गुस्से भरी ये फातें सुनकर चारो की हालत खराब हो गई। वो चारो साक्षी के पैरों पर गिर कर माफ़ी मागने लगे। किन्तु साक्षी को उन पर इतना ज्यादा गुस्सा आया हुआ था कि उसने अपने पैरों पर गिरे उन चारों को लात की ठोकरों पर रख दिया।

" हट जाओ मेरे सामने से। " साक्षी ने गुर्राते हुए कहा __" तुम जैसे निकम्मों और नामर्दों की मेरे पुलिस थाने में कोई जगह नहीं है। अब दफा हो जाओ वरना तुम चारो को गोली मार दूँगी। "

साक्षी का रौद्र रूप देख कर वो चारो बुरी तरह ठर गए और फिर वहॉ से नौ दो ग्यारह हो गए। उनके जाते ही साक्षी ने उन चारो लड़कों को एक एक करके किसी तरह अपनी पुलिस जिप्सी पर पटका और फिर वह वापस उस जगह आई जहॉ पर अभी कुछ देर पहले ये संग्राम हुआ था। उसने देखा कि पोर्च के फर्श पर कई जगह खून फैला हुआ था। उसने इधर उधर दृष्टि घुमा कर देखा किन्तु उसे ऐसा कुछ भी न दिखा जो उसके काम का हो। वह मुख्य द्वार से अंदर की तरफ चली गई। अंदर सामने ही एक कमरा दिखा उसे। वह उस कमरे की तरफ बढ़ गई। कमरे का दरवाजा हल्का खुला हुआ था। साक्षी ने अपने पैरों से दरवाजे को अंदर की तरफ धकेला। दरवाजा बेआवाज़ खुलता चला गया।

अंदर दाखिल होकर उसने देखा कि कमरा काफी बड़ा था तथा काफी शानदार तरीके से सजा हुआ था। एक कोने में बड़ा सा बेड था जिसमें तीन लड़कियॉ नंगी पड़ी हुई थी। ऐसा लगता था जैसे गहरी नीद में हों। साक्षी ने नफ़रत से उन्हें देखा और फिर कमरे में उसने अपनी नज़रें

दौड़ाईं। बगल की दीवार पर एक तस्वीर टॅगी हुई थी। तस्वीर कोई खास नहीं थी बस साधारण ही थी। साक्षी के मन में सवाल उभरा कि इतने अलीशान फार्महाउस पर इतनी मामूली तस्वीर कैसे रखी जा सकती है?

साक्षी ने आगे बढ़ कर तस्वीर को ध्यान से देखा। तस्वीर सच में कोई खास नहीं थी। साक्षी को जाने क्या सूझा कि उसने हाथ बढ़ा कर दीवार से तस्वीर को निकाल लिया। तस्वीर के निकलते ही दीवार पर एक स्विच नज़र आया। साक्षी ये देख कर चकरा गई। भला दीवार पर लगे स्विच के ऊपर तस्वीर को इस तरह क्यों लगाया गया होगा? क्या स्विच को तस्वीर द्वारा छुपाने के लिए??? साक्षी को अपना ये विचार कहीं से भी ग़लत नहीं लगा। उसने तस्वीर को एक हाथ से पकड़ कर दूसरे हाथ को दीवार पर लगे स्विच बटन को ऊपर की तरफ पुश किया। बटन को ऊपर की तरफ पुश करते ही कमरे में अजीब सी घरघराहट की आवाज़ हुई। साक्षी ये देख कर बुरी तरह चौंकी कि उसके सामने ही दीवार पर एक दरवाजा नज़र आने लगा था।

उसे समझते देर न लगी कि ये रजतकुमार रस्तोगी का गुप्त कमरा है। वह धड़कते दिल के साथ कमरे में दाखिल हो गई। अंदर पहुॅच कर उसने देखा बहुत सारा कबाड़ भरा हुआ था यहॉ। ये सब देख कर साक्षी हैरान रह गई। उसे समझ में न आया कि कोई कबाड़ को ऐसे गुप्त रूप से क्यों रखेगा?? साक्षी ने हर चीज़ को बारीकी से देखा। उसके पास समय नहीं था। क्योंकि उसकी खुद की हालत ख़राब थी। काफी देर तक खोजबीन करने के बाद भी उसे कोई खास चीज़ नज़र न आई। इस लिए वह बाहर आ गई मखर तभी जैसे उसे कुछ याद आया। वह फिर से अंदर गई। इस बार उसने तेज़ी से इधर उधर देखा। जल्द ही उसे एक तरफ की दीवार से सटा हुआ एक टेबल दिखा। टेबल के आस पास तथा ऊपर भी काफी सारा कबाड़ सा पड़ा हुआ था। किन्तु साक्षी की नज़र कबाड़ के बीच रखे एक छोटे से रिमोट पर पड़ी। उसने तुरंत ही उसे उठा लिया। वो रिमोट टीवी के रिमोट जैसा ही था।

साक्षी ने हरा बटन दबाया तो उसके दाएॅ तरफ हल्की सी आवाज़ हुई। साक्षी ने उस तरफ देखा तो उछल पड़ी। ये एक दीवार पर बनी गुप्त आलमारी थी जो आम सूरत में नज़र नहीं आ रही थी। साक्षी ने आगे बढ़ कर आलमारी की तलाशी लेनी शुरू कर दी। उसमें उसे काफी मसाला मिला। जिन्हें उसने कमरे में ही पड़े एक गंदे से बैग में भर लिया। उसके बाद उसने रिमोट से ही उस आलमारी को बंद कर दिया।

साक्षी उस बैग को लेकर वापस बाहर आ गई और ड्राइविंग सीट पर बैठ कर जिप्सी को फार्महाउस से मेन सड़क की तरफ दौड़ा दिया। इस वक्त उसके चेहरे पर पत्थर जैसी कठोरता तथा नफ़रत विद्यमान थी। दिलो दिमाग़ में भयंकर चक्रवात सा चल रहा था। उसकी जिप्सी ऑधी तूफान बनी दौड़ी चली जा रही थी।

साक्षी की पुलिस जिप्सी जिस जगह रुकी वह एक बहुत ही कम आबादी वाला एरिया था। सड़क के दोनो तरफ यदा कदा ही मकान दिख रहे थे। इस वक्त साक्षी जिस जगह पर आकर

रुकी थी वह कोई फार्महाउस था। जिप्सी की आवाज़ से थोड़ी ही देर में फार्महाउस का बड़ी सी बाउंड्री पर लगा लोहे का भारी गेट खुला। गेट के खुलते ही साक्षी ने जिप्सी को आगे बढ़ा दिया, उसके पीछे गेट पुनः बंद हो गया। जिप्सी को बड़े से मकान के पास लाकर साक्षी ने रोंक दिया और फिर उससे नीचे उतर गई।

साक्षी की हालत बहुत ख़राब हो चुकी थी। बदन में जान नहीं रह गई थी। गेट को बंद करने के बाद दो लोग भागते हुए उसके पास आए।

" अरे क्या हुआ बिटिया तुम्हें ?" एक लम्बी मूँछों वाले व्यक्ति ने घबराकर कहा __" ये क्या हालत बना ली है तुमने ? किसने की तुम्हारी ये हालत ? मैं उसे ज़िन्दा नहीं छोंड़ूँगा बिटिया। "

" काका इन सबको अंदर तहखाने में बंद कर दो। " साक्षी ने उखड़ी हुई सास ों से कहा _" और ध्यान रखना किसी को इन लोगों का पता न चल सके। ये तुम्हारी जिम्मेदारी है काका। "

" वो सब तो मैं कर लूँगा बिटिया। " काका की ऑखों में ऑसू तैरते दिखे __" लेकिन तुम्हारी हालत ठीक नहीं है। तुम्हें जल्द से जल्द हॉस्पिटल लेकर जाना पड़ेगा। मैं बड़े ठाकुर साहब को फोन लगाता हूँ बिटिया। "

" नहीं काका प्लीज़। " साक्षी ने कहा __" जितना कहा है पहले उतना करो। मैं ठीक हूँ .. बस काकी को फस्ट एड बाक्स के साथ मेरे कमरे में भेज दीजिए जल्दी। लेकिन उससे पहले इन्हें तहखाने में बंद कीजिए। "

" ये सब कौन हैं बेटी ?" एक अन्य आदमी ने पूछा __" इन सबकी हालत भी बहुत खराब लग रही है। "

" ये सब के सब एक नंबर के मुजरिम हैं शंभू काका। " साक्षी ने कहा __" इन लोगों बड़े से बड़ा संगीन गुनाह किया है। "

" फिर तो इनको जान से मार देना चाहिए बिटिया। " काका ने जिप्सी में बेहोश पड़े विवेक और उसके दोस्तों को देख कर कहा।

" इन्हें मौत ही मिलेगी काका। " साक्षी ने भभकते हुए कहा __" लेकिन थोड़ा थोड़ा करके। "

उसके बाद साक्षी के कहने पर उन दोनो ने उन सभी लड़को को उठा उठा कर अंदर तहखाने में ले जाकर बंद कर दिया। जबकि साक्षी अंदर अपने कमरे की तरफ बढ़ गई। थोड़ी ही देर में काकी फर्श्ट एड बाक्स लेकर आ गई। साक्षी के कहने पर काकी ने कमरे का दरवाजा अंदर से बंद कर दिया।

साक्षी ने वर्दी की शर्ट किसी तरह अपने बदन से उतारा। काकी हैरत से देखे जा रही थी।उसके चेहरे पर चिन्ता और दुख साफ दिख रहे थे।

" ये सब कैसे हुआ बिटिया ?" काकी ने आगे बढ़ कर शर्ट उतारने में साक्षी की मदद करते हुए कहा __" देखो तो कितना खून बह गया है , पूरी शरट भींग गई है। "

" अरे काकी ये सब तो चलता रहता है। " साक्षी ने बदन से शर्ट को अलग करते हुए कहा _" इस नौकरी में कई तरह के मुजरिमों से पाला पड़ता रहता है। "

" अरे तो ऐसी नौकरी करती ही क्यों हो बिटिया ?" काकी ने कहा __" भला का कमी है तुम्हें ? सब कुछ तो है। "

" बात कमी की नहीं है काकी। " साक्षी ने कहा __" बात है शौक की। ये नौकरी मैं अपने शौक के लिए कर रही हूँ। ख़ैर ये सब छोड़िये और मैं जैसा कहूँ वैसा करते जाइये। "

कहने के साथ ही साक्षी बेड पर उल्टा होकर लेट गई। इस वक्त वह ऊपर से सिर्फ एक पिंक कलर की ब्रा में थी। दूध जैसी गोरी पीठ पर हर तरफ खून ही खून दिख रहा था। ब्रा के हुक के ऊपरी हिस्से पर दाएं से बाएं चाकू का चीरा लगा था। जो कि दाहिने कंधे के थोड़ा नीचे से टेंढ़ा बाएँ तरफ लगभग दस इंच का था। काकी ने जब उस चीरे को देखा तो उसके शरीर में सिहरन सी दौड़ गई।

" हाय दइया ये तो बहुत खराब कटा है। " काकी ने मुह फाड़ते हुए कहा __" ये सब कैसे हो गया बिटिया ? पूरी पीठ पर चीरा लगा है। "

" ये सब छोड़ो आप। " साक्षी ने गर्दन घुमा कर पीछे काकी की तरफ देख कर कहा __" आप उस बाक्स से रुई लीजिए और उसमे डेटॉल डाल कर मेरी ठीठ पर फैले इस खून को साफ कीजिए। "

" पर बिटिया तुम्हें दर्द होगा। " काकी ने चिन्तित भाव से कहा __" मैं ये कैसे कर पाऊँगी ?"

" मुझे कुछ नहीं होगा काकी। " साक्षी ने कहा _" बल्कि अगर आप ऐसा नहीं करेंगी तो ज़रूर मुझे कुछ हो जाएगा। क्या आप चाहती हैं कि आपकी बिटिया को कुछ हो जाए ?"

" नहीं नहीं बिटिया। " काकी की ऑखों में ऑसू आ गए __" ये क्या कह रही हो तुम ? तुम्हें कभी कुछ न हो बिटिया। मेरी सारी उमर भी तुम्हें लग जाए। रुको मैं करती हूँ। "

साक्षी काकी की बातों से मुस्कुरा कर रह गई और अपनी गर्दन वापस सीधा कर तकिये में रख लिया। काकी ने बाक्स से रुई निकाला और उसमे डेटॉल डाल कर साक्षी की पीठ पर डरते डरते हाथ बढ़ाया। वह बहुत ही धीरे धीरे साक्षी की पीठ पर फैले खून को साफ कर रही थी। कदाचित वह नहीं चाहती थी कि साक्षी को ज़रा भी दर्द हो।

" आप डर क्यों रही हैं काकी ?" सहसा साक्षी ने कहा __" अच्छे से हाथ गड़ा कर साफ कीजिये न। मुझे बिलकुल भी दर्द नहीं होगा। आप फिक्र मत कीजिए। "

साक्षी के कहने पर काकी पहले की अपेक्षा अब थोड़ा ठीक से साफ कर रही थी। मगर बड़े एहतियात से ही। कुछ समय बाद ही काकी ने साक्षी की पीठ को साफ कर दिया। किन्तु चीरा वाला हिस्सा उसने साफ नहीं किया। साक्षी ने उससे कहा कि वो चीरे वाले हिस्से को भी अच्छी तरह साफ करें। क्योंकि जब तक वो अच्छी तरह साफ नहीं होगा तब तक उस पर दवा नहीं लगाई जा सकती। काकी ने बड़ी सावधानी से उसे भी साफ किया। फिर साक्षी के बताने पर उसने बाक्स से निकाल कर एक मल्हम चीरे पर लगाया और फिर उसकी पट्टी की। चीरे वाले स्थान से जितना खून बहना था वह बह चुका था किन्तु बहुत ही हल्का हल्का अभी भी रिस रहा था। हलाँकि अब पट्टी हो चुकी थी इस लिए साक्षी को आराम मिल रहा था। उसने दर्द की एक टेबलेट खा ली थी।

" अब तुम आराम करो बिटिया। " काकी ने कहा __" तब तक मैं तुम्हारे लिए गरमा गरम खाना बना देती हूँ।

" नहीं काकी। " साक्षी ने कहा __" आप खाना बनाने का कस्ट न करें। बस एक कप काफी पिला दीजिए। "

" ठीक है जैसी तुम्हारी मर्ज़ी। " काकी ने कहा और साक्षी के ऊपर एक चद्दर डाल कर कमरे से बाहर निकल गई। जबकि साक्षी ने अपनी आँखें बंद कर ली। कुछ देर ऑखें बंद कर जाने वह क्या सोचती रही फिर उसने अपनी ऑखें खोली और बेड के बगल से ही एक छोटे से स्टूल पर रखे लैण्डलाइन फोन की तरफ अपना हाथ बढ़ाया।

रिसीवर कान से लगा कर उसने कोई नंबर डायल किया। कुछ ही पल में उधर बेल जाने की आवाज़ सुनाई देने लगी।

" हैलो कमिश्नर कीर्तिमान जाधव हेयर। " उधर से कहा गया।

" जय हिन्द सर मैं इंस्पेक्टर साक्षी बोल रही हूँ। " साक्षी ने उधर की आवाज़ सुनने के बाद कहा।

" ओह यस ऑफिसर। " उधर से कमिश्नर ने कहा __" क्या रिपोर्ट है ?"

" सर एक फेवर चाहिए आपसे। " साक्षी ने कहा।

" फेवर ???" कमिश्नर चकराया _" कैसा फेवर हम कुछ समझे नहीं। "

" सर सारी डिटेल मैं आपको आपसे मिल कर ही बताऊँगी। " साक्षी ने कहा __" फोन पर बताना उचित नहीं है। "

" ओके नो प्राब्लेम। " कमिश्नर ने कहा _" अब बताओ कैसे फेवर की बात कर रही थी

तुम ?"

" सर मैं चाहती हूँ कि इस केस की सारी जानकारी सिर्फ आप तक ही रहे। " साक्षी कह रही थी __" आप जानते हैं कि मैंने प्राची के रेप केस की अभी तक कोई फाइल नहीं बनाई है। बस आपको इस बारे में इन्फार्म किया था। "

हाँ ये हम जानते हैं।" कमिश्नर ने कहा_"पर तुम करना क्या चाहती हो ये हम जानना चाहते हैं?"

" कल आपसे मिल कर सारी बातें बताऊँगी सर। " साक्षी ने कहा __" इस वक्त मैं आपसे बस ये फेवर चाहती हूँ कि रजतकुमार रस्तोगी के बेटे और उसके दोस्तों के बारे में अगर आपके पास कोई बात आए तो आप यही कहिएगा कि पुलिस का इस बात से कोई संबंध नहीं है। "

" क्या मतलब ??" कमिश्नर बुरी तरह चौंका था _" आख़िर तुम क्या कर रही हो ऑफिसर ? उस समय भी तुमने हमसे इमेडिएटली सर्च वारंट के लिए कहा था और हमने उसका तुरंत इंतजाम भी किया। लेकिन अब तुम ये सब बोल रही हो आख़िर हुआ क्या है ?"

" सर मैं आपको सारी बातें मिल कर ही बताऊँगी। " साक्षी ने कहा __" प्लीज़ सर ट्राई टू अंडरस्टैण्ड। "

" ओके फाइन। " कमिश्नर ने कहा _" हम कल तुम्हारा वेट करेंगे ऑफिस र। "

" जय हिन्द सर। " साक्षी ने कहा और रिसीवर वापस केड्रिल पर रख दिया।

साक्षी ने फिर से आँखें बंद कर ली। तभी कमरे में काकी दाखिल हुई। उसके हाथ में एक ट्रे था जिसमें एक बड़ा सा कप रखा था। आहट सुन कर साक्षी ने ऑखें खोल कर देखा। काकी को देखते ही वह बड़ी सावधानी से उठ कर बेड पर बैठ गई। उसके बैठते ही काकी ने साक्षी को काफी का कप पकड़ाया।

काफी पीने के बाद साक्षी को थोड़ा बेहतर फील हुआ और वह बेड से उतर आई। आलमारी से उसने एक ब्लू कलर का जीन्स का पैन्ट और एक रेड कलर की टी-शर्ट निकाल कर उसे पहना तथा ऊपर से एक लेदर की जॉकेट पहन कर उसने आईने में खुद को देखा। फिर पुलिस की वर्दी वाले पैन्ट से होलेस्टर सहित सर्विस रिवाल्वर निकाल कर उसे जीन्स के बेल्ट पर फँसाया तथा आलमारी से एक रेड एण्ड ब्लैक मिक्स गॉगल्स निकाल कर उसे ऑखों पर लगाया और फिर बाहर निकल गई।

बाहर उसे काकी दिखी। उसने काकी से कहा कि वह जा रही है। काकी उसे यूँ देख कर हैरान रह गई। उसे समझ में न आया कि ये लड़की तो अभी थोड़ी देर पहले गंभीर हालत में थी और अब एकदम से टीम टाम होकर चल भी दी।

मकान के बाहर आकर साक्षी पुलिस जिप्सी की तरफ बढ़ी। वह ये देख कर खुश हो गई कि काका ने जिप्सी को अच्छे से धोकर साफ सुथरा कर दिया था। साक्षी को काका की समझदारी पर कायल होना पड़ा। जिप्सी को स्टार्ट कर साक्षी मेन गेट की तरफ बढ़ चली।

" काका उन लोगों का ध्यान रखना। " साक्षी ने गेट के पास खड़े काका और शंभू काका दोनो की तरफ देख कर कहा __" आज रात का खाना उन्हें नहीं देना। कल मैं दोपहर को आऊँगी। "

" ठीक है बिटिया। " काका ने कहा _" तुम बिलकुल भी चिन्ता न करो। वो अब यहाँ से कहीं नहीं जा पाएँगे। "

" चलो फिर कल मिलती हूँ आपसे। " साक्षी ने कहने के साथ ही जिप्सी को गेट के बाहर की तरफ निकाल दिया और मेन रोड पर आते ही जिप्सी हवा से बातें करने लगी।

२८

भूतकाल अब आगे_____

कमरे से सोनिया के जाने के बाद शिवम सिंह वापस अपने बिस्तर पर लेट गया। उसके ज़हन में यही ख़याल बार बार उभर रहा था कि वह अपनी भाभी का क्या करे? वह स्पष्टरूप से उससे कह चुकी थी कि वो उससे प्रेम करती है और वह अपने दिल में उसके लिए भी थोड़ी सी जगह दे। भला ऐसा कैसे हो सकता था? शिवम सिंह इस बारे में सोचना भी ग़लत व पाप समझता था। उधर सोनिया उसकी कोई बात सुनने या मानने को तैयार ही नहीं थी। वह सोनिया से बहुत ज्यादा परेशान हो गया था। उसे डर था कि कहीं किसी दिन ये सब बातें उसके मॉ बाबूजी को न पता चल जाएॅ वरना अनर्थ हो जाएगा। आज वो जो मुझे सबसे अच्छा और अपना सबसे लायक बेटा समझते हैं , तो इस सबका पता चलते ही मेरे बारे में उनकी सोच बदल जाएगी। वो यही समझेंगे कि वासना और हवस के लिए मैने ही अपनी मॉ समान भाभी को बरगलाया है या फिर ज़बरदस्ती की है उनसे। कोई मेरी बात का यकीन नहीं करेगा। बड़े भैया को तो और भी मौका मिल जाएगा मेरे खिलाफ ज़हर उगलने का।

शिवम सिंह ये सब सोच सोच कर बुरी तरह परेशान व दुखी भी हो रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? वह अब किसी भी सूरत में सोनिया के सामने नहीं आना चाहता था। उसने तय कर लिया था कि अब वह देर रात में ही खेतों से हवेली आया करेगा और अपने कमरे में ही खाना मॅगवा कर खाया करेगा।

अगले दिन से शिवम की दिनचर्या यही हो गई। वह सुबह जल्दी हवेली से निकल जाता, दोपहर में रेणुका उसके लिए खाना ले जाती। रेणुका उसके साथ खेतों पर दिन ढले तक रहती फिर वह हवेली आ जाती जबकि शिवम सिंह देर रात को ही हवेली लौटत। रेणुका कई दिन से गौर कर रही थी कि शिवम सिंह कुछ दिनों से कुछ परेशान सा रहने लगा है। उसने उसकी परेशानी का पूछा भी किन्तु शिवम सिंह हर बार इस बात को टाल जाता। भला वह क्या बताता उसे कि वह किस वजह से परेशान रहता है आजकल?

शिवम सिंह की इस दिनचर्या से सोनिया को अब उसके पास जाने की तो बात ही दूर बल्कि उसे देख पाने तक को नहीं मिलता था। इस सबसे सोनिया बेहद परेशान व नाखुश हो गई थी। सत्यम सिंह भी परेशान था इस सबसे। उसकी भी कोई दाल नहीं गल रही थी। रेणुका के चलते सोनिया को खेतों पर जाने का मौका ही नहीं मिलता था। ऐसा नहीं था कि वह जा नहीं सकती थी लेकिन वह चाहती थी कि वह जब भी खेतों पर जाए तो खेतों पर रेणुका न हो बल्कि वह और शिवम सिंह बस ही हों वहॉ। ताकि वह बड़े आराम से शिवम पर प्रेम बॉण चलाए।

एक दिन सोनिया को मौका मिल ही गया। दरअसल सुबह सुबह जब रेणुका अपने कमरे के बाथरूम में नहा रही तो फर्श पर उसका पैर फिसल गया और वह बड़ा ज़ोर से गिरी थी।

जिससे उसकी कमर में असह पीड़ा होने लगी थी। इस सबका परिणाम ये हुआ कि रेणुका खेतों पर शिवम के लिए खाना लेकर न जा सकी बल्कि सोनिया को जाने का सुनहरा मौका मिल गया। सोनिया पहले की भॉति ही पतली साड़ी और बिना ब्रा का ब्लाउज पहना और शिवम के लिए टिफिन लेकर खेतों पर चली गई।

सोनिया को पता था कि ये मौका उसे बड़े संजोग से मिला है इस लिए वह इस मौके को खोना नहीं चाहती थी। उसने सोच लिया था कि आज वह शिवम से अपने प्रेम के लिए कुछ न कुछ तो करेगी ही। उसके पास समय भी नहीं बचा था। बच्चों के स्कूल की छुट्टियॉ दो दिन बाद खत्म हो रही थी।

नियति को जो मंजूर होता है वही होता है। ये संजोग था कि रेणुका का पैर फिसला और उसने बिस्तर पकड़ लिया जिसके कारण सोनिया को खेतों में जाने का अवसर मिल गया और एक ये भी संजोग ही था कि आज खेतों पर फिर कोई मजदूर नहीं था। सारी रात जुती हुई ज़मीन पर पानी लगाया और लगवाया था उसने। सुबह नौ बजे सारे मजदूर गए थे। आज के लिए सारा काम हो गया था।

सोनिया जब खेतों पर पहुॅची तो हर तरफ सन्नाटा फैला हुआ पाया। आस पास कोई न दिखा उसे। वह मकान के अंदर नहीं गई बल्कि आस पास घूम घूम कर देखा उसने हर तरफ। न कोई मजदूर और ना ही शिवम सिंह उसे कहीं नज़र न आए। सोनिया को खुशी हुई कि खेतों पर कोई मजदूर नहीं है और अब वह बेफिक्र होकर कुछ भी कर सकती है।

मकान के अंदर जाकर जब वह कमरे में पहुॅची तो शिवम को बिस्तर पर सोया हुआ पाया। उसके मुख से हल्के खर्राटों की आवाज़ भी आ रही थी। इस वक्त उसके शरीर पर नीचे एक सफेद धोती थी और ऊपर एक बनियान। वह पक्का किसान था। पढ़ाई छोंड़ने के बाद उसने खेतों पर ही अपना सारा समय गुज़ारा था। ये उसकी कर्मभूमि थी। यहॉ पर उसने खून पसीना बहाया था। जिसका परिणाम ये था कि उसका शरीर पत्थर की तरह सख्त था। छः फिट लम्बा था वह तथा हट्टा कट्टा शरीर था। किन्तु चेहरे पर हमेशा सादगी विद्यमान रहती थी उसके। उसका व्यक्तित्व ऐसा था कि गॉव का हर कोई उसे प्रेम व सम्मान देता था।

सोनिया सम्मोहित सी देखे जा रही थी उसे। फिर सहसा जैसे उसे होश आया और एकाएक ही उसके दिमाग़ की बत्ती जल उठी। जाने क्या चलने लगा था उसके मन में जिसे सोच कर वह मस्कुराई। उसने टिफिन को बड़ी सावधानी से वहीं पर रखे एक बेन्च पर रख दिया और सावधानी से शिवम की चारपाई के पास पहुॅची।

शिवम चारपाई पर चूॅकि गहरी नींद में सोया हुआ था इस लिए उसे ये पता नहीं चला कि उसके कमरे में कौन आया है? सोनिया उसके हट्टे कट्टे शरीर को इतने करीब से देख कर आहें भरने लगी। उसने नज़र भर कर शिवम को ऊपर से नीचे तक देखा। उसके अंदर काम वासना की अगन सुलग उठी। कुछ देर यूॅ ही ऑखों में वासना के लाल लाल डोरे लिए वह उसे देखती रही फिर सहसा वह वहीं फर्श पर घुटनों के बल बैठती चली गई। उसके हृदय की गति

अनायास ही बढ़ गई थी। उसने शिवम के चेहरे पर गौर से देखा। शिवम किसी कुम्भकर्ण की तरह सो रहा था। सोनिया को जब यकीन हो गया कि शिवम किसी हल्की आहट पर इतना जल्दी जगने वाला नहीं है तो उसने उसके चेहरे से नज़र हटा कर शिवम की धोती यानी लुंगी के उस हिस्से पर नज़र डाली जहाँ पर शिवम का लिंग उसकी लुंगी के अंदर छिपा था। लिंग का उभार लुंगी पर भी स्पष्ट नज़र आ रहा था।

सोनिया ने धड़कते दिल के साथ अपने हाथो को बढ़ा कर शिवम की लुंगी को उसके छोरों से पकड़ कर आहिस्ता से इधर और उधर किया। जिससे शिवम के नीचे वाला हिस्सा नग्न हो गया। लुंगी के अंदर उसने कुछ नहीं पहन रखा था। सोनिया ने देखा गहरी नींद में उसका घोंड़े जैसा लिंग भी गहरी नींद में सोया पड़ा था। लेकिन उस हालत में भी वह लम्बा चौड़ा नज़र आ रहा था। उसका लिंग काला या साँवला बिलकुल नहीं था बल्कि गोरा था बिलकुल अंग्रेजों के लिंग जैसा गोरा। उसे देख कर सोनिया के मुँह में पानी आ गया था। उसने बड़ी सावधानी से उसे अपने दाहिने हाथ से पकड़ा। उसको इधर उधर से अच्छी तरह देखा। वो बिलकुल किसी मासूम से छोटे बच्चे जैसा सुंदर और प्यारा लगा उसे। उसने उसे मुट्ठी में पकड़ कर ऊपर नीचे किया तो उसका बड़ा सा सुपाड़ा जो हल्का सिंदूरी रंग का था चमकने लगा और साथ ही उसमें कुछ हलचल सी महसूस हुई उसे। उसने ये महसूस करते ही नज़र ऊपर की तरफ करके गहरी नींद में सोये पड़े शिवम की तरफ देखा। वो पहले की तरह ही गहरी नींद में सोया हुआ लगा। सोनिया ने चैन की साँस ली और फिर से अपनी नज़रें उसके लिंग पर केंद्रित कर दी। उसके हाथ के स्पर्श से तथा लिंग को मुट्ठी में लिए ऊपर नीचे करने से लिंग का आकार धीरे धीरे बढ़ने लगा था। ये देख कर सोनिया को अजीब सा नशा भी चढ़ता जा रहा था उसकी सासें तेज़ होने लगी थी। उसने देखा कि कुछ ही पलों में शिवम का लिंग किसी घोड़े के लिंग जैसा बड़ा होकर हिनहिनाने लगा था। सोनिया को लगा कहीं ऐसा तो नहीं कि शिवम जाग रहा हो और ये देखने की कोशिश कर रहा हो कि उसके साथ आगे क्या क्या होता है? मगर उसे ये भी पता था कि अगर शिवम जाग रहा होता तो इतना कुछ होने ही न पाता क्योंकि वह उच्च विचारों तथा मान मर्यादा का पालन करने वाला इंसान था। वो कभी किसी को ग़लत नज़र से नहीं देखता था, ऐसा सोचना भी वो पाप समझता था। उसके बारे में वो जान चुका था कि वह क्या चाहती है उससे इस लिए वो हवेली में अब कम ही रहता था। दिन भर खेत में ही मजदूरों के साथ वक्त गुज़ार देता था और देर रात हवेली में आता तथा खाना पीना खा कर अपने कमरे में रेणुका के साथ सो जाता था। वह उससे दूर ही रहता था। इस लिए ये सोचना ही ग़लत था कि इस वक्त वह जाग रहा होगा। सोनिया ने देखा कि उसका लिंग उसकी मुट्ठी में नहीं आ रहा था तथा गरम लोहे जैसा प्रतीत हो रहा था। अब तक सोनिया की हालत उसे देख कर खराब हो चुकी थी। उसे लग रहा था कि जल्दी से उछल कर इसको अपनी योनी के अंदर पूरा का पूरा घुसेड़ ले। किन्तु जल्दबाजी में सारा खेल बिगड़ जाता इस लिए अपने पर नियंत्रण रखा उसने और उसके सुंदर मगर बिकराल लिंग को मुट्ठी में लिए आहिस्ता आहिस्ता सहलाती रही।

सोनिया को जाने क्या सूझी कि वह धीरे से उठी और अपने जिस्म से साड़ी निकाल कर एक तरफ फेंक दी। इतना हीं नहीं उसने अपने ब्लाउज के हुक खोल कर उसे भी अपने जिस्म से निकाल दिया। ब्लाउज के हटते ही उसकी खरबूजे जैसी भारी स्तन उछल पड़ीं। इसके बाद

उसने पेटीकोट को भी उतार दिया। अब सोनिया बिलकुल नंगी थी। उसका चेहरा हवस तथा वासना से लाल पड़ गया था।

अपने सारे कपड़े उतारने के बाद सोनिया फिर से चारपाई के पास घुटनों के बल बैठ गई। उसकी नज़र लुंगी से बाहर उसके ही द्वारा निकाले गए शिवम सिंह के हलब्बी लिंग पर पड़ी। अपना दाहिना हाथ बढ़ा कर उसने उसे आहिस्ता से पकड़ा और फिर आहिस्ता आहिस्ता ही सहलाने लगी। सोनिया उसको अपने मुह में भर कर चूसने के लिए पागल हुई जा रही थी, जिसका सबूत ये था कि सोनिया अपने एक हाथ से कभी अपनी बड़ी बड़ी स्तनों को मसलने लगती तो कभी अपनी योनी को। उसके अंदर वासना अपने चरम पर पहुँच चुकी थी। उससे बरदाश्त न हुआ और उसने एक झटके से नीचे झुक कर शिवम के लिंग को अपने मुह में भर लिया....और जैसे यहीं पर उससे बड़ी भारी ग़लती हो गई। उसने ये सब अपने आपे से बाहर होकर किया था। शिवम का लिंग जितना बड़ा था उतना ही मोटा भी था। सोनिया ने जैसे ही उसे झटके से अपने मुह में लिया तो उसके ऊपर के दॉत तेज़ी से लिंग में गड़ते चले गए और शिवम के मुख से चीख निकल गई साथ ही वह हड़बड़ा कर तेज़ी से चारपाई पर उठ कर बैठ गया। अपने लिंग को इस तरह सोनिया के मुख में देख वह भौचक्का सा रह गया किन्तु फिर तुरंत ही वह उसके मुह से अपना लिंग निकाल कर तथा चारपाई से उतर कर दूर खड़ा हो गया। उसका चेहरा एक दम गुस्से और घ्रणा से भर गया। ये सब इतना जल्दी हुआ कि कुछ देर तक तो सोनिया को कुछ समझ ही न आया कि ये सब क्या और कैसे हो गया? होश तो तब आया जब शिवम की गुस्से से भरी आवाज़ उसके कानों से टकराई।

" ये क्या बेहूदगी है ?" शिवम लुंगी को सही करके तथा गुस्से से दहाड़ते हुए कह रहा था _" अपनी हवस में तुम इतनी अंधी हो चुकी हो कि तुम्हें ये भी ख़याल नहीं रहा कि तुम किसके साथ ये नीच काम कर रही हो ? अपने ही देवर से मुह काला कर रही हो तुम। अरे देवर तो बेटे के समान होता है ये ख़याल नहीं आया तुम्हें ?"

सोनिया चूँकि रँगे हाथो ऐसा करते हुए पकड़ी गई थी उस दिन, इस लिए उसकी ज़ुबान में जैसे ताला सा लग गया था। उस दिन शिवम का गुस्से से भरा वह खतरनाक रूप उसने पहली बार देखा था। वह गुस्से में जाने क्या क्या कहे जा रहा था मगर सोनिया सिर झुकाए वहीं चारपाई के नीचे बैठी रही उसी तरह मादरजात नंगी हालत में। उसे ख़याल ही नहीं रह गया था कि वह नंगी ही बैठी है। जबकि,,,

" आज तुमने ये सब करके बहुत बड़ा पाप किया है। " शिवम कहे जा रहा था _" और मुझे भी पाप का भागीदार बना दिया। क्या समझता था मैं तुम्हें और तुम क्या निकली ? एक ऐसी नीच और कुलटा औरत जो अपनी हवस में अंधी होकर अपने ही देवर से मुह काला करने लगी। तुम्हारी नीयत का तो पहले से ही आभास हो गया था मुझे इसी लिए तुमसे दूर रहा। मगर ये नहीं सोचा था कि तुम अपनी नीचता और हवस में इस हद तक भी गिर जाओगी। तुममें और बाज़ार की रंडियों में कोई फर्क नहीं रह गया अब। चली जाओ यहॉ से ... और दुबारा मुझे अपनी ये गंदी शकल मत दिखाना वरना मैं भूल जाऊँगा कि तुम मेरे बड़े भाई की बीवी हो। आज से मेरा और तुम्हारा कोई रिश्ता नहीं ... अब जा यहॉ से कुलटा औरत ...

देखो तो कैसे बेशर्मों की तरह नंगी बैठी ह ै ?"

शिवम की बातों से ही सोनिया को ख़याल आया कि वह तो अभी नंगी ही बैठी हुई है तब से। उसने शीघ्रता से अपनी नग्नता को ढॅकने के लिए अपने कपड़ों की तरफ नज़रें घुमाई। पास में ही उसके कपड़े पड़े थे। उसने जल्दी से अपनी साड़ी ब्लाउज पेटीकोट को समेटा किन्तु फिर उसके मन में जाने क्या आया कि वह वहीं पर रुक गई।

शिवम की बातों ने सोनिया के अंदर मानो ज़हर सा घोल दिया था। जो हमेशा उसे इज्ज़त और सम्मान देता था आज वही उसे आप की जगह तुम और तुम के बाद तू कहते हुए उसकी इज्ज़त की धज्जियॉ उड़ाए जा रहा था। उसे बाजार की रंडी तक कह रहा था। सोनिया के दिल में आग सी धधकने लगी थी। उसे ये डर नहीं था कि शिवम ये सब किसी से बता देगा तो उसका क्या होगा। बल्कि अब तो सब कुछ खुल ही गया था इस लिए उसने भी अब पीछे हटने का ख़याल छोंड़ दिया था।

उसने उसी हालत में खिसक कर शिवम के पैर पकड़ लिए और फिर बोली_"तुम्हारे लिए मैं कुछ भी बनने को तैयार हूॅ शिवम। मुझे इस तरह अब मत दुत्कारो। मैं तुम्हारी शरण में हूॅ, मुझे अपना लो शिवम। मुझे अपनी दासी बना लो, मैं वही करूगी जो तुम कहोगे। मगर इस तरह मुझे मत दुत्कारो...देख लो मैंने ये सब तुम्हारा प्रेम पाने के लिए किया है। माना कि मैंने ग़लत तरीके से तुम्हारे प्रेम को पाने की कोशिश की लेकिन मैं क्या करती शिवम? मुझे और कुछ सूझ ही नहीं रहा था। पहले भी मैंने तुम्हें ये सब जताने की कोशिश की थी लेकिन तुमने समझा ही नहीं इस लिए मैंने वही किया जो मुझे समझ में आया। अब तो सब कुछ जाहिर ही हो गया है,अब तो मुझे अपना लो शिवम...मुझे तुम्हारा प्यार चाहिए।"

" बंद करो अपनी ये बकवास। " शिवम ने अपने पैरों को उसके चंगुल से एक झटके में छुड़ा कर तथा दहाड़ते हुए कह ा _" तुझ जैसी गिरी हुई औरत के मैं मुह नहीं लगना चाहता। मुझे हैरत है कि बड़े भैय ा ने तुझ जैसी नीच और हवस की अंधी औरत से शादी कैसे क ी ? ज़रूर तूने ही मेरे भाई को अपने जाल में फसाया होगा। "

" जो मर्ज़ी कह लो शिवम। " सोनिय ा ने सहसा आखों में आ ॅसू लाते हुए कह ा _" मगर मुझे अपने से दूर न करो। दिन रात तुम्हारी सेवा कर ू गी। मैं तुम्हें उस रेणुक ा से भी ज्यादा प्यार कर ू गी शिवम। "

" ख़ामोशशशश। " शिवम इस तरह दहाड़ा था कि कमरे की दीवारें तक हिल गई ं _" अपनी गंदी ज़ुबान से मेरी रेणुक ा का नाम भी मत लेना वरन ा हलक से ज़ुबान खींचकर हाथ में दे दूॅगा। तू है क्या बदजात औरत ... तेरी औकात आज पता चल गई है मुझे। तेरे जैसी रंडियॉ कौड़ी के भाव में ऐरों गैरों को अपना जिस्म बेंचती हैं गली चौराहे में। और तू रेणुक ा की बात करती ह ै ... अरे वो देवी है देव ी ... जिसकी मैं इबादत करता हूॅ। तू उसके पैरों की धूल भी नहीं है समझ ी ?? अब जा यहॉ से वरन ा धक्के मार कर इसी हालत में तुझे यहॉ से बाहर फेंक दूॅगा। "

सोनिया समझ चुकी थी कि उसकी किसी भी बात का शिवम पर अब कोई प्रभाव पड़ने वाला नहीं था। उल्टा उसकी बातों ने उसे और उसके अंतर्मन को बुरी तरह शोलों के हवाले कर दिया था। उसने जिस तरीके से उसे दुत्कार कर उसका अपमान किया था उससे सोनिया के अंदर भीषण आग लग चुकी थी और उसने मन ही मन एक फैंसला कर लिया था उसके और उसके परिवार के लिए।

" ठीक है शिवम सिंह। " फिर उसने अपने कपड़े समेटते हुए ठण्डे स्वर में कहा थ◌ा _" मैं तो जा रही हूं यहॉ से मगर जिस तरह से तुमने मुझे दुत्कार कर मेरा अपमान किया है उसका परिणाम तुम्हारे लिए कतई अच्छा नहीं होगा। ईश्वर देखेगा कि एक औरत जब इस तरह अपमानित होकर रुष्ट होती है तो भविष्य में उसका क्या परिणाम निकलता ह◌ै ??"

सोनिया की बात का शिवम सिंह ने कोई जवाब नहीं दिया बल्कि गुस्से से उबलती हुई ऑखों से उसे देख गर वहीं मानो हिकारत से थूॅका और फिर बाहर निकल गया। जबकि बुरी तरह ज़लील व अपमानित सोनिया ने अपने कपड़े पहने और हवेली जाने के लिए कमरे से बाहर निकल गई। उसके अंदर प्रतिशोध की ज्वाला धधक हुई उठी थी।

हवेली पहुॅच कर सोनिया ने अपने पति सत्यम सिंह से आज शिवम सिंह से हुए कारनामे का सारा व्रत्तान्त मिर्च मशाला लगा कर सुनाया। उसकी सारी बातें सुन कर सत्यम सिंह सन्न रह गया था। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि आज इतना बड़ा काण्ड हो गया है।

" मुझे उस हरामज़ादे से अपने अपमान का प्रतिशोध लेना है सत्यम। " सोनिय◌ा ने किसी ज़हरीली नागिन की भॉति फुंकारते हुए कह◌ा __" जब तक मैं उससे अपमान का बदला नहीं लूॅगी तब तक मेरी आत्मा को शान्ति नहीं मिलेगी। "

" ज़रूर डियर। " सत्यम सिंह ने सहसा कठोरता से कह◌ा __" तुम्हारे इस अपमान का बदला ज़रूर उससे लिया जाएगा। आज के इस हादसे से ये तो साबित हो ही गया कि वो मजदूर हमारे झॉसे में आने वाला नहीं है। सोचा था कि सब मिल बॉट कर खाए◌ॅगे और मज़ा करेंगे लेकिन नहीं उस मजदूर को तो कलियुग का हरिश्चन्द्र बनना है। इस लिए ऐसे इंसान का जीवित रहना हमारे लिए अच्छी बात नहीं है। उसके रहते हम अपनी हसरतों को पूरा नहीं कर पाए◌ॅगे सोनिय◌ा । वो मजदूर हमारे रास्ते का सबसे बड़ा कॉटा है। इस कॉटे को अब जड़ से उखाड़ कर फेंकना ही पड़ेगा। "

" जो भी करना हो जल्दी करो सत्यम। " सोनिय◌ा ने कह◌ा __" मैं उस कमीने की अब शकल भी नहीं देखना चाहती कभी। साला कुत्ता मुझे दुत्कारता है। कहता था कि मैं उसकी रेणुक◌ा की पैरों की धूल भी नहीं हूॅ। मुझे रंडी बोलता है। मैं दिखाऊॅगी उसे कि मेरे सामने उसकी वो रांड रेणुक◌ा कुछ भी नहीं है। उसे सबके नीचे न लेटाया तो मेरा भी नाम सोनिय◌ा सिंह भाट◌ी नहीं। उसे कोठे की नहीं बल्कि बीच चौराहे की रंडी बनाऊॅगी मैं। "

" शान्त हो जाओ सोनिय◌ा। " सत्यम सिंह ने उसे खुद से लगा लिय◌ा __" सब कुछ वैसा ही

होगा जैसा तुम चाहती हो। लेकिन ज़रा तसल्ली से और सोच समझ कर बनाए गए प्लान के अनुसार। ताकि किसी को किसी बात का कोई शक न हो पाए। "

" ठीक है सत्यम। " सोनिया ने कहा __" लेकिन मैं ज्यादा दिनों तक उसे जीवित नहीं देखना चाहती। तुम जल्दी ही कुछ करो। "

" फिक्र मत करो मेरी जान। " सत्यम ने कुछ सोचते हुए कहा __" आज से और अभी से प्लान बी शुरू। अब चलो गुस्सा थूँको और मेरे साथ प्यार की वादियों में खो जाओ। "

ये दोनो तो अपने प्यार और वासना में खो गए थे लेकिन उधर खेतों में शिवम सिंह बोर बेल के पास बने एक बड़े से गड्ढे में था। उस गड्ढे में हमेशा बोर का पानी भरा रहता था। शिवम सिंह उसी पानी से भरे गड्ढे में था। उसके ऊपर बोर का पानी गिर रहा था। वह एकदम किसी पुतले की भाँति खड़ा था। उसका ज़हन उसके पास नहीं था। बोर का पानी निरंतर उसके सिर पर गिर रहा था।

शिवम सिंह के की ऑखों के सामने बार बार वही मंज़र घूम रहा था। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे अभी भी उसका लिंग सोनिया के मुह मे हो। इस मंज़र को देखते ही उसके जिस्म को झटका सा लगता और वह ख़यालों की दुनियाँ से बाहर आ जाता। उसका मन आज बहुत ज्यादा दुखी हो गया था। उसे यकीन नहीं आ रहा था कि उसकी सगी भाभी उसके साथ ऐसा घटिया काम कर सकती है। शिवम सिंह के मन में सवाल उभरता कि क्या यहीं प्रेम था उसका?

शिवम सिंह ये तो समझ गया था कि उसकी भाभी ज़रा खुले विचारों वाली औरत थी। शहर वाली थी इस लिए शहरों जैसा ही रहन सहन था उसका। कुछ दिन से उसकी हरकतें ऐसी थी जिससे साफ पता चलता था कि वह शिवम से वास्तव में कैसा प्रेम करती है। किन्तु शिवम सिंह को उससे इस हद तक गिर जाने की उम्मीद नहीं थी। शिवम सिंह को सोच सोच कर ही उस पर घिन आ रही थी कि कितना घटिया काम कर रही थी वह।

उस दिन शिवम सिंह सारा दिन उदास व दुखी रहा। उसका दिल कर रहा था कि वह कहीं बहुत दूर चला जाए। किसी को अपना मुह न दिखाए किन्तु हर बार रेणुका और बच्चों का ख़याल आ जाता और फिर जैसे उसके पैरों पर ज़ंजीरें पड़ जातीं।किसी ने सच ही कहा है कि बीवी बच्चे किसी भी इंसान की सबसे बड़ी कमज़ोरी होते हैं। जब आप उनके बारे में दिल से सोचते हैं तो बस यही लगता है कि चाहे कुछ भी हो जाए पर इन पर किसी तरह की कोई पराशानी न हो।

शिवम सिंह हमेशा की तरह ही देर से हवेली पहुँचा। अन्य दिनों की अपेक्षा आज उसका मन किसी भी चीज़ में नहीं लग रहा था। उसने खुद को सामान्य रखने बड़ी कीशिश कर रहा था वो। अपने कमरे में जाकर वह फ्रेश हुआ और बेड पर आकर बैठ गया।

२९

वर्तमान अब आगे_____

इंस्पेक्टर साक्षी उस हॉस्पिटल में पहुॅची जहॉ पर रेप पीड़िता प्राची को एडमिट किया गया था। प्राची की हालत पहले से काफी ठीक थी। साक्षी के पहुॅचने के पहले ही प्राची के परिवार वाले उससे मिल कर गए थे। इस वक्त प्राची के पास उसकी मॉ गायत्री थी। गायत्री अपनी बेटी की इस हालत से बेहद दुखी थी।

साक्षी जब उस कमरे में पहुॅची तो उसने प्राची के पास ही एक कुर्सी पर गायत्री को बैठै पाया। साक्षी ने औपचारिक तौर पर उससे नमस्ते किया और उसे अपने बारे में बताया। साक्षी के बारे में जानकर गायत्री पहले तो चौंकी फिर सहसा उसके चेहरे पर अजीब से भाव आ गए।

" मेरी बेटी के साथ जो कुछ हुआ है वो तो वापस नहीं लौट सकता बेटी। " गायत्री ने अधीरता से कहा __" ऊपर से इस सबका केस बन जाने से हमारी समाज में बदनामी ही होगी। इस लिए मैं चाहती हूॅ कि तुम ये केस वेस का चक्कर बंद कर दो। मैं जानती हूॅ कि इस केस में आगे क्या क्या होगा ? वो सब बड़े लोग हैं बेटी। वो बड़े से बड़ा वकील अपनी तरफ से खड़ा करेंगे और बड़ी आसानी से केस जीत जाएॅगे। वो कुछ भी कर सकते हैं , वो तो जज को भी खरीद सकते हैं। अदालत के कटघरे में खड़ी मेरी फूल जैसी बेटी से उनका वकील ऐसे ऐसे सवाल करेगा जिसका जवाब देना इसके बस का नहीं होगा। वो सबके सामने मेरी बेटी की इज्ज़त की धज्जियॉ उड़ाएंगे। ये केस मेरी बेटी के साथ ही एक मज़ाक सा बन कर रह जाएगा। इस लिए मैं तुमसे विनती करती हूॅ बेटी कि ये केस वेस वाला चक्कर छोड़ दो। हमें कोई केस वेस नहीं करना। "

" आप जिस चीज़ की कल्पना कर रही हैं आंटी जी। " साक्षी ने विनम्रता से कहा _" मैं उस सबके बारे में पहले ही सोच चुकी हूॅ। मैं जानती हूॅ कि आप जो कह रही हैं वो सोलह आने सच है। यकीनन ऐसा ही होगा मगर , आप चिन्ता मत कीजिए आंटी । प्राची अगर आपकी बेटी है तो ये मेरी भी दोस्त है अब। इसके साथ जो कुछ भी उन लोगों ने घिनौना कर्म किया है उसकी उन्हें ऐसी सज़ा मिलेगी कि हर जन्म में उन्हें ये सज़ा याद रहेगी और वो अपने किसी भी जन्म में किसी की बहन बेटियों के साथ ऐसा करने का सोचेंगे भी नहीं। "

" बात तो वही हुई बेटी। " गायत्री ने कहा _" तुम उन्हें कानूनन इसकी सज़ा दिलवाओगी जबकि मैं जानती हूॅ कि उन लोगों के बाप लोगों के हाथ तुम्हारे कानून से भी ज्यादा लंबे हैं। तुम उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाओगी बेटी। उल्टा होगा ये कि इस सबके चक्कर में खुद तुम्हारी ही जान का खतरा पैदा हो जाएगा। "

" मुझे अपनी जान की कोई परवाह नहीं है आंटी। " साक्षी ने सहसा मुस्कुराकर कहा _" और मेरी जान इतनी सस्ती भी नहीं है जो यूॅ ही किसी ऐरे गैरे के हाथो शिकार हो जाएगी।

खैर , मै ये कहना चाहती हूँ कि उन लोगों को कानूनन सज़ा दिलवाने का फैसला मैने बदल दिया है। "

" क्या मतलब ??" गायत्री के साथ साथ बेड पर लेटी प्राची भी चौंक पड़ी थी।

" ये तो मुझे भी पता है आंटी कि वो लोग कितने बड़े खेत की पैदाइस हैं। " साक्षी ने अजीब भाव से कहा __" कहने का मतलब ये कि कानूनी तौर पर यकीनन मैं उन्हें वैसी सज़ा नहीं दिला सकती जैसी सज़ा के वो लोग हक़दार हैं। इस लिए अब सज़ा अलग तरीके से दी जाएगी उन्हें। बिलकुल वैसी ही सज़ा जैसी सज़ा ऐसे नीच लोगों को देनी चाहिये। "

" तुम क्या कह रही हो बेटी मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा। " गायत्री का दिमाग़ मानो जाम सा हो गया था।

" ये सब छोंड़िये आंटी। " साक्षी ने कहा _" मैं बस आपसे ये कहना चाहती हूँ कि अगर आपसे कोई इस बारे में कुछ भी पूछे तो आप यही कहियेगा कि हमने कोई केस वगैरा नहीं किया है। ये मत कहियेगा कि मैं आपसे या प्राची से मिली थी। यही बात आप प्राची के डैड को भी बता दीजिएगा। मेरी तरफ से उनसे कहना कि दिल पर कोई बोझ या मलाल रखने की कोई ज़रूरत नहीं है। बहुत जल्द कुछ ऐसा उन्हें सुनने को मिलेगा जिससे उनकी आत्मा को असीम तृप्ति का एहसास होगा। "

" तुम क्या करने वाली हो बेटी ?" गायत्री का दिल अनायास ही ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा था , बोली __" देखो कुछ भी ऐसा वैसा न करना जिससे पुनः मेरी बेटी पर कोई संकट आ जाए। "

" आप बेफिक्र रहिए आंटी। " साक्षी ने गायत्री का हाथ पकड़ कर उसे हल्का सा दबाते हुए कहा __" मैं प्राची पर अब किसी भी तरह का कोई संकट नहीं आने दूँगी। मुझे भी उसकी फिक्र है। "

गायत्री कुछ बोल न सकी बस अजीब भाव से साक्षी को देखती रही। बेड पर लेटी प्राची का भी वही हाल था। तभी कमरे में एक नर्स आई। उसने साक्षी से कहा कि डाक्टर साहब उसे अपने केबिन में बुला रहे हैं। साक्षी नर्स की बात सुनकर गायत्री से ये कह कर बाहर निकल गई कि वह डाक्टर से मिल कर आती है अभी। कुछ ही देर में साक्षी डाक्टर के केबिन में उसके सामने टेबल के इस पार रखी कुर्सी पर बैठी थी।

" कहिए डाक्टर साहब। " साक्षी ने कहा _" किस लिए आपने बुलाया है मुझे ?"

" देखो बेटा। " डाक्टर ने गंभीरता से कहा _" तुम मेरी बेटी के समान हो। मैं तुमको तुम्हारे बचपन से जानता हूँ। ठाकुर साहब से मेरे बहुत अच्छे संबंध हैं आज भी। मुझे ये जान कर बेहद खुशी हुई है कि तुम आज पुलिस ऑफिस र बन गई हो। लेकिन , इस केस में जिन लोगो पर तुमने हाथ डालने का सोचा है या सोच कर अपना कदम बढ़ा लिया है वो निहायत ही बहुत खतरनाक लोग हैं। इस लिए मैं चाहता हूँ कि तुम इस केस को यहीं पर छोंड़ दो। क्योंकि

मैं नहीं चाहता कि तुम पर कोई ऑच आए। तुम हमारे ठाकुर साहब की बेटी हो। "

" मैं आपके जज़्बातों की कद्र करती हूॅ डाक्टर अंकल। " साक्षी ने कहा __" लेकिन आप बेफिक्र रहिए मैने प्राची के केस की कोई फाइल बनाई ही नहीं है अब तक। क्योंकि मुझे भी पता है कि जिनके खिलाफ केस बनाना है वो कैसे लोग हैं। इस लिए आप बेफिक्र रहिए। "

" ये तो अच्छी बात है बेटी। " डाक्टर ने खुश होकर कहा _" लेकिन तुम यहॉ पर फिर आई किस लिए हो ? अगर केस नहीं बनाया है तो तुम्हारे यहॉ पर आने का क्या मतलब है ? जबकि होना तो ये चाहिये कि तुम्हें इस सबसे दूर ही रहना चाहिए था। "

" इंसानियत नाम की कोई चीज़ भी होती है डाक्टर अंकल। " साक्षी ने कहा __" इसी लिए आई हूॅ यहॉ। वरना यूॅ फारमल ड्रेस में न आती बल्कि पुलिस की वर्दी में आती। "

" चलो ठीक है। " डाक्टर ने कहा _" पर ड्रेस बदल देने से तुम्हारा काम तो नहीं बदल जाएगा न। आख़िर हर रूप में तो तुम पुलिस वाली ही कहलाओगी। अब अगर आरोपी के के आकाओं को पता चल जाए कि तुम यहॉ हो तो वो तो यही समझेंगे कि तुम केस के सिलसिले में ही यहॉ आई हो। "

" देखिए अंकल। " साक्षी ने कहा __" फारमेलिटी तो करनी ही पड़ती है। वरना पुलिस की नौकरी के साथ इंसाफ नहीं हो पाएगा। और इसी फॉरमेलिटी के तहत अभी मुझे रजतकुमार रस्तोगी से भी मिलने जाना है। मुझे पता है कि वो पुलिस को बहुत तुच्छ ही समझेगा। इस लिए उससे मिल कर मैं भी फौरी तौर पर यही कहूॅगी कि फॉरमेलिटी तो करनी ही पड़ती है न सर। बाकी आप इस बात से बेफिक्र रहें कि आपके बेटे और उसके दोस्तों का कोई केस बनेगा। और केस भी तो तभी बनेगा न जब पीड़िता या उसके घरवाले चाहेंगे। अगर वो लोग ही केस नहीं करना चाहेंगे तो भला कैसे कोई केस बन जाएगा ? मेरी इन सब बातों से वो खुश हो जाएगा अंकल। वो यही समझेगा कि उसके रुतबे और डर से पीड़िता या उसके घर वालों ने उसके खिलाफ़ केस करने की हिम्मत ही नहीं कर सके। "

" ओह आई सी। " डाक्टर ने कहा __" मगर मुझे ऐसा क्यों लगता है कि असल चक्कर कुछ और ही है जिसे तुम चलाने वाली हो या फिर चलाना शुरू भी कर दिया है। "

" ये सब छोड़िये आप ये बताइये कि आपने और किस लिए बुलाया था मुझे ?" साक्षी ने पहलू बदल दिया।

" पुलिस की नौकरी में आते ही काफी शार्प दिमाग़ हो जाता है न ?" डाक्टर मुस्कुराया फिर सहसा गंभीर होकर बोला __" बात ज़रा सीरियस है बेटी। "

" क्या मतलब ?" साक्षी चौंकी।

" प्राची की रिपोर्ट आ चुकी है। " डाक्टर ने कहा __" और रिपोर्ट ऐसी है जिसके बारे में जानकर शायद तुम्हें यकीन न आए। "

" ऐसी क्या बात है रिपोर्ट मेंं ?" साक्षी की पेशानी पर बल पड़े __" ज़रा बताइये तो सही। "

" प्राची को ब्लड कैंसर है बेटी। " डाक्टर ने जैसे धमाका किया __" वो भी लास्ट स्टेज में है। "

" क्याऽऽऽ ????" साक्षी बुरी तरह उछल पड़ी __" ये आप क्या कह रहे हैं अंकल ?"

" यही सच है बेटी। " डाक्टर ने कहा __" वो बस कुछ ही दिनों की मेहमान है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि ये बात मैं उसके पैरेन्ट्स को कैसे बताऊँ ? एक तो वैसे भी वो अपनी बेटी की इस हालत से बेहद दुखी हैं दूसरे अगर उन्हें ये पता चल गया कि उनकी बेटी को कैंसर है और वो बस कुछ ही दिनों की मेहमान है तो जाने उन पर इसका क्या असर हो ?"

साक्षी के दिलो दिमाग़ में अभी भी धमाके हो रहे थे। अनायास ही उसकी ऑखें नम हो गई थी। हलॉकि प्राची से उसका कोई रिश्ता नहीं था। उसने तो बस उसे दोस्त कह दिया था ताकि वह आसानी से कुछ बता सके। बाद में उसे ये भी पता चल गया कि ये वही प्राची है जिससे विक्रम प्यार करता था। लेकिन फिर वो दोनो अलग हो गए थे। साक्षी के मन में एकाएक ही हज़ारों सवाल उभर कर ताण्डव करने लगे थे।

" इसके साथ ही प्राची जो दो महीने की प्रेग्नेन्ट है तो उसके पेट में पनप रहे शिशु का भी पतन हो जाएगा। " डाक्टर ने कहा __" यानी एक साथ दो लोगों की जान चली जाएगी। "

" ये तो सचमुच बहुत बड़ी बात है डाक्टर अंकल। " साक्षी गंभीरता से बोली __" पर सोचने वाली बात है कि इतनी कम उमर में उसे ब्लड कैंसर हो गया। "

" आज कल ऐसा ऐसा सुनने को मिलता बेटा जिसकी आम इंसान तो क्या हम डाक्टर लोग भी कल्पना नहीं कर सकते। " डाक्टर ने कहा __" ख़ैर , मैंने यही बताने के लिए तुम्हें बुलाया था। अभी मुझे मिस्टर वाजपेयी को भी इस बात की सूचना देनी होगी। वो बेचारे तो सुन कर ही गहरे सदमे में आ जाएँगे। "

" आप सही कह रहे हैं। " साक्षी ने कहा __" वैसे क्या ये कैंसर वाली बात प्राची को पता है ??"

" पता नहीं। " डाक्टर ने कहा __" हो भी सकता है और नहीं भी। "

" अच्छा मैं चलती हूँ अंकल। " साक्षी ने कुर्सी से उठते हुए कहा __" मुझे प्राची से अकेले में कुछ बातें करनी है। "

" ओके बेटा। " डाक्टर ने कहा।

साक्षी भारी मन से डाक्टर के केबिन से बाहर निकल गई। उसे ये बात हजम ही नहीं हो रही थी कि प्राची को लास्ट स्टेज का कैंसर है। उसे प्राची के लिए इस सबसे बड़ा दुख सा हो रहा था। उसके मन में कई तरह की बातें चल रही थी। जिनके बारे में उसे प्राची ही बता सकती

थी। इस लिए वह तेज़ी से उस कमरे की तरफ बढ़ गई।

प्राची के कमरे में पहुँच कर साक्षी ने गायत्री से बड़े ही विनम्र भाव से कहा कि उसे प्राची से अकेले में कुछ बातें करनी है। इस लिए अगर आपको ऐतराज न हो तो आप बाहर थोड़ी देर के लिए चले जाइये। गायत्री उसकी ये बात सुन कर कुछ पल तो उसे देखती रही फिर कुर्सी से उठ कर कमरे से बाहर चली गई। साक्षी ने दरवाजे की कुंडी लगा दी और फिर आ कर वह गायत्री वाली कुर्सी पर ही प्राची के बेड के पास ही बैठ गई। प्राची उसे बड़े ग़ौर से देख रही थी। साक्षी भी उसके चेहरे की तरफ देखने लगी।

" तो डाक्टर ने आपको बता दिया कि मुझे लास्ट स्टेज का कैंसर ह ै ?" प्राच ी ने फीकी सी मुस्कान के साथ कहा था।

" तुम्हें कैसे पता कि डाक्टर ने मुझे किस लिए बुलाया थ ा ?" साक्ष ी मन ही मन बुरी तरह चौंकी थी उसकी बात से।

" बड़ी सीधी सी बात है। " प्राच ी ने कह ा _" जब कोई व्यक्त ि मरीज़ बन कर हॉस्पिटल में आता है तो उसकी हर तरह की जॉच होती है। उसके बाद ये जान जाना कौन सी बड़ी बात है कि मुझे असल में क्या ह ै ? ये तो मैं जानती थी कि यहॉ पर मेरी जॉच हुई होगी और जब उसकी रिपोर्ट आएगी तो डाक्टर को पता चल ही जाएगा कि मुझे लास्ट स्टेज का कैंसर है। इस लिए जब नर्स आपको बुलाने आई तो मुझे अंदाज़ा हो गया कि डाक्टर यकीनन आपको उस रिपोर्ट के बारे में ही बताएगा। इस कमरे में आते वक्त आपके चेहरे पर जो भाव थे वो दर्शा रहे थे कि आप अंदर से कितनी गंभीर हैं मेरे बारे में जान कर। इस लिए आपसे कहा ऐसा। "

" यकीनन काबिले तारीफ़ दिमाग़ है। " साक्ष ी ने कह ा __" थोड़े से सबूतों पर कैसे कड़ियों को जोड़ना है ये तुमने दिखा दिया। पुलिस विभाग में होती तो जटिल से जटिल केस बड़ी आसानी से सुलझा लेती तुम। "

" आपने तो बेवजह ही तारीफ़ कर दी। " प्राच ी ने कह ा __" जबकि ऐसा कुछ भी नहीं है। "

" तो इस लिए ही तुमने मेरे भाई विक्रम से बेवफाई की थ ी ?" साक्ष ी के मन में सबसे ज्यादा यही सवाल उछल रहा थ ा __" तुमको पहले से पता था कि तुम्हें कैंसर है इस लिए तुमने ये रास्ता अपनाया। है न ?"

" वि विक्र... म ??" प्राच ी का चेहरा फक्क पड़ गया। लाख कोशिशों के बाद भी उसकी ज़ुबान लड़खड़ा गई ___" क कौन व ि .. क्र ..म ? आप किसकी बात कर रही ह ं ?"

" अब भला झूँठ बोलने की क्या ज़रूरत है प्राच ी। " साक्ष ी ने कह ा __" मुझे बहुत अच्छी तरह पता है कि तुम मेरे भाई विक्रम से आज भी बेपनाह मोहब्बत करती हो। बेवफाई तो तुमने जान बूझ कर की उससे। ताकि वो तुम्हारी उस ज़िंदगी से चला जाए जो बस कुछ ही समय

की मेहमान थी। उसे अपने से दूर करने का यही तरीका अपनाया तुमने। जब मेरे डैड ने उसे और उसके परिवार को हवेली से निकाल दिया तब तुम्हें भी मौका मिल गया और तुमने उसी मौके में उससे ऐसी बातें कही कि उसे तुमसे नफरत हो जाए। "

" तो और क्या करती मैं ?" प्राची के अंदर का बॉध मानो ज्वारभॉटा बन कर फूट पड़ा। वह फूट फूट कर रो पड़ी। रोते हुए ही उसने कहा __" मैं उसकी ज़िंदगी में चंद महीनों की मेहमान थी। वो मुझे इतना चाहता था कि वह मेरे बिना जीवन की कल्पना भी नहीं करता था। प्यार तो मैं भी उससे उतना ही करती थी और आज भी करती हूँ मगर , उस प्यार से क्या हो सकता था भला ? हम हमेशा साथ तो नहीं रह सकते थे न। मेरी मौत पर वह टूट जाता। मैने सोचा कि उसके अंदर से अपने प्रति चाहत निकाल दूँ किसी तरह ताकि वो किसी और के साथ अपने जीवन में आगे बढ़ने का सोच सके। मुझे जो सही लगा वो मैने किया। मैने अपने आपको पत्थर बना लिया और उससे उस तरह की दो टूक बातें की। उसके अंदर अपने प्रति नफरत पैदा करने के लिए मैने विवेक नाम के लड़के से दोस्ती भी कर ली। मैं जानती थी कि विवेक कैसा लड़का है मगर अब मेरे पास जीवन ही कहॉ बचा था और ना ही मुझमें जीने की चाह रह गई थी। मुझे ये भी पता है कि मेरे पेट में विवेक का ही पाप है लेकिन मुझे इसकी कोई परवाह नहीं है क्योंकि इस पाप का भी मेरे साथ ही अंत हो जाएगा। विवेक ने मेरे शरीर को भोगा मगर मेरे दिल में मेरे मन में तो हर जन्म में सिर्फ विक्रम ही रहेगा। "

" ये सब तो ठीक है। " साक्षी ने कहा __" लेकिन क्या तुमने ये नहीं सोचा कि तुम्हारे ऐसा करने से विक्रम किस हद तक टूट कर बिखर जाएगा ? तुमने तो ये सोच कर उससे बेवफाई की कि वह किसी और के साथ जीवन में आगे बढ़ जाएगा , लेकिन ये क्यों नहीं सोचा कि अगर उसने ऐसा नहीं किया तो ???"

" मैने बहुत कुछ सोचा था साक्षी दीदी। " प्राची ने फीकी सी मुस्कान के साथ कहा __" ये दिल बड़ा ही अजीब होता है। कोई हज़ारों बार चाहे इसके साथ खिलौने की तरह खेल कर इसे टुकड़ों में बिखेर दे फिर भी ये मोहब्बत करना बंद नहीं करता। इसके अंदर हर रूप में मोहब्बत विद्यमान रहती है फिर चाहे वो नफरत के रूप में ही क्यों न हो। नफरत से पत्थर बन जाओ फिर भी मोहब्बत से पिघल जाओगे। विक्रम वो कोहिनूर है जिसे हर लड़की मोहब्बत करना चाहेगी और करती भी थी। मोहब्बत एक एहसास है दीदी , पत्थर भी इस एहसास से पिघल जाते हैं। आपको फिर से कब किसी से मोहब्बत हो जाए ये आपको भी पता नहीं चलेगा। मोहब्बत करने वाला पत्थर दिल में भी मोहब्बत का एहसास जगा देता है। बस यही सोच कर मैने ये सब किया था। मुझे पता था उसके जीवन में कोई न कोई ऐसी लड़की ज़रूर आ जाएगी जो अपनी मोहब्बत से उसकी नफरत को मिटा देगी और फिर से उसके टूटे हुए दिल को जोड़ कर उसे मोहब्बत करना सिखा देगी। "

" क्या पता ऐसा हुआ भी है कि नहीं ?" साक्षी ने कहा __" क्या तुमने कभी पता करने की कोशिश की कि विक्रम किस हाल में है ?"

" कोशिश करने का सवाल ही कहॉ रह गया दीदी ?" प्राची ने कहा __" मैंने तो ये सब किया ही उससे दूर होने के लिए था। दुबारा उसके पास जाने का या ये पता करने का कि वो

किस हाल में है ये सवाल ही नहीं था। क्योंकि मैने बड़ी मुश्किल से वो सब किया था , मुझमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि मैं अपने महबूब के उदास चेहरे को दुबारा देख पाती। "

" ख़ैर , ये बताओ कि जब तुमको पता चल गया था कि तुमको कैंसर है तो तुमने अपने माता पिता को क्यों नहीं बताया ?" साक्षी ने पहलू बदलते हुए पूछा __" अगर बता देती तो संभव था कि तुम्हारा इलाज होता और तुम ठीक हो जाती ?"

" ऐसा कुछ न होता दीदी। " प्राची ने कहा _" क्योंकि मेरे पिता उस हालत में ही नहीं थे कि वो मेरा कैंसर का इलाज करवा पाते। आप तो बस यही जानती हैं कि वो बड़े आदमी हैं मगर ये नहीं जानती हैं कि उस बड़े आदमी के साथ उसके बड़े भाईयों ने कितना बड़ा अत्याचार किया है ? दादा जी के मरते वक्त बड़े ताऊ ने धोखे से सारी प्रापर्टी पर उनके हस्ताक्षर करवा लिया। उसके बाद दादा जी की तेरवीं होने के बाद ही अगले दिन ताऊ और उनके दोगले भाई ने मेरे माता पिता को सारी प्रापर्टी से बेदखल कर दिया। अब आप ही बताइये कि कैसे मेरे पापा मेरा इलाज करवा सकते थे ?"

साक्षी को समझ ही न आया कि वह क्या बोले? प्राची की कहानी ही ऐसी थी कि वह बेचारी हर तरह से मजबूर थी। उसके ठीक होने का कहीं कोई चॉस ही नहीं था।

" अगर मैं अपने कैंसर की बात पापा से बताती तो वो बेचारे बेवजह ही परेशान हो जाते। " प्राची कह रही थी __" जिसकी कंपनी में लोग काम करते थे और जो खुद कभी किसी का मालिक हुआ करता था वो आज खुद किसी दूसरे की कंपनी में बीस हजार की नौकरी करता है। बीस हज़ार में अपने तीन बच्चों और खुद दोनो प्राणियों का खर्चा चला लेना सोचिये कितना मुश्किल होगा ? ऐसे में वो कैसे मेरा इलाज करवा पाते ? इससे अच्छा तो यही था दीदी कि मैं मर ही जाऊँ। दो चार दिन मेरे लिए रो लेंगे उसके बाद फिर से उनका जीवन आगे चल पड़ेगा। "

" इतनी छोटी सी उमर में इतनी बड़ी सोच और इतना बड़ा त्याग किया तुमने। " साक्षी की ऑखों में ऑसू आ गए __" ये सब कैसे कर लिया तुमने ?"

साक्षी ने झपट कर उसे अपने सीने से छुपका लिया। प्राची को उसके गले लगते ही असीम सुख मिला। भावना में बह गई वह। वर्षों से अपने अंदर कैद वेदना को वह रोंक न पाई बाहर निकलने से। वह हिचकियॉ ले लेकर रोने लगी थी।

" मेरी आपसे एक विनती है दीदी। " फिर प्राची ने अलग होकर तथा ऑसू भरी ऑखों से कहा।

" विनती क्यों करती है पागल ?" साक्षी का गला भर आया __" तू बस बोल। क्या कहना है तुझे ?"

" मु मुझे एक बार। " प्राची की रुलाई फूट गई , लड़खड़ाती आवाज़ में कहा __" मुझे बस ए एक बार वि .. विक्र... म से मिलवा दीजिए। मुझे मेरे महबूब से मिलवा दीजिए दीदी। मैं उसकी गुनहगार हूँ। मुझे उससे अपने किये की माफ़ी माँगनी है। मैं उसे बताना चाहती हूँ कि मैं बेवफा नहीं हूँ। मैं तो आज भी उससे टूट टूट कर प्यार करती हूँ। उसे बुलवा दीजिए दीदी। मेरी ख़्वाहिश है कि मेरा अगर दम निकले तो उसकी ही बाहों में निकले। मेरे महबूब की बाँहों में दीदी। आप बुलवाएँगी न दीदी ? मुझे एक बार देखना है उसे। अपनी आँखों में उसकी तस्वीर बसा कर मरना चाहती हूँ मैं। अपने महबूब की सुंदर व मासूम सी तस्वीर। "

साक्षी का हृदय हाहाकार कर उठा __" मुझमें इतनी हिम्मत नहीं है कि मैं तेरी ऐसी करुण बातें सुन सकूँ। मैं तुझसे वादा करती हूँ कि तेरे महबूब को मैं तेरे पास ज़रूर लाऊँगी। मैं धरती आसमान एक कर दूँगी प्राची और उसे ढूँढ़ कर तेरे सामने हाज़िर कर दूँगी। मैं अभी से उसका पता लगाती हूँ। तू बस मेरे आने का इंतज़ार करना। "

साक्षी ने कर्सी से उठ कर बेड पर लेटी प्राची के माथे को झुक कर चूँमा और अपने ऑसू पोंछते हुए बाहर निकल गई।

३०

भूतकाल अब आगे_____ _

शिवम सिंह खाना पीना खा कर अपने कमरे में लेटा हुआ था। उसके दिलो दिमाग़ से आज की घटना हट ही नहीं रही थी। उसे यकीन ही नहीं हो रहा था कि उसकी माँ समान भाभी उसके साथ इतनी गिरी हुई तथा नीचतापूर्ण हरकत कर सकती है। उसकी ऑखों के सामने वो दृश्य बार बार आ रहा था जब सोनिया ने उसके लिंग को अपने मुह में लिया हुआ था। शिवम सिंह अपनी ऑखों के सामने इस दृश्य के चकराते ही बहुत अजीब सा महसूस करने लग जाता था। उसके मन में अपनी भाभी के प्रति तीव्र घृणा और नफ़रत भरती जा रही थी।

उधर सत्यम सिंह और सोनिया को ये डर भी सता रहा था कि शिवम सिंह आज की इस घटना का ज़िक्र कहीं किसी से कर न बैठे। हलाँकि उसकी फितरत के हिसाब से उन दोनो को यही लग रहा था कि वो इस बारे में किसी से कुछ कहेगा नहीं। पर कहते हैं न कि अपराध का बोध अगर स्वयं को हो तो उसका दिमाग़ एक जगह स्थिर नहीं रह सकता। वही हाल सोनिया व सत्यम सिंह का था। दोनो ने फैसला कर लिया था कि कल ही अपने बच्चों को लेकर शहर चले जाएॅगे। जब ये घटना पुरानी हो जाएगी तो फिर उस हिसाब से देखा जाएगा।

रात को सारे कामों से फुरसत हो कर रेणुका ऊपर अपने कमरे में पहुॅची। बच्चे क्योंकि अब बड़े हो गए थे इस लिए वो सब अब अलग कमरों में सोते थे। निशा हमेशा की तरह अपने भैया विक्रम के साथ ही सोती थी।

रेणुका जब कमरे में पहुॅची तो शिवम सिंह को बेड पर पड़े हुए किसी गहरी सोच में डूबा हुआ पाया। वो खद भी पिछले काफी दिनों से महसूस कर रही थी कि शिवम सिंह काफी उदास व परेशान सा रहने लगा है। उसके द्वारा पूछने पर भी उसने कुछ न बताया था।

" पिछले कुछ दिनो की अपेक्षा आज कुछ ज्यादा ही परेशान नज़र आ रहे हैं आप। " रेणुकाा ने बेड के किनारे पर बैठते हुए किन्तु शिवम के चेहरे पर देखते हुए कहाा __" मैं जब भी आपसे इस परेशानी की वजह पूछती हूॅ तो आप टाल जाते हैं शिवम जी। क्या आप पर मेरा इतना भी हक़ नहीं कि मैं आपके मन की बातें जान सकूॅ ?"

" ऐसा क्यों कहती हो रेणुकाा ?" शिवम ने चौंक कर कहा थाा __" तुम्हारा तो मुझ पर सारा हक़ है। मेरे दिल में और मेरे मन में भी। लेकिन , कुछ बातें ऐसी भी होती हैं जिन्हें अगर ज़ुबान से बाहर निकाल दी जाएॅ तो कयामत आ जाती है। तुम्हारे पूछने पर हर बार मैं टाल देता हूॅ , यकीन मानो मुझे तुम्हारी बातों का जवाब न दे पाने पर बेहद दुख होता है। पर मैं क्या करू रेणुकाा ? मैं चाह कर भी वो सब तुम्हें बता नहीं सकता। "

" अगर आप बताना नहीं चाहते हैं शिवम जी तो कोई बात नहीं। " रेणुकाा ने गंभीरताा से

कहा __" मैं तो बस इस लिए जानना चाहती थी कि मैं आपको इस तरह उदास और परेशान नहीं देख सकती। हर वक्त सोचती रहती हूँ कि आख़िर ऐसा क्या हो गया है जिसकी वजह से आपके चेहरे का वो नूर खो गया है जो इसके पहले दमकता था। "

" समय हमेशा एक जैसा नहीं रहता। " शिवम ने गहरी साँस ली __" ये तो बदलता ही रहता है और बदलते हुए इस समय के साथ ही इंसान से जुड़ी हर चीज़ भी बदलने लगती है। "

" आपने कहा कि कुछ बातें ऐसी होती हैं जिन्हें अगर ज़ुबान से बाहर निकाल दी जाएँ तो कयामत आ जाती है। " रेणुका ने कुछ सोचते हुए कहा __" मेरे मन में ये जानने की तीव्र उत्सुकता जाग गई है कि ऐसी भला कौन सी बातें हैं जिनके बाहर आ जाने से कयामत आ सकती है ? मैं तो आपकी धर्म पत्नी हूँ , हमारे बीच आज तक किसी का कोई विक्रम ़ विक्रम ़ नहीं रहा फिर क्या बात है कि आज कोई बात मेरे सामने विक्रम ़ ही रख रहे हैं ?"

" मैं जानता हूँ रेणुका कि जब तक तुम उस बात को जान नहीं लोगी तब तक तुम्हारे मन को शान्ति नहीं मिलेगी। " शिवम सिंह ने गंभीरता से कहा __" इस लिए मैं तुम्हें वो सब बता ही देता हूँ लेकिन उससे पहले तुम्हें मुझे एक वचन देना होगा। "

" वचन ??" रेणुका के माथे पर बल पड़ा __" कैसा वचन चाहते हैं आप मुझसे ?"

" यही कि जो कुछ मैं तुम्हें बताने वाला हूँ उस बात को कभी किसी से कहोगी नहीं। " शिवम सिंह ने कहा __" वो सारी बात हम दोनो के बीच ही रहेगी। यही वचन चाहिए तुमसे। "

" ठीक है शिवम जी। " रेणुका ने कहा _" मैं आपको वचन देती हूँ कि आपके द्वारा कही गई किसी भी बात का ज़िक्र मैं कभी किसी से नहीं करू गी। "

रेणुका के वचन देने पर शिवम सिंह कुछ पल तक उसे देखता रहा फिर एक लम्बी व गहरी साँस लेकर उसने वो सब कुछ रेणुका को बताना शुरू कर दिया। उसने रेणुका से कुछ भी नहीं छुपाया। शुरू से लेकर आज तक की सारी राम कहानी उसने रेणुका को विस्तार से बता दी। उसके मुख से ये सब बातें सुन कर रेणुका की हालत किसी निर्जीव पुतले की मानिन्द हो गई। उसके चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे उसे इन सारी बातों पर ज़रा सा भी यकीन न हो रहा हो।

" आज की इस घटना ने तो मुझे अंदर से बुरी तरह हिला कर रख दिया है रेणुका। " शिवम सिंह ने कहा __" समझ में नहीं आ रहा कि क्या करू मैं ? मैं सोच भी नहीं सकता था कि वो कुलटा औरत मेरे साथ इतनी नीच और घटिया हरकत भी कर सकती थी। "

" ये सब मेरी वजह से हुआ है शिवम जी। " रेणुका ने नम ऑखों से कहा __" अगर मैं बीमार ना होती तो कभी भी वो औरत खेतों में आपको खाने का टिफिन देने न जा पाती। आज तो मैं खुद ही आपको खाना लेकर आने वाली थी लेकिन उसने ही मुझे जाने नहीं दिया।

कहने लगी कि अभी मुझे और आराम करना चाहिये। भला मैं क्या जानती थी कि उसके मन में क्या खिचड़ी पक रही थी ?"

" इसका चरित्र तो निहायत ही घटिया है रेणुका। " शिवम सिंह ने कहा _" ये बहुत शातिर औरत है। इसी ने मेरे भाई को अपने रूप जाल में फॅसाया रहा होगा। मेरे भैया तो ऐसे नहीं हैं। वो बस इसकी बातों में ही आ जाते हैं। "

" आपके बड़े भाई का चरित्र भी कुछ ठीक नहीं है शिवम जी। " रेणुका ने कहा __" हो सकता है कि आपको मेरी इस बात से बुरा लगे मगर सच्चाई तो यही है कि आपके बड़े भाई साहब खुद भी आपकी भाभी की तरह ही चरित्रहीन हैं। "

" ये क्या कह रही हो तुम रेणुका ?" शिवम सिंह ने हैरतअंगेज लहजे में कहा __" बड़े भैया के बारे में तुम ऐसा कैसे कह सकती हो ?"

" मैने आज तक आपसे उनके बारे में यही सोच कर नहीं बताया था कि आपको बुरा लगेगा। " रेणुका ने कहा __" पर आज जब आपने अपनी भाभी के चरित्र का वर्णन किया तो मैंने भी आपको आपके भाई के चरित्र के बारे में बताने का सोच लिया। "

" आख़िर ऐसा क्या किया है बड़े भैया ने तुम्हारे साथ ?" शिवम सिंह का लहजा एकाएक ही कठोर हो गया , बोला _" मुझे सबकुछ साफ साफ बताओ रेणुका। "

रेणुका ने शिवम सिंह को शुरू से लेकर अब तक की बात बता दी। सुन कर शिवम सिंह ठगा सा बैठा रह गया बेड पर। ऑखों में आश्चर्य के साथ साथ दुख के भाव भी नुमायां हो गए थे।

" पहले मुझे लगा करता था कि ये सब शायद मेरा वहम है। " रेणुका धीर गंभीर भाव से कह रही थी __" पर धीरे धीरे मुझे समझ आ गया कि ये वहम नहीं बल्कि सच्चाई है। जेठ जी की नीयत में ही खोट है। वो अपने छोटे भाई की बीवी पर ग़लत नीयत से हाथ डालना चाहते हैं। "

" ये सब तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया रेणुका ?" शिवम सिंह ने कहा __" भगवान जानता है कि मैंने कभी भूल से भी अपने बड़े भाई व भाभी का कभी बुरा नहीं सोचा। बल्कि हमेशा उन्हें राम और सीता समझ कर उनका मान सम्मान किया है। मगर मुझे क्या पता है कि ये दोनो राम व सीता जैसे कभी थे ही नहीं। मैं कल ही बाबू जी से इस बारे में बात करू गा। ये कोई मामूली बात नहीं है जिसे चुपचाप सहन करते रहें। हमारे आदर सम्मान देने को वो लोग हमारी कमज़ोरी समझते हैं। मगर अब ऐसा नहीं होगा। मॉ बाबू जी को इस बात का पता तो चलना ही चाहिए कि उनका बड़ा बेटा और बड़ी बहू कैसी सोच रखते हं ?"

" नहीं शिवम जी। " रेणुका बुरी तरह घबरा गई थी , बोली __" भगवान के लिए शान्त हो जाइये। आप ये सब मॉ बाबू जी से बिलकुल भी नहीं बताएॅगे। बड़ी मुश्किल से तो उन्हें

ऐसा दिन देखने को मिला है जब उनके बड़े बेटे और बहू खुशी खुशी हम सबसे मिल जुल रहे हैं। इस लिए आप ये सब उनसे बताकर उन्हें फिर से दुखी नहीं करेंगे। "

" क्यों न बताऊँ रेणुका ?" शिवम सिंह ने आवेश में कहा __" ये ऐसी बात नहीं है जो अगले दिन खत्म हो जाएगी बल्कि ऐसी है कि ये आगे चलती ही रहेगी। जब किसी का मन इन बुरी चीज़ों से भर जाता है तो वो व्यक्ति किसी के लिए फिर अच्छा नहीं सोच सकता। अभी तो ये शुरूआत है रेणुका । जब आज ये हाल है तो सोचो आगे कैसे हालात होंगे ?"

" सब ठीक हो जाएगा शिवम जी। " रेणुका ने समझाने वाले भाव से कहा __" आप बस उनसे दूर रहियेगा। मॉ बाबूजी से आप इस सबका ज़िक्र नहीं करेंगे। "

" ज़िक्र तो होगा रेणुका। " शिवम सिंह ने निर्णायक भाव से कहा __" अब तो रात काफी हो गई है वरना अभी इस बात का ज़िक्र होता। मगर सुबह सबसे पहले इसी बात का ज़िक्र होगा। "

" आप ऐसा कुछ भी नहीं करेंगे। " रेणुका ने कहा __" आपको हमारे विक्रम की कसम है शिवम जी आप मॉ बाबू जी से उनके बारे में कुछ भी नहीं कहेंगे। "

" मेरे बेटे की कसम देकर तुमने ये ठीक नहीं किया रेणुका। " शिवम सिंह असहाय भाव से कहा था।

" मुझे माफ कर दीजिए शिवम जी। " रेणुका ने नम ऑखों से कहा __" पर आपको भी तो सोचना चाहिए था न। सोचना चाहिये था कि इस सबसे मॉ बाबू जी पर क्या गुज़रेगी जब उन्हें ये पता चलेगा कि उनका बड़ा बेटा और बड़ी बहू क्या करतूत कर रहे हैं ?"

शिवम सिंह कुछ न बोला बल्कि बेड पर एक तरफ करवॅट लेकर लेट गया। रेणुका को समझते देर न लगी कि शिवम सिंह उससे नाराज हो गया है। आज जीवन में पहली बार ऐसा हुआ था कि शिवम सिंह रेणुका से नाराज हो गया था।

कुछ देर रेणुका उसे एकटक देखती रही फिर वह भी उसके बगल में लेट गई। ऑखों में ऑसू थे और मन में बस एक ही बात कि मुझे माफ कर दीजिए शिवम जी।

सुबह जब रेणुका की नीद खुली तो बगल में शिवम सिंह को न पाया उसने। वह समझ गई कि हर दिन की तरह शिवम सिंह खेतों पर चले गए हैं। मगर तुरंत ही उसे रात की बातो का ख़याल आया। वह एकदम से हड़बड़ा गई। उसे आशंका हुई कि शिवम सिंह कहीं अपनी कसम तोड़ कर मॉ बाबू जी से वो सब बताने तो नहीं चले गए? ये सोच कर रेणुका झट से बेड से उठी। अपनी सारी को दुरुस्त करके वह बिना हाथ मुॅह धोए ही कमरे से बाहर निकल गई।

नीचे आकर देखा तो सब कुछ सामान्य था। उसे कहीं पर भी कुछ महसूस न हुआ कि जैसे कुछ बात हुई हो। ये देख कर उसने राहत की साँस ली। मन में खुशी के भाव भी जागृत हो

गए, ये सोच कर कि शिवम जी ने बेटे की कसम नहीं तोड़ी।

हवेली के मुख्य द्वार की तरफ जाकर उसने बाहर लान में देखा तो चौंक पड़ी। बाहर सत्यम सिंह सोनिया व उसके बच्चे सब कार में बैठ रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे वो लोग शहर जा रहे हों। रेणुका को समझते देर न लगी कि वो लोग इतना जल्दी क्यों यहॉ से शहर जा रहे हैं। हर बार तो ऐसा होता था कि जब भी उसके जेठ व जेठानी शहर जाते थे तब वह उनके पॉव छूकर आशीर्वाद लेती थी। मगर आज उसने ऐसा नहीं किया। बल्कि दरवाजे से तुरंत ही पलट गई वह, ताकि किसी की नज़र न पड़े उस पर। जेठ जेठानी के लिए उसके मन में नफरत व घृणा सी भर गई थी अचानक। वह पलटी और वापस अपने कमरे की तरफ बढ़ गई।

३१

वर्तमान अब आगे_____

साक्षी प्राची से मिलने के बाद शाम को अपने घर हवेली पहुँची। प्राची की कहानी और उसकी बातों ने उसे सच में अंदर तक हिला दिया था। वह प्यार मोहब्बत जैसी चीज़ों को बकवास ही मानती थी। किन्तु प्राची से मिलने के बाद उसे इस प्यार मोहब्बत की अहमियत समझ आई थी। उसे समझ आया कि कैसे लोग किसी के प्यार में इस क़दर पागल से हो जाते हैं कि अपने महबूब की खुशी के लिए वो कोई भी काम किस हद से बाहर तक कर सकते हैं। प्राची से मिलकर और उसके प्यार की सच्चाई व गहराई को जानकर उसे एहसास हुआ कि आज के युग में भी अभी ऐसे लोग हैं जो प्यार के लिए क्या नहीं कर डालते?

प्राची की हालत और उसके प्यार की दास्तां ने साक्षी के अंतर्मन को झकझोर कर रख दिया था। एक तेज़ तर्रार लड़की जो खुद को किसी भी मामले में लड़कों से कम नहीं समझती थी आज प्राची की असलियत ने उसके दिल को छू लिया था। उसके हृदय में प्राची के प्रति पीड़ा जाग गई थी और जिस पीड़ा ने उसकी ऑखों से ऑसू छलका दिये थे।

वह आज तक नहीं समझ पाई और ना ही कभी समझने की कोशिश की कि क्यों वह अपने चाचा चाची के लड़के विक्रम से नफ़रत करती थी? क्यों उसने कभी उससे बात करना ज़रूरी नहीं समझा? क्यों उसने हमेशा विक्रम को अपना भाई नहीं समझा? आख़िर क्या अपराध किया था उसने उसके साथ? जहॉ तक उसे याद था जब कभी भी विक्रम उससे बात किया था तो बड़ी इज्ज़त से किया था। हमेशा उसे दीदी और आप कह कर संबोधित करता था।

प्राची से मिलने के बाद साक्षी हवेली में जाकर सीधा अपने कमरे में बेड पर लेट गई थी। उसकी मॉ ने तथा उसकी छोटी बुआ गीता ने उससे बात करना चाहा था मगर उसने सबको ये कह कर अपने पास से वापस लौटा दिया था कि वह कुछ देर अकेले रहना चाहती है।

बेड पर पड़ी हुई साक्षी ऊपर छत के कुंडे पर लगे हुए पंखे को घूर रही थी अपलक। उसकी ऑखों के सामने प्राची का वो रोता बिलखता हुआ चेहरा और उसकी वो करुण बातें घूम रही थी।

" मेरी आपसे एक विनती है दीदी। " फिर प्राचि ने अलग होकर तथा ऑसू भरी ऑखों से कहा।

" विनती क्यों करती है पागल ?" साक्षि का गला भर आया __" तू बस बोल। क्या कहना है तुझे ?"

" मु मुझे एक बार। " प्राचि की रुलाई फूट गई , लड़खड़ाती आवाज़ में कहा __" मुझे बस ए एक बार वि .. विक्र... म से मिलवा दीजिए। मुझे मेरे महबूब से मिलवा दीजिए दीदी। मैं

उसकी गुनहगार हूँ। मुझे उससे अपने किये की माफ़ी माँगनी है। मैं उसे बताना चाहती हूँ कि मैं बेवफा नहीं हूँ। मैं तो आज भी उससे टूट टूट कर प्यार करती हूँ। उसे बुलवा दीजिए दीदी। मेरी ख़्वाहिश है कि मेरा अगर दम निकले तो उसकी ही बाहों में निकले। मेरे महबूब की बाँहों में दीदी। आप बुलवाएँगी न दीदी ? मुझे एक बार देखना है उसे। अपनी आँखों में उसकी तस्वीर बसा कर मरना चाहती हूँ मैं। अपने महबूब की सुंदर व मासूम सी तस्वीर। "

" बस कर रे। " साक्षी का हृदय हाहाकार कर उठा __" मुझमें इतनी हिम्मत नहीं है कि मैं तेरी ऐसी करुण बातें सुन सकूँ। मैं तुझसे वादा करती हूँ कि तेरे महबूब को मैं तेरे पास ज़रूर लाऊँगी। मैं धरती आसमान एक कर दूँगी प्राची और उसे ढूँढ़ कर तेरे सामने हाज़िर कर दूँगी। मैं अभी से उसका पता लगाती हूँ। तू बस मेरे आने का इंतज़ार करना। "

ये सब बातें साक्षी की आँखों के सामने मानो किसी चलचित्र की तरह बार बार चलने लगती थी। जितनी बार ये दृष्य उसकी आँखों के सामने से गुज़रता उतनी बार साक्षी के अंदर एक हूक सी उठती और उसके समूचे अस्तित्व को हिला कर रख देती।

" क्या सचमुच प्यार ऐसा होता है प्राची ?" साक्षी ने सहसा करवँट बदल कर मन ही मन में कहा __" क्या सचमुच प्यार में लोग अपने महबूब की खुशी के लिए इस हद से बाहर तक गुज़र जाते हैं ? तुम्हें देख कर और तुम्हारी बातें सुन कर तो ऐसा ही लगता है प्राची । तुम सच में बहुत महान हो प्राची । मेरे उस भाई से तुमने इस हद तक प्यार किया जिस भाई से मैं बात तक करना अपनी शान के खिलाफ़ समझती थी। और एक वो था कि हमेशा मुझे इज्ज़त देता था , मुझे दीदी कहते हुए उसका मुह नहीं थकता था। जब भी वो मुझसे बात करने की कोशिश करता तो हर बार मैं उसे दुत्कार देती थी। मुझे याद है प्राची , जब मैं उसे दुत्कार कर भगा देती थी तब उसकी आँखों में आँसू होते थे। जिन्हें वह आँखों से छलकते नहीं देता था बल्कि उन्हें आँखों में ही जज़्ब कर लेता था। मैने तेरे विक्रम को बहुत दुख दिये हैं प्राची । हो सके तो मुझे माफ़ कर देना। "

एकाएक ही साक्षी की आँखों से आँसू छलक कर उसके कपोलों को भिगोने लगे। सहसा जैसे उसे कुछ याद आया। वह तुरंत ही बेड से उठी और तेज़ी से बगल में दीवार से सटी हुई आलमारी के पास पहुँची। उसने आलमारी का हैण्डल घुमाया लेकिन वो न घूमा। मतलब साफ था कि आलमारी लॉक थी।

साक्षी दूसरी साइड रखे एक टेबल की तरफ बढ़ी और उसकी कबड को खोल कर उसमें से एक चाभी का गुच्छा निकाला। गुच्छा लेकर वह तुरंत आलमारी के पास वापस पहुँची और गुच्छे से एक चाभी को चुन कर उसने आलमारी के की-होल पर डाल कर घुमाया। आलमारी एकदम से अनलॉक हो गई। साक्षी ने हैण्डल पकड़ कर घुमाया और फिर आलमारी के दोनो फटकों को दोनो साइड खोल दिया।

आलमारी के अंदर कई सारे पार्ट्स थे जिनमें कुछ पर कपड़े व कुछ पर कुछ किताबें व फाइलें रखी हुई थी। किन्तु साक्षी की नज़र उन सब पर नहीं बल्कि आलमारी के अंदर मौजूद एक

और लॉकर पर थी। उसने एक दूसरी चाभी से उस लाकर को खोला। उसके अंदर भी कुछ काग़जात जैसे ही थे। एक प्लास्टिक का डिब्बा था। साक्षी ने उन काग़जातों को एक ही बार में सारा का सारा बाहर निकाल लिया।

उन सबको निकाल कर वह पलटी और बेड पर उन सभी काग़जातों को फैला दिया। उनमें कुछ रसीदें थी, कुछ एग्रीमेंट जैसे काग़जात थे और कुछ लिफाफे थे। साक्षी ने झट से एक लिफाफा उठा लिया। उसे खोल कर देखा तो उसमें कुछ फोटोग्राफ्स थे। साक्षी ने लिफाफे से सारे फोटोग्राफ्स निकाल लिये और फिर एक एक कर देखने लगी। पॉच छः फोटोग्राफ्स को देखने के बाद साक्षी एक दम से रुक गई। एक फोटोग्राफ्स पर उसकी नज़र जैसे गड़ सी गई थी। कुछ देर देखने के बाद उसने बाकी सारे फोटोग्राफ्स को बेड पर गिरा दिया और बस एक फोटोग्राफ्स को लिए वह बेड पर एक साइड बैठ गई।

फोटोग्राफ्स में उसके मॉम डैड, मानुषी, जयदीप एवं वह खुद भी थी। किन्तु साक्षी की नज़र उन सबके पीछे कुछ दूरी पर खड़े विक्रम पर टिकी हुई थी। ये फोटोग्राफ्स कुछ साल पहले का था। हवेली में कोई कार्यक्रम था तब ही शहर से किसी फोटोग्राफर को बुलवाया गया था और ये तस्वीरें खींची गई थी। अन्य तस्वीरों में बाकी सबकी तस्वीरें थी लेकिन शिवम सिंह रेणुका व उनके बच्चों की कोई तस्वीरें नहीं थी। इस तस्वीर में भी ग़लती से ही विक्रम की फोटो आ गई थी। साक्षी को याद आया कि जयदीप बार बार विक्रम से इस बात पर लड़ पड़ता था कि वो उसके साथ फोटो न खिंचवाए। मगर उत्सुकतावश वो आ ही जाता था।

" वि .. विक्रम मेरे भाई। " साक्षी ने अपने एक हाथ से तस्वीर में विक्रम के चेहरे पर हाथ फेरा। उसकी ऑखों से ऑसू बह चले , बोली _" मैं जानती हूँ कि तुझे भाई कहने का भी मुझे कोई अधिकार नहीं होना चाहिए। मगर बस एक बार मुझे मिल जा भाई। अपनी इस दीदी के लिए नहीं बल्कि अपनी उस प्राची के लिए जिसे तू आज भी उतना ही प्यार करता होगा मैं जानती हूँ। मुझे पता है कि आज भी अगर तू मुझे मिल जाए तो तू मुझे उतनी ही इज्ज़त से के साथ दीदी कहेगा जैसे पहले कहा करता था। और सच कहूँ तो मुझे नाज़ है तुझ पर कि मेरा भाई है। एक मेरा है जिसने मुझे इज्ज़त तो दी लेकिन उसकी उस इज्ज़त में भी कितनी इज्ज़त होती है ये मुझसे बेहतर भला और कौन जानता होगा भाई। पर ये तो मेरी सोच और मेरे नसीब की बात है मेरे भाई कि जिसने मुझे सच में इज्ज़त दी उसे मैने हमेशा दुत्कारा और जिसकी इज्ज़त में भी गंदगी भरी थी उसे अपने सीने से लगा कर भाई कहा। ख़ैर , ये सब छोड़ भाई। ये बता कि कहॉ है तू ? मुंबई में ऐसी कौन सी जगह पर है जहॉ से मुझे तेरा पता मिल जाए ? मैने तेरी प्राची से वादा किया है भाई कि मैं उसके सामने तुझे ले आऊँगी। इस लिए भाई मुझे किसी तरह से मिल जा। "

साक्षी उस तस्वीर से जाने क्या क्या कहे जा रही थी मगर भला वो तस्वीर उसको विक्रम का पता कैसे बताती?

" मैने कभी इस बात पर ग़ौर नहीं किया भाई कि क्यों मेरे अंदर तेरे लिए ये नफ़रत थी ? क्यों मैं तुझसे हमेशा मुह मोड़ लेती थी ?" साक्षी करुण भाव से कह रही थी __" इसकी

वजह शायद ये हो सकती है कि बचपन से ही मेरे मॉम डैड ने मुझे और मेरे भाई बहनों को तुझसे और तेरे माता पिता व बहन से दूर ही रहने की शिक्षा दी। वो हमेशा हमें यही बताते थे कि तुम लोग अच्छे लोग नहीं हो। बचपन से हमें यही सब सिखाया पढ़ाया गया था भाई , इस लिए हम भी उनके कहे अनुसार तुम लोगो से दूर ही रहे। और जब चाची पर वो सब इल्जाम लगा और उन्हें हवेली से निकाल दिया गया तो हम बच्चों के मन में और भी ये बात बैठ गई कि तुम लोग वाकई में अच्छे लोग नहीं हो। मगर आज जब मैंने प्राची से उसके और तुम्हारे प्यार के बारे में जाना तो जाने क्यों ऐसा लगा कि तुम उतने बुरे तो नहीं हो सकते मेरे भाई जितना कि आज तक हम तुम्हें समझते आ रहे थे। अगर होते तो कोई भी लड़की तुम्हारे लिए प्यार में इस हद तक अपनी कुर्बानी नहीं देती। इंसान की बुराई कभी किसी से नहीं छिपती भाई। अगर तुम वास्तव में बुरे होते तो क्या ये बात प्राची को कभी पता न चलती ? ज़रूर चलती भाई , मगर ऐसा नहीं था। वो पागल तो कह रही है कि वो तुम्हारी ही बॉहों में अपनी आख़िरी साँस लेना चाहती है। आख़िर कुछ तो खूबी होगी ही न तुझमें भाई। मैने कभी तुझे समझा ही नहीं भाई ... मुझे माफ़ कर दे विक्रम। "

साक्षी उस तस्वीर को अपने सीने से लगा कर रोए जा रही थी। इस वक्त उसे इस हालत में देख कर कोई नहीं कह सकता था कि ये वही तेज़ तर्रार साक्षी है जो अकेले चार चार हट्टे कट्टे लड़कों धूल चटा देती है। हौंसले ऐसे बुलंद कि आसमान की बुलंदी भी क्या चीज़ है।

तभी उसका मोबाइल बजा। उसने देखा बेड के एक साइड पर रखे आईफोन की स्क्रीन पर कोई नम्बर फ्लैश कर रहा था। साक्षी ने फोन उठाया और काल रिसीव कर उसे कनपटी से सटा कर कहा__"हैलो।"

"....." उधर से कुछ कहा गया।

" ये क्या कह रहे हो तुम ?" साक्षी के चेहरे पर चेहरे पर चौंकने वाले भाव थे।

"....." उधर से फिर कुछ कहा गया।

" पूरी बात बताओ साफ साफ। " साक्षी ने कहा।

"....." उधर से कुछ देर तक बताया गया।

" ओह चलो ठीक है। " साक्षी ने कहा _" तुमने बहुत अच्छा काम किया है। अब एक काम और तुम्हें दे रही हूँ। और वो काम क्या है ये तुम्हें तुम्हारे फोन पर मेरे द्वारा भेजे गए मैसेज से पता चल जाएगा। सारे काम छोंड़ कर तुम्हें ये काम करना है। तुम्हारे पास सिर्फ और सिर्फ आज रात बस का समय है। कल मार्निंग में मेरी ऑख तुम्हारे फोन करने पर ही खुले। ये बात भूलना मत। "

साक्षी ने कहा और फोन काट दिया। उसने बेड पर बिखरे हुए काग़जातों की तरफ देखा और फिर उसकी नज़र विक्रम वाली तस्वीर पर पड़ी। उस तस्वीर को एक तरफ रख कर बाकी सारी चीज़ें उसने उठा कर वापस उसी लॉकर के अंदर रख दी और आलमारी बंद कर दी। विक्रम वाली तस्वीर को तकिये के नीचे सरका वह बेड से नीचे उतरी और अपने कपड़े उतारने

लगी। कुछ ही देर में वह सिर्फ पैन्टी और ब्रा में थी। कपड़े उतारने में उसे थोड़ी तक़लीफ हुई थी। क्योंकि पीठ पर चाकू का लछा चीरा आज ही का तो था। वह ब्रा पैन्टी में किसी हॉलीवुड की सुपर मॉडल से कम नहीं लग रही थी। उसने तुरंत ही बाथरूम की तरफ रुख़ किया। बाथरूम से फ्रेश होने के बाद वह पुन: कमरे में आई और दूसरे कपड़े पहन कर वह कमरे से बाहर निकल गई। बेड से मोबाइल फोन उठाना नहीं भूली थी वह। पीछे साइड कमर में सर्विस रिवाल्वर छुपा हुआ था उसके।

कुछ ही देर में वह डायनिंग हाल में पहुॅच कर एक कुर्सी पर बैठ गई।

" मॉम अगर खाना रेडी हो तो जल्दी से दे दीजिए मुझे। " उसने किचेन की तरफ मुह करके ज़रा ऊॅची आवाज़ में कहा था।

" बस दो मिनट बेटी। " किचेन से सोनिया की आवाज़ आई।

ठीक दो मिनट बाद ही साक्षी के सामने बड़ी सी टेबल पर एक थाली रख दी गई। थाली लाने वाली गीता थी।

" तो अकेले रहने से उकता गई हमारी पुलिस वाली साक्षी बेटी ?" गीता ने ज़रा मुस्कुराते हुए कहा था।

" कुछ चीज़ों के लिए तन्हॉई सबसे अच्छी होती है बुआ। " साक्षी ने रोटी का एक निवाला तोड़ते हुए कहा __" अगर यही तन्हाई हमें काटती है तो यही तन्हाई कभी कभी हमें बड़ा सुकून भी देती है। "

" ओहो क्या बात कही है तुमने। " गीता ने हैरानी से कहा __" इतनी गहरी बात यूॅ ही तो तुम्हारे दिमाग़ में नहीं आई होगी ? आई नो कुछ तो वजह है इसकी। इस लिए अगर उचित समझो तो अपनी इस बुआ को बताओ फिर। "

" ज़रूर बताऊॅगी बुआ। " साक्षी ने अजीब भाव से कहा __" पर आज नहीं। पहले मैं खुद भी तो इसकी वजह समझ लूॅ। आख़िर मुझे भी तो समझ आए कि इतनी गहरी बात मेरे दिमाग़ में आई कैसे ? क्योंकि ये सब बातें तो उनके ही दिमाग़ में आती हैं जो ज़रा गंभीर तबीयत का होता है फिर सबसे अलग रहना पसंद करता है। "

" ओहो अनादर वन। " गीता मुस्कुराई __" सच सच बता किसी लड़के से कोई चक्कर वक्कर तो नहीं चल गया ? वैसे जहॉ तक मैं तुझे समझती हूॅ तो ऐसा प्वासिबल है नहीं। कोई पागल ही होगा जो तुमसे प्यार का राग अलापेगा। वरना अपने हाथ पैर की हड्डियॉ तो सबको प्यारी ही होती हैं। "

" व्हाट डू यू मीन बुआ ?" साक्षी की ऑखें फैल गई __" मतलब आप ये समझती हैं कि मैं कोई बैंडिड क्वीन हूॅ जो किसी की भी हड्डियॉ तोड़ दूॅगी ?"

" अरे तुम तो नाराज हो गई मेरी डॉ ल। " गीता ने हॅस कर कहा __" मेरा वो मतलब नहीं था रे। आई वाज जस्ट किडिंग डियर। "

" कोई बात बेवजह ही मुख से नहीं निकला करती बुआ। " साक्षी सहसा गंभीर हो गई _" हर बात के पीछे उसका कोई न कोई मतलब भी छिपा होता है। और ये बात भी आपने मेरे कैरेक्टर को देख कर ही कही है। मैं मानती हूॅ बुआ कि मुझे लड़के लड़कियों के बीच की ये चोंचलेबाज़ी शुरू से ही पसंद नहीं थी मगर ये भी सच है बुआ कि मेरे सीने में भी एक दिल है। जो धड़कना जानता है। उसको भी ये एहसास होता है कि प्यार क्या है और नफ़रत क्या है ?"

गीता कुछ बोल न सकी बल्कि आश्चर्य से साक्षी को देखती रह गई। उसे अहसास हुआ कि उसकी बड़ी भतीजी आज गंभीर है। और शायद बहुत ज्यादा गंभीर है। पर किस लिए ये उसे समझ न आया।

" क्या बातें हो रही हैं बुआ भतीजी के बीच ज़रा मुझे भी बताओ ?" सोनिया ने किचेन से आते हुए कहा था।

" कुछ नहीं मॉम। " साक्षी ने सहसा सामान्य होकर कहा __" बुआ पूछ रही थी कि अब रात में मैं कहॉ जा रही हूॅ ?"

" क्या ???" सोनिया तो चौंकी ही लेकिन गीता उससे ज्यादा चौंकी थी , जबकि सोनिया ने कहा __" तुम इस वक्त अब कहॉ जा रही हो ?"

" कुछ ज़रूरी काम है मॉम। " साक्षी ने सामान्य भाव से कहा __" आप तो जानती हैं कि पुलिस की नौकरी में किसी भी वक्त कहीं भी जाना पड़ जाता है। "

" मुझे तो तुम्हारा ये पुलिस की नौकरी करना शुरू से ही नापसंद था बेटी। " सोनिया ने बुरा सा मुह बना कर कहा _" मगर मेरी बात मानता ही कौन है यहाॅ ? जिसे जो करना है करे। "

" शुरू से आपकी और डैड की बात मानते ही तो आ रहे हैं मॉम। " साक्षी के मुह से जाने ये कैसे निकल गया _" अब अगर एक काम मैने अपनी खुशी से कर लिया तो क्यों ऐतराज हो गया आपको ?"

" क्या मतलब है तुम्हारा ?" सोनिया ने हैरानी से ऑखें फैला कर कहा __" और ये किस लहजे में बात कर रही हो तुम ? दिमाग़ तो सही है ना तुम्हारा ?"

" पता नहीं मॉम। " साक्षी ने हाथ धोते हुए अजीब भाव से कहा __" कभी कभी सोचती हूॅ कि इसी हवेली के अंदर कभी परिवार के सारे लोग कितना हॅसी खुशी से रहा करते थे। मगर जाने ऐसा क्या हो गया कि आज इस हवेली में सिर्फ हम रह गए। बॉकियों को ये ज़मीन खा गई या फिर आसमान निगल गया कुछ समझ ही नहीं आया आजतक ?"

" आज ये क्या हो गया है तुझे ?" सोनिया की हवा निकल गई थी अंदर ही अंदर , बोली _" ये कैसी फालतू की बातें कर रही है तू ?"

" कमाल है न मॉम ?" साक्षी ने फीकी सी मुस्कान के साथ कहा __" आज आपको अपनी ही बेटी की बात फालतू लग रही है। सुना है कि कोई अगर ग़लती कर दे तो उसे आख़िर में माफ़ ही कर दिया जाता है। मगर कुछ ऐसे भी बेचारे बदनसीब होते हैं जिनको कोई माफ़ भी नहीं करता। सुना तो ये भी है मॉम कि परिवार अगर किसी कारण से एक दूसरे से अलग हो जाता है या बिखर जाता है तो परिवार के मुखिया हर संभव यही प्रयास करता है कि उसका बिखरा हुआ परिवार फिर से जुड़ जाए। कदाचित तभी एक सच्चे मुखिया के दिल को सुकून मिलता है। कहते हैं कि हर परिवार के बीच कभी न कभी कोई न कोई अनबन हो ही जाती है मगर उसका मतलब ये तो नहीं होता न कि फिर उनसे हर रिश्ता ही तोड़ लिया जाए ? या फिर उस अनबन को दूर ही न किया जाए। "

" तू आख़िर कहना क्या चाहती है ?" सोनिया ने तीखे भाव से कहा __" क्या चल रहा है तेरे मन में ? अगर कोई बात है तो उसे साफ साफ कह। यूँ घुमा फिरा कर कहने का क्या मतलब है तेरा ?"

" जाने दीजिए मॉम। " साक्षी कुर्सी से उठते हुए बोली __" मैं क्या कह रही हूँ वो आप समझ तो गई ही हैं न ? फिर साफ साफ कहने की क्या ज़रूरत है ? ख़ैर चलती हूँ मॉम। बाय डियर बुआ जी। "

" बाय बेटा। " गीता ने रुँधे हुए गले से कहा। उसकी ऑखों में ऑसू तैर रहे थे।

" पुलिस की नौकरी क्या करने लगी इसका सारा दिमाग़ ही ख़राब हो गया है। " सोनिया भुनभुनाते हुए टेबल से थाली उठाते हुए कहा __" पता नहीं कहॉ से ऐसी बेकार की बातें सीख कर आती है ये ?"

" सच ही तो कह रही थी वो। " गीता ने गंभीरता से कहा __" भला ऐसा किस परिवार में होता है भाभी कि अगर परिवार में किसी से कोई ग़लती हो जाए तो उसे कभी माफ़ ही न किया जाए ? कितनी खुशियॉ थी इस घर में। हम सब कितना हॅसी खुशी से रहते थे सबके साथ। परिवार में सबकी एकता को देख कर मॉ बाबूजी कितना खुश थे। मगर आज इस घर में न वो खुशियॉ हैं और न ही खुशियॉ फैलाने वाला परिवार का कोई बाकी सदस्य। शिवम भैया की मौत क्या हुई मानो इस घर से खुशियॉ ही चली गई। मॉ बाबू जी आज भी कोमा से बाहर नहीं आए। अगर कोई पूछे कि इस सबका जिम्मेदार कौन है तो किसका नाम लिया जाए ?"

" अभी एक यही राग अलाप कर गई है और अब तुम भी यही राग अलापने लगी गीता ?" सोनिया की भृकुटी तन गई _" और ये क्या कह रही हो तुम कि इस सबका जिम्मेदार कौन है और किसका नाम लिया जाए ? इस बात का क्या मतलब हुआ ? क्या तुम ये कहना चाहती हो कि इस सबके जिम्मेदार हम हैं ?"

" मैने ऐसा तो नहीं कहा भाभी। " गीतां ने अधीरता से कहां __" पर एक बात तो सही है न कि जो परिवार का बड़ा सदस्य होता है उसे सबको एक साथ में लेकर चलना चाहिए ? घर के मुखिया तो सत्यम भैयां और आप ही हैं। गॉव समाज के लोग तो यही कहेंगे न कि छोटे अगर नासमझ थे या कोई ग़लती कर रहे थे तो ये बड़े का फर्ज़ था कि छोटे को उसकी ग़लती पर एक बार माफ़ ही कर देना चाहिये था। लोग तो कहेंगे न भाभी कि किसी ग़लती की इतनी बड़ी सज़ा नहीं देना चाहिए कि छोटे से हर रिश्ता तोड़ कर उसे घर से बेदखल ही कर दिया जाए। "

" कुछ ग़लतियॉ ऐसी होती हैं गीतां जिनके लिए कोई माफी नहीं होती। " सोनियां ने ठोस लहजे में कहां __" बल्कि अगर उन ग़लतियों को नज़रअंदाज़ कर दिया जाए तो उससे सब कुछ बरबाद हो जाता है। तुम्हारे भैयां ने क्या नहीं किया इस परिवार के लोगों को एक करने के लिए मगर हुआ क्यां ? गीतां , हमारी अच्छाईयॉ और कुर्बानियॉ कोई नहीं देखेगा बल्कि सिर्फ यही देखेगा कि हम परिवार को एक नहीं कर पाए। "

" कल पड़ोस की वो कमला भाभी मुझे मिली थी आते वक्त। " गीतां ने कहां __" मुझे देख कर उसने आवाज़ दी मुझे। उससे थोड़ी देर बातें हुई। उसकी बातों का असल मुद्दा हमारे परिवार से ही था। "

" क्या कह रही थी वो ?" सोनियां के कान खड़े हो गए।

" कह रही थी कि मझली ठकुराईन(रेणुकां) तो ऐसी थी ही नहीं। " गीतां ने कहां __" वो दोनो मियां बीवी तो बड़े धर्मात्मा इंसान थे। दूर दूर तक उनकी अच्छाई और उनके उच्च आचरण की चर्चा होती थी। आज भी कोई यकीन नहीं करता कि मझली ठकुराइन ने ऐसा कोई नीच काम अपने जेठ के साथ किया होगा। "

" उस कलमुही को क्या पतां ?" सोनियां ने सहसा गुस्से में कहां __" वो क्या यहॉ देखने आई थी कुतियां ? जबकि मैने अपनी ऑखों से देखा है। पहले भी कई बार मैने रेणुकां को ऐसे ही चोरी चोरी सत्यम के कमरे में जाते देखा था। मैने इस बारे में सत्यम से भी बताया था और सत्यम से ये भी कहा था कि उससे दूर रहना। पति मर गया है तो अब उससे अपने जिस्म की गरमी बर्दाश्त ही नहीं हो रही है। इसी लिए अब वो मेरे पति पर डोरे डाल रही है। एक दिन तो मैने अपने कमरे ही उसे सां डी उतारे हुए अपने अंदर में उँगली करते हुए पकड़ लिया था। वो तो अच्छा था कि मैं कमरे में पहुँच गई थी वरना अगर कहीं तुम्हारे भैयां पहुँच गए होते तो क्लेश ही हो जाना था उस दिन। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि रेणुकां को उसकी इस नीच हरकत करने से कैसे रोंकूॅ ? किसी से कह भी नहीं सकती थी। क्योंकि कोई मेरी बातों का यकीन ही नहीं करता। उल्टा मुझ पर ही दोषारोपण लग जाता। इस लिए मैने सोचा कि इस बार जब रेणुकां ऐसी कोई हरकत करेगी तो मैं उसकी इस नीचता का सबूत तैयार करू गी। सत्यम जयदीप के लिए एक कैमरा लाए थे। कुछ दिन बाद ही मुझे फिर से रेणुकां की हरकत का पता चल गया। मैं जब कमरे में गई तो अंदर से आवाजें आ रही थी। मैने कमरे को हल्का अंदर की तरफ धकेल कर देखा तो रेणुकां सत्यम के ऊपर चढ़ी हुई थी। जबकि सत्यम उसे डॉटे जा रहे थे और उसे अपने से दूर कर रहे थे। मैने सोचा इससे बड़ा

सबूत और क्या होगा। मैं तुरंत जयदीप के कमरे में गई और उसका कैमरा उठा लाई। अपने कमरे के दरवाजे के पास पहुँच कर मैने अंदर चल रहे काण्ड की फोटो खींची। मैं और भी फोटो खींचना चाहती थी। मगर कैमरे में रील खत्म हो चुकी थी। शायद जयदीप ने पहले ही सारी रील खत्म कर दी थी। शुकर था लास्ट की एक बची थी। उसमें एक ही फोटो खींची मैने। उसके बाद फिर मैं अंदर गई और उस रेणुकाा की चुटिया पकड़ कर उसे सत्यम के ऊपर से खींच कर नीचे लाई। मैं बहुत गुस्से में थी इस लिए पहले मैने उसे वहीं पर पीटा फिर बाहर लेकर आई। साली कितनी कमीनी और निर्लज्ज थी कि वैसा नीच काम करने के बाद भी उल्टा यही बोले जा रही थी कि मैने कुछ नहीं किया मुझे फॅसा रहे हैं ये सब मिलकर। तो ये थी उस जलील और कुलटा औरत की करतूत। "

गीता सोनिया की ये लम्बी चौड़ी बात सुन कर हैरान नहीं हुई क्योंकि ये बात सोनिया पहले भी सबसे बता चुकी थी। पर उसे न पहले उसकी बात पर यकीन था और ना ही आज यकीन हो रहा था। मगर वो इसके खिलाफ़ कुछ कह नहीं सकती थी। क्योंकि उसके खिलाफ़ कुछ बोलने के लिए भी कोई न कोई आधार के रूप में सबूत चाहिए था जो कि उसके पास भला कैसे हो सकता था। गीता और सीता दोनो बहनों को तो ये सब बाद में बताया गया था।

" ये बात तो वो कमला भाभी भी कह रही थी कि मझली ठकुराईन को जान बूझ कर फॅसाया गया था। " गीताा ने कहाा __" वो कह रही थी गॉव का हर व्यक्तिि यही कहता है कि उन्हें फॅसाया गया था। "

" भला उसे कोई क्यों फॅसाएगा गीताा ?" सोनियाा ने झुँझला कर कहाा __" वो हमारी कोई दुश्मन तो नहीं थी और ना ही हमारा उससे कोई बैर था। फिर भला उसे क्यों कोई जान बूझ कर फॅसाएगाा ? गॉव के लोगों को तो बस बातें बनाना आता है गीताा । ये किसी के भी बारे में अच्छा नहीं सोच सकते। "

" ख़ैर जाने दीजिए भाभी। " गीताा भला अब क्या कहतीी __" सब कुछ समय पर छोड़ दीजिए। जो जैसा करेगा वो उसका फल तो पाएगा ही। "

" ये सत्यम अब तक नहीं आए। " सोनियाा ने पहलू बदलाा __" वो भी आ जाते तो हम सब मिल कर डिनर कर लेते। "

" आते ही होंगे भाभी। " गीताा ने कहाा __" फैक्टरी को रिन्यू कराने में काफी व्यस्त हैं वो आजकल। "

इनके बीच बस ऐसी ही थोड़ी देर बातें होती रही। कुछ देर बाद ही सत्यम सिंह आ गया था।

उस वक्त रात के नौ बजे थे जब साक्षी पुनः अपने फार्महाउस पर पहुँची थी। लोहे वाले गेट पर दो बंदूखधारी व्यक्ति खड़े। साक्षी की कार को देखते ही दोनो ने गेट को खोल दिया। गेट के खुलते ही साक्षी ने कार को गेट के अंदर की तरफ बढ़ा दिया और फिर वो सीधा पोर्च में ही रुकी। कार से बाहर आ कर साक्षी ने कार को लॉक किया। तब तक वो दोनो बंदूखधारी भी आ गए।

" क्या समाचार है काका ?" साक्षी ने एक से पूछा।

" समाचार बढ़िया है बिटिया। " काका ने कहा __" जैसा तुमने कहा था वैसा ही कर दिया है हमने। वो सब वहीं तहखाने मा रस्सी से बँधे हुए हैं। कुछ देर पहले ही हम जाकर देखे थे तो सब होश में आ गए थे। सबने जब खुद को अजनबी जगह पर इस तरह रस्सियों से बँधा हुआ पाया तो सब के सब रोने लगे बिटिया। हमका देख के पूछन लगे कि ये हमें कहाँ ले आया गवा है और ई तरह रस्सी से काहे बाँथा गवा है ?"

" अच्छा , चलो फिर उनको जवाब भी दे देते हैं न काका। " साक्षी ने ज़हरीली मुस्कान के साथ कहा __" क्या विचार है आपका ?"

" हम तो एक ही बात जानत हैं बिटिया कि ऐसे ससुर के नातियों को बीच चौराहे पर नंगा करके गोली मार दैं। " काका ने गर्मजोशी से कहा __" ऐसे लोगन का जीयै का कौनव अधिकार नहीं है। "

" बात तो आपकी बिलकुल दुरुस्त है काका। " साक्षी ने कहा __" लेकिन ये तो बहुत आसान मौत होगी न उन सबके लिए ?"

हाँ ई बात तो है बिटिया।" शंकर काका ने कहा__"तो फिर ऐसा करत हैं कि ससुरों को तड़पा तड़पा के मारते हैं।"

" शंकर काका ये तो आपने बिलकुल ठीक कहा। " साक्षी मुस्कुराई __" हरिया काका तो एक ही बार में गोली मार देने को कह रहे थे। "

" अरे ऊ ता हम जल्दबाज़ी मा अउर एकदम से गुस्से मा कह दिये रहे बिटिया। " हरिया काका ने झेंपते हुए कहा __" वरना ई बात ता हम ई सरवा शंकर से पहले ही कह देते। "

" चलो कोई बात नहीं काका। " साक्षी ने कहा _" अब तो कह दिये न आप ? अब चलो उनको देखे ज़रा। "

" अउर कुछू साथ मा लेके चलैं का है का बिटिया ?" हरिया काका झट बोल पड़ा था।

" और क्या ले चलना है भला ?" साक्षी चकराई।

" अरे बाल्टी मा पानी ले चलत हैं ना बिटिया। " हरिया ने कहा _" ऊ का है ना , हमका अइसन लागत है कि उहाँ जाइके तुम उन सबको बहुतै धुनाई करोगी। ता थुनाई मा कउनौ सारे बेहोश होई गै तो ? उनका होश मा लाने की खातिर पानी ता चाहिए ना बिटिया। "

" क्या बात है काका। " साक्षी हॅस पड़ी __" क्या दिमाग़ लगाया है आपने। मानना पड़ेगा आपको। दिमाग़ बहुत तेज़ है आपका। "

साक्षी की प्रशंसा पाने से हरिया काका तन कर चलने लगा। वह शंकर को इस तरह देखने लगा था जैसे अब उसके सामने उसकी कोई औकात ही नहीं है। शंकर उसे इस तरह अकड़ते हुए चलते देख बुरा सा मुह बना कर रह गया।

" पर काका। " साक्षी ने कहा __" मुझे लगता है कि आपका ये दिमाग़ काकी की वजह से तेज़ हुआ है। "

" अरे का बात करती हो बिटिया ?" हरिया काका ने नागवारी भरे भाव से कहा __" ऊ ससुरी तो शुरू से ही दिमाग़ से पैदल है। हमरे साथ रह रह के ही तो थोड़ा बहुत दिमाग़ आ गवा है उसमे। "

" ओए तूने भाभी जी को ससुरी बोला ?" शंकर ने झड़प कर कहा हरिया से __" रुक अभी जा के बताता हूँ उनसे। "

" अबे रुक जा बे खबीस। " हरिया काका की सारी अकड़ तेल लेने चली गई __" सरवा मरवाएगा का हमका ?"

हाँ तो भाभी जी को ससुरी क्यों बोला?" शंकर अभी भी उसे घुड़कता बोला_"और क्या बोला कि तेरे साथ रह रह कर ही उनमें थोड़ा बहुत अकल आई है। साला झूँठा कहीं का।"

" तू ना अब मुह बंद ही कर ले समझा। " हरिया भी ताव खा गया __" वरना उल्टा तुझे ही पिटवा दूँगा मैं उस ससुरी से। "

" वो कैसे भला ?" शंकर बुरी तरह हैरान।

" अरे हम कह देंगे कि ये शंकरवा तुझे कहत रहा कि अब भौजी ससुरी बुड्ढी होई गई है। " हरिया ने कहा __" अउर ये भी कह देंगे कि मोटी भैस जइसन होई गई है। "

" ओये ये मैने कब कहा ?" शंकर परेशान।

" नहीं कहा ता का हुआ ?" हरिया बोला _" हम ता कह देंगे न कि ई शंकरवा अइसनै कहत रहा। "

" देखा साक्षी बिटिया। " शंकर ने मानो साक्षी से गुहार लगाई __" ये जबरदस्ती मुझे अपनी जोरू से पिटवाना चाहता है। "

" चिन्ता मत कीजिए काका। " साक्षी ने कहा __" सिर्फ आप ही बस नहीं पिटेंगे बल्कि आपके साथ साथ हरिया काका भी काकी से पिटेंगे। "

" अरे ई का कहत हो बिटिया ?" हरिया काका ने हड़बड़ा कर कहा __" हम भला काहे

पिटेंगे ऊ ससुरी सं ?"

" वो इस लिए कि मैं काकी से बताऊँगी कि काका आपको जब देखो तब दिमाग़ से पैदल और ससुरी ससुरी कहते रहते हैं। " साक्षी ने कहा __" आपकी तो कोई इज्ज़त ही नहीं करते ये दोनो। फिर देखना काका , कैसे आप दोनो का हाल बनाएँगी काकी। "

" अरे हमका माफ़ कर दो बिटिया। " काका ने दोनो हाथ जोड़ लिए बोला __" ई सब ना ई शंकरवा की कारण होई जात है। वरना हम ता केशरमाँ की बहुत इज्जत करत हैं। ऊ ता हमरी जान हं , प्राण प्यारी है बिटिया। "

" अच्छा छोड़ो ये सब। " साक्षी ने कहा _" अब चलिये उन सबका हाल चाल भी तो देखना है। "

" ठीक है बिटिया चलो। " हरिया ने कहा और फिर वो साक्षी के पीछे चल दिया। जबकि शंकर लोहे वाले गेट की तरफ बढ़ गया।

कुछ ही देर में साक्षी और हरिया काका तहखाने में पहुँचे। तहखाना काफी बड़ा था। वहाँ पर सामान तो कुछ नहीं था बस ज़मीन पर सीलन जैसा प्रतीत होता था। दीवार के चारो तरफ बल्ब लगे हुए थे। एक तरफ की दीवार से सटे वो चारो रस्सी में बँधे खड़े थे। सभी के हाथो को ऊपर करके बाँधा गया था और पैरों को नीचे विश्राम की पोजीशन में चारों लड़कों के पैरों से जोड़ते हुए बाँधा गया था। लेकिन उनमें से कोई भी अपने पैरों को हिला नहीं सकता था। दोनो तरफ की दीवारों पर एक एक तरफ से पैरों में बँधी रस्सी को खींच कर बाँधा गया था।

उन चारों की हालत बहुत ही अजीब हो गई थी। डर और दहशत से उन सभी का बुरा हाल था। पहले से ही साक्षी की मार से लहू लुहान थे वो चारो और अब इस डर व भय ने उनकी हालत खराब कर दी थी जाने वो यहाँ कैसे और क्यों लाए गए हैं। ये तो वो भी समझ चुके थे कि उनके साथ कुछ बहुत ही बुरा होने वाला है।

तहखाने में दो तरफ के बल्ब जल रहे थे। इस लिए तहखाने में काफी रोशनी थी। पसीने तथपथ उन चारों के चेहरों को बखूबी देखा जा सकता था। साक्षी और हरिया काका जैसे ही तहखाने में पहुँचे तो उन चारो ने उनकी आहट से अपनी अपनी गर्दन उठा कर सामने देखा। साक्षी पर नज़र पड़ते ही सबकी घिग्घी बँध गई। चेहरे पर डर के मारे हल्दी सी पुत गई। जूड़ी के मरीज़ की तरफ एकदम से काँपने लगे थे वो चारो।

" काका इन लोगों की खातिरदारी नहीं की क्या आपने ?" साक्षी ने उन चारों को एक एक नज़र देखने के बाद हरिया से कहा था।

" अरे हमरा मन ता बहुत रहा बिटिया। " हरिया ने कहा __" लेकिन ऊ का है न हमका परमीशॅनवा ही मिला था। वरना हम ता इन ससुरन की अइसन पेलाई करते कि ई ससुरे यहीं पषर टट्टी कर देते। "

" चलो अच्छा हुआ काका जो मैने आपको परमीशन नहीं दी थी। " साक्षी ने कहा __" वरना अगर ये टट्टी कर देते तो साफ भी तो आपको ही करना पड़ता न ?"

" अरे हॉ बिटिया। " हरिया ने हैरानी से कहा __" ई ता हम सोचे ही नहीं। पर कउनव बात नहीं बिटिया। हम ता साफ न करते लेकिन ई सब ससुरे लोग जरूर साफ करते। अउर ना करते तो हम ई ससुरन का अउर अच्छे से पेलते। "

साक्षी ने हरिया की बात पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया बल्कि वह ऑखों में आग लिए उन चारो की तरफ बढ़ी। उन सबकी हालत बड़ी ही दयनीय हो गई। उन सबकी टॉगें इस तरह कॉपने लगी थी जैसे उन पर अब उनका कोई ज़ोर ही न रह गया हो।

" क्या सोचा था तुम सबने ? साक्षी के मुख से शेरनी की सी गुर्राहट निकली __" इतने सारे गुनाह करके तुम सब बड़े मज़े में रहोगे ?? कोई तुम्हारा बाल बॉका कर ही नहीं सकता ?"

" ह हमें माफ़ कर दो। " विवेक रस्तोगी ने गिड़गिड़ाते हुए कहा __" हम किसी के साथ कोई भी ग़लत काम नहीं करेंगे अब। "

" करोगे तो तब जब करने के लिए ज़िंदा बचोगे। " साक्षी ने बर्फ की मानिन्द ठंडे स्वर में कहा __" अब तो तुम चारों का रिज़र्वेशन हो गया है नरक में जाने का। लेकिन चिन्ता मत करो क्योंकि नरक में यहॉ से ज्यादा तुम लोगों को यातनाएॅ नहीं सहनी पड़ेगी। "

" नहीं नहीं। " अनिकेत बुरी तरह रो पड़ा _" हमें कुछ मत करो प्लीज़। हम मरना नहीं चाहते। आ आख़िर किस वजह से तुम हमारे साथ ये सब कर रही हो ? हमें यहॉ से जाने दो इंस्पेक्टर वरना तुम नहीं जानती कि हमें इस तरह यहॉ बंधक बना कर रखने से तुम्हारा क्या अंजाम हो सकता है ?"

" और तुम्हें भी ये अंदाज़ा नहीं है लड़के कि मैं तुम सबके बापों के साथ क्या कर सकती हूॅ ?" साक्षी ने सहसा अनिकेत के सिर के बाल को मुट्ठी मे पकड़ कर खींचते हुए कहा __" अगर मैं चाहूॅ तो इसी वक्त तुम्हारे बापों बीच चौराहे पर नंगा करके दौड़ाऊॅ। मगर फिलहाल ये बाद में अभी तो तुम सबके साथ ही हिसाब किताब करना है। "

" हरामज़ादी कुतिया साली हमारे बाप को बीच चौराहे पर नंगा दौड़ाएगी तू। " सहसा विवेक रस्तोगी गुर्रा उठा __" एक बार मेरे हाथ पैर खोल दे फिर देख तेरा क्या हस्र करता हूॅ मैं ?"

" देखा था सुअर की औलाद। " साक्षी नोंकदार बूट की ठोकर ज़ोर से विवेक के पेट में मारते हुए कहा। विवेक के मुख से हलाल होते बकरे की सी चीखें निकली जबकि साक्षी बोली _" उस दिन तेरी मर्दानगी भी देखी थी। तुम सबकी देखी थी। उसी का नतीजा है कि आज यहॉ बॅधे पड़े हो। "

" हमें छोड़ दो इंस्पेक्टर। " अतुल ने गुहार लगाते हुए कहा __" आख़िर हमने किया क्या है ? किस लिए हमें यहाँ लाकर हमारे साथ ये सब कर रही हो तुम ?"

" काका , इसे पता ही नहीं है कि इसने किया क्या है ?" साक्षी ने कहा __" ये साला ऐसा शरीफ बन रहा है बहेन## जैसे इसने कभी किसी चींटी तक को चोंट न पहुँचाई हो। "

" ज़ुबान संभाल कर बात करो इंस्पेक्टर। " सहसा विवेक कह उठा __" और याद रखो कि अगर हममें से किसी को भी कुछ हुआ तो उसका खामियाजा तुम्हें और तुम्हारे पूरे खानदान को भुगतना होगा। "

" मेरे खानदान की तू फिक्र मत कर। " साक्षी ने कहा __" मेरे खानदान तक जाने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि तेरे और तेरे बाप को कुत्ते की मौत मार देने के लिए मैं ही काफी हूँ। तुम चारों को ऐसा तड़पा तड़पा कर मारूँगी कि मौत की भीख माँगोगे मगर मौत दूँगी नहीं आसानी से। "

" पर ये तो बताओ इंस्पेक्टर। " अलोक त्रिपाठी के तिरपन काँप गए , बोला __" हमने ऐसा किया क्या है जिसके कारण तुम हमारे साथ ऐसा व्यवहार कर रही हो ?"

हाँ हाँ बताती क्यों नहीं हमें?" अतुल ने अलोक की बात में कहा__"हमें भी तो पता चले कि हमने ऐसा किया क्या है?"

" प्राची वाजपेयी याद है ???" साक्षी ने अलोक का गिरहबान पकड़ कर झिंझोड़ा __" वही प्राची वाजपेयी जो तुम लोगों के साथ ही कॉलेज में पढ़ती थी , और जिसके साथ तुम चारों ने मिल कर गैंग रेप किया था ? कुछ याद आया या फिर इतना जल्दी भूल गए सब ?"

चारों के दिलो दिमाग़ में जैसे विस्फोट हुआ। दिमाग़ की बत्ती एक साथ सबकी जल उठी। अब समझ आया था उन्हें कि ये सब उनके साथ क्यों हो रहा था। सब कुछ समझ में आते ही चारों के चेहरे पीले पड़ गए। किसी के भी मुख से बोल न फूटा।

" किसी की बहन बेटियों की इज्ज़त से इस तरह खेलने का बहुत शौक है न ?" साक्षी ने गुर्राते हुए कहा __" कितनी लड़कियों की ज़िंदगियाँ बरबाद कर दी है तुम सब हराम के पिल्लों ने। उन सब लड़कियों की बरबादी का हिसाब देना होगा तुम लोगों को। "

" ये सब झूठ है। " विवेक पूरी शक्ति से चीखा था , बोला __" सरासर झूँठ है इंस्पेक्टर। हम में से किसी ने भी उसके साथ कुछ नहीं किया। तुम बेवजह ही हमें इस तरह यहाँ पकड़ कर ले आई हो। हमने कुछ नहीं किया। हमें छोड़ वरना बहुत पछताओगी तुम देख लेना। "

" तू साले रंडी की औलाद मुझे पछताने का बोल रहा है बहेन##। " साक्षी ने विवेक के पेट में दो चार घूँसे एक साथ ही जड़ दिये। विवेक बुरी तरह दर्द से बिलबिलाया था , जबकि

साक्षी ने कहा __" तेरी भी एक बहन है न। मुझे सब पता है। तेरी बहन का नाम रचना रस्तोगी है न। सुना है वो बहुत ही जवान है। तू चिन्ता मत कर बहुत जल्द वो तेरे सामने यहीं पर होगी और तुम चारो खुद एक एक करके उसका रेप करोगे। "

" इंस्पेक्टर। " विवेक गीदड़ की तरह चीखा __" अगर तूने मेरी बहन को हाथ भी लगाया तो देख लेना। "

" क्यों पिछवाड़े में आग लगी क्या तेरे ?" साक्षी ने एक झन्नाटेदार थप्पड़ विवेक के गाल पर रसीद करते हुए कहा __" और जब तू दूसरों की बहन बेटियों को बरबाद करता तब क्या मज़ा आता है मादर--- ?"

" बिटिया हम का कहत हैं कि ये बाल्टी का पानी जो हम लेके आए हैं। " सहसा हरिया काका ने कहा __" ऊ का बेकार मा लेके आए हैं ? हम ता सोचत रहे कि तुम इन ससुरों को मार मार कर बेहोश करती जाओगी अउर हम इन ससुरन का ई पानी से होश मा ले आते रहेंगे। "

" चिन्ता मत करो काका। " साक्षी गुर्राई _" बहुत जल्द ऐसा भी होने वाला है।

" फेर ता ठीक है बिटिया। " काका ने कहा __" अगर कहौ ता हमहू इन ससुरन का जी भर कै धुन देई ? ऊ का है ना हमरा हाथ मा बहुतै खुजली होई रही है। "

" तो ठीक है काका आप ही अपने हाथ की खुजली मिटा लो। " साक्षी ने कहा __" मैं इन कुत्तों से कल मिलूँगी। तब तक आप इनकी अच्छे से खातिरदारी करना। बस इतना याद रहे कि इनमें कोई भी मरने न पाए। "

" अइसनै होई बिटिया। " काका ने खुश होते हुए कहा __" हम ई ससुरन केर अम्मा ठोक देब। तुम फिकर ना करो बिटिया। अब जाओ तुम इहाँ से। अब ई ..... डि ... अरे बिटिया ऊ का कहत हैं एखा ...? अरे हाँ याद आई गा। अब ई डिपारटमेंट हमरा है। हाँ डिपारटमेंट। "

" डिपारटमेंट नहीं काका उसे डिपार्टमेन्ट कहते हैं। " साक्षी ने मुस्कुराकर कहा।

" अरे हाँ बिटिया उहै। " काका ने कहा __" तुम समझ गई हौ ना। ई है बहुत है। "

" अच्छा काका मैं चलती हूँ। " साक्षी ने कहा _" आप संभाल लेना ओके ?"

" अरे तुम कउनव चिन्ता न करा बिटिया ई ता हमरे बाएं हाथ का चीज है। " काका ने गर्व से कहा __" ई ससुरन का मार मार के हम इनकर टट्टी निकाल देब। अउर का। "

साक्षी हरिया काका की बात पर मुस्कुराती हुई तहखाने से बाहर निकल गई। जबकि साक्षी के जाते ही काका ने तहखाने का गेट बंद किया और फिर अपने दोनो हाथ मलते हुए अनिकेत बासु के पास पहुँचा।

" का रे मादर---। " काका ने कहा __" तोरे केतनी अम्मा है अउर केतने बाप हैं ?"

" तमीज़ से बात करो ओके। " अनिकेत डर तो गया था लेकिन फितरत के चलते बोल ही गया था।

" तोरी मॉ की योनी मारूँ ससुरे के। " काका के हाथ में जो मोटा सा लट्ठ था उसने घुमा कर अनिकेत की टॉग में ज़ोर से धमक दिया। अनिकेत दर्द से बुरी तरह चीखने चिल्लाने लगा। काका तो बहुत देर से सब्र किये बैठा था। उसे इस बात का बेहद गुस्सा भी था कि इन लोगों ने साक्षी उल्टा सीधा भी बोला था।

हरिया काका उन चारों पर पिल पड़ा। फिर तो तहखाने में बस रोने और चीखने की आवाज़ें ही आ रही थी। हरिया काका तब तक उन सबकी धुनाई करता रहा जब तक कि उसका पेट न भर गया था। धुनाई करने के बाद वह उन चारों को अधमरी हालत में छोंड़ कर तहखाने से बाहर चला गया और बाहर से तहखाने को लॉक कर दिया।

३२

भूतकाल अब आगे____

रेणुका अभी ये सब बता ही रही थी कि सहसा डोर बेल की आवाज़ से सबका ध्यान भंग हो गया। डोर बेल की आवाज़ से ही उन सबको ये एहसास हुआ कि समय कितना हो चुका था। वरना ड्राइंग रूम में रखे सोफों पर बैठे हुए उन्हें समय का आभास ही न हुआ था। वो सब तो रेणुका के द्वारा सुनाए जा रहे अतीत के किस्सों में ही डूबे हुए थे।

" लगता है कि उमाकांत भाई साहब आ गए हैं। " रेणुका ने गहरी साँस लेते हुए कहा _" जा गुड़िया दरवाज़ा खोल दे। "

" जी मॉ। " निशा ने भी गहरी साँस लेकर कहा और सोफे से उठ कर मुख्य द्वार की तरफ बढ़ गई।

" रात के नौ बज गए हैं। " रेणुका ने सामने दीवार पर लगी घड़ी पर देखते हुए कहा __" इस कहानी के चक्कर में रात का खाना बनाना भी रह गया सुंदर । चलो ये कहानी अब कल बताऊँगी। अभी खाना बना लूँ फटाफट। उमाकांत भाई साहब को दस बजे तक खाना खाकर सो जाने की आदत है। "

" ठीक है भाभी आप जाइए। " सुंदर ने गंभीर भाव से कहा था। वो अभी भी उन अतीत के दृष्यों में खोया हुआ लगा। उसके ऐसा कहने पर रेणुका उठ कर किचेन की तरफ बढ़ गई।

तभी ड्राइंग रूम में उमाकांत पाटिल दाखिल हुआ। उसके पीछे पीछे ही निशा भी आ गई। उमाकांत पाटिल की नज़र सुंदर सिंह पर पड़ी तो उसने बगल से रखे सोफे पर बैठे विक्रम की तरफ देखा।

" ये मेरे सुंदर चाचा जी हैं अंकल। " विक्रम ने उमाकांत का आशय समझ कर कहा __" आज सुबह करीब ग्यारह बजे के आस पास आए हैं। "

" ओह ये तो बहुत अच्छी बात है। " उमाकांत पाटिल के चेहरे पर खुशी के भाव नुमायां हुए , फिर उसने सुंदर की तरफ देखते हुए कहा __" कैसे हैं भाई साहब ?"

सुंदर ने हल्की मुस्कान के साथ पहले उसे नमस्ते किया फिर बोला__"जी मैं ठीक हूँ आप सुनाइये।"

" मैं तो बहुत ज्यादा ठीक हूँ भाई साहब। " उमाकांत ने हँस कर कहा __" जब से ये बच्चे और रेणुका बहन यहॉ आए हैं तब से ज़िंदगी खुशहाल लगने लगी है। वरना इतने बड़े बंगले में नौकर चाकर रहने के बाद भी अकेलापन ही महसूस होता था। "

" ऐसा क्यों कहते हैं आप ?" सुंदर सिंह चौंका था __" इसके पहले अकेलापन क्यों महसूस होता था आपको ?"

" अरे भाई अब मेरे सिवा मेरा कोई था ही नहीं तो अकेलापन महसूस तो होगा ही। " उमाकांत ने कहा __" नसीब और भाग्य बहुत अजीब होते हैं। अच्छा खासा परिवार हुआ करता था मेरा। मगर फिर सब कुछ खत्म हो गया। धन दौलत तो नसीब से बहुत मिली हमें लेकिन उस दौलत को भोगने वालों को नसीब ने छीन लिया हमसे। जी जान से प्यार करने वाली बीवी थी , वो भी हमें छोंड़ कर इस फानी दुनियॉ को अलविदा कह दिया। एक बेटा और बहू थे तो वो भी चले गए हमें छोंड़ कर। बस तब से अकेले ही थे। मगर फिर शायद भगवान को हमारे अकेलेपन पर तरस आ गया और उसने हमारे उजड़े हुए गुलशन में फिर से बहार लाने के लिए इन सबको भेज दिया। अब लगता है कि अपना भी कोई है। "

सुंदर सिंह उमाकांत पाटिल की बातें सुन कर हैरान था। उसे याद आया कि विक्रम ने उससे कहा था कि ये सब अब अपना ही है। तो इसका मतलब वो सही कह रहा था। यानी मेरा भतीजा अब करोड़ों की सम्पत्ति का मालिक है? सुंदर सिंह को यकीन नहीं हो रहा था मगर हक़ीक़त तो उसके सामने ही थी इस लिए यकीन करना ही पड़ा उसे। वह सोचने लगा कि उसका बड़ा भाई यानी सत्यम सिंह तो अक्सर यही कहता था कि विक्रम किसी होटल या ढाबे में कप प्लेट धोता होगा। मगर भला वो भी कैसे ये कल्पना कर सकता था कि विक्रम आज के समय में कितना बड़ा आदमी बन चुका था। वह चाहे तो चुटकियों में उसे और उसकी पूरी प्रापर्टी को खरीद सकता था।

" ये सब भगवान की अजब लीला ही है भाई साहब। " फिर सुंदर सिंह ने गहरी साँस लेकर कहा __" वो जो कुछ भी करता है बहुत सोच समझ कर करता है। किस इंसान कब कहॉ और किस चीज़ की ज़रूरत होती है वो उसे उस जगह पहुॅचा ही देता है। हम नासमझ होते हैं जो ये समझ बैठते हैं कि भगवान ने हमें दिया ही क्या है ?"

हाँ ये बात तो है।" उमाकांत ने कहा__"और सच पूछो तो भगवान की इस लीला से मैं खुश हूॅ भाई साहब। पहले ज़रूर उससे शिकायतें थी कि उसने मेरा सब कुछ छीन लिया मगर आज कोई शिकायत नहीं है। ये सब मुझे अपना समझते हैं। मुझे वैसे ही चाहते हैं जैसे कोई सगा अपनों को चाहता है। यूॅ तो इस दुनियॉ में अपने भी अपनों के लिए नहीं होते। मगर कोई अजनबी भी ऐसा मिल जाता है जो अपनों से कम नहीं होता। चार दिन का जीवन है, इसे सबके साथ खुशी खुशी जी लो तो आत्मा तृप्त हो जाती है। क्या लेकर हम इस दुनियॉ में थे और क्या लेकर जाएॅगे? ये धन दौलत तो सब यहीं रह जाएगी मगर हमारे कर्म ज़रूर हमारे साथ जाएॅगे।"

" आप ठीक कहते हैं भाई साहब। " सुंदर ने कहा __" आप तो वैसे भी किसी फरिश्ते से कम नहीं हैं वरना कौन ऐसा है जो किसी ग़ैर को अपना सब कुछ दे दे ?"

" अगर मैने अपना सब कुछ विक्रम बेटे को दे दिया है तो उससे मुझे मिला भी तो बहुत कुछ है भाई साहब। " उमाकांत ने कहा __" मुझे वो मिला है जिसके लिए मैं वर्षों से तड़प रहा था। मैं किसी अपने के लिए तड़प रहा था , तथा अपनों के बीच रह कर जो खुशी मिलती है मैं

उसके लिए तरस रहा था। आज मेरे पास ये सब खुशियॉ है भाई साहब और ये सब मुझे किसी रिश्वत के चलते नहीं मिला है। बल्कि मेरे नसीब से मिला है। मैं तो विक्रम को बहुत पहले से अपनी सारी प्रापर्टी का वारिस बनाना चाहता था मगर ये ही मना कर रहा था। एक अच्छे व खुद्दार इंसान का बेटा जो था। किसी की ऐसी मेहरबानी को कबूल कैसे कर सकता था ये ? मगर मैं चाहता था कि विक्रम ही मेरा वारिस बने। क्योंकि इसके चेहरे पर ही मुझे अपने बेटे की झलक दिखती थी। अगर ये मेरी बात नहीं मानता तो मैं इसके सामने अपनी झोली फैला कर भीख भी मॉग लेता भाई साहब। "

सुंदर सिंह उमाकांत की ये सब बातें सुन कर चकित रह गया। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि दुनियॉ कोई इंसान ऐसा भी हो सकता है। ख़ैर इन दोनों के बीच ऐसी ही बातें होती रहीं। कुछ समय बाद ही रेणुका ने सबको खाने का कहा। सब डायनिंग हाल में आ गए और कुर्सियों में बैठ गए। रेणुका ने सबको खाना सर्व किया। सबके खाने के बाद रेणुका ने भी खाना खाया और फिर सब अपने अपने कमरे में सोने के लिए चल दिये। रास्ते में चलते समय विक्रम से रेणुका ने पूछा__"तेरा कॉलेज कब से शुरू हो रहा है??"

" कल से मॉ। " विक्रम ने कहा __" कल सुबह मुझे थोड़ा जल्दी उठा दीजिएगा। ऐसा न हो कि पहले दिन ही मैं लेट हो जाऊँ। "

" चल ठीक है। " रेणुका ने कहा __" मैं तुझे भोर के समय पर ही उठा दूँगी। अब जा आराम से सो जाना। "

रेणुका के कहने पर विक्रम अपने कमरे की तरफ बढ़ गया। उधर रेणुका भी पलट कर अपने कमरे की तरफ चली गई।

३३

हरिया काका को उन चारों की खातिरदारी करने का कह कर साक्षी तहखाने से बाहर आकर सीधा अपने कमरे में चली गई थी। थोड़ी ही देर में हरिया काका की बीवी केशरमाँ साक्षी के कमरे में खाना खाने को पूछने आई तो साक्षी ने मना कर दिया। केशरमाँ के जाने के बाद साक्षी ने दरवाजा बंद किया और बेड पर जाकर लेट गई। काफी देर तक वह इस सबके बारे में सोचती रही। फिर जाने कब उसकी ऑख लग गई।

सुबह उसकी ऑख उसके मोबाइल फोन के बजने पर खुली। उसने अलसाए हुए से मोबाइल की स्क्रीन पर फ्लैश कर रहे नम्बर को देखा तो उसका सारा आलस पल भर में ही दूर हो गया। साथ ही उसके होठों पर एक मुस्कान तैर गई।

" हैलो। " फिर उसने काल रिसीव करते ही कहा।

"....." उधर से कुछ कहा गया।

" वैरी गुड। " साक्षी ने कहा __" सारी डिटेल मुझे सेन्ड कर दो। एण्ड थैंक्स। "

साक्षी ने इतना कह कर काल कट कर दी। उसके चेहरे पर एक मुस्कान थी। वह तुरंत ही बेड से उठ कर बाथरूम की तरफ चली गई। करीब आधे घंटे बाद साक्षी ड्राइंग रूम में सोफे पर बैठी कॉफी पी रही थी। केशरमाँ ने हल्का फुल्का नास्ता बना दिया था उसके लिए। साक्षी नास्ता और काफी पीकर कर के बाहर निकल गई। लोहे वाले गूट के पास शंकर और हरिया काका बंदूख लिए मिल गए उसे।

" क्या हाल समाचार है काका ?" साक्षी ने हरिया काका की तरफ देख कर कहा __" उन लोगों की खातिरदारी में कोई कमी तो नहीं की न आपने ?"

" अइसन होई सकत है का बिटिया ?" हरिया काका ने मुस्कुरा कर कहा __" हम ता ऊ ससुरन अइसन पेलेन है कि उन सबकी अम्मा ठुक गई है। "

" काका कभी कभी आप बहुत गंदा बोल जाते हैं। " साक्षी ने बुरा सा मुह बनाया __" आप ये भी नहीं देखते हैं कि मैं आपकी बेटी जैसी हूँ और आप भी तो मुझे अपनी बेटी जैसी ही मानते हैं न ? फिर भला आप कैसे मेरे सामने ऐसे गंदे शब्द बोल सकते हैं ?"

" हमका माफ कर दो बिटिया। " हरिया ने तुरंत ही दोनो हाथ जोड़ लिये __" ई ससुरी जबान हमरे काबू न रह पावत है। अउर हमहु सरवा जोश जोश मा बोल ही जात हैं। बस अबकी बारी माफ कर दो बिटिया। अगली बारी से अइसन गलती ना होई। हमार कसम। "

" कोई बात नहीं काका। " साक्षी ने कहा _" अब बताओ उन लोगों का हाल कैसा है अब

?"

" कल रात ता खातिरदारी करे रहे हम उनकी ऊके बाद हम अभी तक ना गए हैं। " हरिया ने कहा __" पर ई ता पक्का है बिटिया कि ऊ ससुरन के हाल बेहाल होईगा होई अब तक। "

" चलिए चल कर देखते हैं एक बार। " साक्षी ने कहा और पलट वापस अंदर की तरफ जाने लगी। हरिया भी उसके पीछे पीछे चल दिया। थोड़ी देर बाद ही वो दोनो तहखाने का दरवाजा खोल कर अंदर पहुँचे। अंदर पहुँचते ही साक्षी और हरिया की नॉक में बदबू भरती चली गई।

दोनो ने जल्दी से अपने मुह पर रुमाल लगा ली। अंदर का दृश्य बड़ा ही अजीब था। एक तरफ की दीवार पर चारो लड़के बँधे हुए बेहोशी की हालत में सिर नीचे झुलाए खुद भी झूल से रहे थे। दूसरी तरफ की दीवार में दो बंदूखधारी थे जो विवेक के फार्महाउस पर गार्ड थे।

" काका इन लोगो ने तो यहाँ गंध फैला रखी है ?" साक्षी ने कहा __" क्या इतनी ज्यादा खातिरदारी की है आपने इन सबकी ?"

" अरे ना बिटिया। " हरिया कह उठा _" इनकी खातिरदारी ता हिसाबै से भई रही। "

" तो फिर ये गंध क्यों है यहाँ ?" साक्षी ने कहा __" ऐसा लगता है जैसे इन लोगों का टट्टी पेशाब सब छूट गया है। "

" वा ता छुटबै करी बिटिया। " हरिया ने कहा __" खुद सोचौ ई ससुरे कल से ईहाँ बँधे हैं। अब जब ई ससुरन का टट्टी पेशाब लागी ता का करिहैं ई लोग ? कब तक ई सारे ऊ का दबा के रखिहैं ? ई चीज़ ता अइसन है बिटिया जे सरकार भी ना रोक पाइहैं , ई ससुरे ता अभी नवा नवा लौंडा हैं। "

" ओह ये तो बिलकुल सही कहा आपने काका। " साक्षी ने कहा __" लेकिन इन लोगों की इस गंदगी को भी तो दूर करना पड़ेगा वरना ये सब इसी से मर जाएँगे और मैं इन्हें इतना जल्दी मरने नहीं दे सकती। इस लिए आप यहाँ की इस गंदगी को हटाने का तुरंत काम शुरू करो। "

" ठीक है बिटिया। " हरिया ने कहा __" पाईप ता लगा ही है। बस मोटरवा का चालू करै का है। ई ता दुई मिनट मा होई जाई बिटिया। "

" ठीक है काका। " साक्षी ने कहा __" आप ये सब साफ करवा दीजिए मैं पाँच मिनट में आती हूँ। "

साक्षी ये कह कर बाहर निकल गई। उन लोगों की ये दुर्दशा देख कर उसके मन को बड़ी खुशी मिल रही थी। उसने सोचा कि ऐसे हरामियों के साथ ऐसा ही होना चाहिए। पर अभी तो ये शुरूआत है। कुछ देर बाद ही हरिया काका साक्षी को बुलाने आया। साक्षी उसके साथ पुनः तहखाने में पहुँची। इस बार का दृश्य काफी अलग था। तहखाने में जो गंध फैली हुई थी वो

अब नहीं थी। काका ने मोटे पाइप से जो पानी का प्रेशर निकलता था उससे तहखाने का पूरा फर्श और दीवारें साफ कर दिया था। फर्श की दीवारों के चारो तरफ किनारे किनारे बड़े बड़े छेंद बने हुए थे। उसमें ही पानी के साथ सारी गंदगी को निकाल दिया था काका ने। उसके बाद तहखाने में रूम फ्रशनर कर दिया था ताकि गंध दूर हो जाए या समझ में न आए।

दीवारों पर रस्सी से बॅधे चारो लड़के और वो दोनो गार्ड्स अब होश में आ चुके थे। साक्षी ये देख कर चौंकी थी कि उन सभी के जिस्मों पर नीचे कमर से एक लॅगोट टाइप का कपड़ा बॉध दिया था काका ने बाकी पूरा जिस्म नंगा था। ऐसा शायद इस लिए था क्यों कि उन सभी के कपड़े गंदे हो चुके थे और बदबू फैला रहे थे।

इस वक्त वो सभी होश में थे। पाइप के पानी से वो सब नहाए हुए थे। मगर कल से न कुछ खाया था न ही कुछ पिया था उन लोगों ने इस लिए उन सबकी हालत खराब थी।

" हमें छोंड़ दो इंस्पेक्टर। " अनिकेत ने रोते हुए कहा __" हम तुम्हारे पैर पकड़ते हैं। हमें जाने दो यहॉ से। हम कसम खाते हैं कि कभी भी किसी लड़की के साथ ऐसा वैसा कुछ नहीं करेंगे। "

हाँ हॉ हम कुछ नहीं करेंगे।" अलोक ने बुरी तरह गिड़गिड़ाते हुए कहा__"हमें इस नर्क से निकाल दो इंस्पेक्टर। यहॉ हमारा दम घुटा जा रहा है। कल से हम यहॉ वैसे के वैसे ही बॅधे हुए हैं। न हमारे पैरों में जान है ना ही हाथो में ताकत। हमसे अब और नहीं खड़ा हुआ जा रहा इंस्पेक्टर। प्लीज हमें छोंड़ दो।"

" अभी तो ये शुरूआत है। " साक्षी ने कठोर भाव से कहा __" मैं तुम लोगों का वो हाल करू गी जिसके बारे में किसी ने सोचा भी नहीं होगा आज तक। तुम लोगों ने जो कुकर्म किया है उसके लिए कानून तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता क्योंकि तुम लोगों के हरामी बाप बड़ी आसानी से तुम लोगों को कानून की गिरफ्त से निकाल लेते। इस लिए मैंने सोचा कि तुम लोगों को कानूनन सज़ा दिलाने से कोई फायदा नहीं होगा बल्कि तुम लोगों को कानून के बाहर आकर ही सज़ा दी जा सकती है। वही मैने किया है। तुम्हारे बाप दादाओं को पता ही नहीं चलेगा कभी कि उनके बच्चे कहॉ गए हैं ?"

" नहीं नहीं ऐसा मत करो। " अतुल रो पड़ा __" हम मानते हैं कि हमने अपराध किया है मगर एक बार माफ़ कर दो। एक बार तो सब कोई माफ़ कर देता है इंस्पेक्टर। "

" अगर तम लोगों ने अपने जीवन में सिर्फ एक ही अपराध किया होता तो ज़रूर तुम लोगों को माफ़ कर देती। " साक्षी ने कहा __" मगर तुम लोगों ने तो एक के बाद एक संगीन अपराध किये हैं। दूसरों की बहन बेटियों की इज्जत खराब कर उनकी ज़िदगी बरबाद की है तुम लोगों ने। मेरे पास तुम सबका काला चिट्ठा मौजूद है। इतना ही नहीं तुम लोगों के बाप का भी। मेरे पास ऐसे ऐसे सबूत हैं कि तुम लोगों के बापों को मैं सबके सामने नंगा दौड़ा सकती हूॅ। "

साक्षी की ये बातें सुन कर उन सबकी रूह कॉप गई। उन्हें अपनी स्थित और अपने बापों की स्थित का अंदाज़ा अब हुआ था। उनके बाप तो जानते भी नहीं थे कि उनके बच्चे उनकी ही अश्लील वीडियो बनाए हुए हैं। खुफिया कैमरे से वीडियो बनाई गई थी और इन सबका मास्टर माइंड विवेक रस्तोगी था।

" काका इन सबको आज का भोजन दे दो। " साक्षी ने हरिया से कहा __" मगर भोजन भी वही देना जो हम कुत्तों को देते हैं। छलनी में आटा छालने से जो छलनी में बचता है ना उसी की मोटी रोटिया बनवाना और इन चारों को सिर्फ एक एक सूखी रोटी देना। जबकि इन दोनों गार्ड्स को ठीक ठाक भोजन दे देना। क्योंकि इन लोगों इन हरामियों के जैसा कोई अपराध नहीं किया है। ये तो बस गेहूँ के साथ घुन की तरह यहॉ पिसने आ गए हैं। इन्हें छोंड़ा नहीं जा सकता वरना ये दोनो उस रस्तोगी को यहॉ की सारी बातें बता देंगे। "

" हम किसी से कुछ नहीं कहेंगे बेटी। " एक गार्ड शालीनता से बोला __" हम इन सबके बारे में सबकुछ जानते हैं। ये लोग सचमुच बहुत ही गंदे लोग हैं। हम तो ग़रीब आदमी हैं। दो पैसों के लिए इनके यहॉ गार्ड की नौकरी कर रहे थे। ये लोग और इन लोगों के बाप जब भी फार्महाउस आते थे तो उन लोगों के साथ हर बार कोई दूसरी लड़कियॉ होती थी। रात भर ये लोग अंदर अय्याशियॉ करते। कुछ लड़कियों को ये लोग जबरदस्ती उठा लाते थे और उनकी इज्जत को तार तार करते थे। ये सब बड़े लोग हैं बेटी। पैसों की गरमी ने इन्हें शैतान बना दिया है। "

" साले हरामजादे हमारा नमक खाता है और हमारे ही बारे में ऐसी बातें करता है ?" विवेक गुस्से में चीखा था।

" मेरे हाथ बॅधे हैं छोरे। " गार्ड ने कहा __" वरना तुझे बताता कि मुझे हरामजादा कहने का क्या अंजाम होता। नमक खाता था तो मुफ्त का नहीं खाता था समझे। बीस बीस घंटे चौकीदारी करता था तब तेरे बाप का नमक खाता था मैं। बात करता है साला रंडी की औलाद। "

" अपनी जुबान को लगाम दे कुत्ते। " विवेक पूरी शक्ति से चीखा था।

" कुत्ता तो तू है साले गस्ती की औलाद। " गार्ड ने भी ताव खाते हुए बोला __" इसी लिए तेरे लिए ऐसी रोटी बनने वाली है। "

विवेक खून के ऑसू पीकर रह गया। उसकी ऑखों में ज्वाला धधकने लगी थी। साक्षी उन दोनो की बाते सुन रही थी और सोच भी रही थी कि गार्ड तो बेचारे बेकसूर ही हैं। पर वो उन्हें छोंड़ कर कोई रिस्क नहीं लेना चाहती थी। क्योंकि ये भी हो सकता था कि वो दोनो अच्छा बनने का नाटक कर रहे हों। यानी विवेक ने उन लोगों को सिखाया पढ़ाया हो कि उसके आते ही हमें आपस में कैसी बातें करनी है। ताकि साक्षी यही समझे कि गार्ड्स बेकसूर हैं और वो

उन्हें छोंड़ देने का विचार करे। और अगर वो छोंड़ देगी तो फिर वो यहाँ से जाकर सीधा रस्तोगी को सारी बात बता देंगे। उसके बाद रस्तोगी साक्षी का हिसाब किताब कर लेता।

" काका , अभी भी इसमें गरमी बाकी है " साक्षी ने कहा __" इस लिए खिला पिला कर ज़रा अच्छे से फिर खातिरदारी करना। भोजन में कुत्ते वाली सिर्फ एक रोटी ही देना इन्हें। इसके बाद कल ही इन्हें खाना देना। अब चलती हूँ मैं। "

" ठीक बिटिया। " हरिया खातिरदारी का सुन कर खुश हो गया था।

साक्षी पलट कर तहखाने के दरवाजे से बाहर निकल गई। उसके जाते ही हरिया ने तहखाने का दरवाजा बंद किया। एक कोने में रखे मोटे डंडे को उठाया और उन चारों की तरफ बढ़ा। हरिया को अपने करीब आते देख उन चारों की रूह काँप गई।

" का रे मादर---। " हरिया ने विवेक की टाँग में मोटा डंडा घुमा कर जड़ दिया __" बहुतै गरमी चढ़ रखी है न तोही। हम लोगन की गरमी को बहुतै अच्छे से उतारता हूँ। "

" माफ कर दो काका। " विवेक ने सहसा हरिया से रिश्तेदारी जोड़ते हुए कह उठा __" ग़लती हो गई। अब कुछ नहीं कहूँगा। प्लीज़ माफ़ कर दो न। "

" माफ़ी ता हम दे दूँगा बछुवा। " हरिया ने डंडे को विवेक के पिछवाड़े पर हौले हौले सहलाते हुए कहा __" पर एखर कीमत दे का पड़ी। बोल दे सकत है तू कीमत ?"

" कैसे कीमत काका ?" विवेक ने नासमझने वाले भाव से कहा।

" ऊ का है ना बछुवा। " हरिया ने कहा __" हमका अपने जीवन मा एक बार ता जरूर केहू के नितंब मारै का मन रहा। जब हमरी तोहरे काकी से शादी हुई ता हम बड़ा खुश हुए। सुहागरात मा हम तोहरे काकी से बोल दिये कि हमका तोर नितंब मारै का है। पर ऊ ससुरी हमरी ई बात पर बिगड़ गै। फेर ता अइसनै चलत रहा बछुवा अउर हम आज तक केहू केर नितंब मारै का ना पायन। एसे हम कहत हैं कि कीमत मा तोही आपन नितंब हमसे मरावै का पड़ी। "

" नहीं नहीं। " विवेक हरिया की ये बात सुन कर अंदर तक काँप गया।

" देख बछुवा ई ता तोही करै का पड़ी। " हरिया ने कठोरता से कहा _" ई हमरे खुशी का बात है। सरवा आज तक केहू केर नितंब मारै का ना पायन हम। पर आज ता हम तोर नितंब मार के रहब बछुवा। अब ई तै सोच ले कि तू ई सब खुशी मा करिहे या रोई रोई के। हीहीहीहीही। "

हरिया ज़ोर ज़ोर से हँसे जा रहा था। उसकी हँसी ने तहखाने में बड़ा ही भयानक वातावरण पैदा कर दिया था। उन चारी की अंतरआत्मा तक काँप गई। विवेक तो हरिया को इस तरह देखने लगा था जैसे वह उसका काल हो।

" हमरे बिटिया केर बात ता तू लोग सुन ही लिये हो ना। " हरिया कह रहा थ ा __" तू सब अब इहैं रहने वाले हो। अउर हम अब तू ससुरन के रोज बारी बारी से नितंब मारब। "

" ऐसा मत करो काका हम तुम्हारे हाथ जोड़ते हैं प्लीज। " अनिकेत सहमे हुए से बोला।

हाँथ जोड़ै का कौनव फायदा ना होई बछुवा।" हरिया ने कहा__"काहे से के ई हमरे ख्वा....अरे ऊ का कहत हैं...ख्वाहिश...हॉ ईहैं...हॉ ता ई हमरे ख्वाहिश का बात है। नितंब मारै का हमरा बहुतै ख्वाहिश है बछुवा। अब ई बात मा हम कौनव केर बात ना मानब। चल रे पहिले तोरै नितंब का उद्घाटन हम करब हीहीही।"

विवेक की नितंब में हरिया ने ज़ोर से मोटा डंडा जड़ दिया। विवेक दर्द के मारे पूरी शक्ति से चीखने लगा था। जबकि हरिया ने विवेक की कमर में बॅधे कपड़े को खोल कर एक तरफ उछाल दिया। विवेक बुरी तरह इधर उधर हो रहा था। मगर दोनो हाथ ऊपर बॅधे थे और दोनो पैर फैलाए हुए चारों के पैरों से बॅधे हुए थे।

" ई का रे रंडी केर दुम। " हरिया विवेक की लुल्ली को देख कर कह ा __" ई ता बच्चन जइसन है रे। मादर--- नामरद है का र े ?"

" आहहहहह। " अपनी लुल्ली पर डंडे की हल्की मार पड़ते ही विवेक बिलबिला उठा था।

इधर हरिया ने ऊपर खूॅटी से रस्सी की गॉठ खोल कर विवेक के ऊपर उठे हुए हाथो को नीचे की तरफ कर दिया। विवेक का बाजू बुरी तरह अकड़ गया था। कल से एक ही पोजीशन में बॅधा था वह। इस वक्त वह जन्मजात नंगा था। वह बुरी तरह हिल रहा था और हरिया से अपनी नितंब न मारने के लिए विनती कर रहा था। मगर हरिया मानने वालों में से नहीं था।

" हमने कहा ना बछुवा। " हरिया ने विवेक की मुंडी पकड़ कर आगे की तरफ झुका दिय ा , फिर बोल ा __" हम कौनव बात ना मानब। ई हमरे ख्वाहिश केर बात है। एसे हम तोर नितंब ता मरबै करब। "

हरिया ने अपनी सफेद धोती की गॉठ छोरी और धोती को खोल कर ऊपर खूॅटी पर टॉग दिया। विवेक थर थर कॉप रहा था। उसके हाथ आपस में अभी भी बॅधे हुए थे इस लिए वह ज्यादा कुछ कर नहीं सकता था। इस वक्त वह हरिया से ये सब न करने के लिए गिड़गिड़ाए जा रहा था।

" काहे बछुवा। " हरिया ने विवेक की नंगी नितंब में ज़ोर से एक थप्पड़ लगाय ा , बोल ा __" अब काहे गिड़गिड़ाय रहा है। कछू याद ह ै ? अइसनै ऊ लड़कियन लोग भी तोहरे सामने गिड़गिड़ाती रही होंगी। मगर तू उन मा से केहू केर बात न माने रहे होई है न ा ? ता मादरजोद फेर हमसे कइसन या उम्मीद करत है कि हम तोर बात मान जाब रे वैश्या के जने सार े ?"

विवेक के बगल से बॅधे बाकी तीनों ये सब डरे सहमे से देख रहे थे। उनकी हालत बहुत खराब

थी। वो ये सोच सोच कर मरे जा रहे थे कि विवेक के बाद उनके साथ भी यही सब होगा। कभी स्वप्न में भी उन लोगों ने ये नहीं सोचा था कभी ऐसा भी वक्त उनके जीवन में आएगा।

" आआआहहहहह। " विवेक के मुख से दर्द भरी कराह निकल गई। हरिया उसके सामने आकर विवेक के सिर के बाल पकड़ कर उठाया था , बोला __" ले देख मादर--- कि लिंग केही कहत हैं। देख न रंडी के पूत। हम चाहू ता अपने ई लिंग से तुम सबकी एकै बार मा नितंब फाड़ दूँ मगर फाड़ूँगा नहीं। हम ता एक एक करके अउर तसल्ली से तुम चारोन की नितंब मारब ससुरे लोगा। "

हरिया नीचे से नंगा हो चुका था और इस वक्त अपने मोटे तगड़े लिंग को विवेक के चेहरे के बेहद पास सहला रहा था। विवेक झुका हुआ था क्योकि हरिया ने एक हात से उसके सिर के बाल पकड़ कर उसे नीचे झुकाया हुआ था।

देखते ही देखते हरिया का लिंग अकड़ कर खड़ा हो गया। बाकी तीनों आश्चर्य से हरिया के लिंग की तरफ देखे जा रहे थे। उन लोगों की ये सोच कर नानी मर गई कि यही लिंग उन लोगों की भी नितंब मारेगा। हरिया विवेक के पीछे आ गया। अपने पीछे जाते देख विवेक फिर से बुरी तरह हिलने लगा। वह बार बार हरिया से मिन्नतें करने लगता था।

" चिन्ता ना कर बछुवा। " हरिया ने विवेक की नितं ब को फैलाते हुए कहा __" बस एकै बार तीनौ लोकन के दर्शन होई हैं ऊखे बाद ता मजा मिली। अउर हॉ नितंब का अपने ढीलै रखिहे नाहीं ता ससुरे फाट जाई ता हमरा दोष ना दीहे। "

विवेक बुरी तरह छटपटाए जा रहा था। मगर हट्टे कट्टे हरिया का एक हाथ विवेक के सिर पर था जिसे वह विवेक को नीचे झुके रहने के लिए मजबूर किये हुए था। जबकि दूसरे हाथ से वह ढेर सारा थूँक लेकर उसे अपने लिंग पर लगाया और फिर लिंग पकड़ कर विवेक की नितंब में सेट किया।

तहखाने में मौजूद बाकी तीनो वो लड़के और वो दोनो गार्ड्स फटी ऑखों से ये दृश्य देखे जा रहे थे। हरिया ने लिंग सेट कर नितंब की तरब दबाव बढ़ाया।

" आआआहहहहह। " विवेक को दर्द होने लगा। उसकी नितंब बेहद टाइट थी। जबकि हरिया का लिंग मोटा तगड़ा था। हर पल के साथ विवेक की हालत हलाल होते बकरे जैसी होती जा रही थी। वह बुरी तरह छटपटा रहा मगर हरिया की मजबूत पकड़ से वह छूट नहीं पा रहा था। बड़ी मुश्किल से हरिया के लिंग का टोपा विवेक की नितंब में घुसा। इतने में ही विवेक गला फाड़े चिल्लाने लगा था।

" सबर कर बछुवा। " हरिया ने कहा __" गला फाड़ने से का होई ? ऊ ता हिम्मत रखै से होई। अउर ई ता अबे शुरूआतै हुआ है। अबे ता मंजिल बहुत बाकी है बछुवा। "

" आआहहहहहह मममममम्मी रेरेएएएएएए। " हरिया ने ज़ोर का झटका दिया। विवेक की नितंब को चीरता हुआ हरिया का लिंग लगभग आधा घुस गया था। विवेक के मुख से बड़ी भयंकर चीख निकली थी। उसकी ऑखों के सामने अंधेरा छा गया। विवेक बेहोश हो चुका था। उसकी हालत देख कर बाकी सब के होश उड़ गए। विवेक के दोस्त थर थर कॉपने लगे। वो अनायास ही ज़ोर ज़ोर से पागलों की तरह रोने चिल्लाने लगे।

" अबे चुप करा मादर-- वरना ई लिंग इसकी नितंब से निकाल के तुम्हरी नितंब में घुसेड़ दूँगा हम। " हरिया गुर्राया तो वो डर के मारे एक दम से चुप हो गए। उनके चुप हो जाने के बाद हरिया ने विवेक की नितंब में थप्पड़ मारते हुए बोला __" का बे मादर--- । ससुरे इतने से ही टॉय बोल गया रे। अभी ता हम पूरा लिंग डाला भी नहीं हूँ। "

हरिया विवेक की नितंब में धक्के लगाना शुरू कर दिया। हर धक्के के साथ वह थोड़ा बहुत लिंग को विवेक की नितंब में घुसेड़ता ही रहा था। विवेक बेहोशी की हालत में भी कराह रहा था। हरिया एक बार तेज़े से धक्का लगाया तो एच ज़ोरदार चीख के साथ विवेक होश में आ गया। होश में आते ही वह बुरी तरह रोने बिलखने लगा। रहम की भीख मॉगने लगा वह। मगर हरिया को तो अब जैसे न रुकना था और नाही रुका वह। तहखाने में विवेक का रोना और चिल्लाना ज़ारी रहा।

३४

उधर मुंबई में भी सुबह हुई।रेणुका ने सुबह पॉच बजे ही विक्रम को उठा दिया था। सुबह उठ कर उसने थोड़ी बहुत एक्सरसाइज की और फिर बाथरूम में फ्रेश होने के लिए चला गया। फ्रेश होने के बाद वह कमरे में आया तो देखा कि उसकी बहन निशा बेड पर बैठी हुई है।

" अरे तुझे स्कूल नहीं जाना क्या ?" मैने तौलिये से अपने सिर के बालों को पोंछते हुए कहा।

" जाना है। " निशा ने गौर से मेरे शरीर को देखते हुए कहा __" मैं तो बस आपको बेस्ट ऑफ लक कहने आई थी। "

" अच्छा तो ये बात है। " मैने मुस्कुरा कर कहा __" मेरी गुड़िया मेरी जान मुझे बेस्ट ऑफ लक कहने रूम में आई है ?"

" हॉ लेकिन अपने तरीके से। " निशा ने मुस्कुरा कर कहा।

" अपने तरीके से ?" मैं उसकी बात से नासमझने वाले अंदाज़ से बोला __" किस तरीके की बात कर रही है तू ?"

" वो मैं कर के बताऊँगी भैया। " निशा ने कहा __" बस आपको अपनी दोनो ऑखें बंद करना पड़ेगा। और खबरदार ग़लती से भी अपनी ऑखें मत खोलियेगा। वरना मैं आपसे बात नहीं करू गी। । "

" अरे ये क्या कह रही है गुड़िया ?" मैं उसकी बात से हैरान हुआ __" आख़िर क्या चल रहा है तेरे मन मे ?"

" कुछ नहीं चल रहा भैया। " निशा एकाएक ही हड़बड़ा गई थी , बोली __" बस आप अपनी ऑखें बंद कीजिए न। "

मैं उसे ग़ौर से देखता रहा। उसके चेहरे पर इस वक्त संसार भर की मासूमियत विद्यमान थी। खूबसूरती में वह बिलकुल मेरी मॉ की कार्बन कॉपी ही थी। हलॉकि उसका चेहरा और उसका पूरा रंगरूप मेरी मॉ रेणुका की तरह ही था। वो मॉ की हमशक्ल टाइप की थी।

" क्या हुआ भैया ?" निशा कह उठी __" क्या सोचने लगे आप ? बंद कीजिए न अपनी ऑखें। "

" अच्छा ठीक है बंद करता हूँ। " मैने कहा _" पर कोई उटपटॉग हरकत मत करना। "

" मैं ऐसा वैसा कुछ नहीं करू गी भैया। " निशा ने कहा __" और अगर कर भी दूँ तो मेरी भूल समझ कर मुझे माफ़ कर देना। । "

मैं उसकी नटखट बातों पर मुस्कुरा उठा और अपनी ऑखें बंद कर ली। कुछ पल बाद ही मुझे अपने होठों पर कोई बहुत ही कोमल चीज़ महसूस हुई। अभी मैं कुछ समझ भी न पाया था कि उस कोमल चीज़ ने मेरे होठों को जोर से दबोच कर दो सेकण्ड तक अपने अंदर रख कर उस पर कुछ किया उसके बाद छोंड़ दिया। मेरे दिमाग़ में विस्फोट सा हुआ। एकाएक ही मेरे दिमाग़ की बत्ती जली। मैने झट से अपनी ऑखें खोल दी। सामने देखा तो निशा भागते हुए कमरे के दरवाजे पर नज़र आई मुझे। दरवाजे के पास पहुॅच कर वह रुकी और फिर पलटी। उसके बाद मुस्कुराते हुए कहा__"बेस्ट ऑफ लक भैया।" इतना कह कर वह दरवाछे के बाहर की तरफ हवा की तरह निकल गई। जबकि मैं बुत बना खड़ा रह गया।

मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि मेरी बहन ने इन कुछ पलों के भीतर मेरे साथ क्या कर दिया था। वह मेरे होठों को बड़ी चतुराई से चूम कर मुझे बेस्ट ऑफ लक कहा और भाग भी गई। मुझे उससे इस सबकी उम्मीद नहीं थी। फिर मुझे ध्यान आया कि वो मुझसे प्यार करती है जिसका उसने इज़हार भी किया था।

मैं काफी देर तक बुत बना खड़ा रहा। मेरी तंद्रा तब टूटी जब मॉ कमरे में आकर बोली__"तू अभी तक तैयार नहीं हुआ कॉलेज जाने के लिए? चल तैयार होकर आ जल्दी। मैने नास्ता तैयार करके लगा दिया है।"

मैं मॉ की आवाज़ सुन कर चौंक पड़ा था। उसके बाद मैंने मॉ से कहा कि आप चलिए मैं आता हूॅ। मेरे दिमाग़ में अभी तक यही चल रहा था कि गुड़िया ने ऐसा क्यों किया? मुझे अपने होठों पर अभी भी उसके नाज़ुक होठों का एहसास हो रहा था। मैने अपने होठों पर जीभ फिराई तो मुझे मीठा सा लगा। उफ्फ ये क्या है? मेरी गुड़िया के मुख और होठों का लार इतना मीठा था। मुझे अपने अंदर बड़ा अजीब सा रोमॉच होता महसूस हुआ। मेरा रोम रोम गनगना उठा था।

ख़ैर मैं कॉलेज की यूनीफार्म पहन कर कमरे से बाहर आया और फिर नीचे डायनिंग हाल की तरफ बढ़ गया। डायनिंग टेबल पर इस वक्त सब लोग बैठे हुए थे। उमाकांत अंकल, सुंदर चाचा, गुड़िया और मॉ। मैं भी एक कुर्सी खींचकर बैठ गया। मेरी नज़र निशा पर पड़ी तो उसने जल्दी से अपना चेहरा झुका लिया। उसके गोरे गोरे और फूले हुए गाल कश्मीरी सेब की तरह सुर्ख हो गए थे लाज और शर्म की वजह से।

" ये बहुत अच्छा किया विक्रम जो तुमने अपनी पढ़ाई जारी कर दी। " सहसा सामने कुर्सी पर बैठे सुंदर चाचा ने कहा __" मुझे खुशी है कि इतना कुछ होने के बाद भी तुम अपने रास्ते से नहीं भटके। मुझे तुम पर फक्र है विक्रम और मेरा आशीर्वाद है कि तुम हमेशा कामयाबी और सफलता के नये और ऊॅची बुलंदियों को प्राप्त करो। "

" शुक्रिया चाचा जी। " मैने कहा __" भले ही चाहे जो हुआ हो लेकिन मैं जानता था कि आपके दिल में हमारे लिए इतनी भी नफ़रत नहीं होगी जितनी कि बड़े पापा और बड़ी मॉ के दिलों में है हमारे लिए। "

" समय बहुत बलवान होता है विक्रम। " सुंदर चाचा ने कहा __" और बहुत बेरहम भी। वो हमसे वो सब भी करवा लेता है जिसे करने की हम कभी कल्पना भी नहीं करते। पर कोई बात नहीं बेटे , इंसान वही श्रेष्ठ और महान होता है जो हर तरह के कस्टों को पार करके आगे बढ़ता है। "

" विक्रम बेटा मैने तुम्हारे लिए कॉलेज जाने के लिए एक नई और शानदार कार मगवा दी है जो कि बाहर ही खड़ी है। " उमाकांत अंकल ने मुस्कुराते हुए कहा __" हम चाहते हैं कि तुम अपने नये सफर की शुरूआत उसी से करो। "

" इसकी क्या ज़रूरत थी अंकल ?" मैने कहा __" मैं वहॉ पर पढ़ने जा रहा हूॅ ना कि किसी को अपनी अमीरी दिखाने। माफ़ करना अंकल लेकिन मैं चाहता हूॅ कि मैं भी उसी तरह कॉलेज जाऊॅ जैसे सभी आम लड़के जाते हैं। बॉकि ऑफिस के कामों के लिए मैं ये सब यूज करू गा। मुझे खुशी है कि आपने मेरे लिए एक नई कार लाकर दी। "

" ठीक है बेटे जैसी तुम्हारी इच्छा। " उमाकां त अंकल ने कहा __" मुझे ये जान कर अच्छा लगा कि तुम ऐसी सोच रखते हो। "

" वैसे विक्रम किस कॉलेज में एडमीशन लिया है तुमने ?" सुंदर चाचा ने कुछ सोचते हुए पूछा।

"..... में चाचा जी। " मैने बताया।

" अरे इस कॉलेज में तो मानुषी ने भी एडमीशन लिया हुआ है। " सुंदर चाचा चौंके थे __" और निश्चय ही तुम्हारी मुलाक़ात उससे होगी ही वहॉ। वो जब तुम्हें वहॉ पर देखेगी तो जरूर बड़े भैया को बताएगी कि तुम भी उसी कॉलेज में पढ़ रहे हो जहॉ पर वो पढ़ रही है। उसके बाद तुम पर ख़तरा भी हो सकता है बेटे। इस लिए ज़रा सम्हल कर रहना। "

" चिन्ता मत कीजिए चाचा जी। " मैने अजीब भाव से कहा __" मैं तो चाहता ही हूॅ कि अब धीरे धीरे बड़े पापा को ये पता लगे कि मैं किस जगह पर हूॅ। उन्होने तो मेरी तलाश में जाने कब से अपने आदमियों को लगाया हुआ है। उनके आदमी आज महीने भर से मेरी खोज में मुंबई की खाक़ छान रहे हैं। "

" तुम्हें ये सब कैसे पता ?" सुंदर चाचा बुरी तरह चौंके थे।

" मैं उनकी हर गतिविधि पर नज़र रखता हूॅ चाचा जी। " मैने कहा __" आप अभी कुछ नहीं जानते हैं कि मैंने यहॉ पर बैठे बैठे ही उनकी कैसी कैसी खातिरदारी की है। "

" क्या मतलब ?" सुंदर चाचा के माथे पर बल पड़ता चला गया , बोले __" किस खातिरदारी की बात कर रहे हो तुम ?"

" ये सब आपको उमाकांत अंकल बता देंगे चाचा जी। " मैने कहा __" फिलहाल तो मैं अभी कॉलेज जा रहा हूॅ। आज मेरा पहला दिन है। इस लिए मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं अपने इस

सफर पर कामयाब होऊँ। "

" मेरा आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ ही रहेगा विक्रम। " सुंदर चाचा ने कहा।

उसके बाद हम सबने नास्ता किया और फिर नास्ता करके मैंने अपना बैग लिया। सबसे आशीर्वाद लेकर मैं निशा को लेकर बाहर आ गया।

मैने ग्यारेज से अपनी बाइक निकाली और निशा को पीछे बैठा कर लान से होते हुए मेन गेट से बाहर निकल गया। निशा मेरे साथ इस लिए थी क्योंकि उसे भी स्कूल जाना था। जोकि मेरे कॉलेज के रास्ते पर ही था। निशा मेरे पीछे चुपचाप बैठी हुई थी। वो कुछ बोल नहीं रही थी। ये बड़ी आश्चर्य की बात थी वरना वह चुप रहने वालों में से न थी।

" तो मैडम आज चुप चुप सी क्यों है भई ?" मैने बाइक चलाते हुए कहा __" वैसे आज तो मैडम ने ग़जब ही कर दिया है। "

" आप किससे बात कर रहे हैं भैया ?" निशा ने कहा।

" किससे का क्या मतलब है मैडम ?" मैने कहा __" आप ही से बात कर रहा हूँ। "

" अच्छा। " निशा ने कहा __" तो मैं मैडम हूँ ?"

" और नहीं तो क्या। " मैने कहा __" मेरी गुड़िया किसी मैडम से कम है क्या ?"

" ओहो ऐसा क्या ?" निशा एकदम से सरक कर मुझसे चिपक गई , बोली __" लेकिन आपकी टोन बदली हुई क्यों लग रही है मुझे ?"

" क्या बताऊँ गुड़िया ?" मैने कहा __" आज सुबह सुबह एक बिल्ली ने मेरे होठों को काट लिया था। "

" क्या ?????" निशा चीख पड़ी __" आपने मुझे बिल्ली कहा ? अपनी जान को बिल्ली कहा ? जाइए नहीं बात करना आपसे। । "

" अरे तो तुम क्यों नाराज हो रही हो ?" मैने कहा __" मैं तो उस बिल्ली की बात कर रहा हूँ जिसने आज मेरे होठों को काटा था। "

" फॉर काइण्ड योर इन्फोरमेशन। " निशा ने कहा __" आप जिसे बिल्ली कह रहे हैं वो मैं ही थी। और आपने मुझे बिल्ली कहा। बहुत गंदे हैं आप। । "

" ओह माई गॉड। " मैने कहा __" तो वो तुम थी ?"

" ज्यादा ड्रामें मत कीजिए। " निशा एकाएक मुझसे अलग होकर बाइक में पीछे सरक गई , बोली __" मुझे आपसे बात नहीं करनी बस। आपने अपनी जान को बिल्ली कहा है। ये तो मेरी इनसल्ट है , । "

" लेकिन मुझे ये सब अच्छा नहीं लगा गुड़िया। " मैने सहसा गंभीर होकर कहा __" तुझे वैसा नहीं करना चाहिए था मेरे साथ। ये ग़लत है। "

मेरी इस बात पर निशा की तरफ से कोई प्रतिक्रिया न हुई। वो एकदम से चुप थी।

" तू जानती है न कि भाई बहन के बीच ये सब ग़लत होता है। " मैने कहा __" मैने उस दिन भी तुझसे कहा था। फिर आज तूने ऐसा क्यों किया गुड़िया ? तुझे पता है अगर ये सब मॉ को पता चल गया तो उन पर क्या गुज़रेगी ?"

इस बार भी निशा कुछ न बोली। मैं उसकी चुप्पी देख कर बेचैन व परेशान सा हो गया। मैंने तुरंत ही सड़क के किनारे पर बाइक को रोंक दी और पीछे पलट कर देखा तो चौंक गया। निशा का चेहरा ऑसुओं से तर था। उसकी ऑखें लाल हो गई थी। मैं उसकी इस हालत को देख कर हिल सा गया। वो मेरी बहन थी, मेरी जान थी। उसकी ऑखों में ऑसूॅ किसी सूरत में नहीं देख सकता था मैं। मैं तुरंत बाइक से नीचे उतरा और झपट कर उसे अपने सीने से लगा लिया।

" ये क्या है गुड़िया ?" मैने दुखी भाव से कहा __" तू जानती है न कि मैं तेरी ऑखों में ऑसू नहीं देख सकता। फिर क्यों तूने अपनी ऑखों को रुलाया ? क्या मुझसे कोई ग़लती हो गई है ? बता न गुड़िया। "

" ये ऑसू तो अब मेरी तक़दीर में लिखने वाले हैं भैया। " निशा ने भर्राए गले से कहा _" जब से होश संभाला था तब से आप ही को देखा था , आपको ही अपना आदर्श माना था। फिर हमारे साथ वो सब कुछ हो गया। आप हमसे दूर यहॉ नौकरी करने आ गए। मगर दो दिल तो हमेशा रोते रहे। एक अपने बेटे के लिए तो एक अपने भाई की मोहब्बत के लिए। मैं नहीं जानती भैया कि कब मेरे दिल में आपके लिए उस तरह का प्रेम पैदा हो गया। फिर मैने आपकी वो डायरी पढ़ी। जिसमें आपने अपनी मोहब्बत की दुखभरी दास्तां लिखी थी। प्राची की बेवफाई से आप अंदर ही अंदर कितना दुखी थे ये मुझे उस डायरी को पढ़ कर ही पता चला था। उस दिन जब हम दोनो घूमने समंदर गए थे। तब आपने वहॉ शराब पी और अपनी हालत खराब कर ली थी। आपको मेरे चेहरे में प्राची नज़र आई और आपने अपने दिल का सारा गुबार निकाल दिया। मैं आपकी उस दशा को देख कर बहुत दुखी हो गई थी। आप तो शुरू से ही मेरी जान थे। मुझे उस दिन लगा कि आपको सहारे की ज़रूरत है। मैंने जो अब तक अपने दिल में उस प्रेम को छुपाया हुआ था उसे बाहर लाने का फैसला कर लिया। मुझे किसी की परवाह नहीं थी कि लोग मेरे बारे में क्या कहेंगे या क्या सोचेंगे ? मुझे तो बस इस बात की फिक्र थी कि मेरे भैया दुखी न रहें। मैं अपकी खुशी के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हो गई थी। इसी लिए उस दिन मैने आपसे अपने प्रेम का इज़हार कर दिया था। मुझे पता है कि भाई बहन के बीच ये सब नहीं हो सकता इसके बावजूद मैंने ये अनैतिक कदम उठा लिया। आपने भी तो बाद में मुझसे यही कहा था न कि ठीक है तुझे जो करना है कर। मोहब्बत तो किसी से भी हो सकती है। लेकिन आज फिर आपने कह दिया कि ये सब ग़लत है। अब तो ऐसा हाल हो चुका है कि मेरे दिल से आपके लिए वो चाहत जा ही नहीं सकती। मुझे इस बात पर रोना आया भैया कि आप कभी मेरे नहीं हो सकते। ये देश ये समाज कभी मेरी झोली में आपको जायज बना कर नहीं डाल सकता। तो फिर ये ऑसूॅ तो अब मेरी

तक़दीर ही बन गए न भैयाा । इन ऑसुओं पर आज तक भला किसी का ज़ोर चला है जो मेरा चल जाएगा। "

मैं निशा की बातें सुन कर चकित रह गया था। मुझे उसकी हालत का एहसास था। क्योंकि इश्क़ के अज़ाब तो मुझे पहले से ही हासिल थे। जिनका असर आज भी ऐसा है कि दिल हर पल तड़प उठता है। लेकिन मैं अपनी बहन की मोहब्बत को कैसे स्वीकार कर लेता? मेरी मॉ एक आदर्शवादी और उच्च विचारों वाली है। उसे अगर ये पता चल गया कि उसकी अपनी औलादें ऐसा अनैतिक कर्म कर रही हैं तो वो तो जीते जी मर जाएगी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं किसे चुनूँ? अपनी बहन की मोहब्बत को या फिर मॉ को?

" सब कुछ समय पर छोड़ दो गुड़िया। " मैने कहाा __" और हर पल यही कोशिश करो कि ये सब तुम्हारे दिल से निकल जाए। "

" नहीं निकलेगा भैयाा। " निशाा ने रोते हुए कहाा __" मैने बहुत कोशिश की मगर नहीं निकाल सकी मैं अपने दिल से आपको। ख़ैर जाने दीजिए भैयाा । आप परेशान न होईये। आज के बाद आपको शिकायत का मौका नहीं दूँगी। "

मैने निशा को ध्यान से देखा। उसके चेहरे पर दृढ़ता के भाव दिखाई देने लगे थे। जैसे उसने कोई फैंसला कर लिया हो। मैने उसकी ऑखों से ऑसू पोछे और फिर वापस बाइक पर आ गया। बाइक स्टार्ट कर मैं आगे बढ़ गया। सारे रास्ते निशा चुप रही। मुझे भी समझ न आया कि मैं क्या बातें करू उससे। थोड़ी ही देर में उसका स्कूल आ गया। मैने उसे स्कूल के गेट पर उतारा और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेर कर आगे बढ़ गया। निशा के बारे में सोचते सोचते ही मैं कॉलेज पहुँच गया।

३५

पुलिस हेडक्वार्टर रामगंज।

लम्बी चौड़ी मेज के उस पार पुलिस कमिश्नर बैठा हुआ था। जिसकी वर्दी पर लगी नेम प्लेट में उसका नाम कुलभूषण भोसले लिखा हुआ था। पचास से पचपन के बीच की ऊम्र का वह एक प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला इंसान था। उसके बाएॅ साइड की एक कुर्सी पर इंस्पेक्टर साक्षी बैठी हुई थी। बाकी पूरा ऑफिस खाली था।

साक्षी ने कमिश्नर से गुज़ारिश की थी कि वो अपनी बात सिर्फ उनसे ही करेगी। उन दोनो के बीच कोई तीसरा नहीं होना चाहिए। कमिश्नर चूँकि अच्छी तरह जानता था कि साक्षी सोनपुर के भाटी परिवार की ठाकुर सत्यम सिंह की बेटी है। इस लिए उसकी इस गुज़ारिश को उसने स्वीकार कर लिया था वरना पुलिस की एक मामूली सी इंस्पेक्टर रैंक की ऑफिसर की इस डिमाण्ड को स्वीकार करना कदाचित कमिश्नर की शान में गुस्ताख़ी करने जैसा होता।

" सो ऑफिसर , अब बताओ कि ऐसी क्या खास बात करनी थी तुम्हें जिसके लिए तुमने हमसे ऐसी गुज़ारिश की थी ?" पुलिस कमिश्नर ने कहा __" ये तो हम समझ गए हैं कि मामला यहाँ के मंत्री और उसके बेटे का है। लेकिन ये समझ नहीं आया कि अचानक से तुम्हारा प्लान कैसे बदल गया ?"

" आप तो जानते हैं सर कि हमारा कानून आज के समय में बड़े बड़े लोगों के हाथ की कठपुतली बन कर रह गया है। " साक्षी ने कहना शुरू किया __" मंत्री के जिस बेटे ने अपने दोस्तों के साथ उस मासूम लड़की के साथ वो घिनौना कुकर्म किया था उसके लिए उसे कानूनन कोई सज़ा मिल ही नहीं पाती। क्योंकि उन सभी लड़कों के बाप इस शहर की नामचीज़ हस्तियाँ हैं। उनके एक इशारे पर हमें पुलिस के लॉकअप का ताला खोल कर उन लड़कों को छोंड़ देना पड़ता। हमारे पास भले ही चाहे जितने सबूत व गवाह होते मगर हम उन सबूतों और गवाहों के बाद भी उन्हें कानूनी तौर कोई सज़ा नहीं दिला पाते। उल्टा होता ये कि उन पर हाथ डालने वालों के साथ ही कुछ बुरा हो जाता। वो लड़की बग़ैर इंसाफ पाए ही इस दुनियाँ से अलविदा हो जाती। आप नहीं जानते सर , उस लड़की को ब्लड कैंसर है। वह बस कुछ ही दिनों की मेहमान है। उन दरिंदों को उस पर ज़रा सी भी दया नहीं आई। आप उस लड़की की कहानी सुनेंगे तो हिल कर रह जाएॅगे सर। इस छोटी सी ऊम्र में उसने कितना बड़ा त्याग किया है इसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। ऐसे कुकर्मियों का एक ही इलाज़ है सर __ सज़ा ए मौत। ऐसे लोगों को हज़ार बार ज़िंदा करके हज़ारों बार तड़पा तड़पा कर मारा जाए तब भी कम ही होगा। इस लिए सर मैने उन सबको ऐसी ही सज़ा देने का फैंसला किया है। "

" देखो ऑफिसर भावनाएॅ और जज़्बात रखना बहुत अच्छी बात है। " कमिश्नर ने कहा __" लेकिन हमारे कानून में भावनाओं और जज़्बातों के आधार पर किसी का फैंसला नहीं हुआ करता। बल्कि ठोस सबूतों और गवाहों के आधार पर ही फैंसला होता है। तुम कानून की

एक रक्षक हो तुम्हें इस तरह का गैरकानूनी फैसला लेने का कोई हक़ नहीं है। किसे सज़ा देनी है और कैसे देनी है ये फैसला अदालत करेगी। तुमने अपनी मर्ज़ी से ये जो क़दम उठाया है इसके लिए तुम्हें सस्पेण्ड भी किया जा सकता है। इस लिए बेहतर होगा कि तुम ये सब करने का विचार छोड़ दो। "

" ये सब मैं आपको बताए बग़ैर भी कर सकती थी सर। " साक्षी ने कहा __" मगर मैने ऐसा किया नहीं। आपको इस बारे में बताना अपना कानूनी फर्ज़ समझा था मैने। वरना उन लड़कों के साथ कब क्या हो जाता ये कभी कोई जान ही नहीं पाता। ये बात आप भी जानते हैं सर कि मंत्री खुद भी ग़ैर कानूनी काम धड़ल्ले के साथ करता है और हमारा पुलिस डिपार्टमेंट उसके खिलाफ कोई कार्यवाही करने की तो बात दूर बल्कि ऐसा सोचता तक नहीं। ऐसा कौन सा अपराध नहीं है सर जिसे वो रस्तोगी अंजाम नहीं देता ? मगर आज तक उस पर कानून ने हाथ नहीं डाला। सिर्फ इस डर से कि कहीं उसका क़हर हमारे डिपार्टमेंट पर न बरस पड़े। वाह सर वाह , क्या कहने हैं इस पुलिस डिपार्टमेंट के। अरे इतना ही डरते हैं उससे तो पुलिस की नौकरी ही न करनी थी सर। "

" सब तुम्हारे जैसा नहीं सोचते हैं ऑफिसर। " कमिश्नर ने कहा __" और अगर सोचते भी हैं तो बहुत जल्द उनकी वो सोच बदल भी जाती है। क्योंकि डिपार्टमेंट में ऐसे कुछ लोग भी होते हैं जो वर्दी तो पुलिस की पहनते हैं मगर नौकरी उस रस्तोगी के यहॉ करते हैं। उसकी जी हुज़ूरी करते हैं। क्योंकि इसी में वो अपना भला समझते हैं। हमें सब पता है ऑफिसर लेकिन कुछ कर नहीं सकते। अगर करना भी चाहेंगे तो दूसरे दिन ही हमारे सामने ट्रॉसफर ऑर्डर आ जाएगा। ये सब तो आम बात हो गई है ऑफिसर। "

" कमाल की बात है सर। " साक्षी ने कहा __" इस तरह में तो कोई काम ही नहीं हो सकता। पुलिस की अकर्मण्ड्यता से नुकसान किसका होगा ? उन मासूम लोगों का जो दिन रात अपने बीवी बच्चों के लिए खून पसीना बहाते हैं , इसके बाद भी भर पेट वो अपने परिवार को खाना नहीं खिला पाते। चरस और अफीम जैसे ज़हर का हर दिन वो इसी तरह शिकार होते रहेंगे। ऐसे ही न जाने कितनी लड़कियों का रेप होता रहेगा। और ये सब कुकर्म करने वाले अपनी हर जीत का जश्न मनाते रहेंगे। "

" कानून ने अपनी ऑखों पर पट्टी बॉधी हुई है तुम भी ऑखों पर पट्टी बॉध लो। " कमिश्नर ने कहा __" इसी में इस डिपार्टमेंट का भला है ऑफिसर। "

" हर्गिज़ नहीं सर। " साक्षी के मुख से शैरनी की भॉति गुर्राहट निकली। एक झटके से वह कुर्सी से खड़ी हो गई थी , बोली __" मैं इतनी कमज़ोर नहीं हूॅ जो ऐसे गीदड़ों से डर जाऊॅगी। आपको अपनी चिंता है और इस डिपार्टमेंट की तो करते रहिए चिंता। मगर मैं चुप नहीं बैठूॅगी सर। मैं उन हराम के पिल्लों को ऐसी सज़ा दूॅगी की फरिश्तों का भी कलेजा हिल जाएगा। "

" बिहैव योरसेल्फ ऑफिसर। " कमिश्नर ने सख्त भाव से कहा __" तुम कानून को अपने हाथो में नहीं ले सकती। "

" आपने मजबूर कर दिया है सर। " साक्षी ने आहत भाव से कहा __" बड़ी उम्मीद के साथ आई थी आपके पास। सोचा था कि आप मेरी मदद करेंगे। मगर आप तो ..... ख़ैर जाने दीजिए सर। मुझे बस एक सवाल का जवाब चाहिए आपसे। क्या आप नहीं चाहते हैं कि ऐसे लोगों को सज़ा मिले ?"

" बिलकुल चाहते हैं ऑफिसर। " कमिश्नर ने कहा __" मगर हमारे चाहने से क्या होता है ? हम तो बस मजबूर कर दिये जाते हैं कुछ न करने के लिए। "

" अगर आप सच में चाहते हैं सर। " साक्षी ने कहा __" तो फिर मेरा साथ दीजिए। आपको करना कुछ नहीं है। बस इतना करना है कि अगर ऊपर से कोई बात आए तो आप यही कहेंगे कि प्राची रेप केस पर कोई कार्यवाही नहीं की गई है। सबूत के तौर पर आप उन्हें फाइलें भी दिखा सकते हैं। मैं आपको यकीन दिलाती हूँ सर कि आप पर और आपके इस डिपार्टमेंट पर किसी भी तरह की कोई बात नहीं आएगी। क्योंकि मेरे पास उस मंत्री के ऐसे ऐसे सबूत हैं कि वो चाह कर भी हमारा कुछ बुरा नहीं कर सकता। आप बस वो करते जाइये जो मैं कहूँ। फिर आप देखिए कि कैसे मैं शहर से इस गंदगी और इस अपराध का नामो निशान मिटाती हूँ। "

" कैसे सबूत हैं तुम्हारे पास ?" पुलिस कमिश्नर चौंका था।

" बस आप ये समझिए सर कि उस मंत्री की और उस जैसे लोगों की जान अब मेरी मुट्ठी में है। " साक्षी ने कहा __" वो सब अपने हाथ पैर चलाना तो चाहेंगे मगर चला नहीं पाएंगे। "

" अगर ऐसी बात है ऑफिसर तो हम यकीनन तुम्हारे साथ हैं। " कमिश्नर ने एकाएक गर्मजोशी से कहा __" तुमने हमें पहले क्यों नहीं बताया कि तुम्हारे पास इन लोगों के खिलाफ़ इतने पुख़्ता सबूत हैं ?"

" आप मेरी बात ही कहाँ सुन रहे थे सर। " साक्षी ने सहसा मुस्कुरा कर कहा _" बस जाने क्या क्या कहे जा रहे थे। "

" ओह सॉरी ऑफिसर। " कमिश्नर हँसा _" तो अब बताओ क्या करना है आगे ?"

" मैंने तो पहले ही करना शुरू कर दिया था सर। " साक्षी ने कहा __" बस आपको इस बात की जानकारी देना चाहती थी। अब तो आप बस आराम से यहीं पर बैठ कर न्यूज आने का इंतज़ार कीजिए। "

" ओके ऐज योर विश। " कमिश्नर ने कंधे उचकाए __" एण्ड हमें बेहद खुशी हुई कि तुम एक ईमानदार और बहादुर ऑफिसर हो। बेस्ट ऑफ लक। "

" थैंक्यू सर। " साक्षी ने कहा और फिर कमिश्नर को सैल्यूट कर वह ऑफिस से बाहर निकल गई।

बाहर आकर वह अपनी पुलिस जिप्सी में बैठ कर हैडक्वार्टर से बाहर निकल गई। उसके चेहरे

पर इस वक्त खुशी और जोश दोनो ही भाव गर्दिश कर रहे थे। सड़क पर उसकी जिप्सी हवा से बातें करते हुए एक मोबाइल स्टोर की दुकान पर रुकी। लेकिन फिर जाने क्या सोच कर उसने फिर से जिप्सी को आगे बढ़ा दिया।

आधे घंटे से कम समय में ही वह एक मकान के सामने आकर रुकी। उसने अपनी पॉकेट से अपना आईफोन निकाला और उसमें कोई नंबर डायल किया।

" बाहर आओ। " उसने काल कनेक्ट होते ही कहा , और फिर बिना उधर का जवाब सुने काल कट कर दिया। थोड़ी देर बाद ही उसके पास एक आदमी आकर खड़ा हो गया। वो आदमी यही कोई पच्चीस या तीस की उमर के आस पास का रहा होगा।

" जी मैडम कहिए क्या आदेश है ?" उस आदमी ने बड़ी शालीनता से कहा।

" एक काम करो अगर यहाँ पास में कहीं कोई मोबाइल स्टोर हो तो एक मोबाइल फोन खरीद कर ले आओ। " साक्षी ने जेब से दो हज़ार के पाँच नोट निकाल कर उसे देते हुए कहा _" और एक नई सिम भी। कोशिश करना कि सिम ऐसे ही मिल जाए और तुरंत एक्टिवेट भी हो जाए। तुम समझ रहे हो न ?"

" जी मैं समझ गया मैडम। " आदमी ने सिर हिलाते हुए कहा __" आप फिक्र मत कीजिए। यहीं पास में ही एक मोबाइल स्टोर है। मैं अभी दोनो चीज़ें लेकर आता हूँ। "

" ठीक है। " साक्षी ने दो नोट और उसकी तरफ बढ़ाए __" इन्हें भी ले लो। अगर कम पड़ें तो लगा देना नहीं तो खुद रख लेना। "

" ठीक है मैडम। " आदमी ने खुश होकर कहा __" मैं अभी लेकर आता हूँ। आप यहीं पर इंतज़ार कीजिए। "

" ओके ठीक है। " साक्षी ने कहा।

वो आदमी हवा की तरह वहाँ से गायब हो गया। साक्षी उसे यूँ तेजी से जाते देख बरबस ही मुस्कुरा पड़ी। सड़क के किनारे जिप्सी को खड़े कर वह जाने किन ख़यालों में खो गई। चौंकी तब जब उस आदमी ने वापस आकर उसे आवाज़ दी।

" ये लीजिए मैडम। " आदमी ने एक छोटा सा थैला पकड़ाते हुए कहा __" इसमें सैमसंग का एक मोबाइल है और एक सिम भी। दुकानदार ने कहा है कि आधे घंटे में सिम चालू हो जाएगी "

" ओह वैरी गुड। " साक्षी ने कहा __" एण्ड थैक्स। अब जाओ तुम। "

" अच्छा मैडम। " आदमी ने सलाम बजा कर कहा और चला गया।

साक्षी थैले को अपने बगल से रख कर जिप्सी को यू टर्न दिया और आगे बढ़ गई। अब उसकी जिप्सी का रुख शहर से बाहर की तरफ था।

३६

मैं कॉलेज की पार्किंग में अपनी बाइक को खड़ी कर कॉलेज के अंदर की तरफ बढ़ गया। ये मुंबई का सबसे बड़ा और टाप क्लास का कॉलेज था। मुझे पता था कॉलेजों में रैगिंग होना आम बात है। इस लिए मैं खुद भी इसके लिए तैयार था। कॉलेज के अंदर काफी सारे स्टूडेंट्स थे। लेकिन मैं ये देख कर थोड़ा हैरान हुआ कि एक जगह काफी भीड़ सी थी।

मैं समझ तो गया कि वो भीड़ किस बात के लिए थी। मुमकिन था कि वहॉ पर सीनियर लोग किसी जूनियर की रैगिंग ले रहे होंगे। लेकिन हैरानी की बात ये थी कि इतनी भीड़ क्यों थी वहॉ पर। उत्सुकतावश मैं उसी तरफ बढ़ता चला गया।

थोड़ी ही देर में मैं उस भीड़ के पास पहुॅच गया। लेकिन भीड़ की वजह से समझ नहीं आया कि भीड़ के अंदर क्या चल रहा है? तभी मेरे कानों में ज़ोरदार चीख सुनाई पड़ी। ये किसी लड़की की चीख़ थी। ऐसा लग रहा था जैसे उसके साथ कोई ज़ोर ज़बरदस्ती की जा रही थी। मेरा रोम रोम खड़ा हो गया। किसी कमज़ोर लड़की पर ज़ोर ज़बरदस्ती? मुझसे ये सहा न गया। मैं एकदम से उस भीड़ का हिस्सा बने लोगों को खींच कर दूर हटाने लगा। बड़ी मुश्किल से मैं उन लोगों के बीच से निकलते हुए अंदर की तरफ पहुॅचा। अंदर का दृष्य ऐसा था कि मेरा दिमाग़ खराब हो गया।

अंदर कोई लड़का किसी लड़की के ऊपर चढ़ा हुआ था। नीचे पड़ी लड़की बुरी तरह रोते हुए छटपटा रही थी और चीख रही थी। वो लड़का उस लड़की के कपड़े फाड़ने पर तुला हुआ था। उसके चारो तरफ खड़े कुछ लड़के हॅस रहे थे। मुझे लड़की का चेहरा नज़र नहीं आ रहा था। मगर ये दृष्य देख कर मेरे अंदर गुस्से की आग धधक उठी।

मैने ज़ोर से एक लात उस लड़के के पेट के बगल में मारी। वो उस लड़की से हट कर तथा लहराते हुए भीड़ के पास गिरा। चारो तरफ फैली हुई भीड़ एकदम से छितर बितर हो गई। मैने जिसे लात मारी थी उसके मुख से ज़ोरदार चीख निकल गई थी। मगर वह जल्दी से उठ कर मेरी तरफ पलटा।

" किसकी मौत आई है ?" वो लड़का गरजते हुए बोला __" किसकी इतनी हिम्मत हुई कि मुझे मारा ? गफूर खान पर हाथ उठाया ?"

" उस भीड़ की तरफ क्या देख रहा है ?" मैने कहा __" ये सब तो नामर्द हैं। नपुंषक लोंग हैं ये। सिर्फ तमाशा देखना जानते हैं। तुझे कुत्ते की तरह मारने वाला मर्द तो इधर खड़ा है। "

" तूने मुझे मारा ?" गफूर खान ने अजीब भाव से ऑखें नचाते हुए कहा __" तुझे पता है मैं कौन हूॅ ? अबे मेरे बारे में जान जाएगा न तो मूत निकल जाएगा तेरा , समझा क्या ?"

" चल बता फिर। " मैं उसकी तरफ बढ़ने लगा __" बता कौन है तू ? मैं भी तो देखूॅ कि

तेरे बारे में जान कर मेरा मूत निकलता है कि नहीं। चल बता जल्दी। "

" ये समझा रे इसे। " गफूर खान ने इधर उधर देखते हुए कहा __" इसे समझाओ रे कोई। ये साला गफूर खान को नहीं जानता। ओ रहमान समझा बे इसे कि मैं कौन हूॅ ? इसे बता कि मेरा बाप कौन है ?"

" क्यों तेरे क्या बहुत सारे बाप हैं जो ये बोल रहा है कि तेरा बाप कौन है ?" मैं उसके करीब पहुॅच गया था। झपट कर उसकी गर्दन दबोच ली मैने। अपनी गर्दन दबोचे जाने पर वह छटपटाने लगा। मुझ पर अपने दोनो हाथो से वार करने लगा।

" ओए खड़े क्या हो सालो। " उसने तिरछी नज़र से अपने साथियों की तरफ देखते हुए कहा __" मारो इसे। इसने मुझ पर हाथ उठाया है। इसका काम तमाम करना ही पड़ेगा अब। "

चारो तरफ खड़े उसके साथी एक साथ मेरी तरफ दौड़ पड़े। मैंने गफूर खान की गर्दन को छोंड़ कर एक पंच उसकी नॉक पर ठोंक दिया। वह बुरी तरह चीखते हुए जमीन पर गिर गया। इधर चारो तरफ से जैसे ही उसके साथी मेरे पास आए तो मैं एकदम से पोजीशन में आ गया। जैसे ही एक मेरी तरफ बढ़ा मैने घूम कर बैक किक उसके चेहरे पर रसीद कर दी। वह उलट कर धड़ाम से गिरा। दूसरे के हाथ में मुझे चाकू नजर आया। उसने चाकू वाला हाथ घुमा दिया मुझ पर। मैने बाएॅ हाथ से उसके उस वार को रोंका और दहिने हाथ से एक मुक्का उसकी नॉक में जड़ दिया। उसके नाक से भल्ल भल्ल करके खून बहने लगा। बुरी तरह चीखते हुए वह भी लहराते हुए गिर गया। मैं तुरंत पलटा और जल्दी से नीचे झुक भी गया। अगर नहीं झुकता तो तीसरे वाले का हॉकी का डंडा सीधा मेरे सिर पर लगता। मगर मैं ऐन वक्त पर झुक गया था। हॉकी का वार जैसे ही मेरे सिर के ऊपर से निकल चुका तो मैं सीधा होकर उछलते हुए उसकी पीठ पर एक किक जमा दी। वह मुह के बल जमीन चाटने लगा। फिर तो जैसे वहॉ पर उन सबकी चीखों का शोर गूॅजने लगा। कुछ ही देर में गफूर खान के सभी साथी जमीन पर पड़े बुरी तरह कराह रहे थे। मैं चलते हुए गफूर खान के पास गया और झुक कर उसका कालर पकड़ कर उठा लिया।

" अब एक बात मेरी भी सुन तू। " मैने ठंडे स्वर में कहा __" तू चाहे यमराज का भी बेटा होगा न तब भी मैं तुझे ऐसे ही धोऊॅगा। इस लिए आज के बाद किसी लड़की के साथ कुछ बुरा करने की सोचना भी मत। अब दफा हो जा यहॉ से। आज के लिए इतना काफी है मगर दूसरी बार तू सोच भी नहीं सकता कि मैं तेरा और तेरे इन साथियों का क्या हाल करू गा। "

गफूर खान के चेहरे पर डर दिखाई दिया मुझे। वो मेरे छोंड़ते ही वहॉ से भाग लिया। उसके पीछे उसके सभी साथी भी भाग लिए। कुछ दूर जाकर गफूर खान रुका और फिर पलट कर बोला__"ये तूने ठीक नहीं किया। इसका अंजाम तो तुझे भुगतना ही पड़ेगा।"

" अबे जा। " मैं दौड़ा उसकी तरफ तो वो सरपट भागा बाहर की तरफ।

उन लोगों के जाने के बाद मैं वापस पलटा। मैने उस लड़की की तरफ देखा। वो दूसरी तरफ

सिर झुकाए खड़ी थी। उसका दुपट्टा मेरे सामने कुछ ही दूरी पर जमीन में पड़ा हुआ था। मैं आगे बढ़ कर उसका पीले रंग का दुपट्टा उठाया और उस लड़की की तरफ बढ़ गया।

" ये लीजिए मिस। " मैने पीछे से उसे उसका दुपट्टा देते हुए बोलाा __" आपका दुपट्टा। "

" जी धन्यवाद आपका। " उसने मेरे हाथ से दुपट्टा लियाा , और फिर मेरी तरफ पलटते हुए बोलीी ___" अगर आप नहीं आते तो वो न जाने मेरे साा .....। "

उसका वाक्य अधूरा रह गया। मुझ पर नज़र पड़ते ही उसकी ऑखे फैल गई। वह आश्चर्यचकित भाव से मुझे देखने लगी। मेरा भी हाल कुछ वैसा ही था। जैसे ही वह मेरी तरफ पलटी तो मेरी नज़र उसके चेहरे पर पड़ी। और मैं उसका चेहरा देख कर उछल ही पड़ा था।

" मा..नुषीी ???" मेरे मुख से लरजता हुआ स्वर निकला।

" विक्र .....म। " उसके मुख से अविश्वसनीय भाव से निकला।

" ओह सॉरी। " मैने एकदम से खुद को संभालतेे हुए कहाा __" आपका दुपट्टा। "

मैने उसे उसका दुपट्टा पकड़ाया और तुरंत पलट गया। मैं उसके पास रुकना नहीं चाहता था। मैं तेज तेज चलते हुए उस जगह से दूर चला गया। जबकि मानुषी बुत बनी वहीं पर खड़ी रह गई।

३७

उधर साक्षी अपने फार्महाउस पर पहुँची। हरिया काका से उसने उन चारों का हाल चाल पूछा और फिर अपने कमरे की तरफ बढ़ गई। कमरे में पहुँच कर उसने दरवाजा बंद किया और कमरे में एक तरफ रखी आलमारी की तरफ बढ़ी। आलमारी को खोल कर उसने उस बैग को निकाला जिसे वह रस्तोगी के फार्महाउस से लेकर आई थी। बैग को बेड पर रख कर उसने उसमें से कई सारी चीज़ें निकाल कर बेड पर रखा।

कुछ फोटोग्राफ्स थे उसमें, कुछ लेटर्स और कई सारी पेनड्राइव्स। साक्षी ने उठ कर आलमारी से अपना लेपटॉप निकाला। उसे ऑन किया। कुछ देर बाद जब वह ऑन हो गया दिया तो साक्षी ने उसमें एक पेनड्राइव लगाया। कुछ ही पल में लेपटॉप की स्क्रीन पर पेनड्राइव को ओपेन करने का ऑप्शन आया। साक्षी ने उस पर क्लिक किया। पर भर में ही स्क्रीन पर उसे बहुत सारी फोटोज और वीडियोज दिखने लगी।

फोटोज देख कर साक्षी का दिमाग़ खराब होने लगा। वो सारी फोटो न्यूड रूप में कई सारी लड़कियों की थी। साक्षी उन लड़कियों को पहचानती तो नहीं थी लेकिन फोटो में उन लड़कियों के पोज से उसे पता चल रहा था कि इन लड़कियों की मर्ज़ी से ही ये फोटोज खींचे गए थे। साक्षी के चेहरे पर उन लड़कियों के प्रति नफ़रत और घ्रणा के भाव उभर आए।

उसके बाद उसने एक वीडियो पर क्लिक किया। क्लिक करते ही वो वीडियो चालू हो गई। इस वीडियो में जो लड़का था वह अनिकेत था। वो किसी लड़की के साथ सहवास कर रहा था। लड़की अपनी दोनो टॉगों को कैंची शक्ल देकर अनिकेत की कमर पर जकड़ा हुआ था। साक्षी ने फौरन ही वीडियो को बंद कर दिया और दूसरी वीडियो को ओपेन किया। इस वीडियो में अलोक लड़की की योनी चाट रहा था। साक्षी ने तुरंत ही वीडियो बंद कर दिया। उसके अंदर गुस्सा बढ़ने लगा था।

एक एक करके साक्षी ने सारे वीडियो देख लिए। वो सारे वीडियो इन चारो लड़कों के ही थे जो अलग अलग लड़कियों के साथ बनाए गए थे। साक्षी ने लेपटॉप से पेनड्राइव निकाल कर अलग साइड पर रखा और दूसरा पेनड्राइव लेपटॉप पर लगा दिया। कुछ ही देर में उसने देखा कि इस पेनड्राइव में भी यही चारो लड़के किसी न किसी लड़की के साथ सहवास कर रहे थे। साक्षी ने उस पेनड्राइव को भी अलग रख दिया। इसी तरह साक्षी एक एक पेनड्राइव को लेपटॉप पर लगा कर देखती रही। कुछ पेनड्राइव्स में उसने देखा कि इन चारों लड़कों ने लड़कियों को उनकी बेहोशी में उनके सारे कपड़े उतारे और फिर उनके साथ अलग अलग पोजीशन में सहवास किया था। साक्षी समझ सकती थी कि इन लड़कियों के साथ इन लोगों ने धोखे से ये सब किया था। ज्यादातर पेनड्राइव्स में इन लड़कों के ही वीडियोज थे।

साक्षी ने एक और पेनड्राइव लेपटॉप पर लगाया। इस पेनड्राइव में कई फोल्डर बने हुए थे। जिन पर नाम डाला हुआ था। एक फोल्डर पर लिखा था "डैडी"। साक्षी ने तुरंत ही इस फोल्डर

को ओपेन किया। स्क्रीन पर कई सारे वीडियोज आ गए। एक वीडियो पर क्लिक किया साक्षी ने। क्लिक करते ही वीडियो चालू हो गई। वीडियो में विवेक का बाप रजतकुमार रस्तोगी किसी लड़की के साथ सहवास कर रहा था। ये वीडियो सिर्फ एक ही एंगल से लिया गया था। मतलब साफ था कि कहीं पर वीडियो कैमरा छुपाया गया था और रजतकुमार रस्तोगी को इस बात का पता ही नहीं था। वरना वो अपनी ऐसी वीडियो बनाने की सोचता भी नहीं।

साक्षी ने फौरन ही वो वीडियो कॉपी कर एक अलग से फोल्डर बना कर उसमें डाल दिया। उसके बाद साक्षी ने एक एक करके सभी वीडियो देखे। सभी वीडियों में रजतकुमार रस्तोगी लड़की के साथ सहवास कर रहा था। साक्षी ने दूसरा फोल्डर खोला। उसमें भी वीडियोज थे। साक्षी समझ गई कि ये उन लोगों के काले कारनामों के वीडियोज हैं जिनका संबंध रजतकुमार रस्तोगी से है।

उन चारो लड़कों बापों के वीडियोज भी इसमें थे। साक्षी के लिए ये काफी मसाला था रजतकुमार रस्तोगी को काबू में करने के लिए। उसने उन चारो लड़कों के बापों का एक एक वीडियो अपने लैपटॉप में बनाए गए उस फोल्डर में डाल लिया।

सारे सामान को वापस बैग में भर कर उसने उस बैग को वापस आलमारी में रख कर आलमारी को लॉक कर दिया। इसके बाद वह पलटी और एक तरफ रखे उस छोटे से थैले को उठाया जिसमें आज का खरीदा हुआ मोबाइल फोन और सिम था। उसने थैले से फोन कि डिब्बा निकाला और उसे खोलने लगी। मोबाइल निकाल कर उसने मोबाइल के चार्जर को भी निकाला। चार्जर में एक अलग से केबल थी। उसने उस केबल को मोबाइल में लगाया और दूसरा सिरा लैपटॉप में। तुरंत ही लैपटॉप की स्क्रीन पर एक ऑप्शन आया। मोबाइल की स्क्रीन पर भी शो हुआ। साक्षी ने सेटिंग सही की और फिर उन वीडियोज को कॉपी कर मोबाइल के स्टोरेज पर पेस्ट कर दिया। चारो वीडियोज कुछ ही देर में मोबाइल में अपलोड हो गई।

इसके बाद साक्षी ने केबल निकाल कर वापस मोबाइल के डिब्बे पर रख दिया। एक नज़र उसने मोबाइल की बैटरी पर डाली तो पता चला कि मोबाइल पर अभी २७% बैटरी है। साक्षी ने फौरन ही चार्जर निकाल कर मोबाइल फोन को चार्जिंग पर लगा दिया। इसके बाद वह कमरे का दरवाजा खोल कर बाहर निकल गई।

बाहर आकर उसने काकी से काका को बुलवाया। थोड़ी ही देर में हरिया काका साक्षी के पास आ गया।

" का बात है बिटिया ?" काका ने कहा _" ऊ केशरमाँ ने हमसे कहा कि तुम हमका बुलाई हो। "

" हॉ काका। " साक्षी ने कहा __" मैने सोचा कि एक नज़र मैं भी देख लूँ उन चारो पिल्लों को। वैसे उन सबकी खातिरदारी में कोई कमी तो नहीं की न आपने ?"

" अइसन होई सकत है का बिटिया ?" हरिया काका ने अपनी बड़ी बड़ी मूँछों पर ताव देते हुए कहा __" तुम्हरे हर आदेश का हम बहुतै अच्छी तरह से पालन किया हूँ। ऊ ससुरन केर अइसन खातिरदारी किया हूँ कि ससुरन केर नानी का नानी केर नानी भी याद आ गई रहे। "

" अगर ऐसी बात है तो बहुत अच्छा किया है आपने। " साक्षी ने कहा __" उनकी खातिरदारी करने की जिम्मेदारी आपकी है। उनकी खातिरदारी के लिए आप शंकर काका को भी बुला लीजिएगा। "

" अरे ना बिटिया। " हरिया काका ने झट से कहा __" ऊ ससुरे शंकरवा केर कौनव जरूरत ना है। हम खुदै काफी हूँ ऊ ससुरन केर खातिरदारी करैं केर खातिर। ऊ का है ना बिटिया ऊ शंकरवा से ई काम होई नहीं सकत है। ई ता हम हूँ जो यतनी अच्छी तरह से खातिरदारी कर सकत हूँ। "

" ओह ऐसी बात है क्या ?" साक्षी मुस्कुराई।

" अउर नहीं ता का। " काका ने सीना तान कर कहा __" हम ता ई काम मा बहुतै एकसपरट हूँ बिटिया। "

" काका वो एकसपरट नहीं बल्कि एक्सपर्ट होता है। " साक्षी ने हँसते हुए कहा।

" हाँ हाँ ऊहै बिटिया। " हरिया काका ने झेंपते हुए कहा __" ऊहै एक्सपरट हूँ। "

" अच्छा चलिए अब। " साक्षी ने कहा __" मैं भी तो देखूँ कि आपने कैसी खातिरदारी की है उन लोगों की ?"

" बिलकुल चला बिटिया। " काका ने बड़े ही आत्मविश्वास के साथ कहा __" ऊ लोगन का देख के तुम्हरे समझ मा जरूर आ जई कि हम खातिरदारी करैं मा केतना एकसपरट हूँ हाँ। "

साक्षी, काका की बात पर मुस्कुराती हुई तहखाने में पहुँची। तहखाने का नज़ारा पहले की अपेक्षा ज़रा अलग था इस वक्त। उन चारों की हालत बहुत ख़राब थी। उन लोगों से ठीक से खड़े नहीं हुआ जा रहा था। सबसे ज्यादा विवेक रस्तोगी की हालत खराब थी। वह बिलकुल बेजान सा जान पड़ता था। बाकी तीनों उससे कुछ बेहतर थे। उन सभी की गर्दनें नीचे झुकी हुई थी। जबकि उनके सामने वाली दीवार पर बँधे दोनो गार्ड्स की हालत खराब तो थी पर उन चारो जैसी दयनीय नहीं थी। इसकी वजह ये थी कि हरिया या साक्षी ने उन पर किसी भी तरह से हाथ नहीं उठाया था। वो तो बस बँधे हुए थे।

" काका एक बात समझ में नहीं आई। " साक्षी ने उन चारों को ध्यान से देखते हुए कहा _" इन चारों में से सबसे ज्यादा इस मंत्री के हरामी बेटे की हालत खराब क्यों हैं जबकि बाकी ये तीनों इससे तो ठीक ठाक ही नज़र आ रहे हैं। "

साक्षी की ये बात सुन कर हरिया काका बुरी तरह हड़बड़ा गया। उससे तुरंत कुछ कहते न

बना। भला वह कैसे बताता साक्षी को कि उसने विवेक रस्तोगी की नितंब मार कर ऐसी बुरी हालत की थी जबकि बाकी वो तीनो तो उसे देख देख कर ही अपनी हालत ख़राब कर बैठे थे। हरिया ने उन तीनों की अभी नितंब नहीं मारी थी। उसने सोचा था कि एक दिन में एक की ही तबीयत से नितंब मारेगा।

" ऊ का है न बिटिया। " हरिया काका ने झट से कहा __" हम ई सोचत रहे कि ई ससुरन केर एक एक करके खातिरदारी करू गा। कल ता हम ई ससुरे की खातिरदारी किया हूँ अउर आज दुसरे केर नम्बर हाय। "

" ओह तो ये बात है। " साक्षी ने कहा _" चलो ठीक है जैसे आपको ठीक लगे वैसा खातिरदारी करिये। बस इतना ज़रूर ध्यान दीजिएगा कि इनमें से कोई मर न जाए। "

" चिन्ता ना करा बिटिया। " काका ने कहा _" ई ससुरे बिना हमरी इजाजत के मर नाहीं सकत। जब तक हम इन सब केर पेल न लूँगा तब तक ई कउनव ससुरे मर नाहीं सकत हैं। "

" क्या मतलब ?" साक्षी को समझ न आया।

" अरे हम ई कह रहा हूँ बिटिया कि जब तक हम ई ससुरन केर अच्छे से खातिरदारी न कर लूगाँ। " काका ने बात को संभालते हुए कहा __" तब तक ई ससुरे कउनव नाहीं मर सकत। काहे से के ई हमरी ख्वाईश केर बात है हॉ। "

" ख्वाहिश के बात ?" साक्षी चौंकी __" इसमें आपकी कौन सी ख्वाहिश की बात है काका ?"

" अरे हमरा मतबल है बिटिया कि खातिरदारी करैं केर ख्वाईश वाली बात। " काका मन ही मन खुद पर गुस्साते हुए और खिसियाते हुए बोला __" ई ता तुमको भी पता है बिटिया कि हमका केहू केर खातिरदारी करैं का केतना शौक है। उहै बात हम करथैं। "

तहखाने में इन लोगों की आवाज़ गूँजते ही उन चारों को होश आया। दरअसल वो उस हालत में ही ऊँघ रहे थे। इन लोगों की आवाज़ कॉनों में टकराने से उन लोगों को होश सा आया था। उन चारों ने सिर उठा कर साक्षी और काका की तरफ देखा। काका को देख कर वो चारो बुरी तरह घबरा गए। लेकिन जैसे ही उनकी नज़र साक्षी पर पड़ी तो उनमें उम्मीद की कोई आसा नज़र आई।

" इ इंस्पेक्टर इंस्पेक्टर। " अलोक ने मरी मरी सी आवाज़ में चिल्लाते हुए कहा __" हमें यहॉ से निकालो प्लीज़। हमें छोंड़ दो इंस्पेक्टर , हमे यहॉ जाने दो वरना ये आदमी हमारी जान ले लेगा। "

" हॉ हॉ इंस्पेक्टर हमे जल्दी से यहॉ से निकालो। ये आदमी बहुत खतरनॉक है। " अनिकेत बासु गिड़गिड़ा उठा __" इसने विवेक की बहुत बुरी हालत कर दी है। प्लीज़ इंस्पेक्टर हमें इस आदमी से बचा लो। हम तुम्हारे आगे हाथ जोड़ते हैं। तुम्हारे पैर पड़ते हैं। हमें छोड़ दो प्लीज़। "

" अबे चुप। " हरिया काका इस तरह उन चारों की तरफ देख कर गरजा था जैसे कोई शेर दहाड़ा हो __" हम कहता हूँ चुप कर ससुरे वरना हमका ता जान गए हो न। ससुरे टेंटुआ दबा दूगा हम तुम सबकेर। "

हरिया की दहाड़ का तुरंत असर हुआ। उन चारों की बोलती इस तरह बंद हो गई जैसे बिजली के स्विच से बटन बंद कर देने पर बजते हुए टेपरिकार्डर का बजना बंद हो जाता है। मगर वो चुप ज़रूर हो गए थे मगर उन सबकी ऑखों में करुण याचना और विनती करने जैसे भाव स्पष्टरूप से दिख रहे थे।

" तुम लोगों के लिए अब कोई रहम नहीं हो सकता समझे ?" साक्षी ने कठोरता से कहा __" तुम लोगों ने जो पाप किया है और जो भी अपराध किया उसके लिए तुम सबको अब यहीं पल पल मरना है। "

" हमें मारना ही है तो एक ही बार में हमारी जान ले लो इंस्पेक्टर। " निखिल ने कहा _" पर इस आदमी के हवाले मत करो हमे। ये आदमी बहुत बेरहम है। इसने विवेक के साथ बहुत बुरा किया है। "

" चिन्ता मत करो। " साक्षी ने कहा __" अभी इससे भी बुरा होगा तुम सबके साथ। दूसरों की बहन बेटियों की इज्ज़त लूटने का बहुत शौक है न तुम लोगों को तो अब खुद भी भुगतो। तुम सबका वो हाल होगा जिसकी कभी किसी ने कल्पना भी न की होगी। "

" ई लोगन का का करना है बिटिया ?" काका ने उन दो गार्डों की तरफ देखते हुए कहा _" हमका लागत है ई ससुरे फालतू मा ईहॉ कस्ट उठाय रहे हैं। "

" इन दोनो को छोंड़ नहीं सकते हैं। " साक्षी ने कहा __" क्योंकि ये दोनो हमारा काम खराब कर देंगे। इस लिए इन लोगों को यहीं पर रहने दो। बस इन पर हाथ नहीं उठाना। इन्होने कोई अपराध नहीं किया है। "

" हम किसी से कुछ नहीं कहेंगे बेटी। " एक गार्ड ने कहा __" हम अपने बाल बच्चों की कसम खाकर कहते हैं कि हम किसी से भी आपके और इन लोगों के बारे में कुछ नहीं बताएॅगे। हम इस शहर से ही बहुत दूर चले जाएॅगे। ताकि इन लोगों के बाप हमें ढूँढ़ ही न पाएॅ। "

" हम आप दोनो पर कैसे यकीन करें ?" साक्षी ने कहा __" आप खुद सोचिए कि अगर आप हमारी जगह होते तो क्या करते ?"

" हम सब समझते हैं बिटिया। " दूसरे गार्ड ने कहा __" मगर यकीन तो करना ही पड़ेगा न बिटिया। क्योंकि हम अगर चाहें भी तो यकीन नहीं दिला सकते। हमारे पास कोई सबूत भी नहीं है जिसकी वजह से हम आपको यकीन दिला सकें। पर आपको सोचना चाहिए बेटी कि कोई बाप अपने बाल बच्चों की झूँठी क़सम नहीं खाया करता। अधर्मी से अधर्मी आदमी भी

अपनी औलाद की झूठी कसम नहीं खाता। हम तो गरीब आदमी है बेटी। दो पैसे के लिए इनके यहॉ काम करते थे। मंत्री ने हमारे हाथ में बंदूखें पकड़ा दी। हम तो उन बंदूखों को चलाना भी नहीं जानते थे। "

दोनो गार्डों की बातें सुन कर साक्षी और हरिया सोच में पड़ गए। वो दोनो ही इन्हें सच्चे लग रहे थे। उनकी बातों में सच्चाई की झलक थी। मगर हालात ऐसे थे कि उन्हें छोंड़ना भी नीति के खिलाफ़ था। मगर फिर भी साक्षी ने ये सोच कर उनको छोंड़ देने का फैसला लिया कि जिनसे ये लोग बताएॅगे वो लोग तो खुद ही बहुत जल्द इसी तहखाने में आने वाले हैं।

ठीक है।" साक्षी ने कहा__"हम तुम दोनो को छोंड़ रहे हैं। सिर्फ इस लिए कि तुम दोनों ने अपने बच्चों की कसम खा कर कहा हैं तुम लोग यहॉ के बारे में या इन चारों के बारे में किसी से कुछ नहीं कहोगे।"

" ओह धन्यवाद बेटी। " गार्ड ने खुश होते हुए कहा __" हम सच कह रहे हैं हम किसी से कुछ नहीं कहेंगे। हम आज ही अपने गाव अपने प्रदेश चले जाएॅगे। काम ही तो करना है कहीं भी कर लेंगे। "

" काका इन दोनो को छोंड दो। " साक्षी ने हरिया से कहा __" और यहॉ से इन्हें ले जाकर शंकर काका के पास ले जाओ। काका से कहना कि इन्हें नहला धुला कर तथा अच्छे से खाना खिलाकर रेलवे स्टेशन ले जाएॅ और इनके राज्य की तरफ जाने वाली ट्रेन में बैठा आएॅ। "

" ठीक है बिटिया। " हरिया ने कहा __" हम अभी इनका छोंड़ देता हूॅ। " कहने के साथ ही हरिया आगे बढ़ा और फिर कुछ ही देर में उन दोनो को रस्सियों के बंधन से मुक्त कर दिया। उन दोनो के हाथ अकड़ से गए थे। नीचे लाने में थोड़ी तक़लीफ़ हुई।

" बेटी एक चीज़ की इजाज़त चाहते हम। " एक गार्ड ने साक्षी से कहा था।

" कहो क्या चाहते हो ?" साक्षी ने कहा।

" इन चारों को एक एक थप्पड़ लगाना चाहते हैं हम। " उस गार्ड के लहजे में एकाएक ही आक्रोश दिखा __" ये अधर्मी व दुराचारी लोग हैं। इन लोगों की वजह से सच में कितनी ही मासूम लड़कियों की जिदगी बरबाद हो गई। "

साक्षी ने उन्हें इजाज़त दे दी। इजाज़त मिलते ही दोनो उन चारों की तरफ बढ़े और फिर खींच कर एक थप्पड़ उन चारों के गालों पर रसीद कर दिया। चारों के हलक से चीखें निकल गई। ऑखों से पानी छलक पड़ा।

" धन्यवाद बेटी। " दूसरे गार्ड ने कहा _" इन लोगों के साथ बदतर से बदतर सुलूक करना। हरिया भाई , आप बिलकुल ठीक कर रहे हैं। "

इसके बाद हरिया उन दोनो को लेकर तहखाने से बाहर निकल गया। साक्षी खुद भी तहखाने से बाहर आ गई थी। तहखाने का गेट बंद कर वो अपने कमरे की तरफ बढ़ गई।

३८

मानुषी को उसका दुपट्टा पकड़ा कर मैं एक झटके से पलट कर कॉलेज की कंटीन की तरफ बढ़ता चला गया था। इस वक्त मेरे मन में तूफान चालू था। मैं सोच भी नहीं सकता था कि आज कॉलेज में मानुषी से मेरी इस तरह से मुलाक़ात होगी। मानुषी को देख कर मेरी ऑखों के सामने फिर से पिछली ज़िंदगी की ढेर सारी बातें किसी चलचित्र की मानिन्द दिखती चली गई थी। जिनमें प्यार था, घ्रणा थी, धोखा था। मेरा दिलो दिमाग़ एकदम से किसी भवॅर में फसता हुआ महसूस हुआ मुझे।

कंटीन में पहुॅच कर मैं एक कुर्सी पर चुपचाप बैठ गया और अपनी ऑखें बंद कर ली। मुझे अपने अंदर बहुत बेचैनी महसूस हो रही थी। मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। मेरा दिल रह रह कर दुखी होता जा रहा था। मेरी ऑखों में ऑसुओं का सैलाब सा उमड़ता हुआ लगा मुझे। मैने अपने अंदर के जज़्बात रूपी तूफान को बड़ी मुश्किल से रोंका हुआ था। मैं नहीं जानता कि मेरे वहॉ से चले आने के बाद मानुषी पर क्या प्रतिक्रिया हुई।

मुझे नहीं पता कि मैं उस हालत में कंटीन पर कितनी देर तक बैठा रहा। होश तब आया जब किसी ने पीछे से मेरी पीठ पर ज़बरदस्त तरीके से वार किया। उस वार से मैं कुर्सी समेत जमीन पर मुह के बल पछाड़ गया। अभी मैं उठ भी न पाया था कि मेरे पेट पर किसी के जूतों की ज़ोरदार ठोकर लगी। मैं उछलते हुए दूर जाकर गिरा।

मगर गिरते ही उछल कर खड़ा हो गया मैं। मेरी नज़र मेरे सामने से आते एक हट्टे कट्टे आदमी पर पड़ी। उसकी ब्वाडी किसी भी मामले में किसी रेसलर से कम न थी। मुझे समझ न आया कि ये कौन है, कहॉ से आया है और मुझ पर इस तरह अटैक क्यों किये जा रहा है।

" हीरो बनने का बहुत शौक है न तुझे ?" उस आदमी ने अजीब भाव से कहा __" साले मेरे छोटे भाई पर हाथ उठाया तूने। तुझे इसका अंजाम भुगतना ही पड़ेगा। ऐसी ऐसी जगह से तेरी हड्डियॉ तोड़ूॅगा कि दुनियॉ का कोई डॉक्टर तेरी हड्डियों को जोड़ नहीं पाएगा। "

" ओह तो तुम उस हराम के पिल्ले के बड़े भाई हो। " मैने कहा __" और मुझसे अपने छोटे भाई का बदला लेने आए हो। अच्छी बात है , लेना भी चाहिए। मगर , मेरी एक फरमाइश है भाई। "

" क्या बक रहा है तू ?" वो आदमी सख्ती से गुर्राया __" कैसी फरमाइश ?"

" मेरी फरमाइश ये है कि एक एक करके आने का कोई मतलब नहीं है। " मैने कहा _" ऐसे में सिर्फ वक्त की बर्बादी होगी। इस लिए एक काम करो। तुम्हारे पास जितने भी आदमी हों उन सबको यहीं पर बुला लो। उसके बाद मुकाबला करें तो थोड़ा मज़ा भी आए। "

" साले बहुत बोलता है तू। " वो आदमी मेरी तरफ बढ़ते हुए बोला __" तेरे लिए मैं ही काफी हूँ। अभी तेरी हड्डियों का चूरमा बनाता हूँ रुक। "

वो मेरे पास आते ही मुझ पर अपनी बलिस्ट भुजा का वार कर दिया। मैं तो पहले से ही चौकन्ना हो गया था और जानता भी था कि अगर इसका एक वार भी मुझे लग गया तो मेरी हालत खराब हो जानी थी। ख़ैर, जैसे ही उसने तेजी से अपना दाहिना हाथ घुमाया, मैं फौरन ही नीचे झुक गया। उसका हाथ मेरे ऊपर से निकल गया। उसके सम्हलने से पहले ही मैने उछल कर एक फ्लाइंग किक उसकी कनपटी पर जड़ दी। वो धड़ाम से जमीन पर गिरा। मुझे हैरानी हुई मगर मुझे उसके गिरने का कारण समझ आ गया। गुस्से में यही होता है। मुझे मारने के लिए जब उसने गुस्से से अपना हाथ घुमाया था तो मैं झुक गया था। उसका हाथ जैसे ही मेरे सिर से निकला वैसे ही उछल कर मैने ज़ोरदार फ्लाइंग किक उसकी कनपटी पर जड़ी थी। वो सम्हल नहीं पाया था। अपने ही प्रहार के वेग में वह मेरे प्रहार के लगते ही धड़ाम से गिरा था।

उसके गिरते ही मैंने उछल कर उसके ऊपर जंप मारी मगर वह पलट गया। जैसे ही मेरे दोनो पैर जमीन पर आए उसकी एक टॉग घूम गई और मेरी एक टॉग पर लगी। नतीजा ये हुआ कि मैं पिछवाड़े के बल गिर गया मगर पल भर में ही उछल कर खड़ा भी हो गया। और सच कहूँ तो ये मेरा भाग्य ही अच्छा था कि मैं उछल कर खड़ा हो गया था। क्योंकि जैसे ही मैं गिरा था वैसे ही उसने तेज़ी अपनी दाहिनी कोहनी का वार मेरी छाती की तरफ किया था। मगर मेरे उछल कर खड़े हो जाने पर उसका वो वार जमीन पर तेजी से लगा। कोहनी का तीव्र वार जब पक्की ज़मीन से टकराया तो उसके हलक से चीख निकल गई। अपनी कोहनी को दूसरे हाथ से जल्दी जल्दी सहलाने लगा था वह। ऐसा अवसर छोंड़ना निहायत ही बेवकूफी थी। मैने अपनी दाहिनी टॉग पूरी शक्ति से घुमा दी। जो कि उसकी कनपटी पर लगी। वो दूसरी कनपटी के बल ज़मीर पर गिर गया। उसका सिर ज़ोर से ज़मीन से टकराया था। उसके मुख से घुटी घुटी सी चीख़ निकल गई। निश्चित ही उसकी ऑखों के सामने कुछ पल के लिए अंधेरा छा गया होगा।

अब मैने रुकना मुनासिब न समझा। मैं एकदम से पिल पड़ा उस पर। लात घूँसों से उसकी जमकर ठोकाई की मैने। वो बचने के लिए इधर उधर हाथ पैर मार रहा था। जबकि मैं बिजली की स्पीड से उस पर वार किये जा रहा था। अचानक ही उसके हाथ में मेरी टॉग आ गई। उसने मेरी उस टॉग को पकड़ कर पूरी शक्ति से उछाल दिया। मैं हवा में लहराते हुए एक टेबल पर गिरा। मेरी पीठ पर टेबल का किनारा बड़ी तेज़ी से लगा। मैं चाह कर भी उस दर्द से निकलने वाली चीख को रोंक न सका। तभी मेरी नज़र सामने पड़ी और मैं पलक झपकते ही दर्द को बरदाश्त करके टेबल से हट गया। नतीजा ये हुआ कि मेरे हटते ही टेबल पर कुर्सी का तेज़ प्रहार पड़ा और टेबल व कुर्सी दोनो ही टूटती चली गई।

इधर प्रहार करने के बाद वो आदमी सम्हल भी न पाया था कि एक कुर्सी उठा कर मैने बड़ी तेज़ी से उसके सिर पर वार कर दिया। वार ज़बरदस्त था। हाथ में टूटी हुई कुर्सी लिए वह सामने टूटी हुई ही टेबल पर मुह के बल गिर गया। सिर से भल्ल भल्ल करके खून बहने लगा

था उसके। मुझे समझते देर न लगी कि उसका सिर फट गया है। वह बुरी तरह चीखा था। कंटीन में उसकी चीख गूँज गई थी। लेकिन मैं रुका नहीं। मैंने वही कुर्सी एक बार फिर से अपने सिर से ऊपर तक उठा कर उस पर पटक दी। इस बार उसकी पीठ पर कुर्सी लगी थी। लकड़ी की कुर्सी थी वो। उसके दो पाए चटाक से टूट गए। वो आदमी धड़ाम से वहीं पर पसर गया।

अभी मैं उस पर फिर से वार करने ही वाला था कि मैंने देखा कि वो आदमी एकदम से सिथिल पड़ गया था। मैने अपने हाथ में ली हुई कुर्सी फेंक दी। झपट कर मैं उसके पर पहुँचा। वो बुरी तरह खून में नहाये जा रहा था। उसके मुख से कराहटें निकल रही थी। मुझे लगा साला कहीं मर ही न जाए। वरना पंगा हो जाएगा।

मैने देखा उसकी ऑखें बंद होती जा रही थी। मैं ये देख कर बुरी तरह घबरा गया। इधर उधर देखा तो चौंक गया। पूरी कंटीन में लड़के लड़कियों की भीड़ जमा थी। सब लोग फटी फटी ऑखों से देखे जा रहे थे।

" भाईऽऽऽ। " तभी उस भीड़ से गफूर खान चीखते हुए आयाा , बुरी तरह रोने लगा था वह __" ये क्या हो गया भाई तुम्हेंं ? उठो भाई , मेरी तरफ देखो ना भाई। "

" देखो इस तरह रोने से कुछ नहीं होगा समझे। " मैने कहाा __" इसे जल्दी से हॉस्पिटल ले जाना पड़ेगा वरना ये मर जाएगा। "

" तुमने मारा है मेरे भाई को तुमने। " गफूर खान ने बिफरे हुए लहजे में कहाा __" अगर मेरे भाई को कुछ भी हुआ तो आग लगा दूँगा मैं इस पूरे कॉलेज में। "

" देखो ये सब बातें तुम बाद में भी कर लेना भाई। " मैने उसके भाई की हालत को देखते हुए कहाा __" पहले एम्बूलेंस को बुलाओ। "

" एम्बूलेंस की ज़रूरत नहीं है। " गफूर खान ने रोते हुए कहाा __" मेरा भाई अपनी गाड़ी से आया था। बाहर खड़ी है। "

" ओह ठीक है फिर। " मैने कहाा __" इसे गाड़ी तक ले चलने में मेरी मदद करो। ये बहुत भारी है मैं अकेले इसे कैसे ले जाऊँगाा ?"

मेरे कहने पर गफूर खान ने अपने भाई को एक तरफ से पकड़ा, दूसरी तरफ से मैंने उसे पकड़ा। काफी मेहनत के बाद आखिर मैं और गफूर खान उसके भाई को गाड़ी तक ले आकर उसे कार की पिछली सीट पर लेटा दिया।

" कार की चाभी दो मुझे। " मैने गफूर खान से कहाा __" तुम अपने भाई को लेकर पीछे बैठ जाओ। मैं कार को जल्दी से हॉस्पिटल ले चलता हूँ। "

" पहले तो मेरे भाई को मार कर इस हालत में पहुँचा दिया और अब उसे हॉस्पिटल भी ले जा

रहे हो। " गफूर खान ने गुस्से मे कहा _" ये बहुत अच्छा कर रहे हो तुम , है न ? मगर याद रखना कि इसका हिसाब तुम्हें देना होगा। "

" हॉ ठीक है यार ले लेना हिसाब। " मैने उसके हाथ से चाभी खींचते हुए कहा __" पहले जो ज़रूरी है वो तो करने दो। "

मैं कार की ड्राइविंग सीट पर बैठ कर कार के इग्नीशन में चाभी लगाया और घुमाकर उसे स्टार्ट किया। मैने देखा कि कॉलेज के काफी सारे लड़के लड़कियॉ बाहर आ गए थे। उनमें एक चेहरा मानुषी का भी था। वह मुझे देखकर हैरान थी। मैने उससे नज़र हटाई और कार को एक झटके से आगे बढ़ा दिया।

ऑधी तूफान बनी कार बहुत जल्द हॉस्पिटल के सामने आकर खड़ी हो गई। मैं झट से गेट खोल कर बाहर आया। पिछला गेट खोल कर मैने गफूर खान को बाहर आने को कहा। मैने नज़र घुमा कर देखा तो दो लोग एक खाली स्ट्रेचर को लिए जा रहे थे। मैंने झट से उनको आवाज़ दी। वो मुड़ कर मेरी तरफ देखने लगे।

" अरे जल्दी स्ट्रेचर ले आओ। " मैने चिल्लाते हुए कहा __" इट्स अर्जेन्ट। "

मेरी बात सुनकर वो तुरंत ही हमारी तरफ दौड़ते हुए आए। हम चारों ने गफूर खान के भाई को सीट से निकाल कर स्ट्रेचर पर लिटाया। हॉस्पिटल वाले आदमी उसे उठा कर ले जाने लगे। मैं और गफूर खान भी उनके पीछे हो लिए।

कुछ ही देर में वो लोग गफूर के भाई को ओटी में ले गए। इधर गफूर खान ऑखों में ऑसू लिए हॉस्पिटल की गैलरी में इधर से उधर बेचैनी और परेशानी में टहलने लगा।

" उम्मीद है कि बहुत जल्द तुम्हारा भाई पहले के जैसा हो जाएगा। " मैने गफूर खान की तरफ देख कर कहा था।

" बात मत करो तुम मुझसे। " गफूर खान अजीब भाव से गुर्राया __" मेरे भाई की इस हालत के तुम ही जिम्मेदार हो। "

" देख भाई , ये जो कुछ भी हुआ है न उसका जिम्मेदार सिर्फ तू है समझा ?" मैने भी सख्त भाव से कहा __" तूने कॉलेज में उस लड़की की इज्ज़त पर हाथ डाला। इस लिए मैने उस लड़की की इज्ज़त बचाने के लिए तुझ पर हाथ उठाया। और तूने क्या किया ? तू गया तो अपने बड़े भाई को बुला लाया अपनी हार और अपनी मार का बदला लेने के लिए। इस लिए ये तो होना ही था। हम दोनो में से किसी एक के साथ तो ये होना ही था। वक्त और हालात की बात है। मेरा दॉव चल गया और मैने तेरे भाई की ये हालत बना दी। वरना कोई नहीं सोच सकता था कि तेरे उस मुस्टंडे भाई से मैं बचूॅगा। "

अभी गफूर खान कुछ बोलने ही वाला था कि सहसा हमारे पास डॉक्टर आ गया।

" देखिये सिर पर गहरी चोंट लगी है। " डाक्टर कह रहा थ◌ा __" सिर फट गया है जिसकी वजह से खून काफी मात्रा में निकल गया है। हमने ब्लड टेस्ट किया तो उनके ग्रुप का ब्लड हमारे हॉस्पिटल में इस वक्त अवायलेवल नहीं है। जबकि उनको बल्ड चढ़ाना बहुत ज़रूरी है। वरना उनकी जान भी जा सकती है। "

" डाक्टर आप मेरा खून ले लीजिए। " गफूर खान ने कह◌ा __" मगर मेरे भाई को बचा लीजिए प्लीज़। "

" ठीक है आइये। " डाक्टर ने कह◌ा __" मैं पहले आपके ब्लड का टेस्ट लूँगा अगर उनके ब्लड से मैच हो गया तो आपका ही ब्लड उनको चढ़ा देंगे। "

डाक्टर गफूर खान को लेकर चला गया। जबकि मैं परेशानी की हालत में आ गया था। मैं भगवान से दुआ करने लगा कि गफूर के भाई को कुछ न हो। थोड़ी देर में ही डाक्टर के साथ गफूर खान बाहर आ गया।

" क्या हुआ डाक्टर साहब ?" मैंने हैरानी से देखते हुए कह◌ा __" आप इसे बाहर क्यों ले आए ?"

" इनका ब्लड ग्रुप उनके ब्लड ग्रुप से मैच नहीं कर रहा है। " डाक्टर ने कह◌ा __" हमने फोन द्वारा दूसरे हॉस्पिटल ों में भी पता कर लिया है मगर इस वक्त यहाँ आस पास के किसी भी हॉस्पिटल में उस ग्रुप का ब्लड उपलब्ध नहीं है। "

" डाक्टर साहब मेरा ब्लड भी चेक कर लीजिए न। " मैने कह◌ा __" शायद मैच हो जाए। "

" ठीक है चलिए। " डाक्टर ने कह◌ा __" आपका भी देख लेते हैं। "

मैं डाक्टर के साथ चला गया। अंदर डाक्टर ने मेरा ब्लड टेस्ट किया और आश्चर्यजनक रूप से मेरा ब्लड मैच कर गया। डाक्टर और मैं दोनो ही खुश हो गए।

" ओह वैरी गुड यंगमैन। " डाक्टर ने कह◌ा _" ये तो कमाल हो गया। आपका ब्लड इनके ब्लड से मैच कर रहा है। "

" तो फिर देर किस बात की है डाक्टर ?" मैने कह◌ा __" जल्दी से इसको मेरा खून चढ़ा दीजिए। "

" ओह यस यंगमैन। " डाक्टर ने कह◌ा _" आइये मेरे साथ। "

मैं उस कमरे से निकल कर डाक्टर के साथ उस कमरे में गया जहाँ पर राना के भाई को बेड पर लिटाया गया था। वहाँ दो नर्सें मौजूद थी।

" अंकिता। " डाक्टर ने एक नर्स से कह◌ा __" इस यंगमैन का ब्लड ग्रुप इनके ग्रुप से मैच कर रहा है इस लिए फौरन प्रोसेस शुरू करो। "

उसके बाद मुझे भी राना के भाई के बगल वाले बेड पर लेटा दिया गया। मैंने भगवान का शुक्रिया अदा किया और अपनी ऑखें बंद कर ली। कुछ ही देर में मुझे अपने हाथ में सुई चुभती महसूस हुई।

लगभग दो घंटे बाद !

डाक्टर ने आकर बताया कि गफूर का भाई अब ठीक है। मेरे शरीर से खून की उचित मात्रा लेने के बाद मुझे डाक्टर ने बाहर भेज दिया था। मुझे कमज़ोरी का एहसास हो रहा था। मगर दिल में ये खुशी थी कि मेरे खून से गफूर के भाई की जान बच गई थी।

गफूर खान जो अब तक मुझसे चिढ़ा चिढ़ा सा था अब वह मुझसे बड़े सलीके से बात कर रहा था। उसने ये स्वीकार किया कि इस सबके लिए सच में वही जिम्मेदार था। डाक्टर ने गफूर खान के भाई के सिर पर टॉके लगा कर उस पर पट्टी कर दी थी।

मैं गफूर खान के साथ उस हॉस्पिटल में तब तक रहा जब तक कि उसके भाई को होश नहीं आ गया था। डाक्टर ने आकर बताया कि गफूर के भाई को होश आ चुका है तो हम दोनो खुशी खुशी उससे मिलने गए।

कमरे में पहुँच कर गफूर खान अपने भाई को ठीक ठाक देख कर बेहद खुश हुआ। मैं आगे बढ़ कर उसके भाई से बोला__"कैसे हो भाई?"

" अब तो ठीक हूँ। " उसने कहा __" मुझे डाक्टर ने बताया कि तुमने मुझे बचाने के लिए अपना खून मुझे दिया। ऐसा क्यों किया तुमने भाई ? भला क्या लगता था मैं तुम्हारा जो तुमने अपना खून देकर मुझे मरने से बचाया ?"

" कोई न कोई रिश्ता तो बन ही गया था हम दोनो के बीच में। " मैने कहा __" फिर चाहे वो दुश्मनी का रिश्ता ही क्यों न हो। सब जानते थे कि मैं तुम्हारे सामने एक पल के लिए भी टिक नहीं पाऊँगा मगर ये मेरी किस्मत थी कि मुझे कुछ नहीं हुआ बल्कि मैने खुद को कुछ होने से बचा लिया। मगर तुम्हारी किस्मत में ये सब होना था सो हो गया और मजे की बात देखो कि मेरे ही खून से तुम्हें जीवित भी बच जाना था। "

" सच कहा तुमने। " गफूर के बड़े भाई ने कहा __" ये किस्मत ही तो थी। मैने भी तो यही उम्मीद की थी कि दो मिनट के अंदर तुम्हारी हड्डियॉ तोड़ कर कॉलेज से चला जाऊँगा। मगर क्या पता था कि उल्टा मुझे ही इस हाल में पहुँच जाना होगा। मैं हैरान था कि एक मामूली सा लड़का मुझे इस तरह कैसे मात दे रहा था। मतलब साफ है कि तुम भी कम नहीं थे। "

" चलो छोड़ो उस बात को। " मैने कहा __" सबसे अच्छी बात ये है कि तुम सही सलामत हो भाई। "

" भाई इस सबका जिम्मेदार मैं हूँ। " गफूर खान ने दुखी भाव से कहा __" सारे फसाद की शुरुआत तो मैने ही की थी। मैं उस लड़की की रैगिंग कर रहा था। मेरी कुछ बातों से उस लड़की को गुस्सा आया और उसने मुझे सबके सामने थप्पड़ मार दिया था। उसके थप्पड़ मारने की वजह से ही मुझे गुस्सा आया हुआ था जिसकी वजह से मैं उसके साथ वो सब कर रहा था। तभी ये भाई आया और मुझे मारने लगा था। इससे मार और मात खा कर ही मैं तुम्हारे

पास आया था कि तुम इसे सबक सिखा कर मेरा बदला लो। मगर कुछ और ही हो गया भाई। "

" तुमने ग़लत किया और उस ग़लती में मुझे भी शामिल करवा लिया। " गफूर के भाई ने कहा _" इसका नतीजा ये तो होना ही था छोटे। कितनी बार तुझे समझाया है कि ऐसे काम मत किया कर बल्कि पढ़ाई किया कर। मगर तू तो पापा पर गया है न। कहॉ किसी की सुनोगे ?"

" अब से सिर्फ तुम्हारी ही बात सुनूँगा भाई कसम से। " गफूर ने कहा __" मैं वो सब ग़लत काम छोड़ दूँगा। "

" ये सब तो तुमने पहले भी जाने कितनी बार मुझसे कहा था छोटे। " गफूर के भाई ने कहा __" मगर क्या तुम कभी अपने फैसले पर अटल रहे ? नहीं न ? रह भी नहीं सकते छोटे। तुम बिलकुल पापा की तरह हो जैसे उन्हें अपने गुरूर में किसी की परवाह नहीं थी। उसी का नतीजा था कि आज हम बिना मॉ के हैं। तुम भी उनकी तरह ही हो छोटे। आज अगर मैं मर भी जाता तो तुम पर और पापा पर कोई असर नहीं होता। "

" नहीं भाई ऐसा मत कहो प्लीज। " गफूर रो पड़ा था , बोला __" मुझे याद है भाई कि आज तक तुमने कैसे मेरी मॉ बन कर मुझे पाला पोसा है। पापा ने तो कभी ध्यान भी नहीं दिया कि उनके बेटे किस हालें हैं। मैं आपकी कसम खा कर कहता हूँ भाई कि मैं अब से आपका एक अच्छा भाई बन कर दिखाऊँगा। "

" चल मान ली तेरी ये बात भी। " गफूर के भाई ने कहा __" और अगर सचमुच ऐसा हो गया तो मैं तहे दिल से तुम्हारा शुक्रगुजार हूँ दोस्त कि तुमने मेरी आज ये हालत कर दी। वरना भला कैसे मेरा भाई सही रास्ते पर चलने की बात करता। "

" बड़े बुजुर्ग कहते हैं कि जो कुछ भी होता है अच्छे के लिए ही होता है। " मैने मुस्कुराते हुए कहा __" हो सकता है ये जो कुछ भी हुआ आज वो इसी अच्छे के लिए हुआ हो। "

" हॉ दोस्त। " गफूर के भाई ने कहा __" आज से तुम मेरे सबसे अच्छे दोस्त हो और मेरे इस नालायक भाई के भी। इसे अपने साथ ही रखना। और अगर कहीं ग़लती करे तो वहीं पर इसकी धुनाई भी कर देना। मैं कुछ नहीं बोलूँगा। "

" भाई ये आप क्या कह रहे हैं ?" गफूर खान की ऑखें फैल गईं __" मुझे इसके साथ रहने को कह रहे हैं ? ये हर रोज़ मेरी कुटाई करेगा भाई। प्लीज ऐसा मत कीजिए। "

" यार तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि मैं तुम्हारी कुटाई करू गा ?" मैने कहा __" तुम आज से मेरे दोस्त हो। हम सब साथ में ही पढ़ेंगे। लेकिन एक बात ज़रूर याद रखना कि भूल से भी किसी के साथ कोई बुरा बर्ताव नहीं करोगे। वरना सुन ही लिया है न कि इकबाल भाई ने क्या कहा है। ख़ैर , मैं तुमसे ये कहना चाहता हूँ कि एक ऐसा इंसान बनो गफूर जिससे हर

व्यक्ति के दिल में तुम्हारे लिए इज्ज़त हो , प्यार हो और सम्मान हो। किसी का बुरा करने से या सोचने से कभी भी तुम लोगों की नज़र में अच्छे नहीं बन सकते। तुम खुद सोचो कि तुमने अपने ग़लत दोस्तों की शोहबत में अपनी क्या इमेज बना ली है सबके बीच ? सब लोग तुमसे दूर भागते हैं। कोई भी अच्छा व्यक्ति तुमसे किसी तरह का ताल्लुक नहीं रखना चाहता। लोग तुमसे तुम्हारे ग़लत व्यवहार की वजह से कतराते हैं। किसी को डरा धमका कर तुम ये समझते हो कि लोगों के बीच तुम्हारा दबदबा है। जबकि ऐसी सोच सिरे से ही ग़लत है। क्योंकि वो लोग तुमसे डरते नहीं हैं बल्कि तुम जैसे बुरे इंसान के मुह नहीं लगना चाहते। इस लिए वो सब तुमसे दूर भागते हैं। इस लिए दोस्त ऐसा इंसान बनो जिसमें हर कोई तुम्हारे पास खुद आने के लिए रात दिन सोचे। और ये सब तभी होगा जब तुम सबके लिए अच्छा सोचोगे। किसी को अपने से कमज़ोर नहीं समझोगे। "

" वाह दोस्त। " इकबाल खान प्रशंसा के भाव से कह उठा __" कितनी गहरी बातें कही है तुमने। काश तुम्हारी ये बातें मेरे इस छोटे को समझ आ जाएॅ और ये उसी राह पर चल पड़े जिस राह पर चलने से ये एक अच्छा इंसान बन जाए। "

" मैं चलूॅगा भाई। " गफूर खान कह उठा _" अब से आपको कोई शिकायत का मौका नहीं दूॅगा। इस भाई की बात मेरी समझ में आ गई है। मुझे एहसास हो रहा है भाई कि इसने जो कुछ भी मेरे बारे में कहा वो एक कड़वा सच है। सच ही तो कहा है भाई ने कि सब लोग मेरे बुरे आचरण की वजह से मुझसे दूर भागते हैं। मगर अब ऐसा नहीं होगा भाई। मैं इसके साथ रह कर एक अच्छा इंसान बनूॅगा और ज़रूर बनूॅगा। "

" ये हुई न बात। " मैने कहा __" चल आजा इसी बात पर गले लग जा मेरे। कितनी बड़ी बात है कि आज कॉलेज के पहले ही दिन में पहले दुश्मनी हुई और फिर दोस्ती भी हो गई। "

गफूर मेरे गले लग गया। मैने देखा बेड पर पड़े इकबाल गफूर की ऑखों में खुशी के ऑसूॅ थे। कुछ देर और वहॉ पर रुकने के बाद मैने इकबाल गफूर से जाने की इजाज़त मॉगी तो उसने पहले मुझसे मेरा फोन नंबर लिया और मैने भी उसका लिया। फिर इकबाल के कहने पर गफूर मुझे इकबाल की कार से कॉलेज तक छोंड़ा। पूरे रास्ते गफूर खान का चेहरा खिला खिला नज़र आया मुझे। मैं समझ गया कि ये अब ज़रूर सुधर जाएगा।

कॉलेज के गेट के पास उतार कर गफूर वापस लौट गया जबकि मैं पार्किंग की तरफ बढ़ गया अपनी बाइक को लेने के लिए। पार्किंग से अपनी बाइक पर सवार होकर अभी मैने बाइक को स्टार्ट करने के लिए सेल्फ पर अॅगूठा रखा ही था कि मेरा मोबाइल फोन बज उठा। मैने पैंट की जेब से मोबाइल निकाल कर स्क्रीन पर फ्लैश कर रहे नंबर को देखा तो मेरे चेहरे पर सोचने वाले भाव उजागर हो गए।

३९

" हम कुछ भी नहीं सुनना जानते कमिश्नर हमारे बच्चे जहॉ भी हों उन्हें ढूँढ़ कर हमारे सामने तुरंत हाज़िर करो। " रजतकुमार रस्तोगी फोन पर गुस्से में कह रहा था __" वरना तुम सोच भी नहीं सकते कि हम क्या कर सकते हैं ? हमें पता चला है कि बच्चों ने किसी लड़की के साथ रेप किया है। मगर ये सब तो चलता ही रहता है इस उमर में। अगर हमें पता चला कि इस रेप की वजह से ही हमारे बच्चे गायब हैं तो समझ लेना कमिश्नर इस शहर में कोई इंसान जिं दा नहीं बचेगा। "

"....." उधर से कुछ कहा गया।

" तो अगर पुलिस ने उस लड़की के रेप पर कोई केस नहीं बनाया तो कहॉ गए हमारे बच्चे ?" रजतकुमार रस्तोगी गर्जा __" आज दो दिन हो गए कमिश्नर। अभी तक बच्चों का कहीं कोई अता पता नहीं है। "

"....." उधर से फिर कुछ कहा गया।

" तुम्हारे पास चौबीस घंटे का टाइम है कमिश्नर। " रजतकुमार रस्तोगी ने कहा __" अगर चौबीस घंटे के अंदर हमारे बच्चे हमारी ऑखों के सामने न दिखे तो समझ लेना कि हम क्या करते हैं फिर। "

कहने के साथ ही रजतकुमार रस्तोगी ने फोन के रिसीवर को केड्रिल पर पटक दिया। गुस्से से तमतमाया हुआ आया और वहीं सोफे पर बैठ गया। इस वक्त वहॉ रखे बाकी सोफों पर उसके सभी मित्र यार बैठे हुए थे। सबके चेहरों पर चिंता व परेशानी साफ दिखाई दे रही थी।

" क्या कहा कमिश्नर ने ?" अशोक बासु ने उत्सुकता से पूछा था।

" क्या उस रेप की वजह से हमारे बच्चे गायब हैं ?" सुनीता त्रिपाठी ने कहा __" ज़रूर पुलिस वालों ने ही उन सबको गिरफ्तार किया होगा। "

" पुलिस की इतनी हिम्मत नहीं है सुनीता कि वो हमारे बच्चों को छू भी सके। " रजतकुमार रस्तोगी ने कहा __" मुझे लगता है कि हमारे बच्चे खुद ही अंडरग्राउण्ड हो गए हैं। उन्होंने सोचा होगा कि इस हादसे से कहीं उनको पुलिस न पकड़ ले। इस लिए वो कहीं छुप गए होंगे। उन बेवकूफों का इतना भी दिमाग़ नहीं चला कि उनको किसी से डरने की कोई ज़रूरत ही नहीं थी। ख़ैर , तुम लोग चिन्ता मत करो। हमारे बच्चे जहॉ भी होंगे सही सलामत ही होंगे। "

" पर रस्तोगी साहब। " अवधेश मुखर्जी ने कहा __" उन लोगों को हमें एक बार फोन तो कर ही देना चाहिये था। मगर दो दिन से फोन ही बंद हैं उन सबका। समझ में नहीं आ रहा कि कहॉ गए होंगे वो। आपके फार्महाउस पर भी नहीं हैं। हमारे आदमी देख आए हैं वहॉ। लेकिन

हैरानी की बात है कि आपके फार्महाउस के वो दोनो गार्ड्स भी वहॉ नहीं हैं। इसका क्या मतलब हो सकता है ?"

" भाग गए होंगे साले कामचोर। " रजतकुमार रस्तोगी ने कहा __" उस समय जब उनके हाथ में बंदूखें थमाई थी तभी समझ आ गया था कि ये इस काम के लिए बेहद कमज़ोर हैं। ख़ैर छोड़ो। कमिश्नर को हमने डोज दे दी है। वो ज़रूर पता करेगा बच्चों का। "

" आप तो ऐसे बेफिक्र हैं रस्तोगी साहब जैसे आपको अपने बच्चों की कोई चिंता ही नहीं है। " सुनीता त्रिपाठी ने कहा __" पर मुझे चिंता है। क्योंकि मुझ विधवा का एक वही तो सहारा है। अगर उसे कुछ हो गया तो किसके लिए जियूँगी मैं ?"

" ओफ्फो सुनीता। " रजतकुमार रस्तोगी ने सहसा उसे अपनी तरफ खींच लिया। एक हाथ से उसकी ठुड्डी पकड़ कर बोला __" वैसे तो उसे कुछ नहीं होगा। और अगर थोड़े पल के लिए मान भी लिया जाए तो चिंता क्यों करती हो ? हम हैं न तुम्हारे सहारे के लिए। अब तक भी तो सहारा ही बने हुए थे हम और आगे भी बने ही रहेंगे। "

" आपको तो बस हर वक्त मस्ती ही सूझती रहती है रस्तोगी साहब। " सुनीता ने कहा _" जबकि इस वक्त हालात किस क़दर गंभीर हैं इसका आपको अंदाज़ा भी नहीं है। "

" तुम भूल रही हो सुनीता डार्लिंग कि हम कौन हैं ?" रजतकुमार रस्तोगी ने कहा _" हम इस शहर की वो हस्ती हैं जिसकी इजाज़त के बिना एक पत्त भी नहीं हिल सकता। इस लिए तुम इस बात की चिंता करना छोंड़ दो कि बच्चों के साथ कोई बुरा करेगा। "

" रस्तोगी साहब बिलकुल ठीक कह रहे हैं सुनीता। " अशोक बासु ने कहा __" हमारे बच्चे ज़रूर किसी दूसरे शहर में मौज मस्ती कर रहे होंगे। "

" मौज मस्ती हमें भी तो करनी चाहिए न अशोक ?" रजतकुमार ने कहा __" बहुत दिन हो गए सुनीता के साथ भरपूर मस्ती नहीं की हमने। "

" आपने तो मेरे मन की बात कह दी रस्तोगी साहब। " अवधेश मुखर्जी ने मुस्कुराते हुए कहा __" आज हो ही जाए मस्ती। "

" क्या कहती हो डार्लिंग ?" रजतकुमार रस्तोगी ने सुनीता के एक भारी स्तन को ज़ोर से मसलते हुए कहा __" हो जाए वन टू का फोर ?"

" अरे मैं तो चाहती ही हूँ कि आप सब मुझे मसल कर रख दो। " सुनीता ने अपने होठों को दॉतों तले दबाते हुए कहा __" मेरे जिस्म में तो हर वक्त आग लगी रहती है। अलोक का बाप तो कमीना मुझे भरी जवानी में छोंड़ कर मर गया। वो तो भगवान का शुकर था कि आप लोग मेरे जीवन में आ गए वरना जाने क्या होता मेरा ?"

" भगवान सब अच्छे के लिए ही करता है मेरी जान सुनीता। " रजतकुमार रस्तोगी ने सुनीता

के ब्लाउज के बटन खोलते हुए कहा __" और आज तो हम सब तेरी आगे पीछे दोनो साइड से अच्छे से लेंगे। "

" हॉ तो ठीक है न। " सुनीता ने अपना हाथ बढ़ा कर रजतकुमार के पजामें के ऊपर से ही उसके लिंग को पकड़ लिया __" मेरा कोई भी छेंद खाली न रखना। "

" आज तो साली तेरी चीखें निकालेंगे हम तीनों। " रजतकुमार रस्तोगी ने कहा __" चलो भाई लोग अंदर कमरे में चलो। आज इस रांड को तबीयत से पेलते हैं। "

रजतकुमार रस्तोगी की बात सुन कर बाकी तीनो भी मुस्कुराते हुए सोफों से उठ खड़े हुए।

" रस्तोगी साहब आपकी बेटी तो नहीं है न बंगले में ?" अशोक बासु ने पूछा _" वरना उसे पता चल जाएगा कि हम सब क्या कर रहे हैं। "

" नहीं है यार। " रजतकुमार ने कहा __" शायद कहीं बाहर गई हुई है। "

अभी वे सब कमरे की तरफ बढ़े ही थे कि सहसा पीछे से रजतकुमार के पीए ने आवाज़ दी।

" रस्तोगी साहब , रस्तोगी साहब। " पीए ने बदहवास से लहजे में कहा था।

" क्या बात है मनोहर लाल ?" रजतकुमार रस्तोगी के लहजे में कठोरता थी _" क्यों गला फाड़ रहे तुम ? देख नहीं रहे , हम ज़रूरी काम से कमरे में जा रहे हैं ?"

" ज़रूर जाइये रस्तोगी साहब। " मनोहर लाल ने अजीब भाव से कहा __" लेकिन उससे पहले इसे तो देख लीजिए। "

" क्या है ये ?" रजतकुमार रस्तोगी की भृकुटी तन गई , बोला __" तुम हमें मोबाइल देखने का कह रहे हो इस वक्त ? दिमाग़ तो ठीक है न तुम्हारा ?"

" आप एक बार देख लीजिए न रस्तोगी साहब। " मनोहर लाल ने विनती भरे भाव से कहा __" उसके बाद आपको जो करना है करते रहिएगा। "

" दिखाओ क्या है ये ?" रजतकुमार रस्तोगी ने मनोहर लाल के हाथ से मोबाइल छींन लिया था। मोबाइल की स्क्रीन पर कोई वीडियो पुश मोड पर नज़र आ रहा था।

" तुमने हमें ये दिखाने के लिए रोंका है मनोहर लाल ?" रजतकुमार रस्तोगी ने गुस्से से कहा।

" गुस्सा मत कीजिए रस्तोगी साहब। " मनोहर लाल ने कहा __" एक बार उस वीडिओ को प्ले तो कीजिए। "

रजतकुमार रस्तोगी ने पहले तो खा जाने वाली नज़रों से मनोहर लाल को देखा फिर मोबाइल की स्क्रीन पर देखते हुए उस वीडिओ को प्ले कर दिया। बड़े से स्क्रीन टच मोबाइल में वीडिओ के प्ले होते ही जो कुछ नज़र आया उसे देख कर रजतकुमार रस्तोगी के होश उड़ गए। दिलो

दिमाग़ सुन्न सा पड़ता चला गया। ये सच है कि उसके हाथ से मोबाइल छूटते छूटते बचा था। सिर पर एकाएक ही जैसे पूरा आसमान ही भरभरा कर गिर पड़ा था उसके।

रस्तोगी की हालत एक पल में ऐसी हो गई जैसे उसका सब कुछ लुट गया हो। चेहरा फक्क पड़ गया था उसका। बाकी दोनो और सुनीता भी रस्तोगी की ये दशा देख कर बुरी तरह चौंके। उन्हें समझ न आया कि अचानक रस्तोगी साहब को क्या हो गया है।

" क्या हुआ रस्तोगी साहब ?" अवधेश मुखर्जी ने हैरानी से कहा _" आप इस तरह बुत से क्यों बन गए ? क्या है उस मोबाइल में ?"

" आं हा , लो तुम भी देख लो। " रजतकुमार रस्तोगी ने मोबाइल पकड़ा दिया उसे।

अवधेश के साथ साथ अशोक व सुनीता ने भी मोबाइल में चालू वीडियो को देखा। और अगले ही पल उनकी भी हालत खराब हो गई।

" ये सब क्या है मनोहर लाल ?" अशोक त्रिपाठी ने गुस्से से कहा __" रस्तोगी साहब का ऐसा वीडियो इस मोबाइल में कहा से आया ?"

" ये वीडियो किसी अंजान नंबर से भेजा गया है सर। " मनोहर ने कहा __" अभी पॉच मिनट पहले ही आया है। इतना ही नहीं अलग अलग चार वीडियो और भी हैं। बॉकियों को भी प्ले करके देख लीजिए। "

अशोक ने वैसा ही किया। कहने का मतलब ये कि चारो वीडियो अलग अलग व्यक्तियों के थे। पहला रजतकुमार रस्तोगी का, दूसरा अशोक बासु का, तीसरा सुनीता त्रिपाठी का और चौथा अवधेश मुखर्जी का।

चारो वीडियो देखने के बाद उन चारों की हालत बेहद खराब हो गई। सबके पैरों तले से ज़मीन कोसों दूर निकल गई थी।

" रस्तोगी साहब ये सब वीडियो हम लोगों के कैसे बन गए ?" अशोक बासु ने कहा _" और इन वीडियोज में जो जगह है वो तो आपके फार्महाउस की ही है। मतलब साफ है कि वहीं पर हमारे ऐसे वीडियो बनाए गए। मगर सवाल है कि किसने बनाए ऐसे वीडियो ? क्या हमारे बच्चों ने ? यकीनन रस्तोगी साहब , ये उन लोगों ने ही बनाया है। "

" अशोक सही कह रहे हैं रस्तोगी साहब। " अवधेश मुखर्जी ने कहा __" हमारे बच्चों ने ही ये वीडियो बनाया। क्योंकि बाहरी कोई वहॉ जा ही नहीं सकता। "

" ये सब छोंड़ो और ये सोचो कि ये वीडियो किसने भेजा हमारे फोन पर ?" रजतकुमार रस्तोगी ने कहा __" हमारे बच्चे तो ऐसा करेंगे नहीं। क्योंकि ऐसा करने की उनके पास कोई वजह ही नहीं है। उन्होंने ये सोच कर वीडियो बनाया कि हम अपने बाप लोगों की मौज मस्ती अपनी ऑखों से देखेंगे। उनके दिमाग़ में ऐसे वीडियोज हमारे पास भेजने का कोई

सवाल ही नहीं है क्योंकि उनकी हर इच्छाओं की पूर्ति हम बखूबी करते हैं। ये किसी और का ही काम है अवधेश। हमारे फोन में वीडियो भेजने का मतलब है कि सामने वाला हमें बताना चाहता है कि उसके पास हमारी इस करतूत का सबूत है और वो हमें जब चाहे एक्सपोज कर सकता है। अब सवाल ये है कि वो कौन है जिसने ये वीडियो भेजा और किस मकसद के तहत भेजा ?"

" मामला बेहद गंभीर हो गया है रस्तोगी साहब। " सुनीता ने कहा __" हमारे बच्चों ने तो हमें बड़ी भारी मुसीबत में डाल दिया है। "

" मुसीबत तो अब हो ही गई है मगर इससे निपटने का रास्ता तो अब ढूढ़ना ही पड़ेगा न ?" रजतकुमार रस्तोगी ने कहा _" सबसे पहले ये पता करना होगा कि ये वीडियो उसके पास कैसे आए और उसने हमें किस मकसद से भेजा है ?

" वीडियो आपके फार्महाउस के उसी कमरे में बनाया गया है रस्तोगी साहब जिस कमरे में हम लोग अक्सर शबाब का मज़ा लूटा करते हैं। " अशोक ने कहा __" मतलब साफ है वीडियो भेजने वाले को ये वीडियो वहीं से मिले होंगे। अब सबसे बड़ा सवाल ये है कि आपके फार्महाउस पर ऐसा कौन व्यक्ति गया और ये सब वीडियोज वहॉ से उठा कर चंपत हो गया ? आपके फार्महाउस के वो गार्ड्स कहॉ थे उस वक्त जब कोई बाहरी वहॉ आकर ये सब काण्ड कर गया ?"

अशोक बासु की इन बातों से सन्नाटा छा गया हाल में। सबका दिमाग़ मानो चकरघिन्नी बन कय रह गया था। किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि ये सब अचानक कौन सी आफत आ गई थी। जिसने उन सब महारथियों को अपंग सा बना दिया था।

" मनोहर लाल पता करो किसने ये हिमाकत की है ?" रजतकुमार रस्तोगी ने कहा __" जिस नंबर से ये वीडियोज आईं हैं उस नंबर पर फोन करो। "

" मैने बहुतों बार फोन लगाया रस्तोगी साहब लेकिन नंबर बंद बता रहा है। " मनोहर लाल ने कहा __" आप कहें तो पुलिस को ये नंबर दे दूँ वो जल्द ही पता कर लेंगे कि ये नंबर किसका है और किस जगह से इस नंबर के द्वारा ये वीडियोज भेजी गई हैं ?"

" तुम्हारा दिमाग़ तो नहीं ख़राब हो गया मनोहर लाल। " रजतकुमार गुस्से से बोला _" ये घटिया ख़याल आया कैसे तुम्हारे ज़हन में ? सोचो अगर हमने पुलिस को नंबर दिया तो उसका अंजाम क्या हो सकता है ? जिसने भी ये दुस्साहस किया है वो कोई मामूली व्यक्ति नहीं हो सकता। उसे भी ये पता होगा कि हम उसका पता लगाने के लिए उसका नंबर पुलिस को दे सकते हैं। उसने पुलिस को नंबर न देने की कोई चेतावनी भले ही हमें नहीं दी है मगर हमें तो सोचना समझना चाहिए न ? अगर हमने ऐसा किया तो संभव है कि वो हमारे ये वीडियो पुलिस को दे दे या सार्वजनिक कर दे। उस सूरत में हमारा सारा किस्सा ही खत्म हो जाएगा। शहर की जनता और ये पुलिस प्रशासन सब हमारे खिलाफ़ हो जाएँगे। इस लिए हमें ठंडे दिमाग़ से इसके बारे में सोचना होगा। बिना मतलब के या बिना मकसद के कोई

किसी के साथ ऐसा नहीं करता। उसने ऐसा किया है तो देर सवेर ज़रूर उसका कोई मैसेज या फोन भी आएगा। तब हम उससे पूछेंगे कि वह क्या चाहता है हमसे ?"

" इसका मतलब अब हम उस व्यक्ति के किसी फोन या मैसेज का इंतज़ार करें जिसने ये वीडियोज हमें भेजा है ?" अवधेश मुखर्जी ने कहा।

" इसके अलावा हमारे पास दूसरा कोई रास्ता भी तो नहीं है। " रजतकुमार ने कहा __" हमें एक बार उससे बात तो करनी पड़ेगी। आख़िर पता तो चले कि उसने ऐसा किस मकसद से किया है ? उसके बाद ही हम कोई अगला क़दम उठा सकते हैं। "

" ठीक है रस्तोगी साहब। " अशोक बासु ने कहा __" जैसा आप उचित समझें वैसा कीजिए। मगर ये मैटर ऐसा है कि हम सबके होश उड़ा देगा। सब कुछ बरबाद कर देगा। "

" बस एक बार उसका कोई फोन या मैसेज तो आने दो। " रजतकुमार ने कहा __" उसके बाद हम बताएँगे उसे कि हमारे साथ ऐसी हरकत करने का अंजाम कितना भयावह होता है। "

रजतकुमार रस्तोगी की इस बात से एक बार फिर हाल में सन्नाटा छा गया। किन्तु सबके मन में जो तूफान उठ चुका था उसे रोंकना उनके बस में न था।

" रस्तोगी आज से तेरे बुरे दिन शुरू हो गए हैं। मासूम और मजलूमों पर तूने , तेरे साथियों ने और तेरे हराम के पिल्लों ने जो भी ज़ुल्म ढाए हैं उनका हिसाब देने का समय आ गया है। " साक्षी की कार ऑधी तूफान बनी फार्महाउस की तरफ दौड़ी जा रही थी। साथ ही मन ही मन वह ये सब कहती भी जा रही थी।

साक्षी ने ऐसी जगह से अपने नये मोबाइल फोन द्वारा वो वीडियोज रस्तोगी के मोबाइल पर भेजे थे जिस जगह पर एक नई बिल्डिंग का निर्माण कार्य चल रहा था। किन्तु इस वक्त वहॉ पर कोई न था। यहीं से उसने रस्तोगी को वीडियोज भेजे थे। वीडियो भेजने के बाद उसने फोन को स्विचऑफ कर दिया था। उसका खुद का जो आईफोन था वो पहले से ही स्विचऑफ था। उसके दिमाग़ में हर चीज़ से बचने की भी सोच थी।

ऑधी तूफान बनी उसकी जिप्सी उसके फार्महाउस पर रुकी। जिप्सी से उतर कर वह तेज़ी से अपने कमरे की तरफ बढ़ गई। बाहर मेन गेट पर शंकर काका नज़र आया था उसे किन्तु हरिया काका नज़र नहीं आया था। कमरे में जाकर उसने नया वाला फोन आलमारी में रखा और उसे लॉक कर तुरंत पलटी।

जिप्सी में बैठी साक्षी का रुख अब अपने हवेली की तरफ था। उसके दिमाग़ में बड़ी तेज़ी से कई सारी चीज़ें चल रही थी। उसके ज़हन में ये बात हर पल बनी हुई थी कि उसने प्राची से वादा किया था कि विक्रम को उसके पास ज़रूर लाएगी।

साक्षी के पास विक्रम का कोई कॉन्टैक्ट करने का ज़रिया न था। इस लिए उसने ये पता लगाने के लिए किसी आदमी को लगाया हुआ था कि उसके किसी दोस्तों के पास विक्रम का कोई अता पता हो। दूसरे दिन सुबह ही उसके आदमी ने उसे बताया था कि विक्रम के दो ही लड़के खास दोस्त हुआ करते थे। एक का नाम दिनेश सिंह था जो कि आजकल देश के किसी दूसरे राज्य में नौकरी कर रहा है। दूसरे दोस्त का नाम है रौनक सिंह चंदेल। ये विक्रम का स्कूल के समय से ही दोस्त था। ग़रीब है, आज कल सोनपुर में ही बस स्टैण्ड के पास पान की दुकान खोल रखा है। घर में विधवा मॉ के अलावा एक बहन है जो ऊम्र में उससे बड़ी है। मगर आर्थिक परेशानी की वजह से वह अपनी बड़ी बहन की शादी नहीं करा पा रहा है।

साक्षी के खबरी ने उसे रौनक सिंह का नंबर लाकर दिया था। साक्षी ने रौनक को फोन लगा कर उसे अपना परिचय दिया और मिलने का कहा था। खैर,साक्षी जब रौनक से मिली तो उससे विक्रम के बारे में पूछा तो रौनक ने बड़ा अजीब सा जवाब दिया था उसे।

" आप मेरे दोस्त विक्रम की बड़ी बहन हैं इस लिए आप मेरी भी बड़ी बहन के समान ही हैं। " रौनक ने कहा था __" आप मेरे घर पर आई हैं , आपका तहे दिल से स्वागत है। लेकिन अगर आप मुझसे मेरे जिगरी यार का पता या फोन नंबर पूछने आई हैं तो माफ़ कीजिएगा दीदी। मैं आपको ना तो उसका पता बताऊँगा और ना ही उसका फोन नंबर दूँगा। "

" लेकिन क्यों रौनक ?" साक्षी ने चकित भाव से कहा था __" तुम एक बहन को उसके भाई का अता पता क्यों नहीं बताओगे ?"

" बहन ..... भाई ???" रौनक सिंह बड़े अजीब भाव से हॅसा था , उसकी उस हॅसी में साक्षी ने साफ साफ दर्द महसूस किया ___" कौन बहन भाई दीदी ? अरे मेरे यार ने तो सबको हमेशा अपना ही माना था मगर उसके खुद के मॉ बाप और बहन के अलावा किसी भी परिवार वाले ने उसे अपना नहीं माना। और और आप ???? आप भी बताइये दीदी , आप ने विक्रम को कब अपना भाई माना था ? अरे उसे तो आपने बचपन से लेकर आज तक सिर्फ दुत्कारा है दीदी। ख़ैर , जाने दीजिए। आपसे ये सब कहने का मुझे कोई हक़ नहीं है। माफ़ करना दीदी , आपको देख कर जाने कैसे गुस्सा सा आ गया था और दिल का गुबार मुख से निकल गया। मगर , जिस काम के लिए आप यहॉ आई हैं वो हर्गिज़ नहीं होगा। मुझे सब पता है दीदी , मेरे दोस्त विक्रम और उसकी मॉ बहन को खोजने के लिए आपके डैड ने अपने आदमियों को जाने कब से लगाया हुआ है। मगर कोई भी उनका आदमी उसे ढूँढ़ नहीं पाएगा। "

" तुम ग़लत समझ रहे हो रौनक। " साक्षी ने बेचैनी भरे भाव से कहा था __" मैं ये मानती हूँ कि मैने अपने उस भाई को कभी अपना नहीं माना था लेकिन आज ऐसा नहीं है भाई। आज तुम्हारी ये दीदी बहुत प्यार करने लगी है अपने उस भाई से। इस वक्त अगर विक्रम मेरे सामने आ जाए तो मैं उसके पैरों में पड़ कर उससे अपने किये की माफ ी मॉग लूँगी। ये सब समय समय की बातें हैं रौनक । हम जब बच्चे होते हैं तो बिलकुल कुम्हार के पास रखी हुई उस गीली और कच्ची मिट्टी की तरह होते हैं। हमारे माता पिता कुम्हार की तरह ही होते हैं। वो जैसे चाहें अपने बच्चों को किसी मिट्टी के घड़े की तरह ढाल देते हैं। कहने का मतलब ये कि , मेरे मॉम डैड ने हम बहन भाइयों को बचपन से जो सिखाया पढ़ाया हम उसी को करते चले गए। लेकिन वक्त हमेशा एक जैसा नहीं रहता रौनक । हर सच्चाई को एक दिन पर्दे से निकल कर बाहर आना ही पड़ता है। यही उसकी नियति होती है। और सच्चाई क्या है क्या नहीं ये मुझे समझ आ गया है। मुझे पता है रौनक कि मेरा भाई विक्रम वो कोहिनूर है जिसका कोई मोल हो ही नहीं सकता। "

" वाह दीदी वाह। " रौनक कह उठा __" आज आपके मुख से ये अमृत वाणी कैसे निकल रही है ? हैरत की बात है , खैर मुझे क्या है। मगर इतना जान लीजिए कि मैं आपकी इन मीठी बातों के जाल में फॅसने वाला नहीं हूँ। मेरी वजह से मेरे दोस्त को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता। अब आप जाइये दीदी। मुझे आपसे और कोई बात नहीं करनी है। "

" कैसे यकीन दिलाऊँ रौनक ?" साक्षी की ऑखों में ऑसू आ गए __" आखिर कैसे तुम्हें यकीन दिलाऊँ कि मैं अब वैसी नहीं रही ? मैं हनुमान जी की तरह अपना सीना चीर कर नहीं दिखा सकती मगर भगवान जानता है कि मेरे सीने में मेरा भाई ज़रूर मौजूद हो गया है। तुम मुझे उसका गुनहगार समझते हो तो चलो ठीक है रौनक । तुम मुझे विक्रम का अता पता भी न दो मगर इतना तो उसे बता ही सकते हो न वो कुछ देर के लिए अपनी उस प्राची के पास आ जाए जिससे वह आज भी उतना ही प्यार करता होगा जितना पहले करता था। "

" नाम मत लीजिए उस बेवफ़ा का। " रौनक ने सहसा आवेशयुक्त लहजे में कहा __" उसी की बेवफ़ाई की वजह से मेरा दोस्त रात रात भर मेरे पास रोता रहता था। कितना चाहता था वो उसे। मगर उस दिन पता चला कि दुनियॉ भर की कसमें और दलीलें देने वाली वो लड़की कितनी झूठी और मक्कार थी जिस दिन आप लोगों ने मेरे दोस्त को और उसके मॉ बहन को हवेली से बाहर धकेल दिया था। उधर आप लोगों ने हवेली से धकेला और इधर उस कम्बख्त ने मेरे दोस्त को अपने दिल से धकेल दिया। एक पल में गिरगिट की तरह रंग बदल लिया था उस लड़की ने। रुपये पैसे से मोहब्बत थी उसे ना कि मेरे दोस्त से। "

" सच्चाई क्या है इसका तुम्हें पता नहीं है रौनक। " साक्षी ने दुखी भाव से कहा _" तुम और विक्रम ही क्या बल्कि कोई नहीं समझ सकता कि उसने ऐसा क्यों किया था ?"

" अरे दौलत के लिए दीदी दौलत के लिए। " रौनक ने झट से कहा __" उसने मेरे दोस्त की सच्ची मोहब्बत को अपने पैरों तले रौंदा था। "

" ये सच नहीं है रौनक। " साक्षी ने कहा _" अगर सच्चाई जान लोगे न तो पैरों तले से ज़मीन गायब हो जाएगी तुम्हारे। उसने ये सब इस लिए किया था ताकि विक्रम उससे नफ़रत करने लगे और किसी दूसरी लड़की के साथ प्यार मोहब्बत करने का सोचे। माना कि ये आसान नहीं था मगर वक्त और हालात हर ज़ख्म भर देता और एक नया मोड़ भी जीवन में ले आता है। "

" आप कहना क्या चाहती हैं दीदी ?" रौनक ने कहा __" और इन सब बातों का आज कहने का क्या मतलब है ?"

" प्राची को ब्लड कैंसर था रौनक। " साक्षी ने मानो धमाका किया __" और वो भी लास्ट स्टेज का। इसी लिए उसने ये सब किया था विक्रम के साथ। ताकि वह उसे भूल जाए और दूर हो जाए उससे। "

" क क्या ?????" रौनक बुरी तरह चौंका था __" ये ये आप क्या कह रही हैं दीदी ? प्राची को कैंसर ?? नहीं नहीं ऐसा नहीं हो सकता। ये सब झूठ है। "

" अगर तुम्हें मेरी बात का यकीन नहीं है तो मेरे साथ चल कर खुद अपनी ऑखों से देख लो तुम। " साक्षी ने कहा __" इस वक्त भी वह हॉस्पिटल में ही है। तुमने शायद सुना नहीं होगा उस रेप के बारे में जो अभी कुछ दिनों पहले ही हुआ था। प्राची के साथ ये हादसा हुआ था जिससे उसकी हालत बहुत खराब हो गई थी। हॉस्पिटल में जब उसे भर्ती किया गया तभी उसके चेकअप से डाक्टर को ये पता चला कि प्राची को लास्ट स्टेज का ब्लड कैंसर है। जबकि कैंसर वाली बात प्राची को पहले से ही पता थी। "

रौनक सिंह साक्षी को अजीब भाव से इस तरह देखने लगा था जैसे साक्षी का सिर धड़ से अलग होकर ऊपर हवा में अचानक ही कत्थक करने लग गया हो। अविश्वास से फटी हुई उसकी ऑखों में एकाएक ही ऑसू आ गए।

" हे भगवान ! ये क्या हो गया ?" रौनक ने ऊपर की तरफ देख कर दुखी भाव से कहा _" एक और सच्चे प्रेम की ये दशा कर दी तूने। बहुत बेरहम और बेदर्द है तू। दीदी , मुझे उस महान लड़की को देखना है। उससे माफ ी माँगना है। हे भगवान कितना बुरा भला कहा मैने उसे और आज तक बुरा भला सोचता भी रहा हूँ। "

साक्षी रौनक को लेकर हॉस्पिटल पहुँची तो रौनक ने देखा प्राची को। प्राची की करुण हालत देख कर रौनक का कलेजा मुह को आ गया। वह प्राची के पैरों में अपना सिर रख दिया और माफ़ी माँगने लगा। रौनक बहुत ही भावुक किस्म का लड़का था, इस लिए ज्यादा देर तक वह प्राची के पास न रह सका था। उसे रह रह कर रोना आने लगता था।

हॉस्पिटल से बाहर आकर उसने खुद को और अपने अंदर के जज़्बातों को शान्त किया। तभी पीछे से साक्षी ने उसके कंधे पर हाथ रखा। उसने पलट कर देखा उसे।

" क्या अब भी तुम्हें लगता है रौनक कि मैं तुमसे झूँठ बोल रही हूँ ?" साक्षी ने कहा था।

" नहीं दीदी , प्लीज माफ़ कर दीजिए। " रौनक ने अपने हाथ जोड़ कर कहा था।

" इसी प्राची ने मुझे एहसास कराया कि मैं कितना ग़लत सोचती थी अब तक अपने भाई विक्रम के लिए। " साक्षी ने कहा __" प्राची की कहानी ने मुझे ये एहसास कराया भाई कि मेरा अपने भाई के लिए आज तक अनुचित व्यवहार करना कितना ग़लत था। इसको मैने वचन दिया है रौनक कि इसके महबूब को इसके पास ज़रूर लाऊँगी। मैं इसी लिए तुम्हारे पास आई थी रौनक । मैंने अपने भाई के साथ क्या किया है अबतक उसका फल मुझे ज़रूर मिलेगा और मिलना भी चाहिए। "

" ऐसा मत कहिए दीदी। " रौनक ने कहा _" ये सब समय समय की बातें हैं। जो बीत गया उसे भूल जाइये और एक नया संसार बनाने की सोचिये। मैं अभी विक्रम को फोन करता हूँ और उसे प्राची के बारे में सब बताता हूँ। "

" नहीं नहीं रौनक। " साक्षी ने झट से कहा _" उसे ये मत बताना कि प्राची को क्या हुआ है। बल्कि कुछ और बोलो। कुछ ऐसा कि वो दूसरे दिन मुंबई से यहाँ आने के लिए चल दे। "

" ठीक है दीदी। " रौनक ने कहा था _" मैं ऐसा ही करता हूँ। "

कहने के साथ ही रौनक ने विक्रम को फोन लगा दिया था। उसका दिल बुरी तरह धड़के जा रहा था। रिंग जाने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। और तभी,

" हाँ भाई बोल कैसे याद किया ?" उधर से विक्रम ने कहा था।

" भाई अगर तेरे पास टाइम हो तो तू जल्दी से गाँव आ जा। " रौनक ने कहा था।

" अरे क्या हुआ भाई ?" विक्रम के चौंकने जैसी आवाज़ आई __" सब ठीक तो है ना ?"

" बस भाई तू कल ही आजा यहॉ। " रौनक ने गंभीरता से कहा __" तुझे मेरी क़सम है भाई। तू कल यहॉ आएगा। "

" पर बात क्या है रौनक ?" विक्रम का चिंतित स्वर उभरा __" देख तू मुझसे कुछ भी मत छुपा ओके। चाची(रौनक की माॅ) की तबीयत तो ठीक है ना ? पूजा दीदी ठीक तो हैं ना मेरे भाई ? सच सच बता न क्या बात है ?"

" भाई परेशान न हो। " रौनक ने कहा _" बस तू कल आजा भाई। बाकी सब कुछ तुझे यहॉ आने पर ही पता चलेगा। तू आएगा न कल ?"

" मैं आज ही रात की ट्रेन से निकल लूॅगा यहॉ से। " विक्रम ने कहा __" कल दोपहर तक पहुॅच जाऊॅगा। "

" ठीक है भाई मैं तुझे बस स्टैण्ड पर ही मिलूॅगा। " रौनक ने कहा __" मुझे पहुॅचते ही फोन कर देना। "

" आखिर बात क्या है यार ?" विक्रम की आवाज़ आई __" तू बता क्यों नहीं रहा है ?"

" तू आजा बस। " रौनक ने कहा __" चल रखता हूॅ फोन। "

रौनक ने फोन काट दिया। एक गहरी सास ली उसने और फिर साक्षी की तरफ देखते हुए कहा__"लीजिए दीदी। मेरा यार कल दोपहर को आ जाएगा यहॉ।"

" तुमने मेरे वचन को झूठा होने से बचा लिया मेरे भाई। " साक्षी ने की ऑखें भर आई। उसने झपट कर रौनक को अपने गले से लगा लिया।

" आपने भी तो मुझे पाप करने से बचाया दीदी। " रौनक ने कहा __" आज तक मैं अपने मन में उस प्राची को जाने कितना बुरा भला कहता था जिस प्राची को मुझे प्रणाम करना चाहिए था। "

" ऐसी बातें मेरे भाई विक्रम का एक अच्छा दोस्त ही कह सकता है। " साक्षी ने रौनक से अलग होकर कहा __" इतने ऊॅचे संस्कार उसके ही दोस्तों में हो सकते हैं। मुझे अपने भाई और उसके ऐसे दोस्तों पर नाज़ है। चलो अब मैं चलती हूॅ भाई। लेकिन एक विनती है तुमसे , विक्रम से ये मत कहना कि ये सब मैने कहा था तुमसे। "

" अरे मगर क्यों दीदी ?" रौनक चौंका था _" आप ऐसा क्यों चाहती हैं ? अब तो आप उसे अपने गले से लगा लीजिए दीदी। क्यों अपनी बेरुखी और बेदर्दी से उसका दिल दुखाना चाहती हैं ? या फिर मैं ये समझूॅ कि आपने वो सब जो कहा था वो सब एक झूठ था ?"

" नहीं मेरे भाई। " साक्षी ने कहा __" मैं तो चाहती हूॅ कि अपने भाई को मैं अपने कलेजे से लगा लूॅ मगर मुझे ये भी पता है कि उसकी जान को खतरा भी है। अगर मेरे डैड को पता चल जाए कि विक्रम गॉव आया हुआ है तो सोचो क्या होगा ? इस लिए मैं सबसे पहले

उसकी सेफ्टी का ख़याल रखूँगी। "

" ओह दीदी सचमुच। " रौनक ने कहा _" ये तो मैं भूल ही गया था। तो आप उसकी सेफ्टी के लिए क्या करेंगी दीदी ?"

" वो तुम मुझ पर छोंड़ दो भाई। " साक्षी ने कहा __" मेरे रहते मेरे भाई को कोई छू भी नहीं सकेगा। "

साक्षी के चेहरे पर एकाएक ही कठोरता आ गई थी। पलक झपकते ही शेरनी की भाँति ज़लज़ला नज़र आने लगा था उसके चेहरे पर। रौनक सिंह एक बार को तो कॉप ही गया था उसे इस रूप में देख कर।

साक्षी के मन में यही सब फिल्म की तरह चल रहा था। उसकी जिप्सी ऑधी तूफान बनी हवेली की तरफ दौड़ी जा रही थी। उसे पता था कि उसका बाप विक्रम को खोजने के लिए अपने आदमियों को लगाया हुआ है। संभव है कि सत्यम सिंह ने अपने आदमियों को गॉव सोनपुर और शहर रामगंज में भी फैला रखा हो। साक्षी के मन में सिर्फ एक ही विचार था कि विक्रम को किसी भी हालत में अपने बाप और उसके आदमियों की नज़र में नहीं आने देना है। ये उसकी जिम्मेदारी थी कि विक्रम पर किसी तरह का कोई संकट न आ पाए। क्योंकि वास्तविकता तो यही थी न कि विक्रम को उसने ही रौनक सिंह के द्वारा बुलवाया है।

साक्षी की जिप्सी हवेली के गेट से अंदर दाखिल होते हुए पोर्च में जाकर रुकी। जिप्सी से उतर कर वह अंदर की तरफ बढ़ गई।

४०

रौनक से फोन पर बात करने के बाद मैं थोड़ी देर के लिए गहरी सोच में डूब गया था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि रौनक ने आख़िर किस वजह से मुझे गॉव आने के लिए कहा था? पूछने पर भी उसने कुछ नहीं बताया था। काफी देर तक इस बारे में सोचने के बाद भी जब मुझे कुछ समझ न आया तो मैने अपने दिमाग़ से इस बात को झटक कर बाइक स्टार्ट की और घर की तरफ चल दिया।

रास्ते में मैं ये सोच रहा था कि गॉव जाने के लिए मॉ से कैसे अनुमति मिलेगी मुझे? क्योंकि मेरे गॉव जाने का सुन कर ही उनके होश उड़ जाना है और ये भी निश्चित था कि वो मुझे गॉव जाने की इजाज़त किसी भी हाल में नहीं देंगी। लेकिन मेरा गॉव जाना तो अब ज़रूरी हो गया था।

घर पहुॅच कर मैने बाइक को ग्यारेज में लगाया और मुख्य दरवाजे के पास आ गया। डोर बेल पर उॅगली से पुश किया। अंदर बेल की आवाज़ गई। कुछ ही पलों में दरवाजा खुला। मेरी मॉ मेरे सामने दरवाजा खोल कर खड़ी थी। मुझ पर नज़र पड़ते ही उनके गुलाबी होंठो पर मुस्कान फैल गई।

" आ गया मेरा बेटा। " मॉ ने मेरे सिर से लेकर चेहरे तक अपना हाथ फेरते हुए कहा _" चल आजा हम सब तेरे आने का ही इन्तज़ार कर रहे थे। "

मैं के साथ चलते हुए ड्राइंग रूम में पहुॅचा। वहॉ पर रखे सोफों पर उमाकांत अंकल और सुंदर चाचा बैठे हुए थे। निशा शायद अपने कमरे में थी।

" तो कैसा रहा हमारे विक्रम का कॉलेज में पहला दिन ?" उमाकांत अंकल ने मुस्कुरा कर कहा __" आई होप , बहुत ही बेहतर रहा होगा। "

" आपने सही कहा अंकल। " मैने एक सोफे पर बैठते हुए कहा __" और आपको पता है आज पहले ही दिन मेरी दोस्ती कुछ खास लोगों से हो गई है। "

" ओह ये तो बहुत अच्छी बात है बेटे। " अंक ल ने कहा __" वैसे मैने सुना है कि कॉलेजों में रैगिंग वगैरा होती है। जिसमें सीनियर स्टूडेन्ट्स अपने जूनियर्स को कई तरह से परेशान करते हैं। सो तुम्हें तो किसी सीनियर ने परेशान नहीं किया न ?"

" नहीं अंकल ऐसा कुछ नहीं था और थोड़ा बहुत तो चलता है। " मैने कहा।

" वैसे विक्रम क्या मानुषी से भी तुम्हारी मुलाक़ात हुई क्या ?" सुंदर चाचा ने पूछा।

" हॉ चाचा जी। " मैने कहा __" लेकिन बस हमने एक दूसरे को देखा ही है। कोई बात चीत न मैने की उससे और ना ही उसने। "

" तुम्हें वहॉ पर देख कर हैरान तो बहुत हुई होगी वो। " चाचा ने कहा __" और अब वो ज़रूर फोन करके बड़े भैया को बताएगी कि तुम भी उसी कॉलेज में पढ़ रहे हो। उसके बाद भगवान ही जाने कि क्या होगा ?"

" कुछ नहीं होगा भाई साहब। " सहसा उमाकांत अंकल ने कहा __" ये मुंबई है मुंबई । यहॉ पर आपके बड़े भाई साहब का राज नहीं चलेगा। यहॉ अगर उन्होंने विक्रम को छूने की भी कोशिश की तो पल भर में उनको नेस्तनाबूत कर दिया जाएगा। "

उमाकांत अंकल की बात सुन कर सुंदर चाचा कुछ न बोले। कदाचित वो समझ गए थे कि उमाकांत अंकल सच कह रहे थे। आज के वक्त में मैं कोई मामूली इंसान नहीं था। बल्कि मुंबई शहर के टॉप धन कुबेरों में मेरा नाम दर्ज़ हो चुका था।

ख़ैर, इन सब बातों के बीच मैं ये सोच रहा था कि गॉव जाने की बात मॉ से कैसे कहूँ? मेरे पास वैसे भी ज्यादा समय नहीं रह गया था। मैं अपनी जगह से उठ कर मॉ के पास उनके सोफे पर बैठ गया। मुझे अपने पास बैठते देख मॉ ने प्यार से एक बार फिर मेरे सिर पर हाथ फेरा। मेरे चेहरे की तरफ कुछ पल देखने के बाद कहा__"क्या बात है विक्रम? कुछ कहना है क्या तुझे?"

" वो मॉ वो ... मुझे न .. वो मुझे। " मेरी आवाज़ अटक सी रही थी __" मुझे न आज और इसी समय गॉव जाना होगा। बहुत ज़रूरी है। "

" क्या ?????" मॉ मेरी बात सुन कर उछल ही पड़ी थी , बोली _" ये तू क्या कह रहा है ? नहीं हर्गिज़ नहीं। तू गॉव नहीं जाएगा। तेरे मन में गॉव जाने का ख़याल आया कैसे ?"

मेरी बात से मॉ तो उछली ही थी किन्तु उनके साथ ही साथ उमाकांत अंकल और सुंदर चाचा भी बुरी तरह चौंके थे।

" ये तुम क्या कह रहे हो विक्रम ?" उमाकांत अंकल ने हैरानी से कहा __" तुम्हें गॉव किस लिए जाना है ? आख़िर ऐसा क्या ज़रूरी काम आ गया ?"

" वो रौनक का फोन आया था मुझे कॉलेज से आते समय। " मैने कहा __" रौनक मेरा बचपन का बहुत ही गहरा दोस्त है। उसी का फोन आया था। उसने मुझे अर्जेटली गॉव बुलाया है। मैने उससे वजह पूछी मगर उसने बस इयना ही कहा कि तू बस आजा। "

मैने उन सबको रौनक से हुई सारी बात बता दी। मेरी बातें सुनने के बाद ड्राइंग रूम में सन्नाटा सा छा गया।

" किसी का भी फोन हो और चाहे जितना भी ज़रूरी हो। " मॉ ने सन्नाटे को चीरते हुए कहा __" तू गॉव नहीं जाएगा बस। मैं तुझे मौत के मुह में जाने की हर्गिज़ भी इजाज़त नहीं दूँगी। "

" लेकिन तुम्हारे दोस्त को कोई वजह तो बताना ही चाहिये था विक्रम। " उमाकांत अंकल ने

कहा __" भला ये क्या बात हुई कि फोन घुमा दिया और कह दिया कि तुम्हें यहॉ आना है बस ?"

" कहीं ऐसा तो नहीं भाई साहब कि विक्रम का दोस्त सत्यम भैया के हाथ लग गया हो और ये सब बातें उसने उनके ही कहने पर की हों ?" सुंदर चाचा ने कुछ सोचते हुए कहा __" यकीनन ऐसा हो सकता है। उन्होंने कहीं से पता कर लिया होगा कि गॉव में विक्रम का कोई दोस्त है जो अक्सर विक्रम से फोन पर बातें करता रहता है। इस लिए उन्होंने उसे पकड़ लिया होगा और डरा धमका कर फोन करवाया होगा। "

" आपकी बातों में यकीनन वजन है भाई साहब। " उमाकांत अंकल ने कहा __" यकीनन ऐसा हुआ होगा। उन्होंने विक्रम के दोस्त को मजबूर किया होगा इस सबके लिए। "

" उसने जब मुझसे फोन पर बात की थी तब ऐसा बिलकुल भी नहीं लग रहा था कि वो किसी के द्वारा मजबूर किया गया है। " मैने कहा __" वो बिलकुल नार्मली ही बातें कर रहा था। हॉ थोड़ा थोड़ा दुखी और उदास सा ज़रूर समझ में आ रहा था। "

" ये सब बातें छोंड़िये आप लोग। " सहसा मॉ ने कहा __" विक्रम कहीं नहीं जाएगा बस। ये मेरा आख़िरी फ़ैसला है। "

" लेकिन बहन। " उमाकांत अंकल ने कहा __" पता तो चलना ही चाहिए कि बात क्या है ? मान लो कि सचमुच कोई ऐसी बात हो जिससे विक्रम का वहॉ पर जाना बहुत ज़रूरी ही हो तब क्या ? ये सब संभावनाएॅ हैं। हमें सच्चाई जानना ज़रूरी है। एक काम करो विक्रम तुम अभी अपने दोस्त को फोन लगाओ और उससे बात करो। हम सब सुनेंगे कि बात क्या है। "

मुझे उमाकांत अंकल की बात सही लगी इस लिए मैने फोन निकाल कर तुरंत रौनक को फोन लगा कर स्पीकल ऑन कर दिया। कुछ देर फोन की रिंग जाने की आवाज़ आती रही।

" हॉ भाई चल दिया क्या वहॉ से ?" उधर से रौनक का स्वर उभरा।

" यार मेरी समझ में ये नहीं आ रहा कि आख़िर ऐसा क्या ज़रूरी काम है जिसकी वजह से तूने मुझे वहॉ अर्जेंट बुलाया है ?" मैने कहा।

" मेरे भाई मैं तुझे फोन पर नहीं बता सकता। तू बस आजा और खुद अपनी ऑखों से देख सुन ले। " उधर से रौनक अधीर भाव से कह रहा था __" मुझे पता है भाई कि तेरा यहॉ पर आना खतरे से खाली नहीं है। मैं खुद भी तुझे किसी ऐसे खतरे में डालने का सोच भी नहीं सकता। लेकिन भाई बात ही ऐसी है कि तुझे बुलाना पड़ रहा है यहॉ। भाई तुझे हमारी दोस्ती की कसम है , तू आजा भाई। चाहे दो पल के लिए ही आजा लेकन आजा भाई। मैं तेरे हाथ जोड़ता हूॅ , तू आजा मेरे यार। "

" अच्छा ये बता कि तू किसी के दबाव में या किसी के द्वारा मजबूर हो कर तो नहीं बुला रहा न मुझे ?" मैने बाकी सबकी तरफ नज़रें घुमा कर देखते हुए कहा था।

" ये तू क्या कह रहा है विक्रम ?" रौनक के स्वर में हैरानी थी , बोला __" भाई तू सोच भी कैसे सकता है कि मैं किसी के द्वारा मजबूर होकर तुझे खतरे में डाल दूँगा ? मैं मर जाऊँगा भाई लेकिन ऐसा कभी नहीं कर सकता। "

" चल ठीक है भाई मैं आने की कोशिश करूँ गा। " मैने कहा।

" कोशिश नहीं भाई। " रौनक ने कहा _" तुझे ज़रूर आना है। कल मैं तुझे बस स्टैण्ड पर ही मिलूँगा। तेरे बड़े पापा के आदमी काफी समय से यहाँ आस पास नहीं दिखे हैं। शायद उन्हें यकीन हो गया है कि अब तू गाँव नहीं आएगा। किसी को कानो कान खबर नहीं होगी तेरे आने की। तू फिक्र मत क र भाई। तू बस आजा। "

" चल ठीक है। " मैने कहा और फोन काट दिया।

" तुम्हारे दोस्त की बातचीत से तो साफ पता चलता है कि वो ये सब किसी के द्वारा मजबूर होकर नहीं बल्कि अपनी स्वेच्छा से कह रहा है। " उमाकांत अंकल ने कहा __" लेकिन अब सवाल यही है कि आख़िर किस अर्जेन्ट काम के लिए उसने तुम्हें गाँव आने के लिए कहा हो सकता है ? उसने इस बारे में कुछ भी नहीं बताया। बस यही कहा कि तुम खुद अपनी आँखों से देख सुन लो। भला ऐसी क्या बात हो सकती है जिसे अपनी आँखों और कानों से देखने सुनने की बात की उसने ?"

" ये तो वहाँ जाकर ही पता चलेगा अंकल। " मैने कहा __" मेरा ये दोस्त ऐसा है कि मेरे बारे में कभी भी अहित नहीं सोच सकता। यही वो दोस्त है जिसने अब तक मुझे हवेली में रहने वाले लोगों की पल पल की ख़बर दी। चाचा जी जब आप यहाँ आ रहे थे तब भी इसी ने फोन करके मुझे बताया था कि आप यहाँ आ रहे हैं। हवेली में कुछ बात हो गई थी जिसकी वजह से हवेली में उस समय तनाव हो गया था। "

" कोई भी वजह हो तू गाँव नहीं जाएगा मेरे बच्चे। " माँ की आँखों में आँसू आ गए _" मैं तुझे नहीं जाने दूँगी। तू यहीं मेरी नज़रों के सामने ही रहेगा। "

" आपकी इजाज़त के बिना तो मैं वैसे भी कहीं नहीं जाऊँगा माँ। " मैने माँ की आँखों से आँसू पोंछते हुए कहा __" लेकिन ये तो आपको भी पता है न कि जो खेल शुरू हो चुका है उसको अंजाम तक ले जाना मेरा संकल्प है और फर्ज़ भी। आपका बेटा न पहले कायर और बुजदिल था और ना ही अब है। उन्होंने धोखे से हम पर वार किया था जबकि मैं सामने से उनके सीने पर वार करूँ गा। "

" ऐसा ही होगा विक्रम बेटे। " सुंदर चाचा ने कहा __" मुझे सारी सच्चाई का भाभी से पता चल चुका है। इस लिए अब इस लड़ाई में मैं भी तुम्हारे साथ हूँ। बस चिंता एक ही बात की है कि तेरी चाची और तेरे भाई बहन भले ही तेरे मामा जी के यहाँ हैं लेकिन वो सुरक्षित नहीं हैं वहाँ। काश ! मुझे पता होता तो उन्हें भी अपने साथ ही ले आता यहाँ। "

" अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है भाई साहब। " उमाकांत अंकल ने कहा __" अपर्णा बहन

और उसके बच्चों को सुरक्षित यहॉ बुलाया जा सकता है। "

" वो कैसे भाई साहब ?" चाचा जी के माथे पर बल पड़ता चला गया।

" रेणुका बहन। " उमाकांत अंकल ने मॉ की तरफ देखते हुए कहा __" तुम विक्रम की ज़रा भी फिक्र मत करो। विक्रम यहॉ से गॉव ज़रूर जाएगा लेकिन अकेला नहीं। मैं विक्रम के साथ एक ऐसे शख्स को भेजूँगा जो हर पल विक्रम के साथ उसका सुरक्षा कवच बन कर रहेगा। सुंदर भाई साहब अपने ससुराल में फोन कर देंगे , और समझा देंगे कि कैसे उन लोगों को वहॉ से यहॉ आना है। "

" भैया आप भी ??" मॉ ने फिक्रमंदी से कहा __" आप भी इसे भेजने की ही बात कर रहे हैं ?"

" मेरी बहन मैने कहा न तुम विक्रम की बिलकुल भी चिंता न करो। " उमाकांत अंकल ने कहा __" विक्रम अगर तुम्हारा बेटा है और तुम्हारे प्राण उस पर बसते हैं तो ये समझ लो कि मेरे प्राण भी विक्रम पर ही बसते हैं। मैं विक्रम के ऊपर लेश मात्र का भी खतरा नहीं चाह सकता। मगर मैं ये भी जानता हूँ कि विक्रम के सामने प्यार और ममता की दीवार खड़ी करके उसे उसके कर्तब्य पथ पर जाने से रोंकना भी उचित नहीं है। खतरा तो इंसान के जीवन का एक हिस्सा है बहन। इंसान का हर दिन एक नया जन्म होता है और हर दिन एक मृत्यु होती है। सुबह की पहली किरण के साथ ही इंसान के नये जीवन की शुरूआत हो जाती है और फिर जब इंसान रात में सो जाता है तो वह एक तरह से मृत समान ही हो जाता है। ख़ैर , मैं ये कह रहा हूँ कि तुम अपने इस भाई पर यकीन रखो। मैं विक्रम पर किसी भी तरह का संकट नहीं आने दूँगा। "

उमाकांत अंकल की बात सुन कर मॉ कुछ न बोली। बस ऑखों में नीर भरे देखती रही उन्हें।

" विक्रम तुम जाने की तैयारी करो। " उमाकांत अंकल ने कहा __" तब तक मैं भी उस शख्स को फोन कर के बुला लेता हूँ और तुम दोनो के लिए ट्रेन की टिकट का भी इंतजाम कर देता हूँ। "

उमाकांत अंकल की बात सुन कर मैने मॉ की तरफ देखा। मॉ ने अपने सिर को हल्का सा हिला कर मुझे जाने की इजाज़त दे दी। मैं तुरंत ही उठ कर अपने कमरे की तरफ तेज़ी से बढ़ गया। लगभग पन्द्रह मिनट बाद मैं तैयार होकर तथा एक छोटे से पिट्ठू बैग में कुछ कपड़े व कुछ ज़रूरी चीज़ें डाल कर कमरे से बाहर आ गया।

कमरे से बाहर आकर मुझे निशा का ख़याल आया। मैं उसके कमरे की तरफ बढ़ गया। दरवाजे को बाहर से नॉक कर उसे आवाज़ दी मगर अंदर से कोई प्रतिक्रिया न हुई। मैंने दरवाजे को अंदर की तरफ धकेला तो वो खुलता चला गया। कमरे के अंदर दाखिल होकर मैने देखा कि निशा बेड पर करवॅट लिए सो रही थी। सोते हुए वो बिलकुल मासूम सी बच्ची लग रही थी। मुझे उस पर बड़ा प्यार आया। मैने झुक कर उसके माथे पर हल्के से चूॅमा और फिर झुके हुए ही कहा__"अपना ख़याल रखना गुड़िया। मैं गॉव जा रहा हूँ अभी। जल्द ही वापस आऊँगा।"

इतना कह कर मैंने एक बार फिर से उसके माथे को चूमा फिर पलट कर कमरे से बाहर आ गया। इस बात से अंजान कि मेरे बाहर आते ही निशा ने अपनी ऑखें खोल दी थी। उन समंदर सी गहरी ऑखों में ऑसू तैर रहे थे।

ड्राइंग रूम में जब मैं पहुॅचा तो देखा एक अंजान व्यक्ति एक तरफ सोफे पर बैठा था। दिखने में हट्टा कट्टा था। ऊम्र यही कोई तीस या पैंतीस के बीच रही होगी उसकी। चेहरे पर पत्थर जैसी कठोरता विद्यमान थी। जबड़े कसे हुए लग रहे थे।

" विक्रम बेटा इनसे मिलो। " मुझे देखते ही उमाकांत अंकल ने उस व्यक्तिा की तरफ इशारा करते हुए कहा __" ये हैं अमर चोपड़ा। ये काफी अच्छे मार्शल आर्टिस्ट हैं। ये सबको सिक्योरिटी प्रोवाइड करते हैं। मैने इन्हें सबकुछ समझा दिया है। अब से ये हर पल तुम्हारे साथ तुम्हारा साया बन कर रहेंगे। "

" ओह हैलो। " मैने कहने के साथ ही उसकी तरफ हैण्ड शेक करने के लिए हाथ बढ़ाया। उसने भी हैलो करते हुए मुझसे हाथ मिलाया। उसके हाथ मिलाने से ही मुझे महसूस हो गया कि ये बंदा काफी ठोस व मजबूत है।

ख़ैर सबसे आशीर्वाद लेकर मैं बाहर की तरफ चल दिया। मेरे साथ ही बाकी सब भी बाहर आ गए। कार की तरफ जाने से पहले मॉ ने मुझे अपने सीने से लगा कर प्यार दिया। अमर ने कार की ड्राइविंग सीट संभाली। जबकि मैं और उमाकांत अंकल कार की पिछली सीट पर बैठ गए। उसके बाद कार रेलवे स्टेशन की तरफ तेज़ी से बढ़ चली। उमाकांत अंकल मेरे साथ इस लिए थे ताकि वापसी में वो स्टेशन से कार वापस ला सकें।

रेलवे स्टेशन पहुॅच कर मैने उमाकांत अंकल को वापस घर जाने का कह दिया। उन्होंने मुझे कुछ हिदायतें दी और शुभकामनाएॅ भी। उनके जाने के बाद मैं और अमर प्लेटफार्म की तरफ बढ़ गए। प्लेटफार्म में जब हम पहुॅचे तो ट्रेन जाने ही वाली थी। इस लिए हम दोनो एसी फर्श्ट क्लास की तरफ दौड़ चले। कुछ ही देर में हम दोनो अपनी अपनी सीटों पर आ गए थे।

कॉलेज में हुई घटना से मानुषी मानसिक रूप से काफी दुखी हो गई थी और जिस तरह से विक्रम ने वहॉ पर आकर उसकी इज्ज़त को तार तार होने से बचाया था वो उसके लिए निहायत ही अविश्वसनीय था। उसने तो कल्पना भी न की थी कि उसके चाचा का लड़का यानी कि उसका भाई जो उमर में उससे मात्र दस दिन बड़ा था वो यहॉ पर आएगा और इस तरह से उसकी इज्ज़त को मिट्टी में मिल जाने से बचाएगा।

उसने तो मॉम डैड के मुख से अक्सर यही सुना था कि विक्रम मुंबई में किसी होटेल या ढाबे में कप प्लेट धोता होगा। मगर मुंबई के इतने बड़े कॉलेज में जहॉ पर एडमीशन लेने के लिए हाई पर्शेन्टेज मार्क्स का होना और अच्छे खासे पैसे का होना अनिवार्य था उस कॉलेज में विक्रम को एक स्टूडेंट के रूप में देख कर मानुषी के आश्चर्य की कोई सीमा न रही थी।

विक्रम को अपने इस कॉलेज में देख कर मानुषी को ये तो समझ में आ गया था कि उसके मॉम डैड विक्रम के बारे में जो सोच और विचार रखे हुए हैं वो सिरे से ही ग़लत है। आज कॉलेज में हुई घटना के बाद मानुषी जैसे पत्थर की मूर्ति में परिवर्तित हो गई थी। उसने देखा था कि कैसे विक्रम ने उन लड़कों को दो मिनट में धूल चटाया था उसके बाद उसने उसका दुपट्टा उसे लौटाया था। किन्तु जब उसने देखा कि जिसे वह दुपट्टा दे रहा था वो उसी की चचेरी बहन थी तो उसने तुरंत उससे मुह फेर लिया था और उसके पास से चला गया था।

मानुषी को तो काफी देर तक कुछ समझ न आया था कि वह क्या करे? वो तो बुत बन गई थी। अपने भाई के सामने उसकी स्थित दो कौड़ी की न रह गई थी। उस भाई के सामने जिसे उसके मॉम डैड दो कौड़ी का भी नहीं समझते थे और वो खुद भी कभी उसे अपने भाई का दर्जा नहीं देती थी।

काफी देर बाद जब मानुषी की तंद्रा टूटी तो वह बदहवास सी होकर कंटीन की तरफ खिंची चली गई थी। मगर कंटीन में जो नज़ारा उसे देखने को मिला उसने उसे और भी ज्यादा हैरान कर दिया। जिस विक्रम को वो आज तक एक सीधा सादा और दो कौड़ी का भी नहीं समझती थी वो आज इतना खतरनाक दिख रहा था कि गफूर खान के हट्टे कट्टे भाई को अधमरा कर दिया था। उसकी ऑखों के सामने उसने इकबाल को पहले तो अधमरा किया और फिर उसे खुद ही गफूर के साथ हॉस्पिटल भी ले गया।

कॉलेज में पहले दिन ही इस तरह की घटना से सनसनी सी फैल गई थी। वो खुद भी मानसिक रूप से ब्यथित थी इस लिए वह कॉलेज से सीधा अपनी बड़ी मौसी अस्मिता के घर चली गई थी। इस वक्त वह अपने कमरे में बेड पर पड़ी हुई थी। उसकी ऑखें ऊपर छत पर घूम रहे पंखे को अपलक देखे जा रही थी।

मानुषी की ऑखों के सामने बार बार वही मंज़र आ रहा था। उसे अभी भी यकीन नहीं हो रहा था कि वो विक्रम ही था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसने खुली ऑखों से कोई ख्वाब देखा था। मगर हकीक़त उसे अच्छी तरह पता थी। कॉलेज से जल्दी आ जाने पर उसकी मौसी ने पूछा था कि इतना जल्दी कॉलेज से कैसे आ गई वह? मगर उसने गोल मोल जवाब दे दिया था और सीधा अपने कमरे में बेड पर लेट गई थी।

वह विक्रम से नफ़रत तो नहीं करती थी किन्तु हॉ उसे वह अपना भाई भी नहीं मानती थी और ना ही उसकी नज़र में उसकी कोई अहमियत थी। उसके मॉम डैड बचपन से ही ये हिदायत देते थे कि विक्रम, निशा और उसके मॉ बाप अच्छे लोग नहीं हैं। इनसे न कभी बात करना और ना ही कभी इनके पास जाना। ये हमारे कुछ नहीं लगते हैं। बचपन से एक ही पाठ पढ़ाया गया था इन्हें। समय के साथ साथ उसी तरह की सोच भी बन गई थी इनकी। हालात ऐसे बनाए गए थे कि इन लोगों ने कभी ये सोचा ही नहीं कि हम जिनके बारे में ऐसी धारणा बनाए बैठे हैं वो वास्तव में वैसे हैं भी या नहीं? समय गुज़रा और फिर वो सब हादसे हुए जिनसे इनकी सोच में और भी ज्यादा वो सब बातें बैठ गईं।

मगर आज के हादसे ने मानुषी के अस्तित्व को हिला कर रख दिया था। उसे उस सोच और धारणा के महासागर से बाहर निकाल दिया जिस महासागर में आज तक वो डूबी हुई गोते लगा रही थी। कहते हैं कि समय हमेशा एक जैसा नहीं रहता। समय बदलता रहता है और बदलते हुए समय के साथ ही साथ इंसान की सोच भी बदलती रहती है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो एक ही बात को गॉठ बॉध कर जीवन भर ढोते रहते हैं। उन्हें किसी की बात सही नहीं लगती। वो हमेशा अपनी ही सोच को यथार्थ और हकीक़त मान कर जीते हैं। उन्हें अपनी सोच और धारणा के ग़लत होने का तब पता चलता है जब वक्त खुद उन्हें आईना दिखाता है या एहसास कराता है।

मानुषी के पास आज वही वक्त आईना दिखाने आया था और आईना दिखा कर उसने उसे एहसास करा दिया था कि अब तक वो कितना ग़लत थी जो अपने माता पिता के द्वारा मिली सीख और निर्देशों पर चल रही थी। वक्त ने आकर उसे आईना दिखाया, एहसास कराया और उससे एक सवाल भी कर गया कि 'अगर ये इतना ही बुरा होता तो आज किसी कॉलेज में किसी लड़की की इज्ज़त बचाने के लिए इतनी भीड़ में से अकेला नहीं आता। ये तो उसे बाद में पता चला कि वो लड़की कोई और नहीं बल्कि उसकी बहन ही थी। अपनी जान को खतरे में डाल कर आज के युग में कौन किसी के लिए ऐसा करता है? ये तो वही कर सकता है जो सच्चा होता है और जो किसी बेकसूर व मजलूम पर अत्याचार होते नहीं देख सकता। बल्कि अत्याचार करने वाले से भिड़ जाता है फिर चाहे भले ही खुद उसकी जान ही क्यों न चली जाए।

मानुषी की ऑखों के सामने बचपन से लेकर अब तक की सारी यादें किसी फिल्म की तरह चलने लगी। उसे याद आया कि एक बार हवेली में उससे एक कीमती मूर्ति गिर कर टूट गई थी, उस वक्त मानुषी और जयदीप ही थे। आवाज़ सुन कर विक्रम भी आ गया था। वो मूर्ति के टुकड़ों को पास से जाकर देखने लगा था। उसी वक्त शिवम चाचा और गीता बुआ भी आ गई थी। शिवम चाचा ने मूर्ति को टूट कर बिखरी हुई देख कर पूछा था कि ये किसने तोड़ा तो जयदीप जो कि छोटा ही था उस वक्त उसने भोलेपन में डर की वजह से तुरंत मानुषी की तरफ उॅगली कर दिया था। मगर तभी विक्रम ने कहा था कि उससे ही गिर कर टूट गई थी वो मूर्ति। उसकी बात सुनकर शिवम चाचा ने विक्रम की काफी ज्यादा पिटाई कर दी थी। विक्रम पिटता रहा मगर मुख से ये न बताया था कि मूर्ति असल में मानुषी से टूटी थी।

ज़ोरदार पिटाई के चलते विक्रम की हालत ख़राब हो गई थी, जबकि वो और उसके भाई बहन उसके पिट जाने पर बहुत खुश थे। एक बार सत्यम सिंह की जेब से जयदीप ने पैसे चुरा लिए थे और चुराकर जयदीप ने कमरे में सो रहे विक्रम की शर्ट की जेब में वो पैसा डाल दिया था। ये सब सिर्फ इस लिए मिली भगत द्वारा किया गया था ताकि विक्रम की फिर से पिटाई हो और वही हुआ भी। जयदीप मानुषी को लेकर अपने बाप के पास गया और उससे बोला कि डैड विक्रम ने आपकी जेब से पैसा चुराया है जिसे उसने अपनी ऑखों से देखा है। बस फिर क्या था सत्यम सिंह को तो बहाना चाहिए होता था शिवम सिंह और उसके बच्चों को उल्टा सीधा बोलने के लिए। तलाशी में वो पैसा विक्रम की शर्ट की जेब में मिल ही गया। उसके बाद शिवम सिंह ने सोते हुए विक्रम की पिटाई शुरू कर दी। बेचारे को समझ ही न आया था कि वो किस बात पर मार खा रहा था। जबकि उसकी पिटाई से मानुषी जयदीप और साक्षी ये तीनों

बड़ा खुश हो रहे थे।

ऐसी बहुत सी बातें थी जो इस वक्त मानुषी की ऑखों के सामने घूम रही थी। विक्रम में एक खासियत ये थी कि वो अपनी सफाई में कभी कुछ नहीं बोलता था। मार खाने के बाद और इतना ज्यादा जलील होने के बाद भी वह इन लोगों के साथ खेलने के लिए आ जाता था। ये अलग बात थी कि ये लोग उसे दुत्कार कर भगा देते थे।

मानुषी को पता ही नहीं चला कि कब उसकी ऑखों में ऑसू भर आए थे। पता तो तब चला जब वो ऑसू दोनो ऑखों की कोरों से बहते हुए कानों गिरे। एक हूक सी उठी दिलो दिमाग़ में उसके। मनो मस्तिष्क झनझना कर रह गया। भावनाओ और जज़्बातों का एकाएक ही तीब्र तूफान उठ खड़ा हुआ। हृदय का जब परिवर्तन होता है तो एक नये युग का प्रारंभ हो जाता है। परिवर्तन अगर नफ़रत के लिए होता है तो बहुत जल्द एक बड़े अनिष्ट की नियति बन जाती है और अगर प्रेम के लिए होता है तो एक नया संसार बनने लगता है।

" मुझे माफ़ कर दे भाई। " भावना या जज़्बात जब प्रबल हो जाते हैं तो कोई धैर्य कोई संयम नहीं हो सकता। बल्कि हर दरो दीवार को तोड़ते हुए हृदय में ताण्डव करते हुए जज़्बात ऑखों के रास्ते से ऑसू बन कर बहने लग जाते हैं ____" माफ़ कर दे मुझे। कितना ग़लत सोचती थी आज तक मैं तेरे बारे में। मगर तू तो पहले भी हीरा था भाई और आज भी हीरा है। बचपन से लेकर आज तक हमेशा तुझे जलील किया अपमानित किया और न जाने कैसे कैसे इल्ज़ाम लगा कर तुझे तेरे ही पिता जी से पिटवाया। कोई इतना बुरा कैसे हो सकता है भाई ? और तू इतना अच्छा कैसे हो सकता है ? आज जिस तरह से तूने मुझे अनदेखा कर के अजनबीपन दिखाया उसने मुझे समझा दिया है भाई कि मेरी औकात तेरे सामने कुछ भी नहीं है। "

मानुषी खुद से ही बड़बड़ाये जा रही थी और ऑसू बहाए जा रही थी। अभी वह रो ही रही थी कि सहसा किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा। वह बुरी तरह उछल पड़ी। पलट कर देखा तो बगल से ही उसकी मौसी की दूसरी बेटी श्रुति उसकी तरफ झुकी हुई खड़ी थी।

" दीदी आप। " श्रुति पर नज़र पड़ते ही मानुषी लगभग हड़बड़ा गई थी।

" हॅू तो मैं ही। " श्रुति ने मुस्कुराते हुए कहा __" मगर तू चाहे तो कुछ और भी समझ सकती है। ख़ैर , ये बता कि कौन है वो ?"

" क क्या मतलब ??" मानुषी बुरी तरह चौंकी थी।

" मतलब कि वो कौन है जिसकी याद में तू ऑसू बहा रही है ?" श्रुति कहने के साथ ही बेड पर बैठ गई ___" तू मुझे बता सकती है मानुषी । मैं तेरी बड़ी बहन से कहीं ज्यादा तेरी दोस्त की तरह हॅू। अब चल बता कि कौन है वो जिसने मेरी प्यारी सी दोस्त की ऑखों को रुलाया है ?"

" ऐसा कुछ नहीं है दीदी। " मानुषी ने कहा _" ये ऑसू तो पश्चाताप के हैं। आज तक जिसे अजनबी समझकर उसे जलील और दुत्कारती रही थी उसी ने आज मेरी इज्ज़त बचाई दीदी। "

" क्या ???" श्रुति उछल पड़ी __" ये तू क्या कह रही है मानुषी ? क्या हुआ था आज कॉलेज में तेरे साथ ? सच सच बता मुझे। "

मानुषी ने उसे सब कुछ बता दिया कि कैसे गफूर खान नाम का लड़का अपने कुछ दोस्तों के साथ उसकी रैगिंग कर रहा था। उसने उसे कहा था कि वो उसके साथ साथ उसके दोस्तों के होठों को भी चूमे। उसकी इस बात पर उसने गफूर खान को थप्पड़ मार दिया था। जिससे गफूर खान ने सबके सामने उसकी इज्ज़त लूटने की कोशिश की। तभी उस भीड़ से निकल कर कोई आया और उसने गफूर खान के साथ साथ उसके सभी दोस्तों की खूब पिटाई कर उसकी इज्ज़त को लटने से बचाया था। मानुषी ने सारी बात श्रुति को बता दी। मानुषी की सारी बातें सुनकर श्रुति हैरान रह गई थी।

" तो वो लड़का तेरा चचेरा भाई है ?" श्रुति ने कहा __" जिसे आज तक तू भाई नहीं मानती थी। बात कुछ समझ में नहीं आई मानुषी । भला ऐसा तू कैसे कर सकती है ?"

" वही तो दीदी। " मानुषी की ऑखें छलक पड़ीं __" अपने फरिश्ता जैसे भाई के साथ मैने आज तक वो सब कैसे किया ? आज की उस घटना ने मुझे एहसास करा दिया दीदी कि कितनी बुरी हूँ मैं। जिसकी ऑखों में अपने लिए हमेशा प्यार और सम्मान देखा था आज उसी ऑखों में अपने लिए हिकारत के भाव देखा है मैने। वो ऐसे मुह फेर कर चला गया था जैसे उससे मेरा कोई दूर दूर नाता नहीं है। उस वक्त मुझे पहली बार लगा दीदी कि मैं उसकी नज़र में क्या रह गई हूँ। सच ही तो है , आख़िर उसकी नज़र में मेरी कोई औकात हो भी कैसे सकती है ? मैने और मेरे मॉ बाप ने हमेशा उसे और उसके मॉ बाप को तुच्छ समझा था। "

" ये तू क्या कह रही है मानुषी ?" श्रुति बुरी तरह हैरान थी , बोली __" ये तू कैसी बातें कर रही है ? आख़िर बात क्या है ?"

" सारी बातें तो मुझे भी नहीं पता दीदी लेकिन इतना समझ गई हूँ कि बचपन से मेरे मॉम डैड ने जिनके बारे में ऐसा करने की सीख दी थी वो ग़लत था। " मानुषी ने कहा __" किसी के बारे में खुद भी तो जॉचा परखा जाता है न ? ऐसा तो नहीं होना चाहिए न कि हमें किसी ने जो कुछ बता दिया उसे ही सच मान लें और फिर सारी ऊम्र उसी को लिए बैठे रहें। कीचड़ अगर इतना ही गंदा होता तो उसमें कमल जैसा फूल कभी नहीं खिलता। गंदगी तो वहॉ भी होती है दीदी जिस जगह को लोग पाक़ समझते हैं। "

" मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा मानुषी कि तू ये सब क्या कहे जा रही है ?" श्रुति ने उलझनपूर्ण भाव से कहा था।

" बताऊँगी दीदी। " मानुषी ने कहा __" सब कुछ बताऊँगी आपको। लेकिन इस वक्त नहीं। इस वक्त मुझे अकेला छोंड़ दीजिए। मुझे अकेला छोंड़ दीजिए दीदी। "

कहने के साथ ही मानुषी फूट फूट कर रोने लगी थी। श्रुति ने उसे खींच कर अपने से छुपका लिया था।

४१

उथर हवेली में।

साक्षी जब हवेली पहुॅची तो शाम हो चुकी थी। सत्यम सिंह हवेली में नहीं था बल्कि फैक्टरी में था। फैक्टरी का काम लगभग पूरा ही हो गया था। बस कुछ ही दिनों में फैक्टरी चालू हो जानी थी। साक्षी अंदर आते ही अपने कमरे की तरफ बढ़ गई। किचेन में सोनिया और गीता डिनर तैयार कर रही थी।

कमरे में पहुॅच कर साक्षी ने अपने कपड़े बदले और फिर बाथरूम की तरफ बढ़ गई। बीस मिनट बाद जब वह बाथरूम से बाहर आई तो उसकी नज़र बेड पर पड़े आई फोन पर पड़ी। आई फोन पर किसी का कॉल आ रहा था। फोन साइलेन्ट मोड पर था।

साक्षी टॉवेल को अपने संगमरमरी बदन पर लपेट कर तेज़ी से बेड के पास पहुॅची और फोन को उठा कर स्क्रीन पर फ्लैश कर रहा नंबर को देखा। नंबर को देख कर उसके होठों पर हल्की सी मुस्कान उभ आई।

" हैलो। " फिर उसने कॉल रिसीव करते ही कहा।

"..... । " उधर से कुछ कहा गया।

" क्या सच कह रहे हो तुम ?" साक्षी के चेहरे पर खुशी के भाव उभर आए थे।

".....। " उधर से फिर कुछ कहा गया।

" ठीक है भाई। " साक्षी ने धीमे स्वर में कहा __" तुम उसे रिसीव कर लेना और अपने साथ ही पहले घर ले जाना। उसके बाद मैं तुम्हें फोन करू गी और बताऊॅगी कि अब तुम उसे अपने साथ वहॉ पर ले आओ। "

".....। " उधर से फिर कुछ कहा गया।

" डोन्ट वरी भाई। " साक्षी ने कहा __" मैं सब देख लूॅगी। चलो अब रखती हूॅ फोन। "

साक्षी ने कहा और फोन कट कर दिया। फिर मन ही मन कहा__"आजा मेरे भाई। तेरी प्राची तुझे बस एक बार देखने के लिए ही जिंदा है। अपने आपको संभालना मेरे भाई। मैं जानती हूॅ कि वो लम्हॉ तेरे लिए बेहद दर्दनाक होगा। मगर खुद को संभालना भाई। काश! ये सब न हुआ होता। हे भगवान ये तूने मेरे भाई के साथ क्या कर दिया है। कितना दुख दर्द देगा तू उसे? नहीं नहीं, मैं अपने भाई को कोई दुख दर्द सहने नहीं दूॅगी। उसको अपने सीने से लगा कर खूब प्यार दूॅगी मैं। अब तक तो मैने उसे नफ़रत ही दी थी लेकिन अब बेइंतेहां प्यार दूॅगी उसे। हॉ हॉ खूब प्यार दूॅगी उसे।"

ऑखों से छलक आए ऑसुओं को पोंछा साक्षी ने और फिर आलमारी की तरफ बढ़ गई।

आलमारी से रात में पहनने वाले कपड़े निकाल कर उसने उन्हें पहना और फिर कमरे से बाहर आ गई।

रात में सबने एक साथ डिनर किया। साक्षी ने देखा कि उसका भाई जयदीप भी आ गया था। वह उससे बड़े प्यार व चापलूसी के से अंदाज़ में मिला था। साक्षी को उसे और उसके इस अंदाज़ पर आज पहली बार नफ़रत सी हुई थी। हलाँकि वो जैसा भी था उसका सगा भाई ही था। सत्यम सिंह भी फैक्ट्री से आ गया था। सबने डिनर किया और इसी बीच थोड़ी बहुत बातें भी हुईं। उसके बाद सब अपने अपने कमरों में सोने के लिए चले गए।

उस वक्त रात के बारह बजे के आस पास का वक्त था। हवेली में हर तरफ सन्नाटा छाया हुआ था। हवेली के अंदर अंधेरा तो था मगर पूरी तरह नहीं क्योंकि खिड़कियों से चॉद की रोशनी और अंदर लगे नाइट बल्ब की धीमी रोशनी थी।

पार्टीशन की दीवार पर लगे दरवाजे को इस तरह खुला देख कर साक्षी के पुलिसिया मन में सवाल उभरा कि आज ये दरवाजा इस वक्त खुला क्यों है? आम तौर पर वह बंद ही रहता था। उस तरफ का हिस्सा शिवम चाचा का था। पुलिसिया दिमाग़ में जब कोई सवाल उभरता है तो वह उस सवाल का जवाब तुरंत ही खोजने लग जाता है।

साक्षी सीढ़ियों की तरफ से पलट कर पार्टीशन के उस खुले हुए दरवाजे की तरफ बढ़ चली। कुछ ही पल में वह दरवाजे के पास पहुॅच गई। कुछ पल दरवाजे के पास खड़े होकर उसने उस जगह का मुआयना किया फिर अपना हाथ बढ़ा कर उसने दरवाजे का दाहिने साइड वाला पल्ला पकड़ कर आगे की तरफ पुश किया। दरवाजे का वो पल्ला बेआवाज़ खुलता चला गया। अब एक पल्ले में ही इतना स्पेस बन गया था कि एक आदमी आराम से इधर से उस तरफ जा सकता था। साक्षी ने वही किया। वो उस स्पेस से उस तरफ दाखिल हो गई।

उस तरफ जाकर उसने बारीकी से हर तरफ का मुआयना किया और फिर आगे की तरफ बढ़ गई। आगे बढ़ते हुए साक्षी ड्राइंग रूम की तरफ आ गई। यहॉ पर भी नाइट बल्ब का प्रकाश था। यहॉ पर भी सन्नाटा फैला हुआ था। ड्राइंग रूम में आकर साक्षी खड़ी हो गई। उसे समझ नहीं आ रहा था यहॉ पर कौन आया होगा इस वक्त और किस लिए? जबकि इस तरफ आने का कोई सवाल ही नहीं था। ड्राइंग रूम के उस तरफ ऊपर जाने के लिए वैसी ही सीढ़ियॉ बनी हुई थी जैसी इस तरफ बनी हुई थी। ड्राइंग रूम के के पीछे साइड एक तरफ किचेन था और एक साइड की तरफ वो कमरा था जिसमें दादा दादी रहते थे। साक्षी की निगाह जब किचेन से होते हुए जब दूसरी साइड दादा दादी के कमरे की तरफ गई तो वह चौंक गई।

दादा दादी के कमरे में इस वक्त बल्ब की पर्याप्त रोशनी हो रखी थी जोकि ऊपर छत के पास ही बने रोशनदान से समझ में आ रही थी। कमरे के दरवाजा बंद था। साक्षी ये देख कर हैरान थी कि इतनी रात को वहॉ उस कमरे के अंदर कौन हो सकता है? जबकि उसे जहॉ तक पता था इस तरफ के हिस्से पर कोई नहीं आता था। शिवम सिंह के बीवी बच्चों को हवेली से निकालने के बाद ये हिस्सा पूरी तरह बंद ही रहता था। फिर आज इस वक्त यहॉ पर कौन हो सकता है? ये सवाल ऐसा था जो साक्षी के मस्तिष्क में कत्थक सा करने लगा था।

अपने मन उठे इस सवाल और खुद की उत्सुकता को मिटाने के लिए साक्षी उस कमरे की तरफ बहुत ही संतुलित कदमों से बढ़ गई। कुछ ही पलों में वह उस कमरे के दरवाजे के पास पहुॅच गई। उसका दिल अनायास ही ज़ोरों से धड़कने लगा था। तभी उसके कानों में कमरे के अंदर मौजूद व्यक्ति की आवाज़ पड़ी। उस आवाज़ को सुन कर साक्षी बुरी तरह चौंकी। ये आवाज़ उसकी अपनी मॉ सोनिया की थी। साक्षी ने दरवाजे से अपने कान लगा दिये।

" आहहहहह ऐसे ही मेरे बेटे। " अंदर से सोनिय◌ा की मादकता से भरी हुई आवाज़ उभर◌ी ___" ऐसे ही आहहहह हचक हचक के ठोक मुझे। आज बहुत दिनों बाद दो दो लिंग का मज़ा मिला है मुझे। ओहे भड़वे हरामी साले नीचे से पेल न मेरी नितंब में अपना लिंग । आहहहहह हाय बड़ा मज़ा आ रहा है रे। "

" ये लो मॉम आज डैड के साथ साथ अपने इस बेटे का भी लिंग लो अपनी योन◌ी में। " जयदीप की आवाज़ आई __" आज मेरी वर्षों की वो ख्वाहिश पूरी हो रही है। थैंक्स डैड जो आपने मुझे शहर से बुला लिया और आज मुझे अपनी मॉम को ठोक ने का सौभाग्य दिया। "

" थैंक्स की कोई बात नहीं है बेटे। " सत्यम सिंह की आवाज़ उभर◌ी __" ये तो तेरे मॉम की ही इच्छा थी कि तू भी इसे रगड़ कर ठोक े। "

" अब बातें मत करो तुम दोनो। " सोनिय◌ा की आवाज़ आई __" मुझे रगड़ रगड़ कर ठोक ना शुरू करो वरना तुम दोनो के लिंग को काट कर फैंक दूँगी। "

" ओके मॉम। " जयदीप ने कह◌ा __" तो फिर ये लो। "

" आहहहहहह शशशशशश हाय ऐसे ही ठोक◌ो मुझे। " सोनिय◌ा की आहें और सिसकारियॉ गूजने लगी अंदर __" पूरी रात मुझे आगे पीछे से ठोक◌ो । फाड़ कर रख दो मेरी योन◌ी और नितंब को। हाय रे कितना मज़ा आ रहा है। काश ! एक और लिंग होता तो उसे अपने मुह में भर लेती मैं। "

दरवाजे पर कान लगाए खड़ी साक्षी के पैरों तले दूर दूर तक ज़मीन का नामो निशान न था। दिलो दिमाग़ में जैसे सारा आसमान भर भरा कर गिर पड़ा था। मनो मस्तिष्क सुन्न सा पड़ता चला गया। उसे लगा कि उसके पैरों में कोई जान ही न बची हो। उसे चक्कर सा आने लगा था। बड़ी मुश्किल से उसने खुद को संभाला। ऑखों ने ऑसुओं की बाढ़ सी कर दी। कमरे के अंदर इतना बड़ा पाप हो रहा था। एक मॉ अपने ही बेटे से नाजायज संबंध बना रही थी वो भी अपने पति की सहमति से। साक्षी को यकीन नहीं हो रहा था कि ये उसके मॉ बाप और भाई थे।

अंदर से आती मादक सिसकारियों की आवाज़ें उसके कानों को छलनी करती जा रही थीं। हवस और वासना का इतना भयावह चेहरा उसने आज अपने ही पैदा करने वालों के द्वारा देखा था। सहसा उसके मन में ये विचार उठा कि नहीं नहीं ये मेरे मॉम डैड और भाई नहीं हो सकते बल्कि ये कोई और ही हैं। कोई छलावा है या फिर कोई ख्वाब है।

पल भर में पगलाई सी साक्षी ने अपने हाथ से बहुत ही धीमे और संतुलित अंदाज़ से दरवाजे को अंदर की तरफ धकेला। दरवाजा बेआवाज़ खुलता चला गया। दरवाजे पर बस थोड़ी सी ही झिरी बनाकर साक्षी ने अंदर की तरफ देखा। मगर उस झिरी में उसे कुछ नज़र न आया बल्कि ये ज़रूर हुआ कि अंदर से आती हुई आवाजें ज़रा तेज़ हो गई थी।

साक्षी ने दरवाजे को थोड़ा और अंदर की तरफ धकेला। अपने सिर को दरवाजे के अंदर की तरफ ले जाकर उसने अंदर आवाज़ की दिशा में देखा तो उसके होश उड़ गए। आश्चर्य और अविश्वास से उसकी ऑखें फटी की फटी रह गई थी। अंदर बेड पर उसके मॉम डैड व भाई पूरी तरह नंगी हालत में थे। सबसे नीचे उसके डैड थे फिर उसकी मॉम उनके ऊपर पीठ के बल लेटी हुई थी। उसकी दोनो टॉगें जयदीप के दोनो हाथो के सहारे ऊपर उठी हुई थी। जयदीप उसके ऊपर था जो कि मॉम की दोनो टॉगों को पकड़े तेज़ तेज़ धक्के लगा रहा था। नीचे से उसके डैड अपने दोनो हाथो से सोनिया की कमर को थामे धक्का लगे रहे थे। ये हैरतअंगेज नज़ारा देख कर साक्षी पत्थर बन गई थी। होश तब आया जब उसकी मॉम की ज़ोरदार आह की आवाज़ उसके कानों में पड़ी। साक्षी ने तुरंत ही अपना सिर अंदर से बाहर कर लिया। दरवाजे को उसी तरह बंद कर वह पलटी और ऑसुओं से तर चेहरा लिए वह दरवाजे से हट गई।

कुछ ही देर में वह अपने कमरे मे पहुॅच गई। वह यहॉ तक कैसे आई थी ये वही जानती थी। उसके पैर इतने भारी हो गए थे कि उससे उठाए नहीं जा रहे थे। बेड पर औंधे मुह गिर कर वह ज़ार ज़ार रोये जा रही थी। उसे लग रहा था कि वो क्या कर डाले। उसके दिलो दिमाग़ में अपने माता पिता और भाई के लिए नफ़रत व घृणा भर गई थी। वह एक बहादुर लड़की थी। उसने अपने आपको संभाला और तुरंत बेड से उठ बैठी। चेहरा पत्थर की तरह कठोर हो गया उसका। बेड से उतर कर वह आलमारी की तरफ बढ़ी। आलमारी खोल कर उसने अपना सर्विस रिवाल्वर निकाला। लॉक खोल कर उसने चैम्बर को देखा तो खाली था। उसने तुरंत ही अंदर लॉकर से गोलियॉ निकाली और उसमें पूरी छहो गोलियॉ भर दी। उसके बाद वह चेहरे पर ज़लज़ला लिए दरवाजे की तरफ बढ़ी ही थी कि किसी की आवाज़ सुन कर चौंक पड़ी।

आवाज़ की दिशा में साक्षी ने पलट कर देखा तो बगल से दीवार से सट कर रखे ड्रेसिंग टेबल के आदमकद आईने में खुद को एक अलग ही रूप में खड़े पाया। ये देख कर साक्षी के चेहरे पर हैरत व अविश्वास के मिले जुले भाव उभरे। आदमकद आईने में साक्षी का अक्श एक अलग ही रूप और अंदाज़ में खड़ा था।

" ये तुम क्या करने जा रही हो साक्षी ?" आदम कद आईने में दिख रहे साक्षी के अक्श ने साक्षी से कहा __" क्या तुम इस रिवाल्वर से अपने मॉ बाप और भाई का खून करने जा रही हो ?"

" हॉ हॉ मैं उन हवस के पुजारियों का खून करने ही जा रही हूॅ। " साक्षी के मुख से मानो दहकते अंगारे निकले __" ऐसे नीच और घृणित कर्म करने वालों को जीने का कोई अधिकार नहीं है। आज मैं उन सबको अपने हाथो से मौत के घाट उतारूॅगी। मगर तुम कौन हो ? और मुझे रोंका क्यों ?"

" मैं तुम्हारा अक्श हूॅ। मुझे तुम अपना ज़मीर भी समझ सकती हो। और हॉ , मौत के घाट उतरना तो अब उन सबकी नियति बन चुकी है साक्षी। " अक्श ने कहा __" मगर ये नेक काम तुम्हारे हाथो नहीं होगा। "

" क्यों नहीं होगा ?" साक्षी गुर्राई __" मैं अभी जाकर उन तीनों को गोलियों से भून कर

रख दूँगी। आज मेरे हाथो उन्हें मरने से कोई नहीं बचा सकता। खुद भगवान भी नहीं। "

" क्या तुम भी अपने बाप की तरह दूसरों का हक़ छीनोगी साक्षी ?" अक्श ने कहा __" अगर ऐसा है तो तुममें और तुम्हारे बाप में क्या अंतर रह गया ?"

" ये तुम क्या बकवास कर रही हो ?" साक्षी के गले से गुस्से मे डूबा स्वर निकला __" मैं कहाँ किसी का हक़ छीन रही हूँ ?"

" तुम जिन्हें जान से मारने जा रही हो न उन सबको जान से मारने का अधिकार तुम्हारा नहीं है साक्षी। " अक्श ने कहा __" बल्कि उसका है जिसके साथ तुम्हारे बाप ने हद से कहीं ज्यादा अत्याचार किया है। हाँ साक्षी , ये सब विक्रम और उसकी माँ बहन के दोषी हैं। इस लिए इन लोगों सज़ा या मौत देने का अधिकार उनको ही है तुम्हें नहीं। अब ये तुम पर है कि तुम उनका ये हक़ छीनती हो या फिर उनका अधिकार उन्हें देती हो। "

आदमकद आईने में दिख रहे अपने अक्श की बातें सुन कर साक्षी के मनो मस्तिष्क में झनाका सा हुआ। उसे अपने अक्श की कही हर बात समझ में आ गई और समझ में आते ही उसका क्रोध और गुस्सा साबुन के झाग की तरह बैठता चला गया।

" तुम यकीनन सच कह रही हो। " साक्षी ने गहरी सास े लेते हुए कहा __" ऐसे पापियों को सज़ा या मौत देने का अधिकार सिर्फ और सिर्फ मेरे भाई विक्रम को है। मैं दुवा करती हूँ कि बहुत जल्द इन पापियों को इनके पापों की सज़ा दे मेरा भाई। जिन माँ बाप को मैं इतना अच्छा समझती थी आज उन लोगों का इतना गंदा चेहरा देख कर मुझे नफ़रत हो गई है उनसे। मुझे शर्म आती है कि मैं ऐसे पाप कर्म करने वाले माँ बाप की औलाद हूँ। लेकिन अब मैं क्या करू ?"

" समय का इन्तज़ार करो साक्षी। " अक्श ने कहा __" और इस वक्त तुम फिर से उन लोगों के पास जाओ। दरवाजे के पास कान लगा कर सुनो। हो सकता है कि कुछ ऐसा जानने को मिल जाए तुम्हें जिन चीज़ों से आज भी बेख़बर होगी तुम। "

" हर्गिज़ नहीं। " साक्षी के जबड़े सख्ती से कस गए __" मैं उन लोगों के पास उनकी गंदी रासलीला देखने सुनने नहीं जाऊँगी। "

" मैं तुम्हें उनकी रासलीला देखने सुनने को नहीं कह रही साक्षी। " अक्श ने कहा _" मैं तो बस ये कह रही हूँ कि ऐसे माहौल में इंसान के मुख से कभी कभी ऐसा कुछ निकल जाता है जिससे उसका कोई रहस्य या विक्रम ़ पता चल जाता है। ऐसा विक्रम ़ जिसे आम हालत में कोई भी इंसान अपने मुख से नहीं निकालता। "

" यकीनन , तुम्हारी बात में सच्चाई है। " साक्षी ने कहा __" ऐसा हो भी सकता है। इस लिए मैं जा रही हूँ फिर से उन लोगों के पास। "

" ये हुई न बात। " अक्श ने मुस्कुराते हुए कहा __" चलो अब मैं भी वापस तुम्हारे अंदर

चली जाती हूँ। तुम्हें सही रास्ता दिखा रही थी सो दिखा दिया और अब तुम भी ज़रा सतर्क रहना। "

साक्षी के देखते ही देखते आदमकद आईने में दिख रहा उसका अक्श आईने पर से गायब हो गया। अक्श के गायब होते ही साक्षी ने पहले एक गहरी सास ली फिर पलट कर वापस आलमारी की तरफ बढ़ी। रिवाल्बर से गोलियाँ निकाल कर उसने रिवाल्वर और रिवाल्वर की गोलियाँ अंदर लॉकर में रख कर आलमारी बंद कर दी।

इसके बाद पलट कर वह कमरे से बाहर निकल कर थोड़ी देर में फिर वहीं पहुँच गई जहाँ पर उसके माँ बाप और भाई तीनो एक साथ सहवास क्रिया कर रहे थे। साक्षी दबे पाँव कमरे के दरवाजे के पास पहुँच गई थी। अंदर से अभी भी सिसकारियों की आवाज़ें आ रही थी। साक्षी ने दरवाजे को हल्का सा खोल दिया था ताकि उसके कानों में उन लोगों के बोलने की आवाज़ स्पष्ट सुनाई दे सके।

" एक बात तो है डैड कि न आप और ना ही मैं परिवार की किसी भी औरत या लड़की को अपने नीचे लिटा नहीं सके अब तक। " जयदीप की आवाज़ आई ___" इसे हमारा दुर्भाग्य कहें या उन लोगों की अच्छी किस्मत ?"

" ये उन रंडियों की किस्मत ही है बेटे। " सत्यम सिंह ने कहा __" जो अब तक हम बाप बेटों के लिंग की सवारी न कर सकी हैं। दूसरी बात तुम्हारी इस रंडी माँ ने भी अपना काम सही से नहीं किया। वरना हम दोनो बाप बेटे रेणुका और अपर्णा की जवानी का मज़ा ज़रूर लूटते। "

" ओये भड़वे की औलाद साले कुत्ते। " सोनिया बीच में सैण्डविच बनी बोल उठी __" मैने क्या नहीं किया इन सबको जाल में फाँसने के लिए। आआआहहहह मादर--- धीरे से मसल न मेरी चूची को दर्द भी होता है मुझे। हाँ तो मैं ये कह रही थी कि क्या नहीं किया मैने। तुम्हारे ही कहने पर उस रंडी के जने शिवम को अपने हुस्न के जाल में फाँसने की कोशिश की , यहाँ तक कि एक दिन सोते समय उसके घोड़े जैसे लिंग को अपने मुह में भी भर लिया था। मगर वो कुत्ता तो हरिश्चन्द्र था। कलियुग का हरिश्चन्द्र। उसने मुझे उस सबके लिए कितना बुरा भला कहा और जलील किया था ये मैं ही जानती हूँ। उसने मुझ जैसी हूर की परी औरत को उस कुलमुही रेणुका के लिए ठुकरा दिया था। तभी तो अपने उस अपमान का बदला लेने के लिए मैने तुमसे कहा था कि अब इसको जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं है। "

" ओह माई गॉड ये तुम क्या कह रही हो मॉम ?" धक्के लगाता हुआ जयदीप हैरान होकर बोल पड़ा था ___" इसका मतलब शिवम चाचा की वो मौत नेचुरल नहीं थी ?"

" हाँ बेटे ये सच है। " नीचे से ज़ोर का शॉट मारते हुए सत्यम ने कहा __" उस हादसे के बाद हम डर गए थे कि शिवम वो सब कही माँ बाबूजी से न बता दे। इस लिए दूसरे दिन ही हम सब शहर चले गए थे। शहर आ तो गए थे मगर एक पल के लिए सुकून की सास नहीं ले पा रहे थे। हर पल यही डर सता रहा था कि शिवम वो सब माँ बाबूजी से बता देगा। उस सूरत में

हमारी इज्ज़त का कचरा हो जाता। मॉ बाबूजी के सामने खड़ा होने की भी हम में हिम्मत न रहती। इस लिए हमने तय किया कि इस मुसीबत से जल्द से जल्द छुटकारा पा लेना चाहिए। ये सोच कर मैं दूसरे दिन ही गुप्त तरीके से शहर से वापस गॉव आ गया। सोनिय ा को तुम बच्चे लोगों के पास ही रहने दिया। लेकिन अपने साथ में यहॉ से एक ज़हरीला सर्प भी ले गया मैं। मुझे पता था कि आजकल खेतों में फलों का सीजन था इस लिए मंडी ले जाने के लिए फलों की तुड़ाई चालू थी। शिवम सिंह रात में वहीं रुकता था। मैं जब गॉव पहुॅचा तो हवेली न जाकर सीधा खेतों पर ही पहुॅच गया। खेतों पर शिवम के साथ एक दो मजदूर रह रहे थे उस समय। उस रात जब मैं वहॉ पहुॅचा तो रात काफी हो चुकी थी। शिवम और दोनो मजदूर सो रहे थे। मैं सीधा शिवम के कमरे में गया और उसे पहले बेहोशी की दवा सुॅघाई। वो सोते हुए ही बेहोश हो गया। उसके बाद मैने अपने थैले से वो बंद पुॅगड़ी निकाली जिसमें मैं शहर से ज़हरीले सर्प को भर कर लाया था। शिवम के पैरों के पास जाकर मैने पुॅगड़ी का ढक्कन खोल दिया। ढक्कन खुलते ही उसमे से जीभ लपलपाता हुआ उस ज़हरीले सर्प ने अपना सिर निकाला फिर वो शिवम के पैरों और टॉगों की तरफ देखने लगा। मैने पुॅगड़ी को शिवम के पैरों के और पास कर दी। मगर हैरानी की बात थी कि वो ज़हरीला शिवम के पैरों को देखने के सिवा कुछ कर ही नहीं रहा था। ये देख कर मैने पुॅगड़ी को हल्का झटका दिया तो वो सर्प डर गया और डर की वजह से ही उसने शिवम के घुटने के नीचे दाहिनी टॉग पर काट लिया। सर्प के काटते ही मैने जल्दी से पुॅगड़ी का ढक्कन बंद कर दिया। उधर शिवम की टॉग में जिस जगह सर्प ने काटा था उस जगह दो बिंदू बन गए थे जो कि शिवम के लाल सुर्ख खून में डूबे नज़र आने लगे थे। देखते ही देखते शिवम का बेहोश जिस्म हिलने लगा। उसका पूरा जिस्म नीला पड़ने लगा। म ुह से सफेद झाग निकलना शुरू हो गया और कुछ ही देर में शिवम का जिस्म शान्त पड़ गया। मैं समझ गया कि मेरे छोटे भाई की जीवन लीला समाप्त हो चुकी है। उसके बाद मैने मृत शिवम के जिस्म को किसी तरह उठाया और कमरे से बाहर ले आया। बाहर आकर मैं शिवम को उठाये उस तरफ बढ़ता चला गया जिस जगह पर खेतों पर उस समय पानी लगाया जा रहा था। मैं शिवम को लिए उस पानी लगे खेत के अंदर दाखिल हो गया और एक जगह शिवम के मृत जिस्म को उतार कर उसी पानी लगे खेत में ऐसी पोजीशन में चित्त लेटाया कि उसके मुख पर दिख रहा झाग साफ नज़र आए। खेत के कीचड़ में लेटाने के बाद मैने शिवम के दोनो हाथ ो और पैरों में खेत का वही कीचड़ लगा दिया। ताकि लोगों को यही लगे कि शिवम खेत में पानी लगा रहा था और उसी दौरान किसी ज़हरीले सर्प ने उसे काट लिया था जिसकी वजह से उसकी मौत हो गई है। ये सब करने के बाद मैं जिस तरह गुप्त तरीके से शहर से आया था उसी तरह वापस शहर लौट भी गया। किसी को इस सबकी भनक तक नहीं लगी थी। "

दरवाजे से कान लगाए खड़ी साक्षी का चेहरा ऑसुओं से तर था। उसके चेहरे पर दुख और पीड़ा के बहुत ही गहरे भाव थे। आज उसे पता चला कि उसके मॉ बाप कितने बड़े पापी हैं। अपनी खुशी और अपने पाप को छुपाने के लिए उसके बाप ने अपने सीधे सादे और देवता समान भाई को सर्प से कटवा कर उसकी जान ले ली थी। इतना बड़ा कुकर्म और इतना बड़ा घृणित काम किया था उसके मॉ बाप ने। साक्षी को लग रहा था कि वो क्या कर डाले अपने मॉ बाप के साथ। उसे लग रहा था कि ये ज़मीन फटे और वह उसमे समा जाए। आज अपने मॉ बाप की वजह से वो अपने भाई विक्रम और उसकी मॉ बहन की नज़रों में बहुत ही छोटा और तुच्छ समझ रही थी। अभी वो ये सोच ही रही थी कि उसके कानों में फिर से आवाज़

पड़ी।

" ओह तो ये बात है डैड। " जयदीप के चकित भाव से कहा __" उसके बाद क्या हुआ ?"

" होना क्या था ?" सत्यम सिंह ने कहा _" वही हुआ जिसकी मुझे उम्मीद थी। अपने इतने प्यारे और इतने अच्छे बेटे की मौत पर माॅ बाबू जी की हालत बहुत ही ज्यादा खराब हो गई थी। सुंदर ने शहर में हमे भी शिवम की मौत की सूचना भेजवाई। उसकी सूचना पाकर हम सब तुरंत ही गाव आ गए और फिर वैसा ही आचरण और व्यवहार करने लगे जैसा उस सिचुएशन पर होना चाहिए था। ख़ैर , जाने वाला चला गया था। किसी के जाने के दुख में जीवन भर भला कौन शोग़ मनाता है ? कहने का मतलब ये कि धीरे धीरे ये हादसा भी पुराना हो गया और सबका जीवन फिर से सामान्य हो गया। मगर माॅ बाबूॅ जी सामान्य नहीं थे। बेटे की मौत ने उन दोनो को गहरे सदमें डाल दिया था। "

" तुम लोगों की ये महाभारत अगर खत्म हो गई हो तो आगे का काम भी करें अब ?" तभी सोनिया ने खीझते हुए कहा __" सारे मज़े का सत्यानाश कर दिया तुम दोनो बाप बेटों ने। "

" अरे मेरी जान सारी रात अपनी है। " सत्यम सिंह ने नीचे से अपने दोनो हाथ बढ़ा कर सोनिया की भारी स्तनों को धर दबोचा था , फिर बोला __" बेटे को सच्चाई जानना है तो जान लेने दो न। आख़िर हर चीज़ जानने का हक़ है उसे। मेरे बाद इस हवेली का अकेला वही तो वारिस है। इस घर की सभी औरतों और लड़कियों को हमारा बेटा भोगेगा प्यार से या फिर ज़बरदस्ती। "

" डैड मुझे सबसे पहले उस रंडी अपर्णा को पेलना है। " जयदीप ने कहा __" उसकी वजह से ही उस मादर--- सुंदर ने मुझे कुत्ते की तरह मारा था। इस लिए जब तक मैं उसकी उस रांड बीवी और बेटी को आगे पीछे से ठोंक नहीं लेता तब तक मुझे चैन नहीं आएगा। "

" तेरी ये ख्वाहिश ज़रूर पूरी होगी मेरे जिगर के टुकड़े। " सत्यम सिंह ने कहा __" और तेरे साथ साथ मेरी भी ख्वाहिश पूरी होगी। तेरी माॅ ने तो कोई जुगाड़ नहीं किया लेकिन अब मैं खुद अपने तरीके से वो सब करूॅ गा। हाय मेरी बड़ी बेटी साक्षी की वो फूली हुई मदमस्त नितंब और उसकी बड़ी बड़ी स्तन । कसम से बेटे जब भी उसे देखता हूॅ तो ऐसा लगता है कि साली को वहीं पर पटक कर उसे उसके आगे पीछे से पेलाई शुरू कर दूॅ। "

" यस डैड यू आर राइट। " जयदीप ने मुस्कुराते हुए कहा __" साक्षी दीदी को पेलने में बहुत मज़ा आएगा। आप जल्दी से कुछ कीजिए न डैड। "

" करूॅ गा बेटे। " सत्यम सिंह ने कहा __" मगर सोच रहा हूॅ कि उससे पहले अपनी बहन गीता को पेल दूॅ। बेचारी लिंग के लिए तड़प रही होगी। उसके पति और उसके ससुराल वालों ने उसे बाॅझ समझकर घर से निकाल दिया है। इस लिए मैं सोच रहा हूॅ कि उसे अपने बच्चे की माॅ बना दूॅ और फिर से उसे उसके ससुराल भिजवा दूॅ। "

" ये तो आपने बहुत अच्छा सोचा है डैड। लेकिन आप अपने इस बेटे को भूल मत जाइयेगा। " जयदीप ने कहा __" बुआ को पेलने का सुख मुझे भी मिलना चाहिए। "

" अरे तेरे लिए तो इस घर की हर लड़की और औरत हैं बेटे। " सत्यम सिंह ने कहा __" सबकी योनी पर सिर्फ तेरे ही लिंग की मुहर लगेगी। "

" ओह डैड थैक्यू सो मच। " जयदीप खुशी से झूम उठा __" यू आर रियली दि ग्रेट पर्सन। "

" उफ्फ अब बस भी करो तुम लोग। " सोनिया ने कुढ़ते हुए कहा __" इस तरह बीच में लटके लटके मेरा बदन दुखने लगा है अब। "

" चल बेटा अब ज़रा इस रंडी का भी ख़याल कर लिया जाए। " सत्यम सिंह ने कहा _" तू ऊपर से हट तो ज़रा मुझे भी पोजीशन चेंज करना है। "

सत्यम सिंह से कहने पर जयदीप सोनिया के ऊपर से हट गया। सत्यम सिंह ने सोनिया को पलट कर अपनी तरफ मुह करके अपने ऊपर ही लेटने को कहा। सोनिया ने वैसा ही किया। नीचे से सत्यम ने अपने लिंग को पकड़ कर सोनिया की योनी में डाल दिया।

" बेटे अब तू भी आजा और अपनी रांड मॉ की नितंब में लिंग डाल दे। " सत्यम सिंह ने कहा तो जयदीप फौरन अपना लिंग पकड़ कर अपनी मॉ की गोरी चिट्टी नितंब के गुलाबी छेंद पर डाल दिया। जयदीप ने हाथ बढ़ा कर अपनी मॉ के बालों को मुट्ठी में पकड़ लिया था। अब दोनो बाप बेटे ऊपर नीचे से सोनिया की पेलाई शुरू कर दिये थे। कमरे में सोनिया की आहें और मदमस्त करने वाली सिसकारियॉ फिर से गूॅजने लगी थी।

दरवाजे से अंदर सिर करके साक्षी ने एक नज़र उन तीनों को देखा फिर अपना चेहरा वापस बाहर खींच लिया। उसकी ऑखों में आग थी और आग के शोले थे जो धधकने लगे थे। चेहरे पर गुस्सा और नफ़रत के भाव ताण्डव सा करने लगे थे।

" तुम लोग अपने मंसूबों पर कभी कामयाब नहीं होगे कुत्तो। " साक्षी ने मन ही मन उन लोगों को गालियॉ देते हुए कहा __" बल्कि अब मैं दिखाऊॅगी कि प्यार और नफ़रत का अंजाम किस तरह से होता है ?"

साक्षी मन ही मन कहते हुए उस जगह से पलट कर वापस चल दी। कुछ ही देर में वह अपने कमरे में पहुॅच चुकी थी। दरवाजे की कुण्डी लगा कर वह बेड पर लेट गई। दिलो दिमाग़ में एक ऐसा तूफान उठ चुका था जो हर चीज़ उड़ा कर ले जाने वाला था।

काफी देर तक साक्षी बेड पर पड़ी इस सबके बारे में सोच सोच कर कभी रो पड़ती तो कभी उसका चेहरा गुस्से से भभकने लगता। फिर सहसा उसके अंदर से आवाज़ आई कि इस सबसे बाहर निकलो और शान्ती से किसी चीज़ के बारे में सोच कर फैंसला लो।

साक्षी ने ऑखें बंद करके दो तीन बार गहरी गहरी सासें ली तब कहीं जाकर उसे कुछ सुकून

मिला और उसका मन शान्त हुआ। उसे ख़याल आया कि कल उसका सबसे अच्छा भाई विक्रम आ रहा है। विक्रम का ख़याल ज़हन में आते ही साक्षी का मन एक बार फिर दुखी हो गया।

" मेरे भाई , जितने भी दुख मैने तुझे दिये हैं न उससे कहीं ज्यादा अब प्यार दूँगी तुझे। " साक्षी ने छलक आए ऑसुओं के साथ कहा _" मैं जानती हूँ कि तू इतने बड़े दिल का है कि तू एक पल में अपनी इस दीदी को माफ़ कर देगा और मेरी सारी ख़ताएॅ भुला देगा। तेरे हिस्से के दुख दर्द बहुत जल्द तुझसे दूर चले जाएॅगे भाई। बस प्राची को देख कर तू अपना आपा मत खो बैठना। अपने आपको संभाल लेना मेरे भाई। वैसे मैं तुझे फिर से बिखरने नहीं दूँगी। तेरा हर तरह से ख़याल रखूँगी मैं। "

बेड पर पड़ी साक्षी अपने मन में ये सब कहे जा रही थी। उसकी ऑखों के सामने बार बार विक्रम का वो मासूम और सुंदर चेहरा घूम जाता था। जिसकी वजह से पता नहीं क्यों मगर साक्षी के होठों पर हल्की सी मुस्कान उभर आती थी।

" तू जल्दी से आजा मेरे भाई। " साक्षी ने मन में ही कहा __" तुझे देखने के लिए मेरी ये ऑखें तरस रही हैं। वैसे कैसा होगा तू ? मेरा मतलब कि आज भी वैसा ही मासूम व सुंदर है या फिर बेरहम वक्त ने तुझे इसके विपरीत कठोर व बेरहम बना दिया है ? नहीं नहीं मेरे भाई , तू ऐसा मत होना। तू पहले की तरह ही मासूम व सुंदर रहना। तू वैसा ही अच्छा लगता है मेरे भाई। मैं तुझे उसी रूप में देखना चाहती हूँ। तुझे अपने सीने से लगा कर फूट फूट कर रोना चाहती हूँ। अब मुझे इन पापियों के साथ नहीं रहना है भाई। ये तो अपनी ही बहन बेटी को लूटना चाहते हैं। मुझे इनके पास नहीं रहना अब। मुझे भी अपने साथ ले चल मुंबई । मैं ये नौकरी छोंड़ दूँगी और तेरे साथ ही हर वक्त रहूँगी। अपने प्यारे से भाई के साथ। बस तू जल्दी से आजा यहाँ। "

जाने क्या क्या मन में कहती हुई साक्षी आख़िर कुछ देर में अपने आप ही सो गई। वक्त और हालात बड़ी तेज़ी से बदल रहे थे। आने वाला समय किसकी झोली में कौन सी सौगात डालने वाला था ये भला किसे पता हो सकता था।

रात गुज़र गई और सुबह का आगाज़ हुआ। बेड पर गहरी नींद में सोई हुई साक्षी को ऐसा लगा जैसे कुछ बज रहा है। नींद के साथ ही स्थिर और सोया हुआ मन मस्तिष्क फौरन ही सक्रिय अवस्था में आ गया। जिसकी वजह से साक्षी की ऑख खुल गई। ऑख खुलते ही उसके कानों में उसके आई फोन की रिंग टोन उसे स्पष्ट सुनाई दी। साक्षी ने बाई तरफ करवॅट लेकर मोबाईल को उठाया और जब तक उस पर आ रही किसी की काल को पिक करने के लिए अपने अॅगूठे को हरकत दी तब तक काल अपने निश्चित समय सीमा के चलते कट गई।

साक्षी ने रिसीव काल की लिस्ट को ओपेन किया तो उसमें उसे रौनक सिंह लिखा नज़र आया। ये देख कर साक्षी के दिमाग़ की बत्ती जली। उसे ध्यान आया कि आज उसका भाई विक्रम मुंबई से यहॉ आ रहा है। ये बात दिमाग़ मे आते ही साक्षी ने फौरन रौनक सिंह को फोन लगा दिया। पहली ही घंटी पर रौनक ने काल पिक कर ली।

" ओफ्फो दी , आप फोन क्यों नहीं उठा रही थी ?" उधर से रौनक ने कहा __" चार बार आपको काल कर चुका हूॅ मैं। "

" ओह आई एम सो सॉ री भाई। " साक्षी ने खेद भरे भाव से कहा __" वो मैं गहरी नींद में सो रही थी न। कल रात नीद ही नहीं आ रही थी। इस लिए देर से सोई थी मैं। ख़ैर छोड़ो , तुम बताओ किस लिए फोन कर रहे थे मुझे ?"

" वो मेरी विक्रम से फोन पर बात हुई है वो बता रहा था कि वो सही समय पर रामगंज रेलवेस्टेशन पहुॅच जाएगा। " उधर से रौनक कह रहा था __" मैने सोचा आपको इस बारे में बता दूॅ। मगर ,....। "

" मगर क्या भाई ?" साक्षी के माथे पर बल पड़ा।

" मगर यही कि मैने आपके कहने पर अपने जां से भी ज्यादा अज़ीज़ दोस्त को यहॉ बुला तो लिया है। " रौनक की आवाज़ में गंभीरता और अधीरता दोनो थी , बोला ___" मगर , यदि उसकी जान को या उस पर लेश मात्र का भी संकट आया तो सोच लीजिएगा। उस सूरत में मुझसे बुरा कोई नहीं होगा। आप मेरी बात समझ रही हैं न ?"

" मुझे बेहद खुशी है कि मेरे भाई को तुम जैसा चाहने वाला दोस्त मिला है। " साक्षी की ऑखों में ऑसू आ गए , बोली __" मैं तुम्हारी बातों का मतलब समझ गई हूॅ भाई। तुमको कदाचित अभी भी अपनी इस बहन पर यकीन नहीं है , और सच कहूॅ तो होना भी नहीं चाहिए। आख़िर यकीन करने लायक मैने अब तक कीई काम किया ही कहॉ है ? मगर इतना ज़रूर कहूॅगी मेरे भाई कि तेरी ये बहन पहले से बहुत ज्यादा बदल गई है। तेरी इस बहन को समझ आ गया है कि कौन सही है और कौन ग़लत ? आज मेरे दिल में अगर किसी के लिए बेपनाह प्यार है तो सिर्फ और सिर्फ अपने उस भाई के लिए जिसको मैने कभी अपना भाई नहीं माना था। "

" अगर ऐसी बात है तो मुझे खुशी है दीदी कि अब मेरे यार को आप के रहते कोई ख़तरा नहीं

हो सकता। " रौनक ने उधर से खुश हो कर कहा __" अच्छा अब फोन रखता हूँ दीदी। विक्रम जब सोनपुर पहुँचेगा तो मैं उसे लेने बस स्टैण्ड पर पहुँच जाऊँगा। आप तो जानती ही हैं कि मेरी दुकान बस स्टैण्ड पर ही है। विक्रम को लेकर मैं अपने घर चला जाऊँगा। फिर जब आपका फोन आएगा तब मैं उसे लेकर प्राची के पास हॉस्पिटल आ जाऊँगा। "

" ठीक है भाई। " साक्षी ने कहा __" तब तक मैं भी उसकी सुरक्षा के लिए कोई इंतजाम करती हूँ। " ये कहने के बाद साक्षी ने काल कट कर दी। इस वक्त उसके चेहरे पर बहुत ही ज्यादा खुशी झलक रही थी। उसके गोरे और खूबसूरत से चेहरे पर ग़जब का नूर उतर आया था। कुछ देर बेड पर वह जाने क्या क्या सोच कर मुस्कुराती रही फिर बेड से उठ कर बाथरूम की तरफ बढ़ गई।

४२

उधर मुंबई से ट्रेन में बैठने के बाद मैं और मेरे साथ उमाकांत अंकल के द्वारा भेजे हुए बॉडीगार्ड अमर चोपड़ा दोनो चल दिये थे। कुछ दूर तक का सफ़र तो हम दोनो के बीच की ख़ामोशी के साथ ही कटता रहा। उसके बाद हम दोनो के बीच बातें शुरू हो गई थी। ये अलग बात है कि बात करने की पहल मैने ही की थी। अमर चोपड़ा कुछ ख़ामोश तबीयत का इंसान था। वो ज्यादा किसी से बोलता नहीं था। अब ये ख़ामोशी उसकी फितरत का हिस्सा थी या फिर उसके ख़ामोश रहने की कोई ऐसी वजह जिसके बारे में फिलहाल मुझे कुछ पता नहीं था।

लेकिन जब हमारे बीच कान्टीन्यू बातें होती रही तो अमर का स्वभाव थोड़ा बदल गया था। हलाँकि शुरू शुरू में वह मेरी किसी भी बात का जवाब हाँ या ना में संक्षिप्त रूप से ही देता था। किसी किसी पल वह मेरी बातों से परेशान भी नज़र आया मगर मैने उसे बड़े प्यार व इज्ज़त से समझाया कि ख़ामोश रहने से किसी भी समस्या से छुटकारा नहीं मिलता। फिर मैने उसे संक्षेप में अपनी और अपने परिवार की कहानी सुनाई। मेरी कहानी सुन कर अमर चोपड़ा बेहद संजीदा सा हो गया था। उसने मुझसे कहा कि अभी तक तो वो मेरे बॉडीगार्ड की हैंसियत से साथ था लेकिन अब वो मेरे साथ मेरा सच्चा दोस्त बन कर रहेगा और मुझे हर संकट से बचाएगा।

उसके बाद हम दोनो हँसी खुशी ट्रेन में बातें करते रहे। मेरे पूछने पर ही उसने अपने बारे में बताया। अमर चौपड़ा के पास किसी चीज़ की कोई कमीं नहीं थी। जब वो पच्चीस साल का था तब उसे किसी लड़की से प्यार हो गया था। लेकिन बाद में पता चला कि वो लड़की हर पल सिर्फ उसका ईस्तेमाल कर रही थी। दरअसल उस लड़की का पहले से ही किसी विदेशी लड़के से चक्कर था। लड़की का बाप अपनी बेटी को बग़ैर किसी सिक्योरिटी के कहीं जाने नहीं देता था। अमर चोपड़ा उस लड़की का ब्वाडीगार्ड था। उस चक्कर में वो लड़की अपने उस विदेशी बॉयफ्रेंड से मिल नहीं पाती थी। लड़की ने किसी योजना के तहत अमर को अपने प्यार के जाल में फॅसाया। और फिर उस लड़की ने अमर को अपने प्यार में इस हद तक पागल कर दिया कि उसके कहने पर अमर उसे लेकर विदेश तक जाने को तैयार हो गया। विदेश जाने के लिए सारी तैयारियाँ करने के बाद एक दिन अमर और वो लड़की जिसका नाम कोमल सिंघानिया था दोनो ही सिंघानिया विला से फुर्र हो गए। एयरपोर्ट के रास्ते पर ही एक जगह कोमल ने टैक्सी रुकवाई। अमर को समझ न या कि कोमल ने टैक्सी क्यों रुकवाई थी। टैक्सी के उतरते ही कोमल टैक्सी से उतर गई और टैक्सी ड्राइवर से अपना सामान भी टेक्सी से निकालने को कह दिया। हैरान परेशान अमर ने उससे पूछा कि ये सब क्या है? हम बीच रास्ते में टैक्सी से इस तरह क्यों उतर रहे हैं?

अमर के सवाल का जवाब देने से पहले ही उस जगह पर एक और टैक्सी आकर रुकी। उस टैक्सी का दरवाजा खोल कर कोमल का विदेशी बॉयफ्रेंड बाहर आ गया। कोमल के पास आकर उस विदेशी ने कोमल को अपने गले से ल गाया और दोनों वहासे चले गए।बिचारा अमर उन्हें जाते हुए देखता रह गया।उसे पता चल चुका था कि उसका इस्तेमाल किया गया

है।तबसे उसका प्यार इश्क मोहब्बत से विश्वास उड़ चुका था ।

मैने अपना फोन निकाल कर रौनक को सब बता दिया। उसके बाद मैं और अमर समय गुज़ारने के लिए फिर से किसी न किसी चीज़ के बारे में बातें करने लगे। उधर ट्रेन अपनी रफ्तार से दोड़ी जा रही थी। मुझे नहीं पता था कि आने वाला समय मुझे क्या दिखाने वाला था या फिर किस तरह का झटका देने वाला था?

४३

" आप एक बार फिर से इस बारे में अच्छी तरह सोच लीजिए रस्तोगी साहब। " अवधेश मुखर्जी ने समझाने वाले अंदाज़ में कह रहा था __" आपका इस मामले में पुलिस को सूचित करना कतई ठीक नहीं रहेगा। संभव है कि आपके द्वारा इस मामले को पुलिस को सूचित कर देने से वो ब्लैकमेलर हमारे लिए कोई गंभीर मुसीबत खड़ी कर दे। ये बात तो वो भी अच्छी तरह जानता और समझता ही होगा कि आप पुलिस को उसके बारे में बताने की सोचेंगे जो कि निहायत ही ग़लत होगा। उस सूरत में वो हमारे खिलाफ़ कुछ भी कर सकता है और हम उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाएँगे। क्योंकि अभी तक हम यही नहीं जानते हैं कि हमें ऐसी वीडियोज़ भेजने वाला वो शख्स आख़िर है कौन ? उसने अब तक कोई फोन या मैसेज नहीं किया लेकिन उसके न करने से भी वो हमें यही समझा रहा है कि इस मामले में पुलिस को सूचित करने की मूर्खता हम लोग हर्गिज़ भी न करें। "

" तो आख़िर हम क्या करें अवधेश ?" रस्तोगी ने खीझते हुए कहा __" आज दो दिन हो गए मगर उसकी तरफ से हमारे पास कोई मैसेज तक नहीं आया। हम तो चाहते हैं कि वो हमसे संबंध बनाए और बताए कि आख़िर वो ये सब करके हमसे चाहता क्या है ? साला दो दिन से हमारे सुख चैन की माँ बहन करके रखा हुआ है। "

" आप ज़रा धीरज से काम लीजिए रस्तोगी साहब। " अशोक बासु ने कहा __" आपकी तरह हम सब भी इस बात से बहुत परेशान और बेचैन हैं। हमारी जान भी हलक में अटक पड़ी है। मगर जैसा कि अवधेश भाई ने कहा कि इस बारे में पुलिस को सूचित करना ठीक नहीं है तो बात हमारे हित में ही है। आप तो जानते हैं कि साले पुलिस वाले बाल की खाल निकालने वाले होते हैं। संभव है कि वो हमसे ऐसे सवाल करने लगें जिन सवालों के जवाब देना हमारे लिए ख़तरे से खाली नहीं होगा। ऐसे में हम खुद ही उल्टा फँस जाएँगे। रही बात उस ब्लैकमेलर की कि उसने अब तक हमसे कांटैक्ट नहीं किया तो ये कोई समस्या नहीं है। कहने का मतलब ये कि वो देर सवेर ही सही मगर हमसे कांटैक्ट ज़रूर करेगा , क्योंकि इन वीडियोज़ को हमारे पास भेजने का कोई न कोई मकसद उसका ज़रूर होगा। अपने उस मकसद को पूरा करने के लिए वो हमसे कांटैक्ट ज़रूर करेगा। बस आप धैर्य रखें रस्तोगी साहब। "

" बस एक बार। " रजतकुमार रस्तोगी गुस्से से दाँत किटकिटाते हुए बोला __" सिर्फ एक वो हरामज़ादा हमारे हाथ लग जाए उसके बाद हम बताएँगे उसे कि हमारे साथ ऐसी वाहियात हरकत करने का क्या अंजाम होता है। उस हराम के पिल्ले को ऐसी मौत मारेंगे कि उसे अपने पैदा होने पर अफसोस होगा। "

" इसका उल्टा भी तो हो सकता है रस्तोगी साहब। " सहसा इस बीच सहमी सी बैठी सुनीता ने अजीब भाव से कहा __" आप ये क्यों नहीं सोचते हैं कि जिसने भी आपके या हमारे साथ ऐसे दुस्साहस से भरे काम को अंजाम दिया है वो कोई ऐरा गैरा व्यक्ति नहीं हो

सकता ? ये बात तो वो भी जानता होगा कि आप क्या चीज़ हैं , इसके बावजूद उसने ऐसा किया। इसका मतलब साफ है कि वो हमसे ज़रा भी ख़ौफ नहीं खाता है बल्कि अपने किसी मकसद को पूरा करने के लिए वो मौत के मुह में ही आ पहुँचा है। दूसरी बात उसे हमसे डरने की ज़रूरत भी कहाँ है जबकि उसके पास हमारे ख़िलाफ ऐसा सामान मौजूद है जिसके बल पर वो जब चाहे हमें बीच चौराहे पर नंगा दौड़ा सकता है। इस लिए ये बात तो आप भूल ही जाइये कि आप उसे ऐसी कोई मौत देंगे जिससे उसे अपने पैदा होने पर अफसोस होगा। "

" साली रंडी की दुम हमें डरा रही है ?" रस्तोगी खिसियानी बिल्ली की तरह सुनीता पर चढ़ दौड़ा था , बोला __" तुझे पता नहीं है कि हम क्या चीज़ हैं। हम चाहें तो यहाँ बैठे बैठे दिल्ली तक को हिला कर रख दें। वो हराम का जना साला तभी तक सलामत है जब तक वो हमसे दूर कहीं छुपा बैठा है। जिस दिन हमारे हाथ लग गया न उस दिन हम बताएँगे कि रजतकुमार रस्तोगी के साथ ऐसी हिमाकत करने का हस्र क्या होता है ?"

रजतकुमार रस्तोगी का तमतमाया हुआ चेहरा देख कर और उसकी खतरनाक बातें सुनकर सुनीता की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। ड्राइंग रूम पिन ड्राप सन्नाटा छा गया था। किसी की बोलने की हिम्मत न पड़ी। मगर तभी इस सन्नाटे को तोड़ने की हिमाकत खुद रजतकुमार रस्तोगी के मोबाइल फोन की घंटी ने कर दी। दो पल के लिए तो रजतकुमार रस्तोगी हड़बड़ाहट में ही रहा। फिर जल्दी से खादी के कुर्ते की जेब से मोबाइल फोन निकाल कर उसने स्क्रीन पर फ्लैश कर रहे नंबर को देखा। स्क्रीन पर वही नंबर फ्लैश हो रहा था जिस नंबर से रस्तोगी के इसी फोन पर वो वीडियोज़ भेजा था उस ब्लैकमेलर ने।

" क्या हुआ रस्तोगी साहब ?" अवधेश मुखर्जी ने शशंक भाव से कहा __" क्या देख रहे हैं ? काल को रिसीव कीजिए। "

" ये तो वही नंबर है अवधेश। " रस्तोगी ने बड़े उत्साहित भाव से कहा __" जिस नंबर से हमारे फोन पर वो वीडियो भेजे गए थे। "

" तो फिर जल्दी से काल को रिसीव कीजिए रस्तोगी साहब। " अशोक बासु कह उठा _" और फोन का स्पीकर भी ऑन कर दीजिए। हम सब भी सुनेंगे कि वो क्या कहता है ?"

रस्तोगी ने काल रिसीव करके मोबाइल का स्पीकर ऑन कर दिया।

" कहो रस्तोगी कैसे हो ?" उधर से मर्दाना स्वर में आवाज़ उभरी __" काल रिसीव करने में इतना टाइम कैसे लगा दिया तुमने ? ओह शायद मेरा कॉल देख कर तुम्हें समझ में ही न आया होगा कि क्या करें और क्या न करें ? होता है रस्तोगी , ऐसा तो यकीनन होता है। और हाँ ये बहुत अच्छा किया जो अपने फोन का स्पीकर ऑन कर दिया तुमने। आख़िर तुम्हारे उन साथियों को भी तो मेरी मधुर आवाज़ सुनने का हक़ है। "

" हमसे ऐसे लहजे में बात करने का अंजाम नहीं जानते हो तुम। " रस्तोगी ने दाँत पीसते हुए कठोर भाव से कहा __" अगर जानते तो ऐसी हिमाकत नहीं करते। और अब हमारी बात

कान खोल कर सुनो तुम। ये जो कुछ तुमने किया है न उसकी सज़ा तो तुम्हें ज़रूर मिलेगी। ये मत समझना कि वीडियो भेज कर तुमने हमे चूहा बना दिया होगा। "

" ये गीदड़ भभकियॉ किसी और को देना रस्तोगी। " उधर से ठंडे लहजे में कहा गया __" मैं तुम्हारी किसी बात से बाल बराबर भी डरने वाला नहीं हूँ। मैं चाहूँ तो पल भर में तुम्हारी ताकत और तुम्हारी शान को मिट्टी में मिला दूँ। इस लिए बेहतर होगा कि मुझसे ज्यादा उड़ने की कोशिश मत करना और ना ही मुझ पर अपना रौब झाड़ना। "

" क्या चाहते हो तुम ?" रस्तोगी को समझ आ गया था कि सामने वाला उससे डरने वाला नहीं है इस लिए मुद्दे की बात करना ही चित समझा उसने , बोला __" अगर तुमने ये सब हमसे रुपया पैसा ऐंठने के लिए किया है तो मुह फाड़ो अपना और बताओ कि कितना रुपया चाहिए तुम्हें ? मगर ख़बरदार , डील सिर्फ एक ही बार होगी। तुम्हें जितना भी रुपया चाहिए वो बोल दो , हम तुम्हें मुहमागा रुपया दे देंगे मगर बदले में तुम हमें वो सारे वीडियोज़ लौटा दोगे। "

" ये तुमने कैसे सोच लिया रस्तोगी कि ये सब मैने तुमसे पैसे ऐंठने के लिए किया है ?" उधर से हॅस कर कहा गया __" अरे बुड़बक , पैसा तो मेरे पास इतना है कि मैं खड़े खड़े तुम्हें और तुम्हारे पूरे खानदान को ख़रीद लूँ। ख़ैर , तुम जैसे दो कौड़ी के भड़वों को खरीदेगा भी कौन ? मैने तो ये सब सिर्फ इस लिए किया कि तुम्हें बता सकूँ अब तुम्हारा और तुम्हारे साथियों का खेल खत्म हो चुका है। अब यहॉ से तुम लोगों के बुरे कर्मों का हिसाब शुरू होगा। "

" हरामज़ादे तू है कौन साले ?" रस्तोगी बुरी तरह गुस्से में चीख पड़ा था __" एक बार हमारे सामने आ फिर हम बताएँगे कि हमसे ऐसी ज़ुर्रत करने का क्या अंजाम होता है ?"

" हरामज़ादा किसे बोलता है रे मादर--- साले रंडी की औलाद। " उधर से मानो शेर की गुर्राहट उभरी __" चिंता मत कर साले बहुत जल्द तेरी हेकड़ी निकालूँगा मैं। साले बकरे की तरह मिमियाएगा मेरे सामने। "

" ज़ुबान संभाल कर बात कर हमसे। " रस्तोगी चीखा तो ज़रूर मगर उसने खुद महसूस किया कि उसके स्वर में कोई दम नहीं था , फिर भी बोला __" हम तुम्हारे इस अपराध को माफ़ कर देंगे। बस तुम हमें वो सब वीडियोज़ लौटा दो। "

" भीख मॉगता है क्या रे रस्तोगी ?" उधर से ठहाके की आवाज़ आई __" अच्छा है मॉगना शुरू ही कर दे अब। ख़ैर जाने दे , मैं ये कह रहा हूँ कि बहुत जल्द तुझे ऐसा मंज़र देखने को मिलेगा कि तू उसे देख नहीं पाएगा और तेरे ही साथ बस क्यों तेरे सभी साथियों के साथ भी वही सब होगा। अपनी बरबादी को रोंक सकता है तो रोंक ले तू। "

अभी रस्तोगी कुछ कहना ही चाहता था कि उधर से फोन कट गया। रस्तोगी ने जल्दी से उसी नंबर पर काल किया मगर नंबर स्विच ऑफ बताने लगा था। पल भर में रस्तोगी की हालत

किसी लुटे हुए जुआॅरी जैसी नज़र आने लगी थी। रस्तोगी जैसा हाल बाकी उन सबका भी था जो वहाॅ पर बैठे फोन की हर बात सुन रहे थे। सुनीता की हालत तो ऐसी हो गई थी जैसे उसे लकवा मार गया हो। बड़े से ड्राइंग रूम में गहन सन्नाटे के सिवा कुछ न रह गया था।

४४

उधर हवेली में ।

गहरी सोच में डूबी हुई गीता साक्षी के कमरे में पहुॅची। कमरे में पहुॅच कर उसने देखा कि साक्षी पुलिस की वर्दी पहने आईने के सामने खड़ी होकर सिर पर पीकैप को ठीक से लगाते हुए खुद को देख रही थी।

" क्या बात है साक्षी तूने मुझे इस तरह रहस्यमय तरीके से किस लिए बुलाया है ?" गीता ने साक्षी की तरफ देखते हुए कहा था। उसकी बात सुन कर साक्षी आईने की तरफ से पलट कर अपनी गीता बुआ की तरफ देखा।

" क्या आपने अपना सब सामान ले लिया है बुआ जी ?" साक्षी ने पूछा।

" आख़िर बात क्या है मेरी बच्ची ?" गीता हैरान परेशान सी बोली __" मुझे अपना सारा सामान लेने के लिए क्यों कह रही है तू ? क्या तू मुझे कहीं लेकर जा रही है ?"

" हॉ बुआ। " साक्षी ने तनिक गंभीरता से कहा __" लेकिन इस वक्त आप मुझसे ये न पूछिए कि ऐसा मैं क्यों कह रही हूॅ। बस आप वो कीजिए जो मैं कह रही हूॅ। यकीन मानिये बुआ मैं आपको आपके सभी सवालों का जवाब दूॅगी मगर अभी नहीं। अभी आप वही कीजिए जो मैने कहा है प्लीज़। "

" ठीक है साक्षी। " गीता ने बेचैनी से कहा _" पर मैं भैया भाभी से क्या कहूॅगी कि अपना सामान लेकर मैं कहा जा रही हूॅ ?"

" उनको बता दीजिएगा कि आप वापस अपने ससुराल जा रही हैं क्योंकि आपके पास आपके ससुराल से फोन आया था जो आपको आने के लिए कह रहे थे।। " साक्षी ने जैसे तरीका बताया।

" वो तो ठीक है। " गीता ने कहा __" लेकिन अगर भैया ने मेरी ससुराल में फोन करके इस बारे में पूछा तो क्या होगा ? उन्हें तो पता चल ही जाएगा कि मैं उनसे झूॅठ बोल रही हूॅ। "

" वो ऐसा कुछ नहीं करेंगे बुआ। " साक्षी ने कहा __" आप बस जल्दी से सामान लेकर हवेली से बाहर आइये। मैं आपको बाहर ही मिलूॅगी। "

" अरे नास्ता तो कर ले। " गीता ने कहा __" भाभी डायनिंग टेबल में तेरा इन्तज़ार कर रही हैं। "

" नहीं बुआ मुझे ज़रा भी भूॅख नहीं है। " साक्षी ने कहा __" और आप भी मत खाइयेगा। क्योंकि उससे हमें जाने में देर हो जाएगी। "

" बड़ी हैरानी की बात है साक्षी। " गीता ने चकित भाव से कहा __" ख़ैर , तू चल मैं आती हूँ। "

" ठीक है बुआ। " साक्षी दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए बोली __" जल्दी आइयेगा। "

कहने के साथ ही साक्षी लंबे लंबे डग भरते हुए दरवाजे के बाहर निकल गई। उसके पीछे पीछे ही गीता भी चल दी। ये अलग बात है कि इस वक्त उसके मन में गहन विचारों का आवागमन शुरू था।

" साक्षी बेटा , बड़ी देर कर दी आने में। " सोनिया ने साक्षी को देखते ही कहा _" चल आजा , नास्ता ठंडा हो रहा है। "

" नहीं मॉम , मुझे अर्जेंट थाने पहुँचना है। " साक्षी ने एक एक नज़र वहीं कुर्सियों पर बैठे अपने भाई जयदीप और अपने पिता सत्यम सिंह पर डालते हुए कहा __" मैं बाहर ही नास्ता कर लूँगी। "

" उफ्फ तेरी ये नौकरी भी न। " सोनिया ने बुरा सा मुह बनाते हुए कहा __" चैन से तुझे नास्ता भी नहीं करने देती है। छोंड़ दे न ये नौकरी बेटा। आख़िर क्या कमी है हमारे पास और क्या कमी की है हमने तेरी इच्छाओं को पूरा करने मेंं ?"

" बात किसी भी चीज़ की कमी की नहीं है मॉम। " साक्षी ने कहा __" बात है शौक की और ये पुलिस की नौकरी मेरा शौक ही है। पाप और ज़ुर्म को खत्म करना मेरा शुरू से सिद्धांत रहा है। ख़ैर , आप नहीं समझेंगी मेरी भावनाओं को। "

" मॉम ठीक ही तो कह रही हैं दीदी। " सहसा जयदीप ने कहा __" आपको पुलिस की नौकरी करने की क्या ज़रूरत है ? इस तरह का शौक रखना निहायत ही बेकार की बात है। "

" तू अपना मुह बंद ही रख समझे। " साक्षी ने कठोर भाव से कहा __" मेरा शौक तेरे शौक से कहीं ज्यादा ऊँचा और पाक़ है। पढ़ लिख कर अपने पैरों पर खड़ी हो गई हूँ और खुद कमा कर खा सकती हूँ। तेरी तरह डैड के पैसों पर ऐश करना मुझे हर्गिज़ पसंद नहीं है। "

" आप ज़रूरत से ज्यादा ही भाषण दे रही हैं दीदी। " जयदीप ने कहा __" बेहतर होगा कि आप अपना ये भाषण किसी और को सुनाएँ। "

" सच कहा तूने। " साक्षी ने कड़वा ज़हर मानो खुद ही निगलते हुए कहा __" ये भाषण तुझे रास नहीं आ सकता। ये भाषण तो उसे ही रास आएगा जो इसके लायक होगा। "

" ये क्या बेहूदा बातें कर रही हो बेटी ?" सहसा सत्यम सिंह कह उठा __" अपने इकलौते भाई से इस तरह रुखाई से कौन बहन बात करती है ? तुमने अपनी मर्ज़ी से पुलिस की नौकरी कर ली हमें कोई प्राब्लेम नहीं हुई। मगर इस बात का भी ख़याल रखना बच्चों का फर्ज़

है कि वो अपने माता पिता के अरमानों के बारे में सोचें। "

" वाह डैड। " साक्षी की ऑखों में ऑसू आ गए __" इस वक्त कौन सही है कौन ग़लत ये तो आपने बिलकुल ही नज़रअंदाज़ कर दिया। मुझे याद नहीं कि मैने कब अपने मॉम डैड की इज्ज़त या सम्मान को चोंट पहुॅचाई है। बल्कि बचपन से लेकर अब तक वहीं किया जो आपने कहा। आज की दुनियॉ में अगर बेटियॉ अपने पैरों पर खड़े होकर कामयाबी का कोई आसमान छूती हैं तो मॉ बाप को अपनी उस बेटी पर गर्व होता है मगर मेरे मॉम डैड को मेरी पुलिस की नौकरी करना ज़रा भी पसंद नहीं आया। ख़ैर , जाने दीजिए डैड। अगर आप नहीं चाहते हैं कि मैं ये पुलिस की नौकरी करू तो ठीक है छोंड़ दूॅगी इसे। "

" तुम बेवजह बातों का ब तंगड़ बना रही हो साक्षी बेटा। " सोनिया ने कहा __" अपने डैड से इस लहजे में बात करना तुम्हें ज़रा भी शोभा नहीं देता। "

" सॉरी मॉम। " साक्षी ने अपने अंदर के जज़्बातों को बड़ी मुश्किल से दबाते हुए कहा __" सॉरी डैड , एण्ड सॉरी भाई। "

साक्षी ने कहा और झटके से बाहर की तरफ निकल गई। दिल एकदम से छलनी सा हो गया था उसका। कहना तो बहुत कुछ चाहती थी वो मगर ये समय सही नहीं था। अपने अंदर के सुलगते हुए जज़्बातों को सख्ती से दबा लिया था उसने। दिल में अपने मॉ बाप और भाई के लिए उसकी नफ़रत में जैसे और भी इज़ाफा हो गया था।

हवेली के बाहर आकर वह एक तरफ खड़ी अपनी पुलिस जिप्सी की तरफ बढ़ती चली गई। जिप्सी में बैठ कर उसने उसे स्टार्ट किया और आगे बढ़ा कर मुख्य दरवाजे तक आ कर रुक गई। कदाचित गीता बुआ के आने का इन्तज़ार करने लगी थी वह। लगभग पन्द्रह मिनट के इन्तज़ार के बाद गीता बाहर आती दिखी उसे। गीता के बाएॅ हाथ में उसका बैग देख कर साक्षी ने मन ही मन राहत की मीलों लम्बी सास ली। जिप्सी के पास आकर गीता ने पिछली सीट पर बैग रखा और फिर घूम कर साक्षी के बगल वाली सीट पर आकर बैठ गई। गीता के बैठते ही साक्षी ने जिप्सी को झटके से आगे बढ़ा दिया।

" हवेली से बाहर आने में काफी देर लगा दी आपने। " मेन सड़क पर पहुॅचते ही साक्षी ने कहा गीता से।

" हॉ वो भैया भाभी पूछने लगे थे न कि मैं अपना ये सामान लेकर कहॉ जा रही हूॅ ?" गीता ने बताया __" बड़ी मुश्किल से उन्हें कन्विंस किया तब जाकर बाहर आ पाई मैं। लेकिन मुझे ये समझ में नहीं आ रहा कि तुम मुझे इस तरह कहॉ लेकर जा रही हो ?"

" बस ये समझ लीजिए बुआ कि मैं आपको ऐसी जगह लेकर जा रही हूॅ। " साक्षी ने अजीब भाव से कहा __" जहॉ पर आप पूरी तरह सुरक्षित रहेंगी। "

" क्या मतलब ??" गीता बुरी तरह चौंकी थी।

" मतलब किसी स्वीमिंग पुल में भरे पानी की तरह साफ है बुआ। " साक्षी ने कहा __"

बस समझने की बात है। "

" देख तू मुझसे ऐसे पुलिसिये लहजे में बात मत किया कर। " गीता ने कहा __" मुझे बिलकुल समझ में नहीं आता कि तू क्या बोल रही है ?"

" अच्छा ये बताइये। " साक्षी ने कहा _" कि डैड ने आपके ससुराल वालों को फोन तो नहीं किया न वो सब पूछने के लिए ?"

" नहीं फोन तो नहीं किया। " गीता ने कहा _" बस यही कहा कि ये अच्छी बात है अगर मेरी ससुराल वाले मुझे फिर से बुला रहे हैं तो। मगर , ऐसा भी तो हो सकता है साक्षी कि वो मेरे यहॉ आने के बाद मेरी ससुराल में फोन लगाएॅ। ये जानने के लिए कि मैं वहॉ पर समय पर और ठीक से पहुॅच गई हूॅ कि नहीं और जब उन्हें ये पता चलेगा कि मैं वहॉ गई ही नहीं तो क्या सोचेंगे वो मेरे बारे मे ं ?"

" अब उनके कुछ भी सोचने से कोई फर्क नहीं पड़ने वाला बुआ। " साक्षी ने कहा _" क्यों कि अब आप हवेली से बाहर आ चुकी हैं। मैं तो बस आपको उस हवेली से बाहर निकालना चाहती थी। "

" क्या मतलब है तेरा ?" गीता बुरी तरह उछल पड़ी। हैरत से उसकी ऑखें फैल गईं थी।

" अभी नहीं बुआ। " साक्षी ने कहा __" बाद में आपको सब कुछ बताऊॅगी और तसल्ली से बताऊॅगी। "

" पता नहीं क्या अनाप शनाप बोले जा रही है तू ?" गीता का दिमाग़ मानो चकरघिन्नी बन गया था , बोली __" मुझे तो कुछ पल्ले ही नहीं पड़ रही तेरी बातें। "

गीता की इस बात पर साक्षी कुछ न बोली। बल्कि जिप्सी को टॉप गियर में डाल कर उसे तूफान की तरह भगाती हुई वह नियत समय से बहुत कम समय में अपने फार्महाउस पहुॅच गई। फार्महाउस के अंदर दाखिल होकर साक्षी ने पोर्च के नीचे जाकर जिप्सी को रोंक दिया।

" ये कौन सी जगह है साक्षी ?" गीता ने हैरानी से इधर उधर देखते हुए कहा __" ये तू कहॉ ले आई है मुझे ?"

" अपने एक अलग घर में बुआ। " साक्षी ने कहा __" जहॉ पर अपना अलग एक नया संसार बसता है। "

" एक नया संसार ?" गीता चकरा सी गई , बोली __" इसका क्या मतलब हुआ भला ?"

" आईये अंदर चलते हैं। " जिप्सी से उतरते हुए साक्षी ने कहा __" अब से आप यहीं रहेंगी। "

" ये तुम क्या कह रही हो बेटा ?" गीता चकित स्वर में बोली __" मैं यहीं रहूॅगी ? मगर

क्यों साक्षी ? ऐसा क्या हो गया है जिसकी वजह से तुम मुझे यहाँ लेकर आई हो। आख़िर बात क्या है ? क्या छुपा रही है तू मुझसे ? देख साक्षी मुझे सारी बात सच सच बता , मेरा दिल बहुत घबरा रहा है। "

" अब आपको किसी भी बात के लिए घबराने की ज़रूरत नहीं है बुआ। " साक्षी ने पिछली सीट से गीता का बैग निकालते हुए कहा _" ये अपना ही घर है। यहाँ पर आपको किसी बात का कोई ख़तरा नहीं है। "

" खतरा ???" गीता का दिमाग़ मानो कुंद सा पड़ता चला गया , बोली __" आख़िर तू किस खतरे की बात कर रही है साक्षी ? मुझे भला किससे खतरा है और किस बात का खतरा है ? मुझे बता बेटा , वरना तेरी इन बातों से मैं पागल हो जाऊँगी। "

" सब बताऊँगी बुआ। " साक्षी ने कहा _" अंदर तो चलिए। "

साक्षी की इस बात से हैरान परेशान गीता किसी यंत्र चालित सी होकर साक्षी के पीछे पीछे अंदर की तरफ चल पड़ी।

अंदर पहुँचते ही उन्हें हरिया काका की बीवी केशरमाँ मिल गई।

" अरे बिटिया आ गई तुम ?" केशरमाँ ने बड़े प्यार और सम्मान से कहा __" और ये तुम्हारे साथ में बीवी जी कौन हैं ?"

" काकी ये मेरी छोटी बुआ हैं। " साक्षी ने कहा __" और आज से ये यहीं रहेंगी। इनका हर तरह से ख़याल रखना। "

" इसमें कहने वाली कौन सी बात है बिटिया ?" केशरमाँ ने कहा __" मेरे लिए तो ये भी तुम्हारी तरह ही हैं। "

" इनके लिए मेरे बगल वाले कमरे को अच्छी तरह साफ कर दीजिए। " साक्षी ने कहा _" तब तक मैं इन्हें अपने कमरे में लिये जा रही हूँ। और हाँ जल्दी से गरमा गरम नास्ता भी तैयार कर दीजिए। "

" सब हो जाएगा बिटिया। " केशरमाँ ने कहा __" तुम बस कुछ देर का समय दो मुझे। "

" ठीक है काकी। " साक्षी ने कहने के साथ ही गीता की तरफ देख कर कहा __" आइये बुआ ऊपर कमरे में चलते हैं। "

साक्षी ने कहा तो गीता उसके पीछे चुपचाप चल दी। उसके मन में हज़ारों सवाल और हज़ारों ख़याल पैदा हो चुके थे। कमरे में पहुँच कर साक्षी ने गीता को बेड पर बैठाया और खुद भी उसके बगल में बैठ गई।

" अब तो बता बेटा कि बात क्या है ?" गीता ने ब्याकुलता से पूछा __" इस तरह तू मुझे

यहॉ लेकर क्यों आई है ?"

" मुझे समझ नहीं आ रहा बुआ। " साक्षी ने सहसा गंभीर होकर कहा __" कि आपको वो सब बातें कैसे बताऊँ और कहॉ से बताऊॅ ?"

" देख साक्षी तू अब कोई बच्ची नहीं रही। " गीता ने कहा __" बल्कि तू अब बड़ी हो गई है। जो भी बात है तू मुझे बेझिझक बता सकती है। मुझे तू अपनी दोस्त या राजदार समझ सकती है। मैं जातनी हूॅ कि तू कभी कोई ग़लत काम नहीं कर सकती है। मुझे तुझ पर हमेशा से गर्व रहा है। ख़ैर , तू बेझिझक बता कि ऐसी क्या बात है जिसकी वजह से तू मुझे इस तरह यहॉ लेकर आई है ?"

" मुझे किसी बात की भूमिका बनाना नहीं आता बुआ। " साक्षी ने गंभीरता से कहा _" मैं तो साफ साफ कहना जानती हूॅ। आप जानना चाहती हैं न कि मैं आपको इस तरह यहॉ क्यों लेकर आई हूॅ यो सुनिए __ हवेली में रहने वाले आपके भैया भाभी और आपका भतीजा ये तीनो ही वासना और हवस के चलते इस क़दर अंधे हो चुके हैं कि इन्हें अब ये भी नहीं दिखता कि ये लोग जिनके साथ कुकर्म करने का मंसूबा बनाए हुए हैं वो रिश्ते में इनके क्या लगते हैं। "

" ये तू क्या कह रही है साक्षी ?" गीता की ऑखें हैरत से फैल गईं , बोली __" तुझे कुछ होश भी है कि तू किनके बारे में क्या बोल रही है ?"

" होश तो अब आया है बुआ। " साक्षी ने भारी लहजे में कहा __" बचपन से लेकर अब तक तो मैं बेहोश ही थी। अपने उन माता पिता को देवता समझती रही जिनके हाथ अपने ही घर के लोगों के खून से सने हुए हैं। आपको नहीं पता बुआ , आपका भाई और मेरा बाप अपने ही भाई शिवम सिंह का क़ातिल है। आज तक हम सब यही जानते रहे हैं कि शिवम चाचा की मौत सर्प के काटने से हुई थी जब वो खेत में पानी लगा रहे थे। जबकि ये बात सरासर झूॅठ है बुआ। सच्चाई ये है कि मेरे बाप ने उनकी जानबूझ कर जान ली थी। "

" ये ये क्या कह रही है तू ?" गीता के पैरों तले से ज़मीन गायब हो गई __" नहीं नहीं सत्यम भैया ऐसा नहीं कर सकते हैं। ये सब झूठ है साक्षी , कह दे कि ये सब झूठ है। "

" कैसे कह दूॅ बुआ ?" साक्षी की ऑखें छलक पड़ी ___" मैंने अपनी ऑखों से देखा है और कानों से सुना है। "

" कब देखा सुना तुमने ?" गीता कह उठी।

" कल रात को। " साक्षी ने कहा __" और ये अच्छा ही हुआ बुआ कि मुझे अपने माता पिता की ये सच्चाई खुद उनके ही मुख से सुनने को मिल गई। कल रात मुझे नींद नहीं आ रही थी। अपने बेड पर पड़ी मैं करवॅटें बदल रही थी। फिर मुझे प्यास लगी तो मैं अपने कमरे से निकल कर नीचे किचेन में पानी पीने के लिए आई। पानी पीकर जब मैं वापस अपने कमरे की तरफ जाने लगी तो देखा कि रेणुका चाची की तरफ जाने वाला पार्टीशन का दरवाजा खुला हुआ था। मैने सोचा ये खुला हुआ क्यों है आज। बस यही पता करने के लिए मैं उस तरफ

चली गई। मगर मुझे क्या पता था कि उस तरफ मुझे कुछ ऐसा देखने सुनने को मिलेगा जिसे देख सुन कर मेरे पैरों तले से धरती गायब हो जाएगी। "

" ऐसा क्या देखा सुना तुमने ?" गीता बेयकीनी भरे भाव से पूछा था। उसकी बात सुन कर साक्षी उसे वो सब कुछ बताती चली गई जो कुछ उसने उस तरफ कमरे के अंदर देखा और सुना था। उसने एक एक बात गीता को बताई। सारी बातें सुनने के बाद गीता की हालत काटो तो खून नहीं जैसी हो गई थी। फिर जैसे उसे खुद ही होश आया। उसका चेहरा पलक झपकते ही दुख और पीड़ा में डूबता चला गया। ऑखों से झर झर करके ऑसू बहने लगे।

" इतना बड़ा पाप। " फिर वह बिलखते हुए बोली __" और इतना बड़ा गुनाह किया इन लोगों ने मेरे देवता जैसे भाई के साथ। अरे उसके साथ ही क्यों रुके , इन लोगों ने तो किसी को भी नहीं बक्शा। अपने पाप और गुनाह को छुपाने के लिए मेरे भाई की सर्प से कटवा कर जान ले ली। मेरी देवी समान भाभी रेणुका पर इतने संगीन इल्ज़ाम लगाए और उन्हें हवेली से निकाल दिया। इन लोगों ने तो हवेली को नर्क बना कर रख दिया है साक्षी । अच्छा हुआ तू मुझे यहॉ ले आई। वरना इन लोगों का कोई भरोसा नहीं था कि ये लोग कब मेरी या तुम्हारी इज्ज़त के साथ अपनी हवस की भूख को शान्त करते। "

" मुझे नफ़रत हो गई है बुआ अपने मॉ बाप और भाई से। " साक्षी ने कहा __" मैं तो कल ही अपने रिवाल्वर से इन तीनो को जान से मार देना चाहती थी मगर मेरे ज़मीर ने रोंक दिया मुझे। ये कह कर कि इनको जान से मारने का अधिकार मुझको नहीं बल्कि उसे है जिनके साथ इन लोगों ने ग़लत किया है। कसम से बुआ , मुझे ऐसे मॉ बाप और भाई के मर जाने का लेश मात्र भी दुख नहीं होगा। "

" मुझे तो अभी भी यकीन नहीं हो रहा साक्षी कि ये सब इन लोगों ने किया है। " गीता ने दुखी भाव से कहा __" पता नहीं मेरी देवी समान रेणुका भाभी और उनके दोनो बच्चे किस हाल में होंगे ? जिस तरह से इन लोगों उन पर अत्याचार किया है न उसकी इन्हें सज़ा ज़रूर मिलेगी। ईश्वर के पास सबका हिसाब है। उसका क़हर जब इन पर बरपेगा न तो इनके जिस्मों पर कीड़े पड़ जाएॅगे। "

" वो लोग मुंबई में जहॉ भी होंगे यहॉ से बहुत अच्छे होंगे बुआ। " साक्षी ने कहा __" और आपको पता है आज मेरा वो भाई आ रहा है जिसे मैने कभी अपना भाई नहीं समझा था। लेकिन वो पगला हमेशा मुझे इज्ज़त से दीदी ही कहा करता था। मेरा सच्चा भाई आ रहा है बुआ। मेरा विक्रम आ रहा है मुंबई से। "

" क्या ?????" गीता उछल पड़ी __" मगर तुझे कैसे पता ?"

" पता तो होगा ही बुआ। " साक्षी ने फीकी सी मुस्कान के साथ कहा __" आख़िर बुलवाया तो मैने ही है उसे। "

" ये क्या कह रही है तू ?" गीता ने बुरी तरह चौंकते हुए कहा __" तूने उसे बुलवाया है

? ये जानते हुए भी कि तुम्हारे बाप से उसकी जान को खतरा ह ै ?"

" उसे कुछ नहीं होगा बुआ। " साक्ष ी ने दृढ़ता से कह ा __" उसकी तरफ आने वाली हर बाधा हर मौत को सबसे पहले मुझसे मिलना होगा। कसम से बुआ अगर खुद मेरा बाप उसकी मौत बन उसके पास आया तो मौत रूपी उस बाप को भी मैं जीवित नहीं छोड़ूँगी। "

" लेकिन तूने उसे बुलवाया किस लिए है साक्ष ी ?" गीत ा ने कह ा __" आख़िर बात क्या ह ै ?"

" उसकी भी अजब कहानी है बुआ। " साक्ष ी ने अजीब भाव से कह ा __" पगले का नसीब तो देखो। कहीं पर भी उसे प्यार और खुशियॉ नसीब नहीं हुईं। दुख दर्द ने तो जैसे उसका दामन ही थाम रखा है। "

" क्या कह रही त ू ?" गीत ा ने ना समझने वाले भाव से कह ा __" साफ साफ बता कि बात क्या ह ै ?"

" बुआ , मेरा भाई विक्रम एक खूबसूरत लड़की से प्यार करता था। " साक्ष ी दुखी लहजे में बोल ी __" मगर बाद में उस लड़की ने उसे छोंड़ दिया। और अब वहीं लड़की उसे अंतिम बार देखना चाहती है। "

" अंतिम बार ???" गीत ा का दिमाग़ चकरा गय ा __" इसका क्या मतलब हुआ ?"

साक्षी ने गीता को सारी बातें बताई। ये भी बताया कि उस लड़की का कुछ दिनों पहले गैंग रेप हो चुका है। साक्षी ने बताया कि कैसे उस लड़की ने विक्रम को छोंड़ा था और अब लास्ट स्टेज के कैंसर से अंतिम सासें ले रही है। वो चाहती है कि अंत समय में वो अपने महबूब को देख ले और उसी की बाहों में उसका दम निकले। सारी बातें सुनने के बाद गीता एकदम अवाक् रह गई। उसकी ऑखों में फिर से ऑसुओं का सैलाब सा आ गया।

" हे भगवान ये सब क्या कर रहा है त ू ?" गीत ा ने ऊपर की तरफ देख कर दुखी भाव से कह ा __" मेरे बच्चे को कितना दुख संताप देगा तू। साक्ष ी , वो प्राच ी को उस हाल में देख नहीं पाएगा। भगवान ही जाने क्या गुज़रेगी उस वक्त उसके दिल पर। ये प्यार मोहब्बत होती ही ऐसी चीज़ है बेटा कि इंसान को कमज़ोर दिल का बना देती है। खुद पर चाहे हज़ार चोंट खा ले इंसान मगर अपने प्रियतम के लिए वो छोटी से छोटी चोंट भी बरदाश्त नहीं कर पाता। तू उसके पास ही रहना बेटा। नहीं तो तू मुझे ले चल उसके पास। मैं अपने भतीजे को उस वक्त संभाल ूँगी। मैं उसे किसी भी कीमत पर बिखरने नहीं दूँगी रे। "

" बस ईश्वर से दुवा कीजिए बुआ कि सब ठीक ही रहे। " साक्ष ी ने भारी स्वर में कह ा _" मैं अपने भाई के पास ही रहूँगी। मैं उसे अपने सीने से लगा लूँगी बुआ लेकिन उसे बिखरने नहीं दूँगी। "

" मुझे तुझ पर पूरा भरोसा है साक्ष ी। " गीत ा ने साक्ष ी के चेहरे को अपनी दोनो हथेलियों के बीच लेकर कह ा ___" आज तुझे अपने उस भाई के लिए इतना प्यार और इतनी तड़प

देख कर मुझे खुशी हुई , जिस भाई को तूने कभी अपना नहीं समझा था। "

" वो मेरी सबसे बड़ी भूल थी और नादानी थी बुआ। " साक्षी की ऑखों में ऑसू भर आए , बोली __" जो मैने अपने पारस जैसे भाई को कभी अपना नहीं समझा था। लेकिन इसमें भी मेरा कोई कसूर नहीं है बुआ। ये सब तो मेरे उन्हीं मॉ बाप की वजह से हुआ है जिन्होंने बचपन से हम बहन भाई को यही सिखाते रहे कि ये हमारे अपने नहीं हैं बल्कि ये बुरे लोग हैं। मगर कहते हैं न बुआ कि सच्चाई हमेशा के लिए पर्दे के पीछे छुपी नहीं रह सकती। वो एक दिन उस पर्दे से निकल कर हमारे सामने आ ही जाती है। आज मुझे पता चल चुका है कि अच्छा कौन है और बुरा कौन है ? जीवन भर दूसरों को बुरा बताने वाला आज खुद मेरे सामने कितना बुरा और पापी निकला जिसकी कोई सीमा नहीं है। जो बाप अपनी ही बेटी बहू और बहन को अपने नीचे सुलाने की बात करे वो अच्छा कैसे हो सकता है बुआ। वो तो सबसे ऊँचे दर्ज़े का पापी है , कुकर्मी है। ऐसे लोगों को इस धरती पर जीने का कोई अधिकार नहीं है। "

" बड़े बड़े पापी और कुकर्मियों का इस धरती से सर्वनाश हुआ है बेटी। " गीता ने कहा _" फिर ये कैसे जीवित बच जाएँगे। इनका भी वही हस्र होगा जो कंस और रावण का हुआ था। ख़ैर , तू ये बता कि विक्रम कब पहुँच रहा है यहाँ ? और तूने उसकी सुरक्षा के लिए क्या इंतजाम किया है ?"

" मैने उसकी सुरक्षा के लिए इंतजाम कर दिया है बुआ। " साक्षी ने कहा __" रेलवे स्टेशन पर सिविल वेश में पुलिस के आदमी मौजूद हैं। मुझे रौनक ने फोन पर बताया था कि वो ट्रेन से उतरने के बाद किसी टैक्सी में सोनपुर आएगा।उसने ऐसा शायद इस लिए किया है कि डैड के आदमी अगर वहॉ कहीं हों भी तो वो सब उसे बस में ढूँढ़ेंगे , जबकि उसके टैक्सी से आने की वो लोग उम्मीद भी न करेंगे। "

" मेरा भतीजा होशियार है। " गीता ने खुश होकर कहा __" बहुत अच्छा सोचा है उसने। ख़ैर , अब तू क्या करने वाली है ?"

" मैं रौनक के फोन का इन्तज़ार करू गी। " साक्षी ने कहा __" क्योंकि विक्रम सीधा रौनक के घर ही जाएगा। इधर मैं हॉस्पिटल प्राची के पास जाऊँगी। उधर से सब कुछ ठीक करने बाद मैं रौनक को फोन कर दूँगी कि अब वो विक्रम को लेकर हॉस्पिटल आ जाए। मैने हॉस्पिटल के चारो तरफ भी सिविल ड्रेस में पुलिस वालों को मौजूद रहने के लिए कह दिया है। "

" ये बहुत अच्छा किया तुमने। " गीता ने कहा __" और मुझे यकीन है कि तेरे रहते विक्रम को कुछ नहीं होगा। "

" मैं अपनी जान दे दूँगी बुआ। " साक्षी ने दृढ़ता से कहा __" मगर अपने भाई को खरोंच तक आने नहीं दूँगी। "

" क्या इतना प्यार करती है तू अपने उस भाई से ?" गीता की ऑखें भर आईं थी।

" ऐसे भाई को तो सिर्फ प्यार ही किया जाता है न बुआ ?" साक्षी के जज़्बात बेकाबू से हो गए , खुद को बड़ी मुश्किल से संभाल कर कहा उसने __" अगर कहीं भगवान मिले मुझे तो उससे यही कहूँगी कि मुझे हर जन्म में विक्रम जैसा ही भाई दे और जयदीप के जैसा भाई किसी बैरी को भी न दे। "

गीता ने तड़प कर साक्षी को अपने सीने से लगा लिया। दोनो की ऑखों से ऑसुओं के वो बॉध फूट पड़े जो भावनाओं और जज़्बातों के मचल उठने से बेकाबू से हो गए थे। अभी ये दोनो एक दूसरे के गले ही लगे थे कि तभी कमरे में केशरमाँ ने प्रवेश किया।

" बिटिया , नास्ता तैयार कर दिया है मैने चलो नास्ता कर लो। " केशरमाँ ने कहा __" और हॉ इनका कमरा भी साफ कर दिया है मैने। "

केशरमाँ की बात सुन कर दोनो अलग हुईं और बड़ी सफाई से अपनी अपनी ऑखों से दोनो ने ऑसुओं को साफ कर लिया।

" आप चलिए काकी। " साक्षी ने कहा __" हम बस दो मिनट में आते हैं। "

" ठीक है बिटिया। " केशरमाँ ने कहा और दरवाजे से वापस पलट गई।

केशरमाँ के जाने के बाद गीता और साक्षी दोनो ही बाथरूम की तरफ बढ़ गईं। बाथरूम में पानी से अपने अपने चेहरों को धोने के बाद वो दोनो वापस कमरे में आईं और हुलिया सही करने के बाद नास्ते के लिए कमरे से बाहर चली गईं।

" काकी , आज काका कहीं दिखाई नहीं दिये अब तक। " नास्ते की टेबल पर बैठी साक्षी ने केशरमाँ से कहा __" बाहर गेट पर सिर्फ शंकर काका ही दिखे थे। "

" अरे बिटिया अब क्या बताऊँ तुमसे। " केशरमाँ ने बुरा सा मुह बनाते हुए कहा _" वो तो जब देखो उन चारों की खातिरदारी में ही लगा रहता है। तुमने काम जो सौंपा हुआ है उसे। "

" कौन चारो ?" गीता को समझ न आया था इस लिए पूछ बैठी थी , बोली __" और किनकी खातिरदारी ?"

" उन्हीं चारों की बुआ जिन्होंने प्राची के साथ कुकर्म किया था। " साक्षी ने कहा __" वो सब बड़े बाप की बिगड़ी हुई औलादें हैं। जैसे कुकर्मी बाप वैसे ही कुकर्मी बेटे हैं। प्राची के साथ इन लोगों जो कुकर्म किया उसके लिए उन चारों को कानूनी तौर पर मैं कोई सज़ा नहीं दिला सकती थी , क्योंकि वो सब अपने बाप की ऊँची पहुँच और ताकत के बल पर बड़ी आसानी से कानून की गिरफ्त से निकल जाते। ऐसे में प्राची के साथ इंसाफ नहीं हो पाता बुआ इस लिए कानून की रखवाली करने वाली आपकी इस बेटी ने कानून को अपने हाथ में लेकर खुद उन चारों को सज़ा देने का फैंसला किया। ये इसी फैंसले का नतीजा है कि वो चारो आज यहॉ पिछले कई दिनों से रोज़ाना सज़ा के रूप में यातनाएँ झेल रहे हैं। और मज़े की बात ये है बुआ कि किसी को इस बात की भनक तक नहीं है कि यहॉ पर किसी को ऐसी सज़ा दी जा रही है। इनके बाप लोगों को यही लगता है कि उनके बेटे कहीं बाहर गए हुए हैं

और मज़े में होंगे। "

" ये तो तुमने बहुत अच्छा काम किया है साक्षी। " गीता ने कहा __" लेकिन अगर इन लोगों के बापों को पता चल गया कि उनके बेटों के साथ तुम यहाँ क्या कर रही हो तब क्या होगा ?"

" उसका भी पुख्ता इंतजाम कर रखा है मैने। " साक्षी ने कहा __" बहुत जल्द इन लोगों के बापों को भी ऐसी ही सज़ा देने वाली हूँ मैं। किसी को पता भी नहीं चलेगा कि इन नामों के लोगों के साथ किसने क्या किया है। "

गीता, साक्षी के चेहरे को देखती रह गई अचरज भरी नज़रों से। से यकीन ही नहीं हो रहा था कि उसकी फूल जैसी नाज़ुक सी भतीजी ऐसे खतरनाक काम भी करती है। ख़ैर, नास्ता करने के बाद साक्षी ने गीता से जाने की इजाज़त ली और बाहर की तरफ निकल गई जबकि गीता मन ही मन ईश्वर को याद कर साक्षी और विक्रम की सलामती की दुवाएं करने लगी थी।

४५

उधर ट्रेन अपने निर्धारित समय पर ही रामगंज स्टेशन पर पहुॅची थी। ट्रेन से उतरने से पहले मैने अपने चेहरे को रुमाल से ढॅक लिया था। मेरे साथ मेरा नया दोस्त अमर था। उसको अपना चेहरा ढॅकने की कोई ज़रूरत नहीं थी। क्योंकि उसे यहॉ पर कोई पहचानता ही नहीं था। हम दोनो ट्रेन से उतर कर स्टेशन से बाहर की तरफ बढ़ चले।

प्लेटफार्म पर इधर उधर मैने सरसरी तौर पर अपनी नज़रें दौड़ाई तो सहसा एक ऐसे चेहरे पर मेरी नज़र पड़ी जो यकीनन बड़े पापा का आदमी था। वो एग्जिट गेट के दाएॅ तरफ खड़ा हर आने वालों को बड़े ध्यान से देख रहा था। मैने उसकी तरफ से अपनी निगाह हटा ली और बेफिक्र होकर एग्जिट गेट की तरफ बढ़ चला। एग्जिट गेट के पास जब मैं और अमर पहुॅचे तो सहसा टीटी ने हमें रोंक लिया और हमसे टिकट दिखाने को कहने लगा। मैने जल्दी से अपने पॉकेट से अपना पर्स निकाला और उससे टिकट निकाल कर टीटी को पकड़ा दिया। मैने पल भर के लिए दाएॅ तरफ कुछ ही दूरी पर खड़े बड़े पापा के उस आदमी की तरफ देखा। वो आने वाले आदमियों की तरफ बड़े ध्यान से देख रहा था। मैं ये नहीं जानता कि उसने मेरी तरफ देखा था या नहीं मगर इस वक्त उसकी नज़र सामने से आने वाले अन्य यात्रियों की तरफ ही थी। इधर टीटी ने मेरी टिकट चेक करने बाद मुझे वापस लौटा दी तो मेरे पीछे अमर ने भी टीटी को अपनी टिकट थमा दी। टीटी अमर की टिकट देखने बाद अमर को वापस कर दिया। मैने इशारे से अमर को चलने का इशारा किया। तभी उस व्यक्ति की नज़र मुझ पर पड़ी। वो मुझे ध्यान से देखने लगा। मैं उसके देखने पर एकदम से घबरा सा गया मगर फिर जल्द ही मैने खुद को संभाला और अमर को लेकर बाहर की तरफ बढ़ गया। मैं पीछे नहीं देखना चाहता क्योंकि मुझे अंदेशा था कि वो शायद मुझे ही देख रहा होगा और गर मैने पलट कर उसकी तरफ देखा तो उसे ज़रूर मुझ पर शक हो सकता है।

बाहर आकर मैं और अमर टैक्सी की तरफ तेज़ी से बढ़ चले। हलॉकि वहॉ पर बहुत से लोगों की भीड़ थी इस लिए मुझे यकीन था कि वो आदमी इतना जल्दी मुझे ढूॅढ़ नहीं पाएगा। टैक्सी के पास पहुॅचा ही था एक आदमी हमारे पास आया और हमसे टैक्सी का पूॅछा तो हमने तुरंत उस आदमी को हॉ कह दिया। आदमी हमारी हॉ सुनते ही हमे लेकर अपनी टैक्सी के पास पहुॅचा और टैक्सी का गेट खोल कर हमें अंदर बैठने का इशारा किया। हम दोनो उसमे बैठ गए तो वो टैक्सी ड्राइवर भी स्टेयरिंग सीट पर बैठ गया।

" कहॉ चलना है साहब ?" ड्राइवर ने टैक्सी को स्टार्ट करते हुए पूछा।

" सोनपुर। " मैने कहा तो ड्राइवर ने टैक्सी को आगे बढ़ा दिया। मैने पलट कर स्टेशन की तरफ देखा तो मुझे बड़े पापा का वो आदमी कहीं नज़र न आया। अभी मैं ये सब देख ही रहा था कि तभी मेरा मोबाइल फोन बज उठा। मैने हड़बड़ा कर मोबाइल को निकाल कर स्क्रीन पर फ्लैश कर रहे नाम को देखा। रौनक का फोन था। मैने काल रिसीव की तो वो मुझसे पूछने लगा कि मैं इस वक्त कहॉ हूॅ तो मैने उसे बता दिया कि टैक्सी में बैठ कर सोनपुर के लिए निकल लिया हूॅ। मेरी बात सुन कर उसने कहा कि ठीक है वो मुझे सोनपुर के बस स्टैण्ड पर

मिलेगा जहॉ पर उसकी दुकान है। उसके बाद मैने काल कट कर दी।

" यहॉ से कितना समय लगेगा तुम्हारे गॉव पहुॅचने मेंं ?" अमर ने मुझसे पूछा।

" ज्यादा से ज्यादा आधे घंटे का समय लगेगा। " मैने कहा __" सोनपुर के बस स्टैण्ड से रौनक को साथ में लेकर ही उसके घर चलेंगे। "

मेरी बात सुन कर अमर कुछ न बोला। मैने एक बार पीछे मुड़ कर टैक्सी के पिछले शीशे के उस पार देखा। एक जीप हमारी इस टैक्सी के पीछे आ रही थी। मैने सोचा होगा कोई। मगर मुझे कोई उम्मीद नहीं थी कि इस तरह कोई जीप वाला एक रिदम पर टैक्सी के पीछे चल रहा था। मैने कई बार नोट की वो जीप हमारे पीछे उतनी ही रफ्तार से चलती हुई आ रही थी। मुझे समझ न आया कि ऐसा कौन हो सकता है उस जीप में जो हमारे पीछे पीछे उतनी ही गति से आ रहा था जितनी गति से हमारी टेक्सी सड़क पर दौड़ी जा रही थी। मेरा माथा ठनका कि कौन हो सकता है उस जीप में?????

उधर सत्यम सिंह हवेली से फैक्ट्री जाने के लिए निकल ही रहा था कि तभी उसका मोबाइल फोन बज उठा। सत्यम सिंह ने कोट की पॉकेट से मोबाइल निकाल कर स्क्रीन पर फ्लैश कर रहे भीमा नाम को देख कर तनिक चौंका। उसने तुरंत ही काल को रिसीव कर मोबाइल को कानों से लगा लिया।

" हाँ भीमा बोलो क्या ख़बर है ?" कान से लगाते ही सत्यम सिंह ने ज़रा उत्सुक भाव से बोला था।

"..... । " उधर से कुछ कहा भीमा ने।

" ये तुम क्या कह रहे हो भीमा ?" सत्यम सिंह ने तनिक चौंकते हुए कहा था __" वो भला यहाँ क्यों आएगा अब ? तुमने अच्छी तरह से उसे देखा है न ?"

".....। " उधर से भीमा ने कुछ कहा।

" तो ख़ाक़ देखा तुमने। " सत्यम सिंह का लहजा एकाएक कठोर हो गया __" तुमको खुद ठीक तरह से यकीन नहीं है उसका। पहले तुम उसे अच्छी तरह से देखो और जब तुम उसे पहचान जाओ तब हमे बताओ। "

".....। " उधर से भीमा ने फिर कुछ कहा।

" ऐसे नहीं भीमा। " सत्यम सिंह परेशान से लहजे में बोला __" हमें पक्के तौर पर ख़बर चाहिए। हवा में लाठियाँ मत घुमाओ समझे। तुम्हें उसके आने का सिर्फ अंदेशा है। जबकि हम ये अच्छी तरह जानते हैं कि उस कायर और डरपोंक में अब इतनी हिम्मत नहीं है कि वो इस गाँव में क़दम भी रख सके। उसे भी पता है कि यहाँ क़दम रखते ही उसकी जान उसके जिस्म से जुदा हो जाएगी। दूसरी बात ये है कि यहाँ वो आएगा ही क्यों ? अपनी माँ और बहन की वजह से आता था वो , मगर अब तो वो दोनो उसके पास ही हैं। इस लिए अब उसके यहाँ आने का कोई सवाल ही नहीं उठता। "

".....। " उधर से भीमा ने फिर कुछ कहा।

" सिर्फ शक के आधार पर तुम हमें ये बता रहे हो भीमा। " सत्यम सिंह ने कुछ सोचते हुए कहा __" पर अगर तुम्हें लगता है कि वो वही था तो ठीक है तुम उसका पीछा करो। पता करो वो कहाँ जाता है और किससे मिलता है ?"

".....। " भीमा ने कुछ कहा।

" तुम सब के सब निकम्मे हो। " सत्यम सिंह एकाएक बेहद गुस्से में बोला __" जब तुम्हें उस पर शक हो ही गया था तो उसका पीछा करते तुम। "

".....। " उधर से भीमा ने फिर कुछ कहा।

" अरे तो कैसे गायब हो गया वो ?" सत्यम सिंह चीखा __" वो ज़रूर किसी बस में या

ऑटो में बैठ कर वहाँ से निकल गया होगा। इतना जल्दी कोई गायब नहीं होता भीमा। वो यकीनन वही था। उसने तुम्हें पहचान लिया होगा और इसी लिए वो तुम्हारी नज़रों से इतना जल्दी ओझल हुआ है। मगर उसके साथ दूसरा वो आदमी कौन हो सकता है ?"

".....। " भीमा ने कुछ कहा।

" हाँ शायद यही बात है। " सत्यम सिंह ने थोड़ा नरमी से कहा __" तुमने उसके साथ किसी अजनबी को देखा इसी लिए तुम्हारे मन में दो तरह के विचार पैदा हुए। तुमने सोचा होगा कि किसी अजनबी के साथ उसका क्या काम ? इसी में तुम चूक गए भीमा। ख़ैर , कोई बात नहीं। अगर वो मुंबई से यहाँ आया है तो यकीनन वो गाँव की ही तरफ आएगा। इस लिए अपने आदमियों से कहो कि फटाफट सारे रास्तों पर फैल जाएँ और गाँव के रास्तों पर भी घेराबंदी कर लें। वो ज़रूर किसी बस या ऑटो में ही होगा। हर वाहन की अच्छी तरह से तलाशी लो। साला जाएगा कहाँ हमसे बच कर ?"

".....। " भीमा ने कुछ कहा।

" चलो अच्छी बात है। " सत्यम सिंह ने कहा __" जैसे ही वो मिले हमें ख़बर कर देना और हाँ उसे पकड़ कर सीधा हमारे पास हवेली लेकर आना। हम भी फैक्ट्री ही जा रहे थे मगर अब नहीं जाएँगे। यहीं तुम लोगों का इन्तज़ार करेंगे हम। "

ये कह कर सत्यम सिंह ने मोबाइल से काल कट कर दी और फिर अपने नथुने फुलाते हुए खुद ही बड़बड़ाया__"आ बेटा आ। तेरा स्वागत हम ऐसा करेंगे कि सारी दुनियाँ हमारे स्वागत कार्यक्रम की कायल हो जाएगी। हाहाहाहाहा आ सपोले जल्दी आ।"

अभी सत्यम सिंह अपनी ही बातों से हँस ही रहा था कि तभी वहाँ पर सोनिया आ गई। उसके साथ में जयदीप भी था।

" क्या बात है सत्यम ?" सोनिया ने मुस्कुराते हुए कहा __" अकेले अकेले ही मज़े ले रहे हो। मगर किस बात पर ? हमे भी तो बताओ आख़िर माज़रा क्या है ?"

" अभी हमारे एक आदमी का फोन आया था डार्लिंग। " सत्यम सिंह ने जयदीप की मौजूदगी में भी उसे डार्लिंग कहा __" उसने हमें बताया कि विक्रम यहाँ आ रहा है। "

" क्याऽऽऽ ???" सोनिया सोफे पर बैठी इस तरह उछल पड़ी थी जैसे अचानक ही उसके पिछवाड़े पर किसी ने गर्म तवा रख दिया हो , बोली __" ये क्या कह रहे हो तुम ? वो रंडी का जना यहाँ किस लिए आ रहा है ?"

" उसे उसकी मौत यहाँ ला रही है सोनिया। " सत्यम सिंह ने कहा __" किसी ने सच ही कहा है कि जब गीदड़ की मौत आती है तो वो शहर की तरफ भागता है। वही हाल उस हरामज़ादे का है। उसकी भी मौत आई हुई है इसी लिए वो भागता हुआ यहाँ आ रहा है। "

" अच्छा ही तो है डैड। " सहसा जयदीप भी गर्मजोशी से कह उठा __" आने दीजिए उस हराम के पिल्ले को। उससे गिन गिन के हिसाब लूँगा मैं। उस दिन उसने मुझे बहुत मारा था न , आज उस सबका हिसाब मैं लूँगा। वो मेरा शिकार है डैड , आप उसे मेरे हवाले करेंगे। मुझसे प्रॉमिस कीजिए डैड। "

" तुम्हारे हवाले उसे ज़रूर करू गा बेटे लेकिन उसे अधमरा करने के बाद। " सत्यम सिंह ने कहा __" क्योंकि अधमरी हालत में वो तुमसे जीत नहीं पाएगा। वरना बेहतर हालत में तो तुम उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाओगे। "

" डैड आप मुझे उससे कमज़ोर समझते हैं क्या ?" जयदीप की भृकुटी तन गई __" वो तो उस दिन मेरा दिन ही ख़राब था डैड इस लिए वो मुझे मार सका था। वरना तो वो मेरे सामने कुछ भी नहीं है। "

" दिन ख़राब नहीं होते बेटे। " सत्यम सिंह ने खिसियाते हुए कहा __" वो तो सब एक जैसे ही होते हैं। रही बात उसकी कि तुम्हारे सामने वो कुछ भी नहीं है तो ये बात तुम खुद को उससे ऊँचा दर्शाने के लिए कह रहे हो। जबकि सच्चाई तुम भी जानते हो कि अकेले तुम उसका बाल भी बॉका नहीं कर पाओगे। ख़ैर जाने दो। "

सत्यम सिंह की इन बातों पर जयदीप बगले झाँकने लगा था। कदाचित उसे समझ आ गया था कि उसकी डींगें महज बकवास के सिवा कुछ भी नहीं है। सच्चाई यही है कि विक्रम का अकेले वो बाल भी बॉका नहीं कर सकता था। ये बात उसका बाप भी बखूबी समझ चुका था।

" लेकिन सत्यम वो यहाँ आ किस लिए रहा है ?" सोनिया ने कहा __" उसके यहाँ आने की कोई ठोस वजह मुझे तो दूर दूर तक समझ में नहीं आ रही। "

" कोई तो वजह होगी ही सोनिया। " सत्यम सिंह ने सोचते हुए कहा __" मत भूलो कि सुंदर भी मुंबई गया हुआ है। हम ये नहीं जानते कि इतने दिनों से वो वहाँ क्या कर रहा है ? उसे विक्रम मिला भी है कि नहीं। पर आज की सिचुएशन को देखा जाए तो यही लगता है कि सुंदर को विक्रम और विक्रम की माँ बहन मिल चुकी हैं। उन लोगों ने सुंदर को और सुंदर ने उन लोगों को आपस में सारी बातें बताई होंगी। "

" पर उनकी उन बातों से विक्रम के यहाँ आने का क्या कनेक्शन हो सकता है ?" सोनिया ने तर्क दिया।

" ये तो सुंदर को भी पता चल चुका होगा कि हमारी असलियत क्या है ?" सत्यम सिंह ने समझाने वाले अंदाज़ में कहा __" रेणुका से सारी बातें जानने के बाद सुंदर को लगा होगा कि वो तो यहाँ से मुंबई चला आया है लेकिन उसके बीवी बच्चे तो अभी भी गाँव में ही हैं। सुंदर समझता होगा कि उसके बीवी बच्चों को मुझसे बड़ा भारी खतरा है , इस लिए उसका पहला काम यही होगा कि वो अपने बीवी बच्चों को या तो भरपूर तरीके से सुरक्षित करे या फिर किसी तरह वो उन्हें भी अपने पास मुंबई बुला ले। लेकिन सवाल ये पैदा हुआ होगा कि उसके बीवी बच्चों को यहाँ से लेकर कौन जाएगा वहाँ ? इस लिए उसने विचार विमर्ष करके

विक्रम को उन्हें लाने के लिए भेजा होगा। "

" तुम्हारी बातें और तुम्हारी सोच अपनी जगह यकीनन सही हैं सत्यम। " सोनिया ने गंभीरता से कहा __" मगर , अगर तुम्हारी बातों के अनुसार सोचा जाए तो इन बातों में भी एक पेंच है। वो ये कि उस सूरत में सुंदर ये कभी नहीं चाहेगा कि विक्रम की जान को कोई खतरा हो जाए। ये तो वो भी समझ ही गया होगा कि विक्रम की जान को हमसे खतरा है। इस लिए अपने बीवी बच्चों को यहाँ से ले जाने के लिए वो विक्रम को वहाँ से हर्गिज़ नहीं भेजेगा , और अगर भेजना चाहेगा भी तो रेणुका विक्रम को यहाँ आने ही नहीं देगी। इस सिचुएशन में जान को खतरे में डालने का काम खुद सुंदर ही करेगा। वो खुद यहाँ आकर अपने बीवी बच्चों को यहाँ से ले जाना उचित समझेगा ना कि विक्रम को भेजना। "

" ये बात भी सही है। " सत्यम सिंह को मानना पड़ा कि सोनिया का तर्क भी अपनी जगह बेहद पुख्ता है , बोला __" लेकिन ये भी सच है कि विक्रम के यहाँ आने की कोई न कोई ठोस वजह तो ज़रूर है। बेवजह अपनी जान को जोखिम में डालने की मूर्खता ना तो वो खुद करेगा और ना ही उसकी माँ या उसका चाचा उसे करने की इजाज़त देंगे। "

" बिलकुल सही कहा। " सोनिया ने कहा _" तो सवाल ये है कि वो आख़िर यहाँ आ किस वजह से रहा है ?"

" वजह कोई भी हो उसके आने की। " सत्यम सिंह ने कहा __" हमारे लिए अच्छी बात यही है कि जिसे हम महीनों से खोज रहे थे वो खुद ही चल कर हमारे पास आ रहा है। वो हमारे हाँथ लग जाएगा तो बाकी के उसके चाहने वाले भी हमारे पास सिर के बल दौड़ते हुए आ जाएँगे। अब तो मज़ा आएगा सोनिया । हर कोई हमारे हाथ में खुद ही चला आएगा। फिर हम अपने तरीके से उनके साथ कुछ भी कर सकेंगे। बस एक ही बात की चिंता है कि साक्षी इन सबके बीच टपक न पड़े। वो पुलिस वाली है और ईमानदार पुलिस अफसर भी है वो। इस लिए उसके रहते हमारे लिए समस्या भी हो सकती है। "

" अब कोई भी समस्या आए डैड। " जयदीप कह उठा __" ऐसा सुनहरा मौका अपने हाँथ से जाने नहीं देंगे हम। अगर हमारे इस अच्छे काम के बीच समस्या बन कर साक्षी दीदी आएँगी तो उनका भी हिसाब किताब कर दिया जाएगा। "

" पहली बार अकल वाली बात की है तुमने बेटे। " सत्यम सिंह ने कहा __" ये यकीनन हमारे लिए सुनहरा मौका ही है। अगर विक्रम हमारे हाँथ लग जाएगा तो उसके सभी चाहने वाले अपने आप ही चल कर हमारे पास आ जाएँगे। इस लिए इस सुनहरे मौके पर हम किसी भी समस्या को तुरंत खत्म कर देने से पीछे नहीं हटेंगे। "

" तो क्या तुम अपनी बेटी को जान से मार दोगे सत्यम ?" सोनिया अंदर ही अंदर काँप गई थी।

" ऐसा तो सिर्फ तब होगा डियर। " सत्यम सिंह ने अजीब भाव से कहा __" जब हमारे पास

ऐसा करने के सिवा दूसरा कोई रास्ता ही न बचेगा। "

सोनिया देखती रह गई सत्यम सिंह को। उसकी बातों से उसके जिस्म का रोयॉ रोयॉ खड़ा हो गया था। उसकी ऑखों के सामने उसकी सुंदर सी बेटी साक्षी का खूबसूरत चेहरा कई बार फ्लैश कर उठा। इस एहसास ने ही उसे अंदर तक हिला कर रख दिया कि उसकी बेटी को उसका ही बाप जान से मार भी सकता है। एक पल के लिए उसकी ऑखों के सामने साक्षी का मृत शरीर खून से लथपथ ज़मीन में पड़ा हुआ दिख गया उसे। ये दृष्य ऑखों के सामने चकराते ही सोनिया का जिस्म एकदम से ठंडा पड़ता चला गया।

" अब आगे का क्या प्रोग्राम है डैड ?" तभी जयदीप की आवाज़ सोनिया के कानों से टकराई तो जैसे उसे होश आया।

" हमने अपने आदमियों को निर्देश दे दिया है बेटे। " सत्यम सिंह ने कहा __" वो हर रास्तों पर घेराबंदी कर देंगे। विक्रम उनसे बच कर किसी भी हालत में कहीं जा नहीं सकेगा और उनके पकड़ में आ ही जाएगा। उसके बाद हमारे आदमी उसे लेकर सीधा हवेली हमारे पास आएॅगे। "

" दैट्स ग्रेट डैड। " जयदीप ने खुश होकर कहा __" अब आएगा मज़ा। लेकिन डैड विक्रम के आने की ख़बर साक्षी दीदी को नहीं लगनी चाहिए। हम उसे कहीं छुपा कर रखेंगे। इस हवेली में उसे रखना मेरे ख़याल से ठीक नहीं है। "

" ये भी सही कहा तुमने बेटे। " सत्यम सिंह ने कहा _" आज तुम्हारा दिमाग़ भी सही तरह से काम कर रहा है। मुझे इस बात से बेहद खुशी महसूस हो रही है। ख़ैर , तुम फिकर मत करो बेटे , साक्षी के आने से पहले ही हम विक्रम को ऐसी जगह छुपा देंगे जहाँ से किसी को कभी कुछ पता ही नहीं चल पाएगा। एक काम करते हैं , हम अपने आदमियों को बोल देते हैं कि वो विक्रम को लेकर हवेली न आएॅ बल्कि हमारे नये फार्महाउस पर लेकर पहुँचें। ऐसा इस लिए बेटे कि साक्षी का कोई भरोसा नहीं है कि वो कब हवेली में टपक पड़े। उस सूरत में उसे अंदेशा भी हो सकता है इन सब बातों का। पुलिस वाली है न इस लिए अगर एक बार उसके मन में शक का कीड़ा आ गया तो वो उस शक के कीड़े की कुलबुलाहट हो ज़रूर शान्त करने की कोशिश करेगी। इस लिए बेहतर यही रहेगा कि हम विक्रम को अपने नये फार्महाउस पर ही रखें। "

" हाँ ये ठीक रहेगा डैड। " जयदीप ने कहा _" तो फिर हमें भी अब सीधा फार्महाउस ही चलना चाहिए। "

" यस ऑफकोर्स माई डियर सन। " सत्यम सिंह ने मुस्कुराते हुए कहा , फिर उसने सोनिया की तरफ देखते हुए कहा __" चलो डियर तैयार हो जाओ। हमें जल्द ही अपने नये फार्महाउस के लिए निकलना है। "

सत्यम सिंह की बात पर सोनिया ने हाँ में सिर हिलाया और अपने कमरे की तरफ बढ़ गई। जबकि सत्यम सिंह और जयदीप वहीं ड्राइंग रूम में रखे सोफों पर बैठ कर सोनिया के आने

का इन्तज़ार करने लगे। दोनो के चेहरे इस वक्त हज़ार वॉट के बल्ब की तरह चमक रहे थे।

उधर टैक्सी में बैठे हुए मैं और अमर आराम से बस स्टैण्ड की तरफ आए, जहाँ पर मैने रौनक को भी अपने साथ टैक्सी में बैठा लिया। रौनक मेरे साथ अमर को देख कर थोड़ा परेशान सा दिखा तो मैने उसे अमर के बारे में बता दिया। मेरी बात सुन कर रौनक के ज़हन से परेशानी व चिंता चली गई।

मैने रौनक से बहुत पूछा कि उसने मुझे इतना अर्जेन्टली क्यों बुलाया था मगर रौनक ने यही कहा कि मैं खुद अपनी ऑखों से ही देख लूँगा। बस स्टैण्ड से रौनक को लेने के बाद हम अपने गाँव सोनपुर के लिए निकल चुके थे। इधर का रास्ता ऐसा था कि दूर दूर तक खाली ही रहता था। यहाँ रास्ते के दोनो तरफ पहाड़ थे। ऐसे पहाड़ जिनमें पेड़ पौधे या झाड़ झंखाड़ नाम मात्र के ही थे। बस स्टैण्ड से जब गाँव की तरफ आओ तो लगभग दस किलोमीटर के बाद बीच रास्ते में एक बड़ी सी नहर पड़ती थी। जिसके बीच में एक पक्का पुल बना हुआ था जो कि काफी पुराना था।

आस पास का सारा इलाका पथरीला था। बड़ी बड़ी चट्टाने थी। सड़क के दोनो तरफ की सारी ज़मीनें पथरीली और बंजर थी। एक तरफ के पहाड़ पर बाक्साइड था जिसमें पहले के समय में यहाँ से काफी सारा बाक्साइड ट्रकों में जाता था। एक बार कुछ मजदूर पहाड़ के धसने से उसी में दब कर मर गए थे जिससे बड़ा बवाल हो गया था। ठेकेदार तो अपनी जान बचा कर वहाँ से चंपत हो गया था। इसके बाद से वहाँ पर से बाक्साइड ले जाने का काम बंद करवा दिया गया था।

पहाड़ की दूसरी साइड पर एक अन्य सड़क थी जो दूसरे गाँव के लिए जाती थी। उस पुल को पार करने के बाद एक चौराहा मिलता था जिसमे से अलग अलग दिशा में अलग अलग गाँव की तरफ जाने के लिए कच्ची सड़क बनी हुई थी। सोनपुर जाने के लिए सीधा ही जाना होता था। किसी भी मोड़ से मुड़ने की ज़रूरत नहीं थी। लेकिन अगर आप मुड़ भी गए हैं तो दूसरे गाँव से भी आप एक अन्य कच्चे रास्ते से सोनपुर जा सकते हैं। सोनपुर गाँव आस पास के सभी गावों की मुख्य पंचायत था। अन्य गॉवों की अपेक्षा सोनपुर गाँव में सुख सुविधा ज्यादा थी और इस सब में सबसे बड़ी बात ये थी कि आस पास के सभी गॉवों का पुलिस थाना सोनपुर में ही था। सोनपुर कहने के लिए गाँव था वरना तो वो किसी कस्बे जैसा ही था। बस कस्बे की तरह थोड़ा शहरी ढॉचे में ढला हुआ नहीं था।

बस स्टैण्ड से लगभग बीस किलोमीटर चलने के बाद टैक्सी से हम जैसे ही पुल के पास पहुँचने वाले थे कि दूर से ही हमें सामने की तरफ धूल उड़ाती हुई कुछ जीपें हमारी तरफ ही आती हुई दिखीं। वो सब सीधे वाले रास्ते से ही आ रही थीं। मुझे समझते देर न लगी कि ये सब जीपें असल में किसकी हो सकती हैं। मेरी नज़र रौनक पर पड़ी तो वो भी सामने ही देख रहा था। उसकी हालत डर और भय से ख़राब होने लगी थी।

" विक्रम ये ये तो। " रौनक ने सहमे हुए लहजे में कहा __" ये तो तेरे बड़े पापा की ही जीपें लगती हैं। लगता है उन्हें तेरे आने का पता चल गया है। मगर मगर कैसे ? कैसे पता चल

गया उन्हें ?"

" अब जो हो गया उसे छोड़ भाई। " मैने सामने की तरफ देख कर कहा __" मुझे पता है कि मेरे आने का कैसे पता चल गया होगा उस सत्यम सिंह को ? पर कोई बात नहीं रौनक । घबराने की कोई बात नहीं है। आने दे उन सबको। मैं भी तो देखूँ कि सत्यम सिंह और उसके आदमियों में कितना दम है ?"

" क्या हुआ भाई ?" अमर जो कि टैक्सी की खिड़की से उस तरफ के पहाड़ों को देख रहा था , वो मेरी तरफ पलट कर बोल पड़ा था __" किसमे कितना दम है ?"

" सामने देखो दोस्त। " मैने अमर से कहा __" जिसका मुझे अंदेशा था वही हुआ। "

" क्या मतलब ?" अमर ने चौंकते हुए पूछा।

" ये जो सामने से कई सारी जीपें हमारी तरफ आती हुई नज़र आ रही हैं न। " मैने कठोर भाव से कहा __" ये सब मेरे बड़े पापा की ही हैं। इन सब में उनके आदमी हैं और वो खुद भी हो सकते हैं। ये सब मुझे पकड़ने के लिए आ रहे हैं। "

" ओह इसका मतलब कि ऐक्शन का समय आ गया है। " अमर एकदम से सतर्क भाव से कह उठा _" चिन्ता मत करना दोस्त। मेरे रहते इनमें से कोई तुम्हें छू भी नहीं सकेगा। "

" मैं जानता हूँ दोस्त। " मैने कहा _" मगर मैं ये भी नहीं चाहता कि तुम्हें ज़रा सी खरोंच भी आए। आख़िर तुम मेरे दोस्त हो अब। "

" मैं तुम जैसा दोस्त पा कर खुश हूँ मेरे दोस्त। " अमर ने सहसा भावपूर्ण लहजे में कहा __" इस लिए मुझे अब किसी भी चीज़ के लिए रोंकना मत। बहुत दिनों बाद किसी अपने के लिए दिल से कुछ करने का मौका मिला है। "

" फिर भी दोस्त। " मैने अमर के कंधे पर हाँथ रखते हुए कहा __" मैं तुम्हें अकेले कुछ नहीं करने दूँगा। बल्कि मैं भी तुम्हारे साथ ही इन सबका मुकाबला करू गा। "

" नहीं विक्रम। " अमर बोला __" ये सब तुम्हारे बस का काम नहीं है। अगर तुम्हें मेरे रहते कुछ हो गया तो मैं कभी भी अपने आपको माफ नहीं कर पाऊँगा। "

" अपने इस दोस्त को इतना कमज़ोर भी मत समझो भाई। " मैने मुस्कुरा कर कहा _" अगर तुमसे ज्यादा नहीं हूँ तो कम भी नहीं हूँ। "

" क्या मतलब ??" अमर ने नासमझने वाले भाव से पूछा था।

" यही कि थोड़ा बहुत मार्शल आर्ट्स मैं भी जानता हूँ। " मैने कहा _" और मुझे खुद पर यकीन है कि मैं तुम्हारे साथ इन लोगों का डॅट कर मुकाबला कर सकता हूँ। "

" अगर ऐसी बात है तो ठीक है दोस्त। " मेरी बात सुन कर अमर ने कहा।

हम दोनो बात कर रहे थे जबकि मेरे बगल में बैठा रौनक सामने की तरफ एकटक देखे जा रहा था। अमर टैक्सी ड्राइवर के बगल वाली सीट पर बैठा हुआ था। तभी वो मेरे पीछे की तरफ देख कर चौंका।

" अरे हमारे पीछे भी दो गाड़ियॉ लगी हुई हैं विक्रम। " अमर ने कहा __" क्या ये भी तुम्हारे ही बड़े पापा के आदमी हैं ?"

" क्याऽऽ ???" मैने बुरी तरह चौंकते हुए पीछे पलट कर देखा , और पीछे आ रही दोनो गाड़ियों को ध्यान से देखते हुए कहा _" ये तो कोई और ही हैं यार। पर हो सकता है कि इसमे भी बड़े पापा के ही आदमी हों। "

मेरे साथ साथ रौनक ने भी पीछे मुड़ कर देखा था। पीछे देखने के बाद उसके चेहरे पर तनिक राहत के भाव उभरे। ये बात मैने भी नोट की। मेरा माथा ठनका। इसका मतलब रौनक जानता है कि हमारे पीछे आ रही दोनो गाड़ियॉ किसकी हैं। मेरे मन में रौनक से ये बात पूछने का ख़याल तो आया मगर फिर मैने तुरंत ही उससे पूछने का अपना ख़याल ज़हन से निकाल दिया। मुझे रौनक पर भरोसा था। वो मेरा बचपन का सच्चा दोस्त था। मगर इस वक्त वो हमारे पीछे आ रही गाड़ियों के बारे में जानते हुए भी मुझे कुछ न बताया था। बल्कि राहत की सास लेकर वह आराम से बैठ गया था। मुझे समझ न आया कि एकदम से उसमें ऐसा बदलाव कैसे आ गया?

उधर पुल को पार कर वो जीपें हमारे काफी नज़दीक पहुँच चुकी थी। मेरी नज़र अचानक ही सामने बैठे अमर पर पड़ी। उसने अपने बैग से एक रिवाल्वर निकाला था। मतलब साफ था कि अमर हर तरह से चौकन्ना और चाकचौबंद ही था। देखते ही देखते सामने से आ रही वो जीपें टैक्सी के बीस मीटर के फॉसले पर आकर रुक गईं। बीच सड़क पर और सड़क की पूरी चौड़ाई पर दो जीपे इस तरह आकर खड़ी हो गई थी कि अब सामने से टैक्सी निकल नहीं सकती थी। उसके लिए ड्राइवर को सड़क के नीचे हल्के से ढलान पर टैक्सी को उतारना पड़ता।

हमारे पीछे आ रही दोनो गाड़ियॉ भी टैक्सी के पीछे दस मीटर के फॉसले पर खड़ी हो गई थी। इधर सामने खड़ी जीपों के दरवाजे एक साथ एक झटके से खुले और उसमें से मेरे बड़े पापा के चिरपरिचित आदमी बाहर निकले। सबके हाँथों में लट्ठ थे। जीपों से उतर कर वो सब टैक्सी की तरफ आने लगे। मैने देखा कि बड़े पापा वहाँ कहीं नज़र नहीं आए मुझे। इसका मतलब उन्होंने इन लोगों को मुझे लाने के लिए भेजा था।

" रौनक , तुम इस टैक्सी में आराम से बैठे रहना। " मैने रौनक से कहा _" और हाँ चिन्ता की कोई बात नहीं है। मैं और अमर अभी इन लोगों से निपट कर आते हैं। चलो दोस्त। "

" चलो मैं तो एकदम से तैयार ही हूँ। " अमर ने कहा __" लेकिन एक समस्या है यार। "

" समस्या ?" मैने पूछा _" कैसी समस्या ?"

" हमारे पीछे खड़ी गाड़ियों में कौन हो सकता है ?" अमर ने कहा _" क्या उसमें भी दुश्मन ही हैं ? ये जानना ज़रूरी है भाई। क्योंकि वो पीछे से हम पर हमला करके हमें नुकसान भी पहुँचा सकते हैं। "

" वो हम पर हमला नहीं करेंगे दोस्त। " मैने एक नज़र रौनक पर डालने के बाद कहा _" बल्कि मुझे लगता है कि वो लोग हमारी सुरक्षा के लिए हैं। "

" हमारी सुरक्षा के लिए ?" अमर के साथ साथ रौनक भी चौंका था मेरी बात से।

" हाँ भाई। " मैने कहा __" रौनक ने तो यही बोला है मुझसे। "

" क्या ????" रौनक बुरी तरह हड़बड़ा गया , बोला __" मैने ऐसा कब कहा तुझसे ?"

" यही तो ग़लत बात है न भाई। " मैने अजीब भाव से कहा __" कि तुमने कुछ कहा ही नहीं। मगर मैं तेरे चेहरे से सब समझ गया हूँ। तू बताना नहीं चाहता तो कोई बात नहीं। चलो अमर , वो टैक्सी के करीब ही आ गए हैं। "

मेरे कहते ही अमर अपनी तरफ का दरवाजा खोल कर टैक्सी से बाहर आ गया और इधर मैं भी। रौनक मूर्खों की तरह मुझे देखता रह गया था। जब मैं उतरने लगा तो उसने मुझे पकड़ने के लिए हाँथ बढ़ाया ज़रूर मगर मैं उसे बेफिक्र रहने का कह कर टैक्सी से बाहर आ गया। टैक्सी से उतर कर मैं और अमर सामने की तरफ बढ़ चले।

४६

उधर हॉस्पिटल में*!*

साक्षी समय से पहले ही हॉस्पिटल पहुँच गई थी। हॉस्पिटल के बाहर हर तरफ सादे कपड़ों में पुलिस के आदमी तैनात कर दिये थे उसने। सबको सख्त आदेश था कि कोई भी संदिग्ध आदमी विक्रम को किसी भी तरह का नुकसान न पहुँचा सके। सब कुछ ब्यवस्थित करने के बाद ही वह हॉस्पिटल के अंदर प्राची के पास आ गई थी। उसने प्राची के माता पिता को भी फोन करके बुला लिया था।

साक्षी के कहने पर हॉस्पिटल की नर्सों ने प्राची को एकदम से साफ सुथरा करके नये कपड़े पहना दिये थे। प्राची के बार बार पूछने पर ही साक्षी ने उसे बताया कि उसका महबूब उसका प्यार आज उसके पास आ रहा है। साक्षी के मुख से ये बात सुन कर प्राची का मुरझाया हुआ चेहरा ताजे गुलाम की मानिंद खिल उठा था मगर फिर जाने क्या सोच कर उसकी ऑखें छलक पड़ीं। साक्षी उसकी भावनाओं और जज़्बातों को बखूबी समझ सकती थी, कदाचित यही वजह थी कि जैसे ही प्राची की ऑखें छलकीं वैसे ही साक्षी ने उसे अपने सीने से लगा लिया था।

" हाय दीदी ये मेरे साथ क्यों हो गया ?" प्राची ने रोते हुए कहा __" मैने उस भगवान का क्या बिगाड़ा था जो उसने मेरी ज़िदगी और मेरी सास े कम कर दी ? उसको ज़रा भी मेरी खुशियॉ रास नहीं आईं। उसने मुझसे अपराध करवाया। मुझसे अपराध करवाया कि मैने अपने प्यार को दुख दिया और उसे खुद से दूर कर दिया। आज इस हालत में मैं कैसे उसके सामने खुद को पेश करू गी ? मैं जानती हूँ कि वो मुझे इस हाल में देखेगा तो उसे मेरी इस हालत पर बहुत दुख होगा। मैं उसे दुखी होते हुए नहीं देख सकती दीदी। मुझसे ग़लती हो गई जो मैने आपसे उसे बुलाने के लिए कहा। मैं मर जाती तो उसे इसका पता ही नहीं चलता और ना ही उसे इस सबसे दुख होता। क्या ऐसा नहीं हो सकता दीदी कि वो यहाँ आए ही न ? वापस वहीं लौट जाए जहाँ से वह आ रहा है। "

" ऐसी बातें मत कर पागल। " साक्षी का हृदय ये सोच कर हाहाकार कर उठा कि इस हाल में भी वो लड़की अपने महबूब को खुश देखना चाहती है , बोली __" कुछ मत बोल तू। सब कुछ अच्छा ही होगा प्राची और ये तो अच्छा ही हुआ जो तूने मुझसे विक्रम को बुलाने का कह दिया। तू नहीं जानती प्राची कि तेरे मिलने से मुझे क्या मिल गया है। तेरा प्यार और तेरे प्यार की इस तड़प ने मेरा समूचा अस्तित्व ही बदल दिया है। इसके लिए मैं ताऊम्र तक तेरी आभारी रहूँगी। मुझे दुख है कि तेरे जैसी पाक़ दिल वाली लड़की को मैं किसी भी तरह से बचा नहीं सकती। काश मेरे पास कोई जादू की छड़ी होती जिससे मैं तुझे पल भर में ठीक कर देती और तेरे हाँथों में तेरे महबूब का प्यार सौंप देती। "

" दीदी मेरे बाद आप मेरे विक्रम का ख़याल रखिएगा। " प्राची ने बिलखते हुए कहा _" उसे खूब प्यार दीजिएगा। उसने अपने जीवन में कभी सुख नहीं देखा। उसके अपनों ने उसे हर पल

सिर्फ दर्द दिया है। यहाँ तक कि मैने भी उसे सबसे ज्यादा दर्द दिया है। "

" ऐसा मत कह प्राची। " साक्षी के अंदर हूक सी उठी थी , बोली _" तेरा हर शब्द मुझे बेहद पीड़ा देता है। मैं चाहती हूँ कि जितना भी तेरे पास जीवन शेष है उसे तू हँसी खुशी अपने महबूब के साथ जिये। इस संसार में जो भी आया है उसे एक दिन इस दुनियाँ से सबको छोंड़ कर चले ही जाना है। यही संसार का सबसे बड़ा सत्य है। इस लिए प्राची ये दुख ये संताप अपने अंदर से निकालने की कोशिश करो। तुमने किसी को कोई दर्द नहीं दिया। ये सब तो इंसान के अपने भाग्य से मिलते हैं। कोई किसी को कुछ दे नहीं सकता। देने वाला सिर्फ ईश्वर है और लेने वाला भी। ख़ैर छोंड़ ये सब बातें और चल मेरे साथ। उस कमरे में तेरे माँम डैड भी बैठे हुए हैं। "

" आपने उन्हें क्यों बुला लिया दीदी ?" प्राची ने साक्षी के साथ चलते हुए कहा _" वो इस सबके बारे में क्या सोचेंगे ?"

" कुछ नहीं सोचेंगे वो। " साक्षी ने प्राची को अपने एक हाथ से पकड़े हुए कहा _" तुमने कोई पाप नहीं किया है। प्यार ही किया है न , ये तो कुदरत की सबसे खास नियामत है। जब उन्हें तेरे प्यार की दास्तां पता चलेगी तो यकीन मान वो भी तेरे इस पाक़ प्रेम के सामने नतमस्तक हो जाएँगे। "

" मुझे उनके सामने अपने महबूब से मिलने में बहुत शर्म आएगी दीदी। " प्राची का मुर्झाया हुआ चेहरा एकाएक ही शर्म की लाली से सुर्ख हो उठा था , बोली __" आप प्लीज़ उन्हें उस वक्त किसी दूसरे कमरे में या फिर बाहर भेज दीजिएगा। "

" तू भी न बिलकुल पागल है। " साक्षी ने उसे रोंक कर उसके माँथे पर प्यार से मगर हल्के से चूमते हुए कहा __" ख़ैर , जैसा तुझे अच्छा लगे मैं वैसा ही करू गी। अब खुश ?"

साक्षी की इस बात से प्राची के मुर्झाए चेहरे पर हल्की सी रंगत नज़र आई और होठों पर फीकी सी मुस्कान तैरती हुई दिखी। कुछ ही देर में साक्षी उसे हॉस्पिटल के एक स्पेशल कमरे में ले आई और उसे बेड पर आहिस्ता से लेटा दिया। कमरे में एक तरफ रखे सोफों पर प्राची के माँम डैड बैठे हुए थे। उनका चेहरा देख कर ही समझ आ रहा था कि वो अकेले में खूब रोए थे अपनी बेटी की इस हालत के लिए।

४७

" कैसे हैं भीमा काकाा ?" मैंने बड़े पापा के एक आदमी को देखते हुए कहाा __" मुझे ढूढ़ने में कोई परेशानी तो नहीं हुई न आपकाो ?"

" ज्यादा शेखी मत झाड़ छोकरे। " भीमा काका ने गुस्से से कहाा __" वरना यहीं पर ज़िंदा गाड़ दूँगा समझे। शुकर कर कि मेरे मालिक का मुझे आदेश नहीं है वरना पलक झपकते ही तू इस वक्त लाश में तब्दील हुआ यहीं पड़ा होता। "

" लगता है आपको अपने बाहुबल पर ज़रूरत से ज्यादा ही घमंड है। " मैने कहाा __" तभी तो आप अपने सामने किसी को कुछ समझ ही नहीं रहे हैं। "

" सही कहा छोकरे। " भीमा ने कहाा _" मुझे अपने बाहुबल पर घमंड तो होगा ही। आख़िर मालिक का मैं सबसे खास आदमी हूँ। "

" तो क्या आदेश दिया है आपके मालिक ने आपकाो ?" मैने पूछा।

" यही कि तुझे घसीटते हुए यहाँ से लेकर जाऊँ। " भीमा कह रहा थाा __" और ले जाकर उनके पैरों पर पटक दूँ। "

" बहुत खूब। " मैं हँसाा __" तो फिर खड़े क्यों हो काकाा ? मुझे घसीटते हुए यहाँ से ले चलो अपने मालिक के पास। "

" लगता है इस लड़के को मरने की बड़ी जल्दी है भीमा। " भीमा के बगल से लट्ठ लिए खड़े एक अन्य आदमी ने हँसते हुए कहाा __" और शायद इसका भेजा भी फिर गया है। तभी तो ये अनाप शनाप बके जा रहा है। मैं तो कहता हूँ ले चल इसे घसीटते हुए। "

" सही कह रहा है तू मंगल। " भीमा काका ने उससे कहाा __" जब किसी की मौत निकट होती है न तो वो आदमी ऐसी ही मूर्खतापूर्ण बातें करता है। ख़ैर , पकड़ इसे। मैं इसके साथ आए इसके इस साथी को पकड़ता हूँ। "

भीमा के कहने के साथ ही मंगल मेरी तरफ बढ़ा और भीमा अमर की तरफ। मंगल ने जैसे ही मुझे पकड़ने के लिए अपना हाँथ आगे बढ़ाया वैसे ही मैने बिजली की सी स्पीड से उसका वो हाँथ पकड़ा और उसकी तरफ पीठ कर उसके हाथ को अपने कंधे पर रख कर ज़ोर का झटका दिया। कड़कड़ की आवाज़ के साथ ही मंगल का हाँथ बीच से टूट गया। हाँथ टूटते ही मंगल हलाल होते बकरे की तरह चीखा। जबकि उसका हाँथ तोड़ने के बाद मैं पलटा और उसी स्पीड से उसके गंजे सिर को दोनो हाँथों से पकड़ कर सख्ती से एक तरफ को झटक दिया। परिणामस्वरूप मंगल की गर्दन टूट गई और उसकी जान उसके जिस्म से जुदा हो गई। उसका बेजान हो चुका जिस्म लहराते हुए वहीं ज़मीन पर गिर गया। ये सब इतना जल्दी हुआ कि किसी को कुछ समझ में ही नहीं आया कि पल भर में ये क्या हो गया।

मेरी इस हरकत से अमर जो भीमा की गर्दन को अपने बाजुओं में कसे झटके दे रहा था वो चकित रह गया। उसने भी भीमा की गर्दन को झटके देकर तोड़ दिया था। पलक झपकते ही दो हट्टे कट्टे आदमियों को इस तरह मौत के मुह में जाते देख बाकी सब लोग पहले तो भौचक्के से रह गए फिर जैसे उन्हें वस्तुस्थित का एहसास हुआ। सब के सब एक साथ हमारी तरफ लट्ठ लिए दौड़ पड़े।

अमर ने मेरी तरफ देखा, मैने भी उसकी तरफ देखा। ऑखों ऑखों में ही हमारी बात हो गई। जैसे ही सामने से लट्ठ लिए वो लोग हमारे पास पहुँचे वैसे ही आगे के दो आदमी लट्ठ को पूरी शक्ति से घुमा कर हम दोनो पर वार किया। हम दोनो ही झुक गए जिससे उनके लट्ठ का वार हमारे सिर से निकल गया।

इससे पहले कि वो दोनो सम्हल पाते उनकी पीठ पर हम दोनो की फ्लाइंग किक पड़ी। वो दोनो आदमी लट्ठ समेत ज़मीन की धूल चाटने लगे। मैने एक आदमी के गिरते ही उसके लट्ठ वाले हाथ में ज़ोर से लात मारी। उसके हलक से चीख़ निकल गई। उसने लट्ठ छोंड़ दिया तो मैने जल्दी से उसका लट्ठ उठा लिया। यही क्रिया अमर ने भी की थी।

हम दोनो के हाँथ में अब लट्ठ थी। उन दोनो के गिरते ही उनके पीछे आए बाकी के आदमी भी हमारी तरफ एक साथ दौड़ पड़े। देखते ही देखते उन सब ने हम दोनो को चारों तरफ से घेर लिया। मैं और अमर आपस में पीठ के बल जुड़ गए थे और घूम रहे थे अपने स्थान पर। उधर चारों तरफ घूमते हुए उन सभी आदमियों ने एक साथ हम पर लट्ठ का वार किया। मैने और अमर ने तुरंत ही उनके वार को अपने अपने लट्ठ से रोंका और पूरी शक्ति से ऊपर की तरफ झटका दिया। नतीजा ये हुआ कि सब के सब इधर उधर लड़खड़ा कर गिर पड़े। उन लोगों के गिरते ही मैने और अमर ने उन्हें उठने का मौका नहीं दिया। हम दोनो ही उन सब पर पिल पड़े। लट्ठ के ज़ोरदार वार उन सबके जिस्मों पर पड़ने लगे थे। वातावरण में उन सबकी दर्द में डूबी हुई चीखें निकलने लगी थी।

थोड़ी ही देर में वो सब वहीं सड़क पर पड़े बुरी तरह कराहे जा रहे थे। किसी का सिर फूटा, किसी के हाँथ टूटे तो किसी के पैर। कहने का मतलब ये कि वो सब कुछ ही देर में अधमरी सी हालत में पहुँच गए थे। तभी वातावरण में हमे सामने की तरफ किसी जीप के स्टार्ट होने की आवाज़ सुनाई दी। हम दोनो ने सामने की तरफ देखा तो सबसे पीछे की कतार में खड़ी जीप अपनी जगह से पीछे की तरफ जाने लगी थी।

" लगता है उसमें कोई आदमी बचा हुआ है दोस्त। " अमर ने सामने उस जीप की तरफ देखते हुए कहा ___" और वो इन सबका हाल देख कर यहाँ से भागने की सोच रहा है , बल्कि भाग ही रहा है वो। "

" वो यहाँ से भागने न पाए दोस्त। " मैने कठोर भाव से कहा __" वरना वो सत्यम सिंह को यहाँ का सारा हाल बताएगा और सत्यम सिंह फिर से अपने कुछ आदमियों को भेजेगा या फिर वो खुद हमें पकड़ने के लिए आ सकता है। मैं इस सबसे डर तो नहीं रहा मगर इस वक्त मैं यहाँ किसी से लड़ने के उद्देश्य से नहीं आया हूँ बल्कि रौनक के बुलाने पर आया हूँ। तुम

समझ रहे हो न मेरी बात ?"

" मैं समझ गया विक्रम। " अमर ने अपनी कमर में जीन्स पर खोंसी हुई रिवाल्वर को निकालते हुए कहा __" तुम फिकर मत करो। वो साला यहाँ से ज़िंदा वापस नहीं जा सकेगा। "

इतना कहने के साथ ही अमर ने रिवाल्वर वाला हाँथ ऊपर उठाया और निशाना साध कर सामने यू टर्न ले चुकी जीप के अगले वाले दाहिने टायर पर फायर कर दिया। अचूक निशाना था अमर का। नतीजा ये हुआ कि टायर के फटते ही जीप अनबैलेंस हो गई और वो सड़क के किनारे ढलान की तरफ तेज़ी से बढ़ी। ढलान में उतरते ही कदाचित ड्राइवर ने उसे जल्दी से मोड़ कर वापस सड़क पर लाने की कोशिश की थी, मगर ढलान पर बाएॅ साइड से अगले पहिये के उतर जाने से जीप ढलान पर उलटती चली गई।

जीप को उलटती देख अमर उस तरफ को बढ़ा ही था कि फिर जाने क्या सोच कर वो रुक गया। मेरी तरफ देख कर बोला_"तुम उसे देखो, मैं इन लोगों का किस्सा खत्म करता हूँ।"

मैं समझ गया कि अमर मुझे इन लोगों के पास अकेला नहीं छोंड़ना चाहता था। हलॉकि सत्यम सिंह के सभी आदमी इस वक्त सड़क पर लहूलुहान हुए पड़े कराह रहे थे। उनमें से किसी में अब उठने की शक्ति नहीं थी। मगर फिर भी अमर मुझे उन सबके पास अकेला नहीं रहने देना चाहता था। इसी लिए उसने मुझे उस उलट चुकी जीप की तरफ जाने का कहा था। वहाँ पर तो वो सिर्फ एक ड्राइवर ही था। मुझे अमर की इस बात पर अंदर ही अंदर उसकी दोस्ती पर नाज़ हुआ। मैं उसकी बात सुन कर उस तरफ बढ़ गया जिस तरफ वो जीप ढलान पर उलटती चली गई थी।

उलटी हुई जीप के पास जब मैं पहुँचा तो देखा ड्राइवर वाले डोर पर नीचे की तरफ ढेर सारा खून बहते हुए वहीं ज़मीन पर फैलता जा रहा था। मैने झुक कर देखा ड्राइवर मर चुका था। जीप के ऊपर लगे लोहे का एक सरिया टूट कर उसके सिर के आर पार हो चुका था। उसी से खून बहता हुआ नीचे ज़मीन पर फैलता जा रहा था। जीप पूरी की पूरी उलट गई थी। उसके पहिये ऊपर की तरफ थे और ऊपर का भाग नीचे की तरफ हो गया था।

ड्राइवर का ये हाल देख कर मैं वापस अमर के पास आ गया। मैने अमर को ड्राइवर का हाल बता दिया। इधर अमर ने ज़मीन पर कराह रहे सभी आदमियों की गर्दनें तोड़ कर उन सबको यमलोक पहुँचा चुका था।

" यार मज़ा तो नहीं आया मगर ख़ैर कोई बात नहीं। " मैने अमर की तरफ देखते हुए किन्तु मुस्कुराते हुए कहा __" अब इन लाशों का क्या करें ?"

" इन्हें यहाँ खुली जगह पर और सड़क पर इस तरह छोंड़ कर जाना भी ठीक नहीं है मेरे दोस्त। " अमर ने कहा __" इससे मामला बहुत गंभीर हो सकता है। पुलिस इन सबके क़ातिलों को ढूँढ़ने के लिए एड़ी से चोंटी तक का ज़ोर लगा देगी। "

" तो अब क्या करें यार ?" मैं एकाएक ही चिंता में पड़ गया था , बोला __" इन लोगों को कहाँ ले जाएँगे हम ? दूसरी बात वो टैक्सी ड्राइवर भी इस सबका चश्मदीद गवाह बन चुका है। ऐसे में यकीनन हम बहुत जल्द कानून की गिरफ्त में आ सकते हैं। "

" वो सब हम लोग संभाल लेंगे। " तभी ये वाक्य पीछे से किसी ने कहा था। मैं और अमर ये सुन कर चौंकते हुए पीछे की तरफ पलटे। हमारे पीछे कुछ लोग खड़े हुए थे। मुझे समझते देर न लगी कि ये सब वही लोग हैं जो हमारे पीछे आ रही गाड़ियों पर थे।

" आप लोग कौन हैं ?" मैने तनिक घबराते हुए एक से पूछा __" और ये आपने कैसे कहा कि हम सब इन लोगों को संभाल लेंगे ? बात कुछ समझ में नहीं आई। "

मेरी बात सुन कर उस आदमी ने अपने शर्ट की ऊपरी जेब से एक आई कार्ड जैसा कुछ निकाला और हमारी तरफ उसे दिखाते हुए बोला__"हम सब पुलिस वाले हैं और आपके पीछे पीछे आपकी सुरक्षा के लिए ही लगे हुए थे।"

मैं और अमर उसकी ये बात सुन बुरी तरह चौंक पड़े थे। ये सच है कि उसकी ये बात ऐसी थी कि काफी देर तक हमारे पल्ले ही न पड़ सकी थी। मैं तो ये सोच कर हैरान था कि ये सब पुलिस वाले हैं और इन लोगों ने हम दोनो को सत्यम सिंह के सभी आदमियों का बेदर्दी से कत्ल करते हुए अपनी ऑखों से देखा था। इसके बावजूद ये लोग ये कह रहे हैं कि ये हमारी सुरक्षा के लिए ही हमारे पीछे लगे हुए थे। मेरे दिमाग़ की नशें तक दर्द करने लगीं ये सोचते हुए कि ये लोग हमारी सुरक्षा क्यों कर रहे थे? इनकी नज़र में तो अब हम दोनो मुजरिम ही बन चुके थे। इनकी ऑखों के सामने ही तो हमने सत्यम सिंह के सभी आदमियों को जान से मारा था। उस सूरत में तो इन लोगों हमें गिरफ्तार कर लेना चाहिए। मगर नहीं, ये लोग तो ये कह रहे हैं कि इन लाशों को ये संभाल लेंगे। मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि पुलिस वाले भला ऐसा कैसे कह और कर सकते हैं? मैने अमर की तरफ देखा तो उसका हाल भी मुझसे जुदा न था। वो भी मेरी तरह हैरान परेशान सा उन सभी पुलिस वालों की तरफ इस तरह देख रहा था जैसे उन सबके सिर उनके धड़ों से निकल कर ऊपर हवा में कत्थक कर रहे हों।

" बात कुछ समझ में नहीं आई। " मैने खुद को संभालते हुए अपने सामने खड़े एक पुलिस वाले से कहा __" आप पुलिस वाले हमारी सुरक्षा किस वजह से कर रहे हैं और किसके कहने पर ? इतना ही नहीं ये भी कह रहे हैं कि आप इन लाशों को संभाल लेंगे ? जबकि आप लोगों को करना तो यही चाहिए कि ऐसे जघन्य हत्याकाण्ड के लिए हमें तुरंत गिरफ्तार कर हवालात में बंद कर दें। "

" वो सब छोंड़िये। " मेरे सामने खड़े एक पुलिस वाले ने कहा __" आप लोग यहाँ से आगे बढ़िये , ये सोच कर कि यहाँ कुछ हुआ ही नहीं है। हमने आपके टैक्सी ड्राइवर को भी समझा दिया है। वो इस मामले में अपना मुख किसी के सामने जीवन भर नहीं खोलेगा। आपके पीछे कुछ दूरी के फॉसले पर हमारे कुछ आदमी आपकी सुरक्षा में उसी तरह लगे रहेंगे

जैसे अब तक लगे हुए थे। "

" ये तो बड़ी ही हैरतअंगेज बात है। " मैं उसकी इस बात से चकित होकर बोलाा __" कैसे पुलिस वाले हैं आप लोग कि इतना कुछ होने के बाद भी आप हमें गिरफ्तार करने की बजाय यहाँ से बड़े आराम से चले जाने का कह रहे हैं ? ऊपर से हमारी सुरक्षा के लिए आप अपने पुलिस के कुछ आदमियों को भी हमारे पीछे लगा रहे हैं। "

" इस बारे में आप ज्यादा सोच विचार मत कीजिए। " पुलिस वाले ने कहाा __" अब आप ज्यादा देर मत कीजिए और बेफिक्र होकर यहाँ से गाँव जाइये। "

इतना कह कर वो पुलिस वाला पलट गया। उसके साथ बाकी के पुलिस वाले भी पलट गए थे। जबकि हैरान परेशान हम दोनो उन्हें मूर्खों की तरह देखते रह गए। साला दिमाग़ का दही हो गया मगर पुलिस वालों का ये रवैया हमारी समझ में ज़रा भी न आ सका था।

" विक्रम भाई। " उन लोगों के जाते ही अमर कह उठाा __" मैने अपनी इतनी बड़ी लाइफ में ऐसे विचित्र किस्म के पुलिस वाले आज तक नहीं देखे। मतलब किि ___ यार क्या कहूँ अब ? मुझे तो कुछ समझ में ही नहीं आ रहा। "

" सही कह रहे हो दोस्त। " मैने कुछ सोचते हुए कहाा __" ये तो हद से भी ज्यादा वाला अंधेर हो गया। ख़ैर जाने दोो , हमारे तो हक़ में ही है न ? अच्छा ही हुआ , वरना अगर ये लोग हमें इस सबके लिए गिरफ्तार कर जेल की सलाखों के पीछे डाल देते तो बड़ी गंभीर समस्या हो जाती हमारे लिए। "

" हाँ यार। " अमर ने कहाा __" लेकिन ये बात ऐसी है कि कुछ दिन तक ही क्या साला जीवन भर हमारे ज़हन में किसी सर्प की भाँति कुण्डली मार कर बैठी रहेगी। हम जीवन भर इस सबके बारे में सोचते रहेंगे मगर इस सबका कारण हमें समझ में ही नहीं आएगा। "

" आएगा दोस्त। " मैने पूर्वत सोचते हुए ही कहाा __" इस सबका कारण ज़रूर समझ में आएगा और बहुत जल्द आएगा। फिलहाल तो हमें यहाँ से निकलना ही चाहिए। "

" बिलकुल। " अमर ने कहाा __" चलो चलते हैं। लेकिन यार सामने जाने का रास्ता तो बंद है। हमें सबसे पहले ये सारी जीपें सामने के रास्ते से हटानी पड़ेंगी। "

" हाँ तो चलो हटा देते हैं। " मैने कहाा _" उसमे क्या है। "

मेरे इतना कहते ही अमर मेरे साथ चल पड़ा। कुछ ही देर में हमने उन जीपों को रास्ते से हटा दिया। इस काम में एक दो पुलिस वाले भी हमारी मदद करने के लिए आ गए थे। सभी जीपों को रास्ते से हटाने के बाद मैने और अमर ने एक काम और किया। वो ये कि उन सभी जीपों के टायरों से हवा निकाल दी। उसके बाद हम दोनो आकर टैक्सी में बैठ गए।

टैक्सी में आकर मैने देखा कि रौनक किसी और ही दुनियाँ में खोया हुआ एकदम शान्त बैठा

था। उसके चेहरे पर आश्चर्य का सागर विद्यमान था। मैने उसे उसके कंधों से पकड़ कर हिलाया, तब जाकर उसकी चेतना लौटी। चेतना लौटते ही वो मेरी तरफ अजीब भाव से देखने लगा। अभी भी उसके चेहरे पर गहन हैरत के भाव थे।

" ऐसे आंखे फाड़ कर क्या देख रहा है ?" मैने मुस्कुराते हुए कहा उससे।

" ये ये सब क्या था ?" उसके मुख से अजीब सी आवाज़ निकली __" ये तुम दोनो ने क्या और कैसे कर दिया ? सबको मार दिया तुम दोनो ने। तुझे पता है ये बात जब तेरे बड़े पापा को पता चलेगी तो क्या होगा ?"

" कुछ नहीं होगा भाई। " मैने कहा __" और अगर कुछ होगा भी तो वो ये होगा कि उस सत्यम सिंह की नितंब फट के उसके हाँथ में आ जाएगी समझा। खुद को बहुत बड़ा सूरमा समझने वाले सत्यम सिंह को जब अपने आदमियों के बारे में ऐसी ख़बर मिलेगी तो उस समय उसकी हालत क्या होगी इस बात का अंदाज़ा लगा कर देख भाई। "

" तू मेरा वही यार है या तेरी जगह तेरा चोला पहन कर कोई और आ गया है ?" रौनक ने चकित भाव से कहा था , बोला __" मेरा दोस्त इतना खतरनाक तो नहीं था। जिस तरह तूने एक ही झटके में सत्यम सिंह के मुस्टंडे आदमियों का क्रिया कर्म कर दिया है न उससे तो यही लगता है कि तू मेरा वो यार नहीं हो सकता। "

" मैं तेरा वही यार हूँ भाई। " मैने कहा _" बस समय बदल गया है। इस लिए समय के साथ साथ मैने खुद की भी बदल लिया है। मगर यकीन रख , मेरा ये बदलाव सिर्फ उनके लिए है जिन्होंने मुझ पर और मेरे माँ बहन पर अत्याचार किया है। अपने अज़ीज़ों के लिए तो मैं आज भी वही हूँ जैसा पहले हुआ करता था। ख़ैर छोंड़ ये सब , ये बता कि हमारे पीछे आ रहे ये पुलिस वालों का क्या चक्कर है ? ये लोग मेरी सुरक्षा की बात क्यों कर रहे थे मुझसे ? और तो और इन लोगों ने तो हमे गिरफ्तार भी नहीं किया जबकि मैंने और अमर ने सत्यम सिंह के सभी आदमियों को उनकी ऑखों के सामने उन सबको जान से मार दिया है ? ये सब क्या चक्कर है भाई ? देख मुझसे कोई बात मत छिपा तू। जो भी बात है उसे साफ साफ बता दे मुझे। आख़िर ऐसी क्या वजह थी जिसके लिए तूने मुझे इस तरह यहाँ आने को कहा था ?"

" अब जब तू यहाँ आ ही गया है तो थोड़ा और इन्तज़ार कर ले मेरे यार। " रौनक ने कहने के साथ ही अपना चेहरा अपनी तरफ के दरवाजे की खिड़की की तरफ फेर लिया , फिर बोला __" मैं अपने मुख से तुझे कुछ नहीं बता सकता और ना ही वो सब बताने की मुझमें हिम्मत है। कुछ समय तक और धीरज रख ले , उसके बाद सब कुछ पता चल जाएगा तुझे। "

रौनक ये बातें सुन कर मैं उसे अजीब भाव से देखता रह गया था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि ऐसी क्या बात है जिसे मेरा दोस्त इस हद तक मुझसे छिपा रहा है? मेरे दिलो दिमाग़ में अनगिनत आशंकाएॅ उत्पन्न हो गई थी। रौनक अभी भी खिड़की के उस पार देख रहा था। उस वक्त तो मैं चौंक ही पड़ा जब रौनक ने बड़ी सफाई से अपनी ऑखों से ऑसू पोछने की

क्रिया की थी। ये देख कर मेरे अंदर बड़ी तेज़ी से चिंता और बेचैनी बढ़ती चली गई। सहसा मेरी ऑखों के सामने सुंदर चाचा के बीवी बच्चों का चेहरा नाच गया। मेरे मस्तिष्क में जैसे विस्फोट सा हुआ। मन में एक ही ख़याल उभरा कि छोटी चाची और उनके बच्चों के साथ कोई ऐसी बात तो नहीं हो गई जो कि नहीं होनी चाहिए थी। लेकिन फिर मेरे मन में सवाल भरा कि इस बात को बताने में भला रौनक को क्या परेशानी हो सकती है? इसका मतलब मामला कुछ और ही है। मगर ऐसा क्या मामला हो सकता है?

मैंने इस बारे बहुत सोचा मगर मुझे कुछ समझ न आया। अंत में थक हार कर मैने अपने ज़हन से ये सब बातें झटक दी, ये सोच कर कि कुछ समय बाद सब कुछ पता तो चल ही जाएगा। रौनक ने तो बार बार यही कहा था मुझसे। मैने एक बार पलट कर पीछे की तरफ देखा। हमारे पीछे पुलिस वालों की एक गाड़ी कुछ फॉसले पर लगी हुई आ रही थी। उन लोगों को देख कर एक बार फिर से मेरे मन में उनके बारे में ढेरों सवाल चकरा उठे। आख़िर ये पुलिस वाले मेरी सुरक्षा में क्यों लगे हुए हैं और किसने कहा होगा इन्हें ऐसा करने के लिए? सोचते सोचते मेरा सिर दर्द करने लगा तो मैने उनके बारे में सोचने का काम भी बंद कर दिया।

अभी मैं रिलैक्स होकर बैठा ही था कि एकाएक मेरे मस्तिष्क में धमाका हुआ। धमाके का गुबार जब छॅटा तो एक चेहरा नज़र आया मुझे। वो चेहरा था साक्षी दीदी का। वो भी तो पुलिस वाली थी। तो क्या उन्होंने इन लोगों को मेरी सुरक्षा के लिए भेजा है? नहीं नहीं हर्गिज़ नहीं, वो भला ऐसा कैसे कर सकती हैं? मैं भला उनका लगता ही क्या हूॅ? आज तक कभी जिसने मुझे अपना भाई नहीं माना और ना ही मुझसे कभी बात करना पसंद किया। वो भला मेरी सुरक्षा की चिंता क्यों करेंगी? ये तो सूर्य देवता के पश्चिम दिशा से उदय होने वाली बात है, जो कि निहायत ही असंभव बात है। तो फिर और क्या वजह हो सकती है? सहमा मुझे ध्यान आया कि मैं एक बार फिर से इन सब बातों पर अपना माथा पच्ची करने में लग गया हूॅ। इस ख़याल के आते ही मैने फिर से अपने ज़हन से इन सब बातों को झटक दिया और फिर आराम से रिलैक्स होकर बैठ गया। मगर मैने महसूस किया कि रिलैक्स होना इस वक्त मेरे बस में ही नहीं था। क्योंकि मेरे मन में फिर से तरह तरह के सोच विचार चलने लगे।

लगभग दस मिनट बाद ही सोनपुर गाँव नज़र आने लगा था हमें और फिर कुछ ही देर में हम गाँव में दाखिल हो गए। रौनक के निर्देश पर टैक्सी ड्राइवर ने टैक्सी को रौनक के घर की तरफ जाने वाली गली में मोड़ दिया था। जबकि हमारी हवेली उत्तर की तरफ थी।

कुछ ही देर में हम रौनक के घर के पास पहुँच गए। गर्मियों का समय तो नहीं था मगर इस वक्त आस पास किसी भी घर के पास कोई इंसानी जीव दिख नहीं रहा था। हलॉकि गाँव में जब हम दाखिल हुए थे तो दाएॅ तरफ एक चौपाल पर कुछ लोगों को बैठे देखा था हमने। मैने सबसे ज़रूरी काम ये किया था कि गाँव में दाखिल होने से पहले ही अपने चेहरे को रुमाल से ढॅक लिया था। ताकि गाव का कोई व्यक्ति मुझे किसी तरह से पहचान न सके।

रौनक के घर के सामने टैक्सी रुकी तो ड्राइवर को छोंड़ कर हम तीनों जल्दी से टैक्सी से बाहर निकले और अपना अपना बैग लेकर रौनक के घर के अंदर आ गए। टैक्सी ड्राइवर को मैने

उसकी टैक्सी का भाड़ा पहले ही दे दिया था और उसे समझा भी दिया था कि हम लोगों के उतरते ही वो वापस बिजली की स्पीड से चला जाएगा। अगर यहाँ कहीं कोई टैक्सी रुकवाए तो वो रोंके नहीं। वरना वो खुद बहुत बड़ी मुसीबत में फॅस जाएगा।

टैक्सी ड्राइवर हम लोगों से इतना डरा हुआ था कि वो हमसे पैसा भी नहीं ले रहा था। एक ही बात बोल रहा था कि हम उसे जाने दें। वो हमारी कोई भी बात कभी भी किसी से नहीं कहेगा। मगर मैने उसे समझाया कि डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। ख़ैर, हम लोगों को उतार कर उसने टैक्सी को वहीं पर किसी तरह बैक करके वापसी के लिए मोड़ा और वहाँ से चंपत हो गया। मुझे यकीन था कि वो रास्ते में कहीं भी रुकने वाला नहीं था।

रौनक के घर के अंदर जैसे ही हम तीनो आए तो रौनक ने जल्दी से घर का मुख्य दरवाजा बंद कर उसमें कुण्डी लगा दी थी। रौनक सिंह मेरे बचपन का दोस्त था। ग़रीब था और बिना बाप का था। उससे बड़ी उसकी एक बहन थी। जो मेरी भी मुहबोली बहन थी। वो मुझे अपने सगे भाई से भी ज्यादा मानती थी। अभी तक उसकी शादी नहीं हो सकी थी। इसकी वजह ये थी कि रौनक के पास रुपये पैसे की तंगी थी। आजकल लोग दहेज की माँग बहुत ज्यादा करते हैं। रौनक की माँ बयालिस साल की विधवा औरत थी। किन्तु स्वभाव से बहुत अच्छी थी। वो मुझे अपने बेटे की तरह ही प्यार करती थी।

हम लोग चलते हुए बैठक में पहुँचे और वहाँ एक तरफ किनारे पर रखी एक चारपाई पर बैठ गए। जबकि रौनक अंदर की तरफ चला गया था। अमर इधर उधर बड़े ग़ौर से देख रहा था। कदाचित ये देख रहा था कि यहाँ गाँव में कच्चे खपरैलों वाले मकान बने हुए थे। जबकि उसने आज तक ऐसे मकान सिर्फ फिल्मों में ही देखे होंगे कभी।

४८

उधर सत्यम सिंह, सोनिया और जयदीप अपने नये फार्महाउस में पहुॅच चुके थे। तीनों के चेहरे खिले हुए थे। ये सोच कर कि बहुत दिनों बाद कुछ अच्छा सुनने को मिला था उन्हें। जिनकी तलाश में खुद सत्यम सिंह और उसके आदमी जाने कहॉ कहॉ भटक रहे थे वो खुद ही चल कर यहॉ आया और उसके आदमियों के द्वारा बहुत जल्द उसे पकड़ कर उसके सामने उसे हाज़िर कर दिया जाएगा। उसके बाद वो जैसे चाहेगा वैसे विक्रम के साथ सुलूक कर सकेगा।

" डैड मैने तो सोच लिया है कि मैं क्या क्या करू गा ?" फार्महाउस के अंदर ड्राइंग रूम में रखे सोफे पर बैठे जयदीप ने कहा __" उस विक्रम के हाथ लगते ही बाकी के जब सब भी हमारे पास आ जाएॅगे तब मैं अपनी मनपसंद चीज़ों का जी भर के मज़ा लूॅगा। सबसे पहले तो उस हरामज़ादी अपर्णा को पेलूॅगा वो भी उसके पति के सामने। उसी की वजह से चाचा ने मुझे कुत्ते की तरह धोया था। इस फार्महाउस पर सब औरतों और उनकी लड़कियों को नंगा करू गा मैं। "

" चिंता मत करो बेटे। " सत्यम सिंह ने सिगार को सुलगाते हुए कहा __" जो कुछ तू सोचे बैठा है न वही सब मैने भी सोचा हुआ है। बहुत तरसाया है इन लोगों ने मुझे। सबसे ज्यादा उस कमीनी रेणुका ने। पता नहीं क्यों पर उससे दिल लग गया था बेटा। मैं चाहता था कि वो अपने मन से अपना सब कुछ मुझे सौंप दे , इसी लिए तो कभी उसके साथ ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं की थी मैने। मगर अब नहीं। अब तो बलात्कार होगा बेटे। ऐसा बलात्कार कि दुनियॉ में उसके बारे में किसी ने ना तो सोचा होगा और ना ही सुना होगा कहीं। इस फार्महाउस में उन दोनो औरतों को और उन दोनो लड़कियों को जन्मजात नंगी करके दौड़ाऊॅगा। "

" अभी दो लड़कियों को आप भूल रहे हैं डैड। " जयदीप ने कमीनी मुस्कान के साथ कहा __" आपकी दोनो लड़कियॉ और मेरी प्यारी प्यारी मगर मदमस्त बहनें। "

" उनका नंबर भी आएगा बेटे। " सत्यम सिंह ने गहरी सास ली __" मगर इन लोगों के बाद। पहले इन लोगों के साथ तो मज़े कर लें। इन सबको इतना बजाएॅगे कि सब की सब साली पनाह मॉग जाएॅगी। उसके बाद इन सबको रंडियों के बाज़ार में ले जाकर मुफ़्त में बेंच देंगे। "

" ये सही सोचा है डैड। " जयदीप ने ठहाका लगाते हुए कहा __" रंडियों के बाज़ार में बेंचने से ये सब जीवन भर लोगों को मज़ा देती रहेंगी। लेकिन डैड मेरी बहनों को मत बेंच देना। वो सिर्फ हमारी रंडियॉ बन कर रहेंगी जीवन भर। हम दोनो ही उनके सब कुछ रहेंगे। "

" सही कहा बेटे। " सत्यम सिंह ने कहा _" हम अपनी बेटियों को नहीं बेचेंगे। वो तो हमारी ही रंडियॉ बन कर रहेंगी अपनी मॉ के साथ। क्या कहती हो डार्लिंग ?"

अंतिम वाक्य सत्यम सिंह ने चुपचाप बैठी सोनिया को देख कर कहा था। सोनिया जो इतनी

देर से बाप बेटे की बातें सुन कर मन ही मन हैरान और चकित हो रही थी वो अचानक ही सत्यम सिंह के इस प्रकार कहने पर चौंक पड़ी थी। तुरंत उससे कुछ कहते न बन पड़ा था। बल्कि अजीब भाव से वो दोनो बाप बेटों को देखती रह गई थी। ये देख कर सत्यम सिंह और जयदीप दोनो ही ठहाका लगा कर हॅस पड़े थे।

" क्या हुआ सोनिया ?" सत्यम सिंह हॅसने के बाद बोला __" किन ख़यालों में गुम हो भई ? हमारी बातों पर ध्यान नहीं है क्या तुम्हारा ?"

" मैं तुम दोनो की तरह ख़याली पुलाव नहीं बनाती सत्यम। " सोनिया ने खुद को संभालते हुए कहा __" मुझे इस सबमें खुशी तब होगी जब ऐसा सचमुच में होता हुआ अपनी ऑखों से देखूॅगी। "

" अरे ज़रूर देखोगी मेरी जान। " सत्यम सिंह ने हॅसते हुए कहा __" और बहुत जल्द देखोगी। बस कुछ ही देर की बात है। मेरे आदमी उस हराम के पिल्ले को घसीटते हुए लाते ही होंगे। उसके आने के बाद उसके बाकी चाहने वालों को भी बहुत जल्द आना पड़ेगा मेरे पास। "

" इसी लिए तो चुपचाप उसके आने के इन्तज़ार में बैठी हूॅ मैं। " सोनिया ने कहा __" ज़रा फोन करके पता तो करो कि तुम्हारे आदमी उसे लिये कहॉ तक पहुॅचे हैं अभी ? अपने आदमियों से कहो कि ज़रा जल्दी आएॅ यहॉ। "

" जो हुकुम डार्लिंग। " सत्यम सिंह ने सिगार को ऐश ट्रे में मसलते हुए कहा __" मैं अभी भीमा को फोन करता हूॅ और उसे बोलता हूॅ कि भाई जल्दी लेकर आ उस हरामज़ादे को। "

कहने के साथ ही सत्यम सिंह ने अपने कोट की जेब से मोबाइल निकाला और उस पर भीमा का नंबर डायल कर मोबाइल को कान से लगा लिया। मगर उसे अपने कान में ये वाक्य सुनाई दिया कि__"आपने जिस नंबर पर फोन लगाया है वो इस वक्त उपलब्ध नहीं है या अभी बंद है।"

ये वाक्य सुनते ही सत्यम सिंह का दिमाग़ घूम गया। उसने काल को कट करके फिर रिडायल कर दिया मगर फिर से उसे कानो में वही वाक्य सुनाई दिया। सत्यम सिंह कई बार भीमा के नंबर पर फोन लगाया मगर हर बार वही वाक्य सुनने को मिला उसे।

" क्या हुआ डैड ?" जयदीप जो सत्यम सिंह की ही तरफ देख रहा था बोल उठा __" क्या भीमा का नंबर नहीं लग रहा ?"

" हॉ बेटे। " सत्यम सिंह ने सहसा कठोर भाव से कहा __" इन सालों को कभी अकल नहीं आएगी। ऐसे समय में भी साले ने फोन बंद करके रखा हुआ है। "

" तो किसी दूसरे आदमी को फोन लगा कर पता कीजिए डैड। " जयदीप ने मानो ज्ञान दिया।

" हॉ वही कर रहा हूॅ। " सत्यम सिंह ने नंबरों की लिस्ट में मंगल का नंबर खोज कर उसे डायल करते हुए कहा।

मंगल का नंबर डायल करने के बाद उसने मोबाइल को कान से लगा लिया। मगर इस नंबर पर भी वही वाक्य सुनने को मिला उसे। अब सत्यम सिंह का भेजा गरम हो गया। फिर जैसे उसने खुद के गुस्से को संभाला और अपने किसी अन्य आदमी का नंबर डायल किया। मगर परिणाम वही ढाक के तीन पात वाला। कहने का मतलब ये कि सत्यम सिंह ने एक एक करके अपने सभी आदमियों का नंबर डायल किया मगर सबक सब नंबर या तो उपलब्ध नहीं थे या फिर बंद थे।

सत्यम सिंह को इस बात ने हैरान कर दिया और वह सोचने पर मजबूर हो गया कि ऐसा कैसे हो सकता है? ये तो उसे भी पता था कि उसके आदमी इतने लापरवाह हो ही नहीं सकते क्योंकि सब उससे बेहद डरते भी थे। किन्तु इस वक्त सभी के नंबर बंद होने की वजह से उसका माथा ठनका। मन में एक ही विचार आया कि कुछ तो गड़बड़ है। किसी गड़बड़ी के अंदेशे ने सत्यम सिंह को एकाएक ही चिंता और परेशानी में डाल दिया।

" क्या बात है सत्यम ?" सहसा सोनिया उसके चेहरे के बदलते भावों को देखते हुए बोल पड़ी __" ये अचानक तुम्हारे चेहरे पर चिन्ता व परेशानी के भाव कैसे उभर आए ?"

" बड़ी हैरत की बात है सोनिया। " सत्यम सिंह ने कहा __" मैने एक एक करके अपने सभी आदमियों को फोन लगा कर देख लिया , मगर उनमें से किसी का भी फोन नहीं लग रहा। सबके सब बंद बता रहे हैं। इसका क्या मतलब हो सकता है ?"

" ऐसा कैसे हो सकता है डैड ?" जयदीप ने भी हैरानी से कहा __" एक साथ सबके फोन कैसे बंद हो सकते हैं ? कुछ तो बात ज़रूर है। हमें जल्द से जल्द इस सबका पता लगाना चाहिए डैड। "

" जयदीप सही कह रहा है सत्यम। " सोनिया ने कहा __" हमारे आदमी इतने लापरवाह नहीं हो सकते कि ऐसे माहौल में वो सब अपना फोन ही बंद कर लें। ज़रूर कोई बात हुई है। वरना अब तक तो उनमें से किसी ने तुम्हें फोन करके ये ज़रूर बताया होता कि उन लोगों ने विक्रम को अपने कब्जे में ले लिया है और अब वो सीधा यहीं आ रहे हैं। मगर ऐसा कुछ नहीं हुआ अब तक। इसका मतलब साफ है कि कोई गंभीर बात हो गई है। "

" मुझे भी ऐसा ही लगता है। " सत्यम सिंह ने चिंतित भाव से कहा __" कोई तो बात हुई है। मगर सवाल ये है कि ऐसी क्या बात हो सकती है भला ? उन पर किसी प्रकार के संकट के आने का सवाल ही नहीं है क्योंकि वो खुद भी कई सारे एक साथ थे और खुद दूसरों के लिए संकट ही थे। "

" असलियत का पता तो तभी चलेगा सत्यम जब तुम इस सबका पता करने यहॉ से जाओगे। " सोनिया ने कहा __" यहॉ पर बातों में समय गवॉने का कोई मतलब नहीं है। "

" मॉम ठीक कह रही हैं डैड। " जयदीप ने कहा _" हमें तुरंत ही इस सबका पता लगाने के लिए यहॉ से निकलना चाहिए। वरना कहीं ऐसा न हो कि हम जिस सुनहरे मौके की बात कर रहे थे वो हमारे हाथ से निकल जाए। "

" यू आर अब्सोल्यूटली राइट। " सत्यम सिंह ने कहा _" चलो चल कर देखते हैं कि क्या बात हो गई है ?"

" तुम दोनो जाओ। " सोनिया ने कहा _" मैं यहीं पर तुम दोनो का इंतज़ार करू गी। "

सोनिया की बात खत्म होते ही दोनो बाप बेटे सोफों से उठ कर बाहर की तरफ चल दिये। बाहर आकर सत्यम सिंह अपनी कार का ड्राइविंग डोर खोल कर उसमें बैठ गया, जबकि जयदीप उसके बगल वाली सीट पर बैठ गया। कार को स्टार्ट कर सत्यम सिंह ने कार को झटके से आगे बढ़ा दिया। उसकी कार ऑधी तूफान बनी सड़कों पर घूमने लगी थी।

४९

इधर रौनक के घर में मैं और अमर नहा धो कर फ्रेश हो गए थे और अब हम सब खाना खाने के लिए बैठे हुए थे। रौनक ने अपनी मॉ और बहन दोनो की मेरे आने का पहले ही बता दिया था। बस ये नहीं बताया था कि उसने मुझे यहॉ किस लिए बुलाया था? उनसे यही कहा था कि मैं बस घूमने आया हूॅ।

रौनक की मॉ को मैं भी मॉ ही बोलता था शुरू से ही। मेरी नज़र में मॉ से बड़ा और पवित्र रिश्ता कोई नहीं हो सकता था। वो मुझे शुरू से ही बहुत चाहती थी और प्यार व स्नेह देती थीं। रौनक की बहन आशा दीदी मुझसे और रौनक से उमर में बड़ी थी। उनका स्वभाव पिछले कुछ सालों तक हॅस मुख और चंचल था किन्तु अब वो ज्यादा किसी से बात नहीं करती थी। उनके चेहरे पर हर वक्त गंभीरता विद्यमान रहती थी। इसकी वजह समझना कोई बड़ी बात नहीं थी। हर कोई समझ सकता था कि उनके स्वभाव में ये तब्दीली किस वजह से आई हुई थी।

खाना पीना से फुर्सत होकर हम सब बाहर बैठक में आ गए। मेरे मन में इस वक्त कुछ और ही चल रहा था। इस लिए मैं बैठक से उठ कर अंदर मॉ के पास चला गया। मैने देखा मॉ और आशा दीदी हम लोगों की खाई हुई थालियॉ ऑगन में एक जगह रख रही थी।

मुझे ऑगन में आया देख मॉ के होठों पर मुस्कान आ गई। आशा दीदी भी मुझे देख कर हल्का सा मुस्कुराई। फिर वो वहीं पर बैठ कर थालियॉ धोने लगी। जबकि मॉ मेरे पास आ गईं।

" चल आजा मेरे साथ। " मॉ एक तरफ को बढ़ती हुई बोलीं __" मुझे पता है तुझे मेरी गोंद में सिर रख कर सोना है। कितना समय हो गया मैने भी तुझे वैसा प्यार और स्नेह नहीं दिया। वक्त और हालात ऐसे बदल जाएॅगे ऐसा कभी ख्वाब में भी नहीं सोचा था। बुरे लोगों का एक दिन ज़रूर नाश होता है बेटा। बस थोड़ा समय लग जाता है। सत्यम सिंह को उसके बुरे कर्मों की सज़ा ईश्वर ज़रूर देगा। "

मॉ ये सब बड़बड़ाती हुई अंदर कमरे मे आ गईं। मैं भी उनके पीछे पीछे आ गया था। कमरे में रखी चारपाई पर मॉ पालथी मार कर बैठ गईं और फिर मेरी तरफ देख कर मुझे अपने पास आने का इशारा किया। मैं खुशी से उनके पास गया और चारपाई के नीचे ही उकड़ू बैठ कर अपना सिर उनकी गोंद में रख दिया।

" अरे नीचे क्यों बैठ गया बेटे ?" मॉ ने मेरे सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा __" ऊपर आजा और फिर ठीक से वैसे ही लेट जा जैसे पहले लेट जाया करता था मेरी गोंद में। "

" नहीं माॅ , मैं ऐसे ही ठीक हूॅ। " मैने सिर उठाकर उनकी तरफ देखते हुए बोला _" मुझे आपसे कुछ बात करनी है मॉ। "

" हॉ तो कह ना। " मॉ ने मेरे चेहरे को एक हाथ से सहलाया __" तुझे कोई भी बात करने के लिए मुझसे पूछने की क्या ज़रूरत है ? ख़ैर , बता क्या बात करना है तुझे ?"

" सबसे पहले ये बताइये कि मैं आपका बेटा हूॅ कि नहीं ?" मैने मॉ के चेहरे की तरफ देखते हुए कहा।

" ये कैसा सवाल है बेटा ?" मॉ के चेहरे पर ना समझने वाले भाव उभरे __" तू तो मेरा ही बेटा है। जैसे रौनक मेरा बेटा है वैसे ही तू भी मेरा बेटा है। "

" अगर मैं आपका बेटा हूॅ तो मुझे भी आपका बेटा होने का हर फर्ज़ निभाना चाहिए न ?" मैने भोलेपन से कहा था।

" ये तो बेटों की सोच और समझदारी पर निर्भर करता है बेटा। " मॉ ने हल्का सा मुस्कुराते हुए कहा __" कि वो अपने माता पिता व परिवार के लिए कैसा विचार रखते हैं ? पर हॉ नियम और संस्कार तो यही कहते हैं कि हर व्यक्ति को अपना कर्तब्य व फर्ज़ सच्चे दिल से निभाना चाहिए। जैसे माता पिता अपने बच्चों के लिए हर फर्ज़ सच्चे दिल से निभाते हैं। "

" मैं और तो कुछ नहीं जानता मॉ। " मैने कहा __" लेकिन इतना ज़रूर समझता हूॅ कि एक बेटे को हमेशा ऐसा काम करना चाहिए जिससे कि उसके माता पिता को अपने उस बेटे पर गर्व हो। वो अपने बेटे के हर काम से खुश हो जाएॅ। इस लिए माॅ , मैं भी अब वो फर्ज़ निभाना चाहता हूॅ। "

" ये तो बहुत अच्छी बात है बेटा। " मॉ ने खुश होते हुए कहा __" तुम्हें ऐसा करना भी चाहिए। मुझे खुशी है कि तूने इतनी मुश्किलों और परेशानियों में भी अपने अच्छे संस्कारों का हनन नहीं होने दिया। तू अब बड़ा हो गया है , इस लिए तुझे अब अपने कर्तब्यों और फर्ज़ों की तरफ ध्यान देना चाहिए। तेरी मॉ और बहन ने बहुत दुख दर्द झेला है बेटा। मैं चाहती हूॅ कि तू उन्हें हमेशा खुश रखे। "

" वो दोनो अब खुश ही हैं मॉ। " मैने कहा _" लेकिन मैं अब अपनी दूसरी मॉ का बेटा होने का भी फर्ज़ निभाना चाहता हूॅ। "

" क्या मतलब ?" मॉ ने मेरी इस बात से हैरान होकर मेरी तरफ देखा __" ये तू क्या कह रहा है बेटा ?"

" हॉ मॉ। " मैने कहा __" आप मेरी दूसरी मॉ ही तो हैं और मैं आपका बेटा हूॅ। इस लिए मैं आपका बेटा होने का फर्ज़ निभाना चाहता हूॅ। आशा दीदी की शादी बड़े धूमधाम से किसी बड़े घर में किसी अच्छे लड़के के साथ करना चाहता हूॅ। आज आशा दीदी के मुरझाए हुए चेहरे को देख कर मुझे कितनी तक़लीफ़ हुई ये मैं ही जानता हूॅ मॉ। कितनी बदल गई हैं वो , हर समय बिंदास और चंचल रहने वाली मेरी आशा दीदी ने आज खुद को गहन उदासी और गंभीरता की चादर में ढॅक कर रख लिया है। मैं उन्हें इस तरह नहीं देख सकता मॉ। वो मेरी सबसे प्यारी बहन हैं। मैं चाहता हूॅ कि उनके चेहरे पर फिर से पहले जैसी चंचलता और

खुशियॉ हों। इस लिए मा ॅ , मैने फैंसला कर लिया है कि अब मैं वही कर ू गा जो मुझे करना चाहिए। "

" पर बेटा ये सब ....। " मॉ ने कुछ कहना चाहा मगर मैने उनकी बात काट कर कह ा _" मैं आपकी कोई भी बात नहीं सुनूॅगा मॉ। अगर आप मुझे सच में अपना बेटा मानती हैं तो मुझे मेरा फर्ज़ निभाने से नहीं रोकेंगी। "

मेरी इस बात से मॉ मुझे देखती रह गईं। उनकी ऑखों में ऑसूॅ भर आए थे। मैने उठ कर मॉ को अपने से छुपका लिया और फिर बोला__"आप खुद को दुखी मत कीजिए मॉ। देख लेना, आपका ये बेटा सब कुछ ठीक कर देगा।"

" मुझे खुशी है कि तू मेरा बेटा है। " मॉ ने मुझसे अलग होकर मेरे माथे पर हल्के से चूमते हुए कह ा __" लेकिन बेटा तुझे अंदाज़ा नहीं है कि शादी ब्याह में कितना रूपया पैसा खर्च करना पड़ता है। तेरे पास भला इतना रुपया पैसा कहॉ से आएगा कि तू अपनी दीदी की शादी कर सक े ?"

" आपके इस बेटे के पास इतना पैसा है मॉ कि वो चाहे तो पूरे सोनपुर को खड़े खड़े खरीद ले। " मैने मुस्कुराते हुए कह ा __" जिस मिल्कियत को पाने के लिए मेरे बड़े पापा ने हमारे साथ ये सब किया है न उससे कहीं ज्यादा मेरे पास आज के समय में मिल्कियत है। "

" क्य ा ????" मॉ की ऑखें आश्चर्य से फट पड़ी थ ी , फिर सहसा अविश्वास भरे भाव से बोल ी __" पर बेटा तेरे पास इतना पैसा कहॉ से आ गय ा ?"

" सब कुदरत के करिश्मे हैं मॉ। " मैने सहसा गंभीर होकर कह ा __" भगवान अगर किसी को दुख तक़लीफ़ें देता है तो एक दिन उसे उस दुख तक़लीफ़ से मुक्त भी कर देता है। मेरे अपनों ने मेरे साथ क्या किया ये तो आप जानती हैं मॉ मगर किसी ग़ैर ने अपना बन कर मेरे लिए क्या किया ये आप नहीं जानती हैं। वो ग़ैर मेरे लिए फरिश्ता क्या बल्कि भगवान बन कर आया और आज मुझे हर दुख दर्द से मुक्त कर दिया। "

" ये तू क्या कह रहा है बेट ा ?" मॉ ने गहन आश्चर्य के साथ कह ा __" मेरी समझ में तेरी ये बातें नहीं आ रही। "

मैने मॉ को संक्षेप में सारी कहानी बताई। उन्हें बताया कि मुंबई में मैं जिस मल्टीनेशनल कंपनी में काम करता था उस कंपनी के मालिक उमाकांत पाटिल मुझसे प्रभावित होकर मुझे क्या क्या काम दिया और फिर कैसे उनके दिल में मेरे लिए प्यार और स्नेह जागा। कैसे उन्होंने मुझे अपना बेटा बना लिया और फिर कैसे उन्होंने अपनी सारी प्रापर्टी जो करोड़ों अरबों में थी उसे मेरे नाम कर दिया और आज मैं अपनी मॉ और बहन के साथ उनके ही अलीशान बंगले में रहता हूॅ। मैने मॉ को ये भी बताया कि कुछ दिन पहले सुंदर चाचा भी मुझे ढूॅढ़ते हुए वहॉ पहुॅचे थे। रौनक के बताने पर मैं उनको रेलवे स्टेशन से अपने बंगले में ले गया और अब वो भी मेरे साथ ही वहॉ पर हैं। सारी बातें सुनने के बाद मॉ मुझे इस तरह देखने लगी थी जैसे मेरे सिर पर

अचानक ही उन्हें दिल्ली का कुतुब मीनार खड़ा हुआ नज़र आने लगा हो।

" अब आपका ये बेटा करोड़ क्या बल्कि अरबपति है मॉ। " मैने मॉ को उनके कंधों से पकड़ते हुए कहा __" इस लिए आप इस बात की बिलकुल भी चिंता मत कीजिए कि आशा दीदी की शादी मैं कैसे क पाऊँगा ?"

" भगवान का लाख लाख शुकर है बेटा कि उसने तुझ पर इतनी अनमोल कृपा की। " मॉ ने खुशी से छलक आई अपनी ऑखों को पोंछते हुए कहा __" दिन रात मैं यही सोचती रहती थी कि किस हाल में होगा तू वहॉ पर और किस तरह तू अपनी मॉ बहन को अपने साथ रखा हुआ होगा ? मगर तेरी ये बातें सुन कर मेरे मन का बोझ हल्का हो गया है। मेरा बेटा इतना बड़ा आदमी बन गया है इससे ज्यादा खुशी की बात एक मॉ के लिए क्या हो सकती है ?"

" सब आपकी दुवाओं और आशीर्वाद का फल है मॉ। " मैने कहा __" मॉ की दुवाओं में बहुत असर होता है। भगवान मॉ की दुवाओं को कभी विफल नहीं होने दे सकता। "

मेरी ये बात सुनकर मॉ ने मुझे अपने गले से लगा लिया। मेरे सिर पर प्यार से हाथ फेरती रहीं वो। फिर मैं उनसे अलग हुआ और बोला__"मॉ मैं दीदी से भी मिल लूँ। उनके चेहरे पर फिर से मुझे पहले वाली खुशियॉ देखना देखना है।"

" ठीक है जा मिल ले उससे। " मॉ ने कहा _" तेरे समझाने से शायद वो खुश रहने लगे। "

" वो ज़रूर खुश रहेंगी मॉ। " मैने कहा _" मैं उनके चेहरे पर वही खुशी लाऊँगा। उनका ये भाई उनकी दामन में हर तरह की खुशियॉ लाकर डाल देगा। "

मेरी बात सुन कर मॉ की ऑखें भर आईं जिन्हें उन्होंने अपनी सफेद सारी के ऑचल से पोंछ लिया। मैं उनके पास से चल कर कमरे से बाहर आया और आशा दीदी के कमरे की तरफ बढ़ गया। दीदी के कमरे का दरवाजा हल्का सा खुला हुआ था। मैने दरवाजे पर लगी सॉकल को पकड़ कर बजाया। किन्तु अंदर से कोई प्रतिक्रिया न हुई। मैने बाहर से ही आवाज़ लगाई उन्हें तब जाकर अंदर से दीदी की आवाज़ आई। वो कह रही थी कि आजा विक्रम दरवाजा तो खुला ही है।

मैं अंदर गया तो देखा दीदी चारपाई के किनारे पर बैठी हुई थी। उनका सिर नीचे झुका हुआ था। मैं उनके पास जाकर उनके बगल से बैठ गया और उनके कंधे पर हाथ रखा। दीदी ने सिर उठा कर मेरी तरफ देखा तो मैं चौंक गया। उनका चेहरा ऑसुओं से तर था। उनकी इस हालत को देख कर मेरा दिल तड़प उठा।

" ये क्या दीदी ?" मैने कहा __" मेरी इतनी प्यारी दीदी की ऑखों में इतने सारे ऑसू ?"

मेरी बात पूरी भी न हुई थी कि आशा दीदी झपट कर मुझसे लिपट गई और फूट फूट कर रोने लगी।

मुझे उनके इस तरह फूट फूट कर रोने से बड़ा दुख हुआ। लेकिन मैने उन्हें रोने दिया। शायद ये उनके अंदर का गुबार था। जिसका बाहर निकल जाना बेहद ज़रूरी था। मैं उनके सिर पर बड़े प्यार व स्नेह भाव से हाथ फेरता रहा।

सहसा मुझे उनके साथ बिताए हुए कुछ खुशियों भरे पल याद आ गए। मैं,रौनक और आशा दीदी हमेशा ऊधम मचाते थे इस घर में। मॉ हमारी शैतानियॉ देख कर खुस्सा करती, हलॉकि हम तीनों जानते थे कि हम तीनों का ये प्यार देख कर मॉ खुद भी अंदर ही अंदर खुश हुआ करती थी। मगर प्रत्यक्ष में मॉ हमेशा दीदी को डॉटने लगती। कहती कि वो तो हम दोनो से बड़ी है फिर क्यों हमारे साथ बच्ची बन जाती है। मॉ के डॉटने से दीदी मुह फुला कर बैठ जाती। उसके बाद मैं और रौनक उन्हें मनाने लगते। हम दोनो के पास उन्हें मनाने का बड़ा ही साधारण और खूबसूरत सा तरीका होता था। इस वक्त वही तरीका मेरे ज़हन में आया तो बरबस ही मेरे होठों पर मुस्कान उभर आई।

" दुनियॉ में सबसे सुंदर कौन ?" मैने दीदी को अपने से छुपकाए हुए ही प्यार से कहा।

" सिर्फ मैं। " मेरी बात सुनते ही दीदी को पहले तो झटका सा लगा फिर उसी हालत में बोल पड़ी थी।

" दुनियॉ में सबसे प्यारी कौन ?" मैने फिर से कहा।

" सिर्फ मैं। " दीदी ने लरजते स्वर में कहा।

" दुनियॉ में सबसे चंचल कौन ?" मैने पूछा।

" सिर्फ मैं। " दीदी ने भारी स्वर में कहा।

" दुनियॉ में सबसे नटखट कौन ?" मैने पूछा।

" सिर्फ मैं ?" दीदी की आवाज़ लड़खड़ा गई।

" और दुनियॉ में सबसे शैतान कौन ?" मैने सहसा मुस्कुरा कर पूछा।

" सिर्फ मैं। " दीदी ने कहा तो मैं चौंक पड़ा। उन्हें खुद से अलग कर उनके चेहरे की तरफ बड़े ध्यान से देखा मैने।

आशा दीदी का दूध सा गोरा चेहरा ऑसुओं से तर था। नज़रें झुकी हुई थी उनकी। मैं हैरान इस बात पर हुआ था कि मेरे पूछने पर कि "दुनियॉ में सबसे शैतान कौन" का जवाब भी उन्होंने यही दिया कि "सिर्फ मैं"। जबकि अक्सर यही होता था कि इस सवाल पर वो यही कहती कि शैतना तुम दोनो ही हो। मैं तो मासूम हूॅ। लेकिन आज उन्होंने खुद को ही शैतान कह दिया था।

" ये तो कमाल हो गया दीदी। " मैने मुस्कुराते हुए कहा __" आज आपने खुद को ही कह दिया कि आप ही सबसे शैतान हो। आज आपने ये नहीं कहा कि मैं और रौनक ही सबसे ज्यादा शैतान हैं। आप तो मासूम ही हैं। "

" हॉ तो क्या हुआ ?" दीदी ने सहसा तुनक कर कहा __" आज मैं शैतान बन जाती हूॅ। तुम

दोनो मासूम बन जाओ। "

मैं उनकी इस बात को सुन कर मुस्कुराया। दीदी ने ये बात बिलकुल वैसे ही अंदाज़ में कही थी जैसा अंदाज़ उनका आज से पहले हुआ करता था। दीदी को भी इस बात का एहसास हुआ और फिर एकाएक ही उनकी रुलाई फूट गई।

" अरे अब क्या हुआ दीदी ?" मैने उनको अपने से छुपका कर कहा __" देखो अब रोना नहीं। मुझे बिलकुल पसंद नहीं कि आप मेरी इतनी प्यारी सी दीदी को बात बात पर इस तरह रुला दो। चलो अब जल्दी से रोना बंद करो और अपनी वही मनमोहक मुस्कान और नटखटपना दिखाओ मुझे ताकि मेरे मन को सुकून मिल जाए। "

" अब तू आ गया है न तो अब मैं नहीं रोऊँगी विक्रम। " आशा दीदी ने कहा __" तुझे पता है मैं तुझे कितना मिस करती थी। हम तीनो का वो बचपन जाने कहाँ गुम हो गया था ? तुम दोनो मेरे खिलौने थे जिनके साथ मैं हँसती खेलती रहती थी। "

" मैं जानता हूँ दीदी। " मैने उन्हें खुद से अलग करते हुए कहा __" मगर आप तो जानती हैं कि समय हमेशा एक जैसा नहीं रहता। समय के साथ साथ सब कुछ बदल जाता है। ख़ैर , छोंड़िये ये सब और मुझसे वादा कीजिए कि अब से आप हमेशा खुश रहेंगी। अपने चेहरे पर वो उदासी और किसी भी तरह के दुख के भाव नहीं आने देंगी। "

" हम्म। " दीदी ने हाँ में सिर हिलाया।

" अब बताइये आपको अपने इस भाई से क्या तोहफ़ा चाहिए ?" मैने मुस्कुराते हुए पूछा।

" तू आ गया है मेरे पास। " दीदी ने मेरे चेहरे को अपने हाथ से सहला कर कहा __" इससे बड़ा तोहफ़ा मेरे लिए और क्या होगा ?"

" पर मैं तो आपके लिए आपकी मनपसंद चीज़ लेकर ही आया हूँ। " मैने कहा _" अब अगर आपको नहीं चाहिए तो ठीक है मैं उसे किसी और को दे दूँगा। "

" ख़बरदार अगर किसी और को दिया तो। " दीदी ने आँखें दिखाते हुए कहा __" ला दे मेरी चीज़ मुझे। वैसे क्या लेकर आया है विक्रम ?"

" सोचिये। " मैने मुस्कुराते हुए कहा __" क्या हो सकती है वो चीज़ ?"

मेरी ये बात सुनकर आशा दीदी सोच में पड़ गईं। मैने देखा कि इस वक्त उनके चेहरे पर वही चंचलता और वही बिंदासपन आ गया था। उनका चेहरा एकदम से अब खिला खिला लग रहा था।

" सोच लिया मैने। " आशा दीदी एकदम से उछलते हुए बोलीं __" कि तू मेरे लिए कौन सी चीज़ लेकर आया है ?"

" अच्छा तो बताइये। " मैने हॅस कर कहा _" ज़रा मैं भी तो जानूॅ कि आपने क्या सोच लिया है ?"

" तू न मेरे लिए। " आशा दीदी ने धीरे धीरे और आराम आराम से कहना शुरू किया _" तू न मेरे लिए ..... एक प्यारी सी , सुंदर सी सोने की घड़ी लेकर आया है। जिसे मैं अपने इस हाथ में पहनूॅगी। अब बता बच्चू , मैंने सही कहा न ? हाॅ ... बोल बोल। "

मैं दीदी की इस बात पर और उनके इस अंदाज़ पर मुस्कुरा उठा। उन्होने जो कहा वो यकीनन सच ही तो था। मैं उनके लिए एक सोने की घड़ी लेकर ही आया था। मुझे याद है जब वो मेरे हाथ की कलाई में एक आम सी घड़ी देखती तो यही कहती कि_"अरे ये तो मामूली सी घड़ी है बेटा, आशा रानी तो अपने हाथ में सोने की घड़ी पहनेगी एक दिन। देख लेना। वरना सारी उमर घड़ी ही नहीं पहनेगी। मैं और रौनक उनकी इस बात पर अक्सर हॅसने लगते। हमारे हॅसने पर उन्हें लगता कि हम दोनो उनका मज़ाक उड़ा रहे हैं। इस लिए वो मुह फुला कर एक तरफ बैठ जाती। उसके बाद हम दोनो फिर से उन्हें उसी तरीके से मनाने लगते और वो खुश हो जाती। ऐसी थी आशा दीदी। वो हम लोगों से उमर में तीन चार साल बड़ी थी मगर हमारे साथ वो हमसे भी छोटी बन जाती थी।

ये सब सोच कर सहसा मेरी ऑखों से ऑसू छलक पड़े। आशा दीदी ने मेरी ऑखों से छलके ऑसूॅ को देखा तो। उन्होंने मुझे खुद से छुपका लिया।

" ओये ये क्या है अब ?" फिर उन्होंने कहा _" अभी तक तो बड़ा मुजसे कह रहा था कि अब से मैं खुद को न रुलाऊॅ और अब तू क्यों रोने लगा ? चल रोना नहीं वरना मैं भी रो दूॅगी। "

" ये तो खुशी के ऑसू हैं दीदी। " मैं उनसे अलग होते हुए बोला __" कुछ यादें ऐसी होती हैं जिनके याद आने से बरबस ही ऑखें छलक पड़ती हैं। ख़ैर , ये लीजिए आपकी घड़ी। देख लीजिए सोने की ही है न ?"

" मुझे पता है कि मेरा भाई मेरी कलाई में सोने के अलावा कोई और घड़ी नहीं पहनाएगा। " दीदी ने कहा मुस्कुराकर कहा __" उसे पता है कि मैने क्या प्रण किया था ?"

" आपने सही कहा दीदी। " मैने कहा _" मैं आपके प्रण को कैसे भुला सकता हूॅ ? जब मैं वहॉ से चलने वाला था तो मुझे आपकी याद आई और फिर सबकुछ याद आया। इस लिए मैं गया और ज्वैलरी की दुकान से आपके लिए ये घड़ी खरीद लाया। "

मेरी बात से दीदी मुस्कुरा दी और फिर उस पैकिट को खोलने लगी जिसमें मैं उनके लिए घड़ी लेकर आया था। कुछ ही देर में पैकेट खोल कर उन्होने उस घड़ी को निकाल कर देखा। वो सचमुच सोने की ही घड़ी थी। घड़ी देख कर दीदी की ऑखें फिर से भर आईं।

" विक्रम , आज मैं बहुत खुश हूॅ। " फिर उन्होने कहा __" इस लिए नहीं कि तू घड़ी लेकर आया है बल्कि इस लिए कि तू यहाॅ आया और तुझे अपनी दीदी के प्रण का ख़याल था। मुझे खुशी है कि तेरे जैसा लड़का मेरा भाई है। "

" मुझे भी तो खुशी है दीदी। " मैने कहा _" कि आप मेरी सबसे प्यारी बहन हो। आपको मैं गुड़िया(निशा) की तरह ही प्यार करता हूॅ। "

" हाॅ ये मैं जानती हूॅ। " दीदी ने मुस्कुरा कर कहा __" अच्छा विक्रम , इस घड़ी को तू ही पहना दे न मुझे। "

" ठीक है दीदी। " मैने कहा __" जैसी आपकी इच्छा। "

मैने उनके हाथ से घड़ी ल। दीदी ने अपने बाएॅ हाथ की कलाई मेरी तरफ बढ़ा दी। मैने उनकी खूबसूरत कलाई पर उस घड़ी को डाल कर पहना दी। ये देख कर आशा दीदी खुश हो गई और एकदम से मुझसे लिपट गई।

" कितनी अच्छी लग रही है न विक्रम ?" वो खुशी से मानो चहकती हुई बोली __" अच्छा ये बता कि इसके अंदर पानी तो नहीं जाएगा न ?"

" नहीं जाएगा दीदी। " मैने मुस्कुरा कर कहा __" ये फुल वाटरप्रूफ है। "

" फिर ठीक है। " दीदी ने मुझसे अलग होकर कहा __" अब न मैं इसे कभी भी अपनी कलाई से नहीं उतारूॅगी। "

" ठीक है दीदी। " मैने कहा __" जैसी आपकी मर्ज़ी। अच्छा दीदी अब मैं चलता हूॅ और हाॅ याद है न .... अब से आप खुद को उदास या दुखी नहीं रखेंगी। "

" हाॅ हाॅ याद है बाबा। " दीदी ने हॅस कर कहा __" और अब तो मेरे भाई ने मेरी पसंद की चीज़ भी दे दी। फिर किस लिए खुद को उदास या दुखी रखना ?"

" ये हुई न बात। " मैने दीदी के माथे पर हल्के से चूमा और फिर पलट कर वापस दरवाजे की तरफ चल दिया। अभी मैं दो ही क़दम दरवाजे की तरफ बढ़ा था कि मेरी नज़र दरवाजे पर खड़े रौनक और माॅ पर पड़ी। मैं उन्हें देख कर पहले तो चौंका फिर हौले से मुस्कुरा दिया। दरवाजे बाहर आकर मैने दरवाजे के दोनो पाटों को आपस में सटा कर चल दिया।

मेरे पीछे पीछे रौनक और माॅ भी आने लगे। माॅ के कमरे में आकर मैं एक जगह बैठ गया।

" तो बहन को खुश कर दिया उसके भाई ने ?" माॅ ने ऑखों से अपने ऑसू पोंछते हुए कहा __" आज काफी समय बाद उसे इतना खुश और चहकते हुए देखा है मैने। "

" अब से वो हमेशा खुश ही रहेंगी माॅ। " मैने कहा __" और हाॅ बहुत जल्द मैं उनके लिए एक अच्छा सा रिश्ता तलाश करू गा। उनकी शादी एक ऐसे घर में और एक ऐसे लड़के से करू गा जो उन्हें दुनियाॅ की हर खुशी देगा। "

" अब मुझे उसकी शादी की चिंता नहीं है बेटे। " मॉ ने कहा __" उसका भाई आ गया है तो अब सब वहीं संभाल ेगा। "

मैने रौनक की तरफ देखा वो अपनी ऑखों में ऑसू लिये एक तरफ खड़ा था। मैं उसके पास जाकर उससे बोला__"तूने मुझे बुला कर बहुत अच्छा किया है भाई। मगर आज जो कुछ भी रास्ते में हुआ है उस सबसे बहुत जल्द एक नई मुसीबत सामने आने वाली है। बड़े पापा को पता लगाने में ज्यादा समय नहीं लगेगा कि वो सब किसने किया उनके आदमियों के साथ? वो ये भी पता कर लेंगे कि मैं यहॉ किसके यहॉ रुका हुआ हूॅ। इस लिए अब तुम ये भी समझ लो कि इस घर में रहते हुए तुममें से कोई भी सुरक्षित नहीं है।"

" ये तुम क्या कह रहे हो बेटा ?" मॉ ने चकित भाव से कहा __" क्या हुआ है आज रास्ते मेंं ?"

मैने मॉ को संक्षेप में सबकुछ बता दिया। मेरी बात सुन कर मॉ सकते में आ गई। उनके चेहरे पर एकदम से डर व भय के भाव गर्दिश करते नज़र आने लगे।

" ये तो बहुत बड़ा अनर्थ हो गया है बेटा। " मॉ ने सहमे हुए लहजे में कहा __" तुमने सत्यम सिंह के आदमियों को मार कर अच्छा नहीं किया। सत्यम सिंह इस सबका बदला ज़रूर लेगा। "

" ये तो होना ही था मॉ। " मैने कहा __" आप खुद सोचिए कि अगर मैं और अमर ये सब नहीं करते तो उनके आदमी हमें अपने साथ ले जाकर बड़े पापा के हवाले कर देते। उस सूरत में बड़े पापा हमारे साथ क्या करते इसका अंदाज़ा आप नहीं लगा सकती मॉ। वो मुझे बंधक बना कर मुझसे ज़बरदस्ती मेरी मॉ बहन और सुंदर चाचा को मुंबई से यहॉ बुलवा लेते। उसके बाद क्या होता ये आप सोच कर देखिये। "

" विक्रम सही कह रहा है मॉ। " रौनक ने कहा _" रास्ते में इसके बड़े पापा के आदमी इसे पकड़ने के लिए ही आए थे और अगर वो लोग इसे पकड़ कर ले जाते तो सचमुच बहुत बड़ा अनर्थ हो जाता। इस लिए सत्यम चाचा के आदमियों को मारने के सिवा दूसरा कोई रास्ता ही नहीं था इसके पास। "

" पर इसने सत्यम सिंह के उतने सारे आदमियों को कैसे खत्म कर दिया ?" मॉ के चेहरे पर हैरत के भाव थे।

" आपको नहीं पता मॉ। " रौनक कह रहा था __" इसने और अमर ने पॉच मिनट में उन सबका काम तमाम कर दिया था। मैने वो सब अपनी ऑखों से देखा था। मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था कि ये वही विक्रम है जो इतना शान्त और भोला भाला हुआ करता था। "

" ये सब छोड़ो। " मैने कहा __" मैं ये कह रहा हूॅ कि बड़े पापा को इस बात का पता बहुत जल्द चल जाएगा कि मैं यहॉ रौनक के घर में रुका हुआ हूॅ। इस लिए वो आप सबको भी अपना दुश्मन समझ लेंगे और आप लोगों के साथ कुछ भी बुरा कर सकते हैं। अतः अब आप

लोगों का यहॉ रहना किसी भी तरह से ठीक नहीं है। "

" बात तो तुम्हारी ठीक ही है भाई। " रौनक ने कहा __" लेकिन हम तेरे बड़े पापा के डर से अपना ये घर छोंड़ कर भला कहॉ जाएॅगे ?"

" मुंबई। " मैने कहा __" हॉ रौनक । अब आप लोगों का यहॉ रहना खतरे से खाली नहीं है। इस लिए अब आप लोग मेरे साथ मुंबई चलोगे। तुम्हें पता है , सुंदर चाचा ने भी मुझे कुरुणा चाची और उनके बच्चों को मुंबई ले आने को कहा है। क्योंकि उन्हें भी पता है कि अपर्णा चाची और सृष्टि व रणदीप सुरक्षित नहीं हैं। "

" लेकिन बेटा। " मॉ ने झिझकते हुए कहा __" हम सब वहॉ तेरे लिए बोझ बन जाएॅगे। इतने सारे लोग वहॉ कैसे रह पाएॅगे ?"

" ये कह कर आपने मुझे पराया कर दिया मॉ। " मैने दुखी भाव से कहा __" भला आप ऐसा कैसे सोच सकती हैं कि मेरे लिए आप लोग बोझ बन जाएॅगे ?"

मॉ को अपनी ग़लती का एहसास हुआ इस लिए उन्होंने मुझे अपने गले से लगा कर कहा__"मेरा वो मतलब नहीं था बेटा। मैं तो बस ये कहना चाहती थी कि वहॉ पर हम सब इतने सारे लोग कैसे रहेंगे?"

" आप इस बात की फिक्र मत कीजिए मॉ। " मैने कहा __" मुंबई में जहॉ मैं रहता हूॅ वो एक बहुत बड़ा बॅगला है। वहॉ पर सौ आदमी भी रहेंगे न तब भी जगह बच जाएगी। "

" क्या ????" मॉ ने हैरानी से कहा __" क्या इतना बड़ा घर है वहाॅ ?"

" हॉ मॉ। " मैने कहा _" इसी लिए तो कह रहा हूॅ कि आप रहने की चिंता मत कीजिए। बस यहॉ से फौरन चलने की तैयारी कीजिए। आप सब अपना ज़रूरी सामान ले लीजिए , और चलने के लिए तैयार हो जाइये जल्दी। "

" क्या हम आज ही यहॉ से चल देंगे ?" सहसा रौनक ने कुछ सोचते हुए कहा था।

" जितना जल्दी हो सके उतना जल्दी हमें से निकल लेना चाहिए भाई। " मैने कहा _" यहॉ ज्यादा समय तक रुकना ठीक नहीं है। "

" ठीक है भाई। " रौनक ने कहा __" पर हम यहॉ से इतने सारे सामान को लेकर जाएॅगे कैसे ?"

" तू किसी भी तरह से किसी ऐसे वाहन का इंतजाम कर जिसमे सारा सामान भी आ जाए और हम सब उसमें आराम से बैठ भी जाएॅ। " मैने कहा __" और ये काम तुझे बहुत जल्द करना है। "

" ठीक है भाई। " रौनक ने कहा __" मैं कोशिश करता हूॅ ऐसे किसी वाहन को लाने की। "

ये कह कर रौनक कमरे से बाहर चला गया। उसके जाने के बाद मैने मॉ से कहा कि वो भी अपना सब ज़रूरी सामान इकट्ठा करके उसे पैक कर लें। मेरे कहने पर मॉ ने हॉ में सिर हिलाया और कमरे से बाहर चली गईं। मैं भी बाहर आकर बैठक की तरफ बढ़ गया।

५०

उधर हॉस्पिटल में एकाएक ही साक्षी का मोबाइल बजा। उसने मोबाइल को पाकेट से निकाल कर देखा। स्क्रीन पर रौनक लिखा आ रहा था। ये देख कर साक्षी के होठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई। वो मोबाइल को लिए प्राची के पास से उठ कर बाहर की तरफ आ गई। फिर मोबाइल पर आ रही काल को रिसीव कर कानो से लगा लिया उसने।

" हॉ भाई बोलो। " फिर उसने कहा _" सब रेडी है न ?"

".....। " उधर से रौनक ने कुछ कहा।

" ये तुम क्या कह रहे हो रौनक ?" साक्षी ने बुरी तरह चौंकते हुए कहा __" तुम सब लोग विक्रम के साथ मुंबई जाने वाले हो ?"

".....। " उधर से रौनक फिर कुछ कहा।

" हॉ मुझे पता चल गया उस बारे में। " साक्षी ने कहा __" मेरे आदमियों ने फोन पर बताया है सब कुछ। ये भी बताया कि उन लोगों ने डैड के आदमियों को ठिकाने लगा दिया है। विक्रम और उसके दोस्त ने सबको खत्म कर दिया था। अगर उन दोनो के बस का न होता तो मेरे वो पुलिस के आदमी उन सबको गोलियों से भून कर रख देते। मेरा उनके लिए यही आदेश था। ख़ैर , सबसे अच्छी बात यही हुई कि तुम लोग सकुशल घर गए। लेकिन खतरा अभी टला नहीं है रौनक । डैड अपने आदमियों की खोज ख़बर लेने ज़रूर इधर उधर जाएॅगे। विक्रम ने सही फैसला लिया है तुम लोगों को अपने साथ ले जाने का। मगर उसका क्या होगा जिसके लिए मैने विक्रम की तुम्हारे द्वारा बुलवाया था ?"

".....। " उधर से रौनक ने कुछ कहा।

" अरे मैं तो चाहती ही हूॅ भाई। " साक्षी ने ज़ोर दे कर कहा __" तुम एक काम करो , विक्रम की लेकर यहॉ आ जाओ। मैं तुम लोगों को यहॉ से सुरक्षित जाने का बंदोबस्त कर दूॅगी। "

".....। " उधर से रौनक ने फिर कुछ कहा।

" हॉ ठीक है। " साक्षी ने कहा __" तुम उसे लेकर आओ। मैं अभी किसी वाहन का इंतजाम करती हूॅ। तुम किसी भी प्रकार की चिंता मत करो। बस उसे लेकर आ जाओ। यहॉ मैने उसकी सुरक्षा का सारा इंतजाम किया हुआ है। रास्तों पर भी पुलिस के आदमी सादे कपड़ों में मौजूद हैं। "

".....। " उधर से रौनक ने कुछ कहा।

" तुम बेफिकर रहो भाई। " साक्षी ने कहा __" उसे कुछ नहीं होने दूॅगी मैं। अपनी जान पर खेलकर भी मैं उसकी हिफाज़त करू गी। यहॉ आने के बाद जो कुछ भी होगा उसकी देखभाल भी मैं कर लूॅगी। तुम बस उसे लेकर आ जाओ। अब इंतज़ार नहीं होता मेरे भाई।

जबसे तुमने बताया है कि विक्रम आ गया है तब से उससे मिलने के पागल हुई जा रही हूँ मैं। दिल तो करता है कि अभी भाग कर तुम्हारे घर आ जाऊँ और अपने भाई को अपने सीने से लगा कर खूब रोऊँ। मगर , उससे मिलने का सबसे पहला हक़ प्राची का है मेरे भाई। मैने उसे वचन दिया है कि मैं उसके महबूब से उसे मिलाऊँगी। इस लिए भाई , जल्दी से उसे लेकर आजा। मेरे वचन की लाज रख ले। प्राची को उसके महबूब से मिला दे जल्दी। "

".....। " उधर से रौनक ने कुच कहा।

" ठीक है भाई जल्दी आना। " साक्षी ने कहा और फिर फोन कट कर दिया। उसकी ऑखों में ऑसू भर आए थे। फोन को पॉकेट में डालने के बाद वह वापस गैलरी की तरफ चल पड़ी। रास्ते मे एक तरफ उसे श्री कृष्ण का छोटा सा मंदिर दिखा तो वह उसी तरफ बढ़ गई। मंदिर के पास पहुँच कर वह घुटनों के बल बैठ गई।

" हे कृष्णा अब सब कुछ आपके ही हवाले है। " साक्षी ने ऑखों में ऑसू लिए तथा दोनो हाथ जोड़े कहा __" सब कुछ ठीक कर देना कान्हा। मेरा भाई जब प्राची से मिले तो उसकी हालत को देख कर वो खुद को संभाल सके। उसके दिल को मजबूत बनाए रखना कन्हैया। वो अपनी प्रेयसी से मिलने आ रहा है। उसे हर दुख दर्द सहने की शक्ति देना कृष्णा। मेरा भाई भी इस वक्त कृष्ण ही है जो अपनी राधा से मिलने आ रहा है। "

इतना कहने के बाद साक्षी उठी और कृष्ण की मूर्ती के पास थाली में रखे फूलों से कुछ फूल उठा कर कृष्ण के चरणों में अर्पण कर दिया।

" सब कुछ तुम ही तो करते हो कन्हैया। इस संसार में सब कुछ तुम्हारे ही इशारे से हो रहा है। " साक्षी ने कहा __" ये भी कि मेरा भाई जिसे टूट कर प्रेम करता है उस लड़की को ब्लड कैंसर के लास्ट स्टेज पर पहुँचा दिया आपने। ये कैसी लीला है कृष्णा ? लोग कहते हैं कि जो कुछ भी तुम करते हो वो सब अच्छे के लिए ही करते हो , तो बताओ मुझे कि ऐसा करके कौन सा अच्छा कर रहे हो तुम ? लेकिन ख़ैर कोई बात नहीं। मैं तुमसे यहॉ इस सबकी शिकायत नहीं कर रही हूँ। हॉ इतनी विनती ज़रूर कर रही हूँ कि मेरे भाई को कभी कुछ न हो। वो यहॉ आए तो प्राची की हालत देख कर वो खुद को संभाल सके। बस यही प्रार्थना करती हूँ तुमसे। "

इतना कहने के बाद साक्षी अपने ऑसू पोंछते हुए कृष्णा को प्रणाम कर प्राची के कमरे की तरफ बढ़ गई। उसका मन बहुत भारी हो गया था। रह रह कर उसके मन में आने वाले वक्त के प्रति घबराहट सी बढ़ती जा रही थी।

५१

उधर घर में रौनक मुझे लिए बाहर आया। मैने देखा कि बाहर एक मोटर साइकिल खड़ी थी। रौनक ने मुझसे कहा कि मैं अपने चेहरे को रुमाल से ढॅक लूँ। मैं उसकी बात सुन कर चौंका। उससे पूछा कि कहॉ जा रहे हैं हम मगर उसने मुझे कुछ न बताया। बल्कि मोटर साइकिल में बैठ कर से स्टार्ट किया और मुझे पीछे बैठने को कहा। मैं उसकी इस आनन फानन वाली क्रिया से हैरान था। बड़ा अजीब सा व्यवहार कर रहा था वो।

ख़ैर, उसके बार बार ज़ोर देने पर मैं उसके पीछे मोटर साइकिल पर बैठ गया। अमर दरवाजे पर खड़ा हैरानी से ये सब देख रहा था। उसने भी कई बार रौनक से पूछा कि वो मुझे लेकर कहॉ जा रहा है मगर रौनक ने कुछ न बताया। बल्कि उससे यही कहा कि वो यहीं रहे, हम थोड़ी देर में आते हैं। अमर बेचारा हैरानी से देखता रह गया था उसे। मॉ और आशा दीदी अंदर सामान पैक करने में लगी हुईं थी। उन्हें इस सबका कुछ पता ही नहीं था। आशा दीदी को जब पता चला कि वो सब लोग मेरे साथ मुंबई चल रहे हैं तो वो बड़ा खुश हुई थी।

इधर मेरे बैठते ही रौनक ने मोटर साइकिल को आगे बढ़ा दिया। जहॉ तक मुझे पता था रौनक के पास कोई साइकिल तक नहीं थी, इसका मतलब वो ये मोटर साइकिल किसी जान पहचान वाले से मॉग कर ही लाया था।

" अब तो बता दे मेरे बाप कि हम कहॉ जा रहे हैं ?" रास्ते में मैने ये बात रौनक से खीझते हुए कही थी , बोला __" साले तूने इस सवाल पर ऐसे अपना मुह बंद कर रखा है जैसे अगर तू बता देगा तो क़यामत आ जाएगी। "

" ऐसा ही समझ ले तू। " रौनक ने कहा _" अब चुपचाप बैठा रह। कितना बोलने लगा है तू आजकल ?"

" क्या कहा तूने ?" मैने हैरत से देखते हुए उसे पीछे से उसकी पीठ पर हल्के से मुक्का मारा , फिर बोला __" मैं बहुत बोलने लगा हूँ। हाँ , और तू जैसे मौनी बाबा ही बन गया है न। "

रौनक मेरी इस बात पर मुस्कुरा कर रह गया। मगर सिर्फ एक पल के लिए। अगले ही पल उसके चेहरे पर संजीदगी के भाव नुमायॉ हो गए। जैसे उसे कोई बात याद आ गई हो। मैने एक बात नोट की थी कि वो जब से मुझे मिला था तब से मैने उसे संजीदा ही देखा था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इसकी क्या वजह थी। मुझे याद आया कि उसने मुझे शीघ्र मुंबई से आने के लिए कहा था। इसका मतलब ये मुझे उसी काम से लिए जा रहा है। लेकिन आख़िर किस काम से? साला दिमाग़ का दही हो गया मगर मुझे कोई वजह समझ में नहीं आई।

लगभग दस मिनट बाद रौनक ने जिस जगह पर मोटर साइकिल रोंकी उस जगह को देख कर

मैं चौंका तो ज़रूर मगर मुझे समझ में न आया कि रौनक मुझे हॉस्पिटल लेकर क्यों आया है? सहसा मेरे ज़हन में एक बार फिर अपर्णा चाची और उनके बच्चों का चेहरा नाच गया। मन में सवाल उभरा कि क्या अपर्णा चाची या उनके बच्चों में से किसी को कुछ हो गया था जो वो यहाँ हॉस्पिटल में शायद एडमिट हैं? मगर इस बात को मुझसे छिपाने की भला क्या ज़रूरत थी?

मोटर साइकिल के खड़े होते ही मैं उतर गया। मेरे बाद रौनक भी उतर गया और मोटर साइकिल को स्टैण्ड पर खड़ा कर वो मेरी तरफ देखा और बोला___"तू यहीं रुक मैं आता हूँ दो मिनट में।"

" अरे अब कहाँ जा रहा है तू मुझे यहाँ पर अकेला छोंड़ कर ?" मैंने हैरानी से पूछा।

" मैने कहा न यहीं रुक। " रौनक ने सख्ती से कहा __" मैं आता हूँ अभी। "

ये तो हद ही हो गई। रौनक ने मुझे सख्ती से रुकने को कहा था। मेरा दिमाग़ घूम गया। ये साला हो क्या रहा है? मैने देखा कि रौनक हॉस्पिटल की सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर वाली सीढ़ी के पास जाकर रुक गया। उसके बाद उसने अपने पैन्ट की जेब से मोबाइल निकाल कर उससे किसी को फोन किया। मोबाइल को कान से लगा कर उसने सामने वाले से जाने क्या बात की। एक मिनट भी नहीं लगे उसे बात खत्म करने में। मोबाइल को पुनः जेब के हवाले कर उसने मेरी तरफ देखा और मुझे अपनी तरफ आने का हाथ से इशारा किया।

उसके इस इशारे पर मैं फिर चौंका। मगर कर भी क्या सकता था? मैं अपने मन में हज़ारों तरह के विचार लिए उसकी तरफ बढ़ने लगा। कुछ ही देर में सीढ़ियाँ चढ़ कर उसके पास पहुँच गया।

" साला इतना ज्यादा सस्पेन्स तो किसी जासूसी उपन्यास में भी मैने नहीं देखा जितना तू क्रियेट कर रखा है। " ऊपर उसके पास पहुँचते ही मैने कहा उससे __" मेरे दिमाग़ का कचूमर निकाल दिया तूने कसम से। अच्छा है तू किसी जासूसी उपन्यास का राइटर नहीं बन गया। वरना पाठकों के दिमाग़ की नसें ही फट जाती। "

" ज्यादा बकवास न कर। " मेरी बात पर रौनक ने भावहीन स्वर में कहा __" और अब चल मेरे साथ। "

" जो हुकुम माई बाप। " मैने अदब से सिर को झुकाते हुए कहा और चल दिया उसके पीछे।

रौनक के पीछे चलते हुए मैं हॉस्पिटल के अंदर की तरफ आ गया। मेरा मन अंजानी आशंका के चलते ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा था। पता नहीं क्यों पर मैं मन ही मन भगवान से दुवा कर रहा था कि यहा हर कोई ठीक ही हो। ख़ैर, रौनक के साथ चलते हुए मैने देखा कि रौनक एक कमरे के सामने आकर रुक गया।

कमरे के दरवाजे के पास रुक कर रौनक ने कुछ पल कुछ सोचा फिर मेरी तरफ पलट कर

कहा__"तू जानना चाहता था न कि मैने तुझे इतना जल्दी यहॉ आने के लिए क्यों कहा था?"

" वो तो मैं तुझसे कब से पूछ रहा हूॅ ?" मैने उससे कहा __" मगर तू बता ही नहीं रहा था। "

" बताने की ज़रूरत नहीं है मेरे यार। " सहसा रौनक की आवाज़ भर्रा गई , बोला __" तू इस कमरे में जा और सब कुछ अपनी ऑखों से देख सुन ले। लेकिन उससे पहले तू मुझसे वादा कर कि अंदर सब कुछ देखने सुनने के बाद तू खुद को संभाल कर रखेगा। "

" इस बात का क्या मतलब हुआ ?" मैंने सहसा चौंकते हुए कहा __" ऐसा क्या है अंदर कि मुझे उसे देख कर खुद को संभाल ना पड़ेगा ?"

" अब जा तू। " रौनक ने कहने के साथ ही मुह फेर लिया मुझसे , दो चार क़दम चलने के बाद मेरी तरफ पलट कर बोला __" मैं बाहर ही तेरा इन्तज़ार करू गा। "

बस इसके बाद वो एक पल के लिए भी नहीं रुका। बल्कि तेज़ तेज़ क़दम बढ़ाते हुए बाहर की तरफ चला गया। मुझे कुछ समझ न आया कि ये सब क्या चल रहा है यहॉ? रौनक जब मेरी नज़रों से ओझल हो गया तो मैं उस कमरे के दरवाजे की तरफ पलटा जिस कमरे के अंदर जाने के लिए रौनक ने मुझसे कहा था।

कुछ पल तक मैं उस दरवाजे को घूरता रहा। मेरा दिल अनायास ही बड़ी तेज़ी से धड़कने लगा था। मन में तरह तरह के ख़याल उछल कूद मचाने लगे थे। मैने अपने हाथो को दरवाजे की तरफ बढ़ाया। मैने देखा मेरे वो हाथ कॉप रहे थे। पता नहीं मगर, इन कुछ ही पलों में मेरी अजीब सी हालत हो गई थी। ख़ैर, मैने दरवाजे पर हाथ रख कर उसे अंदर की तरफ आहिस्ता से धकेला तो दरवाजा बेआवाज़ खुलता चला गया।

खुल चुके दरवाजे अंदर की तरफ मेरी नज़र पड़ी तो सामने दीवार के पास एक टेबल रखा दिखा मुझे जिस पर कुछ दवाइयॉ और कुछ पेपर जैसे रखे हुए थे। बाकी कुछ न दिखा मुझे। मेरे मन में सवाल उभरा कि इस कमरे में ऐसा क्या है जिसे देखने के लिए कदाचित रौनक ने मुझे अंदर जाने को कहा था?

अपने मन में उठे सवाल की खोज के लिए मैंने दरवाजे के अंदर की तरफ अपने क़दम बढ़ाए। दो ही क़दमों में मैं कमरे के अंदर दाखिल हो गया। अंदर आकर मैने इधर उधर देखा तो दाहिनी तरफ एक बेड दिखा जिस पर कोई पड़ा हुआ था। बेड के बगल से ही दो सोफा सेट रखे हुए थे किन्तु उन पर कोई बैठा हुआ नज़र न आया मुझे। बाकी पूरा कमरा खाली था। ये देख कर मेरा दिमाग़ हैंग सा हो गया। कुछ समझ न आया कि यहॉ मुझे क्या दिखाने के लिए रौनक ने भेजा है?

बेड पर पड़े हुए व्यक्ति पर मेरी नज़र पुनः पड़ी। उसका चेहरा दूसरी तरफ था इस लिए मैं जान न सका बेड पर कौन पड़ा हुआ है? किन्तु इतना ज़रूर अब समझ आ गया था कि शायद

बेड पर पड़े हुए इंसान को देखने के लिए ही मुझे रौनक ने यहाँ भेजा है। अतः मैं धड़कते हुए दिल के साथ बेड की तरफ बढ़ा।

कुछ ही क़दमों में मैं बेड के समीप पहुँच गया। किन्तु बेड पर पड़े हुए व्यक्ति का चेहरा दूसरी तरफ था इस लिए मैं इस तरफ से चलते हुए उस तरफ उस व्यक्ति के चेहरे की तरफ बढ़ गया। मैने महसूस किया कि कमरे हीं नहीं बल्कि पूरे हॉस्पिटल में सन्नाटा छाया हुआ था। ऐसा सन्नाटा कि अगर कहीं सुई भी गिरे तो उसके गिरने की आवाज़ किसी बम के धमाके से कम न सुनाई दे।

बेड पर पड़े व्यक्ति के चेहरे की तरफ आकर मेरी नज़र जिस चेहरे पर पड़ी उसे देख कर मैं बुरी तरह उछल पड़ा। हैरत और आश्चर्य से मेरी ऑखें फट पड़ीं। किन्तु फिर जैसे एकदम से मुझे होश आया और मेरी ऑखों के सामने मेरा गुज़रा हुआ वो कल घूमने लगा जिसमें मैं था एक प्राची नाम की लड़की थी और उस लड़की के साथ शामिल मेरा प्यार था। फिर एकाएक ही तस्वीर बदली और उस तस्वीर में उसी प्राची नाम की लड़की का धोखा था, उसकी बेवफाई थी। उसी तस्वीर में मेरा वो रोना था वो चीखना चिल्लाना था और नफ़रत मेरी थी। ये सब चीज़ें मेरी ऑखों के सामने कई बार तेज़ी से घूमती चली गई।

मेरे चेहरे के भाव बड़ी तेज़ी से बदले। दुख दर्द और नफ़रत के भाव एक साथ आकर ठहर गए। ऑखों में ऑसूँ भर आए मगर मैने उन्हें सख्ती से ऑखों में ही जज़्ब कर लिया। दिल में एक तेज़ गुबार सा उठा और उस गुबार के साथ ही मेरी ऑखों में चिंगारियाँ सी जलने बुझने लगीं।

मेरे दिल की धड़कने और मेरी सासें तेज़ तेज़ चलने लगी थी। मेरे मुख से कोई अल्फाज़ नहीं निकल रहे थे। किन्तु ये सच है कि कुछ कहने के लिए मेरे होंठ फड़फड़ा रहे थे। मुझे ऐसा लग रहा था कि या तो मैं खुद को कुछ कर लूँ या फिर बेड पर ऑखें बंद किये आराम से पड़ी इस लड़की को खत्म कर दूँ। किन्तु जाने कैसे मैं कुछ कर नहीं पा रहा था।

अभी मैं अपनी इस हालत से जूझ ही रहा था कि सहसा बेड पर आराम से करवॅट लिए पड़ी उस बला ने अपनी ऑखें खोली जिस बला को मैने टूट टूट कर चाहा था।

५२

सुंदर चाचा की ससुराल में।

अपर्णा चाची इस वक्त अपने कमरे में आराम कर रही थी। दोपहर हो चुकी थी। सब लोगों के खाना खा लेने के बाद उन्होंने भी खाया और फिर आराम करने के लिए अपने कमरे में चली गईं।

चन्द्रकान्त सिंह राजपूत, ये अपर्णा चाची के दादा जी हैं। इनकी उमर इस समय पैंसठ के ऊपर है। ये एक फौजी आदमी हैं। फौज में मेजर थे ये। अब तो ख़ैर सरकारी पेंशन ही मिलती है इन्हें किन्तु खुद भी घर परिवार और ज़मीन जायदाद से सम्पन्न हैं ये।

हेमलता सिंह राजपूत , ये अपर्णा चाची की दादी हैं। ये बॉसठ साल की हैं। चन्द्रकॉत सिंह और हेमलता सिंह के तीन लड़के और एक लड़की थी।

उदयराज सिंह राजपूत, ये चन्द्रकॉत सिंह के बड़े बेटे थे जो कुछ साल पहले गंभीर बीमारी के चलते भगवान को प्यारे हो चुके हैं।

सुभद्रा सिंह राजपूत , ये अपर्णा चाची की मॉ हैं। उमर यही कोई पचास के आस पास। विधवा हैं ये। इनके दो ही बच्चे हैं। सबसे पहले अपर्णा चाची उसके बाद हेमराज सिंह राजपूत। हेमराज सिंह की भी शादी हो चुकी है और उसके दो बच्चे हैं।

मेघराज सिंह राजपूत, ये अपर्णा चाची के चाचा हैं। इनकी उमर पचास के आस पास है। पढ़े लिखे हैं ये। मगर अपनी सारी ज़मीनों पर खेती बाड़ी का काम करवाते हैं। इनकी पत्नी का नाम सरोज है जो कि पैंतालीस साल की हैं। इनके दो बेटे हैं जो शहर में रह कर पढ़ाई करते हैं।

गिरिराज सिंह राजपूत, ये अपर्णा चाची के छोटे चाचा हैं। ये पैंतालीस साल के हैं और शहर में ही रहते हैं। शहर में ये एक बड़ी सी प्राइवेट कंपनी में बड़ी पोस्ट पर कार्यरत हैं। इनकी पत्नी का नाम शैलजा है। इनके दो बच्चे हैं जो शहर में ही रहते हैं अपने मॉ बाप के साथ।

पुष्पा सिंह, ये अपर्णा चाची की इकलौती बुआ हैं। उमर यही कोई चालीस के आस पास। इनके पति का नाम भरत सिंह है। ये पेशे से सरकारी डाक्टर हैं। पुष्पा बुआ के दो बच्चे हैं। एक बच्चा पढ़ाई करके एक बड़ी कंपनी में नौकरी कर रहा है जबकि दूसरा बेटा अपने बाप की तरह डाक्टर बनना चाहता है इस लिए डाक्टरी की पढ़ाई कर रहा है।

अपर्णा चाची अपने कमरे में बेड पर पड़ी किसी गहरे ख़यालों में गुम थी। कल उनके पास उनके पति सुंदर का फोन आया था। उन्होंने बताया था कि विक्रम किसी काम से गाव आया है , इस लिए वो बच्चों को लेकर उसके साथ ही मुंबई आ जाए। सुंदर ने अपर्णा को पहले ही बता दिया था कि वो मुंबई में विक्रम के साथ ही रह रहा है। उसने सारी राम कहानी अपर्णा को

बता दिया था।

अपर्णा अपने पति से असलियत जान कर बहुत हैरान हुई थी और बेहद दुखी भी। उसने स्वप्न में भी उम्मीद न की थी कि एक भाई अपने भाई को इस तरह जान से मार सकता है। अपनी जेठानी सोनिया के चरित्र का सुन कर उसे लकवा सा मार गया था। उसके मन में सोनिया के प्रति घृणा व नफ़रत पैदा हो गई थी। उसे याद आता कि कैसे सोनिया उसके पास आकर उससे अश्लील बातें किया करती थी।

अपर्णा को अब समझ में आया था कि उसकी जेठानी उससे ऐसी अश्लील बातें क्यों किया करती थी। उसका एक ही मकसद होता था कि वो अपर्णा से ऐसी बातें करके उसके अंदर वासना की आग को भड़का दे ताकि अपर्णा उस आग में जलते हुए कुछ भी करने को तैयार हो जाए। अपर्णा ये सब सोच सोच कर हैरान थी कि उसकी जेठानी उसके साथ क्या करना चाहती थी।

अपर्णा ने भगवान का लाख लाख शुक्रिया अदा किया कि अच्छा हुआ कि वो अपनी जेठानी की उन बातों से खुद को संभाले रखा था। वरना जाने कैसा अनर्थ हो जाता। सुंदर ने उसे सब कुछ बता दिया था। उसने अपर्णा को बता दिया था कि उसका भतीजा विक्रम अब बहुत बड़ा आदमी बन गया है। उसने बताया कि कैसे एक ग़ैर इंसान ने उसे अपना बेटा बना लिया और उसके नाम अपनी अरबों की संपत्ति कर दी। अपर्णा ये सब जान कर बहुत खुश हुई थी। उसकी ऑखों से ऑसू छलक पड़े थे ये सब जान कर।

सुंदर ने जब उससे कहा कि वो बच्चों को लेकर विक्रम के साथ मुंबई आ जाए तो वो इस बात से बड़ा खुश हुई थी। उसे लग रहा था कि कितना जल्दी वो मुंबई पहुॅच जाए और बड़ी बहन के समान अपनी जेठानी रेणुका से मिले। उससे मिल कर वो अपने बर्ताव के लिए माफ़ी मागना चाहती थी और उससे लिपट कर खूब रोना चाहती थी। जब से उसे सुंदर के द्वारा सारी सच्चाई का पता चला था तब से वह अकेले में अक्सर ऑसू बहाती रहती थी। उसे अपनी जेठानी रेणुका के साथ बिताए हर पल याद आते। उसे याद आता कि कैसे रेणुका उसे अपनी छोटी बहन की तरह मानती थी और उससे प्यार करती थी। उसे कोई काम नहीं करने दिया करती थी। वो हमेशा यही कहती कि तुम पढ़ी लिखी हो इस लिए तुम्हारा काम सिर्फ बच्चों को पढ़ाना है। घर के सारे काम वो खुद कर लेगी।

बेड पर पड़ी अपर्णा ये सब सोच सोच कर ऑसू बहा ही रही थी कि सहसा उसका मोबाइल बज उठा। वो ख़यालों के अथाह सागर से बाहर आई और सिरहाने रखे मोबाइल को उठाकर उसकी स्क्रीन में फ्लैश कर रहे 'सुंदर जी' नाम को देखा तो तुरंत ही उसने काल को रिसीव कर मोबाइल को कान से लगा लिया।

".....। " उधर से सुंदर ने कुछ कहा।

" क्या ???" अपर्णा हल्के से चौंकी ___" आज ही निकलना होगा मुझे ? मगर बात क्या है जी ? आप तो कह रहे थे कि कल जाना है। "

".....। " उधर से सुंदर ने फिर कुछ कहा।

" ये क्या कह रहे हैं आप ?" अपर्णा के चेहरे पर एकाएक ही चिंता के भाव आ गए __" ऐसा कैसे हो सकता है ?"

".....। " उधर से सुंदर कुछ देर तक उससे कुछ कहता रहा।

" ठीक है आप चिंता मत कीजिए। " अपर्णा ने कहा _" मैं हेमराज के साथ ही बच्चों को लेकर यहाँ से निकलूँगी। उसके बाद मैं रेलवे स्टेशन पर विक्रम से मिल लूँगी। "

".....। " उधर से सुंदर ने फिर कुछ कहा।

" जी ठीक है। " अपर्णा ने कहा __" मैं अभी माँ और दादा जी से बात करती हूँ। सामान कुछ ज्यादा नहीं है। बस एक बैग ही है। बाकी जैसा आप कहें। "

".....। " उधर से सुंदर ने कुछ कहा।

" हाँ ठीक है। " अपर्णा ने सिर हिलाया __" मैं सामान ज्यादा नहीं लूँगी। आप हेमराज को समझा दीजिएगा। "

उधर से सुंदर ने कुछ और कहा जिस पर अपर्णा ने हाँ कह कर सिर हिलाया उसके बाद काल कट हो गई। काल कट होने के बाद अपर्णा ने गहरी सास ली और फिर बेड से उतर कर कमरे से बाहर आ गई।

५३

हॉस्पिटल में।

मेरे दिलो दिमाग़ में ऑधी तूफान चल रहा था। मुझ पर नज़र पड़ते ही बेड पर पड़ी प्राची के चेहरे पर ऐसे भाव उभरे जैसे वह मुझे देख कर एकदम से स्टेचू में तब्दील हो गई हो। एकटक मेरी तरफ देखे जा रही थी वह। फिर सहसा उसके चेहरे के भाव एकाएक ही बदले। उस चेहरे पर दुख और पीड़ा के भाव उभर आए। पथराई हुई ऑखों ने अपने अंदर से किसी टूटे हुए बॉध की तरह ऑसुओं को बाहर की तरफ तेज़ प्रवाह से बहाना शुरू कर दिया।

उसके चेहरे के बदले हुए उन भावों को देख कर भी मेरे अंदर की नफ़रत और आक्रोश में कोई कमी नहीं आई। मेरी ऑखों के सामने कोई और ही मंज़र घूम रहा था। गुज़रे हुए कल की तस्वीरें बार बार ऑखों के सामने घूम रही थीं। अभी मैं इन सब तस्वीरों को देख ही रहा था कि तभी बेजान हो चुके प्राची के जिस्म में हल्का सा कंपन हुआ और उसके थरथराते हुए होठों से जो लड़खड़ाता हुआ शब्द निकला उसने मुझे दूसरी दुनियॉ से लाकर इस हकीक़त की दुनियॉ में पटक दिया।

" वि .. क्र ऽऽऽम। " बहुत ही करुण भाव से मगर लरज़ता हुआ प्राची का ये स्वर मेरे कानो से टकराया। हकीक़त की दुनियॉ में आते ही मेरी नज़र प्राची के चेहरे पर फिर से पड़ी तो इस बार मेरा समूचा अस्तित्व हिल गया। प्राची की ऑखों से ऑसू बह रहे थे , उसके चेहरे पर अथाह पीड़ा के भाव थे। ये सब देख कर मेरा हृदय हाहाकार कर उठा। पल भर में मेरे अंदर मौजूद उसके प्रति मेरी नफ़रत घृणा और गुस्सा सब कुछ साबुन के झाग की तरह बैठता चला गया। मेरे टूटे हुए दिल के किसी टुकड़े में दबा उसके लिए बेपनाह प्यार चीख उठा।

मैने देखा कि करवट के बल लेटी प्राची का एक हाथ धीरे से ऊपर की तरफ ऐसे अंदाज़ में उठा जैसे वो मुझे अपने पास बुला रही हो। मेरा समूचा जिस्म ही नहीं बल्कि अंदर की आत्मा तक में एक झंझावात सा हुआ। मैं किसी सम्मोहन के वशीभूत होकर उसकी तरफ बढ़ चला। इस वक्त जैसे मैं खुद को भूल ही चुका था। कुछ ही पल में मैं प्राची के पास उसके उस उठे हुए हाथ के पास पहुँच गया।

" त तुम आ गए विक्रम। " मुझे अपने करीब देखते ही उसने अपने उस उठे हुए हाथ से मेरी बॉई कलाई को पकड़ते हुए कहा __" मैं तुम्हारे ही आने का यहॉ इन्तज़ार कर रही थी। मेरी सास ें सिर्फ तुम्हें ही देखने के लिए बची हुई हैं। "

मेरे मुख से उसकी इन बातों पर कोई लफ्ज़ न निकला। किन्तु मैं उसकी आख़िरी बात सुन कर बुरी तरह चौंका ज़रूर। हैरानी से उसकी तरफ देखा मैने। मगर फिर अचानक ही जाने क्या हुआ मुझे कि मेरे चेहरे पर फिर से वही नफ़रत और गुस्सा उभर आया। मैने एक झटके से

उसके हाथ से अपनी कलाई को छुड़ा लिया।

" अब ये कौन सा नया नाटक शुरू किया है तुमने ?" मेरे मुख से सहसा गुर्राहट निकली __" और क्या कहा तुमने कि तुम मेरा ही इन्तज़ार कर थी ? भला क्यों कर रही थी मेरा इन्तज़ार ? कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम्हें पता चल गया हो कि इस समय मैं फिर से रुपये पैसे वाला हो गया हूँ ? इस लिए पैसों के लिए फिर से मुझे बुला लिया तुमने। वाह क्या बात है जवाब नहीं है तेरा। अब समझ में आई सारी बात मुझे। मुझे मुंबई से बुलाने के लिए मेरे ही दोस्त का इस्तेमाल किया तूने। क्या दिमाग़ लगाया है तूने लड़की क्या दिमाग़ लगाया है। मगर तेरे इस दिमाग़ लगाने से अब कुछ नहीं होने वाला। मैं तेरे इस नाटक में फँसने वाला नहीं हूँ अब।

इतना तो सबक सीख ही लिया है मैने कि तुझ जैसी लड़की से कैसे दूर रहा जाता है। मुश्किल तो था मगर सह लिया है मैने, और अब उस सबसे बहुत दूर निकल गया हूँ। अब कोई लड़की मुझे अपने रूप जाल में या अपने झूठे प्यार के जाल में नहीं फँसा सकती। इस लिए लड़की, ये जो तूने नाटक रचा है न उसे यहीं खत्म कर दे। अब कुछ नहीं मिलने वाला यहाँ। मेरा यार भोला था नासमझ था इस लिए तेरी बातों के जाल में फँस गया और मुझे यहाँ बुला लिया। मगर चिंता मत कर मैं अपने यार को संभाल लूँगा।"

मैने ये सब बिना रुके मानो एक ही सास में कह दिया था और कहने के बाद उसके पास एक पल भी रुकना गवाँरा न किया। पलट कर वापस चल दिया, दो क़दम चलने के बाद सहसा मैं रुका और पलट कर बोला__"एक बात कहूँ। आज भी तुझे उतना ही प्यार करता हूँ जितना पहले किया करता था मगर बेपनाह प्यार करने के बावजूद अब तुझे पाने की मेरे दिल में ज़रा सी भी हसरत बाकी नहीं है।"

ये कह कर मैं तेज़ी से पलट गया। पलट इस लिए गया क्योंकि मैं उस बेवफा को अपनी आँखों में भर आए आँसुओं को दिखाना नहीं चाहता था। मेरा दिल अंदर ही अंदर बुरी तरह तड़पने लगा था। मुझे लग रहा था कि मैं हॉस्पिटल के बाहर दौड़ते हुए जाऊँ और बीच सड़क पर घुटनों के बल बैठ कर तथा आसमान की तरफ चेहरा करके ज़ोर ज़ोर से चीखूँ चिल्लाऊँ और दहाड़ें मार मार कर रोऊँ। सारी दुनियाँ मेरा वो रुदन देखे मगर वो न देखे सुने जिसे मैं आज भी टूट कर प्यार करता हूँ।

" तुम्हारी इन बातों से पता चलता है विक्रम कि तुम आज के समय में मुझसे कितनी नफ़रत करते हो। " सहसा प्राची की करुण आवाज़ मेरे कानों पर पड़ी ___" और सच कहूँ तो ऐसा तुम्हें करना भी चाहिए। मुझे इसके लिए तुमसे कोई शिकायत नहीं है। मैने जो कुछ भी तुम्हारे साथ किया था उसके लिए कोई भी यही करता। मगर , मेरा यकीन करो विक्रम मेरे मन में ना तो पहले ये बात थी और ना ही आज है कि मैने पैसों के लिए ये सब किया। "

" बंद करो अपनी ये बकवास। " मैने पलट कर चीखते हुए कहा था , बोला __" तेरी फितरत को अच्छी तरह जानता हूँ मैं। आज भी तूने मुझे इसी लिए बुलवाया है क्योंकि तुझे पता चल चुका है कि अब मैं फिर से पैसे वाला हो गया हूँ। पैसों से प्यार है तुझे , पैसों के

लिए तू किसी भी लड़के के दिल के साथ खिलवाड़ कर सकती है। मगर , अब तेरी कोई भी चाल मुझ पर चलने वाली नहीं है समझी ? मेरा दिल तो करता है कि इसी वक्त तुझे तेरे किये की सज़ा दूँ मगर नहीं कर सकता मैं ऐसा। क्योंकि मुझसे तेरी तरह किसी को चोंट पहुँचाना नहीं आता और ना ही मैं अपने मतलब के लिए तेरे साथ कुछ करना चाहता हूँ। तुझे अगर मैं कोई दुवा नहीं दे सकता तो बद्दुवा भी नहीं दूँगा। "

मेरी बातें सुन कर प्राची के दिल में कदाचित टीस सी उभरी। उसकी ऑखें बंद हो गई और बंद ऑखों से ऑसुओं की धार बह चली। मगर फिर जैसे उसने खुद को संभाला और मेरी तरफ कातर भाव से देखने लगी। उसे इस तरह अपनी तरफ देखता पाकर एक बार मैं फिर से हिल गया। मेरे दिल में बड़ी ज़ोर की पीड़ा हुई मगर मैने खुद को संभाला। आज भी उसके चेहरे की उदासी और ऑखों में ऑसू देख कर मैं तड़प जाता था किन्तु अंदर से कोई चीख कर मुझसे कहने लगता इसने तेरे प्यार की कदर नहीं की। इसने तुझे धोखा दिया था। तेरी सच्ची चाहत को मज़ाक बना कर रख दिया था। बस इस एहसास के साथ ही उसके लिए मेरे अंदर जो तड़प उठ जाती थी वो कहीं गुम सी हो जाती थी।

" तुमने तो मुझे कोई सज़ा नहीं दी विक्रम। " सहसा प्राची ने पुनः करुण भाव से कहा __" मगर मेरी ज़िदगी ने मुझे खुद सज़ी दी है। ऐसी सज़ा कि मेरी सास ें बस चंद दिनों की या फिर चंद पलों की ही मेहमान हैं। किस्मत बड़ी ख़राब चीज़ भी होती है , एक पल में हमसे वो सब कुछ छीन लेती है जिसे हम किसी भी कीमत पर किसी को देना नहीं चाहते। किस्मत पर किसी का ज़ोर नहीं चलता विक्रम । ये मेरी बदकिस्मती ही तो थी कि मैने तुम्हारे साथ वो सब किया। मगर यकीन मानो उस समय जो मुझे समझ में आया मैने वही किया। क्योंकि मुझे कुछ और सूझ ही नहीं रहा था। भला मैं ये कैसे सह सकती थी कि मेरी छोटी सी ज़िदगी के साथ तुम इस हद तक मुझे प्यार करने लगो कि मेरे मरने के बाद तुम खुद को संभाल ही न पाओ ? उस समय मैने तुम्हें धोखा दिया मगर उस समय के मेरे धोखे ने तुम्हें इतना भी टूट कर बिखरने नहीं दिया कि बाद में तुम सम्हल ही न पाते। मैं मानती हूँ कि दिल जब किसी के द्वारा टूटता है तो उसका दर्द हमेशा के लिए दिल के किसी कोने में दबा बैठा रहता है। मगर , उस समय के हालात में तुम टूटे तो ज़रूर मगर इस हद तक नहीं बिखरे। वरना आज मेरे सामने इस तरह खड़े नहीं रहते। आज तुम जिस मुकाम पर हो वहॉ नहीं पहुँच पाते। "

प्राची की बातें सुन कर मुझे कुछ समझ न आया कि ये क्या अनाप शनाप बके जा रही है? मगर उसके लहजे में और उसके भाव में कुछ तो ऐसा था जिसने मुझे कुछ हद तक शान्त सा कर दिया था।

" तो तुम क्या चाहती थी कि मैं टूट कर बिखर जाता और फिर कभी सम्हलता ही नहीं ?" मैने तीके भाव से कहा __" अरे मैं तो आज भी उसी हालत में हूँ। मगर कहते हैं न कि इंसान के जीवन में सिर्फ उसी बस का हक़ नहीं होता बल्कि उसके परिवार वालों का भी होता है। मेरी मॉ मेरी बहन ने मुझे प्यार ही इतना दिया है कि मैं बिखर कर भी नहीं बिखरा। मैने भी सोच लिया कि ऐसी लड़की के लिए क्या रोना जिसने प्यार को कभी समझा ही नहीं ? रोना है तो उनके लिए रोओ जो सच में मुझसे प्यार करते हैं। "

" ये तो खुशी की बात है कि तुमने ऐसा सोचा और खुद को संभाल लिया। " प्राची ने फीकी मुस्कान के साथ कहा _" मैं भी यही चाहती थी कि तुम उस सबसे खुद को संभाल लो और जीवन में आगे बढ़ जाओ। किसी एक के चले जाने से किसी का जीवन रुक नहीं जाता। समझदार इंसान को सबकुछ भूल कर आगे बढ़ जाना चाहिए। वही तुमने किया , इस बात से मैं खुश हूँ विक्रम । यही तो चाहती थी मैं। यकीन मानो तुम्हें आज इस तरह देख कर मेरे मन का बोझ उतर गया है। मैं तुमसे ये नहीं कहूँगी कि तुम मुझे उस सबके लिए माफ़ कर दो जो कुछ मैने तुम्हारे साथ किया था। अगर तुम ऐसे ही खुश हो तो भला मैं माफ़ी माँग कर तुम्हारी उस खुशी को कैसे मिटा सकती हूं ? अब तुम जाओ विक्रम , जीवन में खूब तरक्की करो और अपनों के साथ साथ खुद को भी खुश रखो। और हाँ , जीवन में मुझे कभी याद मत करना , क्योंकि मैं याद करने लायक नहीं हूँ। "

प्राची की इन विचित्र बातों ने मुझे उलझा कर रख दिया था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि आज इसे हो क्या गया है? ये तो ऐसी बातें कह रही थी जैसे कोई उपदेशक हो। मेरे दिलो दिमाग़ में तरह तरह की बातें चलने लगी थीं।

" जाते जाते मेरी एक आरज़ू भी पूरी करते जाओ विक्रम। " प्राची का वाक्य मेरे कानों से टकराया __" हलाँकि तुमसे कोई आरज़ू रखने का मुझे कोई हक़ तो नहीं है मगर मैं जानती हूँ कि तुम मेरी आरज़ू ज़रूर पूरी करोगे। " कहने के बाद प्राची कुछ पल के लिए रुकी फिर बोली __" मेरे पास आओ न विक्रम । मैं तुम्हें और तुम्हारे चेहरे को जी भर के देखना चाहती हूँ। तुम्हारे चेहरे की इस सुंदर तस्वीर को अपनी ऑखों में फिर से बसा लेना चाहती हूँ। मेरी ये आरज़ू पूरी कर दो विक्रम । इतना तो कर ही सकते हो न तुम ?"

प्राची की बात सुन कर मेरे दिलो दिमाग़ में धमाका सा हुआ। मेरे पूरे जिस्म में झुरझुरी सी हुई। पेट में बड़ी तेजी से जैसे कोई गैस का गोला घूमने लगा था। दिमाग़ एकदम सुन्ना सा पड़ता चला गया। कानों में कहीं दूर से सीटियों की अनवरत आवाज़ गूँजती महसूस हुई मुझे। पल भर में मेरे ज़हन में जाने कितने ही प्रकार के ख़याल आए और जाने कहाँ गुम हो गए। बस एक ही ख़याल गुम न हुआ और वो ये था कि प्राची ऐसा क्यों चाह रही है?

किसी गहरे ख़यालों में खोया हुआ मैं इस तरह प्राची की तरफ बढ़ चला जैसे मुझ पर किसी तरह का सम्मोहन हो गया हो। कुछ ही पल में मैं प्राची के करीब उसके चेहरे के पास जा कर खड़ा हो गया। मेरे खड़े होते ही प्राची ने किसी तरह खुद को उठाया और बेड की पिछली पुश्त से पीठ टिका लिया। अब वो अधलेटी सी अवस्था में थी। चेहरा ऊपर करके उसने मेरे चेहरे की तरफ देखा। उसकी ऑखों में ऑसुओं का गरम जल तैरता हुआ नज़र आया मुझे। मैने पहली बार उसके चेहरे को बड़े ध्यान से देखा और अगले ही पल बुरी तरह चौंक पड़ा मैं। मुझे प्राची के चेहरे पर मुकम्मल खिज़ा दिखाई दी। जो चेहरा हर पल ताजे खिले गुलाब की मानिन्द खिला हुआ रहा करता था आज उस चेहरे पर वीरानियों के सिवा कुछ न था। ऐसा लगता था जैसे वो शदियों से बीमार हो।

उसे इस हालत में देख कर एक बार फिर से मेरा दिल तड़प उठा। जी चाहा कि अभी झपट

कर उसे अपने सीने से लगा लूँ मगर ऐन वक्त पर मुझे उसका धोखा याद आ गया। उसका वो दो टूक जवाब देना याद आ गया। मुझे भिखारी कहना याद आ गया। इन सबके याद आते ही मेरे चेहरे पर कठोरता छाती चली गई। एक बार फिर से मेरे अंदर से नफ़रत और गुस्सा उभर कर आया और मेरे चेहरे तथा ऑखों में आकर ठहर गया।

" मैं तुम्हें दुवा में ये भी नहीं कह सकती कि तुम्हें मेरी उमर लग जाए। " तभी प्राची ने छलक आए ऑसुओं के साथ कहा __" बस यही दुवा करती हूँ कि तुम हमेशा खुश रहो। जीवन में हर कोई तुम्हें दिलो जान से प्यार करे। कभी किसी के द्वारा तुम्हारा दिल न दुखे। खुदा मिलेगा तो उससे पूछूँगी कि मैने ऐसा क्या गुनाह किया था जो उसने मुझे ऐसी ज़िंदगी बक्शी थी ? ख़ैर , अब तुम जाओ विक्रम , मैने तुम्हारी तस्वीर को इस तरह अपनी ऑखों में बसा लिया है कि अब हर जन्म में मुझे सिर्फ तुम ही नज़र आओगे। "

प्राची की इस बात से एक बार फिर से मेरे चेहरे पर उभर आए नफ़रत व गुस्से में कमी आ गई। मैंने उसे अजीब भाव से देखा। मेरे अंदर कोई ज़ोर ज़ोर से चीखे जा रहा था कि इसे एक बार अपने सीने से लगा ले विक्रम। मगर मैने अपने अंदर के उस शोर को सख्ती से दबा दिया और पलट कर कमरे के बाहर की तरफ चल दिया। मैने महसूस किया कि मेरी कोई अनमोल चीज़ मुझसे हमेशा के लिए दूर हुई जा रही है। मेरे दिल की धड़कने अनायास ही ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगी। मनो मस्तिष्क में बड़ी तेज़ी से कोई तूफान चलने लगा था। अभी मैं दरवाजे के पास ही पहुँचा था कि.....

" रुक जाओऽऽ। " ये वाक्य एक नई आवाज़ के साथ मेरे कानों से टकराया था। दरवाजे के करीब बढ़ते हुए मेरे क़दम एकाएक ही रुक गए। मैं बिजली की सी तेज़ी से पलटा। कमरे में ही बेड के पास खड़ी जिस शख्सियत पर मेरी नज़र पड़ी उसे देख कर मैं हक्का बक्का रह गया। आश्चर्य और अविश्वास से मेरी ऑखें फटी की फटी रह गईं। मुझे अपनी ऑखों पर यकीन नहीं हुआ कि जिस शख्सियत को मेरी ऑखें देख रही हैं वो सच में वही हैं या फिर ये मेरी ऑखों का कोई भ्रम है।

" मुझे तुमसे ये उम्मीद नहीं थी विक्रम। " सहसा ये नई आवाज़ फिर से मेरे कानों से टकराई __" तुम इस तरह कैसे यहॉ से जा सकते हो ? इतनी बेरुख़ी तो कोई अपने किसी दुश्मन से भी नहीं जाहिर करता जितनी तुम प्राची को देख कर ज़ाहिर कर रहे हो। "

इस बार मैं बुरी तरह चौंका। ये तो सच में वही हैं। यानी साक्षी दीदी। जी हॉ दोस्तो, ये वही साक्षी दीदी हैं जिन्होंने अपने जीवन में कभी भी मुझे भाई नहीं माना और ना ही मुझसे बात करना ज़रूरी समझा। मगर मैं इस बात से हैरान था कि वो यहॉ कैसे मौजूद हो सकती हैं? जब मैं आया था इस कमरे में तब तो ये यहॉ नहीं थी, फिर अचानक ये कहॉ से यहॉ पर प्रकट हो गईं?

" प्लीज़ दीदी। " तभी बेड पर अधलेटी अवस्था में बैठी प्राची ने साक्षी दीदी से कहा __" कुछ मत कहिए उसे। "

" नहीं प्राची। " साक्षी दीदी ने आवेशयुक्त भाव से कहा _" मुझे बोलने दे अब। माना कि तूने जो किया वो उस समय के हिसाब से ग़लत था मगर इसका मतलब ये नहीं कि बिना किसी बात को जाने समझे ये तुझे इस तरह बोल कर यहाँ से चला जाए। "

" नहीं दीदी प्लीज़। " प्राची ने विनती करते हुए कहा __" ऐसा मत कहिए उसे। मुझे किसी बात की सफाई नहीं देना है उससे। आप जानती हैं कि मैं उसे किसी भी तरह का दुख नहीं देना चाहती अब। "

" क्यों करती है रे ऐसा तू ?" साक्षी दीदी की आवाज़ सहसा भारी हो गई , ऑखों में ऑसू आ गए , बोली __" ऐसा मत कर प्राची । वरना ये ज़मीन और वो आसमान फट जाएगा। तू चाहती थी न कि तू अपने आख़िरी समय में अपने इस महबूब की बाहों में ही दम तोड़े ? फिर क्यों अब इस सबसे मुकर रही हो तू ? अब तक तो तड़प ही रही थी न तो अब अपने अंतिम समय में क्यों इस तड़प को लेकर जाना चाहती है ? नहीं नहीं , मैं ऐसा हर्गिज़ नहीं होने दूँगी। "

साक्षी दीदी की बातें सुन कर मेरे दिलो दिमाग़ में भयंकर विस्फोट हुआ। ऐसा लगा जैसे आसमान से कोई बिजली सीधा मेरे दिल पर गिर पड़ी हो। पलक झपकते ही मेरी हालत ख़राब हो गई। दिमाग़ में हर बात बड़ी तेज़ी से घूमने लगी। एक एक बात, एक एक दृष्य मेरे ज़हन से टकराने लगे। रौनक का मुझे फोन करके यहाँ अर्जेन्ट बुलाना, मेरे द्वारा वजह पूछने पर उसका अब तक चुप रहना। हॉस्पिटल के इस कमरे के बाहर से ये कह कर चले जाना कि मैं यहाँ जो कुछ भी देखूँ सुनूँ उसे देख सुन कर खुद को संभाले रखूँ। हॉस्पिटल के इस कमरे के अंदर प्राची का मुझसे मिलना, उसकी वो सब विचित्र बातें और अब साक्षी दीदी का यहाँ मौजूद होकर ये सब कहना। ये सब चीज़ें मेरे दिलो दिमाग़ में बड़ी तेज़ी घूमने लगी थी।

मुझे अब समझ आया कि असल माज़रा क्या है। मेरे दिमाग़ ने काम करना शुरू कर दिया और अब मुझे सब कुछ समझ में आने लगा था। दरअसल प्राची को कुछ हुआ है जिसके लिए रौनक ने मुझे यहाँ बुलाया था। मगर प्राची को ऐसा क्या हो गया है? साक्षी दीदी ने ये क्या कहा कि___ "तू चाहती थी न कि तू अपने आख़िरी समय में अपने इस महबूब की बाहों में ही दम तोड़े?" हे भगवान! ये क्या कहा साक्षी दीदी ने?

" नननहींऽऽऽऽ। " अपने ही सोचों में डूबा मैं पूरी शक्ति से चीख पड़ा था , पल भर में मेरी ऑखों से ऑसुओं का जैसे कोई बॉध टूट पड़ा। मैं भागते हुए प्राची के पास आया। इधर मेरी चीख से साक्षी दीदी और प्राची भी चौंक पड़ी थी।

मैं भागते हुए प्राची के पास आया था, बेड के किनारे पर बैठ कर मैने प्राची को उसके दोनो कंधों से पकड़ कर खुद से छुपका लिया और बुरी तरह रो पड़ा। मैं प्राची को अपने सीने से बुरी तरह भींचे हुए था। मेरे मुख से कोई बोल नहीं फूट रहा था। मैं बस रोये जा रहा था। मुझे समझ में आ चुका था कि प्राची को कुछ ऐसा हो गया है जिससे वो मरने वाली है। ये बात मेरे लिए मेरी जान ले लेने से कम नहीं थी।

" नहीं विक्रम। " प्राची मुझसे छुपकी खुद भी रो रही थी , किन्तु उसने खुद को संभालते हुए कहा __" इस तरह मत रोओ। मैं अपनी ऑखों के सामने तुम्हें रोते हुए नहीं देख सकती। प्लीज़ चुप हो जाओ न। "

" नहीं नहीं नहीं। " मैंने तड़पते हुए कहा __" तुम मुझे छोंड़ कर कहीं नहीं जाओगी। तुम नहीं जानती कि तुम्हारे लिए कितना तड़पा हूँ मैं। पर अब और नहीं प्राची । मैं तुम्हें कुछ नहीं होने दूँगा। "

" पागल मत बनो विक्रम। " प्राची ने मेरे सिर को सहलाते हुए कहा __" खुद को संभाल ो और जीवन में आगे बढ़ो। "

" मैं कुछ नहीं जानता प्राची। " मैने सिसकते हुए कहा __" मैं फिर से तुम्हें खोना नहीं चाहता। मुझे बताओ कि क्या हुआ है तुम्हेंं ? मैं तुम्हारा इलाज़ करवाऊँगा। दुनियॉ भर के डाक्टरों को तुम्हारे इलाज़ के लिए पल भर में ले आऊँगा। "

" अब कुछ नहीं हो सकता विक्रम। " प्राची ने सहसा मुझसे अलग होकर मेरे चेहरे को अपनी दोनो हॅथेलियों में लेते हुए कहा __" मैने कहा न कि मेरा सफर खत्म हो चुका है। मुझे ब्लड कैंसर है वो भी लास्ट स्टेज का। मेरी सास ें किसी भी पल रुक सकती हैं और मैं भगवान के पास चली जाऊँगी। "

" ननहींऽऽऽ। " प्राची की ये बात सुनकर मुझे ज़बरदस्त झटका लगा। ऑखों के सामने अंधेरा सा छा गया। हर चीज़ जैसे किसी शून्य में डूबती महसूस हुई मुझे। कानों में कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था मुझे। दिल की धड़कने रुक सी गई और मैं एकदम से अचेत सी अवस्था में आ गया।

" विक्र ऽऽऽम। " प्राची के हलक से चीख निकल गई , वो मेरे चेहरे को थपथपाते हुए बुरी तरह रोने लगी। पास में ही खड़ी साक्षी दीदी भी दौड़ कर मेरे पास आ गईं। मुझे पीछे से पकड़ते हुए मुझे ज़ोर ज़ोर से आवाज़ें लगाने लगीं। सब कुछ एकदम से ग़मगीन सा हो गया था। वक्त को एक जगह ठहर जाने में एक पल का भी समय नहीं लगा।

वो दोनो बुरी तरह रोये जा रही थी। साक्षी दीदी के दिमाग़ ने काम किया। पास ही टेबल पर रखे पानी के ग्लास को उठा कर उससे मेरे चेहरे पर पानी छिड़का उन्होंने। थोड़ी ही देर में मुझे होश आ गया। होश में आते ही मैं प्राची से लिपट कर ज़ार ज़ार रोने लगा।

" क्यों प्राची क्योंं ?" मैने बिलखते हुए उससे कहा __" क्यों छुपाया तुमने मुझसे ? क्या इसी लिए तुमने मेरे साथ वो सब किया था , ताकि मैं तुमसे दूर चला जाऊॅ ? और मैं मूरख ये समझता रहा कि तुमने मेरे साथ कितना ग़लत किया था। कितना बुरा हूँ मैं , आज तक मैं तुम्हें भला बुरा कहता रहा। तुम्हारे बारे में कितना कुछ बुरा सोचता रहा। मैने कितना बड़ा अपराध किया है प्राची । हाय कितना बड़ा पाप किया मैने। मुझे तो भगवान भी कभी माफ़ नहीं करेगा। "

" नहीं विक्रम नहीं। " प्राची ने तड़प कर मुझे अपने से छुपका लिया , बोली __" तुमने कोई अपराध नहीं किया , कोई पाप नहीं किया। तुमने तो बस प्यार ही किया है मुझे , हर रूप में तुमने मुझे प्यार किया है विक्रम । मुझे तुम पर नाज़ है। ईश्वर से यही दुवा करू गी कि हर जन्म में मुझे तुम्हारा ही प्यार मिले। "

" अपने आपको संभाल ो विक्रम। " सहसा साक्षी दीदी ने मुझे पीछे से पकड़े हुए कहा __" ईश्वर इस बात का गवाह है कि तुम दोनो ने कोई पाप नहीं किया है। प्राची ने उस समय जो किया उसमें भी उसके मन में सिर्फ यही था कि तुम उससे दूर हो जाओ और एक नये सिरे से जीवन में आगे बढ़ो। तुम खुद सोचो विक्रम कि जो प्राची तुम्हें दिलो जान से प्यार करती थी उसने तुम्हें अपने से दूर करने के लिए खुद को कैसे पत्थर दिल बनाया होगा ? उसका दिल कितना तड़पा होगा ? मगर इसके बाद भी उसने तुम्हें खुद से दूर किया। उस समय का वो दुख आज के इस दुख से भारी नहीं था। "

" लेकिन दीदी इसने मुझसे ये बात छुपाई ही क्यों थी ?" मैने रोते हुए कहा __" क्या इसे मेरे प्यार पर भरोसा नहीं था ? मैं इसके इलाज़ के लिए धरती आसमान एक कर देता और इसको इस गंभीर बिमारी से बचा लेता। "

" नहीं विक्रम। " दीदी ने कहा __" तुम उस समय भी कुछ न कर पाते क्योंकि तब तक कैंसर इसके खून में पूरी तरह फैल चुका था। पहले इस बात का इसे पता ही नहीं था और जब पता चला तो डाक्टर ने बताया कि इसके इलाज में ढेर सारा पैसा लगेगा और इसका इलाज हमारे देश में हो पाना भी मुश्किल था। उस समय ना तो तुम इतने सक्षम थे और ना ही इसके माता पिता जो इसका इलाज करवा पाते। इस लिए प्राची ने फैंसला किया कि वो तुमसे जितना जल्दी हो सके दूर हो जाए। क्योंकि तब तुम्हें इस बात का भी दुख होता कि तुम इसका इलाज नहीं करवा पाए। सब कुछ हमारे हाथ में नहीं होता विक्रम । कुछ ईश्वर का भी दखल होता है। "

" कुछ भी कहिये दीदी। " मैने कहा __" कम से कम मैं अपनी प्राची के साथ तो रहता। उसे खुद से अलग करके उसे दुखों के सागर में डूबने तो न देता। "

" नहीं विक्रम तुम इस सबसे दुखी मत हो। " प्राच ी ने कहा __" सब कुछ भूल जाओ। मैं बस ये चाहती हूँ कि तुम मुझे खुशी खुशी इस दुनियॉ से अलविदा करो। आज तुम्हारी बाहों में हूँ तो मेरे सारे दुख दर्द दूर हो गए हैं। मेरी ख्वाहिश थी कि मेरा दम निकले तो सिर्फ मेरे महबूब की बाहों में। तुम्हारी सुंदर छवि को अपनी ऑखों में बसा कर यहॉ से जाना चाहती थी। इस लिए दीदी से मैने अपनी ये इच्छा बताई और दीदी ने मुझसे वादा किया कि ये तुमको मेरे पास लेकर ज़रूर आएॅगी। "

मैं प्राची की इस बात से चौंका। पलट कर साक्षी दीदी की तरफ देखा तो साक्षी दीदी की नज़रें झुक गईं। उनके चेहरे पर एकाएक ही ग्लानि और अपराध बोझ जैसे भाव उभर आए।

" विक्रम , तुम्हारी साक्षी दीदी अब पहले जैसे नहीं रहीं। " सहसा प्राची ने मुझसे कहा

__" ये तुमसे बहुत प्यार करती हैं। इन्हें कभी खुद से दूर न करना। इन्होंने जो कुछ किया उसमे इनका कोई दोष नहीं था। इन्होंने तो वही किया था जो इन्हें बचपन से सिखाया गया था। आज हर सच्चाई इनको पता चल चुकी है इस लिए अब ये तुम्हें ही अपना भाई मानती हैं। तुम इन्हें माफ़ कर देना। इनका मुझ पर बहुत बड़ा उपकार है विक्रम । ये मुझे अपनी छोटी बहन जैसा प्यार देती हैं। जब से ये मुझे मिली हैं तब से मुझे यही एहसास होता रहा है जैसे कि तुम मेरे पास ही हो। "

प्राची की इन बातों से मुझे झटका सा लगा। मैने एक बार फिर से पलट कर साक्षी दीदी की तरफ देखा। उनका सिर पूर्व की भाँति ही झुका हुआ था। मैने अपने दोनो हाथो से उनके चेहरे को लेकर उनके चेहरे को ऊपर उठाया। जैसे ही उनका चेहरा ऊपर हुआ तो मुझे उनका ऑसुओं से तर चेहरा दिखा। मेरा कलेजा हिल गया उनका ये हाल देख कर। मैने उन्हें अपने सीने से लगा लिया। मेरे सीने से लगते ही साक्षी दीदी की रुलाई फूट गई। वो फूट फूट कर रोने लगी थी। जाने कब से उनके अंदर ये गुबार दबा हुआ था और अब वो इस रूप में निकल रहा था।

" ये क्या दीद◌ी ?" मैने उनके सिर को प्यार से सहलाते हुए कह◌ा __" चुप हो जाइये दीदी। अरे आप तो मेरी सबसे प्यारी और बहादुर दीदी हैं। चलिये अब चुप हो जाइये। "

" तू इतना अच्छा क्यों है विक्रम ?" साक्ष◌ी दीदी का रोना बंद ही नहीं हो रहा थ◌ा ___" तुझे मुझ पर गुस्सा क्यों नहीं आत◌ा ? मैने तुझे कभी अपना भाई नहीं माना। हमेशा तेरा दिल दुखाया मैने। मुझे वो सब याद है मेरे भाई जो कुछ मैने तेरे साथ किया है। जब जब मुझे वो सब याद आता है तब तब मुझे खुद से घृणा होने लगती है। मुझे ऐसा लगने लगता है कि मैं अपने आपको क्या कर डालूँ। "

" नहीं दीदी। " मैने उन्हें खुद से अलग करके उनके ऑसुओं को पोंछते हुए कह◌ा __" ऐसा कभी सोचना भी मत। मेरे मन में कभी भी आपके प्रति कोई बुरा ख़याल नहीं आया। कहीं न कहीं मुझे भी इस बात का एहसास था कि आप वही कर रही हैं जो आपको सिखाया जाता था। "

" ये सब तू मेरा दिल रखने के लिए कह रहा है न ?" साक्ष◌ी दीदी ने कह◌ा __" जबकि मुझे पता है कि तुझे मेरे उस बर्ताव से कितनी तक़लीफ़ होती थी। "

" हॉ बुरा तो लगता था दीदी। " मैने कह◌ा __" मगर उस सबके लिए आप पर कभी गुस्सा नहीं आता था। हर बार यही सोचता था कि इस बार आप मुझसे ज़रूर बात करेंगी। "

" और मैं इतनी बुरी थी कि हर बार तेरी उन मासूम सी उम्मीदों को तोड़ देती थी। " साक्ष◌ी ने सिर झुका लिय◌ा , बोल◌ी __" तू उस सबके लिए मुझे सज़ा दे मेरे भाई। तेरी हर सज़ा को मैं हॅसते हुए कुबूल कर लूँगी। "

" ठीक है दीदी। " मैने कह◌ा __" आपकी सज़ा यही है कि अब से आप ये सब बिलकुल भी नहीं सोचेंगी और ना ही ये सब सोच कर खुद को रुलाओगी। यही आपकी सज़ा है। "

मेरी ये सज़ा सुन कर साक्षी दीदी देखती रह गईं मुझे और सहसा फिर से उनकी ऑखों से ऑसू बह चले। वो मुझसे लिपट गईं। वो इस तरह मुझसे लिपटी हुई थी जैसे वो मुझे अपने अंदर समा लेना चाहती हों।

प्राची अपना ऑसुओं से तर चेहरा लिए हम दोनो बहन भाई को देख रही थी। उसके होठों पर मुस्कान थी। सहसा तभी उसे ज़ोर का धचका लगा। हम दोनो बहन भाई का ध्यान प्राची की तरफ गया। प्राची को आए उस ज़ोर के धचके से अचानक ही खॉसी आने लगी। मैं बुरी तरह चौंका। उधर प्राची को लगातार खॉसी आने लगी थी। मैं ये देख कर बुरी तरह घबरा गया। मेरे साथ साथ साक्षी दीदी भी घबरा गई। मैने प्राची को अपनी बाहों में ले लिया।

" प्राची , क्या हुआ तुम्हें ?" मैं बदहवाश सा कहता चला गया __" तुम ठीक तो हो न ? ये खॉसी कैसे आने लगी तुम्हें। डाक्टरऽऽऽ ..... डा डाक्टर को बुलाओ कोई। "

मैं पागलों की तरह इधर उधर देखने लगा। मेरी नज़र साक्षी दीदी पर पड़ी तो मैं उन्हें देख कर एकाएक ही रो पड़ा__"दीदी, देखो न प्राची को अचानक ये क्या होने लगा है? प्लीज़ दीदी जल्दी से डाक्टर को बुलाइये। जाइये जल्दी.....डाक्टर बुलाइये। मेरी प्राची को ये खॉसी कैसे आने लगी है अचानक?"

मेरी बात सुन कर साक्षी दीदी को जैसे होश आया। वो बदहवाश सी होकर पहले इधर उधर देखी फिर भागते हुए कमरे से बाहर की तरफ लपकी। इधर मैं लगातार प्राची को अपनी बाहों में लिए उसे फुसला रहा था। मेरा दिलो दिमाग़ एकदम से जैसे कुंद सा पड़ गया था। उधर प्राची को रह रह कर खॉसी आ रही थी। सहसा तभी उसके मुख से खून निकला। ये देख कर मैं और भी घबरा गया। मैं ज़ोर ज़ोर से डाक्टर डाक्टर चिल्लाने लगा। प्राची की हालत प्रतिपल ख़राब होती जा रही थी। उसकी हालत देख कर मेरी जान हलक में आकर फॅस गई थी।

तभी कमरे में भागते हुए डाक्टर नर्सें और साक्षी दीदी आ गई। उनके पीछे ही प्राची के मॉम डैड भी आ गए। उनके चेहरे से ही लग रहा था कि उनकी हालत बहुत ख़राब है। डाक्टर ने आते ही प्राची को देखा।

" देखिये इनकी हालत बहुत ख़राब है। " डाक्टर ने प्राची को चेक करने के बाद कहा __" ऐसा लगता है कि आज इनका बचना बहुत मुश्किल है। "

" डाऽऽऽऽक्टर। " मैं पूरी शक्ति से चीख पड़ा था __" ज़ुबान संभाल कर बात कर वरना हलक से ज़ुबान खींच कर तेरे हाथ में दे दूँगा समझे ? मेरी प्राची को कुछ नहीं होगा। इसे कुछ नहीं होने दूँगा मैं। मैं इसे ठीक कर दूँगा। "

" बेटीऽऽऽ। " प्राची की मॉ भाग कर प्राची के पास आई और रोते हुए बोली __" मैं कैसे जी पाऊँगी अगर तुझे कुछ हो गया तो ?"

" ममॉ। " खॉसते हुए प्राची के मुख से लरजते हुए शब्द निकले __" आज मैं बहुत खुश हूँ।

अपने महबूब की बाहों में हूँ। कितने अच्छे वक्त पर मेरा दम निकलने वाला है। उस भगवान से शिकायत तो थी मगर अब कोई शिकायत भी नहीं रह गई। उसने मेरी आख़िरी ख्वाहिश को जो पूरी कर दी मॉम। मेरे जाने के बाद डैड का ख़याल रखियेगा। "

" नहीं नहीं। " मैं ज़ार ज़ार रो पड़ा __" तुम्हें कुछ नहीं होगा प्राची और अगर कुछ हो गया न तो सारी दुनियॉ को आग लगा दूँगा मैं। सबको जीवन मृत्यु देने वाले उस ईश्वर से नफ़रत करने लगूँगा मैं। "

" ऐसा मत कहो विक्रम। " प्राची ने थरथराते लबों से कहा __" मरना तो एक दिन सबको ही होता है , फर्क सिर्फ इतना है कि कोई जल्दी मर जाता है तो कोई ज़रा देर से। मगर हर कोई मरता ज़रूर है। मेरे लिए इससे बड़ी भला और क्या बात हो सकती है कि मैं अपने जन्म देने वाले माता पिता के सामने और अपने महबूब की बाहों में मरने जा रही हूँ। मुझे हॅसते हुए विदा करो मेरे साजन। तुम्हारी ये दासी तुम्हारे इन खूबसूरत अधरों की मुस्कान देख कर मरना चाहती है। मुझसे वादा करों मेरे महबूब कि मेरे जाने के बाद तुम खुद को कभी तक़लीफ़ नहीं दोगे। किसी ऐसी लड़की के साथ अपनी दुनियॉ बसा लोगे जो तुमसे इस प्राची से भी ज्यादा प्यार करे। "

" नहीं प्राची नहीं। " मैंने रोते हुए झुक कर उसके माथे से अपना माथा सटा लिया __" मत करो ऐसी बातें। तुम मुझे छोंड़ कहीं नहीं जाओगी। मैं तुम्हारे बिना जीने की कल्पना भी नहीं कर सकता। "

" क्या यही प्यार करते हो मुझसे ?" प्राची ने अटकते हुए स्वर में कहा __" बोलो मेरे देवता। ये कैसा प्यार है तुम्हारा कि तुम अपनी इस दासी की अंतिम इच्छा भी पूरी नहीं कर रहे ?"

" मैं कुछ नहीं जानता प्राची। " मैने मजबूती से सिर हिलाते हुए कहा __" मुझे प्यार व्यार कुछ नहीं दिख रहा। मैं सिर्फ इतना जानता हूँ कि तुम मुझे अकेला छोंड़ कर कहीं नहीं जाओगी बस। "

" अरे मैं तुम्हें छोंड़ कर कहॉ जा रही हूँ विक्रम ?" प्राची ने मेरे चेहरे को सहला कर कहा __" मेरा दिल मेरी आत्मा तो तुममें ही बसी है। तुम मुझे हर वक्त अपने क़रीब ही महसूस करोगे। ये तो जिस्मों की जुदाई है विक्रम , और इस जिस्म का जुदा होना भी तो ज़रूरी है। क्योंकि मेरा ये जिस्म तुम्हारे लायक नहीं रहा। ये बहुत मैला हो चुका है मेरे महबूब। इसका खाक़ में मिल जाना बहुत ज़रूरी हो गया है। "

" दीदी इसे समझाओ न। " मैने पलट कर दीदी की तरफ देखते हुए कहा __" देखिये कैसी बेकार की बातें कर रही है ये। इससे कहिये न दीदी कि ये मुझे छोंड़ कहीं न जाए। इससे कहिये न कि मैं इसके बिना जी नहीं पाऊँगा। "

मेरी बात सुन कर दीदी कुछ बोलने ही वाली थी कि सहसा इधर प्राची को फिर से खॉसी का धचका लगा। मैने पलट कर प्राची को देखा। उसके मुख से खून निकल कर बाहर आ गया था।

" विक्रऽऽम। " प्राची ने उखड़ती हुई सास ों के साथ कहा __" अब मुझे जाना होगा। मुझे वचन दो मेरे हमदम कि तुम मेरे बाद कभी भी खुद को दुखी नहीं रखोगे। अपनी इस दासी को वचन दो मेरे देवता। मुझे हँसते हुए विदा करो। और .... और एक बार अपनी वो मनमोहक मुस्कान दिखा दो न मुझे। मेरे पास समय नहीं है , मेरे प्राण लेने के लिए देवदूत आ रहे हैं। मैं उन्हें अपनी तरफ आते हुए स्पष्ट देख रही हूँ। "

" नहींऽऽऽ। " मैं बुरी तरह रो पड़ा __" ऐसा मत कहो। मुझे यूँ छोंड़ कर मत जाओ प्लीऽऽऽज़। मैं मर जाऊँगा प्राची। "

" हठ न करो मेरे महबूब। " प्राची को हिचकियाँ आने लगी थीं , बोली __" मुझे वचन दो विक्रम । मेरी अंतिम यात्रा को आसान बना दो मेरे देवता। "

मेरे दिलो दिमाग़ ने काम करना मानों बंद कर दिया था। मगर प्राची की करुण पुकार ने मुझे बिवश कर दिया। मैंने देखा कि उसका एक हाथ मुझसे वचन लेने के लिए हवा में उठा हुआ था। मैने उसके हाथ में अपना हाथ रख दिया। मेरे हाथ को पकड़ कर उसने हल्के से दबाया। उसके निस्तेज पड़ चुके चेहरे पर हल्का सा नूर दिखा।

" अब अपने अधरों की वो खूबसूरत मुस्कान भी दिखा दो विक्रम। " प्राची ने बंद होती पलकों के साथ साथ मगर टूटती हुई सास ों के साथ कहा __" एक मुद्दत हो गई मैने इन अधरों की उस मनमोहक मुस्कान को नहीं देखा। देर न करो मेरे देवता , जल्दी से दिखा दो वो मुस्कान मुझे। "

ये कैसा सितम था मुझ पर कि इस हाल में भी मुझे वो मुस्कुराने को कह रही थी। भला ये कैसे कर सकता था मैं और भला ये कैसे हो सकता था मुझसे? मगर मेरी जान ने ये रज़ा की थी मुझसे। उसकी आख़िरी ख्वाहिश को पूरा करना मेरा फर्ज़ था, भले ही ये मेरे लिए नामुमकिन था। मैने खुद को बड़ी मुश्किल से संभाला। साक्षी दीदी मेरे पीछे ही मुझे पकड़े बैठी हुई थी। सिरहाने की तरफ प्राची के मॉम डैड ऑसुओं से तर चेहरा लिए खड़े थे। कुछ दूरी पर वो डाक्टर और नर्स खड़ी थी। जिनके चेहरों पर इस वक्त दुख के भाव गर्दिश कर रहे थे।

मैने देखा कि मेरी बाहों में पड़ी प्राची बड़ी मुश्किल से अपनी ऑखें खोले मुझे ही देखने की कोशिश में लगी थी। मेरे ऑखों से रह रह कर ऑसूँ बह जाते थे। दिलो दिमाग़ के जज़्बात मेरे बस में नहीं थे। मैने खुद को संभालने के लिए और अपने अधरों पर मुस्कान लाने के लिए अपनी ऑखें बंद कर बेकाबूँ हो चुके जज़्बातों पर काबू पाने की नाकाम सी कोशिश की। उसके बाद ऑखें खोल कर मैने प्राची की तरफ देखा, मेरे होठों पर बड़ी मुश्किल से हल्की सी मुस्कान उभरी। मेरी उस मुस्कान को देख कर प्राची के सूखे हुए अधरों पर भी हल्की सी मुस्कान उभर आई। और फिर तभी.....

मैने महसूस किया कि उसका जिस्म एकदम से ढीला पड़ गया है। हलॉकि वो मुझे उसी तरह एकटक देखती हुई हल्का सा मुस्कुरा रही थी। उसके जिस्म में कोई हरकत नहीं हो रही थी। अभी मैं ये सब महसूस ही कर रहा था कि तभी मेरे कानों में प्राची की मॉ की ज़ोरदार चीख

सुनाई दी। उनकी इस चीख़ से जैसे सबको होश आया और फिर तो जैसे चीखों का और रोने का बाज़ार गर्म हो गया। मुझे मेरे कानों में सबका रुदन स्पष्ट सुनाई दे रहा था मगर मेरी निगाहें अपलक प्राची के चेहरे पर गड़ी हुई थी। मैं एकदम से शून्य में खोया हुआ था।

हॉस्पिटल के उस कमरे में मौजूद प्राची के मॉम डैड और साक्षी दीदी बुरी तरह प्राची से लिपटे रोये जा रहे थे। सबसे ज्यादा हालत ख़राब प्राची की मॉम की थी। उसके डैड मानो सदमें में जा चुके थे। मेरे कानों में सबका रोना चिल्लाना ऐसे सुनाई दे रहा था जैसे किसी अंधकूप में ये सब मौजूद हों।

सहसा साक्षी दीदी का ध्यान मुझ पर गया। मैं एकटक प्राची की खुली हुई ऑखों को और उसके अधरों पर उभरी हल्की सी उस मुस्कान को देखे जा रहा था। मेरा दिलो दिमाग़ एकदम से सुन्न पड़ा हुआ था। साक्षी दीदी ने मुझे पकड़ कर ज़ोर से हिलाया। किन्तु मुझ पर कुछ भी असर न हुआ। मेरे चेहरे पर कोई भाव नहीं थे, ऐसा लग रहा था जैसे मैं ज़िंदा तो हूँ मगर मेरे अंदर किसी प्रकार की कोई प्रतिक्रिया नहीं हो रही है।

" विक्रऽऽम। " साक्षी दीदी मुझे पकड़ कर झकझोरते हुए चीखी __" होश में आ मेरे भाई। देख प्राची हमे छोंड़ कर चली गई रे। तू सुन रहा है न मेरी बात ?"

" शान्त हो जाओ दीदी। " मैने धीरे से उनसे कहा __" मेरी प्राची मुझे सुकून से देख रही है। उसे देखने दो दीदी। देखिये न दीदी , मेरी प्राची के होंठो पर कितनी सुंदर मुस्कान फैली हुई है। इसे ऐसे ही मुस्कुराने दीजिए। अरे .... आप सब इतना शोर क्यों कर रहे हैं ? प्लीज़ चुप हो जाइये। वरना मेरी प्राची को अच्छा नहीं लगेगा। उसे सुकून से मुस्कुराने दीजिए। "

साक्षी दीदी ही नहीं बल्कि प्राची के मॉम डैड भी मेरी इस बात से सन्न रह गए। जबकि मैं बड़े प्यार से प्राची के चेहरे पर आ गई उसके बालों की लट को एक तरफ हटाते हुए उसे देखे जा रहा था। मैं उसकी उस मुस्कान को देख कर खुद भी मुस्कुरा रहा था।

सहसा पीछे से साक्षी दीदी मुझसे लिपट गई और बुरी तरह सिसकने लगीं। प्राची की मॉ ने मेरे सिर पर प्यार से अपना हाथ रखा। वो खुद भी सिसक रही थी।

" बेटा , अपने आपको संभालो। " वो बराबर मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए सिसक रही थी __" जाने वाली तो अब चली गई है। वो लौट कर वापस नहीं आएगी। कब तक तुम अपनी इस प्राची को इस तरह देखते रहोगे ?"

" चुप हो जाइये मॉ। " मैने सिर उठाकर बड़ी मासूमियत से कहा __" कुछ मत बोलिए। देखिए न प्राची सुकून से कैसे मुझे देख कर मुस्कुरा रही है। इसे ऐसे ही मुस्कुराने दीजिए मॉ। इसे डिस्टर्ब मत कीजिए। "

मेरी बातों से सब समझ गए थे कि मुझ पर पागलपन सवार हो चुका है। मैं इस बात को

स्वीकार नहीं कर रहा हूँ कि प्राची अब इस दुनियाँ में नहीं रही। ये देख कर सबकी आँखों से आँसू छलकने लगे। प्राची के डैड मेरे पास आए और मुझे उन्होंने अपने से छुपका लिया।

" ये कैसा प्यार है बेटा ?" फिर वो रुँधे हुए गले से बोल पड़े __" तुम दोनो का ये प्रेम हमें पहले क्यों नहीं पता चल पाया ? तुम्हारे जैसा दामाद मुझे मिलता तो जैसे मुझे सारी दुनियाँ की दौलत मिल जाती। हे भगवान कितना बेरहम है तू। मेरे मासूम से बच्चों के साथ इतना बड़ा घात किया तुमने ? तेरा कलेजा ज़रा भी नहीं काँपा ?"

प्राची के डैड खुद को संभाल न सके और वो मुझे अपने से छुपकाए बुरी तरह रो पड़े। पास ही में खड़े डाक्टर और नर्स भी हम सबकी हालत देख कर बेहद दुखी नज़र आ रहे थे। ख़ैर, काफी देर तक यही माहौल कायम रहा। हर कोई मुझे समझा रहा था, बहला रहा था मगर मैं बस यही कहता जा रहा था कि__"आप सब शान्त रहिए, मेरी प्राची को यूँ शोर करके डिस्टर्ब मत कीजिए।"

उस वक्त तो मेरा दिमाग़ ही ख़राब हो गया जब सब लोग मुझे प्राची से अलग करने लगे। डाक्टर ने एम्बुलंस का इंतजाम कर दिया था। इस लिए प्राची के डैड अब अपनी बेटी के मृत शरीर को हॉस्पिटल से ले जाने के लिए मुझे प्राची से अलग करने लगे। मैं प्राची से अलग नहीं हो रहा था। सब मुझे समझा रहे थे। प्राची की माँ मेरे इस पागलपन से बुरी तरह रोते हुए मुझे अपने से छुपकाये हुए थी। साक्षी दीदी मुझे छोंड़ ही नहीं रही थी।

आख़िर , सबके समझाने बुझाने के बाद और काफी मशक्कत करने के बाद मैं प्राची से अलग हुआ। मगर मैने प्राची को हाथ नहीं लगाने दिया किसी को। मैने खुद ही उसे अपनी बाहों में उठा लिया और फिर सबके ज़ोर देने पर कमरे से बाहर की तरफ बढ़ चला। मेरे चेहरे पर दुख दर्द के कोई भाव नहीं थे। मैं अपनी बाहों में प्राची को लिए बाहर की तरफ आ गया। प्राची की जो आँखें पहले खुली हुई थी उन आँखों को उनकी पलकों के साथ प्राची के डैड ने अपनी हँथेली से बंद कर दिया था। किन्तु उसके अधरों पर फैली हुई वो मुस्कान अभी भी वैसी ही कायम थी।

थोड़ी ही देर में हम सब हॉस्पिटल के बाहर आ गए। हॉस्पिटल के बाहर एम्बुलंस खड़ी थी। बाएँ साइड मोटर साइकिल खड़ी थी जिसके पास ही खड़ा रौनक किसी गहरे ख़यालों में खोया हुआ खड़ा था। हॉस्पिटल के बाहर आते ही जब कुछ शोर शराबा हुआ तो बरबस ही रौनक का ध्यान हमारी तरफ गया। उसने पलट कर देखा हमारी तरफ। मेरी बाहों में प्राची को इस हालत में देख कर वह सकते में आ गया। पलक झपकते ही उसकी हालत ख़राब हो गई। अपनी जगह पर खड़ा वो पत्थर की मूर्ति में तब्दील हो गया।

इधर थोड़ी ही देर में मैं प्राची को लिए एम्बुलंस में सवार हो गया। मेरे साथ ही साक्षी दीदी, प्राची की माँ और उसके डैड बैठ गए। हम लोगों के बैठते ही एम्बुलंस का पिछला दरवाजा बंद ही किया जा रहा था कि सहसा भागते हुए रौनक हमारे पास आया। एम्बुलंस के अंदर का दृष्य देखते ही उसके होश फाख्ता हो गए। एक स्ट्रेचर की तरह दिखने वाली लम्बी सी पाटरी पर प्राची को सफेद कफन में गले तक ढँका देखते ही रौनक की आँखें छलछला आईं। वो बुरी

तरह मुझे देखते हुए रोने लगा। जबकि मैं एकदम शान्त अवस्था में प्राची के होठों पर उभरी उस मुस्कान को देखे जा रहा था।

रौनक के रोने की आवाज़ जैसे ही मेरे कानों में पड़ी मैने तुरंत रौनक की तरफ देखा और उँगली को अपने होठों पर रख कर उसे चुप रहने का इशारा किया। मेरे चेहरे के आव भाव देख कर रौनक का कलेजा फटने को आ गया। वो बिना एक पल गवाँए एम्बुलंस में चढ़ कर मेरे पास आ गया और मुझे सख्ती से पकड़ कर खुद से छुपका लिया। उसकी आँखों से आँसू रुक ही नहीं रहे थे।

साक्षी दीदी ने रौनक को समझा बुझा कर चुप कराया और उसे घर जाने को कहा। किन्तु रौनक मुझे छोंड़ कर जाने को तैयार ही नहीं हो रहा था। इस लिए साक्षी दीदी ने उसे समझाया कि उसका घर में रहना बहुत ज़रूरी है। क्योंकि उसके डैड यानी सत्यम सिंह का कोई भरोसा नहीं था कि वो क्या कर बैठे। ये तो उसे पता चल ही जाएगा कि विक्रम यहाँ पर किसके यहाँ आया है? अगर उसे पता चल गया कि वो रौनक के यहाँ आया है तो उसके घर वालों के लिए ख़तरा हो जाएगा। साक्षी दीदी के बार बार समझाने पर रौनक दुखी मन से एम्बुलंस से उतर गया।

रौनक के उतरते ही एम्बुलंस चल पड़ी। प्राची की माँ अभी भी धीमी आवाज़ में सिसक रही थी। सामने की सीट पर प्राची के मॉम डैड बैठे थे और इधर की सीट पर मैं व साक्षी दीदी। हमारे बीच का पोर्शन जो खाली था उसमें प्राची को बड़ी सी स्ट्रेचर रूपी पाटरी पर लिटाया गया था। मैं एकटक उसकी मुस्कान को घूरे जा रहा था। मेरे लिए दुनियाँ जहान से जैसे कोई मतलब नहीं था।

साक्षी दीदी को जैसे कुछ याद आया तो उन्होंने पॉकेट से मोबाइल निकाल कर किसी से कुछ देर कुछ बात की और फिर काल कट करके मोबाइल पुनः अपनी पॉकेट में डाल लिया। कुछ समय बाद ही एम्बुलंस रुकी और थोड़ी ही देर में पिछला गेट खुला तो प्राची के मॉम डैड बाहर आ गए। उनके साथ ही साक्षी दीदी भी एम्बुलंस से बाहर आ गई। साक्षी दीदी ने मेरा हाथ पकड़ कर बाहर आने का इशारा किया। मैं बाहर की तरफ अजीब भाव से देखने लगा। सब मुझे ही दुखी भाव से देख रहे थे।

ख़ैर, हॉस्पिटल से आए दो कर्मचारियों ने उस स्ट्रेचर को बाहर निकाला जिस पर प्राची लेटी हुई थी। स्ट्रेचर को बाहर निकाल कर उन्होंने उसे ज़मीन पर रखना ही चाहा था कि मैंने उन्हें पकड़ लिया। जिससे हवा में ही उन लोगों ने स्ट्रेचर को उठाये रखा। मैने प्राची को अपनी बाहों में उठा लिया। प्राची के मॉम डैड ये देख कर एक बार फिर से रो पड़े।

प्राची को लेकर मैं प्राची के घर की तरफ बढ़ा तो प्राची के मॉम डैड भी आगे आ गए। आस पास के लोगों ने देखा तो कुछ ही समय में वहाँ भीड़ जमा हो गई। आस पास के जिन लोगों से इनके अच्छे संबंध थे उन लोगों ने ये सब देख कर भारी दुख जताया। लगभग एक घण्टे बाद फिर से प्राची को एक लकड़ी की स्ट्रेचर बना कर उसमे लिटाया गया। इन सब कामों के

बीच मैं बराबर प्राची के पास ही था और मेरे पास साक्षी दीदी मौजूद रहीं।

उस वक्त दिन के चार बज रहे थे जब मैं प्राची के जनाजे को तीन और आदमियों के साथ लिए मरघट में पहुॅचा था। आगे की तरफ मैं और प्राची के डैडी अपने अपने कंधे पर जनाजे का एक एक छोर रखा हुआ था। काफी सारे लोग हमारे साथ थे। मेरे चेहरे पर कोई भाव नहीं था। इतना कुछ होने के बाद भी मैं आश्चर्यजनक रूप से एकदम शान्त चित्त था। मरघट में पहुॅच कर हमने प्राची के जनाजे को वहीं ज़मीन पर रखा। कुछ औरतें साथ आई हुई थी। उन लोगों ने वहाॅ पर कपड़ों के द्वारा चारो तरफ से पर्दा करके प्राची को नहलाया धुलाया और फिर उसे कपड़े पहनाए। इसके बाद उसे लकड़ी की चिता पर लेटा दिया गया।

प्राची को चिता में लेटे देख सहसा मुझे ज़ोर का झटका लगा। मेरी ऑखों के सामने पिछली सारी बातें बड़ी तेज़ी से घूमने लगीं। चिता के चारो तरफ सफेद कपड़ों में खड़े लोगों पर मेरी दृष्टि पड़ी। उन सबको देखने के बाद मेरी नज़र चिता पर सफेद कपड़ों में लिपटी प्राची पर पड़ी। उसे उस हालत में देखते ही सहसा मेरे अंदर ज़ोर का चक्रवात सा उठा।

" प्राचि ऽऽऽऽऽ। " मैं पूरी शक्ति से चीख पड़ा और भागते हुए चिता के पास पहुॅच गया। सफेद कपड़ों में ऑखें बंद किये लेटी प्राचि के चेहरे को देख कर मैं उससे लिपट गया और फूट फूट कर रोने लगा। पल भर में मेरी हालत ख़राब हो गई। प्राचि के चेहरे को दोनो हाथो से पकड़े मैं दहाड़ें मार मार कर रोये जा रहा था।

मुझे इस तरह प्राची से लिपट कर रोते देख कुछ लोग भागते हुए मेरे पास आए और मुझे प्राची के पास से खींच कर दूर ले जाने लगे। मैने उन सबको झटक दिया, वो सब दूर जाकर गिरे। खुद को उनके चंगुल से छुड़ाते ही मैं फिर से भागते हुए प्राची के पास आया और फिर से उससे लिपट कर रोने लगा। मुझे इस हालत में ये सब करते देख प्राची के डैड और साक्षी दीदी दौड़ कर मेरे पास आईं और मुझे प्राची के पास से दूर ले जाने लगीं।

" खुद को संभाल ो विक्रम। " साक्षि दीदी बुरी तरह रोते हुए बोलि __" ये क्या पागलपन है ? तुम ऐसा कैसे कर सकते हो ? तुम अपनी प्राचि को दिये हुए वचन को कैसे तोड़ सकते हो ? क्या तुम भूल गए कि अंतिम समय में प्राचि ने तुमसे क्या वचन लिया था ?"

" दीदी प्राचि मुझे छोंड़ कर कैसे जा सकती है ?" मैं उनसे लिपट कर रोते हुए बोला __" उससे कहो कि वो उठ कर मेरे पास आए। "

" अपने आपको संभाल ो बेटा। " सहसा प्राचि के डैड ने दुखी भाव से कहा __" इस तरह विलाप करने से तुम अपनी प्राचि की आत्मा को ही दुख दे रहे हो। ज़रा सोचो , वो तुम्हें इस तरह दुखी होकर रोते हुए देख रही होगी तो उस पर क्या गुज़र रही होगि ? क्या तुम अपनी प्राचि को उसके मरने के बाद भी दुखी करना चाहते हो ?"

" नहीं हर्गिज़ नहीं पापा जी। " मैंने पूरी ताकत से इंकान में सिर हिलाया __" मैं उसे ज़रा सा

भी दुख नहीं दे सकता और ना ही उसे दुखी देख सकता हूँ। "

" तो फिर ये पागलपन छोंड़ दो बेटे। " प्राची के डैड मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए बोले __" अगर तुम इस तरह दुखी होगे और रोओगे तो प्राची को बिलकुल अच्छा नहीं लगेगा बल्कि उसे बहुत ज्यादा दुख होगा इस सबसे। इस लिए बेटा , अपने अंदर के जज़्बातों को शान्त करने की कोशिश करो और खुशी खुशी अपनी प्राची को चिताग्नि दो। हॉ बेटे , अब तुम्हें ही उसे चिताग्नि देनी है। तुम दोनो का रिश्ता आत्माओं से जुड़ा हुआ है इस लिए उसे चिताग्नि देने का हक़ सिर्फ तुम्हारा ही है। मेरी बेटी भले ही अब इस दुनियॉ में नहीं है , मगर मेरे लिए तुम ही मेरे दामाद व बेटे रहोगे हमेशा। अब चलो बेटा और अपनी प्राची को चिताग्नि दो। "

" अगर आप खुद इस बात को इस तरह कुबूल करके कहते हैं तो ठीक है पापा जी। " मैने दुखी भाव से कहा __" मगर मैं भी उसे यूँ ही चिताग्नि नहीं दूँगा। बल्कि उसे पहले सुहागन बना कर अपनी पत्नी बनाऊँगा। फिर उसे चिताग्नि दूँगा। "

मेरी ये बातें सुन कर प्राची के डैड की ही नहीं बल्कि हर किसी की ऑखों से ऑसू छलक पड़े। प्राची के डैड ने मुझे अपने सीने से लगा लिया। पंडित वहॉ पर मौजूद था ही इस लिए सबकी सहमति से मैं प्राची के पास गया और एक औरत के हाथ में मौजूद सिंदूर की डिबिया से अपनी दो चुटकियों में सिंदूर लिया और फिर उसे प्राची की सूनी मॉग में भर दिया। मैंने अपने अंदर के जज़्बातों को लाख रोंका मगर मेरे ऑसुओं ने जैसे ऑखों से बगावत कर दी।

साक्षी दीदी और प्राची के डैड दोनो ने मुझे कंधों से पकड़ा। मैने प्राची की मॉग में सिंदूर भर कर उसे सुहागन बनाया, फिर उसके माथे को चूम कर पीछे हट गया। शान्त पड़े मरघट में एकाएक ही तेज़ हवा चली और फिर दो मिनट में ही शान्त हो गई। ये कदाचित इशारा था प्राची का कि मेरी इस क्रिया से वह कितना खुश हो गई है।

पंडित ने कुछ देर कुछ पूजा करवाई और फिर उसने मुझसे अंतिम संस्कार की सारी विधि करवाई। तत्पश्चात मेरे हाथ में एक मोटा सा डण्डा पकड़ाया जिसके ऊपरी छोर पर मशाल की तरह आग जल रही थी। पंडित के ही निर्देश पर मैने उस मशाल से प्राची को चिताग्नि दी।

देखते ही देखते लकड़ी की उस चिता पर आग ने अपना प्रभाव दिखाया और वह उग्र से उग्र होती चली गई। मैं भारी मन से प्राची की जलती हुई चिता को देखे जा रहा था। मेरे पास साक्षी दीदी और प्राची के मॉम डैड खड़े थे। कुछ समय बाद वहॉ पर मौजूद लोग वहॉ से धीरे धीरे जाने लगे। अंत में सिर्फ हम चार लोग ही रह गए।

प्राची के डैड के ज़ोर देने पर ही मैं उनके साथ घर की तरफ वापस चला। मेरे अंदर भयंकर तूफान चल रहा था। मगर मैने सख्ती से उसे दबाया हुआ था। मुझे लग रहा था कि मैं दहाड़ें मार मार कर खूब रोऊँ। उस ऊपर वाले से चीख चीख कर कहूँ कि वो मेरी प्राची को सही सलामत वापस कर दे मुझे। मगर कदाचित ऐसा होना अब संभव नहीं था। ख़ैर भारी मन के साथ ही हम सब घर आ गए।

इस सब में शाम हो चुकी थी। साक्षी दीदी के फोन पर रौनक का बार बार कॉल आ रहा था। इस वक्त मैं और साक्षी दीदी प्राची के घर पर ही थे। घर में कोई न कोई बाहरी आदमी आता और शोग प्रकट करके चला जाता। धीरे धीरे शाम का अंधेरा भी छाने लगा था। प्राची के मॉम डैड ने मुझे और साक्षी दीदी को भी घर जाने को कहा। हम लोगों का वहॉ से आने का मन तो नहीं था पर मजबूरी थी। इस लिए साक्षी दीदी मुझे लेकर वहॉ से चल दी।

रास्ते में साक्षी दीदी के मोबाइल पर किसी का कॉल आया तो उन्होने देखा उसे और काल को पिक कर मोबाइल कान से लगा लिया। कुछ देर तक उन्होंने जाने क्या बात की फिर उन्होंने काल कट कर दी।

हॉस्पिटल के पास आते ही मैने देखा कि उनके सामने एक पुलिस जिप्सी आकर रुकी। साक्षी दीदी ने मुझे उस पर बैठने को कहा तो मैं चुपचाप बैठ गया। पुलिस जिप्सी से एक आदमी बाहर निकला। उसने दीदी को सैल्यूट किया।

" अब तुम जाओ रामसिंह। " साक्षी दीदी ने उससे कहा __" बाकी लोगों को भी सूचित कर देना कि सावधान रहेंगे और उन पर नज़र रखे रहेंगे। "

" यह मैडम। " उस आदमी ने कहने के साथ ही पुनः सैल्यूट किया और एक तरफ बढ़ गया।

उस आदमी के जाते ही दीदी जिप्सी की ड्राइविंग सीट पर बैठीं और उसे यूटर्न देकर एक तरफ को बढ़ा दिया। दीदी के बगल वाली सीट पर मैं चुपचाप बैठा था। मेरी ऑखें शून्य में डूबी हुई थी। मुझे पता ही नहीं चला कि जिप्सी कहॉ कहॉ से चलते हुए कब रुक गई थी। चौंका तब जब दीदी की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी। मैने इधर उधर देखा तो पता चला कि ये तो रौनक के घर के सामने जिप्सी पर बैठा हुआ हूँ मैं।

ये देख कर मैं जिप्सी से बिना कुछ बोले उतर गया और रौनक के घर के अंदर की तरफ बढ़ा ही था कि सहसा दीदी ने कहा__"मेरी बात सुनो विक्रम।"

दीदी की इस बात से मैने पलट कर उन्हें देखा। वो जिप्सी से उतर कर मेरे पास ही आ गई। तब तक जिप्सी की आवाज़ सुन कर अंदर से रौनक और अमर भी आ गए थे। रौनक और अमर मुझे देखते ही मुझसे लिपट कर रोने लगे। शायद रौनक ने अमर को सारी कहानी बता दी थी। कुछ देर वो दोनो मुझसे लिपटे रोते रहे। उसके बाद साक्षी दीदी के कहने पर वो दोनो अलग हुए।

" मैं जानती हूँ कि इस वक्त तुम लोग कहीं भी जाने की हालत में नहीं हो। " दीदी ने गंभीरता से कहा __" खास कर विक्रम तो बिलकुल भी नहीं। मगर मैं ये भी जानती हूँ कि तुम लोगों का यहॉ पर रुकना भी सही नहीं है। इस लिए तुम सब मेरे साथ ऐसी जगह चलो जहॉ पर तुम लोगों के होने की उम्मीद मेरे डैड कर ही नहीं सकते। हॉ रौनक , तुम सब मेरे फार्महाउस पर चल रहे हो अभी के अभी। "

" शायद आप ठीक कह रही हैं दीदी। " रौनक ने बुझे मन से कहा __" मगर इतने सारे सामान के साथ हम सब एकसाथ कैसे वहॉ जा सकेंगे ? क्योंकि संभव है कि रास्ते में ही कहीं हमे सत्यम चाचा या उनके आदमी मिल जाएॅ। "

" उसकी चिंता तुम मत करो भाई। " दीदी ने कहा __" मैने वाहन का इंतजाम कर दिया है। लो वो आ भी गया। "

दीदी के कहने पर रौनक ने पलट कर देखा तो सच में एक ऐसा वाहन उसे दिखा जिसे देख कर वो चौंक गया। दरअसल वो वाहन एक एम्बुलंस था। मेरी नज़र भी एम्बुलंस पर पड़ी तो उसे देख कर अनायास ही मेरा मन भारी हो गया। लाख रोंकने के बावजूद मेरी ऑखों से ऑसू छलक गए। ये देख कर साक्षी दीदी ने मुझे अपने सीने से लगा लिया।

" नहीं मेरे भाई। " साक्षी दीदी ने तड़प कर कहा _" ऐसे मत रो। तू नहीं जानता कि तेरी ऑखों से अगर ऑसू का एक कतरा भी गिरता है तो मेरे दिल में नस्तर सा चल जाता है। मैं जानती हूॅ कि इस सबको भूलना या इससे बाहर निकलना इतना आसान नहीं है तेरे लिए मगर खुद को संभाल ना तो पड़ेगा ही भाई। किसी और के लिए न सही मगर अपनी उस प्राची के लिए जिसको तुमने वचन दिया है। "

" कैसे दीदी कैसे ?" मेरी रुलाई फूट गई __" कैसे मैं उस सबको भुला दूॅ ? मुझे तो अभी भी यकीन नहीं हो रहा है कि ऐसा कुछ हो गया है। "

" बस कुछ मत बोल मेरे भाई। " साक्षी दीदी ने मेरी ऑखों से ऑसू पोंछते हुए कहा __" शान्त हो जा। सब कुछ ठीक हो जाएगा। भगवान जब दुख देता है तो उसे सहने की शक्ति भी देता है। तू अपने अंदर उस शक्ति को महसूस कर भाई। "

मैं कुछ न बोला। मेरी इस हालत से रौनक और अमर की ऑखों से भी ऑसू बहने लगे थे।

ऐसे ही हम सोनपुर गॉव से बाहर आ गए और उस नहर के पुल के पास से हम लोग पूर्व दिशा की तरफ मुड़ गए। लगभग बीस मिनट बाद हम सब दीदी के फार्महाउस पर पहुॅच गए। दीदी को ये भी पता चल चुका था कि मेरे साथ अपर्णा चाची और उनके बच्चों को भी मुंबई जाना था मगर इस सबके हो जाने से उन्होंने मेरे फोन से अपर्णा चाची को फोन कर कह दिया था कि मैं आज नहीं जा रहा बल्कि वो अपने भाई के साथ यहीं पर आ जाएॅ कल।

फार्महाउस पर पहुॅच कर दीदी ने एम्बुलंस से सारा सामान उतरवा कर अंदर रखवा दिया। एम्बुलंस के जाने के बाद हम सब अंदर की तरफ बढ़ चले। अंदर ड्राइंग रूम में ही सोफे पर बैठी गीता बुआ पर मेरी नज़र पड़ी तो मैं हल्के से चौंका। गीता बुआ मुझे देखते ही सोफे से उठ कर भागते हुए मेरे पास आईं और झटके से मुझे अपने सीने से लगा लिया। उनकी ऑखों में ढेर सारे ऑसू आ गए थे मगर उन्होने उन्हें छलकने नहीं दिया। अपने जज़्बातों को बड़ी मुश्किल से दबाया हुआ था उन्होंने। शायद दीदी ने उन्हें सबकुछ बता दिया था और समझा भी दिया था कि मुझसे मिल कर वो ज्यादा रोयें नहीं।

ख़ैर, ऐसे माहौल में हम सब बेहद दुखी थे इस लिए उस रात किसी ने अन्न का एक दाना तक अपने मुख में नहीं डाला। रात में मेरे साथ बेड पर मेरे एक तरफ साक्षी दीदी थीं तो दूसरी तरफ आशा दीदी। सारी रात किसी भी व्यक्ति को नींद नहीं आई। सबने मुझे अपने अपने तरीके से बहुत समझाया था। तब जाकर मुझे कुछ होश आया था। बेड पर मैं अपनी दोनो बहनों के बीच लेटा ऊपर घूम रहे पंखे को देखता रहा। सारी रात ऐसे ही गुज़र गई। मेरी दोनो बहनें अपने हृदय में मेरे प्रति दुख छुपाए मुझे अपनी अपनी तरफ से छुपकाए यूॅ ही लेटी रह गईं थी। आने वाली सुबह मेरे जीवन में और कैसे दुख दर्द की भूमिका बनाएगी इसके बारे में वक्त के सिवा कोई नहीं जानता था।

५४

उधर, दोपहर से शाम और शाम से रात हो गई मगर सत्यम सिंह और जयदीप को अपने उन आदमियों का कहीं कोई सुराग़ तक न मिल सका जिन आदमियों ने उन्हें विक्रम के आने की ख़बर दी थी। कहने का मतलब ये कि भीमा और मंगल आदि में से कोई भी सत्यम सिंह का भरोसेमंद आदमी सत्यम सिंह को न मिला। इस बात से दोनो बाप बेटे बेहद परेशान हो चुके थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसके आदमी एक साथ सारे के सारे कैसे गायब हो गए?

सत्यम सिंह के बाकी के आदमी तो उसे मिले लेकिन उन लोगों को ना तो विक्रम का कोई सुराग़ मिला था और ना ही उन्हें ये पता था कि भीमा और मंगल के साथ साथ रहे बाकी आदमी कहाँ और कैसे गायब हो गए? हैरान परेशान दोनो बाप बेटे वापस अपने नये वाले फार्म हाउस पर लौट आए थे। अपने बाकी बचे आदमियों को सख्त आदेश भी दे आए थे कि विक्रम के साथ साथ अपने उन गायब हुए आदमियों की भी खोज ख़बर करते रहें।

इस वक्त सत्यम सिंह और जयदीप अपने फार्महाउस के ड्राइंग रूम में रखे सोफों पर चिंतित व परेशान हालत में बैठे थे। उन दोनो के सामने वाले सोफे पर सोनिया भी बैठी हुई थी। उसकी नज़रें दोनो बाप बेटों के चेहरों पर उभरे हुए भावों पर थी। उसे समझते ज़रा भी देर न लगी थी कि दोनो बाप बेटे शिकस्त खाकर आए हैं। पर जाने क्यों सोनिया को इस बात का पहले से ही अंदेशा था कि ऐसा ही कुछ होगा।

" ये तो कमाल ही हो गया न सत्यम। " सोनिया ने अजीब भाव से कहा __" तुम्हारे इतने सारे हट्टे कट्टे आदमियों ने एक बार फिर से तुम्हें नीचा दिखा दिया। तुम्हारी बड़ी बड़ी वो बातें महज कोरी बकवास के सिवा कुछ न थी। तुमने और तुम्हारे आदमियों ने आज तक वो काम किया ही नहीं जिस काम को ' फतह ' के नाम से जाना जाता है। हर बार तुम अपने मंसूबों पर नाकामयाब ही हुए हो सत्यम । तुम्हारे पास पिछला ऐसा कोई काम नहीं है जिसका हवाला देकर तुम ये कह सको कि तुमने उस काम को सफलतापूर्वक किया था। "

सोनिया की इन बातों पर दोनो बाप बेटों के चेहरे झुक से गए थे। ऐसा लग रहा था जैसे उन दोनो में से किसी में भी बोलने की हिम्मत शेष न हो। ये अलग बात थी कि सत्यम सिंह के चेहरे पर भूकंप के से भाव अनायास ही गर्दिश करते नज़र आते और फिर वो लुप्त हो जाते।

" एक अदने से लड़के को पकड़ने गए थे तुम्हारे आदमी और खुद ही सारे के सारे गधे के सिर से सींग की तरह गायब हो गए। " सोनिया ने फिर कहना शुरू किया __" इस बात को कौन हजम कर पाएगा सत्यम ? क्या तुम खुद हजम कर पा रहे हो कि तुम्हारे इतने सारे आदमियों के रहते हुए भी वो विक्रम को पकड़ने की तो बात दूर बल्कि खुद अपना ही ख़याल नहीं रख सके ? क्या तुम ये कल्पना कर सकते हो कि अकेले विक्रम ने तुम्हारे इतने सारे आदमियों को इस तरह से गायब कर दिया कि तुम दोनो बाप बेटे उनका पता भी नहीं लगा

सकेे ?"

" यकीनन सोनियाा। " सहसा सत्यम सिंह ने गहरी सास लेते हुए कहाा __" ये सच है कि इस सबकी कल्पना तक नहीं की जा सकती। ये सब जो कुछ भी हुआ है और जैसे भी हुआ है उसके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था। मगर , इस सब में अकेले विक्रम बस का हाथ नहीं हो सकता। "

" क्या मतलब है तुम्हाराा ?" सोनियाा हल्के से चौंकी थी।

" मतलब साफ है सोनियाा। " सत्यम सिंह ने सोचने वाले अंदाज़ से कहाा __" मेरे इतने सारे आदमियों को एक साथ गायब कर देना कोई आसान बात नहीं है। मगर ये भी सच है कि ऐसा ही हुआ है। इस लिए इस काम को विक्रम खुद अकेले नहीं कर सकता। इस काम में ज़रूर उसकी किसी ने मदद की है। तुम खुद सोचो सोनियाा कि मेरे बारह मुस्टंडे जैसे आदमियों को परास्त करना या उन्हें उस हालत पर ले आना कि वो अधमरे ही हों जाएॅ ये काम कितना मुश्किल हो सकता हैै ? नहीं सोनियाा नहीं , मैं किसी सूरत में नहीं मान सकता कि ये सब अकेले विक्रम ने किया है। "

" चलो मान लिया कि ये सब अकेले विक्रम नहीं कर सकता। " सोनियाा ने कहाा __" बल्कि इस काम में किसी ने उसकी मदद कीी , मगर सवाल ये है कि किसने की उसकी मदद ? यहॉ पर ऐसा कौन है जो इस तरीके से विक्रम की मदद कर सकता हैै ?"

" मुझे लगता है कि इस बारे में हमें शुरू से सोच विचार करना चाहिए। " सत्यम सिंह ने कहने के साथ ही सिगार सुलगा लियाा __" हॉ सोनियाा , हमें इस बारे में शुरू से विचार विमर्ष करना होगाा , वो भी बड़ी बारीकी से। ग़लती तो यकीनन हुई है हमसे। हमने शुरू से ही विक्रम को बहुत छोटा समझा था। हमारे मन में ये बात बैठी हुई थी कि वो ये सब कर ही नहीं सकता। हमने हमेशा उसकी औकात पर सवाल उठायाा , शायद इसी का ये परिणाम है कि हम शुरू से हर बात में नाकामी का स्वाद चख रहे हैं। मगर अब हमें समझ आ चुका है डियर। हमें समझ आ चुका है कि हमारे साथ ये सब एक खेल ही हो रहा है शुरू से। एक अच्छा खिलाड़ी वही होता है जो अपने प्रतिद्वंदी को कभी भी कम करके न ऑकेे , बल्कि उसे भी अपनी तरह ही उच्च कोटि का खिलाड़ी समझे। तभी हमें समझ आता है कि अब हमें किस तरह की अब हमें किस तरह की चाल चलना चाहिए ? मगर ये सब बातें मैने कभी भी सोचने की जहमत नहीं की। "

" शुकर है सत्यम। " सोनियाा ने कहाा __" कि तुम्हें ये बात समझ में आ गई कि तुम्हारा हमेशा से विक्रम को तुच्छ समझना सरासर ग़लत और नासमझी थी। हलॉकि इस बारे में मैने तुम्हें पहले भी कहा था कि विक्रम को तुच्छ समझना निहायत ही ग़लत बात है। क्योंकि मौजूदा हालात में अगर तुम्हारा कोई दुश्मन हो सकता था तो सिर्फ विक्रम । ख़ैर , अब जब ये बात तुम्हारी समझ में आ ही गई है तो अब क्या सोच विचार करना चाहोगे इस बारे में तुम ?"

" सोच विचार करने के लिए बहुत सारी बातें हैं। " सत्यम सिंह ने सिगार का गहरा कश लेकर

उसका धुआँ ऊपर हवा में छोंड़ते हुए कहा __" पर बात चूँकि शुरू से सोच विचार करने की है इस लिए शुरू से ही शुरू करते हैं। मैं सवाल खड़ा करू गा और तुम उस पर अपनी राय व्यक्त करना। "

" ओके आई एम रेडी। " सोनिया ने सम्हल कर बैठते हुए कहा __" यू मे प्रोसीड। "

" हमारे साथ ये खेल फैक्ट्री में आग लगने से शुरू हुआ था। " सत्यम सिंह ने सोचते हुए कहा __" इसमें कई सवाल हैं , पहला ये कि फैक्ट्री में आग कैसे लगी या किसने लगाई थी ? दूसरा सवाल ये कि फैक्ट्री में बने उस गुप्त तहखाने के अंदर मौजूद मेरा वो ग़ैर कानूनी सामान साक्षी द्वारा छानबीन करने पर क्यों नहीं मिला ? वो सारा सामान उस गुप्त तहखाने से किसने गायब किया ? यहाँ ये सवाल नहीं पैदा हो सकता कि वो सब चीज़ें बमों के धमाके से लगी भीषण आग में जल गई होंगी , क्योंकि जली हुई चीज़ के अवशेष ज़रूर मिलते हैं और फॉरेंसिक जाँच से ये बात भी पता चल जाती है कि जो चीज़ जली थी वो असल में क्या थी ? ख़ैर , मैं ये कह रहा हूँ फैक्ट्री में लगी आग के बारे में और तहखाने से उन सारी चीज़ों के गायब हो जाने के बारे में तुम्हारी क्या राय है ?"

" सबसे पहली बात तो ये है कि फैक्ट्री में लगी आग का मामला ज़रा पेंचीदा था। " सोनिया ने बेचैनी से पहलू बदलते हुए कहा __" पेंचीदा इस लिए क्योंकि उसमें किसी के भी बारे में कोई ठोस निष्कर्ष नहीं निकल सकता था। घुमा फिरा कर बात सिर्फ विक्रम पर ही आकर रुकती थी। हलाँकि ये बात ग़लत हो ऐसा कम ही लगता था। लेकिन मेरे ज़हन में एक बात ये भी है कि जिस समय फैक्ट्री में आग लगने का मामला आया था उसी समय तुम्हारे पार्टनर खुराना ने भी पार्टनरशिप तोड़ने की बात की ही नहीं बल्कि तोड़ ही दी थी। खुराना ने पार्टनरशिप तोड़ने की वजह ये बताई थी कि वो विदेश में सेटल होना चाहता है और वहीं पर अपना कोई बिजनेस करना चाहता है। इस बात पर कितना इत्तेफाक़ रखा जा सकता है ?"

" तुम आख़िर कहना क्या चाहती हो ?" सत्यम सिंह का दिमाग़ मानो चकरा सा गया था।

" मैं ये कहना चाहती हूँ कि खुराना ने पार्टनरशिप तोड़ने की जो वजह बताई थी उसमें कितनी सच्चाई थी ?" फिर सोनिया ने कहा __" तुम्हारे अनुसार उसे ये पता नहीं था कि फैक्टरी में कोई गुप्त तहखाना है जहाँ पर तुम अपना गैर कानूनी सामान छुपा कर रखते थे। जबकि ऐसा भी तो हो सकता है कि ये सब उसे किसी तरह से पता चल ही गया रहा हो। उस सूरत में वो डर गया हो कि ऐसे काम में वह किसी दिन तुम्हारे साथ साथ खुद भी न कानून की गिरफ्त में आ जाए। इस लिए उसने तुमसे पार्टनरशिप तोड़ लेने में ही अपनी भलाई समझी हो , किन्तु उसे लगा होगा कि पार्टनरशिप तोड़ने की कोई माकूल वजह भी होनी चाहिए तभी उसे अपना सारा पैसा तुमसे मिल सकता था। "

" लेकिन इसमें ऐसा तो नहीं हो सकता था न कि सारा हिसाब किताब चुकता होने के बाद खुराना मेरी फैक्ट्री में आग लगा देता। " सत्यम सिंह ने कहा __" सीधी सी बात है डियर , तुम्हारे अनुसार खुराना को कानून का डर सताया इस लिए उसने मुझसे पार्टनरशिप तोड़ी और अपना हिसाब किताब चुकता कर लिया। लेकिन इस सबके बाद वो भला मेरी फैक्ट्री में आग क्यों लगाएगा ? उसे जिस चीज़ का डर था वो तो पार्टनरशिप टूटते ही दूर हो गया था।

अगर तुम ये समझती हो कि फैक्ट्री में आग खुरानाा ने लगाई थी तो मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ। "

" इसका मतलब तुम इस मामले में खुरानाा को क्लीन चिट दे रहे हाो ?" सोनियाा ने गहरी नज़र से देखा उसे।

" बेशक। " सत्यम सिंह ने पूरे आतमविश्वास के साथ कहा।

" और कोई दूसरा ऐसा कर ही नहीं सकताा ?" सोनियाा ने कहाा __" मेरा मतलब तुम्हारे किसी बिजनेस कम्पटीटर से है। "

" यस आफकोर्स। " सत्यम सिंह ने कहाा __" मेरा ऐसा कोई बिजनेस कम्पटीटर ही नहीं है जो मेरी फैक्ट्री में आग लगा कर मेरा इतना बड़ा नुकसान कर दे। "

" तो फिर बचा कौन ?" सोनियाा ने कहा।

" क्या मतलब ??" सत्यम सिंह एकाएक ही चौंक पड़ा।

" अरे डियर , हम हर चीज़ के बारे में विचार विमर्ष कर रहे हैं न ?" सोनियाा मुस्कुराई।

" ओह हॉ। " सत्यम सिंह ने गहरी सास लाी __" ख़ैर , तो फिर बचा कौन का क्या मतलब है तुम्हाराा ?"

" तुम्हारी लाइफ में तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन कौन हाै ?" सोनियाा ने पूछा था।

" विक्रम और उसकी मॉ बहन। " सत्यम सिंह के भाव बड़ी तेज़ी से कठोर हो गए थे।

" बिलकुल सही। " सोनियाा ने कहाा __" विक्रम एक ऐसा शख्स है जो मौजूदा वक्त में तुम्हारे साथ कुछ भी कर सकता है। इस लिए अगर फैक्ट्री में लगी आग में सिर्फ और सिर्फ विक्रम का ही हाथ है तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। "

" लेकिन सवाल ये है कि उसने इतना बड़ा अविश्वसनीय काम किया कैसे होगाा ?" सत्यम सिंह के माथे पर सोच के भाव उभर आए __" दूसरी और सबसे महत्वपूर्ण बात ये कि उसे कैसे पता कि फैक्ट्री में कोई गुप्त तहखाना है और उस तहखाने के अंदर मैने एक अलग ही जुर्म की दुनियॉ बना रखी हाै ?"

" किसी तरह उसने इस सबका पता तो कर ही लिया होगा माई डियर हस्बैण्ड। " सोनियाा ने कहाा __" काम जब ऐसे बड़े बड़े करने होते हैं न तो उसके बारे में अपने पास हर चीज़ की जानकारी का होना भी ज़रूरी होता है। "

" यही तो सवाल है डियर। " सत्यम सिंह ने कहाा _" भला उसे इस बात की जानकारी कैसे हो गई कि फैक्ट्री के अंदर मैने क्या क्या चीज़ें छुपाई हुईं हैं ? जबकि ये भी सच है कि वह कभी मेरी फैक्ट्री में गया ही नहीं था। फिर कैसे ये सब पता हो सकता है उसे ? दूसरी बात , वो तो मुंबई में है फिर वो वहॉ से ये काम कैसे कर सकता हाै ?"

" संभव है कि विक्रम उस समय मुंबई से यहॉ आया रहा हो। " सोनिया ने तर्क दिया।

" अगर वो मुंबई से यहॉ आता तो क्या वो मेरे आदमियों की नज़र में नहीं आ जाता ?" सत्यम सिंह बोला _" आज भी तो वो मेरे आदमी भीमा की नज़र में आ ही गया था। "

" ऐसा भी तो हो सकता है कि उसने तुम्हारे आदमियों को चकमा दे दिया रहा हो उस समय। " सोनिया ने पुनः तर्क दिया __" क्योंकि बिना उसके यहॉ आए वह हमारी फैक्ट्री में कैसे आग लगा देता ? या फिर ऐसा हो सकता है कि उसके इशारे पर ये काम उसके ही किसी साथी ने किया होगा। "

" हॉ ऐसा हो सकता है। " सत्यम सिंह के मस्तिष्क में जैसे झनाका सा हुआ , बोला __" ये यकीनन हो सकता है सोनिया । बचपन से जवानी तक वो इस गॉव में रहा है , इस लिए ऐसा तो हो ही नहीं सकता कि यहॉ पर उसका कोई घनिष्ठ दोस्त या मित्र न बना हो , बल्कि ज़रूर बना होगा। सबका कोई न कोई घनिष्ठ मित्र ज़रूर होता है , उसका भी कोई ऐसा ही खास मित्र होगा यहॉ। इस लिए ये संभव है कि विक्रम ने ये काम अपने किसी ऐसे ही मित्र द्वारा करवाया हो सकता है। इस बारे में तो हमें पहले ही सोचना चाहिए था डियर। वो भले ही मुंबई में है लेकिन अपने किसी खास दोस्त के द्वारा वो ज़रूर हमारी पल पल की ख़बर लेता रहा होगा। अब भी ले रहा होगा। "

" आपने बिलकुल सही कहा डैड। " सहसा इतनी देर से चुप बैठा जयदीप कह उठा __" उस कमीने के कई दोस्त हैं यहॉ। लेकिन एक दोस्त तो उसका बहुत ही खास है। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ। कई बार मैने उसके दोस्त को उसके साथ देखा भी था। उसके उस दोस्त का नाम शायद रौनक है , यस डैड ... रौनक सिंह। यही नाम है उसके दोस्त का। "

" वैरी गुड। " सत्यम सिंह के चेहरे पर बड़ी मुद्दत के बाद राहत के भाव उभरे , बोला __" इसका मतलब वो हरामज़ादा अपने उस दोस्त रौनक के ज़रिये ये सब करवा रहा था। नहीं छोंड़ूँगा उस मादर--- को। उसके सारे खानदान का नामो निशान मिटा दूँगा मैं। "

" तुम्हें क्या लगता है सत्यम ?" सोनिया ने सहसा अजीब भाव से कहा __" ये कि विक्रम महामूर्ख है ?"

" व्हाट डू यू मीन ?" सत्यम सिंह की ऑखें फैली।

" जिस विक्रम ने अपने दोस्त को इतने बड़े काम को करने के लिए कहा होगा उसने क्या अपने दोस्त और उसके परिवार की सुरक्षा का ख़याल नहीं रखा होगा ?" सोनिया एक ही सास में कहती चली गई __" ये तो विक्रम को भी पता है कि अगर वो किसी के द्वारा अपना कोई काम करवाएगा तो देर सवेर तुम्हें इसका पता चल ही जाएगा। उस सूरत में तुम उसके साथ क्या सुलूक करोगे इसका अंदाज़ा उसने पहले ही लगा लिया होगा। हॉ सत्यम , विक्रम ये कभी नहीं चाहेगा कि उसके काम की वजह से उसके दोस्त के साथ साथ उसके दोस्त के परिवार वालों की ज़िंदगी भी ख़तरे में पड़ जाए। इस लिए मेरा ख़याल यही है कि विक्रम ने अपने दोस्त और उसके परिवार की सुरक्षा के बारे में सोचते हुए कुछ तो ऐसा ज़रूर किया

होगा जिससे तुम्हारा क़हर उन पर न टूटने पाए। "

" तुम्हारी इस बात में यकीनन सच्चाई की झलक दिख रही है सोनिया। " सत्यम सिंह ने कहा __" मगर एक बार पता तो करना ही चाहिए हमें। क्योंकि अगर एक पल के लिए ये मान लें कि वैसा कुछ किया ही नहीं होगा विक्रम ने जैसे की तुम बात कर रही हो तो इस वक्त ज़रूर उसका दोस्त इसी गॉव में अपने घर पर होगा। मैं एक बार इस बात की पक्के तौर पर जॉच करवा लेना चाहता हूँ। "

" ज़रूर जॉच करवाओ सत्यम। " सोनिया ने अजीब भाव से कहा __" मगर मेरा अनुमान यही है कि तुम्हारे हाथ कुछ नहीं लगने वाला। "

" मॉम ये आप क्या कह रही हैं ?" जयदीप के स्वर में नाराज गी थी , बोला __" क्या आप चाहती हैं कि हमारे हाथ कुछ न लगे ?"

" बात ये नहीं है बेटे कि मैं चाहती नहीं हूँ। " सोनिया ने सख्त भाव से कहा __" बात ये है कि अब तक हासिल भी क्या हुआ है ? हर बार तो नाकामी ही हाथ लगी है हमें और अब तो ये आलम हो गया है कि किसी भी चीज़ के हासिल होने की उम्मीद ही नहीं होती। "

" मैं तुम्हारे जज़्बातों को समझ सकता हूँ माई स्वीट डार्लिंग। " सत्यम सिंह ने कहा __" मैं जानता हूँ कि हर बार मिली नाकामी से तुम निराश हो गई हो। मगर यकीन मानो डियर , हमेशा ऐसा नहीं होता है। एक दिन ऐसा ज़रूर आता है जब हमें कामयाबी भी मिलती है। तुम देखना कि जिस दिन हमें कामयाबी मिली उस दिन हम अपनी उस कामयाबी को किस किस तरीके से सेलीब्रेट करेंगे ?"

सत्यम सिंह की बात का सोनिया ने कोई जवाब न दिया। वो बस सत्यम सिंह को अजीब भाव से देखती रही। जबकि सत्यम सिंह ने उसके चेहरे से नज़र हटा कर जयदीप से रौनक सिंह के घर के बारे में पहले पूँछा फिर अपनी कोट की पॉकेट से मोबाइल निकाला। मोबाइल पर उसने किसी को फोन लगाया। दूसरी तरफ से काल रिवीव किये जाने के बाद सत्यम सिंह ने उसे रौनक सिंह के घर का पता बताया और उससे जल्द से जल्द रौनक सिंह का पता लगाने का हुक्म दिया। उसके बार उसने काल कट करके मोबाइल को अपने सामने रखी टेबल पर रख दिया।

" तो डिबेट को आगे बढ़ाएँ डियर ?" सत्यम सिंह ने सोनिया की तरफ देख कर कहा __" मैने अपने एक आदमी को रौनक सिंह का पता करने के लिए बोल दिया है। वो जल्द ही इस बारे में हमें सूचित करेगा। तब तक हम अपनी डिबेट को आगे बढ़ते हैं। "

" ठीक है जैसी तुम्हारी मर्ज़ी। " सोनिया ने भावहीन स्वर में कहा __" शुरू करो। "

" यहॉ पर इन सब बातों को संक्षेप में ये निर्णय निकालते हैं कि बाहरी कोई भी व्यक्ति मेरे साथ ये सब नहीं कर रहा है। " सत्यम सिंह ने गहरी सास लेकर कहा _" बल्कि ये सब

करने वाला सिर्फ एक ही शख्स है और वो है विक्रम । रौनक सिंह का नाम जुड़ने से जो बात सामने आई वो ये है कि मुंबई में रहते हुए विक्रम ने अपने दोस्त के द्वारा ये सब करवाया। किन्तु यहाँ सवाल ये है कि विक्रम के इस काम में उसके और कितने दोस्त शामिल थे ? क्योंकि ये काम सिर्फ एक आदमी से तो हो नहीं सकता। इस लिए ये जानना ज़रूरी है उसने किस किस को अपने इस काम पर लगाया हुआ है ?"

" तुम एक बात भूल रहे हो सत्यम। " सोनिया ने कहा _" वो ये कि फैक्ट्री में आग लगने से पहले भी एक खेल तुम्हारे साथ खेला गया था। याद है , वो विदेशी ब्यापारी। जो अपनी बीवी के साथ आया था और उसने तुम्हें भारी मात्रा में कपड़ा तैयार करने को कहा था। डील पक्की होने के बाद जब डिलीवरी का समय आया तो उस विदेशी ब्यापारी का कहीं कोई पता ही नहीं था। अगले दिन अख़बार में ख़बर छपी कि शहर के मशहूर बिजनेस मैन सत्यम सिंह को किसी विदेशी व्यक्ति ने करोड़ों का चूना लगाया। "

" ओह हाँ यार। " सत्यम सिंह की आँखों के सामने दो विदेशी पति पत्नी की शक्ल घूम उठी __" उसका तो मुझे ख़याल ही नहीं रहा था। "

" होना चाहिए सत्यम। " सोनिया ने कहा __" क्योंकि तुम्हारे साथ खेल खेलने का आग़ाज़ तो वहीं से शुरू हुआ था न ? ख़ैर , मेरा ख़याल ये है कि वो विदेशी व्यक्ति कोई और नहीं खुद विक्रम ही था और उसकी पत्नी के रूप में खुद उसकी ही बहन निशा थी। "

" व्हाऽऽऽट ???" सत्यम सिंह उछल पड़ा __" ऐसा तुम यकीन से कैसे कह सकती हो ?"

" नायकीनी की भी कोई वजह बता दो मुझे ?" सोनिया ने बड़े आत्मविश्वास से कहा __" तुम यकीन इस लिए नहीं कर पा रहे क्योंकि तुम अब भी यही समझते हो कि विक्रम किसी ढाबे या होटल में कप प्लेट धो रहा होगा और उसकी औकात नहीं कि वो ये सब अफोर्ड कर सके। लेकिन मैं इस बात को अलग तरह से सोचती हूँ सत्यम । मैं ये सोचती हूँ कि विक्रम एक पढ़ा लिखा लड़का है। वो बचपन से ही पढ़ने लिखने में सभी बच्चों से आगे था। उसका माइंड बड़ा शार्प था। कहने का मतलब ये कि जितना वो पढ़ा लिखा था उससे उसे कोई नौकरी मिल जाना कोई मुश्किल काम नहीं था। संभव है कि उसे कोई ऐसी नौकरी मिल गई हो जिसके तहत वो इतना तो अफोर्ड कर ही सके कि वो तुम्हारे साथ ऐसा खेल खेल सके। अगर तुम इस एंगल से सोचोगे सत्यम तो तुम्हें भी लगने लगेगा कि हाँ वो लड़का ऐसा कर सकता है। "

सोनिया की इन सब बातों से सत्यम सिंह को भी एहसास हुआ कि सोनिया की बात में सच्चाई है। इस बात को उसे भी स्वीकार करना ही पड़ा कि विक्रम सभी बच्चों में सबसे ज्यादा पढ़ने में तेज़ था। उसे ये भी मानना पड़ा कि उसे कोई ऐसी नौकरी ज़रूर मिल गई रही होगी जिससे वो ये सब कर सके। सत्यम सिंह की आँखों के सामने जयदीप का वो अधमरी हालत मिलना घूम गया। इस बात से ये साफ ज़ाहिर होता है कि विक्रम के मन में इन लोगों के प्रति आक्रोश और बदले की भावना है। इस लिए उसका तो ये हमेशा प्रयास रहेगा कि वो अपने साथ हुए अत्याचार का बदला ले सके।

सत्यम सिंह के मानो मस्तिष्क में ये सब बातें बड़ी तेज़ी से चलने लगी थी, जिसका असर ये हुआ कि उसने इस सब को स्वीकार कर लिया कि ये सब कुछ विक्रम ने ही किया हो सकता है। फिर चाहे उसका वो विदेशी बनना हो या फिर फैक्ट्री में आग लगाना। अभी सत्यम सिंह ये सब सोच ही रहा था कि सामने टेबल पर रखा उसका मोबाइल बजने लगा। उन तीनों ध्यान एक साथ मोबाइल पर गया।

सत्यम सिंह ने हाथ बढ़ा कर मोबाइल उठाया और उस पर आ रही काल को रिसीव कर उसे कान से लगा लिया। उस तरफ से कुछ देर तक वो कुछ सुनता रहा उसके बाद उसने ये कह कर काल कट कर दिया कि__"अपने सब आदमियों से कहो कि वो सब उन लोगों का पता लगाएॅ। मुझे हर हाल में उन सबका पता चाहिए।"

" क्या बात हुई तुम्हारी अपने उस आदमी सॅे ?" सोनियॅा ने पूछा।

" तुम्हारा कहना बिलकुल सही था सोनियॅा। " सत्यम सिंह ने गहरी सास लॅी __" विक्रम ने सच में अपने उस दोस्त और उसके परिवार की सुरक्षा का ख़याल रखा हुआ था। "

" आख़िर क्या बताया तुम्हारे आदमी नॅे ?" सोनियॅा ने कहॅा __" पूरी बात साफ साफ मुझे भी बताओ। "

" मेरा आदमी रौनक सिंह के घर पर गया था। " सत्यम सिंह ने बताना शुरू कियॅा __" किन्तु जब वो रौनक ने घर के दरवाजे पर पहुॅचा तो देखा कि वहॉ बड़ा सा ताला लगा हुआ था। उसके बाद मेरे उस आदमी ने आस पास वालों से रौनक और उसके घर वालों के बारे में पूछा तो कुछ लोगों ने उसे बताया कि शाम को रौनक के घर के सामने एक एम्बुलंस आई थी। उस एम्बुलंस में घर के अंदर से कुछ सामान लाकर रखा गया था और फिर उस एम्बुलंस में रौनक , रौनक की विधवा मॉ और उसकी एक बेटी बैठ गईं थी। इन लोगों के साथ दो आदमी और थे। वो दोनो भी उस एम्बुलंस में बैठ गए थे। एम्बुलंस के आगे ही एक जीप खड़ी थी। उस जीप के चलते ही वो एम्बुलंस भी चल पड़ी थी। इसके बाद वो लोग कहॉ गए इसका किसी को कोई पता नहीं। "

" ओह इसका मतलब उन लोगों को पता था कि तुम्हें देर सवेर ये पता चल ही जाएगा कि विक्रम मुंबई से आने के बाद रौनक के घर पर ही ठहरा था। " सोनियॅा ने सोचने वाले भाव से कहॅा __" इस लिए , इससे पहले कि उन लोगों तक तुम्हारे आदमी पहुॅचें वो पहले ही वहॉ से कूच कर गए। ख़ैर , अब तो तुम्हें यकीन आ गया न कि विक्रम ने ही ये सब किया हॅै ?"

" वो सब तो ठीक है डियर। " सत्यम सिंह के चेहरे पर गहन सोच के भाव थॅे , बोलॅा __" मैंने मान लिया कि ये सब विक्रम ने ही किया होगा। मगर सोचने वाली बात है कि ये सब उसने कितना शातिराना ढंग से किया है। रौनक और उसकी मॉ बहन को वो वहॉ से एम्बुलंस जैसे वाहन से ले गया। कोई सोच भी नहीं सकता कि एम्बुलंस के अंदर कोई मरीज़ नहीं बल्कि ये सब मौजूद हो सकते हैं। मगर यहॉ पर दो चीज़ें हैं जो समझ में नहीं आ रहीं। "

" कौन सी दो चीज़ें डैड ?" जयदीप ने चकित भाव से पूॅछा था।

" पहली चीज़ ये कि विक्रम के पास एम्बुलंस कहॉ से आई ?" सत्यम सिंह ने कहा __" साधारणरूप से यहॉ पर उसके लिए एम्बुलंस का मिलना असंभव नहीं तो नामुमकिन बात तो है ही। दूसरी चीज़ ये कि एम्बुलंस के आगे जो जीप थी वो किसकी थी और उसमें कौन बैठा था ? ये बात मेरे आदमी को पूछने पर भी किसी ने नहीं बताई कि उस जीप पर कौन कौन बैठा हुआ था ? इसका मतलब तो यही हुआ कि रौनक सिंह के अलावा भी कोई और है जो विक्रम की मदद कर रहा है। "

" विक्रम को एम्बुलंस कैसे मिल गई ये तो चलो साधारण बात हो सकती है। " सोनिया ने भी मानो अपने दिमाग़ के घोड़े दौड़ाए __" हो सकता है कि उसने ज्यादा पैसे देकर एम्बुलंस का जुगाड़ कर लिया होगा। मगर सोचने वाली बात तो उस जीप की है। यकीनन ये एक नया प्वाइंट है सत्यम । तुमने सही पकड़ा। रौनक के अलावा भी कोई है जो इस समय विक्रम की मदद कर रहा है। पर कौन हो सकता है ऐसा व्यक्ति ? इस गॉव में ऐसा कौन है जिसके पास खुद की जीप हो सकती है ?"

" तुम्हारा मतलब है कि इस गॉव में जिसके पास खुद की जीप होगी। " सत्यम सिंह ने चौंकते हुए कहा __" वही विक्रम की मदद कर रहा है ?"

" हॉ बिलकुल। " सोनिया ने झट से कहा __" क्या ऐसा नहीं हो सकता ?"

" हो तो सकता है डियर। " सत्यम सिंह ने कहा __" मगर ये भी तो हो सकता है कि विक्रम ने वो जीप किराये पर हायर की हुई हो। "

" अगर विक्रम को अलग से कोई जीप हायर ही करना था तो रौनक और उसकी मॉ बहन के साथ खुद भी एम्बुलंस से इस गॉव से निकलने की क्या ज़रूरत थी ?" सोनिया एक ही सास में कहती चली गई __" या तो वो किराये पर ली गई जीप से ही सबको साथ ले जाता या फिर सिर्फ एम्बुलंस के द्वारा ही सबको यहॉ से ले जाता। दो अलग अलग वाहन साथ में रखने का क्या मतलब हो सकता है ?"

" बात तो तुम्हारी सही है डियर। " सत्यम सिंह ने कहा __" मेरे आदमी ने बताया कि विक्रम सबको लेकर एम्बुलंस में ही बैठ गया था , ऐसा मेरे आदमी के पूछने पर कुछ लोगों ने उसे बताया है। जबकि दूसरी जीप में कौन बैठा था ये पता नहीं चला। इसका मतलब शायद ये भी हो सकता है कि रौनक के अलावा जो दूसरा व्यक्ति विक्रम की मदद कर रहा है वही उस जीप में था। एम्बुलंस के आगे आगे चलने का भी यही मतलब हो सकता है कि वो विक्रम एण्ड पार्टी को सुरक्षापूर्वक गॉव से बाहर निकाल देना चाहता था। अब सवाल ये है कि वो जीप वाला दूसरा व्यक्ति विक्रम एण्ड पार्टी को लेकर कहॉ गया हो सकता है ? शहर या फिर अपनी ही किसी सुरक्षित जगह पर ?"

" सवाल तो ये भी है सत्यम कि विक्रम मुंबई से यहॉ आया किस लिए था ?" सोनिया ने कहा __" यहॉ पर उसका ऐसा क्या ज़रूरी काम था जिसके लिए उसने अपनी जान को भी

ख़तरे में डाल दिया ? विक्रम की माँ रेणुका ने उसे यहाँ आने की इजाज़त कैसे दे दी होगी उसको ?"

" संभव है कि वो सुंदर के बीवी बच्चों को लेने यहाँ आया हो। " सत्यम सिंह ने संभावना व्यक्त की थी।

" अगर उसके आने की यही वजह थी तो वो यहाँ नहीं बल्कि सीधा सुंदर की ससुराल जाता। " सोनिया ने कहा __" अपर्णा तो अपने बच्चों के साथ अपने मायके में ही है। विक्रम सीधा वहीं जाता , और हमें उसके आने का पता भी नहीं चल पाता। मगर ऐसा हुआ नहीं बल्कि वो यहीं आया है। इसका मतलब यही हुआ कि वो जिस किसी भी काम से यहाँ आया था वो कोई दूसरा ही काम था। "

" अब इसका पता तो खुद विक्रम ही बता सकता था या फिर उसका दोस्त रौनक। " सत्यम सिंह ने एक नया सिगार सुलगाते हुए कहा __" मेरे आदमी उनकी खोज में लगे हैं। देखते हैं क्या नतीजा सामने आता है ? ख़ैर , तब तक हम डिबेट को आगे बढ़ाते हैं। "

" अब कैसी डिबेट सत्यम ?" सोनिया के माथे पर बल पड़ता चला गया __" ये बात तो क्लियर हो ही गई न उस सबमें विक्रम का ही हाथ था। उसने ही अपने दोस्त की मदद से वो सब किया था। फिर अब किस बात की डिबेट ?"

" अभी तो बहुत कुछ बाकी है माई डियर। " सत्यम सिंह ने सिगार का गहरा कश लिया , बोला __" विचार विमर्ष के लिए और भी कई बातें शेष हैं। "

" अब और क्या बातें शेष हैं ?" सोनिया ने पूछा।

" अभी तो एक सवाल ऐसा भी है डियर जिसे हम इग्नोर नहीं कर सकते। " सत्यम सिंह बोला __" जैसा कि हमारी डिबेट पर ये नतीजा निकला कि फैक्ट्री में आग विक्रम ने ही लगाई या लगवाई हो सकती है। इसमें भी दो बातें हैं , पहली ये कि क्या विक्रम को ये भी पता था कि फैक्ट्री में कोई गुप्त तहखाना है जिसके अंदर ग़ैर कानूनी चीज़ों का ज़खीरा मौजूद है ? अगर हाँ तो , क्या उसी ने उस ग़ैर कानूनी ज़खीरे को गायब किया या करवाया ? या फिर दूसरी बात ये कि इस सबमें किसी और का भी हाथ था ? क्योंकि सवाल इसी से निकल रहा है कि विक्रम को ये बात कैसे पता चली कि फैक्ट्री के अंदर कोई गुप्त तहखाना है जिसके अंदर मेरी ग़ैर कानूनी चीज़ें मौजूद हैं ?"

" तुम कहना क्या चाहते हो सत्यम ?" सोनिया ने उलझनपूर्ण भाव से पूछा था।

" बहुत साफ बात है डियर। " सत्यम सिंह ने कहा _" अगर ये मान कर चलें कि विक्रम मुझसे बदला लेना चाहता है तो उस सूरत में वो मेरी फैक्ट्री में यकीनन आग लगा सकता है और उस आग में फैक्ट्री के अंदर का सब कुछ जल कर ख़ाक़ में मिल जाएगा। उसे इस बात से कोई मतलब नहीं होगा कि इस सबमें मेरा क्या क्या और कितना नुकसान हो जाएगा ? बदला लेने के रूप में ये एक नेचुरल बात हो गई। मगर , तहखाने से उन सब चीज़ों के गायब हो जाने से एक नई और सोचपूर्ण बात सामने आती है कि विक्रम ने उस सबको क्यों गायब

किया और उस सबके बारे में उसे पता कैसे चलाा ? मतलब साफ है डियर कि विक्रम को इस बात का अच्छी तरह से पता था कि फैक्ट्री के अंदर एक गुप्त तहखाना है और उस तहखाने के अंदर मेरी एक ग़ैर कानूनी दुनियॉ मौजूद है। अब सवाल ये उठता है कि विक्रम को इस सबका कैसे पता थाा ? क्योंकि वो तो कभी फैक्ट्री गया ही नहीं थाा , दूसरी बात वो मौजूदा वक्त में यहॉ था भी नहीं तो कैसे उसे इतनी गुप्त बात का पता चल गयाा ? इसका मतलब तो यही हुआ कि कोई ऐसा व्यक्तिि उसे मिला जिसने उसे फैक्ट्री के अंदर की इतनी बड़ी गुप्त बात बताई। वरना क्या उसे कोई ख़्वाब चमका था जिसमें उसने ये सब देख लिया होगाा ?"

" यकीनन तुम्हारी इस बात में प्वाइंट है। " सोनियाा ने प्रभावित होने वाले भाव से कहाा __" ये एक ज़बरदस्त प्वाइंट है सत्यम । फैक्ट्री में आग लगने वाले हादसे की कड़ियॉ ऐसी हो सकती हैं ___ विक्रम को सब कुछ पहले से ही किसी के द्वारा पता चल चुका था कि फैक्ट्री के अंदर मौजूद तहखाने में तुम्हारे द्वारा ग़ैर कानूनी धंधा भी किया जाता है। इस लिए उसने उस हिसाब से ही प्लान बनाया। मतलब ये कि फैक्ट्री में आग लगाने से पहले ही उसने तहखाने से वो सब चीज़ें निकाल कर अपने कब्जे में कीी , उसके बाद उसने तहखाने में टाइम बम फिट किया। कुछ टाइम बम उसने फैक्ट्री के अंदर उन जगहों पर भी फिट किये जहॉ पर कपड़ों का स्टॉक था और मशीनें थी। सारे टाइम बमों के फटने का टाइम एक ही था। सारी क्रिया करने के बाद वो फैक्ट्री के अंदर से बड़ी ही आसानी से बाहर निकल गया। उसके बाद क्या हुआ ये सबको पता ही है। "

" बिलकुल यही हुआ था। " सत्यम सिंह ने कहाा __" अब सवाल यही है कि ऐसा वो कौन शख्स था जिसने विक्रम को तहखाने से संबंधित जानकारी दीी ? तहखाने के बारे में मेरे अलावा किसी को भी पता नहीं था। इस बात के पता होने का तो सवाल ही नहीं उठता कि उसके अंदर क्या मौजूद है। "

" कोई तो ऐसा व्यक्तिि ज़रूर था सत्यम। " सोनियाा ने सोचने वाले भाव से कहाा __" जिसने विक्रम को इतनी बड़ी गुप्त जानकारी दी। एक मिनट सत्यम ..... जिस दिन फैक्ट्री में वो हादसा हुआ था उसी दिन या रात को तुम्हारा भूतपूर्व पार्टनर विदेश जाने के लिए प्लेन में बैठा था। एक बार इस बारे में फिर से सोचो डियर , क्या ऐसा नहीं हो सकता कि खुरानाा को पता चल गया हो कि फैक्ट्री के अंदर तहखाना भी है और उस तहखाने में तुम क्या धंधा करते होो ? ऐसा बिलकुल हो सकता है सत्यम , खुरानाा के पास दूसरी कोई ठोस वजह नहीं थी यहॉ से रफूचक्कर हो जाने की। वो तो तुम्हारा जिगरी यार भी थाा , ऐसा जिगरी कि उससे हमारे बड़े गहरे संबंध थे। उसकी बीवी तौम्हारे नीचे और तुम्हारी ये बीवी यानी कि मैं उसके नीचे। हम सब एक साथ कितना इन सबमें एन्ज्वाय करते थे। ऐसे मज़ेदार रिश्तों को अनायास ही छोंड़ कर विदेश चले जाने का दूसरा और क्या मतलब हो सकता है भलाा ?"

" तुम ये कहना चाहती हो कि खुरानाा को फैक्ट्री के अंदर मौजूद तहखाने से संबंधित सबकुछ पता था। " सत्यम सिंह बोलाा __" उसके बाद वो मुझसे पीछा छुड़ाने के लिए कोई जुगत लगाने लगा। और फिर संयोग से उसकी मुलाक़ात विक्रम से हुई। उसने विक्रम को सब कुछ

बता दिया और फिर वह मुझसे अपना हिसाब किताब करके यहाँ से रफूचक्कर हो गया ?"

" मेरा मतलब यकीनन यही है डियर हस्बैण्ड मगर इसमें बात इस तरह नहीं हुई जैसी कि तुमने सोच कर बयां की है। " सोनिया ने कहा __" बल्कि ऐसी हुई है , मेरी थ्योरी ये है ___ विक्रम को तुमसे किसी भी तरह से बदला लेना था ये एक सच बात है। मगर उसने सोचा कि तुमसे अपना बदला लेने की उसमें क्षमता नहीं है। इस लिए उसने दिमाग़ लगाया। उसने तुमको अंदर से कमज़ोर करने का प्लान बनाया। सबसे पहले उसने अपनी बहन के साथ मिल कर विदेशी बिजनेस मैन का गेटअप बनाया और फिर तुमसे वो डील की। बाद में डिलीवरी के वक्त वो गायब हो गया। इसका नतीजा ये हुआ कि भारी मात्रा में तैयार किया गया कपड़ा बिक नहीं पाया और जो तुमने उसे तैयार करवाने में पैसा लगाया वो वसूल नहीं हो पाया। इससे तुम्हें काफी नुकसान हुआ। इसका एक नुकसान ये भी हुआ कि बिजनेस के क्षेत्र में इस तरह किसी विदेशी के हाथों धोखा खा जाने से तुम्हारी रेपुटेशन पर इसका बुरा असर पड़ गया। उसके बाद फैक्ट्री में आग लग जाने से जो भारी नुकसान हुआ उससे तुम पूरी तरह हिल गए। इतना कुछ होने के बाद भी तुम ये नहीं समझ पाए कि ये सब तुम्हारे क्यों और कौन कर रहा है ? मगर विक्रम ने अपनी तरफ से तुम्हारे लिए एक क्लू भी छोंड़ा , वो क्लू ये था कि तहखाने के अंदर से उसने तुम्हारी सारी ग़ैर कानूनी चीज़ें गायब कर दी। यहाँ उसने तुम्हें ये जता दिया कि ऐसा कैसे और कौन कर सकता है ? ये अलग बात है कि ये बात तुम आज समझे हो। ख़ैर , इस बार तो वो खुद ही यहाँ आया और तुम्हारे इतने सारे आदमियों को आश्चर्यजनक रूप से पता नहीं कहाँ और कैसे गायब कर दिया ?"

" ओह वैरी गुड। " सत्यम सिंह मुस्कुराया __" यकीनन इस थ्यौरी में दम है डियर। अब ये भी बता दो कि विक्रम ने तहखाने से मेरी वो सब ग़ैर कानूनी चीज़ें क्यों गायब की ? उनसे उसे क्या फायदा हो सकता है भला ?"

" कमाल करते हो सत्यम। " सोनिया चौंकी __" इतनी सी बात का मतलब पूछते हो मुझसे। खुद् सोचो कि विक्रम ने वो सब क्यों गायब किया होगा ? सीधी सी बात है सत्यम , वो सब चीज़ें तुम्हारे काले कारनामों का पुख्ता सबूत हैं। विक्रम अगर चाहे तो आज तुम्हें उन सब चीज़ों के आधार पर जेल पहुँचवा सकता है। तुम्हें ये बताने की ज़रूरत नहीं है कि ग़ैर कानूनी धंधा करने के जुर्म में कानून तुम्हें कितनी बड़ी सज़ा सुना सकता है ? कहने का मतलब ये कि तुम्हारी स्वतंत्रता विक्रम के हाथों में है। वो अगर चाहे तो तुम कानून की गिरफ्त से दूर रहोगे और अगर वो चाहे तो आज इसी वक्त तुम कानून के शिकंजे में फँस जाओ। मगर चूँकि अब तक उसने ऐसा कुछ नहीं किया है इस लिए अभी तुम कानून की पहुँच से बाहर हो। मगर इसका मतलब ये नहीं है भविष्य में भी ऐसा ही रहेगा। संभव है कि विक्रम किसी ऐसे वक्त पर ये सब करे जब उसे लगे कि यही सही वक्त है। दैट्स इट। "

सोनिया की ये बातें सुन कर सत्यम सिंह के समूचे जिस्म में झुरजुरी सी दौड़ गई। बगल से ही सोफे पर बैठे जयदीप की ऑखों के सामने उसके बाप के दोनो हाथ कानून की हथकड़ी में बँधे नज़र आए। इस दृष्य के घूमते ही जयदीप की धड़कने एकाएक ही बढ़ चली थी। अभी ये सब ये लोग सोच ही रहे थे कि तभी एक बार फिर से सत्यम सिंह का मोबाइल बज उठा। हड़बड़ा कर सत्यम सिंह ने मोबाइल की कॉल को रिसीव कर मोबाइल को कान से लगा लिया।

".....। " उधर से कुछ देर तक कुछ कहा गया। जिसे सुन कर सत्यम सिंह के चेहरे पर चौंकने के भाव उभरे। उधर की बातें सुनने के बाद सत्यम सिंह ने ये कह कर फोन रख दिया कि ___" ठीक है , तुम अपने कुछ आदमियों को रामगंज रेलवे स्टेशन जाने को बोल दो और बाकी के लोग आस पास के क्षेत्र की अच्छे से छानबीन करते रहो। "

" क्या कहा तुम्हारे आदमी ने ?" सत्यम सिंह के फोन रखते ही सोनिया ने पूछा था।

" उसने जो कुछ भी मुझे बताया है। " सत्यम सिंह ने अजीब भाव से कहा __" उसे जान कर मुझे यकीन नहीं हो रहा है सोनिया। "

" क्या मतलब ??" सोनिया के चेहरे पर सोचने वाले भाव उभरे __" किस बात का यकीन नहीं हो रहा तुम्हें ?"

सोनिया के पूछने पर सत्यम सिंह ने तुरंत कोई जवाब नहीं दिया। बल्कि चेहरे पर गंभीरता लिए उसने एक नया सिगार सुलगाया और दो तीन जल्दी जल्दी कश लेने के बाद उसने नॉक व मुह से ढेर सारा धुआँ उगला। सोनिया और जयदीप दोनो ही उसके मुख से जवाब सुनने के लिए बेचैन से होने लगे थे। किन्तु सत्यम सिंह ने सिगार पी लेने के बाद भी कोई जवाब नहीं दिया। वो किसी गहरी सोच में डूबा नज़र आया। सोनिया उसके चेहरे पर इस तरह सोच के भाव देख कर चौंकी। उसने सत्यम सिंह को आवाज़ देकर सोच के सागर से निकाला। हक़ीक़त की दुनियाँ में आकर सत्यम सिंह ने गहरी सास ली और एक झटके से सोफे पर से उठ कर खड़ा हो गया। उसने जयदीप और सोनिया दोनो को हवेली चलने को कहा और बाहर की तरफ बढ़ता चला गया। दोनो माँ बेटा भौचक्के से देखते रह गए थे सत्यम सिंह को।

५५

उधर साक्षी दीदी के फार्महाउस पर!

सुबह हुई और एक नये दिन तथा एक नये जीवन की शुरूआत हुई। सबके प्यार ने और सबके समझाने का असर ये हुआ था कि पिछले दिन की अपेक्षा आज मेरी हालत में काफी हद तक सुधार था। कल तो मैं सदमे में ही डूबा हुआ था। किसी से कोई मतलब ही नहीं था और ना ही किसी से कोई बात करने का दिल कर रहा था। मगर आज मैं काफी हद तक नार्मल था।

जब मेरी नींद खुली तो मैने देखा मेरे दोनो तरफ मुझसे छुपकी हुई मेरी दोनो बहनें सुकून से सो रही थी। उन दोनो के खूबसूरत तथा मासूम से चेहरों को देख कर ही मेरा मन खुश सा हो गया। वो दोनो मुझसे ऐसे छुपकी हुई थी मानो उन्हें डर हो कि मैं उन्हें छोंड़ कर कहीं दूर चला जाऊँगा। मैं काफी देर तक उन दोनो को एकटक देखता रहा। आशा दीदी की तो ख़ैर बात ही अलग थी किन्तु साक्षी दीदी की बात सबसे जुदा थी। वो इस लिए क्योंकि बचपन से लेकर अब तक मैं उनके मुख से विक्रम या भाई सुनने को तरस गया था। वो मुझे देखना तक गवॉरा नहीं करती थी बात करने की तो बहुत दूर की बात है। मगर आज मेरी वही साक्षी दीदी मुझसे छुपकी हुई सो रही थी। उनके दिल में मेरे लिए बेपनाह प्यार व स्नेह था।

उन्हें इस तरह सुकून से सोते देख जाने क्यों मेरी ऑखों में ऑसू भर आए। मेरे दिल में दर्द की एक तेज़ लहर सी दौड़ गई। अभी मैं इस लहर से ब्यथित हुआ ही था कि सहसा साक्षी दीदी के सम्पूर्ण जिस्म में हरकत हुई और देखते ही देखते उनकी ऑखें खुल गईं। उनकी नज़र सबसे पहले मुझ पर ही पड़ी। मेरी ऑखों में ऑसू देखते ही वो बेचैन सी नज़र आने लगीं। उन्होंने अपना हाथ बढ़ा कर मेरे चेहरे को सहलाया और सिर को ना में हिलाते हुए मुझे इशारा किया कि मैं दुखी न होऊँ।

इधर आशा दीदी की भी ऑखें खुल गई थी। सिर को ऊपर की तरफ उठा कर उन्होंने मुझे देखा और मेरी ऑखों में ऑसू देखते ही उन पर भी वही प्रतिक्रिया हुई जो साक्षी दीदी पर हुई थी। दोनो ने एक साथ ऊपर की तरफ खिसक कर मेरे माथे पर हल्के से चूमा। मैं अपनी दोनो बहनों का ये प्यार देख कर अंदर ही अंदर गदगद सा हो गया। मुझे एक अलग ही तरह का एहसास हुआ। ऐसा लगा कि अब मैं यहॉ पर अकेला नहीं हूँ बल्कि यहॉ भी मेरे अपने हैं , जो मुझे इस हद तक प्यार करते हैं।

" तू इस तरह अब कभी दुखी मत होना विक्रम। " साक्षी दीदी ने गंभीरता से कहा __" मैं मानती हूँ कि अभी जो कुछ भी हुआ उससे तुझे गहरा सदमा लगा है। मगर तुझे खुद को संभाल ना होगा मेरे भाई। तू मुझे भाई के रूप में मिल गया है इस लिए मैं चाहती हूँ कि मेरा भाई हमेशा खुश रहे। तेरे पास किसी भी प्रकार का दुख दर्द न आए। मैने भी ठान लिया है कि मैं तुझे कभी भी दुखी नहीं होने दूँगी , और इसके लिए मैं किसी भी हद तक गुज़र जाऊँगी। "

" साक्षी सही कह रही है विक्रम। " आशा दीदी ने कहा _" अब से हम दोनो बहनें तुझे कभी भी दुखी नहीं होने देंगे। उसके लिए चाहे हमें जो भी करना पड़े हम करेंगे। "

" इसकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी दीदी। " मैने हल्के से मुस्कुरा कर कहा __" क्योंकि जिसके पास आप जैसी इतना प्यार करने वाली दो दो बहनें हों उसको कोई दुख तक़लीफ कैसे हो जाएगी ? आप चिन्ता मत कीजिए धीरे धीरे सब ठी हो जाएगा। "

" ये हुई न बात। " साक्षी दीदी ने मुस्कुरा कर कहा _" मुझे पता है कि मेरा स्वीट सा भाई कितना समझदार है। ख़ैर , चल अब तू फ्रेश हो ले। हम दोनो भी फ्रेश हो जाते हैं , उसके बाद नास्ता करेंगे साथ में। मुझे भी थाने जाना पड़ेगा न। "

" मुबारक हो दीदी। " मैने कहा __" आप पुलिस ऑफीसर बन गई हैं। मुझे पता है आपका शुरू से ही ये सपना था कि आप एक दिन पुलिस ऑफिसर बनो। इस लिए इसके लिए आपको ढेर सारी बॅधाईयॉ दीदी। "

" थैंक्स विक्रम। " दीदी ने कहा __" लेकिन मेरे मॉम डैड को मेरा पुलिस ऑफीसर बनना बिलकुल पसंद नहीं आ रहा है। आए दिन इस बारे में कोई न कोई बात होती रहती है घर में। मैने भी फैंसला कर लिया है कि अब ये पुलिस की नौकरी छोंड़ दूँगी। "

" अरे ऐसा क्यों दीदी ?" मैने चौंकते हुए कहा __" नहीं नहीं आप ऐसा बिलकुल नहीं करेंगी। पुलिस ऑफीसर बनना आपका ख़्वाब था और जब ये ख़्वाब पूरा हो ही गया है तो इसे इस तरह छोड़ कर अंदर ही अंदर हमेशा के लिए दुखी रहने वाला काम मत कीजिए। रही बात बड़े पापा और बड़ी मॉ की तो मुझे पता है वो ऐसा क्यों चाह रहे हैं ?"

" अच्छा क्या पता है तुझे ?" साक्षी दीदी ने मुस्कुरा कर पूछा __" ज़रा मैं भी तो सुनूँ। "

" जिनके हाथ खून से रॅगे हों। " मैने कहा __" और जो जुर्म की दुनियॉ से ताल्लुक रखता हो , वो तो पुलिस और कानून से डरेगा ही। आप तो वैसे भी एक तेज़ तर्रार पुलिस ऑफीसर हैं। उन्हें भी पता है कि आपको अगर ये पता चल जाए उनके डैड जुर्म की दुनियॉ से ताल्लुक रखते हैं तो आप सेकण्ड भर का भी समय नहीं लगाएॅगी उन्हें कानून की गिरफ्त में लेने में। इस लिए वो नहीं चाहते हैं कि आप पुलिस की नौकरी करें। "

मेरी ये बातें सुन कर साक्षी दीदी ही नहीं बल्कि आशा दीदी भी बुरी तरह उछल पड़ी थी। साक्षी दीदी मुझे इस तरह देख रही थीं जैसे मैं कोई अजूबा हूँ।

" तू ये बात इतने यकीन से कैसे कह सकता है कि मेरे डैड जुर्म की दुनियॉ से ताल्लुक रखते हैं ?" साक्षी दीदी ने चकित भाव से पूछा था।

" मुझे उनके बारे में हर चीज़ पता है दीदी। " मैने गहरी सास लेते हुए कहा __" और मैं ये भी जानता हूँ कि आप भी अपने डैड के बारे में बहुत कुछ जान चुकी हैं। "

" क्या मतलब ????" साक्षी दीदी की ऑखें आश्चर्य से फैल गईं __" मैं बहुत कुछ क्या जान चुकी हूँ ?"

" जाने दीजिए दीदी। " मैने पहलू बदलने की गरज़ से कहा __" उन सब बातों को ज़ुबॉ पर लाने का कोई मतलब नहीं है। आप ये पूछिये कि मुझे कैसे पता कि आप भी ब हुत कुछ जानती हैं ?"

" हॉ हॉ बता न विक्रम। " साक्षी दीदी के आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं था , बोली __" मैं जानना चाहती हूँ कि ये सब तुझे कैसे पता है ?"

" बड़ी सीधी सी बात है दीदी। " मैने कहा __" सबसे पहले तो यही कि आपका मेरे प्रति इतना प्यार ही ये ज़ाहिर कर देता है कि आपको उनकी असलियत के बारें में कुछ तो ऐसा पता चला ही जिसके तहत आपके दिल में मेरे प्रति प्यार जाग गया। दूसरी बात ये कि आप इस फार्महाउस में गीता बुआ के साथ रह रही हैं। इससे साबित हो जाता है कि आपको अपने मॉम डैड के बारे में कुछ तो ऐसा पता चल ही चुका है। वरना गीता बुआ को साथ लिए यहॉ रहने का क्या कारण हो सकता है ? तीसरी बात , मेरे दोस्त रौनक से कह कर मुझे प्राची से मिलाने के लिए मुंबई से बुलाना। रौनक और प्राची के द्वारा भी आपको कुछ तो ऐसा पता चल ही चुका होगा जिससे आपको ये लगने लगा कि मैं और मेरी मॉ बहन इतने बुरे नहीं हो सकते जितना आपको बताया गया था बचपन से। "

साक्षी दीदी मेरी ये बातें सुन कर हैरान रह गईं। फिर सहसा उनके चेहरे पर प्रशंसा के भाव उभर आए। होठों पर हल्की सी मुस्कान भी फैल गई।

" यकीनन तूने बड़ी खूबसूरती से इन सब बातों का अंदाज़ा लगाया है विक्रम। " फिर उन्होंने कहा __" और ये सच है कि मुझे अपने मॉम डैड की असलियत के बारे में पता चल चुका है। किन्तु अभी भी कुछ बातें हैं जिनका मुझे शायद पता नहीं है। "

" डोन्ट वरी दीदी। " मैने कहा __" जब इतना कुछ पता चल गया है तो बाकी का भी आपको पता चल ही जाएगा। "

" चल ठीक है मेरे प्यारे भाई। " साक्षी दीदी ने मेरे चेहरे को प्यार से सहलाया __" मैं तो बस इस बात से ही खुश हूँ कि मुझे मेरा वो भाई मिल गया है जो सच में मुझे अपनी दीदी मानता है और मेरी इज्ज़त करता है। आने वाले समय में क्या होने वाला है ये तो वक्त ही बताएगा। मैं बस ये चाहती हूँ कि जितने दिन तू यहॉ है उतने दिन तक तुझ पर किही भी तरह के ख़तरे को न आने दूँ। "

" आप फिक्र मत कीजिए दीदी। " मैने मुस्कुरा कर कहा __" आपका ये भाई कोई दूध पीता बच्चा नहीं है जिसे कोई भी चोंट पहुँचा देगा। इतना तो अब मुझमें सामर्थ है कि मैं अपनी सुरक्षा खुद कर सकूँ। "

" हॉ मुझे पता है। " साक्षी दीदी हँस कर बोली __" मुझे पता है कि मेरे भाई ने दो मिनट के अंदर मेरे डैड के उतने सारे आदमियों का खात्मा कर दिया था। "

" वो तो बस हो गया दीदी। " मैने कहा __" पर आपके सामने तो कुछ भी नहीं हूँ मैं। आपने भी तो मेरी सुरक्षा के लिए क्या कुछ नहीं किया है। मैं सोच भी नहीं सकता था कि आप मेरे लिए इतना कुछ कर सकती है। "

" तेरे लिए तो अब कुछ भी कर सकती हूँ मेरे भाई। " दीदी की आवाज़ भारी हो गई __" बचपन से लेकर अब तक मैने तेरे साथ क्या किया है ये सोच कर ही मुझे खुद से घृणा होने लगती है। इस लिए अब मैं तेरे लिए और अपने भाई के लिए कुछ भी करू गी। "

मैने देखा कि ये सब कहते हुए दीदी की ऑखों में ऑसू आ गए थे इस लिए मैने उन्हें खुद से छुपका लिया। वो खुद भी मुझसे किसी जोंक की तरह चिपक गई थी।

" तुम दोनो का हो गया हो तो मेरा भी कुछ ख़याल कर लो। " सहसा आशा दीदी ने कहा __" मुझे तो भुला ही दिया तुम दोनो ने। "

" क्या आप सोच सकती हैं दीदी कि हम आपको भुला देंगे ?" मैने आशा दीदी को खुद से छुपकाते हुए कहा था।

ऐसे ही कुछ देर तक हम तीनो भाई बहन एक दूसरे से छुपके रहे फिर हम तीनो अलग हुए। साक्षी दीदी ने मुझे फ्रेश हो जाने का कहा और खुद भी फ्रेश होने के लिए आशा दीदी को लेकर कमरे से बाहर निकल गईं। उन दोनो के जाने के बाद मैं कुछ देर यूँ ही बेड पर लेटा किसी सोच में डूबा रहा फिर मैं उठ कर बाथरूम में चला गया।

नास्ते की टेबल पर सब कोई साथ में ही बैठ कर नास्ता कर रहा था। किचेन में हरिया काका की बीवी केशरमाँ और रौनक की मॉ ने नास्ता तैयार किया था। मैं अपनी गीता बुआ से ठीक तरह से मिला। उन्होंने मुझे अपने सीने से लगा कर बहुत प्यार दिया और हमेशा खुश रहने की दुवाएं दी।

साक्षी दीदी ने बताया कि आज अपर्णा चाची भी बच्चों के साथ यहीं आ रही हैं। उनको सुरक्षा पूर्वक यहॉ पर लाने की जिम्मेदारी खुद साक्षी दीदी ने ही ली। हलॉकि मैने उन्हें समझाया भी कि आप आराम से ड्यूटी जाइये, मैं और अमर अपर्णा चाची को उनके बच्चों के साथ सुरक्षित यहॉ ले आएंगे, मगर दीदी नहीं मानी। इस लिए मैने भी ज्यादा ज़ोर नहीं दिया। दीदी ने मुझे यहीं पर आराम करने की सलाह दी थी। हलॉकि मैं चाहता था कि मैं एक बार प्राची के घर जाऊँ और उसके मॉम डैड का हाल चाल देख लूँ मगर साक्षी दीदी ने कहा कि वो सब देख सुन लेंगी।

नास्ता करने के बाद साक्षी दीदी अपनी पुलिस जिप्सी में बैठ कर थाने चली गईं। गीता बुआ, आशा दीदी और रौनक की मॉ ये तीनो एक साथ ही बातें करने में लग गईं। जबकि मैं रौनक और अमर फार्महाउस के बाहर की तरफ आ गए। मैने देखा कि फार्महाउस काफी लंबा चौड़ा था। बाहर फ्रंट गेट पर दो बंदूखधारी खड़े थे। गेट के बगल से ही एक छोटी सी चौकी बनी हुई थी। जो शायद उन दोनो बंदूखधारियों के आराम करने के लिए थी।

हम तीनो एक साथ बॉई तरफ बढ़ गये। उस तरफ एक सुंदर सा पेड़ था जिसके नीचे हरी हरी घास उगी हुई थी तथा पेड़ के पास ही स्टील की बड़ी बड़ी दो तीन बेंच रखी हुई थी बैठने के लिए। हम तीनो जाकर उन बेंचों पर बैठ गए। कल प्राची वाले मैटर के बाद से हम तीनो कुछ बुझे बुझे से थे। मुझे रह रह कर प्राची के बारे में वो सब याद आ जाता था जिसकी वजह से मेरा दिल दुखने लगता था।

" वैसे विक्रम। " सहसा अमर ने कहा __" हम यहॉ से कब निकलने वाले हैं ? ये जो कुछ भी हुआ वो यकीनन बहुत दुखद हुआ है मगर ये भी सच है दोस्त कि हमें जीवन में आगे बढ़ना ही होता है। ये सब तुम्हीं ने मुझसे कहा था न ? इस लिए दोस्त प्राची की खूबसूरत यादों को दिल में ही दबा के रखो और आगे बढ़ो। "

" मैं जानता हूँ अमर। " मैने भारी मन से कहा __" मुझे पता है कि इस सबको लेकर बैठ जाने का कोई मतलब नहीं निकलने वाला है। मगर एक दो दिन मैं यहीं रह कर खुद को और अपने दिल को शान्त कर लेना चाहता हूँ। मैं नहीं चाहता कि मेरे चेहरे पर छाई उदासी या किसी दुख के भाव को देख कर मुंबई में मेरी मॉ और बहन को कुछ पता चल जाए। वो मुझे किसी भी कीमत पर दुखी नहीं देख सकती हैं। "

" बात तो तुम्हारी ठीक है दोस्त। " अमर ने कहा _" पर ये भी तो सोचो कि यहॉ पर ज्यादा दिन तुम्हारा रुकना ठीक नहीं है। तुम्हारी जान को हर वक्त ख़तरा बना रहेगा। "

" मैं किसी ख़तरे से नहीं डरता अमर। " सहसा मेरे चेहरे पर कठोरता आ गई __" पहले मुझे कुछ पता नहीं था और मैं किसी दूसरे उद्देश्य से यहाँ आया था इस लिए मैं सत्यम सिंह या उसके आदमियों से उलझना नहीं चाहता था। मगर अब मुझे किसी की कोई परवाह नहीं है। मैं भी तो देखूँ कि सत्यम सिंह कैसे मेरा बाल बाँका करता है ?"

" ये सब तुम आवेश में कह रहे हो दोस्त। " अमर ने कहा __" जबकि तुम भूल रहे हो कि इस वक्त तुम्हारी कई कमज़ोरियाँ तुम्हारे साथ साथ हैं। अगर तुम अकेले होते तो मान सकता था कि तुम धड़ल्ले के साथ उन सबका मुकाबला कर लेते मगर इस वक्त तुम अकेले नहीं हो। रौनक और उसकी माँ बहन भी तुम्हारे साथ हैं और तुम्हारे सुंदर चाचा के बीवी बच्चे भी तुम्हारे साथ तुम्हारी कमज़ोरी के रूप में जुड़ जाएँगे। उस सूरत में तुम खुद की सुरक्षा करोगे या उन लोगों की जो इस वक्त तुम्हारे साथ जुड़ गए हैं ?"

" अमर सही कह रहा है विक्रम। " रौनक ने भी हस्ताक्षेप किया __" इस वक्त तुम किसी से उलझने की पोजीशन में नहीं हो। दूसरी बात ये भी है कि मान लो अगर तुम्हारे बड़े पापा को ये पता चल गया कि तुम्हारे हर काम में तुम्हारी मदद साक्षी दीदी भी कर रही हैं तो सोचो क्या होगा ? अरे साक्षी दीदी के लिए भी उनका ख़तरा हो जाएगा। भला सत्यम चाचा ये कैसे बरदाश्त कर पाएँगे कि उनकी बेटी उनके सबसे बड़े दुश्मन का साथ दे रही है ? जिस तरह का कैरेक्टर तुम्हारे बड़े पापा का है उससे यही बात सामने आती है कि वो ये सब जानने के बाद अपनी बेटी को किसी भी सूरत में माफ़ नहीं करेंगे। "

" मैं रौनक की इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ। " अमर ने कहा __" तुम अपनी वजह से भला अपनी साक्षी दीदी की जान को भी संकट में कैसे डाल सकते हो ? उनके हित के बारे में सोचना तुम्हारा सबसे बड़ा फर्ज़ होना चाहिए दोस्त। उन्होंने तुम्हारी सुरक्षा के लिए क्या कुछ नहीं किया है ?"

" कभी कभी वक्त और हालात के हिसाब से भी कोई फैंसला लेना चाहिए विक्रम। " रौनक ने कहा __" प्राची के जाने का दुख हम सबको है मगर खुद प्राची भी ये नहीं चाहेगी कि तुम पर या तुम्हारी वजह से किसी और पर कोई ऐसा संकट आए। इस लिए मैं यही कहूँगा कि जितना जल्दी हो सके हमें यहाँ से निकल जाना चाहिए। मैं तुम्हें जंग के लिए नहीं रोक रहा भाई , वो तो तसल्ली से और सबको सुरक्षित करने के बाद भी की जा सकती है। "

" ठीक है यार। " मैने उन दोनो की बातों पर विचार करते हुए कहा __" जैसा तुम दोनो कहोगे मैं वैसा ही करू गा। हम सब कल ही यहाँ से मुंबई के लिए निकलेंगे। सबकी टिकटों का इंतजाम करवाता हूँ मैं। "

" उसकी ज़रूरत नहीं है दोस्त। " अमर ने कहा _" सबकी टिकटों का इंतजाम हो गया है। मैने कल ही सर(उमाकांत पाटिल) से बात की थी। उन्हें मैने यहाँ कुछ बातें संक्षेप में बताई थी , और ये भी कहा था कि वो हम सबकी टिकटों का इंतजाम करवा दें। आज सुबह मेरे मोबाइल पर उन्होंने सबकी टिकट की पिक व्हाट्सएप पर भेज दी हैं। "

" चलो ये अच्छा हुआ। " मैने कहा __" लेकिन एक बात अभी भी सोचने वाली है। वो ये कि देर सवेर सत्यम सिंह को ये पता चल भी सकता है कि साक्षी दीदी मेरी हर तरह से मदद कर रही थी। इस लिए अगर ऐसा हुआ तो साक्षी दीदी के लिए भी ख़तरा हो सकता है। "

" तो तुम अब क्या चाहते हो ?" अमर ने पूछा।

" मैं तो यही चाहूँगा यार कि साक्षी दीदी पर कोई संकट न आए। " मैने कहा __" हलाँकि वो एक पुलिस ऑफिसर हैं और किसी भी ख़तरे से निपटने के लिए वो खुद ही सक्षम हैं मगर फिर भी उन्हें यहाँ अकेला छोंड़ देने का मेरा दिल नहीं करता है। दूसरी बात उनके साथ गीता बुआ भी तो हैं। साक्षी दीदी के साथ वो भी तो सत्यम सिंह के लपेटे में आ सकती हैं। "

" मेरे ख़याल से इस में इतना सोच विचार करने की ज़रूरत नहीं है विक्रम। " रौनक ने कहा __" साक्षी दीदी के रहते ये सब हो जाने का चान्स बहुत ही कम है। फिर भी अगर उन्हें लगेगा कि उन दोनो पर ख़तरा है तो वो अपनी सुरक्षा के लिए अपने आला अधिकारियों से पुलिस प्रोटेक्शन भी ले सकती हैं। मुझे यकीन है कि सत्यम चाचा उस सूरत में उनका और गीता बुआ का कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे। "

" यस रौनक इज राइट। " अमर ने कहा __" इस लिए तुम्हें साक्षी दीदी और गीता बुआ की फिक्र नहीं करनी चाहिए। "

" ठीक है भाई। " मैने गहरी सास ली __" तो फाइनल हो गया कि हम सब कल यहाँ से मुंबई के लिए निकल लेंगे। "

मेरी इस बात से रौनक और अमर मुस्कुरा कर रह गए। मैंने इधर उधर नज़रें घुमाई तो मेरी नज़र फार्महाउस के गेट पर खड़े दोनो बंदूखधारियों पर पड़ी। वो दोनो हँस हँस के कुछ बातें कर रहे थे। एक व्यक्ति दूसरे वाले की पीठ भी ठोंक रहा था। मुझे समझ न आया कि ये दोनो ऐसी कौन सी बात पर हँस रहे हैं और दूसरा उसकी पीठ ठोंक रहा है।

ख़ैर, कुछ देर तक हम वहीं बेंच पर बैठे रहे। उसके बाद हम तीनो उठे और वापस अंदर की तरफ बढ़ने लगे। अभी मैं दो चार क़दम ही आगे बढ़ा था कि उन दो बंदूखधारियों में से एक उससे कुछ बोला और फिर एक बार हम तीनों की तरफ सरसरी नज़र से देखा। उसके बाद वो मुस्कुराते हुए ही फार्महाउस के बाएँ साइड बने एक अलग दरवाजे की तरफ बढ़ गया। मेरी नज़र बराबर उसी पर थी, वो आदमी उस दरवाजे के पास पहुँच कर एक बार पहले वाले आदमी की तरफ मुस्कुरा कर देखा उसके बाद दरवाजे के अंदर दाखिल हो गया। मेरे मन में उसकी इन सब क्रियाओं से संदेह पैदा हो गया।

मुख्य द्वार के पास पहुँचते ही मैने रौनक और अमर को अंदर जाने का कह दिया और खुद बाहर ही थोड़ी देर बैठने का बोल कर वहीं खड़ा रह गया। मेरे कहने पर रौनक और अमर दोनो ने मुझे अजीब भाव से देखा तो मैने अपनी पलकें झपका कर उन्हें तसल्ली रखने का इशारा किया। मेरे इस इशारे से वो दोनो अंदर की तरफ बढ़ गए। उनके जाने के कुछ देर बाद ही मैंने

पहले वाले की तरफ देखा तो वो मुझे गेट के पास बनी चौकी की तरफ मुड़ कर हाथो में खैनी मलता नज़र आया। मैं बड़ी तेज़ी से उस दरवाजे की तरफ बढ़ गया जिस तरफ वो दूसरा आदमी गया था।

दरवाजे के पास पहुॅच कर मैने आहिस्ता से दरवाजे को अंदर की तरफ धकेला तो वो हल्की सी आवाज़ के साथ खुल गया। दरवाजे के खुलते ही मैं उसके अंदर दाखिल हो गया। अंदर आते ही मैने इधर उधर देखा तो मुझे दाईं तरफ एक गैलरी दिखी तो मैं उस गैलरी में आगे की तरफ बढ़ चला। कुछ ही दूरी पर मुझे एक कमरा नज़र आया जिसका दरवाजा हल्का सा खुला हुआ था। मैं उस खुले हुए दरवाजे के पास पहुॅच कर उसके खुले हुए भाग से अंदर की तरफ का मुआयना किया और फिर दरवाजे को खोल कर अंदर की तरफ दाखिल हो गया।

इस कमरे में मध्यम सी रोशनी थी। बाईं तरफ एक ऐसा दरवाजा नज़र आया जैसा कि वो किसी ऐसे वोल्ट का हो जिसके अंदर सरकार का बहुत सारा गोल्ड रखा गया हो। ये देख कर मेरे चेहरे पर नासमझने वाले भाव उभरे। उत्सुकतावश मैं उस दरवाजे की तरफ बढ़ गया। दरवाजे के पास पहुॅच कर मैने ध्यान से उस दरवाजे को देखा तो पता चला कि ये दरवाजा किसी मोटे लोहे से बना बहुत ही मजबूत दरवाजा है। किन्तु मैने देखा कि एक ही तरफ खुलने वाले उस दरवाजे पर भी हल्की सी झिरी थी। इसका मतलब वो आदमी जो अंदर आया था वो इसके अंदर ही गया है।

मेरा दिल ने अनायास ही किसी अंजानी आशंकावश ज़रा तेज़ी से धड़कना शुरू कर दिया था। मैने उस झिरी पर अपने कान सटा दिये। मैं अंदर की आवाज़ सुनने की कोशिश कर रहा था मगर मैं उस वक्त चौंका जब अंदर से किसी के ज़ोर से चीखने की आवाज़ आई। अंदर की तरफ किसी चीख़ की आवाज़ से मेरा दिमाग़ घूम गया। मैंने बिना कुछ सोचे समझे दरवाजे को हाथ बढ़ा कर खोल दिया और अंदर की तरफ बढ़ा ही था कि अचानक ही मैं एकदम से रुक गया। कारण दरवाजे के अंदर तीन फुट की दूरी पर ही सीढ़ियॉ बनी हुई थी जो कि नीचे की तरफ जा रही थी। इसका मतलब ये कोई तहखाना था।

इस फार्महाउस पर किसी तहखाने के मौजूद होने का देख कर ही मैं सोच में पड़ गया। ख़ैर, मैने खुद को संभाला और नीचे की तरफ जा रही सीढ़ियों पर उतरता चला गया। नीचे तहखाने में एक अलग ही नज़ारा दिखा मुझे। जिसे देख कर मैं भौचक्का सा रह गया था।

उस वक्त दोपहर के एक बज रहे थे जब साक्षी अपनी पुलिस जिप्सी में बैठी हवेली पहुॅची थी। यहाॅ पर वो आना तो नहीं चाहती थी किन्तु वो ये नहीं चाहती थी कि उसके न आने से उसके मॉम डैड उसके बारे में कोई अलग धारणा बना बैठें। वो इस बात को बखूबी समझती थी कि बहुत जल्द ऐसा कुछ होने वाला है जिससे हवेली का हर व्यक्ति दहल जाएगा। वो आने वाले उस समय के लिए खुद को पूरी तरह तैयार कर चुकी थी।

जिप्सी से उतर कर साक्षी हाथ में पुलिसिया रुल लिए मुख्य द्वार की तरफ बढ़ चली। दरवाजे के पास पहुॅच कर उसने बंद दरवाजे को उसकी कुंडी से पकड़ कर बजाया। कुछ ही देर में दरवाजा खुला तो उसे अपने सामने जयदीप खड़ा नज़र आया। जयदीप पर नज़र पड़ते ही उसके चेहरे पर अप्रिय भाव उभरे मगर तुरंत ही उसने उन भावों को दबा कर दरवाजे के अंदर की तरफ बढ़ गई।

कुछ ही पलों में वो ड्राइंग रूम में पहुॅच गई। ड्राइंग रूम में इस वक्त अपने डैड सत्यम सिंह को बैठे देख वो मन ही मन चौंकी। बगल के सोफे पर सोनिया भी बैठी थी। साक्षी ने खुद को एकदम से नार्मल दर्शाते हुए एक अलग सोफे पर बैठ कर सत्यम सिंह की तरफ देखा, फिर बोली_"कैसे हैं डैड? आज आप फैक्ट्री नहीं गए?"

" हॉ वो आज ज़रा थोड़ा लेट ही जाना था न। " सत्यम सिंह ने कहा __" इस लिए सुबह नहीं गया। ख़ैर , छोड़ो ये बताओ तुम्हें भी हमारी कुछ ख़ैर ख़बर रहती है कि नहीं ?"

" आप ऐसा क्यों कह रहे हैं डैड ?" साक्षी ने हैरानी ज़ाहिर करते हुए कहा __" भला आपकी ख़ैर ख़बर क्यों नहीं होगी मुझे ?"

" अब ये तो तुम ही जानो बेटा। " सत्यम सिंह ने अजीब भाव से कहा __" क्योंकि पिछले कुछ समय से हर चीज़ बदली हुई नज़र आ रही है मुझे। पता नहीं पर जाने क्यों ऐसा लगता है मुझे कि मेरे जो अपने हैं वही मुझसे दूर जा रहे हैं। "

" क्या मतलब डैड ??" साक्षी ने मन में एकाएक ही हैरत के भाव उभरे थे __" ये आज आप कैसी बाते कर रहे हैं ? कहीं आप उस दिन की बात पर तो ऐसा नहीं कह रहे जब मैने जयदीप को दो बातें सुना दी थी ?"

" वो सब तो नार्मल बात है बेटा। " सत्यम सिंह ने बेचैनी से पहलू बदला __" तुमने अपने भाई से जो कुछ कहा वो बड़ी बहन होने के नाते तुम्हारा हक़ था। "

" तो फिर और क्या बात है डैड ?" साक्षी ने कहा __" मुझे बताइये कि आपकी ऐसा क्यों लग रहा है कि आपके अपने आपसे दूर जा रहे हैं ? अगर आपका इशारा मेरी तरफ है तो ये मेरे लिए शर्म की ही बात होगी कि मेरी वजह से आपको ऐसा लगा और आपके मन को ठेस पहुॅची है। प्लीज़ डैड बताइये न कि मुझसे ऐसा क्या हो गया है जिससे आपको मेरे बारे में ऐसा लग रहा है ?"

" शायद तुम्हें इस बात का एहसास नहीं है बेटा कि मैं तुम सबसे कितना प्यार और दुलार

करता हूँ। " सत्यम सिंह ने सहसा भारी आवाज़ में कहा __" बचपन से लेकर अब तक हर वो चीज़ तुम सबके क़दमों में लाकर रखी जिन चीज़ों की तुम लोगों ने मुझसे फरमाईश की थी। इसके बावजूद मेरे प्यार में क्या कमी रह गई कि आज मेरी बेटी अपने ही मॉ बाप और भाई को बेगाना समझने लगी है ?"

सत्यम सिंह की इस बात से साक्षी तो चौंकी ही मगर अलग अलग सोफों पर बैठे दोनो मॉ बेटा भी चौंक पड़े थे। दोनो कल से पूँछ रहे थे कि क्या बताया था फोन पर उस आदमी ने मगर सत्यम सिंह ने उन दोनो के सवाल पर अब तक अपने होंठ सिले हुए थे। कदाचित वो ये सब साक्षी के आने के बाद ही उससे कहना चाहता था।

" ये आप क्या कह रहे हैं डैड ?" साक्षी ने चकित भाव से कहा __" भला मैं ऐसा क्यों समझने लगूँगी ? मैं तो इस बारे में सोच भी नहीं सकती समझने की तो बात ही दूर है। "

" मुझे भी ऐसा ही लगता था बेटी। " सत्यम सिंह ने दुखी भाव से कहा __" मैं भी यही सोचा करता था कि मेरे बच्चे ऐसा कभी सोच भी नहीं सकते। मगर ... मगर मेरी सारी सोच और सारी उम्मीदों को तोड़ दिया है तुमने। "

" नहीं डैड ऐसा मत कहिए प्लीज़। " साक्षी की ऑखें भर आईं ___" अगर आपको मेरा पुलिस की नौकरी करना अच्छा नहीं लगता है तो मैं इस नौकरी को छोंड़ दूँगी डैड। आपकी खुशी में ही मेरी खुशी है। "

" बात तुम्हारी नौकरी की नहीं है बैटा। " सत्यम सिंह ने कहा __" मुझे तुम्हारी पुलिस की नौकरी से कोई परेशानी नहीं है। यहॉ पर बात हो रही है भरोसे की , विश्वास की। मुझे बहुत भरोसा था कि मेरे बच्चे कभी भी मेरे खिलाफ़ नहीं जा सकते। मगर मेरी ये भरोसा उसी तरह टूट कर बिखर गया जैसे कीई आईना टूट कर बिखर जाता है। "

" आख़िर आप कहना क्या चाहते हैं डैड ?" साक्षी ने गंभीरता से कहा __" मैने ऐसा क्या कर दिया है जिससे आपका भरोसा टूट गया है ? मुझे बताइये डैड , अगर मुझसे कहीं कोई ग़लती हुई है तो मैं उसे सुधार लूँगी। "

" ये बात तो तुम्हें भी पता चल ही गई होगी। " सत्यम सिंह ने साक्षी के चेहरे की तरफ ज़रा गहरी नज़र से देखते हुए कहा __" कि हमारा सबसे बड़ा दुश्मन विक्रम यहॉ सोनपुर आया हुआ था ?"

" वि विक्रम ??" साक्षी ने चौंकने की लाजवाब ऐक्टिंग की , बोली __" विक्रम यहॉ आया ? ये आप क्या कह रहे है डैड ? भला वो कमीना यहॉ किस लिए आएगा ?"

" ओह , हैरत की बात है। " सत्यम सिंह ने फीकी सी मुस्कान के साथ कहा __" मतलब कि इस बारे में तुम्हें कुछ पता ही नहीं है। जबकि मेरे आदमी का स्पष्ट रूप से कहना है कि कल शाम जिस एम्बुलंस में बैठ कर विक्रम , उसका दोस्त , रौनक और रौनक की मॉ बहन अपने घर से निकले थे उस एम्बुलंस के आगे आगे एक जीप भी चल रही थी। "

" ये आप क्या कह रहे हैं डैड ?" साक्षी अंदर ही अंदर बुरी तरह घबरा गई थी , किन्तु प्रत्यक्ष में खुद को संभालते हुए कहा __" मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा। "

" मैं जिस जीप की बात कर रहा हूँ बेटा। " सत्यम सिंह ने सहसा सख्त भाव से कहा __" वो जीप असल में तुम्हारी पुलिस जिप्सी ही थी। इस गॉव में हमारे अलावा किसी और के पास ऐसी कोई जीप है ही नहीं। हमारे आदमियों का अपनी जीप में बैठ कर विक्रम की उस एम्बुलंस के आगे आगे चलने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता। फिर वो जीप किसकी हो सकती थी ? सोनपुर में ऐसी कोई जीप पुलिस थाने में सिर्फ तुम्हें मिली हुई है। अब तुम सच सच बताओ कि तुम्हारा एम्बुलंस के आगे आगे चलने का क्या मतलब था ?"

" ये तो हद हो गई डैड। " साक्षी की ऑखों से ऑसू छलक पड़े ___" आप सरासर अपनी बेटी पर इल्ज़ाम लगा रहे हैं कि उस एम्बुलंस के आगे आगे चल रही जीप में मैं थी। जबकि आप अच्छी तरह जानते हैं कि ऐसा कुछ करने के बारे में मैं सोच भी नहीं सकती हूँ। सबसे पहली बात तो मुझे यही पता नहीं था कि वो कमीना विक्रम यहॉ आया हुआ है जिसने कुछ समय पहले मेरे भाई जयदीप को बुरी तरह मारा था। अगर पता होता तो मैं उसे खोज कर सबसे पहले अपने भाई की मार का बदला लेती उससे। उसके बाद उसे आपके हवाले कर देती। और आप कह रहे हैं कि मैं वो जीप मेरी थी जो उस एम्बुलंस के आगे आगे चल रही थी। इसका मतलब तो ये हुआ डैड कि आप ये समझ रहे हैं कि मैं उस विक्रम की पुलिस प्रोटेक्शन दे रही थी। ओह माई गाड .... ऐसा कैसे सोच सकते हैं आप ? आप मुझे अपने उस आदमी से मिलवाइये डैड जिसने आपको ये ख़बर दी है। मैं उससे पूछूँगी कि उसने ये कैसे समझ लिया उस जीप में थी ?"

साक्षी की इस बात से सत्यम सिंह का दिमाग़ चकरा गया। उसे समझ न आया कि वो किसकी बात पर यकीन करे? अपने उस आदमी की बात पर या अपनी बेटी की बातों पर? ये तो सच बात थी कि उसके आदमी को भी पक्के तौर पर ये पता नहीं चल पाया था कि उस जीप में कौन बैठा था। उसने भी यही सोच कर अनुमान में ही सत्यम से बताया था कि उस जीप में शायद उसकी बेटी साक्षी थी। क्योंकि यहॉ पर सत्यम सिंह के अलावा अगर किही और के पास कोई जीप थी तो वो सिर्फ पुलिस इंस्पेक्टर साक्षी के पास। सत्यम सिंह के आदमी ने यही सोच कर उसे बताया था। पक्के तौर पर उसे भी पता नहीं था। दूसरी बात वो खुद जानता था कि साक्षी विक्रम को प्रोटेक्ट करने जैसा काम कर ही नहीं सकती थी क्योंकि वो विक्रम से कभी कोई मतलब ही नहीं रखती थी। विक्रम का ज़िक्र आते ही उसके अंदर गुस्सा भर जाता था।

साक्षी ने ये सब बातें जिस आत्मविश्वास और भावपूर्ण लहजे में कही थी उससे सत्यम सिंह को यही लगा कि साक्षी सच कह रही है। मगर उसके मन में अपने आदमी की भी बातें चल रही थी। इस लिए वो समझ नहीं पा रहा था कि कौन सच बोल रहा है?

" इस बात पर तो मैं भी यकीन नहीं कर सकती सत्यम कि साक्षी विक्रम को प्रटेक्ट करने वाला काम करेगी। " सहसा इस बीच सोनिया ने भी कहा __" मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम अपने आदमी की उस बात पर यकीन कैसे कर सकते हो ? क्या उसने अपनी ऑखों से

देखा था कि उस जीप पर साक्षी ही बैठी थी या फिर ये बात किसी ने पक्के तौर पर पूछने पर किसी ने उसे बताई थी ?"

" मॉम , ऐसा संभव ही नहीं है। " साक्षी ने अपनी मॉ की तरफ देख कर कहा __" मैं सिर पटक कर मर जाना पसंद करू गी मगर उस कमीने को प्रोटेक्ट करने के बारे में सोचूँगी भी नहीं। पता नहीं कैसे उस आदमी की उन फिज़ूल बातों पर यकीन कर लिया डैड ने ? क्या आपने अपनी बेटी को इतना ही जाना समझा है डैड ?"

" पर बेटा ग़लत वो भी तो नहीं है न। " सत्यम सिंह ने बात को संभालते हुए कहा __" उसने ये सब सिर्फ इसी लिए कहा क्योंकि इस गॉव में हमारे अलावा सिर्फ तुम्हारे ही पास पुलिस की जीप है। इस लिए उसने सोचा कि शायद तुम ही थी उस एम्बुलंस के आगे। "

" कमाल है डैड। " साक्षी ने मन ही मन राहत की सास लेते हुए कहा __" आप पढ़े लिखे और वकालत कर चुके होने के बावजूद भी इतना नहीं सोच सके कि अगर इस गॉव में किसी के पास जीप नहीं तो क्या उसे कहीं भी जीप नहीं मिलती ? ऐसा भी तो हो सकता है कि उस विक्रम ने शहर से ही किसी जीप को किराये पर हायर किया रहा होगा। "

" चलो मान लिया बेटा कि वो कमबख्त उस जीप को शहर से किराये पर ले आया होगा। " सत्यम सिंह ने कहने के साथ ही सिगार सुलगा लिया था , बोला __" मगर उसे लाने की भला क्या ज़रूरत थी ? जबकि उसे इस बात का बखूबी अंदाज़ा था कि जीप में वो कहीं हमारे आदमियों द्वारा पकड़ा जा सकता है। एम्बुलंस तो उसके लिए सबसे बढ़िया और सुरक्षित वाहन था , जिसमें वो सबको बैठा कर बड़े आराम से सोनपुर से निकल जाता। तो फिर अलग से जीप हायर करने का क्या मतलब हो सकता है भला ?"

" आपकी ये बात यकीनन काबिले ग़ौर है डैड। " साक्षी ने सोचने वाले भाव से कहा __" अलग से किसी जीप को हायर करना यकीनन बेवकूफी वाली बात है। मगर मौजूदा हालात में क्या वो ऐसी बेवकूफी कर सकता है ?"

" यही तो सोचने वाली बात है बेटा। " सत्यम सिंह ने सिगार का कश लेने के बाद उसका धुऑ ऊपर छोंड़ते हुए कहा __" उससे ऐसी बेवकूफी की उम्मीद हर्गिज़ भी नहीं की जा सकती। मगर ये तो सच है न कि उसके आगे आगे जीप चल रही थी। "

" हो सकता है कि ऐसा उसने किसी विशेष प्लान के तहत किया हो डैड। " साक्षी ने अपने चेहरे पर गहन सोच के भाव दर्शाते हुए कहा __" ये तो आप भी जानते हैं डैड कि वो आपसे खुल कर टकराने की हिम्मत नहीं कर सकता। इस लिए उसने सोचा होगा कि वो हमारे बीच किसी प्रकार की दरार या अविश्वास पैदा कर देगा। उससे होगा ये कि हम आपस में ही एक दूसरे से उलझने लगेंगे। जबकि वो अपना काम करके निकल जाएगा। "

" बात कुछ समझ में नहीं आई बेटी। " सोनिया के माथे पर सिलवॅटें उभर आई __" हमारे बीच वो भला कैसे दरार या अविश्वास पैदा कर सकता है ?"

" ठीक वैसे ही मॉम। " साक्षी ने कहा __" जैसे अभी कुछ देर पहले डैड के मन में अपनी

बेटी के प्रति हो गया था। ज़रा सोचिए मॉम __ ये तो उसे भी पता ही था कि अलग से जीप हायर करने का कोई मतलब नहीं है जबकि एम्बुलंस में वो सबको लेकर बड़ी आसानी से यहॉ से निकल ही जाता। मगर इसके बाद भी उसने ऐसा किया। मतलब कि उसने अलग से एक जीप इस लिए हायर की ताकि जब आपको उसके यहॉ से जाने का पता चले तो आपके आदमी उसका पता करके आपको उसके बारे में विस्तार से बताएॅ। यानी वो आपको बताएॅ कि एम्बुलंस में तो वो अपने साथ सबको लिए बैठा ही था किन्तु उसके आगे आगे अलग से एक जीप भी चल रही थी। जीप का सुन कर आप या आपके आदमी यही सोच बैठेंगे कि जीप तो आपके अलावा सिर्फ मेरे ही पास है , इस लिए उस जीप में मैं ही थी जो उस एम्बुलंस के आगे आगे चल रही थी। आप ये जानते हुए भी कि आपकी बेटी ऐसा करने का सोच भी नहीं सकती है , ऐसा सोच बैठेंगे और बाद में आप मुझ पर शक़ करते हुए मुझसे इसके बारे में ऐसा सब कुछ कहने लगेंगे या पूछने लगेंगे। यही उसका प्लान हो सकता था डैड। अब आप ही बताइये क्या ऐसा नहीं हो सकता ?"

साक्षी की बातें सुन कर सत्यम तो सत्यम बल्कि खुद को दिमाग़ की सूरमा समझने वाली सोनिया भी आश्चर्य चकित रह गई थी। दोनो ही मियॉ बीवी अपनी इंस्पेक्टर बेटी की तरफ ऐसी नज़रों से देखने लगे थे जैसे साक्षी के सिर पर अचानक ही आगरा का ताजमहल आकर कत्थक करने लगा हो। काफी देर तक दोनो के मुख से कोई बोल न फूटा था। फिर जैसे उन दोनो को होश आया। वस्तुस्थित का एहसास होते ही दोनो के चेहरों पर अपनी बेटी की बुद्धि पर प्रशंसा के भाव उभर आए।

" अगर वो वैसा ही कर सकता है जैसा कि तुमने अभी बताया मुझे। " सत्यम सिंह ने गहरी सास ली __" तो फिर यकीनन उसके दिमाग़ की दाद देनी पड़ेगी। हलॉकि मुझे पहली बार में अभी भी यकीन नहीं हो रहा कि वो ऐसा सोच सकता है मगर वर्तमान में मैने उसके बारे में जितना विचार किया है उससे यही पता चला है कि यकीनन वो ऐसा सोच भी सकता है और कर भी सकता है। "

" लेकिन डैड वो कमीना यहॉ आया किस लिए है ?" साक्षी ने जानबूझ कर ऐसा सवाल किया __" और आपको कैसे पता चला कि वो यहॉ आया है ?"

" हमारी हज़ारों ऑखें हैं बेटी। " सत्यम सिंह ने बड़े गर्व से कहा __" हमें सबकी ख़बर होती है। ख़ैर छोंड़ो ये सब। जाओ तुम भी आराम कर लो। पता नहीं कहॉ कहॉ ड्यूटी के चक्कर में घूमती रहती हो तुम ? बेटा कुछ अपना भी ख़याल रखा करो। हमे हर वक्त तुम्हारी फिक्र रहती है। "

" जी डैड। " साक्षी ने कहने के साथ ही सोफे से उठ कर खड़ी हो गई __" पर आप तो जानते हैं न कि पुलिस की नौकरी का कोई टाइम टेबल नहीं होता। इस लिए कहीं न कहीं तो भटकना ही पड़ता है। "

ये कहने के साथ ही साक्षी लंबे लंबे क़दम बढ़ाती हुई अपने कमरे की तरफ बढ़ गई। जबकि

वो तीनो उसे जाते हुए देखते रह गए। उसके जाने के बाद सत्यम सिंह ने एक नया सिगार सुलगा लिया और उसके दो तीन गहरे गहरे कश लेने के बाद उसका धुआँ ऊपर की तरफ उछाल दिया। चेहरे पर सोचो के भाव गर्दिश करते नज़र आने लगे थे उसके।

" तुम्हें क्या लगता है सत्यम ?" सहसा सोनिया ने उसके चेहरे के भावों को पढ़ते हुए कहा __" साक्षी की बातों में कितनी सच्चाई है ?"

" मतलब तुम्हें भी इस बात का शक है कि हमारी बेटी हमसे झूँठ बोल रही है ?" सत्यम सिंह ने भावहीन स्वर में कहा __" ये भी कि उसने बड़ी सफाई से अपनी बात साबित भी कर दी। "

" ये बात तो मैं तुमसे पूछ रही हूँ डियर। " सोनिया ने पहलू बदला __" तुमने ही तो उससे कहा था कि जीप में वही बैठी थी ऐसा तुम्हारे आदमी ने फोन पर तुमसे कहा था। अब जबकि साक्षी ने अपनी सफाई दे दी है तो तुम्हें क्या लगता है अब ?"

" मुझे यकीन तो नहीं हो रहा सोनिया कि साक्षी ने विक्रम को प्रोटेक्ट किया होगा। " सत्यम सिंह ने कहा __" मगर उसके बदले हुए बिहैवियर की वजह से ऐसा सोचने पर मजबूर भी हो गया हूँ। उसकी बातों में कितनी सच्चाई है इसका पता लगाना भी ज़रूरी है। इस लिए मैने सोच लिया है कि उस पर नज़र रखने के लिए अपने किसी आदमी को उसके पीछे लगा दूँगा। इससे कोई न कोई सच्चाई तो पता चल ही जाएगी हमे। "

" हाँ ये सही सोचा है तुमने। " सोनिया ने कहा __" इससे दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा। ख़ैर , छोंड़ो ये सब। मेरा तो इस सबसे बहुत सिर दर्द कर रहा है अब। इस लिए मैं जा रही हूँ अपने कमरे में। "

" ठीक है डियर। " सत्यम सिंह ने सोफे से उठते हुए कहा __" मैं भी फैक्ट्री के लिए निकल रहा हूँ। "

ये कह कर सत्यम सिंह बाहर की तरफ बढ़ गया। उसके जाते ही सोनिया ने जयदीप की तरफ गहरी नज़रों से देखा और मुस्कुरा दी। जयदीप उसकी मुस्कुराहट का मतलब समझ कर खुद भी मुस्कुरा उठा। सोनिया सोफे से उठ कर अपने कमरे की तरफ बढ़ गई। उसके जाने के कुछ देर बाद जयदीप भी उसी कमरे की तरफ बढ़ गया था।

५६

तहखाने के अंदर का नज़ारा ही कुछ अलग था जिसे मैं ऑखें फाड़े अपलक देखे जा रहा था। कुछ देर के लिए तो जैसे मेरा दिमाग़ ही बंद पड़ गया था। तहखाने के अंदर चारो तरफ छत पर लगे सफेद एल ई डी बल्बों की तीव्र रोशनी थी। अंदर मौजूद एक एक चीज़ स्पष्ट देखी जा सकती थी। किन्तु मेरी ऑखें जिस नज़ारे को देख कर हैरत से फट गई थी वो कुछ अलग ही किस्म का था। राइट साइड की दीवार से सटे हुए चार लड़के थे। उन चारों लड़कों के दोनो हाथ मजबूत रस्सी से बॅधे हुए जो कि ऊपर ही उठे हुए थे। चारों लड़कों जिस्म पर इस वक्त कपड़े का कोई रेसा तक न था बल्कि वो चारो जन्मजात नंगे थे। उन चारों की शक्ल सूरत से ही पता चल रहा था कि उन चारों ने यहॉ कितनी दर्दनाक यातनाएॅ सही होंगी।

बाहर से तहखाने में आया हुआ वो आदमी भी इस वक्त पूरी तरह नंगा था और उन चारों में से एक लड़के को उसके सिर के बालों से मजबूती से पकड़ कर अपने लिंग पर झुकाया हुआ था। मैं साफ देख रहा था कि वो आदमी उस लड़के के मुख में अपने लिंग को ज़बरदस्ती डाले अपनी कमर को आगे पीछे कर रहा था। उसका सिर ऊपर की तरफ था और उसकी दोनो ऑखें मज़े में बंद थी।

ये सब देख कर मेरा दिमाग़ कुछ देर के लिए हैंग सा हो गया था। फिर जैसे मुझे होश आया। मेरे अंदर क्रोध और गुस्से की आग बिजली की सी तेज़ी से बढ़ती चली गई। मेरे जबड़े कस गए और मुट्ठिया भिंच गई। मैं तेज़ी से बढ़ते हुए उस आदमी के पास पहुॅचा और अपनी पूरी शक्ति से एक लात उसके बाजू में जड़ दी। परिणामस्वरूप वो आदमी उछलते हुए पीछे की दीवार से टकराया और फिर भरभरा कर नीचे तहखाने के पक्के फर्श पर गिरा। उसके हलक से दर्द में डूबी हुई चीख़ निकल गई थी।

फर्श पड़ा वो आदमी बुरी तरह कराहने लगा था। उसकी दोनो टॉगें आपस में जुड़ कर मुड़ गई थी और उसके दोनो हाथ उसकी टॉगों के बीच उसके प्राइवेट पार्ट पर थे। मुझे समझते देर नहीं लगी कि अचानक हुए इस हमले से उसका जो प्राइवेट पार्ट उस लड़के के मुख में था वो झटके से निकल गया था और झटके से निकलने से शायद उसके प्राइवेट पार्ट में उस लड़के के दॉत गड़ गए होंगे या फिर दॉतों से उसका लिंग छिल गया होगा।

इधर अचानक हुए इस हमले से वो लड़का भी फर्श पर लुढ़क कर गिर गया था, और बाकी के तीन लड़के जो दीवार से सटे रस्सियों में बॅधे खड़े थे वो इस सबसे बुरी तरह घबरा गए थे। मेरे अंदर गुस्से की आग धधक रही थी इस लिए उस आदमी को एक लात जड़ने के बाद मैं उसकी तरफ बढ़ा और झुक कर उसके सिर के बालों को पकड़ कर उसे झटके से उठा लिया। वो आदमी फिर से दर्द में कराह उठा। अभी वो सम्हला भी नहीं था कि मैने एक पंच उसके चेहरे पर जड़ दिया जिससे वो फिर से उछलते हुए दूर जाकर गिरा। मैने इतने पर ही बस नहीं किया बल्कि मैंने तो उसकी धुनाई में कोई कसर ही नहीं छोंड़ी। वो खुद भी अपने हाथ पैर चला रहा था मगर उसकी मेरे सामने एक नहीं चल रही थी। कुछ ही देर में वो अधमरी हालत में पहुॅच

गया था। जब मैने देखा कि वो फर्श पर पड़ा अब हिल डुल भी नहीं रहा है तो मैने उसे मारना बंद कर दिया।

मुझे उस पर इस लिए इतना गुस्सा आया हुआ था कि वो उस लड़के के साथ ज़बरदस्ती इतना घिनौना काम कर रहा था। मैं ये भी समझ चुका था कि वो ये काम उस लड़के के अलावा बाकी उन तीनों के साथ भी करता होगा। बस इसी बात पर मुझे उसके ऊपर इतना गुस्सा आया था और मैने उसे मारते मारते अधमरा कर दिया था।

उस आदमी के शान्त पड़ने के बाद मैने अपने गुस्से को काबू करने की कोशिश की और फिर तेज़ी से पलटा। मेरी नज़र फर्श पर गिरे उस लड़के पर पड़ी जिसके साथ वो आदमी वो घिनौना काम कर रहा था। मैने देखा कि वो लड़का बुरी तरह डर से कॉप रहा था। मुझे उस पर बड़ा तरस आया और उसकी हालत देख कर उस आदमी पर फिर से गुस्सा आ गया। मगर मैने अपने गुस्से को काबू किया और उस लड़के के पास उकड़ू होकर बैठ गया।

" कौन है ये आदमी ?" मैने उस लड़के से पूँछा __" और वो तुम्हारे साथ इतना घिनौना काम क्यों कर रहा था ? मुझे सब कुछ साफ साफ बताओ। "

वो लड़का मेरी ये बात सुन कर कुछ न बोला बल्कि डरी सहमी हुई ऑखों से देखते रहा मुझे। मैं समझ गया कि इन चारों को उस आदमी ने इतना डरा दिया है कि ये लोग अपनी ज़ुबान तक नहीं खोल पा रहे हैं। इस बात पर मुझे उस आदमी पर फिर से बड़ा तेज़ गुस्सा आ गया। मैने अपनी ऑखें बंद कर अपने गुस्से को शान्त किया।

" देखो अब तुम्हें किसी से डरने की कोई ज़रूरत नहीं है समझे ?" मैने उससे ज़रा अपनापन दिखाते हुए कहा _" तुम मुझे सब कुछ साफ साफ बताओ कि ये आदमी तुम लोगों के साथ ये सब क्यों कर रहा था और तुम लोग इस तहखाने में कब से कैद हो ?"

" प् प्लीज़ हमें बचा लीजिए। " सहसा उस लड़के की ऑखों से ऑसू छलछला आए और वो बुरी तरह रोते हुए बोल पड़ा __" हमें इस नर्क से निकाल दीजिए। इस आदमी ने हम चारो को बहुत बुरी तरह से टार्चर किया है। ये हर रोज़ दिन में चार बार आता है और हमारे साथ यही सब घिनौना काम करके चला जाता है। हम चारो इससे अपने किये की लाखों दफा माफी मॉग चुके हैं मगर फिर भी ये आदमी हमारे साथ ये सुलूक करता है। प्लीज़ हमे इस आदमी से बचा लीजिए। हमें यहॉ से निकाल कर हमें हमारे घर जाने दीजिए। हम आपके पैर पकड़ते हैं , प्लीज़ प्लीज़। "

उस लड़के का ये रुदन देख कर मैं अंदर तक कॉप गया। मैं इस बात की कल्पना कर सकता था कि इन चारों के साथ किस हद तक उस आदमी ने अत्याचार किया होगा। किन्तु सहसा मेरे मन में सवाल उभरा कि वो आदमी इन लोगों के साथ ये सब किस वजह से कर रहा है? जबकि ये फार्महाउस उसका नहीं बल्कि साक्षी दीदी का है? क्या साक्षी दीदी को इस सबका पता है? या फिर ये सब उनकी जानकारी में ही हो रहा है? नहीं नहीं, साक्षी दीदी ऐसे घिनौने

काम का सोच भी नहीं सकती हैं। तो फिर उनके फार्महाउस के तहखाने में ये सब कैसे हो सकता है? मेरे मन में हज़ारों सवाल एक साथ आकर खड़े हो गए। मगर जवाब किसी का भी नहीं था मेरे पास।

" मैने तुमसे जो कुछ पूछा है उसका सही सही जवाब दो पहले। " मैने उस लड़के से कहा __" आख़िर किस वजह से ये सब तुम लोगों के साथ कर रहा है वो आदमी ? तुम सब कुछ मुझे साफ साफ बताओ। और हॉ किसी से डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। तुमने देखा है न कि मैने कैसे उस आदमी का दो मिनट में काम तमाम कर दिया है ? इस लिए तुम अब बेफिक्र रहो कि कोई तुम पर अब दुबारा ऐसा कर सकेगा। मैं तुम्हें यहॉ से निकाल कर तुम लोगों को घर भी भेजवा दूँगा। मगर उससे पहले तुम मुझे बताओ कि ये सब क्यों हो रहा है तुम लोगों साथ ? ऐसा क्या अपराध किया है तुम लोगों ने ? और अगर ये सब तुम लोगों के साथ बेवजह ही हो रहा है तो यकीन मानो मैं अपने हाथो से इस आदमी को मौत दूँगा। चलो अब बताओ सारी बात। "

" ये सच है कि हम चारों ने एक साथ बराबर का अपराध किया था। " उस लड़के ने नज़रें झुका कर कहना शुरू किया __" मगर , उस अपराध के लिए हमें कानूनी तरीके से सज़ा भी तो दिलवाई जा सकती थी , मगर इन लोगों ने ऐसा कुछ नहीं किया। बल्कि हम चारों को पकड़ कर यहॉ ले आए और फिर हर रोज़ हमारे साथ ये घिनौना काम करते रहे। हमने इन लोगों से अपने किये की लाखों दफा माफी मॉगी। ये तक कहा कि आप हमें गोली मार कर खत्म कर दो उस अपराध के लिए मगर ये लोग हमारी कोई भी बात नहीं माने और हमारे साथ यही सब करते रहे। "

" ओह आई सी। " मैने कुछ सोचते हुए कहा __" लेकिन तुम लोगों ने आख़िर किस तरह का अपराध किया था जिसकी कीमत तुम लोगों को इस रूप में चुकानी पड़ रही है ? और तुमने अभी ये कहा कि " इन लोगों ने " मतलब इस आदमी के अलावा भी कोई है जो तुम लोगों के साथ ये सब कर रहा है ? कौन कौन हैं इस आदमी के साथ बताओ मुझे ?"

" एक लड़की है। " उस लड़के ने कहा __" उसका नाम साक्षी है और वो पुलिस में इंस्पेक्टर है। वहीं हम चारों को पकड़ कर यहॉ लाई थी। उसके बाद उसने इस आदमी को हमारी ख़ातिरदारी करने का काम दे दिया था। बस उसके बाद से ही ये आदमी हमारी ख़ातिरदारी के रूप में हमारे साथ ये सब कर रहा है। "

मैं उसके मुख से साक्षी दीदी का नाम सुन कर मन ही मन बुरी तरह उछल पड़ा था। मुझे समझ न आया कि साक्षी दीदी ने इन लोगों को किस लिए पकड़ा होगा और फिर पकड़ कर यहॉ लाया होगा? अपने आदमी को इन लोगों की ख़ातिरदारी करने का काम सौंप दिया। इसका मतलब साक्षी दीदी को भी ये पता नहीं होगा कि उनका ये आदमी इन लोगों की कैसी ख़ातिरदारी करता है? मुझे यकीन था कि मुजरिम को सज़ा देने के लिए साक्षी दीदी भले ही कानून की थर्ड डिग्री का इस्तेमाल कर लेतीं मगर ऐसा घिनौना काम करने को अपने आदमी से किसी सूरत में न कहतीं। अरे कहने की तो बात ही दूर वो तो इस बारे में सोचती ही नहीं।

मतलब साफ है कि ख़ातिरदारी की आड़ में ये घिनौना काम दीदी का ये आदमी अपनी मर्ज़ी से ही कर रहा है, जिसका दीदी को पता ही नहीं है। अब सवाल ये था कि इन लड़कों ने ऐसा कौन सा जघन्य अपराध किया था जिसकी वजह से साक्षी दीदी इन लोगों को कानूनन सज़ा दिलाने की बजाय यहॉ अपने फार्महाउस के तहखाने में लाकर बंद कर दिया था?

" यकीनन तुम लोगों के साथ बहुत बुरा हुआ है। " फिर मैने उससे कहा __" उस इंस्पेक्टर को ऐसा नहीं करना चाहिये था। उसे तो तुम लोगो को कानून के सामने लेकर जाना चाहिए था। ख़ैर , अब तुम बेफिक्र हो जाओ। ये बताओ कि तुम लोगों एक साथ ऐसा कौन सा अपराध किया था ?"

" वो वो हम चारों ने एक साथ एक लड़की की इज्ज़त लूटी थी। " उस लड़के ने नज़रें चुराते हुए कहा __" और फिर उसे शहर के बाहर ऐसे ही अधमरी हालत में फेंक आए थे। "

" क्या ?????" उसकी ये बात सुन कर मैं बुरी तरह चौंका __" तुम लोगों ने किसी लड़की की इज्ज़त लूटी थी ? वो भी इस तरीके से कि उसे बाद में अधमरी हालत में कहीं फेंक भी आए ? ये तो सच में तुम लोगों ने बहुत बड़ा अपराध किया है। ख़ैर , उसके बाद क्या हुआ था ? मेरा मतलब कि तुम लोग उस इंस्पेक्टर साक्षी के द्वारा पकड़े कैसे गए ?"

" तीसरे दिन हम चारो दोस्त अपने फार्महाउस पर मौज मस्ती कर रहे थे। " उस लड़के ने कहा __" तभी वो इंस्पेक्टर हमारे उस फार्महाउस पर आ धमकी थी। उसने हम चारों को पहले वहीं पर खूब मारा उसके बाद हम चारों को अपनी जीप में डाल कर यहॉ ले आई तब से हम यहीं हैं और इस आदमी के द्वारा यातनाएं झेल रहे हैं। प्लीज़ हमें यहॉ से निकाल लो भाई , हम जीवन भर तुम्हारी गुलामी करेंगे। "

" उस लड़की का क्या हुआ ?" मैने उसकी अंतिम बात पर ध्यान न दिया __" जिसकी तुम चारों ने इज्ज़त लूटी थी ?"

" इस बारे में मुझे कुछ पता नहीं है। " उस लड़के ने असहाय भाव से कहा __" हमने उसे उस दिन से देखा ही नहीं है और ना ही किसी ने हमें उसके बारे में बताया। "

" क्या तुम्हें इस बात का एहसास है कि जिस लड़की की तुम लोगों ने इज्ज़त लूटी है ?" मैने ज़रा सख्त भाव से कहा __" उस पर क्या गुज़र रही होगी ? उसके मॉ बाप पर क्या गुज़र रही होगी ? अपनी हवस के लिए तुम लोगों ने किसी की लड़की का जीवन बरबाद कर दिया। तुम लोगों को तो सीधा फॉसी पर लटका देना चाहिए। "

" हम सबको फॉसी की सज़ा मंज़ूर है भाई। " उस लड़के ने कहा __" हमें इस बात का एहसास हो चुका है कि हमसे बहुत बड़ा गुनाह हुआ है। जब से जवानी की देहलीज़ पर हमने क़दम रखा था तब से किसी न किसी लड़की का जीवन हमने बरबाद ही तो किया है। इस लिए भाई फॉसी से भी बढ़ कर अगर कोई सज़ा है तो हम चारों को वो सज़ा भी मंजूर है। "

" बहुत खूब। " मैने नाटकीय अंदाज़ से कहा __" ऐसी बातें अपराध करते वक्त मन में क्यों नहीं आती हैं ? ये तब क्यों समझ में आती हैं जब मौत सिर पर आकर खड़ी हो जाती है या फिर जब वैसा ही कुकर्म खुद के साथ हुआ करता है ? ख़ैर , ये बताओ कि ये एहसास अब क्या इस लिये हुआ है कि खुद पर जब वैसा ही गुज़रने लगा या फिर सच में लगता है कि हॉ तुम लोगों ने ग़लत किया था उस लड़की के साथ ?"

" ये तो सच बात है भाई कि इंसान को कोई बात तभी समझ में आती है जब उसे ठोकर लगती है। " उस लड़के ने कहा __" ये बात मुझ पर भी लागू होती है। मगर मुझे इस बात का अब गहरा दुख हो रहा है भाई कि मैने उस लड़की के साथ इतना बड़ा नीच काम किया था। प्यार मोहब्बत दोस्ती ये सब कितनी खूबसूरत चीज़ें हैं जिनके लिए और जिनके आधार पर इंसान कितना कुछ कर जाता है। अगर विश्वास हो तो कोई भी व्यक्ति किसी के भी साथ कहीं भी आ जा सकता है या फिर वो आपके भरोसे आपके ऊपर कितनी ही बड़ी जिम्मेदारी सौंप देता है। मगर ये छल कपट और ये धोखा कितनी ख़राब चीज़ें हैं जो प्यार मोहब्बत दोस्ती , और भरोसा आदि सबको नस्ट कर देता है। "

" वाह तुम तो यार किसी बहुत बड़े उपदेशक की तरह बड़ी बड़ी बातें करने लगे। " मैने सहसा ब्यंगात्मक भाव से कहा __" काश ! ये सब बड़ी बड़ी बातें तब भी तुम करते और समझते जब तुम किसी लड़की का जीवन नष्ट कर रहे थे। कम से कम इससे तुम दोनो का भला तो होता। वैसे प्यार मोहब्बत दोस्ती और भरोसा जैसी बातें तुम्हारे मन में कैसे आ गईं ? क्या तुमने इन्हीं के आधार पर उस लड़की का जीवन बरबाद किया है ?"

" बिलकुल सही कहा भाई। " उस लड़के ने बेचैनी से पहलू बदलते हुए कहा __" मेरे जीवन में लड़कियॉ तो बहुत आईं थी जिनके साथ मैने अपने इन तीनों दोस्तों के साथ मौज मस्ती की थी। वो सब लड़कियॉ मेरे पैसों के लालच में अपना सब कुछ खोल कर हमारे सामने बेड पर लेट जाती थीं मगर इस लड़की में बात ही कुछ खास थी। ये एक ऐसे लड़के से बेपनाह प्यार करती थी जिसका नाम विक्रम था , विक्रम सिंह भाटी । मैं भी इससे प्यार करता था पर कभी कह न सका था इससे। हलॉकि दोस्ती के रिश्ते से हमारी हैलो हाय हो जाती थी। एक दिन जाने क्या हुआ इसे कि ये मुझे लेकर उस विक्रम के पास गई और उससे दो टूट भाव से कह दिया कि वो उससे प्यार नहीं करती थी बल्कि उसकी दौलत से प्यार करती थी। और अब जबकि वो कंगाल हो चुका है तो उसका उससे कोई रिश्ता नहीं। मैं उसकी इस बात से मन ही मन हैरान तो था मगर खुश भी हुआ कि चलो अब तो ये मेरे पास ही आएगी। वही हुआ भी। वो अपने एक्स बॉयफ्रेंड को छोंड़ कर मेरे साथ ही कॉलेज में रहने लगी। मगर मुझे जल्द ही पता चल गया कि ये मेरे साथ रहते हुए भी मेरे साथ नहीं है। मैं अक्सर देखता था कि वो अकेले में बेहद उदास और दुखी रहती थी। मुझे लगा कि ये कहीं फिर से न उस विक्रम के पास लौट जाए , इस लिए मैने इसे अपने साथ हमेशा के लिए रखने का सोच लिया। मेरे ये तीनो दोस्त बार बार मुझसे कहते कि प्यार व्यार का चक्कर छोंड़ बस मज़े ले और हमें भी मज़ा करवा। मैने भी सोचा कि यार ऐसे प्यार का क्या मतलब जो अपना है ही नहीं। बस उसके बाद मैने वही किया जो अब तक दूसरी अन्य लड़कियों के साथ किया था। अपनी बर्थडे वाली शाम मैने इसे भी इन्वाइट किया था। जब ये उस शाम मेरे फार्महाउस पर आई तो मैने इसको कोल्ड ड्रिंक का वो ग्लास दिया जिस ग्लास में मैने नींद की दवा मिलाई हुई थी।

कोल्ड ड्रिंक पीने के कुछ देर बाद ही वो नींद के नशे में झूमने लगी। मैने सबकी नज़र बचा कर उसे अपने कमरे में ले गया और उस कमरे में मैने उसके सारे कपड़े उतार कर उसकी इज्ज़त से खूब खेला। मेरा एक दोस्त इस सबकी वीडियो भी बना रहा था। बस उसके बाद तो उसे अपनी ही बने रहना था , इस लिए वो बनी रही और हम जब भी उसे बुलाते तो उसे आना पड़ता और हम सबको खुश रखना पड़ता उसे। यही सब चलता रहा मगर कुछ दिन पहले की बात है। मैने उसे फिर से अपने बर्थडे पर इन्वाइट किया मगर उसने आने से इंकार कर दिया। कहने लगी कि उसकी तबीयत ख़राब है। मैं समझ गया कि वो बहाने बना रही है न आने का। इस लिए मैने उसे फिर से वीडियो को उसके डैड के पास भेज देने की धमकी दी। मेरी इस धमकी से उसे मेरे फार्महाउस पर आना पड़ा। उस दिन भी मैंने अपने इन तीनो दोस्तों के साथ मिल कर उसके साथ सहवास किया और और उसी हालत में सो गए थे। रात के लगभग तीन या चार बजे के करीब मेरी ऑख खुली तो देखा कि प्राची की हालत बहुत ख़राब थी। उसके प्राइवेट पार्ट से ब्लड निकला हुआ था और उसके मुख से भी। ये देख कर मैं बहुत ज्यादा घबरा गया। मुझे लगा कहीं ये मर न जाए। मगर उसे उस हालत में लेकर हम भला उतने समय कहाँ जाते। इस लिए मैने अपने इन दोस्तो को जगाया और इन लोगों को भी प्राची की हालत के बारे में बताया। ये तीनो भी प्राची की वो हालत देख कर घबरा गए थे। फिर हम चारों ने सोच विचार करके फैंसला लिया कि इसे कहीं छोंड़ आते हैं। इस फैंसले के साथ ही हम चारों ने प्राची को किसी तरह कपड़े पहनाए और उसे उसी हालत में उठा कर बाहर खड़ी अपनी कार की डिक्की में डाल दिया। उसके बाद हम चारो उस तरफ चल पड़े जिस तरफ पिछले कुछ साल पहले ही एक नये हाइवे का निर्माण हुआ था। रात के उस सन्नाटे में किसी के भी द्वारा देख लिए जाने का कोई ख़तरा नहीं था। हाइवे में पहुँच कर हमने कुछ दूरी पर सड़क के किनारे झाड़ियों के पास ही प्राची को डिक्की से निकाल कर चुपचाप लिटा दिया और फिर हम चारों वहॉ से वापस फार्महाउस आ गए। उसके बाद क्या हुआ इसका हमें आज तक कुछ भी पता नहीं है। "

" क्या तुम जानते हो कि मैं कौन हूॅ ?" उसकी बात सुनने के बाद मैने सहसा कठोर भाव से उससे पूछा __" ठीक से देखो मुझे। मेरा दावा है कि तुम मुझे ज़रूर पहचान जाओगे कि मैं कौन हूॅ ?"

मेरी इस बात को सुन कर वो लड़का जो कि वास्तव में विवेक रस्तोगी ही था मेरी तरफ बड़े ध्यान से देखने लगा। उसके चेहरे पर पहले तो उलझन के भाव उभरे थे किन्तु जल्द ही उसके चेहरे पर चौंकने के भाव उभरे और फिर एकाएक ही आश्चर्य से मेरी तरफ ऑखें फाड़े देखने लगा। पल भर में उसका चहेरा डर और दहशत से पीला ज़र्द पड़ता चला गया। वह एकदम से ही जूड़ी के मरीज़ की तरह कॉपने लगा था।

" क्या हुआ विवेक रस्तोगी ?" मेरे मुख से एकाएक शेर की सी गुर्राहट निकली __" पहचाना मुझे या मैं खुद अपने तरीके से बताऊॅ तुझे कि मैं कौन हूॅ ??"

" वि ... वि ... विक्रऽऽऽम। " विवेक रस्तोगी के मुख से दहशत में डूबा स्वर निकला __" तुम वि .. विक्रम हो। वही विक्रम जिसे वो प्राची बेपनाह मोहब्बत करती थी। "

" और जिसके साथ तूने इतना बड़ा वहशियाना कुकर्म किया है। " मैंने गुस्से में आग बबूला होते ही उसे उसके सिर के बालों से पकड़ कर उठा लिया और फिर पीछे से उसकी गर्दन में अपने दोनो हाथ जमाते हुए मैने पूरी ताकत से झटका दिया। विवेक रस्तोगी के हलक से हृदय विदारक चीख निकल गई। दीवार पर कुंडे में बँधी रस्सी एक झटके में ही टूट गई थी और इधर झटका लगते ही विवेक के दोनो हाथों में वो रस्सी गड़ सी गई थी।

" हरामज़ादे। " मैंने कहने के साथ ही विवेक को अपने सिर के ऊपर तक उठा लिया और पूरी ताकत से सामने की दीवार की तरफ उछाल दिया , फिर बोला __" तूने मेरी प्राची के साथ इतना घिनौना कुकर्म किया। नहीं छोंड़ूगा तुझे .... तुम चारों को एक एक करके ऐसी भयावह मौत दूँगा कि उसे देख कर ये ज़मीन और वो आसमां तक थर्रा जाएँगे। "

उधर दीवार से टकरा कर विवेक नीचे फर्श पर मुह के बल गिरा। गिरते ही उसके मुख से दर्द भरी चीख निकल गई। उसके दोनो हाथ अभी भी रस्सी से बँधे हुए थे इस लिए वो सहारे के लिए अपने हाथ आगे या इधर उधर नहीं कर सकता था। इधर विवेक का ये हाल देख कर बाकी तीनों लड़कों के देवता कूच कर गए। वो मेरी तरफ बुरी तरह घबराए हुए से देखने लगे थे।

आगे बढ़ कर मैने विवेक के सिर के बाल पकड़ कर उसे उठाया और कहा__"तेरी कहानी सुनने से पहले मुझे लग रहा था कि तेरे साथ वो आदमी बहुत ग़लत कर रहा था मगर अब समझ में आया कि वो कितना अच्छा कर रहा था। तू जिस इंस्पेक्टर साक्षी की बात कर रहा था न वो मेरी बड़ी बहन है। मैं सब कुछ समझ गया अब कि तेरे यहॉ होने का असल माज़रा क्या था?"

कहने के साथ ही मैने विवेक के पेट में अपने घुटने का ज़बरदस्त वार किया तो वो हलाल होते बकरे की तरह चिल्लाया। उसके झुकते ही मैने उसकी पीठ पर दुहत्थड़ जड़ दिया, जिससे वो फर्श पर मुह के बल गिरा। नीचे झुक कर मैने फिर उसे उसके बालों से पकड़ कर उठाया, फिर बोला__"अब सारी कहानी समझ गया हूँ मैं। तू अपने इन कमीने दोस्तों के साथ प्राची को उस दिन वहॉ हाइवे के किनारे झाड़ियों के पास छोंड़ आया। सुबह हुई तो हाइवे से गुज़र रहे किसी वाहन में आ रहे व्यक्ति की नज़र प्राची पर पड़ी होगी तो उसने इसकी सूचना पुलिस को दी होगी। ये मामला चूँकि सोनपुर का था इस लिए सोनपुर पुलिस थाने में मेरी बड़ी बहन साक्षी दीदी ही थी, उनको जब इस सबकी सूचना किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा मिली तो वो उस जगह पर पहुँच गईं। प्राची की उस गंभीर हालत को देख कर दीदी ने प्राची को तुरंत ही सोनपुर के सरकारी हॉस्पिटल में एडमिट कर दिया। दीदी को शायद कहीं से ये पता था कि मैं किसी प्राची नाम की लड़की से प्यार करता था। इस लिए हॉस्पिटल में जब दीदी को डाक्टर द्वारा प्राची के बारे में पता चला होगा तो उनके दिमाग़ में तुरंत ही ये बात आई होगी कि किसी प्राची नाम की लड़की से ही उनका भाई विक्रम प्यार करता था। किन्तु उन्होंने प्राची को देखा तो था नहीं पहले इस लिए उन्होंने इस बारे में कन्फर्म करने के लिए प्राची से पूछताँछ की होगी। दीदी के पूछने पर आख़िर प्राची ने बता ही दिया होगा कि हॉ वो ही वो प्राची है जिसे उनका भाई विक्रम प्यार करता था। बस उसके बाद ही दीदी का मेरे प्रति भी हृदय परिवर्तन हुआ होगा या

फिर खुद प्राची ने बताया होगा उन्हें कि सच्चाई क्या है? ख़ैर, उसके बाद प्राची ने दीदी से अपनी अंतिम इच्छा की बात कही और दीदी ने उससे वादा किया कि वो उसके महबूब को उसके पास ज़रूर लेकर आएॅगी। दीदी ने मेरी खोज करना शुरू किया और उन्हें मेरा दोस्त रौनक मिला। रौनक से दीदी ने सारी बातें बताईं होंगी। तभी तो रौनक मुझसे वो सब बता नहीं रहा था बल्कि यही कहे जा रहा था कि मैं आ जाऊॅ। वाह साक्षी दीदी! आप ग्रेट हो दीदी। आपने मुझे मेरी प्राची से मिलवाया वरना मैं तो उसे अंतिम समय में भी देख न पाता। आपने ये बहुत बड़ा उपकार किया है दीदी। आज आप मेरी नज़र में बहुत महान हो गईं हैं।"

मैं भावावेश में जाने क्या क्या कहे जा रहा था जबकि मेरे चंगुल में फॅसा विवेक बड़ी मुश्किल से अपनी पलकें उठा कर मेरी तरफ हैरत से देखे जा रहा था। शायद वो मेरी कुछ बातें समझने की कोशिश कर रहा था मगर समझ नहीं पा रहा था।

" इतना कुछ मेरी प्राची के साथ हो गया और मुझे इसका आभास तक न था। " मेरी ऑखों से ऑसू छलक पड़े। मेरे दिल में हूक सी उठी। प्राची के साथ हुए इस घृणित कुकर्म का सोच कर ही मेरी आत्मा कॉप उठी , मेरा दिल तड़प उठा। एकाएक ही मेरे चेहरे पर गुस्से की आग धधक उठी। मैने विवेक को उसकी गर्दन से पकड़ कर एक ही हाथ से ऊपर उठा लिया , फिर बोला __" तेरा और तेरे साथियों का मैं वो हाल करू गा कि दुबारा इस धरती पर पैदा होने से मना कर दोगे। "

" मुझे माफ़ कर दो विक्रम। " विवेक की ऑखें बाहर को निकली आ रही थी , फिर भी किसी तरह बोला _" मैं मानता हूॅ कि मुझसे बहुत बड़ा अपराध हो गया है जिसके लिए कोई माफ ी हो ही नहीं सकती। मगर .....

" हरामज़ादे जब जानता है कि कोई माफ ी नहीं हो सकती तो क्यों मॉग रहा है माफी ?" मैने ऊपर से ही उसे उछाल दिया। वो लहराते हुए उस जगह पर गिरा जिस जगह पर वो आदमी बेहश अवस्था में पड़ा था। विवेक जब फर्श से टकराया तो उसके हलक से चीख निकल गई और उसका बाजू ज़ोर से उस आदमी के जिस्म पर लगा।

उस आदमी के जिस्म में हरकत हुई और वो कुछ ही पलों में होश में आ गया। ऑख खुलते ही उसने अपनी तरफ बढ़ते हुए मुझे देखा तो एकाएक ही उसके चेहरे पर घबराहट के भाव उभर आए। जबकि मेरा ध्यान तो विवेक की तरफ था जो उस आदमी के ही पास पड़ा कराह रहा था। उसके पास पहुॅच कर मैने उसे फिर से उसके बालो से पकड़ कर उठाया।

" तूने मेरी प्राची के साथ जो कुकर्म किया है उसके लिए मैं माफ ी कैसे दे दूॅगा तुझे ?" मैने गुर्रा कर उसे झकझोरते हुए कहा __" तू ये सोच भी कैसे सकता है कि तुझे माफ ी मिल जाएगी। तुझे अगर कुछ मिलेगा तो सिर्फ वो जिसे तड़प तड़प कर और सड़ सड़ कर मरना कहते हैं। "

दीवार से सटे बाकी तीनों लड़कों की ये सब देख कर ही हालत ख़राब थी। मेरे चेहरे पर इस वक्त हिंसक दरिंदे जैसे भाव थे। उधर फर्श पर पड़ा वो आदमी मेरी बातें सुन कर हैरान रह

गया था। फिर सहसा उसे खुद का ख़याल आया। वो विवेक की तरह ही जन्मजात नंगा था। ये देख कर वो किसी तरह उठा और एक तरफ रखे अपने कपड़ों की तरफ बढ़ गया। कपड़े उठा कर वो जल्दी जल्दी उन्हें पहनने लगा।

इधर मैने गुस्से में उबलते हुए विवेक के चेहरे पर ज़ोर का घूँसा मारा तो वो पीछे की दीवार में ज़ोर से टकराया और फिर फर्श पर लुढ़कता चला गया। उसके नॉक और मुख से भल्ल भल्ल करके खून बहने लगा था। फर्श पर गिरते ही उसकी ऑखें बंद होती चली गई। मैं समझ गया कि ये बेहोश हो चुका है।

बेहोश हो चुके विवेक के जिस्म पर मैने पैर की एक ठोकर जमाई और पलट कर बाएॅ साइड दीवार की तरफ देखा। दीवार से सटे वो तीनो लड़के रस्सियों में बॅधे ऊपर की तरफ हाथ किये खड़े थरथर कॉप रहे थे। ऑखों में आग और चेहरे पर ज़लज़ला लिए मैं उनकी तरफ बढ़ा।

मुझे अपनी तरफ आते देख उन तीनों की हालत ख़राब हो गई। किनारे साइड की तरफ जो बॅधा खड़ा हुआ था उसका डर के मारे पेशाब छूट गया। उनके क़रीब पहुॅच मैने पहले एक एक घूँसा उन तीनों के जबड़ों पर रसीद किया। तीनो ही दर्द में बिलबिला उठे। मुझसे रहम की भीख मॉगने लगे किन्तु मैं इन लोगों को भला कैसे माफ़ कर सकता था? ये मेरी प्राची के रेपिस्ट थे, उसके हत्यारे थे ये। इनको तो अब ऐसी मौत मरना था जिसके बारे में आज तक किसी ने सुना तक न होगा।

" तुम सबको ऐसी मौत मारूॅगा किसके बारे में किसी कल्पना तक न की होगी। " मैने भभकते हुए कहा _" तुम सब ने मेरी मासूम प्राची के साथ ऐसा घिनौना अपराध किया है जिसके लिए मैं तुम लोगों को अगर कुछ दूॅगा तो है सिर्फ दर्दनाक मौत। इसके सिवा और कुछ नहीं। रहम के बारे में तो सोचो ही मत। क्योंकि वो मैं ब्रम्हा के कहने पर भी नहीं करने वाला। "

मेरी ये बात सुन कर उन तीनों के चेहरे डर से पीले ज़र्द पड़ गए। पल भर में ऐसी सूरत नज़र आने लगी उन तीनो की जैसे लकवा मार गया हो। इधर मैं पलटा। मेरी नज़र उस आदमी पर पड़ी जो विवेक के मुख में अपना लिंग डाले हुए था। वो मेरी तरफ सकते ही हालत में देखे जा रहा था। मैं उसकी तरफ बढ़ा तो वो एकदम से भयभीत सा हो गया।

" मुझे माफ़ कर दो काका। " उसके पास पहुॅचते ही मैने विनम्र भाव से कहा __" मैने बिना कुछ जाने समझे आप पर हाथ उठा दिया। उसके लिए आप चाहें तो मुझे सज़ा दे सकते हैं। "

" अ अरे ना ना बेटवा। " हरिया काका हड़बड़ाते हुए एकदम से बोल पड़ा __" ई का कहत हो तुम ? तोहरे से कउनव ग़लती ना हुई है। एसे माफी मागे के कउनव जरूरत ना है। हमहू का कहॉ पता रहे बेटवा कि तुम असल मा हमरे साक्षी बिटिया के छोट भाई हो। "

" आप बहुत अच्छे हैं काका। " मैने हरिया काका के दाएॅ कंधे पर हाथ रखते हुए कहा __" आपने इन लोगों की वैसी ही ख़ातिरदारी की है जैसी इन लोगों की करनी चाहिए थी। "

" अब का करें बेटवा हमरे मन मा एखे अलावा र कउनव बात आईये न रही। " काका ने कहा __" साक्षी बिटिया जब हमसे कहा कि ई ससुरन केर अच्छे से ख़ातिरदारी करै का है ता हमरे मन मा इहै बात आई। बस ऊखे बाद हम शुरू होई गयन। ई ससुरन के पिछवाड़े से बजावै मा बड़ी मज़ा आई बेटवा। लेकिन अब एकै बात केर चिन्ता है कि कहीं ई बात साक्षी बिटिया का पता न चल जाय। ऊ का है ना बेटवा , ई अइसन काम है कि केहू का पता चल जाय ता बहुतै शरम केर बात होई जाथै न। अउर हम ई नाहीं चाही कि ई बात साक्षी बिटिया का पता चलै। काहे से के ई बात पता चले मा सरवा हमरी इज्जत का बहुतै कचरा होई जाई। "

" चिन्ता मत करो काका। " मैं मन ही मन उसकी बात पर और उसकी भाषा पर मुस्कुराते हुए बोला __" इस बात का पता साक्षी दीदी को बिलकुल भी नहीं चलेगा। लेकिन एक बात अब आप भी सुन लीजिए। वो ये कि आपने अपना काम कर लिया अब बारी मेरी है। मैं इन्हें ऐसी मौत दूँगा कि आपने उसके बारे में कभी सोचा भी नहीं होगा। इस लिए अब आप सिर्फ तमाशा देखेंगे। "

" ठीक है बेटवा। " काका ने सिर हिलाया __" हमहू ईहै चाहिथे कि ई ससुरन का कुत्तन जइसन मौत हो। जितना बड़ा अपराध ई लोगन ने किया है न उसके लिए ई लोगन का कौनव परकार केर रियाइत ता मिलबै न करै। "

" ऐसा ही होगा काका। " मैने उन चारों पर एक एक नज़र डालते हुए कहा __" मुझे कुछ सामान चाहिए आपसे। और हॉ बाकी किसी और को मत बताइयेगा कि मैं यहॉ हूँ। "

" ठीक है बेटवा। " काका ने कहा __" अउर सामान का चाहै का है तुमका ?"

" एक रेज़र ब्लेड। " मैने कहा __" और एक ग्लास चाहिए काका। "

" ठीक है बेटवा। " हरिया काका ने कहा __" हम अभी लावथैं दुई मिनट मा। "

कहने के साथ ही हरिया काका तहखाने के दरवाजे से बाहर चला गया। जबकि उनके जाते ही मैं विवेक के पास पहुँचा और उसे उठा कर फिर से एक अलग रस्सी जोड़ कर उसे वैसे ही बॉध दिया जैसे बाकी तीनो बॅधे हुए थे। विवेक को बॉधने के बाद मैं पलटा और एक तरफ रखी पानी की बाल्टी से एक मग पानी लेकर विवेक के चेहरे पर ज़ोर से उलट दिया। पानी का तेज़ प्रहार पड़ते ही विवेक होश में आ गया। होश में आते ही वो दर्द से चीखने लगा।

" तुम हमारे साथ क्या करने वाले हो ?" बाकी तीन मे से एक ने घबराते हुए पूछा __" देखो , हम मानते हैं कि हमने बहुत बड़ा गुनाह किया है और उसके लिए अगर तुम हमे गोली मार कर जान से मार भी दो तो हमें मंजूर है मगर ऐसे तड़पा तड़पा कर मत मारो भाई। प्लीज़ कुछ तो रहम करो। उस आदमी ने तो वैसे भी हम लोगों के वो सब करके हमें जान से ही मार दिया है। तुम क्या जानो कि उस हवशी ने हमारे पिछवाड़ों की क्या दुर्गत की है ?"

" जब अपने पर बीतती है तभी एहसास होता है कि दर्द और तक़लीफ़ क्या होती है। " मैने उससे गुर्राते हुए कहा __" तुम लोगों को तब इस बात का एहसास नहीं हुआ था कि जिन

जिन लड़कियों के साथ तुम सबने कुकर्म किया है उन पर उस वक्त क्या गुज़री रही होगी ?"

" सच कहा भाई। " एक दूसरे लड़के ने कहा __" लेकिन अब जो हो गया उसे लौटाया तो नहीं जा सकता न। हमें हमारे गुनाहों की इतनी सज़ाएँ तो मिल ही चुकी हैं। तुम हमें एक ही बार में जान से मार दो। मगर वो सब न करो भाई जो तुम अपने मन सोचे बैठे हो। प्लीज भाई हम पर रहम करो। "

" शट- अऽऽऽप। " मैं पूरी शक्ति से दहाड़ा __" यहाँ तुम लोगों की मर्ज़ी से कुछ नहीं होगा , बल्कि वही होगा जो मैं चाहूँगा। मैं क्या चाहता हूँ इसका पता जल्द ही तुम चारो को चल जाएगा। "

मैने इतना कहा ही था कि हरिया काका तहखाने में पुनः दाखिल हुए। उनके हाथ में वो सामान था जो मैने उनसे मँगवाया था। यानी कि रेज़र ब्लेड और ग्लास। मेरे हाथ में सामान पकड़ाने के बाद हरिया काका ने तहखाने का दरवाज़ा बंद कर दिया और फिर एक तरफ खड़े हो गए। इधर सामान लिए मैं उस सामान को सरसरी तौर पर देख ही रहा था कि मेरा मोबाइल फोन बज उठा।

५७

हवेली पर!

अपने कमरे में साक्षी आराम कर रही थी। ऊपर छत के कुण्डे पर घूम रहे पंखे को एकटक घूर रही साक्षी के चेहरे पर इस वक्त गहन सोचो के भाव थे। उसके मन में कई सारी बॉतें चल रही थीं। आज जब वह हवेली में आई तो उसका सामना अपने डैड से उस हिसाब से हो ही गया था जिसका उसे अंदेशा था कि देर सवेर ऐसा होगा ही।

उसके डैड ने उससे जो कुछ कहा था उससे अब ये बात खुल ही चुकी थी उनकी बेटी उनके पक्ष में नहीं है। उनके आदमी ने जो ख़बर उसके बारे में उसके डैड को दी थी उसका उसके पास कोई पुख्ता सबूत तो नहीं था किन्तु ज़हन में ये बात तो पड़ ही गई थी कि साक्षी किस तरफ करवॅट ले सकती है? हलॉकि उसने अपनी तरफ से अपनी सफाई में अपने डैड को समझा बुझा तो दिया था किन्तु उसे ये भी एहसास था कि मौजूदा हालात में इस वक्त भले ही उसका बाप कोई कठोर क़दम उसके साथ न उठाये मगर जिस वक्त उसे पक्के तौर पर पता चल जाएगा कि उसके आदमी की वो ख़बर यकीनन सच ही थी तो वक्त सत्यम सिंह कोई भी कठोर क़दम उठा सकता है।

साक्षी के ज़हन में ये सारी बातें चल रही थीं। उसे इस बात का भी अंदेशा हो चुका था कि अब उसका बाप सच्चाई का पता लगाने के लिए संभव है कि उसके पीछे अपने आदमी लगा दे। उस सूरत में साक्षी को क्या करना था ये उसने भली भॉति सोच लिया था। साक्षी अभी ये सब सोच ही रही थी कि तभी उसका मोबाइल बज उठा। मोबाइल के बजने से वो सोच के गहरे सागर से हक़ीक़त की दुनियॉ में आई और सिरहाने रखे मोबाइल को एक हॉ से उठा कर उसने मोबाइल की स्क्रीन पर फ्लैश कर रहे हरिया काका नाम को देखा तो उसके चेहरे पर सोच के भाव उभर आए।

" कहिए काका क्या बात है ?" फिर उसने काल को रिसीव करते ही कहा।

".....। " उधर से हरिया काका ने उसे जो कुछ बताया उसे सुन कर साक्षी बुरी तरह चौंक पड़ी थी। उसके चेहरे पर पल भर में चिंता व परेशानी के भाव उभर आए थे।

" ये आपने बहुत अच्छा किया काका। " साक्षी ने कहा __" जो मुझे फोन कर दिया आपने। ख़ैर , आप बाकी सबका ध्यान रखियेगा मैं बात करती हूॅ उससे। "

ये कह कर साक्षी ने कॉल कट कर दी। उसके चेहरे पर चिंता व परेशानी के भाव कम नहीं हो रहे थे। हरिया काका ने उसे फोन पर सारी बात बता दी थी कि विक्रम तहखाने में उन चारों लड़कों के साथ क्या करने वाला है। उसने ये भी बताया कि विक्रम इस वक्त गुस्से में आग बबूला हुआ पड़ा है और उससे रेज़र ब्लेड के साथ साथ एक ग्लास भी मॅगवाया है। हरिया काका से बातें जानने के बाद साक्षी समझ गई कि विक्रम को अब सब कुछ पता चल गया है।

इस लिए अब उसे डर था कि कहीं विक्रम उससे इस बात के लिए नाराज न हो जाए कि प्राची के साथ इतना कुछ हुआ जिसे उसने विक्रम से नहीं बताया। इस परिस्थिति में वो क्या क़दम उठा लेगा इसका अंदाज़ लगाना मुश्किल था। यही बात थी कि साक्षी एकाएक चिन्तित व परेशान हो गई थी। काफी देर तक वो इन्हीं सब ख़यालों में खोई रही, उसके बाद उसने मोबाइल पर विक्रम का नंबर देख कर उसे काल लगा दिया। उसे अंदर से डर भी लग रहा था कि विक्रम जाने कैसा रियेक्ट करे उससे।

".....। " उधर से काल रिसीव किये जाने पर ही साक्षी के कानो में विक्रम की आवाज़ पड़ी। उसने उधर से कुछ कहा।

" तुम्हें मेरी कसम है मेरे भाई। " साक्षी ने बहुत ही संतुलित लहजे में कहा __" तुम जहॉ पर हो वहॉ से किसी को भी कुछ किये बग़ैर वापस बाहर आ जाओ। मैं जब आऊँगी तो तुम्हें सब कुछ समझा दूँगी। "

".....। " उधर से विक्रम ने कुछ कहा।

" प्लीज़ भाई। " साक्षी ने विनती सी की __" अपनी इस बहन की बात मान जाओ। बस एक बार। उसके बाद मैं खुद तुम्हें उस सबके लिए इजाज़त दे दूँगी। मगर अभी मेरी बात मान जाओ और वहॉ से बाहर आ जाओ। "

".....। " उधर से विक्रम ने फिर से कुछ कहा।

" अभी तुझे कुछ पता नहीं है मेरे भाई। " साक्षी ने सहसा गंभार होकर कहा __" तू मेरे आने का इंतज़ार कर मैं तुझे सारी बातें बताऊँगी और ये भी कि उससे और क्या करना चाहती हूँ मैं ?"

".....। " उधर से विक्रम ने कुछ कहा।

" हॉ भाई। " साक्षी ने कहा __" मैं जल्द ही तेरे पास आ रही हूँ। मगर फिलहाल तू वहॉ से बाहर आ जा। "

".....। " उधर से विक्रम ने फिर से कुछ कहा।

" थैंक्स मेरे स्वीट भाई। " साक्षी के चेहरे पर राहत के भाव उभरे __" यू आर सो स्वीट। लव यू सो मच। "

ये कह कर साक्षी ने मुस्कुराते हौए कॉल कट कर दी। कुछ देर तक जाने क्या सोचती रही वो। उसके बार वह बेड से उठी और बाथरूम की तरफ बढ़ गई। लगभग दस मिनट बाद वह बाथरूम से बाहर निकली और फिर पुलिस की यूनीफार्म पहन कर तथा सिर पर पीकैप व हाथ में पुलिसिया रुल लिये वह कमरे से बाहर आ गई।

साक्षी जैसे ही अपनी जिप्सी में बैठ कर हवेली से बाहर गई वैसे ही इधर सोनिया के कमरे

की खिड़की से बाहर देखते हुए जयदीप ने होठों पर मुस्कान सजाते हुए अपनी जेब से मोबाइल निकाला और किसी को फोन लगाया। एक मिनट से भी कम समय तक उसने किसी से फोन पर बात की उसने बाद उसने कॉ ल कट कर दी।

इधर हवेली से बाहर निकलते ही साक्षी ने भी किसी को फोन लगाया और उससे कुछ देर बात की। उसकी जिप्सी गॉव से बाहर की तरफ जा रही थी। गाव से बाहर जाने वाले रास्ते से कुछ दूर जाने पर ही साक्षी को अपनी जिप्सी के पीछे एकाएक ही एक ब्लैक जीप आती बैक मिरर में दिखी। ये देख कर साक्षी के होठों पर मुस्कान फैल गई।

सौ मीटर के फॉसले पर पीछे से आ रही कार साक्षी को बराबर बैक मिरर में दिख रही थी। हलॉकि साक्षी समझ गई थी कि पीछे आ रही जीप में यकीनन उसके बाप का ही कोई आदमी है, लेकिन फिर भी पक्के तौर पर जॉचने के लिए साक्षी ने मन बनाया। नहर पर बने पुल के पास पहुॅचते ही साक्षी ने बॉए साइड वाले रास्ते की तरफ अपनी जिप्सी की मोड़ लिया। जबकि दाएॅ साइड के रास्ते में आगे उसका फार्महाउस पड़ता था।

सौ मीटर आगे जाने पर ही साक्षी को मिरर में वो जीप उसी रास्ते की तरफ मुड़ती दिखी। आगे लगभग पॉच किलो मीटर की दूरी पर मोड़ था और वहीं से दूसरे गॉव की आबादी शुरू होती थी। जिसकी वजह से मोड़ पर मुड़ने के बाद पीछे वाले को आगे वाला वाहन दिखाई नहीं देता था। आगे कुछ दूरी पर एक चौराहा पड़ता था। साक्षी ने जिप्सी को चौराहे पर एक साइड रोंका और उतर कर बगल में एक दुकान थी। वो दौकान तरफ बढ़ गई। दुकान से उसने एक पेप्सी की बोतल ली और वहीं पर खड़े खड़े पीने लगी।

कुछ ही देर में उसे चौराहे की तरफ आती हुई वो जीप दिखी जिसमें उसके बाप का एक आदमी ड्राइविंग सीट पर बैठा था। चौराहे पर साक्षी की जिप्सी को देख उसके चेहरे पर चौंकने के भाव उभरे और फिर वो एकदम से जीप को तेज़ रफ्तार से दौड़ाते हुए चौराहे के पार निकल गया। उसकी इस हड़बड़ाहट को देख कर साक्षी के होठों पर मुस्कान उभर आई।

पेप्सी को पीकर साक्षी ने दुकान वाले को पैसे दिये और फिर सामने चौराहे के उस तरफ एक बार सरसरी तौर पर अपनी नज़र दौड़ाई जिस तरफ उसके बाप के आदमी की वो जीप गई थी। उसके बाद वो अपनी जिप्सी की तरफ बढ़ी तथा उसमें बैठ कर जिप्सी को यू टर्न दिया और फिर वापस उसी रास्ते की तरफ बढ़ चली जिस तरफ से वो आई थी। इस बार साक्षी की जिप्सी की रफ्तार ज्यादा थी।

पुल के बगल से सीधा जो रस्ता था उसी तरफ उसकी जिप्सी ऑधी तूफान बनी जा रही थी। बैक मिरर में उसकी नज़र बराबर थी। उसके पीछे लगी वो जीप उसे कहीं नज़र न आई। पुल से काफी दूर आकर साक्षी ने जिप्सी को एक ऐसी जगह पर सड़क से अलग करके खड़ी किया जिस जगह पर दाएॅ साइड काफी सारे पेड़ पौधे व झाड़ियॉ थी। यहॉ से सड़क पर से चल रहा कोई वाहन देखा तो जा सकता था किन्तु सड़क से इस तरफ का आसानी से देखा नहीं जा सकता था।

जिप्सी से उतर कर साक्षी ने सबसे पहले होलेस्टर में दबे अपने सर्विस रिवाल्वर को निकाला। रिवाल्वर का चेम्बर खोल कर उसने चेम्बर के सभी खानों को देखा। सभी खानों में गोलियॉ मौजूद थीं। ये देख कर उसने चेम्बर को वापस बंद कर रिवाल्वर को होलेस्टर के हवाले किया और एक आगे बढ़ कर सड़क के कुछ पास ही एक पेड़ की ओट में खड़ी हो गई। इस वक्त उसके चेहरे पर बेहद कठोरता के भाव थे। बहुत ही धीमी आवाज़ में उसके मुख से निकला___"सॉरी डैड, अब आपका कोई भी आदमी मेरी ख़बर आप तक नहीं पहुँचा पाएगा। इतना ही नहीं आप वो सब हर्गिज़ भी नहीं कर पाएॅगे जिस किही भी चीज़ के करने का आपने मंसूबा बनाया हुआ है। मेरे भाई के पास पहुँचने वाले हर शख्स को सबसे पहले मुझसे टकराना होगा।"

चेहरे पर कठोरता और ऑखों में आग लिए साक्षी चुपचाप पेड़ के ओट में खड़ी उस जीप के आने का इन्तज़ार करने लगी थी। इन्तज़ार करते करते लगभग पन्द्रह मिनट गुज़र गए मगर अभी तक वो जीप इस तरफ आती समझ न आई। साक्षी को लगा वो जीप में बैठा आदमी आएगा भी या नहीं। किन्तु ऐसा नहीं था, क्योंकि तभी साक्षी के कानों में किसी वाहन के आने की आवाज़ सुनाई देने लगी थी।

कुछ ही देर में मोड़ से इस तरफ मुड़ती हुई वो जीप दिखी। साक्षी ने महसूस किया कि जीप की रफ़्तार कम थी। शायद वो आदमी धीमी रफ़्तार से इधर उधर का मुआयना करते हुए आ रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि जिसका वो पीछा कर रहा था वो इतना जल्दी कहॉ गायब हो गई? इस तरफ मुड़ने के बाद आगे का रास्ता काफी दूर तक सीधा ही था। उस सीधे रास्ते पर दूर दूर तक उसे साक्षी दिखाई नहीं दे रही है। ये देखते देखते ही उसने जीप की रफ़्तार कम कर दी। साक्षी को लगा कि कहीं वो यहीं पर ही न रुक जाए और वही हुआ भी। उस आदमी ने सामने की तरफ देखते हुए ही जीप को एकदम से खड़ी कर दिया।

जीप खड़ी करने के बाद उसने इधर उधर देखा और फिर सहसा उसने अपनी शर्ट की जेब से मोबाइल निकाला। साक्षी को समझते न लगी कि वो शायद इस बात की सूचना उसके बाप को देना चाहता है कि साक्षी एकाएक ही उसकी नज़रों से ओझल हो गई है। साक्षी के मन में ख़याल आया कि उस आदमी को इस बात की सूचना नहीं दे पाना चाहिए। इस ख़याल के आते ही उसने बिजली की सी तेज़ी से ऐक्शन लिया।

जिस जगह पर साक्षी पेड़ के पीछे खड़ी थी वहॉ से वो आदमी आगे की तरफ बाएॅ साइड से जीप में बैठा था। जीप ऊपर से पूरी तरह बेपर्दा टाइप की थी। ड्राइविंग सीट पर बैठा वो आदमी दाहिने हाथ पर मोबाइल लिए कुछ कर रहा था। साक्षी समझ गई कि वो उसके बाप को फोन लगाने ही वाला है। ये देख कर साक्षी ने होलेस्टर से रिवाल्वर निकाल कर निशाना लगाया और फिर.....धॉयऽऽ।"

अचूक निशाना, रिवाल्वर से निकली गोली सीधा उस आदमी के दाहिने हाथ में मौजूद उसके मोबाइल की स्क्रीन के चिथड़े उड़ाती हुई पार होकर सामने जीप के शीशे से टकराई थी। अचानक हुए इस हमले से वो आदमी मानो सकते में आ गया था। दाहिने हाथ को अपने

बाएॅ हाथ से थामे वह उसे सहलाने लगा था। ड्राइविंग सीट पर बैठा वो इधर उधर देखे जा रहा था।

इधर साक्षी फायर करते ही तेज़ी से जीप की तरफ बढ़ी। कुछ ही देर में वो जीप के पास पहुॅच गई। अपने इतने क़रीब इस तरह अचानक साक्षी के आ जाने से वो आदमी एकदम से हक्का बक्का रह गया था। चेहरे पर डर और घबराहट के भाव कत्थक करते नज़र आने लगे थे

साक्षी ने देर नहीं की बल्कि बिना किसी भूमिका के उसने दोनो हाथो से उस आदमी की शर्ट के कालर को पकड़ा और फिर एक झटके मे ही खींच कर ड्राइविंग सीट से बाहर खींच लिया। उस हट्टे कट्टे आदमी को बाहर खींच कर साक्षी ने उसे वहीं सड़क पर लगभग पटक दिया। आदमी के हलक से चीख़ निकल गई। साक्षी जानती थी कि उस आदमी ने अगर साक्षी को अपनी मजबूत बाहों में पकड़ लिया तो फिर उससे छूट पाना आसान नहीं होगा। इस लिए साक्षी ने उसे सम्हलने का मौका ही नहीं दिया। बल्कि लात घूॅसों पर रख दिया उसे।

सड़क पर गिरे हुए उस आदमी की सिर्फ चीखें निकल रही थी। सहसा उसके हाथ में साक्षी का पॉव आ गया और उसने झटके से साक्षी का वो पॉव पकड़ कर उछाल दिया। नतीजा ये हुआ कि साक्षी लहराते हुए सड़क पर पीठ के बल गिरी। साक्षी के मुख दर्द में डूबी हल्की सी चीख निकली। उधर उस आदमी को जैसे मौका मिल गया था। इस लिए वो झट से उठा और सम्हल कर उठ रही साक्षी के सिर के बाल पकड़ कर उसे जीप की तरफ ही झटके से धकेल दिया। साक्षी का सिर जीप के किनारे पर लगे मोटे लोहे के पाइप से टकराया। साक्षी की ऑखों के सामने तारे नाचने लगे और सहसा उसे अपनी ऑखों के सामने अंधेरा सा दिखने लगा।

लोहे का वो पाइप साक्षी के सिर पर ज़ोर से लगा था। जिसके कारण तुरंत ही साक्षी के सिर से खून रिसने लगा था। अभी साक्षी दर्द को सहते हुए खुद को संभाल ही रही थी कि उस आदमी ने एक बार से उसके सिर को उसी लोहे के पाइप पर झटक दिया। साक्षी की चीख निकल गई। चोंट पर चोंट लगने से खून का रिसाव तेज़ हो गया।

" मैने मालिक से झूॅठ नहीं बोला था लड़की। " उस आदमी ने दॉत पीसते हुए गुस्से से कहा __" उस दिन तू ही थी उस जीप में जो उस एम्बुलंस के आगे आगे चल रही थी। मगर पक्के तौर पर चूॅकि किसी को पता नहीं था इस लिए मुझे भी लगा कि शायद उस जीप में तेरे सिवा कोई ही न रहा हो। दूसरी बात हम में से कोई ये सोच ही नहीं सकता था कि हमारे मालिक से गद्दारी करने वाली खुद मालिक की ही छोकरी होगी। "

ये सब कहने के साथ ही उस आदमी ने पीछे से एक मुक्का साक्षी के पेट के बगल पर रसीद कर दिया। हट्टे कट्टे आदमी का मुक्का लगते ही साक्षी को भयानक दर्द हुआ। उसकी घुटी घुटी सी चीख फिज़ा में फैल गई।

" तुझे पता है आज मालिक ने मुझे साफ साफ कहा है कि अगर गद्दार के रूप में तू ही निकले तो तुझे मैं खुद ही इस गद्दारी की सज़ा दूॅ। " उस आदमी ने कहा __" मालिक को इस बात

से अब कोई मतलब नहीं रह गया है कि गद्दार कौन है। उनके लिए अपना और पराया सब बराबर हैं। इस लिए ऐ छोकरी , तू अब सज़ा पाने के लिए तैयार हो जा। मैं पहले तेरे इस खूबसूरत जिस्म का मज़ा लूटूँगा और फिर तेरी इज्ज़त की धज्जियाँ उड़ाऊँगा। हाहाहाहाहा कसम से पहली बार लग रहा है कि मालिक की सेवा करने का कुछ अच्छा फल मिल रहा है। "

साक्षी के कानों से उस आदमी की ये सब बातें टकराई तो उसके अंदर गस्से की ज्वाला धधक उठी। उसने अपने दाहिने हाथ को पीछे ले जाकर उस आदमी के सिर को उसके बालों से पकड़ा और पूरी ताकत से ऊपर से आगे की तरफ खींचा। वो आदमी तो पीछे से आगे न आ पाया क्योंकि वो वजनदार और हट्टा कट्टा था किन्तु सिर के बाल इतनी तेज़ी से खींचे जाने पर उसके मुख से दर्द भरी सीत्कार गूँज उठी। इसके साथ ही साक्षी के सिर के बालों पर से उसकी पकड़ ढीली पड़ गई।

साक्षी ने एक पल का भी समय नहीं गवाँया। उसके हाथ के नीचे से निकल कर उसने बिजली की सी तेज़ी से उस आदमी के बगल से आकर अपने दाहिने हाथ की कराट ज़ोर से उसकी गर्दन के पिछले भाग पर लगाई। नतीजा ये हुआ कि झोंक में उस आदमी का माँथा उसी लोहे के पाइप से टकराया जिस पाइप पर अभी कुछ देर पहले साक्षी का सिर टकराया था। माथे पर लोहे का पाइप लगते ही वो आदमी दर्द से बिलबिलाया और दोनो हाथो से अपना माँथा सहलाने लगा। पलक झपकते ही उसके माथे पर एक गोल सा गोला उभर आया जो हल्के नीले रंग का था।

साक्षी को तेज़ गुस्सा आया हुआ था। इस बार वो रुकी नहीं बल्कि जूड़ो कराटे और कुंगफू के ऐसे करतब दिखाए कि दो मिनट में ही उस आदमी को धरासाई कर दिया। एक बार पुनः वो हट्टा कट्टा आदमी सड़क पर पड़ा था, किन्तु इस बार वो दर्द से बुरी तरह कराह रहा था।

" तेरे जैसे पालतू कुत्तों का इलाज़ बहुत अच्छी तरह से करना आता है मुझे। " साक्षी किसी शेरनी की भाँति गुर्राई __" चल आज तुझे इसका ट्रेलर भी और इसका अंजाम भी दिखाऊँगी। तेरे जैसे कुत्तों का और अपने उस हरामी बाप का क्या हस्र होगा ये वक्त ही बताएगा। "

साक्षी की बात उस आदमी ने कोई जवाब न दिया, बल्कि वो जवाब देने की हालत में ही नहीं रह गया था। साक्षी ने नीचे झुक कर उस आदमी की कनपटी के पास मौजूद एक ऐसी खास जगह पर कराट मारी कि पल भर में वो आदमी बेहोश हो गया। उसके बेहोश होते ही साक्षी ने उस आदमी के एक हाथ को पकड़ कर खींचते हुए सड़क के किनारे पर लगाया और फिर पलट कर उस तरफ बढ़ चली जिस तरफ उसने अपनी जिप्सी को झाड़ियों और पेड़ों के पीछे छुपाया था।

थोड़ी ही देर में साक्षी जिप्सी को लेकर सड़क पर आ गई। जिप्सी को उस आदमी के पास खड़ी कर वो जिप्सी से नीचे उतरी और फिर उस आदमी के बेहोश जिस्म को किसी तरह उठा कर जिप्सी के पीछे डाल दिया। उसके बाद वो उस जीप के पास गई जिसमें बैठ कर वो

आदमी यहॉ आया था। उस जीप के इग्नीशन से चाभी निकाल कर साक्षी ने अपनी पैन्ट की पॉकेट में डाला और वापस जिप्सी के पास आकर ड्राइविंग सीट पर बैठ गई।

उस आदमी को वहीं पर छोंड़ कर साक्षी ने अपनी जिप्सी को फार्महाउस की तरफ दौड़ा दिया। ऑधी तूफान बनी जिप्सी कुछ ही समय में फार्महाउस पहुॅच गई। फार्महाउस के मेन गेट पर ही हरिया और शंकर काका खड़े दिखे साक्षी को। साक्षी को आते देख शंकर ने लोहे वाला गेट खोल दिया। गेट खुलते ही साक्षी ने जिप्सी को गेट के अंदर की तरफ बढ़ा दिया। हरिया काका के पास जिप्सी को रोंक कर साक्षी ने अपनी पैन्ट की पॉकेट से चाभी निकाली और शंकर की तरफ देखते हुए कहा__"शंकर काका मेरी गाड़ी से इस आदमी को बाहर निकाल कर वहीं तहखाने में डाल कर फटाफट आइये।"

" अच्छा बिटिया। " शंकर ने कहा और अपनी बंदूख को हरिया के हवाले कर जिप्सी के पास आया और उस आदमी को अपनी मजबूत बाहों से खींच कर बाहर निकाला। बाहर निकाल कर उसे उसने अपने कंधे पर लादा और अंदर तहखाने वाले हिस्से की तरफ बढ़ गया।

" काका आप ये चाभी लीजिए। " साक्षी हरिया की तरफ चाभी उछालते हुए कहा __" और मेरी इस गाड़ी से शंकर काका को भी साथ ले जाइये। बीच रास्ते पर ही उस आदमी की जीप खड़ी मिलेगी आपको। उसे वहॉ से यहॉ लेकर आना है। "

" ठीक है बिटिया। " हरिया ने कहा __" हम अभी शंकरवा का लइके जाथैं। लेकिन बिटिया ऊ ससुरा आदमी कउन है ? अउर कहॉ से मिल गवा ऊ तुमका ?"

" मेरे डैड का पालतू कुत्ता है काका। " साक्षी ने नफ़रत के भाव से कहा __" मेरे डैड ने उसे मेरे पीछे लगाया हुआ था मेरी निगरानी के लिए। मैने उस कमीने को बीच में ही धर लिया और यहॉ ले आई। अब आप इसकी भी ख़ातिरदारी कीजिएगा। "

" अरे बिलकुल बिटिया। " हरिया के चेहरे पर एकाएक ही खुशी के भाव उभरे लेकिन फिर जैसे उसे कुछ याद आया तो उसने फिर नार्मल भाव से कहा __" ऊ ससुरे की ख़ातिरदारी हम बहुत अच्छे से करू गा। "

तभी शंकर काका आता हुआ दिखाई दिया। उसके पास आते ही साक्षी ने उसे भी समझा दिया और हरिया के साथ अपनी जिप्सी से भेज दिया। उन दोनो के जाते ही साक्षी अंदर मकान की तरफ बढ़ चली।

मैं साक्षी दीदी के कमरे में बड़ी बेचैनी से इधर से उधर टहल रहा था। रह रह कर विवेक की बातें मेरे ज़हन में ज़हर सा घोल रही थी। मुझे उन चारों पर भयानक गुस्सा आ रहा था। किन्तु दीदी ने फोन करके मुझे तहखाने से बाहर आ जाने के लिए कह दिया था। मुझे इस बात से बेहद तक़लीफ़ हो रही थी कि मेरी प्राची के साथ कितना घिनौना कुकर्म किया गया था जिसके बारे में मुझे कुछ पता ही नहीं था और ना ही ये सब किसी ने मुझसे बताया था। मैं सोच रहा था की अगर इत्तेफाक़ से या संयोगवश मैं हरिया काका के पीछे उस तहखाने में न जाता तो मुझे पता भी न चलता कि मेरी प्राची के साथ और क्या हुआ था।

मुझे इस सबके लिए रौनक और दीदी दोनो पर गुस्सा भी आ रहा था मगर मैं इस बात से खुद को तसल्ली दिये हुए था कि इन्हीं की वजह से ही तो मैं अपनी प्राची को अंतिम बार मिल सका था। उसके त्याग और बलिदान को जान सका था वरना सारी ज़िंदगी मैं उस मासूम व निर्दोष को कोसता रहता। इस लिए ये सब सोच कर मैं अपने गुस्से को शान्त किये हुए था। मैने खुद को बहुत समझाया था तब जाकर मुझे कुछ राहत मिली थी और सबसे ज्यादा साक्षी दीदी पर प्यार आया कि उन्होंने मेरे और प्राची के ख़ातिर कितना कुछ किया था।

मुझे एहसास था कि साक्षी दीदी अब पहले जैसी नहीं रही थी बल्कि अब वो बदल गई थी। बचपन से लेकर अब तक मेरे प्रति जो उनके अंदर द्वेष या नफ़रत का भाव था वो अब बेपनाह प्यार व स्नेह में परिवर्तित हो गया था। जिस साक्षी दीदी से बात करने के लिए मैं अक्सर तरसता था आज वही दीदी मुझे अपनी जान से ज्यादा प्यार करने लगी हैं। इस बात से मैं बेहद खुश भी था। किन्तु हालात के मद्दे नज़र मैं अपनी इस खुशी को ज़ाहिर नहीं कर पा रहा था। इस वक्त मैं उनके कमरे में टहलते हुए उनके आने का बेसब्री से इन्तज़ार कर रहा था।

तभी कमरे का दरवाजा खुला और पुलिस इन्स्पेक्टर की वर्दी में साक्षी दीदी ने कमरे में प्रवेश किया। मैं उन्हें आज पुलिस की वर्दी में देख कर देखता ही रह गया। उनके खूबसूरत बदन पर ये पुलिस की वर्दी काफी जॅच रही थी। ऐसा लगता था कि पुलिस की ये वर्दी सिर्फ उन्हीं के लिए ही बनी थी। मुझे अपनी तरफ अपलक देखता देख दीदी के होठों पर मुस्कान उभर आई और फिर सहसा उनके चेहरे पर हया की सुर्खी भी नज़र आने लगी।

" ऐसे क्यों देख रहा है विक्रम ?" साक्षी दीदी ने मीठी सी आवाज़ में नज़रें झुकाते हुए कहा।

" देख रहा हूॅ कि मेरी साक्षी दीदी इस पुलिस की वर्दी में कितनी खूबसूरत लग रही हैं। " मैने सहसा मुस्कुराते हुए कहा __" ऐसा लगता है कि ये वर्दी दुनियॉ में सिर्फ आपके लिए ही बनी है। "

" अच्छा जी। " साक्षी दीदी हॅस दी , बोली __" क्या सच कह रहा है भाई ?"

" हॉ दीदी। " मैने कहा __" आप तो मेरी वैसे भी दुनियॉ की सबसे अच्छी और खूबसूरत दीदी हैं , ऊपर से इस पुलिस की यूनीफार्म पहने हुए। कसम से दीदी आप बहुत ही क्यूट और ब्यूटीफुल लग रही हैं। मेरी आपसे गुज़ारिश है कि आपने ये जो पुलिस की नौकरी छोंड़ का सोचा हुआ है उस सोच को आप अपने ज़हन से निकाल दें। मैं आपको हमेशा ऐसे ही

पुलिस की इस वर्दी में देखना चाहता हूँ। "

" अगर ऐसी बात है मेरे प्यारे भाई। " साक्ष ी दीदी ने आगे बढ़ कर मेरे गालों पर सहलाते हुए कहा __" तो फिर अब तेरी ये दीदी पुलिस की नौकरी मरते दम तक नहीं छोंड़ेगी। भले ही चाहे जैसी भी परिस्थिति आ जाए। तुझे पता है विक्रम , मेरी इस नौकरी से मेरे मॉम डैड और वो कमीना जयदीप कोई भी खुश नहीं हैं। आज तेरे मुख से ये बात सुन कर मुझे बहुत खुशी हो रही है। मैं खुश हूँ कि तुझे मेरा नौकरी करना और पुलिस की इस वर्दी में देखना अच्छा लग रहा है। काश ! ये सब मैने बहुत पहले सोचा होता। मैने सोचा होता कभी तेरे बारे में तो कभी भी मैं तुझसे दूर न रहती। भाई क्या होता है ये मुझे अब पता चला है विक्रम । वरना तो भाई के नाम से ही नफ़रत हो गई थी मुझे। तुझसे एक ही विनती है अपनी इस दीदी को कभी खुद से दूर न करना। मैंने अपने उन रिश्तों से नाता तोड़ लिया है जिन रिश्तों के द्वारा मेरा ये वजूद दुनियाँ में आया है। अब अगर मेरा कोई है तो सिर्फ तू है मेरे भाई। जो गुज़र गया उसे तो मैं लौटा नहीं सकती विक्रम मगर आज जो है और जो आने वाला है उसे सवाँरने की पूरी कोशिश करू गी मैं। बस तू और तेरा साथ बना रहे। बोल न भाई , तू मुझे अपने साथ रखेगा न ?"

ये सब कहते हुए साक्षी दीदी की ऑखों से ऑसू बहने लगे थे। मैने तड़प कर उन्हें अपने सीने से लगा लिया। वो मुझसे कस के लिपट गईं और खुद को ज़ार ज़ार न रोने की नाकाम कोशिश करने लगीं। मैं उन्हें इस तरह रोते हुए नहीं देख सकता था। उनका कैरेक्टर हमेशा से ही बहादुर लड़की का रहा था मगर इस वक्त कोई देखे तो किसी कीमत पर यकीन करे कि ये लड़की बहादुर भी सकती है। बाहर से पत्थर की तरह कठोर दिखने वाली इस लड़की के सीने में भी एक नन्हा सा दिल है जो धड़कना भी जानता है अपनों के लिए।

" मत रोइये दीदी। " मैने उनकी पीठ को सहलाते हुए कहा __" आप रोते हुए बिलकुल भी अच्छी नहीं लगती हैं। आप तो मेरी सबसे ज्यादा बहादुर दीदी हैं। चलिए अब चुप हो जाइये। "

" मुझे रो लेने दे विक्रम। " दीदी मुझसे और भी कस के लिपट गईं , बोलीं ___" तुझे नहीं पता कि जब से मुझे असलियत का पता चला है तब से मैं कितना अंदर ही अंदर इन वेदनाओं में झुलस रही हूँ। वो कैसे लोग हैं मेरे भाई जो अपनी ही बहन बेटी के बारे में इतना गंदा सोच सकते हैं ? वो कैसे लोग हैं विक्रम जिनको रिश्तों की कोई क़दर ही नहीं है ? सिर्फ अपनी हवस के लिए वो किसी भी हद तक जाने को तैयार बैठे हैं। "

" अब कुछ मत कहिए दीदी। " मैने दीदी को खुद से अलग कर उनके ऑसुओं से तर चेहरे को अपनी दोनो हॅथेलियों के बीच लेकर कहा __" पाप करने वालों की उमर बहुत लम्बी नहीं होती है उनकी नियति में बहुत जल्द सड़ सड़ के मर जाना लिखा होता है। जो गुनाह जो पाप उन्होने किया है उसकी उन्हें ज़रूर सज़ा मिलेगी दीदी। बस सही वक्त का इन्तज़ार कीजिए। "

" तू उन सबको अपने हाथो से मौत की सज़ा देगा। " साक्षी दीदी ने कहा __" मैंने उन सबको सिर्फ तेरे लिए ही छोंड़ दिया था। मैं चाहती थी कि इन्होंने जिनके साथ पाप किया वही इन्हें अपने हाथो से सज़ा दें। और हाँ , तू अपने मन में पल भर के लिए भी ये ख़याल मत

लाना कि तू ऐसा करेगा तो मैं तुझे कुछ कहूँगी। मैं सच कहती हूँ विक्रम , मुझे इस बात का ज़रा सा भी दुख नहीं होगा कि तूने मेरे मॉम डैड और जयदीप को मौत दी। "

" आप शायद दुनियॉ की पहली ऐसी लड़की हैं दीदी जिसे इस सबसे कोई दुख नहीं होगा। " मैने दीदी की ऑखों में देखते हुए कहा __" किन्तु आप ऐसा कह रही हैं ये हैरत की बात है मेये लिए। "

" इसमें हैरत कैसी विक्रम ?" साक्षी दीदी ने कहा __" हर इंसान को अपने अच्छे बुरे कर्मों का फल मिलता है। मेरे घर वालों को भी मिलेगा। तक़लीफ़ तो तब होती है जब अच्छे कर्मों का फल बुरा मिलता है , लेकिन इन लोगों ने तो सिर्फ बुरा कर्म ही किया है अपनी ज़िंदगी में। इन लोगों के मर जाने से मुझे कोई दुख नहीं होगा मेरे भाई , बल्कि इस बात का मलाल ज़रूर रहेगा कि ईश्वर ने मुझे ऐसे मॉ बाप और ऐसा भाई क्यों दिया था ?"

साक्षी दीदी की इन बातों को सुन कर मैं हैरानी से उनकी तरफ देखता रह गया था। मुझे उन पर बड़ा स्नेह आया। मैने झुक कर उनके माथे पर हल्के से चूँम लिया। मेरे इस तरह चूमने पर वो हौले से मुस्कुराईं।

" तू सच में बड़ा हो गया है विक्रम। " साक्षी दीदी ने मेरे चेहरे को एक हाथ से सहलाते हुए कहा __" इस बात से मुझे खुशी है कि तू बड़ा हो गया है और समझदार भी। हलॉकि ये बात तो मैं पहले भी जानती थी कि तू एक समझदार लड़का है। सबके प्रति तेरे दिल में प्यार इज्ज़त व सम्मान की भावना है। ख़ैर छोंड़ इन सब बातों को , ये बता कि तू तहखाने में कैसे पहुँच गया था ?"

" वो हरि या काका के बिहैवियर से मुझे उन पर संदेह हुआ। " मैने गहरी सास लेने के बाद कहा __" आप तो जानती ही हैं कि अगर किसी के मन में किसी तरह का संदेह हो जाता है तो वो हर पल यही प्रयास करता रहता है कि उसे जिस चीज़ पर संदेह हुआ है वो उसके सामने साफ तौर पर खुल जाए या उसकी हकीक़त पता चल जाए। बस हरिया काका के मामले में यही हुआ था। मुझे उन पर संदेह हुआ और जैसे ही वो तहखाने वाले रास्ते की तरफ गए तो मैं भी शंकर काका की नज़रों से खुद को छुपा कर हरिया काका के पीछे चला गया। उनके पीछे जाने से तहखाने में जो सच्चाई मुझे पता चली उसने मुझे मुकम्मल तौर पर हिला कर रख दिया। मुझे पता चला कि तहखाने में मौजूद उन चारो हरामज़ादो ने मेरी प्राची के साथ क्या किया था ? उसके बाद फिर मुझे वही करना था जो ऐसी परिस्थिति में कोई भी करता। मगर ऐन वक्त पर आपका फोन आ गया और मैं उन कमीनों के साथ वो न कर पाया जो करने का मैने फैंसला कर लिया था। "

" मुझे माफ़ कर दे विक्रम। " दीदी ने गंभीरता से कहा __" पर तुझे नहीं पता कि उन लोगों के साथ साथ मैं और किन किन लोगों के साथ क्या क्या करने वाली हूँ ? इन चारों को आसान मौत मारने का कोई मतलब नहीं है मेरे भाई। मैंने ऐसा कुछ करने का सोचा हुआ है जिसके बारे किसी ने सोचा भी नहीं होगा। "

" क्या करने का सोचा है आपने ?" मैने दीदी के चेहरे को ग़ौर से देखते हुए कहा __" क्या मुझे नहीं बताएँगी आप ?"

" बात कुछ ऐसी है मेरे भाई। " साक्षी दीदी ने सहसा पलट कर दूसरी तरफ अपना चेहरा करते हुए कहा __" कि मैं तुझे बता नहीं सकती। बस इतना समझ ले कि इन लोगों ने अगर नीचता की हद को पार किया था तो मैं इन्हें सज़ा देने में इनके साथ नीचता की इन्तेहां कर दूँगी। "

" क्या मतलब ???" मैं दीदी की बात सुन कर बुरी तरह चौंका था __" ऐसा क्या करने वाली हैं आप ??"

" मैने कहा न विक्रम। " साक्षी दीदी ने दूसरी तरफ मुँह किये हुए ही कहा __" कि मैं तुझे इस बारे में कुछ बता नहीं सकती। "

" लेकिन दीदी। " मैं उनके पास जाते हुए बोला __" आपने तो सोच लिया है कि आपको उन चारों को क्या सज़ा देना है लेकिन बात जब नीचता की हो तो मैं ये कैसे सह सकता हूँ कि मेरी बहन कोई नीचता वाला काम करे ? नहीं दीदी आप ऐसा कुछ भी नहीं करेंगी। आप मुझे बताइये कि उन चारों के साथ साथ और कौन कौन ऐसे हैं जिनको उनके गुनाहों की सज़ा देनी है ? मैं खुद अपने हाथो से उन्हें बद से बदतर सज़ा दूँगा। "

" मुझे मजबूर मत कर मेरे भाई। " साक्षी दीदी सहसा मेरी तरफ पलट कर मेरे चेहरे की तरफ देखते हुए कहा _" तू मेरा भाई है , इस लिए मैं तुझे वो बात कैसे बता सकूँगी जिसे बताने में मुझे शर्म आए। दूसरी बात तू भी यही सोचेगा कि तेरी दीदी कैसे गंदे विचारों की है ?"

" ऐसा कुछ नहीं है दीदी। " मैने उनके चेहरे को अपनी दोनो हॅथेलियों के बीच लेकर कहा __" मुझे पता है कि आपका मन और दिल गंगा मइया की तरह साफ और निर्मल है। आपने अपने जीवन कभी कोई ऐसा काम नहीं किया है जिसके लिए आपको किसी के सामने शर्मिंदा होना पड़े। सच कहूँ तो मुझे इस सबसे आप पर नाज़ है। इस लिए आप मुझे बेझिझक होकर बताइये कि इन लोगों के साथ और कौन कौन हैं जिनको आप ऐसी सज़ा देने का मन बनाया हुआ है ?"

" विवेक रस्तोगी को तो तू जानता ही है कि वो कौन है और किसका कपूत है ?" साक्षी दीदी ने गहरी सास लेने के बाद कहा __" इस प्रदेश का मंत्री है वो। विवेक के साथ बाकी तीन जो लड़के और हैं वो सब भी किसी न किसी बड़े बाप की औलाद हैं। जब प्राची वाला हादसा इन लोगों ने अंजाम दिया और मुझे उन सबके बारे में पता चला तो मुझे ये समझते देर न लगी कि इन लड़कों को कानूनन सज़ा दिलवाने से भी कुछ नहीं होने वाला। क्योंकि इनके सबके बाप बड़े बड़े लोग हैं। सारी कानून व्यवस्था को इन लोगों ने अपने हाथो पर रखा हुआ है। अगर मैं इन लोगों को गिरफ्तार करके जेल की सलाखों के पीछे डाल भी देती तो पलक झपकते ही मुझे उन लोगों को छोंड़ना भी पड़ जाता। ऊपर से यही आर्डर आता कि मंत्री साहब का बेटा और उसके तीनो साथियों मैने बेवजह ही गिरफ़्तार कर जेल में बंद किया

है। कहने का मतलब ये कि कानूनी तौर पर मैं इन्हें कोई सज़ा दिला ही नहीं पाती। इस लिए मैंने कानून की मुहाफिज़ होते हुए भी कानून को अपने हाथ में लेने का मन बना लिया। किन्तु मैं ये भी जानती थी कि ये सब इतना आसान नहीं था। तब मैने अपने आला अफसर से इस संबंध में बात की। उन्हें मैंने इस बात का भी हवाला दिया कि प्रदेश का मंत्री कहने को तो मंत्री है मगर ऐसा कोई गुनाह या अपराध नहीं है जिसे इसने अपने बाकी साथियों के साथ मिल कर अंजाम न दिया हो। मेरी बात सुन कर कमिश्नर साहब राजी तो हुए मगर मंत्री के खिलाफ कोई पुख्ता सबूत न होने की वजह से उस पर हाथ डालने से मुझे मना भी करने लगे। तब मैने उन्हें बताया कि मेरे पास मंत्री के खिलाफ़ ऐसे ऐसे ठोस सबूत हैं जिनकी बिना पर मैं जब चाहूँ तब उसे और उसके सभी साथियों को बीच चौराहे पर नंगा दौड़ा देने पर मजबूर कर दूँ। मेरी बातें सुन कर कमिश्नर साहब ने मुझे खुली छूट दे दी और कह दिया कि मेरा जो दिल करे वो मैं कर सकती हूँ। "

" ओह तो इसका मतलब बात सिर्फ इतनी ही नहीं है जितनी कि मुझे नज़र आ रही है। " मैने चकित भाव से दीदी की तरफ देखते हुए कहा __" इस सब में प्रदेश का मंत्री और उसके कुछ साथी भी इनवॉल्व हैं ?"

" इन्वाल्ब नहीं है विक्रम। " साक्षी दीदी ने कहा __" बल्कि इस खेल में उन सबको भी लपेटना पड़ा मुझे। मैं चाहती थी कि एक ही काम में दोनो काम हो जाएँ। सारा प्रदेश उस मंत्री के अत्याचार से भी दुखी है। इस लिए बाप बेटों को एक साथ लपेटने का मन बनाया मैने। "

" तो इसमें ऐसी क्या बात थी दीदी जिसे आप बताना नहीं चाहती थी ?" मैने सोचने वाले भाव से कहा।

" ये तो मैने किरदारों के बारे में बताया है तुझे। " साक्षी दीदी ने कहा __" ये नहीं बताया कि इन सब किरदारों के साथ क्या करू गी मैं ?"

" ओह आई सी। " मैने कहा __" आप बताना नहीं चाहती तो कोई बात नहीं दीदी। मैं सिर्फ ये चाहता हूँ कि इस सब में आपको कुछ न हो। आपकी बातों से मैं ये बात समझ गया हूँ कि जिन लोगों की आपने बात की है वो निहायत ही खतरनाक लोग हैं। इस लिए उन पर हाथ डालने से यकीनन बेहद ख़तरा है और मैं ये हर्गिज़ नहीं चाह सकता कि ऐसे ख़तरों के बीच मेरी दीदी अकेले फॅस जाएँ। अच्छा हुआ कि आपने मुझे इस बारे में बता दिया। अब मैं खुद आपको इस ख़तरे के बीच अकेला नहीं रहने दूँगा। ये लड़ाई अब हम दोनो बहन भाई मिल कर लड़ेंगे और जीत कर दिखाएँगे दुनियॉ को। "

" ये तू क्या कह रहा है मेरे भाई ?" साक्षी दीदी एकाएक ही चौंक पड़ी थी , बोली __" नहीं नहीं , तू इस सबसे दूर ही रह। मैं तुझे ऐसे ख़तरे के बीच में आने की इजाज़त हर्गिज़ नहीं दूँगी। बड़ी मुश्किल से तो मेरा भाई मुझे मिला है। सारी उमर मैने तुझे दुख तक़लीफ़ें दी थी अब और नहीं मेरे भाई। मैं तुझे किसी भी ख़तरे में नहीं डालूँगी। तू इस सबसे दूर रहेगा और इन सबको साथ लेकर वापस मुंबई चला जाएगा। तू मेरी फिक्र मत कर विक्रम , तेरी दीदी इतनी कमज़ोर नहीं है कि कोई भी ऐरा गैरा उसे हाथ भी लगा सके। "

" मैं जानता हूॅ कि मेरी दीदी दुनियॉ की सबसे बहादुर लड़की है। " मैने दीदी को उनके दोनो कंधों से पकड़ कर कहा __" मगर , एक भाई होने के नाते मेरा भी कुछ फर्ज़ बनता है। मैं सक्षम होते हुए भी आपको अकेले ऐसे ख़तरे में कैसे जाने दूॅ ? मेरे दिल मेरा ज़मीर हमेशा इस बात के लिए मुझे धिक्कारेगा कि मैंने अकेले आपको इतने बड़े खतरे में जाने दिया और खुद अपनी जान बचा कर मुंबई चला गया। नहीं दीदी , ऐसा कायर और बुजदिल नहीं है आपका भाई। आप भी तो मुझे मुद्दतों बाद मिली हैं। आप जानती हैं कि बचपन से अब तक मैं आपसे बात करने के लिए तरस रहा था और आज जब मुझे मेरी सबसे प्यारी दीदी मिल गई है तो मैं कैसे आपको यूॅ अकेला मौत के मुह में छोंड़ कर चला जाऊॅगा ? कभी नहीं दीदी .... कभी नहीं। मैं मर जाऊॅगा मग र आपको यूॅ अकेला छोंड़ कर यहॉ से कहीं नहीं जाऊॅगा। "

" नहींऽऽऽ। " मेरे मुख से मरने की बात सुन कर तुरंत ही दीदी के मुख से चीख निकल गई। झपट कर मुझे अपने गले से लगा लिया उन्होंने , फिर बोलीं __" ख़बरदार अगर ऐसी अशुभ बात दुबारा कही तो। मरेंगे तेरे दुश्मन। तुझे कुछ नहीं होने दूॅगी मैं। "

" तो फिर मुझे अपने पास रहने दीजिए दीदी। " मैने उनके गले लगे हुए ही कहा __" मुझे अपना फर्ज़ निभाने दीजिए। अपने इस भाई को कायर और बुजदिल मत बनाइये। वरना यकीन मानिये मैं कभी भी सुकून से जी नहीं पाऊॅगा। हम दोनो साथ मिल कर हर ख़तरे का मुकाबला करेंगे। सब कुछ ठीक होने के बाद हम सब साथ में ही रहेंगे। मुझे आपसे बहुत सारी बातें भी करनी हैं। प्लीज़ दीदी , मुझे अपने साथ रहने दीजिए न। "

" उफ्फ विक्रम। " दीदी ने मुझे कस के पकड़ते हुए कहा __" तू इतना अच्छा क्यों है रे ? इतना प्यार क्यों करता है तू अपनी इस दीदी से ? क्या तू भूल गया कि ये वही दीदी है जिसने तुझे कभी अपना भाई नहीं माना और हमेशा तुझे जलील करके तेरा दिल दुखाया है। ऐसी दीदी से क्यों इतना प्यार करता है पगले ?"

" मुझे आपसे कभी कोई दुख नहीं मिला दीदी। " मैं उनसे अलग होकर तथा उनके खूबसूरत चेहरे को अपनी हॅथेलियों पर लेकर कहा __" और ना ही आपने कभी मुझे कोई दुख दिया है। हर इंसान के जीवन में अच्छा बुरा समय आता है। इस लिए जो बीत गया मुझे उसका लेश मात्र भी रंज़ नहीं है , बल्कि आज इस बात की बेहद खुशी है कि मुझे वो दीदी मिल गई है जिसे मैं सबसे ज्यादा पसंद करता था। "

मेरी बात सुन कर साक्षी दीदी फफक कर रो पड़ी। उनकी ऑखों से झर झर करके ऑसूॅ बहने लगे। ये देख कर मैं तड़प उठा। मैने अपने दोनो हाथो से उनकी ऑखों से बहते हुए ऑसुओं को पोंछा।

" ऐसी बातें मत कर मेरे भाई। " दीदी ने सिसकते हुए कहा __" मैं अपने अंदर के जज़्बातों को संभाल नहीं पाऊॅगी। मेरा दिल धड़कना बंद कर देगा। आज मुझे एहसास हुआ कि सच्चा प्यार व स्नेह कैसा होता है ? क्यों इस प्यार में लोग अपने किसी प्रिय के लिए खुद को कुर्बान कर देते हैं ? तू प्यार मोहब्बत और प्रेम का जीता जागता प्रमाण है विक्रम । मैं अपने

भाई के इस सच्चे प्रेम में बह जाना चाहती हूँ। म ??

विक्रम के कमरे से जाते ही साक्षी ने अपने जिस्म से पुलिस की वर्दी निकाली और एक टॉवेल लेकर बॉथरूम में घुस गई। उसके सिर पर जो चोंट लगी थी वो बहुत ज्यादा दर्द कर रही थी। किन्तु उसने अपने उस दर्द को बड़ी मुश्किल से जज़्ब किया हुआ था। खून तो रिसा था किन्तु उसने पॉकेट से रुमाल निकाल कर उसे पहले ही साफ कर लिया था। चोंट इतनी भी गहरी नहीं थी जिससे बात गंभीर होती। जीप के किनारे पर लगा लोहे का पाइप उसके सिर के किनारे वाले भाग के थोड़ा सा ऊपर लगा था। उस आदमी को जीप में डालने के बाद ही उसने सिर से रिस रहे खून को रुमाल से साफ किया था। उसके बाद उसने सिर पर वापस पीकैप पहन ली थी जिससे चोंट से रिसा हुआ खून और चोंट दिखनी बंद हो गई थी। वो नहीं चाहती थी कि उसको लगी किसी भी प्रकार की चोंट फार्महाउस में किसी को भी नज़र आए या पता चले।

बाथरूम में साक्षी ने खुद को फ्रेश किया और फिर बाहर आ गई। कमरे में उसने एक नई वर्दी पहनी और फिर पीकैप लगा कर खुद को पूरी तरह तैयार किया। आलमारी से उसने एक दर्द की टैबलेट ली और वहीं एक साइड रखे पानी के बाटल से उसने उस टैबलेट को खाया। उसके बाद वो कमरे से बाहर आ गई।

नीचे डायनिंग हाल में इस वक्त खाना खाने के लिए सिर्फ तीन ही लोग थे। विक्रम, आशा, और साक्षी। साक्षी के आने के बाद रौनक की मॉ ने उन तीनों को खाना परोसा। तीनों ने बड़े आराम से खाना खाया। बॉकि सब अपने अपने कमरे में थे। कुछ ही देर में तीनों ने खाना खा लिया।

" तू क्या फिर से ड्यूटी पर जा रही है साक्षी ?" आशा दीदी ने पूछा __" मैने तो सोचा था कि हम सब यहॉ गप्पें लड़ाएंगे। मगर अब जबकि तू जा रही है तो फिर मैं क्या करू गी इसके सिवा कि कमरे में जाकर लम्बी तान कर सो जाऊँगी। "

" लम्बी तान कर सोने की ज़रूरत नहीं है आशा। " साक्षी दीदी ने कहा __" शाम को तुम सबको विक्रम के साथ मुंबई के लिए निकलना है। इस लिए सामान की पैकिंग करके रेडी रहना। "

" क्याऽऽ ???" आशा दीदी बुरी तरह चौंकी __" हम आज ही शाम को यहॉ से जाएँगे ???"

साक्षी दीदी की बात सुनकर मैं भी बुरी तरह चौंक पड़ा था। मैं तो कुछ और ही सोचे हुए था। साक्षी दीदी के साथ जाकर रास्ते में उनसे रामगंज जाने के लिए कहने वाला था ताकि अपनी सभी टिकटें कैंसिल करवा सकूँ। मगर दीदी की इस बात ने मुझे हिला कर रख दिया था।

" हॉ आशा। " उधर दीदी कह रही थीं __" तुम लोगों का यहॉ से सुरक्षित मुंबई निकलना ज़रूरी है। क्योंकि आने वाला हर पल एक नये ख़तरे को अपने साथ लेकर आ रहा है। तुम

सबके यहॉ रहते हुए किसी भी प्रकार की अनहोनी हो सकती है। इस लिए मैं चाहती हूॅ कि तुम सब यहॉ से मुंबई चले जाओ। "

" अच्छा ठीक है साक्षी। " आशा दीदी ने कहा __" मैं मॉ को भी बता देती हूॅ इस बारे में। "

" ठीक है । " साक्षी दीदी ने कहा __" रौनक और विक्रम के उस दोस्त को भी बता देना। चल विक्रम। "

अंतिम वाक्य मुझे देख कर कहने के साथ ही साक्षी दीदी कुर्सी से उठ कर बाहर की तरफ चल दी। उनके पीछे पीछे मैं भी बुझे मन से चल दिया। बाहर आकर दीदी अपनी जिप्सी की तरफ बढ़ गईं। जिप्सी की ड्राइविंग सीट पर बैठ कर दीदी ने मुझे भी साथ में बैठने को कहा तो मैं भी चुपचाप बैठ गया। मेरे बैठते ही दीदी ने जिप्सी मेन गेट की तरफ दौड़ा दिया।

" काका , यहॉ सबका ख़याल रखना। " लोहे वाले गेट के पास रुक कर दीदी ने हरिया काका से कहा __" हम आते है कुछ देर में। "

" फिकर ना करो बिटिया। " हरिया काका ने कहा _" हमरे रहते यहॉ काहू का कुछू न होई। "

हरिया काका की बात सुन कर दीदी मुस्कुराई और फिर जिप्सी को आगे बढ़ा दिया। मैं उतरा हुआ चेहरा लिये दूसरी तरफ देख रहा था। सच कहूॅ तो मुझे दीदी का आशा दीदी से ये कहना कि वो सब लोग मेरे साथ आज शाम ही मुंबई जाएॅगी बिलकुल अच्छा नहीं लगा था।

" क्या हुआ मेरा भाई नाराज है मुझसे ?" सहसा साक्षी दीदी ने मेरी तरफ देख कर कहा था। उनकी ये बात सुन कर मैने उनकी तरफ एक नज़र देखा और फिर बिना कुछ बोले फिर से दूसरी तरफ देखने लगा।

" अपने से दूर तो मैं भी तुझे नहीं जाने देना चाहती मेरे भाई। " दीदी ने गहरी सास ली __" मगर मौजूदा हालात कुछ ऐसे हैं कि मुझे ये सब करना पड़ रहा है। मगर मैं ये नहीं कह रही विक्रम कि इस जंग में मैं या तू अकेले है ... नहीं नहीं बल्कि हम दोनो साथ साथ ही हैं। "

उनकी इस बात से मैने चौंक कर उनकी तरफ एक झटके से देखा। वो मुझे देख कर मुस्कुरा रही थी। उनकी इस मुस्कान को देख कर मेरी सारी नाराजगी दूर हो गई।

" हॉ विक्रम। " उन्होंने फिर कहा __" हम दोनो साथ साथ ही इस खेल में काम करेंगे। मगर ....

" मगर क्या दीदी ???" मैं चकराया।

" मगर ये कि तू अभी इन सबको लेकर मुंबई सुरक्षित पहुॅच जा। " दीदी ने कहा __" जब ये सब वहॉ पहुॅच जाएॅगे तो इनकी सुरक्षा की चिंता से हम दोनो ही मुक्त हो जाएॅगे। उसके

बाद तुम वहॉ से वापस आ जाना यहॉ। हम दोनो तसल्ली से फिर इस खेल को अंजाम तक पहुँचाएॅगे। "

" आपने ठीक कहा दीदी। " मैने कहा __" हम स्वतंत्रतापूर्वक ये जंग तभी लड़ सकेंगे जब हमारी ये सारी कमज़ोरियॉ हमारे दुश्मन की नज़र से या पहुँच से बहुत दूर हो जाएॅगी। क्योंकि हमारे दुश्मन ने अगर हमारी एक भी कमज़ोरी को नुकसान पहुँचा दिया तो वो नुकसान हम हर्गिज़ भी सह नहीं सकेंगे। "

" बिलकुल ठीक समझे मेरे भाई। " साक्षी दीदी ने मुस्कुरा कर कहा __" मैं यही कर रही हूँ। मैं चाहती हूँ कि तू हमारी इन सारी कमज़ोरियों को यहॉ से मुंबई ले जाकर उन्हें सुरक्षित कर दे। उसके बाद तू वापस यहॉ आ जाना , उस सूरत में हम दोनो बहन भाई खुल कर और तसल्ली से अपनी जंग लड़ सकेंगे। "

" मैं समझता था कि ये जंग सिर्फ मेरी है दीदी। " मैने सहसा गंभीर होकर कहा __" और इस जंग को अकेले ही मुझे इसके अंजाम तक पहुँचाना है। मगर आपसे मिल कर ये पता चला कि इस जंग में मैं अकेला नहीं हूँ बल्कि मेरे साथ मेरे हर क़दम में मेरा साथ देने के लिए मेरी सबसे अज़ीज़ दीदी भी तैयार बैठी हैं। ये मेरे लिए ऐसी खुशी है दीदी जिसका मैं बयान नहीं कर सकता। "

" चल अब तू फिर से न मुझे इमोश्नल कर देना। " साक्षी दीदी ने हौले से हॅसते हुए कहा __" वरना मैं फिर रोने लग जाऊँगी। "

" नहीं दीदी। " मैने तपाक से कहा __" आप रोना नहीं। आपकी ऑखों में ऑसू देखते ही मेरे अंदर कुछ टूटने सा लगता है। जिससे मुझे तक़लीफ़ होने लगती है। "

" अच्छा ये सब छोंड़ भाई। " साक्षी दीदी मेरी बात पर पहले तो मुस्कुराईं फिर सहसा बेचैनी से पहलू बदलते हुए कहा __" विक्रम तुझसे कुछ पूछूॅ ?"

" ये क्या बात हुई दीदी ?" मैने दीदी की तरफ देखा _" कोई बात पूछने के लिए भला आपको मुझसे इजाज़त मॉगने की क्या ज़रूरत है ?"

" अच्छा नहीं मॉगती इजाज़त। " दीदी फिर मुस्कुराई , बोली __" मैं तुझसे जो कुछ भी पूछना चाहती हूँ उसका तू सच सच जवाब देगा न ?"

" हॉ बिलकुल दीदी। " मैने कहा __" मैं आपके हर सवाल का सच सच जवाब दूँगा। पूछिए क्या पूछना चाहती हैं आप ?"

" मेरे मन में कई सारी बातें है विक्रम। " साक्षी दीदी ने सामने रास्ते की तरफ देखते हुए कहा __" और उन्हीं कई सारी बातों में कई सारे सवाल भी हैं जिनके बारे में मुझे जानना है। तू तो जानता है कि मैं एक पुलिस ऑफिसर भी हूँ इस लिए हर सवालों का सही सही जवाब पाना मेरी इस पुलिसिया फितरत में भी शामिल है। "

" कोई बात नहीं दीदी। " मैने मुस्कुरा कर कहा __" आपको जो कुछ भी जानना है मुझसे आप बेझिझक पूँछ सकती हैं। अगर आपके सवालों के जवाब मेरे पास होंगे तो ज़रूर मैं आपके हर सवाल का जवाब दूँगा। "

" सबसे पहला सवाल तो यही है कि तू मुंबई में कहाँ और किस हाल में रेणुका चाची और गुड़िया को साथ लिए रहता है ?" साक्षी दीदी ने कहा __" और अब तो तू इन सबको भी अपने साथ ही लिए जा रहा है तो मेरा ये सोचना जायज़ ही है कि इतने सारे लोगों को तू कहाँ ठहराएगा और कैसे सुरक्षित रखेगा ?"

" बड़े पापा तो मेरे बारे में यही सोचते हैं दीदी। " मैने सहसा मुस्कुरा कर कहा __" कि मैं मुंबई में कहीं किसी होटल या ढाबे में कप प्लेट धोने वाला काम करता होऊँगा। जबकि मेरी सच्चाई का अगर आज उन्हें पता चल जाए तो उनके पैरों तले से ये ज़मीन गायब हो जाएगी। "

" क्या मतलब ???" साक्षी दीदी बुरी तरह चौंक कर मेरी तरफ देखने लगी थी।

" मतलब साफ है दीदी। " मैने गहरी सास ली __" ईश्वर से बड़ा कोई नहीं होता दुनियाँ में। ये ईश्वर की ही रहमत है दीदी कि मैं चाहूँ तो यहाँ पर खड़े खड़े ही पूरा सोनपुर गाँव ख़रीद लूँ। जिस मामूली सी प्रापर्टी को पाने के लिए बड़े पापा ने ये सब किया था न उस प्रापर्टी की लाखों गुनी दौलत आज मेरे पास है। "

" ये तू क्या कह रहा है विक्रम ?" साक्षी दीदी बुरी तरह उछल पड़ी थी। ब्रेक पैडल पर लगभग वो खड़ी ही हो गई थी। जिसके चलते जिप्सी के टायर ज़ोर से चीखते हुए सड़क पर स्थिर हो गए थे। मेरी तरफ आश्चर्यचकित नज़रों से देखते हुए बोलीं __" तेरे पास इतनी सारी दौलत कहाँ से आ गई ? तू .... तूने कहीं कोई ग़लत काम करके तो नहीं ये दौलत अर्जित की है ??"

" हाहाहाहा अरे नहीं दीदी। " मैने हँसते हुए कहा __" क्या आपको लगता है कि आपका ये भाई दौलत पाने के लिए कोई ग़लत काम करेगा ?"

" लगता तो नहीं है विक्रम। " दीदी की आँखें अभी भी फैली हुई थी , बोली __" मगर सवाल तो खड़ा होता ही है कि इतनी सारी दौलत अचानक एक साथ मिल जाना कैसे संभव हो सकता है ?"

" इस दुनियाँ में सब कुछ संभव है दीदी। " मैने कहा __" और इसका जीता जागता प्रमाण मैं खुद हूँ। "

" लेकिन कैसे मेरे भाई ??" साक्षी दीदी चकित भाव से बोल पड़ीं ___" ये असंभव संभव कैसे हो गया ? और अगर ऐसा ही है तो यकीनन विक्रम ये बहुत ख़ुशी की बात है। "

मैने दीदी को संक्षेप में सारी कहानी बता दी। उन्हें बताया कि कैसे एक अरबपति इंसान ने मुझे अपना बेटा बना लिया और अपनी सारी संपत्ति मेरे नाम कर दी। मैने उन्हें बताया कि मैं उसी

अरबपति आदमी की मल्टीनेशनल कंपनी में नौकरी करता था। मेरे काम और मेरे नेचर से प्रभावित होकर वो आदमी एक दिन मेरा मसीहा बन गया।

मैने उन्हें बताया कि आज मैं अपने पूरे परिवार के साथ उसी आदमी के अलीशान बंगले में शान से रहता हूँ। मेरी ये कहानी सुन कर दीदी आश्चर्यचकित रह गईं थी। काफी देर तक उनके मुख से कोई बोल न फूटा।

" ये ... ये तो कमाल हो गया विक्रम। " फिर दीदी ने खुशी से फूली न समाते हुए कहा __" मैं समझ सकती हूँ मेरे भाई। हॉ भाई , मैं सब समझ गई। ईश्वर ने तुझे तेरे अच्छे कर्मों का फल दिया है। उससे तेरी दुख तक़लीफ़ें नहीं देखी गई और इसी लिए उसने उस आदमी को तेरा मसीहा बना कर भेज दिया तेरे पास। हॉ भाई , यही सच है। मैं बहुत खुश हूँ तेरे लिए विक्रम। "

" अब तो आप इस बात से बेफिक्र हैं न कि इन सबको मैं मुंबई में कैसे रखूँगा ?" मैने मुस्कुरा कर कहा था।

" हॉ विक्रम। " दीदी ने जिप्सी को आगे बढ़ाते हुए कहा _" अब मुझे इन लोगों की कोई चिन्ता नहीं है। "

" हम्म , अब बताइये और क्या जानना है आपको ?" मैने बात को आगे बढ़ाया।

" मैं नहीं जानती विक्रम कि जो मैं तुझसे कहने वाली हूँ या जानने वाली हूँ उसका तुझे पता है भी या उसका तुझसे कोई ताल्लुक है भी कि नहीं। " दीदी ने कहा __" मगर फिर भी इस लिए कह रही हूँ कि तू मेरा भाई है और तुझे भी जानने का हक़ है कि घर परिवार के बीच या तेरी बहन के साथ क्या क्या हुआ ?"

" जी कहिए न दीदी। " मैने कहा __" आप बेझिझक अपनी बात मुझसे शेयर कर सकती हैं। "

" मैने पुलिस की नौकरी अपने शौक के लिए तो की ही थी विक्रम। " साक्षी दीदी ने जैसे कहना शुरू किया __" मगर दिल में ये भी हसरत थी कि मैं ये नौकरी पूरी ईमानदारी के साथ करू गी। ख़ैर , ड्यूटी ज्वाइन करने से पहले ही मेरे मन में ये बात थी कि मैं चार्ज़ संभालते ही सबसे पहले दादा दादी के केस पर काम करू गी। यानी मैं पता लगाऊँगी कि उनका एक्सीडेन्ट वास्तव में एक हादसा ही था या फिर किसी की सोची समझी चाल थी ? चार्ज़ संभालते ही मैने ऐसा किया भी , मगर पुलिस रिकार्ड में मुझे कहीं कोई ऐसा सुराग़ या क्लू तक नहीं मिला जिससे मुझे संदेह भी हो सके कि उनका एक्सीडेन्ट सोची समझी चाल का नतीजा हो सकता है। कहने का मतलब ये कि मैने दादा दादी वाले केस में बहुत छानबीन की मगर कुछ भी हाथ न लगा। थक हार कर मैने उस केस से अपना ध्यान हटा लिया। ये अलग बात थी कि दिल में ये मलाल अब भी है कि मैं दादा दादी के केस में कुछ भी न कर सकी। "

इतना सब कहने के बाद साक्षी दीदी कुछ पल के लिए रुकी और एक नज़र मेरे चेहरे की तरफ

देखने के बाद फिर से सामने की तरफ देखने लगीं।

" उसके बाद फिर डैड के साथ अजीब सी घटनाएॅ होने लगीं। " साक्षी दीदी ने गहरी सास लेने के बाद फिर से कहना शुरू किया __" सबसे पहले जो उनके साथ अजीब घटना हुई वो ये थी कि कोई विदेशी व्यक्ति उन्हें करोड़ो का चूना लगा कर कहीं गायब हो गया। अख़बार में इस बात की ख़बर भी छपी थी। जिसके चलते डैड की इज्ज़त पर भी असर हुआ। मैं जानती हूॅ कि डैड ने उस विदेशी की खोज में धरती आसमान एक कर दिया होगा मगर उनके हाथ कुछ न लगा। ख़ैर , इस अजीब घटना के बाद डैड के साथ फिर से एक घटना घटी। उनकी फैक्ट्री में आग लग गई। फैक्ट्री में लगी आग की जॉच उन्होंने अपने तरीके से करवाई थी और रिपोर्ट भी अपने तरीके से ही बनवाई थी। ऐसा शायद उन्होंने इस लिए किया था ताकि उनकी रेपुटेशन पर फिर से कोई धब्बा न लग जाए। हलॉकि धब्बा लगने से वो तब भी नहीं रोंक पाए थे। मैने जब देखा कि कोई नतीजा ही नहीं निकला है तो मैने फैक्ट्री की जॉच करने का खुद ही बीड़ा उठाने का सोचा। मेरे मन में ऐसा करने की सिर्फ दो ही वजहें थी। पहला ये जानना कि ऐसा कौन है जिसने डैड की फैक्ट्री में आग लगाई ? दूसरा ये कि डैड के हुए उस भारी नुकसान की भरपाई करना। ज़ाहिर सी बात है कि अगर मुजरिम का पता चल जाता तो उससे इस नुकसान की भरपाई कर ली जाती। मगर ऐसा भी न हो पाया था। इसमें सबसे ज्यादा चौंकानी वाली बात ये हुई थी कि जब मैने खुद जॉच करने के लिए केस रिओपन करवाया तब रामगंज शहर का सारा पुलिस महकमा ही बदल दिया गया था। हर कोई इस बात से हैरान था। मगर समझ में किसी को कुछ न आया था। दूसरी हैरानी की बात ये कि लाख कोशिशों के बाद भी उस केस में ये नहीं पता चल सका कि फैक्ट्री में आग आख़िर किसने लगाई थी ? हलॉकि इसमें एक कमज़ोरी ये थी कि डैड ने पूरी ईमानदारी से कोऑपरेट नहीं किया था। "

इतना कुछ बोलने के बाद साक्षी दीदी चुप हो गईं। मैने सोचा शायद वो कुछ और बोलेंगी मगर ऐसा न हुआ। उनकी नज़रें सामने रास्ते पर ही लगी हुई थी।

" ये तो थी घटनाओं की बातें। " तभी उन्होंने फिर से कहना शुरू किया __" और ये सब मैने तुझसे इस लिए शेयर किया विक्रम ताकि तू भी जान सके कि ये केस मेरी नाकामी का भी हिस्सा हैं। जिन्हें मैं सुलझा नहीं पाई। मगर जबसे ये सब हालात शुरू हुए तब से मैने हवेली के अंदर भी कान लगाना शुरू कर दिया था। उससे ज्यादा तो नहीं मगर इतना ज़रूर सुना मैने कि तेरा ज़िक्र बार बार हवेली के अंदर मेरे मॉम डैड के बीच हुआ। एक बार तो मैने ये भी सुना कि ये सब तुमने किया है। मैं ये सुन कर हैरान तो हुई मगर ज्यादा ध्यान नहीं दिया कभी। क्योंकि तब मेरे दिमाग़ में भी यही बातें थी कि तू ये सब कर ही नहीं सकता। मगर ज्यादा दिनों तक मैं तुझे भी नज़रअंदाज़ नहीं कर पाई। क्योंकि कहीं न कहीं मेरे भी दिमाग़ में ये बात आ ही गई थी कि मेरे डैड का अगर कोई सबसे ज्यादा बुरा करना चाहेगा तो वो सिर्फ तू ही था। इस लिए मैंने उन सभी घटनाओं में तुझे जोड़ना शुरू किया और फिर मुझे भी ये लगने लगा कि तेरा इन सभी घटनाओं में ताल्लुक यकीनन हो सकता है। "

ये सब कहने के बाद साक्षी दीदी एकदम से चुप हो गईं। जिप्सी पुल के पास पहुॅच चुकी थी।

इस लिए जिप्सी रोंक कर साक्षी दीदी मेरी तरफ अजीब भाव से देखने लगी थीं। जैसे मेरे चेहरे से ही समझ जाना चाहती हों कि सच्चाई क्या है।

" मेरा ही तो इन सभी घटनाओं में ताल्लुक था दीदी। " मैने गहरी सास लेते हुए जैसे उनके ऊपर बम फोड़ा __" हॉ दीदी। आपने जिन घटनाओं का ज़िक्र किया उन सबका कर्ता धर्ता मैं ही तो था। वो विदेशी डीलर भी मैं ही था जिसने बड़े पापा से वो डील की और फिर बिना कुछ बताए गायब हो गया था। उसके बाद उनकी फैक्ट्री में आग भी मैने ही लगाई थी। कहने का मतलब ये कि बड़े पापा के साथ जो कुछ भी अभी तक बुरा हुआ है उसका जिम्मेदार सिर्फ मैं ही रहा हूँ और आगे भी जो कुछ उनके साथ बुरा होगा उसका भी जिम्मेदार मैं ही होऊँगा। "

" क्याऽऽऽ ????" साक्षी दीदी मेरी बात सुन कर बुरी तरह उछल पड़ी थीं , बोली __" नहीं नहीं मैं नहीं मान सकती विक्रम । भला तू ये सब कैसे कर सकता था ? तू तो यहॉ था ही नहीं। "

" आपके मानने या न मानने से सच्चाई बदल नहीं जाएगी दीदी। " मैने कहा __" और हाँ , आपको तो अभी ये भी नहीं पता कि फैक्ट्री के तहखाने में कुछ था भी या नहीं ?"

" क्या मतलब ??" साक्षी दीदी की ऑखें फैली __" फैक्ट्री के तहखाने में भला क्या था जिसकी बात कर रहा है तू ?"

" आपको क्या लगता है दीदी ?" मैने फीकी सी मुस्कान के साथ कहा __" आपके डैड इतने कम कमीने इंसान हैं ? अरे नहीं दीदी , वो तो ऊँचे दर्ज़े के पापी हैं। कपड़ा मील का ब्यापार व फैक्ट्री तो महज दिखावा मात्र थी जबकि उनका असल कारोबार तो ड्रग्स अफीम चरस आदि का था। किन्तु ये कारोबार चूँकि कानून की नज़र में ग़ैर कानूनी होता है इस लिए बड़े पापा इस कारोबार को सबकी नज़रों से छुपा कर करते थे। फैक्ट्री के अंदर मौजूद उस तहखाने में उनकी वही काली दुनियॉ का काला चिट्ठा मौजूद था जिसे मैने फैक्ट्री में टाइम बम लगाने से पहले ही गायब कर दिया था। मैं नहीं चाहता था कि उनका ये कारनामा कानून की नज़र में आए। मैं तो अपने हाथो से उन्हें हर सज़ा देना चाहता हूँ। कानून की चपेट में आने से भला मैं कैसे उन्हें अपने तरीके से सज़ा दे सकता था ? इस लिए मैने तहखाने से उनका वो सारा ज़खीरा गायब कर दिया जो ग़ैर कानूनी था। "

मेरी ये बातें सुन कर साक्षी दीदी की ऑखें हैरत से फटी की फटी रह गई थी। उनके चेहरे पर हैरत और अविश्वास का सागर मानो हिलोरें ले रहा था।

" क्या सच में इस सबमें तेरा ही हाथ था विक्रम ?" साक्षी दीदी ने अविश्वास भरे लहजे से कहा __" मगर ये सब कैसे मुमकिन हो सकता है मेरे भाई ? ये सब कैसे कर लिया तूने ? बंद फैक्ट्री के अंदर और वो भी तहखाने के अंदर पहुँचना इतनी आसान बात तो न थी। उस सूरत में तो बिलकुल भी नहीं जबकि तू कभी फैक्ट्री गया ही नही था। फिर कैसे ये सब कर लिया तूने ?"

" मन में सच्ची लगन हो तो सब कुछ मुमकिन हो जाता है दीदी। " मैने कहा __" ऊपर वाला भी फिर आपके लिए राहें आसान कर देता है। ये तो मुझे पता ही था कि बड़े पापा की शहर में कहीं पर कपड़ा मील की फैक्ट्री है। पर चूँकि मैं कभी फैक्ट्री गया नहीं था इस लिए मैने फैक्ट्री के संबंध में जानकारी हासिल करने के लिए अपने दोस्त रौनक को लगाया। उसने मुझे फैक्ट्री के संबंध में सारी बातें बताई। उसके बाद मैने प्लान बनाया और इस प्लान में गुड़िया(निशा) ने भी मेरा साथ देने के लिए ज़बरदस्ती मेरी वाइफ का रोल किया। उसके बाद मुझे रौनक ने बताया कि बड़े पापा का एक बिजनेस पार्टनर है जिसका नाम अनिल खुराना है , इतना ही नहीं इन दोनो पार्टनर्स के बीच बहुत ही गहरे संबंध हैं। रौनक ने जब गहरे संबंधों की बात की तो मैं समझ न पाया था कि ये कैसे संबंधों की बात कर रहा है। मेरे पूछने पर उसने बताया कि बड़े पापा और खुराना आपस में एक दूसरे की बीवियों के साथ सब कुछ कर लेते हैं। ये बात जान कर मेरे पैरों तले से ज़मीन निकल गई। मैने सोचा कि बड़े पापा भला ऐसा कैसे कर सकते हैं ?? मगर मैं जानता था कि ऐसे व्यक्ति से भला अच्छे कर्म की उम्मीद कैसे की जा सकती है ? ख़ैर , रौनक से अनिल खुराना के बारे में सुनकर मैने रौनक से कहा कि खुराना के खिलाफ़ कोई ऐसा सबूत हासिल करे जिसके आधार पर वो कुछ भी करने को तैयार हो जाए। मेरे कहने पर रौनक ने वैसा ही किया और फिर एक दिन रौनक ने मुझे बताया कि उसने खुराना के घर से कुछ फोटोग्राफ्स और वीडियोज़ हासिल किये हैं। जिनमें खुराना बेहद आपत्तिजनक स्थित में है। मैने रौनक से उन फोटुओं को कुरियर द्वारा मॅगवा लिया। इसके बाद मैने खुराना को तेल की धार पर लेने में ज़रा भी देरी न की। कहने का मतलब ये कि मैने उन फोटोग्राफ्स के आधार पर खुराना को इतना मजबूर कर दिया कि वो कुछ भी कर सकता था। सबसे पहले मैने उससे बड़े पापा के कारोबार की सारी जानकारी ली उसके बाद मैने उससे बड़े पापा की और भी बहुत सारी जानकारी हासिल की। खुराना दरअसल थोड़ा फट्टू किस्म का आदमी था। उसे इस बात का पता चल गया था कि उसका पार्टनर उसकी ग़ैर जानकारी में ग़ैर कानूनी धंधा भी करता है और उसके कई ऐसे खतरनॉक लोगों से भी संबंध हैं जिनका रिकार्ड कानून की फाइलों में वर्षों से दबा पड़ा है। "

मैं इतना कुछ कहने के बाद कुछ पल के लिए रुका और फिर कहना शुरू किया__"खुराना को डर था कि कहीं वो किसी दिन कानून की चपेट में न आ जाए। इस लिए वो बड़े पापा से पार्टनरशिप तोड़ना चाहता था मगर वो ऐसा कर नहीं पा रहा था। उसे ये भी डर था कि कहीं उसके पार्टनर को उस पर शक न हो जाए और उसे भी इस धंधे में न लपेट लें। ये बात मुझे तब पता चली थी जब मैं खुद खुराना से मिला था। खुराना से मैने एक सौदा किया। वो सौदा यही था कि मैं उसे और उसकी फैमिली को सुरक्षित विदेश भेजने का बंदोबस्त कर दूँगा, इसके बदले उसे वो करना पड़ेगा जो मैं कहूँगा। मैने उसे अपना सारा प्लान समझाया। सारी बात सुन कर पहले तो वो मेरी बात मानने से इंकार करने लगा। उसे डर था कि कहीं इस सबमें उसकी जान पर न बन आए। पर मैने उसे अच्छी तरह समझाया और उसे इसके लिए राजी किया।"

" इसका मतलब फैक्ट्री में लगी आग तूने खुरान ा के द्वारा लगवाई थी ?" सहसा साक्षी दीदी मेरी बात के बीच में ही बोल पड़ी __" मगर जैसा कि तूने बताया कि तहखाने में डैड का ग़ैर कानूनी ज़खीरा मौजूद था तो उसे कैसे गायब करवाया तूने ? क्या उसे भी खुराना के द्वारा ही गायब किया ?"

" खुरानाा के साथ रौनक था। " मैने बतायाा __" खुरानाा को तहखाने के लॉक का पासवर्ड पता था। उसका काम था तहखाने का लॉक खोल कर तहखाने में टाइम बम लगाना। रौनक का काम सिर्फ यही था कि तहखाने में मौजूद उस ग़ैर कानूनी ज़खीरे को तहखाने से निकाल कर अपने कब्जे में ले ले। प्लान के अनुसार रौनक उस सारे सामान को पुलिस हेडक्वार्टर में कमिश्नर के हवाले कर देगा। पुलिस कमिश्नर को ऊपर से आदेश था कि उस सामान को व्यक्तिाि गत तौर पर रखे और जब उस सामान की ज़रूरत पड़े तो उसे उसी तरह मेरे हवाले कर दें जैसे वो सामान रौनक के द्वारा उन्हें सौंपा गया था। "

" ये तू क्या कह रहा है विक्रम ?" साक्षाी ने बुरी तरह चौंकते हुए कहाा __" भला पुलिस का कमिश्नर ऐसा कैसे कर सकता हैै ? दूसरी बात ऊपर से उसे ऐसा करने का आदेश कैसे मिल सकता हैै ? ये तो बड़ी ही अविश्वसनीय बात हैै ?"

" यही तो मज़ेदार बात है दीदी। " मैने मुस्कुरा कर कहाा __" जिस शख्स ने मुझे अपना बेटा मान कर अपनी अरबों की संपत्ति मेरे नाम की उसका नाम उमाकांत पाटिल है। उमाकांत पाटिल एक बहुत बड़ा बिजनेस टाइकून है और उसका संबंध ऐसे ऐसे लोगों से है जिसके बारे में आदमी सोच भी नहीं सकता। उसी के कहने पर ऊपर से यहॉ कमिश्नर के पास वो आदेश आया था और इसके पहले भी सारा पुलिस महकमा भी बदला गया था। सारा पुलिस महकमा बदलने का सिर्फ यही मकसद था कि बड़े पापा इतनी आसानी से पुलिस महकमें में कोई सेंध न लगा सकें। पहले वाले उनके सारे पुलिस के कनेक्शन खत्म करना भी ज़रूरी था। इसी लिए ऐसा किया गया था। ये अलग बात है कि आज भी बड़े पापा और आपके लिए ये सारी बातें रहस्य बनी हुई थी। "

" ओह माई गाड। " साक्षाी दीदी की ऑखें आश्चर्य से फटी पड़ी थाी , बोलाी __" कोई सोच भी नहीं सकता कि तूने इतना बड़ा कारनामा अंजाम दिया होगा। मुझे तो अभी भी यकीन नहीं हो रहा है कि ये सब तूने किया है। ख़ैर , जैसा कि तूने बताया कि डैड का सारा ग़ैर कानूनी सामान आज भी पुलिस कमिश्नर के पास सुरक्षित मौजूद हैै , और वो उस सामान को तेरे हवाले तभी करेंगे जब तुझे उस सामान की ज़रूरत होगी। मेरा सवाल ये है कि उस सामान के द्वारा आने वाले समय में क्या करने वाला है तू ?"

" आपके इस सवाल का जवाब बहुत ही सीधा और साफ है दीदी। " मैने सपाट भाव से कहाा __" मैं चाहूॅ तो आज यहीं पर खड़े खड़े बड़े पापा को कानून की ऐसी चपेट में ला सकता हूॅ जहॉ से वो सात जन्मों में भी उबर नहीं पाएॅगे। मगर मैं ये काम इतना जल्दी करू गा नहीं। क्योंकि एक ही बार में मैं उन्हें ऐसा झटका नहीं देना चाहता कि वो उस झटके से एक ही बार में खाक़ में मिल जाएॅ। बल्कि मैं तो उन्हें थोड़ा थोड़ा करके झटका देना चाहता हूॅ और उन्हें ये मौका भी देना चाहता हूॅ कि वो अपनी तरफ से जितनी भी कोशिश करनी हो कर लें अपने बचाव के लिए। "

" ओह तो ये बात है। " साक्षाी दीदी को जैसे सब कुछ समझ आ गया थाा , बोलाी __" डैड का वो सारा ग़ैर कानूनी सामान तेरे लिए किसी तुरुप के इक्के से कम नहीं है। ख़ैर , तो

अब आगे का क्या प्लान है तेरा ?"

" अभी का तो यही प्लान है दीदी कि पहले इन सब लोगों को मुंबई पहुँचा कर इन सबको सुरक्षित कर दूँ। " मैने गहरी सास ली __" उसके बाद मैं यहाँ वापस आऊँगा और आपके साथ मिल कर कुछ अलग और अनोखा करने की कोशिश करू गा। "

अभी हम बात ही कर रहे थे कि तभी वहाँ पर एक टैक्सी आकर रुकी। हम दोनो का ध्यान उस तरफ गया। कुछ ही पलों में टैक्सी से अपर्णा चाची, सृष्टि, रणदीप और हेमराज मामा उतरे। मैं और दीदी भी जिप्सी से उतर कर उनके पास गए। टैक्सी वाले को उसका पैसा देने के बाद वो सब हमारी तरफ मुड़े। अपर्णा चाची की नज़र जैसे ही मुझ पर पड़ी तो उनकी आँखों में आँसू तैरते दिखाई देने लगे। वो तेज़ी से मेरी तरफ बढ़ीं और फिर मुझे अपने सीने से लगा लिया। मैं भी अपनी चाची से मिल कर थोड़ा भावुक सा हो गया किन्तु फिर मैने अपने जज़्बातों को काबू किया और फिर उनसे अलग हो गया। मेरी नज़र सृष्टि पर पड़ी तो वो मुझे ही देख रही थी। मैने अपनी बाहें फैला दी तो वो एकदम से मेरी तरफ दौड़ पड़ी और मुझसे लिपट गई। उससे मिलने के बाद मैने रणदीप को प्यार दिया।

थोड़ी देर सबसे मिलने के बाद मैने उन्हें जिप्सी में बैठने को कहा तो वो सब जिप्सी में बैठ गए। सबके बैठते ही दीदी ने जिप्सी को वापस मोड़ कर आगे बढ़ा दिया। मैं दीदी के साथ आगे ही बैठा था बाकी सब पिछली सीट्स पर बैठे थे। कुछ ही समय में हम सब फार्महाउस पहुँच गए। फार्महाउस के अंदर जाकर अपर्णा चाची गीता बुआ से मिली और रौनक की माँ बहन आदि से। उसके बाद गीता बुआ ने चाची और मामा जी से खाने का पूँछा तो वो बोलीं कि वो घर से खा पी कर ही चले थे। ख़ैर, लेडीज पार्टी एक जगह बैठ कर बातों में लग गईं जबकि मैं अपने दोस्त रौनक और अमर के पास आ गया। शाम को हमे मुंबई के लिए निकलना भी था।

५८

सोनिया अपने कमरे के अटैच बाथरूम से बाहर निकली। सामने बेड पर पूरी तरह से निर्वस्त्र पड़े जयदीप की नज़र जैसे ही अपनी मॉ पर पड़ी तो उसके मुझ से आह निकल गई। सोनिया के गोरे सफ्फाक बदन पर इस वक्त मात्र एक पिंक कलर का टावेल था। जिसे वह अपनी भारी भरकम छातियों को आधे से ढॅके थी तथा नीचे उसकी मोटी चिकनी और गोरी जाघों तक को ढॅका हुआ था। जब से साक्षी हवेली से गई थी तब से दोनो मॉ बेटा कमरे में वासना और हवस के खेल में डूबे हुए थे। सोनिया खुश थी कि उसे बेटे के रूप में एक जवान मर्द मिल गया था जो उसके जिस्म की गर्मी को शान्त करने में कोई कसर नहीं छोंड़ेगा। सत्यम सिंह अब जवानी के दौर से बाहर निकल चुका था। उसके साथ सहवास करने में सोनिया को मज़ा तो आता था किन्तु पूर्ण संतुष्टि नहीं मिलती थी।

जयदीप, जो कि सत्यम सिंह की ही कार्बन कॉपी था। गुण और शक्ल से वो अपने बाप पर ही गया था। जब से उसने जवानी की देहलीज़ पर क़दम रखा था तब से उसकी नज़रें घर की लड़कियों और औरतों पर ही जमी रहती थी। वो उन सभी के जिस्मों को भोगने की लालसा में रात दिन लगा रहता था। मगर डर व भय की वजह से वो कभी ज्यादा आगे बढ़ नहीं पाया था। अपनी मॉ पर उसका सबसे ज्यादा क्रश था। अक्सर वो अपने बाप को सोनिया को पेलते हुए देखा करता था। सोनिया के भारी भरकम स्तन और गदराया हुआ जिस्म उसके अंदर बुरी तरह वासना की आग भड़का देता था।

किन्तु उसकी चाहत आज वर्षों बाद पूरी हो चुकी थी। जिस औरत पर उसका सबसे ज्यादा क्रश था उस औरत के जिस्म को वह भोग रहा था। वो अपने बाप का शुक्र गुज़ार था कि उसने उसे ये अनमोल तोहफा दिया था। साक्षी जैसे ही हवेली से निकली थी वैसे ही जयदीप और सोनिया एक दूसरे की बाहों में समा गए थे। हवेली में उन दोनो के अलावा दूसरा कोई न था। नौकर चाकर दोपहर में अपने अपने कमरों में चले जाते थे। इस लिए इस तन्हाई का भरपूर फायदा उठाया था इन दोनो ने।

जयदीप को याद नहीं कि पहले दिन से अब तक वो कितनी बार अपनी मॉ को भोग चुका था। उसे तो बस इतना समझ आ रहा था कि उसका अभी दिल नहीं भरा है। ये सोच कर वो फिर से अपनी मॉ पर चढ़ जाता और अलग अलग पोजीशन में अपनी मॉ को रौंदता रहता। सोनिया को भी जवान मर्द का ये जोश बहुत मज़ा दे रहा था। इस लिए वो खुद भी उसी जोश से अपने बेटे का पूरी तरह से साथ देती थी।

" ऐसे क्या देख रहे हो जय ?" अपने सामने सोनिया अपने बेटे को ऐसे ही संबोधित करने लगी थी , बोली __" क्या दिल नहीं भरा अभी ?"

" हॉ मेरी रंडी मॉ। " जयदीप ने अपने लिंग को ज़ोर से मसलते हुए कहा __" तुमको जितना भी पेलूँ उतना ही लगता है कि अभी और पेलूँ। कसम से आज तक जितनी लड़कियों को अपने नीचे सुलाया है उन सभी में से तुम सबसे ऊपर हो। तुम्हारे जैसा जिस्म और तुम्हारे जैसी

अदा किसी और में नहीं देखी मैने। "

" कैसे देखते मेरे जय। " सोनिया ने बड़ी अदा से जयदीप के पास आते हुए कहा __" वो सब लड़कियॉ तुम्हारी मॉ तो नहीं थी न ? वो सब तुम्हें एक मॉ जितना प्यार और समर्पण भाव कैसे कर सकती थीं ?"

" हॉ ये बात तो सच कही तुमने। " जयदीप ने सोनिया के टावेल के छोर को पकड़ कर अपनी तरफ ज़ोर से खींचा तो टावेल सोनिया के बदन से अलग होता चला गया और सोनिया भी उसी झोंक में जयदीप के ऊपर आ गई। जबकि अपने ऊपर सोनिया के आते ही जयदीप ने कहा __" तुम एक औरत के साथ साथ मेरी मॉ भी तो हो। इसी लिए इतना प्यार और समर्पण है तुममें। तभी तो मेरा दिल बार बार यही कहता है कि एक बार और हो जाए। "

" तो करो न जय। " सोनिया ने कहने के साथ ही झुक कर जयदीप के होठों को चूम लिया __" रोंका किसने है तुम्हें ? मैं तो खुद भी यही चाहती हूँ कि तुम मुझे इस हवेली के हर ज़र्रे पर ले जाकर बुरी तरह से प्यार करो। मुझे ऐसे ऐसे तरीके से पेलो कि पूरी हवेली में मेरी चीखें गूँजने लगें। "

" उफ्फ कितना वाइल्ड पसंद है तुम्हें ?" जयदीप ने सोनिया की एक छाती को बुरी तरह मसल दिया , बोला __" तुम तो वो चीज़ हो डियर मदर कि तुम्हें एक अकेला मर्द संतुष्ट नहीं कर सकता। तभी तो डैड तुम्हारे लिए अपने साथ साथ एक और मर्द को लेकर आते थे। क्या नाम था उसका ? अरे हॉ खुरान .... हाय रे वो साला कैसे कैसे मेरी इस रांड मॉम को पेलता रहा होगा। "

" क्यों जलन हो रही है तुम्हें ??" सोनिया ने सहसा मुस्कुरा कर पूछा।

" जलन किस बात की डियर मदर ?" जयदीप ने कहा _" ये तो तुम्हारी ख्वाहिशों की बात है। सबको अपनी ख्वाहिशें पूरा करना चाहिए। तुमने भी वही किया , सो मुझे इसमें जलने की क्या ज़रूरत है ?"

" मतलब मुझे अगर बाहर का कोई भी आदमी पेले तो तुम्हें कोई परेशानी नहीं है ??" सोनिया ने कहा।

" जब डैड को ही कोई परेशानी नहीं हुई तो मुझे क्यों होगी भला ?" जयदीप ने कहा __" ख़ैर छोंड़ो इन बातों को और आओ एक बार और घमासान पेलाई हो जाए। "

" क्यों नहीं जय। " सोनिया ने मुस्कुराते हुए कहा _" मुझे भी एक बार और करने की इच्छा है। "

कहने के साथ ही सोनिया ने अपने एक हाथ को सरका कर नीचे जयदीप के मुरझाए हुए लिंग को पकड़ लिया और उसे सहलाने लगी। इधर जयदीप ने भी सोनिया की छातियों को हाथो से पकड़ कर मसलने लगा। अभी ये सब ये दोनो कर ही रहे थे कि बगल से एक स्टूल पर रखे

फोन की घंटी बज उठी। फोन के बज उठने से दोनो के ही चेहरे पर अप्रिय भाव उभरे।

" हैलो। " फोन उठाते ही जयदीप ने कहा।

"..... । " उधर से कुछ कहा गया।

" क्याऽऽऽ ???" जयदीप अपने डैड की बात सुन कर बुरी तरह चौंका था।

"..... । " उधर से फिर कुछ कहा गया।

" ऐसा कैसे हो सकता है डैड ?" जयदीप के चेहरे पर परेशानी के भाव उभर आए , बोला __" कहीं ऐसा तो नहीं कि दीदी को उसका पता चल गया हो और फिर उन्होंने उसे अपने रास्ते से हटा दिया हो ? अगर ऐसा कर भी दिया होगा तो हम उन पर शक तो कर सकते हैं मगर उनके सामने उन पर इस बात का इल्ज़ाम नहीं लगा सकते। "

"..... । " उधर से कुछ देर तक कहा गया।

" ऐसा कब तक चलेगा डैड ?" जयदीप के चेहरे पर सहसा गुस्से के भाव आए __" हर बार हमारे हाथ नाकामी ही लगती है। हमें अब खुद मैदान में उतरना पड़ेगा। इस तरह तो हमारा एक एक आदमी लापता होता रहेगा और हम कुछ कर ही नहीं पाएँगे। इस लिए हमें सीरियसली ये सब खुद ही करना पड़ेगा। साक्षी दीदी की गतिविधि याँ स्पष्ट समझ में आ रही हैं कि वो हमारे खिलाफ़ हैं। अगर विक्रम से वो मिल चुकी हैं तो साफ है कि उन्हें हमारे बारे में सब कुछ पता चल गया होगा और अब वो उस कमीने विक्रम का साथ दे रही हैं। हॉ डैड , दीदी भले ही आपकी बेटी हैं मगर बात जब अन्याय और जुर्म की आएगी तो वो हमारा साथ नहीं देंगी। ये उनके कैरेक्टर से साफ पता चलता है। "

"..... । " उधर से फिर कुछ कहा गया।

" यस डैड। " जयदीप कह उठा __" अब तो साफ साफ और खुल कर खेल होना चाहिए। "

"..... । " उधर से सत्यम सिंह ने कुछ कहा।

" ओके डैड। " जयदीप ने कहा __" आप आ जाइये। मैं और मॉम हवेली में ही हैं। "

इसके साथ ही संबंध विच्छेद हो गया। जयदीप ने रिसीवर को केड्रिल पर रखा और धम्म से बेड पर चित्त लेट गया। सोनिया उसी को एकटक देखे जा रही थी।

" क्या बात हुई डैड से ?" सोनिया ने पूछा।

" डैड बता रहे थे कि उन्होंने जिस आदमी को दीदी के पीछे लगाया था। " जयदीप ने कहा __" उस आदमी का फोन काफी देर से बंद बता रहा है। "

" क्याऽऽ ???" सोनिया हैरान ___" इसका मतलब हमारा ये आदमी भी बली का बकरा साबित हो गया। "

" ये सब आपकी बेटी की वजह से हो रहा है मॉम। " जयदीप ने कठोर भाव से कहा __" उसी ने हमारे उस आदमी का गेम बजाया होगा। उसे पता है कि अगर वो ऐसा करेगी तो हम उस पर बेवजह और बिना सबूत के कोई इल्ज़ाम नहीं लगा सकेंगे। मगर अब हम भी बताएँगे उसे कि हमसे गद्दारी करने का क्या अंजाम होता है ? डैड ने भी यही कहा है कि ये काम साक्षी दीदी का ही है और अब डैड ने भी फैंसला कर लिया है कि वो खुद इस सब का पता करेंगे और दीदी को उनके किये की सज़ा देंगे। "

" उफ्फ क्या करू इस लड़की का ?" सोनिया ने कसमसाते हुए अपने माथे पर हथेली मारी __" अपने ही मॉ बाप को गर्त में डुबाने पर तुली हुई है ये। "

" अब आपकी उस बेटी के साथ कोई रियायत नहीं होगी मॉम। " जयदीप ने गुस्से से कहा __" अभी तक यही सोच कर हमने उस पर कोई कठोर क़दम नहीं उठाया था कि चलो कोई बात नहीं हमारी अपनी है वो , मगर अब नहीं। उसने हमसे बगावत की है मॉम। अपने ही मॉ बाप का सर्वनाश करने पर तुली हुई है वो। इस लिए अब उसे उसके इस जघन्य अपराध की सख्त सज़ा मिलेगी। "

सोनिया कुछ कह न सकी। अंदर ही अंदर कॉप कर रह गई वो। उसे अपनी बेटी के लिए दुख तो हुआ था किन्तु उसे भी इस बात का एहसास था कि उसकी बेटी ने अपने पैरेंट्स के खिलाफ़ जा कर ग़लत किया है। वो अपने पति और बेटे को अच्छी तरह जानती थी। वो अब किसी भी सूरत में साक्षी को माफ करने वाले नहीं थे। उसे खुद भी साक्षी के इस कृत्य पर गुस्सा आया हुआ था। मगर वो कर भी क्या सकती थी? अब तो बस वो मन ही मन भगवान से प्रार्थना कर सकती थी कि सब कुछ ठीक हो जाए।

५९

इधर साक्षी के फार्महाउस पर!

मैं , अमर और रौनक आपस में बातें ही कर रहे थे कि सहसा कमरे के दरवाजे पर बाहर से नॉक हुई। रौनक ने उठ कर दरवाजा खोला तो देखा बाहर साक्षी दीदी खड़ी थी। दीदी को देखते ही रौनक एक तरफ हट गया तो दीदी अंदर आ गई। मैने दीदी के चेहरे पर हल्का परेशानी के भाव देखे तो चौंका।

" क्या बात है दीदी ?" मैंने उनके पास आकर पूछा _" सब ठीक तो है ना ?"

" हॉ सब ठीक है विक्रम। " साक्षी दीदी ने कहा __" मैं ये कहने आई हूँ कि तुम सबको अभी यहॉ से निकलना होगा रामगंज के लिए। क्योंकि बाद में संभव है कि डैड अपने किसी अन्य आदमियों को यहॉ रास्तों पर घेरा बंदी के लिए लगा दें। हलॉकि उन्हें ये पता नहीं है कि तू अभी यहीं है या यहॉ से जा चुका है। मगर हालात बदल चुके हैं। "

" ये आप क्या कह रही हैं दीदी ?" मैने चौंकते हुए कहा _" हालात तो बदले हुए ही थे उसमें अब क्या हो गया है ?"

" बहुत कुछ हुआ है मेरे भाई। " साक्षी दीदी ने कहा __" डैड को मुझ पर पहले से शक था इस लिए आज उन्होंने मेरे पीछे अपना एक आदमी लगाया हुआ था जिसे मैने बीच रास्ते पर ही धर लिया था और फिर उसे बेहोश करके यहॉ ले आई थी। अब ज़ाहिर सी बात है कि डैड ने अपने आदमी से फोन पर जानकारी प्राप्त करनी चाही होगी मगर जब वो ये जानेंगे कि उनके आदमी का फोन ही बंद है तो उन्हें समझते देर नहीं लगेगी कि मैने उनके आदमी को गिरफ्तार कर लिया है या फिर उसे ठिकाने लगा दिया है। उस सूरत में वो मुझ पर बेहद गुस्सा होंगे और संभव है कि मेरी तलाश में घर से खुद ही निकल लें। अगर उन्होंने ऐसा किया तो समझ लो उनके साथ और भी आदमी होंगे जो यहॉ के हर रास्तों पर फैल जाएँगे। ऐसे में तुम लोगों का यहॉ से रामगंज के लिए निकलना मुश्किल हो जाएगा। इसी लिए कह रही हूँ कि तुम सब जितना जल्दी हो सके यहॉ से फौरन निकलने की तैयारी करो। बाहर मेरी जिप्सी को मिला कर दो गाड़ियॉ हैं। उन दोनो गाड़ियों में तुम सब आराम से आ जाओगे। लेकिन सामान कुछ भी नहीं जा पाएगा। इस लिए सामान को यहीं छोंड़ देना। सारा सामान यहॉ सुरक्षित ही रहेगा। "

" आपने तो कह दिया दीदी। " मैने सहसा दुखी भाव से कहा __" कि मैं इन सबको लेकर यहॉ से चला जाऊँ। मगर मैं जानता हूँ कि आज के वक्त में आप कितने बड़े ख़तरे में हैं। मैं आपको ऐसे अकेले छोंड़ कर कैसे यहॉ से चला जाऊँ दीदी ? मेरे जाने के बाद अगर आपको कुछ हो गया तो सारी ज़िंदगी मैं अपने आपको माफ़ नहीं कर पाऊँगा। "

" चुप कर तू। " दीदी ने मुझे ज़बरदस्ती झिड़क दिया , हलॉकि मैं जानता था कि वो अपने अंदर के जज़्बातों को सख्ती से दबा रही थी , बोली __" जब देखो इमोशनल होता रहता

है। अब ज्यादा बोलना नहीं और चुपचाप यहॉ से सबको लेकर निकल। "

" मैं कहीं नहीं जाऊँगा आपको अकेला छोंड़ कर। " मेरी ऑखों में ऑसू आ गए।

" तुझे मेरी क़सम है मेरे भाई। " साक्षी दीदी ने झटके से मेरा हाथ पकड़ कर अपने सिर पर रख लिया था __" तू यहॉ से सबको लेकर अभी इसी वक्त जाएगा। मेरी चिन्ता मत कर। तेरी दीदी कोई इतनी भी गैर मामूली नहीं है जिसे कोई भी ऐरा ग़ैरा हजम कर जाएगा। अरे मैं तेरी बहन हूँ विक्रम । जिसका भाई इतना प्यार करता हो उसका भगवान भी कुछ न कर सकेंगे। और फिर बस दो दिन की ही तो बात है न मेरे भाई। फिर तो तू आ ही जाएगा न मेरे पास। तू चिन्ता मत कर , मैं खुद को ऐसी जगह छुपा लूँगी कि तेरे आने से पहले मेरा बाप तो क्या कोई भी माई का लाल मुझे ढूँढ़ नहीं पाएगा। चल अब तू बेफिक्र होकर जा। "

ये कह कर दीदी एक पल के लिए भी नहीं रुकीं। बल्कि कहने के साथ ही कमरे से बाहर चली गईं। उनके जाने के बाद भी कुछ देर तक मैं भौचक्का सा खड़ा रह गया था। होश तब आया जब अमर ने मेरे कंधे पर अपना हाथ रख कर हल्के से दबाया।

" चलो दोस्त। " अमर ने भारी स्वर में कहा __" यहॉ से चलने की तैयारी करो। अपनी इस महान दीदी की बात मानो। मैं इतने दिनों से देख रहा हूँ कि साक्षी सिर्फ अपने भाई के लिए ही जी रही है। हर वक्त उसे सिर्फ तुम्हारी ही फिक्र रहती है। आज भी वो सिर्फ तुम्हारी और इन सबकी फिक्र की वजह से ही तुम्हें यहॉ से शीघ्र चलने को कह कर गई है। उसे अपने ऊपर मॅडरा रहे भीषण खतरे की कोई फिक्र नहीं है। मैं तुमसे सिर्फ एक ही बात कहूँगा दोस्त ___ और वो ये कि इन सबको मुंबई में सुरक्षित पहुँचाने के बाद तुम एक पल के लिए भी वहॉ नहीं रुकना। बल्कि उल्टे पैर वापस सीधा यहीं आओगे। मैं खुद भी तुम्हारे साथ ही आऊँगा। "

" अमर मेरे दोस्त। " मैने भावना में बह कर अमर को गले से लगा लिया। उसने खुद भी मुझे ज़ोर से कस लिया था।

" कितना ग़लत सोचा करता था मैं साक्षी दीदी के बारे में। " तभी रौनक कह उठा __" हर पल शक की नज़र से देखता था उनको। मगर यहॉ आकर पता चला कि वो कितनी अच्छी हैं और उनके अंदर तेरे लिए कितना प्यार है। उन्होंने सच का साथ देने के लिए अपने ही मॉ बाप और भाई से हर रिश्ता तोड़ लिया। सच में विक्रम , हमारी साक्षी दीदी बहुत महान हैं। "

मैने रौनक को भी खुद से छुपका लिया। कुछ देर ऐसे ही एक दूसरे के गले लगे रहने के बाद हम तीनो अलग हुए और फ्रेश होने के लिए अपने अपने कमरों में चले गए। अपने कमरे में पहुँच कर मैने उमाकांत अंकल को फोन लगाया और उनसे कुछ ज़रूरी बातें की। उनको यहॉ के हालात के बारे में बताया और ये भी बताया कि मैं इन लोगों को मुंबई पहुँचा कर वापस आ जाऊँगा। इस लिए मेरे और अमर दोनो के लौटने की टिकट का इंतजाम वो कर देंगें। उमाकांत अंकल से मैने ये भी कहा कि इस सबके बारे में वो मॉ को ज़रूर मना लेंगे वरना वो मुझे वापस आने नहीं देंगी।

उमाकांत अंकल से बात करने के बाद मैं बाथरूम में फ्रेश होने के लिए चला गया। कुछ ही देर में हम सब बाहर लॉन में खड़ी जिप्सी में थे। जिप्सी में साक्षी दीदी के साथ मैं, अपर्णा चाची, सृष्टि और रणदीप थे। जबकि दूसरी जीप में शंकर काका जो कि ड्राइविंग सीट पर थे उनके साथ अमर, रौनक, आशा दीदी और माँ आदि बैठे थे। सबसे मिल कर और हरिया काका को फार्महाउस की सुरक्षा का कह कर हम सब फार्म हाउस से बाहर निकल पड़े।

फार्महाउस में इस वक्त हरिया काका, केशरमाँ, गीता बुआ और हेमराज मामा थे। हेमराज मामा को आज यहीं पर रुकने का कह दिया था अपर्णा चाची ने। रास्ते में साक्षी दीदी ने मोबाइल पर फोन लगा कर अपने महकमे में किसी से बात की और कुछ पुलिस के आदमी सादे कपड़ों में उनके आस पास ही रहने के लिए कहा।

दोनो गाड़िया ऑधी तूफान बनी रामगंज के लिए उड़ी जा रही थी। आस पास हर तरफ हमारी नज़रें भी दौड़ रही थीं। ताकि अगर कहीं बड़े पापा या उनके आदमी हमें दिखें तो हम पहले से ही उनसे निपटने के लिए तैयार हो जाएॅ। लगभग दस मिनट बाद ही दो पुलिस की गाड़ियॉ हमें नज़र आईं। एक हमारी गाड़ी को ओवरटेक करके हमारे आगे आगे चलने लगी और दूसरी गाड़ी हमारे पीछे पीछे चलने लगी।

आधे घंटे बाद हम सब रामगंज के रेलवे स्टेशन पहुॅच गए। यहॉ से मुंबई जाने के लिए शाम को पॉच बजे ट्रेन थी। इस वक्त साढ़े तीन बजे थे। रेलवे स्टेशन पहुॅच कर साक्षी दीदी ने हम सबको वेटिंग रूम में बैठाया और वहीं पर पुलिस के कुछ आदमियों को भी बैठाया। मैं दीदी के पास चुपचाप बैठा था। दीदी एकटक मुझे ही देख रही थी।

" नाराज है मुझसे ???" दीदी ने मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा __" चल कोई बात नहीं मेरे भाई। तू कहीं भी रहे बस सलामत रहे तो तेरी हर नाराज गी भी सह लूॅगी मैं। तू जब लौट के आएगा न तब तुझे मना लूॅगी मैं। फिर देखूॅगी कि तू मुझसे कितनी देर तक नाराज रह पाता है ? बच्चूलाल मुझे ऐसे वैसे मत समझना तू। मुझे भी नाराज भाई को मनाना बहुत अच्छे से आता है। समझे न मेरे प्यारे भाई ?"

साक्षी दीदी की बात पर मुझे अंदर ही अंदर हॅसी तो आई मगर मैने अपने चेहरे पर उन भावों को ज़ाहिर न होने दिया। ऐसे ही बैठे बैठे और इधर उधर की बातों से समय ब्यतीत हो गया और पॉच बज गए। मुंबई जाने वाली ट्रेन का एनाउंसमेन्ट होने लगा तो हम सब वेटिंगरूम से बाहर आ गए। कुछ ही देर में ट्रेन प्लेटफार्म पर आकर खड़ी हो गई। हम सब एसी वाले डिब्बों की तरफ बढ़ चले और कुछ ही देर में हम सब एसी के फर्स्ट क्लास डिब्बे में आ गए। हम सब की सीटें पास पास ही थीं। सबके बैठ जाने के बाद मैं साक्षी दीदी के साथ बाहर आ गया।

" मैं परसों किसी भी हाल में यहॉ आ जाऊॅगा दीदी। " बाहर आते ही मैने दीदी से कहा __" आप खुद का बहुत अच्छे से ख़याल रखेंगी। कुछ दिनों के लिए ड्यूटी पर जाना भी बंद कर दीजिएगा। हलॉकि मैंने भी ऐसा कुछ इंतजाम कर दिया है कि बड़े पापा कुछ कर ही नहीं पाएॅगे। "

" क्या मतलब ??" साक्षी दीदी ने चौंक कर मेरी तरफ देखा __" क्या कर दिया है तूने ??"

" बहुत जल्द आपको भी पता चल जाएगा दीदी। " मैने अजीब भाव से कहा __" काफी दिन हो गए हैं बड़े पापा को झटका दिये हुए। इस लिए मैने सोचा कि इस मौके पर उन्हें एक झटका देना बिलकुल उचित और फायदेमंद है। आख़िर मुझे भी तो आपकी फिक्र है दीदी। ऐसे ख़तरे में अकेला छोंड़ कर जा रहा हूँ , तो कुछ तो आपकी सुरक्षा का इंतजाम कर दूँ। "

" अरे पर तूने किया क्या है विक्रम ?" साक्षी दीदी ने ना समझने वाले भाव से कहा __" क्या तू मुझे नहीं बता सकता ?"

" बता तो सकता हूँ दीदी। " मैने शरारत से उनकी सुर्ख हो चुकी नॉक पर हल्के से उँगली मारते हुए कहा __" मगर ये एक सरप्राइज़ है। इस लिए बता नहीं सकता। मगर डोन्ट वरी कल आपको भी पता चल जाएगा। "

" तू न बहुत बदमाश हो गया है। " साक्षी दीदी ने तो मेरी नॉक ही पकड़ ली , बोली __" ख़ैर , देखती हूँ कल कि तूने क्या शरारत की है मेरे डैड के साथ ?"

" यस ऑफकोर्स। " मैं मुस्कुराया और फिर एकाएक ही मैने गंभीरता से कहा __" दीदी एक बार प्राची के घर भी हो आइयेगा आप। उस दिन के बाद आज तक नहीं जा पाया हूँ मैं। जबकि ये मेरा फर्ज़ था कि मैं अपनी पत्नी की हर क्रिया को खुद अपने हाथो से करता। "

" तू चिंता मत कर मेरे भाई। " साक्षी दीदी ने कहा __" मैने सब कुछ कर दिया है। बस ये सब एक बार ठीक हो जाए उसके बाद तू खुद अपने हाथो से प्राची की अस्थियों को पावन गंगा में विसर्जित कर देना। "

" क्या कहा आपने ?" मैं खुशी से चौंकते हुए बोला __" आप ने प्राची की अस्थियाँ एकत्रित कर रखी हैं ?"

" हाँ विक्रम। " साक्षी दीदी ने कहा __" मैं भला कैसे भूल सकती थी उसे ? तेरा बाहर निकलना ख़तरे से खाली नहीं था इस लिए तेरे नाम से मैं खुद ही प्राची के घर गई थी और फिर प्राची के डैड के साथ उसकी अस्थियाँ लेने गई थी। प्राची की अस्थियों को मैने फार्महाउस में सुरक्षित रखा हुआ है।मैने सोचा था कि जब ये सब फसाद खत्म हो जाएगा तब मैं तुझसे कहूँगी कि जा विक्रम अपनी प्राची की अस्थियों को पवित्र गंगा में बहा दे। "

" ओह दीदी , आप सच में बहुत महान हैं। " कहते हुए मेरी आँखों में आँसू आ गए __" आपको मेरी हर चीज़ का कितना ख़याल है। "

" प्राची अगर तेरी प्रेमिका या पत्नी थी तो वो मेरी भी तो कुछ लगती थी विक्रम। " दीदी ने गंभीर भाव से कहा _" मेरे जीवन में उसकी अहमियत बहुत ज्यादा है मेरे भाई। उसी की वजह से मेरा हृदय परिवर्तन हुआ। उसी की वजह से मुझे पता चला कि सच्चा प्यार क्या होता है। उसी ने मुझे बताया कि जिस भाई को मैने कभी देखना तक गवाँरा नहीं किया था वो

वास्तव में कितना अच्छा है। हॉ विक्रम , प्राची ने सब बताया मुझे। उसके बाद जब उसने मुझसे कहा कि उसे एक बार अपने महबूब से मिलना है और उसी की बाहों में अपने जीवन की अंतिम सास लेनी है तो उस वक्त मेरा कलेजा दहल गया। मेरे अंदर से किसी ने चीख चीख कर कहा कि देख ले साक्षी , एक ये है कि अपने प्यार के लिए इसने कितने दुख सहे और खुद को खाक़ में भी मिला दिया और एक तू है कि एक ऐसे भाई को कभी देखना तक पसंद नहीं किया जिसका कहीं कोई दोष ही नहीं था। जिसने तेरे साथ कभी बुरा ही नहीं किया। बल्कि हमेशा इज्ज़त और सम्मान के साथ तुझे दीदी कहते हुए थकता नहीं था। कसम से भाई , उस वक्त मुझे अपनी ग़लतियों का बड़ी शिद्दत से एहसास हुआ और मैने इस सबके बारे में अलग तरह से सोचना शुरू किया। मैने प्राची से वादा किया कि उसके महबूब को उसके पास ज़रूर लाऊँगी। उसके बाद मैने तेरे दोस्तों के बारे में पता किया तो मुझे तेरे गहरे दोस्त के रूप में रौनक का पता चला। मैं रौनक से मिली और उससे तेरे बारे में पूछा। मगर वो मुझे तेरे बारे में कुछ भी बताने को तैयार ही नहीं हो रहा था। उसे लगता था कि मैं तेरे बारे में इस लिए पूछ रही हूँ ताकि तेरा पता करके मैं अपने डैड को बता दूँ कि तू फला स्थान पर है। जब रौनक मुझे कुछ भी बताने से इंकार कर दिया तो मैने उसे सारी बातें बताई और खुद उसे प्राची के पास ले आई। ये साबित करने के लिए कि मैं जो कुछ भी उससे कह रही थी वो सब सच है और इसके पीछे मेरे अंदर कोई भी बुरी भावना नहीं है। प्राची को देखने बाद ही रौनक को एहसास हुआ कि मैं सच कह रही हूँ और तभी उसने तुझसे बात की थी। "

दीदी की बातें सुन कर मैं फिर से पिछली यादों में खो गया था। तभी दीदी की आवाज़ फिर से मेरे कानों में पड़ी__"इस सबकी वजह से ही मुझे लगा कि तू और रेणुका चाची इतने भी ग़लत या बुरे नहीं हैं जितना कि बचपन से मॉम डैड ने हम तीनो भाई बहनों को बताया था या सिखाया था। उसके बाद मैने अपने मॉम डैड और भाई पर नज़र रखना शुरू किया तो जल्द ही मुझे सच्चाई का पता चल गया कि वास्तव में बुरा कौन है। बस उसके बाद तो तेरी ये दीदी सिर्फ तेरी ही बहन बन कर रह गई मेरे भाई। मैने अपने मॉम डैड व भाई सबसे रिश्ता तोड़ दिया। ऐसे रिश्तों से नाता जोड़े रखने का मतलब भी क्या था जिन रिश्तों में वासना और हवस के सिवा कुछ था ही नहीं।"

मैने साक्षी दीदी को अपने सीने से लगा लिया। वो बुरी तरह भावनाओं और जज़्बातों में बहने लगी थी जिसकी वजह से उनकी ऑखों से ऑसू बहने लगे थे। एसी के उस डिब्बे के पास ही हम दोनो भाई बहन एक दूसरे से गले लगे हुए थे। आस पास से आते जाते लोग हमें अजीब भाव से देखने लगे थे। ये देख कर मैने दीदी को खुद से अलग अलग किया और उन्हें लेकर डिब्बे के अंदर आ गया।

साक्षी दीदी एक बार फिर सबसे मिली और फिर ट्रेन के चलते ही वो ट्रेन से उतरने के लिए बाहर की तरफ जाने लगीं। मैं भी उनके पीछे पीछे गेट तक आ गया। गेट के पास पहुँच कर जब दीदी ट्रेन से उतरने लगी तो मुझे ऐसा लगा जैसे मेरी कोई अनमोल चीज़ मुझसे छूटने वाली है। मैने हौले से दीदी को दीदी कह कर आवाज़ दी तो वो तुरंत मेरी तरफ पलटीं, जैसे उन्हें मेरे पुकारने का ही इन्तज़ार था। जब पलट कर उन्होंने मेरी तरफ देखा तो ये देख कर मेरा दिल बैठ गया कि उनका चेहरा ऑसुओं से तर था। मैने उन्हें खींच कर खुद से छुपका लिया, वो खुद भी मुझसे कस कर लिपट गई। लेकिन तुरंत ही वो मुझसे अलग भी हो गईं।

" अब तू जा विक्रम। " फिर उन्होने खुद को संभालते हुए कहा __" सबका ख़याल रखना। मैं तेरे आने का इंतज़ार करू गी और हॉ गुड़िया को मेरा प्यार देना। "

" आप भी अपना ख़याल रखियेगा। " मैने कहा __" और अब आप सीधा फार्महाउस जाएॅगी। दो दिन के लिए ड्यूटी से छुट्टी ले लीजिएगा। मैं जब आऊॅ तो आपको फार्महाउस पर ही हॅसते मुस्कुराते हुए पाऊॅ। "

" मेरी मुस्कुराहट तो तू ही है मेरे भाई। " साक्षी दीदी ने मेरे चेहरे को सहलाया __" जब तू आ जाएगा न तो मेरा ये चेहरा अपने आप ही खिल उठेगा। "

मैं उनकी इस बात पर हौले से मुस्कुराया और फिर झुक कर उनके माथे पर हल्के से चूम लिया। मेरी इस क्रिया से वो भी मुस्कुरा दी और फिर मेरे गाल पर हलके से चूम कर वो सावधानी से धीरे धीरे चल रही ट्रेन से उतर गईं। मैं गेट पर खड़ा उन्हें तब तक देखता रहा जब तक कि आगे मोड़ आ जाने की वजह से दीदी मेरी नज़रों से ओझल न हो गईं। उनके ओझल होते ही मैं दरवाजे से पीछे की तरफ हटकर वहीं पर ट्रेन के उस डिब्बे की पिछली पुश्त से टेक लगाये हुए ऑखें बंद कर खड़ा हो गया। कुछ देर यूॅ ही खड़े रहने के बाद मैंने एक गहरी सास ली और फिर मैं अंदर अपनी सीट की तरफ आ गया।

विक्रम के ओझल होते ही साक्षी प्लेटफार्म से बाहर की तरफ तेज़ तेज़ क़दमों के साथ बढ़ती चली गई। दिलो दिमाग़ में ज़बरदस्त तूफान तारी हो गया था उसके। दिल में भड़कते हुए जज़्बात उसके काबू से बाहर होने लगे थे जिसकी वजह से उसकी रुलाई फूटने को आतुर थी। मगर बड़ी मुश्किल से उसने खुद को संभाला हुआ था। स्टेशन से बाहर आते ही वो अपनी जिप्सी की तरफ बढ़ गई। जिप्सी के पास ही एक और जीप थी जिसमें शंकर काका बैठे हुए थे। साक्षी ने शंकर काका को वापस लौटने का कह दिया। पुलिस के जो आदमी आगे पीछे आए थे उनमें से एक जीप वाले पुलिस वालों को साक्षी ने शंकर के साथ जाने का कह दिया जबकि दूसरे जीप वालों को अपने आस पास ही रहने को कहा।

शंकर काका के जाने के बाद साक्षी ने भी जिप्सी को आगे बढ़ा दिया। किन्तु उसकी जिप्सी का रुख सोनपुर की तरफ न होकर किसी और ही तरफ था। उसके पीछे कुछ ही फॉसले पर एक अलग गाड़ी में दूसरे पुलिस वाले भी थे जो सादे कपड़ों में थे। लगभग दस मिनट बाद साक्षी ने जिस जगह पर जिप्सी को रोंका उसके पास ही एक "जिम" था।

जिम के बाहर कुछ ही दूरी के फॉसले पर उसने अपनी जिप्सी को खड़ी कर वो नीचे उतरी और पास ही एक दुकान के पास जाकर उसने दुकान से मिनरल वाटर का एक बाटल खरीदा और वापस आकर जिप्सी में बैठ गई। अपनी बाईं कलाई पर बॅधी रिस्टवाच पर उसने एक नज़र डाली। शाम के पॉच बज कर बीस मिनट हो रहे थे।

जिप्सी में बैठी साक्षी थोड़ी थोड़ी देर के अंतराल में बाटल से पानी पीती रही। उसकी नज़र जिम के मुख्य दरवाजे पर थी। मतलब साफ था कि वो किसी ऐसे व्यक्ति का इन्तज़ार कर रही थी जो उस जिम से बाहर आने वाला था। कुछ देर और गुज़रने के बाद एक बार फिर से साक्षी ने अपनी कलाई पर बॅधी रिस्टवॉच में नज़र डाली। पॉच बज कर तीस मिनट हो चुके थे। उसके पीछे कुछ ही दूरी पर दूसरी गाड़ी में बैठे दूसरे पुलिस वाले साक्षी की तरफ ना समझने वाले भाव से देखे जा रहे थे।

उस वक्त साक्षी के होठों पर अजीब सी मुस्कान उभरी जिस वक्त जिम के मुख्य द्वार से कुछ लड़के और लड़कियॉ बाहर निकले। साक्षी की नज़र एक ऐसी लड़की पर स्थिर हो गई जिसके खूबसूरत बदन पर इस वक्त जिम वाले कपड़े थे। एकदम चुस्त दुरुस्त। उसको देख कर ही लग रहा था कि इसकी ऊम्र अट्ठारह या बीस से ज्यादा नहीं होगी।

साक्षी ने देखा कि वो लड़की जिम से निकलने के बाद पार्किंग एरिया की तरफ बढ़ गई है। कुछ ही देर में वो लड़की एक नई नवेली स्कूटी में पार्किंग से बाहर आती हुई दिखी और फिर साक्षी की ऑखों के सामने से ही वो दाहिने तरफ के रास्ते की तरफ सरपट जाती हुई नज़र आई। उसके जाते ही साक्षी ने जिप्सी को स्टार्ट किया और उस लड़की के पीछे चल पड़ी। उसके पीछे दूसरी गाड़ी में बैठे बाकी के पुलिस वाले भी बढ़ चले।

मेन मार्केट से निकलने के बाद साक्षी ने देखा कि सामने जा रही वो लड़की एक मोड़ पर मुड़

गई है। साक्षी ने भी जिप्सी को उस मोड़ पर मोड़ दिया। साक्षी की नज़र बराबर उस लड़की पर थी। सामने एक अधेड़ सा आदमी इस तरफ अचानक ही आता दिखा। शायद किसी दुकान या किसी घर से निकला था वो। उसके दोनो हाथो में एक एक ब्लैक कलर की प्वालिथिन थी। वो अधेड़ आदमी अपनी साइड की तरफ आने के लिए पहले पीछे की तरफ देखा और फिर रोड क्रॉस करने के लिए जैसे ही आगे बढ़ा वैसे ही वो उस लड़की की स्कूटी से टकरा गया।

साक्षी ने साफ तौर पर देखा था कि अधेड़ व्यक्ति के पास पहुॅचते पहुॅचते उस लड़की ने स्कूटी की रफ्तार को काफी कम कर लिया था मगर कदाचित उसका ध्यान कहीं और था इस लिए हड़बड़ाहट में उसे समझ ही न आया कि वो अब क्या करे? जितना उससे हो सकता था उतना उसने किया था। किन्तु अब वो इसका क्या करती कि लाख कोशिशों के बाद भी उसकी स्कूटी उस अधेड़ व्यक्ति के जिस्म से छू ही गई थी। जिसका परिणाम ये हुआ कि वो अधेड़ व्यक्ति बीच सड़क पर भरभरा कर गिर गया था। उसके दोनो हाथो पर मौजूद प्वालीथिन छूट गई थी और पक्की सड़क पर गिरते ही प्वालीथिन के अंदर मौजूद सामान फूट गया था। प्वालीथिन में दवाई की बोतलें थी जो फूट गईं थी और अब सारी दवा सड़क पर फैलती जा रही थी।

अधेड़ के गिरते ही उस लड़की ने पहले स्कूटी को खड़ी किया उसके बाद वो एकदम से पैर पटकते हुए उस अधेड़ के सिर पर आ धमकी।

" देख कर नहीं चल सकते थे तुम ?" फिर उसकी करकस आवाज़ वातावरण में गूॅजी __" अभी मर जाते तो क्या करते फिर ? सड़क को क्या अपने बाप की जागीर समझ रखा है जो जहॉ से चाहे चल सकते हो ?"

लड़की अनाप शनाप बोलने में लगी ही थी कि आस पास से कई सारे लोग आकर वहॉ पर इकट्ठा हो गए। सब एक दूसरे से पूछने लगे कि क्या हुआ??? सड़क पर गिरा हुआ वो अधेड़ आदमी किसी तरह उठा और कुछ ही दूरी पर अपनी दवाईयों का हाल देख कर उसके चेहरे पर बेहद पीड़ा के भाव उभर आए। उसने सिर उठा कर अपने चारों तरफ करुण भाव से देखा और फिर उसकी नज़र उस लड़की पर पड़ी जो उसके सिर पर आ धमकी थी।

" लगता है इस लड़की ने इस अधेड़ व्यक्ति को अपनी स्कूटी से टक्कर मारी है। " आस पास खड़े लोगों के बीच से एक आदमी ने कहा __" देखो तो बेचारे की सारी दवाइयॉ सड़क पर फूट कर फैल गई हैं। "

" आज कल तो सड़क पर चलना भी दूभर हो गया है भाई। " एक अन्य व्यक्ति ने तंज कसा __" मोटर साइकिल और गाड़ी वाले आम आदमी को जब देखो तब टक्कर मार देते हैं और उल्टा उसी पर चढ़ दौड़ते हैं। देख रहे हो न इस लड़की को। इसने इस बेचारे बूढ़े आदमी को टक्कर मार दी और अब उल्टा इसे ही डॉट रही है। "

" ऐ मिस्टर। " लड़की ये सुनते ही उस आदमी की तरफ पलटी __" इसमें मेरी कोई ग़लती

नहीं है समझे। ये बुड्ढा खुद ही मरने के लिए मेरी स्कूटी के सामने आया था। वो तो अच्छा हुआ कि मैने टाइम पर ब्रेक मार दिया वरना इसका तो यहीं पर राम नाम सत्य हो जाना था आज। "

" अरे देखो तो कैसे बात कर रही है ये लड़की ?" एक अन्य ने कहा __" एक तो खुद ही टक्कर मारी इसने और ऊपर से इस बूढ़े आदमी का दोष लगा रही है ये। "

" बड़े बाप की लगती है भाई। " एक दूसरे ने कहा _" बड़े बाप की बेटी है तभी इतना तीखा बोलती है। तमीज़ नाम की तो कोई बात ही नहीं है इसमें। "

" हाऊ डेयर यू टाक टु मी लाइक दिस ?" लड़की ने गुस्से से चिल्लाते हुए कहा __" तुम्हें पता है कि तुम किससे बात कर रहे हो ? अगर जान जाओगे न तो यहीं पर खड़े खड़े पेशाब कर दोगे समझे। मैं इस शहर के मंत्री की बेटी हूँ। इस शहर के मंत्री को तो तुम सब अच्छी तरह जानते ही होगे न ?"

लड़की के इतना कहते ही आस पास खड़े लोगों को साँप सा सूँघ गया। पलक झपकते ही वो सब वहाँ से इस तरह गायब हो गए जैसे गधे के सिर से सींग गायब हो जाते हैं। उन सबके जाते ही लड़की के होठों पर विजयी मुस्कान उभरी और फिर उसने हिकारत के से भाव से उस अधेड़ की तरफ देखा। सड़क पर बैठा वो अधेड़ अपनी उस दवा की तरफ देख रहा था जो सड़क पर फैल गई थी। उसकी तरफ देख कर लड़की ने "हुँह" कहा और फिर पलट कर अपनी स्कूटी की तरफ आ गई। स्कूटी को स्टार्ट कर वो आगे बढ़ चली।

ये सब तमाशा देख साक्षी ने मोबाइल पर किसी से कुछ कहा और लड़की की तरफ तेज़ी से जिप्सी को दौड़ा दिया। उसके चेहरे पर बेहद गुस्से के भाव थे। शीघ्र ही उसकी जिप्सी उस लड़की की स्कूटी के पास आ गई और फिर साक्षी ने पीछे से टक्कर मार दी उसे। परिणामस्वरूप लड़की और उसकी स्कूटी उछलते हुए सड़क पर गिरे और कुछ दूर तक घिसटते हुए चले गए। फिज़ा में लड़की की चीख़ गूँज गई थी। यहाँ पर आस पास कोई दुकान या घर नहीं था। मार्केट एरिया पीछे ही था। हलाँकि कुछ ही दूरी पर बड़ी बड़ी बिल्डिंग्स दिख रही थी। ज़ाहिर था उन्हीं बड़ी बड़ी बिल्डिंग्स में से किसी एक बिल्डिंग पर इस लड़की का अलीशान घर होगा।

साक्षी ने जिप्सी को आगे बढ़ा कर लड़की के पास रोंका और उतर कर लड़की के पास गई। लड़की सड़क के बाएँ साइड उल्टी पड़ी दर्द से कराह रही थी। बड़ी मुश्किल से वो उठ कर बैठी और फिर अपने बदन पर लगी चोटों को देखने लगी।

" देख कर नहीं चल सकती थी क्या ?" साक्षी ने उसी का वाक्य उसी के लहजे में दोहराया ___" अभी मर जाती तो क्या करती तुम ? सड़क को क्या अपने बाप की जागीर समझ रखा है जो जहाँ से चाहे चल सकती हो ?"

साक्षी की बात सुनकर उस लड़की ने दर्द से कराहते हुए साक्षी की तरफ देखा और फिर एकाएक ही उसके चेहरे पर गुस्सा उतर आया। इस हालत में भी वो सड़क पर से किसी स्प्रिंग

लगे खिलौने की तरह उछल कर खड़ी हो गई और फिर बिना कुछ बोले ही घूम कर एक फ्लाइंग किक का वार साक्षी पर कर दिया। मगर उसका ये वार उसे खुद ही भारी पड़ गया। क्योंकि जैसे ही उसने फ्लाइंग किक चलाई वैसे ही झुक कर साक्षी ने उसकी उस टॉग पर अपनी टॉग चला दी थी जो नीचे सड़क पर जमी थी। नतीजा ये हुआ कि जमीन से लड़की का पैर हटते ही उस लड़की का बैलेंस बिगड़ा और वो गुड़ीमुड़ी होकर सड़क पर औंधे मुह गिरी। उसके मुख से दर्द में डूबी चीख़ निकल गई।

" तेरे जैसी दो कौड़ी की फाइटर लड़कियॉ मेरे पास ट्यूशन लेने आती हैं मूर्ख लड़की। " साक्षी ने उसके सिर के बाल अपनी मुट्ठियों में कस कर ऊपर उठाते हुए कहा __" तेरे अंदर अपने हरामी बाप का गंदा खून भरा है न। चल तुझे भी वहीं ले चलती हूॅ जहॉ तेरा वो हरामी भाई और उसके हरामी दोस्त हैं। "

" मुझे छोंड़ दो वरना इसका अंजाम बहुत बुरा होगा तुम्हारे लिए। " लड़की ने छटपटाते हुए कहा __" तुम्हें पता नहीं है कि तुमने किसकी बेटी पर हाथ उठाने की ज़ुर्रत की है ?"

" यही , बस यही अकड़ तो निकालनी है तेरी और तेरे बाप की भी। " साक्षी ने घुटने का वार ज़ोर से लड़की के पेट पर किया तो हिचक कर रह गई वो , जबकि साक्षी ने उसके बालों को और ज़ोर से खींचते हुए कहा __" बहुत जल्द तुम सबकी ऐसी हालत होने वाली है जिसकी तुम लोगों ने कभी कल्पना भी न की होगी। "

" बहुत पछताओगी तुम ?" लड़की ने चीखते हुए कहा __" मेरा बाप तुम्हारा वो हाल करेगा कि तुम अपना चेहरा दुनियॉ को दिखाने के काबिल नहीं रहोगी। "

" ये तो वक्त ही बताएगा मेरी जान। " साक्षी ने लड़की की कनपटी के एक खास हिस्से पर अचानक ही कराट मारी थी , जिसका नतीजा ये हुआ कि लड़की बेहोश होती चली गई। जबकि साक्षी ने कहा __" कि मुह दिखाने के काबिल कौन नहीं रहता। "

साक्षी ने लड़की के बेहोश जिस्म को उठा कर अपनी जिप्सी में डाला और पिछली सीट के नीचे से एक ब्लैक कलर की बड़ी सी प्लास्टिक की पन्नी निकाल कर उसके ऊपर ऐसे तरीके से डाल दिया कि कोई ये न सोच सके कि उसके नीचे कोई इंसानी जिस्म भी हो सकता है। ये सब करने के बाद साक्षी पलटी और आस पास का बारीकी से मुआयना किया तो कुछ ही दूरी पर उसे लड़की का मोबाइल पड़ा दिखा। सड़क पर गिरने से मोबाइल की स्क्रीन चटक गई थी। साक्षी ने किनारे साइड की एक बटन को दबाया तो तुरंत ही स्क्रीन फ्लैश कर उठी। इसका मतलब वो चालू हालत में था अभी। ये देख कर साक्षी ने मोबाईल का कवर निकाल कर मोबाइल के ढक्कन को खोला और बैटरी निकाल ली। उसके बाद सारी चीज़ें पॉकेट में डालने के बाद उसने अपने दूसरे पॉकेट से अपना आई फोन निकाला। उसे याद आया कि उसने आई फोन फार्महाउस पर ही स्विच ऑफ कर दिया था। ये ध्यान आते ही उसके होठों पर एक जानदार मुस्कान उभरी। उसने अपने आईफोन को वापस पॉकेट में रखा और आकर जिप्सी में बैठ गई। जिप्सी को स्टार्ट कर उसने यूटर्न लिया और वापस चल दी।

मार्केट के पास आते ही उसे दूसरी गाड़ी पर वो पुलिस वाले दिखे। उनमें से एक पुलिस वाले ने साक्षी को बताया कि उसने उस अधेड़ आदमी को दूसरी दवाइयॉ खरीद कर दे दी हैं। उसकी बात सुन कर साक्षी आगे बढ़ गई। उसके पीछे दूसरे पुलिस वाले भी अपनी गाड़ी में चल पड़े। उनकी नज़र साक्षी की जिप्सी पर थोड़ा सा फैली हुई उस ब्लैक कलर की प्लास्टिक की पन्नी पर पड़ी जिसके नीचे साक्षी ने उस लड़की को छुपा दिया था। किन्तु उन लोगों ने इस पर ज्यादा ध्यान न दिया। उनको अपने आला अफसर का आदेश था कि इंस्पेक्टर साक्षी के आस पास ही रहना है और उसकी किसी भी गतिविधि पर कोई सवाल जवाब नहीं करना है।

साक्षी की जिप्सी ऑधी तूफान बनी सोनपुर की तरफ बढ़ी चली जा रही थी। उसके पीछे ही दूसरी गाड़ी पर वो पुलिस वाले भी थे। साक्षी को अंदेशा था कि सोनपुर के पास वाले रास्तों पर कहीं उसका बाप या उसके आदमी मिल न जाएॅ मगर सोनपुर के उस पुल तक तो कोई नहीं मिला था। पुल से दाहिने साइड जिप्सी को मोड़ कर साक्षी फार्महाउस की तरफ बढ़ चली। कुछ दूरी पर आकर साक्षी ने जिप्सी को रोंक दिया। कुछ ही पलों में उसके पीछे वाली गाड़ी भी उसके पास आकर रुक गई।

" अब आप सब यहॉ से वापस लौट जाइये। " साक्ष ी ने एक पुलिस वाले की तरफ देख कर कहा __" आज का काम इतना ही था। अगर ज़रूरत पड़ी तो वायरलेस या फोन द्वारा सूचित कर दिया जाएगा। "

" ओके मैडम। " एक पुलिस वाले ने कहा __" जैसा आप कहें। जय हिन्द। "

उन सबने साक्षी को सैल्यूट किया और फिर अपनी गाड़ी को वापस मोड़ कर वहॉ से चले गए। उनके जाते ही साक्षी ने भी अपनी जिप्सी को फार्महाउस की तरफ बढ़ा दिया। आने वाला समय अपनी आस्तीन में क्या छुपा कर लाने वाला था ये किसी को पता न था।"

६०

एक लंबे चौड़े हाल के बीचो बीच एक बड़ी सी टेबल के चारो तरफ कुर्सियॉ लगी हुई थी। उन सभी कुर्सियों पर इस वक्त कई सारे अजनबी चेहरे बैठे दिख रहे थे। सामने फ्रंट की मुख्य कुर्सी खाली थी। हर शख्स के सामने मिनरल वाटर से भरे हुए कॉच के ग्लास रखे हुए थे। लंबे चौड़े हाल में इस वक्त ब्लेड की धार की मानिन्द पैना सन्नाटा फैला हुआ था। वो सब अजनबी चेहरे ऐसे थे जिन्हें देख कर ही प्रतीत हो रहा था कि ये सब किसी न किसी अपराध की दुनियॉ ताल्लुक ज़रूर रखते हैं। उन अजनबी चेहरों के बीच ही कुछ ऐसे भी चेहरे थे जो शक्ल सूरत से विदेशी नज़र आ रहे थे।

" और तो सब ठीक ही है। " उनमें से एक ने हाल में फैले हुए सन्नाटे को भेदते हुए कहा __" मगर ठाकुर साहब का हमसे इस तरह इन्तज़ार करवाना बिलकुल भी पसंद नहीं आता। हर बार यही होता है कि हम सब टाइम से कान्फ्रेन्स हाल में मीटिंग के लिए आ जाते हैं मगर ठाकुर साहब तो ठाकुर साहब हैं। हर बार निर्धारित समय से आधा घंटे लेट ही आते हैं। "

" अब इसमें हम क्या कर सकते हैं रघुनाथ जी ?" एक अन्य व्यक्ति ने मानो असहाय भाव से कहा __" वो ठाकुर साहब हैं। शायद हमसे इस तरह इन्तज़ार करवाने में वो अपनी शान समझते हैं। हलॉकि ऐसा होना नहीं चाहिए , क्योंकि यहॉ पर कोई भी किसी से कम नहीं है। हम सबको एक दूसरे का बराबर आदर व सम्मान करना चाहिए। मगर ये बात ठाकुर साहब से कौन कहे ?"

" यस यू आर अब्सोल्यूटली राइट मिस्टर पाटिल। " सहसा एक विदेशी कह उठा __" हमको भी ठाकुर का इस तरह वेट करवाना पसंद नहीं आता हाय। वो क्या समझता हाय कि हम लोगों की कोई औकात नहीं हाय ? अरे हम चाहूँ तो अभी इसी वक्त ठाकुर को खरीद सकता हाय। बट हम भी इसी लिए चुप रहता हाय कि तुम सब भी चुप रहता हाय। "

" इट्स ओके मिस्टर कैप्रियो। " पाटिल ने कहा __" ये आख़िरी बार है। आज ठाकुर से हम सब इस बारे में एक साथ चर्चा करेंगे और उनसे कहेंगे कि हम सबकी तरह वो भी टाइम पर मीटिंग हाल में आया करें। इस तरह हमसे वेट करवा कर हमारी तौहीन करने का उन्हें कोई हक़ नहीं है। अगर आप मेरी इस बात से सहमत हैं तो प्लीज जवाब दीजिए। "

पाटिल की इस बात पर सबने अपनी प्रतिक्रिया दी। जो कि पाटिल की बातों पर सहमति के रूप में ही थी। कुछ देर और समय बीतने के बाद तभी हाल में सत्यम सिंह दाखिल हुआ और मुख्य कुर्सी पर आकर बैठ गया। उसने सबकी तरफ देख कर बड़े रौबीले अंदाज़ से हैलो किया। उसकी इस हैलो का जवाब सबने इस तरह दिया जैसे बग़ैर मन के रहे हों। इस बात को खुद सत्यम सिंह ने भी महसूस किया।

" सॉरी फ्रैण्ड्स हमें आने में ज़रा देर हो गई। " सत्यम सिंह ने बनावटी खेद प्रकट करते हुए कहा __" आई होप आप सब इस बात से डिस्टर्ब नहीं हुए होंगे। एनीवेज .....

" ठाकुर साहब दिस इज टू मच। " एक अन्य व्यक्ति कह उठा __" आप हर बार ऐसा ही करते हैं और फिर बाद में ये कह देते हैं कि सॉरी फ्रैण्ड्स हमें आने में ज़रा देर हो गई। आप हर बार लेट आकर हम सबकी तौहीन करते हैं। हम सब आधा घंटे तक आपके आने का वेट करते रहते हैं। आपको क्या लगता है कि हम लोगों के पास दूसरा कोई काम ही नहीं है ? हम सब भी अपने अपने कामों में व्यस्त रहते हैं मगर टाइम से कहीं भी पहुँचने के लिए समय पहले से ही निकाल लेते हैं। इस बिजनेस में हम सब बराबर हैं। यहाँ कोई छोटा बड़ा नहीं है। हम सबने आपको मेन कुर्सी पर बैठने का अधिकार अपनी खुशी से दिया था। मगर इसका मतलब ये नहीं कि आप उसका नाजायज़ मतलब निकाल लें। हम सबने डिसाइड कर लिया है कि अगर आपका रवैया ऐसा ही रहा तो हम सब आपसे बिजनेस का अपना अपना हिस्सा वापस ले लेंगे। दैट्स आल। "

उस व्यक्ति की ये सारी बातें सुन कर सत्यम सिंह अंदर ही अंदर बुरी तरह तिलमिला कर रह गया था। ये सच था कि हर बार वो इन सबसे इन्तज़ार करवा कर यही जताता था कि उसके सामने इन लोगों की कोई अहमियत नहीं है। बल्कि वो इन सबसे ज्यादा अहमियत रखता है। आज तक इस बिजनेस से जुड़े ये सब लोग उसकी इस आदत पर कोई सवाल नहीं खड़ा किये थे जिसकी वजह से उसे यही लगता रहा था कि यू सब उसे बहुत ज्यादा इज्ज़त व अहमियत देते हैं और इसी लिए वो ऐसा करता रहा था। मगर आज जैसे इन सबके धैर्य का बाँध टूट गया था। जिसका नतीजा इस रूप में उसके सामने आया था। उस शख्स की बातों से उसके अहं को ज़बरदस्त चोंट पहुँची लेकिन वो ये बात अच्छी तरह जानता था कि इस बारे में अगर उसने कुछ उल्टा सीधा बोला तो काम बिगड़ जाने में पल भर की भी देर नहीं लगेगी। इस लिए वो उस शख्स की उन सभी कड़वी बातों को जज़्ब कर गया था।

" आई नो मिस्टर सिंधिया। " सत्यम सिंह ने कहा _" बट इस सबसे हमारा ये मतलब हर्गिज़ भी नहीं है कि हम आप सबको अपने से छोटा समझते हैं। हम सब फ्रैण्ड्स हैं और हम में से कोई छोटा बड़ा नहीं है। हर बार हम मीटिंग में देर से पहुँचते हैं इसका हमें यकीनन बेहद अफसोस होता है। मगर क्या करें हो जाता है। मगर हमें ये भी पता होता है कि आप सब हमारी इस ग़लती को नज़रअंदाज़ कर देंगे। "

" इट्स ओके ठाकुर साहब। " रघुनाथ ने कहा _" बट ध्यान रखियेगा कि अगली बार से ऐसा न हो। कभी कभार की बात हो तो समझ में आता है मगर हर बार ऐसा हो तो मूड ख़राब होना स्वाभाविक बात है। "

" यस ऑफकोर्स मिस्टर रघुनाथ। " सत्यम सिंह एक बार फिर गुस्से और अपमान का घूँट पीकर बोला _" अब अगर आप सबकी इजाज़त हो तो काम की बात करें ?"

" जी बिलकुल। " पाटिल ने कहा __"

उसके पहले हम ये जानना चाहते हैं कि समय से पहले इस तरह अचानक मीटिंग रखने की

क्या वजह थी?"

" आप सबको तो इस बात का पता ही है कि मौजूदा वक्त में हमारे हालात बिलकुल भी ठीक नहीं हैं। " सत्यम सिंह ने बेबस भाव से कहा __" पिछले कुछ समय से हमारे साथ बेहद गंभीर और बेहद नुकसानदाई घटनाएँ घट रही हैं। उन घटनाओं के पीछे कौन है ये भी हम पता लगा चुके हैं। इस लिए अब हम चाहते हैं कि आप सब हमारे इस बुरे वक्त में हमारा साथ दें। "

" वैसे तो आप खुद ही सक्षम हैं ठाकुर साहब। " पाटिल ने कहा __" किन्तु इसके बाद भी आप हम सबसे मदद की आशा रखते हैं तो मैं तैयार हूँ। आख़िर हम सब एक ही तो हैं। हर तरह की मसीबत व परेशानी का एक साथ मिल कर मुकाबला करेंगे तो हर जंग में हमारी फतह होगी। "

" हमें भी आपके इन मौजूदा हालातों का पता है ठाकुर साहब। " एक अन्य व्यक्ति ने कहा __" इस लिए हम सब आपके साथ हैं। आप हुकुम दें कि हमें क्या करना होगा ?"

" आप सब हमारा साथ देने के लिए तैयार हैं इससे बड़ी बात व खुशी और क्या होगी भला ? रही बात आपके कुछ करने की तो आप बस हमारे साथ ही बने रहें कुछ समय के लिए या फिर अपने कुछ ऐसे आदमी हमें दीजिए जो हर तरह के फन में माहिर हों। "

" जैसी आपकी इच्छा ठाकुर साहब। " रघुनाथ ने कहा __" हम सब आपके साथ हैं और हमारे ऐसे आदमी भी आपके पास आ जाएँगे जो हर तरह के फन में माहिर हैं। अब से आपकी परेशानी हमारी परेशानी है। क्यों फ्रैण्ड्स आप सब क्या कहते हैं ??"

रघुनाथ के अंतिम वाक्य पर सबने अपनी प्रतिक्रिया सहमति के रूप में दी। ये सब देख कर सत्यम सिंह अंदर ही अंदर बेहद खुश हो गया था।

" मिस्टर सिंह। " सहसा इस बीच एक विदेशी ने कहा __" पिछली डील अभी तक कम्प्लीट नहीं हुआ। क्या हम जान सकता हाय कि इतना डिले करने का तुम्हारा क्या मतलब हाय ? बात थोड़ी बहुत की होती तो हम उसको भूल भी सकता था बट एज यू नो वो सारी चीज़ें लाखों करोड़ों में हाय। सो हाउ कैन आई फारगेट ?"

" हम जानते हैं मिस्टर कैप्रियो। " सत्यम सिंह ने बेचैनी से पहलू बदला __" कि वो सब करोड़ों का सामान है। लेकिन मौजूदा वक्त में हम ऐसी स्थित में नहीं हैं कि आपका पैसा आपको दे सकें। इसके लिए आपको तब तक रुकना पड़ेगा जब तक कि हमारे सिर पर से ये मुसीबत और ये परेशानी न हट जाए। प्लीज़ ट्राई टू अण्डरस्टैण्ड मिस्टर कैप्रियो। "

" ओखे। " कैप्रियो ने कहा __" नो प्राब्लेम हम तुम्हारी हर तरह से मदद करेगा। बट सारी प्राब्लेम फिनिश होने के बाद तुम हमारा पूरा पैसा देगा। इस बात का प्रामिस करना पड़ेगा

तुमको। "

" मिस्टर कैप्रियो। " सहसा रघुनाथ ने कहा __" ये आप कैसी बात कर रहे हैं ? आप जानते हैं कि ठाकुर साहब के पास इस समय कितनी गंभीर समस्याएँ हैं इसके बाद भी आप सिर्फ अपने मतलब की बात कर रहे हैं। जबकि आपको करना तो ये चाहिए था कि आप सब कुछ भूल कर सिर्फ ठाकुर साहब को उनकी समस्याओं से बाहर निकालें। "

" तो हमने कब मना किया इस बात से मिस्टर रघुनाथ ?" कैप्रियो ने कहा __" हम कह ओ रहा है कि हम हर तरह से इनकी मदद करेगा। "

" हॉ लेकिन यहॉ पर आपको अपने पैसों की बात करना उचित नहीं है न। " रघुनाथ ने कहा __" आपको ये भी तो सोचना चाहिए कि पैसा सिर्फ आपका ही बस बकाया नहीं है ठाकुर साहब के पास , हम सबका भी है। लेकिन हमने तो इनसे पैसों के बारे में कोई बात नहीं की। "

" ओखे आयम सॉरी। " कैप्रियो ने बेचैनी से पहलू बदलते हुए कहा __" सो अब बताइये क्या करना है हम लोगो को ?"

" ये तो ठाकुर साहब ही बताएँगे। " रघुनाथ ने कहा _" कि हम सबको क्या करना होगा ?"

" हमने आप सबको पहले ही बता दिया है कि आप सब अपने कुछ ऐसे आदमी हमें दीजिए जो हर तरह के काम में माहिर हों। " सत्यम सिंह ने कहा __" उसके बाद हम खुद ही तय करेंगे कि हमें उन आदमियों से क्या और कैसे काम लेना है ?"

" ठीक है ठाकुर साहब। " पाटिल ने कहा __" हमारे पास जो भी ऐसे आदमी हैं। उन सबको आपके पास भेज देंगे। "

" ओह थैक्यू सो मच टू आल ऑफ यू डियर फ्रैण्ड्स। " सत्यम सिंह ने खुश होकर कहा __" और हाँ , हम आप सबसे वादा करते हैं कि इस सबसे निपट लेने के बाद हम बहुत जल्द आप सबके पैसों का हिसाब किताब कर देंगे। "

सत्यम सिंह की इस बात के साथ ही मीटिंग खत्म हो गई। सबने सत्यम सिंह को अपने आदमी भेजने का कहा और फिर सब एक एक करके मीटिंग हॉल से बाहर की तरफ चले गए। सबके जाने के बाद सत्यम सिंह भी बाहर की तरफ निकल गया। बाहर पार्किंग में खड़ी अपनी कार में बैठ कर सत्यम सिंह घर की तरफ निकल गया।

कुछ ही समय में सत्यम सिंह हवेली पहुँच गया। अंदर ड्राइंग रूम में रखे सोफों पर सोनिया और जयदीप बैठे थे। सत्यम सिंह भी वहीं रखे एक सोफे पर बैठ गया। उसने सोनिया को चाय बनाने का कहा तो सोनिया रसोई की तरफ बढ़ गई। जबकि सत्यम सिंह ने गले पर कसी टाई को ढीला कर आराम से सोफे की पिछली पुश्त से पीठ टिका कर लगभग लेट सा गया।

जयदीप को समझ न आया कि अपने बाप से बातों का सिलसिला कैसे और कहाँ से शुरू करे? ऐसा कदाचित इस लिए था क्योंकि आज सारा दिन उसने अपनी माँ के साथ मौज मस्ती की थी। इस बात के कारण कहीं न कहीं हल्की सी झिझक उसके अंदर मौजूद थी।

" आप इतना लेट कैसे हो गए डैड ?" आख़िर जयदीप ने बात शुरू कर ही दी , बोला __" आपने तो कहा था कि जल्दी आ रहा हूँ ?"

" एक ज़रूरी मीटिंग में व्यस्त हो गया था बेटे। " सत्यम सिंह ने उसी हालत में कहा __" कल से हमारे पास कुछ ऐसे आदमी होंगे जो हर तरह के काम में माहिर होंगे। अब मैं भी देखूँगा कि वो हरामज़ादा विक्रम और साक्षी कैसे उन आदमियों को ठिकाने लगाते हैं ?"

" ऐसे वो कौन से आदमी हैं डैड ?" जयदीप ने ना समझने वाले भाव से कहा __" क्या आप अभी भी ऐसे किन्हीं आदमियों पर ही भरोसा करेंगे ? जबकि पालतू आदमियों का क्या हस्र हुआ है ये आपको बताने की ज़रूरत नहीं है। "

" हमारे आदमी दिमाग़ से पूरी तरह पैदल थे बेटे। " सत्यम सिंह ने कहा __" वो सब अपने शारीरिक बल को महत्व देते थे तभी तो मात खा गए। उन्होंने ये कभी सोचा ही नहीं कि शरीरिक बल से कहीं ज्यादा दिमाग़ी बल कारगर होता है। ख़ैर , अब जो आदमी यहाँ आएँगे वो सब खलीफ़ा लोग होंगे। जो हर वक्त हर तरह के ख़तरे वाले कामों को ही अंजाम देते हैं। दूसरी बात ये है कि साक्षी एक आम लड़की नहीं है जिसे कोई भी ऐरा गैरा व्यक्ति आसानी से पकड़ लेगा , बल्कि वो एक पुलिस वाली भी है। जिसके पास सारा पुलिस डिपार्टमेन्ट भी है। ऐसे में अगर हम खुद उस पर हाथ डालेंगे तो वो हमें कानून की चपेट में डाल सकती है। इस लिए हमने सोचा है कि हम पहले ऐसे आदमियों के द्वारा उसे पकड़ लें कि जिनसे वो आसानी से मुकाबला भी न कर सके। मुकाबले से मेरा मतलब ये है कि मेरे वो आदमी उसे ऐसा घेरा बना कर पकड़ेंगे जिसके बारे में उसे अंदेशा तक न हो पाएगा। "

" ओह आई सी। " जयदीप को सारी बात जैसे समझ आ गई थी , बोला __" ये सही रणनीत है डैड। अगर वो सब आदमी वैसे ही हर काम में माहिर हैं जैसा कि आप बता रहे हैं तो फिर यकीनन ये सही क़दम है। "

अभी सत्यम सिंह कुछ बोलने ही वाला था कि तभी किचेन से आती हुई सोनिया हाथ में चाय का ट्रे लिए वहाँ पर आ गई। उसने दोनो बाप बेटे को एक एक कप चाय पकड़ाई और एक कप खुद लेकर वहीं एक सोफे पर बैठ गई।

" कौन से आदमियों की बात चल रही है सत्यम ?" सोनिया ने सोफे पर बैठने के साथ ही पूछा था। उसके पूछने पर सत्यम सिंह ने उसे भी वही सब बता दिया जो अभी उसने जयदीप को बताया था। सारी बात सुनने के बाद सोनिया कुछ देर गंभीरता से सोचती रही।

" तो अब तुमने बाहर से आदमी मॅगवाए हैं। " फिर सोनिया ने तिरछी नज़र से देखते हुए कहा __" और उन पर भरोसा भी है तुम्हें कि वो तुम्हें इस बार नाकामी का नहीं बल्कि फतह का स्वाद चखाएॅगे ?"

" बिलकुल। " सत्यम सिंह ने स्पष्ट भाव से कहा __" ये सब ऐसे आदमी हैं जिनका वास्ता अपराध की हक़ीक़त दुनियॉ से है और ये सब उस अपराध की दुनियॉ के सफल खिलाड़ी हैं। "

" चलो इनका कारनामा भी देख लेते हैं। " सोनिया ने सहसा गहरी सास ली __" वैसे इस बात पर भी ध्यान देना कि समय हर वक्त इसी बस के लिए नहीं रहता। "

" क्य मतलब ??" सत्यम सिंह चकराया।

" मतलब ये कि हर बार एक जैसी ही चाल चलना एक सफल खिलाड़ी की पहचान नहीं होती। " सोनिया ने समझाने वाले भाव से कहा _" ऐसे में सामने वाले खिलाड़ी के दिमाग़ में ये मैसेज जाता है कि उसका प्रतिद्वंदी कमज़ोर है जो सिर्फ एक ही तरह की चाल चलना जानता है और उसकी ये बेवकूफी भी कि उसी एक तरह की चाल से वह खेल को जीत लेने की उम्मीद भी करता है। इस लिए एक अच्छे खिलाड़ी को चाहिए कि बीच बीच में अपनी चाल को बदल भी लेना चाहिए। "

" बात तो तुम्हारी ठीक है डियर। " सत्यम सिंह ने चाय का खाली कप सामने कॉच की टेबल पर रखते हुए बोला __" लेकिन इसको इस एंगल से भी तो सोच कर देखो ज़रा। मतलब ये कि सामने वाले खिलाड़ी के दिमाग़ में हम जानबूझ कर ये मैसेज डाल रहे हैं कि हमारे पास सिर्फ एक ही तरह की चाल है। उसे ऐसा समझने दो। जबकि हम सही समय आने पर अपनी चाल को बदल कर उसे ऐसे मात देंगे कि उसे इसकी उम्मीद भी न होगी हमसे। जिसे वो हमारी कमज़ोरी समझेगा वो दरअसल हमारी चाल का ही एक हिस्सा होगा। "

" ओहो क्या बात है डियर हस्बैण्ड। " सोनिया ने सहसा मुस्कुराते हुए कहा __" क्या तर्क निकाला है। ये भी ठीक है। चल जाएगा। मगर सबसे ज्यादा ध्यान देने वाली बात ये है कि हमारे पास समय नहीं है समय बर्बाद करने के लिए भी।

सोचने वाली बात है कि हम अब भी वहीं हैं जहॉ पर थे जबकि हमारा दुश्मन बहुत कुछ करके यहॉ निकल भी चुका है। हॉ सत्यम, वो रंडी का जना विक्रम अब यहॉ नहीं होगा। बल्कि जिस काम से वो यहॉ आया था उस काम को करके वो वापस मुंबई चला गया होगा। आख़िर इस बात का एहसास तो उसे भी है कि उसने हमारे इतने सारे आदमियों का क्रियाकर्म करके गायब किया है जिसका अंजाम किसी भी सूरत में उसके हित में नहीं होगा। इस लिए अपना काम पूरा करने के बाद वो यहॉ पर एक पल भी रुकना गवॉरा नहीं करेगा।"

" मॉम ठीक कह रही हैं डैड। " सहसा इस बीच जयदीप ने भी अपना पक्ष रखा __" वो यकीनन यहॉ से चला गया होगा। भला ऐसे ख़तरे के बीच रुकने की कहॉ की समझदारी । होगी ? अब ये भी स्पष्ट हो गया है कि उसके बाद यहॉ सिर्फ साक्षी दीदी ही रह गई हैं। "

" साक्षी ही बस नहीं है बेटे। " सत्यम सिंह ने कहा __" बल्कि उसके साथ तुम्हारी गीता बुआ भी है। "

" क्याऽऽ ???" सत्यम सिंह की इस बात से जयदीप और सोनिया दोनो ही बुरी तरह चौंके थे , जबकि सोनिया ने कहा __" तुम ये कैसे कह सकते हो सत्यम ? गीता तो वापस अपने ससुराल चली गई थी न उस दिन ?"

" वो ससुराल नहीं। " सत्यम सिंह ने कहा __" बल्कि साक्षी के साथ कहीं और गई थी। गीता ने तो ससुराल जाने का सिर्फ बहाना बनाया था जबकि हक़ीक़त ये थी कि साक्षी उसे खुद यहॉ से निकाल कर ले गई थी। ये सब साक्षी का ही किया धरा था। "

" लेकिन ये सब तुम्हें कैसे पता सत्यम ?" सोनिया ने चकित भाव से कहा __" और साक्षी ने भला ऐसा क्यों किया होगा ?"

" उस दिन गीता जब साक्षी के साथ गई तो ये सच है कि एक भाई होने के नाते मुझे खुशी हुई थी कि चलो अच्छा हुआ कि गीता को उसके ससुराल वालों ने बुलाया है। " सत्यम सिंह कह रहा था __" मगर जब दो दिन बाद भी गीता का कोई फोन नहीं आया तो मैने सोचा कि मैं ही फोन करके पता कर लूँ कि वहॉ सब ठीक तो है न ? इस लिए मैने गीता के ससुराल में गीता को फोन लगाया मगर गीता का फोन बंद बता रहा था। कई बार के लगाने पर भी जब गीता का फोन बंद ही बताता रहा तो मैने गीता के हस्बैण्ड को फोन लगाया और उनसे पूछा गीता के बारे में तो उसने साफ साफ कठोरता से मना कर दिया कि उसके यहॉ गीता नहीं आई और ना ही उसका गीता से कोई लेना देना है अब। गीता के पति की ये बात सुन कर मेरा दिमाग़ घूम गया। मुझे समझते देर न लगी कि गीता को हवेली से निकाल कर साक्षी ही ले गई है। उसे शायद ये बात कहीं से पता चल गई होगी कि हम दोनो बाप बेटे की गंदी नज़र गीता पर है। इस लिए साक्षी ने उसे इस हवेली से बड़ी चालाकी से निकाल लिया और अपनी बुआ को किसी ऐसी जगह पर सुरक्षित रखने का सोचा होगा जहॉ पर हम आसानी से पहुँच भी न सकें। "

" हे भगवान ! इतना बड़ा खेल खेल गई साक्षी। " सोनिया ने हैरानी से कहा __" अगर ये बात सच है तो यकीनन हमारी बेटी ने हमें उल्लू बना दिया है। उसने बड़ी सफाई और चतुराई से आपके मुह से आपका मन पसंद निवाला छीन लिया है जिसका हमें एहसास तक नहीं हो सका। "

" जब हमारी बेटी ने ही हमें धोखा दे दिया तो कोई क्या कर सकता है ?" सत्यम सिंह ने कहा __" लेकिन अब जो हम उसके साथ करेंगे उसकी उसने कल्पना भी न की होगी। हम उसके मॉ बाप हैं , हमने उसे बचपन से लेकर अब तक क्या कुछ नहीं दिया। उसने जिस

चीज़ की आरज़ू की हमने पल भर में उस चीज़ को लाकर उसके क़दमों में डाल दिया। मगर उसने हमारे लाड प्यार का ये सिला दिया हमें। इतने सालों का लाड प्यार उसके लिए कोई मायने नहीं रखता। देख लो सोनिया , ये है तुम्हारी बेटी का अपने मॉ बाप के प्रति प्रेम और लगाव। जो अपने बाप के दुश्मन के साथ मिल कर खुद अपने ही पैरेंट्स के लिए मौत का सामान जुटाने पर तुली हुई है। इस हाल में अगर तुम मुझसे ये कहो कि मैं उसकी इस धृष्टता को माफ़ कर दूँ तो ऐसा हर्गिज़ नहीं हो सकता अब। तुम्हारी बेटी ने अपने ही बाप के हाथो अब ऐसी मौत को चुन लिया है जिसके दर्द का किसी को एहसास नहीं हो सकता। "

" पहले मुझे भी लगता था सत्यम कि वो आख़िर हमारी बेटी है। " सोनिया ने कठोरता से कहा __" मगर उसके इस कृत्य से मुझे भी उस पर अब बेहद गुस्सा आया हुआ है। मैं जानती हूँ कि वो अब दूध पीती बच्ची नहीं रही है जिसके कारण उसे हर चीज़ का पाठ पढ़ाना पड़ेगा। बल्कि अब वो बड़ी हो गई है। जिसे अपने और अपनों के अच्छे बुरे का बखूबी ख़याल है। इसके बाद भी वो अपने ही पैरेंट्स का बुरा चाहने वाला काम किया है तो अब मैं भी यही कहूँगी कि उसे उसके इस अपराध की सख्त से सख्त सज़ा मिले। दैट्स आल। "

कुछ देर और तीनो के बीच बातें होती रहीं उसके बाद तीनों ने रात का खाना खाया और सोने के लिए कमरों में चले गए। इस बात से अंजान कि आने वाली सुबह उनके लिए क्या धमाका करने वाली है????

६१

साक्षी की जिप्सी फार्महाउस पहुँची। लोहे वाले गेट के पास ही शंकर और हरिया काका बंदूख लिए खड़े थे। साक्षी की जिप्सी को देखते ही दोनो ने गेट खोल दिया। गेट खुलते ही साक्षी ने जिप्सी की गेट के अंदर बढ़ा दिया। कुछ ही पल में साक्षी की जिप्सी पोर्च में जाकर रुकी। जिप्सी से उतर कर साक्षी ने हरिया काका को आवाज़ देकर बुलाया। हरिया के आते ही साक्षी ने उससे जिप्सी के पीछे बड़ी सी प्वालीथिन के नीचे ढँकी मंत्री की बेटी को उठा कर तहखाने में ले जाने को कहा। उससे ये भी कहा कि तहखाने में उसे अच्छी तरह बाँध कर ही रखे।

साक्षी के कहने पर हरिया ने वैसा ही किया। आज एक लड़की को इस तरह तहखाने में ले आते देख हरिया काका अंदर ही अंदर बेहद खुश हो गया था। लड़की को देख कर उसके मन में ढेर सारे लड्डू फूट रहे थे। काफी दिन से लड़की नितंब मार मार कर वो अब उकता सा गया था। अब उसे ऐक फ्रेश माल की ज़रूरत महसूस हो रही थी। केशरमाँ को ज्यादा सहवास करना पसंद नहीं था इस लिए हरिया को वह रोज रोज अपने पास नहीं आने देती थी। जिसकी वजह से हरिया उससे खूब नाराज हो जाया करता था। मगर कर भी क्या सकता था??

मन में ढेर सारे खुशी के लड्डू फोड़े वह लड़की को तहखाने में ले जाकर उसे वहीं तहखाने के फर्श पर लेटा दिया। लड़की अभी भी बेहोश ही थी। तहखाने में रस्सियों से बँधे वो चारो असहाय अवस्था में लगभग झूल से रहे थे। उन चारों की हालत ऐसी हो गई थी कि पहचान में नहीं आ रहे थे। जिस्म पर एक एक कच्छा था उन चारों के और कुछ नहीं। इस वक्त चारो के सिर नीचे की तरफ झुके हुए थे। उनमें इतनी भी हिम्मत नहीं थी कि सिर उठा कर सामने की तरफ देख भी सकें कि कौन किसे लेकर आया है? हरिया काका ने एक नज़र उन चारों पर डाली उसके बाद वो लड़की की तरफ एक बार देखने के बाद तहखाने से बाहर की तरफ चला गया।

कुछ देर में जब वो आया तो उसके दोनो हाथ में एक लकड़ी की कुर्सी थी।लकड़ी की कुर्सी को तहखाने में एक तरफ रख कर वो पलटा और फिर लड़की उठा कर उस कुर्सी पर बैठा दिया। उसने लड़की के दोनो हाथो को कुर्सी के दोनो साइड एक एक करके रस्सी से बाँध दिया। उसके बाद उसके पैरों को भी नीचे कुर्सी के दोनो पावों पर एक एक कर बाँध दिया। लड़की के झुके हुए सिर को ऊपर उठा कर उसने कुर्सी की पिछली पुश्त से टिका दिया। कुछ देर तक हरिया काका उस लड़की को ललचाई नज़रों से देखता रहा उसके बाद वो तहखाने से बाहर आ गया। तहखाने का गेट बंद कर वो बाहर गेट के पास खड़े शंकर के करीब आ गया।

उधर, मंत्री की बेटी को हरिया के हवाले करने के बाद साक्षी अंदर अपने कमरे की तरफ बढ़ गई। कमरे में आकर उसने अपनी वर्दी को उतारा और बाथरूम में घुस गई। जब वह फ्रेश होकर बाहर आई तो कमरे में गीता बुआ को देख कर वह चौंकी। दरअसल इस वक्त वह सिर्फ एक हल्के पिंक कलर के टॉवेल में थी।

बाँथरूम का दरवाजा खुलने की आवाज़ से बेड पर बैठी गीता का ध्यान उस तरफ गया तो

साक्षी को मात्र टॉवेल में देख कर वह हौले से मुस्कुराई। उसके यूँ मुस्कुराने से साक्षी के चेहरे पर अनायास ही लाज और हया की सुर्खी फैल गई। होठों पर हल्की मुस्कान के साथ ही उसकी नज़रें झुकती चली गईं। साक्षी का इस तरह शरमाना गीता को काफी अच्छा लगा। उसे पता था कि उसकी ये भतीजी भले ही ऊपर से कितनी ही कठोर हो किन्तु अंदर से वह एक शुद्ध भारतीय लड़की है जो ऐसी परिस्थिति में शरमाना भी जानती है।

" चल मुझसे शरमाने की ज़रूरत नहीं है साक्षी। " गीता ने मुस्कुराते हुए कहा __" तू आराम से अपने कपड़े पहन ले। फिर हम बातें करेंगे। "

" शर्म तो आएगी ही बुआ। " साक्षी ने इजी फील करने के बाद ही हौले से मुस्कुराते हुए कहा __" मैं इस तरह पहले कभी भी किसी के सामने नहीं आई। भले ही वो मेरे घर का ही कोई सदस्य हो। "

" हॉ जानती हूँ मैं। " गीता ने कहा __" पर इतना तो आजकल आम बात है मेरी बच्ची। सो फील इजी एण्ड कम्फर्टेबल। "

गीता की इस बात से साक्षी बस मुस्कुराई और फिर पास ही एक साइड रखी आलमारी से उसने अपने कपड़े निकाले और फिर वापस बाथरूम में घुस गई। ये देख कर गीता एक बार पुनः मुस्कुरा उठी।

थोड़ी देर बाद साक्षी जब बाथरूम से बाहर आई तो इस बार उसके खूबसूरत से बदन पर भारतीय लड़कियों का शुद्ध सलवार सूट था और सीने पर दुपट्टा। वो इन कपड़ों में बहुत ही खूबसूरत लग रही थी। गीता ने उसे गहरी नज़र से एक बार ऊपर से नीचे तक देखा फिर बेड से उठ कर साक्षी के पास आई और साक्षी का सिर पकड़ कर अपनी तरफ किया और उसके माथे पर हल्के चूम लिया।

" बहुत खूबसूरत लग रही है मेरी बच्ची। " फिर गीता ने मुस्कुरा कर कहा __" किसी की नज़र न लगे। ईश्वर हर बला से दूर रखे तुझे। "

" आप भी न बुआ। " साक्षी ने हॅसते हुए कहा __" ख़ैर छोड़िये ये बताइये आपको यहॉ अच्छा तो लगता है न ? कहीं ऐसा तो नहीं कि आप यहॉ पर इजी फील नहीं करती हैं और खुद को यहॉ मजबूरीवश रहने का सोचती हैं ?"

" अरे नहीं साक्षी। " गीता ने साक्षी का हाथ पकड़ कर उसे बेड पर बैठाने के बाद खुद भी बैठते हुए कहा __" यहॉ मुझे बहुत अच्छा लगता है। हर मुसीबत हर परेशानी से दूर हूँ यहॉ। यहॉ शान्त व साफ वातावरण मन को बेहद सुकून देता है। यहॉ केशरमाँ भौजी हैं और तू है बस इससे ज्यादा और क्या चाहिए ? पिछले कुछ दिनों में अपने कुछ अज़ीज़ों से भी मिल लिया , ऐसा लगा जैसे फिर से इस घर में वही पुराना वाला दौर लौट आया है। "

" चिन्ता मत कीजिए बुआ। " साक्षी ने कहा __" पुराना वाला समय फिर से आएगा। फिर से पहले जैसी ही खुशियॉ हमारे बीच रक्श करेंगी। बस इन खुशियों को बरबाद करने वालों का

एक बार किस्सा खत्म हो जाए। उसके बाद फिर से वही हमारा वही संसार होगा मगर एक नये संसार के रूप में। जिसमें सबके बीच सिर्फ बेपनाह प्यार होगा। जहॉ किसी घृणा अथवा किसी प्रकार की नफ़रत के लिए कोई स्थान हीं नहीं होगा। "

" क्या सच में तूने अपने माता पिता के लिए उनका अंजाम बुरा ही सोचा हुआ है ?" गीता ने पूछा __" क्या ऐसा नहीं हो सकता कि उन्हें उनके कर्मों की सज़ा भी मिल जाए और वो हमारे साथ भी रहें एक अच्छे इंसानों की तरह ?"

" ये असंभव है बुआ। " साक्षी ने कठोरता से कहा _" जो इंसान इतना ज्यादा अपने सोच और विचार से गिर जाए कि वो अपनी ही औलाद के बारे में इतना गंदा करने का सोच डाले उससे भविष्य में अच्छाई की उम्मीद हर्गिज़ नहीं करनी चाहिए। दूसरी बात , भले ही ईश्वर उनके अपराधों के लिए उन्हें माफ़ कर दे मगर मैं किसी सूरत पर उन्हें माफ़ नहीं कर सकती। उन्होंने माफ़ी के लिए कहीं पर भी कोई रास्ता नहीं छोंड़ा है। उन्होंने हर रिश्ते के लिए सिर्फ गंदा सोचा है और गंदा किया है। उन्होने अपने स्वार्थ के लिए अपने देवता जैसे भाई की हत्या की। अपनी बहन सामान छोटे भाई की पत्नी पर बुरी नज़र डाली। सबसे बड़ी बात तो उन्होंने ये की कि अपने ही बेटे के साथ अपनी पत्नी को उस काम में शामिल किया जिस काम को किसी भी जाति धर्म में उचित नहीं माना जाता बल्कि सबसे ऊँचे दर्ज़े का पाप माना जाता है। ऐसे इंसानों को माफ़ी कैसे मिल सकती है बुआ ? नहीं हर्गिज़ नहीं। ना तो मैं माफ़ करने वाली हूँ और ना ही मेरा भाई विक्रम उन घटिया लोगों को माफ़ करेगा। एक पल के लिए अगर ऐसा हो जाए कि विक्रम उन्हें माफ़ भी कर दे मगर मैं .... मैं नहीं माफ़ कर सकती। हॉ बुआ .... मेरे अंदर उनके प्रति इतना ज़हर और इतनी नफ़रत भर चुकी है कि अब ये उनकी मौ से ही दूर होगी। मुझे दुख इस बात का नहीं होगा कि मेरे मॉ बाप दुनियॉ से चले गए बल्कि मरते दम तक इस बात का मलाल रहेगा कि ऐसे गंदे इंसानों की औलाद बना कर ईश्वर ने मुझे इस धरती पर भेज दिया था। "

साक्षी की इन बातों से गीता चकित भाव से देखती रह गई उसे। उसे एहसास था कि साक्षी के अंदर इस वक्त किस तरह की भावनाओं का चक्रवात चालू था जिसके तहत वो इस तरह अपने ही मॉ बाप के लिए ऐसा बोल रही थी। गीता खुद भी यही समझती थी कि साक्षी अपनी जगह परी तरह सही है। ऐसे इंसान के मर जाने का कोई दुख या संताप नहीं हो सकता।

" मॉ बाप तो वो होते हैं बुआ जो अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देते हैं। " साक्षी दुखी भाव से कहे जा रही थी _" बाल्य अवस्था से ही अपने बच्चों के अंदर अच्छे संस्कार डालते हैं। सबके प्रति आदर व सम्मान करने की भावना के बीज बोते हैं। सबके लिए अच्छा सोचने की सीख देते हैं। कभी किसी के बारे में बुरा न सोचने का ज्ञान देते हैं। मगर मेरे मॉ बाप ने तो अपने तीनों बच्चों को बचपन से सिर्फ यही पाठ पढ़ाया था कि हवेली के अंदर रहने वाला हर व्यक्ति बुरा है। इनसे ज्यादा बात मत करना और ना ही इन्हें अपने पास आने देना। कहते हैं इंसान वही देता है जो उसके पास होता है। सच ही तो है बुआ , मेरे मॉ बाप के पास यही सब तो था अपने बच्चों को देने के लिए। वो खुद ऊँचे दर्ज़े के बुरे इंसान थे , उनके अंदर पाप और बुराईयों का भण्डार था। वही सब उन्होंने अपने बच्चों को भी दिया। ये तो समय की बात

है बुआ कि वो हमेशा एक जैसा नहीं रहता। हर चीज़ की हकीक़त कैसी होती है ये बताने के लिए समय ज़रूर आपको ऐसे मोड़ पर ले आता है जहॉ आपको हर चीज़ की असलियत का पता चल जाता है। इस लिए ये अच्छा ही हुआ कि समय मुझे ऐसे मोड़ पर ले आया। वरना मैं जीवन भर इस बात से बेख़बर रहती कि जिन लोगों के बारे में मुझे बचपन से ये पाठ पढ़ाया गया था कि ये सब बुरे लोग हैं वो वास्तव में कितने अच्छे थे और गंगा की तरह पवित्र थे। "

" हर इंसान की सोच अलग होती है साक्षी। " गीता ने गहरी सास लेते हुए कहा __" और हर इंसान की इच्छाएॅ भी अलग होती हैं। कुछ लोग अपनी इच्छा और खुशी के लिए अनैतिकता की सीमा लॉघ जाते हैं और कुछ लोग दूसरों की खुशी और भलाई के लिए अपनी हर खुशी और इच्छाओं का गला घोंट देते हैं। अनैतिकता की राह पर चलने वाले ये सोचना गवॉरा नहीं करते कि जो कर्म वो कर रहे हैं उससे जाति समाज और खुद के घर परिवार पर कितना बुरा प्रभाव पड़ेगा ? उन्हें तो बस अपनी खुशियों से मतलब होता है। जबकि इसके विपरीत अच्छे इंसान अपने अच्छे कर्मों से आदर्श के नये नये कीर्तिमान स्थापित करते हैं। ख़ैर छोंड़ इन बातों को और ये बता कि आगे का क्या सोचा है ?"

" सोचना क्या है बुआ ?" साक्षी ने कहा __" मेरा भाई मुझसे कह गया है कि मैं उसके वापस आने का इन्तज़ार करू । उसके बाद हम दोनो बहन भाई इस किस्से का खात्मा करेंगे। "

" पर ये सब होगा कैसे ?" गीता ने कहा __" तुम दोनो इस काम को अकेले कैसे अंजाम तक पहुॅचाओगे ?"

" मुझे खुद पर और अपने भाई विक्रम पर पूरा भरोसा है बुआ। " साक्षी ने गर्व से कहा __" आप देखना हम दोनो कैसे इस सबको फिनिश करते हैं ? अब तो साक्षी विक्रम स्पेशल गेम होगा बुआ। मैं बस विक्रम के आने का बेसब्री से इन्तज़ार कर रही हूॅ। "

" तुम तो ऐसे कह रही हो जैसे ये सब बहुत सहज है। " गीता ने हैरानी से कहा __" जबकि मेरा तो सोच सोच कर ही दिल बुरी तरह से घबराया जा रहा है। "

" इसमें घबराने वाली क्या बात है बुआ ?" साक्षी ने स्पष्ट भाव से कहा __" सीधी और साफ बात है कि जो लोग सिर पर मौत का कफ़न बॉध कर चलते हैं वो फिर किसी चीज़ से घबराते नहीं हैं। बल्कि मौत से भी डॅट कर मुकाबला करते हैं। जहॉ तक मेरी बात है तो अब अगर मेरी जान भी मेरे भाई की सुरक्षा में चली जाए तो कोई ग़म नहीं है। बल्कि मुझे बेहद खुशी होगी कि मेरी जान मेरे ऐसे भाई की सलामती के लिए फना हो गई जिसने वास्तव में मुझे हमेशा अपनी दीदी माना और हमेशा मुझे इज्ज़त व सम्मान दिया। "

" ऐसा मत कह साक्षी। " गीता की ऑखों से ऑसू छलक पड़े , बोली ___" तुझे कुछ नहीं होगा और ख़बरदार अगर दुबारा से ऐसी फालतू की बात की तो। तू मेरी जान है मेरी बच्ची। तुझे कुछ नहीं होगा क्योंकि तू सच्चाई की राह पर चल रही है , धर्म की राह पर मुकीम है तू। अगर किसी को कुछ होगा तो वो उन्हें होगा जो इस देश समाज और परिवार के

लिए कलंक हैं। "

" ख़ैर जाने दीजिए बुआ। " साक्षी ने मानो पहलू बदला _" इन सब बातों में क्या रखा है ? होना तो वही है जो हर किसी की नियति में लिखा हुआ है। आइये खाना खाने चलते हैं। केशरमाँ काकी ने खाना तैयार कर दिया होगा। "

साक्षी की ये बात सुन कर गीता उसे कुछ देर अजीब भाव से देखती रही, फिर साक्षी के उठते ही वो भी बेड से उठ बैठी। कमरे से बाहर आकर दोनो डायनिंग हाल की तरफ बढ़ चलीं। जहॉ पर अपर्णा का भाई और सुंदर सिंह का साला बैठा इन्हीं का इन्तज़ार कर रहा था। ये दोनो भी वहीं रखी एक एक कुर्सियों पर बैठ गई। कुछ ही देर में केशरमाँ ने सबको खाना परोसा। खाना खाने के बाद सब अपने अपने कमरों की तरफ सोने के लिए चले गए।

६२

सुबह हुई!

उस वक्त सुबह के लगभग साढ़े आठ बज रहे थे जब रास्तों पर धूल उड़ाती हुई कई सारी गाड़ियॉ आकर हवेली के बाहर एक एक करके रुकीं। वो तीन गाड़ियॉ थी। एक सफारी , एक इनोवा , और एक आई ट्वेंटी थी। तीनों गाड़ियों के रुकते ही सभी गाड़ियों के दरवाजे एक साथ खुले और खुल चुके दरवाजे से एक एक दो दो करके कई सारे आदमी गाड़ियों से बाहर निकले।

बाहर आते ही वो सब एक साथ हवेली के उस हिस्से के मुख्य दरवाजे की तरफ बढ़े जो हिस्सा सत्यम सिंह का था। इस वक्त दरवाजा बंद था। आस पास कुछ ऐसे आदमी भी बाहर मौजूद थे जिनके हाथो में बंदूख, रिवाल्वर आदि हथियार थे। गाड़ियों से आने वाले सभी लोग मुख्य दरवाजे की तरफ मुड़ चले। आस पास खड़े सत्यम सिंह के बंदूखधारी आदमियों के चेहरों पर अजीब से भाव उभरे। अजीब से इस लिए क्यों कि गाड़ियों से आने वाले सभी आदमी एकदम दनदनाते हुए मुख्य दरवाजे की तरफ बढ़ चले थे।

आस पास खड़े बंदूखधारी आदमी उन लोगों की इस धृष्टता को देख उन्हें रोंकने के लिए उन लोगों के सामने आ गए और उन्हें रोंक कर उनसे पूछने लगे कि वो कौन लोग हैं और इस तरह कैसे बिना कुछ पूछे अंदर की तरफ बढ़े चले जा रहे हैं? किन्तु बंदूखधारियों के पूछने पर उन लोगों ने कोई जवाब नहीं दिया बल्कि अपने अपने कोट की सामने वाली पॉकेट से अपना अपना आई कार्ड निकाल कर बंदूखधारियों को दिखा दिया। बंदूखधारी ये देख कर बुरी तरह चौंके कि वो सब सी. बी.आई की स्पेशल ऑफीसर थे। बंदूखधारियों को बिलकुल भी समझ न आया कि वो लोग यहॉ क्यों आए हैं और वो खुद अब क्या करें? उधर आई कार्ड दिखाने के बाद वो लोग मुख्य दरवाजे के पास पहुँच गए और दरवाजे पर लगी कुण्डी को ज़ोर से बजा दिया।

कुछ ही देर में दरवाजा खुला। दरवाजे पर नाइट गाउन पहने सोनिया नज़र आई। अपने सामने इतने सारे अजनबी आदमियों को देख कर वो चौंकी। उसके चेहरे पर ना समझने वाले भाव उभरे।

" जी कहिए। " फिर उसने अजीब भाव से कहा __" आप लोग कौन हैं ? और यहॉ किस काम से आए हैं ?"

" हमें अंदर तो आने दीजिए मैडम। " एक आदमी ने ज़रा शालीन भाव से कहा __" मिस्टर सत्यम सिंह से मिलना है। "

" पर आप लोग हैं कौन ?" सोनिया ने दरवाजे पर खड़े खड़े ही पूछा __" ये तो बताया नहीं आपने। "

" सब पता चल जाएगा मैडम। " उस आदमी ने कहा _" हम सब मिस्टर सत्यम सिंह के गहरे दोस्त यार हैं। प्लीज , उन्हें कहिए कि हम उनसे मिलने आए हैं। "

सोनिया उस आदमी की बात सुन कर देखती रह गई उसे। उसके चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे उसे यकीन न आ रहा हो कि ये लोग सत्यम सिंह के दोस्त हो सकते हैं। कुछ देर उस आदमी को देखते रहने के बाद जाने क्या सोच कर सोनिया दरवाजे से हट कर पलटी और अंदर की तरफ बढ़ती चली गई। उसके पीचे पीछे ये सब भी ओल दिये।

कुछ ही देर में सोनिया के पीछे पीछे ये सब ड्राइंग रूम में पहुॅच गए। सोनिया ने सोफों की तरफ हाथ का इशारा कर उन लोगों को बैठने के लिए कहा। सोनिया के इस प्रकार कहने पर वो सब लोग सोफों पर बैठ गए जबकि सोनिया अंदर कमरे की तरफ बढ़ गई।

थोड़ी ही देर में सत्यम सिंह ड्राइंग रूम में दाखिल हुआ। ड्राइंग रूम में सोफों पर बैठे इतने सारे लोगों पर नज़र पड़ते ही उसके चेहरे पर अजनबीयत के भाव उभरे। जैसे पहचानने की कोशिश कर रहा हो कि ये सब लोग कौन हैं?

" माफ़ करना मगर हमने आप लोगों को पहचाना नहीं। " फिर उसने एक अलग सोफे पर बैठते हुए कहा।

" इसके पहले कभी हम लोग आपसे मिले ही कहाॅ थे जो आप हमें पहचान लेते। " एक कोटधारी ने अजीब भाव से कहा __" ख़ैर , आपकी जानकारी के लिए हम बता दें कि हम सब सी. बी.आई से हैं और यहाॅ आपको चरस , अफीम , और ड्रग्स का धंधा करने के जुर्म में गिरफ्तार करने आए हैं। हमारे पास आपके खिलाफ़ स्पेशल वारंट भी है। इस लिए आप बिना कुछ सवाल जवाब किये हमारे साथ चलने का कस्ट करें। "

सी. बी.आई के उस आदमी के मुख से ये बात सुन कर सत्यम सिंह के पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई। बुत सा बन गय था वह। मुख से कोई बोल न फूटा। जिस्म के सभी मसामों ने पल भर में ढेर सारा पसीना उगल दिया। चेहरा इस तरह नज़र आने लगा था जैसे धमनियों में दौड़ते हुए लहू की एक बूॅद भी शेष न बची हो। एकदम फक्क पड़ गया था।

" यॅे ... यॅे ... कॅ ... क्या बकवास कर रहे हैं आप ?" फिर सहसा बदहवाश से सत्यम सिंह ने जैसे खुद को संभाला था और फिर वापस ठाकुरों वाले रौब में आते हुए बोला था। ये अलग बात है कि उसके उस रौब में रत्ती भर भी रौब दिखाई न दिया , बोला __" आप होश में तो हैं न ? आप जानते हैं कि आप किसके सामने क्या बकवास कर रहे हैं ?"

" हम तो पूरी तरह होशो हवाश में ही हैं मिस्टर सत्यम सिंह। " सी.बी.आई. ऑफिसर ने कहा __" किन्तु आपके होशो हवाश ज़रूर कहीं खो गए से नज़र आने लगे हैं। रही बात आपकी कि आप कौन हैं और हम आपसे क्या कह रहे हैं तो इससे कोई फर्क़ नहीं पड़ता। क्योंकि हम कानून के नुमाइंदे हैं। हमारे लिए छोटे बड़े सब एक जैसे ही होते हैं। ख़ैर , हमने आपके शहर वाले मकान से भारी मात्रा में ग़ैर कानूनी ज़खीरा बरामद किया है। सारी जॉच

पड़ताल के बाद जब हमें ये पता चला कि वो सब आपकी संमत्ति है तो हम कोर्ट से स्पेशल वारंट लेकर आपको यहॉ गिरफ्तार करने चले आए। इस लिए अब आपके पास हमारे साथ चलने के सिवा दूसरा कोई चारा नहीं है। "

ऑफीसर की ये बात सुन कर एक बार फिर से सत्यम सिंह की हालत ख़राब हो गई। वो सोच भी नहीं सकता था कि उसके साथ ऐसा भी कभी हो सकता है। उसे तुरंत ही फैक्ट्री में लगी आग का वाक्या याद आया जब तहखाने से उसका ग़ैर कानूनी सामान गायब होने का पता चला था उसे। वो ये भी समझ गया था कि ये सब विक्रम ने ही किया था। सोनिया ने इस बात का अंदेशा भी व्यक्त किया था कि किसी ऐसे मौके पर वो ये सब कानून के हवाले कर सकता है जबकि हम कुछ भी करने की स्थिति में ही न रह जाएॅगे। मतलब साफ था कि सोनिया की कही बात आज सच हो गई थी। यानी विक्रम ने उस सारे सामान को उसके शहर वाले मकान में रखा और फिर इसकी सूचना सी.बी.आई. को दे दी और अब सी.बी.आई. वाले सत्यम सिंह के पास स्पेशल वारंट लेकर आ गए थे। सत्यम सिंह खुद भी सरकारी वकील रह चुका था इस लिए जानता था कि ऐसे मौके पर वह कुछ भी नहीं कर सकता था। कोई दूसरा जुर्म होता तो कदाचित वो कोई जुगाड़ लगा कर अपनी ज़मानत करवा भी लेता मगर यहॉ तो जुर्म ही संगीन था।

" किस सोच में डूब गए मिस्टर सत्यम सिंह ?" तभी उसे सोचो में गुम देख ऑफीसर ने कहा __" आप अपनी मर्ज़ी से हमारे साथ चलेंगे तो बेहतर होगा , वरना आप जानते है कि हमारे पास बहुत से तरीके हैं आपको यहॉ से ले चलने के लिए। "

" ऑफीसर। " सहसा सत्यम सिंह ने अजीब भाव से कहा __" ये सब झूॅठ हैं। हम ऐसा कोई काम नहीं करते जिसे कानून की नज़र में जुर्म कहा जाए। ये यकीनन किसी की साजिश है हमें फसाने की। हॉ ऑफीसर , ये साजिश ही है। काफी समय से हमारा शहर वाला मकान खाली पड़ा है इसलिए संभव है कि किसी ने ये सब गैर कानूनी चीज़ें वहॉ पर छुपा कर रखी रही होंगी। हमारा इस सबसे कीई लेना देना नहीं है। "

" सच और झूठ का फैसला तो अब अदालत ही करेगी मिस्टर सत्यम सिंह। " ऑफिसर ने कहा __" हमारा काम तो बस इतना है कि प्राप्त सबूतों के आधार पर आपको गिरफ्तार कर अदालत के समक्ष खड़ा कर दें। इस लिए अब आपकी कोई दलील हमारे सामने चलने वाली है। "

अभी सत्यम सिंह कुछ कहने ही वाला था कि तभी अंदर से सोनिया और जयदीप आकर वहीं पर खड़े हो गए। दोनो के चेहरों पर हल्दी पुती हुई थी। मतलब साफ था कि यहॉ की सारी वार्तालाप उन दोनो ने सुन ली थी।

" ये सब क्या है डैड ?" जयदीप ने अंजान बनते हुए पूछा __" ये कौन लोग हैं और यहॉ किस लिए आए हैं ?"

" ये सब सी.बी.आई. से हैं बेटे। " सत्यम सिंह ने बुझे मन से कहा __" और ये हमे गिरफ्तार

करने आए हैं। इनका कहना है कि हमारे शहर वाले मकान से इन्होंने भारी मात्रा में चरस अफीम ड्रग्स आदि चीज़ें बरामद की हैं। "

" व्हाऽऽट ??" जयदीप ने चौंकते हुए कहा __" ये आप क्या कह रहे हैं डैड ? भला ऐसा कैसे हो सकता है ? हमारे शहर वाले मकान में वो सब चीज़ें कहॉ से आ गई ?"

" मैं तो पहले ही कहती थी कि तुम शहर वाले उस मकान को बेंच दो। " सोनिया ने जाने क्या सोच कर ये बात कही थी , बोली __" मगर मेरी सुनते कहॉ हो तुम ? अब देख लो इसका अंजाम। जाने कब से खाली पड़ा था वह। आज कल किसी का क्या भरोसा कि वो मकान के अंदर आकर क्या क्या खुराफात करने लग जाएॅ। "

" अरे तो भला हमें क्या पता था सोनिया कि ऐसा भी कोई कर सकता है ?" सत्यम सिंह ने सोनिया की चाल को बखूबी समझते हुए कहा __" अगर पता होता तो हम उस मकान की देख रेख के लिए कोई आदमी रख देते न। "

" किसने किया होगा ये सब ?" सोनिया ने कहा __" भला हमसे किसी की ऐसी क्या दुश्मनी हो सकती है जिसके तहत उसने हमारे साथ इतना बड़ा काण्ड कर दिया ?"

" मिस्टर सत्यम सिंह। " सहसा ऑफिसर ने हस्तक्षेप करते हुए कहा __" ये सब बातें आप बाद में सोचिएगा। इस वक्त आप हमारे साथ चलने का कस्ट करें प्लीज़। "

" अरे ऐसे कैसे ले जाएॅगे आप डैड को ?" सहसा जयदीप आवेशयुक्त भाव से बोल पड़ा __" मेरे डैड बिलकुल बेगुनाह हैं। आप इन्हें ऐसे कहीं नहीं ले जा सकते। ये तो हद ही हो गई कि करे कोई और भरे कोई और। "

" तुम शान्त हो जाओ बेटे। " सत्यम सिंह ने अपने कूढ़मगज बेटे की बातों पर मन ही मन कुढ़ते हुए बोला __" बात चाहे जो भी हो लेकिन हमें इनके साथ जाना ही पड़ेगा। ये सब कानून के रखवाले हैं। दूसरी बात इन्हें हमारे मकान से वो सब चीज़ें मिली हैं इस लिए पहली नज़र में हर कोई यही समझेगा और कहेगा कि वो सब चीज़ें हमारी हैं। यानी हम ग़ैर कानूनी धंधा भी करते हैं। दूसरा व्यक्ति ये नहीं सोचेगा कि कोई अन्य व्यक्ति ये सब चीज़ें हमारे मकान में रख कर हमें फॅसा भी सकता है। अतः मौजूदा हालात में हमें कानून का हर कहा मानना पड़ेगा और उसका साथ देना पड़ेगा। तुम फिक्र मत करो बेटे , ये हमें ले जाकर हमसे इस सबके बारे में पूॅछताछ करेंगे। इस सबके लिए हमें तभी सज़ा मिलेगी जब ये साबित हो जाएगा कि वो सब चीज़ें वास्तव में हमारी ही हैं या हम कोई ग़ैर कानूनी धंधा भी करते हैं। "

सत्यम सिंह की बात सुन कर जयदीप कुछ बोल न सका। सोनिया ने भी कुछ न कहा। कदाचित वो खुद भी सत्यम सिंह की इस बात से सहमत थी। दूसरी बात, वो तो जानती ही थी कि वो सब चीज़ें सच में सत्यम सिंह की ही हैं। इस लिए ये सब सोच कर और इसके अंजाम का सोच कर वो अंदर ही अंदर बुरी तरह घबराए भी जा रही थी। वो अच्छी तरह जानती थी कि ऐसे मामले में कानून की गिरफ्त से बचना असंभव नहीं तो नामुमकिन ज़रूर था।

इधर सत्यम सिंह के मन में भी यही सब चल रहा था। उसे भी एहसास था कि इससे बचना बहुत मुश्किल काम है। इस लिए वो कोई न कोई जुगाड़ लगाने भी सोच रहा था। मगर चूँकि उसके पुराने कानूनी कनेक्शन पहले ही खत्म हो चुके थे इस लिए वो कुछ कर पाने की हालत में नहीं था। दूसरी सबसे बड़ी बात ये थी कि उसे इस बात का एहसास हो चुका था कि अगर किसी तरह वो पुलिस कमिश्नर अथवा प्रदेश के मंत्री को अपने हक़ में कर भी ले तो तब भी बात अपने पक्ष में नहीं होनी थी। क्योंकि उसने देखा था कि उसके साथ घटी पिछली सभी घटनाओं में ऐसा हुआ था कि ऊपर से ही सख्त आदेश मिला था।

सत्यम सिंह के पसीने छूट रहे थे मगर उसके दिमाग़ में कोई बेहतर जुगाड़ आ नहीं रहा था। वक्त और हालात ने अचानक ही इस तरह से अपना रंग बदल लिया था कि उसको कुछ करने लायक छोंड़ा ही नहीं था। उसने कल्पना तक न की थी कि वो इतना बेबस व लाचार हो जाएगा और इतनी आसानी से कानून की चपेट में आ जाएगा।

" तो चलें मिस्टर सत्यम सिंह ?" सहसा ड्राइंग रूम में छाए सन्नाटे को भेदते हुए उस ऑफिसर ने कहा _" अगर आपको ये लगता है कि ये सब किसी ने आपको फँसाने के उद्देश्य से किया है और इस सबमें आपका कोई हाथ नहीं है तो फिक्र मत कीजिए। हम सच्चाई का पता लगा लेंगे। किन्तु उससे पहले आपको हमारे साथ चलना ही पड़ेगा और तहकीक़ात में हमारा सहयोग करना पड़ेगा। "

उस ऑफिसर के इतना कहते ही सत्यम सिंह ने गहरी सास ली और फिर सोफे से उठ खड़ा हुआ। इस वक्त उसके बदन पर नाइट ड्रेस ही था इस लिए उसने ऑफिसर से ड्रेस बदल लेने की परमीशन माँगी। ऑफिसर ने परमीशन दे दी। परमीशन मिलते ही सत्यम सिंह कमरे की तरफ बढ़ गया। उसके जाते ही ऑफिसर ने एक अन्य ऑफिसर की तरफ देख कर ऑखों से कुछ इशारा किया। ऑफिसर का इशारा समझ कर दूसरा ऑफिसर तुरंत ही सत्यम सिंह के पीछे कमरे की तरफ बढ़ गया। मतलब साफ था कि ऑफिसर को इस बात का अंदेशा था कि अंदर कमरे सत्यम सिंह कहीं फोन पर किसी से कोई बात वगैरा न करने लगे। जबकि मौजूदा हालात में ऐसा करना हर्गिज़ भी जायज़ बात न थी।

कुछ ही देर में ऑफिसर के साथ ही सत्यम सिंह कमरे से आता दिखाई दिया। उसके आते ही सभी लोग सोफों पर से उठे और सत्यम सिंह के साथ ही बाहर आ गए। जबकि पीछे बुत बने सत्यम सिंह की बीवी और बेटा खड़े रह गए थे। फिर जैसे सोनिया को होश आया। वो एकदम से तेज़ क़दमों के साथ बाहर की तरफ भागते हुए गई। जब वो बाहर आई तो उसने देखा कि सी.बी.आई. के सभी ऑफिसर अपनी अपनी गाड़ियों में बैठ रहे थे। एक अन्य गाड़ी की पिछली सीट पर सत्यम सिंह को बिठाया जा रहा था, और उसके बाद उसके बगल से ही एक अन्य ऑफिसर बैठ गया था।

सोनिया के देखते ही देखते सी.बी.आई. वालों का वो क़ाफिला सत्यम सिंह को साथ लिए हवेली से दूर चला गया। सोनिया को ऐसा महसूस हुआ जैसे उसकी मुकम्मल दुनियाँ ही नेस्तनाबूत हो गई हो। इस एहसास के साथ ही सोनिया की ऑखें छलक पड़ीं और फिर जैसे

उसके जज़्बात उसके काबू में रह सके। वो दरवाजे पर खड़ी खड़ी ही फूट फूट कर रो पड़ी। तभी उसके पीछे जयदीप नमूदार हुआ और अपनी रोती हुई माँ को उसके कंधे से पकड़ कर अपनी तरफ घुमाया और फिर उसे अपने सीने से लगा लिया।

उधर साक्षी के फार्महाउस पर भी सुबह हो गई थी। अपने कमरे के अटैच बाथरूम में नहाने के बाद साक्षी कपड़े पहन रही थी जब उसके कमरे का दरवाजा बाहर से कुण्डी के दवारा बजाया गया था। साक्षी ने पूछा कौन है तो बाहर से गीता की आवाज़ आई थी कि मैं हूँ बेटा जल्दी से दरवाज़ा खोलो। बस, उसके बाद साक्षी ने आनन फानन में अपने कपड़े पहने और फिर जाकर कमरे का दरवाज़ा खोला। दरवाज़ा खुलते ही गीता बुवा पर नज़र पड़ी तो वह हल्के से चौंकी।

" क्या बात है बुआ ?" साक्षी ने शशंक भाव से पूछा _" आप इस तरह ? सब ठीक तो है न ?"

" ये ले। " गीता ने जल्दी से अपना दाहिना हाथ साक्षी की तरफ बढ़ाया __" ये अख़बार पढ़। इसमें ऐसी ख़बर छपी है छिसे पढ़ कर तेरे होश न उड़ जाएँ तो कहना। "

" अच्छा। " साक्षी ने अख़बार अपने हाथ में लेते हुए कहा __" भला ऐसी क्या ख़बर छपी है इस अख़बार में जिसे पढ़ने पर मेरे होश ही उड़ जाएँगे ?"

" तू पढ़ तो सही। " गीता कहने के साथ ही दरवाजे के अंदर साक्षी को खींचते हुए ले आई , बोली __" बताने में वो बात नहीं होगी जितना कि खुद ख़बर पढ़ने से होगी। "

गीता, साक्षी को खींचते हुए बेड के क़रीब आई और उसमें साक्षी को बैठा कर खुद भी बैठ गई और साक्षी के चेहरे के भावों को बारीकी से देखने लगी। साक्षी ने अख़बार की फ्रंट पेज़ पर छपी ख़बर पर अपनी दृष्टि डाली और ख़बर की हेड लाईन पढ़ते ही वो बुरी तरह उछल पड़ी। अख़बार में छपी ख़बर कुछ इस प्रकार थी।

शहर के मशहूर कपड़ा ब्यापारी सत्य म सिंह के मकान से करोड़ों का ग़ैर कानूनी सामान बरामद

(रामगं ज *):* सोनपु र के रहने वाले ठाकुर सत्य म सिंह भाट ी वल्द देवेंद् र सिंह भाट ी जो कि एक मशहूर कपड़ा ब्यापारी हैं उनके रामगं ज स्थित मकान पर कल शाम को सी.बी.आई . वालों ने छापा मारा। मकान के अंदर से भारी मात्रा में चरस अफीम ड्रग्स आदि जानलेवा चीज़ें सी.बी.आई . के हाथ लगी। ग़ौरतलब बात ये है कि रामगं ज स्थित ठाकुर सत्य म सिंह का वो मकान कुछ समय से खाली पड़ा थ ा , इस लिए ये स्पष्ट रूप से नहीं कहा जा सकता कि ग़ैर कानूनी चीज़ों का इतना बड़ा ज़खीरा उनके मकान में कहाँ से आ गय ा *?* ऐसा इस लिए क्योंकि ठाकुर सत्य म सिंह जैसे मशहूर कारोबारी से ऐसे संगीन धंधे की बात सोची नहीं जा सकती जो कि जुर्म कहलाता है। इस लिए संभव है कि ये सब उनके किसी दुश्मन की सोची समझी साजिश का ही नतीजा हो। ख़ै र , अब देखना ये होगा कि सी.बी.आई . वालों की जाँच पड़ता ल से क्या सच्चाई सामने आती ह ै *?* अब ये तो निश्चित बात है कि ठाकुर सत्य म सिंह के मकान से मिले इतने सारे ग़ार कानूनी सामान के तहत सी.बी.आई . वाले बहुत जल्द ठाकुर सत्य म सिंह को अपनी हिरासत में लेकर इस बारे में पूछताँछ करेंगे। किन्तु अगर सी.बी.आई . की जाँच में ये बात सामने आई कि वो सब ग़ैर

कानूनी सामान ठाकुर सत्य म सिंह का ही है तो यकीनन ठाकुर सत्य म सिंह को इस संगीन जुर्म में कानून के द्वारा सख् त से सख् त सज़ा मिलेगी।

अख़बार में छपी इस ख़बर को पढ़ कर यकीनन साक्षी के होश उड़ ही गए थे। उसके दिमाग़ की बत्ती बड़ी तेज़ी से जली थी और साथ ही उसे विक्रम की वो बात याद आई जब उसने रामगंज रेलवे स्टेशन पर साक्षी से कहा था कि बहुत जल्द सत्यम सिंह को एक झटका लगने वाला है। ये भी कि उसकी सेफ्टी के लिए वह भी ऐसा करेगा कि सत्यम सिंह या उसका कोई आदमी उस तक पहुॅच ही नहीं पाएगा।

" इसका मतलब तो यही हुआ बुआ कि अब तक डैड को सी.बी.आई. वाले गिरफ्तार कर लिए होंगे। " साक्षी ने गहरी सास लेते हुए कहा __" और अगर ऐसा हो गया होगा तो यकीनन डैड लंबे से नप जाएॅगे। एक ही झटके में वो कानून की ऐसी चपेट में आ जाएॅगे जहॉ से निकल पाना असंभव नहीं तो नामुमकिन ज़रूर है। "

" ये तो अच्छा ही हुआ न साक्षी। " गीता ने कहा __" बुरे काम करने का ये अंजाम तो होना ही था। लेकिन सबसे बड़ा सवाल ये है कि ये सब हुआ कैसे ?

" ये सब विक्रम की वजह से हुआ है बुआ। " साक्षी ने बताया __" उसने कल रेलवे स्टेशन में मुझसे कहा था कि वो कुछ ऐसा करेगा जिससे डैड मुझ तक पहुॅच ही नहीं पाएॅगे। ये तो सच है बुआ कि डैड ग़ैर कानूनी धंधा करते थे और फैक्ट्री में मौजूद तहखाने में उनका ये सब ग़ैर कानूनी सामान भी था जिसे विक्रम ने ही गायब किया था। ऐसा उसने इस लिए किया था ताकि वह उस सामान के आधार पर जब चाहे डैड को कानून की गिरफ्त में डलवा सके। इस लिए उसने ऐसा ही किया है बुआ लेकिन मुझे लगता है कि ये सब महज डैड को डराने और मौजूदा हालात से निपटने के लिए विक्रम ने किया है। क्योंकि विक्रम उन्हें अपने हाथो से उनके अपराधों की सज़ा देगा , नाकि कानून द्वारा उन्हें किसी तरह की सज़ा दिलवाएगा। "

" लेकिन बेटा। " गीता ने तर्क सा दिया __" कानून की चपेट में आने के बाद बड़े भैया भला कानून की गिरफ्त से कैसे बाहर आएॅगे और फिर कैसे विक्रम उन्हें अपने हाथो से सज़ा देगा ?"

" उसका भी इंतजाम विक्रम ने किया ही होगा बुआ। " साक्षी ने कहा __" आज के इस अख़बार में छपी ख़बर के अनुसार ग़ैर कानूनी सामान डैड के मकान से बरामद ज़रूर हुआ है लेकिन ये भी बताया गया है कि चूॅकि रामगंज स्थित मकान काफी समय से खाली था इस लिए संभव है कि डैड को फॅसाने के लिए उनके किसी दुश्मन ने ऐसा किया होगा। इस लिए सी.बी.आई. वाले इस बारे में सिर्फ पूॅछताछ करेंगे। अब आप खुद समझ सकती हैं बुआ कि विक्रम ने केस को इतना कमज़ोर क्यों बनाया हुआ है कि डैड कानून की गिरफ्त से मामूली पूछताछ के बाद छूट जाएॅ?। "

" लेकिन ये सवाल तो अपनी जगह खड़ा ही रहेगा न साक्षी कि बड़े भैया के मकान में वो ग़ैर कानूनी सामान कैसे पाया गया ?" गीता ने कहा __" इस लिए इस सवाल के साल्व

हुए बिना बड़े भैया इस केस से कैसे छूट जाएँगे भला ?"

" बहुत आसान है बुआ। " साक्षी ने कहा __" पैसों के लिए आजकल लोग बहुत कुछ कर जाते हैं। कहने का मतलब ये कि वो किसी ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ लेंगे जो पैसों के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाए। वो व्यक्ति इस बात को खुद स्वीकार करेगा कि वो सारा ग़ैर कानूनी सामान उसका खुद का है और उसने डैड के मकान में उसे इस लिये छुपाया हुआ था क्योंकि वो मकान काफी समय से खाली था तथा उसके लिए एक सुरक्षित जगह की तरह था। "

" चलो ये तो मान लिया कि ऐसा हो सकता है। " गीता ने मानो तर्क किया __" किन्तु सबसे बड़ा सवाल ये ये है कि तुम्हारे डैड ऐसे किसी व्यक्ति को लाएँगे कहाँ से ? जबकि वो खुद ही सी.बी.आई. वालों की निगरानी में रहेंगे और उनके पास किसी से संपर्क स्थापित करने के लिए कीई ज़रिया ही नहीं होगा। "

" सवाल बहुत अच्छा है बुआ। " साक्षी ने कुछ सोचते हुए कहा _" किन्तु अगर हम ये सोच कर देखें कि ये सब विक्रम का ही किया धरा है तो ये भी निश्चित बात है कि वो खुद ही ऐसा कुछ करेगा जिससे डैड सी.बी.आई. या कानून के चंगुल से बाहर आ जाएँ। "

" ऐसे मामलों में कानून के चंगुल से किसी का बाहर आ जाना नामुमकिन तो नहीं होता साक्षी। " गीता ने गहरी सास लेते हुए कहा __" किन्तु अगर तू ये कह रही है कि विक्रम तेरे डैड को किसी हैरतअंगेज कारनामे की वजह से बाहर निकाल ही लेगा तो सवाल ये उठता है कि ऐसा क्या करेगा विक्रम ? दूसरी बात , जब उसे कानून की गिरफ्त से निकाल ही लेना है तो फिर तेरे डैड की कानून की चपेट में लाने का मतलब ही क्या था ?"

" खजूर पर चढ़े इंसान को ज़मीन पर पटकने का मकसद था उसका। " साक्षी ने कहा __" वो कहते हैं न कि जब तक ऊँट पहाड़ के सामने नहीं आता तब तक उसे यही लगता है कि उससे ऊँचा कोई है ही नहीं। यही हाल मेरे डैड का था बुआ। विक्रम का मकसद कदाचित यही है कि वो डैड को एहसास दिलाना चाहता है कि इस दुनियाँ में उनसे भी बड़े बड़े ख़लीफा मौजूद हैं। वो चाहे तो उन्हें एक पल में चुटकियों में मसल सकता है। आज के इस वाक्ये के बाद संभव है कि डैड की विचारधारा में कुछ तो परिवर्तन ज़रूर आया होगा। "

" ये तो सच कहा तूने। " गीता ने कहा __" अगर सी.बी.आई. वाले बड़े भैया को अपने साथ ले गए होंगे तो ये सच है कि बड़े भैया को आज आटे दाल के भाव का पता चल जाएगा। "

" हाँ बुआ। " साक्षी ने कहा __" विक्रम को मौजूदा हालातों का बखूबी एहसास था। कदाचित उसे ये अंदेशा था कि इतनी नाकामियों के बाद डैड अब खुद मैदान में उतरेंगे और हमें खोज कर हमारा क्रिया कर्म करेंगे। इसी लिए विक्रम ने ये क़दम उठाया कि जब डैड ही कानून की गिरफ़्त में रहेंगे तो भला हम पर किसी तरह का उनकी तरफ से कोई संकट आएगा ही

कैसे ?"

" तो इसका मतलब ये हुआ कि बड़े भैया को विक्रम ने कानून की गिरफ्त में फॅसाया। " गीता को जैसे सारी बात समझ में आ गई थी , बोली __" सिर्फ इस लिए कि वो तेरे डैड को एहसास दिला सके कि वो जिसे पिद्दी का शोरबा समझते हैं वो दरअसल ऐसा है कि उनको छठी का दूध याद दिला सकता है। ख़ैर , इन बातों से ये भी एक बात समझ में आती है कि विक्रम ने तुझको सेफ करने के लिए भी तेरे डैड को कुछ दिनों के लिए कानून की गिरफ्त में फॅसाया है। दो दिन बाद तो वो खुद ही यहॉ आ जाएगा और संभव है ऐसा कुछ कर दे जिससे उसका शिकार कानून की चपेट से बाहर आ जाए। "

" यू आर अब्सोल्यूटली राइट बुआ। " साक्षी ने कहा __" विक्रम का यकीनन यही प्लान हो सकता है। ख़ैर , अब तो इस बात की फिक्र करने की कोई ज़रूरत नहीं है कि डैड या उनके किसी आदमी से हमें कोई ख़तरा है। "

" लेकिन एक बात सोचने वाली है साक्षी। " गीता ने सोचने वाले भाव से चहा __" तेरे डैड की इस गिरफ्तारी से तेरी मॉ और तेरे भाई पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा होगा। सोनिया भाभी ने खुद भी वकालत की पढ़ाई की है इस लिए संभव है कि वो तेरे डैड को कानून की गिरफ्त से निकालने का कोई जुगाड़ लगाएॅ। "

" कोई फायदा नहीं होने वाला बुआ। " साक्षी ने कहा _" जिसे जितना ज़ोर लगाना है लगा ले मगर हाथ कुछ नहीं आएगा। क्योंकि एक तो मामला ही इतना संगीन है दूसरे इस सबमें विक्रम का हाथ है। उसकी पहुॅच काफी लम्बी है , इस लिए उसकी पहुॅच के आगे इन लोगों का कोई भी पैंतरा काम नहीं करने वाला। ये तो पक्की बात है कि होगा वहीं जो विक्रम चाहेगा। "

" हॉ ये तो है। " गीता ने कहा __" ख़ैर देखते हैं क्या होता है ? वैसे इस बारे में क्या अभी तक तुमने विक्रम से बात नहीं की ??"

" अभी तो नहीं की बुआ। " साक्षी ने कहा __" पर अब जल्द ही उससे बात करू गी। वास्तव में उसने बड़ा हैरतअंगेज काम किया है। मुझे तो उससे ये उम्मीद ही नहीं थी। "

" वक्त और हालात एक इंसान को कहॉ से कहॉ पहुॅचा देते हैं और उससे क्या क्या करवा देते हैं ये सब उस तरह का समय आने पर ही पता चलता है। " गीता ने जाने क्या सोच कर कहा __" सोचने वाली बात है कि विक्रम जो एक बेहद ही सीधा सादा लड़का हुआ करता था आज वो इतना जहीन तथा इतना शातिर दिमाग़ का भी हो गया है। "

" इसमें उसकी कोई ग़लती नहीं है बुआ। " साक्षी ने भारी मन से कहा __" उसे इस तरह का बनाने वाले भी मेरे ही पैरेंट्स हैं। इंसान अपनों का हर कहा मानता है और उसका जुल्म भी सह लेता है लेकिन उसकी भी एक समय सीमा होती है। इतना कुछ जिसके साथ हुआ हो वो ऐसा भी न बन सके तो फिर कैसा इंसान है वो ?"

गीता, साक्षी की बात सुन कर उसे देखती रह गई। कुछ देर और ऐसी ही बातों के बाद वो दोनो ही कमरे से बाहर आ गईं और नीचे नास्ते की टेबल पर आकर बैठ गईं। जहॉ पर अपर्णा का भाई हेमराज पहले से ही मौजूद था। साक्षी अपनी गीता बुआ के साथ अलग अलग कुर्सियों पर बैठी ही थी कि उसका आई फोन बज उठा। उसने मोबाइल की स्क्रीन पर फ्लैश कर रहे "मॉम" नाम को देखा तो उसके होठों पर अनायास ही नफ़रत व घृणा से भरी मुस्कान फैल गई। कुछ सेकण्ड तक वो मोबाइल की स्क्रीन को देखती रही फिर उसने आ रही काल को कट कर दिया। काल कट करते वक्त उसके चेहरे पर बेहद कठोरता के भाव थे।

६३

उधर मुंबई में!

सुबह हुई !

सत्यम सिंह व सोनिया की दूसरी बेटी मानुषी की ऑखें गहरी नींद से खुल तो गईं थी मगर वो खुद बेड से न उठी थी अभी तक। हॅसती मुस्कुराती हुई रहने वाली मासूम सी मानुषी एकाएक ही जैसे बेहद गुमसुम सी रहने लगी थी। कॉलेज में हुई उस घटना को आज हप्ता से ज्यादा दिन गुज़र गया था किन्तु उस घटना की ताज़गी आज भी उसके ज़हन में बनी हुई थी। उसे अपनी इज्ज़त के तार तार हो जाने का इतना दुख न होता जितना आज उसे इस बात पर हो रहा था कि उसका चचेरा भाई उसे नफ़रत और घृणा की दृष्टि से देख कर इस तरह उसके सामने से मुह फेर कर चला गया था जैसे वो उसे पहचानता ही न था। मानुषी और विक्रम दोनो ही हम उमर थे किन्तु मानुषी का बिहैवियर भी साक्षी की तरह रहा था विक्रम के साथ।

उस दिन की घटना ने मानुषी के मुकम्मल वजूद को हिला कर रख दिया था। उसने इस घटना के बारे में अपने खुद के पैरेंट्स को बिलकुल भी नहीं बताया था। मौसी की लड़की को बस बताया था किन्तु उसने उससे भी वादा ले लिया था कि वो उसके घरवालों को ये बात न बताए कभी।

उस दिन की घटना के बाद पहले तो दो दिन मानुषी कॉलेज नहीं गई थी किन्तु फिर तीसरे दिन से जाने लगी थी। कॉलेज में हर जगह उसकी नज़रें बस अपने चचेरे भाई विक्रम को ही ढूॅढ़तीं मगर पिछले कई दिनों से उसे अपना वो चचेरा भाई कॉलेज में कहीं न दिखा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि आख़िर विक्रम कॉलेज क्यों नहीं आ रहा? कहीं ऐसा तो नहीं कि उसकी वजह से उसने ये कॉलेज ही छोंड़ दिया हो। ये सोच कर ही मानुषी की जान उसके हलक में आकर फॅस जाती। वो सोचती कि अगर विक्रम ने सच में उसकी ही वजह से कॉलेज छोंड़ दिया होगा तो ये कितनी बड़ी बात है। मतलब कि आज के समय में विक्रम उससे इतनी नफ़रत करता है कि वो उसे देखना तक गवॉरा नहीं करता। ये सब बातें मानुषी को रात दिन किसी ज़हरीले सर्प की भॉति डसती रहती थी।

" बस एक बार। " मानुषी के मुख से हर बार बस यही बात निकलती ___" सिर्फ एक बार फिर से मुझे मिल जाओ मेरे भाई। तुमसे मिल कर मैं अपने किये की माफ़ी मॉगना चाहती हूॅ। मुझे एहसास है कि मेरे भाई कि मैने बचपन से लेकर अब तक तुम्हें सिर्फ दुख दिया है। तुम्हें तरह तरह की बातों से जलील किया था। मगर एक तुम थे कि मेरी उन कड़वी बातों का कभी भी बुरा नहीं मानते थे। जबकि कोई और होता तो जीवन भर मुझे देखना तक पसंद न करता। मुझे सब कुछ अच्छी तरह से याद है भाई। मेरे मॉम डैड ने हमेशा हम भाई बहनों को यही सिखाया था कि तुम सब बुरे लोग हो इस लिए हम तुमसे दूर रहें और कभी भी किसी तरह का कोई मेल मिलाप न रखें। हम बच्चे ही तो थे भाई , जैसा माँ बाप सिखाते थे उसी को सच मान लेते थे और फिर इस सबकी आदत ही पड़ गई थी। मगर उस दिन तुमने मेरी इज्ज़त बचा

कर ये जता दिया कि तुम बुरे नहीं हो सकते। जिस तरह से तुम मुझे देख कर नफ़रत व घृणा से अपना मुह मोड़ कर चले गए थे , उससे मुझे एहसास हो चुका था कि तुमने जो किया वो एक ऊँचे दर्ज़े का कर्म था और जो मैंने अब तक किया था वो हद से भी ज्यादा निचले दर्ज़े का कर्म था। मुझे बस एक बार मिल जाओ विक्रम । मैं तुमसे अपने गुनाहों की माफ़ी माँगना चाहती हूँ। तुम जो भी सज़ा दोगे उस सज़ा को मैं खुशी खुशी कुबूल कर लूँगी। प्लीज़ विक्रम , बस एक बार मुझे मिल जाओ। तुम कॉलेज क्यों नहीं आ रहे हो ? क्या इतनी नफ़रत करते हो तुम अपनी इस बहन से कि जिस कॉलेज में मैं हूँ वहाँ तुम पढ़ ही नहीं सकते ? ऐसा मत करना मेरे भाई। वरना मैं अपनी ही नज़रों में इस क़दर गिर जाऊँगी कि फिर उठ पाना मेरे लिए असंभव हो जाएगा। "

ये सब बातें अपने आप से ही करना जैसे मानुषी की दिनचर्या में शामिल हो गया था। उसके मौसी की लड़की उसे इस बारे में बहुत समझाती मगर मानुषी पर उसकी बातों का कोई असर न होता। कॉलेज में हुई घटना से मानुषी थोड़ा गुमसुम सी रहने लगी थी। मगर इसका कारण यही था कि विक्रम कॉलेज नहीं आ रहा था। वो हर रोज़ समय पर कॉलेज पहुँच जाती और सारा दिन कॉलेज में रुकती। उसकी नज़रें हर दिन अपने भाई को तलाश करती मगर अंत में उन ऑखों में मायूसी के साथ साथ ऑसू भर आते और फिर वो दुखी भाव से घर लौट जाती। कॉलेज के बाकी स्टूडेंट्स नार्मल ही थे। उस घटना के बाद किसी ने कभी कोई टीका टिप्पणी न की थी।

कुछ देर ऐसे ही सोचो में गुम वह बेड पर पड़ी रही उसके बाद वो उठी और बाथरूम की तरफ बढ़ गई। बाथरूम में फ्रेश होने के बाद वो वापस कमरे में आई और कॉलेज के यूनीफार्म पहन कर तथा कंधे पर एक मध्यम साइज़ का बैग लेकर वो कमरे से बाहर की तरफ बढ़ी ही थी कि उसका मोबाइल बज उठा। उसने बैग के ऊपरी हिस्से की चैन खोला और अपना मोबाइल निकाल कर स्क्रीन पर नज़र आ रहे "मॉम" नाम को देखा तो उसने काल रिसीव कर मोबाइल कानों से लगा लिया।

".....। " उधर से सोनिया ने कुछ कहा।

" क्याऽऽऽ ????" मानुषी के हाथ से मोबाइल छूटते छूटते बचा था। उसके हलक से जैसे चीख सी निकल गई थी , बोली __" ये ये आप क्या कह रही हैं मॉम ? डैड को सी.बी.आई. वाले ले गए ? मगर क्यों ??? आख़िर ऐसा क्या किया है डैड ने ?"

".....। " उधर से सोनिया ने फिर कुछ कहा।

" ओह अब क्या होगा मॉम ?" सोनिया की बात सुनने के बाद मानुषी ने संजीदगी से कहा __" क्या साक्षी दीदी ने कुछ नहीं किया ? वो भी तो एक पुलिस ऑफिसर हैं ?"

".....। " उधर से सोनिया ने कुछ देर तक कुछ बात की।

" क्याऽऽ ???" मानुषी बुरी तरह उछल पड़ी ___" ये आप क्या कह रही हैं ? दीदी भला ऐसा कैसे कर सकती हैं मॉम ? नहीं नहीं , आपको और डैड को ज़रूर कोई ग़लतफहमी हुई

है। साक्षी दीदी ये सब कर ही नहीं सकती हैं। आप तो जानती हैं कि दीदी ने कभी उसकी तरफ देखना तक पसंद नहीं किया था। फिर भला आज वो कैसे उसका साथ देने लगीं ? ये तो इम्पॉसिबल है मॉम। "

".....। " उधर से सोनिया ने फिर कुछ कहा।

" मैं इस बारे में दीदी से बात करू गी मॉम। " मानुषी ने गंभीरता से कहा __" उनसे पूछूँगी कि आख़िर वो ये सब क्यों कर रही हैं ?"

".....। " उधर से सोनिया ने झट से कुछ कहा।

" क्यों नहीं पूँछ सकती मॉम ?" मानुषी ने ज़रा चौंकते हुए कहा __" आख़िर पता तो चलना ही चाहिए कि उनके मन में क्या है अपने पैरेंट्स के प्रति ? इस लिए मैं उनसे फोन लगा कर ज़रूर इस बारे में बात करू गी। "

".....। " उधर से प्रतिभा ने फिर कुछ कहा।

" मैं भी आ रही हूँ मॉम। " मानुषी ने कहा __" ऐसे समय में में मुझे अपने मॉ डैड के पास ही रहना है। दूसरी बात मैं देखना चाहती हूँ कि साक्षी दीदी ये सब कैसे करती हैं अपने ही मॉ बाप और भाई के खिलाफ़ ?"

".....। " उधर से सोनिया ने कुछ कहा।

" ओके मॉम। " मानुषी ने कहा और काल कट कर दिया।

इस वक्त उसके दिलो दिमाग़ में एकाएक ही तूफान सा चालू हो गया था। मन में तरह तरह के सवाल उभरने लगे थे। जिनका जवाब फिलहाल उसके पास न था किन्तु जानना आवश्यक था उसके लिए। दरवाजे की तरफ न जाकर वह वापस पलट कर बेड पर बैठ गई और गहन सोच में डूब गई।

" डैड को सी.बी.आई. वाले अपने साथ ले गए। " मानुषी मन ही मन सोच रही थी __" वजह ये कि उनके शहर वाले मकान से भारी मात्रा में चरस अफीम व ड्रग्स जैसी गैर कानूनी चीज़ें सी.बी.आई. वालो को बरामद हुई। सवाल ये उठता है कि क्या सच में डैड इस तरह का कोई ग़ैर कानूनी धंधा करते हैं ? वहीं दूसरी तरफ साक्षी दीदी आज कल अपने ही पैरेंट्स के खिलाफ़ जाकर विक्रम का साथ दे रही हैं। भला ये असंभव काम संभव कैसे हो सकता है ? आख़िर ऐसा क्या हुआ है कि दीदी मॉम डैड के सबसे बड़े दुश्मन का साथ देने लगी हैं ? मॉम ने बताया कि विक्रम गॉव आया था , इसका मतलब इसी लिए वो कॉलेज नहीं आ रहा था। मगर वो गॉव गया किस लिए था ? और गॉव में ऐसा क्या हुआ है कि दीदी अपने उस चचेरे भाई का साथ देने लगीं जिसे वो कभी देखना भी पसंद नहीं करती थीं ?"

मानुषी के ज़हन में हज़ारों तरह के सवाल इधर उधर घूमने लगे थे मगर मानुषी को ये सब बातें हजम नहीं हो रही थी। सोचते सोचते सहसा मानुषी के दिमाग़ की बत्ती जली। उसके मन में विचार आया कि वो खुद भी तो कभी विक्रम को अपना भाई नहीं समझती थी जबकि आज

हालात ये हैं कि वो अपने उसी भाई से मिल कर अपने उन गुनाहों की उससे माफ़ी मॉगना चाहती है। कहीं न कहीं उसका अपने इस भाई के प्रति हृदय परिवर्तन हुआ था तभी तो उसके दिल में ऐसे भावनात्मक भाव आए थे। दूसरी तरफ साक्षी दीदी भी विक्रम का साथ दे रही हैं। इसका मतलब कुछ तो ऐसा हुआ है जिसके चलते दीदी का भी विक्रम के प्रति हृदय परिवर्तन हुआ है और वो आज उसका साथ भी दे रही हैं। इतना ही नहीं अपने ही पैरेंट्स के खिलाफ़ विक्रम के साथ लड़ाई लड़ रही हैं।

मानुषी को अपना ये विचार जॅचा। उसको एहसास हुआ कि कुछ तो ऐसी बात हुई जिसका उसे इस वक्त कोई पता नहीं है। ये सब सोचने के बाद उसने मोबाइल पर साक्षी दीदी का नंबर ढूॅढ़ा और काल लगा कर मोबाइल कान से लगा लिया। काल जाने की रिंग बजती सुनाई दी उसे। कुछ ही देर में उधर से साक्षी ने काल रिसीव किया।

".....। " उधर से साक्षी ने कुछ कहा।

" मैं तो बिलकुल ठीक हूॅ दीदी। " मानुषी ने कहा __" आप बताइये आप कैसी हैं ?"

".....। " उधर से साक्षी ने फिर कुछ कहा।

" हॉ दीदी कॉलेज अच्छा चल रहा है और साथ में पढ़ाई भी अच्छी चल रही है। " मानुषी ने कहने के साथ ही पहलू बदला __" दीदी , अभी अभी मॉम का फोन आया था मेरे पास। उन्होंने कुछ ऐसा बताया जिसे सुन कर मेरे होश ही उड़ गए हैं। वो कह रही थी कि डैड को सी.बी.आई. वाले ग़ैर कानूनी सामान के चलते अपने साथ ले गए हैं। ये भी कि आप विक्रम का साथ दे रही हैं। ये सब क्या चक्कर है दीदी ? प्लीज़ बताइये न कि ऐसा क्या हो गया है कि आप अपने ही पैरेंट्स के खिलाफ़ हैं ? मॉम कह रही थी कि आपने उनका काल भी रिसीव नहीं किया। वो आपको भी डैड के बारे में सूचित करना चाहती थी। "

".....। " उधर से साक्षी ने काफी देर तक कुछ कहा।

" बातों को गोल गोल मत घुमाइये दीदी। " मानुषी ने बुरा सा मुह बनाया ___" साफ साफ बताइये न कि आख़िर क्या बात हो गई है जिसकी वजह से आप मॉम डैड के खिलाफ़ हो कर उस विक्रम का साथ दे रही हैं ?"

".....। " उधर से साक्षी ने फिर कुछ कहा।

" इसका मतलब आप खुद मुझे कुछ भी बताना नहीं चाहती हैं। " मानुषी ने कहा __" और ये कह रही हैं कि सच्चाई का पता मैं खुद लगाऊॅ। ठीक है दीदी , मैं आ रही हूॅ। क्या आपसे मिल भी नहीं सकती मैं ?"

".....। " उधर से साक्षी ने कुछ कहा।

" ठीक है दीदी। " मानुषी ने कहा __" लेकिन मैं इतना ज़रूर जानती हूॅ कि बात भले ही चाहे जो कुछ भी हुई हो मगर ऐसा नहीं होना चाहिए कि बच्चे अपने मॉ बाप से इस तरह

खिलाफ़ हो जाएॅ। "

इतना कहने के बाद मानुषी ने काल कट कर दिया और फिर दुखी भाव से बेड पर कुछ देर बैठी जाने क्या सोचती रही। उसके बाद जैसे उसने कोई फैसला किया और फिर उठ कर कॉलेज की यूनिफार्म को उतारने लगी। कुछ ही देर में उसने दूसरे कपड़े पहन लिए और फिर कमरे से बाहर निकल गई।

६४

इधर विक्रम की ट्रेन अपने निर्धारित समय से कुछ ही समय की देरी से आख़िर मुंबई पहुँच ही गई थी। सब लोग ट्रेन से बाहर आए और फिर प्लेटफार्म से बाहर की तरफ निकल गए। विक्रम ने मुंबई पहुँचने से पहले ही उमाकांत पाटिल को फोन कर दिया था। इस लिए जैसे ही ये लोग स्टेशन से बाहर आए वैसे ही उमाकांत पाटिल बाहर मिल गया। उसके साथ एक कार और थी। सब लोग कार मे बैठ कर घर के लिए निकल गए।

रास्ते में उमाकांत अंकल ने मुझे बताया कि उन्होंने मॉ से बात कर ली है। पहले तो मॉ मेरी वापसी की बात सुन कर नाराज हुईं। मगर उमाकांत अंकल ने उन्हें सारी बात तरीके से बताई और ये यकीन दिलाया कि मुझे कुछ नहीं होगा तब जाकर वो राजी हुई थी। लेकिन उन्होंने ये भी कहा कि वो एक बार मुझे देखना चाहती हैं। अतः अब मैं इन लोगों के साथ ही घर तक जा रहा था। वरना मेरा प्लान ये था कि मैं यहॉ से वापस उसी ट्रेन से लौट जाता।

मुंबई से वापसी के लिए इसी ट्रेन को लगभग कुछ घण्टे बाद जाना था इस लिए मैं बड़े आराम से गर जाकर मॉ से मिल सकता था। ख़ैर, कुछ ही समय बाद हम सब घर पहुँच गए। घर पर सब एक दूसरे से मिले। अपर्णा चाची जब मॉ से मिली तो बहुत रो रही थी और बार बार मॉ से माफ़ियॉ मॉग रही थी। मॉ ने उन्हें अपने सीने से लगा लिया था। अपर्णा चाची को वो हमेशा अपनी छोटी बहन की तरह मानती थी और प्यार करती थी। आशा दीदी और उनकी मॉ से भी मेल मिलाप हुआ। मिलने मिलाने में ही काफी समय ब्यतीत हो गया था।

मैं अपने कमरे में जाकर फ्रेश हो गया था। अमर भी फ्रेश हो गया था। उसे मेरे साथ ही वापस गॉव जाना था। निशा भी सबसे मिली। अपर्णा चाची ने उसे ढेर सारा प्यार व स्नेह दिया था। सृष्टि और रणदीप को मॉ ने अपने सीने से ही छुपकाया हुआ था। सुंदर चाचा खुश थे कि उनके बीवी बच्चे सही सलामत यहॉ आ गए थे। अब उन्हें उनके लिए कोई फिक्र नहीं थी। शायद यही वजह थी कि वो खुद भी मेरे साथ चलने की बात करने लगे थे। उनका कहना था कि वो खुद भी इस जंग में हिस्सा लेंगे और अपने बड़े भाई से इस सबका बदला लेंगे। मगर मैने और उमाकांत अंकल ने उन्हें समझा बुझा कर मना कर दिया था।

मैने एक बात महसूस की थी कि निशा का बिहैवियर मेरे प्रति कुछ अलग ही था। इसके पहले वह हमेशा मेरे पास में ही रहने की कोशिश करती थी जबकि अब वो मुझसे दूर दूर ही रह रही थी। यहॉ तक कि मेरी तरफ देख भी नहीं थी वो। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि वो ऐसा क्यों कर रही थी। मैने एक दो बार खुद उससे बात करने की कोशिश की मगर वो किसी न किसी बहाने से मेरे पास से चली ही जाती थी। मुझे उसके इस रूखे ब्यवहार से तक़लीफ़ भी हो रही थी। वो मेरी जान थी, मैं उसकी बेरुखी पल भर के लिए भी सह नहीं सकता था मगर सबके सामने भला मैं उससे इस बारे कैसे बात कर सकता था? मेरे पास वक्त नहीं था, इस लिए मैने मन में सोच लिया था कि सब कुछ ठीक करने के बाद मैं उससे बात करूगा और उसकी किसी भी प्रकार की नाराजगी को दूर करूगा।

मैं मॉ से मिला तो मॉ मेरी वापसी की बात से भावुक हो गईं। उन्हें पता था कि मैं वापस किस लिए जा रहा हूँ इस लिए वो मुझे बार बार अपना ख़याल रखने के लिए कह रही थी। ख़ैर मैने उन्हें आश्वस्त कराया कि मैं खुद का ख़याल करूगा और मुझे कुछ नहीं होगा।

चलने से पहले मैने सबसे आशीर्वाद लिया और फिर अमर के साथ वापसी के लिए चल दिया। मेरे साथ उमाकांत अंकल भी थे। रौनक और आशा दीदी मुझे अपना ख़याल रखने का कहा और खुशी खुशी मुझे विदा किया। हलॉकि मैं जानता था कि वो अंदर से मेरे जाने से दुखी हैं। उन्हें मेरी फिक्र थी। सुंदर चाचा ने मुझे सम्हल कर रहने को कहा। अपर्णा चाची ने मुझे प्यार दिया और विजयी होने का आशीर्वाद दिया। मैं सृष्टि और रणदीप को प्यार व स्नेह देकर निशा की तरफ देखा तो वो कहीं नज़र न आई। मैं समझ गया कि वो मुझसे मिलना नहीं चाहती है। इस बात से मुझे तक़लीफ़ तो हुई किन्तु फिर मैंने उस तक़लीफ़ को जज़्ब किया और उमाकांत अंकल के साथ कार में बैठ कर वापस रेलवे स्टेशन की तरफ चल दिया।

रेलवे स्टेशन पहुॅच कर मैं और अमर कार से उतरे। उमाकांत अंकल ने मुझे एक पैकिट दिया और कहा कि मैं उसे अपने बैग में चुपचाप डाल लूॅ। मैने ऐसा ही किया। उसके बाद उमाकांत अंकल से मेरी कुछ ज़रूरी बातें हुईं और फिर मैं और अमर प्लेटफार्म की तरफ बढ़ गए। ट्रेन वापसी के लिए बस चलने ही वाली थी। हम दोनो ट्रेन में अपनी अपनी सीट पर बैठ गए। मैने मोबाइल से साक्षी दीदी को फोन किया और उन्हें बताया कि सब लोगों को मैने सुरक्षित पहुॅचा दिया है और अब मैं वापस आ रहा हूॅ। साक्षी दीदी इस बात से खुश हो गईं। फिर उन्होंने मुझे अख़बार में छपी ख़बर के बारे में बताया और पूॅछा कि ये सब क्या है तो मैने कहा कि मिल कर बताऊॅगा।

साक्षी दीदी से बात करने के बाद मैं अमर से बातें करने लगा। तभी मेरी नज़र एक ऐसे चेहरे पर पड़ी जिसे देख कर मैं चौंक पड़ा और हैरान भी हुआ। मेरे मन में सवाल उठा कि क्या उसने मुझे देख लिया होगा????? मैने अपनी पैंट की जेब से रुमाल निकाल कर अपने मुख पर बॉध लिया और फिर आराम से अमर से बातें करने लगा। किन्तु मेरी नज़र बार बार उस चेहरे पर चली ही जाती थी। जिस चेहरे पर मैं एक अजीब सी उदासी देख रहा था।

६५

उधर साक्षी के फार्महाउस पर!

सुबह का नास्ता पानी करने के बाद साक्षी बाहर की तरफ निकल गई। बाहर आकर उसने देखा कि सामने मेन गेट पर हरिया काका और शंकर काका आपस में कुछ बातें कर रहे थे। साक्षी उन दोनो को देखते ही उनकी तरफ बढ़ चली। कुछ ही समय में वो उन दोनो के पास पहुँच गई। साक्षी को अपनी तरफ आता देख उन दोनों ने अपनी बात बंद कर दी और सम्हल कर खड़े हो गए।

" क्या हाल चाल हैं आप दोनो के काकाा ?" साक्षी ने उन दोनों की तरफ देख कर मुस्कुराते हुए कहा __" आप दोनों ने नास्ता पानी किया कि नहीं ?"

" हम दोनों ने अभी थोड़ी देर पहले ही नास्ता पानी किया है बिटिया। " शंकर ने कहा __" केशरमाँ भाभी हमारा काफी बेहतर तरीके से ख़याल रखती हैं। "

" ये तो बहुत अच्छी बात है काका। " साक्षी ने कहा __" काकी हैं ही इतनी अच्छी कि उन्हें सबकी फिक्र रहती है। "

" हॉ ये बात तो सच है बिटिया। " शंकर ने कहा __" हरिया बहुत किस्मत वाला है जो इसे केशरमाँ भाभी जैसी जोरू मिली हैं। "

" अरे ई का कहथो रे बुड़बक ?" हरिया ने बुरा सा मुह बनाते हुए कहा __" किस्मत वाली ताऊ है ससुरी जो हमरे जइसन मरद मिल गवा है ऊखा। हम ता पहिले से ही किस्मत वाला हूँ रे। "

" देखा बिटिया। " शंकर ने साक्षी से कहा __" ये अपने आपको जाने क्या समझता रहता है ? जबकि सच्चाई तो यही है कि जबसे केशरमाँ भाभी से इसका ब्याह हुआ है तब से इसके भाग्य खुल गए हैं। "

" खूब समझ रहा हूँ रे तोहरी बातन का। " हरिया ने सिर हिलाते हुए कहा __" तू ससुरे ऊखर बहुतै बड़ाई करथै रे। तोहरे मन मा का है ई हम बहुतै अच्छी तरह से जानत हूँ। इतना बुड़बक न हूँ हम। पर तू ससुरे हमरी एक बात कान खोल के सुन ले , अउर ऊ या के कउनव दिन सारे हमरी बासु रू का लइके भाग न जइहे समझा का ?"

" ओए ये क्या बकवास कर रहा है तू ?" शंकर ने एकदम से आवेश में आकर कहा _" ऐसा तू सोच भी कैसे सकता है मेरे बारे में ? तू अच्छी तरह जानता है कि मेरे मन में ऐसी बदनीयती नहीं है। मैं तो भाभी की बहुत इज्ज़त करता हूँ और उन्हें भाभी माँ जैसा ही मानता हूँ। "

" ई ता ससुरे तू मुह से बोल रहा है न। " हरिया ने कहा _" केहू के मन मा का है ई कउन जानथै भला , हाॅ ?"

" तू जैसा है वैसा ही दूसरे को भी समझता है। " शंकर ने कहा __" इस लिए मुझे अपने लिए सफाई देने की कोई ज़रूरत नहीं है। ईश्वर जानता है कि मेरे अंदर क्या है ?"

" मैं जानती हूॅ काका कि आपके मन में किसी के लिए कोई मैल नहीं है। " साक्षी ने कहा __" हरिया काका तो आपको बस छेड़ रहे हैं लेकिन मैं ये कह रही हूॅ आप भी शादी कर लीजिए और मेरे लिए एक अच्छी सी काकी ले आइये। "

" ये क्या कह रही हो बिटिया ?" शंकर हॅसा __" अब भला इस उमर में कौन लड़की मुझसे ब्याह करेगी ? अब तो ये जीवन ऐसे ही कटेगा। "

" अरे अभी भी आप शादी कर सकते हैं काका। " साक्षी ने कहा __" और आपको करना ही पड़ेगा। जब आप शादी कर लेंगे तब हरिया काका आपको ये सब कह कर छेड़ेंगे नहीं। "

" हम ता ई ससुरे का समझाय समझाय के थक गयन बिटिया। " हरिया ने कहा __" पर ई ससुरा हमरी कउनव बात मानतै नाहीं है। कहैं का ता ई हमका आपन बहुतै बड़का पक्का यार मानथै पर ई बात भी सच हाय कि ई हमरी बात भी नाहीं सुनत है। "

" आप समझ नहीं रहे हैं काका। " साक्षी ने सहसा मुस्कुराते हुए कहा __" शंकर काका को दरअसल केशरमाॅं काकी जैसी बीवी चाहिए। बात भी सही है काका अगर केशरमाॅं काकी जैसी बीवी शंकर काका को भी मिल जाए तो इनका जीवन और भी ज्यादा सॅवर जाए। "

" कारे ईहै बात हा का ?" हरिया काका ने तिरछी नज़र से शंकर की तरफ देखा __" अउर अगर ईहै बात हा ता ससुरे ई बात तै हमका पहिले काहे ना बताए रहे ? सरवा बेकार मा अब तक ते रॅडवा घूमत रहे। चल अउनव बात ना हा। हम तोहरे खातिर ऊ ससुरी केशरमाॅं जइसनै जोरू ढूॅढ़ब। हमरे इहॉ अइसन बासु रू केर कउनव कमी ना हा। "

" ये तो अच्छी बात है काका। " साक्षी ने मुस्कुरा कर कहा _" आप जल्दी से वधू का इंतजाम कीजिए। उसके बाद चट मॅगनी पट ब्याह हो जाएगा। और हॉ शंकर काका की शादी का सारा खर्चा मैं करू गी। "

" ये तुम क्या कह रही हो बिटिया ?" शंकर काका एकदम से चौंक पड़ा _" भला मैं तुमसे कैसे खर्चा करवा सकता हूॅ ? अरे तुमको तो मैं अपनी बेटी ही मानता हूॅ और बेटी से इस तरह अपने काम के लिए धन खर्चा करवाना अच्छी बात नहीं है। मुझे पाप लगेगा बिटिया। "

" आप भी कमाल करते हैं काका। " साक्षी ने कहा _" जीवन भर मॉ बाप अपने बच्चों के ऊपर अपनी पाई पाई खर्च करते रहते हैं तो क्या बच्चों का फर्ज़ नहीं बनता कि वो भी अपने

मॉ बाप के ऊपर अपनी कमाई का पाई पाई खर्च कर दें ? अगर आप मुझे अपनी बेटी मानते हैं तो मैं भी तो आपको अपने पिता जैसा ही मानती हूॅ। और ये मेरी इच्छा ही नहीं बल्कि खुशी की बात है कि मैं अपने शंकर काका की शादी में खूब पैसा खर्च करू । मैने फैंसला कर लिया है , इस लिए अब आप इस बारे में कुछ भी नहीं कहेंगे ? वरना कभी बात नहीं करू गी आपसे। "

साक्षी की बातें सुन कर शंकर हैरत से देखता रह गया उसे। फिर सहसा जाने उसके अंदर कैसा भावनाओं का तूफान उठा कि उसकी ऑखों से झर झर करके ऑसू बह चले। उसके चेहरे पर एकाएक ही गहन पीड़ा और दुख के भाव उभर आए। ये देख कर साक्षी आगे बढ़ी और उसकी ऑखों से बह रहे ऑसुओं को अपने हाथ से पोंछा।

" ये क्या काका ?" साक्षी ने कहा _" आप रों रहे हैं ? क्या मुझसे कुछ ग़लती हो गई ?"

" नहीं नहीं बिटिया। " शंकर एकदम से कह उठा __" तुमसे भला कोई ग़लती कैसे हो सकती है ? तुम तो एक नेक दिल बच्ची हो बिटिया। आज वर्षों बाद इतनी खुशी महसूस हुई कि वो खुशी ऑसू बन कर इन ऑखों से छलक पड़ी। इस दुनियॉ में इससे पहले बहुत दुख दर्द सहे थे मैने। मगर जबसे यहॉ आया हूॅ तो ऐसा लगा जैसे मैं अकेला नहीं हूॅ बल्कि मेरा भी कोई अपना है। जिसे मेरी फिक्र है। "

" मैं तो शुरू से ही आपको अपना ही मानती आ रही हूॅ काका। " साक्षी ने कहा __" मगर आप आज भी मुझे अपना नहीं मानते हैं। अगर मानते तो मेरे और हरिया काका के पूछने पर अपने बारे में वो सब कुछ बताते जिसकी वजह से आप कभी अपने घर नहीं जाते हैं। "

" उस सबको बताने का कोई मतलब नहीं है बिटिया ?" शंकर ने कहा __" अतीत किसी का भी हो वो जब भी याद आता है तो हमें दुख और उदासियॉ ही देता है। मैं उस सबको याद नहीं करना चाहता। क्योंकि बड़ी मुश्किल से मैने खुद को इस हद तक संभाला है। "

" अपने अंदर के दर्द को बयॉ कर देने से मन का बोझ काफी हल्का हो जाता है काका। " साक्षी ने कहा __" ये तो अच्छी बात है कि आप अपने उस दर्द से उबर कर आज सम्हल चुके हैं। लेकिन ये भी सच है कि अपने अंदर इतने सारे दुख दर्द को दबा के रखना भी अच्छी बात नहीं है। ऐसे में वो दर्द नासूर बन जाता है और हमें एक पल भी सुकून से जीने नहीं देता। इस लिए आप अपने के उस दुख दर्द को बाहर निकाल दीजिए और फिर नये सिरे से अपने जीवन की नई शुरूआत कीजिए। "

" साक्षी बिटिया बहतै भले की बात करथै शंकरवा। " हरिया ने कहा __" जो बीत गया हा उसे ता भूला दे मा ही भलाई हा। हम सरवा तोसे कब से रहा हूॅ के तू अपना ब्याह करके जीवन मा आगे बढ़। पर तू ससुरा हमरी सुनतै नाहीं है ?"

" अब तो बिटिया ने अपना फैंसला सुना ही दिया है हरिया। " शंकर ने कहा __" और जिस

अपनेपन से सुनाया है उसे अगर मैं ना मानूँ तो फिर धिक्कार ही होगा मुझ पर। इस लिए अब मैं ज़रूर ब्याह करू गा यार। "

" हॉ लेकिन उससे पहले। " साक्षी ने कहा __" मैं ये भी जानना चाहती हूँ काका कि आपके साथ ऐसा क्या हो गया था जिसकी वजह से आप कभी अपने घर नहीं जाते और ना ही अपने घर वालों से कभी कोई मतलब रखते हैं ? आप हमें वो सब कुछ अभी बताएँगे काका। "

" ठीक है बिटिया। " शंकर ने गहरी सास ली __" तुम अगर इतना ही ज़ोर दे रही हो तो सब कुछ बताता हूँ तुम्हें। मैं उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गॉव महोबा का निवासी हूँ। मैं छोटी जाति का हूँ। मेरा बाप बल्ली रावत एक मिस्त्री था। जो मकानों में ईंटे की जोड़ाई का काम करता था। हम तीन भाई और दो बहन थे। मेरी मॉ बहुत शान्त स्वभाव की थी। अपने सभी बच्चों को वह बहुत प्यार करती थी। भाई बहनों में मैं सबसे बड़ा था। मैं मॉ पर गया था इस लिए मेरा स्वभाव भी सबके प्रति प्यार भरा ही था। उस वक्त मैं पच्चीस साल का हो गया था और अपने बापू के साथ रह कर मिस्त्रीगीरी पूरी तरह सीख चुका था। इस लिए जहॉ भी काम मिलता मैं बापू के साथ ही रह कर उनके काम में हाथ बटाता था। मेरे सहयोग का असर ये हुआ की घर के आर्थिक हालात पहले की अपेक्षा काफी बेहतर हो गए। हमारी जात बिरादरी के कुछ लोग मेरे बापू से अक्सर मेरा ब्याह कर देने को कहते रहते थे। पर पता नहीं बापू उन सबकी बातों को क्यों अनसुना कर देता था ? इधर पास के ही एक गॉव में हमारी ही जात बिरादरी में एक लड़की थी चंदा। जिसे मैं काफी पसंद करता था। वो भी मुझे बहुत पसंद करती थी। हमें जब भी समय मिलता हम एक दूसरे से ज़रूर मिल लिया करते थे। कहते हैं कि इश्क़ मुश्क़ कभी छुपता नहीं इस लिए इस बात का पता मेरे बापू को भी हो गया था। जिससे बापू मुझे इसके लिए डॉट भी देता था कभी कभी। ख़ैर सब कुछ ठीक ही चल रहा था कि एक दिन हर दिन की भॉति मैं बापू के साथ काम पर गया हुआ था। गॉव में ही काम चालू था तो दोपहर के समय सहसा मेरी बहन रीना भागते हुए आई और बताया कि अम्मा मर गई है। उसकी बात सुन कर हम दोनो बाप बेटा भौचक्के से रह गए। मुझे तो यकीन ही नहीं हुआ कि अम्मा मर गई है। रीना ने बताया कि अम्मा नहाने के लिए बाल्टी को रस्सी से बॉध कर कुएॅ से पानी खींच रही थी। तभी जाने कैसे उसका पॉव फिसल गया और वो कुएॅ में गिर गई। अम्मा को तैरना नहीं आता था इस लिए वो पानी में डूब गई और मर गई। रीना ने बताया कि जब काफी देर तक अम्मा नहा कर न आई तो वह घर के पिछवाड़े पर बने कुएॅ में ये देखने गई कि अम्मा अब तक आई क्यों नहीं ? लेकिन कुएॅ में अम्मा को न पा कर रीना कुएॅ के आस पास देखने लगी। फिर सहसा उसकी नज़र कुएॅ के अंदर पड़ी तो अम्मा को पानी की सतह पर औधे मुँह लेटी पाया। रीना को समझते देर न लगी कि अम्मा मर गई है , बस ये कहानी थी अम्मा के मर जाने की। रीना की सारी बातें सुन कर हम दोनो बाप बेटा काम छोंड़ कर घर आ गए। गॉव के कुछ लोगों की मदद से मेरे भाईयों ने अम्मा को कुएॅ से निकाल लिया था।

अम्मा के मर जाने का दुख सबसे ज्यादा मुझे था। लेकिन अब हो भी क्या सकता था। अम्मा का क्रिया कर्म किया गया और कुछ दिन में फिर से हमारी दिन चर्या पहले जैसी चलने लगी। अब घर में रोटी पानी मेरी दोनो बहनें ही बनाती थी। मेरे सभी भाई बहन बड़े हो गए थे और

जवान भी। अम्मा के मर जाने का दुख मेरे अंदर बना ही रहा पर मैं किसी के सामने उस दुख को दिखाता नहीं था। कुछ दिन बाद एक बदलाव ये हुआ कि बापू अक्सर रात को देसी ठर्रा(शराब) लगा कर घर आने लगा और घर में सबको अनाप शनाप बकने लगा और गालियॉ भी देने लगा। हम सब बापू के दारू पीने से परेशान से होने लगे। इधर एक बदलाव ये भी हुआ कि बापू मुझे काम पर लगा कर खुद चार चार घंटे के लिए गायब हो जाता। जबकि मैं सारा दिन काम में लगा रहता और फिर दिन ढले ही घर वापस आता। ऐसे ही दिन गुज़रते रहे।

ऐसे ही एक दिन मैं शाम को घर पहुॅचा। हाथ मुह धोकर खाया पिया और फिर घर के बाहर मैदान में चारपाई लगा कर उसमें लेट गया। दिन भर के काम से मैं काफी थक जाता था इस लिए लेटते ही मुझे नींद आ गई। अभी मुझे सोये हुए कुछ ही समय गुज़रा था कि सहसा किसी ने मेरी पीठ पर ज़ोर की लात मारी। जिससे मैं चारपाई के नीचें गिर गया। अचानक हुए इस हमले से पहले तो मुझे कुछ समझ न आया किन्तु फिर तुरंत ही मेरे अंदर गुस्से का उबाल आ गया। मेरी नज़र मुझे लात मारने वाले पर पड़ी। देखा तो चारपाई के उस पार नशे में झूमता बापू खड़ा था।

" बापू तुमने मुझे मारा क्यों ?" मैं लगभर नाराज गी भरे भाव से पूछा __" और ये क्या तुम हर रोज़ देसी दारू चढ़ा के आ जाते हो। ये अच्छी बात नहीं है बापू। "

" बकवास ना कर समझा। " बापू नशे में झूमता हुआ गरजा __" मैं कुछ भी करू तुझे इससे क्या मतलब ? मैं अपने पैसों की दारू पीता हूॅ तेरे बाप की नहीं समझा। "

" मेरे बाप तो तुम ही हो बापू। " मैने कहा __" मैं ये नहीं कहता कि तुम दारू न पियों मगर रोज रोज पीना अच्छी बात नहीं है। इससे तुम्हारी तबियत ख़राब हो जाएगी। "

" अरे वो सब छोंड़। " बापू ने हाथ को ऊपर से नीचे की तरफ झटकते हुए कहा __" ये बता कि तू अपनी नई नवेली अम्मा से मिला कि नहीं ?"

" नई नवेली अम्मा ??" मैं एकदम से चकरा गया _" ये तुम क्या बोल रहे हो बापू ?"

" ठीक ही तो बोल रहा हूॅ बुड़बक। " बापू लड़खड़ा सा गया __" अरे आज मैं तुम सबके लिए एक नई अम्मा ले आया हूॅ। मैं जानता हूॅ कि अपनी अम्मा के मर जाने से तुम सब बहुत दुखी थे इस लिए मैने फिर से ब्याह कर लिया और तुम सबके लिए एक अम्मा ले आया। "

मैं बापू की बात सुन कर उछल पड़ा था। हैरत से ऑखें फाड़े नशे में झूमते बापू को देखे जा रहा था। किन्तु तभी मुझे एहसास हुआ कि लगता है बापू को दारू ज्यादा चढ़ गई है इस लिए अनाप शनाप बके जा रहा है।

" अंदर जाओ बापू। " फिर मैने कहा __" तुम्हें दारू आज ज्यादा चढ़ गई है। इस लिए अंदर जाओ और जो थोड़ा बहुत खाना खाना हो खाओ और आराम से सो जाओ। "

" तू साले मुझे बता रहा है कि मुझे चढ़ गई है ?" बापू एकदम से चीख पड़ा था , बोला __" अरे इतनी सी बार बराबर दारू मुझे नहीं चढ़ती मादर--- । मैं जो कह रहा हूॅ उसे मानता

क्यों नहीं ? चल आ मेरे साथ तुझे दिखाता हूँ कि अंदर तेरी नई अम्मा है कि नहीं। "

बापू मेरा हाथ पकड़ कर अंदर की तरफ खींच कर ले जाने लगा। मैं चाहता तो अपना हाथ एक झटके में उससे छुड़ा लेता मगर मैं कोई बखेड़ा नहीं करना चाहता था इस लिए उसके खींचने पर उसके पीछे पीछे अंदर की तरफ खिंचता चला गया। अंदर बरामदे में मेरे सभी भाई बहन बैठे थे। घर कच्चे मकान का था। बाहर से आने पर पहले बड़ा सा बरामदा पड़ता था, उसके बाद दो कमरे थे। जिसमे एक कमरे में सामान वगैरा रखा रहता था। जबकि दूसरा कमरा बापू का था। कमरे में जो लकड़ी का दरवाजा था उसमें अंदर की तरफ कुण्डी नहीं थी।

बापू मुझे खींचते हुए उसी कमरे की तरफ बढ़ा और झटके से कमरे का दरवाजा खोल कर अंदर दाखिल हो गया। जबकि मैंने तुरंत ही अपना हाथ छुड़ा लिया था। अंदर दाखिल होते ही बापू ऊँची आवाज़ में एक तरफ उँगली का इशारा करते हुए बोला__"ये देख शंकर, ये है तेरी नई अम्मा। अरे देख न बेटीठोक तुझे यकीन नहीं हो रहा था न। देख ये बैठी है तेरी अम्मा चारपाई पर।"

मैंने अंदर की तरफ सिर करके चारपाई की तरफ देखा तो चौंक पड़ा। सच में अंदर रखी चारपाई पर कोई औरत बैठी थी। नई साड़ी में बड़ा सा घूँघट किये थी वह। इस लिए मैं उसका चेहरा न देख सका। पर इतना काफी था मुझे हैरत में डालने के लिए। मैं उस औरत को देखने के बाद आश्चर्य से बापू की तरफ देखा। मुझे अपनी तरफ देखता देख बापू बड़े अजीब भाव से मुस्कुराया और फिर कमरे से बाहर बरामदे में आ गया।

" क्यों बापू ?" मैने भारी आवाज़ में कहा _" क्यों किया ऐसा ? हम कोई बच्चे तो नहीं थे जो हम अम्मा के बिरा जी नहीं सकते थे। तुम तो देख ही रहे हो बापू कि तुम्हारे बच्चे खुद अब ब्याह करने लायक हो गए हैं फिर खुद ब्याह करने की क्या ज़रूरत थी तुम्हें ?"

" ज़रूरत थी बेटवा। " बापू ने कहा __" बल्कि बहुत ज़रूरत थी मुझे। तेरी अम्मा तो मर गई मगर मेरी जवानी स्मानी ज़रूरतों को अब कौन पूरी करता ? वैसे तेरी अम्मा के रहते हुए भी कुछ नहीं होता था। अच्छा हुआ साली मर गई। मुझ पर और मेरे लिंग पर ज़रा सा भी तरस नहीं आता था उसे। जब भी उससे कहता कि आज बहुत दिल कर रहा है एक बार दे दो तो साली ऐसी बिदकती थी जैसे दुधारू गाय हो। "

" ये तुम क्या बकवास कर रहे हो बापू ?" मैने पूरी शक्ति से चीखते हुए कहा __" शर्म आनी चाहिए तुम्हें अपने बेटे के सामने उसकी अम्मा के लिए ऐसा बोलने पर। "

" इसमें शर्म कैसी बछुवा ?" बापू ढिठाई से मुस्कुराया __" जो सच बात है वही तो बोल रहा हूँ मैं। "

" मुझे नहीं सुनना तुम्हारी ये बेहूदा बातें। " मैने गुस्से से कहा और पलट कर बाहर की तरफ अपनी चारपाई के पास आ गया। मेरा दिमाग़ बहुत ज्यादा ख़राब हो गया था। मगर ये भी सच था कि अब हो भी क्या सकता था ?

मैं अपने अंदर हज़ारों तरह की बातें लिए चुपचाप चारपाई पर लेट गया। मुझे बापू पर बहुत गुस्सा आ रहा था। मगर मैं कुछ कर नहीं सकता था। इस लिए अपने गुस्से को बड़ी मुश्किल से काबू किये हुए ऑखें बंद करके सोने की कोशिश करने लगा था। मगर कम्बख्त ऑखों में नींद का दूर दूर तक कोई आभास भी नहीं हो रहा था।

अभी मुझे लेटे हुए कुछ ही देर हुई थी कि तभी अंदर से किसी औरत की चीख सुनाई दी। मेरी ऑखें खुल गईं मगर मैं उठा नहीं। मैं समझ चुका था कि बापू अपनी नई नवेली जोरू के पास ही होगा और उसके साथ वही कर रहा होगा जो हर शादी शुदा मर्द औरत करते हैं शादी के बाद। इस लिए मैं चुपोआप लेटा रहा। मैं इस बात से हैरान ज़रूर हुआ कि बापू को ज़रा भी शर्म नहीं है कि घर में उसके पॉ पॉच जवान बच्चे मौजूद हैं और वो कमरे से क्या सुना रहा है उन्हें।

मैं ये सब सोच ही रहा था कि एक बार फिर से मेरे कानों में औरत की चीख़ सुनाई दी साथ ही बापू की गालियॉ भी। किन्तु इस बार मैं चीख़ सुन कर बुरी तरह उछल पड़ा था। क्योंकि चीख़ में शामिल मेरा नाम था। उस आवाज़ को मैं लाखों में पहचान सकता था। ये चंदा की चीख़ थी। जी हॉ, ये चंदा ही थी। मगर मैं चकित इस बात पर था कि वो यहॉ कैसे? अभी मैं ये सब सोच ही रहा था कि एक बार फिर से ज़ोरदार चीख़ मेरे कानों पर पड़ी। इस बार मुझे स्पष्ट सुनाई दिया और मुझे बिलकुल भी संदेह न हुआ। ये यकीनन चंदा ही थी, मेरी चंदा। ये जान कर कि वो चीख़ मेरी चंदा की ही है मैं एकदम से पागल सा हो गया और चारपाई से उतर कर बिजली की सी तेज़ी से अंदर की तरफ भागा। पलक झपकते ही मैं बरामदे में पहुॅच गया।

मेरी नज़र कमरे के दरवाजे के पास खड़े मेरे मॅझले भाई जगन पर पड़ी। वो अधखुले दरवाजे से कमरे के अंदर की तरफ देख रहा था। ये देख कर मेरा खून खौल गया। मुझे लगा कि वो अंदर वो सब देख रहा है जो कदाचित मेरा बापू मेरी चंदा के साथ करने की कोशिश कर रहा होगा। मैं भला ये कैसे बर्दाश्त कर सकता था? मैने देखा कि बरामदे के दाहिनी तरफ मेरी दोनो बहने यानी रीना तथा मीना ज़मीन पर ही एक पुराना चद्दर बिछा कर लेटी हुई थी और उनके बगल से ही मेरा छोटा भाई मदन लेटा हुआ था। बरामदे के बाईं तरफ कोने में रसोई थी।

जगन को इस तरह चोरी छुपे अंदर की तरफ देखते हुए देख कर मैं तेज़ी से उसकी तरफ बढ़ा और पीछे से ही उसकी शर्ट का कालर पकड़ कर अपनी तरफ खींचा और फिर उसे पलटा कर एक झन्नाटेदार थप्पड़ उसके गाल पर रसीद कर दिया। उसको इस सबकी उम्मींद हर्गिज़ भी न थी। इधर मैं इतने पर ही न रुका था, बल्कि उसको पकड़ कर पूरी शक्ति से एक तरफ उछाल दिया। वो लड़खड़ाता हुआ दीवार से टकराया और नीचे गिर गया। तभी मेरे कानों में चंदा की चीख़ फिर से पड़ी। मेरा ध्यान उस तरफ गया तो मैं जगन की तरफ न जा कर पलटा और तेज़ी से कमरे के अंदर की तरफ दौड़ गया।

कमरे के अंदर का नज़ारा देख कर मैं गुस्से से पागल हो गया। मेरा बापू चंदा के ऊपर चढ़ा हुआ उसका ब्लाऊज फाड़ रहा था। नशे की हालत में उसे ज़रा भी होश नहीं था कि वो क्या कर रहा है? बापू के नीचे दबी चंदा बुरी तरह छटपटाए जा रही थी और चीखे जा रही थी। ये

सब देख कर मैं उस तरफ बिजली की सी तेज़ी से लपका और फिर मैने बापू को पीछे से पकड़ कर पूरी ताकत से अपनी तरफ खींचा और फिर कमरे के फर्श पर लगभग फेंक दिया। बापू नशे में लड़खड़ाता ज़मीन पर लुढ़कता चला गया था।

" तेरी हिम्मत कैसे हुई मेरी चंदा को इस तरह हाथ लगाने की ?" मैने गुस्से से चीखते हुए झुका और बापू को दोनो हाथो से पकड़ कर उठा लिया __" तू इतना गिर गया है कि तुझे ये भी होश नहीं आया कि तू किसके साथ ये नीचता कर रहा है ?"

" अबे छोंड़ मादर---। " बापू नशे में ज़ोर से चिल्लाया _" मुझे अपनी नई नवेली मेहरिया के साथ सुहागरात मना लेने दे। साला कैसा बेटा है तू कि अपने बाप को उसकी बासु रू के पास भी नहीं जाने देता ?"

" ज़ुबान को लगाम दे बापू। " मैने बापू के कालर को पकड़ कर उसे झकझोरते हुए कहा __" वरना यहीं पर ज़िंदा गाड़ दूँगा तुझे। तुझे पता था न कि मैं चंदा को पसंद करता हूँ और उसी से शादी करना चाहता हूँ इसके बावजूद तूने मेरी चंदा से ब्याह कर लिया। ऐसा क्यों किया बापू ? चंदा तो तेरी अपनी बेटी के समान ही थी फिर क्यों उससे ब्याह किया तूने ? तुझे अपने इस बेटे की खुशियों का ज़रा भी ख़याल नहीं आया ?"

" बकवास ना कर हरामखोर। " बापू मुझसे छूटने की कोशिश करते हुए चीखा __" वो तेरी अम्मा है समझे। बार बार मेरी चंदा मेरी चंदा की रट क्यों लगा रहा है तू ?"

" क्योंकि चंदा मेरी ही थी बापू। " मैने चीखा __" मैं उससे प्रेम करता था और करता रहूँगा। तू भी तो जानता था ये सब। फिर क्यों उससे ब्याह रचाया तूने ? क्यों अपने बेटे का गर बसने से पहले ही उजाड़ दिया तूने ? अरे तुझे अपना ब्याह ही करना था तो किसी दूसरी लड़की से कर लेता बापू। चंदा से ब्याह करके तूने मेरी खुशियों का गला क्यों घोंट दिया ?"

" अरे मुझे कुछ नहीं पता था इस बारे में। " बापू ने कहा _" और फिर अगर तू चंदा को पसंद ही करता था और उससे ब्याह ही करना चाहता था तो तुझे बताना चाहिये था न। पर तूने तो कभी बताया ही नहीं। अब अगर मैने उससे ब्याह कर लिया तो इसमे मेरी क्या ग़लती है ?"

" सारी ग़लती है तेरी। " मैं पूरी शक्ति से चीखा __" तूने चंदा से उसकी मर्ज़ी के बिना ब्याह किया है। ये बात मैं अच्छी तरह जानता हूँ। तूने चंदा के बाप को पैसों का लालच दिया होगा। तभी चंदा के बाप ने अपनी बेटी का ब्याह तुझसे किया होगा। उस कसाई को भी अपनी बेटी की खुशियों से कोई लेना देना नहीं था। तभी तो आँख बंद करके उसने एक बूढ़े से अपनी कम उमर बेटी का ब्याह कर दिया। मुझे पता है कि चंदा इस ब्याह हे खुश नहीं है। अगर खुश होती तो वो इस तरह चीखती नहीं। "

" अरे शुरू शरु में हर औरत थोड़ा बहुत चीखती है उर घबराती है। " बापू ने कहा __" मगर जब एक बार लिंग अंदर गया तो सारी घबराहट और सारा चीखना बंद हो जाता है। वही तो

करने जा रहा था मैं। मगर ससुरी ज्यादा ही उछल रही थी। लेकिन कोई बात नहीं , सुहागरात तो मैं मना के ही रहूँगा। "

मैं बापू की इस बात से बुरी तरह तिलमिला गया। मेरे अंदर गुस्से की ज्वाला धधक उठी। मैं बापू को खींच कर कमरे से बाहर लाया और बरामदे में लाकर ज़ोर का झटका दे कर ज़मीन पर पटक दिया। बापू के मुख से दर्द में डूबी चीख निकल गई। वो मुझे गंदी गंदी गालियाँ बकने लगा। मेरा गुस्सा और बढ़ गया। मैंने उसे उठा कर दीवार से सटा दिया और उसकी गर्दन पर अपने दोनों हाथ ताकत से जमा दिये। नतीजा ये हुआ कि बापू बुरी तरह छटपटाने लगा। उसकी आँखें बाहर को निकलने के लिए आतुर हो उठीं। मुझे गुस्से में अब कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। मैं मजबूती से बापू का गला दबाए जा रहा। तभी पीछे से किसी ने मेरे सिर पर किसी ठोस चीज़ का वार किया। मेरे हलक से चीख़ निकल गई। आँखों के सामने पहले तो रंग बिरंगे तारे नाचे उसके बाद आँखों के सामने अंधेरा सा छाता चला गया। मैं दोनो हाथो से अपना सिर थामे लहरा कर वही बरामदे की ज़मीन पर धड़ाम से गिर पड़ा। उसके बाद मुझे याद नहीं कि आगे क्या हुआ?

जब मुझे होश आया और मेरी आँखें खुलीं तो एकाएक ही तेज़ प्रकाश से मेरी आँखें चुँधिया गईं। मैने धीरे धीरे करके अपनी आँखें खोलीं तो आँखों के सामने खुला आसमान नज़र आया। पहले तो मुझे कुछ समझ न आया इसके बाद जब मैने ग़ौर से हर चीज़ को देखा तो थोड़ा थोड़ा समझ आया। मैने झटके से उठने की कोशिश की तो मेरे मुख से दर्द भरी कराह निकल गई। सिर के पिछले भाग में तेज़ पीड़ा हुई थी। मेरा एक हाथ स्वतः ही उस चोंट वाले हिस्से पर चला गया। मुझे मेरे हाथ में कुछ चिपचिपा सा महसूस हुआ। मैं धीरे धीरे करके उठा और वहीं पर बैठ गया।

बैठ कर मैने इधर उधर देखा तो पता चला कि मैं किसी खेत के बीच पर बैठा हुआ हूँ। एक तरफ लगभग दो सौ गज की दूरी पर गाँव की आबादी दिख रही थी। किनारे पर बने अपने घर को पहचानने में मुझ ज़रा भी देर न लगी। इसका मतलब मैं अपने घर के पिछवाड़े ही दो सौ गज की दूरी पर था। मेरे दिमाग़ ने काम करना शुरू किया तो मेरी आँखों के सामने पिछली रात की सारी घटना किसी चलचित्र की भाँति घूमने लगी।

सब कुछ याद आते ही मुझे सबसे पहले चंदा का ख़याल आया। मेरे मन में विचार उठा कि चंदा कैसी होगी अब? पिछली रात बापू ने क्या किया होगा उसके साथ? कहीं बापू ने चंदा की इज्ज़त तो तार तार तो नहीं कर दिया? हे भगवान, अब क्या होगा? मेरी चंदा लुट गई होगी और मैं अपनी चंदा की सुरक्षा भी न कर सका। ये सब विचार मन में आते ही मैं एकदम से दुखी हो गया और मेरी आँखों से आँसू बह चले। मुझे चंदा की बेहद फिक्र होने लगी। इस लिए अपने दर्द की परवाह किये बिना मैं उठा और अपने घर की तरफ तेज़ी से बढ़ चला। मैने महसूस किया कि ये सुबह का वक्त था। आसमान में सूर्य का प्रकाश अभी ज्यादा तेज़ न हुआ था।

मैं अपने घर की तरफ तेज़ी से बढ़ता चला जा रहा था। मेरे मन में बस एक ही बात चल रही

थी कि चंदा कैसी होगी अब? मैं भगवान से प्रार्थना भी करता जा रहा था कि चंदा को कुछ न हुआ हो। कुछ ही समय में मैं घर के पिछवाड़े की तरफ पहुँच गया। एक तरफ वही कुआॅ था जिसमें गिर कर मेरी अम्मा मर गई थी। कुएॅ वाली जगह से कुछ ही दूरी के फॉसले से चलते हुए मैं घर के पिछवाड़े पर आ गया। पीछे की दीवार से चलते हुए मैं उस हिस्से पर आया जहॉ पर घर की दीवार खत्म हो जाती थी और फिर लकड़ी की बाउंड्री चारो तरफ से बनाई गई थी। मैं लकड़ी की उस बाउंड्री के शुरूआती हिस्से पर आया ही था कि मेरे कानों में मेरे मॅझले भाई जगन की आवाज़ पड़ी तो मैं रुक गया।

" रीना ने सही वक्त पर शंकर के सिर पर लट्ठ मारी थी बापू। " जगन की आवाज़ __" वरना तुम्हारा तो कल्याण ही कर दिया था शंकर ने। "

" हॉ ये तो सही कहा तूने। " बापू की आवाज़ __" सब कुछ वैसा ही करना था जैसा कि हमने तरकीब बनाई थी। मगर तूने अपना काम सही से नहीं किया जगन। वरना शंकर को इतना गुस्सा नहीं आता और ना ही तुझे उससे मार खानी पड़ती। "

" ये दरवाजे से तुम्हारी और चंदा की फिल्म देख रहा था बापू। " मदन कह उठा __" जबकि मैने और रीना ने इसे मना भी किया था कि तरकीब के अनुसार हमें चुपचाप यहीं पर लेटे रहना है। मगर ये नहीं माना और अंदर की फिल्म देखने लगा। उधर जैसे ही चंदा की चीख़ शंकर के कानों में वैसी ही वो दौड़ते हुए यहॉ आ गया और दरवाजे पर जगन को इस तरह अंदर की तरफ झॉकते देख उसे क्रोध आ गया। बस फिर तो इसको पिटना ही था बापू। "

" हाथ तो मैं भी उठा सकता मदन। " जगन ने तीखे भाव से कहा __" मगर मैने सोचा कि उससे काम न बिगड़ जाए। इस लिए मैने उस कमीने शंकर पर हाथ नहीं उठाया। वरना गुस्सा तो मुझे भी भयंकर आ गया था उस पर। "

" अच्छा हुआ कि तुमने हाथ नहीं उठाया उस पर। " रीना ने कहा __" वरना कुछ और ही होने लगता और हमारा खेल बिगड़ जाता। "

" ये सब तो ठीक है बापू। " मीना की आवाज़ __" मगर मुझे अब तक ये समझ नहीं आया कि ये सब चक्कर क्या है ? मतलब ये कि अम्मा के रहने पर भी और उसके मरने के बाद भी तुम्हारी जिस्मानी ज़रूरत तो हम दोनो बहनें मिल कर पूरी कर ही देती थीं। फिर तुम्हें चंदा से ब्याह करने की क्या ज़रूरत पड़ गई ? क्या इस लिए कि अब तुम्हारा हमसे दिल भर गया है ? दूसरी बात शंकर भाई को इसमें लपेटने का क्या मतलब है ?"

" ये सारा चक्कर तो इस जगन की वजह से ही चलाना पड़ा मेरी रांड बेटी। " बापू की आवाज़ __" असल बात ये थी कि इसे भी पता चल गया था कि शंकर चंदा से प्रेम करता है और उससे ब्याह करना चाहता है। अब भला जगन ये कैसे बरदाश्त कर लेता कि उसका बड़ा भाई जिसे वो बचपन से ही पसंद नहीं करता है वो किसी वजह से खुश हो जाए ? इस लिए शंकर और चंदा के विषय में पता चलते ही ये मेरे पास आया और मुझसे बोला कि शंकर का ब्याह चंदा से किसी भी कीमत पर नहीं होना चाहिए। इसने एक दो बार चंदा को देखा था इस

वजह से ये भी उसे पसंद करने लगा था। मगर इसे ये बात अच्छी तरह पता थी कि चंदा इसके प्रेम को स्वीकार नहीं करेगी। इस लिए इसने सोचा कि अगर चंदा इसकी नहीं तो शंकर की भी नहीं होगी। मैने इससे पूछा कि फिर ये चाहता क्या है तो इसने कहा कि कुछ ऐसा करो बापू कि चंदा इस घर में हमेशा के लिए आ जाए और हम सब मिल कर जीवन भर उसे भोगें। बात क्योंकि सबके भले की थी इस लिए मुझे भी इसकी बात पसंद आई। मगर सवाल ये था कि ऐसा होगा कैसे ? क्योंकि चंदा तो शंकर से प्रेम करती थी और शंकर उससे ब्याह भी करना चाहता था। मैं भले ही उसे ब्याह से इंकार कर देता मगर उसकी वो सती सावित्री अम्मा उसकी खुशी ही देखती और नतीजा ये होता कि वो शंकर का ब्याह उस चंदा से ज़रूर करा देती। जबकि ऐसा हम चाहते ही नहीं थे। इस लिए हमने सोचा कि सबसे पहले हमें अपने रास्ते से शंकर की उस ससुरी अम्मा को ही हटाना पड़ेगा। वैसे भी वो साली किसी काम की तो थी नहीं। खुद तो मुझे कभी देती नहीं थी ऊपर से उसके डर से हम आपस में भी मज़ा नहीं कर पाते थे। इस लिए उसे अपने रास्ते से हटाने का सोच लिया हमने। ये बात तो तुम सबको पता ही है कि कैसे हम लोगों ने मिल शंकर की अम्मा को अपने रास्ते से हटाया था। वो शंकर साला आज भी यही समजता है कि उसके अम्मा की मौत महज एक हादसा था जो भगवान के विधान के हिसाब से हो गया था। मगर उसे क्या पता कि उसकी अम्मा को हमने कैसे सोच समझ कर अपने रास्ते से हटाया है ? हर दिन की तरह उस दिन भी मैं शंकर को लेकर काम पर चला गया था और तुम सबको समझा दिया था कि कब क्या करना है। बस तुम लगों ने वैसा ही किया था। यानी कि जैसे ही शंकर की अम्मा नहाने के लिए कुएॅ में गई तो जगन और मदन भी छुप कर उस तरफ चल दिये। शंकर की अम्मा ने जब बाल्टी को रस्सी से बॉध कर कुएॅ में डाला और पानी से भरी बाल्टी को खींचना शुरू किया तो तभी जगन और मदन दोनो ने मिल कर अम्मा को पीछे से धक्का दे दिया। जिससे अम्मा रस्सी बाल्टी सहित कुएॅ में जा गिरी। उसको तैरना तो आता नहीं था इस लिए थोड़ी ही देर में साली पानी में डूब गई। कुछ घंटे बाद जब वो वापस पानी की सतह पर आ गई तो जगन और मदन दोनो ही समझ गए कि अम्मा का राम नाम सत्य हो चुका है। इस लिए तुरंत ही अंदर आकर रीना को कह दिया कि अब वो आगे का काम करे। रीना भागती हुई हमारे पास आई और अम्मा के मरने की सूचना हमें दी। बस उसके बाद का तो सबको पता ही है कि क्या कैसे हुआ ?"

" अम्मा के मरने का तो पता है बापू। " मीना ने कहा __" मैं चंदा वाले चक्कर का पूछ रही हूॅ। उसके बारे में बताओ। "

" अम्मा के मर जाने से हमारा रास्ता साफ हो गया था। " बापू ने कहा __" मगर शंकर बेचारा ज़रूर अपनी अम्मा के मर जाने से ग़मज़दा हो गया था। जब कुछ दिन उसकी अम्मा को मरे हो गए तो हमने आगे का काम शुरू किया। मैं हर दिन शंकर को काम पर लगा कर चार चार घंटे के लिए गायब हो जाता और सीधा चंदा के गॉव उसके घर पहुॅच जाता। चंदा का बाप मंगा साकेत थोड़ा लालची किस्म का था और गॅजेड़ी भी था। काम धाम करके जो भी कमाता उसे वह गॉजा पीकर और देसी चढ़ा कर उड़ा देता था। मैने उसकी इसी आदत का फायदा उठाया और रोज़ उसे देसी दारू पिलाता और खुद भी पीता। कुछ ही दिन में मेरी उससे खूब बनने लगी। एक तरह से मैं उसका पक्का यार बन गया था। ख़ैर , इसी तरह कुछ दिन गुज़र गए। जब मुझे लगने लगा कि अब मुख्य बात आगे बढ़ाने से नुकसान नहीं है तो मैने उससे मुद्दे की बात छेंड़ दी। सबसे पहले तो मैने बस उसके मन और विचार का ही पता लिया।

चंदा के ब्याह के बारे में पूछा उससे तो कहने लगा कि उसे चंदा के ब्याह की ही चिंता है। मगर आर्थिक हालत बहुत ज्यादा खराब होने की वजह से वो चंदा का ब्याह कर नहीं पा रहा है। मैंने उसे एक सुझाव दिया कि किसी ऐसे शख्स से वह चंदा का ब्याह कर दे जो उमर में चंदा से थोड़ा बहुत बड़ा हो। इससे उसे ज्यादा दहेज भी नहीं देना पड़ेगा। मेरी बात उसे जॅच गई। आख़िर उसे अपने हालात का तो पता ही था इस लिए बेबसी मे ही सही किन्तु उसे इस बारे में सोचना ही पड़ा। उसने मुझसे पूछा कि ऐसा कौन व्यक्ति है जो चंदा से उमर में थोड़ा बहुत बड़ा हो और उसे दहेज न देना पड़े तो मैने यूँ ही मज़ाक में उससे कह दिया कि मेरे साथ ही कर दे अपनी चंदा का ब्याह। मैं दहेज में उससे कुछ नहीं मागूँगा बल्कि उल्टा उसे ही थोड़ा बहुत रुपया पैसा दे दूँगा। मैने ये बात उससे बस उसका मन देखने के उद्देष्य से कही थी वो भी हॅसते हुए। वो मेरी ये बात सुन कर हैरान तो हुआ मगर फिर बोला कि यार अगर सच में तुम मेरी चंद से ब्याह कर लो तो मुझे कोई ऐतराज न होगा। हॉ उमर ज़रूर तुम्हारी थोड़ी क्या बहुत ज्यादा है मगर कोई बात नहीं। लड़के बच्चे तो पहले से ही हैं तुम्हारे तो बच्चे के लिए कोई झंझट ही नहीं रहेगी। कहने का मतलब ये कि मज़ाक में कही हुई मेरी बात चल गई। बस फिर क्या था ? मैने ज़रा भी देर नहीं की और फटाफट चंदा से ब्याह कर लिया मैने। इस ब्याह में मैने चंदा के बाप को पूरे पचास हज़ार रुपये दिये थे। कुछ ब्याह के खर्च के लिए और कुछ खुशी से। इतने सारे पैसे एक साथ पाकर चंदा का बाप भी खुश हो गया था। इस ब्याह में कोई ताम झाम करने का मैने पहले ही मना कर दिया था। इस लिए किसी को ज्यादा कुछ पता भी नहीं चला। उस दिन भी मैं चंदा के बाप को देसी दारू पिलाकर और पीकर आया था जिस दिन मैने चंदा से ब्याह रचा कर उसे घर लाया था। मुझे पता था कि शंकर को जब ये सब पता चलेगा तो वो पागल सा हो जाएगा। मगर कुछ कर नहीं पाएगा। क्योंकि सबसे बड़ी सच्चाई तो यही बन जाएगी न कि चंदा अब उसकी प्रेमिका नहीं बल्कि अम्मा है। अगर उसमें ज़रा सी भी ग़ैरत होगी तो वो खुद ही इस गर की छोंड़ कर कहीं चला जाएगा या फिर जीवन भर अपनी चंदा को अम्मा के रूप में देख कर अंदर ही अंदर तड़पता रहेगा। जबकि हम सब हर दिन हर रात उसकी चंदा का भोग लगाएॅगे। "

बाहर दीवार की ओट में खड़ा मैं बापू की ये सब बातें सुन रहा था। मेरा चेहरा ऑसुओं से तर था। अपनी जगह पर मैं इस तरह खड़ा रह गया था जैसे किसी ऋषी ने मुझे पत्थर बन जाने का श्राप दे दिया हो। इतना बड़ा छल, इतना बड़ा अपराध किया था इन लोगों ने मिल कर जिसकी कोई सीमा नहीं थी। एक बाप के अपनी ही बेटी के साथ नाजायज़ संबंध थे और मेरे दोनो भाइयों के अपनी बहनों के साथ। ये एक ऐसी सच्चाई थी जिसे मैं सब कुछ सुन लेने के बावजूद हजम नहीं कर पा रहा था। मेरे अंदर जज़्बातों का भयंकर तूफान चालू था। ऐसा लग रहा था जैसे सारी कायनात को एक झटके में शोलों के हवाले कर दूँ। मगर ऐसा करना मुझसे संभव न था। जबकि उधर,,,,

" ये सब छोंड़ो बापू। " तभी जगन की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी __" अब तो जो होना था वो तो हो ही गया। हमने कल रात जी भर के चंदा के मज़े लिए। कसम से बापू बड़ा ही कड़क माल थी चंदा। साली ने ग़जब का मज़ा दिया। "

" मज़ा तो हमने ज़बरदस्ती लिया भाई। " मदन ने कहा __" वो तो हमें हाथ भी नहीं लगाने दे रही थी। बार बार हमसे रहम की भीख मॉग रही थी और अपनी इज्ज़त की दुहाई दे रही थी।

मगर हमने तो मज़ा करना था सो किसी तरह कर ही लिया। बाद में तो उसके भी कस बल ढीले पड़ गए थे। साली ऐसे लेटी रह गई थी जैसे कह रही हो कि आओ और कर लो जो करना हो। हाहाहाहा। "

" नया माल मिल गया तो कल रात हम बहनों की तरफ देखा भी तुम लोगों ने। " रीना की आवाज़ में शिकायत थी , बोली __" सच कहती हैं औरतें कि सब मर्द एक जैसे ही होते हैं। नया और ताज़ा बिल मिल गया तो भोसड़े की तरफ फिर देखते भी नहीं मर्द। "

" अरे ऐसी कोई बात नहीं है मेरी रंडी बेटी। " बापू की आवाज़ __" बस कल रात की ज़रा बात ही अलग थी न इस लिए। बाकी ये तो तू भी जानती है न कि नया नौ दिन तो पुराना सब दिन। इस लिए चिंता मत कर तुम दोनो हमारी असली माल ही हो। "

" बापू बड़ा दिल कर रहा है। " जगन की आवाज़ __" ऐसा लगता है कि फिर से चंदा रानी के पास जाऊँ और तबीयत से उसकी बजा कर आऊँ। "

" भाई तूने तो मेरे मुह की बात कह दी। " मदन की आवाज़ सुनाई दी __" मेरा भी बहुत दिल कर रहा है चंदा को पेलने का। चल दोनो एक एक बार तबीयत से पेल कर आते हैं उसे। क्यों बापू तुम्हें भी चलना है ???"

" अरे नहीं भई। " बापू की हॅसी की आवाज़ __" तुम दोनो ही जाओ। मुझमें अभी इतनी शक्ति नहीं है कि तुम लोगों का साथ दे सकूँ। साला कल रात दारू के नशे में समझ में ही नहीं आया कितनी मेहनत हो गई मुझसे। अब जब दारू उतरी तो समझ आ रहा है कि टॉगों में जान ही नहीं है। "

" हाहाहाहाहा ले भाई। " मदन के ठहाकों की आवाज़ गूँजी __" बापू तो गया काम से। चल हम दोनो ही किला फतह करके आते हैं। "

" हॉ हॉ जाओ जाओ। " मीना की आवाज़ __" कर लो किला फतह। मगर याद रखना लौट कर हमारे पास ही आओगे। "

" जाने दे मेरी रांड बिटिया। " बापू बोला __" नया माल है न इस लिए उसकी चुलुक कुछ ज्यादा ही होती है। याद कर जब इन लोगों तुम दोनो के साथ जब किया था तो कैसे सारा दिन तुम दोनो के पीचे पीछे घूमते रहते थे ?"

" अच्छी तरह याद है बापू। " मीना के हॅसने की आवाज़ आई __" ये दोनो हम दोनो बहनों के पीछे पीछे लगे ही रहते थे। इन लोगों को तो ये भी होश नहीं रहता था कि अम्मा को अगर पता चल गया तो क्या ग़जब हो जाएगा ?"

बाहर खड़ा मैं ये सब सुन रहा था और अंदर ही अंदर गुस्से की आग में जला जा रहा था। मुझे लग रहा था कि अभी जाऊँ और सबको एक साथ खत्म कर दूँ। मेरे हाथो की दोनों मुट्ठियॉ कस गईं थी। जबड़े सख्ती से भिंच गए थे। नथुने फूल कर गुब्बारा हुए जा रहे थे। तभी,,,,

" ओएऽऽ बाऽऽऽपू ग़जब हो गया रे। " जगन की लगभग बदहवाशी से भरी आवाज़ सुनाई दी __" सब गड़बड़ हो गया। अब क्या होगा बापू ???"

" अरे क्या हुआ ?" बापू ने घुड़की सी दी __" क्यों चिल्ला रहा है ? क्या गड़बड़ हो गया ???"

" बापू वो वो चंदा। " मदन की लड़खड़ाती हुआ आवाज़ सुनाई दी __" अंदर वो चंदा ऐसे पड़ी है जैसे मर गई है। "

" क्या बकता है मादर--- ??" बापू की जैसे चीख ही निकल गई थी , बोला __" बहेन## साले शुभ शुभ बोल। "

" मदन सच कह रहा है बापू। " जगन की आवाज़ _" हम दोनों जब अंदर गए तो देखा चंदा चारपाई पर आधी लटकी हुई पड़ी थी एकदम वैसी ही नंगी हालत में जैसे कल रात हम छोंड़ कर आए थे उसे। मैने उसकी नॉक के पास उँगली रखी और उसकी कलाई की नब्ज भी देखी। मगर ना ही उसके नॉक से सास आ जा रही है और ना ही नब्ज चलती हुई महसूस हो रही है। इसी लिए हमें लग रहा है कि चंदा का राम नाम सत्य हो गया है। अब क्या होगा बापू ? चंदा अगर सच में मर गई और ये बात गॉव वालों को पता लग गई तो हम कहीं के न रह जाएंगे बापू। "

जगन की इन बातों के बाद कुछ देर तक कोई आवाज़ न आई। जैसे उधर सबको सॉप सूँघ गया हो। बाहर खड़ा मैं भी ये सुन कर जैसे बेजान लाश में तब्दील हो गया था। जिसका डर था वो तो हो ही चुका था किन्तु इस सबका परिणाम ये निकलेगा ये मैने स्वप्न में भी नहीं सोचा था। मुझे लगा कि मैं दहाड़ें मार कर रो पड़ूँ मगर मैने अपने अंदर के मचलते हुए जज़्बातों को बड़ी मुश्किल से दबाया हुआ था। जबकि उधर,

" ये तो सच में बहुत ही बुरा हुआ। " बापू की आवाज़ में डर व भय झलक रहा था __" ये सब हमारी वजह से ही हुआ है। हमने अपने मज़े के चक्कर में ये भी नहीं सोचा कि कच्ची उमर की उस चंदा के साथ इतना कुछ एक ही बार में नहीं करना चाहिए था। वरना उसका परिणाम यकीनन यही निकलेगा। दूसरी बात हमने शंकर को रात में खेतों पर फेंक आए थे। वो उस वक्त बेहोशी हालत में था। संभव है कि उसे अब तक होश भी गया होगा। अब अगर इस परिस्थिति में वो यहॉ आ गया तो हम सोच भी नहीं सकते हैं कि वो क्या कर डालेगा ? चंदा को इस हाल में देखेगा तो वो यकीनन हम सबके लिए काल बन जाएगा। "

" बापू शंकर की इस बात से मेरे दिमाग़ में एक ज़बरदस्त तरकीब आई है। " जगन की आवाज़ __" अगर कहो तो उगलूँ मुख से ??"

" अरे तो उगल ना मादर---। " बापू चीखा _" क्या तब उगलेगा जब तेरी अम्मा ठुक जाएगी साले ??"

" मेरी दोनो अम्मा को तो तुमने ही ठोक डाला है बापू। " जगन के हँहने की आवाज़ __" ये अलग बात है कि तुमने हमें हमारी पहली अम्मा को पेलने का मौका नहीं दिया जबकि उसको

पेलने की हमारी हसरत साली धरी की धरी रह गई। "

" बकवास ना कर बहेन##। " बापू गुर्रायाा __" पहले तरकीब उगल मुख से। साला सत्यानाश हो गया हमारा। "

" बापू तरकीब ये हैै " जगन की आवाज़ __" कि चंदा की इस मौत में हम उस मादर--- शंकर को फॅसा देते हैं। "

" वो कैसे ?" बापू का चौंका हुआ स्वर उभराा _" मेरा मतलब कि हम शंकर को चंदा की मौत में कैसे फॅसा सकते हैं ?"

" बड़ी सीधी सी बात है बापू। " जगन ने कहाा __" हम सबको बताएॅगे कि ये सब शंकर ने ही किया है। हम गॉव वालों को बताएॅगे कि तुमने जिस चंदा से ब्याह किया उसे शंकर पहले से ही पसंद करता था और उससे ब्याह भी करना चाहता था। जबकि चंदा तो शंकर को जानती भी नहीं थी। शंकर ने जब देखा कि वो जिसे पसंद करता था और जिससे ब्याह करना चाहता था वो तो खुद उसके ही बाप की जोरू बन गई तो शंकर ये सहन न कर सका। उससे ये सहन न हुआ कि जिसे वो खुद अपनी जोरू बनाना चाहता था वो खुद उसके बाप की ही जोरू बन कर उसकी अम्मा बन गई। इस लिए वो रात को देशी दारू पी कर आया और ज़बरदस्ती बापू के कमरे में घुस गया। कमरे में उसने जबरदस्ती चंदा की इज्जत को लूटा और फिर उसकी जान भी ले ली। "

" तरकीब तो अच्छी है बेटवा। " बापू की आवाज़ __" पर गॉव वाले यकीन कैसे करेंगे ? वो तो पूछेंगे न कि शंकर ने ये सब हम सबकी मौजूदगी में कैसे कर लियाा ? तब क्या जवाब देगा तू ?"

" हम उनसे कहेंगे कि शंकर ने कमरे के दरवाजे पर इस तरह मोटी सी लकड़ी से टेक लगा दिया था कि उस दरवाजे को लाख कोशिशों के बाद भी हम सब खोल नहीं पाए। " जगह कह रहा थाा __" कमरे का वो दरवाजा तभी खुला जब शंकर ने चंदा का काम तमाम कर दिया था। उसके बाद वो खुद ही बाहर आ गया था। उसके हाथ में मोटी सी वही लकड़ी थी जिससे उसने दरवाजे पर टेक लगाया हुआ था। हम सब ये डर से कुछ न बोल सके थे कि कहीं वो गुस्से में हम लोगों को मारना न शुरू कर दे। बस इतनी बात काफी है गॉव के लोगों को यकीन दिलाने के लिए। "

" ऐसा तुझे लग रहा है। " बापू की आवाज़ __" जबकि कुछ लोग ये भी पूछ सकते हैं कि जब हमारे घर में ये सब हो रहा था तो हमने शोर शराबा करके गॉव वालों को क्यों नहीं बुला लियाा ? तब क्या कहेंगे हम ?"

" हम कह देंगे बापू कि हमें उस वक्त कुछ सूझ ही नहीं रहा था कि क्या करें और क्या न करें ?" जगन ने कहाा _" बस गॉव वालों को हमारी बात पर यकीन करना ही पड़ेगा। वैसे भी गॉव के लोगों को ये उम्मीद भला कहॉ होगी इस सबकी जो हम लोगों ने किया है। दूसरी महत्वपूर्ण बात ये भी हमारी बात को साबित करेगी जब शंकर यहॉ पर मौजूद नहीं रहेगा। शंकर की ग़ैर मौजूदगी भी गॉव वालों को यकीन दिलाने में पुख्ता वजह रहेगी। "

" लेकिन शंकर यहॉ मौजूद क्यों नहीं होगा भला ?" बापू की आवाज़ __" वो भला कहॉ चला जाएगा ?"

" ग़ौर करने वाली बात है बापू। " जगन ने कहा _" शंकर की जानकारी में और उसके सामने इतना कुछ हो गया है उसकी प्रेमिका के साथ। तो भला वो अब यहॉ किस वजह से लौट कर आएगा ? दिल का मामला बड़ा विचित्र होता है बापू। उसका इस संसार में उसके प्रेमी के अलावा दूसरा कोई नहीं रह जाता और जब उसके रहते उसकी प्रेमिका का ये हाल हो जाए तो भला वो अपना मुह दिखाने के लिए यहॉ क्यों रहेगा ? बल्कि वो तो कहीं पर चुल्लू भर पानी की तलाश करेगा ताकि उसमें डूब कर वो मर सके। "

" वाह भाई वाह क्या लच्छेदार बात कही है मेरे मादर--- बेटे ने। " बापू की प्रशंशा में डूबी हुई आवाज़ _" ये तो कमाल ही हो गया। इतनी बड़ी और इतनी गहरी बात मेरे दिमाग़ में नहीं आई। जबकि तूने साबित कर दिया कि तू इस संसार का सबसे बड़ा वाला कमीना इंसान है। "

" बापू तारीफ़ करने का भला ये कौन सा तरीका है ?" मदन ने हॅसते हुए कहा __" जगन ने ग़लत क्या कहा भला ? सारी बातों को सोच कर उसने इस सबसे बचने की जो तरकीब बताई है वो यकीनन लाजवाब है। इस लिए अब हमें बिलकुल भी देर नहीं करना चाहिए। बल्कि तुरंत ही जगन की इस तरकीब पर अमल करना चाहिए। "

" सही कह रहा है तू। " बापू की आवाज़ __" इसके सिवा दूसरा कोई चारा भी तो नहीं है हमारे पास। अतः अब हम जगन की इस तरकीब के अनुसार ही काम शुरू करते हैं। अब जो होगा देखा जाएगा। "

उधर वो सब तरकीब पर अमल करने की बातें कर रहे थे जबकि इधर मेरे गुस्से की जैसे इंतहां हो गई थी। इतनी घटिया सोच और ऐसे पापी लोगों का इस समाज में जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं रह गया था। मेरे दिलो दिमाग़ उन सबके लिए घृणा और नफ़रत में निरंतर इज़ाफा होता चला गया था। मैं तुरंत ही अपनी जगह से हिला और लकड़ी की उस बाउंड्री के इस पार से चलते हुए घर के सामने की तरफ आया और सामने से अंदर की तरफ बढ़ चला।

बरामदे के बाहरी तरफ दीवार पर टेक लगा कर रखी हुई कुल्हाड़ी पर मेरी नज़र पड़ी। मेरे जिस्म में दौड़ते हुए लहू में जैसे एकदम से उबाल आ गया। मैं तेज़ी से उस कुल्हाड़ी की तरफ बढ़ा और उसे दाहिने हाथ से उठा कर बरामदे की तरफ बढ़ा। अंदर दाखिल होते ही मुझे जगन और मदन मेरी तरफ पीठ किये खड़े नज़र आए। इससे पहले कि कोई कुछ महसूस कर पाता मेरा कुल्हाड़ी वाला हाथ बिजली की तरह चला और खचाऽऽक से जगन की गर्दन पर पड़ा। कुल्हाड़ी वार लगते ही जगन की गर्दन आगे की तरफ झूल गई। उसके कटे हुए धड़ से खून का मानो फब्बारा सा उठ गया। इधर मैं इतने पर ही नहीं रुका। बल्कि किसी के होश में आने से पहले ही एक बार पुनः मेरा कुल्हाड़ी वाला हाथ बिजली की सी तेज़ी से चला और इस बार मदन के सीने में गड़ता चला गया। सीने में इस लिए कि वो ऐन वक्त पर मेरी तरफ घूम गया था।

पल भर में इस सबको देखते ही मेरी दोनो बहनों के हलक से चींखें निकल गई। बापू के सामने ही उसके पैरों के पास जगन मृत अवस्था में खून से लथ पथ पड़ा था। ये देख कर बापू को जैसे लकवा सा मार गया था। उसकी घिग्घी बँध गई थी। इधर मेरी एक बहन मीना बाहर की तरफ तेजी से भागी। मैने पलट कर तेज़ी से कुल्हाड़ी चला दी। कुल्हाड़ी उड़ते हुए मीना की पीठ पर गड़ती चली गई और वो प्रहार के वेग में मुह के बल ज़मीन पर गिरी। वो मछली की तरह कुछ देर तड़पी और फिर शान्त पड़ गई। मैने आगे बढ़ कर उसकी पीठ से एक ही झटके में कुल्हाड़ी को खींच लिया।

उधर रीना के चिल्लाने से जैहे बापू को होश आया। अतः वो तुरंत उठा और कमरे के अंदर की तरफ शोर मचाते हुए भागा। उसके पीछे ही रीना भी भागी। कमरे के अंदर जा कर दोनो ने दरवाजे को बंद कर अपने अपने हाथो से दरवाजे पर ताकत से दबाव बढ़ा दिया।

" दरवाजा खोल बापू। " मैं कुल्हाड़ी लिए शेर की तरह गरज उठा था __" आज मेरे हाथो तुम सबकी मौत निश्चित है। "

" ये तूने किया शंकर ?" अंदर से बापू की भय से कॉपती हुई आवाज़ आई __" तूने अपने हाथो अपने ही भाई और बहन को काट कर मार डाला। आख़िर ऐसा क्या हो गया है तुझे कि तूने ये नरसंघार कर दिया ?"

" मुझसे क्या पूछता है हरामज़ादे ?" मैने दहाड़ते हुए कहा __" इस सबका कारण तो तू ही है। मैने तेरी और तेरे इन पिल्लों की सारी बातें सुन ली हैं। तूने अपने मतलब के लिए मेरी अम्मा को कुएॅ में गिरा कर मार डाला। उसके बाद तूने मेरी मासूम चंदा के भोले भाले बाप को फॅसा कर उसकी बेटी से ब्याह किया। सिर्फ इस लिए कि तू उस मासूम और निर्दोष के साथ मज़े कर सके और ये सब तूने उस मादर--- जगन के कहने पर किया। ये बता कि तुझे एक बार भी नहीं लगा कि जो ते कहने जा रहा है वो सबसे बड़ा पाप है ? अपनी ही बेटियों के साथ तू मुह काला करता है। तेरे दोनो बेटे अपनी ही बहन के साथ नाजायज़ संबंध बनाते हैं। इतना ही नहीं तू खुद भी उन के साथ ये सब करता है। अरे तुझसे बड़ा इस संसार में कौन होगा बापू ? तूने दो पल के मज़े के लिए रिश्तों को भी नहीं बक्शा। मेरी देवी जैही मॉ को मार डाला तूने और तेरे इन पिल्लों ने। "

" ये सब झूॅठ है शंकर भाई। " रीना रोते बिलखते हुए चिल्ला पड़ी __" तुम जो समझ रहे हो वैसे कुछ भी नहीं है। "

" तू चुप कर बदजात लड़की। " मैं पूरी शक्ति से चिल्लाया था , बोला __" तुझे तो अपनी बहन कहते हुए भी मुझे शर्म आती है ऐ बेहया। तुझमें इतनी ही हवस की आग भरी हुई थी तो कहीं भाग जाती किसी के साथ। कम से कम रिश्तों पर कलंक तो न लगता। मगर नहीं , तू अपने बाप और भाई की रांड बन गई न। नहीं छोंड़ूॅगा , किसी को भी ज़िंदा नहीं छोंड़ूॅगा। दरवाजा खोल वरना इसी कुल्हाड़ी से इस दरवाजे को काट काट कर टुकड़े टुकड़े कर दूॅगा और फिर वैसे ही टुकड़े तुम दोनो नाली के कीड़ों के करू गा। "

" हमें माफ़ कर दे शंकर। " बापू ने रोते गिड़गिड़ाते हुए कहा __" हमसे सच में बहुत बड़ा पाप हो गया है। लेकिन आख़िरी बार माफ़ कर दे हमें। अब दुबारा ऐसा कभी नहीं करेंगे हम। देख तूने अपने ही दो भाई और एक बहन को मार डाला। अब कम से कम हमें तो छोंड़ दे। "

" तू बाहर निकल बेटी ठोक। " मैने चिल्लाया __" उसके बाद बताता हूँ कि कैसे माफ़ करता हूँ मैं ?"

" भगवान के लिए भाई। " रीना बुरी तरह रो रही थी _" बस एक बार माफ़ कर दे। सच कहती हूँ जीवन भर तेरी टट्टी खाऊँगी मैं। "

" मैं आख़िरी बार कह रहा हूँ कि दरवाजा खोल। " मैं गुस्से में चीखा __" वरना दरवाजे को काटने में मुझे ज्यादा समय नहीं लगेगा। उसके बाद मैं तुम दोनो का क्या हस्र करू गा तुम सोच भी नहीं सकते। "

" बेटा माफ़ कर दे न। " बापू गिड़गिड़ाया __" अरे मैं तेरा बाप हूँ रे। तुझे बचपन से पाल पोष कर बड़ा किया है। "

" तो कौन सा बड़ा काम किया है तूने ?" मैने कहा _" तू मुजे बचपन में ही मार देता तो अच्छा होता। कम से कम आज ये सब देखने सुनने को तो न मिलता। मेरी मासूम सी चंदा को तुम लोगों ने रौंद रौंद कर मार डाला। मेरी देवी जैसी अम्मा को मार डाला तुम लोगों ने। अगर तुम लोग मेरी अम्मा और चंदा को वापस मुझे लाकर दे दो तो माफ़ कर दूँगा। वरना भूल जाओ कि मैं माफ़ कर दूँगा तुम दोनो को। "

अंदर से कोई वाक्य न फूटा उन दोनों के मुख से। बस दोनो के रोने की आवाज़ें गूँजती रही। मेरा गुस्सा प्रतिपल बढ़ता ही जा रहा था। मुझसे बरदाश्त न हुआ तो मैं कुल्हाड़ी का वार दरवाजे पर करने लगा। मेरे ऐसा करते ही रीना और बापू ज़ोर ज़ोर से चीखने लगे और रहम की भीख मॉगने लगे। मगर मैं न रुका बल्कि लगातार कुल्हाड़ी का वार दरवाजे पर करता चला गया। नतीजा ये हुआ कि कुछ ही देर में लकड़ी का वो दरवाजा कट कट कर टुकड़ों में निकलने लगा। थोड़ी ही देर में मुझे रीना का हाथ नज़र आया जो दरवाजे पर टिका हुआ था। मैने गुस्से में आव देखा न ताव, कुल्हाड़ी का वार सीधा उसके हाथ पर किया। खचाऽऽऽच की आवाज़ के साथ ही रीना का हाथ उसकी कलाई से कट गया। खून का तेज़ फब्बारा उछल कर फैल गया। कलाई से हाथ कटते ही रीना की हृदय विदारक चीख गूँज गई। वो दरवाजे से हट कर अपने दूसरे हाथ से कटे हुए हाथ को पकड़े पीछे हटती चली गई। उसका ये हाल देख कर बापू भी मारे डर के पीछे की तरफ भागा। दोनो के जाते ही दरवाजे पर से उन दोनो का दबाव हट गया।

मैने दरवाजे पर ज़ोर से एक लात मारी तो दरवाजा खुलता चला गया और इसके साथ ही उन दोनो की चीखना चिल्लाना भी बढ़ गया। मैं दरवाजे के अंदर दाखिल हुआ और उन दोनो की जान ले ली।अपनी माँ का बदला पूरा कर में वहासे भाग निकला । उसके बाद मैंने दरदर की ठोकरे खाई और ऐसे ही जिंदगी काटते काटते में यहाँ पोहच गया हूं।

अपने गुज़रे हुए कल की दुख भरी कहानी बता कर शंकर ने गहरी सास ली और अपने गमछे से अपनी ऑखों से बह चले ऑसुओं को पोंछा। उसके सामने ही खड़े हरिया व साक्षी की ऑखों में भी ऑसू थे। शंकर की कहानी में वो इतना डूब गए थे कि उन्हें ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे सब कुछ उनकी ऑखों के सामने ही वो सब घट रहा था।

हरिया को जाने क्या सूझा कि वो झपट कर शंकर को अपने गले से लगा लिया और फूट फूट कर रो पड़ा। शंकर उसे इस तरह रोता देख मुस्कुराया। ये अलग बात थी कि उसकी ऑखें भी बह चली थी। साक्षी आगे बढ़ कर उन दोनो को एक दूसरे से अलग किया।

" काका आपने अपने अंदर इतना बड़ा दुख छुपा के रखा हुआ था। " साक्षी ने दुखी मन से कहा __" जिसका हमें एहसास तक न था। यकीनन आपके साथ जो कुछ हुआ वो बहुत ही दुखदायी था। मगर आप चिंता मत कीजिए। अब इसके आगे ऐसा कुछ भी नहीं होगा। आप हमेशा हमारे साथ ही रहेंगे। मैं कभी भी आपको ऐसे दुख में जाने नहीं दूँगी जिससे आपको जीने में तक़लीफ हो। "

" भगवान करे ऐसा ही हो बिटिया। " शंकर ने कहा _" मैं भी तुम लोगों को छोंड़ कर कहीं नहीं जाना चाहता। तुम सबसे इतना लगाव हो गया है कि अब अगर ऐसा कुछ हुआ तो यकीनन ये दुख सहन नहीं कर पाऊँगा मैं। "

" अरे तू फिकर काहे करथै ससुरे ?" हरिया ने कहा _" हम अइसन अब कउनव सूरत मा न होंय देब। चल अब ई सब छोंड अउर आपन मन का खुश रख। अउर हॉ ई हमरा वादा हा कि हम बहुत जल्द तोहरा ब्याह एको सुंदर लड़की से करब जउन तोहरी ऊ ससुरी केशरमाँ भौजी जइसनै होई। "

हरिया की ये बात सुन कर शंकर और साक्षी दोनो ही मुस्कुरा कर रह गए। कुछ देर ऐसी ही कुछ और बातें हुईं उसके बाद सहसा साक्षी को कुछ याद आया।

६६

उधर हवेली में!

कई सारी गाड़ियॉ हवेली के बाहर विशाल मैदान में आकर रुकीं। सभी गाड़ियों के सभी दरवाज़े एक साथ खुले और उनमें से कई सारे अजनबी लोग बाहर निकले। सभी आदमियों में ज्यादातर आदमी हट्टे कट्टे व बॉडी बिल्डर टाइप के थे। जबकि कुछ आदमी साधारण कद काठी के थे। वो सब हट्टे कट्टे आदमियों से घिरे हुए थे।

हवेली के बाहर सत्यम सिंह के कुछ आदमी हाथो में बंदूख लिए खड़े थे। उन लोगों ने जब इतने सारे आदमियों को एक साथ हवेली की तरफ आते देखा तो उनके चेहरों का रंग सा उड़ने लगा। उन्हें लगने लगा अब ये कौन सी नई मुसीबत आ गई यहॉ? सब एक दूसरे की तरफ देखने लगे थे। जैसे एक दूसरे से पूछ रहे हों कि ये सब क्या है? किन्तु जवाब किसी के पास नहीं था।

" ठाकुर साहब से कहो कि हम लोग उनके कहे अनुसार अपने आदमियों को यहॉ लेकर आ गए हैं। " एक आदमी ने सत्यम सिंह के एक आदमी से कहा __" हमारे पास ज्यादा समय नहीं है। इस लिए अभी हमें जाना होगा किन्तु हमारे ये आदमी उनके किसी भी आदेश का पालन करने के लिए पूरी तरह तैयार रहेंगे। "

उस आदमी की ये बात कदाचित गार्ड की समझ में न आई थी। इसी लिए वह मूर्खों की तरह उस आदमी को देखता रह गया। उसके चेहरे पर उलझन के से भाव उभर आए थे।

" अरे भाई ऐसे क्यों देख रहे हो हमें ?" आदमी ने चौंकते हुए कहा _" हम सब ठाकुर साहब के बिजनेस वाले फ्रैण्ड्स हैं। अतः जल्दी जाओ और उन्हें बताओ कि मिस्टर रघुनाथ और उनके साथ सभी उनके दोस्त यहॉ आए हुए हैं। "

गार्ड के चेहरे पर फैले उलझन के भाव कम तो न हुए किन्तु उसने इतना अवश्य किया कि पॉकिट से मोबाइल निकाल कर किसी को फोन लगाया। उधर से काल रिसीव करते ही उसने कहा__"मालकिन, कुछ लोग मालिक से मिलने आए हैं। कह रहे हैं कि उनके बिजनेस से संबंधित फ्रैण्ड्स हैं। मेरे लिए क्या आदेश है मालिकन?"

".....। " उधर से कुछ कहा गया और इसके साथ ही काल कट हो गई।

" आप कृपया एक मिनट रुकिये। " फिर उस गार्ड ने बड़ी विनम्रता से कहा __" मालकिन आ रही हैं बाहर। "

" ओके नो प्राब्लेम। " उस आदमी ने कहा और दूसरी तरफ पलट कर इधर उधर देखने लगा।

कुछ ही देर में हवेली का दरवाजा खुला और सोनिया उसमे से बाहर निकली। उसके पीछे ही उसका बेटा जयदीप भी था। हवेली के बाहर इतनी सारी गाड़ियॉ और इतने सारे लोगों को देख कर वो चौंकी। मनो मस्तिष्क में एक ही बात चकरघिन्नी की तरह नाचने लगी कि 'कहीं फिर से कोई सी.बी.आई. वाले नहीं आ गए यहॉ'।

सोनिया की देखते ही गार्ड ने उस आदमी के पास जाकर उसे बताया कि मालकिन आ गई हैं। वो आदमी पलट कर सोनिया के पास आया।

" नमस्कार भाभी जी। " उस आदमी ने खुशदिली से हॉत जोड़ कर नमस्कार करते हुए बोलाा __" हम सब ठाकुर साहब के फ्रैण्ड सर्कल के लोग हैं। ठाकुर साहब से कल मीटिंग में हमारी कुछ बातें हुई थी। जिसके तहत उन्होंने हमसे हमारे कुछ बेहतरीन आदमियों की मॉग की थी। सो इस वक्त हम उसी सिलसिले में यहॉ आए हैं। हमारे पास ज्यादा समय नहीं है इस लिए हम ठाकुर साहब से मिल कर तुरंत ही यहॉ से जाना चाहेंगे। उसके बाद ये उनका काम है कि वो हमारे इन आदमियों के द्वारा क्या काम लेते हैं ?"

सोनिया उस आदमी की बातों से समझ गई कि कल सत्यम सिंह किसी ज़रूरी मीटिंग में था इसी लिए शाम को देर से आया था। तो इसका मतलब मीटिंग इस सबके लिए थी। किन्तु समस्या ये थी कि ये लोग जिससे मिलने आए थे उसे तो सी.बी.आई. वाले सुबह ही अपने साथ ले गए थे। इस लिए अब वो इन्हें क्या जवाब दे यही उसकी समझ में नहीं आ रहा था। सच्चाई बताने पर संभव है कि बात बिगड़ जाती। अगर इन लोगों को अभी पता चल जाए कि सत्यम सिंह को सी.बी.आई. वाले ले गए हैं तो ये लोग तुरंत ही यहॉ से रफूचक्कर हो जाएॅगे।

" क्या बात है भाभी जी ?" उस आदमी ने कहा __" आप किसी गहरी सोच मे डूबी हुई प्रतीत हो रही हैं। कहिए सब ठीक तो है न ? ठाकुर साहब को बुलाइये हम उनसे मिलना चाहते हैं। "

" ठाकुर साहब तो इस वक्त हवेली के अंदर नहीं हैं। " फिर सोनिया को बहाना बनाना पड़ा __" सुबह ही कहीं चले गए थे। कहॉ गए हैं इस बारे में कुछ बताया भी नहीं उन्होंने। "

" ओह आई सी। " उस आदमी ने कहा __" कोई बात नहीं भाभी जी। हम फोन पर बात कर लेंगे उनसे। अच्छा अब हम चलते हैं। हम अपने इन आदमियों कों यहीं पर छोंड़े जा रहे हैं। "

" अरे ऐसे कैसे चले जाएॅगे आप लोग ?" सोनिया ने औपचारिकता के भाव से कहा __" अंदर आइये और कम से कम चाय या कॉफी तो पीकर ही जाइये। वरना आपके ठाकुर साहब मुझे ही डॉटेंगे कि मैने आप लोगों को बिना चाय पानी करवाए ही जाने दिया। "

" इसकी ज़रूरत नहीं है भाभी जी। " आदमी ने हॅसते हुए कहा __" आपने कह दिया इतना ही बहुत है हमारे लिए। अच्छा अब हम चलते हैं , नमस्कार। "

" नमस्कार जी। " सोनिया ने भी प्रत्युत्तर में अभिवादन किया।

इसके बाद वो जितने भी साधारण कद काठी के आदमी सूट बूट पहने आए थे वो सब गाड़ियों में सवार होकर वहाँ से चले गए। उनके जाने के बाद सोनिया ने बाकी बचे हट्टे कट्टे व बॉडी बिल्डर आदमियों की तरफ देखा।

" बेटा इन सबको सर्वेंट क्वार्टर में ले जाओ। " फिर सोनिया ने जयदीप से कहा __" और इनके रहने का इंतजाम करो। तब तक मैं मीनाक्षी(नौकरानी) से कह कर इन लोगों के लिए चाय पानी का उचित बंदोबस्त कराती हूँ। "

" ओके मॉम। " जयदीप ने कहा और हवेली की सीढ़ियाँ उतर कर नीचे आ गया उन लोगों के पास।

उन सबको लेकर जयदीप हवेली के पूर्व दिशा की तरफ बने सर्वेंट क्वार्टर की तरफ बढ़ गया। ये सर्वेंट क्वार्टर सत्यम सिंह ने साल भर पहले ही बनवाया था। उन लोगों के जाने के बाद सोनिया भी अंदर की तरफ चली गई। उसके चेहरे पर सहसा गहन चिंता व परेशानी के भाव गर्दिश करते नज़र आने लगे थे। उसे पता था कि सत्यम सिंह के जो बिजनेस संबंधी दोस्त आए थे वो सत्यम सिंह से फोन पर ज़रूर बात करेंगे। लेकिन जब सत्यम सिंह का फोन नहीं लगेगा तो वो सब परेशान भी हो जाएँगे। उस सूरत में उनका क्या रिऐक्शन होगा इसका कुछ भी अंदाज़ा लगाना मुश्किल था।

सोनिया को समझ नहीं आ रहा था कि इस परिस्थिति में वो क्या करे? उसने मदद के उद्देश्य से ही अपनी इंस्पेक्टर बेटी साक्षी को फोन लगाया था किन्तु उसने कॉल को रिसीव न करके कट कर दिया था। ये सोनिया के लिए शायद आख़िरी सबूत था कि उसकी बेटी ने सचमुच ही अपने मॉ बाप के खिलाफ़ बगावत कर दी थी।

अंदर सोनिया ने मीनाक्षी को उन आदमियों के लिए चाय का कह दिया और खुद आकर ड्राइंग रूम में रखे सोफे पर बैठ गई। उसके चेहरे से चिन्ता व परेशानी के भाव जा ही नहीं रहे थे। वो कुछ भी करके सत्यम सिंह को सी.बी.आई. के चंगुल से बाहर निकालना चाहती थी। हलाँकि उसे पता था कि ऐसे मामलों में अपराधी का कानून की गिरफ्त से बाहर आना बेहद मुश्किल काम होता है किन्तु इसके बावजूद सोनिया सत्यम सिंह को बाहर निकालना चाहती थी।

सहसा सोनिया को अपने पिता कीर्तिमान सिंह का ख़याल आया। सोनिया का बाप कीर्तिमान सिंह आज कल इलाहाबाद हाई कोर्ट में बतौर क्रिमिनल लायर था। ऊम्र से ज्यादा अधेड़ नहीं लगता था। कहा जाता है कि कीर्तिमान सिंह बहुत ही काबिल व तेज़ तर्रार वकील था। चाहे जैसा भी केस हो, मुहमाँगी फीस मिलने पर वह अपने मुवक्किल को बाइज्ज़त बरी करा लेता था। मगर यहाँ पर सोनिया के लिए सबसे बड़ी समस्या ये थी कि वो अपने बाप से मदद माँगे तो माँगे कैसे?

दरअसल, जब सोनिया ने अपने बाप को बताया कि वह सत्यम सिंह से प्यार करती है और उससे शादी करना चाहती है तो कीर्तिमान सिंह बुरी तरह भड़क गया। उसे प्यार शब्द से ही नफ़रत थी। पता नहीं ऐसा क्या था कि प्रेम प्रसंग होने पर वह आपे से बाहर हो जाता था।

उसके घर में नियम कानून बड़े सख्त थे। उसकी दो ही बेटियॉ थी। जिनमें से सोनिया छोटी वाली थी। जबकि पहली बेटी मुंबई में रहती थी, जहॉ आजकल सत्यम सिंह की बेटी मानुषी रहती है। कीर्तिमान सिंह को कोई बेटा नहीं था। धन दौलत की शुरू से ही कोई कमी नहीं थी। ख़ैर, बाप के साफ इंकार कर देने पर सोनिया ने पहली बार अपने बाप से मुहज़ुबानी की थी और साफ शब्दों में कह दिया था कि वो शादी करेगी तो सत्यम सिंह से ही वरना वो कभी किसी से शादी नहीं करेगी। कीर्तिमान को अपनी इस बेटी की धृष्टता पर बेहद गुस्सा आया और उसने उसी वक्त कह दिया उससे कि आज के बाद वो उसके लिए मर गई है। बस सोनिया ने आव देखा न ताव, बाप का घर छोंड़ दिया और सीधा सत्यम सिंह के पास पहुँच गई। सत्यम सिंह के साथ ही वह रहने लगी। इस बीच वो प्रग्नेन्ट हो गई तो आनन फानन में सत्यम सिंह और सोनिया ने आपस में कोर्ट मैरिज कर ली थी।

तब से लेकर अब तक सोनिया ने कभी भी अपने बाप से कोई मतलब नहीं रखा था और ना ही उसके बाप कीर्तिमान ने। सोनिया की इस बगावत से उसकी बड़ी बहन को धक्का तो ज़रूर लगा था किन्तु वो कर भी क्या सकती थी? ऐसे ही समय गुज़रता गया। सोनिया अपनी बड़ी बहन से फोन पर ही हाल समाचार ले लिया करती थी। दोनो बहनें वर्षों से एक दूसरे से न मिली थी।

ड्राइंग रूम में सोफे पर बैठी सोनिया इन्हीं सब यादों में खोई थी। उसकी ऑखों में ऑसू भर आए थे। मॉ का साया तो पहले ही उसके सिर से उठ गया था। दोनो बहनों में ये सबसे ज्यादा लाड प्यार में पली पढ़ी थी और शायद यही वजह थी कि जिद्दी हो गई थी। जिसका नतीजा ये हुआ था कि उसने अपने बाप के खिलाफ़ जाकर सत्यम सिंह से शादी कर ली थी। मगर आज के हालात बहुत और तब के हालात में बहुत फर्क़ हो गया था। आज के हालात में सोनिया किसी के भी सामने झुकने और किसी के भी नीचे लेटने को तैयार थी। बदले में उसे सत्यम सिंह सी.बी.आई. की गिरफ्त से बाहर चाहिए था।

सोनिया की हिम्मत नहीं हो रही थी कि वो दुबारा अपने बाप से बात कर सके। शादी वाली बात को तो वर्षों हो गए थे। किन्तु इन वर्षों में उसने एक बार भी अपने बाप से बात करना ज़रूरी नहीं समझा था। और आज जब बुरा वक्त आया तो उसे अपने बाप का ख़याल आया और उससे मदद मॉगने का भी। सोनिया को पहली बार लगा कि उसे अपने बाप से इस तरह मुहज़ुबानी नहीं करनी चाहिए थी और ना ही तैश में आकर इस तरह बाप के घर की दहलीज़ को छोंड़ देना चाहिए था। मामले को प्यार से और समझा बुझा कर भी सुलझाया जा सकता था। आज अगर ग़ौर किया जाए तो दो दो बेटियॉ होने के बाद भी उसका बाप घर में अकेला ही था। सोचने वाली बात है कि उतने बड़े घर में उसका बाप पिछले कितने ही वर्षों से अकेला रह रहा है। क्या उसे अपने उस अकेलेपन से दुख नहीं होता होगा? क्या उसे इस बात का दुख नहीं होगा कि उसकी बेटी ने आज तक उसकी सुधि तक न ली। अपनी खुशियों को गले लगा कर अपने बाप को अकेला छोंड़ दिया। तन्हाई इंसान को जीते जी मार डालती है। मगर उसने कभी अपनी इस बेटी को फोन करके उस सबका गिला न किया था।

सोनिया को बड़ी शिद्दत से एहसास हुआ कि उससे कितनी बड़ी भूल हुई है। कहते हैं कि मॉ

बाप का गुस्सा या नाराजगी जीवन भर के लिए नहीं होती। आख़िर बाप को औलाद के आगे हार जाना ही होता है। मगर यहाँ तो कीर्तिमान दोनो तरफ से हारा हुआ बाप बन चुका था। सोनिया की ऑखों से पश्चाताप के ऑसू बह रहे थे। उसे इस बात का बखूबी एहसास था कि भले ही उसके बाप ने उसे त्याग दिया था मगर आज भी वो अपनी बेटियों के मंगलमय जीवन की कामना करता होगा। ये सब सोच सोच कर सोनिया को भारी दुख हो रहा था। उसे अपनी अज्ञानता और अपने छोटेपन का शिद्दत से एहसास हो रहा था मगर अब रोने से क्या हो सकता था? पच्चीस साल का वक्त थोड़ा सा नहीं होता अपने बाप से अनबन किये हुए।

सोनिया को लगने लगा कि ये जो कुछ भी आज उसके और उसके परिवार के साथ हो रहा है वो सब उसी का फल है जो उसने इतने वर्षों से बाप को दुखी किया हुआ है। ये सब सोच कर ही सोनिया को चक्कर सा आने लगा। उसने अपना सिर दोनो हाथो से पकड़ लिया। तभी ड्राइंग रूम में जयदीप दाखिल हुआ। अपनी मॉम को इस तरह पीड़ा में देख वह घबरा सा गया। तुरंत ही सोनिया के पास पहुँचा वह और उसे उसके कंधों से पकड़ कर झकझोरा।

" क्या हुआ मॉम ?" जयदीप ने घबरा कर कहा __" आप ठीक तो हैं न मॉम ? प्लीज़ बताइये न क्या हुआ है आपको ?"

" कुछ नहीं बेटा। " सोनिया ने खुद को संभालते हुए कहा __" बस थोड़ा चक्कर सा आ गया था। "

" आप इतना टेंशन क्यों लेती हैं मॉम ?" जयदीप ने सोनिया के चेहरे को दोनो हथेलियों में लेकर कहा __" सब कुछ ठीक हो जाएगा। डैड बहुत जल्द वापस आ जाएँगे। "

" हॉ बेटा। " सोनिया ने कहीं खोए हुए से कहा __" सब कुछ ठीक हो जाएगा। तेरे डैड जल्द ही हमारे पास वापस आ जाएँगे। "

" आप चलिये मॉम। " जयदीप ने सोनिया को उठाते हुए कहा __" अपने कमरे में आराम कीजिए आप और हॉ ज्यादा सोच विचार मत किया कीजिए। "

जयदीप की बात का सोनिया ने फीकी सी मुस्कान के साथ जवाब दिया और कमरे की तरफ जयदीप के साथ बढ़ गई। कमरे में बेड पर सोनिया को लेटा कर जयदीप रसोई की तरफ बढ़ गया। रसोई में मीनाक्षी चाय बनाकर केतली में डाल रही थी। ये देख कर जयदीप वापस बाहर की तरफ आया और हवेली से बाहर आ गया। बाहर उसने एक आदमी को बुलाया और अंदर ले गया उसे। अंदर आकर उसने मीनाक्षी से कहा कि वो चाय नास्ता काका को पकड़ा दे। मीनाक्षी ने वैसा ही किया। जयदीप और वो आदमी दोनो ही चाय नास्ता का सामान लिये सर्वेंट क्वार्टर की तरफ बढ़ गए।

६७

उधर फार्महाउस पर!

शंकर काका की कहानी से माहौल थोड़ा गंभीर सा हो गया था किन्तु हरिया काका की मज़ेदार बातों से फिर से खुशनुमा हो गया था। साक्षी को सहसा कुछ याद आया तो उसने हरिया काका की तरफ देखा।

" अरे काका। " फिर उसने कहा __" इन सब बातों के बीच हम ये तो भूल ही गए कि तहखाने में मंत्री की बेटी कैद है और वो कल से भूखी प्यासी भी होगी। "

" हॉ बिटिया। " हरिया काका के चेहरे पर चौंकने वाले भाव उभरे __" ई ता सही मा हम भुलाय दीन्हें रहे। ऊ ससुरी मंत्रीवा की छोकरिया अबे तक ता ज़रूरै भूख पियास से मरत होई। "

" आप भी कमाल करते है काका। " साक्षी ने कहा __" ऐसा लगता है जैसे आप उस बेचारी को ऐसे ही मार देंगे। जबकि अभी तो मुझे उसके अंदर की गर्मी निकालनी है। चलिये देखें तो सही क्या हाल चाल हैं उसके ?"

" हॉ हॉ चला बिटिया। " हरिया काका ने बंदूख को शंकर के हाथ में थमाते हुए कहा __" अब ता देखहिन का पड़ी कि ऊ ससुरी अबे ज़िंदा बा के मर गईल है। "

साक्षी हरिया की बात पर मुस्कुराती हुई तहखाने की तरफ़ बढ़ गई। उसके पीछे पीछे हरिया भी चल रहा था। कुछ ही देर में वो दोनो तहखाने के दरवाजे के पास खड़े थे। हरिया ने चाभी से तहखाने का दरवाजा खोला और एक साइड हट गया। साक्षी दरवाजे के अंदर की तरफ दाखिल हो गई। अभी वो दो तीन सीढ़ियॉ ही नीचे उतरी थी कि सहसा उसे रुक जाना पड़ा और जल्दी से पैन्ट की जेब से रुमाल निकाल कर अपने मुह व नॉक पर रखना पड़ा।

तहखाने में तेज़ दुर्गंध फैली हुई थी। मतलब साफ था अंदर मौजूद विवेक और उसके दोस्त या फिर विवेक की बहन में से किसी का टट्टी पेशाब छूट गया था जिसकी वजह हे अंदर दुर्गंध फैली हुई थी। साक्षी से बर्दाश्त न हुआ तो वो वापस तहखाने से बाहर आ गई।

" काका इन लोगों ने तो यहॉ गंध फैला रखी है। " साक्षी ने बुरा सा मुह बनाते हुए कहा __" ऐसे में अंदर जाया नहीं जाएगा। इस लिए सबसे पहले आप तहखाने का हाल सही करवाइये। उसके बाद ही आगे का कार्यक्रम होगा। "

" ठीक है बिटिया। " हरिया ने कहा __" हम इहॉ की सफाई करवाता हूँ तब तक तू बाहर रहा। "

" ठीक है काका। " साक्षी ने कहा __" मैं कुछ देर के लिए कमरे में जा रही हूँ। जब यहॉ का सब ठीक हो जाए तो आप मुझे बुला लीजिएगा। "

ये कह कर साक्षी वहॉ से बाहर आकर इस तरफ से अंदर गई और अपने कमरे की तरफ बढ़ गई। कमरे में आकर साक्षी बेड पर लेट गई। अभी वह लेटी ही थी कि गीता बुआ भी कमरे में आ गई और बेड के किनारे भाग में बैठ गई।

" आइये बुआ। " साक्षी ने अधलेटी अवस्था में कहा _" आप भी आराम से लेट जाइये। "

" चल ठीक है तू कहती है तो लेट जाती हूॅ। " गीता ने साक्षी के इस तरफ आते हुए कहा __" अच्छा ये बता कि तेरे इस फार्महाउस पर और क्या क्या होता है ?"

" क्या मतलब ??" साक्षी बुरी तरह चौंकी __" यहॉ क्या क्या होता है से आपका क्या मतलब है ?"

" इतनी नासमझ व बुद्धू नहीं हूॅ मैं जितना तू समझ रही है मुझे। " गीता ने कहा __" यहॉ आए मुझे कुछ समय तो हो ही गया है। मैने महसूस किया है कि ये फार्महाउस असल में मुजरिम लोगों के लिए एक ऐसी जेल की तरह है जिसकी कैद से मुजरिम का निकल पाना नामुमकिन ही नहीं बल्कि असंभव है। कह दे भला कि मैं झूॅठ कह रही हूॅ ?"

साक्षी चकित भाव से देखती रह गई अपनी बुआ को। किन्तु फिर तुरंत ही सम्हल भी गई। चेहरे पर शशंक भाव लाते हुए बोली__"ये सब आपने खुद महसूस किया है या ये सब बातें किसी के द्वारा पता चली है आपको?"

" बात अगर सच है तो इस बात से कोई मतलब ही नहीं रह जाता मेरी बच्ची कि मुझे ये सब कैसे पता चला ?" गीता ने स्पष्ट भाव से कहा __" दूसरी बात मुझे इस बात से कोई ऐतराज नहीं है कि तू इस फार्महाउस पर क्या कर रही है। बल्कि खुशी है कि मुजरिमों को उचित सज़ा दे रही है तू। मगर मैं बस यही कहूॅगी कि ऐसे कामों में अपनी जान का ख़तरा भी बहुत होता है इस लिए अपना भी ख़याल रखना। "

" ख़तरा तो हर इंसान के जीवन में होता है बुआ। " साक्षी ने कहा __" चाहे वो कोई आम इंसान हो या फिर कोई ऐसा इंसान जो हर वक्त ख़तरों के बीच ही रहता है। मैं इस फार्महाउस पर इसके पहले कभी भी किसी मुज़रिम को कानून अपने हाथ में लेकर नहीं आई बुआ और नाही ऐसा करने का मैने कभी सोचा था। मगर ये सब तो मैने तब किया जब प्राची का मामला आया। हमारे देश में किसी मुजरिम को उसके संगीन से भी संगीन अपराध के लिए कोई सख्त सज़ा नहीं हो पाती। इसकी कई सारी वजहें हैं मगर मुख्य वजहें ये हैं कि हमारा कानूनी सिस्टम बहुत कमज़ोर व ढीला है। कोर्ट में आज भी लाखों ऐसे संगीन अपराधों के केस फाइलों के नीचे दबे हुए हैं जिनकी समयावधी का पता चलते ही हमारा कानून पर से विश्वास उठने लगता है। दूसरी बात हमारा यही कानूनी सिस्टम बड़े लोगों और मंत्री मिनिस्टरों के हाथ की कठपुतली बना हुआ है। जबकि सच्चाई ये है कि कानून की नज़र में कोई भी छोटा बड़ा नहीं होता। अगर अपराध देश के सबसे बड़े व्यक्ति ने किया है तो उसे भी वैसी ही सज़ा मिलनी चाहिए जो किसी आम मुजरिम को मिलती है। मगर ये सब कहने की बातें हैं बुआ , हकीक़त में ऐसा होता नहीं है। कानून के इसी कमज़ोर सिस्टम की वजह से एक शरीफ

आदमी मजबूरीवश जुर्म का दामन थाम बैठता है। "

" तुम जिन चीज़ों की बात कर रही हो बेटा। " गीता ने गहरी सास ली __" वो हमेशा ऐसी ही रहेंगी। बल्कि अगर ये कहूँ तो ग़लत न होगा कि इससे भी बदतर बन जाएँगी। इस लिए इस विषय पर बात करने का कोई मतलब नहीं है। तुमने कहा कि प्राची का मामला जब सामने आया तब तुमने ऐसा क़दम उठाया। प्राची के बारे में भी तुमने ही मुझे बताया था कि उसके साथ चार ऐसे लड़कों ने घिनौना कुकर्म किया था जो बड़े बाप की पैदाईश हैं। मैं ये कहना चाहती हूँ कि ऐसे बड़े बाप की औलादों को यहाँ लाकर और उनको सज़ा देने से कहीं तुम पर तो कोई ख़तरा नहीं आ जाएगा। आख़िर सवाल तो बड़े लोगों का है न। जिनके ये बच्चे हैं उन्हें अगर पता चल जाए कि उनके बच्चों को तुमने क्या और कैसे सज़ा दी है तो यकीनन वो बड़े लोग तुझ पर बिजली बन कर गिरेंगे। "

" फिक्र मत कीजिए बुआ। " साक्षी ने सहसा कठोर भाव से कहा __" मैंने उन सबका अच्छा खासा इंतजाम किया हुआ है। आप यूँ समझिये कि उन बड़े बड़े खलीफाओं की जान मेरी मुट्ठी में कैद है। आज की डेट में वो सब ऐसी कठपुतलियाँ बने हुए हैं जो सिर्फ मेरे ही इशारे पर नाचने के लिए मजबूर हैं। वो अपनी मर्ज़ी से ऐसा कोई काम नहीं करेंगे जो मुझे पसंद ही न आए। "

" ऐसा तेरे पास उनके खिलाफ क्या है ?" गीता ने चकित भाव से पूछा __" जिसकी वजह से वो सब बड़े बड़े सूरमा तेरे इशारों पर नाचने के लिए मजबूर बन गए हैं ?"

गीता के पूछने पर साक्षी ने कुछ पल सोचा और फिर उसने वीडियो वाली सारी बात बता दी उसे। ये भी बताया कि उसने खुद मर्द की आवाज़ में फोन पर मंत्री से बात भी की थी और कल तो वो मंत्री की बिगड़ैल बेटी को भी पकड़ कर ले आई है जो इस वक्त तहखाने में बंद है। सारी बातें जानने के बाद गीता का मुह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया।

" हे भगवान!। " फिर उसके मुख से निकला __" ये तू क्या कर रही है साक्षी ? लड़कों की बात तक तो ठीक था और लड़कों के बापों तक भी ठीक था किन्तु लड़की को क्यों कैद कर किया तूने ? ये ठीक नहीं है मेरी बच्ची। उन लोगों ने घृणित कर्म किया क्योंकि वो उनकी फितरत थी मगर तेरी फितरत तो ऐसी नहीं है न बेटा ? इस लिए मेरी बात मान और मंत्री की बेटी को छोंड़ दे तू। "

" आपने बहुत दूर तक का सोच लिया बुआ। " साक्षी ने मुस्कुरा कर कहा __" जबकि मेरा ऐसा करने का कोई इरादा ही नहीं है। मेरा मकसद तो बस ये है कि मैं उन्हें भी उस चीज़ का एहसास कराऊँ जिस चीज़ को करने में उन्हें सबसे ज्यादा मज़ा आता है। मैं उन्हें दिखाना चाहती हूँ बुआ कि जब वैसा ही सब कुछ अपने साथ होता है तब कैसा प्रतीत होता है ? जब अपने ऊपर वैसा जुल्म होता है तो कितनी तक़लीफ़ होती है ? हाँ बुआ यही , बस यही एहसास कराना चाहती हूँ मैं उन सबको। "

" अगर ऐसी बात है तो फिर ठीक है। " गीता ने सहसा मुस्कुराते हुए कहा __" जो भी करना इस बात का ख़याल रखते हुए करना कि तुम एक अच्छे संस्कारों वाली लड़की हो जो किसी का भी बुरा नहीं कर सकती। "

" अच्छा अब आप आराम कीजिए बुआ। " साक्षी ने बेड से उतरते हुए कहा __" मैं ज़रा तहखाने में उन सबका हाल चाल देख लूँ। "

" ठीक है जाओ। " गीता ने कहा और आराम से लेट गई।

साक्षी कमरे से निकल कर बाहर आ गई। उसने अपने आईफोन के बाईब्रेशन को महसूस किया था। वो समझ गई थी कि हरिया काका ने ही उसे मिस काल दिया था। मतलब साफ था कि उसने तहखाने की गंदगी को साफ कर दिया था। ख़ैर, कुछ ही देर में साक्षी तहखाने में पहुँच गई। अब वहाँ पर कोई गंध नहीं थी। बल्कि सबकुछ एकदम से साफ सुथरा हो गया था।

६८

इस वक्त मंत्री के सभी साथी ड्राइंग रूम में जमा हुए बैठे थे। सबके बीच ब्लेड की धार की मानिन्द पैना सन्नाटा फैला हुआ था। अभी थोड़ी देर पहले ही मंत्री रजतकुमार रस्तोगी अपने आवास पर अपने साथियों के साथ आया था। रजतकुमार रस्तोगी कल शाम से चिंतित व परेशान था। कल शाम को ही आया ने बताया था कि रचना बेटी जिम से नहीं लौटी है। रस्तोगी को पहले इस बात पर ज्यादा चिंता की बात नज़र नहीं आई थी। उसे लगा था कि रचना अपनी फ्रैण्ड्स के साथ होगी। किन्तु जब आधी रात गुज़र जाने पर भी रचना न आई तो रस्तोगी को चिंता सताने लगी। उसने रचना की जान पहचान वाली सभी लड़कियों को फोन लगा कर रचना के बारे में पूँछा था। मगर सबने यही कहा कि रचना उनके पास नहीं है। एक लड़की ने बताया कि शाम को जिम से बाहर आते समय रचना उसके साथ ही थी किन्तु फिर वो अपनी स्कूटी लेकर घर के लिए निकल गई थी।

रजतकुमार रस्तोगी को कल सारी रात नींद नहीं आई थी। अपनी बेटी के लौटने के इंतज़ार में वह जागता ही रहा था। मगर रात गुज़र गई और अब ये दूसरा दिन शुरू होकर दोपहर भी हो रही थी। फिर भी रचना के बारे में कोई ख़बर न मिली थी उसे। रस्तोगी के लिए चिंता वाली सबसे ज्यादा बात ये थी कि रचना का मोबाइल फोन कल से लगातार बंद बता रहा था। रजतकुमार रस्तोगी को अब अपनी बेटी की बहुत ज्यादा चिंता सता रही थी। उसने अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर ली थी मगर रचना को ढूँढ़ पाने में वह नाकाम रहा था। दूसरी चिंता की बात ये थी कि उसका बेटा और बेटे के तीनों दोस्तों का भी कहीं कोई पता नहीं चल रहा था। ये सब बातें रस्तोगी की रातों की नींद उड़ाए हुई थी।

" बड़ी हैरत की बात है रस्तोगी साहब। " अवधेश मुखर्जी कह उठा __" पहले हम अपने बच्चों के लिए चिंतित व परेशान थे। उसके बाद हम अपने लिए परेशान हो गए उन वीडियोज़ की वजह से और अब रचना बेटी के लिए परेशान हो गए हैं। पिछले कुछ समय से ये सब हमारे साथ क्या होने लगा है इसका अंदाज़ा भी है किसी को ?"

" हमसे सबसे बड़ी ग़लती ये हुई कि हमने हर चीज़ को तुच्छ व ग़ैरमामूली समझा। " अशोक बासु ने कहा _" पर अब हमें गंभीरता से इस सबके बारे में सोचना पड़ेगा रस्तोगी साहब। हमें शुरू से हर घटना पर ग़ौर करना होगा। हमारे साथ राहू कुतू का ये चक्कर तब से शुरू हुआ जबसे हमारे बच्चों ने उस लड़की का रेप किया था। उस रेप के बाद से ही हमारे बच्चे गायब हुए हैं और अब तक हमें उनकी कोई खोज ख़बर नहीं लगी है। उसके बाद उस अंजान व्यक्ति का हमें वो वीडियोज़ भेजना , साथ ही उसकी वो धमकी भरी बात। और अब रचना बेटी का अकस्मात गायब हो जाना। ये सारी घटनाएँ इस बात की तरफ स्पष्ट रूप से इशारा करती हैं कि इन सभी घटनाओं का कर्ता धर्ता एक ही व्यक्ति है। दूसरा कोई शख्स ऐसा करने का सोच भी नहीं सकता है। "

" मैं अशोक की इन बातों से पूरी तरह सहमत हूँ रस्तोगी साहब। " अवधेश मुखर्जी ने

कहा __" ये सच है कि सारी घटनाओं का केन्द्र बिन्दु उस लड़की के रेप वाली वो घटना ही है। ऐसे मामलों में आम तौर पर वही होता है जो ऐसे हर रेपिस्ट के साथ होता है। यानी रेप पीड़िता के घरवाले पुलिस में एफआईआर दर्ज़ करवाते हैं और अदालत से इंसाफ की गुहार लगाते हैं। हलाँकि ऐसा कम ही होता है क्योंकि कोई भी शरीफ व्यक्ति अपनी बदनामी नहीं कराना चाहता इस लिए केस को रफा दफा करवा लेता है किन्तु कुछ ऐसे भी होते हैं जो बदनामी से नहीं डरते और इंसाफ के लिए सुप्रीम कोर्ट तक का दरवाजा पार कर जाते हैं। मगर हैरत की बात है कि जिस लड़की के साथ हमारे बच्चों ने रेप किया उस पर किसी ने कोई ऐक्शन ही नहीं लिया। जबकि कानून के ही डर से हमारे बच्चे शायद कहीं छुप गए और आज तक लौट कर घर नहीं आए। दूसरी बात ये कि हमने भी ये जानने की कोशिश नहीं की कि रेप के बाद उस लड़की का क्या हुआ ? जबकि हमें ऐसे मामले की पल पल की ख़बर रखनी चाहिए थी। आज उस घटना को घटे क़रीब क़रीब दो हप्ते हो गए होंगे। "

" ये सच है कि हमने हर चीज़ को मामूली ही नहीं समझा बल्कि उसे नज़रअंदाज़ भी किया। " रजतकुमार रस्तोगी ने गहरी सास लेते हुए कहा __" जिसका नतीजा आज हमें इस रूप में देखने को मिल रहा है। मगर , अब भी शायद कुछ नहीं बिगड़ा है। हमें इस मामले में अपनी तरफ से जॉच पड़ताल करनी चाहिए। सबसे ज्यादा उस लड़की के बारे में , क्योंकि घटनाओं का सिलहिला उस रेप से ही शुरू हुआ है। संभव है कि हमें कोई ऐसा सुराग़ मिल जाए जिससे हमें सारी बातों का पता चल जाए। हलाँकि हमने उस दिन पुलिस कमिश्नर से फोन पर पूँछा था कि हमारे बच्चों के लापता होने में अगर पुलिस का हाथ हुआ तो अच्छा नहीं होगा। इस पर कमिश्नर ने साफ साफ कहा था कि हमारे बच्चों पर कानून का हाथ तभी पड़ सकता था जबकि रेप पीड़िता के घरवालों ने थाने में एफआईआर दर्ज़ करवाया होता। इस लिए जब ऐसा कुछ हुआ ही नहीं है तो हमारे बच्चों पर कानून कोई कार्यवाही कैसे कर देगा ? इस लिए ये तो साफ है कि हमारे बच्चों के गायब होने में नुलिस या कानून का कोई हाथ नहीं है। मगर बच्चे गायब हैं ये सच बात है। इस लिए अब इसका पता लगाना बेहद ज़रूरी है कि ये सब किसने किया है हमारे बच्चों के साथ ? दूसरा मामला वो वीडियो भेजने वाला है। वीडियो भेजने वाले ने उस दिन फोन पर स्पष्ट कहा था कि उसके पास हमारे खिलाफ ऐसे ऐसे सबूत हैं जिनके बेस पर वो हमें जब चाहे बीच चौराहे पर नंगा दौड़ा सकता है। उसकी इस बात पर हमने ये निष्कर्ष निकाला था कि संभव है कि उसी ने हमारे बच्चों को पकड़ा हो और फिर उन्हें टार्चर करके उनसे हमारे खिलाफ़ उन वीडियो के रूप में सबूत प्राप्त किया होगा। "

" फिर तो ये साबित हो गया रस्तोगी साहब कि इन सभी घटनाओं का कर्ता धर्ता एक ही व्यक्ति है। " अशोक बासु बीच में बोल पड़ा __" आपकी बातों में यकीनन ठोस सच्चाई है। यकीनन हमारे बच्चे उस वीडियों भेजना वाले के पास ही हैं। इस बात से ये भी सोचा जा सकता है कि रचना बेटी को भी उसी ने किडनैप किया होगा। "

" बिलकुल ऐसा हो सकता है रस्तोगी साहब। " अवधेश मुखर्जी ने कहा __" अभी तक हमें वस्तुस्थित का ज़रा भी एहसास नहीं था किन्तु अब हो रहा है और समझ में भी आ रहा है कि वोडियो भेजने वाला हमसे चाहता क्या है ?"

" क्या चाहता है वह ??" रजतकुमार रस्तोगी फिरकिनी की मानिंद अवधेश की तरफ घूम कर पूछा था।

" हो सकता है कि इन मामलों के तहत उस वीडियो भेजने वाले के संबंध में जो थ्यौरी मेरे दिमाग़ में बनी है वो ग़लत भी हो। " अवधेश मुखर्जी ने कहा __" किन्तु फिर भी प्रकट कर रहा हूँ। बात उस लड़की के रेप से ही शुरू हुई। रेप पीड़िता के घरवालों को जब इस बात का पता चला होगा कि रेप करने वाले लड़के बड़े बाप की औलाद हैं तो वो समझ गए कि पुलिस में एफआईआर दर्ज़ कराने का कोई फायदा नहीं होगा। क्योंकि बड़े लोगों के प्रभाव से शीघ्र ही इस केस को इतना कमज़ोर बना दिया जाएगा कि उसमें कोई दम नहीं रह जाएगा। बल्कि ऐसा भी हो सकता है कि उल्टा लड़की को ही कोर्ट में चरित्रहीन और बदचलन साबित कर दिया जाए। उस सूरत में इंसाफ तो मिलने से रहा ही ऊपर से समाज के बीच उनकी जो इज्ज़त खाक़ में मिलेगी उसकी भरपाई इस जन्म में तो संभव नहीं हो सकती थी। इस लिए लड़की के घरवालों ने अपनी बेटी के साथ हुए रेप का बदला लेने के लिए दूसरा तरीका अपनाया। दूसरा तरीका ये था कि किसी तरह वो हमारे बच्चों को पकड़ लें और फिर अपने तरीके से जो चाहे सज़ा दें उन्हें। अब तक वो इसी लिए अपने हर काम में सफल रहे क्योंकि हमने इन सब चीज़ों की तरफ ध्यान ही न दिया था। ध्यान तो तब आया जब मामला हमारे हाथ से निकल गया। हॉ रस्तोगी साहब , मामला हमारे हाथ से निकल ही तो गया है। क्योंकि उस व्यक्ति के पास हमारे खिलाफ जो सबूत है वो हमें किसी भी पल बीच चौराहे पर नंगा होकर दौड़ने पर मजबूर कर देगा। "

" तो तुम्हारे हिसाब से ये सब लड़की के घरवालों ने किया है ?" रस्तोगी ने कहा __" मतलब कि उन लोगों ने हमारे बच्चों को पकड़ा और उनसे हमारे खिलाफ़ सबूत भी प्राप्त कर लिए ?"

" जी बिलकुल। " अवधेश मुखर्जी ने कहा __" आप खुद सोचिए कि ऐसा करने की उनके सिवा भला किसके पास वजह थी ? ये तो एक यथार्थ सच्चाई है न रस्तोगी साहब कि बेवजह कभी कुछ नहीं होता है। इस लिए ये सब करने की वजह सिर्फ और सिर्फ रेप पीड़िता के घरवालों के पास थी। दूसरा व्यक्ति ऐसा करने का शौक तो नहीं रख सकता न ?"

" चलो मान लिया कि ये सब उस रेप पीड़िता लड़की के घरवालों ने किया है। " रस्तोगी ने कहा __" किन्तु सवाल ये है कि उन्हें हमारी बेटी को भी किडनैप या पकड़ने की क्या ज़रूरत थी ? हमारी बेटी ने तो कोई गुनाह नहीं किया था न ? फिर क्यों उसे पकड़ा उन्होंने ?"

" संभव है कि रचना बेटी के ज़रिये। " अवधेश मुखर्जी ने कहा __" वो हमें ये एहसास दिलाना चाहते हों कि जब वैसा ही रेप केस हमारे साथ हो तो हमें कैसा लगेगा ? हमें उससे कितनी तक़लीफ़ होगी ?"

अवधेश मुखर्जी के इस तर्क से रजतकुमार रस्तोगी कुछ बोल न सका। जैसे निरुत्तर हो गया था वह या फिर कदाचित उसे बात समझ में आ गई थी कि अवधेश का तर्क बिलकुल सही था। ख़ैर, अवधेश मुखर्जी की उस बात से कुछ देर सन्नाटा छाया रहा।

" तो अब क्या किया जाए ?" सहसा अशोक बासु ने उस सन्नाटे को चीरते हुए कहा __" अगर हम सही लाइन पर हैं तो हमारा अगला क़दम अब क्या होना चाहिए ?"

" बड़ा सीधा व सरल जवाब है अशोक। " अवधेश मुखर्जी ने कहा __" हमारा अगला क़दम ये होना चाहिए कि हमें जल्द से जल्द उस रेप पीड़िता लड़की के घरवालों को धर लेना चाहिए। उसके बाद खुद ही हम अपने तरीके से उनका क्रिया कर्म करेंगे। "

" तुम तो ऐसे कह रहे हो अवधेश जैसे कि ये सब वैसा ही आसान काम हो जैसे थाली से दाल चावल का निवाला बना कर उसे खा लेना आसान होता है। " अशोक ने कहा __" जबकि हमें इस बात पर भी ज़रा ग़ौर कर लेना चाहिए कि जिस व्यक्ति को हम धर लेने के लिए अपने क़दम बढ़ाने जा रहे हैं उसने क्या इस सबके बारे में नहीं सोचा होगा ? बल्कि ज़रूर सोचा होगा भाई , उसे भी इस बात का अच्छी तरह से पता है कि हम क्या चीज़ हैं। अगर वो हमारे बच्चों को धर लेगा तो सबसे पहले हमारा शक़ उसी पर ही जाएगा। उस सूरत में हम उसकी उस धृष्टता के लिए उसका क्या हस्र करेंगे ये बात भी उसने ज़रूर सोची होगी। अब सोचने वाली बात ये है कि जब उसने ये सब सोचा होगा तो अपने बचाव का कोई न कोई रास्ता भी सोचा होगा। ऐसे ही तो नहीं कोई सॉप के बिल में अपना हाथ डाल देता है। "

" यकीनन तुम्हारी बात में दम है। " अवधेश मुखर्जी ने जैसे स्वीकार किया _" और उसके जिस बचाव वाले रास्ते की तुम बात कर रहे हो वो यकीनन यही हो सकता है कि आज की डेट में उसके पास हमारे खिलाफ़ सबूत के रूप में वो वीडियो रूपी ब्रम्हास्त्र है। "

" बिलकुल ठीक समझे। " अशोक ने कहा _" इस लिए अब हम अगर कोई क़दम भी उठाएं तो ज़रा सोच समझ कर उठाएँ। क्योंकि अगर उसे पता चल गया कि हम उसके खिलाफ़ कुछ करने जा रहे हैं तो संभव है कि अगले ही पल वो हम पर क़यामत बरपा दे। "

" इसका मतलब तो ये हुआ कि हम कुछ कर ही नहीं सकते। " सहसा रस्तोगी आवेश में कह उठा _" उस साले ने हमें पंगु बना कर रख दिया है। मगर ऐसा कब तक चलेगा यार ? हमें कुछ तो करना ही पड़ेगा न ? वरना वो दिन दूर नहीं जबकि हम चारों किसी चौराहे पर नंगे दौड़ लगा रहे होंगे। "

" कुछ तो करना ही पड़ेगा रस्तोगी साहब ?" अशोक ने कहा __" साला नुकसान तो दोनो तरफ से होना ही है। इस लिए कुछ करके ही नुकसान झेलते हैं। शायद ऐसा भी हो जाए कि सारा खेल हमारे हक़ में हो जाए। "

" बात तो सच कही तुमने। " रस्तोगी ने कहा __" मगर सवाल ये है कि हम करेंगे क्या ?"

" वही जो करने का सजेशन थोड़ी देर पहले अवधेश भाई ने दिया था। " अशोक ने कहा __" मगर उसमें थोड़ा चेंज करना पड़ेगा। वो ये कि लड़की के घरवालों को पहले हम दिलेरी से धरने जा रहे थे जबकि अब वही काम हम इस तरीके से करने की कोशिश करेंगे कि उस

कम्बख्त को इसकी भनक तक न लग सके। "

" ओह आई सी। " अवधेश मुखर्जी बोला _" मगर मुझे लगता है कि हमें एक बार ये सब करने से पहले फिर से इस बारे में सोच लेना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि हम खुद ही धर लिए जाएँ। "

" कायर व डरपोंक जैसी बातें मत करो अवधेश। " रस्तोगी ने कठोरता से कहा __" अब हम चुप भी नहीं बैटना चाहते हैं। साला हिंजड़ा बना कर रख दिया है उसने हमें। मगर अब और नहीं। अब जो होगा देखा जाएगा। "

बस रस्तोगी की इस बात ने जैसे फैंसला सुना दिया था। किसी में भी इस फैंसले के खिलाफ़ जाने की हिम्मत न थी। इस लिए अब इस काम को अंजाम देने की समय सीमा पर विचार विमर्ष किया गया और उसके बाद अशोक और अवधेश अपने अपने घर चले गए। मगर आगे किसके साथ क्या होने वाला है ये किसी को कुछ पता न था।

६९

उधर तहखाने में साक्षी जब पहुँची तो वहाँ की साफ सफाई देख कर खुश हो गई। अब यहाँ पर पहले जैसी गंद नहीं थी। एक तरफ विवेक और उसके तीनो दोस्त हाथ ऊपर किये रस्सी से बँधे खड़े थे। साक्षी को तहखाने में आया देख कर उन चारों की निगाह स्वयं ही उस तरफ उठती चली गई थी। चेहरों पर घबराहट के भाव एकाएक ही उजागर हो गए थे। चारों की हालत काफी ख़राब हो चुकी थी। ठीक से भोजन न मिलने की वजह से उनके जिस्म कमज़ोर से दिखाई दे रहे थे। दाढ़ी मूँछें बढ़ गई थी जिससे पहचान में नहीं आ रहे थे वो। वहीं दूसरी तरफ दीवार के पास ही लकड़ी की एक कुर्सी पर मंत्री की बेटी रचना बैठी हुई थी। उसके दोनो हॉ तथा दोनो पैर कुर्सी से इस तरह बँधे हुए थे कि वह हिल डुल भी नहीं सकती थी।

" वाह काका। " तहखाने के फर्श पर चलते हुए साक्षी ने हरिया की तरफ देख कर कहा __" आपने तो कमाल ही कर दिया है। यहाँ की साफ सफाई देख कर लगता ही नहीं है कि अभी थोड़ी देर पहले यहाँ गंदगी का कितना बड़ा साम्राज्य कायम था। "

" ई सुसरे लोगन ने इहाँ बड़का वाला गंदगी फेरे रहे बिटिया। " हरिया काका ने कहा __" यसे साफ तो करइन का परत ना। बस थोड़ी दिक्कत ता हुई पर हम सब बहुत अच्छे से कर लिया हूँ। "

" हाँ वो तो दिख ही रहा है काका। " साक्षी ने सहसा पहलू बदलते हुए कहा __" ख़ैर , इन लोगों की ख़ातिरदारी अच्छी चल रही है न ?"

" अरे बिटिया। " हरिया ने अजीब भाव से कहा __" ई कइसन सवाल हा ? ई बात ता ई ससुरा लोगन का देख के ही समझ मा आ जई कि हम कितना अच्छे से ई लोगन केर खातिरदारी किया हूँ। बस ई ससुरी छोकरिया बहुतै उछलत रही। "

" ऐसा क्यों काका ?" साक्षी चौंकी।

" अरे ऊ का है ना बिटिया। " हरिया ने ज़रा नज़रें झुकाते हुए कहा __" ई चारो लोगन के जइसन एखरौ टट्टी पेशाब छूट गइल रहे। एसे हमका एखर नीचे का कपड़ा उतारैं का परा। पर हम सच कहत हूँ बिटिया। हम एखे बदनवा का कछू नाहीं देखेन। एखे बावजूदव ई ससुरी चिल्लात रही यसे हम भी गुस्सा मा एक लाफा दै दिये इसको। ससुरी बहुतै गंदा गरियावत रही हमका। पर हमहू तबहिनै माने जब एखर सब कुछ साफ कर के चकाचक कर दिहे। "

" ओह तो ये बात है। " साक्षी मन ही मन मुस्कुराते हुए बोली __" कोई बात नहीं काका। आपने अपना काम बहुत अच्छे से किया है। वरना तो ये सब गंद फैलाते ही रहते न ?"

" एक बार मेरे हाथ पैर को इस रस्सी से आज़ाद कर के देख कुतिया। " सहसा रचना ने

एकाएक बिफरे हुए अंदाज़ से चीखते हुए कहा __" तेरे हाथ पैर तोड़ कर तेरे हाथ में न दे दूँ तो कहना। "

रचना की इस बात से जहाँ हरिया का पारा गरम हो गया था वहीं साक्षी उसे देख कर बस मुस्कुरा कर रह गई। फिर उसने विवेक और उसके दोस्तों की तरफ इशारा करते हुए रचना से कहा__"इन चारों को ग़ौर से देखो और पहचानो कि ये चारो कौन हैं?"

" मुझे नहीं पहचानना किसी को। " रचना ने पूर्व की भाँति ही तीखे भाव से कहा __" ये सब तेरे यार हैं तू ही पहचान इन्हें। "

" मैं चाहूँ तो इसी वक्त तेरी इस गंदी ज़ुबान को काट कर तेरे पिछवाड़े में डाल दूँ। " साक्षी के मुख से शेरनी की भाँति गुर्राहट निकली __" मगर उससे पहले तुझे ये दिखाना चाहती हूँ और बताना चाहती हूँ कि तू जिनके दम पर इतना उछल रही है न उनकी औकात मेरे सामने कीड़े मकोड़ों से भी बदतर है। ग़ौर से देख इन चारों को। इनमें तेरा ही कोई अपना नज़र आएगा। "

साक्षी की ये बात सुन कर रचना ने पहले तो उसे आग्नेय नेत्रों से घूरा उसके बाद उसने उन चारों की तरफ अपनी निगाह डाली। विवेक अपनी बहन को ग़ौर से अपनी तरफ देखते देख बुरी तरह घबरा गया। वो नहीं चाहता था कि उसकी बहन उसे पहचाने। क्योंकि उसे पता था कि उस सूरत में उसकी बहन भयभीत हो जाएगी। उसने जब पहली बार आँखें खोल कर रचना को देखा था तो बुरी तरह चौंका था साथ ही डर भी गया था। उसे साक्षी से इस सबकी उम्मीद नहीं थी। हलाँकि साक्षी ने उससे कहा ज़रूर था कि वो उसकी बहन को भी यहाँ ले आएगी और वो सब उसके साथ बलात्कार करेंगे। मगर उसे लगा था कि ये सब साक्षी महज गुस्से में कह रही थी। जबकि ऐसा वो करेगी नहीं। मगर अब उसे समझ आ गया था कि साक्षी ने उस समय कोई कोरी धमकी नहीं दी थी बल्कि सच ही कहा था। जिसका प्रमाण इस वक्त रचना के रूप में उसके सामने कुर्सी पर बँधा हुआ मौजूद था।

साक्षी की ये बातें सुन कर रचना ने जब ग़ौर से उन चारों की तरफ देखा तो एकाएक ही उसके चेहरे पर चौंकने के भाव आए और फिर जैसे एकाएक ही जैसे उसके दिलो दिमाग़ में विस्फोट हुआ। उसने पलट कर साक्षी की तरफ देखा।

" तेरे चेहरे के ये भाव चीख़ चीख़ कर इस बात की गवाही दे रहे हैं कि तूने इन चारों को पहचान लिया है। " रचना के देखते ही साक्षी ने अजीब भाव से कहा __" और अब जब तूने पहचान ही लिया है तो पूछ इन चारों से कि ये सब यहाँ कैसे और क्यों मौजूद हैं ?"

साक्षी की इस बात का असर रचना पर तुरंत ही हुआ। उसके चेहरे पर एकाएक ही ऐसे भाव उभरे जैसे उसे उन चारों को इस हालत में देख कर बेहद दुख हुआ हो। आँखों में पानी तैरता हुआ नज़र आने लगा था उसके।

" भ भाई। " फिर उसके मुख से लरज़ता हुआ स्वर निकला __" ये सब क्या है ? आप चारो यहॉ कैसे ??"

रचना के इस सवाल पर विवेक चुप न रह सका। बल्कि ये कहना चाहिए कि अब उसके सामने कोई चारा ही नहीं रह गया था। इस लिए उसे अब अपनी बहन के सामने अपनी यहॉ पर मौजूदगी का कारण बताना ही था। इस लिए चेहरे पर दुख के भाव लिए वह रचना को अपनी राम कहानी शुरू से लेकर अंत तक बताता चला गया। सारी बातें जानने के बाद रचना भौचक्की सी रह गई थी।

" और हम सब ये समझ रहे थे कि आप लोग उस घटना के चलते कहीं ऐसी जगह छुप गए हैं जहॉ पर आप पुलिस व कानून की पहुॅच से दूर होंगे। " सारी बातें सुनने के बाद रचना ने आहत भाव से कहा __" मगर आप तो यहॉ हैं भाई। ख़ैर , देख लिया न भाई बुरे का काम का बुरा अंजाम। कितना कहती थी आप लोगों को कि इस तरह किसी की ज़िंदगियों से मत खेलो। मगर आप लोग कभी मेरी बात नहीं सुनते थे। बल्कि हमेशा यही कहते थे कि लाइफ को एंज्वाय करो और मस्त रहो। मुझे भी ऐसा ही करने की नसीहत देते थे। मगर इससे हुआ क्या भाई ? आज आप चारो यहॉ इस हालत में मौजूद हैं। डैड को तो ख़्वाब में भी ये उम्मीद नहीं है कि उनके साहबज़ादे किस जगह किस हाल में हैं इस वक्त ?"

" तूने सच कहा मेरी बहन। " विवेक ने रुॅधे हुए गले के साथ बोला __" ये सब मेरे पापों का ही प्रतिफल है। मैने कभी इस बारे में नहीं सोचा था कि जो कुछ मैं कर रहा था उसका अंजाम ऐसा भी होगा। हमेशा वही करता था जिसे करने में कदाचित मुझे दुनियॉ का सबसे बड़ा और ज्यादा आनंद आता था। ख़ैर , मुझे अपने इस अंजाम का दुख नहीं है रचना क्योंकि ये मैने खुद ही कमाया है। दुख तो इस बात का है कि मेरी वजह से आज तू भी यहॉ आ गई है और मैं ये सोच कर ही अंदर से बुरी तरह भयभीत हुआ जा रहा हूॅ कि जाने तेरे साथ ये इंस्पेक्टरनी क्या करेगी ?"

" ये कुछ नहीं करेगी भाई। " रचना ने सहसा पुनः तीखे भाव अख़्तियार कर लिए __" इसे पता नहीं है कि इसने किसके बच्चों पर हाथ डाला है ? इसने अब तक जो कुछ भी आपके और मेरे साथ किया है उसका अंजाम इसे ज़रूर भुगतना पड़ेगा। इसे इस बात का ज़रा सा भी एहसास नहीं है कि इसके साथ क्या क्या होगा ?"

" रस्सी जल गई पर बल नहीं गया अब तक। " साक्षी ने रचना के सिर के बालों को पकड़ कर झटका दिया _" मुझे पता है कि तू ये सब किसके दम पर बोल रही है। मगर तुझे पता ही नहीं है कि तू जिसके दम पर ये राग अलापे जा रही है वो खुद बहुत जल्द यहॉ तेरे सामने हाज़िर होने वाला है। मैने तेरे बाप रजतकुमार रस्तोगी और उसके उन सभी दोगले दोस्तों को वो वीडियोज़ भेज दिये हैं जिन वीडियोज़ पर उनकी काली करतूतों का सामान मौजूद है। कितनी मज़े की बात है कि एक बेटा अपने ही बाप की ऐसी अश्लील वीडियो बना कर रखे हुए था जो अगर किसी के हाथ लग जाएॅ तो वो बड़ी आसानी से इसके बाप को बीच चौराहे

पर नंगा दौड़ा दे। "

साक्षी की ये बात सुन कर रचना तो चौंकी ही साथ ही साथ विवेक और उसके दोस्त भी बुरी तरह चौंक पड़े थे। पलक झपकते ही उनके चेहरों पर से रहा सहा रंग भी उड़ गया।

" कुछ समझ आया तुझे ?" इधर साक्षी ने रचना के बालों को ज़ोर से खींचा __" सारे शहर को अपनी मुट्ठी में रखने वाला तेरा बाप और उसके दोस्त अब मेरी गुलामी करने पर मजबूर हैं। मैं अगर उसे कहूँ कि टट्टी खा तो उसे खाना पड़ेगा। अब बता किसके दम पर इतना उछल रही है तू ? जबकि मैने तो यहाँ तक सोचा हुआ कि जिस दिन तेरा बाप और दोस्त यहाँ आएँगे तो उनके स्वागत में तुझे ही नंगी करके उनके सामने डाल दूँगी। फिर देखूँगी कि नंगी और गोरी चमड़ी को उस हालत में देख कर कैसे उनके खून में उबाल आता है ?"

" नहींऽऽ। " साक्षी की बात को समझते ही तहखाने में रचना के साथ साथ विवेक और उसके दोस्तों का आर्तनाद गूँज उठा , जबकि विवेक गिड़गिड़ाया __" प्लीज ऐसा मत करना इंस्पेक्टर। मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ता हूँ। हर चीज़ के अपराधी मैं और मेरा बाप है ये सच है मगर मेरो बहन बेकसूर है। उसे इस सबमें मत घसीटो प्लीज। "

" हाहाहाहाहा ई का ?" सहसा वहीं पर खड़ा हरिया ज़ोर से हँस पड़ा __" ई का बिटिया। ई सरवा ता एतने मा ही गला फाड़ै लाग। कउनव सच ही कहे रहा कि जब बात ससुरी अपने मा आवथै तबहिन समझ मा आवथै कि ओसे का मज़ा मिलथै ? ई ससुरन के साथ ता इहै होय का चाही बिटिया। हम भी देखूँगा कि ऊ सबसे ई लोगन केर का हाल होथै ?"

" बिलकुल काका। " साक्षी ने कहा __" ये काम भी आपको ही करना है और कैसे करना है ये आप जानो। "

" अरे चिंता न करा बिटिया। " हरिया अंदर ही अंदर खुशी से झूमता हुआ बोल पड़ा __" ई काम ता हम बहुतै अच्छे से करू गा। कउनव शिकायत ना होई तोहरा कै , ई तोहरे हरिया काका के वादा बा। ऊ ससुरे मंत्रीवा केर ओखे ई छोकरिया के साथ बहुतै अच्छे से ख़ातिरदारी करू गा हम। "

" शाबाश काका। " साक्षी मुस्कुराई __" मुझे आपसे यही उम्मीद है। मुझे पता है आप अपना काम बहुत अच्छे से करते हैं। "

" हाँ ई ता हा बिटिया। " हरिया काका गर्व से अकड़ते हुए बोला __" हम आपन काम बहुतै अच्छे से करता हूँ। कउनव परकार केर शिकायत का मौका नाहीं देता हूँ। समय आवैं ता पहिले फेर तू देख लीहा। हम ई ससुरन के नानी केर नानी ना याद दिलाई ता कहना। "

" नहीं नहीं। " रचना तो भयभीत होकर चीखी ही किन्तु विवेक बुरी तरह भयभीत होकर रो पड़ा था __" ये सब मत करो इंस्पेक्टर। ये आदमी बहुत ज़ालिम है। प्लीज मेरी बहन के साथ कुछ भी ऐसा वैसा मत करो। जो कुछ करना है हमारे साथ करो। "

" और चीखो। " साक्षी बिजली की तरह विवेक के पास पहुँची थी , गरजते हुए बोली __" और तड़पो। मगर कोई फायदा नहीं होगा। मैं तुम सबका वो हाल करू गी कि किसी भी जन्म में ये सब करने के बारे में सोचोगे भी नहीं और अगर सोचोगे भी तो कर नहीं पाओगे। क्योंकि नामर्द कुछ कर नहीं सकते और तुम सब हर जन्म में नामर्द ही पैदा होगे। "

" अगर ये बात है। " सहसा विवेक ने अजीब भाव से कहा __" तो मुझमें और तुममें क्या फर्क़ रह गया इंस्पेक्टर ? हर अपराध की तो यकीनन सज़ा होती है मगर उस सज़ा में वो सब तो नहीं होता न जिस सज़ा को पाप कहा जाए या उसे अनैतिक करार दिया जाए ? तुमने जो कुछ करने का सोचा हुआ है वो तो हर तरह से अनैतिक है , पाप है। "

" तुम्हारे मुख से अनैतिक व पाप पुन्य की ये बातें अच्छी नहीं लगती मिस्टर। " साक्षी ने कहा __" मुझे तुमसे ज्यादा इन चीज़ों का ज्ञान है। मुझे पता है कि मैं क्या करने जा रही हूँ। तुम्हें इस बात से कोई फर्क़ नहीं पड़ना चाहिए क्योंकि तुम तो अनैतिक व पाप कर्म करने के आदी हो। इस लिए बस खुली ऑखों से उस सबको देखने के लिए तैयार हो जाओ जो बहुत जल्द यहॉ दिखने वाला है। "

" इस कुतिया के सामने मत गिड़गिड़ाओ भाई। " सहसा रचना बोल पड़ी __" ये खुद भी वैसा ही कर्म करने वाली लगती है , वरना ऐसी बातें इसके दिमाग़ आती ही नहीं। पुलिस वाली है न , इस लिए हर किसी के नीचे लेट जाती होगी। ऐसी नौकरी में होता ही यही है आहहहहह। "

" तोहरी मॉ को ठोक ूँ छिनाल। " रचना की बात सुनते ही हरिया आग बबूला होकर उसको धर दबोचा था __" तोहरी ई हिम्मत की हमरी बिटिया के बारे मा अइसन कहथो। रुक अबहिन हम तोहरा का बतायेँ कि कउन केखर सामने लेटत है ?" हरिया ने सहसा साक्षी की तरफ देखा _" बिटिया तू जा इहॉ से। हम एखर ई ज़बान बोलैं का अंजाम दिखावथैं। "

" नहीं प्लीज उसे छोंड़ दो। " साक्षी के कुछ कहने से पहले ही विवेक चीख पड़ा था __" उसकी तरफ से मैं माफ़ी मॉगता हूँ। प्लीज इंस्पेक्टर इस आदमी को कहो कि मेरी बहन को कुछ न करे। "

" काका इसे बस थोड़ा सा डोज देना। " साक्षी ने विवेक की बात की तरफ ध्यान दिये बिना हरिया से कहा __" बाकी इसके साथ आग़ाज़ तो इसका बाप करेगा। आप समझ रहे हैं न मेरी बात ?"

" हम सब समझ गया हूँ बिटिया। " हरिया ने कहा _" अब तू जा इहॉ से। हम ई ससुरी का बतावथैं कि तोहसे अइसन बोलैं का अंजाम का होथे ?"

" मेरे साथ अगर कोई बद्दतमीजी की तो अंजाम अच्छा नहीं होगा तुम्हारे लिए। " रचना चीखी __" छोंड़ दो मुझे। वरना बहुत पछताओगे तुम सब। "

साक्षी ने उसकी तरफ हिकारत भरी दृष्टि से देखा और तहखाने के बाहर की तरफ चली गई। उसके इस तरह जाते ही विवेक गला फाड़ कर चिल्लाने लगा था। बार बार कह रहा था कि उसकी बहन को छोंड़ दो। मगर साक्षी न रुकी। जबकि साक्षी के जाते ही हरिया ने लपक कर तहखाने का दरवाजा अंदर से बंद किया और फिर वापस पलट कर विवेक की तरफ बढ़ा।

" का रे मादर---। " हरिया ने विवेक के पेट में एक लात जमाते हुए कहा __" काहे अइसन गला फाड़ रहा है ? अब बता तोहरी ई राड बहन केर का खातिरदारी करू हम ? हमरा ता बहुतै मन करथै कि तोरी ई बहनिया केर मदमस्त जलानी केर मजा लूँ मगर हमरी बिटिया ने ऊ सब केर इजाजत ना दिये रही। एसे अब हम तोरे साथै आपन ऊ पसंद वाला काम करू गा। "

" नहीं नहीं प्लीज काका। " हरिया की बात समझ कर विवेक बुरी तरह हिल गया , बोला __" वो सब मत करो। मैं अपनी बहन के सामने वो सब नहीं करना चाहता। "

" अबे बुड़बक। " हरिया ने विवेक के चेहरे पर अपनी हथेली फेरते हुए कहा __" हम ससुरे तोहरी इच्छा थोड़ी न पूछत हूँ। हम ता अपनी पसंद केर बात करत हूँ। अउर ऊ ता होबै करी बछुवा काहे से के ऊ हमरी ख्वाहिश केर बात हा। एसे चल अपना पिछवाड़ा खोल। "

विवेक नहीं नहीं करता ही रह गया मगर हरिया भला कहाँ मानने वाला था। उसने विवेक की रस्सी को ऊपर से छोरा और मजबूती से पकड़ कर उसके कच्छे को एक हाथ से नीचे सरका दिया। रचना ये सब अपनी खुली आँखों से देख रही थी। जैसे ही हरिया ने उसके भाई के कच्छे को नीचे किया वैसे ही उसे झटका लगा। आश्चर्य से उसकी आँखें फटी रह गईं। फिर सहसा जैसे उसे होश आया उसने झट से अपनी आँखें बंद कर ली। भला वो अपने भाई को नग्न हालत में कैसे देख सकती थी?

उधर हरिया ने विवेक को पकड़े ही उसे रचना के पास खींच कर लाया और उसके सामने लाकर रचना की तरफ देख कर बोला__"ई देख ससुरी हम तोहरे ई भाई के साथ का करथूँ। हम चाहूँ ता अबहिन दुई मिनट मा तोहरे भाई का ई दुई इन्च का लिंग तोहरी योनी मा पाल दूँ मगर पेलूँगा नाहीं। ऊ ता तोहरा बाप अपने लिंग से तोहरी योनी का पेलेगा। ई बखत ता हम तोहरे ई भाई की नितंब पेलूँगा। ई देख।"

हरिया की बातों ने रचना के होश उड़ा दिये थे। उसे पहली बार एहसास हुआ कि वो कितनी खतरनाक जगह पर आ गई है। यहाँ पर उसकी उसके भाई की और उसके बाप की चलने वाली नहीं थी। ये सोच सोच कर ही वह थरथर काँपे जा रही थी। उसने सख्ती से अपनी आँखें बंद की हुई थी। उधर विवेक शर्म की इंतेहां की हद से गुज़र रहा था। आत्मग्लानी और अपमान में डूबा था वह। वह बुरी तरह हरिया से छूटने की मशक्कत कर रहा था। किन्तु छूट नहीं पा रहा था। उसमें अब इतनी ताकत भी न बची थी कि वो कोई ज़ोर आजमाइश कर सके।

हरिया ने मजबूती से पकड़ कर उसे आगे की तरफ झुका दिया और अपनी धोती को एक साइड कर अपने हलब्बी लिंग को बाहर निकाल लिया। एक हाथ से अपने लिंग को पकड़ कर

उसने विवेक की नितंब में निशाना लगा दिया। इसके साथ ही विवेक की हृदय विदारक चीख तहखाने में गूँज गई। विवेक के लाख प्रयासों के बावजूद उसके हलक से चीख निकल गई थी और वो हो गया जिसे वह किसी सूरत में होने नहीं देना चाहता था। इधर अपने भाई की इतनी भयानक चीख सुनकर रचना बुरी तरह डर गई। उसने पट्ट से अपनी ऑखें खोल कर अपने भाई की तरफ देखा और ये देख कर तो उसकी ऑखें ही बाहर की तरफ उबल पड़ी कि उसके भाई की नितंब में हरिया का मोटा तगड़ा लिंग जड़ तक घुसा पड़ा था। जबकि सामने की तरफ झुका हुआ उसका भाई झटके खा रहा था। उसकी ऑखों से ऑसू बह रहे थे। रचना को अपने भाई की इस दशा पर बड़ा अजीब सा लगा। उसकी अंतर्आत्मा तक कॉप गई थी ये भयावह मंज़र देख कर। उसे एकाएक ही एहसास हुआ कि उसके भाई की ये दशा उसकी वजह से ही हुई है। अगर उसने साक्षी को वो सब न कहा होता तो शायद ये सब न होता। उसे खुद पर बेहद गुस्सा आया। मगर अब क्या हो सकता था। अपने भाई को इस दीनहीन दशा में देख कर उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे।

उधर हरिया थोड़ी देर रुकने के बाद अपनी कमर को झटका देना शुरू कर दिया था। सहसा उसने अपने सिर को ज़रा सा घुमा कर रचना की तरफ देखा। रचना और हरिया की ऑखें आपस में टकरा गईं। रचना ने घबरा कर तुरंत ही अपनी ऑखें बंद कर अपने सिर को झुका लिया। ये देख कर हरिया मुस्कुरा उठा। उसके बाद तो जैसे तहखाने में हरिया के झटकों से निकलती थाप थाप की आवाज़ें और विवेक की घुटी घुटी सी गूँजती रहीं। जहॉ एक तरफ अपने दोस्त की इस दशा पर उसके तीनो दोस्त बेहद दुखी थे वहीं दूसरी तरफ रचना अपने भाई की इस दशा पर थरथर कॉपे जा रही थी।

तहखाने से बाहर आकर साक्षी तेज़ तेज़ क़दमों के साथ अपने कमरे की तरफ बढ़ गई थी। कमरे में आते ही उसने आलमारी से अपना वो मोबाइल निकाला जिसे उसने अपने एक मुखबिर से खरिदवाया था। उस फोन को अपनी पॉकेट में डाल कर उसने अपने आईफोन को स्विच ऑफ किया और उसे भी अपनी जेब में डाल लिया। उसके बाद उसने आलमारी से अपना सर्विस रिवाल्वर निकाल कर उसे चेक किया तत्पश्चात उसे भी अपनी जीन्स की बेल्ट में खोंस लिया। टाप के ऊपर उसने एक लेदर की जाकेट पहना और टेबल से जिप्सी की चाभी लेकर वह कमरे से बाहर निकल गई।

बाहर लान में एक तरफ खड़ी जिप्सी में बैठ कर उसने जिप्सी को स्टार्ट किया और मेन गेट से बाहर आ गई। इस बार उसकी जिप्सी का रुख पुल की तरफ न होकर उस तरफ था जिस तरफ फार्महाउस के बगल से एक अन्य रास्ता किसी दूसरी जगह की तरफ जाता था। साक्षी ने इस रास्ते को जानबूझ कर चुना था क्योंकि उसे पता था कि नहर पर बने पुल की तरफ वाले रास्ते पर आगे ख़तरा था। उसके बाप के आदमी कहीं भी उसे मिल सकते थे। हलाँकि साक्षी को पता था कि उसके बाप को सी.बी.आई. वाले ले गए थे। किन्तु फिर भी उसे ये तो एहसाह था ही कि उसके बाप के आदमी खुले घूम रहे हैं।

लगभग दस मिनट बाद साक्षी ने जिप्सी को एक ऐसी जग। पर रोंका जहाँ पर एक पवन चक्की लगी थी। दाहिने तरफ दूर एक पहाड़ था जो कि गेरुए रंग का था। बाकी दूर दूर तक सुनसान इलाका पड़ा हुआ था। पवन चक्की से लगभग पचास गज की दूरी पर ही साक्षी ने मेन सड़क हे उतार कर जिप्सी को रोंका हुआ था। कुछ देर आस पास का जायजा लेने के बाद उसने अपने जीन्स की पॉकेट से नये मोबाइल को निकाला और उसे स्विच ऑन किया। स्विच ऑन होते ही उसने उस पर कोई नंबर डायल कर उसने मोबाइल को कान से लगा लिया।

" क्या हाल चाल हैं तेरे मंत्री ?" उधर से फोन उठाते ही साक्षी ने मर्दाना आवाज़ में कहा था।

" मेरे हाल की छोंड़। " उधर से मंत्री का लगभग तीखा स्वर उभरा _" तू अपने हाल की चिन्ता कर। "

" ओहो ऐसा क्या ?" साक्षी ने नाटकीय अंदाज़ से कहा __" मेरे हाल का क्या होने वाला है भला ?"

" चिंता मत कर। " उधर से मंत्री ने कहा __" बहुत जल्द तेरा हाल बेहाल करने वाला हूँ मैं। मुझे पता चल गया है कि मेरे साथ ऐसा दुस्साहस करने वाला तू कौन है। इस लिए अब मैं तेरा वो अंजाम करू गा जो आज तक किसी ने ना तो सोचा होगा और ना ही सुना होगा। "

मंत्री रजतकुमार रस्तोगी की इस बात से साक्षी बुरी तरह चौंकी। उसके मन में सवाल उभरा कि मंत्री को भला उसके बारे में कैसे पता चल गया? क्या कमिश्नर साहब ने उसे उसके बारे में बताया? नहीं नहीं ऐसा नहीं हो सकता। कमिश्नर साहब उसके बारे में उसको तो क्या बल्कि किसी को भी कुछ नहीं बता सकते। उन्हें पता है कि मंत्री इस प्रदेश के लिए कितना

हानिहारक है। उन्होंने मंत्री के खिलाफ़ इस जंग को अंजाम तक पहुँचाने का खुद हुक्म दिया था। फिर भला वो कैसे उसके बारे में उसे बता देंगे? नहीं नहीं ऐसा संभव नहीं है। तो फिर मंत्री को उसके बारे में कैसे पता चल गया? साक्षी का दिमाग़ तेज़ी से इधर उधर भाग दौड़ कर रहा था। मगर उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। सहसा उसके मन में ख़याल आया कि कहीं ऐसा तो नहीं कि उसके ही पुलिस डिपार्टमेन्ट का कोई पुलिस वाला मंत्री को सब कुछ बताया हो। मगर ऐसा कैसे हो सकता है? क्योंकि ये केस बहुत ही गोपनीय था। इसके बारे में कमिश्नर के सिवा किसी को कुछ पता नहीं था। सहसा साक्षी को उन पुलिस वालों की याद आई जिन्हें उसने विवेक के फार्महाउस में विवेक से लड़ाई करने के बाद सस्पेण्ड किया था। साक्षी की लगा कि यकीनन उन्हीं ने मंत्री को सब कुछ बताया होगा। क्योंकि उन्हें तो पता ही था कि उसने विवेक और उसके दोस्तों से फार्महाउस पर लड़ाई की थी और उन चारों को अधमरा कर दिया था। साक्षी को यकीन हो गया कि उन पुलिस वालों ने ही मंत्री को सब कुछ बताया है और अब मंत्री उसके लिए काल बन कर अपना क़हर बरसाने वाला है।

" क्या हुआ वाजपेयी के बच्चे ?" साक्षी को इतनी देर से ख़ामोश जान कर उधर से मंत्री ने चहकते हुए कहा __" हवा निकल गई क्या तेरी ?"

मंत्री का ये वाक्य सुन कर साक्षी के ज़हन में जैसे विस्फोट सा हुआ। सारा मामला पल भर में उसकी समझ में आ गया। उसे समझ में आ गया कि मंत्री ने उस रेप पीड़िता लड़की यानी प्राची के चलते ये पता लगाया है। उसने पता किया होगा कि उसके बच्चों ने जिस लड़की के साथ रेप को अंजाम दिया था वो लड़की प्राची थी जो उसके ही बच्चों के कॉलेज में पढ़ती थी। मंत्री ने अपनी तरफ से छानबीन की होगी कि इस मामले में पुलिस ने तो अपना हाथ नहीं डाला और ना ही कोई केस वगैरह हुआ। मगर लड़की के साथ जो कुछ हुआ उसे उसके घर वाले सहन नहीं कर सके। इस लिए संभव है कि लड़की के बाप ने अपनी बेटी के साथ हुए इस अत्याचार का बदला लेने के लिए ये सब किया है। साक्षी ने स्वीकार किया कि मंत्री का सोचना एकदम जायज़ है।क्योंकि उसके साथ ये सब करने की वजह सिर्फ और सिर्फ प्राची के बाप के पास ही थी और अब वह इस मामले को जान कर प्राची के घर वालों के ऊपर क़हर बन कर टूटने वाला है।

साक्षी ने राहत की सास तो ली किन्तु उसे अब प्राची के मॉ बाप की चिंता सताने लगी थी। वो जानती थी कि इस केस से प्राची के घर वालों का कोई लेना देना नहीं है। वो बेचारे तो बेक़सूर हैं। साक्षी प्राची के पैरेन्ट्स के लिए फिक्रमंद हो उठी थी। मगर फिर जैसे उसे ख़याल आया कि उसे इतना चिंता करने की क्या ज़रूरत है? उसके पास तो मंत्री और उसके साथियों के खिलाफ़ सबूत के रूप में ऐसा डायनामाइट है जो अगर पब्लिक के सामने आ जाए तो मंत्री और उसके साथी एक ही पल में उस डायनामाइट के विस्फोट से तहस नहस हो जाएँगे। इस ख़याल के आते ही साक्षी के खूबसूरत होठों पर मुस्कान फैल गई। जबकि,

" लगता है तेरे सभी देवता कूच कर गए हैं वाजपेयी। " उधर से मंत्री का ठहाका गूँजा __" तुझे समझ आ गया होगा कि अब तेरे साथ क्या होने वाला है। मगर चिंता मत कर। मैं तुझे एक सुनहरा मौका देता हूँ। सुना है कि तेरी बीवी बहुत सुंदर है , बिलकुल वैसी ही जैसी तेरी

वो बेटी थी जिसे हमारे बच्चों ने रगड़ रगड़ कर पेला था। हो भी क्यों न , आख़िर खूबसूरत मॉ की कार्बन कॉपी जो थी। ख़ैर , मैं ये कह रहा हूँ कि अगर तुझे अपनी और अपने परिवार की ज़रा सी भी फिक्र है तो तू अपनी उस खूबसूरत बीवी को हमारे हरम में ले आ। अगर तेरी बीवी ने मुझे और मेरे सभी साथियों को खुश कर दिया तो सोचूँगा कि तुझे तेरी इस हिमाक़त के लिए माफ़ कर दूँ। "

" ज्यादा उड़ मत रंडी की औलाद। " साक्षी ने मर्दाना आवाज़ में गरजते हुए कहा __" तूने अगर मेरे बारे में ऐसा वैसा सोचने की कोशिश की तो सोच लेना कि तेरी बेटी मेरे कब्जे में ही है। उसके साथ मैं क्या क्या करू गा ये तू सोच भी नहीं सकता। मुझे अपनी ज़रा सी भी परवाह नहीं है क्योंकि मैं छोटा आदमी हूँ और बेटी के मरने के बाद वैसे भी अब मुझमें जीने की कोई ख्वाहिश नहीं है। मगर तेरा क्या होगा नाली के कीड़े ? तू तो इस प्रदेश की नाक और कान है न। तेरे वो रंगीन वीडियो अभी भी मेरे पास हैं। मैं चाहूँ तो इसी वक्त उन्हें सोशल मीडिया पर डाल कर तेरी और तेरी इज्ज़त की धज्जियॉ उड़ा दूँ। उसके बाद तेरे पीछे प्रदेश की जनता और पुलिस इस तरह कुत्तों की तरह दौड़ पड़ेगी कि साले तुझे कहीं पर छुपने की जगह भी न मिलेगी। "

साक्षी की इन खतरनाक बातों से उधर सन्नाटा सा छा गया। ऐसा लगा जैसे मंत्री को सॉप सूँघ गया हो। सच ही तो था। उसे कदाचित इस बात का ध्यान ही नहीं रह गया था कि उसके सबसे बड़े रक़ीब के पास उसके खिलाफ़ कितना बड़ा डायनामाइट मौजूद है।

" अब बोलता क्यों नहीं हरामज़ादे ?" साक्षी ने पुनः दहाड़ते हुए कहा __" तेरी अम्मा मर गई क्या ? एक बात कान खोल कर सुन ले। तू ये मत समझना कि मैं यहॉ पर अकेला हूँ और तेरे आदमी मुझे पल भर में हजम कर जाएंगे। इतना कमज़ोर भी नहीं हूँ मैं। मुझे तेरे क्रिया कलाप की पल पल की ख़बर है और मैने अपने चारो तरफ गुप्त रूप से ऐसे आदमी लगा रखे हैं जो मुझे सुरक्षा भी प्रदान करते हैं और ये भी बताते हैं कि तेरा अगला क़दम क्या होने वाला है। इस लिए तू कुछ भी करने या सोचने से पहले ये ज़रूर सोच लेना कि तेरी कोई भी छोटी बड़ी हरकत तेरा वो अंजाम कर देगी जिसके बारे में अभी मैने तुझे बताया था। तेरी बेटी और वो चारो लड़के मेरे कब्जे में हैं और मैं चाहूँ तो तेरी बेटी के साथ तेरे ही बच्चों की वैसी वीडियो क्लिप बना कर तुझे भेज दूँ जैसी वीडियो तेरे पास मैं पहले भी भेज चुका हूँ। यकीन न हो तो बोल , मुझे तेरी बेटी की हॉट वीडियो बनाने में ज़रा भी वक्त नहीं लगेगा। "

" नहीं नहीं प्लीज ऐसा ग़ज़ब मत करना। " उधर से मंत्री का गिड़गिड़ाहट से भरा स्वर उभरा __" मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ता हूँ। मुझसे ग़लती हो गई जो मैने तुम्हें वो सब कहा। मैं ऐसा कुछ भी नहीं करू गा जिससे मुझे खुद ही गर्त में डूब जाना पड़े। मगर ,,,,

" अटक क्यों गया हिजड़े ?" साक्षी गुर्राई __" बोल न , मगर क्या ?"

" मगर मैं ये जानना चाहता हूँ। " मंत्री ने कहा __" कि ये सब कब तक चलेगा ? मेरा मतलब है कि तुम्हें जो चाहिए वो मैं बिना सोचे समझे देने को तैयार हूँ। मगर तुम मेरे बच्चों को कुछ भी नहीं करोगे। "

" तू मेरे सामने कोई कंडीशन रखने की पोजीशन में कहॉ है कुत्ते ?" साक्षी ने कहा __" और तू भला मुझे देगा क्या ? तेरी औकात क्या है मुझे कुछ देने की ? तू तो साले खुद ही भिखारी है। हर पॉच साल में भिखारी की तरह जनता के सामने हाथ फैलाए पहुॅच जाता है। ये अलग बात है कि जनता की भीख का तू गंदे तरीके से फल देता है। उसी का अंजाम तो भुगतना है तुझे। इस प्रदेश से तेरे जैसे लोगों की सल्तनत ही नहीं बल्कि नामो निशान तक मिटाने का सोच लिया है मैने।

और हॉ, किसी भी तरह की रियायत की उम्मीद मत करना। क्योंकि वो तेरे जैसों के लिए मेरी अदालत में है ही नहीं।"

" मैं मानता हूॅ कि मेरे बच्चों ने तुम्हारी बेटी के साथ बहुत बुरा सुलूक किया था। " उधर से मंत्री का धीर गंभीर स्वर उभरा __" और ये भी मानता हूॅ कि मैने अपने कार्यकाल में प्रदेश की जनता के साथ बहुत बुरा किया है। मगर जो गुज़र गया उसे तो लौटाया नहीं जा सकता न ? हॉ इतना वचन ज़रूर देता हूॅ कि आइंदा से प्रदेश की जनता के साथ कुछ भी बुरा नहीं करूॅगा बल्कि हर दम हर पल अच्छा करने की कोशिश करेगा। मैने जिसका जो भी बुरा किया है उसका नुकसान मैं दोगुने भाव से भरूॅगा। "

" तू क्या भरेगा दोगले इंसान। " साक्षी ने फटकार सी लगाते हुए कहा __" तू तो सिर्फ जनता का खून चूसना जानता है। आज ये सब इस लिए बक रहा है क्योंकि मैने तेरे पिछवाड़े में डंडा घुसाया हुआ है। वरना तू अपनी वही औकात दिखाता जो हमेशा से सबको दिखाता आया है। मैं तेरी किसी भी बातों पर आने वाला नहीं हूॅ। तेरा और तेरे साथियों का अंजाम मेरे द्वारा लिखा जा चुका है रस्तोगी । इस लिए मुझसे रहम की भीख मत मॉग। बल्कि मरने से पहले अगर कुछ अच्छा करना चाहता है तो उन मजलूम लोगों के कुछ कर जिनका तूने खाया है और जिन पर तूने अत्याचार किया है। संभव है कि तेरे ऐसा करने पर मैं तेरे अंजाम को बदतर न होने की सूरत पर विचार करूॅ। "

" मैं करूॅ गा वाजपेयी। " उधर से मंत्री के स्वर में राहत के भावों की झलक दिखी __" ज़रूर करूॅ गा मैं। मैं हर उस व्यक्ति का भला करूॅ गा जो मेरे द्वारा किसी भी तरह से सताया गया है और ये काम मैं आज से ही नहीं बल्कि अभी से करना शुरू कर दूॅगा। बस तुम मेरे बच्चों के साथ कुछ बुरा मत करना। "

" पहले जो कह रहा है उसे करके तो दिखा रस्तोगी। " साक्षी ने कहा __" अगर मुझे नज़र आया कि तेरी वजह से प्रदेश की समूल जनता खुश हो गई है तो यकीन मान तेरे अंजाम की स्थित में ज़रूर कुछ कमी कर दूॅगा। "

" ओह बहुत बहुत शुक्रिया वाजपेयी। " मंत्री ने खुश होकर कहा __" मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूॅ कि बहुत जल्द तुम प्रदेश की इस जनता को मेरी वजह हे खुश होते हुए देखोगे। "

" बेस्ट ऑफ लक। " साक्षी ने कहा और काल कट कर दी।

मंत्री रजतकुमार रस्तोगी से बात करने के तुरंत बाद ही साक्षी ने उस मोबाइल फोन को स्विच ऑफ कर दिया था। इस वक्त उसके चेहरे पर असीम राहत के भाव थे। राहत के भाव इस लिए कि उसने प्राची के मॉ बाप को रस्तोगी के क़हर से किसी तरह बचा लिया था। मगर उसे पता था कि रस्तोगी बहुत ही दोगला इंसान है। संभव है कि उसने उसे झूॅठा आश्वासन दिया हो। जबकि वो करे वही जो उसने उससे शुरू में कहा था। अतः साक्षी का अब पहला काम यही था कि किसी तरह से प्राची के मॉ बाप को मंत्री के क़हर से सुरक्षित करे। मगर समस्या ये थी कि कैसे? क्योंकि प्राची का गॉव सोनपुर के बाद पड़ता था। जिसका रास्ता दो तरफ से था। एक सोनपुर से तो दूसरा नहर के पास से जो दूसरा रास्ता गया था। ये दोनो रास्ते ऐसे थे जिन पर मौजूदा हालात में जाना ख़तरे से खाली नहीं था। क्योंकि साक्षी को पता था कि उसका बाप भले ही इस वक्त सी.बी.आई. के शिकंजे में था मगर उसके साथी और उसके आदमी तो आज़ाद ही थे जो हर तरफ फैले हुए होंगे।

साक्षी के लिए आज बस का दिन और रात किसी तरह गुज़ारनी थी। कल तो उसका भाई विक्रम आ ही जाएगा। हलॉकि वो चाहती तो पुलिस प्रोटेक्शन ले सकती थी और धड़ल्ले से कहीं भी आ जा सकती थी किन्तु वह अपने प्यारे भाई विक्रम की बात को टालना नहीं चाहती थी। उसने भी तो वादा किया था उससे कि वो ये जंग उसके साथ ही मिल कर लड़ेगी। मगर अब चूॅकि प्राची के मॉ बाप की सुरक्षा का सवाल था तो उसे कुछ तो करना ही था। इस लिए अब वो यही सोच रही थी कि प्राची के मॉ बाप को किस तरह से सुरक्षित करे?

पवन चक्की के पास जिप्सी में बैठी साक्षी कुछ देर तक इस समस्या के बारे में सोचती रही। उसके बाद उसने इस सबको अपने दिमाग़ से झटका और जिप्सी को स्टार्ट कर वापसी के लिए मुड़ गई।

७०

उधर हवेली में!

सुबह से दोपहर और दोपहर से अब शाम होने वाली थी। सोनिया अपने कमरे में बेड पर पड़ी हुई थी। सारा दिन उसने इसी सोच विचार में गुज़ार दिया था कि वो अपने बाप से कैसे बात करे ? हलाँकि इस बीच उसने मुंबई में अपनी बड़ी बहन से फोन पर अपने बाप कीर्तिमान सिंह का मोबाइल नंबर ले लिया था। उसकी बहन इस बात से हैरान भी हुई थी। उसके पूछने पर सोनिया ने उसे सारी बातें बता दी थी कुछ बातों को छोंड़ कर। किन्तु अपने बाप का मोबाइल नंबर लेने के बाद भी सोनिया की हिम्मत नहीं हो रही थी कि वो अपने पिता को फोन लगाए।

उसकी इस हालत से जयदीप भी परेशान था। उसने उन आदमियों का गेस्ट हाउस में रहने का इंतजाम भी कर दिया था। चिंतित व परेशान तो वो खुद भी था अपने बाप के लिए मगर उसे समझ नहीं आ रहा था कि वो खुद ऐसा क्या करे जिससे सारी समस्याएॅ खत्म हो जाएॅ।

इस वक्त भी वो अपनी माँ के कमरे में ही आया हुआ था और कमरे में ही एक तरफ रखे सोफे पर बैठा हुआ था। उसकी नज़रें अपनी माँ के मुरझाए हुए चेहरे पर केन्द्रित थीं। उसे इस बात से तक़लीफ भी हो रही थी कि वो कुछ कर नहीं पा रहा था। उसे आज समझ आ रहा था कि खुद कोई काम करना कितना मुश्किल होता है। आज तक तो वह बनी बनाई जलेबी ही खा रहा था। मगर जब खुद ही जलेबी बनाने का नंबर आया तो उसका दिलो दिमाग़ जैसे कुंद सा पड़ गया था। उसे पहली बार लगा कि बेबसी क्या होती है? सब कुछ होते हुए भी कुछ न कर पाना किसे कहते हैं?

" ऐसे कब तक हताश बैठी रहेंगी मॉम ?" फिर उसने सोनियाा को देखते हुए ही कहाा __" ये तो आपको भी पता है कि हम अगर कुछ करना भी चाहें तो नहीं कर सकते। इस लिए अगर नाना जी के द्वारा हमारी समस्या का समाधान हो सकता है तो क्यों नहीं बात करती आप उनसे ? दोपहर से देख रहा हूँ मैं आपको। आप इसी तरह गहरी सोच में डूबी बैठी हुई हैं। इस तरह भला कब तक बैठी रहेंगी आप ? आप जानती हैं कि डैड को सी.बी.आई. के चंगुल से निकालना कितना ज़रूरी है। डैड के बिजनेस से संबंधित साथियों ने अपने आदमी हमारी मदद के लिए भेज दिये हैं। अब उनको हम यूँ ही तो चुपचाप यहाँ नहीं बैठाए रह सकते न ? इस लिए मॉम आप अपने दिमाग़ से सारी बातों को निकालिए और नाना जी को फोन लगा कर उनसे बात कीजिए। "

" कैसे फोन लगा दूँ बेटाा ?" सोनियाा ने सहसा हताश भाव से कहाा __" और किस मुह से फोन लगाऊँ अपने बाप काो ?"

" क्या मतलब मॉम ??" जयदीप चकराया।

" तुम इस सब को जितना आसान समझते हो न वो इतना आसान नहीं है बेटा। " सोनियाा ने

कहा __" ज़रा सोचो कि अपने बाप से संबंध तोड़े मुझे कितने साल हो गए। अपनी खुशी व अपने स्वार्थ के लिए मैने अपने उस पिता को त्याग दिया था जिनका इस दुनियॉ में हम दोनो बहनों के सिवा दूसरा और कोई नहीं था। मैं ही सबसे ज्यादा अपने पिता की लाडली थी और मैने ही उन्हें सबसे ज्यादा दुख दिया और निराश भी किया। आज मुझे इस बात का बखूबी एहसास है बेटा कि अपनी औलाद की बेरुखी के चलते एक बाप ने आज तक कितनी तक़लीफ़ और कितना दुख सहा होगा। ये सवाल तो उठेगा ही बेटा कि इसके पहले मुझे अपने बाप की याद क्यों नहीं आई ? इसके पहले मैने क्यों ये जानना भी ज़रूरी नहीं समझा कि कीर्तिमान सिंह नाम का कोई व्यक्ति जो कि मेरा बाप है वो ज़िंदा भी है या कि मर गया है ? आज अगर मुझ पर ये मुसीबत न आती तो ज़ाहिर है कि आइंदा भी मैं अपने बाप से बात करने के बारे में सोचती भी नहीं। ये ऐसी बात है बेटा जिसकी वजह से मेरी हिम्मत नहीं पड़ रही कि मैं अपने बाप को फोन लगा कर उससे बात कर सकूँ। जबकि इस बात का मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी समस्या के बारे में जानकर मेरा बाप मेरी मदद करने से हर्गिज़ भी इंकार नहीं करेगा। "

" ये सच है मॉम कि आपने अपने पिता जी से बात न करके अब तक बहुत बड़ी भूल ही की है। " जयदीप ने गंभीरता से कहा __" मगर ये भी सच है कि इस बारे में सोचते रहने से भी क्या होगा ? वो सब अपनी जगह से गायब तो नहीं हो जाएगा। भूल इंसान से ही होती है , आपसे भी हुई है। भले ही आपकी वो भूल माफ़ी के लायक हो या ना हो। मगर किसी भी भूल या अपराध के चलते यूँ चुप तो नहीं बैठे रहा जा सकता। उसके लिए सबसे पहले अपने अपराधों के लिए नाना जी से माफ़ी मॉगनी होगी आपको। वो जो भी इसके लिए सज़ा दें उसे आपको स्वीकार करना ही पड़ेगा। हलॉकि मुझे ऐसा लगता है कि नाना जी आपको कोई सज़ा देंगे ही नहीं। मगर औपचारिकता तो करनी ही पड़ेगी आपको। उन्हें भी इस बात का बोध होगा कि चलो मुसीबत में ही सही किन्तु उनकी बेटी को उनका ख़याल तो आया। बस , उसके बाद तो सब कुछ आसान ही हो जाना है मॉम। इस लिए मैं तो यही कहूँगा कि आप ये सब सोचना छोंड़िये और नाना जी को हिम्मत बॉध कर फोन लगाइये। "

सोनिया अपने बेटे जयदीप की इस सूझ बूझ भरी बातें सुन कर चकित रह गई थी। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि उसका बेटा ऐसी समझदारी भरी बातें भी कर सकता है। मगर चूँकि जयदीप की बातें न्यायपूर्ण व तर्कसंगत थी इस लिए उसे भी इस बात का एहसास हुआ कि इस तरह सोचते रहने से भला क्या होगा? आख़िर बिना फोन किये अथवा बिना बात किये किसी भी समस्या का समाधान तो होने वाला नहीं है। उसके लिए शारीरिक और मानसिक कर्म तो करना ही पड़ेगा।

" तुमने बिलकुल ठीक कहा बेटे। " फिर सोनिया ने गहरी सास लेते हुए कहा __" जो हो गया और जो कुछ मैने किया है उसका सामना तो मुझे करना ही पड़ेगा। अत: मैं अब ज़रूर अपने पिता जी को फोन लगाऊँगी। उनसे अपने किये की माफ़ी भी मागूँगी। उनसे कहूँगी कि अपनी बेटी की इस संगीन भूल को हो सके तो माफ कर दें और अपनी कृपा मुझ पर बरसा दें। "

" ये हुई न बात। " जयदीप ने सहसा मुस्कुरा कर कहा _" मुझे यकीन है मॉम कि नाना जी

आपको कुछ नहीं कहेंगे। दुख तो होगा उन्हें मगर उससे भी ज्यादा खुशी भी होगी उन्हें कि उनकी लाडली बेटी ने आख़िर उन्हें याद करके फोन तो किया। "

" तेरे मुह में घी शक्कर हो बेटा। " सोनियाा ने प्रसन्नतापूर्ण भाव से कहाा __" ईश्वर करे तू जैसा कह रहा है वैसा ही हो। "

" ऐसा ही होगा मॉम। " जयदीप ने जोशीले अंदाज़ के साथ कहाा __" आप बिलकुल भी इस सबकी चिंता न करें। बस मोबाइल निकालिये और लगा दीजिए नाना जी को फोन। "

सोनिया ने अपने बेटे के उस चेहरे को कुछ देर तक देखा जो इस वक्त हज़ार हज़ार वॉट के बल्बों की तरह रोशन था। फिर बेड के सिरहाने पर ही रखे अपने मोबाइल को एक हाथ से उठाया और अपने पिता का नंबर ढूँढ़ कर कॉपते हाथो से उसे डायल कर दिया। काल लगाते ही सोनिया के हृदय की गति असाधारण रूप से तेज़ हो गई। दिलो दिमाग़ में एक अजीब सा एहसास मानो ताण्डव सा करने लगा। मन में एक अंजाना सा भय अपने पॉव पसारने लगा। उधर काल लगाते ही रिंग जाने की आवाज़ सोनिया के कानों में सुनाई देने लगी। उसकी नज़र जब जयदीप पर पड़ी तो जयदीप को मोबाइल का स्पीकर ऑन करने का इशारा करते हुए पाया। सोनिया ने हड़बड़ा कर जल्दी से मोबाइल का स्पीकर ऑन कर दिया। तभी,,,,

" यस कीर्तिमान सिंह स्पीकिंग हियर। " उधर से बहुत ही खुर्राटदार आवाज़ उभरी। सोनियाा को उस आवाज़ से ही ऐसा लगा जैसे उसकी हवा शंट हो गई हो। प्रत्युत्तर में उसके मुख से कोई लफ्ज़ न फूट सका। जबकि ,

" हैलो हू इज देयर ?" कीर्तिमान की आवाज़ पुनः उभरी।

" पि .. पिताा ... जी। " सोनियाा ने बहुत हिम्मत करके आख़िर टूटे हुए शब्दों से कह ही दियाा __"म .. मैं आ .. आपकी बेटी सोनियाा बोल .. रही हूँ। "

सोनिया की इस बात से उस तरफ सन्नाटा सा छा गया। जबकि उधर के छा गए इस सन्नाटे ने सोनिया की हृदय गति को मानो रोंक सा दिया। उसके मनो मस्तिष्क में तरह तरह की आशंकाएँ पल भर में उत्पन्न हो गईं।

"आ .. आपने .. सुना पिता जी ??" सोनियाा ने उस तरफ की ख़ामोशी से भयभीत होकर पुनः लरज़ते हुए स्वर में कहाा __" मैं .. आपकी बेटी सोनियाा बोल रही हूँ। "

" हॉ सुन तो लिया है मैने। " उधर से कीर्तिमान का अजीब सा अंदाज़ झलकाा __" मगर सोच रहा हूँ कि ऐसा कैसे हो सकता है और क्यों हो सकता है ?"

" ज जी मैं कुछ समझी नहीं पिता जी। " सोनियाा का मनो मस्तिष्क जैसे चकरा सा गया।

" समझने की ज़रूरत भी क्या है तुम्हें ?" उधर से कीर्तिमान के लहजे में एकाएक ही जैसे शिकायत और नाराज गी के भाव एक साथ घुल मिल गए थे __" जब समझने का वक्त था

तो तुमने उस वक्त बेहतर तरीके समझ तो लिया ही था। अब और कुछ समझने की भला तुम्हें क्या ज़रूरत पड़ गई ?"

" मु मुझे माफ़ कर दीजिए पिता जी। " सोनिय ा की ऑखों से सहसा ऑसू छलक पड़े , उसकी आवाज़ एकदम से भारी हो गई , बोल ी __" मैने आपका बहुत दिल दुखाया है। जबकि मुझे पता है कि बचपन से लेकर युवा अवस्था तक आपने मेरी हर इच्छा को ऑख बंद करके पूरी की थी। बदले में मैने आपको दुख तक़लीफ़ और रुसवाई के सिवा कुछ भी नहीं दिया। "

" अरे ये क्य ा ???" कीर्तिमान का ऐसा स्वर उभरा जैसे उसे सोनिय ा की इस बात पर ज़रा भी यकीन न आया हो। अत: बोल ा __" ये मैं क्या सुन रहा हूँ भई ? आज मेरी बेटी के मुख से इस लहजे में ऐसी बातें निकल रही हैं जिन बातों का मेरी बेटी के मुख से निकलने का कोई सवाल ही पैदा नहीं हो सकता था। सबसे पहले मुझे ये बता कि तेरी तबीयत तो ठीक है न ?"

सोनिया कुछ बोल न सकी। अपने पिता की इन बातों में छूपे तंज को समझ कर उसकी रुलाई फूट गई। उसे अपने पिता की इन तंजपूर्ण बातों का ज़रा भी बुरा नहीं लगा था। बल्कि रुलाई तो उसकी इस बात पर फूटी थी आज उसका वही बाप उससे इस लहजे में बात कर रहा था जो बाप इसके पहले उससे सिर्फ प्यार से बातें करता था। बिना मॉ की थी दोनों बहनें। मगर उस बाप नें मॉ बनकर भी अपनी बेटियों की परवरिश की थी।उसने दूसरी शादी नहीं की, बल्कि पना सम्पूर्ण जीवन और अपनी सम्पूर्ण खुशियॉ अपनी बेटियों पर कुर्बान कर दिया था। कीर्तिमान अपनी दोनो बेटियों को जी जान से चाहता था मगर उसकी जान तो जैसे उसकी छोटी बेटी सोनिया पर बसती थी। इसका कारण ये था कि सोनिया बिलकुल अपनी मॉ पर गई थी। मगर सोनिया पर जिसकी जान बसती थी आज वही बाप अपनी बेटी से तंजपूर्ण बातें कर रहा था। सोनिया को इस बात का एहसास था कि उसके बाप का ये तंज दरअसल उसके अंदर छुपे दर्द रूपी गुबार का महज एक मामूली सा हिस्सा है।

" ये क्या बेट ा ?" उधर से कीर्तिमान का स्वर एकदम से भारी सा हो गय ा __" अपने बाप के अंदर छिपे दर्द रूपी इस गुबार को क्या ज़रा सा भी नहीं निकलने देना चाहती त ू ? इसे निकल जाने देती तो कदाचित दिल का दर्द कुछ कम हो जाता। मगर ख़ैर , जाने दे। मैं तो ख्वाब में भी तुझे रुलाने का सोच नहीं सकत ा , ये तो फिर भी हक़ीक़त है। "

सोनिया का हृदय बुरी तरह कॉप कर रह गया। वो ये सोच कर बुरी तरह फफक फफक कर रो पड़ी कि उसके बाप का दिल कितना विशाल है। अपने अंदर छुपे असहनीय दर्द के बावजूद वह अपनी बेटी को रुलाना नहीं चाहता। बाप की इस महानता ने सोनिया को इतना छोटा और मामूली बना कर रख दिया कि उसे अपने आप से एकाएक घृणा सी होने लगी। उसकी ऑखों के सामने पल भर में वो सारे मंज़र घूम गए जो अब तक उसने किया था और उस मंज़र को देखते ही सोनिया को लगा जैसे दुनियॉ में उससे बड़ा कोई पापी नहीं है। सोनिया का जी चाहा कि ये ज़मीन फटे और वो उसमें पाताल तक समाती चली जाए। मगर हाए रे किस्मय! ऐसा भी नहीं हो सकता था। उसके दिल में भावनाओं और जज़्बातों का इतना भयंकर ज्वारभॉटा

मचल उठा कि उसे लगा कि कहीं उसका दिल उसका सीना फाड़ कर बाहर न उछल पड़े। अगले ही पल उसे ज़ोर का चक्कर आया और वह बेड पर एक तरफ गिर गई।

" मॉऽऽऽम। " जयदीप जो एकटक सोनिय ा को ही देख रहा था वो अपनी मॉ को इस तरह चक्कर खा कर गिरते देख बुरी तरह चीखते हुए सोफे से उठ कर सोनिय ा की तरफ लपका थ ा , बदहवाश सा सोनिय ा के चेहरे को थपथपाते हुए बोल ा __" क्या हुआ मॉम ? आप ठीक तो हैं न ? प्लीज बताइये न मॉम ... क्या हो गया आपक ो ? प पान ी .. पानी स मीनाक्ष ी आंट ी ... कहॉ हैं आप ? प्लीज जल्दी से पानी लाइये। डॉक्टर को बुलाईये। "

जयदीप बुरी तरह घबरा गया था और उसी घबराहट में चीखे जा रहा था। वहीं बेड पर ही पड़े सोनिया के मोबाइल से भी कीर्तिमान की घबराई हुई आवाज़ गूँज रही थी। वो उधर से पूछे जा रहा था__"क्या हुआ बेटी? तू ठीक तो है न? तू चिंता मत कर मेरी बेटी। मैं तुझसे ज़रा सा भी नाराज या गुस्सा नहीं हूँ। अरे तू तो मेरी लाडली बेटी है न।"

उधर जयदीप के चिल्लाने का असर जल्द ही हुआ था। मीनाक्षी जो कि नौकरानी थी वो तुरंत ही हाथ में पानी का ग्लास लिए भागते हुए आई। वो खुद भी बुरी तरह घबराई हुई लग रही थी।

" जयदीप बेटे क्या हुआ है मालकिन क ो ?" मीनाक्ष ी ने पानी का ग्ल ा स जयदीप को पकड़ाते हुए बोली थी।

" पता नहीं आंट ी। " जयदीप ने दुखी भाव से कह ा __" मॉम तो नाना जी से फोन पर बातें कर रही थी। फिर जाने क्या हुआ इन्हें कि चक्कर खा कर बेड पर गिर गई हैं। आप प्लीज जल्दी से डाक्टर को फोन कीजिए और उनसे कहिए कि वो दो मिनट के भीतर यहॉ आ जाए ँ। "

" ठीह है बेटा। " मीनाक्ष ी ने कह ा __" मैं अभी डाक्टर साहब को फोन लगाती हूँ। " ये कह कर मीनाक्ष ी वहॉ से चली गई। जबकि इधर कमरे में मोबाइल में से गूँजती कीर्तिमान की आवाज़ पर सहसा जयदीप का ध्यान गया। उसने लपक कर मोबाइल उठा लिया।

" नाना जी मैं जयदीप बोल रहा हूँ। " फिर जयदीप ने शीघ्रत ा से कह ा __" देखिए न मॉम को क्या हो गया ह ै ? कुछ बोल ही नहीं रही हैं। ऐसा क्या कह दिया है आपने जिसकी वजह से मेरी मॉम की ये हालत हो गई ह ै ?"

" ब बेटा मैने तो ऐसा वैसा कुछ नहीं कहा था। " उधर से कीर्तिमान का भारी स्वर उभर ा __" मगर तुम चिंता मत करना बेटे। तुम्हारी मॉ को बस चक्कर आया हुआ है और कुछ नहीं। डाक्टर आएगा वो अच्छे से चेकअप कर लेगा। तुम मुझे बताओ कि कहॉ से बोल रहे ह ो ? मैं सारे काम धाम छोंड़ कर अभी यहॉ से तुम लोगों के पास आ रहा हूँ। "

" नाना जी मैं जिला रामगंज के सोनपुर गॉव से बोल रहा हूँ। " जयदीप ने मन ही मन खुश

होते हुए कहा थ◌ा __" आप जब यहॉ पहुॅचेंगे तो किसी से भी पूछ लीजिएगा कि ठाकुर साहब की हवेली जाना है। बस कोई न कोई आपको हवेली तक छोंड़ने ज़रूर आ जाएगा आपके साथ। "

" ओह ठीक है बेटा। " उधर से कीर्तिमान ने कह◌ा __" बस तुम अपनी मॉ का अच्छे से ख़याल रखना। मैं कल तक तुम्हारे पास हर हालत में पहुॅच जाऊॅगा। "

इसके साथ ही उधर से कीर्तिमान ने कॉल को कट कर दिया। जबकि जयदीप के होठों पर मुस्कान उभर आई। उसने पलट कर सोनिया को देखा और ग्लास में भरे पानी को अपनी हथेली में लेकर सोनिया के चेहरे पर छिड़कना शुरू कर दिया। कुछ ही देर में सोनिया को होश आ गया। उसने पलकों को लपलपाते हुए अपनी ऑखें खोल दी। जयदीप ने उसे बेड पर अच्छे से लिटाया और बेड के किनारे पर ही बैठ गये।

" पि पिता जी। " होश में आते ही सोनिय◌ा दुखी भाव से कह उठी थी।

" डोन्ट वरी मॉम। " जयदीप ने सोनिय◌ा के हाथ को पकड़ कर हल्का सा दबाय◌ा __" एवरीथिंग इज अब्सोल्यूटली फाइन एण्ड फार काइण्ड योर इन्फॉरमेशन आपके पिता जी कल यहॉ आ जाएॅगे। "

" क्याऽऽ ???" जयदीप की बात सुन कर सोनिय◌ा बुरी तरह उछल पड़ी थी।

" यस मॉम। " जयदीप ने मुस्कुराते हुए कह◌ा __" एण्ड यू नो व्हाट आपके इस चक्कर ने कमाल कर दिया। "

" क्या मतलब ???" सोनिय◌ा हैरान।

" मतलब ये कि जो चीज़ बातों में नहीं हो सकती थी वो चीज़ आपके इस चक्कर से हो गई। " जयदीप ने उत्साहित भाव से कह◌ा __" क्या सही समय पर आपको चक्कर आया मॉम। "

" ये तू क्या बकवास कर रहा ह◌ै ??" सोनिय◌ा के चेहरे पर एकाएक सख्त भाव उभर आए __" ये सब तुझे मज़ाक लग रहा ह◌ै ? तुझे मेरे और मेरे पिता की भावनाओं का ज़रा सा भी एहसास नहीं हुआ ? कैसा बेटा है तू मेर◌ा ? तुझे इस सब में भी एक चाल नज़र आई ? मेरा यू चक्कर खाकर गिर जाना भी तुझे किसी कामयाबी का हिस्सा नज़र आय◌ा ? वाह बेटा वाह ... आज तूने साबित कर दिया कि तू सिर्फ और सिर्फ अपने बाप पर गया है। तेरे लिए किसी के जज़्बात किसी के दुख दर्द कोई मायने नहीं रखते। आज अगर मुझे चक्कर की वजह से दिल का दौरा पड़ जाता तब भी शायद तुझे और तेरे बाप को कोई फर्क़ नहीं पड़ता। "

" म मॉम। " जयदीप बुरी तरह से झेंपते हुए बोल◌ा __" ये आप क्या कह रही ह◌ं ?"

" शटअप। " सोनिय◌ा ज़ोर से चीखी थी। उसकी ऑखों से एकाएक ऑसू बह चल◌े __" क्या नहीं किया मैने और क्या नहीं दिया मैने तुम दोनो बाप बेटों क◌ो ? मगर मेरे त्याग और बलिदान का कोई मोल नहीं है तुम दोनो की नज़र में। मैने वो काम भी किया जिसके लिए कोई भी भारतीय औरत किसी भी सूरत में तैयार नहीं हो सकती। मैने अपने साथ साथ अपनी

आत्मा तक को जहन्नुम में झोंक दिया मगर उसका भी कोई मोल नहीं तुम लोगों की नज़र में। अभी तक तो नहीं मगर अब एहसास हो रहा है कि मेरे कर्मों की सज़ा मुझे मिलनी शुरू हो गई है। "

" आई एम स्वारी मॉम। " जयदीप ने सिर झुकाते हुए कहा __" मेरा वो मतलब हरगिज़ भी नहीं था जो आप समझ बैठी हैं। मैं तो .....

" बस। " सोनिया ने अपना दाहिना हाथ उठा कर अपने पंजे से उसे रुकने का संकेत देते हुए कहा __" कुछ भी सफाई देने की ज़रूरत नहीं है। मैं कोई बच्ची नहीं हूँ जिसे किसी भी तरह की बातों से बहला फुसला दिया जाए। मेरे सीने में भी एक दिल है जिसमें प्यार मोहब्बत और ममता का सागर उछाल मारता है। मगर तूने और तेरे बाप ने कभी उसकी कद्र नहीं की। "

" आप बेवजह बातों का पतंगड़ बना रही हैं मॉम। " जयदीप ने कहा __" जबकि मैं क़सम खा कर कहता हूँ कि मेरे कहने का वो मतलब नहीं था। हॉ मैं ये मानता हूँ कि मैंने वो सब उस समय कह दिया जबकि हालात वैसे नहीं थे। इसी लिए मैं आपसे उसके लिए माफ़ी भी मॉग रहा हूँ। और दूसरी बात मुझे पहली नज़र में यही लगा कि आपने चक्कर खा कर गिरने का नाटक किया है। इस लिए आपके नाटक को ज़ारी रखने के लिए मैं भी ज़ोर से चीखते हुए आपके पास आकर वो सब आपसे कहने लगा था। क्योंकि ये तो मुझे पता ही था कि मोबाइल चालू हालत में है और नाना जी को वो सब कुछ साफ साफ सुनाई देगा जो कुछ हम यहॉ करेंगे और ऐसा हुआ भी। तभी तो जब मैने देखा कि आपके चक्कर खाने से उधर नाना जी भी चिंतित व परेशान हो उठे हैं तो मैने जल्दी से मोबाइल उठा कर उनसे बात की थी और उन्हें आपके बारे में सब कुछ बताया था। उसके बाद उन्होंने यहॉ आने के लिए कहा और यहॉ का पता पूछा मुझसे तो मैने बता दिया। बस , यही हुआ था। उसके बाद मुझे लगा कि नाटक खत्म हो गया है तो मैने आपके चेहरे पर पानी छिड़क कर आपको होश में ले आया और आपसे वो सब कहा। मगर आपने तो कुछ और ही मुझे सुना दिया। "

" तभी तो कहती हूँ कि तुम दोनो बाप बेटों को किसी के दुख दर्द का एहसास नहीं है। " सोनिया ने दुखी भाव से कहा _" अगर होता तो उसी वक्त समझ जाते कि वो कोई नाटक नहीं बल्कि हक़ीक़त था। तुम्हें समझना चाहिए था कि वर्षों की बिछड़ी एक बेटी अपने बाप से बात कर रही थी। उस वक्त बाप बेटी के दिलों में भावनाओं का कैसा ज्वार भॉटा ताण्डव कर रहा होगा ? ये उन प्रबल भावनाओ का ही असर था कि मेरा दिल उन भीषण जज़्बातों को सहन न कर पाया और मैं चक्कर खा कर गिर गई थी। मगर , जैसा कि मैने कहा तुम दोनो बाप बेटों को किसी के दुख दर्द का एहसास नहीं है। तभी तो मेरी उस हालत को भी नाटक समझ लिया। "

" मुझे माफ़ कर दीजिए मॉम। " जयदीप ने सहसा भारी लहजे में कहा __" मुझसे सच में बहुत बड़ी ग़लती हो गई है। मगर आइंदा ऐसा नहीं होगा मॉम , ये मेरा वादा है आपसे।

आप तो जानती हैं कि आपकी अहमियत मेरी लाइफ में कितनी है। मैं ऐसा कोई काम कर ही नहीं सकता जिससे आपके दिल को ठेस पहुँचे। बस एक बार माफ़ कर दीजिए न।"

सोनिया ने इस वक्त जयदीप के चेहरे पर उभरे हुए मासूम से भावों को देखा तो सहसा उसकी ममता जाग गई। उसने तुरंत ही जयदीप को पकड़ कर अपने ऊपर खींच लिया और कस कर अपने सीने से भींच लिया। तभी किसी के आने की आहट से दोनो ही अलग हुए। कुछ ही पलों में मीनाक्षी ने कमरे प्रवेश किया। उसने बताया कि डाक्टर साहब आ गए हैं। मीनाक्षी की बात सुन कर जयदीप बेड से उठ कर कमरे से बाहर की तरफ चला गया। थोड़ी ही देर में सत्यम सिंह का फैमिली डाक्टर अक्षय जैन जयदीप के साथ कमरे में दाखिल हुआ। अक्षय जैन चालीस की उमर का तथा मध्यम कद काठी का व्यक्ति था। सत्यम सिंह जैसे इंसान से संबंध रखने वाला ये पहला ऐसा व्यक्ति था जो शक्ल और सुरत से शरीफ़ था।

जयदीप ने अक्षय को प्राथमिक बातें बताईं कि क्या हुआ था उसकी मॉम को। उसके बाद अक्षय ने चेकअप करना शुरू किया। थोड़ी देर तक सोनिया को चेक करने के बाद उसने कुछ दवाईयॉ दी और उन्हें सेवन करने की विधि बताई। फिर उसने जयदीप को अपने साथ बाहर आने का इशारा करते हुए कमरे से बाहर की तरफ चल दिया।

" क्या बात है डाक्टर अंकल ?" जयदीप ने बाहर आते ही सहसा गंभीरता से पूछा __" मेरी मॉम पूरी तरह ठीक तो हैं न ?"

" चिंता की कोई बात नहीं है बेटा। " अक्षय ने कहा _" बस थोड़ी कमज़ोरी थी इस वजह से उन्हें चक्कर आया था। ठाकुर साहब आएॅ तो उनसे कहना कि मैने उन्हें याद किया है। अगर उनके पास समय हो तो कुछ समय के लिए मेरे पास ज़रूर आएॅ वो। "

" जी बिलकुल डाक्टर अंकल। " जयदीप ने विनम्रता से कहा __" मैं डैड को ज़रूर आपके पास जाने के लिए कहूॅगा। "

उसके बाद डाक्टर अक्षय जैन हवेली से अपना थैला लिये चला गया। जयदीप भी वापस अपने मॉम के पास आ गया। मीनाक्षी रात के लिए खाना बनाने चली गई थी। उसे सोनिया ने कह दिया था कि कुछ और लोगों को साथ में लेकर उन लोगों के लिए भी खाना बना लेना जो लोग आज गेस्टरूम में ठहरे हुए हैं। कुछ देर अपनी मॉ के पास बैठने के बाद जयदीप सोनिया के ही कहने पर गेस्टरूम की तरफ चला गया। जबकि सोनिया अपने पिता के आने के बाद उससे मिलने के सुनहरे ख़याल बुनने लगी।

७१

उधर विक्रम की तरफ!

रात हुई तो विक्रम और अमर ने थोड़ा बहुत खाना खाया। हलॉकि खाना पीना वो लोग लेकर नहीं चले थे इस लिए एक स्टेशन पर जब ट्रेन रुकी तो वहीं इन दोनो ने अपने लिए खाने की कुछ चीज़ें ले लिये थे और फिर ट्रेन में ही दोनो ने बैठ कर खा लिया था।

यह देखकर मुझे झटका सा लगा कि मानुषी भी इसी ट्रैन में सफर कर रही है। शायद उसे पता चल चुका था कि सत्यम सिंह गिरफ्तार हो चुका है और इसलिए वो इतनी जल्दबाजी में गांव की तरफ जा रही है।मैने मानुषी की मौजूदगी में अपना चेहरा ढक लिया। अबतक उसने मुझे देखा नही था।मानुषी की मौजूदगी में मैने इतना ज़रूर किया कि अपनी सीट पर अमर को बैठा दिया था और अमर की सीट पर मैं बैठ गया था। इससे हुआ ये कि अब मानुषी की तरफ मेरी पीठ हो गई थी। हलॉकि इस तरफ बैठने से मेरी पीठ भी उसे दिखाई नहीं देनी थी। ख़ैर खाना पीना करके हम दोनो ही आराम से लेट कर सो गए थे। नींद भी ज़बरदस्त लगी थी क्योंकि हम दोनो लगातार यात्रा ही कर रहे थे।

रात के किसी प्रहर हमें शोर सा सुनाई दिया। ऐसा लगा जैसे कुछ लोग आपस में झगड़ा कर रहे थे। ये एसी का डिब्बा नहीं था। मैने जानबूझ कर एसी में टिकट बनवाने को नहीं कहा था उमाकांत अंकल से। रिजर्वेशन वाले डिब्बे में भी कुछ लोग जनरल डिब्बे की भीड़ देख कर घुस आते थे। ख़ैर, उस शोर शराबे की वजह से हमारी नींद टूट गई और हमारी ऑखें खुल गई।

शोर शराबा मेरे पीछे की तरफ से सुनाई दे रहा था। अमर जैसे ही उठ कर अपनी सीट पर बैठा वैसे ही उसकी नज़र मेरे पीछे उस तरफ पड़ी जिस तरफ शोर हो रहा था। अमर ने देखा कि चार पॉच लड़के मेरे पीछे की तरफ वाली सीट के पास फर्श पर खड़े थे और सीट पर बैठे हुए यात्रियों को अनाप शनाप बके जा रहे थे। उन लड़कों की आवाज़ों के बीच कुछ औरतों व लड़कियों की भी आवाज़ें आ रही थी। इस बीच मैं भी उठ कर अपनी सीट पर बैठ गया था। मैने ये सोच कर अपने पीछे की तरफ नहीं देखा कि कहीं मानुषी की नज़र मुझ पर न पड़ जाए। किन्तु उस वक्त मैं चौंका जब मानुषी की तेज़ तेज़ आवाज़ मेरे कानों पर पड़ी। उसकी आवाज़ से ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वो बस रोने ही वाली हो।

ये जान कर मेरे मानो मस्तिष्क में झनाका सा हुआ। मुझे समझते देर न लगी कि उन लड़कों से मानुषी तथा अन्य लोगों की कहा सुनी हो रही है। मुझे ये तो समझ न आया कि आख़िर बात क्या हुई है किन्तु इतना ज़रूर समझ गया कि मानुषी इस तरह किसी से झगड़ा करने वाली लड़की नहीं है। उस हालत में तो बिलकुल भी नहीं जबकि वो ट्रेन में अकेली सफर कर रही हो। मुझे लगा मानुषी इस वक्त बेहद परेशान हालत में है। मेरे अंदर का भाई जाग गया। बात भले ही चाहे जो हो मगर मैं ये हर्गिज़ भी बरदाश्त नहीं कर सकता था कि कोई ऐरा गैरा मेरी बहन को कुछ उल्टा सीधा कहे या उससे किसी तरह का झगड़ा करे।

मैने अमर को इशारा किया। अमर मेरा इशारा समझ गया। उसके बाद हम दोनो ही उस तरफ चल दिये। इस बीच मैने जल्दी से अपने मुख और नाक को रुमाल से ढँक लिया था। कुछ ही पल में हम दोनो उन लड़कों के पास पहुँच गए। मैने एक लड़के को हल्का सा दबाव देकर एक तरफ किया और सीट की तरफ देखने की कोशिश की। मैं देख कर चौंका कि मानुषी अपनी सीट पर बैठी सिसक रही थी। उसके बगल से ही एक और लड़की बैठी हुई थी। उसकी हालत भी मानुषी जैसी ही थी। मुझे समझ न आया कि मानुषी और वो लड़की सिसक क्यों रही हैं? जबकि उन दोनो के बगल से एक औरत भी बैठी थी जिसके साथ एक दस बारह साल का लड़का था। मानुषी की सामने की सीट पर दो आदमी व दो औरतें बैठी हुई थी। उनके चेहरों पर लगभग बारह बजे हुए थे।

" ओये कौन है बे तू ?" सहसा उस लड़के ने मुझे धक्का देते हुए कहा जिसे दबाव देकर मैं अंदर सीट की तरफ देखने लगा था , बोला __" और तू मुझे एक तरफ करके अंदर कहाँ घुसा आ रहा है ? क्या तुझे भी ये दोनो लौंडियाँ पसंद आ गई हैं ?"

" पसंद तो आएँगी ही दिनेश। " एक अन्य लड़के ने हँस कर कहा __" आख़िर माल तो ज़बरदस्त ही है न। "

" अरे तो पहले हमें तो चखने दे भाई। " दिनेश नाम के उस लड़के ने कहा __" उसके बाद ये भी चख लेगा। "

" कैसे चख लेगा यार ?" तीसरे लड़के ने कहा __" हम साले इतनी देर से इन मालों से कह रहे हैं कि बाथरूम चलो मगर ये हैं कि सुनती ही नहीं हैं हमारी बात। "

उन लड़कों की इन बातों से ही ज़ाहिर हो गया था कि माज़रा क्या है। मगर मैं हैरान इस बात पर था कि वहाँ पर बैठे बाकी सब उन लड़कों की बदतमीची सहन कैसे कर रहे थे? या फिर वो सब डर रहे थे कि ये लड़के कहीं उनकी औरतों या बेटियों को कुछ कहने न लगें। ये यो हद ही हो गई थी। सबको अपनी फिक्र थी, कोई ये नहीं सोच रहा था कि दूसरी लड़कियाँ भी तो किसी की बहन बेटी होंगी। इस सबसे मेरा दिमाग़ बेहद ख़राब हो चुका था। मैने पलट कर अमर की तरफ देखा। वो मुझे देखते ही समझ गया कि क्या करना है।

" ओ भाई ज़रा बात तो सुन। " मैने अपनी आवाज़ बदलते हुए कहा दिनेश नाम के उस लड़के से कहा __" तेरे अगर और भी साथी इस ट्रेन में हों तो फोन करके बुला ले उन्हें। क्योंकि अब जो तुम लोगों के साथ होने वाला है उसके बाद तुम लोगों हॉस्पिटल पहुँचाने वाला भी तो कोई होना चाहिए न। "

" ओये चिकने। " दिनेश से पहले ही उसका एक अन्य साथी बोल पड़ा __" ज्यादा हीरोपंती करने का शौक चढ़ा है क्या तेरे को ? चल फूट ले इधर से वरना हम लोगों से पंगा लेने का अंजाम अच्छा नहीं होगा समझा ? और हाँ आपन के और भी छोकरे लोग इस ट्रेन में मौजूद हैं। इस लिए आपन एक ही बार तेरे से बोलेगा कि इधर से खिसक ले तू। "

" किसी ने सच ही कहा है कि लातों के भूत बातों से नहीं मानते। " मैने गुस्से से उबलते हुए उस लड़के का कालर पकड़ा और ज़ोर से अपनी तरफ खींच लिया __" तुम जैसे गटर के कीड़ों को मसलना ही बेहतर होता है। "

मैने जैसे ही उस लड़के को अपनी तरफ खींचा तो एक अन्य हरकत में आ गया। अभी वो हरकत में आया ही था कि अमर ने धर लिया उसे। इधर मैने उस लड़के के चेहरे पर ज़ोर का पंच जड़ दिया। उनमें से किसी को भी इस सबकी उम्मीद नहीं थी। चेहरे पर ज़ोरदार पंच पड़ते ही उस लड़के की नाक की हड्डी टूट गई और भल्ल करके खून बहने लगा। वो बुरी तरह बिलबिलाते हुए अपनी नाक को अपने दोनो हाथो से पकड़ लिया। अचानक हुए इस हमले से दो लड़के जो अभी खाली थे वो भी हरकत में आ गए। आस पास फर्श पर खड़े हुए लोग एकदम से उस जगह से दूर हटते चले गए।

अमर ने जिस लड़के को धरा था उसका एक हाथ पकड़ कर ज़ोर से उमेठ दिया। जिससे वो दर्द में चीखा। हाथ उमेठते ही अमर ने पीछे से अपने घुटने का वार उसके पिछवाड़े पर किया तो उसका सिर ऊपर की सीट पर लगे लोहे के पाइप से टकराया। उसके हलक से चीख निकल गई। इधर दो लड़को के हाथ में पलक झपकते ही जाने कहॉ से चाकू प्रकट हो गया था। मतलब साफ था कि वो चारो पेशेवर अपराधी थे। मगर उन्हें क्या पता था कि आज उनका पाला उनसे भी बड़े खलीफा से पड़ गया था।

एक लड़के ने जैसे ही अपना चाकू वाला हाथ ऊपर हवा में उठा कर मुझ पर चलाया तो मैने उसके उस हाथ को एक हाथ से हवा में ही रोंका और दूसरे हाथ से उसकी कलाई पर कराट का वार किया जिससे उसके हाथ से चाकू छूट कर फर्श पर गिर गया। चाकू के गिरते ही मैने उसके पेट में ज़ोर की लात मारी तो वो झोंक में ही बाएॅ साइड के डंडे से टकरा कर फर्श पर चित्त गिर पड़ा। उधर ऐसा ही हाल अमर की तरफ भी था। कहने का मतलब ये कि दो मिनट के अंदर ही वो चारो लड़के ट्रेन के फर्श पर पड़े बुरी तरह कराह रहे थे और हम दोनो से रहम की भीख मॉगने लगे थे।

" जी तो करता है कि। " मैने खूंखार भाव से कहा __" जो घिनौना कर्म तुम लोगों ने किया है उसके लिए तुम सबके हाथ पैर तोड़ कर तुम सबके हाथो में दे दूॅ। मगर मैं यहॉ पर ज्यादा बखेड़ा नहीं करना चाहता। इस लिए जितना जल्दी हो सके यहॉ से दफा हो जाओ वरना ये भी सोच लेना कि जिस बखेड़े की अभी मैं बात कर रहा हूॅ उससे मैं डरता भी नहीं हूॅ। "

मेरी इस बात का असर फौरन ही हुआ। वो चारो बुरी तरह लड़खड़ाते हुए फर्श से उठे और नौ दो ग्यारह हो गए। उन चारों के जाते ही मैं वापस पलटा और मानुषी की देखा तो चौंक गया। वो मुझे ही देखे जा रही थी। उसकी ऑखों में ढेर सारे ऑसू थे। अभी मैं उसे देख ही रहा था कि सहसा वह अपनी जगह से उठी और बिजली की तरह दौड़ कर मुझसे लिपट गई।

" विक्रऽऽम मेरे भाई। " फिर वो मुझसे लिपटी फूट फूट कर रोने लगी थी। उसकी इस क्रिया से जहॉ मैं भौचक्का रह गया था वहीं सीट पर बैठी वो दूसरी लड़की भी हैरान रह गई थी।

तभी मुझे ध्यान आया कि उन लड़कों से लड़ते वक्त जाने कब मेरे मुख से रुमाल निकल गया था। शायद यही वजह दी कि मानुषी जान गई थी कि मैं वास्तव में कौन हूँ।

" ओह विक्रम। " मुझसे लिपटी मानुषी रोते हुए कह रही थी __" तुम यहाँ भी मेरी इज्ज़त बचाने के लिए पहुँच गए। इतने अच्छे और इतने महान कैसे हो सकते हो तुम ? ये सच है कि अगर तुम नहीं होते तो कदाचित वो लड़के मुझे और श्रुति दीदी को अपनी उन अश्लील बातों से ही मार देते। "

" बस चुप हो जाओ। " मैने उसे खुद से अलग कर उसके चेहरे को अपने दोनो हाथ की हॅथेलियों में लेते हुए कहा __" कुछ नहीं होता। मैं जब तक ज़िंदा हूँ तुम्हारा कीई भी बुरा नहीं कर सकता। "

मेरी ये बात सुन कर मानुषी एकटक मेरी ऑखों में देखने लगी। कुछ इस तरह जैसे मेरी ऑखों में कुछ तलाश कर रही हो। आस पास मौजूद लोग हमारी तरफ ऑखें फाड़े देख रहे थे। मुझे ये सब बड़ा अजीब सा लगने लगा।

" जाओ अब अपनी सीट पर बैठ जाओ। " मैंने सहसा गंभीर भाव से कहा __" सब लोग अजीब तरह से इधर ही देख रहे हैं। "

" देखने दो विक्रम। " कहने के साथ ही मानुषी पुनः मुझसे छुपक गई , फिर बोली __" मुझे किसी की कोई परवाह नहीं। मैं बस इतना जानती हूँ कि मैं ऐसे शख्स की पनाहों में हूँ जिसना मेरी अस्मत की दो दो बार रक्षा की है। इस पनाह में आकर मुझे ऐसा एहसास हो रहा है मेरे भाई जैसे ये जगह मेरे लिए दुनियॉ की सबसे महफूज़ और सबसे सुंदर जगह है। विक्रम , मुझे अपनी इस पनाह से अब कभी जुदा न करना। "

" हॉ बाबा नहीं करू गा। " मैने मानुषी को खुद से अलग करके कहा __" अब जाओ अपनी सीट पर बैठ जाओ। और हॉ मैं अगली सीट पर ही हूँ। अगर किसी तरह की कोई परेशानी हो तो मुझे आवाज़ लगा देना। "

" तुम भी मेरे पास ही बैठ जाओ न विक्रम। " मानुषी ने किसी बच्ची की तरह ज़िद करते हुए कहा __" या फिर ऐसा करो कि मुझे भी अपने पास बैठा लो। मैं तुम्हारे पास ही रहना चाहती हूँ। प्लीज मेरी इतनी सी बात मान जाओ न। "

मानुषी की इस बात से मैं एकदम से उसकी तरफ देखता रह गया। फिर मैने चेहरा घुमा कर अमर की तरफ देखा और सामने सीट पर बैठी श्रुति की तरफ भी। दोनो मुझे ही देख रहे थे। मुझे समझ न आया कि अब मैं क्या करू?

" तुम अपनी श्रुति दीदी को अकेला छोंड़ कर कैसे मेरे पास बैठ सकती हो ?" मैने कहा __" और उधर मेरे साथ मेरा दोस्त अमर भी तो है। मैं उसे अकेला छोंड़ कर तुम्हारे पास भला

कैसे बैठ जाऊँगा ? इस लिए ये बेकार की ज़िद छोंड़ो और अपनी सीट पर बैठ जाओ। मैं पास में ही तो हूँ। "

" हॉ लेकिन मुझे तब भी तुम्हारे पास ही बैठना है। " मानुषी ने बुरा सा मुह बना लिया __" अपने दोस्त से कह दो कि यहॉ मेरी सीट पर श्रुति दीदी के साथ बैठ जाए। "

" ये कैसी ज़िद है मानुषी ?" मैने हैरान __" अगर श्रुति दीदी को इस बात से ऐतराज हुआ तो ?"

मेरी बात सुन कर मानुषी ने झट से पलट कर श्रुति की तरफ देखा और फिर कहा__"दीदी, क्या आपको इनके यहॉ बैठने से ऐतराज है?"

" क क्या मतलब ??" मानुषी के द्वारा एकाएक ही इस तरह पूछने पर श्रुति लगभग हड़बड़ा गई थी।

" मैं ये पूछ रही हूँ आपसे। " मानुषी ने मानो अपने वाक्य को दोहराया __" कि क्या आपको विक्रम के दोस्त के यहॉ पर बैठने से ऐतराज है ?"

श्रुति ने मानुषी की इस बात पर बड़े अजीब भाव से उसकी तरफ देखा। मानुषी को देखने के बाद मेरी तरफ और फिर अमर की तरफ। सबको देखने के बाद पुनः मानुषी की तरफ देखते हुए कहा__"अगर तू यही चाहती है तो ठीक है। मुझे कीई ऐतराज नहीं है इनके यहॉ बैठ जाने से।"

" ओह थैंक्यू सो मच दीदी। " मानुषी ने खुश होकर कहा __" आप सच में बहुत अच्छी हैं। "

" चल चल अब मस्का मत लगा। " श्रुति ने कहा __" जा बैठ जा विक्रम के पास। मगर उसे परेशान मत करना ज्यादा। "

" ओ हैलो। " मैं एकदम से बोल पड़ा __" कोई मेरे दोस्त से भी जानना चाहेगा कि उसे यहॉ बैठने से ऐतराज है कि नहीं ?"

मेरी इस बात से मानुषी व श्रुति एकदम से चुप हो गई। मैने अमर की तरफ देखा तो उसे मुस्कुराते हुए पाया। तभी मानुषी व श्रुति की नज़रें एकदम से अमर की तरफ दौड़ गईं। जैसे उसे देख कर ही ऑखों से पूछ रही हों कि आपको ऐतराज है क्या यहॉ बैठने से? अमर उनकी ऑखों में उभरे सवाल का आशय समझ कर बोला_"ठीक है मैं श्रुति जी के पास ही बैठ जाता हूँ।"

" लो विक्रम। " अमर के मुख से ये सुनते ही मानुषी ने मेरी तरफ देख कर कहा __" अब तो किसी को कोई ऐतराज नहीं है। सो अब मैं तुम्हारे साथ ही अगली वाली सीट पर बैठूँगी। चलो अब हम जल्दी से अपनी सीट पर चलते हैं। "

मरता क्या न करता की तर्ज़ पर मैं हैरान परेशान होकर मानुषी के साथ वापस अपनी सीट पर आ गया। जबकि अमर श्रुति के पास ही मानुषी वाली सीट पर बैठ गया। इधर मेरी सीट पर आते ही मानुषी मेरे बगल से ही धम्म से बैठ गई। बैठते ही उसने अपना एक हाथ मेरी काख से डाल कर मेरा एक हाथ मानो अपने कब्जे में ले लिया था।

" अरे अब ये क्या है ?" मानुषी के ऐसा करते ही मैने हैरानी से कहा __" सोना नहीं है क्या ? चलो जाओ ऊपर वाली सीट पर लेट कर सो जाओ। "

" मुझे नींद नहीं आ रही है विक्रम। " मानुषी ने एकदम से बच्चियों वाले अंदाज़ से कहा __" तुम भी मत सोना। हम सारी रात ढेर सारी बातें करेंगे। मुझे तुमसे बहुत सारी बातें करनी हैं। "

" वो सब तो ठीक है। " मैने एकाएक अजीब भाव से कहा __" मगर क्या तुम्हें ऐसा महसूस नहीं हो रहा कि आज सूरज पश्चिम दिशा से निकल रहा है ? ये तो कमाल हो गया न कि जो मानुषी मुझसे कभी बात करना तो दूर कभी मुझे देखना तक गवॉरा नहीं करती थी आज वही मानुषी मुझसे सारी रात ढेर सारी बातें करेंगी? यकीन नहीं हो रहा मुझे। ये चमत्कार है या फिर खुली ऑखों का मेरा कोई ख़्वाब?"

मेरी इन बातों से मानुषी को झटका सा लगा। अभी तक जो चेहरा एकदम से ताज़े गुलाब की मानिंद खिला हुआ दिख रहा था वो मेरी इन बातों से पलक झपकते ही मुरझा गया था। उसके चेहरे पर पल भर में गहन पीड़ा व दुख के भाव उभर आए और ऑखों में ऑसू रूपी समंदर मानों हिलोरें लेने लगा था। कुछ कहने के लिए उसके होंठ बस थरथरा कर रह गए थे।

" मुझे मेरे उन सभी बुरे कर्मों की सज़ा दो विक्रम। " मानुषी ने रुऑसे स्वर में कहा __" यकीन मानो , तुम्हारी हर सज़ा को मैं खुशी खुशी क़बूल कर लूँगी। मगर अब तुम्हारी किसी भी तरह की बेरुखी सहन नहीं कर पाऊँगी मैं। मुझे पता है कि मैने तुम्हारे साथ अब तक क्या किया था। किन्तु अगर ग़ौर से सोचोगे तो इस सबमें तुम्हें ज़रूर समझ आएगा कि उस सबमें मेरी कोई ग़लती नहीं थी। मैने तो वही किया था अब तक जो बचपन से हमें सिखाया गया था। सही ग़लत का पाठ तो हमें हमारे मॉ बाप ने ही बचपन से पढ़ाया था। जबकि वास्तव में सही ग़लत क्या है वो अब समझ आया है मुझे। मैं सच कहती हूँ मेरे भाई कि मैं अपने उन सभी कर्मों के बारे में सोच सोच कर बेहद दुखी हूँ। मुझे अपने आप से घृणा होती है। "

" इंसान जिन्हें दिल से चाहता है। " मैने कहा __" वही अगर ऐसा करें तो तक़लीफ़ तो यकीनन होती है मानुषी । मैने कभी भी तुम सबके बारे में ग़लत नहीं सोचा था। बल्कि हमेशा यही चाहता था तुम सब मुझसे उसी तरह बातें करो हॅसो बोलो जैसे बाकी सब करते थे। मगर मुझे आज तक समझ न आया कि हमने ऐसा कौन सा गुनाह किया था हमें आप सबकी सिर्फ नफ़रत मिली। ख़ैर , ये सब तो कल की बातें है मगर मैं ये जानना चाहता हूँ कि आज ऐसा क्या हो गया है कि तुम्हें वही विक्रम अपना भाई लगने लगा और इतना ही नहीं बल्कि दुनियॉ का सबसे अच्छा इंसान भी लगने लगा। क्या सिर्फ इस लिए कि मैने इत्तेफाक़ से दो बार तुम्हारी इज्ज़त की रक्षा की या फिर इसकी कोई दूसरी वजह है ?"

" इंसान का चरित्र जैसा भी हो विक्रम। " मानुषी ने गंभीर भाव से कहा __" वो दूसरों के सामने उजागर हो ही जाता है। ये अलग बात है कि इसमें थोड़ा बहुत समय लग जाता है। तुम लोगों के जिस चरित्र का पाठ हम भाई बहनों को बचपन से पढ़ाया गया था उसे हमने ये सोच कर यकीन के साथ मान लिया क्योंकि हम यही समझते थे कि कोई भी मॉ बाप अपने बच्चों को ग़लत नसीहत नहीं देते हैं। मगर जो ग़लत होता है उसका भी पर्दाफाश हो ही जाता है एक दिन। तुमने मेरी दो बार इज्ज़त बचाई इसे संयोग समझो या समय का बदलाव , जिसके फलस्वरूप मुझे ये समझ आया कि अपने जिस मॉ बाप से मैने तुम लोगों के चरित्र का पाठ पढ़ा था वो दरअसल झूँठा भी तो हो सकता था। क्योंकि एक बुरे इंसान से अच्छे कर्म की उम्मीद नहीं की जा सकती। जबकि तुमने जो किया वो निहायत ही अच्छे कर्म की पराकाष्ठा थी। तुम्हारे उस कर्म ने मुझे ये सोचने पर बिवश कर दिया कि तुम वैसे नहीं हो जैसा मेरे मॉ बाप ने अब तक समझाया था। बस , इंसान जब किसी के बारे में गहराई से सोचता है तो उसे कुछ न कुछ तो एहसास होता ही है कि हक़ीक़त क्या है ? अब तक तो मैने तुम्हारे बारे में उस तरीके से सोचा ही नहीं था विक्रम मगर उस हादसे के बाद जब मैने तुम्हारे बारे में आदि से अंत तक सोचा तो मुझे एहसास हुआ कि तुम बुरे नहीं हो सकते। इंसान को अपनी सफाई में कुछ भी कहने का अधिकार है जबकि हमने तो तुम लोगों की किसी बात को सुनना ही कभी गवॉरा नहीं किया था। ऐसे में भला हमें कैसे समझ आता कि सच क्या है ? हमसे यकीनन ग़लती हुई है विक्रम और मैं इस ग़लती को ज़रूर सुधारूँगी। घर पहुँचते ही मॉम डैड से बताऊँगी कि कैसे तुमने दो दो बार उनकी बेटी की इज्ज़त की रक्षा की है। "

" तुम्हारे बताने से कुछ नहीं होने वाला मानुषी। " मैने फीकी सी मुस्कान के साथ कहा __" तुम्हें तो अभी सारी असलियत का पता ही नहीं है। मगर मेरा दावा है कि जब तुम्हें सारी सच्चाई का पता चलेगा तो तुम्हारा दिल हाहाकार कर उठेगा। "

" क्या मतलब ??" मानुषी ने चौंकते हुए कहा __" तुम्हारी इन बातों का क्या मतलब है विक्रम ? तुम किस असलियत की बात कर रहे हो ?"

" मैं तुम्हें इस बारे में खुद कुछ नहीं बताऊँगा। " मैने गंभीर भाव से कहा __" क्योंकि मेरे बताने पर तुम्हें यही लगेगा कि मैं तुम्हारे मॉम डैड के विषय में बेवजह ही अनाश शनाप बक रहा हूँ। इस लिए इस सबके बारे में तुम्हें खुद ही पता करना होगा मानुषी । जब तक तुम्हें खुद सारी बातों का पता नहीं चलेगा या तुम खुद अपनी ऑखों से नही देख लोगी तब तक तुम दूसरे की बताई हुई बात का यकीन नहीं कर सकोगी। "

" आख़िर ऐसी कौन सी बातें हैं विक्रम ?" मानुषी के चेहरे पर गहन चिंता के तथा सोचने वाले भाव उभरे __" जिनके बारे में तुम बात कर रहे हो ? तुम मुझे बताओ विक्रम , मुझे तुम्हारी हर बात पर यकीन होगा। "

" नहीं होगा मानुषी। " मैने पुरज़ोर लहजे में कहा _" कुछ बातें ऐसी होती हैं जिन पर यकीन करना बेहद मुश्किल होता है। यहॉ तक कि अगर इंसान खुद अपनी ऑखों से भी देख ले तो यकीन नहीं कर पाता। इस लिए मेरे कुछ भी बताने का कोई मतलब नहीं है। तुम खुद सारी बातों का पता लगाओ और फिर उन पर विचार करो। "

" क्या साक्षी दीदी भी उन सारी बातों को जानती हैं ?" मानुषी ने कहा __" जिनके बारे में तुम बात कर रहे हो ?"

" हॉ। " मैने कहा __" साक्षी दीदी को आरी असलियत का पता है। "

" तो क्या यही वजह है कि। " मानुषी ने कहा __" आजकल वो मॉम डैड के ख़िलाफ हैं ?"

" हॉ यही वजह है। " मैने कहा __" अब तुम सोच सकती हो कि भला ऐसी वो क्या बातें होंगी जिसके चलते तुम्हारी अपनी दीदी अपने ही मॉम डैड के खिलाफ हो गई हैं ?"

मेरी बात सुन कर मानुषी कुछ बोल न सकी, बस एकटक मेरी तरफ देखती रही। मैं समझ सकता था कि वो इन सब बातों के चलते अपने दिलो दिमाग़ को विचारों भॅवर में डुबा रही है। कुछ और हमारे बीच ऐसी ही बातें होती रहीं। उसके बाद मैने उसे सो जाने का कह दिया। हलॉकि मैं जानता था कि अब उसे सारी रात नींद नहीं आने वाली थी। वो रात भर इन्हीं बातों को सोचती रहेगी कि आख़िर ऐसी कौन सी सच्चाई है जिसकी मैं बात कर रहा हूॅ और जिस सच्चाई को जान कर उसकी अपनी दीदी अपने ही मॉम डैड के खिलाफ़ हो गई है?

मानुषी को ऊपर के बर्थ पर लिटाने के बाद मैं भी अपने नीचे वाले बर्थ पर लेट गया और मानुषी के साथ हुई बातों के बारे में सोचने लगा। आख़िर क्या करेगी मानुषी जब उसे अपने मॉ बाप और भाई की असलियत का पता चलेगा? वो कैसा रिऐक्ट करेगी जब उसे पता चलेगा कि उसके मॉ बाप ने किस तरह इस हॅसते खेलते परिवार को बरबाद किया था? सब कुछ जानने के बाद क्या मानुषी भी अपनी बड़ी बहन की तरह अपने मॉ बाप के खिलाफ़ हो जाएगी? मैं इन्ही सब बातों के बारे में सोच रहा था। तभी सहसा मुझे सत्यम सिंह का ख़याल आया। मैने परसों आने से पहले ही उमाकांत अंकल को फोन करके सत्यम सिंह के साथ एक धॉसू खेल खेलने का कह दिया था। ये उसी का परिणाम था कि इस वक्त सत्यम सिंह सी.बी.आई. की गिरफ्त में था। मगर अब जबकि मैं कल दोपहर तक सोनपुर साक्षी दीदी के फार्महाउस पहुॅच जाऊॅगा तो सत्यम सिंह को भी सी.बी.आई. की गिरफ्त से आज़ाद कर देने का समय आ जाएगा।

सत्यम सिंह जब सी.बी.आई. की गिरफ्त से निकल कर अपनी हवेली पहुॅचेगा तब वो सोनिया को जो कुछ बताएगा उसे सुन कर सबके पैरों के नीचे से ज़मीन गायब हो जाएगी। सत्यम सिंह का दिमाग़ उस सबके बारे में सोचते सोचते फटने को आ जाएगा मगर उसे कुछ समझ नहीं आएगा। वो इस तरह किंकर्तब्यविमूढ़ सी स्थित में बैठा रह जाएगा जैसे कोई मौत के मुह से अचानक बचने के बाद शून्य में खोया हुआ सा रह जाता है।

७२

उधर साक्षी मंत्री रजतकुमार रस्तोगी से फोन पर बातें करने के बाद अपने फार्महाउस पहुॅची। उसने जिप्सी को तेज़ रफ्तार से दौड़ाया था और पॉच मिनट में ही फार्महाउस पहुॅच गई थी। उसे मंत्री की बातों पर ज़रा सा भी ऐतबार नहीं था। हलॉकि उसने धमकी के रूप में मंत्री को तगड़ी डोज दी थी। मगर इसके बावजूद वो इस बात से संतुष्ट नहीं हो पाई थी कि मंत्री की वजह से प्राची के मॉ बाप अब सुरक्षित हैं। उसे पता था कि मौजूदा वक्त में भले ही मंत्री ने उससे वादा कर लिया था कि प्राची के मॉ बाप को कुछ नहीं कहेगा मगर वो अपने इस वादे पर ज्यादा देर तक कायम नहीं रह सकता था। क्योंकि वो मंत्री था, वो ये बरदाश्त नहीं कर पाएगा कि कोई ऐरा ग़ैरा उसे किसी चीज़ के लिए बिवश करे।

फार्महाउस पर पहुॅच कर साक्षी तेज़ क़दमों से चलती हुई अपने कमरे में पहुॅची। कमरे में पहुॅच कर सबसे पहले उसने अपनी पॉकेट से उस मोबाइल को निकाल कर आलमारी में रखा जिस नये मोबाइल से उसने मंत्री से बात की थी। उसके बाद उसने अपने आईफोन को स्विच ऑन किया। फोन के स्विच ऑन होते ही उसने पुलिस कमिश्नर को काल लगाया और मोबाइल कान से सटा लिया।

" यस ऑफिसर। " उधर से कमिश्नर का प्रभावशाली स्वर उभरा __" क्या प्रोग्रेस चल रही है तुम्हारे ऑपरेशन की ?"

" ऑपरेशन तो अभी सफलता पूर्वक चल ही रहा है सर। " साक्षी ने सहसा गंभीर भाव से कहा __" मगर इस बीच एक प्रोब्लेम आ गई है। "

" व्हाट ??" उधर से कमिश्नर का चौंकता हुआ स्वर उभरा __" कैसी प्रोब्लेम आ गई है ? एवरीथिंग ओके न ?"

" यस सर। " साक्षी ने कहा __" बट प्रोब्लेम ये है कि मंत्री रजतकुमार रस्तोगी के साथ जो कुछ मौजूदा समय में हो रहा है उसके वजह का उसने अपने तरीके से पता लगाया है। मेरा मतलब है कि वो ये समझता है कि उसकी इस बरबादी के पीछे प्राची के घरवालों का हाथ है। उसे लगता है कि उसके बच्चों को प्राची के बाप ने किडनैप किया है। "

" ऐसा तो उसे लगेगा ही ऑफीसर। " कमिश्नर का स्वर उभरा __" ऐसे मामले में कोई भी व्यक्ति सर्व प्रथम प्राची के घर वालों पर ही शक करेगा , क्योंकि मंत्री के साथ ये सब करने की वजह सिर्फ प्राची के घर वालो के पास ही है। इस लिए अगर मंत्री सारी बातों पर विचार करके ये नतीजा निकाला है कि ये सब उस रेप पीड़िता लड़की के घर वाले ही कर रहें हैं तो उसका सोचना ग़लत नहीं है। ख़ैर , तुम बताओ कि अब तुम क्या चाहती हो ?"

" ज़ाहिर सी बात है सर। " साक्षी ने कहा __" कि मंत्री के इस नतीजे के बाद अब प्राची के मॉ बाप पर मंत्री का खतरा हो गया है। आप जानते हैं कि इस मामले में उन बेचारों का दूर

दूर तक कोई हाथ नहीं है। वो तो बेकार में ही इस मौत रूपी खतरे में फॅस पड़े हैं। इस लिए मैं चाहती हूँ सर कि प्राची के मॉ बाप को जल्द से जल्द सुरक्षा मुहय्या कराएॅ आप। "

" ऐसा करना सही नहीं होगा ऑफिसर। " कमिश्नर ने समझाने वाले भाव से कहा __" क्योंकि अगर हम प्राची के मॉ बाप को पुलिस प्रोटेक्शन देंगे तो मंत्री के सामने सारी बातें ओपेन हो जाएॅगी। उस सूरत में उनके ऊपर ख़तरा और भी बढ़ जाएगा। ये ऑपरेशन चूँकि सीक्रेट है इस लिए इसकी सारी चीज़ें सीक्रेट ही रहें तो बेहतर होगा। "

" मगर सर। " साक्षी ने कहा __" प्राची के घर वालों को सुरक्षित तो ईरना ही होगा हमें। वरना उनके ऊपर मंत्री का क़हर कभी भी टूट पड़ेगा। "

" एक काम करो तुम। " कमिश्नर ने कहा __" प्राची के मॉ बाप को भी अपने पास ही रखो। "

" लेकिन सर। " साक्षी ने कहा __" उन्हें मैं अपने पास लेकर कैसे आऊॅगी ? संभव है कि मंत्री ने अपने आदमी उनके आस पास निगरानी में लगा दिये हों। उस सूरत में जब वो देखेंगे कि मिस्टर एण्ड मिसेस वाजपेयी किसी के द्वार ले जाए जा रहे हैं तो वो ज़रूर उस बात की सूचना मंत्री को दे देंगे और हमारा पीछा भी कर सकते हैं। "

" रिस्क तो लेना ही पड़ेगा ऑफिसर। " कमिश्नर का गंभीर स्वर __" तुम वाजपेयी को फोन करके कहो कि वो तुम्हें किसी ख़ास जगह पर आकर मिलें उसके बाद उस खास जगह पर हमारे पुलिस के आदमी सादे कपड़ों में उन्हें वहॉ से रिसीव कर लेंगे। पुलिस के वो आदमी वाजपेयी और उनकी पत्नी को किसी खास जगह पर ही लेकर आ जाएॅगे जहॉ से तुम उन्हें रिसीव कर अपने साथ ले जाना। "

" दैट्स ए गुड आइडिया सर। " साक्षी ने कहा __" हलॉकि रिस्की तो ये भी है किन्तु जैसा कि आपने कहा रिस्क तो लेना ही पड़ेगा। इस लिए ऐसा ही करते हैं सर। "

" ठीक है। " कमिश्नर ने कहा __" तुम ऐसा ही करो। मगर होशियारी और सतर्कता से। "

" यस सर। " साक्षी ने कहा।

इसके साथ ही कॉल कट गई। साक्षी के चेहरे पर इसके पहले जहॉ चिंता व परेशानी के भाव थे वहीं अब राहत के भाव झलकने लगे थे। यद्यपि उसे पता था कि ऐसा करना भी रिस्की ही था। क्योंकि मंत्री ने अगर अपने आदमियों को प्राची के मॉ बाप की निगरानी में लगा दिया होगा तो यकीनन वो लोग जान जाएॅगे और पीछा करेंगे। मगर ये भी सच था कि प्राची के मॉ बाप को सुरक्षित करना ज़रूरी था। अतः साक्षी ने मोबाइल में प्राची के पापा का नंबर खोज कर काल लगा दिया।

" हैलो अंकल मैं साक्षी बोल रही हूँ। " उधर से काल रिसीव किये जाते ही साक्षी ने कहा था।

" ओह हॉ साक्षी बेटा। " उधर से मिस्टर वाजपेयी का तनिक चौंका हुआ स्वर उभरा __" कैसी हो तुम ? उस दिन के बाद से फिर आई नहीं तुम। क्या प्राची के जाने से सारे रिश्ते खत्म हो गए ? मेरा दामाद तो अपनी मरहूम पत्नी की अस्थियॉ तक लेने नहीं आया। ऐसी उम्मीद तो न थी मुझे उससे। "

" विक्रम की जगह उसके नाम से अस्थियॉ लेने मैं ही तो आई थी अंकल। " साक्षी ने कहा __" आप से बताया तो था हालातों के बारे में। "

" ओह हॉ हॉ बताया था तुमने बेटा। " उधर से वाजपेयी का स्वर उभरा __" क्या करू बेटी कुछ याद ही नहीं रहता। जब से बेटी हमें छोंड़ कर गई है तब से एकदम अकेले हो गए हैं हम दोनो। सच कहें तो कुछ भी अच्छा नहीं लगता। ये ज़िंदगी तो बस बोझ सी लगने लगी है। "

" ऐसा मत कहिए अंकल। " साक्षी ने दुखी भाव से कहा __" प्राची के चले से आप दुखी मत होइये। मैं भी तो आपकी बेटी ही हूॅ। आप मुझे अपनी प्राची ही समझिये अंकल। मैने तो उसी दिन आप सबसे रिश्ता बना लिया था जिस दिन प्राची को मैने अपनी छोटी बहन बनाया था। उसके जाने का हम सबको बेहद दुख है मगर ये भी सच है कि इस दुख को लेकर बैठा तो नहीं रहा जा सकता न। आप बिलकुल भी दुखी मत होइये और ना ही ये समझिए कि आप अब अकेले हो गए हैं। हम सब आपके ही तो हैं। आपका हम पर वैसा ही हक़ है जैसा कि प्राची पर था आपका। "

" शुक्रिया बेटी। " वाजपेयी का लरज़ता हुआ स्वर उभरा __" तुमने ये कह कर सच में मुझे अकेलेपन के एहसास से मुक्त करवा दिया। मेरे दिल में जीने की चाह जाग उठी है। ख़ैर , ये बताओ बेटी कि अब कैसे हालात हैं वहॉ पर ?"

" हालात तो अभी काबू में ही हैं अंकल। " साक्षी ने कहा __" मगर एक गंभीर समस्या पैदा हो गई है। "

" क कैसी समस्या बेटा ?" वाजपेयी के स्वर में एकाएक चिंता के भाव आ गए थे __" सब ठीक तो है न ?"

साक्षी ने संक्षेप में वाजपेयी को मंत्री से संबंधित सारी बातें बता दी। वाजपेयी ये जान कर चकित था हो गया था कि उसकी बेटी के साथ कुकर्म करने वालों को साक्षी खुद सज़ा दे रही है। इस बात से वाजपेयी को बड़ी खुशी भी हुई। किन्तु साक्षी ने मौजूदा हालातों के बारे में जो कुछ भी उसे बताया उससे वो चिंतित भी हो उठा था।

" इस लिए अंकल। " सारी बातें बताने के बाद फिर साक्षी ने कहा __" मैं चाहती हूॅ कि आप और आंटी जितना जल्दी हो सके तो घर से निकल कर मेरे पास आने की कोशिश कीजिए। "

" लेकिन बेटा। " उधर से वाजपेयी ने कहा __" उस मंत्री ने हमारे आस पास निगरानी के

लिए अपने आदमियों को लगाया होगा तो उस सुरत में हम भला कैसे निकल पाएॅगे यहॉ सॅे ?"

" उसका भी इंतजाम कर दिया है मैने। " साक्षी ने कहा __" आप बस वो करते जाइये जो मैं कहूॅ। "

" ठीक है बेटा। " वाजपेयी ने कहा __" बताओ क्या करना है हमें ?"

" आप अपना ज़रूरी सामान लेकर इसी वक्त तैयार हो जाइये। " साक्षी ने कहा __" थोड़ी ही देर में मेरे पुलिस डिपार्टमेन्ट के आदमी सादे कपड़ों में आपको लेने आएॅगे। आप उनके साथ चले आइयेगा। उसके बाद का काम मेरे पुलिस के वो आदमी और मैं संभाल लेंगे। "

" ठीक है बेटा। " उधर से वाजपेयी ने कहा __" जैसा तुम कहो। "

" ओके फिर आप जल्दी से तैयारी कर लीजिए। " साक्षी ने कहा __" मैं अपने आदमियों को भेजती हूॅ आपके पास। "

इसके साथ ही साक्षी ने कॉल कट कर दी। कुछ पल रुकने के बाद उसने फिर से किसी को फोन लगाया और थोड़ी देर तक किसी से कुछ बातें की। उसके बाद काल कट करके बेड पर आराम से लेट गई। अभी वह लेटी ही थी कि उसका फोन बज उठा। उसने मोबाइल फोन उठाकर स्क्रीन पर फ्लैश कर रहे नाम को देखा तो सहसा उसके चेहरे पर सोचो के भाव उभरे।

" कहो प्रकाश क्या ख़बर हॅै ?" साक्षी ने सोचने वाले भाव से काल रिसीव करते ही पूछा।

"..... । उधर से कुछ कहा गया।

" ओह तो ये बात है। " साक्षी ने कुछ सोचते हुए कहा _" वैसे कितने आदमी होंगे वो लोग ?"

".....। " उधर से प्रकाश नाम के आदमी ने फिर कुछ कहा।

" चलो अच्छी बात है। " साक्षी ने कहा __" और कुछ ?"

"..... । उधर से फिर कुछ कहा गया।

" क्या ???" साक्षी चौंकी __" डाक्टर भला किस लिए आया था वहाॅ ?"

".....। " उधर से पुनः कुछ कहा गया।

" ओह आई सी। " साक्षी ने कहा __" लेकिन मॉम को चक्कर कैसे आ गया था ? क्या तुमने पता नहीं किया ?"

".....। " उधर से प्रकाश ने कुछ बताया।

" ओह तो ये बात है। " साक्षी चौंकने के साथ मुस्कुराई भी __" चलो ठीक है प्रकाश। बहुत अच्छी ख़बर दी है तुमने। ऐसी ही अंदर की ख़बर देते रहना और हॉ ज़रा होशियार और

सतर्क रहना। "

ये कह कर साक्षी ने फोन काट दिया। उसके चेहरे पर इस वक्त कई तरह के भावों का आवागमन चालू हो गया था। ख़ैर उसके बाद साक्षी अपने डिपार्टमेन्ट के पुलिस वालों के फोन काल का इन्तज़ार करने लगी। लगभग बीस मिनट बाद साक्षी का आईफोन बजा। साक्षी ने तुरंत काल को रिसीव किया। काल पुलिस के आदमियों का ही था। उन्होंने बताया कि वो लोग मिस्टर एण्ड मिसेस वाजपेयी को लेकर चल दिये हैं और बताई हुई जगह पर आ रहे हैं। उन्होंने ये भी बताया कि आस पास ऐसा कोई आदमी नहीं दिखा जिस पर किसी तरह का ज़रा सा भी संदेह किया जा सके।

पुलिस के उस आदमी से बात करने के बाद साक्षी भी बेड से उठी और जिप्सी की चाभी लेकर कमरे से बाहर की तरफ निकल पड़ी। सीढ़ियों से उतर कर जब वो नीचे आई तो ड्राइंग रूम में रखे सोफों पर गीता और कुरुणा का भाई बैठा दिखा उसे। साक्षी नीचे आते देख गीता ने उससे कहा__"साक्षी बेटा, तुम्हारे ये मामा जी कह रहे हैं कि इन्हें अब अपने घर वापस जाना है। कह रहे हैं बहुत काम बाकी है घर में।"

" क्यों मामा जी इतना जल्दी ?" साक्षी ने कहा __" अभी तो हमने आपसे ठीक से बातें भी नहीं की है और आप जाने की बात करने लगे। "

" बातें तो हो ही गई हैं साक्षी बेटा। " हेमराज ने कहा _" अब मुझे जाने दो। बहुत काम है। तुम्हें तो पता है दूसरे की नौकरी में अपनी मनमर्ज़ी तो नहीं चलती न। "

" ठीक है मामा जी। " साक्षी ने कहा __" जैसा आपको अच्छा लगे। तो कब जा रहे हैं आप ?"

" मैं तो तैयार ही बैठा हूँ बेटा। " हेमराज ने कहा __" बस तुम्हारे आने का ही इन्तज़ार कर रहा था। "

" ओह। " साक्षी ने कहा __" चलिए फिर। मैं भी उधर ही जा रही हूँ। सो आपको भी छोंड़ दूँगी। "

साक्षी के कहने पर हेमराज सोफे से उठा और बगल से ही रखे एक छोटे से बैग को पीठ पर लाद कर बाहर की तरफ चल दिया। उसके पीछे साक्षी भी चल दी। थोड़ी ही देर में वो दोनो जिप्सी में सवार सड़क पर चल रहे थे। दोनो के बीच थोड़ी बहुत बात चीत होती रही और फिर वो नहर वाली जगह के पास बने पुल के इसी तरफ रुक गए।

लगभग बीस मिनट बाद सामने से एक टोयटा आती दिखी। साक्षी को पहचानने में ज़रा भी देरी न हुई कि उस गाड़ी में उसके पुलिस के ही आदमी हैं। कुछ ही देर में वो गाड़ी साक्षी के पास आकर रुकी। गाड़ी के आगे पीछे के दरवाजे खुले। अगले दरवाजे से पुलिस का एक आदमी उतरा जबकि पीछे के दरवाजे से प्राची के माँ बाप उतरे।

साक्षी उनके पास जाकर उन्हें नमस्ते किया और उन्हें अपने साथ ला कर अपनी जिप्सी की पिछली सीट पर बैठने का इशारा किया। उन दोनो के बैठने के बाद साक्षी ने पुलिस वालों से कहा कि वो हेमराज को हरीपुर छोंड़ आएॅ जो यहॉ से लगभग तीस किलो मीटर की दूरी पर था। साक्षी के कहने पर वो पुलिस वाले हेमराज की अपनी गाड़ी में बैठा कर वहॉ से चले गए। उनके जाने के बाद साक्षी भी अपनी जिप्सी को स्टार्ट कर वापस फार्महाउस की तरफ चल दी।

प्राची के माता पिता की सुरक्षित करके साक्षी अब बेफिक्र हो चुकी थी।

अब वो बेफिक्री से कोई भी काम कर सकती थी। रास्ते में साक्षी ने प्राची के मॉ बाप को विक्रम के बारे में भी बता दिया कि वो कल दोपहर तक मुंबई से वापस आ जाएगा। ऐसे ही बातें करते हुए ये लोग कुछ ही समय में फार्महाउस पहुॅच गए। जिप्सी से उतर कर साक्षी प्राची के माता पिता को अंदर ले गई। जहॉ पर गीता बुआ बैठी थी। साक्षी ने गीता को प्राची के मॉ बाप का परिचय दिया और कहा कि इनके रहने के लिए एक कमरा साफ सुथरा करवा दें। थोड़ी देर ड्राइंग रूम में उन सबसे बातचीत करने के बाद साक्षी अपने कमरे में चली गई।

७३

जैसा कि साक्षी को पहले से ही अंदेशा था कि मंत्री अपनी हरकतों से बाज नहीं आएगा। कहने का मतलब ये कि जैसे ही मिस्टर एण्ड मिसेस वाजपेयी साक्षी के फार्महाउस पहुॅचे थे वैसे ही मंत्री ने अपने आदमियों को गुप्त तरीके से प्राची के घर के आस पास निगरानी के लिए लगा दिया था। किन्तु मुश्किल से आधे घंटे बाद ही मंत्री के आदमी ने मंत्री को फोन करके बताया कि जिस व्यक्ति की निगरानी में हम लोग यहॉ आए थे उसके घर में तो ताला लगा हुआ है। कुछ लोगों ने बताया कि एक सफेद रंग की नितंब्री आई थी जिसमे वाजपेयी अपनी बीवी को लिए बैठ गया था। उसके हाथ में एक बड़ा सा बैग भी था। उन दोनों के बैठते ही वो सफेद रंग की गाड़ी चली गई थी।

फोन पर अपने आदमी की ये ख़बर सुन कर मंत्री भौचक्का सा रह गया था। वो समझ गया कि भले ही उसने अपने बच्चों के किडनैपर से वादा किया था इसके बाद भी किडनैपर को उसके वादे पर ऐतबार न हुआ था। शायद यही वजह थी कि किडनैपर ने वक्त रहते अपनी सुरक्षा के मद्दे नज़र अपने घर में ताला लगा कर कहीं ऐसी जगह नया ठिकाना बना लिया था जिस जगह के बारे मंत्री को पता तक न चल सके। फोन पर अपने आदमी की ख़बर सुनने के बाद इस वक्त मंत्री अपने उन्हीं तीनों साथियों के साथ ड्राइंग रूम में गंभीर मुद्रा में बैठा हुआ था।

" शिकार हमारे हाथ से बहुत ही आसानी से निकल गया रस्तोगी साहब। " अवधेश मुखर्जी ने कहा __" उसे आपके वादे के बावजूद पता था कि आप ऐसा कोई क़दम उठाएॅगे। इसी लिए तो उसने फौरन ही अपनी सुरक्षा का इंतजाम कर लिया। सबसे बड़ी बात ये कि आपको ऐसे वक्त में ऐसा कोई क़दम उठाना ही नहीं चाहिए था। क्योंकि संभव है कि इससे हमें भारी खामियाजा भुगतना पड़ जाए। दूसरी बात जब आपको पता चल ही गया था तो उस बात को फोन पर उस किडनैपर को बताना ही नहीं चाहिए था बल्कि आपको जो करना था वो उस किडनैपर की जानकारी में आए बग़ैर ही करना चाहिए था। "

" ग़लती तो हमसे यकीनन हो गई है अवधेश। " रजतकुमार रस्तोगी ने अफसोस भरे भाव से कहा __" हमें लगा कि जब हम उसे बताएॅगे कि उसकी असलियत हम जान गए हैं तो उसके होश उड़ जाएॅगे और अपने बुरे अंजाम का सोच कर वो सब कुछ हमारे हवाले कर देगा जिसके बलबूते पर वो इतना उछल रहा है। इतना ही नहीं वो हमारे बच्चों को भी सही सलामत हमारे पास भेज देगा। इसके बाद वो हमसे अपने उस अपराध की माफ़ी मॉगेगा। मगर ऐसा हुआ नहीं बल्कि वो तो हम पर और भी ज्यादा हावी हो गया था। "

" अब जो होना था वो तो हो ही गया रस्तोगी साहब। " सहसा अशोक बासु ने कहा __" और इस पर अब बहस करने का कोई फायदा नहीं है। इस लिए हमें अब ये सोचना चाहिए कि अब आगे हमें क्या करना है ? वैसे उस वाजपेयी के अचानक अपने घर से गायब हो जाने से एक बात तो साफ हो गई है कि वो अकेला इस काम में नहीं है। बल्कि कोई और भी है जो

उसकी मदद कर रहा है। "

" ये तुम कैसे कह सकते हो ?" रजतकुमार रस्तोगी के माथे पर बल पड़ा __" और भला कौन ऐसे मामले में उसकी मदद कर सकता है ? जबकि सब जानते हैं कि ये मामला हमसे संबंधित है। भला हमसे दुश्मनी मोल लेने का दुस्साहस दूसरा कौन कर सकता है ?"

" कोई तो होगा ही रस्तोगी साहब। " अशोक बासु ने सोचने वाले अंदाज़ से कहा __" मैने भी अपने तरीके से उस लड़की के बारे में पता लगाया है। "

" क्या मतलब ?" रस्तोगी के साथ साथ सुनीता व अवधेश भी चौंके थे , जबकि अवधेश ने ही पूछा __" क्या पता लगाया है उस लड़की के बारे में ?"

" यही कि वो लड़की हमारे बच्चों के ही कॉलेज में पढ़ती थी। " अशोक बासु कह रहा था __" और हमारे बच्चों की फ्रैण्ड ही थी। किन्तु उसके बारे में एक बात ये भी पता चली कि वो लड़की किसी दूसरे लड़के को चाहती थी और फिर एक दिन अविश्वसनीय तरीके से उस लड़के से प्रेम संबंध तोड़ लिया था। उस लड़के से अलग होने के बाद ही वो विवेक के क़रीब आई थी। विवेक के ही एक दूसरे दोस्त ने इस बारे में बताया कि प्राची नाम की वो लड़की उस लड़के से संबंध ज़रूर तोड़ लिया था कि किन्तु अकेले में अक्सर वो उस लड़के की याद में ही रोती रहती थी। "

" लेकिन इस मैटर से उस बात का कहाँ संबंध है अशोक भाई जिसकी बात तुम कर रहे हो कि वाजपेयी की मदद कोई दूसरा भी कर रहा है ?" अवधेश ने कहा था।

" संबंध क्यों नहीं हो सकता भाई ?" अशोक बासु ने कहा __" खुद सोचो कि जो लड़की अपने प्रेमी से अलग होकर उसकी याद में इस तरह रोती थी तो क्या ऐसा नहीं हो सकता कि वो फिर से अपने प्रेमी से मिलने की चाह कर बैठे और मिल ही जाए ? दूसरी ग़ौर करने वाली बात ये भी है कि इश्क़ मुश्क कभी दुनियाँ से नहीं छुपता। संभव है कि प्राची और उसके प्रेमी के उन प्रेम संबंधों की ख़बर दोनो के घर वालों को भी रही हो। लेकिन किसी कारणवश मिल न पाएँ हों वो दोनो या फिर मिलने वाले रहे हों। मगर तभी लड़की के साथ रेप सीन हो गया। लड़की के साथ हुए हादसे का पता प्राची के प्रेमी को लगा होगा और उसने अपनी प्रेमिका के साथ हुए इस जघन्य अपराध का बदला लेने के लिए उतारू हो गया हो। जिसका नतीजा आज इस रूप में हमारे सामने है। "

" तम्हारी बातों में वजन तो है अशोक। " अवधेश मुखर्जी ने कहा __" मगर ये महज तुम्हारी संभावनाएँ हैं जो कि ग़लत भी हो सकती हैं। फिर भी अगर तुम्हारी बातों को मान भी लिया जाए तो इसका मतलब ये हुआ कि हमारे बच्चों को किडनैप करने वाला वाजपेयी नहीं बल्कि उस लड़की का प्रेमी है। "

" बिलकुल। " अशोक ने कहा __" एक पल के लिए ये सोचा जा सकता है कि लड़की के बाप ने अपनी बेटी के साथ हुए उस कुकर्म का बदला ये सोच कर न लिया कि बदला लेने से

वो सब तो वापस मिलने से रहा जो इज्ज़त के रूप में लुट चुका है। या फिर ये भी सोच लिया होगा कि कानूनन भी वो हमारा कुछ नहीं कर पाएगा। मगर लड़की का प्रेमी बदला लेने के सिवा कुछ और सोचेगा ही नहीं और वही वो कर रहा है। "

अशोक बासु की इस बात से ड्राइंग रूम में कुछ देर के लिए ब्लेड की धार की मानिंद सन्नाटा छा गया। सभी के चेहरों पर गहन सोचों के भाव नुमायॉ हो उठे थे।

" मुझे लगता है कि अशोक भाई साहब का ये सोचना एकदम सही है। " सहसा इस बीच पहवी बार सुनीता ने गहरी सास लेते हुए कहा __" क्योंकि जिस प्रकार से उसने इतने कम समय में हमारे बच्चों को और हमारी रचना बेटी को किडनैप किया है उस तरह से वो वाजपेयी तो कम से कम कर ही नहीं सकता। वो लड़का जवान है और गरम खून है। रेप केस होने के दूसरे दिन ही जिस तरह से उसने हमारे बच्चों को हमारे ही फार्महाउस से किडनैप किया और इतना ही नहीं बल्कि हमारे खिलाफ़ ऐसा खतरनाक सबूत वहॉ से प्राप्त किया वो वाजपेयी के बस का तो हर्गिज़ नहीं था। आज जब उसे रस्तोगी साहब से ये पता चला कि मंत्री महोदय उसकी ये असलियत जान गए हैं कि वो दरअसल वाजपेयी ही है तो उसे वाजपेयी की फिक्र हुई इसी लिए उसने वक्त रहते वाजपेयी को सुरक्षित कर दिया और हमारी पहुॅच से शायद दूर भी कर दिया है। "

" अरे वाह। " रजतकुमार रस्तोगी ने हैरत से ऑखें फैलाते हुए कहा __" क्या खूब दिमाग़ लगाया है मेरी रांड ने। असलियत भले ही कुछ और ही हो मगर जिस तरह से अशोक और सुनीता ने अपनी बातें रखीं उससे यही लगता है कि ये सब लड़की के उस प्रेमी का ही किया धरा है। ख़ैर , अब सवाल ये है कि लड़की का वह प्रेमी कौन है जिसके पिछवाड़े में इतनी ज्यादा मिर्ची लग गई कि वो अपनी जाने बहार के साथ हुए उस काण्ड का बदला लेने लगा है। आख़िर पता तो चले कि वो किस खेत की पैदाईश है जिसने हम पर हाथ डालने का दुस्साहस किया है। "

" मैने उस लड़के का पता भी करवाया है रस्तोगी साहब। " अशोक बासु ने कहा __" वो लड़का सोनपुर का है। बड़े घर परिवार से ताल्लुक रखता है किन्तु। "

" किन्तु क्या अशोक ?" रस्तोगी के माथे पर शिकन पैदा हुई।

" पता चला है कि लड़के के ताऊ ने उसे और उसकी मॉ बहन को हर चीज़ से बेदखल कर रखा है। " अशोक बासु ने कहा __" लड़के के ताऊ का नाम ठाकुर सत्यम सिंह है। सोनपुर में बड़ी भारी किन्तु शानदार हवेली है तथा अच्छी खासी ज़मीन जायदाद भी है।खुद सत्यम सिंह एक बड़ा कारोबारी इंसान है। परिवार की आपसी कलह की वजह से उसने अपने मॅझले किन्तु स्वर्गवाशी भाई शिवम सिंह के उस लड़के को और लड़के की मॉ बहन को हवेली से बेदखल कर दिया है। "

" ओह बड़ी अजीब बात है ये तो। " रस्तोगी ने सोचने वाले भाव से कहा __" फिर तो वो लड़का दर दर का भिखारी ही है। ऐसी हालत में वो ये सब हमारे साथ कैसे रहा पा रहा है ? ये तो हैरत की बात है। "

" हैरत वैरत की कोई बात नहीं है रस्तोगी साहब। " अशोक बासु ने कहा __" ताऊ के द्वारा हवेली से बेदखल होने के बाद वो लड़का आजकल मुंबई में रहता है अपनी विधवा माँ और बहन के साथ। "

" अच्छा। " रस्तोगी ने कहा __" तो क्या वो मुंबई में रहते हुए ये सब कर रहा है ?"

" इस बारे में पक्के तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता मगर। " अशोक बासु ने कहा __" मगर संभव है कि उसे अपनी प्रेमिका के साथ हुए काण्ड का पता चला हो और वो मुंबई से यहाँ आया हो। उसके बाद उसने ये सब शुरू किया हो। "

" ओह। " रस्तोगी को जैसे बात समझ आ गई __" संभव है ऐसा ही हो। ख़ैर उस लड़के के परिवार में और कौन कौन लोग हैं ?"

" लड़के का बाप तीन भाई थे। " अशोक ने कहा __" सबसे बड़ा सत्यम सिंह , फिर लड़के का बाप शिवम सिंह और उसके बाद सुंदर सिंह। सत्यम सिंह के दो बेटियाँ और एक लड़का है। उसकी बड़ी बेटी सोनपुर थाने में थानेदार है। "

" क क्या ????" रस्तोगी ही नहीं बल्कि सभी बुरी तरह चौंके थे , फिर रस्तोगी ने ही कहा __" उस ठाकुर की बेटी थानेदार है। मतलब की पुलिस वाली है वो ?"

" हाँ मगर आप ये हर्गिज़ भी न सोचें कि। " अशोक बासु ने कहा ___" कि उसका इस मामले में कोई हाथ है। "

" अरे , क्यों नहीं हो सकता ऐसा ?" रस्तोगी से पहले अवधेश बोल पड़ा था __" वो अपने चचेरे भाई की मदद तो यकीनन कर सकती है भाई। "

" ऐसा नहीं है अवधेश भाई। " अशोक ने कहा __" क्योंकि सत्यम सिंह ही नहीं बल्कि उसकी औलादें भी उस लड़के और उसकी माँ बहन से नफ़रत करती हैं। "

" एक मिनट अशोक भाई। " सहसा अवधेश मुखर्जी ने कुछ सोचते हुए कहा __" एक मिनट। हमारे बच्चों ने उस लड़की के साथ रेप सीन को अंजाम दिया उसके बाद वो चिमनी में बने अपने फार्महाउस पर चले गए। जहाँ से उन्हें किडनैप कर लिया गया। चिमनी सोनपुर के बाद ही पड़ता है। ख़ैर रेप की वारदात सोनपुर के आस पास के ही क्षेत्र में हुई या फिर ऐसा होगा कि हमारे बच्चों ने अपने फार्महाउस पर ही उस लड़की से सामूहिक रेप किया और उसके बाद उसे सोनपुर की सीमा के अंदर ले जा कर छोंड़ आए होंगे। ये सब मैं इस लिए कह रहा हूँ कि वो रेप सीन उस समय काफी फैल गया था उस क्षेत्र में। ख़ैर अब सोचने वाली बात ये है कि अगर रेप पीड़िता लड़की सोनपुर की सीमा में पाई गई तो क्या सोनपुर के थाने में मौजूद वो थानेदारनी चुप बैठी रही होगी ? उसने शुरुआती ऐक्शन तो लिया ही होगा। "

" तुम आख़िर कहना क्या चाहते हो ?" अशोक बासु ने पूछा __" इस मामले में अचानक तुम इस एंगल से क्यों सोचने लगे ?"

" दरअसल मैं भी तुम्हारी तरह संभावनाएँ ही व्यक्त कर रहा हूँ भाई। " अवधेश ने कहा __" मामला काफी पेचीदा है। मगर मैं इधर उधर की कड़ियाँ समेटने की कोशिश कर रहा हूँ। "

" साफ साफ बोलो क्या कहना चाहते हो तुम ?" सहसा रस्तोगी कर उठा __" यूँ बातों को घुमाने का क्या मतलब है ?"

" जैसा कि अशोक भाई ने कहा। " अवधेश मुखर्जी ने कहा __" कि थानेदारनी अपने भाई की मदद नहीं कर सकती क्योंकि वो भी अपने माँ बाप की तरह ही उससे नफ़रत करती है। मगर सवाल ये है कि थानेदारनी के क्षेत्र में रिप पीड़िता पाई गई तो क्या थानेदारनी ने इस पर कोई ऐक्शन नहीं लिया होगा ?"

" अगर उसने कोई ऐक्शन लिया होता तो उसका पता हमें ज़रूर चलता। " रजतकुमार रस्तोगी ने कहा __" ये तो सच है कि वो रेप स्कैण्डल एक पुलिस केस ही था मगर उस स्कैण्डल का कोई पुलिस केस नहीं बना। इस बात खुलासा कमिश्नर खुद कर चुका है। "

" या फिर ऐसा हुआ होगा कि उस थानेदारनी ने केस बनाने की कोशिश की होगी। " अशोक ने कहा __" मगर कमिश्नर ने उसे केस बनाने या उस वारदात पर कोई ऐक्शन लेने से मना कर दिया होगा। थानेदारनी भला अपने आला अफसर के खिलाफ़ कैसे कोई क़दम उठाती ? "

" हाँ ऐसा भी हो सकता है। " रस्तोगी ने कहा __" और आम जनता ने इस पर हो हल्ला इस लिए नहीं किया क्योंकि उसे भी पता है कि मामला सीधा मंत्री के बेटे और उसके बेटे के दोस्तों का था। यानी कि हमारे डर की वजह से जनता ख़ामोश रह गई। "

" तो इन बातों का निष्कर्ष ये निकला। " सहसा सुनीता ने गहरी सास लेने के बाद कहा __" कि वो लड़का जिसे कि उसके ताऊ ने उसकी माँ बहन के साथ घर से दर बदर किया वही इस सबके पीछे है। यानी वो अपनी प्रेमिका के साथ हुए उस रेप का बदला ले रहा है। "

" बिलकुल। " अशोक ने पुरज़ोर लहजे में कहा _" प्राची के माँ बाप के अलावा वही एक ऐसा है जो ये सब कर सकता है। यानी ये सब करने की वजह उसके पास भी है। "

" अगर ये वाकई सच है। " अवधेश ने कहा __" तो अब हमें उस लड़के का पता लगाना होगा। मगर इस बार पहले जैसी ग़लती हर्गिज़ भी नहीं होनी चाहिए। वरना इस बार इसका खामियाजा हमें भारी कीमत पर चुकाना पड़ सकता है। "

" बड़ी हैरत की बात है। " रजतकुमार रस्तोगी के लहजे में कठोरता थी , बोला __" एक पिद्दी से इंसान ने हमें इस तरह अपने शिकंजे में कसा हुआ है कि हम आज़ाद होते हुए भी

आज़ाद व बेफिक्र नहीं हैं। वो जब चाहे हम सबको बीच चौराहे पर नंगा दौड़ा सकता है और हम कुछ कर नहीं सकते। सारे प्रदेश में हमारी एकछत्र हुकूमत है। हमारी इजाज़त के बिना इस प्रदेश में कहीं का कोई पत्ता भी नहीं हिल सकता। मगर कमाल देखो कि हम सब जो खुद को सबसे बड़ा सूरमा समझ रहे हैं आज उस हरामज़ादे की मुट्ठी में कैद हो कर रह गए हैं। लानत है हम पर और हमारे सूरमा होने पर। "

" आप चिंता मत कीजिए रस्तोगी साहब। " अशोक बासु ने कहा __" बकरे की अम्मा कब तक ख़ैर मनाएगी ? आज भले ही उस कमीने का पलड़ा हम पर भारी है मगर किसी दिन तो उससे भी कोई चूक होगी जिसके तहत वो हमारे हत्थे चढ़ेगा। उसके बाद हम बताएँगे कि हमारे साथ इतना बड़ा दुस्साहस करने का कितना खूबसूरत अंजाम होता है। "

" बकवास मत करो अशोक। " रस्तोगी ने बिफरे हुए से लहजे में लगभग चीखते हुए कहा __" तुम्हारा ये डायलाग हम इसके पहले भी जाने कितनी बार सुन चुके हैं मगर अब तक ऐसा कोई पल नहीं आया जिससे हमें लगे कि हॉ अब हालात हमारे हक़ में हैं। मादर--- ने अपाहिज बना के रख दिया है हमे। किसी से ठीक से मिल नहीं सकते। किसी समारोह में नहीं जा सकते। साला हर पल डर लगा रहता है कि ऐसी किसी जगह पर वो हरामज़ादा कोई ऐसी वैसी हरकत न कर दे कि सबके सामने हमारी इज्ज़त का कचरा हो जाए। "

" बुरा मत मानिएगा रस्तोगी साहब। " अशोक ने कहा __" मगर हमें इतना बेबस बना देने में सबसे बड़ा हाथ आपके बेटे विवेक का है। "

" क्या मतलब है तुम्हारा ?" रस्तोगी एक झटके से अशोक की तरफ घूमते हुए कहा था।

" आप खुद सोचिए। " अशोक ने कहा __" हमारे सभी बच्चों का लीडर कौन है __ आपका बेटा ही न ?"

" हॉ तो। " रस्तोगी चकराया।

" आप ये बताइये कि फार्महाउस पर हमारे ऐसे संबंधों की वीडियो क्लिप बनाने की क्या ज़रूरत थी उसे ?" अशोक ने कहा __" क्या उसे इतना भी एहसास नहीं था कि ऐसे वीडियो किसी डायनामाइट से कम नहीं होते। हम जैसे लोगों के हज़ारो प्रतिद्वंदी होते हैं जिन्हें हमारी ऐसी ही किसी कमज़ोरी की तलाश रहती है। आज उन्हीं वीडियोज की वजह से हम इतना बेबस व लाचार बने बैठे हैं। अगर वो वीडियोज बने ही न होते तो आज किसी की हिम्मत ही न होती हमें इतना मजबूर करने की। "

" हॉ हम जानते हैं कि हमारे बेटे ने ऐसे वीडियोज बना कर बहुत बड़ी ग़लती की है। " रस्तोगी ने खेद भरे भाव से कहा __" मगर अब जो हो गया उसका कोई कर भी क्या सकता है ? हमें तो सारे बच्चों की फिक्र है। जाने उनके साथ कैसा सुलूक कर रहा होगा वो हरामज़ादा ?"

" हम खुद तो कुछ कर नहीं सकते हैं। " अवधेश ने कहा __" मगर किसी और को इस काम

में ज़रूर लगा सकते हैं। "

" क्या मतलब ??" अशोक के माथे पर शिकन उभरी।

" मुझे लगता है कि हमें इस काम के लिए किसी क़ाबिल व बहादुर डिटेक्टिव को हायर करना चाहिए। " अवधेश ने कहा __" जासूस लोग गुप्त तरीके से काम करने में काफी माहिर होते हैं। वो अपने और अपनी गतिविधि यों के बारे में किसी को तब तक पता नहीं चलने देते जब तक कि वो खुद न चाहें। अगर यही काम हम अपने आदमियों से कराएँगे तो हमारी किसी गतिविधि का उस लड़के को पता चलने में देर नहीं लगेगी। अब तक के उसके क्रिया कलाप से ये ज़ाहिर हो चुका है कि वो अपने हर काम में बेहद होशियारी और सतर्कता रखता है और हमारी पल पल की ख़बर रखता है। इस लिए हमें किसी डिटेक्टिव को हायर करना चाहिए। "

" आइडिया बुरा नहीं है। " अशोक ने कहा __" मैं तुम्हारी इस सलाह से सहमत हूँ। यकीनन इस काम में एक डिटेक्टिव ही कुछ कर सकता है। वो उस लड़के की सारी जन्मकुण्डली भी निकाल लेगा और हमारे बच्चों का पता भी लगा लेगा। "

" तो फिर देर किस बात की है ?" रस्तोगी ने कहा __" अगर तुम दोनों को लगता है कि कोई डिटेक्टिव इस काम को बखूबी सफलतापूर्वक कर सकता है तो फिर ऐसे किसी डिटेक्टिव को फौरन हायर करो। "

" मेरी जानकारी में ऐसा एक डिटेक्टिव है। " अवधेश ने कहा __" मैं आज ही उससे फोन पर बात करता हूँ और उसे जल्द से जल्द यहाँ बुलाता हूँ। "

" अच्छी बात है। " रस्तोगी ने कहा __" उसे बोलो फौरन हमारे सामने हाज़िर हो जाए। उसको उसके काम की मुहमाँगी फीस के रूप में रकम मिलेगी। "

अवधेश ने रस्तोगी की बात सुनकर अपने कोट की पॉकेट से मोबाइल निकाला और उसमें से किसी को फोन लगाया। थोड़ी देर बात करने के बाद उसने मोबाइल वापस अपनी पॉकेट में डाल लिया।

" रस्तोगी साहब। " फिर उसने मंत्री की तरफ देखते हुए कहा __" मैने डिटेक्टिव से बात कर ली है। वो कल तक हमारे पास पहुँच जाएगा। अब आप किसी बात की फिक्र मत करें। बहुत जल्द हमारा दुश्मन हमारे कब्जे में होगा और हमारे बच्चे हमारे पास होंगे। "

" अच्छी बात है अवधेश। " रस्तोगी ने कहा __" अब तो हमें तुम्हारे उस डिटेक्टिव पर ही भरोसा करना है। इसके सिवा दूसरा कोई चारा भी नहीं है। "

" आप निश्चिंत हो जाइये रस्तोगी साहब। " अवधेश ने कहा __" डिटेक्टिव बहुत ही क़ाबिल व्यक्ति है। मुझे यकीन है कि बिना कोई नुकसान हुए हमारा हर काम हो जाएगा। "

" इससे ज्यादा हमें और चाहिए भी क्या ?" रस्तोगी ने कहने के साथ ही सहसा सुनीता की

तरफ देखा __" इतने दिनों में आज पहली बार एक नई उम्मीद पैदा हुई है। इस लिए हम चाहते हैं कि आज तबीयत खुश कर दो तुम। "

" हाय। " सुनीता ने दॉतों तले अपने होंठ दबा कर आह सी भरते हुए कहा __" कितनी सुंदर बात कही है मेरे बलम ने। मैं तो कब से इसके लिए तड़प रही हूँ। अब जब मूड बन ही गया है तो चलिए कमरे में और तबीयत हरी कर लीजिए। "

सुनीता की इस बात से रस्तोगी तो मुस्कुराया ही उसके साथ अशोक व अवधेश भी मुस्कुरा पड़े। इसके बाद चारो ही सोफों से उठ कर कमरे की तरफ बढ़ गए।

७४

सुबह हुई और एक नये जीवन के नये सफ़ की शुरुआत हुई। ट्रेन की सीट पर सोते हुए मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे ऊपर कोई झुका हुआ है। मुजे मेरे चेहरे पर गरम गरम हवा लगती हुई प्रतीत हो रही थी साथ ही किसी औरत के बदन पर लगे परफ्यूम की खुशबू भी मेरे नथुनों में समा रही थी। मेरी नींद टूटने की यही वजह थी। मैने पट से अपनी ऑखें खोल दी और अगले ही पल मैं ये देख कर बुरी तरह चौंका कि मानुषी मेरे चेहरे के पास झुकी हुई थी।

उधर यही हाल मानुषी का भी हुआ था। उसे कदाचित उम्मीद नहीं थी कि मैं इस तरह झटके से ऑखें खोल दूँगा और फिर जैसे ही मैने पट से अपनी ऑखें खोली तो वो एकदम से हड़बड़ा गई थी। मगर हैरत की बात ये हुई कि उसने पलक झपकते ही खुद को संभाल भी लिया था।

" गुड मॉर्निंग विक्रम। " फिर उसने मुस्कुराते हुए बड़ी नज़ाक़त से कहा __" सोते हुए कितने मासूम लगते हो तुम। मैं काफी देर से यही देख रही थी कि मेरा भाई सोते वक्त किसी छोटे से बच्चे की तरह मासम व क्यूट सा दिखता है। पहले मैने सोचा कि तुम्हें जगाऊँ मगर फिर जब मैने देखा कि तुम गहरी नीद में हो और एकदम से मासूम दिख रहे हो तो मैने तुम्हें जगाना उचित नहीं समझा। बल्कि एकटक तुम्हें देखने लगी थी। "

" अच्छा तो मैं तुम्हें। " मैने उठते हुए किन्तु शरारत से कहा __" छोटा सा बच्चा नज़र आ रहा था सोते वक्त ?"

" हॉ बिलकुल। " मानुषी ने मुस्कुराई __" तभी तो उस छोटे से बच्चे की मासूमियत को एकटक निहारे जा रही थी मैं। "

" पर मैने जब तुम्हें देखा रात में। " मैने पुनः शरारत से ही कहा __" तो तुम सोते वक्त ऐसी दिख रही थी जैसे कोई अस्सी साल की बुढ़िया सो रही हो। मैं तो टोटली कन्फ्यूज हो गया था उस वक्त। "

" क्या कहा ???" मानुषी एकदम से राशन पानी लेकर चढ़ दौड़ी __" मैं तुम्हें बुढ़िया नज़र आ रही थी। रुको अभी बताती हूँ तुम्हें ?"

" अरे नहीं यार। " मैंने एकदम से हड़बड़ाते हुए कहा _" मैं तो मज़ाक कर रहा था। तुम बुढ़िया तो किसी एंगल से नहीं लगती हो मगर ...। "

" मगर क्या ???" मानुषी ने ऑखें दिखाई।

" मगर दादी मॉ ज़रूर लगती हो। " मैने हॅसते हुए कह दिया।

" क्या बोला ???" मानुषी एकदम से मेरे ऊपर चढ़ कर मेरे पेट पर बैठ गई , और फिर मेरे सीने में मुक्के मारते हुए बोली __" मैं दादी मॉ लगती हूँ। रुक बेटा बताती हूँ अब तुझे मैं। "

मानुषी मेरे सीने में मुक्के मारे जा रही थी। मैं भी उससे बचने का कोई खास प्रयास नहीं कर रहा था। मैने तो उसे छेंड़ा ही इस लिए था कि वो ये सब करे। दरअसल इन्हीं सब चीज़ों के लिए तो मैं तरसा था। अब तक तो साक्षी और मानुषी ने कभी मुझे अपना भाई समझा ही नहीं था। भाई बहन के बीच कैसी कैसी शरारतें होती हैं उस सबका मैने कभी स्वाद ही नहीं चखा था। मगर आज और इस वक्त वही सब मेरे और मानुषी के बीच हो रहा था। सच कहूँ तो मुझे इस सबसे बेहद खुशी हो रही थी। दिल में भड़कते हुए जज़्बात जाने क्यों मुझे रुलाने पर उतारू हो रहे थे। मेरा दिल कर रहा था कि इस वक्त भावनाओं में बहते हुए मैं मानुषी से लिपट कर खूब रोऊँ मगर मैं ऐसा नहीं करना चाहता था। क्योंकि उससे माहौल दुखी सा हो जाता जबकि मैं इस पल को जी भर के जीना चाहता था।

उधर हम दोनो बहन भाई की इस धमा चौकड़ी से आस पास बैठे ट्रेन के सब लोग आश्चर्य से ऑख व मुह फाड़े एकटक देखे जा रहे थे। हम दोनो को भी जैसे उन सबसे कोई मतलब नहीं था और ना ही कोई परवाह थी। मानुषी ज़ोर ज़ोर से जाने क्या क्या बोले जा रही थी और मेरे ऊपर चढ़ी हुई मुझ पर मुक्कों की बरसात किये जा रही थी। उसकी इस आवाज़ और मेरे तेज़ हॅसी को सुन कर पीछे साइड ऊपर नीचे बर्थ पर सो रहे श्रुति और अमर को भी जगा दिया। वो दोनो फौरन ही भाग कर हमारे पास आ गए और इधर का नज़ारा देख कर हैरान रह गए।

" ये तुम दोनो क्या ऊधम मचा रखे हो ?" सहसा श्रुति ने लगभग ऊँची आवाज़ में कहा __" तुम दोनो को कुछ होश भी है कि इस वक्त कहाँ हो तुम दोनो और तुम दोनो की इस हरकत से आस पास वाले कितना डिस्टर्ब हो रहे हैं। "

" दीदी इसने मुझे दादी मॉ बोला। " मानुषी ने मुक्के मारना बंद करके शिकायत भरे लहजे मे कहा __" पहले कह रहा था कि मैं बुढ़िया लगती हूँ फिर बात बदल कर बोला कि मैं दादी मॉ लगती हूँ। "

" हॉ तो क्या हो गया ?" श्रुति दीदी ने हाथ नचाते हुए कहा __" उसके ऐसा कहने से क्या तुम सच में दादी मॉ लगने लगी ? देखो तो अभी उसके ऊपर बैठी हुई है बेशरम। चल उतर विक्रम के ऊपर से वरना दो चार लगाऊँगी अभी। "

" नहीं उतरूँगी। " मानुषी ने दो टूक भाव से कहा __" इसने मुझे दादी मॉ क्यों कहा ? इससे पहले बोलिए कि ये मुझे बोले कि मैं हूर की परी लगती हूँ। वरना आप भी देखिये कि कैसे मैं इसे मार मार के इसका भुर्ता बनाती हूँ ?"

" हूर की परी और तू ???" मैंने सहसा मानुषी की खिल्ली उड़ाने वाले अंदाज़ से कहा __" कभी आईने में अपनी शक्ल देखी है तूने ? दादी मॉ तो मैने ऐसे ही कह दिया था तुझे , वरना तो तू बिलकुल बंदरिया लगती है। यकीन न हो तो पूछ ले श्रुति दीदी से। "

मेरी इस बात से जहॉ श्रुति दीदी ने अपना सिर पीट लिया वहीं मानुषी की त्यौरियॉ चढ़ गईं। वह एकदम से तमतमाए हुए बोली__"क्या कहा बंदरिया लगती हूँ? रुक अब तो तुझे सच में

नहीं छोंड़ूँगी। दीदी आप हमारे बीच में मत पड़ना। इसे तो मैं आज छोंड़ूँगी नहीं।"

श्रुति दीदी चिल्लाती रह गईं जबकि मानुषी ने फिर से मुझ पर मुक्कों की बरसात कर दी। मैं महसूस कर रहा था कि वो मुझे मार ज़रूर रही थी मगर बस हल्के हल्के। कदाचित उसे भी इस सबमें मज़ा आ रहा था। किन्तु वो यही ज़ाहिर कर रही थी कि वो मेरी बातों से बेहद गुस्सा हो गई है।

" श्रुतिं दीदी इससे कहिए कि ज्यादा झाँसी की रानी न बने। " मैने हँसते हुए कहा __" वरना अगर मैं महाराणा प्रताप बन गया तो फिर ये रोने के सिवा कुछ न कर पाएगी , बंदरिया कहीं की। "

" ओये तू महाराणा प्रताप बन के तो दिखा। " मानुषी ने आँखें निकाली __" मैं भी झाँसी की रानी से माँ दुर्गा न बन जाऊँ तो कहना। बड़ा आया महाराणा प्रताप बनने , बंदर कहीं का। "

" ओये बंदर कौन ??" मैने सहसा उसके दोनो हाथ पकड़ते हुए कहा __" ठीक से देख आई एम विक्रम। "

" विक्रम माई फुट। " मानुषी ने मेरे हाथ से अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश करते हुए कहा __" छोंड़ मेरे हाथ वरना मानुषी परी को गुस्सा आ जाएगा और फिर विक्रम को मुर्गा बना देगी समझा ?"

" मैं क्यों तेरे हाथ छोंड़ूँ ??" मैने कहा __" तू खुद ही छुड़ा ले न। मैं भी तो देखूँ कि इस बंदरिया में कितना दम है। "

" ओये तू न दम की बात न कर। " मानुषी ने कहा __" मैं चाहूँ तो दो पल में अपने हाथ छुड़ा लूँ समझा। "

" अच्छा छुड़ा के तो दिखा। " मैने ताव दिया उसे।

" रहने दे रहने दे। " मानुषी ने कहा __" वरना बाद में सब तुझ पर ही हँसेंगे कि खुद को महाराणा प्रताप कहने वाला एक मासूम सी लड़की से हार गया। "

" कोई बात नहीं। " मैने कहा __" तुझसे हारना मंजूर है। आख़िर तू मेरी प्यारी सी बहन है न। "

" अब ये मस्का क्यों लगा रहा है ?" मानुषी ने चौंकते हुए कहा __" क्या मानुषी परी से डर गया है ?"

" डरता तो मैं उस परवर दिगार से भी नहीं। " मैने मानुषी का हाथ छोंड़ कर अपने हाथ की उँगली को ऊपर की तरफ करते हुए कहा __" मगर मुझे लगता है कि अब बाकी सबको बक्श देना चाहिए जो बेचारे हमारी वजह से शायद डिस्टर्ब हो रहे हैं। दूसरी बात श्रुतिं दीदी ने डंडा उठा लिया तो फिर हम दोनो की ख़ैर नहीं रहेगी। कुछ समझ में आया मानुषी परी जी

?"

" अगर ऐसी बात है। " मानुषी ने इस तरह कहा जैसे अहसान कर रही हो __" तो चल बक्श ही देती हूँ तुझे भी और बाकी सबको भी। मगर आइंदा मानुषी परी से टकराने की सोचना भी मत वरना खांमाखां बेइज्जती हो जाएगी तेरी। "

" ओये अब ज्यादा उड़ मत समझी। " मैने उसका हाथ पकड़ कर उसे अपने ऊपर से उठाते हुए कहा __" चल अब उतर नीचे। "

मेरे ऐसा कहने पर मानुषी मुस्कुराते हुए मेरे ऊपर से उतर गई मगर अंदाज़ ऐसा था उसका जैसे अभी भी जता रही हो कि आइंदा याद रखना। मुझे उसके इस अंदाज़ पर बड़ी ज़ोर की हँसी आई मगर मैने खुद को रोंक लिया। उधर श्रुति दीदी और अमर भी ये सब देख कर मुस्कुरा रहे थे। ख़ैर कुछ ही पलों में मैं और मानुषी सीट पर आराम से बैठ गए। अमर और श्रुति भी हमारी ही सीट पर बैठ गए। आस पास बैठे सब लोग अभी भी हमें हैरानी से देख रहे थे। मैने देखा कि मानुषी का चेहरा अब एकदम से खिला खिला लग रहा था। उसके होठों पर बहुत ही हल्की सी मुस्कान थी। वो बार बार मेरी तरफ देखने लगती थी। पता नहीं क्या चल रहा था उसके मन में?

" चलो सुबह तो हो गई है। " श्रुति दीदी ने मानो बातों का सिलसिला शुरू किया __" इस वक्त अगर गरमा गरम चाय या कॉफी मिल जाती तो कितना अच्छा होता। "

" हॉ दीदी। " मानुषी ने कहा __" मगर यहॉ पर अभी ये सब कैसे मिल सकता है भला ?"

" चिंता मत करो। " मैने कहा __" अगले स्टाप पर जब ट्रेन रुकेगी तो चाय या कॉफी का बंदोबस्त करने की कोशिश करू गा मैं। "

" विक्रम भाई। " सहसा अमर ने कहा __" मैं ज़रा फ्रेश होकर आता हूँ। "

" ओके भाई तुम जाओ। " मैने कहा __" उसके बाद मुजे भी फ्रेश होना है। "

" और हम भी तो फ्रेश होंगे। " मानुषी बोल पड़ी __" इस लिए इनके बाद सबसे पहले मैं जाऊँगी। "

" हर्गिज़ नहीं। " मैने कहा __" आदि के बाद मैं ही जाऊँगा। "

" तू जा के दिखाना भला।" मानुषी ने मानो धमकी सी दी मुझे।

" ऐ अब तुम दोनो फिर से न शुरू हो जाओ। " श्रुति दीदी ने कहा था।

" पर दीदी सेकण्ड नंबर पर मैं ही जाऊँगी। " मानुषी ने बुरा सा मुह बनाया __" इसे कह दीजिए कि ये मेरे बाद चला जाएगा। "

अमर हम दोनो की इस बात से मुस्कुराता हुआ उठ कर फ्रेश होने चला गया। जबकि मैने श्रुति दीदी के कुछ बोलने से पहले ही कहा__"हॉ ठीक है तुम ही चली जाना। वैसे भी मुझे इतनी जल्दी नहीं है तेरे जैसे। पहले बता देती तो अमर को रोंक देता।"

" ओये अब तू बकवास न कर समझे। " मानुषी ने ऑखे दिखाते हुए कहा __" मुझे भी इतनी जल्दी नहीं है। "

" उफ्फ। " श्रुति दीदी कह उठी __" तुम दोनो फिर से शुरू हो गए। ओके फाइन अगर तुम दोनो को इतनी जल्दी नहीं है तो मैं चली जाऊँगी एण्ड दिस इज क्लियर। "

" ये सही कहा दीदी आपने। " मैने हॅसते हुए कहा __" अब आप ही जाना फ्रेश होने। सबसे लास्ट में यही जाएगी। "

" नहींऽऽ। " मानुषी एकदम से हड़बड़ा गई __" आदि भैया के बाद मैं ही जाऊँगी। "

" क्यों अब क्या हुआ तुझे ?" श्रुति दीदी ने मुस्कुराते हुए कहा __" अभी तो कह रही थी न कि तुझे कोई जल्दी नहीं है तो अब क्या हुआ ?"

" मैं कुछ नहीं जानती। " मानुषी ने मानो फैंसला सुना दिया __" आदि भैया के बाद मैं ही जाऊँगी और अगर आपने दोनो ने मुझे नहीं जाने दिया तो मैं यहीं पर हड़ताल कर दूँगी। "

" उसे हड़ताल नहीं। " मैने हॅसते हुए कहा __" पोट्टी कर देना कहते हैं पगली। "

" ओये चुप कर तू। " मानुषी पहले तो सकपकाई फिर घुड़की सी दी मुझे __" ज्यादा चपड़ चपड़ मत कर वरना ट्रेन के नीचे फेंक दूँगी तुझे। "

" वैसे बात तो विक्रम ने सही कही है। " श्रुति दीदी ने मुस्कुराते हुए कहा __" उसे हड़ताल करना थोड़ी न कहते हैं। "

श्रुति दीदी की इस बात से मेरी हॅसी छूट गई और मेरे साथ ही साथ श्रुति दीदी भी हॅसने लगी थी। हम दोनो के हॅसने से मानुषी का चेहरा देखने लायक हो गया। ऐसा लगा जैसे वो अभी रो देगी। सामने की सीट पर बैठे लोग भी मुस्कुरा उठे थे। मैने जब देखा कि मानुषी कहीं सच में ही न रो दे तो मैने अपनी हॅसी रोंक कर झट से उसे खींच कर खुद से छुपका लिया।

" तुम दोनो बहुत गंदे हो। " मानुषी मुझसे अलग होने की कोशिश करते हुए किन्तु रूठे हुए भाव से बोली __" जाओ मुझे तुम दोनो से अब कोई बात नहीं करनी। "

" अरे ऐसा मत करना तू। " मैने उसे मजबूती से छुपकाए हुए कहा __" हड़ताल भले ही यहीं पर कर देना। "

मेरी इस बात से इस बार श्रुति दीदी की भी ज़ोरदार हॅसी छूट गई। जबकि मैं नहीं हॅसा क्योंकि मुझे पता था कि मेरे इस बार हॅसने से मानुषी की हालत ख़राब हो जाएगी। मैं नहीं चाहता था कि उसका दिल दुख जाए। मुद्दतों बाद तो वो मुझे ऐसे मिली थी। मानुषी ने थोड़ी देर मुझसे

नाराजगीवश अलग होने की कोशिश की फिर वो खुद ही मुझसे छुपक कर मुझे कस के पकड़ लिया। वो कुछ बोल नहीं रही थी बल्कि उसने अपनी आँखें बंद कर ली थी।

ऐसे ही हँसी मज़ाक करते हुए हम चारो ही बारी बारी से फ्रेश हो गए। अगले स्टाप पर ट्रेन रुकी तो मैं और अमर ट्रेन से उतर कर उन दोनो के लिए चाय ले आए। हम चारों ने चाय पी और फिर से बातों में मशगूल हो गए। ट्रेन अपनी गति से चलती रही। बातों बातों में समय का पता ही नहीं चला और सुबह से दोपहर होने को आ गई।

हम रामगंज स्टेशन के पास पहुँचने वाले थे। इस बीच मानुषी फिर से गंभीर हो गई थी। मैने उसे समझा दिया कि वो श्रुति दीदी को लेकर आराम से गाँव जाए। मैने उसे खासकर ये कहा कि सारी बातों पता वो खुद ही लगाए तो बेहतर होगा। मानुषी और श्रुति दीदी ने मुझे अपना अपना मोबाइल नंबर दिया और मुझसे भी लिया।

रामगंज स्टेशन पहुँच कर ट्रेन रुकी तो हम सब ट्रेन से नीचे उतरने के लिए गेट की तरफ आए। मैने आस पास का मुआयना किया और अमर के साथ नीचे उतर आया। हम दोनो के उतरने के बाद मानुषी भी श्रुति दीदी के साथ उतर आई। मैने मानुषी को बता दिया था कि यहाँ से अब हम साथ नहीं रह सकते क्योंकि यहाँ से मेरे लिए ख़तरा शुरू था। ख़ैर, उसके बाद मैं और अमर बड़ी सावधानी व सतर्कता से स्टेशन से बाहर की तरफ बढ़ चले। जबकि मानुषी व श्रुति दीदी हमारे काफी पीछे पीछे आ रही थी।

बाहर आकर मैने आस पास का मुआयना किया तो मुझे एक आदमी हमारी तरफ ही आता दिखा। उसकी निगाह हमारी तरफ ही थी। मैं उसे अपनी तरफ आते देख पहले तो हड़बड़ा सा गया, किन्तु जैसे ही वो कुछ पास आया तो मैं उसे पहचान गया। वो साक्षी दीदी के पुलिस डिपार्टमेन्ट का आदमी था। पास आते ही उसने मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया। मैं और अमर उसके पीछे चल दिये। मैं आस पास भी नज़रें घुमा रहा था कि कहीं कोई ऐसा आदमी तो यहाँ मौजूद नहीं है जो सत्यम सिंह से संबंध रखता हो। मगर मुझे ऐसा कोई नज़र न आया।

उस पुलिस वाले के पीछे चलते हुए हम एक टोयटा कार के पास पहुँचे। उस आदमी ने हमें कार की पिछली सीट पर बैठने का इशारा किया। उसके इशारे पर हम दोनो कार का पिछला दरवाजा खोल कर अंदर बैठ गए। इस बीच वो पुलिस वाला भी ड्राइविंग सीट पर बैठ चुका था। कुछ ही पल में कार मंज़िल की तरफ बढ़ चली। कार के अंदर बैठ कर मैने एक बार पीछे मुड़ कर देखा मगर मानुषी व श्रुति दीदी कहीं नज़र न आईं मुझे। मैं उन दोनों के लिए चिंतित भी था कि वो गाँव तक कैसे जाएँगी? हलाँकि मुझे पता था कि उन्हें लेने कोई न कोई बड़े पापा का आदमी आया ही होगा। मगर मैं एक बार पता कर लेना चाहता था। इस लिए मैने मोबाइल निकाल कर मानुषी को फोन लगाया। दूसरी रिंग पर ही मानुषी ने फोन उठा लिया। मैने उससे पूछा कि वो कहाँ है अभी तो उसने बताया कि उसके डैड का एक आदमी जीप लेकर आया है और अब वो उसमें बैठ कर गाँव जाने वाली है। मानुषी की ये बात सुन कर मैं बेफिक्र हो गया और फिर काल कट कर दी।

टोयटा कार तेज़ रफ्तार से मंज़िल की तरफ दौड़ी जा रही थी। मैने साक्षी दीदी को फोन करके बताया कि मैं उनके द्वारा भेजे गए आदमी के साथ आ रहा हूँ। साक्षी दीदी मेरी ये बात सुन कर खुश हो गईं और कहने लगी कि मैं जल्दी आ जाऊँ। मैने उन्हें मानुषी व श्रुति दीदी के बारे में भी बताया और ट्रेन में हुई सारी बातों के बारे में भी बताया। सारी बातें सुन कर वो पहले तो ख़ामोश रहीं फिर बोली चलो जो हुआ अच्छा ही हुआ। साक्षी दीदी से बात करने के बाद मैने उमाकांत अंकल से थोड़ी देर बात की। उन्होंने बताया कि उन्होंने अपना वो काम कर दिया है जिसके लिए मैने उन्हें कहा था। उमाकांत अंकल से बात करने के बाद मैं आराम से सीट की पिछली पुश्त से पीठ टिका कर तथा ऑखें बंद कर लगभग लेट सा गया। मेरे दिमाग़ में आने वाले समय की कई सारी बातें चल रही थीं।

७५

उस वक्त दोपहर के एक या डेढ़ बज रहे थे जब सत्यम सिंह टैक्सी के द्वारा अपनी हवेली पहुँचा था। उसका दिलो दिमाग़ बुरी तरह भन्नाया हुआ था। उसके अंदर इतना ज्यादा गुस्सा भरा हुआ था कि अगर उसका बस चले तो सारी दुनियॉ को आग लगा दे मगर अफसोस वह ऐसा कुछ भी नहीं कर सकता था। कुछ करे तो तब जब उसे पता हो कि करना किसके साथ है? और जिसके साथ करना भी है तो वो है कहॉ???

मानुषी और श्रुति तो बारह बजे ही हवेली पहुँच गई थीं। सोनिया अपनी बड़ी बहन की बेटी को आज पहली बार ऑखों के सामने देख कर बेहद खुश भी हुई थी और थोड़ा दुखी भी। श्रुति अपनी मौसी से इस तरह मिली थी जैसे वह उससे पहली बार नहीं बल्कि पहले भी मिल चुकी हो। जयदीप तो अपनी मौसी की बेटी श्रुति की खूबसूरती और उसके सॉचे में ढले जिस्म को देख कर आहें भरने लगा था। उसे अपनी मौसी की लड़की पहली नज़र में ही भा गई थी। उसका मन कर रहा था कि जाए और उसे अपनी बाहों में उठा कर सीधी बेड पर पटक कर उसके ऊपर चढ़ बैठे मगर ऐसा संभव नहीं था। सोनिया अपने बेटे की मनोदशा को तुरंत ही ताड़ गई थी, इस लिए उसे अकेले में ले जाकर समझाया था कि वो ऐसी कोई भी हरकत न करे जिससे उसके साथ साथ हम सबको बाद में पछताना पड़े। सोनिया के समझाने पर जयदीप समझ तो गया था मगर ये तो वही जानता था कि बहुत देर तक वो सोनिया के समझाने पर रह नहीं पाएगा।

सफ़र की थकान के कारण मानुषी व श्रुति ने नहा धो कर थोड़ा बहुत खाना खाया और मानुषी के कमरे में दोनों एक ही बेड पर सो गईं थी। उधर सत्यम सिंह टैक्सी से उतर कर टैक्सी वाले को उसका भाड़ा किराया दिया। यद्दपि उसके पास पैसे के नाम पर चवन्नी भी नहीं थी मगर जहॉ से उसे छोंड़ा गया था वहॉ से उसे इतना तो रुपया दे ही दिया गया था कि वो आराम से अपने घर पहुँच जाए। उसका मोबाइल फोन भी उसे वापस लौटा दिया गया था। ये अलग बात थी कि उसके फोन से सिम कार्ड निकाल लिया गया था और फोन के कैन्टैक्ट लिस्ट से सारे फोन नंबर्स डिलीट कर दिये गए थे। कहने का मतलब ये कि उसका मोबाइल फोन फिलहाल महज एक डमी बन कर रह गया था। ना तो वो किसी को फोन कर सकता था और ना ही उसके पास किसी का फोन आ सकता था। यही वजह थी कि सत्यम सिंह का दिमाग़ बुरी तरह भन्नाया हुआ था।

टैक्सी से जब सत्यम सिंह उतरा तो हवेली में तैनात उसके आदमी हैरान रह गए। भाग कर उसके पास आए और हाल अहवाल पूछने लगे। मगर भन्नाए हुए सत्यम सिंह ने सबको डॉट डपट कर अपने पास से भगा दिया और पैर पटकते हुए मुख्य दरवाजे के पहुँचा। दरवाजे को ज़ोर से लात मारी उसने। दरवाजा कदाचित अंदर से बंद नहीं था इसी लिए लात का ज़ोरदार प्रहार पड़ते ही उसके दोनो पल्ले खुलते चले गए। दरवाजे के खुलते ही सत्यम सिंह ज़मीन को रौंदते हुए अंदर की तरफ बढ़ गया।

उधर ड्राइंग रूम में बैठी सोनिया बाहर ज़ोर की आवाज़ सुनकर चौंक पड़ी थी। अभी वह ये देखने के लिए सोफे से उठने ही वाली थी सहसा उसे ठिठक जाना पड़ा। सामने से आते सत्यम सिंह पर नज़र पड़ते ही वह हैरत से बुत सी बन गई। जबकि सत्यम सिंह आते ही सोफे पर धम्म से लगभग गिर सा पड़ा। धम्म की आवाज़ से ही सोनिया की तंद्रा टूटी और वह फिरकिनी की मानिंद अपनी एड़ियों पर घूमी। सोफे पर पसरे अपने पति को अस्त व्यस्त हालत में देख कर एक बार वो पुनः हैरान हुई फिर जैसे उसने खुद को संभाला और एकदम से मानो बदहवाश सी होकर सत्यम सिंह की तरफ तेज़ी से बढ़ी।

"स ... सत्यम। " सत्यम सिंह के पास पहुॅचते ही वह लरजते हुए स्वर में बोल पड़ी __" तु .. तुम अ आ गए ???"

सोनिया के इस तरह पूछने पर सत्यम सिंह कुछ न बोला बल्कि अपनी ऑखें बंद किये सोफे की पिछली पुश्त से पीठ टिकाए अधलेटा सा पसरा रहा। उसके कुछ न बोलने पर सोनिया बुरी तरह घबरा गई। वो झट से सत्यम सिंह के बगल से बैठी और सत्यम सिंह के कंधे पर अपना एक हाथ रखते हुए बोली__"तुम कुछ बोलते क्यों नहीं सत्यम? तुम ठीक तो हो न? और...और इस तरह अचानक तुम वहॉ से कैसे आ गए?"

सोनिया के दूबारा पूछने पर भी सत्यम सिंह कुछ न बोला। उसकी ये ख़ामोशी सोनिया की मानो जान लिए जा रही थी। उसका गला भर आया। आवाज़ भारी हो गई तथा ऑखों में ऑसू उमड़ आए।

" सत्य ऽऽऽम। " फिर उसने रुॅधे हुए गले से किन्तु सत्यम सिंह को झकझोरते हुए लगभग चीख ही पड़ी __" क्या हो गया है तुम्हें ? कुछ तो बोलो। तुम इस तरह यहॉ कैसे आ गए ? तुम तो सी.बी.आई. की गिरफ्त में थे न फिर तुम यहॉ कैसे ? कहीं .... कहीं तुम उनकी गिरफ्त से भाग कर तो नहीं आ गए हो ? अगर ऐसा है तो ये तुमने ठीक नहीं किया सत्यम । कानून तुम्हें इसके लिए माफ नहीं करेगा। बल्कि इस तरह भाग कर आने से तुम्हें सख्त से सख्त सज़ा देगा। "

" मैं कहीं से भाग कर नहीं आया हूॅ सोनिया। " सत्यम सिंह ने सहसा खीझते हुए कहा __" बल्कि मुझे उन लोगों ने खुद ही छोंड़ दिया है। "

"क ..क .. क्या ????" सोनिया बुरी तरह उछल पड़ी __" उन लोगों ने तुम्हें खद ही छोंड़ दिया ? ऐसा कैसे हो सकता है ? सी.बी.आई. के वो लोग तुम्हें ऐसे कैसे छोंड़ सकते हैं ? बात कुछ समझ में नहीं आई सत्यम । आख़िर ये क्या माज़रा है ? क्या चक्कर है ये ?"

" सच कहा सोनिया। " सत्यम सिंह अजीब भाव से कह उठा __" ये चक्कर ही तो है। "

" क्या मतलब ??" सोनिया चौंकी।

" सच्चाई सुनोगी तो तुम्हारे पैरों तले से ये ज़मीन गायब हो जाएगी। " सत्यम सिंह ने कहा __" ये सी.बी.आई. का जो मामला हुआ है न ये सब महज एक चाल थी मुझे किसी मकसद

के तहत इस सबसे दूर करके कैद करने की। "

" ये क्या कह रहे तुम सत्यम ?" सोनिया की के चेहरे पर आश्चर्य मानो ताण्डव करने लगा था __" ये सब एक चाल थी ? पता नहीं क्या अनाप शनाप बोल रहे हो तुम। "

" मैं अनाप शनाप नहीं बोल रहा सोनिया। " सत्यम सिंह ने सहसा आवेश में आकर कहा __" यही सच है। जो सी.बी.आई. वाले मुझे गिरफ्तार करने आए थे वो सब नकली थे। उनका सी.बी.आई. से कोई ताल्लुक नहीं था। जबकि मैं और तुम सब यही समझे थे कि वो सब सी.बी.आई. के ऑफिसर थे। "

" हे भगवान। " सोनिया ने मुख से बेशाख्ता निकल गया __" इतना बड़ा धोखा। अगर वो सी.बी.आई. के लोग नहीं थे तो फिर कौन थे वो ? और वो लोग तुम्हें यहॉ से पकड़ कर क्यों ले गए थे और कहॉ ले गए थे ? आख़िर ये सब करने के पीछे उनका क्या मकसद था ? कहीं ये सब हमारी बेटी साक्षी ने तो नहीं करवाया ?"

" नहीं सोनिया। " सत्यम सिंह ने कहा __" ये काम साक्षी का नहीं है बल्कि ये सब उस हरामज़ादे विक्रम किया धरा था। "

" ये क्या कह रहे हो तुम ?" सोनिया बुरी तरह चौंकी थी , बोली __" भला वो ये सब कैसे कर सकता है ?"

" क्यों नहीं कर सकता ?" सत्यम सिंह उल्टा सोनिया पर ही हवाल लेकर चढ़ बैठा __" तुम्हीं तो कहा करती थी न कि इस सबके पीछे अगर कोई हो सकता है तो वो है विक्रम । वही है जो हमारा अहित करना चाहता है क्योंकि हमने उसके साथ अत्याचार किया है ?"

" हॉ मगर। " सोनिया गड़बड़ा सी गई __" ये सब भी कर सकता है वो ये तो नामुमकिन सी बात है सत्यम। "

" ये सब उसी ने करवाया है सोनिया। " सत्यम सिंह ने कहा __" क्योंकि जिस जगह मुझे रखा गया था वो सब उसी का ज़िक्र कर रहे थे। मैं ये सोच सोच कर आश्चर्यचकित था कि उस नामुराद के ऐसे लोगों से संबंध कैसे हो सकते हैं। आख़िर वो कमीना इतने कम समय में ऐसा कौन सा सूरमा बन गया है जिसके इशारे पर उसका हर काम हो जाए ?"

" तुम क्या कह रहे हो सत्यम मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा। " सोनिया ने अपने बाल नोंच लेने वाले अंदाज़ से कहा था।

" कमाल की बात है। " सत्यम सिंह ने कहा __" अपने आपको दिमाग़ की जादूगरनी समझने वाली को आज मेरी ये बातें समझ में ही नहीं आ रहीं। ख़ैर , बात ये है ये जो कुछ भी हुआ है उसमें सिर्फ और सिर्फ उस रेणुका के पिल्ले का ही हाथ है। मुझे ये नहीं समझ में आ रहा कि उस कमीने ने आख़िर किस मकसद के तहत मुझे दो दिन के लिए सी.बी.आई. के नकली जाल में फॅसा कर कैद में रखा और फिर आज छोंड़ भी दिया। "

" ये तो सचमुच बड़े आश्चर्य की बात है सत्यम। " सोनिया ने चकित भाव से कहा __" सचमुच ये सोचने वाली बात है कि उसने किस वजह से ऐसा किया होगा ? हलाँकि वो चाहता तो बड़ी आसानी अपना बदला तुम्हारी जान लेकर ले सकता था और तुम यकीनन कुछ नहीं कर सकते थे। मगर उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया बल्कि उल्टा तुम्हें बिना कोई नुकसान पहुँचाए छोंड़ भी दिया। ये ऐसी बात है सत्यम जो आसानी से हजम नहीं हो सकती। हम जिस चीज़ को बेतुकी और ना क़ाबिले ग़ौर बात समझ रहे हैं उसमें कुछ तो पेंच ज़रूर है। बेवजह तो औसने ये सब नहीं किया होगा। ज़रूर ये सब करके उसने अपना कोई अहम कार्य सिद्ध किया होगा। कोई ऐसा कार्य जो फिलहाल हमारी सोच क्या कल्पना से भी कोसों दूर है। "

" यकीनन तुम्हारी बात में सच्चाई है। " सत्यम सिंह ने कहा __" इस सबसे एक बात ये भी ज़ाहिर होती है कि वो अब भी यहीं है और शायद इस वक्त साक्षी के साथ ही है। "

" अच्छा ये बताओ। " सोनिया ने पहलू बदला __" कि जो सी.बी.आई. के लोग बन कर आए थे वो लोग तुम्हें लेकर कहाँ गए थे ?"

" इस बारे में मुझे कुछ भी नहीं पता चल सका। " सत्यम सिंह ने हताश भाव से कहा था।

" क्या मतलब ??" सोनिया पुनः बुरी तरह चौंकी थी।

" उन लोगों ने सब कुछ पहले से प्लान किया हुआ था सोनिया। " सत्यम सिंह ने गहरी सास ली __" जब वो लोग मुझे यहाँ से अपनी कार में बैठा कर ले जा रहे थे तभी किसी ने पीछे से मुझे बेहोश कर दिया था और फिर जब मेरी आँख खुली तो मुझे कुछ भी समझ में नहीं आया कि मैं किस जगह आ गया हूँ ? वहाँ जिस जगह पर मैं था वहाँ एक कमरा था जो कि किसी फाइव स्टार होटल के कमरे से हर्गिज़ भी कम न था। कमरे में दूसरा कोई नहीं था। ऐसा नहीं था कि मैं वहाँ पर कहीं आ जा नहीं सकता था। बल्कि कहीं भी आ जा सकता था मगर उस जगह से बाहर की दुनियाँ में जाने का जैसे कोई रास्ता ही नहीं था। कमरे से बाहर जहाँ भी गया हर तरफ ब्लैक कलर की वर्दी में नकाबपोश अपने हाथो में गन लिए तैनात थे। वो किसी से कोई बात नहीं करते थे। जो सी.बी.आई. के ऑफिसर बन कर आए थे उनका कहीं पता ही नहीं था। मैं उन गनधारी नकाबपोशों से चीख चीख कर पूछता रहा कि मुझे यहाँ किस लिए लाया गया है मगर कोई कुछ बोलता ही नहीं था। उस दिन तो सारा दिन और रात मैं पागलों की तरह ही उन सबके सामने चीखता चिल्लाता रहा। फिर जब मुझे लगा कि यहाँ पर मेरे चीखने चिल्लाने का कोई असर नहीं होने वाला तो मैं ख़ामोश हो गया। इतना तो मुझे भी पता था कि वजह कोई भी हो वो मेरे सामने ज़रूर आएगी। इस लिए ये सोच कर मैं वापस कमरे में चला गया और अपने वहाँ होने की वजह जानने का इन्तज़ार करने लगा। वहाँ पर जब भी मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत होती वो मुझे मिल जाती थी। मैं आज़ाद तो था मगर फिर भी कैद ही था वहाँ। मेरा मोबाइल फोन मेरे पास से गायब था। अतः मैं किसी अपने से कोई कॉंटैक्ट भी नहीं कर सकता था। "

" ओह तो फिर आज तुम्हें उन लोगों ने कैसे छोंड़ दिया ?" सोनिया ने पूछा __" क्या तुम्हें पता चला कि उन लोगों ने तुम्हें क्यों पकड़ा था ? और सबसे बड़ी बात ये कि तुम्हें ये कैसे पता चला कि वो सब विक्रम का किया धरा था ?"

" आज ही पता चला। " सत्यम सिंह ने कहा __" मैं वहॉ पर कमरे में रखे अलीशान बेड पर लेटा हुआ था कि तभी कमरे में दो गनधारी नकाबपोश आए और मैने पहली बार उनके मुख से उनकी आवाज़ सुनी। उनमें से एक ने कहा कि मैं बाहर आऊ। मुझसे मिलने उनके कुछ साहब लोग आए हैं। मैं उस गनधारी नकाबपोश की ये बात सुनकर जल्दी से बेड पर उठ बैठा। अड़तालीस घंटे में ये पहला अवसर था जब मुझे किसी से ये जानने का अवसर मिलने वाला था कि मुझे यहॉ क्यों लाया गया है ? अत: मैं उन दोनो गनधारियों के साथ कमरे से बाहर आ गया। बाहर लंबे चौड़े हाल के बीचो बीच एक मध्यम साइज़ की टेबल रखी थी तथा उसके चारो तरफ कुर्सियॉ रखी हुई थी। मैने टेबल और कुर्सियॉ उस हाल में पहली बार ही देखा था। टेबल के एक तरफ की चारों कुर्सियों पर एक एक कोटधारी आदमी बैठा था। मैं जब उनके पास पहुॅचा तो उनमें से एक ने मुझे अपने सामने बैठने का इशारा किया। ये वही लोग थे जो मुझे यहॉ से सी.बी.आई. ऑफिसर बन कर ले गए थे। सच कहूॅ तो उस वक्त उन चाओं को देख कर मुझे बेहद गुस्सा आया मगर मैंने फिर खुद पर बड़ी मुश्किल से काबू किया।

" कहो सत्यम सिंह। " उन चार में से एक ने बड़ी जानदार मुस्कान के साथ मुझसे कहा __" यहॉ किसी प्रकार की कोई परेशानी तो नहीं हुई न तुम्हें ?"

" मेरी परेशानी की अगर इतनी ही फिक्र होती तुम लोगों को। " मैने आवेशयुक्त भाव से कहा __" तो मुझे इस तरह धोखे से पकड़ कर नहीं लाते यहॉ। "

" ओह आई सी। " उसने खेद प्रकट करते हुए कहा _" माफ़ करना सत्यम सिंह। हमें तुम्हारे साथ धोखे के रूप में वो वैसी ज्यादती करनी पड़ी। मगर इसमें भी हमारी कोई ग़लती नहीं थी डियर। दरअसल हमारे विक्रम सर का ही आदेश था हम तुम्हें इस प्रकार हवेली से गिरफ्तार करके यहॉ ले आएॅ। "

" वि .. विक्रम .. सर ???" मैं उसकी ये बात सुन कर एकदम से भौचक्का सा रह गया था।

" अरे तुम हमारे विक्रम सर को नहीं जानते क्या ?" एक अन्य ने मुस्कुराते हुए कहा __" कमाल है सत्यम सिंह। तुम अपने भतीजे को ही नहीं जातने। ये तो बड़ी हैरत की बात है। जबकि हमारे विक्रम सर तुमसे इतना स्नेह व लगाव रखते हैं कि वो तुम्हें यहॉ पर किसी भी तरह की तक़लीफ़ नहीं देना चाहते थे। उनका सख्त आदेश था कि तुम्हें यहॉ पर किसी भी तरह की कोई परेशानी न होने पाए। तभी तो हमने उनके कहने पर तुम्हारे लिए यहॉ फाइव स्टार होटल से भी बेहतर सुविधाएॅ मुहैया कराई थी। "

" तो तुम्हारा मतलब है कि ये सब तुमने विक्रम के आदेश पर किया है ?" मैं मन ही मन हैरान था , किन्तु प्रत्यक्ष में कठोर भाव से पूछ रहा था __" मगर क्यों ?"

" तुम्हारे इस क्यों का जवाब तो हमारे पास है ही नहीं सत्यम सिंह। " उस आदमी ने कहा __" हमने तो बस उतना ही किया है जितना कि विक्रम सर ने हमें करने के लिए कहा था। इसके पीछे उनकी क्या मंशा थी ये तो वहीं बेहतर तरीके से बता सकते हैं तुम्हें। "

" अच्छा। " मैने कहा __" तो फिर बुलाओ उसे। मैं उससे पूछना चाहता हूॅ कि उसने क्या

सोच कर ये सब किया है ?"

" उन्हें यहॉ बुलाने की हिम्मत तो हममें नहीं है। " एक अन्य ने कहा __" हॉ मगर एक आदेश और आया है उनका हमारे लिए। वो ये कि तुम्हें बाइज्ज़त यहॉ से आज़ाद कर दिया जाए। इस लिए अब हम वही करने वाले हैं। यानी कि अब तुम्हें आज़ाद कर दिया जाएगा। मगर क्योंकि हम अपना हर काम सीक्रेट तरीके से करते हैं इस लिए तुम्हें पुनः बेहोश करना पड़ेगा हमें। "

मैं उसकी ये बात सुनकर बुरी तरह हैरान रह गया। तभी किसी ने पीछे से मेरी नॉक में कुछ लगा दिया। जैसे ही मैने नॉक से सास ली उसके कुछ ही पलों बाद मैं बेहोशी के समंदर में डूबता चला गया। जब मेरी ऑख खुली तो मैं अब किसी दूसरी जगह पर खुद को मौजूद पाया। मेरे आस पास बड़े बड़े पेड़ पौधे लगे हुए थे। मैं ये देख कर पहले तो चौंका फिर उठ कर आस पास का जायजा लेने लगा। मैं ये देख कर उछल पड़ा कि मैं किसी जंगल के हिस्से पर पड़ा था। बाएॅ तरफ लगभग पचास या साठ गज की दूरी पर ही एक सड़क नज़र आ रही थी।

अस्त व्यस्त हालत में मैं कुछ देर वहीं पर बैठा अपने साथ घटी पिछली सभी बातों के बारे में सोचता रहा। उसके बाद मैं किसी तरह उठा और कुछ दूरी पर नज़र आ रही सड़क की तरफ चल दिया। मैं ये समझ चुका था कि उन लोगों ने मुझे आज़ाद कर दिया था। मुझे बेहोश इस लिए किया गया था ताकि मैं उस जगह के बारे में कतई न जान सकूॅ कि उन लोगों ने मुझे कहॉ पर रखा था। मैं ये भी समझ चुका था कि मैं चाह कर भी अब उन लोगों तक नहीं पहुॅच सकता जो लोग नकली सी.बी.आई. के ऑफिसर बन कर हवेली से मुझे गिरफ्तार करके ले गए थे।

सड़क पर आकर मैं किनारे पर ही खड़ा हो गया और सड़क के दोनो तरफ देखने लगा। मुझा अपने मोबाइल का ख़याल आया तो अनायास ही मेरे दोनो हाथ मेरी पैंट के दोनो पॉकेट पर रेंग गए। मैं ये जान कर चौंका तथा हैरान हुआ कि मोबाइल मेरी बाई पॉकेट में मौजूद है। मैने जल्दी से उसे निकाला और स्विच ऑन किया। मगर मैं ये देख कर भौचक्का रह गया कि मोबाईल में मौजूद दोनो सिम कार्ड गायब थे। उसमे नेटवर्क होने का सवाल ही नहीं था। मैने फोन में कॉटैक्ट लिस्ट देखा तो मेरे होश उड़ गए। क्योंकि उसमे से सारे नंबर टिलीट कर दिये गए थे। कहने का मतलब ये कि मैं मौजूदा हालत में किसी को ना तो फोन कर सकता था और ना ही मेरे मोबाइल फोन पर किसी का फोन आ सकता था। ये देख कर मेरा खून खौल गया। उन लोगों पर मुझे भयानक गुस्सा आ गया। ऊपर से साले ऐसी जगह मुझे फेंक दिया था जहॉ से किसी वाहन का आना जाना भी लगभग न के बराबर था।

सड़क पर मैं घंटों खड़ा रहा किसी वाहन के इन्तज़ार में मगर कोई भी वाहन आता जाता नज़र न आया। प्रतिपल उस हालत में मेरे अंदर गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था। आख़िर डेढ़ घंटे इन्तज़ार करने के बाद एक टैक्सी आती हुई नज़र आई। उसे देख कर मुझे थोड़ी राहत तो हुई मगर अगले ही पल ये सोच कर मैं मायूस हो गया कि इस वक्त किसी वाहन में जाने के लिए मेरे पास फूटी कौड़ी भी नहीं है। इसके बावजूद मैने अपनी सभी पॉकेट पर हाथ फेरा और अगले ही पल मैं चौंका। पैन्ट की पिछली जेब में मुझे कुछ महसूस हुआ। मैने फौरन ही उस चीज़ को निकाला तो मुझे एक पॉच सौ का नोट नज़र आया।

पॉच सौ का नोट उस वक्त मैं इस तरह देख रहा था जैसे मैने कभी उसे देखा ही न हो और सोचने लखा था कि इस प्रकार का ये काग़ज आख़िर है क्या चीज़? ख़ैर, वो टैक्सी जब मेरे क़रीब पहुॅचने को हुई तो मैने उसे रुकने के लिए हाथ से इशारा किया। मेरे इशारे पर वो टैक्सी मेरे पास पहुॅच कर रुक गई। मैने देखा कि उसमें जो ड्राइवर था वो कोई पैंतीस के आस पास का काला सा आदमी था। टैक्सी को रुकते ही उसने विंडो से अपना सिर बाहर की तरफ निकाल कर मुझसे पूछा कहॉ जाना है? मैने उसे पता बताया तो उसने अंदर बैठने का इशारा किया। लेकिन उससे पहले ये बताना न भूला था कि भाड़ा पॉच सौ रुपये लगेगा। मैं उसके भाड़े का सुन कर मन ही मन चौंका। मगर बोला यही कि ठीक है भाई ले लेना मगर मुझे बताए गए पते पर पहुॅचा दो। बस ये कहानी थी।"

" बड़ी हैरत व बड़ी अजीब कहानी है। " सोनिया ने सोचने वाले भाव से कहा __" इसका मतलब उन लोगों ने तुमें ऐसी जगह छोंड़ा था जहॉ से अगर कोई वाहन मिलता भी तो वो तुमसे भाड़े के रूप पॉच सौ रुपये ही मॉगता और इसी लिए उन लोगों ने तुम्हारी जेब में पॉच सौ रुपये डाल दिये थे ताकि तुम आराम से यहॉ तक पहुॅच सको। ये तो कमाल ही हो गया सत्यम। "

" कमाल तो हो ही गया। " सत्यम सिंह ने सोचने वाले अंदाज़ में कहा __" मगर मुझे ऐसा लगता है जैसे वो टैक्सी वाला भी साला उन्हीं का आदमी था। क्योंकि जिस रास्ते पर वो मिला था उस रास्ते पर डेढ़ घंटे इन्तज़ार करने के बाद ही उस टैक्सी के रूप में वाहन मिला था। टैक्सी पर कोई दूसरी सवारी नहीं थी

बल्कि ड्राइवर के अलावा सारी टैक्सी खाली ही थी।"

" बिलकुल ऐसा हो सकता है सत्यम। " सोनिया के मस्तिष्क में जैसे झनाका सा हुआ था , बोली __" यकीनन वो टैक्सी और वो टैक्सी ड्राइवर उन लोगों का ही आदमी था। अगर ऐसा है तो इसका मतलब ये भी हुआ कि पॉच सौ रुपया जहॉ से आया था तुम्हारे पास वो वापस वहीं लौट भी गया। क्या कमाल का गेम खेला है उन लोगों ने। "

" उन लोगों ने नहीं सोनिया। " सत्यम सिंह ने कहा __" बल्कि उस हरामज़ादे विक्रम ने। मुझे तो अब तक यकीन नहीं हो रहा कि वो सब विक्रम के आदमी हैं और विक्रम के ही हुकुम पर उन लोगों ने ये संगीन कारनामा अंजाम दिया था। तुम ही बताओ सोनिया क्या तुम सोच सकती हो कि कल का छोकरा कहीं पर बैठे बैठे ऐसा कोई कारनामा कर सकता है ?"

" बेशक नहीं सोच सकती सत्यम। " सोनिया ने गंभीरता से कहा __" मगर शुरू से लेकर अब तक की उसकी सारी गतिविधि यॉ ऐसी रही हैं कि अब अगर वो कुछ भी अविश्वसनीय करे तो सोचा जा सकता है। इससे एक बात ये भी साबित होती है कि वो कोई मामूली चीज़ नहीं रह गया है। या तो उसे किसी पहुॅचे हुए व्यक्ति का आशीर्वाद प्राप्त है या फिर सच में वो इतना क़ाबिल हो गया है कि वो आज के समय में हर चीज़ अफोर्ड कर सकता है। "

" यही तो हजम नहीं हो रहा सोनिया। " सत्यम ने झुंझलाहट के मारे कहा __" इतने कम

समय में आख़िर उसने ऐसा क्या पा लिया है जिसके बलबूते पर वो कुछ भी कर सकने की क्षमता रखता है ? आज के समय में सच्चाई और नेकी कक राह पर चलते हुए इतनी बड़ी चीज़ अथवा कामयाबी नहीं पाई जा सकती। ज़रूर वो कोई ग़लत काम कर रहा है। हॉ सोनिया , ग़लत कामों के द्वारा ही कम समय में बड़ी बड़ी चीज़ें हासिल होती हैं , फिर भले ही चाहे उन बड़ी बड़ी चीज़ों की ऊम्र छोटी ही क्यों न हो। "

" यकीनन सत्यम। " सोनिया ने कहा __" ऐसा ही लगता है। मगर सबसे बड़े सवाल का जवाब तो अभी तक नहीं मिला न। "

" कौन सा सवाल ?" सत्यम सिंह चौंका।

" यही कि उसने तुम्हारे साथ। " सोनिया ने कहा __" मेरा मतलब है कि उसने तुम्हें नकली सी.बी.आई. वालों के द्वारा गिरफ्तार करवा के दो दिन तक किसी गुप्त कैद में रखा तो इसमें उसका क्या मकसद छिपा था ? आख़िर उसने तुम्हें कैद करवा के अपना कौन सा उल्लू सीधा किया हो सकता है ? हमारे लिए ये जानना बेहद ज़रूरी है सत्यम । आख़िर पता तो चलना ही चाहिए इस सबका। "

" पता चलना तो चाहिए। " सत्यम सिंह ने कहा __" मगर कैसे पता चलेगा ? हमारे पास ऐसा कोई छोटा से भी छोटा सबूत या क्लू नहीं है जिसके आधार पर हम कुछ जान सकें। "

" एक सवाल और भी है सत्यम। " सोनिया ने कुछ सोचते हुए कहा __" जो कि कुछ दिनों से मेरे दिमाग़ में चुभ सा रहा है। "

" ऐसा कौन सा सवाल है भला ?" सत्यम सिंह के माथे पर शिकन उभरी।

" यही कि हमारी बेटी साक्षी। " सोनिया ने कहा __" जब से हमसे खिलाफ़ हुई है तब से वो घर वापस नहीं आई। तो सवाल ये है कि वो रहती कहॉ है ? मुझे लगता है कोई ऐसी जगह ज़रूर है जहॉ पर वो गीता और विक्रम के साथ रह रही है। ऐसी कौन सी जगह हो सकती है ?"

सोनिया की इस बात से सत्यम सिंह उसे इस तरह देखता रह गया था मानो सोनिया के सिर पर अचानक ही दिल्ली का लाल किला आकर खड़ा हो गया हो। फिर जैसा उसे होश आया।

" सवाल तो यकीनन वजनदार है। " फिर सत्यम सिंह ने कहा __" मगर संभव है कि वो यहीं कहीं आस पास ही किसी के घर में कमरा किराये पर लिया हो और हमारे पास रह कर ही वो हमारी हर गतिविधि पर बारीकी से नज़र रख रही हो। "

" हो सकता है। " सोनिया ने कहा __" मगर हमारे इतने क़रीब रहने की बेवकूफी वो हर्गिज़ भी नहीं कर सकती जबकि उसे बखूबी अंदाज़ा हो कि पकड़े जाने पर उसके साथ साथ गीता और विक्रम का क्या हस्र हो सकता है। इस लिए इस गॉव में वो किसी के घर में पनाह नहीं ले सकती। "

" इस गॉव में न सही। " सत्यम सिंह बोलाा __" किसी ऐसे गॉव में तो पनाह ले ही सकती है जो हमारे इस सोनपुर गॉव के करीब भी हो और वो बड़ी आसानी से हमारी हर मूवमेन्ट को पताा कर सके। "

" हॉ ये हो सकता है। " सोनियाा ने कहाा __" किसी दूसरे गॉव में वो यकीनन रह रही है और हम पर बारीकी से नज़र रखे हुए है। ख़ैर छोंड़ो ये सब बातेंं , मैं ये कह रही हूॅ कि आज तुम्हारे ससुर जी आ रहे हैं। "

" क क्याा ???" सत्यम सिंह उरी तरह चौंकाा __" स ससुर जाी ? मतलब कि तुम्हारे पिता कीर्तिमान सिंह जाी ??"

" हॉ डियर। " सोनियाा ने सहसा खुश होते हुए कहाा __" आज वर्षों बाद मैं अपने पिता जी से मिलूॅगी। मगर सत्यम मुझे अंदर से ऐसा लग रहा है जैसे मैं उनके सामने जा ही नहीं पाऊॅगी। तुम तो जानते हो कि मैने तुमसे शादी उनकी मर्ज़ी के खिलाफ़ जाकर तथा उनसे हर रिश्ता तोड़ कर की थी। इतने वर्षों के बीच कभी भी मैने उनसे न मिलने की कोशिश की और ना ही कभी उनसे फोन पर बात करने की। ये एक अपराध बोझ है सत्यम जिसके चलते मुझमें हिम्मत नहीं है कि मैं अपने पिता का सामना कर सकूॅ। "

" पर मैं इस बात से हैरान हूॅ। " सत्यम सिंह ने चकित भाव से कहाा __" कि इतने वर्षों बाद उन्हें अपनी बेटी की याद कैसे आई और यहॉ आने का विचार कैसे आया उनके मन मेंं ?"

" ये सब मेरी वजह से ही हुआ है सत्यम। " सोनियाा ने कहाा __" दरअसल जब तुम्हें सी.बी.आई. के वो लोग गिरफ्तार करके ले गए थे तब मैं बहुत परेशान व घबरा गई थी। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि कैसे मैं तुम्हें सी.बी.आई. की कैद से आज़ाद कराऊॅ ? तब पहली बार मुझे अपने पिता का ख़याल आया। हॉ सत्यम , तुम तो जातने हो कि मेरे पिता जी बहुत बड़े वकील हैं। कैसा भी केस हो उनके अंडर में आने के बाद उनका मुवक्किल बाइज्ज़त बरी ही होता है। इस लिए मैने सोचा कि तुम्हें कानून की उस गिरफ्त से छुड़ाने के लिए मुझे अपने पिता से ही मदद लेनी चाहिए। मगर चूॅकि मैने उनसे अपने हारे संबंध वर्षों पहले ही तोड़ लिये इस लिए हिम्मत नहीं हो रही थी उनसे बात करने की। "

" ओह। " सत्यम सिंह हैरत से बोलाा __" फिर क्या हुआ ?"

सत्यम सिंह के पूछने पर सोनिया ने सारा किस्सा बता दिया उसे। ये भी कि कैसे उसके चक्कर खा कर गिरने पर जयदीप ने रिऐक्ट किया जिसके तहत उसके पिता जी भी घबरा गए और फिर उन्होंने तुरंत यहॉ आने के लिए कहा। उनके पूछने पर ही जयदीप ने उन्हें यहॉ का पता भी बताया था। सारी बातें सुन कर सत्यम सिंह अजीब सी हालत में सोफे पर बैठा रह गया।

" ये तुमने अच्छा नहीं किया सोनियाा। " फिर सत्यम सिंह मानो गंभीरताा की प्रतिमूर्ति बना बोलाा __" मैं इस बात से दुखी नहीं हुआ हूॅ कि मेरे सुसर और तुम्हारे यहॉ आ रहे हैं बल्कि दुखी इस बात पर हुआ हूॅ कि ऐसे हालात में उनका आगमन हो रहा है। तुमें तो सब पता ही है डियर हमारे हालातों के बारे में। तुम्हारे पिता एक तेज़ तर्रार व क़ाबिल वकील हैं तथा उनका

दिमाग़ तेज़ गति से काम करता है। इस लिए अगर इस हालातों के संबंध में कोई एक बात शुरू हुई तो समझ लो कि फिर उस बात से और भी बहुत सी बातें शुरू हो जाएॅगी। उस सूरत में हमारी हालत और भी ख़राब हो सकती है। हम भला ये कैसे चाह सकते हैं कि हमारी असलियत उनके सामने फ़ाश हो जाए ?"

" तुम सच कह रहे हो सत्यम। " सोनियाा को भी जैसे वस्तु - स्थिति का एहसास हुआ __" इस बारे में तो मैने सोचा ही नहीं था। सोचने का ख़याल ही नहीं आया सत्यम । हालात ही ऐसे थे कि मुझे मजबूर हो कर अपने पिता डी से बात करनी पड़ी और उन्होंने यहॉ आने का भी कह दिया। दूसरी बात मुझे तो ये ख्वाब में भी उम्मीद नहीं थी कि तुम आज वापस इस तरह आ जाओगे। वरना मैं अपने पिता को फोन ही नहीं करती। "

" इसमें तुम्हारी कोई ग़लती नहीं है डियर। " सत्यम सिंह ने गहरी सास लीी __" तुमने जो कुछ भी किया उसमें सिर्फ तुमहारी अपने पति के प्रति चिंता व फिक्र थी। ख़ैर अब जो हो गया सो हो गया मगर अब हमें बड़ी ही होशियारी और सतर्कता से काम लेना होगा। तुम उन्हें ये नहीं बताओगी कि कल तुमने उन्हें किस वजह हे फोन किया था बल्कि यही कहोगी कि तुम्हें उनकी बहुत याद आ रही थी। दूसरी बात जयदीप को भी समझा दो कि वो उनके सामने ऐसी कोई भी बात न करे जिससे किसी भी तरह की बात खुलने का चॉस बन जाए। "

" हमारी दूसरी बेटी मानुषी भी तो आज आ गई है मुंबई से। " सोनियाा ने कहाा __" इतना ही नहीं उसके साथ में मेरी बहन की बेटी श्रुतिि भी है। "

" क्याा ????" सत्यम सिंह चौंका।

" हॉ सत्यम। " सोनियाा ने बेचैनी से कहाा __" वो दोनो ऊपर कमरे में इस वक्त सो रही हैं। "

" अरे तो तुम उनके पास जाओ। " सत्यम सिंह एकदम से फिक्रमंद हो उठा थाा , बोलाा __" और उन दोनो को अच्छी तरह समझा दो कि वो दोनो अपने नाना जी के सामने हालातों के संबंध में किसी भी तरह की कोई बात नहीं करेंगी। "

" ठीक है। " सोनियाा ने सोफे से उठते हुए कहाा __" मैं अभी जाती हूॅ उनके पास और सब कुछ समझाती हूॅ उन्हें। "

ये कह कर सोनिया तेज़ तेज़ क़दमों के साथ ऊपर के कमरे में जाने के लिए सीढ़ियों की तरफ बढ़ गई। जबकि उसके जाने के बाद सत्यम सिंह एक बाथ पुनः असहाय सा सोफे की पिछली पुश्त से पीठ टिका कर पसर गया था। चेहरे पर चिंता व परेशानी के भाव गर्दिश करते हुए नज़र आ रहे थे।

७६

उधर पुलिस वालों की कार से मैं और अमर भी सुरक्षित साक्षी दीदी के पास फार्महाउस पर पहुॅच गए थे। सारे रास्ते मैं सारी बातों और सारे हालातों के बारे में बारीकी से मनन करता आया था। इस जंग में मुझे दो ताकतों से भिड़ना था। एक तो अपने ताऊ सत्यम सिंह से और दूसरा मंत्री से। साक्षी दीदी ने मुझे मंत्री के संबंध में सारी बातें बता दी थी। मैं जान कर खुश था कि साक्षी दीदी के पास मंत्री के खिलाफ़ ऐसे सबूत हैं कि वो जब चाहे उस मंत्री और उसके साथियों को बीच चौराहे पर नंगा दौड़ने पर बिवश कर दें। इधर वही हाल मेरा भी था। मेरे पास भी सत्यम सिंह के खिलाफ़ ऐसे सबूत थे कि उन सबूतों के आधार पर सत्यम सिंह पलक झपकते ही कानून की ऐसी गिरफ्त में पहुॅच जाएगा जहाँ से बच कर निकलना उसी तरह नामुमकिन था जैसे किसी नदी के दो किनारोको आपस मिलना नामुमकिन ही नहीं असंभव होता है।

मेरे मन में कभी कभी ये ख़याल भी आता था कि इस खेल को एक पल में खत्म कर दूॅ। यानी ग़ैर कानूनी धंधा करने और अवैध गैर कानूनी ऐसा पदार्थ रखने के जुर्म में सत्यम सिंह ऊम्र भर का लिए जेल की सलाखों के पीछे चला जाए जो पदार्थ किसी भी इंसान की ज़िंदगी खत्म करने के लिए काफी थे। मगर मैं ऐसा करना नहीं चाहता था बल्कि मैं तो सत्यम सिंह को खुद अपने हाथो से ऐसी सज़ा देना चाहता था कि वो मौत के लिए गिड़गिड़ाए मगर मौत उसे नसीब न हो सके।

मुझे इस बात का भी एहसास था कि आज भले ही मंत्री सच्चाई को पूरी तरह न जानता हो मगर देर सवेर उसे सब कुछ पता चल ही जाएगा। वो चुप नहीं बैठेगा बल्कि कुछ तो ऐसा करेगा ही कि उसके गले में फॅसी हुई हड्डी निकल सके और उसके बच्चे सही सलामत उसे वापस मिल सकें। मुझे एहसास था कि ये दोनो ही ताकतें बहुत ही खतरनाक साबित हो सकती है हमारे लिए। हम अभी तक इसी लिए सेफ रह सके थे क्योंकि हमने खुल कर तथा सामने आकर कोई काम नहीं किया था। बल्कि हर काम दोनो ताकतों की ग़ैर जानकारी में एवं छुप कर किया था। मगर हालात ज्यादा दिन तक ऐसे ही नहीं बने रह सकते थे। इस लिए इन सब बातों पर विचार करके मुझे सबसे पहले अपनी सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम करना था।

फार्महाउस पर हमें छोंड़ कर वो पुलिस के आदमी वापस चले गए थे। साक्षी दीदी मुझे वापस आया देख कर बेहद खुश हो गई थी। अमर तो सीधा कमरे की तरफ चला गया था जबकि मैं और कुछ देर वहीं ड्राइंग रूम में बैठा सबसे बातें करता रहा। गीता बुआ ने मुझसे मुंबई में सबका हाल चाल पूछा। उसके बाद मैं भी उठ कर कमरे की तरफ बढ़ गया।

कमरे के अटैच बाथरूम में मैं मस्त ठंडे पानी से नहाया तो तबीयत हरी हो गई। नहा कर मैं टावेल लपेटे ही बाथरूम से कमरे में आ गया। जैसे ही मैं कमरे में आया तो बेड पर आराम से बैठी साक्षी दीदी पर मेरी नज़र पड़ी तो मैं चौंका। दरअसल मैं इस वक्त सिर्फ एक टावेल में ही था। बाकी ऊपर का समूचा जिस्म नंगा ही था मेरा। साक्षी दीदी के सामने इस तरह आ जाने

से मुझे शर्म सी महसूस हुई।

" ओहो क्या बात है विक्रम। " सहसा साक्षी दीदी की चहकती हुई आवाज़ मेरे कानों से टकराई __" क्या बॉडी शॉडी बना रखी है तुमने। ओहो सिक्स पैक भी है। पक्का जिम करते होगे तुम , है न ?"

" हॉ थोड़ा बहुत करता हूँ दीदी। " मैने शर्माते हुए कहा।

" अरे तुम शर्मा क्यों रहे हो विक्रम ?" साक्षी दीदी का चौंका हुआ स्वर __" भला मुझसे किस बात की शरम भाई ? मैं तो तेरी बहन हूँ कोई ग़ैर लड़की नहीं जिससे तू शरमाए। "

" पर दीदी। " मैने असहज भाव से कहा __" मैं कभी आपके सामने इस हालत में नहीं आया न। इस लिए मुझे थोड़ी शरम आ रही है। "

मेरी ये बात सुन कर साक्षी दीदी बेड से उतर कर मेरे क़रीब आ गई और फिर मेरे चेहरे को अपनी हॅथेलियों के बीच लेते हुए कहा__"ओए ये क्या बात हुई भला? तू मेरा सबसे अच्छा और सबसे हैण्डसम भाई है। तुझे मुझसे किसी भी तरह से शरमाने की या झिझकने की ज़रूरत नहीं है। तुझे पता है विक्रम, अब तक मैं ऐसे रिश्तों के बीच थी जो कहने को तो मेरे अपने थे मगर उन सभी के अंदर पाप और गंदगी भरी हुई थी। ऐसे लोगों से मेरा कोई संबंध नहीं है अब। दुनियॉ में मेरा अगर कोई अपना है तो वो है तू। मेरी ज़िंदगी का अब एक ही मकसद है भाई और वो है तेरे साथ ग़लत करने वालों सर्वनाश करना और तुझे संसार की हर खुशी देना। मेरा दिल करता है कि मैं तुझ पर कुर्बान हो जाऊँ मेरे भाई, फना हो जाऊँ तुझ पर।"

" मुझे पता है दीदी। " मैने सहसा मुस्कुरा कर कहा __" कि आप मुझसे बहुत प्यार करती हैं। इसका सबसे बड़ा सबूत यही है कि आज आप अपने ही माता पिता के खिलाफ़ हो गई हैं और अपने माता पिता के सबसे बड़े दुश्मन का साथ दे रही हैं। मुझे इस बात की खुशी नहीं है कि आपने मेरे लिए अपने माता पिता से बगावत की है बल्कि इस बात की खुशी है कि मैं जिस साक्षी दीदी से बात करने के लिए अब तक तरस रहा था वो आज मेरे पास हैं। "

" काश ये सब मैं पहले ही सोच लेती विक्रम। " साक्षी दीदी एकदम से दुखी होकर मुझसे लिपट गईं। फिर भारी स्वर में बोलीं __" तो इतने सालों तक मैं अपने भाई से दूर न रहती और ना ही ऐसे हालात पैदा होते। "

" हालात तो तब भी ऐसे ही पैदा होते दीदी। " मैने कहा __" क्योंकि इंसानों की फितरत कभी नहीं बदलती। वो अपनी फितरत से मजबूर होकर पहले भी वही करता जो आज कर रहा है। "

" माना कि मेरे पिता अपनी फितरत के चलते वही सब करते जो आज कर रहे हैं। " साक्षी दीदी ने कहा __" मगर मैं तेरी बात कर रही हूँ विक्रम । तू मुझे पहले ही तो मिल जाता न ?

मेरी वजह से तेरे दिल को इतनी तक़लीफ तो न होती जितनी अब तक हुई थी। "

" कोई बात नहीं दीदी। " मैने प्यार से कहा __" जो गुज़र गया उसे भूल जाइये और आज की बात करिये तथा आज के माहौल में खुश रहिए। "

" तू साथ है तो अब मैं खुश ही रहूँगी विक्रम। " साक्षी दीदी ने मेरी ऑखों में देखते हुए कहा __" तुझे पता है विक्रम , इसके पहले मैं कभी किसी लड़के के क़रीब नहीं गई। पता नहीं क्यों पर मुझे हर लड़के से एक नफ़रत सी थी। आज के समय में हर लड़का लड़की एक दूसरे के जाने कितने क़रीब आ जाते हैं मगर मुझे इन सब बातों से बेहद चिढ़ थी। मगर प्राची से मिलने के बाद और उसकी प्रेम कहानी सुनने के बाद मुझे एहसास हुआ कि आज भी ऐसे लोग हैं जो पाक़ मोहब्बत करते हैं और एक मिसाल बन जाते हैं। मैं बहुत खुश थी मेरे भाई कि ऐसा इंसान मेरा अपना भाई ही है और फिर मुझे एहसास हुआ कि कितनी ग़लत थी मैं जो तुझे बचपन से ही ग़लत समझती आ रही थी। बस उसके बाद जब सबकुछ पता चला तो तेरे लिए मेरे हृदय में और भी जगह हो गई भाई। मेरी अंतर्आत्मा से बस एक ही आवाज़ आती है और वो ये कि अब तुझसे ही मेरी हर खुशी है और दुख भी। "

" जो होता है सब अच्छे के लिए ही होता है दीदी। " मैने मुस्कुराते हुए कहा __" आज मेरी सबसे अच्छी दीदी मेरे पास है और मुझे इतना प्यार करती है। मैं बता नहीं सकता कि इस बात से मैं कितना खुश हूँ दीदी। मेरा तो मुंबई जाने का बिलकुल भी मन नहीं था। मगर सबको लेकर जाना भी ज़रूरी था। लेकिन वहॉ से वापस आपके पास आ जाने के लिए मैं उतावला हो रहा था। मुझे लग रहा था कि मैं पलक झपकते ही आपके पास पहुँच जाऊँ। "

" ऐसी बातें मत कर विक्रम। " साक्षी दीदी की आवाज़ कॉप सी गई। वो मुझसे कस के लिपट गईं और फिर बोली __" तुझे नहीं पता कि तेरी ऐसी बातों से मैं कितनी कमज़ोर हो सकती हूँ। कहीं ऐसा न हो जाए कि मैं तेरे बिना एक पल भी रह न पाऊँ। "

" तो क्या हुआ दीदी ?" मैंने कहा __" सब कुछ ठीक होने के बाद हम सब एक साथ ही तो रहेंगे। फिर आप ऐसा क्यों कह रही हैं ?"

" तू नहीं समझेगा विक्रम। " साक्षी दीदी ने सहसा बेचैनी से पहलू बदला __" ख़ैर छोंड़ ये सब। मैं ये कह रही हूँ कि प्राची के माता पिता भी यहॉ आ गए हैं। उनसे भी मिल लेना तुम। "

" मैं आपसे एक ज़रूरी बात जानना चाहता हूँ। " मैने दीदी से कहा __" और वो ये कि ये फार्महाउस आपके पास कैसे है ?"

" ये फार्महाउस डैड ने मेरे नाम बहुत पहले ही कर दिया था। " साक्षी दीदी ने कहा __" ऐसे ही दो फार्महाउस और हैं। एक मानुषी के लिए और दूसरा जयदीप के लिए। पर तू ये क्यों पूछ रहा है विक्रम ?"

" इसका मतलब। " विक्रम को झटका सा लगा था __" इस फार्महाउस के बारे में बड़े पापा

जानते हैं। जाने भी क्यों न आख़िर दिया तो उन्होंने ही है आपको। इस लिए अब आप ये भी जान लीजिए कि यहॉ पर रहना भी हमारे लिए खतरे से खाली नहीं है। "

" क्या ????" साक्षी दीदी भी बुरी तरह हिल गईं , कदाचित उन्हें भी अब तक इस बात का एहसास नहीं था। किन्तु अब हो गया था __" ये तो यकीनन सच कहा तूने। ओह माई गॉड मुझे इस बारे में पहले ही सोच लेना चाहिए था। सचमुच विक्रम यहॉ हममें से कोई भी सुरक्षित नहीं है। ये तो अच्छा हुआ कि अभी तक डैड का ध्यान फार्महाउस की तरफ नहीं गया है। मगर इसमें अब ज़रा भी शक नहीं कि बहुत जल्द उन्हें इस फार्महाउस का ख़याल आ सकता है। वो सोच सकते हैं कि मैं और तुम यहॉ छुपे हो सकते हैं। अतः वो ज़रूर इसका पता लगाएॅगे। अब क्या होगा विक्रम ?"

" फिक्र मत कीजिए। " मैने कहा __" सारे रास्ते मैं यही सोच रहा था और फिर मैने इसका बंदोबस्त भी किया है। "

" बंदोबस्त ??" साक्षी दीदी हैरान।

" हॉ दीदी। " मैने कहा __" इसका तो मुझे भी अंदाज़ा था कि ये फार्महाउस आपके पास बड़े पापा की वजह से ही आया हो सकता है। इस लिए इसका ख़याल देर सवेर उन्हें आ ही जाएगा। अतः मैने फौरन ही अपने एक दोस्त को फोन किया। मेरा वो दोस्त आजकल इंदौर में है अपने माता पिता व भाई बहन के साथ। घर से और दौलत से भी सम्पन्न है वो। उसके पापा इन्कमटैक्स के बड़े ऑफिसर हैं तथा उसका बड़ा भाई पुलिस में एसीपी है। रामगंज से क़रीब दस किलोमीटर पहले ही उसका गॉव है रेवती। जहॉ पर उसका बड़ा भारी पुश्तैनी घर है। किन्तु उस घर में कोई नहीं रहता है। घर की देख रेख के लिए एक दो केयरटेकर रखे हुए हैं उसके डैड ने। मैने अपने उसी दोस्त से बात की थी तथा उसको सारी बातें भी बताई और कहा कि कुछ समय के लिए मुझे उसके घर की ज़रूरत है रहने के लिए। मेरी सारी बातें सुनकर उसने अपनी मॉम से बात किया। उसकी मॉम मुझे अपने बेटे की तरह ही चाहती थी। अनुप ने जब अपनी मॉ से मेरी सारी कहानी बताई तो वो मेरे लिए चिंतित हो गईं और फौरन ही उन्होंने कह दिया कि मुझे आज ही उनके घर में शिफ्ट हो जाना चाहिए। उन्होंने घर के केयरटेकर को फोन करके मेरे बारे में बता दिया है। एक काम उन्होंने ये भी किया कि अपनी बहन को जो कि रेवती में ही रहती हैं भी सूचित कर दिया है। उनसे कहा कि वो अपने पति को किसी ऐसे वाहन के साथ मेरे पास भेज दें जिसमें हम सब और हमारा सामान आराम से आ सके। "

" ये तो बहुत ही अच्छी बात है विक्रम। " साक्षी दीदी ने खुश होकर मेरे गाल पर चुम्बन जड़ दिया __" तूने सचमुच बहुत ही कमाल का और होशियारी का काम किया है। मगर एक समस्या भी है। "

" कैसी समस्या दीदी ?" मैं चकराया।

" यही कि हम सब और हमारा सामान वगैरह तो यहॉ से वहॉ शिफ्ट हो जाएगा। " साक्षी दीदी ने कहा __" मगर हम तहखाने में मौजूद उस मंत्री के पिल्लों को कैसे ले जाएॅगे और वहॉ उन्हें कैसे रखेंगे ? यहॉ तो तहखाना था जहॉ पर मैने उन सबको कैद किया हुआ है

जबकि वहॉ पर ऐसा कोई तहखाना नहीं हो सकता। "

" कोई ज़रूरी तो नहीं कि उन सबको तहखाने में ही रखा जाए। " मैने कहा __" हम उन लोगों को किसी कमरे में भी वैसे ही बाध कर रख सकते हैं। बस इस बात का ख़याल रखना होगा कि वो चीख चिल्ला न सकें। वरना उनकी आवाज़ से बाहरी लोगों को पता भी लग सकता है। "

" हॉ ये भी सही है। " साक्षी दीदी ने कहा __" और हॉ हरिया काका और शंकर काका भी हमारे साथ ही जाएॅगे। वो बेचारे मुझे अपनी बेटी की तरह ही चाहते हैं। मेरे लिए वो कुछ भी कर सकते हैं। वो दोनो अच्छे इंसान है विक्रम । यहॉ पर उन्हें अकेले छोंड़ चले जाना कतई उचित नहीं है। "

" ठीक है दीदी। " मैने कहा __" हम उन्हें भी साथ ले चलेंगे। मगर यहॉ से चलने की फौरन तैयारी कीजिए। मेरे दोस्त अनुप का कभी भी फोन आ सकता है ये बताने के लिए कि उसके मौसा वाहन लेकर हमारे पास पहुॅचने ही वाले हैं। "

" क्या हमें आज ही यहॉ से निकलना होगा ?" साक्षी दीदी ने हैरानी से कहा था।

" बिलकुल दीदी। " मैने कहा __" हम एक पल की भी देरी नहीं कर सकते। बड़े पापा का कुछ पता नहीं कि उनके मन में किस पल इस फार्महाउस का ख़याल आ जाए और वो फौरन हम सबका पता लगाने के लिए यहॉ आ धमकें। इस लिए बेहतर यही है कि उनके यहॉ धमकने से पहले ही हम लोग यहॉ से कूच कर जाएॅ। "

" सही कह रहा है तू। " साक्षी दीदी ने हालात की गंभीरता को समझते हुए कहा __" वक्त और हालात का कोई भरोसा नहीं किया जा सकता। "

" ठीक है दीदी। " मैने कहा __" अब आप जाइये और सबको बता दीजिए। मैं भी कपड़े पहन कर आता हूॅ हाथ बटाने। "

" चल ठीक है। " दीदी ने कहा और फौरन ही कमरे से बाहर निकल गईं। उनके जाने के बाद मैने भी आनन फानन में कपड़े पहने।।तभी मेरा फोन बजा।

मैने मोबाइल उठाकर देखा तो अनुप का ही काल था। मैने तुरंत ही काल रिसीव कर मोबाइल को कान से लगा लिया। उधर से अनुप ने बताया कि उसके मौसा कुछ ऐसे आदमियों को भी साथ में लेकर आ रहे जो तुम सबकी सुरक्षा का भी ख़याल रखेंगे। मैं उसकी बात सुन कर मुस्कुराया और उसे इसके लिए धन्यवाद दिया। उसने बताया कि दस से बीस मिनट के बीच उसके मौसा मेरे पास पहुॅच जाएॅगे। उसके बाद काल कट हो गई।

मैं फौरन ही कमरे से निकल कर नीचे आया और सबके साथ सामान को इकट्ठा कर उसे पैक करवाने लगा। मैने अमर से कहा कि वो हरिया काका को भी इस बात का बता दे और उससे कहे कि वो तहखाने से उन चारों पिल्लों को तथा मंत्री की बेटी को बेहोश कर तहखाने से

बाहर निकालने की तैयारी करें। मेरी बात सुनकर अमर फौरन ही हरिया काका के पास चला गया। इधर गीता बुआ तथा प्राची के माता पिता भी सारे सामान को पैक करने में लगे हुए थे। साक्षी दीदी ने बताया कि रौनक का सामान भी पैक रखा हुआ है जिसे साथ ही यहाँ से ले चलना है।

लगभग बीस मिनट बाद ही दो इनोवा कार तथा उसके पीछे एक टैम्पो फार्महाउस में दाखिल हुए। मैं ये देख कर हैरान रह गया कि इतने सारे वाहन अनुप ने भेजवा दिये थे। कदाचित उसे अंदाज़ा था कि सबको लाने में इतने ही वाहनों की ज़रूरत पड़ सकती थी। टैम्पो में सारा सामान और दोनो कारों में हम सब लोग बैठ कर आराम से यहाँ से जा सकता थे। ख़ैर सामान तो पैक हो ही चुका था। अतः मैं और अमर जल्दी जल्दी सारे सामान को टैम्पो में लोड करने लगे। इस काम में मौसा के साथ आए हुए चार पाँच आदमी भी लग गए। कुछ ही देर में सारा सामान टैम्पो में लोड हो गया।

हरिया काका और शंकर काका ने उन चारों पिल्लों और उस पिल्ली को भी टैम्पो में ही ठूँस दिया और खुद भी उसी टैम्पो में चढ़ गए। मौसा के तीन आदमी भी टैम्पो में चढ़ गए। टैम्पो का पिछला फटका लगा कर ऊपर से मोटी तिरपाल को ढँक दिया गया। जिससे अंदर का कुछ भी देखा नहीं जा सकता था।

उसके बाद मैने प्राची के माता पिता, गीता बुआ, तथा केशरमाँ काकी को एक इनोवा में बैठा दिया। उस इनोवा में मौसा का एक आदमी भी आगे की सीट पर हाथ में बंदूख लिए बैठ गया। दूसरी इनोवा में मैं अमर और साक्षी दीदी बैठ गए। आगे की सीट पर आख़िरी बचा बंदूकधारी भी बैठ गया। उसके बाद सारा क़ाफिला चल दिया वहाँ से। इसके पहले हमने अच्छी तरह से चेक कर लिया था कि हमारी कोई ऐसी चीज़ तो नहीं छूट गई जो ज़रूरी हो।

साक्षी दीदी ने रास्ते में किसी को फोन लगाया और उससे कहा कि उसके फार्महाउस से पुलिस जिप्सी अपने साथ ले जाकर थाने में खड़ा कर दें। फार्महाउस में एक और जीप थी जो कि सत्यम सिंह की ही थी उसे वहीं खड़े रहने दिया था। लगभग आधा घंटे बाद हम रेवती पहुँच गए। इस बीच रास्ते में हमें इक्का दुक्का वाहन तो मिले मगर उनमें कोई मंत्री या सत्यम सिंह का आदमी नहीं था। रेवती में अनुप के मकान के सामने ही हमारा क़ाफिला रुका। घर के बाहर ही दो केयरटेकर खड़े दिखे। वाहनों के रुकते ही वो हमारे पास आ गए।

हम सब वाहनों से उतर कर बाहर आए तो वो दोनो केयर टेकर हमें घर के अंदर की तरफ ले गए। मैं और अमर बाहर ही थे। टैम्पो से पहले उन पाँचों कैदियों को निकाल कर घर के अंदर एक ऐसे कमरे में ले आए जो सबसे अलग और आख़िर में था। उसके बाद हम सबने मिल कर टैम्पो से सारा सामान उतार कर अंदर ले गए। उन बंदूखधारियों हमारी बड़ी मदद की।

अनुप के मौसा, जिनका नाम केशव शर्मा था वो बड़े ही खुशदिल इंसान थे। मुझे उनका नेचर बड़ा पसंद आया था। वो अंत तक हमारे पास ही रहे और हमारी हर व्यवस्था के बारे में देखते सुनते रहे तथा हमारी हर ज़रूरों की लिस्ट बनाते रहे। दरअसल यहाँ रहता तो कोई था नहीं। दो

केयरटेकर थे जो कि घर से अलग एक तरफ बने सर्वेन्ट क्वार्टर में रहते थे। वो सारा दिन सारे सामान को जमाने में और रखने में चला गया। इस बीच अनुप की मॉम सुगंधा आंटी का फोन भी आया था। उन्होंने मुझसे बड़े प्यार से बात की और ये भी कहा कि मैं यहॉ पर किसी भी चीज़ के लिए संकोच न करू। ये घर अपना ही है और हर चीज़ का उपयोग बड़े शौक से कर सकते हैं हम। मैं सुगंधा आंटी से बात करके मुतमईन हो गया था और खुश भी। उसके बाद मैं और अमर मौसा जी के साथ मार्केट चले गए। जहॉ से हमें राशन पानी तथा और भी कई सारी चीज़ें लेनी थी। मौसा जी ने कहा कि गैस सिलेण्डर वो अपने यहॉ से हमे दे देंगे।

सारी व्यवस्था और सब कुछ सही करवाने के बाद मौसा जी ये कह कर अपने घर चले गए कि हमें जब भी किसी चीज़ की ज़रूरत पड़े तो हम बेझिझक उनसे फोन बता सकते हैं। उन्होंने कहा कि वो बीच बीच में आते रहेंगे हाल चाल के लिए। मौसा जी का घर रेवती में ही था किन्तु मुख्य सड़क के पीछे था। पैदल चल कर जाने में लगभग दस मिनट से भी कम का समय लगता था।

अनुप का ये घर दो मंजिला था तथा काफी बड़ा था। आज के समय का बना ये घर वेल डेकोरेटेड था। अंदर से ऐसा लगता था जैसे कोई बॅगला हो। हलॉकि मुंबई वाले मेरे बंगले के मुकाबले ये कुछ भी नहीं था। होता भी कैसे उस बंगले की कीमत भी तो डेढ़ सौ करोड़ रुपये थी। ख़ैर रात हो चुकी थी इन सब कामों में। अतः केशरमाँ काकी ने अपनी रसोई संभाल ली थी। उनकी मदद के लिए गीता बुआ भी साथ थी। प्राची की मॉ भी खाना बनाने में मदद करना चाहती थी मगर गीता बुआ ने साफ कह दिया था कि वो बस आराम करें। उन्हें यहॉ पर कोई काम करने की ज़रूरत नहीं है।

रात का डिनर करने के बाद हम सब अपने अपने कमरों में सोने के लिए चल दिये। प्राची के माता पिता ग्राउण्ड फ्लोर पर ही बने कमरे को चुना था अतः वो उसी कमरे में चले गए। नीचे तीन कमरे और भी थे। जिनमे से एक पर हरिया काका व केशरमाँ काकी तथा दूसरे पर शंकर काका सोने के लिए चले गए। जबकि ऊपर के कमरों में मैं अमर गीता बुआ व साक्षी दीदी चले गए।

इन सब कामों से हम सब काफी थक चुके थे अतः बेड पर लेटते ही नींद को आन् ही था। किन्तु मुझे नींद नहीं आ रही थी। मेरे मन में कई सारी बातें चल रही थी। फार्महाउस से यहॉ शिफ्ट हो जाने से अब किसी का ख़तरा नहीं था। बल्कि अब तो खुल कर हम कोई काम कर सकते थे। मैं ये सब सोच ही रहा था कि सहसा मुझे ऐसा लगा जैसे दरवाजे पर बाहर से किसी ने दस्तक दी हो। मैं ये सोचते हुए बेड से उठ कर दरवाजे की तरफ चल दिया कि इस वक्त कौन हो सकता है?

७७

उधर हवेली में सोनिया का बाप व सत्यम सिंह का ससुर कीर्तिमान सिंह उस वक्त हवेली पहुॅचा जब सत्यम सिंह फ्रेश होने के बाद खाना खाने के लिए डायनिंग टेबल के चारो तरफ लगी कुर्सियों में से मुख्य कुर्सी पर बैठा था। कीर्तिमान सिंह को हवेली के बाहर तैनात सत्यम सिंह का एक आदमी अंदर लेकर आया था।

अपने ससुर को आज वर्षों बाद देख कर सत्यम सिंह फौरन ही अपनी कुर्सी से उठ कर कीर्तिमान की तरफ बढ़ा और उसके पैर छू कर आशीर्वाद लिया। अभी सत्यम सिंह अपने ससुर के पॉव छू कर खड़ा ही हुआ था कि तभी सोनिया भी किचेन से हाथ में थाली लिए आई। सोनिया की नज़र जब अपने पिता पर पड़ी तो वो एकदम से मानो बुत बन गई। काफी देर बाद उसकी तंद्रा तब टूटी जब सत्यम सिंह ने उससे कहा कि देखो सोनिया पापा जी आ गए।

हाथ में ली हुई थाली को सोनिया ने डायनिंग टेबल पर रखा और फिर भाग कर कीर्तिमान की तरफ बढ़ी और अपने पिता के गले से लग गई। भावनाओं और जज़्बातों ने मानो प्रबल रूप धारण कर लिया जिसके प्रभाव से उसकी ऑखों से ऑसू झर झर करके बहने लगे थे। सोनिया अपने पिता के सीने से छुपकी ज़ार ज़ार रोये जा रही थी। कीर्तिमान खुद भी बेहद ग़मगीन हो गया था और हो भी क्यों न आख़िर सोनिया उसकी लाडली बेटी जो थी। अपनी बेटी को अपने कलेजे से लगाए कीर्तिमान को आज असीम सुख शान्ति मिल रही थी। वर्षों से उसके अंदर दर्द से भरी हुई टीस कम हो गई थी।

कितनी ही देर तक सोनिया अपने पिता के गले लगी रही उसके बाद जब उसके अंदर का गुबार खत्म हुआ तो वो अपने पिता से अलग हुई और अपने पिता से उनका हाल चाल पूछने लगी। कुछ देर बाद सत्यम सिंह ने सोनिया और अपने ससुर से कहा कि वो फ्रेश हो लें ताकि हम साथ में बैठ कर ही खाना खाएॅ। सत्यम सिंह की बात पर कीर्तिमान सिंह बोले कि वो बेटी के घर का अन्न कैसे खा सकते हैं? इस पर सत्यम सिंह ने हॅसते हुए कहा कि पापा जी आप भी क्या बाबा आदम के रीति रिवाज लिए बैठे हैं। आज के समय के सबसे बड़े वकील होते हुए भी ऐसी बात करते हैं। आख़िर अपने दामाद और बेटी के बार बार कहने पर कीर्तिमान सिंह को सत्यम सिंह के साथ बैठ कर खाना ही पड़ा।

खाना खाने के बाद ससुर दामाद के बीच ढेर सारी बातें हुईं उसके बाद सत्यम सिंह सोनिया को बता कर अपनी फैक्ट्री के लिए निकल गया। काफी दिन से फैक्ट्री नहीं गया था वह। वैसे भी वो चाहता था कि वर्षों के बाद बाप बेटी मिले हैं तो वो फ्री होकर एक दूसरे से बातें करें। सत्यम सिंह सोनिया को किनारे पर बुला कर उससे एक बार पुनः ये कहा कि वो या कोई भी कीर्तिमान जी से हमारे हालातों के संबंध में कोई बात न करे। सब कुछ समझा बुझा कर सत्यम सिंह हवेली से बाहर आ गया।

बाहर आते ही उसे जयदीप इस तरफ ही आता दिखाई दिया। सत्यम सिंह उसे देख कर ठिठक गया। अपनी ही धुन में मस्ती से आता हुआ जयदीप अपने बाप को देख कर हैरान रह गया और फिर एकदम से झपट कर उसके गला लग गया।

" ओह डैड आप आ गए। " जयदीप खुशी से झूमता हुआ बोला था।

" मैं तो आ ही गया बर्खुरदार। " सत्यम सिंह ने मुस्कुराते हुए कहा __" मगर तुम इस वक्त कहाँ से इस तरह मस्ती में डूबे चले आ रहे थे ?"

" वो मैं गेस्टहाउस की तरफ से आ रहा था डैड। " जयदीप ने कहा __" दरअसल आपके बिजनेस संबंधी दोस्तों ने अपने आदमी हमारी मदद के लिए यहाँ भेज गए थे। इस लिए मैं उन्हीं के पास बैठा हुआ था। मॉम ने कहा था कि उन्हें किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो उन सबका ख़याल रखूँ। "

" ओह आई सी। " सत्यम सिंह आदमियों का सुन कर सहसा चौंक पड़ा था फिर बोला __" चलो ये तो बहुत अच्छी बात है बेटे। मुझे खुशी हुई कि तुम अपनी जिम्मेदारियों को समझने लगे हो। ख़ैर मैं ये कह रहा हूँ कि आज तुम्हारे नाना जी आए हुए हैं इस लिए तुम या कोई भी उनके सामने हमारे हालातों के संबंध में कोई भी बात नहीं करोगे। और हाँ , तुम भी ज़रा सम्हल कर उनसे बात करना। वो बहुत ही जहीन इंसान हैं। इंसान को पहचानने में उन्हें ज़रा भी वक्त नहीं लगेगा। अतः सोच समझ कर और होशियारी से उनके सामने जाना। ऐसा न हो कि तुम्हारे हाव भाव से उन्हें ऐसा प्रतीत हो जाए कि तुम किस टाइप के लड़के हो ? तुम समझ रहे हो न कि मैं क्या कहना चाहता हूँ ?"

" डोन्ट वरी डैड। " जयदीप ने कहा __" मेरी वजह से नाना जी को कुछ और सोचने का मौका ही नहीं मिलेगा और न ही उन्हें हमारे हालातों का कुछ पता चलेगा। "

" गुड ब्वाय। " सत्यम सिंह मुस्कुराया __" अब जाओ तुम। मैं भी ज़रा उन आदमियों से मिल लूँ , उसके बाद मुझे थोड़ी देर के लिए फैक्ट्री भी जाना है। "

" ओके बाय डैड। " ये कह कर जयदीप हवेली के अंदर की तरफ बढ़ गया।

जयदीप का जाने के बाद सत्यम सिंह भी गेस्ट हाउस की तरफ चल दिया। अभी वो कुछ क़दम ही चला था कि सहसा पीछे से उसे सोनिया की आवाज़ सुनाई दी। उसने पलट कर देखा तो सोनिया हवेली के मुख्य दरवाजे पर खड़ी थी। सत्यम सिंह के पलटते ही सोनिया ने उसे बताया कि लैण्डलाइन फोन पर किसी का काल आया हुआ है और वो उससे बात करना चाहता है। सोनिया की बात सुन कर सत्यम सिंह वापस हवेली के अंदर की तरफ चल दिया। उसे याद आया कि उसके मोबाइल पर तो सिम कार्ड है ही नहीं।

" हैलो। " अपने कमरे में रखे लैण्डलाइन फोन के रिसीवर को कान से लगाते ही सत्यम सिंह ने अपनी आवाज़ को प्रभावशाली बनाते हुए कहा था।

" ठाकुर। " उधर से किसी की स्पष्ट आवाज़ उभरी _" हम इस प्रदेश के मंत्री रजतकुमार

रस्तोगी बोल रहे हैं। "

"म .. मंत्री ???" सत्यम सिंह उधर ईआ वाक्य सुन कर बुरी तरह चौंका था , फिर लरजते हुए स्वर में बोला ___" क्या सच में आप मंत्री जी ही बोल रहे हैं ?"

" हॉ ठाकुर। " उधर से रजतकुमार रस्तोगी ने खास अंदाज़ में कहा __" क्या तुम्हें हमारे मंत्री होने पर शक़ है ?"

"न ..न .. नहीं नहीं मंत्री जी। " सत्यम सिंह बुरी तरह सकपकाया __" म मैं तो बस इस लिए ऐसा कह गया क्योंकि मुझे उम्मीद ही नहीं थी कि प्रदेश की इतनी बड़ी शख्सियत का फोन मेरे पास आ सकता है। मैं तो ये सोच सोच कर हैरान हूँ कि भला मुझसे मंत्री जी का क्या काम हो सकता है जिसके तहत आपने मुझे फोन किया है। "

" कुछ तो खास वजह होगी ही ठाकुर। " उधर से रजतकुमार रस्तोगी ने कहा __" वरना इस दुनियॉ में बेमतलब कोई भी किसी को याद नहीं करता। "

" हॉ ये बात तो बिलकुल सच है मंत्री जी। " सत्यम सिंह के दिमाग़ के घोड़े बड़ी तेज़ी से ये पता लगाने के लिए दौड़ रहे थे कि मंत्री ने उसे किस वजह से फोन किया हो सकता है ? किन्तु प्रत्यक्ष में बोला __" आज के समय में हर इंसान मतलबी बन चुका है। ख़ैर आप बताइये मेरे लिए क्या आदेश है आपका ?"

" दोस्तों को आदेश नहीं देते ठाकुर। " उधर से रस्तोगी ने कहा __" बल्कि साफ शब्दों में कह दिया जाता है जो कहना होता है। ख़ैर हम ये कह रहे है कि हम तुमसे मिलना चाहते हैं। मिलने के बाद ही तसल्ली से हमारे बीच बात चीत होगी और ये भी कि वो खास वजह क्या है जिसके तहत हमने तुम्हें फोन किया है ?"

" जैसा आप कहें मंत्री जी। " सत्यम सिंह मंत्री के मुख से दोस्तों शब्द सुन कर सोचने पर मजबूर हो गया था। हलॉकि मंत्री का उसे फोन करना मौजूदा हालात के हिसाब से उसके लिए कहीं न कहीं राहत और खुशी की बात थी। उसे भी पता था कि मंत्री रजतकुमार रस्तोगी क्या चीज़ है। फिर बोला __" बताइये मुझे कब और कहॉ मिलने आना होगा आपसे ?"

" वैसे समय तो अभी भी है ठाकुर। " उधर से मंत्री ने कहा __" क्योंकि अभी शाम भी नहीं हुई है। इस लिए चाहो तो अभी हमारे यहॉ आ सकते हो। इस वक्त हम रामगंज में ही अपने आवास पर मौजूद हैं। किन्तु अगर तुम्हारे पास इस वक्त टाइम नहीं है तो कोई बात नहीं कल सुबह आ जाना। हमें कोई परेशानी नहीं है। "

" ये कैसी बात कर रहे हैं मंत्री जी ?" सत्य म सिंह ने चापलूसी वाले अंदाज़ से कहा __" आप मुझे अपना समझ कर इतनी इज्ज़त से बुलाएॅ और मैं तत्काल न आऊँ ऐसा कैसे हो सकता है भला ? मैं तो अपने सारे ज़रूरी काम छोंड़ कर आपके पास ही दौड़ा चला आऊँगा रस्तोगी साहब। बस कुछ देर तक इंतज़ार कर लीजिए। मैं फौरन ही अपने गॉव सोनपुर से

रामगंज में आपके आवास पर आने के लिए निकल रहा हूँ। "

" ओके हम इन्तज़ार कर रहे हैं ठाकुर। " उधर से मंत्री ने कहा __" तुम हमारे दोस्त की तरह ही हो इस लिए अपने दोस्त का वैलकम भी हम शानदार तरीके से ही करेंगे। "

" ये तो मेरी खुशनसीबी है मंत्री जी। " सत्यम सिंह एकदम से खुश होते हुए बोला __" जो आप मुझे अपना दोस्त कह रहे हैं वरना मेरी आपके सामने भला क्या औकात ?"

" ऐसी कोई बात नहीं है ठाकुर। " मंत्री ने कहा __" हर इंसान अपनी जगह पर औकात वाला ही होता है। तुम भी अपनी जगह किसी से कम नहीं हो। हमें सब पता है तुम्हारे बारे में। ख़ैर छोंड़ो ये सब। आओ फिर मिलकर ही बाकी बातें होंगी। "

" जी ठीक है रस्तोगी साहब। " सत्यम सिंह के ऐसा कहते ही उधर से काल कट गई।

रिसीवर को हाथ में पकड़े सत्यम सिंह किसी बुत की मानिंद खड़ रह गया था। उसकी ऑखें ऐसी चमकने लगी थी जैसे उसकी ऑखों के अंदर हज़ारों वाट के बल्ब एकाएक ही रौशन हो उठे थे। चेहरे पर खुशी साफ झलक रही थी। कुछ देर तक सत्यम सिंह इसी तरह रिसीवर हाथ में खड़ा रहा फिर जैसे उसे होश आया। उसने मुस्कुरा कर रिसीवर को वापस केड्रिल पर रखा और फिर कमरे में ही एक तरफ रखी आलमारी की तरफ बढ़ चला।

आलमारी से उसने अपने सबसे अच्छे और सबसे कीमती कपड़े निकाले। अपने जिस्म पर पहले से ही पहने हुए कपड़ों को निकाला उसने और फिर उन कपड़ों को पहनना शुरू किया जिन्हें उसने आलमारी से निकाला था। उसके चेहरे पर इस वक्त एक अलग ही चमक दिख रही थी। ख़ैर कुछ ही देर में वह कपड़ों को पहन कर एक तरफ दीवार से सटे आदमकद आईने के सामने आया और उसमें खुद को देखने लगा। कीमती कोट पैन्ट में इस वक्त वो काफी जॅच रहा था और लग भी रहा था कि वो कोई बहुत बड़ा आदमी है। सब कुछ ठीक ठाक करने के बाद वो मुस्कुराते हुए ही कमरे से बाहर की तरफ चल दिया।

ड्राइंग रूम में बैठे कीर्तिमान सिंह, सोनिया व जयदीप की नज़र जैसे ही सत्यम सिंह पर पड़ी तो कीर्तिमान सिंह को छोंड़ कर सोनिया व जयदीप के चेहरे पर हैरानी के भाव उभरे। जबकि कीर्तिमान सिंह के चेहरे पर ये सोच कर खुशी के भाव उभरे कि उसका दामाद वाकई में एक शख्सियत वाला तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व रखने वाला इंसान है। उसे पहली बार लगा कि उसकी बेटी ने अपने पति के रूप में ग़लत चुनाव नहीं किया था। यहॉ आने के बाद उसने इतनी बड़ी हवेली और अंदर बाहर इतने सारे नौकर चाकर देखे तो उसे समझ आ गया था कि उसका दामाद वास्तव में कोई ऐरा ग़ैरा नहीं था। बल्कि इस गॉव का राजा था वो।

" सोनिया मैं ज़रा मंत्री जी के पास जा रहा हूँ। " सत्यम सिंह ने ये बात कुछ इस अंदाज़ से कही थी कि सोफे पर बैठे कीर्तिमान सिंह पर अपना एक खास असर डाल सके और ऐसा हुआ भी। जबकि सत्यम सिंह बोला __" अभी उन्हीं का फोन आया हुआ था। उन्होने मुझे किसी ज़रूरी काम से याद किया है। अतः हो सकता है कि मुझे वापस आने में देर हो जाए तो

तुम पापा जी का अच्छे से ख़याल रखना। "

" ठीक है आप जाइये। " सोनिया ने अपने पिता की मौजूदगी में सत्यम सिंह से आप कह कर बात की , बोली __" मैं पापा का बहुत अच्छे से ख़याल रखूँगी। "

" इसमें ख़याल रखने की क्या बात है बेटा ?" सहसा कीर्तिमान सिंह ने मुस्कुराते हुए कहा __" ये तो मेरा भी अपना ही घर है। अगर किसी चीज़ की ज़रूरत हुई तो मैं खुद ही ले लूँगा। क्यों बेटी ?"

" जी आपने बिलकुल ठीक कहा पापा। " सोनिया ने खुशी से मुस्कुराते हुऐ कहा।

" फिर तो ठीक है पापा। " सत्यम सिंह भी मुस्कुराया _" मुझे आपकी ये बात बहुत अच्छी लगी। ख़ैर मैं जल्दी वापस आने की कोशिश करू गा और फिर आपसे ढेर सारी बातें होंगी। अच्छा अब चलता हूँ। "

सत्यम सिंह के कहने पर कीर्तिमान सिंह ने हाँ में सिर हिलाया जबकि सत्यम सिंह फौरन ही हवेली से बाहर की तरफ बढ़ चला। उसके मन में इस वक्त मंत्री से मिलने की बड़ी ब्याकुलता पैदा हो गई थी। उसे अभी भी यकीन नहीं हो रहा था कि प्रदेश का मंत्री उसे दोस्त मान कर उससे मिलना चाहता है। मंत्री से संबंध होना उसके लिए कितना फायदेमंद हो सकता था इसका बखूबी अंदाज़ा था उसे। इसी लिए तो वो जल्द से जल्द मंत्री के पास पहुँच जाना चाहता था।

बाहर एक तरफ खड़ी अपनी मर्सडीज कार के पास पहुँच कर उसने कार का दरवाजा खोला और ड्राइंविंग सीट पर बैठ गया। कुछ ही पलों में उसकी कार रामगंज के लिए रवाना हो गई थी।

उधर रामगंज में अपने आवास पर मंत्री रजतकुमार रस्तोगी अपने दो दोस्तों और एक रखैल दोस्त यानी सुनीता के साथ ड्राइंग रूम में रखे सोफे पर बैठा था। इस वक्त ड्राइंग रूम में इन चारों के अलावा और कोई नहीं था। मंत्री के सुरक्षा गार्ड सब बाहर ही तैनात थे।

" वैसे आपको क्या लगता है रस्तोगी साहब। " सहसा अशोक बासु कह उठा __" वो ठाकुर हमारी इस मामले में क्या सहायता कर सकता है ? जबकि उसकी खुद की बेटी ही उसके खिलाफ़ है। "

" इन्हीं सब चीज़ों के बारे में तो जानना है अशोक। " मंत्री ने सोचते हुए कहा __" मुझे लगता है कि इस मामले से जुड़ी हर चीज़ ठाकुर को क्रॉस करती है। हमने ये तो समझ लिया कि हमारे मामले जो हो रहा है वो कौन और क्यों कर रहा है मगर हम ये भी जानना चाहते हैं कि जो हमारा दुश्मन है उसने या उसकी मॉ बहन ने ऐसा क्या किया था जिसकी वजह से ठाकुर ने उन तीनों को हवेली से ही नहीं बल्कि सारी ज़मीन जायदाद से भी बेदखल कर दिया है ? सबसे महत्वपूर्ण बात हमें ये भी जानना है कि ऐसा क्या हुआ है जिसके तहत ठाकुर की अपनी बेटी खुद अपने ही मॉ बाप के खिलाफ़ हो गई है ?"

" बात तो आपकी एकदम सही है रस्तोगी साहब। " अशोक ने कहा __" किन्तु इससे निष्कर्ष क्या निकलेगा ? मेरा मतलब है कि इससे हमारा फायदा क्या होगा ?"

" नफ़ा नुकसान तो अपनी जगह है ही अशोक। " रस्तोगी ने कहा __" किन्तु इस मामले में कुछ बातें ऐसी हैं जिनके बारे में पक्के तौर पर जानना बहुत ज़रूरी है। तुमने कहा था कि ठाकुर की बेटी जो थानेदारनी है और अपने पैरेन्ट्स के खिलाफ़ है वो हमारे दुश्मन और ठाकुर के भतीजे की मदद इस लिए नहीं कर सकती क्योंकि वो भी उससे अपने मॉ बाप की तरह नफ़रत करती है। ये बातें एक दूसरे से मैच नहीं खा रही हैं अथवा ये भी कह सकते हैं कि जॅच नहीं रही हैं। "

" जी मैं कुछ समझा नहीं रस्तोगी साहब। " अशोक बासु के माथे पर उलझनपूर्ण भाव आए __" कौन सी बातें नहीं जॅच रही आपको ?"

" यही कि एक तरफ तो तुम ये भी कह रहे हो कि ठाकुर की थानेदारनी बेटी उस विक्रम नाम के अपने भाई से नफ़रत करती है। " मंत्री ने कहा __" इस लिए वो उसकी मदद नहीं कर सकती। जबकि दूसरी तरफ तुम ये भी कह रहे हो कि ठाकुर की वही थानेदारनी बेटी खुद अपने ही मॉ बाप के खिलाफ़ है। सोचने वाली बात हैं अशोक कि ऐसा कैसे हो सकता है ? आम तौर पर बच्चे वही करते हैं जो उनके मॉ बाप उन्हें सीख देते हैं अथवा करने को कहते हैं। यहॉ सोचने वाली बात ये है कि अगर वो थानेदारनी अपने मॉ बाप की सीख अथवा कहे के अनुसार अपने चचेरे भाई से नफ़रत करती है तो फिर अपने ही मॉ बाप के खिलाफ़ वो किस वजह से हो गई है ?"

" आपकी इन सब बातों में ज़बरदस्त प्वाइंट है रस्तोगी साहब। " सहसा अवधेश मुखर्जी कह उठा __" सचमुच ये सोचने वाली बात है कि आख़िर ऐसा क्या हुआ है जिसके चलते ठाकुर की बेटी उसके खिलाफ़ है ? संभव है कि उसे कोई ऐसी बात अपने मॉ या पिता की पता चल गई हो जिसके चलते उसने अपने मॉ बाप से किनारा कर लिया हो। या फिर ऐसा हो सकता है कि सोच या विचारों के चलते थानेदारनी अपने पैरेन्टस् से दूर हो। "

" ये सब तो महज संभावनाएॅ हैं अवधेश। " रजतकुमार रस्तोगी ने कहा __" जो सही भी और ग़लत भी हो सकती हैं मगर हमें वो बात पता करना है जो सिर्फ और सिर्फ सच हो। ख़ैर फिक्र की कोई बात नहीं है , हमने ठाकुर को बुलाया है। वो आता ही होगा हमारे पास। उसी से पूछेंगे कि सच्चाई क्या है ?"

" लेकिन रस्तोगी साहब। " अशोक बासु ने एक बार पुनः हस्ताक्षेप किया __" सवाल तो एक बार फिर खड़ा हो जाता है कि इस सबसे हमारा फायदा क्या होगा ? हम ये तो जानते ही हैं कि हमारा दुश्मन ठाकुर का वो भतीजा है जिसका नाम विक्रम है और वो मुंबई में रहता है। फिर अचानक आप ठाकुर और उसकी बेटी को बीच में कैसे ले आए ? इस मामले में ये कहॉ से आ गए ? ठाकुर की बेटी अपने मॉ बाप के खिलाफ़ है ये उनका आपसी मैटर है। इस लिए हमें इससे क्या लेना देना भला ? हमें तो अपने टार्गेट पर फोकस रखना है ना ?"

" तुम बात को या तो अनसुना कर गए हो अशोक या फिर बात को समझने की कोशिश ही नहीं कर रहे हो। " मंत्री ने स्पष्ट भाव से कहा __" जबकि तुम्हें सबसे पहले ये सोचना चाहिए कि हम बेवजह फालतू की बकवास करने का शौक नहीं रखते हैं। ख़ैर , बात दरअसल ये कि अगर ठाकुर की बेटी सचमुच में अपने पैरेंट्स के खिलाफ़ है तो वो अपने उस भाई की मदद क्यों नहीं कर सकती जो अपने मॉ बाप की तरह ही उस लड़के से नफ़रत करती थी ? संभव है कि उसे उस वजह का पता चल गया हो जिस वजह के चलते उसके बाप ने विक्रम और विक्रम की मॉ बहन को हर चीज़ से बेदखल किया था। उसे पता चल गया हो कि जिस वजह से विक्रम को बेदखल किया था उसके बाप ने वो वजह वास्तव में बेवजह ही थी। यानी विक्रम व विक्रम की मॉ बहन अपनी जगह सही रहे हों।

उस सूरत में संभव है कि साक्षी ने उस संबंध में अपने पैरेंट्स से बात की हो और उनसे कहा हो कि विक्रम और उसकी मॉ बहन को बेदखल करके उसने अच्छा नहीं किया। वो अगर बेक़सूर हैं तो उन्हें उनका हक़ मिलना ही चाहिए। इस संबंध में अपनी बेटी की ये बात शायद ठाकुर को पसंद न आई हो और उसने विक्रम का हक़ देने से साफ इंकार कर दिया हो। इस वजह से थानेदारनी अपने मॉ बाप से अलग हो गई और संभव है कि इसी के चलते वो अपने उस चचेरे भाई के प्रति अपनी नफ़रत को मिटा कर उसकी मदद भी करने लगी हो। हलॉकि ये सब भी महज संभावनाएॅ ही हैं किन्तु हो सकता है कि यही सच हो।"

अशोक बासु ही नहीं बल्कि वहॉ बैठे अवधेश व सुनीता भी रस्तोगी की इन संभावना भरी बातें सुन कर चकित रह गए थे। एक बेटी का अपने पैरेंट्स के खिलाफ़ होने की क्या खूब वजह सोच कर बयान किया था उसने।

" अगर आपकी संभावनाएॅ सच हैं। " फिर अवधेश ने कहा __" तो यकीनन वो थानेदारनी विक्रम की मदद कर सकती है। मैं सब समझ गया रस्तोगी साहब , आपने यही सब सोच कर ठाकुर को यहॉ बुलाया है। "

" बिलकुल। " रस्तोगी मुस्कुराया __" किन्तु इस वजह के अलावा भी एक महत्वपूर्ण वजह है। "

" वो क्या रस्तोगी साहब ?" तीनो एक बार फिर चौंके।

" अगर ठाकुर ने सचमुच ही विक्रम और उसकी मॉ बहन को बेवजह ही हर चीज़ से बेदखल किया है। " रस्तोगी ने कहा __" तो ये भी सच ही होगा कि विक्रम अपने ताऊ को दुश्मन समझता होगा और ये भी चाहता होगा कि उसका हक़ किसी भी सूरत में उसे मिले। ठाकुर ने अगर धन दौलत अथवा सारी प्रापर्टी को हथियाने की गरज से उसे बेदखल किया होगा तो फिर ये पक्की बात है कि ठाकुर किसी भी कीमत में वो प्रापर्टी अथवा उस प्रापर्टी में से विक्रम का हक़ नहीं देगा। कहने का मतलब ये कि विक्रम को अपना हक़ आसानी से नहीं मिलने वाला। इस लिए वो ऐसा कुछ ज़रूर करेगा जिसके तहत उसे अपने ताऊ से अपना हक़ वापस मिल सके। "

तीनो मुह फाड़े देखते रह गए रस्तोगी को। किसी के मुख से कोई बोल न फूट सका था। जबकि रस्तोगी उन सबके चेहरों पर मॅडराते भावों को देखते हुए पुनः कहना शुरू किया___"हलॉकि ये भी महज संभावनाएॅ ही हैं दोस्तो जो ग़लत भी हो सकती हैं। मगर हमें कहीं न कहीं ऐसा आभास भी हो रहा है कि हमारी इन संभावनाओं पर कुछ न कुछ तो सच्चाई ज़रूर है। हमने ठाकुर, ठाकुर की बेटी, तथा विक्रम, इन तीनों पर ग़ौर किया है और इनके बीच पैदा हुए हालातों पर भी ग़ौर किया है। इसके बाद ही हमारे दिमाग़ में इन संभावनाओं का आगमन हुआ है।"

" मुझे तो ऐसा लगता है रस्तोगी साहब। " सहसा अवधेश कह उठा __" कि आपने उन तीनों का ऑपरेशन कर दिया है। आपकी संभावनाओं में कहीं पर भी ऐसा नहीं लग रहा है कि उनमें कहीं कोई लोचा है। "

" ठाकुर की बेटी का अपने मॉ बाप से भले ही चाहे जो पंगा हो अवधेश। " रस्तोगी ने गहरी सास ली __" जिसके तहत वो अपने मॉ बाप के खिलाफ़ है। मगर ये बात तो सच ही समझो कि ठाकुर और विक्रम का छत्तीस का ऑकड़ा है। ज़र ज़ोरू ज़मीन ये कभी किसी की नहीं हुई। इसने जाने जाने कितने पाक़ रिश्तों को नेस्तनाबूत किया होगा अब तक इसका हममें से कोई अंदाज़ा भी नहीं लगा सकता। विक्रम व ठाकुर के बीच हक़ की लड़ाई है ये पक्की बात है और जब तक इस लड़ाई का अंत नहीं होगा दोनो में से कोई भी चैन से नहीं बैठेगा। ख़ैर , तुमने सुना होगा कि हमने फोन पर ठाकुर को दोस्त कहा था। वो इसी लिए कहा था कि मौजूदा हालात में हम दोनो का एक ही टार्गेट है ----- विक्रम । इस लिए हमने उसे दोस्त कहा। हम उससे विक्रम के संबंध में सारी जानकारी हासिल करेंगे और फिर उस हिसाब से आगे की रणनीति बनाएॅगे। "

अभी रस्तोगी ने ये कहा ही था कि सहसा तभी ड्राइंग रूम में एक आदमी दाखिल हुआ। उसने बड़े अदब से रस्तोगी को बताया कि बाहर कोई आदमी आपसे मिलने आया है। वो आदमी अपना नाम ठाकुर सत्यम सिंह बता रहा है। उस आदमी की बात सुन कर रस्तोगी मुस्कुराया और अपने उस आदमी से कहा कि उसे इज्ज़त से अंदर ले आओ। रस्तोगी की बात सुन कर वो आदमी पहले अदब से सिर झुकाया फिर वापस बाहर की तरफ चला गया।

कुछ ही देर में उसी आदमी के साथ सत्यम सिंह ड्राइंग रूम में दाखिल हुआ। उसे देखते ही रस्तोगी अपने सोफे से उठा हलाँकि वो प्रदेश का मंत्री था और सत्यम सिंह के लिए उठना उसकी शान के खिलाफ़ था किन्तु फिर भी वो उठा ही। उसकी देखा देखी बाकी सब भी उठ गए।

" मोस्ट वेलकम ठाकुर। " रस्तोगी ने गर्मजोशी से तथा मुस्कुराते हुए सत्यम सिंह से हाथ मिलाया और फिर एक अन्य खाली सोफे की तरफ बैठने का इशारा किया और खुद भी अपनी जगह पर आ कर बैठ गया।

" बहुत बहुत शुक्रिया रस्तोगी साहब। " सत्यम सिंह ने अपने अंदर ही हड़बड़ाहट पर काबू पाते हुए किन्तु बड़ी शालीनता से कहा __" आज तो मेरे भाग्य ही खुल गए है जो आपके दर्शन हो गए। "

" ऐसा कुछ भी नहीं है ठाकुर। " रस्तोगी ने कहा __" इस वक्त हम किसी मंत्री की हैसियत से नहीं बल्कि एक आम इंसान तथा एक दोस्त की हैसियत से तुमसे मिल रहे हैं। और वैसे भी ये तो हमें भी पता चला है कि हमसे पहले जो मंत्री थे उनसे तुम्हारे बहुत गहरे ताल्लुकात थे। सारा पुलिस महकमा ही तुम्हारी मुट्ठी में होता था। किन्तु हमने सुना कि रात भर में सारा कुछ बदल गया था। इस सबका बड़ा हो हल्ला भी हुआ था। मगर किसी की समझ में न आया कि ऐसा क्यों हुआ था। आज भी ये रहस्य ही बना हुआ है। "

रजतकुमार रस्तोगी की इस बात से सत्यम सिंह तो चौंका ही मगर उसके साथ साथ अशोक, अवधेश व सुनीता आदि भी चौंके थे। किन्तु उन लोगों ने बीच में कहा कुछ नहीं।

" हॉ ये तो आपने सच कहा रस्तोगी साहब। " सत्यम सिंह ने सहसा गहरी सास ली __" एक वक्त था जब हर चीज़ मेरे लिए आसान थी मगर एक ऑधी आई और सब कुछ उड़ा कर ले गई। अब उन जगहों पर गहन ख़ामोशी के सिवा कुछ भी शेष नहीं रहा। "

" इसका मतलब तो ये हुआ कि वो सारा कुछ तुम्हारी वजह से बदल गया था ?" इस बार चौंकने की बारी मानो रस्तोगी की थी। हैरत से बोला __" मगर आख़िर ऐसा हुआ क्या था ठाकुर ? यकीनन कोई बड़ी वजह थी क्योंकि इतना बड़ा सिस्टम यहॉ तक कि प्रदेश के मंत्री का तबादला हो जाना कोई मामूली बात नहीं है। उस सबसे तो हर कोई हैरान रह गया था। आज जबकि तुम्हारे मुख से ही पता चला कि वो सब तुम्हारी वजह से हुआ था तो इस सबको जानने की उत्सुकता और भी बढ़ गई है। "

सत्यम सिंह समझ सकता था कि उसे मंत्री को इस सबके बारे में बताना ही पड़ेगा। वो भी चाहता था कि किसी वजह से ही सही मगर उसे मंत्री का साथ मिल जाए। अतः उसने संक्षेप में अपनी फैक्ट्री में लगी आग वाले केस के संबंध में बता दिया। ये भी कि बाद में उसे ये पता चल ही गया कि फैक्ट्री में लगी आग के पीछे उसके अपने ही भतीजे विक्रम का हाथ था। मंत्री ये जान कर हैरान रह गया कि विक्रम ने इतना बड़ा काण्ड किया हुआ है अपने ताऊ के साथ। सत्यम सिंह ने मंत्री को ये भी बताया कि मंत्री का तबादला और सारे पुलिस महकमे को बदल देने में भी विक्रम का ही हाथ था। ये बात सुन कर तो रस्तोगी की नितंब में कीड़े ही कुलबुलाने लगे। वो सोचने पर मजबूर हो गया कि विक्रम आख़िर चीज़ क्या है जो मंत्री और सारे पुलिस डिपार्टमेन्ट तक को इधर से उधर कर देने की क्षमता रखता है? रस्तोगी जैसा ही हाल वहाँ बैठे बाकी सबका भी था।

" तुम्हारी कहानी तो वाकई में हैरतअंगेज है यार। " रस्तोगी ने चकित भाव से कहा __" मगर ये समझ नहीं आया कि तुम्हारे भतीजे विक्रम ने ऐसा किया क्यों ?"

मंत्री ने जानबूझ कर ये सवाल किया था। उसे पता तो था किन्तु वो सत्यम सिंह के मुख से सच्चाई सुनना चाहता था।

" बड़ी लम्बी कहानी है रस्तोगी साहब। " सत्य म सिंह ने गहरी सास छोंड़ते हुए कहा __" कभी कभी हमारे साथ वो सब भी हो जाता है जिसकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की होती है। दरअसल बात ये थी मैने अपने मॅझले भाई की बीवी और उसके दोनो बच्चों को घर और ज़मीन जायदाद से बेदखल कर दिया था। इसकी वजह ये थी कि मेरे भाई की बीवी रेणुका एक चरित्रहीन औरत थी। जवानी में ही उसके पति की मौत हो गई थी जिसकी वजह से उससे अपने अंदर की गर्मी बर्दाश्त नहीं हुई। शुरू शुरू में तो सब ठीक था मगर फिर उसके चाल चलन दिखने शुरू हुए। मैं जो कि उसका जेठ लगता था और गॉवों में रिवाज है कि छोटे भाई की बीवी अपने जेठ के सामने सिर खुला नहीं रखती और ना ही उसे छूती है। मगर रेणुका अपनी वासना और हवस की वजह से मुझ पर ही डोरे डालने लगी। मैं उसकी उस हरकत से हैरान था। हमारे खानदान कभी ऐसा नहीं हुआ था। हर कोई छोटे बड़े की मान मर्यादा का ख़याल रखता था। उधर दिनप्रति रेणुका की हरकतों से मेरा दिमाग़ खराब होने लगा। मैने उसकी हरकतों के बारे में सबसे पहले अपनी पत्नी को बताया और उससे कहा भी कि वो रेणुका को समझाए बुझाए कि ये सब कितना ग़तना ग़लत और पाप कर रही है। मेरी पत्नी ने रेणुका को बहुत समझाया। मगर रेणुका तो जैसे वासना और हवश में अंधी हो चुकी थी। जिसका नतीजा ये निकला कि एक दिन वो मुझे मेरे कमरे में अकेला देख कर आ धमकी और ज़बरदस्ती मुझसे सहवास संबंध बनाने को कहने लगी। मैं उसकी उस हरकत और बातों से बहुत गुस्सा हुआ। जबकि वो मुझसे लपटी पड़ी थी। तभी इस बीच मेरी पत्नी आ गई। उसने रेणुका को मुझसे छुड़ाया और उसे घसीटते हुए कमरे से बाहर ले गई। मेरी पत्नी ने उस सबके कैमरे द्वारा फोटोग्राफ्स भी निकाले थे। ऐसा इस लिए क्योंकि अगर हम रेणुका की इन हरकतों के बारे में घर में किसी से बताते तो कोई भी हमारी बात पर यकीन ही न करता। क्योंकि सब रेणुका को बहुत ही ज्यादा संस्कारी और आदर्श औरत मानते थे। ख़ैर उस दिन हमारे पास सबूत भी था इस लिए सबको मानना ही पड़ा और फिर सबकी सहमति से ही मैने उसे और उसीए बच्चों को हवेली से बाहर निकाल दिया। हवेली से बाहर मैने उसे

खेतों पर बने मकान में रहने की रियायत ज़रूर दे दी थी। ऐसा इस लिए क्योंकि वो आख़िर थी तो हमारे खानदान की बहू ही। हमने सोचा था कि हवेली से दूर खे तों पर बने मकान में रहेगी तो सब कुछ ठीक ही रहेगा। मगर हमारा ऐसा सोचना भी ग़लत हो गया। क्योंकि वो खेतों पर काम कर रहे मजदूरों पर ही वासना और हवस के चलते डोरे डालने लगी थी। एक दिन हमारे एक मजदूर ने इस बारे में मुझसे डरते हुए बताया। उसकी बात सुनकर मुझे रेणुका पर हद से ज्यादा गुस्सा आया। उसके बाद मैने फैसला कर लिया कि अब उसे और उसके बच्चों को मैं उस गॉव में नहीं रहने दूँगा। क्योंकि इससे हमारी और हमारे खानदान की बहुत बदनामी होती। अतः मैने उसे हर चीज़ से बेदखल कर दिया। रेणुका का लड़का थोड़ा बहुत समझदार था मगर वो भी अपनी मॉ की बातों को ही सच मानता था। उसे लगता था कि हमने उसकी मॉ को बेवजह ही हवेली से निकाला था। वो अपना और अपनी मॉ बहन का घर खर्चा चलाने के लिए मुंबई में कहीं नौकरी करने चला गया था। जबकि उसके पीछे यहॉ उसकी मॉ ये सब गुल खिला रही थी। ख़ैर , एक दिन बाद पता चला कि विक्रम अपनी मॉ व बहन को अपने साथ मुंबई ले गया। उसके बाद अभी कुछ समय पहले से ही ये सब शुरू हुआ। यानी विक्रम ये सोच कर मुझसे बदला ले रहा है कि मैने उसके और उसके परिवार के साथ ग़लत किया है। "

" ओह तो ये हैं सारी बातें। " सब कुछ सुनने के बाद रस्तोगी ने गहरी सास लेते हुए कहा __" लेकिन इतना कुछ हुआ और तुमको अंदाज़ा भी न हुआ कि ये सब तुम्हारे भतीजे ने ही किया है ?"

" अंदाज़ा तो तब होता रस्तोगी साहब। " सत्य म सिंह ने कहा __" जब मुझे उससे इस सबकी उम्मीद होती। मैं तो यही समझता था कि वो लड़का निहायत ही सीधा सादा और भोला है। भला मुझे क्या पता था कि वो किसी डायनामाइट से कम नहीं है। "

" ख़ैर। " रस्तोगी ने पहलू बदला __" हमने सुना है कि तुम्हारी अपनी बेटी जो कि पुलिस इंस्पेक्टर है वो आजकल तुम्हारे खिलाफ़ हो चुकी है। ये क्या चक्कर है ?"

" चक्कर वक्कर कुछ नहीं है रस्तोगी साहब। " सत्यम सिंह मन ही मन बुरी तरह चौंका था किन्तु चेहरे पर चौंकने के भावों को आने न दिया था , बोला __" दरअसल बात ये है कि हमें उसका पुलिस की नौकरी करना ज़रा भी पसंद नहीं था। जबकि पुलिस की नौकरी करना उसका शौक था बचपन से ही। मैने और मेरी पत्नी सोनिया ने उससे कहा कि ये पुलिस की नौकरी छोंड़ दो , भला उसे नौकरी करने ज़रूरत ही क्या है ? उसे जिस चीज़ की भी ज़रूरत होती है हम उसके बोलने से पहले ही वो चीज़ लाकर उसके क़दमों में डाल देते हैं। मगर वो हमारी बात सुनती ही नहीं। बचपन से ही ज़िद्दी थी वो। एक दिन उसकी मॉ ने कदाचित कुछ ज्यादा ही कड़े शब्दों में कह दिया था। जिसकी वजह से वो गुस्सा हो गई और कहने लगी कि उसे हमारी किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। वो अपनी ज़रूरतें खुद पूरी कर लेगी। बस उस दिन के बाद से वो ना तो मुझसे बोलती है और ना ही अपनी मॉ से। यहॉ तक कि घर भी नहीं आती। "

" बड़ी अजीब बात है। " रजतकुमार रस्तोगी ने कहा _" भला तुम लोगों को उसका नौकरी

करने से ऐतराज क्यों है ? आज की जनरेशन ज़रा एडवॉस टेक्नालॉजी में सम्मिलित है। वो खुद पर और अपने टैलेन्ट के बल पर ही जीवन जीना चाहते हैं। अतः तुम दोनो का उसका नौकरी करने से ऐतराज करना सरासर ग़लत था। ख़ैर , जैसा कि तुमने बताया कि उस दिन से वो घर भी नहीं आती है तो सवाल ये है कि वो रहती कहॉ है फिर ? क्या तुमने पता करने की कोशिश नहीं की कि तुम्हारी लड़की रहती कहॉ है ? दिन का तो चलो ठीक है कि वो पुलिस में अपनी ड्यूटी के चलते कहीं न कहीं व्यस्त ही रहती होगी मगर रात को ? रात को कहॉ रहती होगी वो ?"

" पुलिस वाली है रस्तोगी साहब। " सत्यम सिंह ने कहा _" खुद कमाती है। इस लिए कहीं न कहीं अपने रहने के लिए कोई किराये से कमरा ले लिया होगा। "

" ये तो तुम संभावना व्यक्त कर रहे हो ठाकुर। " रस्तोगी ने कहा __" जबकि तुम्हें खुद पता लगाना चाहिए था कि अगर वो लौटकर हवेली नहीं आती है तो रहती कहॉ है ? कैसे बाप हो तुम ठाकुर ?"

सत्यम सिंह कुछ बोल न सका। उसे एहसास था कि रस्तोगी सच कह रहा था कि उसे खुद अपनी बेटी के बारे में पता करना चाहिए था। भले ही वो पुलिस वाली थी मगर ये भी सच था कि वो एक लड़की भी थी। वो भले ही अपनी सुरक्षा बखूबी कर ले मगर वो तो उसका बाप था न? उसे तो अपनी बेटी की चिन्ता होनी चाहिए थी। सत्यम सिंह सोचो में गुम तो था मगर उसके ज़हन में ये भी था कि साक्षी के साथ उसकी छोटी बहन गीता भी है। शायद यही वजह थी कि उसने अब तक पता करने की कोशिश नहीं की थी कि वो दोनों कहॉ रहती हैं? अकेले साक्षी बस होती तो उसे चिंता यकीनन होती मगर उसके साथ में गीता जैसी पढ़ी लिखी व समझदार उसकी बहन भी थी। इस लिए वो बेफिक्र था अपनी बेटी की सुरक्षा के लिए।

" क्या सोचने लगे ठाकुर ?" उसे सोचों में गुम देख कर रस्तोगी ने कहा _" ख़ैर छोंड़ो यार , ये तुम्हारे घर की बात है तुम्हें जो उचित लगे वो करो। अच्छा एक बात बताओ। "

" ज जी ????" सत्यम सिंह चौंका __"प .. पूछिए। "

" क्या ऐसा हो सकता है। " रस्तोगी ने बड़े ग़ौर से सत्यम सिंह को देखते हुए कहा __" तुम्हारी बेटी और तुम्हारा भतीजा विक्रम एक हो गए हों ? क्या ऐसा हो सकता है कि विक्रम ने तुम्हारी बेटी को अपने साथ मिला लिया हो ??"

"प ..प. पता नहीं। " सत्यम सिंह के ऊपर जैसे एकाएक सारा आसमान भरभरा कर गिर पड़ा था। बड़ी मुश्किल से खुद को संभालते हुए कहा उसने __" आप ऐसा क्यों कह रहे हैं रस्तोगी साहब ? जबकि ऐसा हर्गिज़ नहीं हो सकता। इसकी वजह ये है कि मेरे तीनो ही बच्चे उसकी मॉ की हरकतों की वजह से उससे और उसकी मॉ बहन से कभी कोई बात करने की तो बात दूर बल्कि उन्हें देखना तक पसंद नहीं करते। "

" ऐसा तुम सोचते हो ठाकुर। " रजतकुमार रस्तोगी ने दार्शनिकों वाले अंदाज़ में कहा __"

जबकि अक्सर ऐसा हो जाया करता है जिसकी हमें पूरी उम्मीद होती है कि ऐसा तो कभी हो ही नहीं सकता। "

" क्या मतलब ???" सत्यम सिंह चकरा सा गया।

" मतलब साफ है ठाकुर। " रस्तोगी ने कहा __" तुम ये सोच कर ये नहीं मान रहे हो कि तुम्हारी बेटी विक्रम को देखना तक पसंद नहीं करती इस लिए वो उससे मिल नहीं सकती जबकि ऐसा हो भी सकता है कि वो उससे मिल ही गई हो। विक्रम की कारगुजारियों से इतना तो पता चल ही गया है कि वो कितना शातिर दिमाग़ रखता है और कितनी ऊँची पहुँच भी रखता है। अत: अगर वो अपने शातिर दिमाग़ के चलते तुम्हारी बेटी को अपनी तरफ कर भी ले तो हैरत की बात नहीं होगी। संभव है कि उसने साक्षी को ऐसा कोई पाठ पढ़ा दिया हो जिसके चलते तुम्हारी बेटी का ब्रेन वाश हो गया हो और अब वो उसे सही मान रही हो और तुम्हें यानी कि अपने बाप को ग़लत। "

सत्यम सिंह मंत्री की सूझ बूझ तथा उसकी दूरदर्शिता की मन ही मन दाद दिये बिना न रह सका। सच्चाई भले ही कुछ और थी मगर जितना उसने उहे बताया था उस हिसाब से कड़ियों को जोड़ कर सच्चाई के रूप में अपनी संभावनाएॅ इस तरह बयां करना आसान बात न थी। सहसा उसे ख़याल आया कि जबसे वो यहाॅ आया है तब से मंत्री सिर्फ उसी के संबंध में बातें पूछ रहा है जबकि उसे अब तक यही समझ में नहीं आया था कि मंत्री ने आख़िर उसे बुलाया किस लिए था??

" भगवान जाने रस्तोगी साहब। " फिर उसने पहलू बदलने की गरज से कहा __" कि सच्चाई है इस संबंध में। ख़ैर छोंड़िये ये सब और ये बताइये कि इस नाचीज़ को किस लिए बुलाया था आपने ?"

सत्यम सिंह द्वारा अचानक ही इस तरह पहलू बदल लेना रस्तोगी को मन ही मन चौंकाया मगर उसने उसे ज़ाहिर न किया। बल्कि उसके पूछने पर वह मुस्कुराया और सेन्टर टेबल पर सजे फल फूल व मॅहगी शराब की तरफ इशारा किया।

" ये तो कमाल हो गया ठाकुर। " फिर रस्तोगी ने मुस्कुराते हुए ही कहा __" तुम आज यहाॅ पहली बार आए और हमने बातों के चक्कर में ये भी ख़याल नहीं रखा कि घर आए मेहमान का आतिथ्य भी किया जाता है। "

" मैं कोई मेहमान नहीं हूॅ रस्तोगी साहब। " सत्यम सिंह ने भी मुस्कुराते हुए कहा __" आपने मुझे दोस्त कह कर मेरा मान बढ़ा दिया है यही बहुत है मेरे लिए। इस नाते अब तो ये भी अपना ही घर हुआ और अपने ही घर में भला कोई मेहमान कैसा हो सकता है ?"

" हाॅ तो सही कहा तुमने। " रस्तोगी हॅसा और फिर बगल से ही बैठे अशोक , अवधेश व सुनीता की तरफ इशारा करते हुए कहा __" इनसे मिलो ठाकुर , ये सब भी हमारे गहरे दोस्त हैं। बल्कि यूॅ समझो कि ये तीनो हमारे दोस्तों की लिस्ट में सबसे ऊपर हैं और आज से

तुम भी शामिल हो गए हो। "

" ये तो मेरा सौभाग्य है रस्तोगी साहब। " सत्यम सिंह ने खुश होते हुए कहा __" जो आपने मुझे अपने दोस्त का दर्ज़ा दिया है। मैं पूरी कोशिश करू गा कि इस दोस्ती पर खरा उतर सकूँ। "

" चलो फिर इसी बात पर एक एक जाम हो जाए। " रस्तोगी ने मुस्कुराते हुए कहा __" और हमारी दोस्ती को सेलीब्रेट किया जाए। "

" जी बिलकुल। " सत्यम सिंह हॅसा और उन तीनों की तरफ देख कर उन तीनो से हैलो किया तथा हाथ भी मिलाया। रस्तोगी के कहने पर सुनीता ने सबके लिए जाम बनाया और साक़ी बन कर सबको पिलाया भी। इस बीच रस्तोगी ने सत्यम सिंह को बताया कि सुनीता उसके साथ साथ बाकी उन दोनो को भी हर तरह से खुश रखती है। सत्यम सिंह ये जान कर हैरान भी हुआ था। मगर फिर ये सोच कर मुस्कुराया भी कि रस्तोगी भी उसी की तरह ही औरतबाज है।

लगभग आधा घंटे से ऊपर तक जामों का दौर चलता रहा। सब के सब हल्के नशे के सुरूर में आ चुके थे। उसके बाद बातों का सिलसिला फिर से शुरू हुआ। सत्यम सिंह सबसे काफी खुल चुका था। बाकी सब भी सत्यम सिंह से खुल चुके थे। सुनीता को सत्यम सिंह की पर्शनाल्टी पहली नज़र में ही भा गई थी और वो उसके नीचे लेटने के लिए बेक़रार हो उठी थी। मगर अभी उसको भी पता था कि उसकी ये बेक़रारी शान्त नहीं होने वाली है। यानी कुछ समय तक इन्तज़ार करना पड़ेगा उसे।

" मज़ा आ गया रस्तोगी साहब। सत्यम सिंह ने नशे के हल्के सुरूर में मुस्कुराते हुए कहा __" आप सच में बहुत अच्छे हैं। एक पल के लिए भी मुझे ऐसा नहीं लगा जैसे इसके पहले आप मेरे लिए ग़ैर थे। सच कहता हूँ आपसे मिल कर और आपका दोस्त बन कर बहुत अच्छा लग रहा है। बहुत दिनों बाद ऐसे खुश होने का मौका मिला है मुझे। "

" अभी तो इससे भी ज्यादा मज़ा आएगा ठाकुर। " रस्तोगी ने भी नशे के हल्के सुरूर में कहा __" हमारी दोस्ती में और हमारे साथ में ऐसा ही होता है। हमें वही इंसान अच्छा लगता है जो हमसे वफ़ा करे। वफ़ादार व्यक्ति के लिए हम कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। "

" मैं ज़रूर आपका वफ़ादार रहूँगा रस्तोगी साहब। " सत्यम सिंह ने कहा __" आप जब भी मुझे याद करेंगे मैं आपके सामने हर काम छोंड़ कर हाज़िर हो जाऊँगा। मुझे भी वफ़ादार इंसान ही अच्छे लगते हैं जो दोस्त के लिए कुछ भी कर जाए मगर ...। "

" मगर क्या ठाकुर। " रस्तोगी ने सिर उठा कर सत्यम सिंह की तरफ देखा __" तुम्हारे स्वागत में हमसे कोई कमी हो गई है क्या ? अगर ऐसा है तो बेझिझक बोल दो यार। जो बोलोगे वो मिलेगा तुम्हें। ये रजतकुमार रस्तोगी का वचन है। "

" न नहीं नहीं रस्तोगी साहब। " सत्यम सिंह ने हड़बड़ाते हुए कहा __" आपने किसी बात की कमी नहीं की है। मेरे कहने का मतलब ये था कि आपने मुझे बताया नहीं कि आपने मुझे किस वजह से यहाँ बुलाया था ? देखिए अब तो हम दोनो दोस्त बन गए हैं न। इस लिए अगर कोई बात है आपके मन में तो बेझिझक कहिए। मैं वादा करता हूँ कि अगर मेरे लिए आपका कोई आदेश है तो मैं जान देकर भी उसे पूरा करू गा। "

सत्यम सिंह की बात इस पर रस्तोगी ने उसे बड़े ध्यान से देखा जैसे जाँच रहा हो कि उसकी बात पर कितना दम है। फिर अपने हाथ में लिए शराब के प्याले को मुह से लगा कर शराब का हल्का सा घूँट लिया उसके बाद सत्यम सिंह की तरफ देखते हुए कहा__"आदेश तो कुछ भी नहीं है ठाकुर। बस ये समझो कि आज के समय में जो तुम्हारा दुश्मन है वही हमारा भी दुश्मन है।"

" ये आप क्या कह रहे हैं रस्तोगी साहब ?" सत्यम सिंह ने आँखें फैलाते हुए कहा ___" मेरा दुश्मन तो मेरा वो हरामज़ादा भतीजा बना हुआ है किन्तु वो आपका दुश्मन कैसे बन गया ? बात कुछ समझ में नहीं आई रस्तोगी साहब। "

" तुमने कुछ समय पहले किसी लड़की के सामूहिक रेप के बारे में तो सुना ही होगा न ?" रस्तोगी ने कहा।

" र रेप के बारे मे ??" सत्यम सिंह के चेहरे पर सोचने वाले भाव उभरे। फिर सहसा जैसे उसे याद आया __" ओह हाँ हाँ सुना था। आप उसी रेप स्कैण्डल की बात कर रहे हैं न जिस पर कुछ समय पहले काफी हो हल्ला हुआ था ? मगर फिर सब कुछ शान्त हो गया था। उसके बाद कुछ पता ही नहीं चला कि क्या हुआ ? मगर आपका उस रेप केस से क्या संबंध ?"

" दरअसल वो रेप हमारे बच्चों की करतूत का नतीजा था ठाकुर। " रस्तोगी ने गहरी सास लेते हुए कहा __" तुम्हारे गाँव के ही पास की एक प्राची नाम की लड़की थी जिसके साथ हमारे बच्चों ने मिल कर रेप किया था। वो लड़की हमारे बच्चों के ही कॉलेज में पढ़ती थी। उस रेप केस पर हो हल्ला तो ज़रूर हुआ था किन्तु उस पर कोई सख्त ऐक्शन इस लिए नहीं लिया गया था क्योंकि मामला हमारे बच्चों का था। यहाँ का पुलिस कानून हमारे खिलाफ कोई क़दम उठा ही नहीं सकता था। ये बात उस लड़की के घरवालों को भी समझ आ गई थी। इसी लिए लड़की के घरवालों ने भी कोई केस नहीं किया था और इसी वजह से मामला शान्त पड़ गया था। मगर ....। "

" मगर ????" सत्यम सिंह के चेहरे पर हैरत के भाव थे।

" मगर रेप के तीसरे दिन हमारे बच्चे हमारे ही फार्महाउस से गायब हो गए। " रस्तोगी कह रहा था __" और अब तक उनका कहीं कुछ पता नहीं चल सका है। उन बच्चों में एक हमारा बेटा है और तीन लड़कों में से एक अशोक का है दूसरा अवधेश का और तीसरा सुनीता का। हमने सब कुछ करके देख लिया मगर आज तक कहीं भी बच्चों का पता नहीं चला। सबसे

गज़ब तो तब हो गया जब हमारी बेटी भी गायब हो गई। "

" ये आप क्या कह रहे हैं रस्तोगी साहब ??" सत्यम सिंह हक्का बक्का नज़र आने लगा था , बोला __" मगर आपके बच्चों को गायब किसने किया हो सकता है ? और अगर बच्चे अगर रेप के बाद से ही गायब हैं तो ज़ाहिर सी बात है कि उन्हें उसी ने गायब किया होगा जिसके साथ उन बच्चों ने अहित किया है। लेकिन गायब करने वाले का आपके पास कोई फोन या किसी तरह की सूचना तो आनी ही चाहिए थी। सीधी सी बात है कि अगर ये सब उसने बदला लेने के उद्देष्य से किया है तो वो देर सवेर ये ज़रूर सूचित करता कि आपके बच्चे उसके कब्जे में हैं। "

" बिलकुल सही कहा तुमने ठाकुर। " रस्तोगी एकाएक कह उठा _" उसे ज़रूर सूचित करना चाहिए था और उसने ऐसा किया भी है। "

" क्या ????" सत्यम सिंह चौंका __" मेरा मतलब है कि क्या सूचित किया उसने ?"

" उसने फोन पर हमें बताया कि हमारे बच्चे उसके कब्जे में ही हैं। " रस्तोगी ने कहा __" और ये भी बताया कि वो उनके साथ क्या करेगा ? शुरू शुरू में तो हमें समझ ही नहीं आया कि

ऐसा कौन कर सकता है, क्योंकि हमें यही पता नहीं था कि हमारे बच्चों ने किस लड़की के साथ वो सब किया था? दूसरी बात हम ये सोच रहे थे कि अगर मामला इतना बड़ा था तो पुलिस केस ज़रूर होता। इस लिए ये जानने के लिए हमने यहाँ के पुलिस कमिश्नर से भी बात की थी मगर उसने बताया कि पुलिस ने कोई केस नहीं बनाया। पुलिस केस भी तभी बनाती जब लड़की के घर वाले एफआईआर कराने थाने में जाते। मगर लड़की के घर वाले तो पुलिस की दहलीज़ पर गए ही नहीं थे। हमने भी यही समझा था कि वो हमसे डर गए होंगे इसी लिए पुलिस केस नहीं किया। मगर फिर उस किडनैपर से और अशोक के द्वारा ही समझ में आया कि ऐसा कौन और क्यों कर सकता है?"

" ओह तो फिर क्या समझ आया आपको ?" सत्यम सिंह ने पूछा।

" रेप पीड़िता के घर वाले तो ऐसा कर नहीं सकते। " रस्तोगी ने कहा __" क्योंकि उन्हें पता था कि पुलिस केस से कुछ होने वाला नहीं है और ऐसा करने की क्षमता उनमें थी नहीं। मगर अशोक ने अपने तरीके से पता लगाया कि एक शख्स और है ऐसा जो हमारे बच्चों को इस संबंध में किडनैप कर सकता है। "

" ऐसा शख्स भला कौन हो सकता है रस्तोगी साहब ?" सत्यम सिंह चौंका।

" तुम्हारा भतीजा विक्रम। " रस्तोगी ने मानो सत्यम सिंह के सिर पर बम्ब फोड़ा।

" क्या ????" सत्यम सिंह इस तरह उछला था जैसे औसके पिछवाड़े पर किसी ने चुपके से गर्म तवा रख दिया हो। फिर हैरत से ऑखें फाड़े हुए बोला __" ये आप क्या कह रहे हैं ? भला विक्रम ऐसा क्यों करेगा ?"

" इसकी बहुत बड़ी वजह है ठाकुर। " रजतकुमार रस्तोगी ने कहा __" दरअसल जिस लड़की का रेप किया था हमारे बच्चों ने उस प्राची नाम की लड़की से तुम्हारा भतीजा विक्रम प्रेम करता था। जब उसे अपनी प्रेमिका के साथ हुए उस भयावह रेप का पता चला तो वो आग बबूला हो गया होगा और फिर मुंबई से यहाँ आ कर उसने अपनी प्रेमिका के साथ हुए रेप का बदला लेने के लिए ये सब कारनामा अंजाम दिया। हलाँकि ये एक संभावना है ठाकुर क्योंकि हमारे पास अभी इस बात का कोई सबूत नहीं है कि विक्रम ही ये सब कर रहा है। संभावना इस लिए है क्योंकि ये काम या तो प्राची के घर वाले कर सकते या फिर विक्रम । दोनो के ही पास ये सब करने की मजबूत वजह थी। ख़ैर जब हमें अशोक की तहकीक़ात से ये पता चला कि प्राची किसी विक्रम नाम के लड़के से प्रेम करती थी तो हमने विक्रम के बारे में भी जानकारी हासिल की। उसी जानकारी के तहत ये पता चला कि तुम्हारा भी विक्रम के साथ ऐसा ही कुछ हाल है। इस लिए हमने सोचा तुमसे मिल कर ही इस संबंध में बात की जाए। "

" सच कहूँ तो ये बात मेरे लिए निहायत ही नई और चौंकाने वाली है रस्तोगी साहब। " सत्यम सिंह के मस्तिष्क में धमाके से हो रहे थे। उसके दिमाग़ की बत्ती भी एकाएक जल उठी थी। अब उसे समझ आया था कि विक्रम मुंबई से यहाँ किस लिए आया था ? इसके पहले वो सोच सोच कर परेशान था कि विक्रम यहाँ किस वजह से आया रहा होगा। ख़ैर उसने इन सब बातों को अपने दिमाग़ से झटका और फिर बोला __" मुझे तो पता क्या बल्कि इस बात का अंदाज़ा ही नहीं था कि मेरे भतीजे का किसी लड़की से प्रेम संबंध भी हो सकता है और वो उसके चक्कर में आपके साथ इतना कुछ कर सकता है। "

" दूसरी बात ये कि हम तुम्हारी बेटी के विक्रम से मिल जाने की बात इस लिए कह रहे हैं क्योंकि वो एक पुलिस ऑफिसर थी। " रस्तोगी कह रहा था __" उसके थाना क्षेत्र के अंतर्गत रेप की वो वारदात हुई थी। इस लि ऐसा हो ही नहीं सकता कि उसे उस वारदात का पता ही न चला हो। बल्कि ज़रूर चला होगा और जब उसने प्राची को उस हालत में देखा होगा तो खुद ही कानूनन कोई ऐक्शन लेने का सोचा होगा। मगर ऐक्शन वो बिना आला ऑफिसर की अनुमति से कैसे ले सकती थी अथवा बिना पीड़िता के घर वालों द्वारा दर्ज़ करवाई गई एफआईआर के कैसे ले सकती थी ? कमिश्नर ने उसे इस केस को बनाने से सख्त मना कर दिया होगा। ख़ैर , क्योंकि वो भी पुलिस वाली के साथ साथ एक लड़की थी इस लिए उसे उस रेप पीड़िता प्राची से हमदर्दी हुई होगी। जिसके तहत वो उसी हमदर्दी के तहत प्राची से मिलने भी गई होगी। उधर प्राची के साथ हुई उस घटना की जानकारी किसी तरह विक्रम को भी हुई और वो फौरन ही मुंबई से अपनी प्रेमिका के पास आ गया होगा। अतः संभव है कि इसी दौरान विक्रम की मुलाक़ात तुम्हारी बेटी से हुई हो और उसे भी ये पता चल गया हो कि प्राची और विक्रम दरअसल प्रेमी कपल थे। ऐसी मार्मिक घटना के बीच किसी के अंदर मौजूद नफ़रत अगर प्यार में परिवर्तित हो जाए तो कोई हैरत की बात नहीं। ठाकुर , बस इसी वजह से हम कह रहे हैं कि तुम्हारी बेटी इन हालातों में विक्रम से मिल गई होगी। बाकी सच्चाई क्या है ये तो ईश्वर ही बेहतर तरीके से जानता है। "

सत्यम सिंह रस्तोगी की संभावना से भरी बातों को सुन कर बुरी तरह चकित था। उसे लगा कहीं यही सब सच तो नहीं? रस्तोगी की बातों में उसे सच्चाई की बू आ रही थी। हलाँकि उसे तो पता ही था कि उसकी बेटी विक्रम का साथ दे रही है आजकल। उसने ये बात रस्तोगी से

बताई नहीं थी, इसकी वजह ये थी कि फिर उसे और भी सारी बातें बतानी पड़ती जिनका हक़ीक़त से संबंध था। मगर सत्यम सिंह हक़ीक़त बता नहीं सकता था। उसे लगता था कि हक़ीक़त बताने से उसका कैरेक्टर रस्तोगी के सामने नंगा हो कर रह जाएगा।

" आपकी बातें और आपकी संभावनाएॅ सच भी हो सकती हैं रस्तोगी साहब। " फिर सत्यम सिंह ने कहा __" मगर क्योंकि महज संभावनाओं के आधार पर ही तो नहीं चला जा सकता न। इस लिए हमें साथ मिल कर सारी बातों का पता लगाना होगा। "

" हम भी यही कहना चाहते हैं तुमसे। " रजतकुमार रस्तोगी ने कहा __" मगर हमारे सामने समस्या ये है कि इस मामले में हम कोई भी क़दम खुल कर नहीं उठा सकते। क्योंकि तुम्हारे भतीजे ने साफ शब्दों में धमकी दी है कि अगर हमने कुछ उल्टा सीधा करने की कोशिश की तो वो हमें ही नहीं बल्कि इन तीनों को भी बीच चौराहे पर नंगा दौड़ा देगा। "

" ये क्या कह रहे हैं आप ?" सत्यम सिंह रस्तोगी की ये बात सुन कर बुरी तरह हैरान रह गया था , बोला _" भला वो ऐसा कैसे कर सकता है ?"

" दरअसल। " रस्तोगी ने ज़रा झिझकते हुए कहा __" उसके पास हम सबके खिलाफ़ ऐसे सबूत हैं जो अगर पब्लिक के सामने आ जाएॅ तो हम चारों का बेड़ा गर्क हो जाएगा। "

रस्तोगी की बात सुन कर सत्यम सिंह रस्तोगी को इस तरह देखने लगा था जैसे अचानक ही उसके सिर पर गधे का सिर नज़र आने लगा हो। सत्यम सिंह ये सोच कर भी हक्का बक्का रह गया था कि विक्रम के पास उसके खिलाफ़ तो उसका बेड़ा गर्क कर देने वाला सबूत था ही और अब रस्तोगी के खिलाफ़ भी ऐसा सबूत है उसके पास। सत्यम सिंह को लगा कि उसे चक्कर आ जाएगा ये जान कर मगर फिर उसने खुद को बड़ी मुश्किल से संभाला। उसे ये भी समझ आ गया कि जिस उम्मीद से और खुशी से वह रस्तोगी के पास आया था वो रस्तोगी तो खुद ही विक्रम के सामने भीगी बिल्ली बना बैठा है। ये सोचते ही सत्यम सिंह का सारी उम्मीद और सारी खुशी एक ही पल में नेस्तनाबूत हो गई।

" ये तो बहुत ही गजब बात कह रहे हैं आप। " फिर उसने खुद को संभालते हुए कहा __" बड़े आश्चर्य की बात है रस्तोगी साहब कि आप जैसा इंसान सब कुछ करने की क्षमता रखते हुए भी कुछ नहीं कर सकता है। "

" ये सच है ठाकुर। " रस्तोगी ने गंभीर भाव से कहा __" जब तक उसके पास हमारे खिलाफ़ वो सबूत हैं तब तक हम कोई ठोस क़दम उठाने का सोच भी नहीं सकते हैं। दूसरी बात उसके कब्जे में हमारे बच्चे भी हैं जिनके साथ वो कुछ भी उल्टा सीधा कर सकता है। ऐसे हालात में हम उसके खिलाफ भला कोई कठोर क़दम कैसे उठा सकते हैं ? इस लिए हमने सोचा कि हमारा जो दुश्मन है वही तुम्हारा भी है तो तुम ज़रूर इस मामले में कोई ठोस कार्यवाही कर सकते हो। यकीन मानो ठाकुर , अगर तुम उस नामुराद का पता करके तथा उसके कब्जे से हमारे बच्चों के साथ साथ उस सबूत को भी लाकर हमारे हवाले कर दो तो हम जीवन भर तुम्हारे एहसानमंद रहेंगे। तुम जिस चीज़ की हसरत करोगे वो चीज़ हम लाकर तुम्हें

देंगे। "

मंत्री की ये बात सुन कर सत्यम सिंह चकित रह गया था। उसके मुख से कोई लफ्ज़ न निकल सका था। रस्तोगी उससे मदद की उम्मीद किये बैठा था जबकि उसे पता ही नहीं था कि इस मामले में तो वो खुद भी पंगु हुआ बैठा है। कितनी अजीब बात थी दोनो एक दूसरे से मदद की उम्मीद कर रहे थे जबकि दोनो ही एक दूसरे की कोई मदद नहीं कर सकते थे। सत्यम सिंह को एकाएक ही उसका भतीजा किसी भयावह काल की तरह लगने लगा था। उसके समूचे जिस्म में मौत की सी झुरझुरी दौड़ गई थी।

" क्या सोचने लगे ठाकुर। " उसे चुप देख कर रस्तोगी पुनः बोल पड़ा __" तुमने हमारी बात का कोई जवाब नहीं दिया। जबकि हम तुमसे इस मामले में मदद की बात कर रहे हैं। "

" मैं तो ये सोचने लगा था रस्तोगी साहब। " सत्यम सिंह ने गहरी सास लेते हुए कहा __" कि एक पिद्दी से लड़के ने प्रदेश की इतनी बड़ी हस्ती का जीना हराम कर दिया है। अभी तक तो मैं यही सोच रहा था कि उसने तो सिर्फ मेरा ही जीना हराम किया हुआ था मगर हैरत की बात है कि उसने अपने निशाने पर आपको भी लिया हुआ है। "

" सब वक्त और हालात की बातें हैं ठाकुर। " रजतकुमार रस्तोगी ने कहा __" उसके पास हमारे खिलाफ़ सबूत भी हैं और हमारे बच्चे भी हैं जिनके तहत उसका पलड़ा बहुत भारी है। अगर कम से कम हमारे बच्चे उसके पास नहीं होते तो हम उसे बताते कि हमारे साथ ऐसी ज़ुर्रत करने की क्या सज़ा मिल सकती थी उसे ? ख़ैर छोंड़ो , तुम बताओ कि क्या तुम इस मामले में हमारी कोई मदद कर सकते हो या नहीं ?"

" मैं पूरी कोशिश करू गा रस्तोगी साहब। " सत्यम सिंह ने कहा __" कि मैं इस मामले में आपके लिए कुछ खास कर सकूँ और जैसा कि आपको मैं बता ही चुका हूँ कि वो नामुराद मुझे भी अपना दुश्मन समझता है और मुझसे बदला ले रहा है तो उस हिसाब से ये भी सच है कि मैं भी यही चाहता हूँ कि जल्द से जल्द वो मेरी पकड़ में आ जाए। एक बार पता चल जाए कि वो कमीना किस कोने में छुपा बैठा है उसके बाद तो मैं उसका खात्मा बहुत ही खूबसूरत ढंग से करू गा। "

" ठीक है ठाकुर। " रस्तोगी ने कहा __" हम भी यही चाहते हैं कि उसके ठिकाने का पता किसी तरह से चल जाए। उसके बाद हमारे लिए कोई क़दम उठाना भी आसान हो जाएगा। "

ऐसी ही कुछ देर और कुछ बातें होती रहीं। शाम घिर चुकी थी और अब रात होने वाली थी। इस लिए सत्यम सिंह रस्तोगी से इजाज़त लेकर वापस सोनपुर के लिए निकल चुका था। सारे रास्ते वह रस्तोगी के बारे में सोचता रहा था। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि उसका भतीजा इतना बड़ा सूरमा हो सकता है कि वो प्रदेश के मंत्री तक को अपनी मुट्ठी में कैद कर ले। उसने मंत्री से कह तो दिया था कि वो इस मामले में उसकी मदद करेगा मगर ये तो वही जानता था कि वो उसकी कितनी मदद कर सकता था? ख़ैर थका हारा व परेशान हालत में सत्यम सिंह अपनी हवेली पहुँच गया था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वो खुद अपने तथा रस्तोगी के

लिए अब क्या करे?

७८

मैंने दरवाजा खोला तो देखा बाहर साक्षी दीदी थी। मेरे द्वारा दरवाजा खुलते ही वो मुझे देख कर पहले तो मुस्कुराई फिर जैसे ही उन्हें देख कर मैं एक तरफ हुआ तो वो दरवाजे से अंदर की तरफ कमरे में आ गईं। उन्हें कमरे में आते देख मुझे समझ न आया कि साक्षी दीदी रात में सोने की बजाय इस वक्त यहॉ मेरे पास किस वजह से आई हैं?

दरवाजा बंद करके मैं पलटा और बेड की तरफ आ गया। साक्षी दीदी बेड पर ही एक किनारे पर बैठी हुई थी। इस वक्त उनके खूबसूरत बदन पर नाइट ड्रेस था। मैं खुद भी एक हाफ बनियान और शार्ट्स में था। हलॉकि मुझे उनके यहॉ इस वक्त आने पर कोई ऐतराज नहीं था बल्कि मैं तो खुश ही हुआ था मगर सोचने वाली बात तो थी ही कि इस वक्त उनके यहॉ आने की क्या वजह हो सकती है?

" कहीं मैने तुझे डिस्टर्ब तो नहीं किया न विक्रम ?" मुझे बेड की तरफ आते देख सहसा साक्षी दीदी ने बड़ी मासूमियत से कहा __" कहीं ऐसा तो नहीं कि मैने यहॉ आ कर तेरी नींद में खलल डाल दिया हो ?"

" ये आप कैसी बातें कर रही हैं दीदी ?" मैं उनके पास ही बेड पर बैठते हुए बोला __" भला आपकी वजह से मैं कैसे डिस्टर्ब हो जाऊँगा ? बिलकुल भी नहीं दीदी , मुझे भी अभी नींद नहीं आ रही थी। "

" अच्छा भला वो क्यों ?" साक्षी दीदी ने सहसा मेरे चेहरे की तरफ ग़ौर से देखते हुए कहा __" क्या प्राची की याद आ रही थी ?"

" उसकी याद आने का तो सवाल ही नहीं है। " मैने अजीब भाव से कहा __" क्योंकि मैं उसे एक पल के लिए भी भूलता ही नहीं हूॅ। दूसरी बात याद तो उन्हें करते हैं न जिन्हें हम भूले हुए होते हैं ?"

" ओह विक्रम। " साक्षी दीदी ने एकदम से मेरा चेहरा अपनी हॅथेलियों के बीच ले लिया , और फिर भारी स्वर में मुझसे बोली __" मैं जानती हूॅ कि तू प्राची को इतनी आसानी से भूल नहीं सकता है। आख़िर तुम दोनो ने एक दूसरे से टूट कर मोहब्बत जो की थी , ऊपर से वो सब हो गया। मगर भाई , उस सबको याद करने से भी भला क्या होगा ? बल्कि होगा ये कि तू हर पल उसे याद करके दुखी होता रहेगा। इस लिए तू खुद को संभाल मेरे भाई और उस सबसे बाहर निकल। तुझे पता है न कि मैं तुझे अब किसी भी सूरत में दुखी होते हुए नहीं देख सकती हूॅ। अगर तू खुश नहीं रहेगा तो मैं भी खुश नहीं रहूॅगी। अब तो तेरे ही खुशी में मेरी खुशी है विक्रम और तेरे दुख में मेरा दुख है। "

" मैं जानता हूॅ दीदी। " मैंने उदास भाव से कहा __" मगर क्या करू ? यादों पर मेरा कोई

अख़्तियार ही नहीं है। दिन तो गुज़र जाता है किसी तरह मगर ये रात ..... ये रात और रात की ये तन्हाई जाने कहॉ से मेरे दिल को दुखी करने के लिए उसकी यादें ले आती हैं ? बस उसके बाद सब कुछ ऐसा लगने लगता है जैसे इस संसार में अब कुछ भी नहीं रह गया ऐसा जिसकी वजह से मैं खुश हो सकूँ। "

" ऐसा मत कह मेरे भाई। " साक्षी दीदी ने मुझे एकदम से खुद से छुपका लिया और फिर दुखी भाव से बोली __" हम सब भी तो हैं न जिनकी वजह से तू खुश हो सकता है। क्या सिर्फ प्राची ही ऐसी थी जिसकी वजह से तू खुश हो सकता था ? क्या रेणुका चाची और गुड़िया कुछ भी नहीं जिनके लिए तू खुश रह सके ?"

" हर रिश्ते की अपनी एक अलग अहमियत होती है दीदी। " मैने कहा __" मगर जो दिल का रिश्ता होता है और प्रेम के रिश्ते से जुड़ा होता है उसकी बात ही अलग होती है। हलॉकि रिश्ता कोई भी हो उसके टूट जाने पर अथवा उसके न रह जाने पर तक़लीफ़ तो होती ही है। हम जिन्हें चाहते हैं तथा जिनसे प्रेम करते हैं वो अगर दुनियॉ जहॉन में हैं तो उनसे ताल्लुक न रहने के बाद भी इतनी तक़लीफ़ नहीं होती लेकिन अगर वो इस दुनियॉ में ही नहों तो ये सोच सोच कर और भी ज्यादा तक़लीफ़ होती है कि अब वो इंसान उसे कभी भी नहीं मिल सकता। इंसान के दुनियॉ में बने रहने से ये उम्मीद तो बनी ही रहती है कि कभी न कभी उसे वो व्यक्ति मिलेगा ही। मगर .....। "

" बस कर विक्रम। " साक्षी दीदी फफक कर रो पड़ी __" मैं और कुछ नहीं सुन सकती। मुझे तो इतने से ही इतनी तक़लीफ़ हो रही है जबकि वो सब तो तेरे साथ घटा है तो तुझे कितनी ज्यादा तक़लीफ़ होती होगी। मुझे उस सबका एहसास है मेरे भाई मगर प्लीज .... भगवान के लिए खुद को अपनी इस तक़लीफ़ से निकालने की कोशिश कर। "

" फिक्र मत कीजिए दीदी। " मैने दीदी को खुद से अलग कर उनके चेहरे को अपनी हॅथेलियों में लेते हुए कहा __" ये दुख तक़लीफ़ें लाख असहनीय सही मगर ये मुझे नेस्तनाबूत नहीं कर सकती हैं। इतनी हिम्मत तो और इतनी कूबत तो है मुझमें कि मैं इन सबको जज़्ब कर सकूँ। ख़ैर छोंड़िये ये सब और ये बताइये कि आप इस वक्त यहॉ किस वजह से आई थी ? क्या कोई काम था मुझसे ?"

" क्या मैं तेरे पास बेवजह नहीं आ सकती विक्रम ?" साक्षी दीदी ने पुनः बड़ी मासूमियत से मुझे देखा था _" क्या मुझे अपने भाई के पास आने के लिए किसी वजह की ज़रूरत है ?"

" नहीं दीदी ऐसी तो कोई बात नहीं है। " मैने झेंपते हुए कहा __" बल्कि आप जब चाहें तब मेरे पास आ सकती हैं। मैने तो हालातों के बारे में सोच कर आपसे ऐसा कहा था। "

" हालातों के बारे में बात करने के लिए दिन काफी है मेरे भाई। " साक्षी दीदी ने कहा __" कम से कम रात में तो उस सबसे दूर होकर हमें सुकून मिले। हर पल उसी के बारे में सोच सोच कर परेशान होना क्या अच्छी बात है ?"

" आपने सही कहा दीदी। " मैने कहा __" हर वक्त एक ही चीज़ के बारे में सोच सोच कर परेशान होना बिलकुल भी उचित नहीं है। किन्तु ये भी सच है कि हालात ऐसे हैं कि हम भले ही ये सब सोच कर ऐसा कहें मगर ज़हन से वो सब बातें जाती भी तो नहीं हैं। "

" कोशिश करोगे तो ज़रूर जाएँगी विक्रम। " साक्षी दीदी ने कहा __" मगर तुम तो कोशिश ही नहीं करते हो। बस सोचते रहते हो जाने क्या क्या ? अच्छा ये बता कि मानुषी से क्या बात हुई थी तेरी ?"

" बताया तो था आपको। " मैने कहा।

" हॉ बताया तो था तूने। " साक्षी दीदी ने सहसा मुस्कुराते हुए कहा __" और ये भी बताया था कि कैसे तुम दोनो ट्रेन में धमाल मचा रखे थे। "

" क्या करता दीदी। " मैने सहसा गंभीर होकर कहा _" उसी सबके लिए तो तरसा था मैं। मैं हमेशा ये चाहता था कि मानुषी मुझसे लड़ाई करे , हम दोनो के बीच में खूब शै ता नी भरा माहौल बना रहा करे। मगर वो सब ख्वाहिशें ही रहीं। आज सुबह जब ट्रेन में मानुषी मेरे ऊपर झुकी हुई मुझे देख रही थी तो अचानक ही मेरे मन में वो सब बातें आ गई थी और फिर मैने उसे छेंड़ा। उसके बाद सचमुच वैसा ही हुआ दीदी जैसे की मैं हमेशा आरज़ू किया करता था। उस वक्त मैं बहुत खुश था और मुझे पता था मानुषी भी उस सबसे बेहद खुश थी। उसके हाव भाव से ज़ाहिर हो रहा था कि वो भी मेरे साथ वो सब करके उन पलों को एंज्वाय कर रही थी। "

" काश उस वक्त मैं भी वहॉ होती विक्रम। " साक्षी दीदी ने सहसा आह सी भरते हुए कहा __" मैं भी मानुषी की तरह तेरे साथ वैसी ही मस्ती करती। "

" अरे पर आप कैसे करती दीदी ?" मैं दीदी की ये बात सुन कर चौंक पड़ा था __" आप तो मुझसे बड़ी हैं न , जबकि मानुषी और मैं एक ही ऊम्र के हैं इस लिए हमारे बीच वैसी मस्ती हो सकती थी। "

" तो क्या हुआ भाई ?" साक्षी दीदी ने कहा __" मैं तुझसे बड़ी हूँ तो क्या हुआ ? क्या मैं बड़ी होने की वजह से अपने भाई के साथ मस्ती नहीं कर सकती ? ये किस कानून की किताब में लिखा है मुझे बता तो ज़रा ?"

" हॉ लिखा तो नहीं है मगर। " मैं दीदी की बात सुन कर सकपका गया था __" फिर भी आप मुझसे बड़ी तो हैं ही और मैं आपसे खुल कर वैसी मस्ती नहीं कर सकता था। "

" सीधे सीधे कह दे न कि तुझे मेरे साथ मस्ती करना पसंद ही नहीं आता। " साक्षी दीदी ने सहसा बुरा सा मुह बनाते हुए कहा __" एक मानुषी ही बस तो है जिसके साथ तुझे वो सब करना अच्छा लगता है। जाओ मुझे तुमसे कोई बात नहीं करनी। "

साक्षी दीदी ये कहने के साथ ही मुझसे ज़रा हट कर बैठ गईं और एक तरफ को मुह फुला कर बैठ गईं। मैं ये सब देख कर भौचक्का सा रह गया। मुझे उनसे इस सबकी उम्मीद बिलकुल भी

नहीं थी। कदाचित इस लिए क्योंकि उनका कैरेक्टर ही ऐसा था। वो शुरू से ही हिटलर स्वभाव की रही थी। उन्हें ये सब बिलकुल भी पसंद नहीं था। मगर इस वक्त वो हिटलर दीदी नहीं बल्कि किसी छोटी सी बच्ची की तरह मुह फुला कर एक तरफ बैठ गई थी। उनके चेहरे पर इस वक्त इतनी क्यूट सी नाराजगी देख कर मैं हैरान भी था और अंदर ही अंदर ये सोच कर खुश भी कि इस वक्त साक्षी दीदी सच में किसी मासूम सी बच्ची की तरह लग रही थी। मुझे उनके इस तरह रूठ कर मुह फुला लेने से उन पर बेहद प्यार आया। मुझे ऐसा लगा जैसे इस क्यूट सी बच्ची पर मैं सारी दुनियॉ हार जाऊँ।

" अरे ये क्या बात हुई दीदी ?" फिर सहसा मुझे वस्तुस्थित का बोध हुआ तो मैं उनके क़रीब जाते ही उनके कंधे पर हाथ रख कर बोला था मगर .... ।

" दूर रहो मुझसे। " साक्षी दीदी ने अपने कंधे से मेरे हाथ को झटकते हुए उसी रूठे हुए भाव से कहा __" और हॉ मुझसे बात मत करो अब। मैं तुम्हारी कोई दीदी वीदी नहीं हूँ। जाओ उस मानुषी के पास। "

" ये आप कैसी बातें कर रही हैं दीदी ?" मैं हैरान परेशान सा हो कर कह उठा __" आप तो मेरी सबसे अच्छी व सबसे प्यारी दीदी हैं। भला मैं आपसे कैसे दूर हो सकता हूँ और आपसे बात न करू ऐसा तो हो ही नहीं सकता। "

" बस बस खूब समझती हूँ मैं। " साक्षी दीदी ने उसी अंदाज़ से मगर इस बार ज़रा तीखे भाव से कहा __" मस्का लगाना कोई तुमसे सीखे। "

" मैं मस्का नहीं लगा रहा दीदी। " मैं एक बार से उनके पास खिसक कर गया और फिर बोला __" मैं किसी की भी कसम खा कर कह सकता हूँ कि आप मेरी सबसे अच्छी दीदी हैं और मेरे दिल में जो स्थान आपका है वो किसी और का नहीं हो सकता। "

मेरी इस बात का मानो तुरंत असर हुआ। साक्षी दीदी एकदम से मेरी तरफ इस तरह देखने लगीं थी जैसे उन्हें मेरी इस बात से कितनी ज्यादा खुशी हुई हो। फिर सहसा जैसे उन्हें याद आया कि वो तो मुझसे रूठी हुई थीं। इस लिए उनके चेहरे के भाव पलक झपकते ही पहले जैसे हो गए और वो फिर से मुह फुला कर एक तरफ को अपना चेहरा कर लिया। मुझे उनके इस तरह रंग बदल लेने से मन ही मन हॅसी तो आई मगर मैं हॅसा नहीं। वरना मुझे पता था कि उसके बाद कैसे हालात हो जाने थे।

" ठीक है दीदी आप मुझसे मत बात कीजिए। " मैने इमोशनल ब्लैकमेल का नाटक किया __" शायद मेरा नसीब ही ऐसा है कि जिसे भी अपना समझता हूँ वो मेरा अपना नहीं रहता। एक आप ही तो थी जिन्हें सबसे ज्यादा अपना समझता था और अपनी दुख तक़लीफ़ें दिखाता था मगर ....। "

मेरा वाक्य पूरा भी न हो पाया था कि अचानक ही साक्षी दीदी की एक हॅथेली कुकर के ढक्कन की तरह मेरे मुह पर आकर फिट हो गई। उनकी ऑखों में ऑसू थे। वो मुझे इस तरह

देखे जा रही थी जैसे कह रही हों कि आइंदा ऐसी बातें कभी मत करना।

" क्यों ऐसी बातें करता है विक्रम ?" फिर दीदी ने सहसा दुखी भाव से कहा __" क्या मैं तुझसे रूठ भी नहीं सकती ? मुझे भी मानुषी की तरह तुझसे लड़ना झगड़ना है भाई। मुझे भी अपने इस प्यारे भाई के साथ जी भर के मस्ती करनी है। तुझे तो पता है कि मुझे इसके पहले ये सब पसंद ही नहीं था मगर अब मुझे भी लगता है कि मैं तुझसे तेरी बड़ी बहन बन कर नहीं बल्कि तेरी छोटी बहन बन कर रूठूँ लड़ूँ और तुझे परेशान करू । मगर तू ही नहीं चाहता कि मुझे भी वैसी खुशी मिले जैसे तुझे और मानुषी को वो सब करके मिली थी। "

" ऐसा नहीं है दीदी। " मैने उनको उनके कंधों से पकड़ते हुए कहा __" हमारे पारिवारिक रिश्तों में मेरी और भी कई दीदी होंगी मगर मेरी जो सबसे ज्यादा फेवरेट दीदी है वो सिर्फ आप हो। आपके लिए हॅसते हॅसते अपनी जान भी दे सकता हूँ मैं। ख़ैर अगर आपकी भी यही इच्छा है तो ठीक है दीदी अब से आप भी मुझसे मानुषी की तरह रूठ सकती हैं और लड़ाई झगड़ा कर सकती हैं। मुझे खुशी होगी कि आप भी खुद को इस रूप में खुशी देना चाहती हैं। "

" हॉ मगर ये तभी होगा न भाई जब तू मुझे भी तुम या तू कह कर संबोधित करे। " साक्षी दीदी ने कहा __" जैसे तू मानुषी से करता है। तभी तो वो सब करने में मज़ा आएगा। "

" ऐसा कैसे हो सकता है दीदी ?" मैं दीदी की बात सुन कर बुरी तरह हैरान रह गया था , बोला __" आप मुझसे बड़ी हैं इस लिए मैं उस सबके लिए आपके मान सम्मान को ताक पर नहीं रख सकता। "

" ठीक है मगर उस वक्त तो बोल सकता है न जब हम आपस में वैसी मस्ती करेंगे। " दीदी ने कहा __" बाकी आम सिचुएशन में तू वही बोलना जो अब तक बोलता आया है। और हॉ अब यही फाइनल है। इससे आगे मुझे कुछ नहीं सुनना है , समझ गया न ?"

मेरी हालत मरता क्या न करता वाली हो गई थी। मैं अब कुछ नहीं कह सकता था। अगर कहता या कोई ऑब्जेक्शन करता तो निश्चिय ही दीदी नाराज हो जाती जो कि मैं कभी नहीं चाह सकता था।

" ठीक है दीदी। " फिर मैने गहरी सास ली __" जैसा आपको अच्छा लगे। "

" गुड। " दीदी के चेहरे पर रौनक आ गई __" तो शुरू करें ?"

" क्या मतलब ??" मैं उनकी इस बात से एकदम से चकरा गया।

" अरे वही भाई। " दीदी ने मुस्कुराते हुए कहा __" जो तू मानुषी के साथ कर रहा था। मैं चाहती हूँ कि श्रीगणेश हो ही जाए मस्ती का। "

" पर दीदी इस वक्त ये सब ??" मैं बुरी तरह घबरा सा गया था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या करू ?

" इस वक्त क्या ??" साक्षी दीदी ने ऑखें दिखाई।

" आप भी कमाल करती हैं। " मैने कहा __" भला ये भी कोई वक्त है इन सब चीज़ों का ? हमारी वजह से बेकार में ही सब लोगों की नींद का कबाड़ा हो जाएगा। वैसे भी आज सब बहुत थके हुए हैं। इस लिए इस वक्त नहीं दीदी हम दिन में किसी वक्त धमाल कर लेंगे। "

" हॉ ये तो सच कहा तूने। " साक्षी दीदी ने कहा __" सचमुच सबकी नींद का सत्यानाश हो जाएगा। चल कोई बात नहीं। इस वक्त तो तुझे बक्श दिया मगर याद रख कल छोंड़ूगी नहीं तुझे। "

" क्या ???" मैं दीदी की इस बात से चौंका। फिर सहसा ऊपर की तरफ देखते हुए बोला __" हे भगवान मुझे शैतान की इस बच्ची से बचा लेना। "

" क्या कहा तूने ?" साक्षी दीदी की ऑखें फैल गईं। वो एकदम से मेरी तरफ पलटीं फिर बोली __" मैं शैतान की बच्ची ? रुक बताती हूँ तुझे। "

इससे पहले कि मैं अपने बचाव के लिए कुछ कर पाता साक्षी दीदी मुझ पर झपट पड़ीं। उन्होंने मुझे धक्का दे कर बेड पर गिरा दिया और खुद भी बेड के बीचो बीच आकर मेरे जिस्म के हर हिस्सों पर गुदगुदी करने लगीं। मुझे उनकी गुदगुदी से हॅसी तो नहीं आ रही थी मगर मैं जानबूझ कर हॅसने लगा था और उनसे अपने कहे की माफ़ियॉ मॉगने लगा था। मगर साक्षी दीदी मेरे माफ़ी मॉगने पर भी मुझे गुदगुदी करना बंद नहीं कर रही थीं।

" प्लीज बस कीजिए न दीदी। " मैने हॅसते हुए कहा _" सब लोगों की नींद टूट जाएगी। "

" टूट जाने दे अब। " साक्षी दीदी ने कहा __" मुझे किसी की कोई परवाह नहीं है समझे ? तूने मुझे शैतान की बच्ची बोला है न तो तुझे अब शैतान की ये बच्ची छोंड़ेगी नहीं। "

" अच्छा जी। " मैने कहा __" ऐसी बात है क्या ? लगता है इस बच्ची का इलाज करना ही पड़ेगा। "

" तू कुछ नहीं कर पाएगा भोंदूराम। " साक्षी दीदी ने कहा __" जबकि मैं तेरी हालत ख़राब कर दूँगी आज। "

" ओ हैलो। " मैने सहसा दीदी के दोनों हाथ पकड़ लिए फिर बोला __" कहीं ऐसा न हो कि मेरी हालत ख़राब करने के चक्कर में खुद तुम्हारी ही हालत ख़राब हो जाए। "

" अच्छा बच्चू। " दीदी अपने हाथो को मेरी पकड़ से छुड़ाने की कोशिश करते हुए कहा __" इतनी बड़ी ग़लतफहमी भी है तुझको। शायद तुझे पता नहीं है कि मैं जूड़ो कराटे में ब्लैक बेल्ट होल्डर हूँ। "

" फॉर काइण्ड योर इन्फॉरमेशन। " मैने कहा __" मैं भी मार्शल आर्ट्स में ब्लैक बेल्ट हूँ। इतना ही नहीं कुंग फूँ का भी एक्सपर्ट हूँ मैं। इस लिए तुम मुझे कम समझने की ग़लती मत

करना। "

" चल चल हवा आने दे तू। " साक्षी दीदी ने बुरा सा मुह बनाते हुए कहा __" बड़ा आया कुंग फू एक्सपर्ट। मेरे सामने तेरा कोई भी आर्ट्स नहीं चलने वाला। "

" और अगर चल गया तो ??" मैने मुस्कुराते हुए कहा।

" चल ही नहीं सकता। " साक्षी दीदी कहने के साथ ही मेरे ऊपर आ गई __" अब बोल बच्चू। बड़ा कुंग फू एक्सपर्ट बनता है न। "

मैने एकदम से पलटी मारी, साक्षी दीदी को मुझसे इतनी जल्दी इसकी उम्मीद नहीं थी। परिणाम ये हुआ कि जहॉ पहले मैं पड़ा हुआ था वहॉ साक्षी दीदी पड़ी थी और मैं उनके ऊपर। मेरी इस हरकत से पहले तो साक्षी दीदी घबरा ही गईं फिर मुझे देखते ही बोली__"ओये ये क्या है? तूने ये कैसे किया?"

" हाहाहाहा क्या हुआ बहना ?" मैने उनके दोनो हाथ दोनो साइड से बेड पर रख दिया __" हवा निकल गई क्या तुम्हारी ? बड़ा जूड़ो कराटे बता रही थी न। अब बोलो क्या करू तुम्हारे साथ ?"

" तूने चीटिंग की है। " साक्षी दीदी मेरी पकड़ से अपने हाथ छुड़ाने की नाकाम कोशिश करते हुए कहा __" तूने धोखे से मुझे नीचे कर दिया है। "

" अच्छा जब हारने लगी तो चीटिंग का नाम दे दिया। " मैने कहा __" चलो यही सही , लेकिन तुम तो जानती हो न प्यार और जंग में सब जायज है। अब बताओ शैतान की बच्ची कि क्या करू तुम्हारे साथ ?"

" ओये ज्यादा दिमाग़ न चला समझे। " साक्षी दीदी ने एकाएक ही मेरे पीछे से अपनी दोनो टॉगों को दोनो साइड से ऊपर कर मेरी गर्दन में फॅसा लिया और फिर हल्का झटका दिया। परिणाम ये हुआ कि मैं उनके पैरों की तरफ उलटता चला गया। इधर दीदी पलक झपकते ही बेड से उठ कर फिर से मेरे ऊपर आ गईं।

" क्यों कुंग फू एक्सपर्ट अब क्या हाल हैं तेरे ?" साक्षी दीदी मेरे पेट पर बैठी उछलने लगी थी , उन्होंने अपने दोनो हाथो से मेरे हाथ भी पकड़ रखे थे।

" हाल तो बहुत अच्छा है। " मैने कहा __" आपकी जीत में भी मेरी ही जीत है दीदी। "

मेरे ऐसा कहने पर साक्षी दीदी एकदम से शान्त पड़ गईं। मेरी ऑखों में एकटक देखने लगी थी वो। फिर जाने क्या उनके मन में आया वो उसी हालत में मेरे ऊपर ही मेरे सीने से लग कर छुपक गईं।

" तूने खेल क्यों बंद कर दिया विक्रम। " फिर दीदी उसी हालत में उदास होकर कहा __"

मुझे तो बहुत अच्छा लग रहा था। "

" मुझे पता है दीदी। " मैने उनके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा __" मगर ऐसी चीज़ों की शुरूआत थोड़ी थोड़ी से ही होती है न। वैसे भी रात काफी हो गई है। इस सबसे कोई भी यहाँ आ सकता है और हमें ये सब करते देख कर क्या सोचेगा। इस लिए मुझे लगता है इतना बहुत है आज के लिए। अब आपको भी अपने कमरे में जा कर सो जाना चाहिए। "

" क्यों , क्या मैं तेरे कमरे में तेरे साथ नहीं सो सकती ?" साक्षी दीदी ने सहसा मेरे सीने से अपना सिर उठा कर मेरी तरफ देखते हुए कहा।

" बिलकुल सो सकती हैं दीदी। " मैंने मुस्कुरा कर कहा __" पर मैने ऐसा इस लिए कहा कि आपको शायद अपने कमरे में ही बेहतर तरीके से नींद आए और आप कंफर्टेबल महसूस करें। "

" ऐसा कुछ नहीं है मेरे भाई। " साक्षी दीदी ने मेरे गाल खींचते हुए किन्तु मुस्कुरा कर कहा __" मुझे तो तेरे साथ सोने में और भी अच्छी नींद आएगी और मुझे कंफर्टेबल भी महसूस होगा। ऐसा लगेगा जैसे मैं दुनियाँ की सबसे सुरक्षित जगह पर हूँ। "

" अगर ऐसी बात है तो ठीक है दीदी। " मैने भी मुस्कुराते हुए कहा __" जैसा आपको अच्छा लगे वैसा कीजिए। अब चलिए सो जाते हैं। "

" ओये क्या तुझे नींद आ रही है ?" दीदी ने आँखें फैलाते हुए कहा था।

" हाँ लग तो रहा है ऐसा। " मैने कहा।

" ठीक है तू सो जा फिर। " दीदी ने कहने के साथ ही अपना सिर वापस मेरे सीने में रख लिया।

" पर आप तो मेरे ऊपर लेटी हुई हैं न दीदी। " मैने असहज भाव से कहा __" ऐसे में कैसे मैं सो सकूँगा भला ?"

" जिसको सोना होता है न वो कैसे भी सो जाता है। " साक्षी दीदी ने अजीब भाव से कहा __" मैं तो तेरे ऊपर ही सोऊँगी। तुझे भी ऐसे ही सोना पड़ेगा आज। "

साक्षी दीदी की इस बात से मैं हैरान रह गया मगर करता भी क्या? कोई ज़ोर ज़बरदस्ती भी उनसे नहीं कर सकता था। इस लिए चुपचाप अपनी आँखें बंद कर ली मैने और सोने की कोशिश करने लगा। जबकि मेरे चुप हो जाने पर साक्षी दीदी जो मेरे सीने पर अपना सिर रखे हुए थी वो मुस्कुराए जा रही थी। उनका पूरा बदन ही मेरे ऊपर था। मुझे बड़ा अजीब भी लग रहा था और असहज भी। असहज इस लिए क्योंकि दीदी के सीने के उभार मेरे सीने के बस थोड़ा ही नीचे धँसे हुए महसूस हो रहे थे। हलाँकि मेरे ज़हन में उनके प्रति कोई भी ग़लत भावना नहीं थी मगर सोचने वाली बात तो थी ही। ख़ैर, कुछ ही देर में मुझे नींद आ गई और मैं सो गया। मुझे नहीं पता दीदी को कब नींद आई थी।

७९

उधर मंत्री रजतकुमार रस्तोगी के यहाँ से आने के बाद सत्यम सिंह सारे रास्ते सोचों में गुम रहा था। हवेली से जब वह चला था तो सबसे पहले रामगंज में वो सिम कार्ड के सर्विस सेन्टर गया था। जहाँ से उसने अपने पहले वाले नंबर के ही दो सिम कार्ड लिया था और उन्हें अपने मोबाइल फोन पर डाल लिया था। उसे पता था कि फोन बंद होने की वजह से उससे संबंध रखने वाले सभी उसके चाहने वाले परेशान होंगे। रास्ते में ही कई सारे लोगों के फोन आए थे उसे जिनसे उसने बात की और उन्हें बताया कि किस वजह हे उसका फोन बंद था।

सत्यम सिंह ने अपने उन बिजनेस दोस्तों से भी बात की जिन्होंने उसकी मदद के लिए अपने अपने आदमी भेजे थे। सबसे फारिग़ होकर ही वह अपने घर पहुँचा था। हवेली पहुँचते पहुँचते उसे रात के साढ़े आठ से ऊपर हो गए थे। अंदर उसे ड्राइंग रूम में सब मिल गए। सब आपस में बात चीत कर हँसे जा रहे थे। मानुषी, श्रुति, जयदीप, तथा सोनिया आदि सब कीर्तिमान सिंह के पास ही बैठ थे।

सत्यम सिंह को आया देख कर मानुषी व श्रुति उससे मिली। सत्यम सिंह ने उन दोनो को प्यार दिया और फिर कपड़े चेन्ज करने का कह कर अपने कमरे की तरफ बढ़ गया। सोनिया के कहने पर बाकी सब भी फ्रेश होने चले गए। रात का डिनर मीनाक्षी ने तैयार कर दिया था अत: फ्रेश होने के बाद सब एक साथ डायनिंग हाल में आ कर बैठ गए। डिनर के दौरान सबके बीच नार्मल ही बातें हुई। इस बीच कीर्तिमान सिंह ने कहा कि उसे कल वापस जाना होगा क्योंकि वो इस समय एक ज़रूरी केस के सिलसिले में लगा हुआ है। सोनिया की हार्दिक इच्छा थी कि उसके पापा अभी कुछ दिन यहाँ रुकें मगर उसे भी पता था कि उसके पिता एक बहुत बड़े वकील हैं जिनके पास समय का बहुत ही ज्यादा अभाव है।

कीर्तिमान सिंह ने ये ज़रूर कहा कि अब वो आते रहेंगे यहाँ। उनकी इस बात से सब खुश हो गए। ख़ैर डिनर के बाद सब सोने के लिए अपने अपने कमरों में चले गए।

" तो मिल आए तुम मंत्री जी सेे ?" अपने कमरे में आते ही सोनियाा ने बेड पर लेटे सत्यम सिंह की तरफ देखते हुए कहाा __" वैसे किस सिलसिले में बुलाया था उसने तुम्हेंं ? क्या कोई खास वजह थीी ?"

" इस बारे में कुछ न ही पूछो तो अच्छा है सोनियाा। " सत्यम सिंह ने गहरी सास ली थी।

" अरे ये क्या बात हुई भलाा ?" सोनियाा बेड पर आते हुए बोलीी __" क्या कोई ऐसी बात है जिसे तुम मुझसे बताना नहीं चाहते होो ?"

" नहीं यार ऐसी कोई बात नहीं है। " सत्यम सिंह ने बेचैनी से पहलू बदलाा __" भला ऐसी कोई बात हुई है अब तक जिसे मैने तुमसे शेयर न किया होो ?"

" वही तो। " सोनिया ने सत्यम सिंह से सट कर लेटते हुए कहा __" वही तो डियर , मुझे भी तो पता चले कि मंत्री ने किस वजह से मेरे सत्यम को बुलाया था ?"

" दरअसल बात ऐसी है सोनिया। " सत्यम सिंह ने कहा __" कि तुम सुनोगी तो हजम नहीं कर पाओगी। "

" अरे जाने भी दो। " सोनिया मुस्कुराई __" बड़ी से बड़ी बात तुम्हारी ये सोनिया हजम कर चुकी है फिर भला ये क्या चीज़ होगी। "

" मंत्री का जब फोन आया। " सत्यम सिंह ने कहा __" और जब उसने मुझे दोस्त कहा तो ये सच है कि मुझे उस वक्त बेहद खुशी हुई थी। किन्तु उससे मिल कर तथा उसकी बातें सुनकर मेरी सारी खुशी कपूर की तरह काफूर हो गई। "

" ये तुम क्या कह रहे हो सत्यम ?" सोनिया के चेहरे पर हैरत के भाव उभरे __" ऐसी भला क्या बातें कही उसने जिसकी वजह से तुम्हारी उम्मीदों और खुशियों पर पानी फिर गया ?"

सोनिया के पूछने पर सत्यम सिंह ने मंत्री का सारा किस्सा उसे सुना दिया। ये भी बताया कि मंत्री उससे खुद मदद की उम्मीद किये बैठा है। सारी बातें सुनने के बाद सोनिया का मारे आश्चर्य के बुरा हाल हो गया। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि सत्यम सिंह जो किस्सा सुना रहा है उसमें कहीं कोई सच्चाई है। मगर उसे पता था कि सत्यम सिंह झूठ मूठ का कोई किस्सा उसे हर्गिज़ भी नहीं सुनाएगा। यानी उसके द्वारा कहा हर लफ्ज़ सही था।

" ये तो बड़ी ही हैरतअंगेज बात है सत्यम। " सोनिया के चेहरे पर मौजूद हैरत कम नहीं हो रही थी , बोली __" उस रेणुका का वो पिल्ला इस प्रदेश के मंत्री को भी अपने शिकंजे में लिया हुआ है। यकीन नहीं होता कि कल का छोकरा इतने बड़े बड़े काण्ड कर रहा है। "

" गए थे मंत्री के पास उससे मदद की उम्मीद लेकर। " सत्यम सिंह ने अजीब भाव से कहा __" मगर खुद उसकी उम्मीद बन कर आ गए। "

" तुम्हें मंत्री से साफ साफ कह देना चाहिए था सत्यम कि तुम इस मामले में उसकी कोई मदद नहीं कर सकते। " सोनिया ने कहा __" क्योंकि तुम खुद भी कुछ कर सकने की स्थित में नहीं हो। "

" उसे अपने बारे में सारी सच्चाई नहीं बता सकता था डियर। " सत्यम सिंह ने कहा __" तुम खुद सोचो कि मैं वो सब उससे कैसे बता देता ? इससे तो उसके सामने मेरी इज्ज़त का कचरा हो जाता न। वो क्या सोचता मेरे बारे में कि मैंने अपनी वासना और हवश के चलते अपने ही घर की बहू बेटियों की इज्ज़त पर अपनी नीयत ख़राब ही नहीं की बल्कि उनके साथ वो सब करने के लिए क़दम भी बढ़ाया। नहीं सोनिया नहीं , इससे तो उसकी नज़र में कोई वैल्यू ही न रह जाती। वो साला मुझे गंदी नाली का कीड़ा समझने लगता। "

" बात तो तुम्हारी ठीक ही है सत्यम। " सोनिया ने सोचने वाले अंदाज़ से कहा __" मगर अब क्या करोगे तुम ? तुमने तो उससे वादा कर लिया है कि तुम इस मामले में उसकी मदद करोगे। जबकि तुम खुद अच्छी तरह जानते हो कि तुम खुद अपनी ही मदद नहीं कर पा रहे हो , फिर उसकी मदद कैसे कर सकोगे ? मंत्री से मदद का वादा करके तुमने एक नई मुसीबत को दावत दे दी है सत्यम । वो मंत्री अब हर समय तुम्हें फोन करेगा अथवा बुलाएगा ये जानने के लिए कि तुमने उसकी मदद के रूप में अब तक क्या किया है ? उस सूरत में तुम उसे क्या जवाब दोगे ?"

" मैने उससे मदद का वादा नहीं किया है सोनिया। " सत्यम सिंह ने कहा __" सिर्फ ये कहा है कि मैं इस मामले में उसकी मदद के लिए अपनी तरफ से पूरी कोशिश करू गा बस। इसमे मुसीबत की बात भला कहॉ से आ गई ? मैने कोई एग्रीमेंट तो किया नहीं है जिसके चलते वो मुझ पर कोई ऐक्शन लेगा। सीधी सी बात है मैने उसकी मदद के लिए अपनी तरफ से कोशिश की मगर उसका काम नहीं हो सका इसमें मैं और ज्यादा क्या कर सकता था ?"

" चलो ये तो आने वाला समय ही बताएगा कि इस मामले में क्या होता है ?" सोनिया ने गहरी सास ली __" किन्तु हॉ ये ज़रूर सोचने वाली बात है कि विक्रम ने मंत्री को इस ढंग से पंगु बनाया हुआ है। हम तो ये सोच सोच कर परेशान थे कि वो यहॉ आया किस लिए था , पर अब पता चला कि वो अपनी उस प्रेमिका की वजह से यहॉ आया था। "

" हॉ सोनिया। " सत्यम सिंह के चेहरे पर सोचने वाले भाव उभरे __" मंत्री से मिल कर तथा उसकी बातों से ही इस सच्चाई का पता चला वरना तो हमें पता भी न चलता कि वो साला यहॉ आया किस वजह से था ? इतना ही नहीं उसने मेरे अलावा और किसे अपने मक्कड़ जाल में फॅसा रखा था ? मंत्री के जिन लड़कों ने उस प्राची नाम की लड़की का रेप किया था वो विक्रम की प्रेमिका थी और वो गंभीर हालत में सोनपुर थाना क्षेत्र में हमारी बेटी साक्षी के द्वारा पाई गई थी। "

" एक मिनट सत्यम। " सोनिया के चेहरे पर एकाएक ही चौंकने के भाव उभरे थे , फिर उसने कहा __" मुझे अब सारा मामला समझ आ गया है। ये भी समझ आ गया है कि हमारी बेटी हमारे खिलाफ़ हो कर क्यों उस विक्रम का साथ देने लगी है जिस विक्रम की वो अब तक शक्ल भी नहीं देखना चाहती थी। "

" क्या समझ आ गया है तुम्हें ?" सत्यम सिंह के माथे पर सहसा शिकन उभरी।

" ये मामला प्राची के रेप से ही शुरू हुआ है। " सोनिया ने कहना शुरू किया __" हॉ सत्यम ये सारी कहानी प्राची के रेप केस से ही शुरू हुई है। मंत्री के द्वारा बताई गई सारी बातों पर ग़ौर करने के बाद इसकी कड़ियॉ कुछ इस प्रकार से मेरे दिमाग़ में जुड़ी हैं , ग़ौर से सुनो। प्राची नाम की जिस लड़की का रेप हुआ वो गंभीर हालत में हमारी बेटी को मिली। साक्षी चूँकि पुलिस वाली थी इस लिए ये उसकी ड्यूटी थी कि वो इस मामले में रेप की गई लड़की के रेपिस्टों की तलाश करे और उन्हें कानूनन सज़ा दिलवाए। किन्तु उससे पहले उसने ये किया होगा कि गंभीर हालत में पाई गई उस लड़की को उसने हॉस्पिटल में भर्ती कराया

तथा लड़की के विषय में जानकारी भी हासिल की होगी। साक्षी ने प्राची से तहकीक़ात के रूप में उस लड़की से उसके साथ हुए उस हादसे की सच्चाई प्राप्त की होगी। इसी सच्चाई के दौरान उसे पता चला होगा कि प्राची वो लड़की है जो उसके चचेरे भाई विक्रम से प्यार भी करती थी और विक्रम भी उससे प्यार करता था। किन्तु उसे ये समझ में न आया होगा कि दो प्यार करने वाले एक दूसरे से दूर कैसे हैं ? क्योंकि अगर दूर न होते तो प्राची के साथ वो हादसा होता ही नहीं। इस लिए साक्षी ने प्राची से उसके और विक्रम के बीच की दूरियों के बारे में पूछा होगा तब प्राची ने उसे बताया होगा कि सच्चाई क्या है। वो सच्चाई ज़रूर ऐसी रही होगी जिसने साक्षी के दिल में चोंट की होगी। प्राची के द्वारा ही उसे पता चला होगा कि विक्रम असल में कितना अच्छा लड़का है तथा ये भी कि उसके साथ उसके बड़े पापा ने कितना अत्याचार किया है। प्राची की बातों ने साक्षी को सोचने पर मजबूर कर दिया होगा। किन्तु उसे इतना जल्दी इस बात पर यकीन नहीं आया होगा कि हमने विक्रम व विक्रम की मॉ बहन के साथ ग़लत किया हो सकता है। अतः उसने अपने तरीके से इस सबका पता लगाने का सोचा होगा। याद करो सत्यम ये उसी समय की बात है जब गीता यहीं थी और एक रात मैं तुम और जयदीप साथ में ही वो मौज मस्ती कर रहे थे। मुझे पूरा यकीन है कि सच्चाई का पता लगाने की राह पर चलते हुए साक्षी उस रात हमारी वो रास लीला देख ली होगी। मैं ऐसा इस लिए कह रही हूँ क्योंकि उस रात के बाद से ही साक्षी का बिहैवियर हमारे प्रति बदला था। याद करो दूसरे दिन कैसे उसने जयदीप को खरी खोटी सुना दी थी। उस वक्त हमें पता नहीं था किन्तु अब समझ आ रहा है कि उसने जयदीप को इतने गुस्से से क्यों झिड़का था ? ख़ैर , उसके बाद वो बड़ी सफाई से गीता को भी यहॉ से निकाल ले गई। उसको पता चल गया होगा कि तुम अपनी ही बहन को अपने नीचे लेटाने का मंसूबा बनाए बैठे हो। इस लिए वो गीता को बड़ी सफाई से यहॉ ले गई। इस सबसे उसे और कुछ जानने की ज़रूरत ही नहीं रह गई थी। उसने उस रात हम तीनों की सारी बातें सुन ली होगी और जान गई होगी कि विक्रम की मॉ के साथ असल में हुआ क्या था ? अथवा हमने उसके साथ किया क्या था ? इतना सब कुछ काफी था उसका हमारे खिलाफ होने के लिए और विक्रम के साथ मिल जाने के लिए। इन्हीं सब के दौरान उसने विक्रम को मुंबई से बुलाया होगा। किन्तु उसके पास विक्रम का कोई कॉटेक्ट नहीं था इस लिए उसने विक्रम के क़रीबी दोस्तों के बारे में पता लगाया होगा। विक्रम के दोस्त के रूप में उसे रौनक मिला , रौनक को उसने प्राची का वास्ता देकर कहा होगा कि वो विक्रम को यहॉ बुला ले। बस उसके बाद क्या क्या हुआ इसका तो पता ही है तुम्हें। "

सोनिया की इतनी लम्बी चौड़ी थ्यौरी सुन कर सत्यम सिंह आश्चर्यचकित रह गया था। काफी देर तक उसके मुख से कोई बोल न फूटा। फिर सहसा उसके चेहरे पर सोनिया के प्रति प्रशंसा के भाव उभरे। उसे सोनिया की सूझ बूझ और दूरदर्शिता की दाद देनी पड़ी। जबकि....।

" अब रहा सवाल इस बात का कि साक्षी ने इसके पहले प्राची के साथ हुए उस रेप हादसे पर उन रेपिष्टों को कानूनन सज़ा क्यों नहीं दिलवाई ?" सोनिया ने मानो पुनः कहना शुरू किया __" तो इसका जवाब तुम मंत्री के द्वारा पा ही चुके हो। मंत्री के अनुसार इंस्पेक्टर साक्षी ने प्राची रेप केस के रेपिस्टों को पकड़ कर उन्हें कानूनन सज़ा दिलवाने की ज़रूर कोशिश की हो सकती है किन्तु मामला क्योंकि मंत्री के बच्चों का था इस लिए मंत्री की ताकत व पहुँच के चलते कानूनन भी कुछ नहीं हो सकता था इस लिए साक्षी के आला

अफसर ने भी साक्षी को इस मामले में हस्ताक्षेप न करने की सलाह दी होगी। प्राची के मॉ बाप को भी यही समझ आया होगा , इसी लिए उन्होंने भी कोई केस करने का ख़याल अपने ज़हन से निकाल दिया होगा। दैट्स इट। "

" तुमने तो इस तरह इन सब बातों को खोल दिया है जैसे कि तुम इन सब चीज़ों का लाइव टेलीकास्ट देख रही थी और उसकी कमेंट्री भी कर रही थी। " सत्यम सिंह प्रभावित लहजे में बोला __" यकीनन तुम्हारा दिमाग़ काफी शार्प है। ख़ैर यहॉ पर इसके आगे की कड़ी कुछ इस तरह है। विक्रम जब मुंबई से आया और उसने अपनी लवर की वो हालत देखी तो उससे सहन नहीं हुआ। बल्कि उसका खून खौल गया होगा। किन्तु उसे भी समझ आ ही गया होगा कि वो प्राची को कानूनन कोई न्याय नहीं दिला सकता। क्योंकि रेप करने वालों के आका बहुत बड़ी हस्ती थे। मगर जवान खून इसके बाद भी शान्त न हुआ होगा। तब उसने खुद उन लड़कों को सज़ा देने का सोचा होगा जिन लड़कों ने उसकी प्रेमिका के साथ वो घिनौना कुकर्म किया था। विक्रम के फैसले पर साक्षी ने भी अपनी सहमति दी होगी और उसकी मदद करने का वादा भी किया होगा। मंत्री के ही अनुसार , विक्रम और साक्षी मंत्री के फार्महाउस पहुॅचे और वहॉ से मंत्री के उन बच्चों को धर लिया और वहीं से ही उनके हाथ कुछ ऐसे सबूत भी लगे जो मंत्री को विक्रम की मुट्ठी में कैद करने के लिए काफी थे दैट्स आल। "

" बिलकुल। " सोनिया ने कहा __" मंत्री को जब पता चला कि उसके बच्चों का किडनैपर सोनपुर के ठाकुर सत्यम सिंह का भतीजा है तो उसने आज तुम्हें ये सोच कर फोन किया कि तुम इस मामले में उसकी यकीनन मदद कर सकते हो। ये अलग बात है कि तुम खुद भी मंत्री की तरह ही विक्रम की मुट्ठी में कैद हो। "

" ये क्या कह रही हो तुम ?" सत्यम सिंह चौका __" मैं भला कैसे उस हरामज़ादे की मुट्ठी में कैद हूॅ ?"

" कमाल है डियर। " सोनिया मुस्कुराई __" ये बात कैसे भूल सकते हो तुम कि विक्रम के पास तुम्हारी वो सब चीज़ें हैं जो तुम्हें किसी भी पल कानून की भयानक चपेट में ले लेने के लिए काफी हैं। "

" ओह हॉ वो न। " सत्यम सिंह को अचानक ही जैसे सब कुछ याद आ गया और ये भी सच है कि वो सब याद आते ही उसके समूचे जिस्म में झुरझुरी सी दौड़ गई थी। उससे आगे कुछ कहते न बन सका था।

" बड़ी गंभीर सिचुएशन है सत्यम। " सोनिया ने उसके चेहरे के भावों को पढ़ते हुए गंभीरता से कहा __" सबकुछ कर सकने की कूबत होते हुए भी कुछ नहीं कर सकते , न तुम और ना ही वो मंत्री। मगर मुझे एक बात ये समझ नहीं आती कि जब इतना मसाला विक्रम के पास तुम दोनो के खिलाफ़ मौजूद है तो वो उस मसाले का उपयोग क्यों नहीं करता ?"

" किया तो था उपयोग उसने। " सत्यम सिंह ने कहा __" उस मसाले के आधार पर ही तो

उसने नकली सी.बी.आई. वालों को भेजा था मुझे यहॉ से ले जाने के लिए। "

" अरे हॉ डियर। " सोनिया के मस्तिष्क में जैसे एकाएक ही बल्ब रौशन हुआ , बोली __" इस नये चक्कर को तो मैं भूल ही गई थी। ये भी तो सोचने का एक जटिल मुद्दा है। आख़िर विक्रम ने ऐसा किस वजह से किया होगा ? नकली सी.बी.आई. वालों को भेज कर उसने तुम्हें ग़ैर कानूनी धंधा करने तथा ग़ैर कानूनी पदार्थ रखने के जुर्म में गिरफ्तार करवाया और फिर दो दिन बाद बिना तुमसे कुछ पूछताँछ किये छोंड़ भी दिया। सोचने वाली बात है कि इस सबसे उसे क्या मिला होगा ? या फिर इससे उसका कौन सा फायदा हुआ होगा ?"

" साला ऐसे ऐसे काम करता है कि कुछ समझ में ही नहीं आता। " सत्यम सिंह ने कठोर भाव से कहा __" सोचते सोचते दिमाग़ की न से तक दर्द करने लगती हैं। मगर मजाल है जो कुछ समझ आए। हद हो गई ये तो। साला कल का छोकरा इतना शातिर होगा ये तो ख्वाब में भी नहीं सोचा था मैने। "

" मुझे कुछ कुछ समझ आ रहा है उसके ऐसा करने का चक्कर। " सोनिया ने ये कह कर मानो सत्यम सिंह के ऊपर बम्ब फोड़ दिया था।

"क ..क .. क्या समझ आ रहा है तुम्हें ?" सत्यम सिंह बुरी तरह हैरानी से पूछ बैठा था।

" ये तो तुम भी समझते हो न। " सोनिया ने समझाने वाले अंदाज़ से कहा __" कि विक्रम की नज़र में ये एक जंग है जो उसने हमारे साथ शुरू की हुई है। जब कोई इंसान किसी से जंग शुरू करता है तब वो सबसे पहले अपनी कमज़ोरियों को अपने प्रतिद्वंदी से या तो छुपाता है या फिर उसकी पहुॅच से बहुत दूर कर देता है। "

" तुम क्या कह रही हो ?" सत्यम सिंह उलझ कर रह गया , बोला __" मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा ?"

" याद करो सत्यम। " सोनिया ने कहा __" हमारे आदमी ने हमें क्या ख़बर दी थी ? यही न कि विक्रम मुंबई से आए अपने दोस्त के साथ रौनक की फैमिली को एम्बुलंस में बैठा कर चला गया था और एम्बुलंस के आगे आगे एक जीप भी थी। जिसमें कि यकीनन साक्षी ही थी। यहॉ पर मेरे कहने का मतलब ये है कि विक्रम ने ऐसा क्यों किया ? आख़िर उसे क्या ज़रूरत थी रौनक और उसकी फैमिली को अपने साथ कहीं ले जाने की ? इस सवाल के बारे में अगर ग़ौर से सोचोगे तो जवाब ज़रूर मिल जाएगा। मतलब ये कि रौनक और रौनक की फैमिली विक्रम की कमज़ोरी थे। उसने सोचा होगा कि देर सवेर हमे इस बात का पता चल ही जाएगा कि उसके दोस्त रौनक ने उसकी सहायता की थी और वो यहॉ उसके ही घर में रुका था। अतः हम इसके लिए उसके दोस्त और उसकी फैमिली को कोई नुकसान भी पहुॅचा सकते हैं। ये सोच कर उसने रौनक आदि को सुरक्षित रखना अपना कर्तब्य समझा। किन्तु उसके सामने समस्या रही होगी कि वो रौनक आदि को सुरक्षित कैसे करे ? उसकी समस्या का समाधान साक्षी ने किया होगा। उसने उन सब को किसी ऐसी जगह चलने को कहा होगा जहॉ पर वो सब लोग पूर्णरूप से सुरक्षित रह सकते थे। यहॉ पर ये भी समझ आ रहा है कि वो लोग एम्बुलंस से ही क्यों गए थे ? दरअसल एम्बूलेंस ही एक ऐसा किफायती वाहन हो

सकता था जिसमें सब लोग बड़े आराम से तथा बिना किसी बाधा के कहीं भी जा सकते थे। हम या हमारे आदमी सोच ही नहीं सकते थे कि वो लोग किसी एम्बूलेंस जैसे वाहन में यहॉ से जा सकते हैं। एम्बुलंस के आगे आगे कुछ फॉसले पर साक्षी अपनी जिप्सी में जा रही थी। फॉसले पर इस लिए ताकि अगर हम या हमारे आदमी रास्ते में कहीं मिलें भी तो वो उस पर शक न कर सकें किसी बात का। कहने का मतलब ये कि साक्षी की मदद से विक्रम ने अपनी एक कमज़ोरी को हमारी पहुॅच से दूर कर दिया। "

" मगर इसमें ये कहॉ फिट बैठता है कि वो इस सबके लिए मुझे ऐसे चक्कर में फॅसा कर बाद में छोंड़ भी दे ?" सत्यम सिंह सहसा बीच में ही बोल पड़ा था __" और वैसे भी ये वाला चक्कर तो उस सबके बहुत बाद अभी हुआ है। "

" मेरी बात तो पूरी होने दो डियर। " सोनिया ने कहा __" मैं सब कुछ विस्तार से ही बता रही हूॅ और तुम्हारे सवाल की तरफ ही आ रही हूॅ। विक्रम के यहॉ आने पर हमने ये अनुमान लगाया था कि संभव है कि वो यहॉ पर सुंदर के बीवी बच्चों को लेने आया हो। हलॉकि ये भी एक अहम बात है सत्यम , क्योंकि आज के हालात में विक्रम की दूसरी कमज़ोरी सुंदर के बीवी बच्चे भी हैं। इस लिए संभव है कि वो उन्हें भी अपने साथ ही ले गया हो। सुंदर ने उससे कहा होगा कि अगरसंभव हो सके तो वो अपने साथ अपनी चाची व अपने भाई बहन को भी ले आए। विक्रम मुंबई से यही सोच कर आया रहा होगा कि वो प्राची को देखेगा और फिर अपनी छोटी चाची व उसके बच्चों को साथ ले कर पुनः मुंबई लौट जाएगा। मगर यहॉ आने के बाद प्राची के मामले में वो एक अलग ही चक्कर में पड़ गया। ऐसे माहौल में वो भला वो कैसे यहॉ से चला जाता ? दूसरी बात यहॉ पर तो वैसे भी उसके लिए खतरा ही था। अतः अपने साथ साथ अपनी कमज़ोरियों को भी दूर करना उसकी पहली प्राथमिकता थी। साक्षी के द्वारा उसे कोई सुरक्षित जगह तो ज़रूर मिल गई रही होगी मगर उससे कदाचित वो संतुष्ट न रहा होगा। वो चाहता रहा होगा कि उसकी सभी कमज़ोरियॉ हमारी पहुॅच से काफी दूर होनी चाहिए और काफी दूर तो मुंबई ही थी। अतः उसने फैसला किया होगा कि सबको मुंबई भेज दिया जाए। उधर उसे इस बात का भी एहसास रहा होगा कि साक्षी अब चूॅकि हमारे खिलाफ होकर उसकी मदद कर रही है इस लिए अब उस पर भी खतरा ही है और वो उसे खतरा के बीच में अकेला छोंड़ भी नहीं सकता था। तब उसने एक प्लान बनाया और वो प्लान यही था कि वो तुम्हें कम से कम दो दिन के लिए सी.बी.आई. की गिरफ्त में डलवा दे। इसका फायदा ये था कि जब तुम ही मैदान पर न होते तो साक्षी पर खतरे की सीमा न के बराबर ही रह जाती। उधर प्लान के मुताबिक विक्रम अपनी कमज़ोरियों को लेकर वापस मुंबई चला गया। मुंबई में सबको छोंड़ कर वो उसी दिन वापस यहॉ के लिए चल दिया। "

" तो तुम्हारे हिसाब से विक्रम ने इसी सबके लिए मुझे ऐसे चक्करें फॉसा था ?" सत्यम सिंह ने गहरी सास लेते हुए कहा __" मगर तुमने ये कैसे कह दिया कि विक्रम उन सबको लेकर मुंबई ही गया था ?"

" इस आधार पर कि उसने तुम्हें दो दिन के लिए ही उस चक्कर में फॉसा था। " सोनिया ने कहा __" इन दो दिनों में वो आराम से मुंबई जाकर लौट भी सकता है। उसने तुम्हें नकली

सी.बी.आई. के जाल में फॉसा जबकि वो चाहता तो तुम्हें सचमुच में ही रियल सी.बी.आई. की गिरफ्त में पहुॅचा देता। मगर उसने ऐसा नहीं किया। उसका मकसद सिर्फ इतना ही था कि तुम दो दिन के लिए अंडरग्राउण्ड रहो "

" यकीनन ऐसा ही हुआ लगता है। " सत्यम सिंह ने कहा __" ख़ैर , सोचने वाली बात है कि साक्षी उसकी मदद कर रही है और वो उसे तथा उसके साथ साथ रौनक आदि को भी सुरक्षित ले गई थी। मगर सवाल है कि ऐसी कौन सी जगह वो ले गई होगी ?"

" किसी ऐसी जगह। " सोनिया ने सोचने वाले भाव से कहा __" जहॉ पर किसी ग़ैर का आना जाना न हो और जहॉ पर उन्हें किसी के खतरे का भी आभास तक न हो। "

" ऐसी कौन सी जग .....। " सत्यम सिंह कहते कहते एकदम से रुक गया था। उसके चेहरे पर चौंकने के भाव उभर आए और फिर वो सहसा अजीब भाव से बोल पड़ा __" अरे .... ओह माई गॉड मैं भी न बहुत बड़ा बेवकूफ हूॅ सोनिया। "

" क्यों , क्या हुआ ?" सोनिया उसके मुख से ये सुन कर चौंक पड़ी थी , बोली __" ऐसा क्यों कह रहे हो तुम ?"

" क्यों न कहूॅ यार ?" सत्यम सिंह एकाएक ही आहत भाव से बोला __" मैं बेवकूफ ही तो हूॅ। इस बारे में तो मुझे पहले ही सोच लेना चाहिए था कि साक्षी गीता को लिये कहॉ रह सकती है ?"

" क्या मतलब ??" सोनिया के चेहरे पर हैरानी के भाव उभरे।

" तुम्हें याद है न कि हमने अपने तीनों बच्चों के नाम एक एक फार्महाउस किया था ?" सत्यम सिंह ने आवेशयुक्त भाव से कहा था।

" ओह हॉ। " सोनिया एकदम से उछल पड़ी थी। एकदम से जैसे उसे सत्यम सिंह की बात समझ में आ गई थी , अतः बोली __" तो क्या तुम ये कह रहे कि साक्षी ....?"

" हॉ सोनिया। " सत्यम सिंह सोनिया की बात पूरी होने से पहले ही बोल पड़ा __" मैं यही कह रहा हूॅ कि साक्षी उस समय गीता को लिए अपने उसी फार्महाउस पर गई होगी जिस फार्महाउस को मैने उसके नाम किया था। सोचो सोनिया वो जगह उन सबके लिए कितनी आसान तथा महफूज हो सकती है। उफ्फ ये बात मेरे ज़हन में पहले क्यों नहीं आई वरना हम पहले ही साक्षी गीता आदि सबको पकड़ सकते थे। बहुत बड़ी ग़लती हो गई सोनिया , मैं खुद अपनी ही ग़लती की वजह से जीती हुई बाज़ी को हार गया। "

" अरे तो अभी भी क्या बिगड़ा है सत्यम ?" सोनिया ने कहा __" हो सकता है कि वो सब अभी भी वहीं पर मौजूद हों। तुम्हें तुरंत ही वहॉ जाना चाहिए। "

" नहीं सोनिया। " सत्यम सिंह ने पूरी मजबूती से गर्दन को न में हिला कर कहा __" अब कुछ नहीं हो सकता। वो लोग अब हमें फार्महाउस पर नहीं मिलेंगे। क्योंकि ये बात तो वो भी

समझते रहे होंगे कि फार्महाउस उनके लिए कुछ समय के लिए ज़रूर सुरक्षित जगह हो सकती है मगर हमेशा के लिए नहीं। ये मत भूलो कि साक्षी के साथ में विक्रम भी है। वो कमीना बहुत शातिर है। अब तक की उसकी सारी गतिविधि यॉ ये बताती हैं कि वो हमसे दो क़दम आगे ही रहता है। हम जिस चीज़ के बारे में सोचते हैं वो शातिर लड़का उस चीज़ को पहले ही अंजाम दे चुका होता है। "

" फिर भी एक बार पता करने में क्या जाता है ?" सोनिया ने कहा __" हो सकता है वो अभी भी वहीं पर हों। उनके दिमाग़ में ये सोच होगी कि उनके वहॉ होने का पता तुम्हें ज़रूर चलेगा इस लिए तुम फिर ये सोच कर वहॉ उनका पता करने नहीं जाओगे कि अब वो वहॉ हो ही नहीं सकते हैं। ये एक मनोवैज्ञानिक सोच है सत्यम , इसी के आधार पर वो तुम्हारे दिमाग़ को पढ़ता है और वही करता है जिसकी तुम उम्मीद ही नहीं करते। कहने का मतलब ये कि तुम इस वक्त ये सोच रहे हो कि वो लोग वहॉ होंगे ही नहीं अत: तुम उनका पता करने नहीं जाओगे जबकि वो तुम्हारी इसी सोच के चलते वहॉ मौजूद रहेंगे। "

" मनोविज्ञान के रूप में तुम्हारा तर्क अच्छा है और अपनी जगह सही भी है। " सत्यम सिंह ने कहा __" मगर मुझे नहीं लगता है कि विक्रम जैसा शातिर दिमाग़ लड़का इतना बड़ा जोखिम उठाएगा। बल्कि संभव है कि उसने कोई दूसरा सुरक्षित ठिकाना ढूँढ़ लिया होगा। फिर भी अगर तुम्हारा मन नहीं मानता तो ठीक है मैं अभी पता करवा लेता हूँ। "

ये कह कर सत्यम सिंह ने सिरहाने की तरफ ही रखे अपने लैण्डलाइन फोन का रिसीवर उठाकर कान से लगाया और उस पर कोई नंबर पंच करने लगा। थोड़ी देर बाद ही उसने अपने किसी आदमी से कहा कि वो फला जगह पर बने उसके फार्महाउस में जाए और पता करे कि वहॉ इस वक्त कौन कौन मौजूद है? अपने आदमी को हुकुम देने के बाद सत्यम सिंह ने रिसीवर वापस केड्रिल पर रख दिया।

" थोड़ी ही देर में दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा डियर। " सत्यम सिंह ने कहा __" मेरा आदमी कुछ ही देर में पता करके मुझे उस सबकी सूचना फोन पर दे देगा। "

" इस बात का यकीन तो मुझे भी है सत्यम। " सोनिया ने कहा __" वो लोग फार्महाउस में नहीं होंगे मगर इसके बावजूद एक बार पता करना भी कोई हर्ज़ की बात नहीं है। ख़ैर , चलो ये मान के चलते हैं कि वो लोग फार्महाउस पर नहीं होंगे तो सवाल ये है कि उन लोगों ने आख़िर किस जगह पर अपना दूसरा सुरक्षित ठिकाना बनाया होगा ?"

" इस बारे में भला क्या कहा जा सकता है ?" सत्यम सिंह ने गहरी सास ली __" सच कहूँ तो मेरा अब दिमाग़ ही काम नहीं कर रहा है। समझ में नहीं आता कि आख़िर ऐसा क्या करू जिससे कि सब कुछ मेरी मुट्ठी में आ जाए ?"

" सबसे पहले तो तुम्हें अपनी सोच का दायरा बड़ा करना होगा सत्यम। " सोनिया ने उसे ज्ञान देने वाले अंदाज़ से कहा __" तुम्हें विक्रम की सोच से दो नहीं बल्कि चार क़दम आगे

की सोच रखनी होगी। तभी वो सब संभव हो सकता है जो तुम चाहते हो। "

" सबसे बड़ी समस्या ये है डियर कि उसके पास मेरे खिलाफ वो ग़ैर कानूनी सबूत हैं। " सत्यम सिंह बेचैनी से बोलाा __" वो साला उनके आधार पर कभी भी कानून की चपेट में ला सकता है। "

" वो उन सबूतों इस्तेमाल नहीं करेगा सत्यम। " सोनियाा ने कहाा __" अगर करना ही होता तो वो कब का कर चुका होता। वो सबूत तो उसके पास महज तुरुप के इक्के की तरह मौजूद हैं। यानी जब वो दूसरे किसी तरीके से तुमसे अपना बदला नहीं ले पाएगा तब वो उनका इस्तेमाल करेगा। कदाचित उसके मन में ये सोच है कि वो तुम्हें कानून की सलाखों के पीछे पहुँचा कर आसान सज़ा नहीं देना चाहता। बल्कि खुद अपने हाथाे से तुम्हें कोई ऐसी सज़ा देना चाहता है छिसके बारे में तुमने ख्वाब में भी न सोचा हो। "

" यकीनन तुम सही कह रही हो सोनियाा। " सत्यम सिंह के जिस्म में झुरझरी सी हुई थी , बोलाा __" उसके मन में यकीनन यही होगा। वो मुझे खुद अपने हाथाे से सज़ा देना चाहता है। दूसरी बात , जिस तरह से उसने मुझे फँसा रखा है उससे वो निश्चय ही अपने मंसूबों में कामयाब हो जाएगा। मगर मुझे ये समझ में नहीं आता कि जब उसकी मुट्ठी में सब कुछ है तो वो देर किस बात पर कर रहा है ?"

" यही तो सोचने वाली बात है सत्यम। " सोनियाा के चेहरे पर सोचों के भाव उभरे __" वो इतना शातिर है कि हम उसकी सोच को समझ हीं नहीं पाते। जबकि वो हमारी उम्मीदों से परे वाला काम कर जाता है। वो चाहे तो यकीनन एक झटके में ऐसा कुछ कर सकता है जिसके तहत हम सब उसके सामने दीन हीन दसा में हाज़िर हो जाएँ मगर वो ऐसा इस लिए नहीं कर रहा क्योंकि उसे लगता होगा कि ये काम तो वो कभी भी कर सकता है। वो कुछ ऐसा करने की फिराक़ में होगा जो हमारे लिए हद से भी ज्यादा असहनीय हो। यकीनन ऐसा ही हो सकता है सत्यम और कदाचित वो ऐसा कर भी रहा है। "

" क क्या कर रहा है वाे ?" सत्यम सिंह मानो अंदर ही अंदर कॉप कर रह गया था।

" सबसे पहले तो उसने यही किया। " सोनियाा ने कहाा __" कि उसने हमारी बेटी को हमसे अलग कर अपने साथ मिला लिया। क्या ये बड़ी बात नहीं है सत्यम कि हमारी जो बेटी उसकी शक्ल तक देखना पसंद नहीं करती थी वो आज शायद विक्रम को ही सच्चे दिल से अपना भाई मानने लगी है और इतना ही नहीं उसके लिए अपने ही माॅ बाप के खिलाफ़ हो गई। अगर उसे हमारी हर असलियत का पता चल चुका है तो ये भी संभव है कि उसने हमसे रिश्ता भी तोड़ लिया हो। सारी बातों को ग़ौर से सोचो तो समझ में आता है कि वास्तव में विक्रम ने कितना बड़ा तीर मार लिया है। "

" इसमे कोई संदेह नहीं है यार। " सत्यम सिंह ने गहरी सास लेते हुए कहाा __" साक्षाी को अपने साथ इस तरह से मिला लेना बहुत बड़ी बात है। "

" और मुझे तो ये भी लगता है सत्यम। " सोनिया ने सोचने वाले अंदाज़ से कहा __" कि विक्रम का अगला क़दम हमारी दूसरी बेटी मानुषी को भी अपनी तरफ मिला लेना होगा। मानुषी को ज्यादा दुनियादारी का पता नहीं है। किन्तु हॉ ये सच है कि वो भी अपनी बड़ी बहन की ही तरह सच्चाई की राह पर चलने की सोच रखती है। इस लिए अगर उसे हमारी असलियत के बारे में पता चल गया तो ये निश्चित बात है कि वो भी हमारे खिलाफ़ हो जाएगी। वैसे क्या पता हो ही गई हो। "

" ऐसा तुम कैसे कह सकती हो भला ?" सत्यम सिंह को अपने पैरों तले से मानो ज़मीन खिसकती हुई महसूस हुई , बोला __" नहीं नहीं ऐसा नहीं हो सकता। पता नहीं क्या अनाप शनाप बोले जा रही हो तुम ?"

" विक्रम की सोच से अगर चार क़दम आगे चलना है तो ऐसा सोचना ही पड़ेगा डियर हस्बैण्ड। " सोनिया ने मुस्कुराते हुए कहा __" मैं ऐसा बेवजह ही नहीं कह रही हूँ बल्कि ऐसा कहने की मेरे पास कुछ पुख्ता वजहें भी हैं। "

" क कैसी वजहें ?" सत्यम सिंह के चेहरे पर हैरत के भाव उभरे।

" पिछली दो तीन दिन की घटनाओं पर ज़रा बारीकी से ग़ौर करो डियर। " सोनिया ने कहा __" विक्रम ने तुम्हें नकली सी.बी.आई. के जाल में फँसा कर क्यों अंडरग्राउण्ड किया ? इसका जवाब ये है कि उसे अपनी कमज़ोरियों को सुरक्षित या तुम्हारी पहुँच से दूर करना था। किन्तु उसे लगा होगा कि उसके मुंबई चले से यहॉ साक्षी और गीता अकेली पड़ जाएँगी। हालात ऐसे थे कि उन दोनो पर किसी भी समय तुम्हारे रूप में कोई संकट आ सकता था। अतः विक्रम ने एक तीर से दो शिकार किया , पहला ये कि तुम्हें नकली सी.बी.आई. की कैद में रख कर सुरक्षित सबको यहॉ से मुंबई ले जाएगा और दूसरा ये कि उसके यहॉ न रहने पर साक्षी व गीता के ऊपर तुम्हारा कोई संकट भी न रहता। दो दिन बाद उसने तुम्हें इसी लिए छोंड़ दिया क्योंकि वो मुंबई से वापस यहॉ आ गया और फिर आते ही उसने सबसे महत्वपूर्ण काम ये किया कि फार्महाउस से साक्षी व गीता को अपने साथ किसी दूसरी ऐसी जगह शिफ्ट किया जहॉ पर तुम्हारा खतरा न के बराबर ही हो। ये उसी दिन की बात है सत्यम जब तुम्हें सी.बी.आई. वाले ले गए थे , तब मैने साक्षी को फोन लगाया था तुम्हारे बारे में बताने के लिए मगर उसने मेरा फोन नहीं उठाया बल्कि काट दिया था। तब मैने मानुषी को फोन लगाया और उसे बताया कि यहॉ क्या हुआ है। उसे मैने ये भी बताया कि उसकी बड़ी बहन हमारे खिलाफ हो गई है। मेरी बात सुन कर वो घबरा गई और उसने यहॉ आने के लिए कहा था। यहॉ पर ग़ौर करने की बात ये है कि संभव है कि मानुषी ने मुझसे बात करने के बाद साक्षी से बात की हो और उससे पूछा हो कि वो क्यों मॉम डैड के खिलाफ हो गई हैं। उसके पूछने पर संभव है कि साक्षी ने उसे हमारी सारी सच्चाई बता दी हो। हलॉकि ऐसा हुआ नहीं है , क्योंकि अगर ऐसा हुआ होता तो यहॉ आने के बाद मानुषी का बिहैवियर कुछ तो अलग हमें समझ ही आता। किन्तु वो यहॉ आने पर नार्मल ही थी। इसका मतलब कि साक्षी ने उसे कुछ नहीं बताया था उस दिन। किन्तु हॉ ऐसा हो सकता है कि मानुषी के द्वारा मॉम डैड के खिलाफ़ हो जाने का कारण पूछने पर साक्षी ने उससे बस यही कहा हो कि वो खुद सच्चाई का पता लगाए। अतः संभव है कि मानुषी अब बड़ी ही

सफाई से सच्चाई का पता भी लगा रही हो। दूसरी बात विक्रम के यहॉ से जाने के दिन की कॉउटिंग करें तो पता चलता है कि विक्रम उसी दिन वापस यहॉ के लिए मुंबई से चल दिया था जिस दिन हमारी बेटी मानुषी वहॉ से चली थी और फिर आज यहॉ पहुॅची है। मेरे कहने का मतलब ये है कि ऐसा यकीनन हो सकता है कि विक्रम और मानुषी एक ही ट्रेन से यहॉ आए हों अथवा ऐसा भी हो सकता है कि ट्रेन में ये दोनो मिले भी हों और उनके बीच कोई बातचीत भी हुई हो। "

" अब बस भी करो यार। " सत्यम सिंह सहसा खीझते हुए बोल पड़ा था __" तुम तो ऐसी ऐसी बातें नॉन स्टाप करती चली जा रही हो जो कि अब मेरे सिर के ऊपर से जाने लगी हैं। मुझे समझ में नहीं आता कि ये सब बातें तुम्हारे दिमाग़ में आती कैसे हैं ? कभी ऐसा तो कभी वैसा , कभी ये हो सकता है तो कभी वो हो सकता है। व्हाट दा हेल इज दिस यार ? तुम तो मेरे दिमाग़ का अपनी बातों से ही दही किये दे रही हो। "

" कमाल करते हो डियर हस्बैण्ड। " सोनिया ने सहसा खिलखिला कर हॅसते हुए कहा __" अगर ऐसा नहीं सोचोगे तो कैसे विक्रम की सोच से आगे जा पाओगे ? कैसे उसे अपनी मुट्ठी में कैद कर पाओगे तुम ?"

" भाड़ में जाए विक्रम। " सत्यम सिंह सहसा गुस्से में बोल पड़ा __" साले ने जीना हराम कर दिया है मेरा। ऊपर से मेरी बेटी को भी अपने साथ मिला लिया उसने। बस एक बार .... एक बार मेरे सामने आ जाए वो। उसके बाद मैं बताऊॅगा कि मेरे साथ ऐसी चुहलबाज़ी करने का अंजाम क्या होता है ?"

" सोचने वाली बात है डियर हस्बैण्ड। " सोनिया ने सत्यम सिंह के चेहरे की तरफ देखते हुए कहा __" जो लड़का बग़ैर सामने आए तुम्हारी ये हालत कर रखा है वो अगर खुल कर सामने आ जाए तो सोचो क्या हो ?"

" क्या होगा ?" सत्यम सिंह ताव में बोला __" साले मॉ बहन बीच चौराहे पर ठोक ूॅगा मैं। एक बार सामने बस आ जाए वो हरामज़ादा। "

" इसका उल्टा भी तो हो सकता है डियर। " सोनिया ने सहसा मुस्कुरा कर कहा __" हॉ डियर इसका उल्टा भी तो हो सकता है। यानी कि तुम तो बीच चौराहे पर उसकी मॉ बहन को न ठोक पाओ मगर वो सच में ही तुम्हारे बीवी बच्चों को बीच चौराहे पर रौंद डाले। "

" ये क्या बकवास कर रही हो तुम ?" सत्यम सिंह ने कठोर भाव से कहा __" होश में तो हो न तुम ? ये तुम कैसी वाहियात बातें कर रही हो ?"

" सच हमेशा कड़वा ही लगता है मेरे बलम। " सोनिया ने सत्यम सिंह के चेहरे को अपनी एक हॅथेली से सहला कर कहा __" मगर सोचो तो सही। हालात जिस तरह से उसकी मुट्ठी में हैं उससे क्या वो ये सब नहीं कर सकता ?"

सोनिया की इस बात पर सत्यम सिंह कुछ बोल न सका। कदाचित उसे एहसास हो गया था कि सोनिया सच कह रही थी। सच ही तो था, वो भला क्या कर सकता था विक्रम का? जबकि विक्रम अगर चाहे तो यकीनन वो सब कर सकता है जिस चीज़ की बात सोनिया कर रही थी। ख़ैर अभी सत्यम सिंह ये सब सोच ही रहा था कि तभी सिरहाने की तरफ रखा लैण्डलाइन फोन बज उठा। सत्यम सिंह ने हाथ बढ़ा कर रिसीवर उठाया और कान से लगा लिया। दूसरी तरफ से कुछ देर तक जाने क्या कहा। जवाब में ये कह कर सत्यम सिंह ने रिसीवर वापस रख दिया कि "चलो कोई बात नहीं"।

" क्या कहा तुम्हारे आदमी ने ?" सत्यम सिंह के रिसीवर रखते ही सोनिया ने उससे पूछा था।

" यही कि इस वक्त फार्महाउस पर कोई इंसान तो क्या एक परिंदा तक मौजूद नहीं है। " सत्यम सिंह ने गहरी सास लेते हुए कहा __" किन्तु हॉ वहॉ पर हमारी वो जीप ज़रूर उसे मिली है जो जीप हमारे ही एक आदमी के साथ लापता हो गई थी। "

" इसका मतलब। " सोनिया ने सोचने वाले भाव के साथ कहा __" विक्रम ने मुंबई से आते ही फार्महाउस से सबको दूसरी किसी सुरक्षित जगह पर शिफ्ट कर दिया है। कदाचित उसे अब ये आभास हो चुका था कि फार्महाउस पर अब एक भी पल रुकना उनके लिए ठीक नहीं है। इस लिए इससे पहले कि तुम्हें उसके वहॉ होने का पता चले और तुम वहॉ पहुँचो उससे पहले ही वो उन सबको लेकर कही दूसरी जगह कूच कर गया। वाकई सत्यम , बड़ा ही शातिर दिमाग़ है उसका। वरना सोचने वाली बात है कि इतने दिन तक तो वो वहीं पर रहा था। भला एक दिन और वहॉ रुक जाने में उसे क्या प्राब्लेम हो सकती थी। मगर नहीं , उसे तो आभास हो गया था कि अब वहॉ पर खतरा बढ़ गया था उन सबके लिए। अतः फौरन ही सबको लेकर चलता बना वो। अब बताओ डियर हस्बैण्ड , उसकी सोच तुम्हारी सोच से दो क़दम आगे है कि नहीं ?"

सत्यम सिंह निरुत्तर सा हो गया था। उसे समझ में ही नहीं आया कि अब वो सोनिया की इस बात का क्या जवाब दे? सोनिया बड़े ग़ौर से उसके चेहरे की तरफ कुछ देर तक देखती रही। फिर ये कह कर उसके बगल से ही लेट गई कि__"अब सो जाओ माई डियर। ज्यादा सोचने से कुछ नहीं होगा अब। नई सुबह के साथ तथा नई सोच के साथ कुछ नया करने की कोशिश करना।" सत्यम सिंह को भी लगा कि सोनिया ठीक कह रही है। अतः उसने भी अपने ज़हन से इन सारी बातों को झटका और दूसरी तरफ करवॅट लेकर लेट गया। किन्तु दोनो ही इस बात से बेख़बर थे कि सिरहाने के ऊपर ही एक बड़ी सी खिड़की थी जिसका एक पल्ला हल्का सा खुला हुआ था और उस हल्के खुले हुए पल्ले पर दो कान खरगोश की तरह खड़े उन दोनो की अब तक की सारी बातें सुन चुके थे।

८०

सुबह मेरी नींद खुली तो देखा कि साक्षी दीदी अभी भी उसी हालत में मेरे ऊपर लेटी हुई हैं। उनका वजन या ये कहिए कि उनका बोझ ज्यादा तो नहीं था मगर क्योंकि वो रात भर मेरे ऊपर ही लेटी रही थीं तो मुझे अब ऐसा लग रहा था जैसे मेरे ऊपर कितना भारी बोझ रखा हुआ हो। मेरी नींद खुलने का कारण बोझ का एहसास तो था ही किन्तु दूसरा एक कारण ये भी था कि मुझे शूशू आई हुई थी।

मैने बहुत ही आहिस्ता से दाहिने तरफ करवॅट लेकर साक्षी दीदी को बेड पर इस तरह बड़ी सफाई से लेटाया कि उनकी नींद में ज़रा भी खलल न पड़ सके। राइट साइड बेड पर लेटा कर मैने उन्हें ठीक से सीधा कर दिया। हलॉकि वो सीधी ही थी मगर उनके दोनो हाथ मुड़े हुए थे जिन्हें मैने सीधा कर दिया था। मैने देखा साक्षी दीदी के खूबसूरत चेहरे पर इस वक्त संसार भर की मासूमियत विद्यमान थी। उन्हें मेक-अप का ज़रा भी शौक नहीं था। वो बिना मेक-अप के ही बहुत खूबसूरत थी। बड़ी मॉ(सोनिया) की तरह ही वो बेहद खूबसूरत थी। किन्तु एक अच्छे नेचर की वजह से उनकी खूबसूरती बड़ी मॉ से लाख गुना ज्यादा थी। मुझे साक्षी दीदी को देख कर उन पर बेपनाह प्यार आ रहा था। मैने झुक कर उनके माथे पर हौले से एक किस किया और फिर मुस्कुराते हुए मैं पलट कर आहिस्ता से ही बेड से उतर कर कमरे से अटैच बाथरूथ की तरफ बढ़ गया।

कुछ देर बाद जब मैं बाथरूम से सुबह के कामों से फारिग़ हो कर वापस कमरे में बेड के पास आया तो देखा साक्षी दीदी अभी भी वैसी ही लेटी हुईं थी किन्तु इस वक्त उनके गुलाब की पंखुड़ियों जैसे होठों पर बहुत ही दिलकस मुस्कान फैली हुई थी। ये देख कर मैं चौंका फिर मैं मुस्कुराते हुए आहिस्ता से बेड पर आ कर साक्षी दीदी के पास ही बैठ गया और उन्हें देखने लगा।

" गुड मार्निंग माई द मोस्ट ब्यूटी फु ल दीदी। " फिर मैने हौले से मुस्कुराते हुए किन्तु उन्हें देखते हुए ही कहा __" मुझे पता है आप जग चुकी हैं। किन्तु ये समझ नहीं आया कि आपके होठों पर ये खूबसूरत मुस्कान किस बात पर फैली हुई है ? हलॉकि आपको सुबह सुबह इस तरह मुस्कुराते हुए देख कर मैं बहुत खुश हो गया हूॅ। "

मेरी इस बात पर साक्षी दीदी के होठों की उस मुस्कान में और भी इज़ाफा हुआ और उन्होंने पट से अपनी ऑखें खोल दी। कुछ देर तक मुझे वो उसी मुस्कान के साथ देखती रहीं फिर बोलीं___"मेरे होठों पर ये मुस्कान तेरी ही वजह से है विक्रम। मुझे नहीं पता था कि सुबह सुबह मेरा सबसे खूबसूरत और सबसे अच्छा भाई मुझे इतना प्यार से लेटा कर तथा मेरे माथे पर चूम कर मुझसे इतना ज्यादा प्यार करने का सबूत देगा। सच कहती हूॅ मेरे भाई, आज की ये सुबह मेरे लिए अब तक की सबसे बेस्ट सुबह थी।"

" ओह तो आप उस वक्त जगी हुई थीं ?" मैने चौंकते हुए कहा __" अगर ऐसा था तो फिर आप चुपचाप ऑखें बंद कर सोये होने का नाटक क्यों कर रही थी ?"

" अरे बुद्धूराम। " साक्षी दीदी ने मुस्कुराते हुए कहा __" अगर मैं दिखा देती कि मैं जाग चुकी हूँ तो फिर मुझे तेरा वो प्यार कैसे मिल पाता भला जो तूने मेरे माथे पर चूम कर जताया था ?"

" अच्छा जी। " " पर आप जगी कब थीं दीदी ?"

" मैं तो तेरे जगने से पहले ही जाग गई थी। " ये कह कर साक्षी दीदी ने जैसे मेरे सिर पर बम्ब फोड़ा __" पर उठी इस लिए नहीं कि मुझे उस तरह लेटे रहने में बड़ा मज़ा आ रहा था। "

" क्या ????" मेरे मुख से मानो चीख सी निकल गई थी , फिर बुरी तरह सकपकाते हुए बोला __" मेरा मतलब आप मेरे जगने से पहले कैसे जग गई थी ?"

" अरे ये कैसा सवाल है विक्रम ?" साक्षी दीदी के चेहरे पर हैरानी के भाव उभरे। ये अलग बात थी कि उनके होठों पर मुस्कान वैसी ही बरकरार थी , बोली __" क्या मैं तेरे जागने से पहले खुद नहीं जाग सकती और तू इस तरह चौंक क्यों रहा है मेरे जगने की बात सुन कर ? क्या तुझे मेरे जाग जाने पर कोई प्राब्लेम हुई है ?"

"न.न .. नहीं तो। " मैं एक बार फिर बुरी तरह सकपका गया। मुझे समझ न आया कि क्या कहूँ __" ऐसी तो कोई बात नहीं है दीदी। "

" फिर तू इस तरह चौंका क्यों ?" साक्षी दीदी की मुस्कान और भी गहरी हो गई __" अरे ये क्या ???"

"क ..क. क्या हुआ दीदी ?" मैं उनके इस प्रकार कहने पर बुरी तरह डर गया। मेरे चेहरे पर उभरे पसीने में पल भर में इज़ाफा हो गया।

" ये तेरे माथे पर सुबह सुबह इतना पसीना कैसे उभर आया विक्रम ?" साक्षी दीदी ने मानो एक और बम्ब मेरे सिर पर फोड़ दिया __" क्या बात है मेरे भाई तेरी तबीयत तो ठीक है न ?"

"त ..त. तबीयत ???" उनकी इस बात से मेरी हालत पल भर में ख़राब हो गई __" क्या मतलब है आपका ? मैं तो एकदम ठीक हूँ दीदी। "

" तू सच कहा रहा है न ?" साक्षी दीदी ने अजीब भाव से मेरी तरफ ध्यान से देखते हुए पूछा __" और तू सच में ठीक ठाक है न ?"

" ओफ्फो दीदी। " मैंने बेचैनी और परेशानी की हालत में कहा __" ये सुबह सुबह क्या अपनी पुलिसगीरी दिखाने लगी हैं आप ?"

" पुलिसगीरी ??" साक्षी दीदी चौंकी __" मैं कहाँ पुलिसगीरी दिखा रही हूँ तुझे ? मैं तो तेरी तबीयत के बारे में ही पूछ रही हूँ। "

" तो फिर ये पुलिस वालों की तरह तहकीक़ात करने का क्या मतलब है आपकाे ?" मैं अब तक अपनी हालत से काफी हद तक उबर चुका थाे , बोलाे __" इतनी देर से देख रहा हूँ कि आप बाल की खाल निकालने पर तुली हुई हैं। इतना भी नहीं सोचा कि मुझ मासूम पर इस सबसे क्या गुज़रने लगी हैे , । "

मैने ये बात इतने भोलेपन और इतनी मासूमियत से कही थी कि साक्षी दीदी की हँसी छूट गई। वो एकदम से बेड पर उठ कर बैठ गई और फिर झपट कर मुझे अपने गले से लगा लिया।

" तू सचमुच बहुत स्वीट है विक्रम। " साक्षाी दीदी ने मेरी पीठ पर अपने दोनो हाथ फेरते हुए क हा

गुड़िया का ख़याल आते ही मेरे अंदर भी एक अजीब सी झुरझुरी दौड़ गई। पलक झपकते ही उसका चेहरा मेरी ऑखों के सामने उभर आया। उस चेहरे में ज़माने भर की उदासी थी, तड़प थी। मेरा दिल एकदम से निशा के लिए बेचैन हो उठा। सुबह सुबह साक्षी दीदी की जो मुस्कान देख कर मुझे खुशी हुई थी वो गुड़िया का उदास चेहरा मेरी ऑखों के सामने उभर आने से जाने कहाँ गायब हो गई थी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि निशा ने अचानक मुझसे बात करना क्यों बंद कर दिया था? बात करना तो दूर बल्कि वो तो मेरे सामने ही नहीं आती थी।

" क्या हुआ विक्रम ?" साक्षाी दीदी ने मुझे चुप जान कर मुझसे अलग होते हुए पूछाा __" तू एकदम से गुमसुम सा क्यों हो गयाा ? क्या मेरी बातों से तेरा दिल दुख गया हैे ? देख अगर ऐसी बात है तो प्लीज मुझे माफ़ कर दे। "

" नहीं दीदी। " मैने उनके मुख पर अपना हाथ रख दियाा , फिर बोलाा __" आपने कुछ नहीं किया है। आप भला कैसे मेरा दिल दुखा सकती हैं ? मुझे पता है आप मुझे बहुत प्यार करती हैं। "

" तो फिर क्या बात हैे ?" साक्षाी दीदी ने सहसा गंभीर होकर पूछाा __" तू एकदम से ही गुमसुम सा क्यों नज़र आने लगा हैे ? आख़िर किस बात ने तुझे इतना सीरियस कर दिया हैे ? क्या मुझे नहीं बताएगाा ?"

" मैं दरअसल गुड़िया की वजह से सीरियस हो गया हूँ दीदी। " मैने गंभीरताा से कहाा __" पता नहीं क्या बात है जो वो मुझसे बात करने की तो बात दूर बल्कि वो मेरे सामने भी नहीं आती। जबकि उसे पता है कि मैं उसकी शरारत भरी बातों के बिना पल भर भी नहीं रह सकता। "

" ऐसा कब से हैे ?" साक्षाी दीदी ने पूछाा __" तूने उसे कुछ कहा था क्याा ? या फिर तूने उसे किसी बात पर डॉटा होगा। वो तेरी लाडली है इस लिए वो तेरे ज़ारा से भी डॉट देने पर सीरियस हो सकती है। संभव है ऐसा ही कुछ हो। "

" मैं उसे ख्वाब में भी नहीं डॉट सकता दीदी। " मैने पुरज़ोर लहजे में कहा __" और ना ही मैने उसे कुछ ऐसा वैसा कहा है जिससे उसे बुरा लग जाए। "

" तो फिर कोई दूसरी वजह होगी। " साक्षी दीदी ने सोचने वाले भाव से कहा __" कोई ऐसी वजह जिसके बारे में तुम्हें पता ही न हो। "

" ऐसी क्या वजह हो सकती है भला ?" मैने कहा __" अगर कोई बात होती तो गुड़िया मुझे ज़रूर बताती। "

" कुछ बातें ऐसी भी होती हैं विक्रम। " साक्षी दीदी ने समझाने वाले अंदाज़ से कहा __" जिन्हें एक बहन अपने भाई से नहीं कह सकती। वैसे इसका पता करने का सबसे अच्छा तरीका ये है कि तू उसे फोन लगा और उससे बात कर। "

" वो मेरा फोन नहीं उठाएगी दीदी। " मैने कहा __" और ना ही मुझसे बात करेगी। अगर करना होता तो अभी जब मैं मुंबई गया था तो वो मुझसे कुछ तो बात करती। मगर वो तो मेरे सामने आई तक नहीं। आते समय मैं ही उससे मिलने उसके कमरे में गया था। मैने देखा कि कमरे में बेड पर वो ऑखें बंद कर सोने का दिखावा कर रही थी। मतलब साफ था कि वो मुझसे ना तो मिलना चाहती है और ना ही बात करना चाहती है। "

" बड़ी हैरत की बात है ये तो। " साक्षी दीदी के चेहरे पर हैरत के भाव उभरे __" चल ठीक है मैं अपने फोन से उसे काल करती हूॅ और मैं उससे बात करती हूॅ। "

" हॉ ये ठीक रहेगा दीदी। " मैने खुश होते हुए कहा __" पर आप उससे ये मत कहना कि आपने उसे मेरे बातों के चलते फोन किया है और ना ही ये बताना कि मैं आपके ही पास बैठा हुआ हूॅ। "

साक्षी दीदी ने मेरी बात पर हॉ में अपना सिर हिलाया और ये कह कर बेड से नीचे उतरने लगी कि वो अपने कमरे से अपना फोन लेकर अभी आती हैं। उनके जाने के बाद मैं बेड पर ही उनके आने का इन्तज़ार करने लगा। बेड के पास ही एक छोटी सी टेबल थी जिसमें मेरा मोबाइल फोन रखा हुआ था। मुझे ख़याल आया कि साक्षी दीदी के पास तो गुड़िया(निशा) का नंबर है ही नहीं। अत: मैने टेबल से अपना फोन उठा कर उसमे से गुड़िया का नंबर दीदी को देने का सोचा।

मैने अपने फोन को उठा कर मोबाइल के बगल से लगी बटन पर अॅगूठे से पुश किया तो स्क्रीन जल उठी। स्क्रीन जलते ही उसमें मुझे एक मैसेज नज़र आया जो व्हाट्सएप में था और जिसे मानुषी ने भेजा था। मैने फोन को अनलॉक करके उस मैसेज को खोला। मानुषी के भेजे गए मैसेज को पढ़ता चला गया मैं। मैं ये जान कर हैरान हुआ कि मानुषी ने मैसेज में सच्चाई का पता लग जाने वाली बात कही थी और वो मुझसे मिलना चाहती थी। मैं चकित था कि मानुषी ने इतना जल्दी सच्चाई का पता कैसे लगा लिया? उसने मैसेज में सिर्फ इतना ही लिखा था कि__"विक्रम मुझे पता चल गया है कि सच्चाई क्या है और किस वजह से साक्षी दीदी मॉम डैड के खिलाफ होकर तुम्हारे साथ हो गई हैं। सारी बातें तुमसे मिलने के बाद ही

बताऊँगी इस लिए मुझे तुमसे फौरन ही मिलना है। अब ये तुम बताओ कि मैं तुमसे कब कैसे और कहाँ मिल सकती हूँ। मेरे इस मैसेज का जवाब जितना जल्दी हो सके देना। तुम्हारी बहन मानुषी ।"

मैं मानुषी के इस मैसेज से हैरान भी था और खुश भी। हैरान इस लिए कि उसने इतनी जल्दी सच्चाई का पता कर लिया था और खुश इस लिए कि अब वो भी कदाचित साक्षी दीदी की तरह मेरे पास ही रहेगी। अभी मैं ये सब सोच कर खुश ही हो रहा था कि तभी साक्षी दीदी मेरे कमरे में अपना फोन लिए आ गईं। उनकी नज़र मेरे चेहरे पर मौजूद खुशी के भावों पर पड़ी तो उनके चेहरे पर चौंकने के भाव उभरे।

" ओये होये बड़ा खुश लग रहा है भाई। " फिर वो मुस्कुराते हुए मुझसे बोलीं __" कोई दूसरी गर्लफ्रैण्ड मिल गई क्या तुझे ?"

" अरे नहीं दीदी। " मैं उनकी इस बात से मुस्कुराते हुए बोला __" ऐसी कोई बात नहीं है। दरअसल मेरे फोन पर मानुषी का मैसेज आया था रात में। उसके मैसेज को पढ़ कर ही खुश हो रहा था। "

" ओह तो ये बात है। " साक्षी दीदी बेड पर मेरे पास ही बैठते हुए कहा __" ऐसा क्या लिख कर भेजा है उसने मैसेज में जिसके चलते तू इतना खुश हो रहा है ? ज़रा मुझे भी तो सुना उसका मैसेज। "

लीजिए, आप खुद ही पढ़ लीजिए।" मैने मोबाइल उनके हाथ में पकड़ाते हुए कहा__"हो सकता है कि आप भी मेरी तरह उसका मैसेज पढ़ कर खुश हो जाएँ।"

" उसके लिए मुझे मैसेज पढ़ने की ज़रूरत नहीं है मेरे प्यारे भाई। " साक्षी दीदी ने मुझे देखते हुए कहा __" क्योंकि अगर तू खुश है तो मैं तुझे खुश देख कर ही खुश हो जाऊँगी। "

मैं उनकी इस बात से बस मुस्कुरा कर रह गया। जबकि ऐसा कहने के बाद दीदी ने मानुषी के मैसेज की तरफ देखा और मैसेज को पढ़ने लगीं। मैसेज पढ़ते ही उनके चेहरे पर हैरत और खुशी के मिले जुले भाव उभरे और फिर एकाएक ही उनके चेहरे पर गंभीरता छा गई।

" क्या हुआ दीदी ?" मैं उनके चेहरे पर अचानक ही उभर आई उस गंभीरता को देख चौंकते हुए पूछा __" आपको मानुषी के इस मैसेज को पढ़ कर खुशी नहीं हुई ?"

" खुशी तो हुई विक्रम। " साक्षी दीदी ने पूर्वत गंभीर भाव से ही कहा __" ये जानकर अच्छा भी लगा कि मानुषी को भी सच्चाई का पता चल गया है मगर गंभीरता वाली बात ये है कि कहीं डैड को भी न इस बात का आभास हो जाए कि मानुषी को भी सच्चाई पता चल गई होगी। उस सूरत में मानुषी पर खतरा भी पैदा हो सकता है। "

" ये आप क्या कह रही हैं दीदी ?" मैने हैरानी से कहा _" भला बड़े पापा को इस बात का आभास कैसे हो जाएगा कि मानुषी उनकी सच्चाई जान चुकी होगी ?"

" तुम मेरी मॉम को नहीं जानते विक्रम। " साक्षी दीदी ने उसी गंभीरता से कहा __" उन्होंने डैड के साथ ही वकालत की पढ़ाई की थी। उनका दिमाग़ बहुत ही शार्प है। डैड से कई गुना ज्यादा उनका दिमाग़ चलता है। वो पिछले कुछ दिनों की घटनाओं को मद्दे नज़र रखते हुए डैड को ये बात समझा सकती हैं कि मानुषी को सच्चाई का पता ज़रूर चल गया होगा अथवा वो सच्चाई का पता लगाने की राह पर चल रह होगी। "

" बात कुछ समझ में नहीं आई दीदी। " मैंने उलझनपूर्ण भाव से कहा __" भला बड़ी मॉ ऐसा क्या सोच कर बड़े पापा को समझाएँगी ?"

" सीधी सी बात है विक्रम। " दीदी ने कहा __" ये तो उन्हें अब तक समझ आ ही गया होगा कि हमने क्या क्या और किस तरीके से किया है ? इस लिए उन्हें इस सबकी कड़ियॉ जोड़ने में कोई मुश्किल नहीं होगी। कहने का मतलब ये कि सारी घटनाओं के बाद वो अब उस दिन की घटनाओं को आपस में मिलाएँगी जिस दिन डैड को हमारे नकली सी.बी.आई. वाले गिरफ्तार करके ले गए थे और फिर बिना कुछ पूछताँछ किये उन्हें दो दिन बाद छोंड़ भी दिया था। डैड को ये यो पता चल ही गया था कि वो सब तुम्हारा ही किया धरा था , क्योंकि तुम्हारे उन नकली सी.बी.आई. वाले आदमियों ने अपनी बातों के बीच तुम्हारा ही नाम लिया था। अतः सारी बातें जानने के बाद मॉम को ये सोचने में ज़रा भी समय नहीं लगेगा कि तुमने डैड को दो दिन के लिए अंडरग्राउण्ड करके अपना कौन सा अहम किया हो सकता है। यानी उन्हें ये तो अंदाज़ा था ही कि तुम अभी यहीं हो और यहीं से ही सारी घटनाओं को अंजाम दे रहे हो। मगर ये भी भूलने वाली बात नहीं है कि तुम्हारे पास रौनक और उसकी फैमिली भी है जो कि तुम्हारी कमज़ोरी के रूप में हैं। तुम ये हर्गिज भी नहीं चाहोगे कि तुम्हारी कमज़ोरी डैड के हाथ लग जाए। क्योंकि उस सूरत में तुम बहुत ही ज्यादा कमज़ोर पड़ जाओगे और ये भी संभव है कि उस सूरत में तुम मजबूरन डैड के हाथ भी लग जाओ। उसके बाद किस्सा खत्म। इस लिए तुम यही चाहोगे कि सबसे पहले तुम अपनी कमज़ोरियों को या तो पूर्णरूप से सुरक्षित कर दो या फिर उन्हें डैड की पहुँच से बहुत दूर कर दो। मॉम के दिमाग़ में यही बातें होगी और वो सोचेंगी कि तुम ऐसा ही करना चाहोगे। यानी रौनक तथा उसकी मॉ बहन को डैड की पहुँच से दूर मुंबई भेज देना चाहोगे। किन्तु तुम्हारे पास समस्या ये होगी कि रौनक आदि को लेकर जाने के बाद मैं और गीता बुआ यहॉ अकेली रह जाएँगी , और हम दोनो पर डैड का खतरा रहेगा। अतः तुम कोई ऐसा जुगाड़ लगाओगे जिससे तुम्हारे दोनो काम आसानी से और सुरक्षित तरीके से हो जाएँ। तब तुमने सोचा कि डैड के रूप में राजा को ही सह और मात दे दी जाए जिससे ना रहेगा बॉस और ना ही बजेगी बॉसुरी वाली बात हो जाएगी। यही तुमने किया भी और जब तुम वापस मुंबई से लौट आए तो डैड को भी छोंड़ दिया अपने नकली सी.बी.आई. के आदमियों के हवाले से। "

" ये सब तो ठीक है दीदी। " मैने सखत हैरानी से दीदी की तरफ देखते हुए कहा __" किन्तु इसमें ये बात कहॉ से आती है कि उन्हें ये पता चल सकता है कि मानुषी भी उनकी सच्चाई को जान चुकी है या फिर सच्चाई जानने की राह पर चल रही होगी ?"

" वहीं पर आ रही हूँ माई डियर ब्रदर। " साक्षी दीदी ने सहसा मुस्कुराते हुए कहा __" मॉम ये सोचेंगी कि उसी दिन तीन तीन लोग सोनपुर कैसे आ गए ? मतलब कि डैड तो हवेली आए

ही उनके साथ साथ उसी दिन मानुषी भी हवेली आ पहुँची और ये भी उनके ज़हन में होगा कि तुम भी वापस मुंबई से आ गए होगे और इसी लिए डैड को छोंड़ भी दिया था। तो सोचने वाली बात थी ये तीन लोग संयोगवश तो नहीं आ गए थे यहाँ। यानी कहीं न कहीं इसमें कोई पेंच या भेद ज़रूर था। मॉम को सोचने और समझने में देर नहीं लगेगी कि जिस ट्रेन से तुम आए उसी ट्रेन से मानुषी भी आई होगी और बहुत हद तक ये भी संभव है कि तुम दोनो की मुलाक़ात भी ट्रेन में हुई हो। मुलाक़ात जब होती है तो कुछ न कुछ बात चीत भी होती है। अब चूँकि हालात ऐसे थे कि तुम दोनो के बीच में नार्मल बातें तो होंगी नहीं यानी कि तक़रार भरी अथवा गिले शिकवे संबंधी बातें हुई होंगी। दूसरी बात मॉम ने मुझे फोन किया था पर मैने उनका फोन उठाया नहीं तब उन्होंने मानुषी को फोन किया। मानुषी ने मुझे फोन कर मुझसे बात की थी और पूछा था कि मैं अपने ही मॉम डैड के खिलाफ होकर तुम्हारे साथ क्यों हूँ तब मैने उससे कहा था कि वो सच्चाई का पता खुद लगाए। यही बात मॉम ने भी सोचा होगा। यानी उन्हें ये लगा होगा कि मैने मानुषी को सारी बातें बता दी होंगी और अब मानुषी सच्चाई जान चुकी है। या फिर अगर मैने नहीं बताया होगा तो इतना तो ज़रूर ही कहा होगा कि मेरे मॉम डैड के खिलाफ़ होने की वजह का पता वो खुद लगाए। इस लिए मानुषी वजह या सच्चाई का पता लगाने आई होगी। " साक्षी दीदी ने इतना कहने के बाद गहरी सास ली और फिर बोली __" इन सब बातों की वजह से ही मैं कह रही हूँ विक्रम कि मानुषी पर अब ख़तरा है और उस नादान व नासमझ को इस बात का एहसास भी नहीं होगा कि वो कितनी बड़ी मुसीबत में फॅस सकती है। उसे उस जगह से निकालना होगा विक्रम वरना सच में अनर्थ हो सकता है। वो हवस के पुजारी मेरी मासूम बहन को बरबाद कर सकते हैं। "

" नहींऽऽ। " मैंने सहसा आवेश में आकर कहा __" ऐसा हर्गिज़ नहीं होगा दीदी और मैं होने भी नहीं दूँगा। अगर मेरी मासूम बहन को उन लोगों ने छुआ भी तो उन्हें इसका अंजाम बहुत ही भयानक रूप से भुगतना पड़ेगा। "

" मानुषी के साथ में श्रुति भी है। " साक्षी दीदी ने गंभीरता से कहा __" उसे भी उन लोगों से दूर करना होगा। मैं उस कमीने जयदीप को बहुत अच्छे तरीके से जानती हूँ। उसे वासना और हव स के चलते रिश्तों का कोई भान नहीं रहेगा और वो श्रुति को भी हवश भरी नज़रों से देख रहा होगा। हे भगवान ये मानुषी उसे अपने साथ लेकर यहाँ आई ही क्यों थी ?"

" फिक्र मत कीजिए दीदी। " मैने कठोरता से कहा __" उन दोनो को कुछ नहीं होगा। अब मैदान में खुल कर आने का समय आ गया है। आपके डैड को ये बताने का समय आ गया है कि अगर मैं उनके सामने भी आ जाऊँ तो मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते हैं। "

" कुछ भी करने से पहले तुम्हें मानुषी और श्रुति को सुरक्षित वहाँ से निकालना होगा। " साक्षी दीदी ने समझाने वाले अंदाज़ से कहा __" उसके बाद ही हम कोई ठोस क़दम उठाने में सक्षम हो सकते हैं। "

" ठीक है दीदी। " मैने कहा __" मैं मानुषी से बात करके उसे सब कुछ समझाता हूँ कि

उसे क्या और कैसे करना है। आप भी गुड़िया से बात कर लीजिए। और हॉ इस बात की बिलकुल भी फिक्र मत कीजिए कि मानुषी व श्रुति दीदी में से किसी को भी मेरे रहते कुछ होगा। मैं अपनी जान देकर भी उनकी इज्ज़त और जान की हिफाज़त करू गा। "

" ऐसा मत कह विक्रम। " साक्षी दीदी की ऑखें छलक पड़ी , बोली __" तुझे कुछ होने से पहले ही मैं अपनी जान दे दूँगी। मेरा सबसे प्यारा भाई ही नहीं रहेगा तो मैं इस पापी दुनियॉ में अकेली जी कर क्या करू गी। "

" सब ठीक ही होगा दीदी। " मैने दीदी को अपने से छुपका लिया __" और मैं सब कुछ ठीक करने की पूरी कोशिश भी करू गा। चलिए अब आप भी फ्रेश हो लीजिए , सुबह हो गई है। गीता बुआ आपको आपके कमरे में न देखेंगी तो कहीं आपको ढूँढ़ने न लग जाएॅ। अतः अब आप जाइये और हॉ गुड़िया से ज़रूर बात कर लीजिएगा। "

मेरे कहने पर साक्षी दीदी ने मुझसे अलग होकर हॉ में सिर हिलाया। मैने उन्हें अपने फोन से गुड़िया का नंबर मैसेज किया। उसके बाद दीदी कमरे से चली गईं। उनके जाने के बाद मैंने गहरी सास ली तथा फिर मैने मानुषी को मैसेज किया। अपने मोबाइल को हाथ में लिए मैं मानुषी की तरफ से उसके रिप्लाई का इन्तज़ार करने लगा।

८१

मंत्री रजतकुमार रस्तोगी के आवास पर।

अशोक बासु व अवधेश मुखर्जी ड्राइंग रूम में बैठे थे। सामने के सोफे पर एक व्यक्ति और बैठा हुआ था जो कि अवधेश के साथ ही आया हुआ था। उसका नाम जॉर्ज था। जॉर्ज पेशे से एक प्राइवेट डिटेक्टिव था। उसने बकायदा अपनी एक अलग डिटेक्टिव एजेंसी खोली हुई थी तथा उसके अंडर में काफी सारे लोग काम करते थे। अवधेश मुखर्जी और जॉर्ज की मुलाक़ात कई साल पहले किसी केस के सिलसिले पर ही हुई थी। तब से इन दोनो के बीच यारी दोस्ती का गहरा नाता था।

जॉर्ज बहुत ही क़ाबिल और तेज़ दिमाग़ का डिटेक्टिव था। उसके बारे में कहा जाता है कि उसने अब तक जिस केस को भी अपने हाथ में लिया उसे बहुत ही कम समय में साल्व किया था। कदाचित यही वजह है कि आज के समय में जॉर्ज एक केस के लिए अच्छी खासी फीस चार्ज़ करता था। फीस तो उसकी होती ही थी किन्तु उसके आने जाने का खर्चा पानी भी उसे अलग से देना पड़ता था। ख़ैर, इस वक्त ये तीनों ही ड्राइंग रूम में बैठे रस्तोगी के आने का पिछले एक घंटे से इन्तज़ार कर रहे थे।

रस्तोगी के पीए ने बताया था कि रस्तोगी साहब अपनी रखैल सुनीता के साथ कमरे में हैं। अवधेश व अशोक ये जान कर हैरान रह गए थे कि रस्तोगी आज सुबह सुबह ही सुनीता को भोगने में लग गया था। आम तौर पर ऐसा होता नहीं था, और ना ही रस्तोगी इस क़दर सुनीता का दीवाना था। मगर जाने क्या बात थी कि आज सुबह सुबह ही रस्तोगी सुनीता के साथ कमरे में बंद था। उसे ये तक होश नहीं था कि हालात कितने गंभीर थे आजकल।

अवधेश मुखर्जी अपने डिटेक्टिव दोस्त जॉर्ज को रस्तोगी से मिलवाने लाया था। वो चाहता था कि रस्तोगी जॉर्ज से मिल कर अपने तरीके से उसे केस के सिलसिले में बताएॅ और आगे का काम शुरू करने की परमीशन दे। ख़ैर एक घंटे दस मिनट बाद रस्तोगी और सुनीता एकदम से फ्रेश होकर ड्राइंग रूम में आए। उन दोनो के हाव भाव से बिलकुल भी ऐसा नहीं लग रहा था कि वो दोनो बाकी सबकी जानकारी के अंदर क्या गुल खिला कर आए थे। बल्कि ऐसा लग रहा था जैसे कुछ हुआ ही न हो।

" माफ़ करना यारो। " रजतकुमार रस्तोगी ने सोफे पर बैठते हुए तथा सबकी तरफ नज़रें दौड़ाते हुए कहा __" तुम सबको इन्तज़ार करना पड़ा। "

" कोई बात नहीं रस्तोगी साहब। " अवधेश ने मजबूरी में ही सही किन्तु मुस्कुराते हुए कहा __" इतना तो चलता है। ख़ैर जैसा कि मैने आपसे ज़िक्र किया था तो मैं अपने साथ अपने डिटेक्टिव दोस्त जॉर्ज को लेकर आया हूँ। आप इनसे मिल लीजिए और केस से संबंधित बात कर लीजिए। "

" ओह हैलो जॉर्ज। " रस्तोगी ने जॉर्ज की तरफ देखते हुए किन्तु तनिक मुस्कुराते हुए कहा __" भई तुम अवधेश के दोस्त हो तो हमारे भी दोस्त ही हुए। इस लिए हमसे किसी भी बात के लिए संकोच या झिझक करने की ज़हमत मत उठाना। "

" जी बिलकुल रस्तोगी साहब। " जॉर्ज ने भावहीन स्वर में कहा __" वैसे भी हमारे पेशे में संकोच या झिझक के लिए कोई जगह नहीं होती है। ख़ैर आप बताएॅ मेरे लिए क्या आदेश है ? आपके लिए कुछ कर सकूँ ये मेरा सौभाग्य ही होगा। "

" सारी बातें तो तुम्हें अवधेश ने बता ही दी होंगी। " रस्तोगी ने कहा __" और शायद ये भी समझा दिया होगा कि तुम्हें करना क्या है ?"

" जी बिलकुल। " जॉर्ज ने कहा __" अवधेश ने मुझे इस केस से संबंधित सारी बातें बताई हैं। इसके बावजूद आप अगर अपने मुख से एक बार फिर से इस बारें में मुझे बता देंगे तो ज्यादा बेहतर होगा। "

" दरअसल हालात ऐसे हैं। " रजतकुमार रस्तोगी ने गहरी सास लेते हुए कहा __" कि हम सब कुछ कर गुज़रने की क्षमता रखते हुए भी कुछ कर नहीं सकते। अवधेश ने ही सुझाव दिया था कि इस काम में हमारे अलावा एक डिटेक्टिव ही बेहतर तरीके से कोई कार्यवाही कर सकता है। हमें भी लगा कि आइडिया अच्छा है। ख़ैर , हम सिर्फ ये चाहते हैं कि जिस शख्स की वजह से हम कुछ कर नहीं पा रहे हैं उसे तुम हमारे सामने लाकर खड़ा कर दो। किन्तु इस बात का बखूबी और सबसे पहले ख़याल रहे कि उसे इस बात की भनक भी न लगे कि हमने तुम्हारे रूप में कोई जासूस उसके पीछे लगा रखा है। क्योंकि अगर उसे तुम्हारे बारे में पता चल गया तो तुम सोच भी नहीं सकते हो कि तुम्हें हायर करने के लिए तथा उसके पीछे लगाने के लिए हमें इसका कितना संगीन अंजाम भुगतना पड़ सकता है। ख़ैर , हम ये चाहते हैं कि उस शख्स के पास से वो सारे वीडियोज तुम हमें वापस लाकर दो और उसकी कैद से हमारे बच्चों को भी सही सलामत यहॉ लेकर आओ। उसके बाद हम खुद देख लेंगे उस बास्टर्ड को कि वो खाली हाथ हमारा क्या उखाड़ लेता है ?"

" ठीक है रस्तोगी साहब। " जॉर्ज ने कहा __" मैं आज और अभी से इस काम में लग जाता हूँ। हलॉकि इस काम में कोई बहुत बड़ी बात नहीं है जिसके लिए आपको किसी डिटेक्टिव की ज़रूरत पड़ती , मगर चूँकि आप उस शख्स के द्वारा पंगू बने हुए हैं इस लिए खुद कुछ कर नहीं सकते हैं। अत: आपको कोई ऐसा व्यक्ति चाहिए जो आपके लिए ये सब इस तरीके से करे कि खुद डिटेक्टिव को भी पता न चल पाए कि वो क्या कर गया है ?"

" बिलकुल , तुम सही समझे जॉर्ज। " रस्तोगी ने प्रभावित नज़रों से जॉर्ज को देखते हुए कहा __" तुम खुद समझ सकते हो कि जब तक उसके पास हम लोगों के वो वीडियोज हैं तब तक हम में से कोई भी कोई ठोस ऐक्शन नहीं ले सकता उसके खिलाफ। "

" आप बेफिक्र रहिए रस्तोगी साहब। " जॉर्ज ने कहा __" बहुत जल्द आप इस बेबसी के आलम से उभ र जाएंगे और फिर आप स्वतंत्र रूप से कुछ भी करने की हालत में भी आ

जाएॅगे। "

" आई होप कि ऐसा ही हो। " रस्तोगी ने कहा __" हम चाहते हैं कि ये काम जितना जल्दी हो सके तुम कर डालो। क्योंकि हमसे अब और ज्यादा ये सब झेला नहीं जा रहा है। अपनी फीस के रूप में जितना चाहो रुपया ले सकते हो हमसे। हमें जल्द से जल्द बस अच्छा रिजल्ट चाहिए। "

" डोन्ट वरी रस्तोगी साहब। " जॉर्ज ने कहा __" आपको इस सबसे बहुत जल्द ही मुक्ति मिल जाएगी। अच्छा अब मुझे यहॉ से जाने की इजाज़त दीजिए। "

" ठीक है तुम जाओ जॉर्ज। " रस्तोगी ने कहा __" हमें बड़ी शिद्दत से उस दिन की प्रतीक्षा रहेगी जबकि हमारे बच्चे और वो वीडियोज हमारे पास होंगे। "

मंत्री रजतकुमार रस्तोगी से इजाज़त लेकर जॉर्ज नाम का वो डिटेक्टिव वहॉ से चला गया। उसके जाने के बाद कुछ देर तक ड्राइंग रूम में सन्नाटा छाया रहा। सबके चेहरों पर सोचो के भाव गर्दिश करते नज़र आ रहे थे।

" ये काम तो बहुत अच्छा हुआ रस्तोगी साहब। " सहसा पहली बार इस बीच अशोक बासु ने अपना मुख खोलते हुए कहा __" मगर आपने तो उस ठाकुर से भी इसके लिए मदद करने की बात की थी तो फिर उसका क्या ? मेरा मतलब है कि क्या सचमुच इस मामले में वो हमारी मदद करेगा अथवा उसका वो मदद के लिए हॉमी भरना महज उस वक्त की बस एक औपचारिकता थी ?"

" बेशक , उसकी औपचारिकाता भी समझ सकते हो। " मंत्री ने कहा __" क्योंकि हमें भी ऐसा लगता है कि वो इस मामले में कुछ खास हमारी मदद नहीं कर सकता। उसकी खुद की थानेदारनी बेटी उसके खिलाफ़ है। बेटी के खिलाफ़ होने की जो वजह उसने हमें बताई थी उस वजह में कोई खास बात नहीं थी। क्योंकि महज इतनी सी बात पर कि उसके और उसकी पत्नी को बेटी का पुलिस की नौकरी करना पसंद नहीं था और वो इस बारे में बेटी से बोलते भी थे तो ऐसा नहीं हो सकता कि बेटी इतनी सी बात पर वो अपने पैरेंट्स के खिलाफ़ हो जाए। खिलाफ़ होने के पीछे ज़रूर कोई ऐसी ठोस वजह होगी जिसके बारे में ठाकुर ने हमें बताना शायद ज़रूरी नहीं समझा या फिर ऐसा हो सकता है कि वो उस वजह को हमसे बताना ही न चाहता रहा हो। "

" बात तो आपकी एकदम सही है रस्तोगी साहब। " अशोक बासु ने सोचने वाले भाव से कहा __" किन्तु सोचने वाली बात तो है ही कि ऐसी क्या वजह हो सकती है जिसके तहत उसकी खुद की बेटी उसके खिलाफ़ हो गई है ?"

" हमें लगता है कि ठाकुर खुद भी दूध का धुला हुआ नहीं है। " रस्तोगी ने कहा __" उसने

अपने भतीजे और छोटे भाई की बीवी के संबंध में जो कुछ भी हमें बताया था संभव है कि उसकी उस बात में कोई सच्चाई हो ही न। कहने का मतलब ये कि जिन आरोपों के तहत उसने अपने छोटे भाई की बीवी और उसके बच्चों को हर चीज़ से बेदखल किया था वो सभी आरोप महज उसी की चाल का एक हिस्सा रहे हों। हम ऐसा उसकी बेटी के खिलाफ़ हो जाने की बात के आधार पर कह रहे हैं। ये तो एक यथार्थ सच्चाई है कि झूँठ या बुराई एक न एक दिन अपना चेहरा सबको दिखा ही देती है। इस लिए अगर ठाकुर ने वो आरोप किसी साजिश के तहत झूँठ की बुनियाद पर लगाए रहे होंगे तो संभव है कि उसकी वो सच्चाई किसी तरह सामने आ गई हो और उसकी बेटी को भी पता चल गई हो। इतना तो वो भी समझ सकती है कि बुरा करने वाला कभी पलट कर अपने हक़ के लिए इस तरह लड़ाई नहीं किया करता। अगर विक्रम की माँ का चरित्र सचमुच में गिरा हुआ रहा होगा तो ये बात कहीं न कहीं से विक्रम को भी पता चलती और वो उस सूरत में शर्म से पानी पानी होता तथा साथ ही फिर वो कभी पलट कर गाँव में किसी को अपनी शक्ल न दिखाता। मगर उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया उल्टा इसके विपरीत वो ठाकुर से अपने हक़ के लिए तथा अपने साथ हुए अन्याय के लिए लड़ाई कर रहा है। इस बात से कहीं न कहीं सोचने वाली बात हो ही जाती है कि कहीं ठाकुर ने वो सब आरोप झूठ मूँठ में ही तो नहीं लगाए थे विक्रम की माँ पर ? वरना वो इस तरह सीना तान कर तथा इतनी दिलेरी से उससे जंग क्यों करता ? यही बात ठाकुर की बेटी भी सोची होगी और फिर उसने सच्चाई का पता भी लगाया होगा। संभव है कि उसे वास्तविक सच्चाई का पता चल गया हो , उस सूरत में वो अपने माँ बाप के खिलाफ़ हो गई। हलाँकि सोचने वाली बात तो ये भी है कि अगर माँ बाप बुरे हैं तो संतान इतनी पाक़ साफ कैसे हो गई कि वो अपने ही माँ बाप के खिलाफ़ हो जाए ?"

" आपकी बातों में यकीनन वजन है। " अवधेश मुखर्जी ने कहा __" मगर ऐसा होता है रस्तोगी साहब कि कीचड़ में ही कमल खिलते हैं। कहने का मतलब ये कि भले ही ठाकुर और ठाकुर की बीवी बुरे चरित्र वाले रहे हों किन्तु ज़रूरी नहीं कि उसके सभी बच्चे भी उनकी तरह ही बुरे निकलें। हर इंसान की सोच व स्वभाव अलग होता है। अतः संभव है कि ठाकुर की बेटी अच्छी सोच व अच्छे नेचर की लड़की हो और वो अन्याय का साथ देने की सोच न रखती हो। "

" बिलकुल। " रस्तोगी ने कहा __" अगर तुम्हारी बातों को मान कर चलें तो ये सवाल भी पैदा हो जाता है कि अगर ठाकुर की बेटी अपने पैरेंट्स के रूप में अन्याय के खिलाफ़ हो गई है तो ये भी ज़ाहिर सी बात है कि फिर उसने न्याय और सच्चाई का साथ देने का भी सोचा हो। "

" यकीनन ऐसा हो सकता है रस्तोगी साहब। " अशोक बासु कह उठा __" न्याय और सच्चाई का साथ देने का मतलब है कि वो विक्रम का साथ दे रही होगी। उसे सच्चाई का पता चल गया होगा कि विक्रम और उसकी माँ पर उसके बाप द्वारा लगाए गए वो सभी आरोप फर्ज़ी थे इस लिए उसे विक्रम और उसकी माँ से सहानुभूति हुई होगी और उसने विक्रम का हक़ दिलाने के लिए उसका साथ देने लगी होगी। "

" अगर सच्चाई यही है। " अवधेश ने कहा __" तो इसका मतलब ये हुआ कि हमारा दुश्मन

विक्रम ही नहीं बल्कि ठाकुर की बेटी भी हुई। इससे एक बात और भी समझ में आती है जो कि अपनी जगह सटीक ही बैठती है। "

" कौन सी बात ??" रस्तोगी के माथे पर शिकन उभर आई।

" यही कि। " अवधेश ने कहा __" प्राची रेप केस के समय साक्षी ने ही विक्रम को मुंबई से यहॉ बुलाया होगा। "

" ये तुम क्या कह रहे हो अवधेश ?" रस्तोगी के साथ साथ बाकी सबकी भी ऑखें फैली।

" हॉ रस्तोगी साहब। " अवधेश ने कहा __" साक्षी का नाम आने से कुछ बातें मुझे समझ आ रही हैं। जैसा कि ठाकुर की बेटी अपने पैरेंट्स के खिलाफ है तो यकीनन वो विक्रम का ही साथ दे रही होगी। इस मामले में बहुत गहरी बात भी छुपी है रस्तोगी साहब जिसकी हमने कल्पना भी नहीं कर सकते थे। "

" ये तुम क्या ऊल जलूल बकने लगे अवधेश ?" रस्तोगी ने बुरा सा मुह बनाते हुए कहा __" साफ साफ बोलो कि क्या कहना चाहते हो तुम ?"

" इन सारी बातों का केन्द्र बिंदू। " अवधेश ने कहा __" प्राची का रेप केस ही है। हम सब यही समझ रहे थे कि उस रेप केस पर पुलिस का कोई हाथ नहीं है और ये सच भी था। मगर गौर कीजिए साक्षी के ही थाना क्षेत्र में प्राची गंभीर हालत में पाई गई थी। साक्षी क्योंकि थानेदारनी थी इस लिए उसे जब गंभीर हालत में पड़ी किसी लड़की की सूचना मिली होगी तो वो फौरन वहॉ पहुॅची होगी। गंभीर हालत में पड़ी उस लड़की को सर्वप्रथम उसने किसी हॉस्पिटल में भर्ती कराया होगा। लड़की के होश में आने पर उसने उससे रेप के बारे में सब कुछ पूछा होगा। साक्षी ने लड़की के घर वालों को भी बुलाया होगा जैसा कि आम तौर होता है। प्राची के मॉ बाप आए होंगे और अपनी बेटी की उस हालत को देख कर वो यकीनन दुखी भी हुए होंगे। यहॉ पर पुलिस केस करने की भी बात आई होगी। किन्तु जब प्राची ने बताया होगा कि उसके साथ रेप करने वाले लड़के कौन थे तो प्राची के मॉ बाप के हाथ पॉव फूल गए होंगे और उन्होंने केस करने से मना कर दिया होगा। इधर साक्षी ने अपने आला अफरान को भी प्राची रेप केस के बारे में बताया होगा। बात कमिश्नर तक पहुॅची होगी और कमिश्नर ने भी साक्षी को यही कहा होगा कि मामले को किसी तरह दबा दो। ख़ैर , साक्षी को प्राची के द्वारा ही तहकीक़ात में पता चला होगा कि प्राची असल में उसके भाई विक्रम से प्रेम भी करती थी। ये जान कर निश्चय ही साक्षी ने विक्रम से संबंध स्थापित कर उसे सब बताया होगा और यहॉ बुलाया होगा। विक्रम यहॉ आया और उसने अपनी प्रेमिका की वो हालत देखी तो उसे सहन नहीं हुआ। उसने अपनी मासूक़ा का बदला लेने के लिए ऐलान किया होगा। इसमे उसका साथ देने के लिए साक्षी भी सहमत हुई होगी। उसके बाद क्या हुआ आप सबको पता ही है। "

" तुम्हारे कहने का मतलब है कि ठाकुर की थानेदारनी बेटी के द्वारा ही विक्रम यहॉ आया और फिर उसने बदला लेने के रूप में ये सब किया ?" रस्तोगी ने कहा __" और इतना ही नहीं वो खुद अपने भाई का साथ भी दे रही है ?"

" मैं यही कहना चाहता हूँ रस्तोगी साहब। " अवधेश ने पुरज़ोर लहजे में कहा __" और मुझे तो ये भी लगता है कि ये सारा बखेड़ा ही उस थानेदारनी के द्वारा हुआ है। "

" पता नहीं तुम क्या फालतू की बकवास किए जा रहे हो अवधेश। " रस्तोगी ने खीझते हुए कहा __" तुम अपनी कोई बात पर कामय ही नहीं हो। पहले कह रहे थे कि विक्रम ने ये सब किया है और अब कह रहे हो कि ठाकुर की उस बेटी ने किया है। आख़िर तुम्हारे दिमाग़ में ये बेसिर पैर की बातें कहाँ से आती हैं ?"

" ये मामला ही ऐसा था रस्तोगी साहब। " अवधेश मुखर्जी ने कहा __" कि हम में से कोई भी इसके बारे में ठीक से समझ नहीं पाया था। मगर जैसे जैसे हालात सामने आए उस हिसाब से संभावनाओं की बातें की हमने। ख़ैर , मैं ऐसा इस लिए कह रहा हूँ कि इसके पीछे भी एक वजह है। जैसे कि जिस समय प्राची के रेप का मामला सामने आया उस समय तो विक्रम यहाँ था ही नहीं बल्कि साक्षी ही थी। जिसने पुलिस के रूप में ही सही मगर प्राची के केस को हाथ में लिया था। ये अलग बात है कि हमारे दबदबे और पुलिस कमिश्नर के मना कर देने पर उसने कोई केस फाइल नहीं किया था। मगर जब उसे पता लगा कि प्राची वो लड़की है जो खुद उसके ही चचेरे भाई से प्रेम करती थी तो उसके प्रति साक्षी की हमदर्दी या सहानुभूति यकीनन अलग ही तरह की हो गई होगी। उसके मन में ये तो आया ही होगा कि प्राची के साथ हुए इस कुकर्म पर इंसाफ हो यानी रेप करने वाले लड़कों को कानूनन सख्त से सख्त सज़ा मिले। मगर मामला क्योंकि आपसे ताल्लुक रखता था अतः उस केस पर कानूनी तौर पर कोई ऐक्शन वो चाहते हुए भी न ले पाई थी। इस लिए संभव है कि उसने हमारे बच्चों को सज़ा देने के लिए कानून को अपने हाथ में ले लिया हो। जिसके तहत सबसे पहले वो हमारे बच्चों के बारे में अपने मुखबिरों से पता लगवाया होगा और जब उसे पता चल गया होगा कि रेप करने वाले हमारे बच्चे हमारे फार्महाउस पर हैं तो वो उन्हें पकड़ने के लिए वहाँ जा धमकी होगी। वहाँ पर उसने हमारे बच्चों को जबरन ग़ैर कानूनी तरीके से गिरफ्तार किया होगा तथा फार्महाउस की तलाशी भी ली होगी। जहाँ से उसे हमारे खिलाफ़ वो सारे वीडियोज मिले। इसके बाद वो हमारे बच्चों को लेकर ऐसी जगह गई जहाँ पर कोई भी जा ही नहीं सकता था। "

" अगर तुम्हारी बातों को सच मानें तो। " रस्तोगी का दिमाग़ साँय साँय करने लगा था , बोला __" फिर वो वीडियोज और वो फोन भी उसी ने किया था हमें। मगर उसकी आवाज़ से ऐसा तो लगता ही नहीं था कि वो किसी लड़की की आवाज़ है बल्कि वो आवाज़ किसी भरभूर मर्द की ही लगती थी। "

" आज के समय में किसी किसी मोबाइल फोन पर ऐसे ऑप्शन भी होते हैं रस्तोगी साहब। " अवधेश मुखर्जी ने कहा __" जिसमें एक व्यक्ति किसी की भी आवाज़ बदल कर बात कर सकता है। संभव है कि उसने ऐसे ही किसी फोन से मर्दाना आवाज़ में आपसे बात की थी। ऐसा इस लिए ताकि आप यही समझें कि सामने वाला कोई मेल पर्शन ही है ना कि फीमेल। इससे होगा ये कि आप इस बारे में सोच ही न सकेंगे कि कोई लड़की ऐसा कर सकती है। आप अपना हर क़दम ये सोचते हुए ही उठाएँगे कि आपका दुश्मन कोई आदमी है। "

रजतकुमार रस्तोगी तुरंत कुछ बोल न सका। उसे कहीं न कहीं अवधेश की बातों में सच्चाई की बू आ रही थी। कदाचित यही वजह थी कि वह सोचने पर मजबूर हो गया था।

" उस दिन जब आपने उससे फोन पर ये कहा कि आप ये जान चुके हैं कि वो कौन है। " उधर अवधेश मानो फुल फार्म में कहे जा रहा था __" तो वो चौंक पड़ी होगी। उसे लगा होगा कि आपका सोचना भी अपनी जगह सही है। आख़िर ऐसा करने की वजह प्राची के बाप के पास ही तो हो सकती थी। ख़ैर जब उसने जाना कि आप उसको प्राची का बाप समझ रहे हैं तो उसे ये भी लगा होगा कि अब प्राची के पैरेंट्स को आपसे खतरा हो गया है। इस लिए इससे पहले कि आप प्राची के पैरेंट्स तक पहुँच पाते उससे पहले ही उसने बुद्धिमानी का परिचय देते हुए प्राची के पैरेंट्स को आपसे सुरक्षित कर दिया। वरना सोचने वाली बात है कि इससे पहले तो उसे प्राची के पैरेंट्स को सुरक्षा प्रदान करने का ख़याल तक न आया था और अगर उस दिन आप वैसा उसे न कहते तो आगे भी ये ख़याल उसके मन में आने वाला नहीं था। कहने का मतलब ये कि आपने खुद ही उसे बता दिया और फिर उसने बड़ी खूबसूरती से आपकी चतुराई को बेवकूफी में बदल दिया। "

" यकीनन तुम्हारी बातों में वजन है अवधेश। " रस्तोगी ने गहरी सास लेते हुए कहा __" जितने कम समय में उसने ये सब किया था उसे विक्रम तो हर्गिज़ भी नहीं कर पाता। क्योंकि मामला प्रेम का था। वो प्राची के साथ हुए उस हादसे के सदमें में ही रह जाता और फिर अगर किसी के समझाने बुझाने पर वो सदमे से बाहर आता भी तो ये सब करने में उसे कुछ तो समय लगता ही। "

" जी बिलकुल। " अवधेश ने कहा __" यही सारी बातें हैं जिसकी वजह से मुझे ऐसा लग रहा है कि ये सब ठाकुर की बेटी का ही किया धरा हो सकता है। दूसरी बात विक्रम जब यहाँ आया तो उसे प्राची के साथ हुए उस सदमें से भी साक्षी ने ही निकाला होगा और फिर उसने उसे बताया होगा उसकी प्रेमिका के साथ जिन लोगों ने ये सब किया है उन लोगों को उसने अपने कब्जे में लिया हुआ है। बस उसके बाद आप खुद सोच लीजिए कि विक्रम ने क्या किया होगा अथवा ये सब करना उसके लिए कितना आसान हो गया होगा। "

" अगर ठाकुर की उस थानेदारनी बेटी ने ये सब प्राची के लिए हमदर्दी के चलते तथा कानून को अपने हाथ में लेकर किया है। " रस्तोगी ने सोचते हुए कहा __" तो ये भी हो सकता है कि उसने इस सबके बारे में अपने पुलिस विभाग के किसी आला अफसर को भी नहीं बताया होगा। "

" ज़ाहिर सी बात है। " अवधेश ने कहा __" अगर वो बताती तो उसे ये सब करने का कोई भी उसका आला अफसर इजाज़त न देता और अगर उसके इस कृत्य की जानकारी किसी आला अफसर को होती तो ज़रूर वो उसके खिलाफ़ कानून को अपने हाथ में लेने के लिए ऐक्शन लेता। "

" यहाँ पर मैं भी अपनी बात रखना चाहता हूँ। " सहसा अशोक बासु ने कहा __" और वो

ये कि ऐसा भी तो हो सकता है कि साक्षी के इस कृत्य के बारे में उसके किसी आला अधिकारी को सब कुछ पता ही हो और वो उसकी सहमति में ही ये सब कर रही हो। "

" ये तुम कैसी बेवकूफी की बातें कर रहे हो अशोक ?" रस्तोगी की ऑखें फैली __" ये बात तुम भी अच्छी तरह जानते हो कि यहॉ के पुलिस महकमें के किसी भी आला ऑफिसर की ऐसी ज़ुर्रत नहीं हो सकती कि वो हमारे खिलाफ़ ऐसा कोई क़दम उठाने के लिए अपने किसी जूनियर सिपाई को कह सके। उन्हें भी पता है कि ऐसा करने का अंजाम कितना भयंकर हो सकता है उनके लिए। "

" भयंकर अंजाम तो तब होगा न रस्तोगी साहब। " अशोक बासु ने कहा __" जब आपको सबूत के साथ ये नज़र आए कि पुलिस ने ऐसा कुछ किया है। जब आपको कुछ ऐसा नज़र ही नहीं आएगा तो आप भला क्या कर लेंगे उनका ? ख़ैर ये बात तो पुलिस के आला अफसरान को पता ही है कि वो आपके खिलाफ़ ज़ाहिर रूप से कोई ठोस कार्यवाही नहीं कर सकते हैं , इस लिए संभव है कि उन लोगों ने ये सब गुप्त रूप से शुरू किया हो ताकि हमें उनकी किसी कार्यवाही का भान तक न हो सके। वरना आप खुद सोचिए रस्तोगी साहब कि पुलिस की एक मामूली सी इंस्पेक्टरनी में इतना साहस और जज़्बा कैसे हो जाएगा कि वो आपके खिलाफ़ खुद कोई ऐक्शन ले सके ? ये तो उसे भी पता होगा न कि पोल खुल जाने पर आप उसका क्या हस्र कर सकते हैं ? इस लिए ये स्पष्ट हैं रस्तोगी साहब कि बग़ैर किसी आला ऑफीसर की सह के वो थानेदारनी ऐसा करने का सोच भी नहीं सकती है। "

" तुम्हारी बात भी सही है। " रस्तोगी के दिमाग़ की बत्तियॉ जैसे एकाएक ही रौशन हो उठी थीं , बोला __" दूसरी बात ये कि सारा प्रदेश और पुलिस महकमा इस बात को जानता है कि हम जनता के साथ कितना बड़ा अत्याचार करते हैं। यही नहीं बल्कि ऐसा वो हर काम भी करते हैं जिसे ग़ैर कानूनी क़रार दिया जाता है। पुलिस महकमा इसके लिए हमारे खिलाफ़ कोई कार्यवाही इस लिए नहीं कर पाता क्योंकि एक तो उसके पास हमारे खिलाफ़ कोई सबूत नहीं होता दूसरे हमारा दबदबा और पहुॅच के असर से भी वो ख़ामोश रह जाते हैं। "

" निःसंदेह। " अवधेश कह उठा __" आपकी बात बिलकुल सच है रस्तोगी साहब। इस लिए अब पुलिस प्रशासन के पास यही एक चारा है कि वो गुप्त रूप से हमारे खिलाफ़ किसी कार्यवाही को अंजाम दें। "

" इसका मतलब ये हुआ। " अशोक ने कहा __" कि साक्षी और विक्रम के साथ साथ अब हमें पुलिस का भी ख़तरा है। इन दोनो भाई बहन से तो हम निपट भी लेंगे मगर पुलिस प्रशासन से कैसे निपटेंगे ? मामला अगर केन्द्र तक गया होगा तो हमारे लिए बड़ी मुश्किल हो जाएगी रस्तोगी साहब। "

" नहीं अशोक। " रस्तोगी ने ठोस लहजे में कहा __" ये मामला इतना भी संगीन नहीं है कि इसकी गूॅज केन्द्र तक पहुॅच जाए। तुम कुछ ज्यादा ही ऊपर की सोच रहे हो। "

" फिर भी रस्तोगी साहब। " सहसा इस बीच अवधेश बोल पड़ा __" हमें इस बारें में भी

सोचना तो चाहिए ही। क्या पता हमारा कोई ऐसा दुश्मन हो जिसने इसके लिए केन्द्र सरकार के कॉन खड़े कर दिये हों। "

" अगर ऐसा होता भी। " रस्तोगी ने कहा __" तो केन्द्र सरकार अपनी तरफ से हमारे खिलाफ़ जॉच पड़ताल के लिए किसी सी.बी.आई. जैसे लोगों को नियुक्त करती। वो यहॉ आते और हमसे पूॅछताछ करते। मगर ऐसा तो कहीं दूर दूर तक समझ में ही नहीं आ रहा कि ऐसा कुछ है। ज़ाहिर है कि ये मामला यहीं तक सीमित है। अतः हम यहॉ के पुलिस महकमें के आला ऑफिसर्स की क्लास अब ज़रूर लेंगे। "

" वैसे डिटेक्टिव के रूप में हमने जॉर्ज को इस मामले में लगा तो दिया ही है। " अवधेश ने कहा __" सारी सच्चाई का पता अब वही लगाएगा। देखते हैं वो इस सबकी क्या रिपोर्ट देता है हमें ?"

अवधेश की बात पर रस्तोगी सिर्फ सिर हिलाकर रह गया। कुछ देर ऐसी ही कुछ और बातें हुईं उसके बाद सब अपने अपने काम के सिलसिले में वहॉ से निकल लिए।

८२

उधर हवेली में।

सबने एक साथ ही बैठ कर ब्रेकफास्ट किया था। उसके बाद सोनिया के पिता कीर्तिमान सिंह सबसे विदा लेकर हवेली से निकल लिए थे। उनको रामगंज तक छोंड़ने के लिए खुद सत्यम सिंह अपनी कार से गया था। सोनिया को अपने पिता के चले जाने से काफी दुख हुआ था। वर्षों बाद उसे अपने पिता इस रूप में मिले थे। उसका दिल कर रहा था कि वो भी अपने पिता के साथ ही चली जाए। कीर्तिमान सिंह ने चलने के लिए कहा भी था मगर ज़रूरी कामों का हवाला देकर सत्यम सिंह ने यही कहा कि हम सब फिर कभी ज़रूर आएॅगे। सत्यम सिंह जानता था कि हालात अभी ऐसे नहीं हैं कि उसके बीवी बच्चे कहीं आ जा सकें।

इस वक्त ड्राइंग रूम में सोनिया और जयदीप ही थे। जो आमने सामने सोफों पर बैठे हुए थे। सोनिया जहॉ अपने पिता के बारे में सोच सोच कर दुखी हो रही थी वहीं जयदीप मानुषी व श्रुति के बारे में सोच सोच कर ख़याली पुलाव बना रहा था। उसके चेहरे पर गर्दिश कर रहे भावों में प्रतिपल बदलाव आता नज़र रहा था। श्रुति उसे पहली नज़र में ही बेहद पसंद आ गई थी और उसने इस बात का ज़िक्र अपनी मॉ सोनिया से भी किया था। उसने सोनिया से कहा था कि उसे श्रुति बहुत अच्छी लगती है। काश उससे उसकी शादी हो जाए। मगर सोनिया ने इस बात के लिए जयदीप को सख्ती से समझा दिया था कि ऐसा कभी नहीं हो सकता। वो उसकी बड़ी बहन है और बहन से भाई की शादी कभी नहीं हो सकती है। सोनिया की ये बात सुन कर जयदीप का दिल बुरी तरह से टूट गया था।

गॉव की हर लड़की या औरत को सिर्फ भोगने की चीज़ समझने वाला जयदीप आजकल श्रुति के प्यार में देवदास सा नज़र आने लगा था। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि ये अचानक उसे क्या हो गया है? श्रुति के प्रति उसके दिल में मीठा मीठा सा दर्द क्यों होने लगा है? हर लड़की की भॉति वो उसे भी हासिल करके भोगने की बात क्यों नहीं सोच रहा? पिछली सारी रात वो इन्हीं सब बातों की वजह से सो नहीं पाया था। उसे श्रुति से खुल कर बात करने में अब झिझक होने लगी थी। हलॉकि वो उसकी मौसी की लड़की थी और उसकी बड़ी बहन लगती थी। मगर पहली नज़र में उसे देखने के बाद ही उसके प्रति उसकी सोच और उसके अंदर का हाल बड़ा अजीब सा गया था। ब्रेकफास्ट करते वक्त भी वह सबकी नज़रें बचा कर श्रुति को चोरी से देख ही लेता था। यद्दपि श्रुति उससे खुल कर बातें कर रही थी, किन्तु एक भाई बहन के रिश्ते से। श्रुति की बातों का वो हॉ या नहीं में थोड़ा बहुत जवाब दे देता था। उसके इस बिहैवियर से सत्यम सिंह भी अंदर ही अंदर चौंक पड़ा था। अनुभवी सत्यम सिंह को समझते देर न लगी कि उसका अय्याश बेटा श्रुति के हुश्नो शबाब को देख कर चारो खाने चित्त हो चुका है। हलॉकि श्रुति और मानुषी को देख कर उसका खुद का हाल भी जयदीप से जुदा न था मगर उसके अंदर उनके प्रति प्रेमी वाला प्यार का अंकुर न फूटा था।

कीर्तिमान और सत्यम सिंह के जाने के कुछ देर बाद ही मानुषी व श्रुति ऊपर अपने कमरे में चली गई थी। जबकि सोनिया व जयदीप ड्राइंग रूम में ही बैठे रहे थे। इस ड्राइंग रूम में छाई

गहन ख़ामोशी से सहसा सोनिया की तंद्रा टूटी। उसने अपने बेटे जयदीप की तरफ देखा तो उसे गहन सोचों में गुम हुआ पाया। ये देख कर वह हौले से चौंकी।

" कहॉ गुम है मेरा बेटा ?" फिर सोनिया ने ज़रा खुद को संभालते हुए कहा __" क्या अभी तक भूत नहीं उतरा ?"

"अ .. आपने कुछ कहा क्या ?" जयदीप ने सहसा चौंकते हुए कहा।

" हॉ पूछ रही हूँ कि क्या अभी भी भूत नहीं उतरा है दिलो दिमाग़ से ?" सोनिया कहने के साथ ही मुस्कुराई थी।

"भ .. भूत ???" जयदीप चकरा सा गया __" कौन सा भूत मॉम ?"

" प्यार वाला भूत। " सोनिया ने कहा __" बेटा ये प्यार वाला भूत बहुत ही खतरनॉक होता है। जिसके सिर चढ़ता है न फिर कभी उतरता ही नहीं है। "

" ये आप क्या कह रही हैं मॉम ?" जयदीप ने झेंपते हुए कहा।

" हाय रे। " सोनिया मुस्कुराई __" देखो तो कैसे शरमा रहा है आज मेरा बेटा। बेटा ये इश्क़ न बहुत बुरी बला है। ये इश्क़ कम्बख्त उसी से होता है जो हमें कभी नसीब ही नहीं हो सकता। "

" ये तो ग़लत बात है मॉम। " जयदीप ने कहा __" आपने भी तो डैड से इश्क़ ही किया था और फिर वो आपको नसीब भी तो हो गए। "

" हॉ मगर तेरे डैड और मैं आपस में भाई बहन तो नहीं थे न। " सोनिया ने कहा __" उन रिश्तों में अगर इश्क़ हो तो कुछ भी करके हम एक हो सकते हैं मगर इस रिश्ते में ऐसा नहीं होता। क्योंकि इस रिश्ते वाले इश्क़ को ये समाज ये दुनियॉ कभी स्वीकार नहीं करती बल्कि इन रिश्तों के बीच हो गए इश्क़ को पाप का नाम देती है ये दुनिया। इससे परिवार की मान मर्यादा और इज्ज़त का हनन हो जाता है। "

" मैं ये सब समझता हूँ मॉम। " जयदीप ने कहा __" मुझे पता है कि भाई बहन के बीच ये रिश्ता ग़लत है। मगर ये उनके लिए ग़लत होता है न मॉम जो पाक़ साफ होते हैं। हम तो ऐसे हैं जो इन्हीं रिश्तों को भोगने की खूबसूरत इच्छा रखते ही नहीं हैं बल्कि भोगते भी हैं। "

" हॉ लेकिन ये बात देश समाज को पता तो नहीं है न। " सोनिया ने कहा __" ये सब तो घर के अंदर होता है और बिना किसी की जानकारी के होता है। इस लिए जब तक इन रिश्तों के बीच की सच्चाई दुनिया से छुपी है तब तक हम भी पाक़ साफ ही हैं बेटा। "

" कुछ भी कहिये मॉम। " जयदीप ने जैसे दृढ़ता से कहा __" मैं श्रुति को हद से ज्यादा पसंद करने लगा हूँ। मेरे दिल में उसके प्रति प्रेम का अंकुर फूट चुका है। कल सारी रात मैं इस बारे में सोचता रहा और फिर इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि मैं अगर किसी लड़की से शादी करू

गा तो वो श्रुति से ही करू गा। हॉ मॉम , पता नहीं क्यों पर मुझे अब ऐसा लगने लगा है कि अगर श्रुति मेरी जाने हयात न बनी तो मैं एक भी पल जी न सकूँगा। "

सोनिया अपने बेटे की इस बात से आश्चर्यचकित रह गई। अभी तक तो उसे यही लग रहा था कि जयदीप ये सब उससे श्रुति को भोगने के उद्देश्य से ही कह रहा था मगर इस वक्त उसके चेहरे के भाव चीख चीख कर उसे बता रहे थे कि वो श्रुति के लिए कितना सीरियस हो चुका है। सोनिया का दिलो दिमाग़ सुन्न सा पड़ गया। उसे समझ न आया कि इस विषम परिस्थिति में वो अपने बेटे को आख़िर कैसे समझाए? वो समझ सकती थी कि प्यार मोहब्बत कैसी चीज़ होती है और फिर इंसान की क्या हालत हो जाती है।

" देखो बेटा। " फिर सोनिया ने बहुत ही सीरियस भाव से किन्तु समझाते हुए कहा __" ये सब ठीक नहीं है। श्रुति के प्रति ऐसी फीलिंग्स रखना अच्छी बात नहीं है। हो सकता है कि तुम्हारा श्रुति के प्रति ये सिर्फ एक आकर्षण हो , जिसे तुम प्यार समझ रहे हो। ख़ैर , मैं ये कह रही हूँ कि ये अभी पहली स्टेज है। अभी तुम इस सबके लिए खुद को समझा भी सकते हो और खुद को इसके प्रभाव से बचा भी सकते हो। इस लिए बेहतर होगा कि तुम इस पर विचार करके अमल करो। दूसरी बात , श्रुति तुम्हारी बड़ी बहन है। उसके मन में तुम्हारे प्रति ऐसा कुछ भी नहीं होगा मुझे अच्छी तरह पता है। किन्तु अगर उसे पता चल गया कि तुम उसके बारे में ऐसा सोचते हो तो वो तुम्हारे दिल का हाल नहीं समझेगी बल्कि तुम्हें ग़लत नेचर का मानते हुए तुमसे नफ़रत करने लगेगी। "

" ऐसा नहीं होगा मॉम। " जयदीप की आवाज़ सहसा भर्रा सी गई , बोला __" मैं उसे खुद समझाऊँगा कि मैं उससे कितना प्यार करने लगा हूँ। उसे बताऊँगा कि मेरे दिल में उसके लिए सिर्फ और सिर्फ प्यार है और हॉ ये भी कहूँगा मॉम कि अगर उसे लगता है कि मेरे प्यार में कोई खोट या गंदगी है तो उसे मुझे ठुकरा देने का और मुझसे नफ़रत करने का पूरा हक़ है। मैं सारी ज़िंदगी उसके खूबसूरत चेहरे को अपनी ऑखों में बसा कर तथा उसकी यादों के सहारे जी लूँगा। उसके अलावा मेरी ज़िंदगी में दूसरी कोई लड़की कभी नहीं आएगी। "

सोनिया को ज़बरदस्त झटका लगा। ऐसा लगा जैसे सारा आसमान एकाएक ही भरभरा कर उसके सिर पर गिर पड़ा हो। उसे अपने कॉनों पर यकीन नहीं हो रहा था कि उसने जयदीप के मुख से जो सुना वो सच है या ग़लत। कितनी ही देर तक वो भयानक सी स्थिति में बैठी उसे अपलक देखती रही।

" मैं जानता हूँ मॉम कि आपको आज मेरी इन सब बातों पर बेहद आश्चर्य हो रहा होगा। " जयदीप गंभीरता से कह रहा था __" बात भी सच है। किसी कौए से ये उम्मीद नहीं की जा सकती कि वो कोयल की तरह मीठा भी बोल सकता है। मगर सुना है कि जहॉ किसी चीज़ की उम्मीद नहीं होती वहीं पर एक नया चमत्कार हुआ करता है। कदाचित मेरे साथ भी ऐसा ही हो गया है। कल सारी रात सोचता रहा मैं कि मैं क्यों श्रुति की तरफ इस हद तक अट्रैक्ट होता जा रहा हूँ ? मेरे दिल में क्यों उसके लिए प्यार जाग रहा है ? सवाल तो मुझे नहीं मिला मगर इतना एहसास ज़रूर हुआ कि श्रुति के बिना मेरी ज़िंदगी का कोई मतलब

नहीं रह जाएगा। आज आपकी बातों ने मुझे अंदर से हिला तो दिया है मॉम मगर मेरे दृढ़ निश्चय में और भी ज्यादा इज़ाफा भी हो गया है। "

सोनिया को झटके पर झटके लग रहे थे। उसका दिलो दिमाग़ जाम सा हो चुका था। सुना तो था उसने भी कि प्रेम का रोग जब लगता है तो पत्थर से पत्थर दिल इंसान को भी पिघला देता है और उसका असर ये होता है कि इश्क़ के नशे में डूबा हुआ इंसान फिर बहुत ही खूबसूरत ख़यालों का बन जाता है। उसके मुख से कड़वी बातें नहीं निकला करती। इश्क़ हो जाने के बाद इंसान की सोच और उसके ख़यालात बदल जाते हैं। वो अपने प्रियतम की ही खुशियों के बारें में सोचता रहता है। हर पल यही सोचता है कि कभी ऐसा कोई पल न आने पाए जिसके तहत उसके प्रियतम को ज़रा सी भी तक़लीफ हो जाए। किसी के खूबसूरत चेहरे को अपनी पलकों तले बसा कर तथा उसकी याद के सहारेसारी ऊम्र काट लेने वाले डायलॉग आज जयदीप के मुख से खारिज़ हो रहे थे। जिसने किसी से इश्क़ किया होगा उसे ये बात ज़रूर समझ में आई होगी कि जयदीप के ये डायलॉग किस हद तक सच थे।

अभी सोनिया जयदीप की इन सब बातों से बुत बनी बैठी ही थी कि सहसा तभी ड्राइंग रूम में मानुषी व श्रुति एक साथ आकर खड़ी हो गईं। सोनिया की नज़र जैसे ही उन दोनो पर पड़ी तो उसने जल्दी से अपने चेहरे के भावों को छुपा लिया और फिर एकाएक ही उसकी नज़र जयदीप पर पड़ी तो मन ही मन चौंक पड़ी। जयदीप की नज़र श्रुति पर स्थिर थी। एकाएक ही उसकी ऑखों में श्रुति के प्रति बेपनाह मोहब्बत का सागर भीषण हिलोरें लेता हुआ नज़र आया उसे। कहते हैं कि ऑखें सब कुछ बयां कर देती हैं। सोनिया को जयदीप की ऑखों ने बता दिया कि वो श्रुति के प्रति अपने वजूद के हर ज़र्रे पर सिर्फ और सिर्फ मोहब्बत छलकाए बैठी हैं।

" मॉम मैं और श्रुति दीदी। " उधर ड्राइंग रूम में आते ही मानुषी ने खुशी वाले लहजे में कहा __" घूमने जा रहे हैं। दीदी कह रही हैं कि उन्हें हमारा ये गॉव देखना है औ हमारे खेत भी देखना है। "

" ओह चल ठीक है। " सोनिया ने सहसा मानुषी की तरह ध्यान से देखते हुए कहा __" पर तुम दोनो अकेले कैसे जाओगी ?"

" इनके साथ मैं चला जाता हूॅ मॉम। " जयदीप भला ये सुनहरा अवसर अपने हाथ से कैसे जाने देता , अतः तपाक से बोल पड़ा था ___" मैं इन्हें बहुत अच्छे से अपना ये गॉव और अपने सारे खेत दिखा दूॅगा। "

" कोई ज़रूरत नहीं तुझे हमारे साथ जाने की। " मानुषी ने सहसा तुनक मिजाज़ी से कहा __" हम दोनो खुद ही देख लेंगे। क्यों दीदी ?"

" बात तो तेरी सही है। " श्रुति ने कहा __" लेकिन जयदीप को भी साथ ले लेंगे तो कोई दिक्कत थोड़ी न है। आख़िर भाई है वो हमारा। हमारे साथ रहेगा तो हमें भी कंफर्टेबल फील होगा। है न मौसी ?"

" बिलकुल ठीक कहा तुमने बेटा। " सोनिया ने मुस्कुराते हुए कहा __" लेकिन अगर ये जाएगा तो मानुषी और ये दोनो आपस में झगड़ा ही करेंगे। इस लिए एक काम करो बाहर खड़े हमारे सुरक्षा करने वाले आदमियों में से एक दो को साथ ले जाओ। वो क्या है न ज़माना बहुत ख़राब है। कोई ऊँच नीच हो गई तो समस्या हो जाएगी। इस लिए तुम दोनो के साथ में दो सुरक्षा करने वाले आदमी रहेंगे तो मैं भी बेफिक्र रहूँगी। "

" हॉ ये ठीक रहेगा मॉम। " मानुषी ने जयदीप को चिढ़ाने के लिए अपनी जीभ दिखाते हुए कहा __" इस लंगूर से तो वो ही अच्छे रहेंगे। हमें भी लगेगा कि उनके रहते हम पर कोई ऑच नहीं आएगी। इसके रहते तो कोई भी हमें छेंड़ सकता है और ये बेचारा मार के डर से कुछ बोल भी नहीं पाएगा। "

" ओये क्यों मेरे भाई को ऐसा बोल रही है तू ?" श्रुति ने ऑखें दिखाते हुए कहा __" अच्छा भला स्मार्ट तो है हमारा भाई। तेरी ऑखें ख़राब हैं जो तुझे वो लंगूर नज़र आता है। "

" आपने सही कहा दीदी। " जयदीप ने आवेश में श्रुति को दीदी कह तो दिया मगर अगले ही पल उसकी आवाज़ कॉप गई। मन ही मन उसे अपनी बेबसी पर बेहद क्रोध आया मगर फिर खुद को संभाल कर बोला __" जो खुद ही बंदरिया जैसी हों उन्हें सामने वाला लंगूर ही दिखेगा न। "

" ओये तमीज़ से बात कर समझा। " मानुषी ने घुड़की सी दी उसे __" भूल मत कि मुझसे छोटा है तू और फिर अगर मैने तुझे लंगूर कह भी दिया तो क्या हो गया ? मैने तो तुझे प्यार से लंगूर कहा है। "

" वाह दीदी वाह। " जयदीप कह उठा __" प्यार से कहने के लिए लंगूर शब्द ही मिला था आपको ? देख लीजिए मॉम , मैं छोटा हूँ तो सब मुझसे अपने बड़े होने का रौब झाड़ते हैं। "

जयदीप ने इतनी मासूमियत से ये कहा था कि श्रुति के होठों पर मुस्कान उभर आई। वो तुरंत ही जयदीप के बगल पर जाकर बैठी और फिर उसे अपने साइड से छुपका कर बोली___"जाने दे न भाई। ये छिपकली तो है ही दिमाग़ से पैदल लेकिन मैने तो तुझे ऐसा वैसा कुछ नहीं कहा न? मुझे पता है तू हमारा सबसे स्वीटेस्ट भाई है। चल अब नाराजगी छोंड़ और मुस्कुरा कर दिखा। उसके बाद हमें घूमने भी जाना है।"

श्रुति की बातों का असर पलक झपकते ही जयदीप पर न हो ऐसा तो अब हो ही नहीं सकता था। वैसे भी अब तो अगर वो उसे ज़हर खाने को भी बोलती तो वो खुशी से खा लेता। ख़ैर श्रुति के कहने पर उसके इस तरह उसे छुपका लेने पर जयदीप का चेहरा ताज़े खिले गुलाब की मानिंद खिल उठा था। इस वक्त वो इतना खुश हो गया था कि अब अगर उसे मौत भी आ जाती तो वो उसके लिए भगवान से शिकवा न करता।

उधर सोनिया चुप बैठी इन तीनो की बातें सुन रही थी और मानुषी व श्रुति दोनो के ही चेहरों

को बड़े ध्यान से देखे जा रही थी। जैसे समझना चाहती हो कि दोनो के मन में घूमने जाने के सिवा कुछ और तो नहीं है। जयदीप को वो इन दोनो के साथ जान बूझ कर नहीं भेज रही थी। क्योंकि उसे पता था कि जयदीप इस वक्त श्रुति के प्यार में पागल है। श्रुति ने अगर उसे किसी बात के लिए कहीं भेज दिया तो वो बिना कुछ सोचे समझे चला जाएगा और ये दोनो उसके चले जाने पर कुछ भी करने के लिए आज़ाद हो जाएँगी। सोनिया इस बात के लिए मना भी नहीं कर सकती थी कि वो दोनो घूमने न जाएँ। इसी लिए जयदीप की जगह वो उन्हें सुरक्षा गार्ड्स को साथ में जाने का कह रही थी।

" तो कब जाना है तुम दोनो को ?" फिर सोनिया ने पूछा।

" कब जाना है क्या मतलब है मॉम ?" मानुषी ने कहा __" हम दोनो तो तैयार होकर आ ही गए हैं और जा ही रहे थे। "

" चलो ठीक है। " सोनिया ने कहने के साथ ही जयदीप की तरफ देखा __" बेटा जाओ तुम गेस्ट हाउस से दो आदमियों को बोल दो। वो इन दोनो के साथ चले जाएंगे। "

सोनिया के मन में अचानक ही गेस्ट हाउस में ठहरे उन आदमियों का ख़याल आया था। जिन्हें सत्यम सिंह के बिजनेस संबंधी दोस्त मदद के लिए भेज गए थे। मानुषी व श्रुति के साथ उनमे से ही किन्हीं दो आदमियों को भेजना उचित लगा था उसे। वो हर तरह से इन दोनो की सुरक्षा कर सकते थे। उसे अपने आदमियों की काबीलियत पर अब कोई भरोसा नहीं रह गया था। ख़ैर सोनिया के कहने पर जयदीप सोफे से उठा और बाहर की तरफ चला गया।

" तो तुम दोनो कैसे जाओगी यहॉ से ?" सोनिया ने जयदीप के जाते ही पूछा __" मेरा मतलब है कि घूमने के लिए किसी कार या जीप से जाओगी या ऐसे ही पैदल जाना है ?"

" इतना ज्यादा पैदल कौन चल पाएगा मॉम ?" मानुषी ने कहा __" पहले सारा गॉव घूमना फिर खेतों की तरफ जाना। नहीं मॉम , इतना ज्यादा पैदल चलना मेरे बस का तो हर्गिज़ भी नहीं है। "

" हॉ मुझे पता था यही कहोगी तुम। " सोनिया ने मन ही मन खुश होते हुए कहा __" ख़ैर , बाहर जीप खड़ी है। उसमे ही बैठ कर चले जाना और हॉ उन आदमियों के साथ ही रहना। "

" ओके मॉम। " मानुषी ने कहा __" वैसे आज लंच में क्या बनेगा ? वो क्या है न मुझे आज आपके हाथ का बना बैगन का हलवा खाना है। "

"क .. क्या कहा ????" श्रुति उसकी बात सुन कर बुरी तरह चौंकी थी। जबकि सोनिया कहने के साथ ही इधर उधर देखने लगी थी।

" भागो दीदी भागो। " मानुषी श्रुति का हाथ पकड़ कर खींचते हुए बोली __" वरना मॉम मेरे साथ साथ आपकी भी पिटाई करने लगेंगी डंडे से। "

श्रुति को कुछ भी समझ में न आया कि ये अचानक हुआ है क्या है? बैगन का हलवा और फिर

मानुषी का ये कहना कि भागो वरना मॉम डंडे से पिटाई करने लगेंगी। श्रुति को कुछ समझ न आया। ये अलग बात है कि मानुषी के खींचने पर वह सोफे से उठ कर बाहर की तरफ ही लड़खड़ाते हुए भाग ली थी। जबकि इधर सोनिया उन दोनो के जाते ही मुस्कुरा कर रह गई थी।

मानुषी व श्रुति जैसे ही बाहर आईं तो देखा कि जयदीप के साथ दो हट्टे कट्टे आदमी जीप के पास ही खड़े थे। जयदीप उन्हें कुछ बता रहा था। ये देख कर मानुषी व श्रुति उस तरफ बढ़ चलीं। जीप के पास पहुॅचते ही वो दोनो जयदीप के पास ही खड़ी हो गईं।

" दीदी ये दोनो आप लोगों के साथ जाएॅगे। " जयदीप ने मानुषी की तरफ देखते हुए कहा __" बाकी मॉम ने तो आपको सब कुछ समझा ही दिया होगा। "

" हॉ समझा दिया है। " मानुषी ने कहा __" और हॉ इनको बोल दे कि हमारा हर कहना भी मानेंगे। "

" अरे दीदी ये सब कहने की ज़रूरत नहीं है। " जयदीप ने कहा __" ये दोनो बहुत अच्छे और समझदार व्यक्ति हैं। आपको पता नहीं है ये दोनो ही तगड़े फाइटर हैं। इनके रहते आप दोनो को कोई छू भी नहीं सकता। "

" ओह आई सी। " मानुषी ने कहा __" फिर तो अच्छी बात है। चलिये दीदी जीप में बैठते हैं। "

थोड़ी ही देर में मानुषी व श्रुति जीप में बैठ गईं। एक आदमी जीप की ड्राइविंग सीट पर बैठ गया जबकि दूसरा उसके बगल में। जीप की पिछली सीट पर मानुषी व श्रुति बैठ गई थी। जीप जैसे ही चलने लगी तो जयदीप ने श्रुति की तरफ प्यार भरी नज़रों से देखते हुए बस इतना ही कहा घूम फिर कर जल्दी आइयेगा। उसकी इस बात पर मानुषी व श्रुति दोनो ही मुस्कुरा उठीं। किन्तु इस बार उनकी इस मुस्कान में ऐसा भेद छिपा था जिसे जयदीप जैसा कूढ़मगज लड़का किसी भी तरह से नहीं समझ सकता था।

८३

उधर मुंबई में ।

सबके आ जाने से पूरे बंगले में एक अलग ही रौनक तथा चहल पहल सी हो गई थी। किन्तु खिले खिले चेहरों पर भी एक उदासी थी जो इस बात का सबूत थी कि विक्रम के यहॉ न होने से सब कितने उदास थे। सबको पता था कि विक्रम किस काम के लिए इस बार गॉव गया हुआ था। सबके साथ तो रेणुका घुली मिली रहती किन्तु अकेले में अपने बेटे के लिए बहुत दुखी हो जाती थी। उसे इस बात की तक़लीफ भी थी कि विक्रम जब से गया था तब से एक दिन भी फोन नहीं लगाया था और ना ही उमाकांत पाटिल की वजह से उसने अपने बेटे को फोन लगाया था।

उमाकांत पाटिल ने रेणुका से कहा था कि वो फोन करके विक्रम को कमज़ोर न बनाए। मॉ बेटे के बीच का रिश्ता भावनाओं के बहुत ही नाज़ुक बंधन से जुड़ा होता है जिससे दोनो ही ऐसे हालातों में कमज़ोर पड़ जाते हैं। किन्तु उमाकांत पाटिल ने ये भी कहा था वो ईश्वर से अपने बेटे की सलामती की दुवा करे। ये उसकी जंग है उसे स्वतंत्रता पूर्वक इस जंग को इसके अंजाम तक पहुॅचाने दो। सब अपनी अपनी जगह विक्रम के लिए चिंतित थे तथा परेशान थे मगर सबके दिलों में उसके लिए प्यार था। सबके होठों पर उसकी सलामती के लिए दुवाएॅ थी।

रेणुका, अपर्णा तथा रौनक की मॉ। रौनक की मॉ का नाम रुक्मणी था। ये तीनो ही आपस में खूब सारी बातें करती रहती थी। किन्तु अकेले में तीनों ही विक्रम के लिए चिंतित हो जाती थी। एक दूसरे को अपनी चिंता व परेशानी नहीं दिखाती थी। क्योंकि कोई नहीं चाहता था कि सबके बीच एक तनाव या दुख भरा माहौल क्रियेट हो जाए। उमाकांत पाटिल व सुंदर सिंह खुद भी अपनी जगह विक्रम के लिए चिंतित थे मगर सबको तसल्ली देते रहते थे और यही कहते कि सच्चाई की हमेशा विजय होती है। इस लिए इसके लिए इतना चिंतित व परेशान न हों कोई।

रौनक को उमाकांत पाटिल ने अपनी कंपनी में ही एक अच्छी पोस्ट पर काम में लगा दिया था। अतः रौनक अब ज्यादातर कंपनी में ही रहता था। किन्तु हर वक्त उसका मन अपने दोस्त के लिए अशान्त रहता था। उसे विक्रम से शिकायत भी थी कि वो उसे यहॉ सुरक्षित छोंड़ कर खुद मौत के मुह में चला गया था।

रौनक की बहन आशा ज्यादातर निशा के साथ ही रहती थी। निशा सुबह स्कूल जाती और फिर शाम को वापस आ जाती थी। हर समय अपनी शरारतों से सबको परेशान करने वाली ये गुड़िया अचानक से इस तरह ख़ामोश हो गई थी जैसे ये सदियों से ऐसी ही रही थी। उसकी इस ख़ामोशी को सब यही समझते कि वो अपने प्यारे से बड़े भैया के लिए सबकी तरह ही दुखी है। कोई ये नहीं जानता था कि उसने अपनी छोटी सी इस ऊम्र अपने ही भैया से प्रेम का कितना बड़ा रोग लगा लिया था। जिसके चलते उसका हर समय शरारतें करना जाने कहॉ गुम

होकर रह गया था।

आशा को पता था कि निशा शुरू से ही ऐसी नहीं थी। शुरू शुरू में उसकी इस ख़ामोशी को वो खुद भी यही समझती थी कि वो सबकी तरह विक्रम के लिए दुखी है। इस लिए अब वो शरारतें नहीं करती है। मगर जल्द ही उसे इस कारण के अलावा भी दूसरा कारण समझ में आ गया था। दरअसल निशा भी अब अपने भाई की तरह डायरी लिखने लगी थी। जिसमें वो अपने और अपने प्रियतम भाई के बीच जन्में इस प्रेम के हर पहलुओं के बारें में लिखती थी। अपने दिल के जज़्बातों को वो डायरी के कागज़ों पर लिखती थी। उसे पता था कि डायरी में उसके द्वारा लिखा गया हर लफ़्फ किसी डायनामाइट से कम नहीं है। कहने का मतलब ये कि अगर किसी को ये पता चल जाए कि सबके दिलों में विक्रम करने वाली उनकी ये नटखट गुड़िया अपने ही सगे भाई से प्रेम करती है तो यकीनन इस बात से डायनामाइट की तरह विस्फोट हो जाना था।

डायरी में अपने दिल का हाल बयां करने के बाद निशा उस डायरी को अपने कमरे में ही रखी आलमारी के अंदर वाले लॉकर में रख कर लॉक लगा देती थी। मगर एक दिन कदाचित उसका भेद खुल जाना था इस लिए उससे ग़लती हो गई। दरअसल पिछले दिन सुहब सुबह की ही बात है। आशा चाय लेकर निशा के कमरे में पहुँच गई। उसने देखा कि बेड पर चित्त अवस्था में लेटी निशा के सीने पर एक मोटी सी डायरी थी जिसे वो दोनो हाथो से पकड़े सोई हुई थी। आशा जो कि निशा के साथ ही रहती थी। पिछली रात उसे आधी रात के क़रीब शूशू लगी तो उसकी नींद खुल गई। उसने देखा कि रात के उस वक्त टेबल लैम्प जला कर निशा कुछ लिख रही थी। उस वक्त उसने सोचा था कि वो अपनी पढ़ाई ही कर रही है। बाथरूम से आने के बाद उसने कहा भी था उससे कि अब उसे सो जाना चाहिए।

आशा ने प्लेट सहित चाय के कप को बेड के पास ही दीवार से सटे एक छोटे से टेबल पर रखा और फिर वो निशा के पास गई। उसकी नज़र डायरी पर पड़ी। आशा ने ग्रेजुएशन तो नहीं किया था किन्तु दस बारह तक पढ़ी लिखी थी वो। सोनपुर गॉव में बारवीं तक स्कूल था। आगे कॉलेज की पढ़ाई पढ़ने के लिए चिमनी जाना पड़ता था, जो कि पास के ही गॉव में था। ख़ैर, डायरी देख कर उसे ये तो समझ आ गया कि ऐसी डायरी निशा की पढ़ाई में तो उपयोग होती नहीं होगी तो फिर ऐसा क्या है इसमें जिसे वो सोते समय भी लिए हुए है।

आशा ने बहुत ही आहिस्ता से निशा के हाथो से उस डायरी को निकाला और फिर बेड से दो कदम पीछे हट कर उसने डायरी को खोला। डायरी के शुरू के काफी पेज अलग अलग चीज़ों से भरे थे। जैसे कि हर देश के कोड्स वगैरा। अपने देश भारत के अलग अलग राज्यों के मानचित्र। उसके बाद मुख्य पेज शुरू होते थे।

मुख्य पेज पर ही मोटे मोटे अच्छरों में आशा को लिखा नज़र आया___"जियें तो जियें कैसे....बिन आपके??" इस टाइटल के नीचे ही एक मध्यम साइज़ के दो दिल बने हुए थे, जो कि साथ में ही मिले हुए थे। जिसमे एक तरफ वाले में विक्रम और दूसरे वाले में निशा लिखा था। उसके नीचे मोटे अच्छरों में ही लिखा था___"माई लव"

आशा को ये सब देख कर ज़बरदस्त झटका लगा। इतना कुछ देख कर कोई भी समझ सकता था कि माज़रा क्या है? आशा ये जान कर हैरान रह गई कि निशा अपने ही बड़े भाई से प्यार करती है। आशा ने झटके से बेड पर सो रही निशा के चेहरे की तरफ देखा। निशा के चेहरे पर इस वक्त सारे संसार की मासूमियत विद्यमान थी। उस चेहरे को देख कर उसे यकीन ही नहीं हुआ कि ये ऐसा कर सकती है। मगर उसके ही द्वारा लिखा गया ये हर लफ्ज़ क्या झूँठा हो सकता था?

आशा के पूरे जिस्म में एक अजीब सी झुरझुरी तेज़ रफ्तार से दौड़ गई। अंदर ही अंदर जैसे एकाएक ही कोई तेज़ जज़्बातों का भयंकर तूफान उठा जिसने उसके समूचे अस्तित्व को हिला कर रख दिया। उसी जज़्बातों के तूफान का असर था कि उसकी ऑखों में एकाएक ही ऑसू भर आए थे। फिर जैसे उसने खुद के जज़्बातों को संभाला और डायरी के उस पेज को पलटा। दूसरे पेज पर कोई ग़ज़ल लिखी हुई थी जिसे आशा ने पढ़ना शुरू किया।

पूरी बात पढ़ने के बाद आशा का दिलो दिमाग़ सुन्न सा पड़ता चला गया। अभी वो ये सब सोच ही रही थी कि सहसा वो बुरी तरह चौंकी। बेड पर पड़ी निशा के जिस्म में हलचल सी हुई प्रतीत हुई उसे। ये देख कर आशा ने जल्दी से डायरी को आगे बढ़ कर निशा के बगल से ही ऐसी पोजीशन में रख दिया कि अगर निशा की नज़र उस पर पड़े भी तो उसे यही लगे कि वो डायरी उसके हाथो से सोते वक्त ही छूट कर एक तरफ गिर गई थी। डायरी रखने के बाद आशा जल्दी से टेबल पर से चाय का कब प्लेट सहित उठाया और फिर अपने चेहरे पर खुशी तथा प्यार के भाव लाते हुए निशा के चेहरे के क़रीब झुकते हुए कहा___"गुड मार्निंग गुड़िया। चलो चलो सुबह हो गई है। देखो तो गरमा गरम चाय तुम्हारे पेट में जाने के लिए कैसे उतावली हो रही है।"

आशा के इस प्रकार कहने पर निशा ने कुछ ही पलों में अपनी ऑखें खोल दी और फिर आशा की तरफ देख कर वो बस ज़रा सा ही मुस्कुराई। आशा के हाथ में चाय का कप देख कर वो बेड से उठी और बेड की पिछली पुश्त की तरफ खिसक कर उसने अपनी पीठ उस पर टिकाई और फिर उसने आशा के हाथ से चाय का कप ले लिया। जबकि चाय का कप पकड़ाते ही आशा सीधी खड़ी हो गई। वो देखना चाहती थी कि निशा की नज़र जब अपनी डायरी पर पड़ेगी तो उसका कैसा रिएक्शन होता है?

आशा को इसके लिए ज्यादा देर तक इन्तज़ार नहीं करना पड़ा। निशा ने कप से चाय का पहला ही शिप लिया था कि उसकी नज़र बाएॅ साइड उल्टी पड़ी अपनी डायरी पर पड़ी और फिर उसके चेहरे पर एकदम से डर और घबराहट के मिले जुले भाव उभर आए। उसके पीछे खिसकने से डायरी उलट कर थोड़ी और दूर हो गई थी तथा उलट सी गई थी। निशा ने फौरन ही अपना एक हाथ बढ़ा कर डायरी को अपने कब्जे में ले लिया और वहीं अपने हिप्स के पास ही लगभग छुपा सा लिया उसे। उसकी इस नादानी पूर्ण हरकत से आशा के होठों पर फीकी सी मुस्कान उभर आई। उसके मन में पहले तो आया कि वह उससे उस डायरी तथा डायरी में लिखे मजमून के संबंध में कोई बात करे मगर उसने ये सोच कर अपने मन से इस ख़याल को

झटक दिया कि उसके पूछने पर कहीं निशा बुरी तरह डर न जाए।

" अच्छा मैं जा रही हूँ गुड़िया। " फिर आशा ने सामान्य भाव से कहा __" रौनक को भी उठा दूँ। उसे भी ड्यूटी जाना होगा न और हॉ तू भी जल्दी से फ्रेश होकर नीचे आ जाना। ब्रेकफास्ट रेडी होने ही वाला है। "

" ठीक है दीदी। " निशा ने भी खुद को सामान्य दर्शाते हुए कहा __" आप जाइये मैं आती हूँ थोड़ी देर में। "

निशा की बात सुन कर आशा कमरे से बाहर चली गई। जबकि उसके जाने के बाद निशा एकाएक ही गहन विचारों में कहीं खो सी गई। अभी वो विचारों में खोई ही थी कि तभी उसका मोबाइल फोन बज उठा। उसने सिरहाने पर ही एक तरफ रखे मोबाइल को उठाया और स्क्रीन पर फ्लैश कर रहे अनजान नंबर को देखा। उसके चेहरे पर सोचने वाले भाव उभरे। उसे समझ न आया कि उसके मोबाइल पर ये अनजान नंबर से आने वाली काल किसकी हो सकती है?

" हैलो। " फिर जाने क्या सोच कर उसने काल रिसीव किया और उसे कानों से लगाते ही कहा था।

" हैलो गुड़िया। " उधर से साक्षी की जानी पहचानी आवाज़ सुन कर निशा बुरी तरह चौंक पड़ी थी। उसे आशा , रुक्मणी , रौनक और अपर्णा आदि के द्वारा पता चल गया था कि साक्षी विक्रम का पूरी तरह से साथ दे रही है। साक्षी के इस तरह अपने ही मॉ बाप के खिलाफ़ हो जाने से हर कोई हैरान था। मगर सब ये भी जानते थे कि साक्षी एक अच्छी लड़की है। वो ग़लत का साथ कभी नहीं दे सकती। उसके मॉ बाप ने अब तक उससे सच छुपाया हुआ था इसी लिए उसका बर्ताव इन लोगों के प्रति ऐसा था।

" गुड़िया तू सुन रही है न ?" निशा के चुप रह जाने पर उधर से साक्षी की पुनः आवाज़ उभरी __" देख , तुझे पूरा हक़ है मुझसे नाराज होने का और तुझे नाराज होना भी चाहिए। मैं चाहती हूँ कि तेरा जो मन करे तू मुझे वो सज़ा दे मेरी गुड़िया। तेरी हर सज़ा मैं हॅसते हॅसते कुबूल कर लूँगी। बस एक बार अपने मुख से मुझे दीदी कह दे। कसम से उसके बाद अगर मुझे मौत भी आ जाएगी तो उसका मुझे कोई दुख नहीं होगा। "

"न .. नहींऽऽऽ। " साक्षी की बातों से निशा की ऑखों से पलक झपकते ही ऑसू बह चले , बुरी तरह तड़प कर बोली __" ये आप कैसी बातें कर रही हैं दीदी ? मुझे आपसे कोई शिकायत कोई नाराज गी नहीं है। मुझे पता है कि इस सबमें आपका कभी कोई दोष था ही नहीं। इस लिए प्लीज आप ये सब मत कहिए। मुझे तो बहुत खुशी हो रही है कि मेरी सबसे अच्छी वाली दीदी ने मुझे फोन किया। "

" हॉ पर मुझे खुशी नहीं हुई। " उधर से साक्षी ने अजीब भाव से कहा __" और वो इस लिए कि मेरी सबसे प्यारी गुड़िया ने अपनी इस गंदी दीदी को कोई सज़ा नहीं सुनाई। "

" प्लीज दीदी। " निशा ने आहत भाव से कहा __" ऐसा मत कहिए न खुद को और अगर

आपने दुबारा फिर से अपने लिए ऐसा कहा तो मैं आपसे बात नहीं करू गी , । "

इस बार निशा के ऐसा कहने पर उधर से साक्षी की रुलाई फूट गई। मोबाइल पर साक्षी के सिसकने की आवाज़ सुन कर निशा भी दुखी हो गई। वह फोन पर ही साक्षी को अपने तरीके से मनाने लगी कि वो न रोए। आख़िर कुछ देर बाद सब ठीक हो ही गया।

" और बताइये दीदी। " फिर निशा ने सामान्य भाव से कहा __" आज आपको मेरी याद कैसे आ गई ?"

" तेरी याद तो रोज़ ही आती है गुड़िया। " उधर से साक्षी ने सहसा गंभीरता से कहा __" किन्तु अपराध बोझ के चलते तुझसे बात करने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी। "

" आप फिर से ऐसी बातें करने लगीं। " निशा ने कहा __" इन बातों को अब जाने दीजिए न दीदी। ख़ैर ये बताइये कि कैसी हैं आप ?"

" मैं तो अच्छी ही हूँ गुड़िया। " साक्षी ने कहा __" पर मेरा दिल करता है कि तुझे कितना जल्दी अपनी ऑखों के सामने देखूँ और तुझसे ढेर सारी अच्छी अच्छी बातें करू भी और तुझसे सीखूँ भी। "

" मेरा भी ऐसा ही दिल करता है दीदी। " निशा ने कहा __" मगर शायद अभी ये मुमकिन नहीं है। "

" हॉ ये तो है गुड़िया। " साक्षी ने कहा __" अच्छा एक बात पूछूँ तुझसे ?"

" हॉ जी दीदी। " निशा के चेहरे पर सोचने वाले भाव उभरे __" पूँछिए न। "

" क्या विक्रम ने तुझे कुछ कहा है ?" उधर से साक्षी ने कहा __" या फिर किसी बात पर उसने तुझे डॉटा है। तू मुझसे बता गुड़िया मैं यहॉ इसके कॉन खींचूँगी। इसकी हिम्मत कैसी हुई मेरी गुड़िया को कुछ कहने की। "

" नहीं नहीं दीदी। " निशा बुरी तरह हड़बड़ा गई थी , बोली __" ऐसा कुछ भी नहीं है। मुझे किसी ने कुछ नहीं कहा। आपको ऐसा क्यों लगा दीदी ?"

" विक्रम बता रहा था। " साक्षी ने निशा की धड़कनों को बढ़ाते हुए कहा __" कि तू कुछ समय से उससे बात ही नहीं कर रही है और ना ही तू उसके सामने आती है। उसका कहना है कि उसने तो ऐसा तुझे कुछ भी नहीं कहा जिससे तू उससे बात ही करना बंद कर दे। मुझे पता है कि वो तुझे अपनी जान से भी ज्यादा चाहता है। अगर तुझे ज़रा सी भी किसी चीज़ से तक़लीफ हो जाए तो उसकी जैसे जान पर बन आती है। फिर क्या बात है गुड़िया , आख़िर ऐसी कौन सी बात हो गई है जिससे तू उससे बात नहीं करती है। यहॉ तक कि उसके सामने भी नहीं आना चाहती ?"

निशा को समझ न आया कि वो साक्षी को इसका क्या जवाब दे? सच्चाई वो बता नहीं सकती थी और झूँठ तो ऐसा होता है जो ज्यादा दिनों तक छुपा नहीं रह सकता था। हलॉकि उसे ये

उम्मीद नहीं थी कि विक्रम ये सब समझता न होगा। उसे तो ये भी उम्मीद नहीं थी कि वो ये बात सीधे तौर पर साक्षी दीदी से बोल देगा।

" क्या हुआ गुड़ियां ?" निशा को ख़ामोश जान कर उधर से साक्षी ने फिर कहा __" तू चुप क्यों हो गई ? बता न क्या बात हो गई है ऐसी ?"

" ऐसी कोई बात नहीं है दीदी। " निशा अब बोले भी तो क्या __" मैं तो बस ऐसे ही नाराज हूँ उनसे। आप तो जानती ही हैं कि मैं कैसी हूँ। "

" एक बात हमेशा याद रखना गुड़िया। " उधर से साक्षी ने कहा __" तू हम सबकी जान है , खास कर विक्रम की। तुझे नहीं पता कि तेरे बात न करने से वो यहाँ कितना दुखी रहता है। मुझे तो पता ही न चलता अगर मैं कल रात उसके कमरे में अचानक पहुँच न गई होती तो। मेरे पूछने पर ही उसने ये सब बताया। ख़ैर , एक बात और कहना चाहती हूँ गुड़िया और वो ये कि मैने तो अपने मॉ बाप और भाई से हर रिश्ता तोड़ लिया है। क्योंकि वो सब बुरे ही नहीं बल्कि पापी लोग हैं। इस दुनिया में अब अगर मेरा कोई सच्चा भाई है तो वो है विक्रम । मुझे पता है कि हमारा भाई विक्रम कोहिनूर हीरा है। उसके दिल में सबके लिए बेपनाह प्यार और सम्मान है। इस लिए ये हम सबका भी फर्ज़ बनता है कि हम उसे वैसा ही प्यार व सम्मान दें। "

" मुझे पता है दीदी। " निशा ने कहा __" और यकीन मानिए कि उनके लिए मेरे दिल में बेपनाह प्यार व सम्मान है और ये मरते दम तक कम न होगा बल्कि बढ़ता ही जाएगा। "

" मुझे तुमसे यही उम्मीद है गुड़िया। " साक्षी ने निशा की बातों को सामान्य ही समझते हुए कहा __" और देखना जिस दिन सब कुछ ठीक हो जाएगा न उस दिन से हम सब एक साथ ही रहेंगे और हम सभी बहनें अपने भाई को जी भर के प्यार करेंगे। "

" जी बिलकुल दीदी। " निशा के होठों पर सहसा फीकी सी मुस्कान उभर आई __" अच्छा दीदी अब हम बाद में बात करेंगे। वो क्या है न कि मुझे बाथरूम जाना है। फिर स्कूल भी जाना है। "

" ओह हॉ। " साक्षी ने कहा __" चल ठीक है गुड़िया। अच्छे से पढ़ाई करना और हॉ अपना ख़याल भी रखना। "

इसके साथ ही फोन काल कट गई। निशा ने गहरी सास ली और फिर कुछ देर तक इन सारी बातों के बारे में सोचती रही। फिर वो उठी और बाथरूम की तरफ बढ़ गई।

इधर मैं मानुषी को मैसेज के द्वारा सब कुछ समझाने के बाद प्राची के मम्मी पापा या यूँ कहूँ कि अपने सास ससुर से मिला। ये पहला अवसर था जब मैं उनके पास हर काम से फारिग़ होकर मिला था। मैने इसके पहले उनसे न मिल पाने के लिए माफ़ी भी माँगी। ये अलग बात है कि उन दोनो ने मुझे अपने सीने से लगा लिया और ढेर सारा प्यार और दुवाएॅ दी। मुझे अपने सीने से जाने कितनी ही देर तक लगाए रहे थे वो। मैं समझ सकता था कि वो इस वक्त भावनाओं के भॅवर में गोते लगा रहे होंगे। गीता बुआ ने मेरे बारे में सब कुछ उन्हें बता दिया था। सब कुछ जान कर उन्हें दुख भी हुआ और खुशी भी हुई।

काफी देर तक मैं उनके पास ही बैठा रहा उसके बाद मैं उनसे इजाज़त लेकर हरिया काका के पास आ गया। हरिया काका से मैने मंत्री के पिल्लों का हालचाल लिया और उन्हें ये कहा कि मंत्री की बेटी को गंदे तरीके से टार्चर न करें। उन्हें ये भी कहा कि वो उन लड़कों के साथ भी वो सब न करें जो इसके पहले वो कर रहे थे। मैने ऐसा इस लिए कहा कि अब उन लड़कों के साथ ही उनकी बहन भी थी। उसका इस सबमें कोई कुसूर तो था नहीं इस लिए उसके सामने उन लड़कों के साथ वो सब करना उचित नहीं था।

मेरी बातें हरिया काका को समझ में आ गई थी। मंत्री की बेटी रचना पहले की अपेक्षा अब बिलकुल चुप ही रहती थी। अपने भाई के साथ साथ तथा भाई के तीनों दोस्तों की तरफ उसका देखने का भी मन नहीं करता था। ज़ाहिर है कि उसकी ऑखों के सामने हरिया काका ने उसके भाई के साथ वो सब किया था जिसके चलते उसे अपने आप में जिल्लत महसूस हुई थी और वो सब उसके भाई की करतूतों की वजह से ही हुआ था।

सुबह का नास्ता हम सबने एक साथ ही किया और फिर मैं और अमर घर से बाहर की तरफ चल दिये। अभी दो क़दम ही हम दोनो आगे बढ़े थे कि पीछे से साक्षी दीदी की आवाज़ आई। उनकी आवाज़ से हम दोनो ही ठिठक गए। थोड़ी देर में साक्षी दीदी हमारे पास आ गईं। इस वक्त वो कत्थई कलर के जीन्स और उसी से मैच करते टाप में थी। टाप के ऊपर लेदर की छोटी सी जॉकेट डाला हुआ था उन्होंने। ऑखों में सन ग्लासेज था। मैं उन्हें इस लुक में देखता ही रह गया। मेरे इस तरह देखने पर उन्होंने मुस्कुरा कर मेरे दाहिने गाल पर हल्की सी चपत लगाई और फिर हमारे साथ ही बाहर की तरफ चलने लगीं।

" एक बात तुम दोनो ही कान खोल कर सुन लो। " बाहर आते ही साक्षी दीदी ने हिटलरी अंदाज़ में हम दोनो की तरफ एक एक नज़र देखते हुए कहा __" मुझसे बग़ैर पूँछे अथवा मेरी जानकारी के बिना तुम दोनो कोई भी काम नहीं करोगे। हम हर काम एक साथ ही करेंगे। कुछ समझ में आया तुम दोनो को ? या फिर मैं दूसरे तरीके से समझाऊॅ ?"

" दूसरे तरीके से कैसे दीदी ?" मैने मुस्कुराते हुए शरारत से पूछा था।

" मेरे पास दूसरा एक ही तरीका है माई डियर ब्रदर। " साक्षी ने लेदर की जॉकेट के एक छोर को पकड़ कर हल्का सा एक तरफ किया तो जींस के पैन्ट में खोंसा हुआ उनका सर्विस रिवाल्वर नज़र आ गया हमें। जबकि उसे दिखाते ही उन्होंने कहा ___" जब काम बातों से न

बने तो फौरन इस रिवाल्वर की नाल सामने वाले की खोपड़ी में लगा कर सारा काम उसे समझा देना चाहिए। दैट्स आल। आई होप कि तुम दोनो अब अच्छी तरह समझ गए होगे। "

" चलिए आपने इतना कान्फिडेंस के साथ कहा है तो समझ ही लेते हैं। " मैने पुनः शरारत से कहा __" वरना हम दोनो तो ऐसे कूढ़मगज इंसान हैं जो किसी भी तरह से नहीं समझ पाते। क्यों अमर ??"

" तू मुझे ज़रूर मरवाएगा अब। " अमर दूर हटते हुए बोल पड़ा था।

" क्या यार। " मैने बुरा सा मुह बनाते हुए कहा __" सारे इमेज का बेड़ा गर्क़ कर दिया तुमने। मेरा दोस्त होकर डर गया ? हद है यार , तुम्हें तो मेरी तरह थर थर कॉपने लग जाना चाहिए था। "

" बहुत हो गया। " साक्षी दीदी ने ऑखें दिखाई __" अब बोल विक्रम क्या प्लान बनाया है तूने मानुषी व श्रुति को सुरक्षित यहॉ लाने का ?"

" भाई कार कहॉ गई ?" मैने दीदी के सवाल के जवाब में अमर की तरफ देखते हुए कहा __" तुम तो कह रहे थे कि सुबह जब हम यहॉ से चलेंगे तो कार हमारे दरवाजे पर खड़ी मिलेगी। जबकि यहॉ तो कार कहीं दिख ही नहीं रही। भाई इतना खूबसूरत मज़ाक मत किया करो न , वरना तुम नहीं जानते मुझे दिल का दौरा सा पड़ने लगता है। "

" मैं मज़ाक नहीं कर रहा हूॅ यार। " अमर ने अपना हाथ नचाते हुए कहा __" वो क्या है कि अभी कुछ ही देर पहले अनुप के मौसा जी आए थे। उन्होंने जब घर के बाहर कार खड़ी देखी तो पूछने लगे कि ये कहॉ से आई ? उनके पूछने पर मैने बताया कि हमने खरीदा है इसे। बस फिर क्या था , बोले चला कर बताएॅगे कि उन्हें कार कैसी लगी। "

" ओह तो इसका मतलब। " मैने कहा __" मौसा जी लेके गए हैं। मगर अभी तक आए क्यों नहीं वो ?"

" आ जाएॅगे यार। " अमर ने कहा __" अभी थोड़ी देर पहले ही तो वो गए हैं जब मैं अंदर तुम्हें बताने गया था। "

" ओये तूने मुझे बताया क्यों नहीं कि तूने कोई कार खरीदी है ?" सहसा साक्षी दीदी शिकायती लहजे में बोल पड़ी __" और मैं अभी क्या बोल रही थी कि तुम दोनो बिना मुझसे पूछे कोई काम नहीं करोगे फिर क्यों किया ?"

" ये बात तो आपने अभी कही है न दीदी। " मैने उन्हें मनाने वाले लहजे से कहा __" जबकि कार लेने की बात तो हमने चार दिन पहले आपस में की थी। बट प्रॉमिस दीदी , इसके बाद का हर काम आपसे पूछ कर ही करेंगे। "

" चल कोई बात नहीं। " साक्षी दीदी ने कहा __" लो कार भी आ गई। क्या बात है विक्रम

, कार तो बहुत अच्छी ली है तूने। "

" इतनी भी अच्छी नहीं है दीदी। " मैने कहा __" सेकण्ड हैण्ड है। ज़रूरत थी इस लिए थोड़ा ज्यादा पैसे देकर लेना पड़ा। नई कार लेने का अभी कोई मतलब नहीं है। "

अभी हम बात ही कर रहे थे कि अनुप के मौसा जी ने हमारे पास ही कार को रोंका और फिर ड्राइविंग डोर खोल कर बाहर आए।

" यार अमर कार तो अच्छी है ये। " केशव जी ने कहा __" कितने में पड़ी ये ?"

" ज्यादा नहीं मौसा जी। " अमर ने कहा __" दो लाख अस्सी हज़ार। हलाँकि गरज़ हमारी थी वरना अस्सी हज़ार का चूना नहीं लगता हमें। "

" फिर भी यार। " केशव जी ने कहा __" घाटा इतने में भी नहीं है। ख़ैर , छोंड़ो मैं भी किसी ज़रूरी काम से इधर से गुज़र रहा था। इस लिए अब मैं चलता हूँ। "

" जी ठीक है मौसा जी। " हम सबने अदब से हाथ जोड़ लिए थे।

मौसा जी के जाने के बाद हम तीनो ही उस कार में जाकर बैठ गए। मैने ड्राइविंग सीट संभाली। मेरे बगल से साक्षी दीदी बैठ गई जबकि अमर पिछली सीट पर बैठ गया। सबके बैठ जाने के बाद मैने कार को स्टार्ट कर आगे बढ़ा दिया।

" तो क्या प्लान बनाया है तूने ?" रास्ते में साक्षी दीदी ने फिर मुझसे पूछा __" हम उन दोनो को वहाँ से कैसे यहाँ लाएँगे ? प्रकाश नाम का मेरा एक आदमी हवेली में ही सुरक्षा गार्ड के रूप में काम करता है। उसी के द्वारा मुझे पता चला था कि जिस दिन तुम्हारे वो नकली सी.बी.आई. वाले डैड को ले कर गए थे उसी दिन हवेली पर डैड के कुछ बिजनेस संबंधी दोस्त भी आए थे। उन सबके साथ काफी सारे ऐसे आदमी थे जो दिखने में फाइटर लगते थे। प्रकाश ने बताया कि उनमे से एक का नाम पाटिल था जो मॉम से कह रहा था कि ठाकुर साहब आएँ तो बता दीजिएगा कि हमारे ये सभी आदमी आज से उनके ही आदेशों का पालन करेंगे। "

" हाँ इस बात का ज़िक्र मानुषी ने भी मुझसे किया था कल। " मैने दीदी की तरफ एक नज़र डालने के बाद कहा __" उसने बताया था कि गेस्ट रूम में कुछ ऐसे लोग ठहरे हुए हैं जो दिखने में काफी हट्टे कट्टे लगते हैं। "

" मतलब साफ है कि हवेली जाकर वहाँ से उन दोनो को लाना असंभव काम है। " साक्षी दीदी ने कहा __" वैसे भी उन सभी आदमियों के रहते हवेली जाने का मतलब है कि मौत के मुह में जाना। सी.बी.आई. वाले हादसे के बाद तो वैसे भी डैड का गुस्सा तुम पर या यूँ कहो कि हम पर अपने चरम पर होगा। अत: उन्होंने सिक्योरिटी का भी तगड़ा प्रबंध कर लिया होगा। ऐसे में हम हवेली नहीं जा सकते और अगर जाने का सोचें भी तो हमें रात के समय में ही जाना चाहिए क्योंकि रात के अँधेरे में खतरा कम ही रहता है। "

" हमें हवेली जाने की ज़रूरत ही नहीं है दीदी। " मैने दीदी से कहा __" मानुषी और श्रुति दीदी खुद ही हवेली से बाहर आएँगी। "

" ऐसा कैसे संभव हो सकता है ?" साक्षी दीदी के चेहरे पर चौंकने के भाव उभरे थे , बोली __" मौजूदा हालात में मॉम या डैड उन दोनो को बाहर आने ही नहीं देंगे। क्योंकि अगर उन्होंने ये जान लिया होगा कि मानुषी भी सच्चाई जान गई है तो वो भी मेरी तरह उनके खिलाफ हो जाएगी और हवेली से बाहर जाने की कोशिश करेगी। ये सोच कर मॉम या डैड उन दोनो को किसी भी वजह से हवेली के बाहर नहीं जाने देंगे। "

" और अगर मैं ये कहूँ। " मैने दीदी के ऊपर जैसे धमाका सा किया __" कि इस सबके बावजूद मानुषी और श्रुति दीदी हवेली से बाहर आएँगी तो ?"

" ये तो फिर चमत्कार ही होगा। " साक्षी दीदी ने चकित भाव से कहा __" जिस चमत्कार की मौजूदा हालात में ज़रा भी उम्मीद नहीं है। "

" जहॉ उम्मीद नहीं होती असल में वहीं पर उम्मीद की संभावना होती है दीदी। " मैने दार्शनिकों वाले अंदाज़ से कहा ___" खैर , ये चमत्कार तो होने ही वाला है। मैने मानुषी को हवेली से बाहर निकलने का शानदार तरीका समझाया दिया था। "

" त तरीका ???" साक्षी दीदी बुरी तरह चौंक पड़ी ___" कैसा तरीका ?"

" दरअसल मैने श्रुति दीदी के बारे में सोच कर ही प्लान बनाया है दीदी। " मैने कहा ___" ये तो मुझे भी पता है कि श्रुति दीदी पहली बार ही यहॉ आई हैं। इस लिए ये तो एक स्वाभाविक बात होती है कि जो इंसान पहली बार कहीं जाता है तो वो उस जगह के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानने या देख लेने की ख्वाहिश रखता है। मैने भी इसी सोच के तहत प्लान बनाया। दूसरी महत्वपूर्ण बात मानुषी ने ये भी बताया कि आज आपके नाना जी जा रहे हैं तथा उन्हें रामगंज तक छोंड़ने के लिए खुद बड़े पापा कार से जाने वाले हैं। मैने इन सब बातों को भी अपने प्लान के लिए सोचा था। कहने का मतलब ये कि जब बड़े पापा नाना जी को लेकर रामगंज जा चुके होंगे तब मानुषी व श्रुति दीदी तैयार होकर तथा अपने मिनी बैग में अपनी सबसे ज्यादा ज़रूरी चीज़ ही लेकर बड़ी मॉ के पास आएँगी। बड़ी मॉ से मानुषी ये कहेगी कि श्रुति दीदी हमारा गॉव तथा हमारे खेत देखना चाहती हैं , इस लिए हम दोनो जा रहे हैं। मानुषी के मुख से श्रुति सहित जाने की बात सुन कर यकीनन बड़ी मॉ के मन में ये बात आएगी कि कहीं ये लोग यहॉ से भागने का तो नहीं सोच रही हैं। किन्तु वो इसके लिए उन्हें मना भी नहीं कर पाएँगी। क्योंकि बात तो सिर्फ गॉव तथा खेत देखने की होगी। इसके लिए मना करने की उनके पास कोई ठोस वजह नहीं होगी। इस लिए वो उन दोनो को जाने से रोंक न सकेंगी , मगर हॉ ऐसा प्रबंध ज़रूर कर सकती हैं कि वो हवेली से भागने वाले अपने काम में सफल न हो सकें। इसके लिए संभव है कि वो उन दोनो के साथ एक दो उन दो आदमियों को भेजेंगी जो फाइटर जैसे दिखते हैं। उनके साथ अपने आदमियों को ये सोच कर नहीं भेजेंगी कि उन्हें अपने आदमियों पर अब भरोसा हीं नहीं होगा। बात भी सही है , भला उनके आदमियों ने भरोसा करने लायक अब तक कोई काम ही क्या किया है ? ख़ैर , इस सारे मामले के लिए मैने मानुषी को भली भॉति समझाया हुआ है कि वो तथा श्रुति दीदी

एक पल के लिए भी अपने चेहरों पर ऐसे भाव न लाएॅगी जिससे बड़ी मॉ को उन पर शक हो जाए। क्योंकि फिर उस सूरत में उनका वहॉ से निकलना मुश्किल हो जाना है। यानी आप ये भी कह सकती हैं कि वो दोनो वहॉ से अपने सफलता पूर्वक किये गए अभिनय के द्वारा ही निकल पाएॅगी। अब सवाल ये था कि गॉव या खेत घूमने पैदल या जीप से जाएॅगी तो इसमें ज्यादा कोई समस्या नहीं थी। क्योंकि मुख्य काम ये है कि उन दोनो का हवेली से बाहर आकर गॉव की सीमाओं की तरफ बढ़ना था। हवेली के बाहर या यूॅ कहें कि गॉव की सीमा में ही किसी खास जगह पर हम उन्हें घेर लेंगे। दैट्स आल। "

" उन दोनों को हवेली से बाहर निकालने का तरीका तो बहुत ही अच्छा सोचा है तुमने। " साक्षी दीदी ने कहा __" मगर उन आदमियों के रहते उन दोनो को अपने पास सुरक्षित लाना इतना आसान काम नहीं है। दूसरी बात ये भी है कि संभव है कि यही बात मेरी मॉम के मन में भी आई हो। यानी कि उन्होने ये अंदाज़ा लगा लिया हो कि मानुषी ने तुम्हें मैसेज भेज दिया होगा कि उसे सच्चाई पता चल गई है अतः अब वो तुमसे मिलना चाहती है। उस सूरत में तुम सोचोगे कि अगर मानुषी का विक्रम ़ बड़ी मॉ के सामने फाश हो गया तो वो यकीनन बड़े पापा से बताएॅगी और फिर बहुत मुमकिन है कि मानुषी व श्रुति दोनो ही भयानक खतरे में पड़ जाएॅ। ऐसे हाल में तुम्हारी सबसे पहली प्राथमिकता यही होगी कि तुम उन दोनो को हवेली से सुरक्षित बाहर निकलना चाहोगे। आज जब मानुषी ने उनसे ये कहा होगा कि श्रुति दीदी ये गॉव तथा हमारे खेत देखना चाहती हैं और वो उन्हें लेकर जा रही है तो यकीनन उनके मन में सबसे पहले यही बात आई होगी कि कहीं ऐसा तो नहीं ये दोनो यहॉ से बहाना बना कर निकल जाना चाहती हों। किन्तु उनके मन में ये भी होगा कि ऐसे हालात में वो क्या करेंगी इसका अंदाज़ा भी तुम लगा लोगे। अतः वो कुछ ऐसा इंतजाम करेंगी जो तुम्हारी सोच से परे हो अथवा जिसके बारे में तुम सोच ही न सको। यानी कि संभव है कि उन्होंने तुम्हारे अंदाज़े को ध्यान में रखते हुए अपने दो आदमियों को उन दोनो के साथ भेज तो दिया ही हो साथ ही उनके जाने के बाद उन्होंने कुछ आदमी और भी उनके पीछे ये सोच कर लगा दिये हों कि अगर उनकी शंका सच हुई तो बैकअप के लिए कुछ आदमी एक्स्ट्रा रहेंगे। ताकि अगर ऐसी सिचुएशन बन जाए कि तुम उनके पहले वाले आदमियों का तिया पॉचा करने में कामयाब हो जाओ तो पीछे से आ रहे उनके दूसरे आदमी तुम्हें तुम्हारे इरादों में कामयाब न होने दें। "

" मैं साक्षी की इन बातों से पूरी तरह सहमत हूॅ विक्रम। " सहसा अमर पीछे से बोल पड़ा था ___" यकीनन ऐसा हो सकता है। साक्षी की मॉम के दिमाग़ के बारे में जैसा तुमने बताया था उस हिसाब से मुझे भी लगता है कि वो ऐसा कुछ अंदाज़ा लगा कर सकती हैं। अतः हमें भी उनके अनुसार ही सोच कर क़दम बढ़ाना होगा। वरना हम पर तो जो मुसीबत आएगी वो तो आएगी ही किन्तु इस सबके लिए मानुषी व श्रुति का कितना बुरा हाल हो सकता है इसका हम अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते। "

" तुम्हें क्या लगता है अमर ?" मैने कहा __" कि ये सब बातें मेरे दिमाग़ में नहीं आई होंगी ? बेशक आई हैं मेरे यार। मुझे भी इस बात का ख़याल है कि हर बार एक ही दॉव अथवा तरीका कारगर सिद्ध नहीं हो सकता। इससे सामने वाला हमारी सोच का दायरा ताड़ लेता है। हलॉकि मेरा उसूल ही यही है कि मैं सामने वाले को वही सोचने पर मजबूर कर देता हूॅ जो मैं चाहता हूॅ। मैं चाहता हूॅ कि सामने वाला ये सोच बैठे या ये समझ जाए कि मेरे पास

बस एक ही तरह का दॉव है। क्योंकि जब ऐसा होगा तो सामने वाला फिर उसी के हिसाब से अपनी चालें चलता है। जबकि मैं उसकी उस चाल के बाद अपना दूसरा पैंतरा शुरू करू गा। ऐसा पैंतरा जिसके बारे में वो सोच भी न सकेगा। "

" इसका मतलब। " साक्षी दीदी ने कहा __" तुमने इस बारे में पहले से ही कुछ सोचा हुआ है या फिर ये कहूॅ कि ऐसा कुछ इंतजाम कर रखा है तुमने। "

" बिलकुल सही कहा दीदी आपने। " मैने मुस्कुरा कर कहा __" आख़िर मुझे भी तो इस बात का ख़याल रखना ही पड़ेगा न कि उस तरफ शातिर दिमाग़ वाली मेरी बड़ी मॉ भी मौजूद हैं। बात अगर सिर्फ बड़े पापा की होती तो इतना घुमा फिरा कर काम करने की ज़रूरत ही न पड़ती। किन्तु बड़ी मॉ तो फिर बड़ी मॉ हैं न। ख़ैर , मैं ये कह रहा हूॅ कि जिस तरह बैकअप के लिए बड़ी मॉ ने दिमाग़ लगाया हो सकता है उसी तरह मैने भी बैकअप का इंतजाम किया हुआ है। और वैसे भी जंग में बैकअप का होना तो निहायत ही ज़रूरी होता है। जिस योद्धा के पास बैकअप नहीं होता वो जंग के शुरू होते ही मात खा जाता है। "

" वो सब तो ठीक है। " अमर साक्षी दीदी से पहले ही पूछ बैठा ___" लेकिन तुमने बैकअप का आख़िर इंतजाम क्या किया है ?"

" क्या यार अमर। " मैने पलट कर एक नज़र उसे देखने के बाद कहा ___" तुम न ज़रा भी दिमाग़ नहीं लगाते हो। "

" ज्यादा बनो मत। " अमर ने तीखे भाव से कहा __" साफ साफ बताओ कि क्या तीर मारा है तुमने ?"

" लगता है अनुप के मौसा को भूल गए हो तुम। " मैने पुनः पलट कर अमर को देख कर कहा __" कल देखा नहीं था क्या तुमने कि कैसे वो फार्महाउस पर अपने लट्ठधारी आदमियों को लेकर हम लोगों को लेने आए थे ? बाद में उन्होंने कहा भी था कि अगर किसी बात की ज़रूरत पड़े तो तुरंत उन्हें याद करें हम। बस फिर क्या था समझदार आदमी को ऐसे मददगार आदमी का सहारा लेने में ज़रा भी देर नहीं करना चाहिए। कहने का मतलब ये कि मैने उन्हें सारी सिचुएशन के बारे में समझा दिया था और ये कहा था कि बैकअप के रूप में वो हमारे पीछे ही रहें। वो मैदान में तभी आएॅ जब उन्हें यकीन हो जाए कि हमारा पलड़ा अब डगमगाने लगा है और हम हारने वाले हैं। तब उन्हें अचानक ही मैदान में एन्ट्री मारनी है। बस उसके बाद तो फिर हम सब कुछ संभाल ही लेंगे। "

" ओह अब समझ आया। " अमर ने सहसा गहरी सास लेकर कहा __" इसी लिए वो उस वक्त बोल रहे थे कि वो किसी ज़रूरी काम से यहॉ से गुज़र रहे थे। "

" अब समझे तो क्या समझे डियर ?" मैने मुस्कुराते हुए कहा __" बात तो तब थी जब तुम इसके पहले ही समझ जाते। "

" हॉ हॉ ठीक है न। " अमर ने खिसियाते हुए कहा __" पर मुझे ये बात समझ नहीं आई कि अगर यही बात थी तो उस वक्त उन्होंने हम में से किसी को बताया क्यों नहीं कि वो किस

ज़रूरी काम से गुज़र रहे थे ?"

" लो कर लो बात। " मैने हॅसते हुए कहा __" उन्हें भला बताने की ज़रूरत ही क्या थी ? मुझे तो सब पता ही था क्योंकि मैने ही उनसे बात की थी। उन्होंने तुमसे या दीदी से इस लिए नहीं बताया कि उन्होंने सोचा होगा कि मैने आप दोनो को बता दिया होगा। दूसरी बात आप में से कोई उनसे पूछा भी तो नहीं कि वो किस ज़रूरी काम के लिए वहॉ से गुज़र रहे थे ?"

" हॉ ये तो सही कहा तुमने। " सहसा दीदी ने मेरी तरफ प्रशंसा भरी नज़रों से देखते हुए कहा __" हमने तो उनसे पूछा ही नहीं था। लेकिन सवाल तो है ही कि वो किस ज़रूरी काम से गुज़र रहे थे ?"

" ओफ्फो दीदी। " मैने कहा __" आपसे ऐसे सवाल की उम्मीद नहीं थी मुझे। बड़ी सीधी सी बात है वो अपने आदमियों को इकट्ठा करने के लिए जा रहे थे। "

" ओह आई सी। " साक्षी दीदी ने कहा __" चल ये तो बहुत अच्छा किया तुमने जो खुद के लिए भी बैकअप इंतजाम कर लिया है। वरना मैं तो सोच रही थी कि कहीं हम फॅस ही न जाएॅ किसी जाल में। "

" ऐसे कैसे फॅस जाएॅगे दीदी ?" मैने कहा __" और फिर रिस्क तो लेना ही पड़ेगा। ये तो कुछ भी नहीं है , आने वाले समय में इससे कई गुना ज्यादा खतरा भी होगा जिसका हमें सामना करना पड़ेगा। "

" हॉ ये तो है। " दीदी ने कहा ___" ख़ैर अभी तो सबसे ज़रूरी यही है कि किसी तरह मानुषी व श्रुति सुरक्षित हमें हासिल हो जाएॅ। उसके बाद की इतनी चिंता नहीं है क्योंकि तब इस बात का भय नहीं रहेगा कि हमारा कोई अपना उनके चंगुल में है। "

मैं साक्षी दीदी की इस बात पर बस मुस्कुरा कर रह गया। ऐसे ही बातें करते हुए हम बढ़े चले जा रहे थे सोनपुर की तरफ। हम तीनों ही पूरी तरह सतर्क थे। हम इस बात को भी बखूबी समझते थे कि खतरा सिर्फ सत्यम सिंह की तरफ बस का ही नहीं था बल्कि मंत्री रजतकुमार रस्तोगी की तरफ से भी था। दूसरी बात अब हम पहचाने जा चुके थे दोनो तरफ इस लिए ख़तरा और भी बढ़ गया था हमारे लिए। मगर सच्चाई की राह पर चलने के लिए हम अपने अपने हौंसलों को आसमां की बुलंदियों में परवाज़ करवा रहे थे। आने वाला समय बताएगा कि इस खेल में किसकी जीत मिलती है और किसे हार का कड़वा स्वाद चखना होगा??

८४

मानुषी व श्रुति के जाने के बाद जयदीप वापस पलटा और हवेली के अंदर की तरफ बढ़ चला। उसके होठों पर बड़ी ही दिलकश मुस्कान थी। ज़ाहिर था कि उसकी ये मुस्कान श्रुति की वजह से थी। जिसके बारे में वो जाने क्या क्या सोचने लगा था। ख़ैर श्रुति के बारे में सोचते हुए ही वह चलते हुए अंदर ड्राइंग रूम में पहुँचा।

उधर ड्राइंग रूम में सोनिया अभी भी बैठी हुई थी। उसके चेहरे पर सोचों के भाव गर्दिश कर रहे थे। जयदीप के अंदर आते ही वह सोचो से बाहर आई और उसने जयदीप को मुस्कुराते हुए देखा तो सहसा वह चौंकी। फिर अगले ही पल सामान्य भी हो गई, कदाचित उसे जयदीप की मुस्कान का राज पता चल गया था।

" क्या बात है बेटा। " फिर उसने बेटे की तरफ देखते हुए मुस्कुरा कर कहा __" लगता है मन में बहुत ही मीठी मीठी गुदगुदी हो रही है , है ना ?"

"ग .. गुदगुदी ???" सोनिया की इस बात से जयदीप एकदम से चकरा सा गया __" कैसी गुदगुदी मॉम ?"

" वैसी ही बेटा। " सोनिया ने कहा __" जैसी तब हुआ करती है जब किसी से नया नया इश्क़ होता है। तुम्हारे होठों पर थिरक रही ये मुस्कान इस बात का सबूत दे रही है कि तुम श्रुति के बारे में सोच सोच अंदर ही अंदर बेहद रोमांच सा महसूस कर रहे हो। "

" हॉ मॉम। " जयदीप की मुस्कान गहरी हो गई __" ये तो आपने बिलकुल सही कहा। मैं सचमुच श्रुति के बारे में ही सोच सोच कर आनंद महसूस कर रहा हूँ। उफ्फ मॉम मैं बता नहीं सकता कि मैं श्रुति के बारे में सोच सोच कर कितना खुश हो रहा हूँ। क्या ऐसा नहीं हो सकता मॉम कि मेरे इस दिल का ये हाल मेरे बिना बताए श्रुति समझ जाए और फिर वो मेरे इस दिल की चाहत को कुबूल कर ले ?"

" तुम दीवाने से होते जा रहे हो बेटे। " सोनिया एकाएक ही गंभीर हो गई , बोली __" जो कि बिलकुल भी ठीक नहीं है। तुम खुद ये बात अच्छी तरह जानते हो कि जो तुम चाहते हो वो इस जन्म में तो हर्गिज़ भी नहीं हो सकता। फिर इस तरह बेकार की बातें करने का तथा ऐसा सोचने का क्या मतलब है बेटा ? अभी भी वक्त है तुम अपने अंदर के इस एहसास को जितना जल्दी हो सके निकाल दो। वरना देख लेना इस सबके लिए बाद में तुम बहुत दुखी होगे। "

" जिन्हें इश्क़ हो जाता है न मॉम। " जयदीप ने अजीब भाव से कहा __" फिर उन्हें कोई समझा नहीं सकता और ना ही इश्क़ में पागल हो चुका व्यक्ति किसी की बातों को समझना चाहता है। उसे तो बस हर घड़ी हर पल अपने प्यार की आरज़ू रहती है। ऐसा नहीं है मॉम कि

इसमें दिमाग़ काम नहीं करता है बल्कि वो तो वैसे ही काम करता रहता है जैसे आम इंसानों का करता है मगर दिल के जज़्बातों की जब ऑधी चलती है न तो उस दिमाग़ का सारा दिमाग़ उसके ही पिछवाड़े में घुस जाता है। "

सोनिया के चेहरे पर एक बार पुनः हैरत के भाव उभर आए। उसे इस वक्त लग ही नहीं रहा था कि ये वही जयदीप है जो इसके पहले हर लड़की या औरत को सिर्फ और सिर्फ हवस की नज़र से देखता था। बल्कि इस वक्त तो वह दुनिया का सबसे शरीफ व संस्कारी दिखाई दे रहा था।

" कहते हैं कि दुनियॉ में कुछ भी असंभव नहीं है। " उधर जयदीप कह रहा था __" अगर किसी चीज़ को पाने की शिद्दत से चाहत करो तो वो यकीनन हासिल हो जाती है। आप जिस चीज़ को असंभव कह रही हैं वो चीज़ भी संभव हो सकती है मॉम , अगर आप चाहो तो। "

" क् ... क्या मतलब ???" सोनिया के माथे पर सलवटें उभरीं।

" मतलब साफ है मॉम। " जयदीप ने कहा __" अगर आप और डैड चाहें तो श्रुति मेरी जाने हयात ज़रूर बन सकती है और मैं उसे पा कर खुश हो सकता हूॅ। "

" तुम पागल हो गए हो बेटा। " सोनिया के चेहरे पर गहन बेचैनी के भाव उभरे , बोली __" सब कुछ जानते व समझते हुए भी तुम बेमतलब की बातें किये जा रहे हो। तुम इस बात को समझ ही नहीं रहे कि ये कितना ग़लत है और कितना मुश्किल है। श्रुति तुम्हारी बड़ी बहन है। वो तुम्हें अपना छोटा भाई ही मानती है। उसे नहीं पता है कि उसका छोटा भाई उसके प्रति कैसी सोच रखता है और क्या चाहता है ?"

" आप श्रुति के मॉम डैड से बात कीजिए मॉम। " जयदीप ने कहा __" मैं श्रुति को मना लूॅगा और अगर वो नहीं मानेगी तो उससे कहूॅगा कि वो मुझे अपने प्यार की भीख दे दे। मैं उसे बताऊॅगा कि मैं उसके बिना अब नहीं रह सकता। दूसरी बात जब उसके मॉम डैड इस रिश्ते के लिए मान जाएॅगे तो फिर उसे भी भला क्या परेशानी होगी ?"

" हे भगवान। " सोनिया ने जैसे अपना माथा पकड़ लिया , फिर बोली __" कैसे समझाऊॅ इस लड़के को ? तुमने ये सोच भी कैसे लिया कि श्रुति के मॉ बाप इस रिश्ते के लिए मान जाएॅगे ? बल्कि सच्चाई तो ये है कि वो ये सब पता चलते ही तुम्हारे साथ साथ हम सब पर भी लानत भेजेंगे और फिर कभी हमारी शक्ल तक देखना न चाहेंगे। "

सोनिया की इस बात पर जयदीप मन मसोस कर रह गया। एकाएक ही उसके चेहरे पर ऐसे भाव आए जैसे उसे इन सब बातों से बेहद तक़लीफ हुई हो। जबकि उसके चेहरे पर उभर आए इन भावों को बड़े ध्यान से देखते हुए तथा समझाते हुए सोनिया ने नम्र भाव से कहा___"देख बेटा इसमें इतना दुखी होने की ज़रूरत नहीं है। मैं अच्छी तरह तेरे अंदर का हाल समझ सकती हूॅ। मुझे इस बात का एहसास है कि श्रुति के प्रति तू किस हद तक गंभीर हो चुका है। मगर बेटा सब कुछ वैसा ही नहीं हो जाया करता जैसा हम चाह लिया करते हैं। यथार्थ सच्चाई नाम

की भी कोई चीज़ होती है जिसका हमें बेबस होकर ही सही मगर सामना करना पड़ता है और उसे मानना भी पड़ता है। ये तो तू भी अच्छी तरह जानता है कि श्रुति तेरी बड़ी मौसी की लड़की है और रिश्ते में वो तेरी बड़ी बहन लगती है। श्रुति की मॉ मेरी सगी बहन है इस हिसाब से ये रिश्ता सगा ही हो जाता है। अतः सगे रिश्ते के बीच तुम्हारी और श्रुति की शादी हर्गिज़ भी नहीं हो सकती। अगर ऐसा होता कि श्रुति की मॉ मेरी सगी बहन न होकर दूर के किसी रिश्ते से बहन लगती तो ऐसा हो भी सकता था। इस लिए तुम्हें इन सब बातों को सोच समझ कर अपने आपको समझाना होगा। मुझे पता है कि अभी ये सब तेरे लिए बहुत मुश्किल होगा मगर ये करना ही होगा बेटा। वरना अभी जिस बात से तुम्हें इतनी तक़लीफ हो रही है उसी बात से आगे चल कर और भी ज्यादा तक़लीफ होगी। दुनियॉ में एक से बढ़ कर एक खूबसूरत लड़कियॉ हैं, तू जिस लड़की से कहेगा हम उस लड़की से तेरी शादी करेंगे। मगर प्लीज श्रुति का ख़याल अपने दिलो दिमाग़ से निकाल दे। इसी में सबकी भलाई है।"

" ठीक है मॉम। " जयदीप ने गहरी सास ली और फिर एकाएक ही उसके चेहरे पर दृढ़ता के भाव आए , बोला ___" अगर ऐसी बात है तो ठीक है। अब मैं कभी आपसे नहीं कहूॅगा कि आप श्रुति से मेरी शादी करवा दीजिए। ख़ैर एक बात कहूॅ मॉम , पता नहीं क्यों मुझे ऐसा लग रहा है कि जैसे ईश्वर ने मुझे मेरे पापों की सज़ा देना शुरू कर दिया है। हॉ मॉम , ये सज़ा ही तो है कि मुझे एक ऐसी लड़की से बेपनाह मोहब्बत हो गई जो मेरी बहन लगती है और जो मुझे नसीब ही नहीं हो सकती कभी। वरना ईश्वर अगर चाहता तो मुझे दूसरी किसी ऐसी लड़की से प्यार करवाता जो मुझे सहजता से मिल जाती। मगर नहीं उसे तो मेरे पापों की सज़ा देना था न मुझे। इस लिए ऐसा कर दिया उसने। कोई दूसरा इन सब बातों को समझे या न समझे मॉम मगर मैं अच्छी तरह समझ गया हूॅ और अगर अपने दिल की सच्चाई बयां करू तो वो ये है कि मुझे ईश्वर के इस फैंसले पर कोई शिकायत नहीं है। अगर ये सब करके वो मुझे मेरे पापों की सज़ा ही देना चाहता है तो ठीक है मॉम मुझे स्वीकार है ये। हर व्यक्ति को अपने कर्मों का फल मिलता है , फिर चाहे उसके अच्छे कर्मों का हो या बुरे कर्मों का। कितनी अजीब बात है न मॉम कि कुछ लोग सारी ज़िंदगी पाप करते हैं मगर उनको उनके पाप कर्म की सज़ा अंत में मिलती है मगर मुझे तो अभी से मिलना शुरू हो गई। "

जयदीप की बातें सुन कर सोनिया हैरत से ऑखें फाड़े देखती रह गई उसे। उससे कुछ कहते तो न बन पड़ा था किन्तु ये समझने में उसे ज़रा भी देरी न हुई कि उसके बेटे का मानसिक संतुलन आज इस हद तक बिगड़ गया है अथवा उसकी सोच इस हद तक बदल गई है कि वो इस सबको अपने पाप कर्मों की सज़ा समझने लगा है। कहते हैं कि किसी व्यक्ति को आप सारी ज़िंदगी अच्छी चीज़ों का बोध कराते रहो मगर उसे अगर नहीं समझना होता है तो वो सारी ज़िंदगी नहीं समझता मगर वक्त और हालात के पास ऐसी खूबियॉ होती हैं जिनके आधार पर वह पलक झपकते ही इंसान को आईना दिखा कर सब कुछ समझा देता है और मज़े की बात ये कि इंसान को समझ में भी आ जाता है। यही हाल जयदीप का था। उसे सब कुछ समझ आ चुका था, मगर कहते हैं न कि "का बरसा जब कृषि सुखाने"। बस वही दसा थी उसकी।

" ख़ैर छोंड़िये इन सब बातों को मॉम। " उधर जयदीप ने जैसे सोनिया को होशो हवाश में लाते हुए कहा __" अब से मैं कभी आपसे ऐसी बातें नहीं करू गा। आप ये सब डैड से भी

मत बताना। वरना उन्हें लगेगा कि मैं भरपूर जवां मर्द होते हुए भी इस सबके चलते बेहद कमज़ोर हो गया हूँ। वो इस बात को नहीं समझेंगे कि इस सबसे तो मैं और भी मजबूत हो गया हूँ। मोहब्बत की चोंट को जो इंसान सह जाए उससे मजबूत इंसान भला दूसरा कौन हो सकता है ?"

सोनिया को समझ न आया कि वह अपने बेटे की इन सब बातों का क्या जवाब दे। किन्तु उसकी बातें उसे आश्चर्यचकित ज़रूर किये हुए थीं। काफी देर तक वह गंभीर मुद्रा में ठगी सी बैठी रही। होश तब आया जब एकाएक ही ड्राइंग रूम में एक तरफ टेबल पर रखे लैण्ड लाइन फोन की घंटी घनघना उठी थी।

" हैलो। " जयदीप अपनी जगह से उठ कर तथा फोन के रिसीवर को कान से लगाते ही कहा।

" ओह जयदीप बेटा। " उधर से सत्यम सिंह की जानी पहचानी सी आवाज़ उभरी ___" मैंने तुम्हारे नाना जी को ट्रेन में बैठा दिया है और अब मैं यहीं से फैक्ट्री के लिए निकल रहा हूँ। अतः अब शाम को ही आऊँगा। "

" ठीक है डैड। " जयदीप ने सामान्य भाव से कहा।

" ज़रा अपनी मॉम से बात करवाओ। " उधर से सत्यम सिंह ने कहा।

" एक मिनट डैड। " जयदीप ने कहने के साथ ही पलट कर सोनिया की तरफ देखा और उसे बताया कि डैड उससे बात करना चाहते हैं।

" हॉ बोलो सत्यम। " सोनिया ने जयदीप से रिसीवर लेकर उसे अपने बाएं कान से लगाते हुए कहा __" क्या बता है ? पापा को ट्रेन में सकुशल बैठा दिया है न तुमने ?"

" हॉ उन्हें ट्रेन में बैठा कर अभी अभी स्टेशन से बाहर आया हूँ। " उधर से सत्यम सिंह ने कहा ___" और अब मैं यहीं से फैक्ट्री जा रहा हूँ। काफी दिन से नहीं गया हूँ तो वहॉ जाना भी ज़रूरी है। बाकी सब ठीक है न ?"

" हॉ बाकी सब तो ठीक ही है। " सोनिया ने कहा __" मानुषी , श्रुति को अपना ये गॉव तथा अपने खेत दिखाने ले गई है। श्रुति ने उससे कहा होगा कि उसे ये गॉव और उसके खेत देखना है। अतः मानुषी के साथ गई है वो। "

" ये क्या कह रही हो तुम ?" उधर से सत्यम सिंह ने बुरी तरह चौंकते हुए कहा __" उन दोनो को तुमने जाने कैसे दिया सोनिया ? क्या तुम्हें पता नहीं है कि वो वहॉ से भागने के उद्देश्य से भी ये कहा होगा कि उन्हे गॉव तथा खेत देखना है ? उफ्फ सोनिया तुमने ये क्या बेवकूफी की ?"

" फिक्र मत करो सत्यम। " सोनिया ने कहा __" उन दोनो के साथ मैने दो ऐसे आदमियों को भी भेजा है जिन आदमियों को तुम्हारे दोस्त तुम्हारी मदद के लिए यहॉ भेज कर गए थे।

उन आदमियों के रहते वो कहीं भी नहीं जा सकती। "

" अरे वो आदमी साले क्या कर लेंगे ?" उधर से सत्यम सिंह ने खीझते हुए कहा __" तुम्हें तो पता है कि उस साले विक्रम ने एक साथ हमारे उतने सारे आदमियों का काम तमाम कर दिया था तो फिर ये क्या कर लेंगे उसका ? ओफ्फो सोनिया तुम्हें उन दोनों को जाने ही नहीं देना चाहिए था। मुझे तुमसे ऐसी बेवकूफी की उम्मीद हर्गिज़ भी नहीं थी। "

" तुम बेवजह ही इतना परेशान हो रहे हो डियर। " सोनिया ने कहा __" मुझे भी पता है कि हालात कैसे हैं और इन हालातों में क्या हो सकता है ? मैं उन दोनो को गॉव तथा खेत देखने जाने से भला कैसे रोंक सकती थी ? इसी लिए मैंने उनके साथ उन दो आदमियों को भेजा है। बात इतनी सी ही बस नहीं है बल्कि दूर का सोचते हुए मैने उनके जाने के बाद उनके पीछे लगे रहने के लिए और भी आदमियों को एक टीम बना कर भेजा है। ऐसा इस लिए कि अगर वो दोनो सचमुच यहॉ से भागने का ही ये गॉव तथा खेत देखने का बहाना बनाया होगा तो वो किसी भी तरह से भागने में कामयाब न हो सकेंगी। दिखावे के लिए तथा सिचुएशन को सामान्य दिखाने के लिए मैने उन दोनो के साथ सिर्फ दो ही आदमी उनकी सुरक्षा के तहत भेजे किन्तु उनकी जानकारी के बिना कुछ और आदमियों की टीम को ये सोच कर उनके पीछे भेजा कि अगर ये उनका यहॉ से भागने का ही प्लान था तो ये भी ज़ाहिर है कि ये प्लान उन्होंने खुद नहीं बनाया होगा बल्कि यहॉ से इस तरह निकलने का प्लान विक्रम ने ही उन्हें बताया होगा और कहा होगा कि वो दोनो हवेली से बाहर निकल कर किसी ऐसे स्थान पर पहुँचेंगी जहॉ से उन दोनो को वो बड़ी आसानी से किन्तु बड़ी सावधानी से हमारे उन दोनो आदमियों के साथ रहने के बावजूद अपने साथ ले जा सकें। विक्रम की इसी चाल को मद्दे नज़र रखते हुए मैने उन दोनो के पीछे कुछ और आदमियों को एक मजबूत टीम बना कर भेजा है तथा साथ ही ये भी उन्हें कह दिया है कि अगर सचमुच वहॉ ऐसा कुछ होता दिखे तो वो बेझिझक दूसरी पार्टी यानी विक्रम व साक्षी पर गोलियॉ चला सकते हैं। किन्तु इतना ज़रूर ध्यान देंगे कि उनकी गोलियों से उन दोनो में से किसी की भी मौत न हो जाए। बल्कि उन्हें इस स्थित में लाना है कि वो कुछ करने के लायक न रह जाएॅ। उसके बाद वो उन्हें पकड़ कर हमारे फार्महाउस पर ले आएंगे। "

" अगर ऐसा है तो फिर ठीक है। " उधर सत्यम सिंह ने मानो राहत की सास ली थी , बोला __" मगर मुझे इस सबसे भी संतुष्टि नहीं हो रही सोनिया । पता नहीं क्यों मुझे ऐसा लगता है कि हमारे इतने आदमियों के रहते हुए भी वो कमीना उन दोनो को अपने साथ ले जाने में कामयाब हो जाएगा। "

" ऐसा तुम इस लिए कह रहे हो डियर। " सोनिया ने सहसा मुस्कुरा कर कहा __" क्योंकि तुमने अभी तक इस मामले में कोई सफलता हासिल नहीं की है। हर बार तुमने अपने आदमियों की वजह से नाकामी का स्वाद चखा है। इस लिए तुम्हें इस सबके बावजूद विश्वास या संतुष्टि नहीं हो रही कि हमारे आदमी विक्रम के मंसूबों को नाकाम कर पाएॅगे। "

" ये तो सच कहा तुमने सोनियाा। " सत्यम सिंह बोलाा __" पर क्या करू यार हालात हर दिन पहले से कहीं ज्यादा गंभीर व बदतर होते जा रहे हैं। मैं ये किसी भी कीमत पर नहीं चाहता हूॅ कि एक और नाकामी की मुहर मेरे माथे की शोभा बढ़ाने लगे। इस लिए मैं खुद ही आ रहा हूॅ वहाॅ। फैक्ट्री जाना इतना भी ज़रूरी नहीं है। मैं आ रहा हूॅ डियर। इस बार मैं उस हरामज़ादे को कामयाब नहीं होने दूॅगा। "

" ठीक है माई डियर। " सोनियाा ने कहाा __" तुम्हें जैसा अच्छा लगे करो। वैसे कब तक पहुॅच जाओगे यहाॅ ?"

" जितना जल्दी पहुॅच सकूॅ। " सत्यम सिंह ने कहाा __" ख़ैर चलो रखता हूॅ फोन। "

इसके साथ ही काल कट हो गई। सत्यम सिंह से बात करने के बाद सोनिया पलट कर वापस सोफे की तरफ आई और बैठ गई। चेहरे पर अनायास ही गंभीरता छा गई थी उसके। फिर उसने जयदीप की तरफ देखते हुए कहा__"बेटा मीनाक्षी से कहो कि अच्छी सी चाय बना कर लाए मेरे लिए।"

" ओके मॉम। " जयदीप ने कहा और सोफे से उठ कर अंदर की तरफ चला गया।

८५

उधर मुंबई में।

ब्रेक फास्ट करने के लिए सब एक साथ ही बैठे हुए थे। जिनमें उमाकांत पाटिल , सुंदर सिंह , रौनक , सृष्टि , आशा तथा निशा बैठे हुए थे। रेणुका , रुक्मिणी तथा अपर्णा सबके लिए नास्ता परोस रही थीं। ब्रेकफास्ट करते हुए सबके बीच थोड़ी बहुत बातचीत भी हो रही थी। किन्तु इस बीच आशा की निगाहें थोड़े थोड़े समय के अंतराल से निशा पर पड़ ही जाती थी।

निशा जो कि अब ज्यादातर ख़ामोश ही रहती थी। वो किसी से भी खुद से कोई बात नहीं करती थी। हलाँकि सब यही चाहते थे कि वो सबसे बातें करे तथा अपनी शरारत भरी बातों से माहौल को सामान्य बनाए रखे मगर ऐसा हो नहीं रहा था। सबने उससे पूछा भी था कि वो अचानक इस तरह चुप चुप तथा गुमसुम सी क्यों रहने लगी है मगर उसने बस यही कहा था कि वो बस अपने भैया के चले जाने से ऐसी हो गई है। उसकी बातों को सब यही समझ रहे थे विक्रम जिस काम से गया है वो यकीनन बहुत ख़तरे वाला है जिसके बारे में सोच कर निशा इस तरह चुप हो गई है। आख़िर ये बात तो सब जानते ही थे कि निशा विक्रम की जान है तथा निशा भी अपने भाई पर जान छिड़कती है। मगर असलियत से आशा के अलावा हर कोई अंजान था।

चुपचाप नास्ता कर रही निशा की नज़र सहसा सामने ही कुर्सी पर बैठी तथा नास्ता कर रही आशा पर पड़ी तो वो ये देख कर एकाएक ही सकपका गई कि आशा उसे ही एकटक देखे जा रही है। उसके ज़हन में पलक झपकते ही सुबह का डायरी वाला सीन याद आ गया। उसके दिमाग़ ने काम किया और उसे ये सोचने पर मजबूर किया कि आशा दीदी उसे इस तरह एकटक क्यों देखे जा रही हैं। उनकी ऑखों में कुछ ऐसा था जिसने निशा को अंदर तक हिला सा दिया था और फिर एकाएक ही जैसे उसके दिमाग़ की बत्ती रौशन हुई। उसके मन में ख़याल उभरा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि आशा दीदी ने उसके सोते समय डायरी को हाथ ही नहीं लगाया हो बल्कि उसे पढ़ भी लिया हो। इस ख़याल के आते ही निशा की हालत पल भर में ख़राब हो गई। मन के अंदर बैठा चोर इतना घबरा गया कि फिर उसमें नज़र उठा कर दुबारा आशा की तरफ देखने की हिम्मत न हुई।

निशा ने नोटिस किया कि जिस अंदाज़ से आशा उसे देख रही थी उससे तो यही लगता है कि उसने डायरी में लिखी बातें पढ़ ली हैं और जान गई है कि उसमें लिखे गए हर लफ्ज़ का मतलब क्या है? निशा की हालत ऐसी हो गई कि अब उससे वहॉ पर बैठे न रहा गया। उसने जो खाना था खा लिया और फिर वह एक झटके से उठी और ऊपर अपने कमरे की तरफ तेज़ तेज़ क़दम बढ़ाते हुए चली गई। कमरे में जाकर उसने स्कूल की यूनीफार्म पहनी तथा अपना स्कूली बैग उठाया और फिर फौरन ही कमरे से बाहर आ गई।

उसे इतना जल्दी बाहर आते देख हर कोई चौंका मगर चूँकि उसके स्कूल जाने का समय होने ही वाला था अतः इस पर ज्यादा किसी ने ग़ौर न किया। उसने दूर से ही हाथ हिला कर सबको

बाय किया और बंगले से बाहर की तरफ बढ़ गई। बाहर आते ही उसने एक ऐसे आदमी को आवाज़ दी जो हर दिन कार से उसे स्कूल छोंड़ने और स्कूल से लाने का काम करता था। ख़ैर, कुछ ही देर में निशा कार में बैठ कर स्कूल की तरफ रवाना हो गई। किन्तु अब उसका मन बेहद अशान्त हो चुका था। उसे ये डर सताने लगा था कि अगर सचमुच आशा ने उसकी डायरी पढ़ ली होगी तो उसे यकीनन पता चल गया होगा कि वो अपने ही सगे भाई से प्यार करती है और आज कल उसी के ग़म में गुमसुम रहने लगी है।

निशा को प्रतिपल ये सब बातें और भी ज्यादा चिंतित व परेशान किये जा रही थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि अब वह क्या करे? कैसे अब वो अपनी आशा दीदी के सामने जाएगी तथा उन्हें अपना चेहरा दिखाएगी? अगर आशा ने उससे इस बारे में कुछ पूछा तो वो क्या जवाब देगी? उसे पहली बार एहसास हुआ कि डायरी लिख कर उसने कितनी बड़ी ग़लती की है। वरना किसी को इस बात का पता ही न चलता कि उसके दिल में क्या है। मगर अब क्या हो सकता था? तीर तो कमान से निकल चुका था। अतः अब तो बस इंतज़ार ही किया जा सकता था इस सबके परिणाम का। निशा के मन ही मन ये निर्णय लिया कि अब वो आशा दीदी के सामने नहीं जाएगी और ना ही उनसे कोई बात करेगी। मगर उसे खुद लगा कि ऐसा संभव नहीं हो सकता। उसे उनका सामना तो करना ही पड़ेगा क्योंकि वो ज्यादातर उसके पास ही रहती हैं तथा रात में उसके ही कमरे में उसके साथ एक ही बेड पर सोती भी हैं।

ये मामला ही ऐसा था कि इसने निशा की हालत को इस तरह कर दिया था जैसे अब उसके अंदर प्राण ही न बचे हों। वह एकदम से जैसे ज़िदा लाश में तब्दील हो गई हो। उसके मन में ये भी ख़याल उभरा कि अगर आशा दीदी ने वो सब किसी से बता दिया तो क्या होगा? उसकी मॉ रेणुका तो उसे जीते जी जान से मार देगी। कोई उसके अंदर की भावनाओं को नहीं समझेगा बल्कि सब उसे ग़लत ही समझेंगे। अगर ये भी कहें तो ग़लत न होगा कि उसने ये सब अपनी नई नई जवानी को बर्दाश्त न कर पाने की गरज़ से अपने ही भाई को फॅसाने का सोच कर किया होगा। इस ख़याल के आते ही निशा को आत्मग्लानि के चलते बेहद दुख हुआ। उसकी झील सी नीली ऑखों से पलक झपकते ही ऑसूॅ छलक कर गिर पड़े। किन्तु उसने जल्दी से उन्हें ये सोच कर पोंछ भी लिया कि कहीं ड्राइवर उसे बैकमिरर के माध्यम से ऑसू बहाते देख न ले।

सारे रास्ते इन सब बातों को सोचते हुए निशा को पता ही नहीं चला कि वो कब स्कूल पहुॅच गई? होश तब आया जब ड्राइवर ने उससे कहा कि उसका स्कूल आ गया है। ड्राइवर पचास की उमर का व्यक्ति था। उसका ये रोज़ का ही काम था। उसे निशा से काफी लगाव भी हो गया था। उसे वो अपनी बेटी की तरह मानता था। पिछले कुछ समय से वो खुद भी देख रहा था कि निशा एकाएक ही गुमसुम सी हो गई है। उसने भी कई बार इस बारे में उससे पूछा था मगर निशा ने उससे भी यही कहा था कि वो अपने भैया के लिए दुखी रहती है। भला वो किसी से अपने गुमसुम रहने की वजह कैसे बता सकती थी?

कार से उतर कर निशा बहुत ही बोझिल मन से अपने स्कूल के मुख्य दरवाजे की तरफ बढ़ती चली गई। स्कूल में उसकी अच्छी अच्छी कई सहेलियॉ बन गई थी। वो सब भी निशा की इस

ख़ामोशी से परेशान व चिंतित थी। मगर वो कर भी क्या सकती थी?

इधर निशा के जाने के थोड़ी देर बाद ही आशा निशा के कमरे में पहुँची। कमरे को उसने अंदर से कुंडी लगा कर बंद किया और फिर पलट कर निशा की डायरी की तलाश करने लगी। मगर बहुत ढूँढ़ने पर भी उसे निशा की वो डायरी कहीं न मिली। उसने हर जगह बड़ी बारीकी से चेक किया मगर डायरी तो जैसे गधे के सिर का सींग हो गई थी। सहसा आशा को ख़याल आया कि निशा अपनी डायरी को ऐसी वैसी जगह नहीं रख सकती जिससे वो किसी के हाथ लग जाए। ज़ाहिर सी बात है कि ऐसी डायरी वो किसी के हाथ लगने भी कैसे दे सकती थी जिसे किसी के द्वारा पढ़ लिए जाने के बाद उस पर क़यामत टूट पड़ती। मतलब साफ है कि उसने उस डायरी को ऐसी जगह छुपा कर रखा होगा जहाँ से मिलना किसी दीगर व्यक्ति के लिए लगभग असंभव ही हो।

इस ख़याल के तहत आशा ने सोचा कि ऐसी जगह तो इस कमरे में कदाचित आलमारी और आलमारी के अंदर वाला लॉकर ही हो सकता है जहाँ पर निशा ने अपनी डायरी छुपाई हो सकती है। अतः आशा ने आगे बढ़ कर आलमारी खोला और आलमारी के अंदर मौजूद लॉकर को चेक किया तो उसे लॉक पाया। अंदर के उस लॉकर की चाभी को उसने ढूँढ़ना शुरू कर किया मगर चाभी कहीं नहीं मिली उसे। आलमारी में रखी एक एक चीज़ तथा एक एक कपड़े को उलट पलट कर देखा उसने मगर चाभी कहीं न मिली। थक हार कर फिर उसने हर चीज़ को उसी तरह जमा कर रखना शुरू किया जैसे वो पहले रखी हुई थीं उसके बाद वह बेड पर आकर धम्म से बैठ गई और गहरी गहरी सासें लेने लगी।

काफी देर तक बेड पर बैठी वो चाभी के बारे में सोचती रही फिर उसे लगा कि संभव है कि लॉकर की चाभी निशा अपने पास ही रखती हो। यानी इस वक्त वो चाभी उसके पास उसके स्कूली बैग में ही होगी। बात भी सच थी आख़िर वो चाभी अपने पास ही तो रखेगी वरना ऐसे में तो कोई भी उसकी चाभी ढूँढ़ कर लॉकर खोल सकता था तथा उसकी डायरी निकाल सकता था और फिर उसे पढ़ भी सकता था। आशा को ये बात सौ परसेन्ट जँची।

आशा की ऑखों के सामने सुबह ब्रेकफास्ट करते वक्त का सीन फ्लैश करने लगा। जब वो बार बार निशा की तरफ देख रही थी और फिर निशा ने भी उसको अपनी तरफ एकटक देखते हुए देखा था। उस वक्त उसकी हालत बहुत ही दयनीय सी हो गई थी। आशा को समझते देर न लगी कि निशा को उसके इस तरह देखने से ये समझ में आ गया होगा कि उसने सुबह उसकी डायरी को शायद पढ़ लिया होगा और उसका विक्रम जान चुकी होगी। ये सोच ही उसकी हालत ख़राब हो गई थी। आशा जानती थी कि प्यार करना कोई जुर्म नहीं है, किन्तु यही प्यार अगर बहन अपने ही भाई से कर बैठे तो यकीनन ये अनुचित तथा ग़लत हो जाता है। कदाचित यही वजह थी कि निशा की वैसी हालत हो गई थी। उसे डर सताने लगा था कि आशा दीदी उसके बारे में क्या क्या सोचेंगी और अगर ये बात किसी को बता दिया तो इसका क्या अंजाम हो सकता है।

आशा को ये भी एहसास था कि विक्रम है ही ऐसा कि उससे कोई भी लड़की प्यार कर

बैठेगी। फिर चाहे वो बाहरी लड़की हो या फिर खुद उसकी ही बहन। वो खुद भी तो विक्रम को शुरू से ही अपना सब कुछ मानती आ रही थी। उसे खुद नहीं पता था कि वो कब विक्रम को अपना दिल दे बैठी थी और फिर जब उसे एहसास हुआ कि वो विक्रम को बेपनाह प्यार करने लगी है तो एकाएक ही हॅसती खेलती आशा का समूचा अस्तित्व ही बदल गया था। आज जिस ख़ामोशी को निशा ने अख़्तियार कर लिया था उसी ख़ामोशी को एक दिन उसने भी तो ऐसे ही अख़्तियार कर लिया था। अपने प्रेम को उसने विक्रम के सामने कभी उजागर नहीं किया क्योंकि उसे पता था कि विक्रम उसे अपनी बहन ही मानता है। दूसरी बात अगर वो उससे अपने प्रेम का इज़हार करती भी तो बहुत हद तक संभव था कि विक्रम उसे ग़लत समझ बैठता या उसके इस प्रेम को ये कह कर ठुकरा देता वो ऐसा सोच भी कैसे सकती हैं? दूसरी बात, एक तो उमर में वो विक्रम से बड़ी थी दूसरे आर्थिक तंगी के चलते उसकी शादी भी नहीं हो रही थी। इस सबसे विक्रम को ही नहीं बल्कि सबको भी यही लगता कि आशा से अपनी जवानी की गर्मी बर्दाश्त नहीं हुई इस लिए उसने विक्रम के साथ संबंध बनाने के लिए प्यार का नाटक शुरू कर दिया है। तीसरी महत्वपूर्ण बात वो भले ही चुलबुल व नटखट स्वभाव की थी किन्तु सिर्फ अपने भाइयों के लिए बाकी बाहरी लोगों के सामने उसने कभी अपना सिर तक न उठाया था। लोक लाज तथा घर की मान मर्यादा का ख़याल ही था जिसने उसके लब हमेशा के लिए सिल दिये थे।

जब उसे डायरी के द्वारा ये पता चला कि निशा अपने ही भाई से प्यार करती है तो सहसा उसे झटका सा लगा था और उसके दिल में भावनाओं और जज़्बातों का ये सोच कर भयंकर तूफान उठा था कि जिस विक्रम को वो अपना सब कुछ मानती आ रही है उस पर तो उसका कोई हक़ ही नहीं है। बल्कि सबसे पहला हक़ तो उसकी खुद की बहन का ही हो गया है। उसने भी सोच लिया कि चलो यही सही। प्यार मोहब्बत तो कम्बख़्त नाम ही उस बला का है जो सिर्फ दर्द देना जानती है इश्क़ करने वालों को। उसे निशा पर बेहद तरस भी आया कि इस मासूम ने उस शख्स से दिल का रोग लगा लिया जो इसका हो ही नहीं सकता। ये समाज ये दुनिया कभी भाई बहन के इस रिश्ते को स्वीकार नहीं करेगी। दुनियॉ की छोंड़ो खुद उसके ही मॉ बाप या संबंधी इसके खिलाफ हो जाएॅगे। कहने का मतलब ये कि मोहब्बत ने एक और शिकार फॉस लिया बेइंतहां दर्द और तक़लीफ देने के लिए।

आशा जानना चाहती थी कि निशा को अपने ही भाई से इस हद तक प्यार कैसे हो गया है? आख़िर ऐसे क्या हालात बन गए थे जिसके तहत निशा ने ये रोग लगा लिया था? दूसरी बात क्या ये बात विक्रम को भी पता है कि उसकी लाडली बहन उससे इस हद तक प्यार करती है? उसे पता था कि डायरी एक ऐसी चीज़ होती है जिसमें हर इंसान अपने अंदर की हर सच्चाई को पूर्णरूप से सच ही लिखता है। अतः संभव है कि निशा ने भी उस डायरी में वो सब लिखा हो जिसके तहत उसे पता चलता कि किन हालातों में ऐसा हुआ था? हलॉकि उसे ये भी पता था कि किसी भी इंसान की पर्सनल डायरी उसकी इजाज़त के बिना पढ़ना निहायत ही ग़लत होता है मगर फिर भी वो पढ़ना चाहती थी।

आशा सोच रही थी कि ब्रेकफास्ट करते वक्त निशा की जो हालत हुई थी उससे कहीं वो कुछ उल्टा सीधा करने का न सोच बैठे। ये मामला ही ऐसा है कि वो इस सबसे बहुत डर जाएगी और किसी के पता चल जाने के डर से वो कुछ उल्टा सीधा करने का सोच बैठे। बेड पर बैठी

आशा को एकाएक ही हालात की गंभीरता का एहसास हुआ। उसका दिल बुरी तरह धड़कने लगा। उसे निशा की चिंता सताने लगी। उसने फौरन ही निशा से बात करने का सोचा। किन्तु उसके पास खुद का कोई मोबाइल नहीं था।

आशा अतिशीघ्र बेड से नीचे उतरी और भागते हुए कमरे से बाहर आई और फिर नीचे की तरफ दौड़ पड़ी। थोड़ी ही देर में वो रेणुका आदि लोगों के पास पहुॅच गई। उसने खुद के चेहरे पर उभर आए घबराहट के भावों को जल्दी से छुपाया और लगभग सामान्य लहजे में ही रेणुका से मोबाइल फोन माॅगा। किन्तु रेणुका ने बताया कि मोबाइल तो उसके पास है ही नहीं, उसे तो मोबाइल चलाना ही नहीं आता। दूसरी बात ये कि उसे मोबाइल की कभी ज़रूरत ही नहीं पड़ी। रेणुका की ये बात सुनकर आशा बुरी तरह परेशान हो गई। लाख कोशिशों के बावजूद उसके चेहरे पर से परेशानी के वो भाव न मिट सके जो उसके चेहरे पर ढेर सारे पसीने में भीगे दिखने लगे थे। जिसका नतीजा ये हुआ कि रेणुका पूछ ही बैठी उससे कि क्या बात है वो इतना परेशान क्यों हो गई है। रेणुका की बात का उसने आनन फानन में ही जवाब दिया। तभी वहाॅ पर अपर्णा भी आ गई। रेणुका ने कुछ सोचते हुए अपर्णा से कहा कि वो अपना मोबाइल फोन आशा को दे दे।

अपर्णा ने अपना मोबाइल फोन आशा को ये पूछते हुए दे दिया कि क्या बात है तुम इतना परेशान क्यों नज़र आ रही हो। कुछ बात है क्या? आशा ने कहा नहीं चाची ऐसी कोई बात नहीं है वो क्या है कि उसे गुड़िया को फोन करना है तथा उससे पूछना है कि आज वो इतना जल्दी स्कूल क्यों चली गई थी? आपने देखा नहीं था क्या उसने ठीक से नास्ता भी नहीं किया है आज? आशा की इन बातों से रेणुका, अपर्णा तथा रुक्मिणी सहज हो गईं। उन्हें भी बात सही लगी। क्योंकि उन्होंने भी देखा था कि निशा ने बस थोड़ा बहुत ही खाया था और फिर स्कूल चली गई थी। ख़ैर आशा का निशा के लिए इस तरह चिंता करना उन सबको बहुत अच्छा लगा।

अपर्णा से मोबाइल लेकर आशा फौरन ही वापस कमरे में आई और उसने फिर से दरवाजा उसी तरह अंदर से कुंडी लगा कर बंद कर दिया। उसके बाद वो बेड पर आ कर बैठ गई। फिर जाने उसे क्या सूझा कि वह बेड से उठी और कमरे से ही अटैच बाथरूम की तरफ बढ़ गई। बाथरूम का दरवाजा अंदर से बंद कर उसने मोबाइल पर निशा का नंबर निकाला और फिर उसे काल लगा कर मोबाइल अपने कान से लगा लिया। इस वक्त उसके चेहरे पर गहन चिंता व परेशानी स्पष्ट रूप से उभर आई थी। रिंग की आवाज़ जाती सुनाई दी उसे और इसके साथ ही उसकी धड़कनें भी बढ़ गईं। मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना भी करने लगी कि सब कुछ ठीक ही हो।

"ह .. हैलो। " तभी उधर से निशा का लगभग घबराया हुआ सा स्वर उभरा __"च .. चाची वो मैं .....। "

" गुड़िया। " निशा की बात को काटते हुए आशा ने फौरन ही कहा __" मैं तेरी आशा दीदी बोल रही हूॅ और हॉ फोन मत काटना तुझे विक्रम की क़सम है। "

"द .. दीदी आप ??" उधर से निशा का बुरी तरह उछला हुआ किन्तु घबराया हुआ स्वर फूटा था।

" गुड़िया। " आशा ने असहज भाव से किन्तु समझाते हुए कहा __" देख तू कोई भी उल्टा सीधा करने का ख़याल अपने मन में मत लाना। अगर तू ये सोच कर डर गई है कि मुझे डायरी के माध्यम से तेरा विक्रम ़ पता चल गया है और मैं उसकी वजह से तुझे कुछ कहूँगी या फिर वो सब किसी से कह दूँगी तो तू उस सबकी वजह से डर मत और ना ही उससे घबरा कर कुछ ग़लत क़दम उठाने का सोचना। मैं तुझे उसके लिए कुछ नहीं कहूँगी गुड़िया और ना ही किसी को बताऊँगी। मुझे पता है कि ये प्यार व्यार ऐसे ही होता है जो रिश्ते नाते नहीं देखता। अतः तू इस सबके लिए बिलकुल भी मत घबराना और ना ही फालतू का टेंशन लेना। तू सुन रही है न गुड़िया ???"

" हम्म। " उधर से निशा का बहुत ही धीमा स्वर उभरा।

" मुझे इस बात के लिए माफ़ कर दे गुड़िया। " आशा ने सहसा दुखी भाव से कहा __" कि मैने तेरी डायरी को छुआ और उसे खोल कर पढ़ा भी। किन्तु ये सब मैने जान बूझ कर नहीं किया था। बल्कि वो सब अंजाने में हो गया था। दरअसल जब मैं तेरे पास सुबह तेरे लिए चाय लेकर आई तो देखा कि तू उस डायरी को अपने दोनो हाथो से पकड़े सो रही थी। मुझे लगा ऐसी डायरी तेरी पढ़ाई में तो उपयोग होती नहीं होगी तो फिर ये कैसी डायरी है तथा क्या है इसमें जिसे इस तरह लिये तू सो रही है ? बस यही जानने के लिए मैने उस डायरी को तेरे हाथो से लेकर उसे खोला। किन्तु मुझे उसमें वो सब पढ़ने को मिल गया। लेकिन गुड़िया मैने और कुछ नहीं पढ़ा उसमें। शुरू का ही पेज पढ़ा था और वो ग़ज़ल पढ़ी थी जिसमें तूने लिखा था __" बताना भी नहीं मुमकिन , हॉ ऐसे ही कुछ लिखा था उसमे। "

"क .. क्या आप सचमुच इस सबके लिए मुझसे नाराज या गुस्सा नहीं हैं दीदी ?" उधर से निशा का अभी भी धीमा ही स्वर उभरा था।

" हॉ गुड़िया। " आशा ने सहसा मुस्कुरा कर कहा __" मैं तुझसे बिलकुल भी नाराज नहीं हूँ। भला मैं तुझसे नाराज हो भी कैसे सकती हूँ पागल ? किन्तु हॉ इस बात से दुखी ज़रूर हूँ कि सबको अपनी शरारतों से परेशान करने वाली मेरी ये लाडली बहन ने एकाएक ही खुद को उदासी की चादर में ढॉफ लिया है। "

" वक्त और हालात हमेशा एक जैसे तो नहीं हो सकते न दीदी। " उधर से निशा ने अजीब भाव से कहा __" इंसान के जीवन में कभी खुशी तो कभी ग़म वाला समय तो आता जाता ही रहता है। मेरे पास इसके पहले वैसे ही वक्त और हालात थे जबकि मैं खुश रहा करती थी और शरारतें करने के सिवा कुछ नहीं आता था मुझे। मगर अब हालात बदल गए हैं। ईश्वर को मेरा खुश रहना और मेरा वो शरारतें करना शायद अच्छा नहीं लगा तभी तो उसने मुझे दिल का रोगी बना दिया। एक ऐसे इंसान के लिए उसने मेरे दिल में प्रेम का बीज बो दिया जो इंसान मेरा हो ही नहीं सकता। ख़ैर जाने दीजिए दीदी , मैने बहुत हद तक खुद को समझा लिया है। हलॉकि ये मुश्किल तो था मगर कोई बात नहीं। इतना तो अब सहना ही पड़ेगा न मुझे। मैने भी सोचा कि ऐसे इंसान को पाने की ज़िद भी क्या करना जो मुझे मिल ही न सके और जिसकी

वजह से सब कुछ नेस्तनाबूत भी हो जाए। "

निशा की इन बातों ने आशा को जैसे एकदम से ख़ामोश सा कर दिया। उसे समझ न आया कि वो उसकी बातों का क्या जवाब दे? किन्तु इतना एहसास ज़रूर हो गया उसे कि जिस लड़की को सब लोग बच्ची समझते हैं तथा जिसके बारे में ये सोचते हैं कि उसे दुनियादारी की अभी कोई समझ नहीं है वो लड़की दरअसल अब बहुत बड़ी हो गई है। कदाचित इतनी बड़ी कि अपनी इस छोटी सी ऊम्र में भी वो बड़े बड़े बुजुर्गों तथा बड़े बड़े ज्ञानियों को नसीहतें दे सकती है। क्या प्रेम ऐसा भी होता है जो अचानक ही इंसान को इतना बड़ा और इतना बड़ा ज्ञानी बना देता है जिसके चलते वो यथार्थ और ज्ञान की बातें करने लगे?

" आपने ऐसा कह कर यकीनन मेरे दिल को राहत पहुँचाई है दीदी। " उधर से निशा कह रही थी __" वरना ये सच है कि मैं इस सबसे बहुत ही ज्यादा घबरा गई थी और चिंतित भी हो गई थी। मैं नहीं चाहती दीदी कि मेरी वजह से सब कुछ खत्म हो जाए और अगर सच में आपने किसी से वो सब कुछ बता दिया होता तो ये भी सच है कि फिर मेरे पास आत्म हत्या कर लेने के सिवा कोई दूसरा चारा न रह जाता। मैं किसी को अपना मुह न दिखा पाती और ना ही एक पल के लिए भी वैसी जलालत भरी ज़िंदगी जी पाती। "

" चुप कर तू। " आशा की ऑखों से ऑसुओं का जैसे बॉध सा फूट पड़ा , बुरी तरह तड़प कर बोली __" ख़बरदार जो दुबारा फिर कभी आत्महत्या वाली बात की। तू सोच भी कैसे सकती है पागल कि मैं किसी से उस बारे में कुछ कह देती ? इतनी पत्थर दिल नहीं हूँ गुड़िया। मेरे सीने में भी तेरी तरह एक ऐसा दिल धड़कता है जिसमें किसी के लिए बेपनाह मोहब्बत जाने कब से अपना आशियां बना कर रहती है। "

"य .. ये आप क्या कह रही हैं दीदी ??" उधर से निश ा का बुरी तरह चौंका हुआ स्वर उभरा __" आप भी किसी से मोहब्बत करती हैं ?"

" क्यों गुड़िया ?" आशा ने सहसा फीकी मुस्कान के साथ कहा __" क्या मुझे किसी से मोहब्बत नहीं हो सकती ? क्या मेरे अंदर एहसास नहीं हैं ? अरे मेरे सीने में भी तो ऐसा दिल है जो धड़कना जानता है रे। "

" मेरा वो मतलब नहीं था दीदी। " उधर से निशा ने मानो सकपकाते हुए कहा __" मैं तो बस आपकी इस बात से हैरान हुई थी कि आप भी किसी से मोहब्बत करती हैं। वैसे कौन है वो शख्स जिसे मेरी प्यारी सी दीदी मोहब्बत करती है ? मुझे भी तो बताइये न दीदी। "

" बहुत मुश्किल है गुड़िया। " आशा के चेहरे पर एकाएक ही कई सारे भाव आ कर ठहर गए , बोली __" बस यूँ समझ ले कि एकतरफा मोहब्बत है ये। "

" मोहब्बत तो है न दीदी। " उधर से निशा ने कहा _" इससे कोई फर्क़ नहीं पड़ता कि वो

एकतरफ से है या फिर दोनो तरफ से। मोहब्बत तो मोहब्बत ही होती है चाहे वो किसी की भी तरफ से हो। आप बताइये न किससे मोहब्बत करती हैं आप ? मुझे ये जानने की बड़ी तीव्र उत्सुकता हो रही है प्लीज़ बताइये न। "

" मुझे मजबूर मत कर गुड़िया। " आशा की आवाज़ जैसे कॉप सी गई , बोलीं __" वर्षों से दबे उस मोहब्बत के एहसास को दबा ही रहने दे। क्योंकि मुझे इतने की ही आदत पड़ चुकी है और इतने से दर्द को ही सहने की हिम्मत है मुझमे। वो अगर बाहर आ गई तो फिर मैं उसे और उसके असहनीय दर्द को संभाल नहीं पाऊँगी। इस लिए मुझसे मत पूछ मेरी गुड़िया। मैं तुझे ही क्या उस शख्स को भी नहीं बता सकती जिसे टूट टूट कर वर्षों से चाहा है मैने। "

" हाय दीदी। " उधर से निशा की मानो सिसकी सी निकल गई। कदाचित ऐसा इस लिए क्योंकि दोनो एक ही रोग के रोगी थे। ख़ैर निशा ने कहा __" ये कैसा रोग है दीदी ? ये कैसा दर्द है , ये कैसा एहसास है ? न जी पाते हैं और ना ही मर पाते हैं। ना चाहते हुए भी उससे फॉसला कर लेते हैं जिसके बिना पल भी रह नहीं पाते हैं। "

" जाने दे गुड़िया। " आशा के अंदर से एक हूक सी उठी थी जिसने उसे हिला कर रख दिया था , बोलीं __" ऐसी बातें मत कर वरना इनका असर ऐसा होता है कि फिर एक पल भी सुकून नहीं मिलता। इस लिए ज़रूरी है कि हम अपने मन को अथवा दिल को बहला लें किसी तरह। "

" हॉ ये तो सच कहा आपने। " निशा ने कहा __" हमें तो हर हाल में खुद को तथा अपने दिल को बहलाना ही होता है। किन्तु अगर आप बताना नहीं चाहती हैं तो कोई बात नहीं। अगर कभी दिल करे कि आपको अपने दिल के बोझ को हल्का करना है तो मुझसे वो सब बता कर ज़रूर खुद को हल्का कर लीजिएगा। "

" चल बाय। " आशा ने गहरी सास ली __" अपना ख़याल रखना और हॉ अपने चेहरे की ये उदासी को कम करने की कोशिश भी करना। "

आशा की इस बात पर उधर से निशा ने हॉ कहा और फिर काल कट गई। बाथरूम के अंदर एक तरफ की दीवार पर लगे आईने के सामने खड़ी आशा काल कट होने के बाद कुछ देर तक आईने में खुद को देखती रही और फिर सहसा उसके लब थरथराते हुए हिले__"तुझे कैसे बता दूँ गुड़िया कि मेरे दिल में किस शख्स के प्रति बेपनाह मोहब्बत है? अगर तुझे पता चल जाए कि मुझे भी उसी से मोहब्बत है जिससे तुझे है तो बहुत हद तक संभव है कि तेरा दिल टूट जाएगा और फिर तू सब कुछ जानते समझते हुए भी खुद को बिखर जाने से रोंक नहीं पाएगी।"

आईने में दिख रहे अपने अक्श को एकटक देखती हुई आशा की ऑखों से एकाएक ही ऑसुओं के दो मोती छलकते हुए नीचे बाथरूम के फर्श पर गिर कर मानो फना हो गए। फिर उसने जैसे खुद को संभाला और मोबाइल को एक तरफ रख कर उसने वाश बेसिन पर लगे नलके को चला कर उसके पानी से अपने चेहरे को धोना शुरू कर दिया। उसके बाद उसने एक

तरफ हैंगर पर टँगे टॉवेल से अपने धुले हुए चेहरे को पोंछा और फिर मोबाइल लेकर बाथरूम से बाहर आ गई।

८६

मानुषी व श्रुति जीप की पिछली सीट पर बैठी हुई थी। जीप का ऊपरी हिस्सा यानी कि छत नहीं थी। इस लिए चलते हुए खुली हवा लग रही थी दोनो को तथा इधर उधर का नज़ारा भी स्पष्ट दिख रहा था। सोनपुर गॉव आस पास के सभी गॉव से बड़ा था तथा आस पास के कई गॉवों की पंचायत भी सोनपुर ही थी। सत्यम सिंह का परिवार सोनपुर गॉव का सबसे ज्यादा संपन्न परिवार था।

मानुषी की विक्रम से पहले ही सारी बातें मैसेज के द्वारा हो चुकी थी। विक्रम ने उसे प्लान भी समझा दिया था तथा ये भी कहा था कि गॉव तथा खेत घूमने का बहाना करके निकलना हवेली से किन्तु गॉव में घूमना ही बस नहीं है बल्कि ऐसी जगह आना है जिस तरफ गॉव की सीमा का आख़िरी छोर हो तथा जिस तरफ से दूसरे गॉव यानी कि चिमनी के पहले वाले गॉव माधोपुर की तरफ जाने वाले रास्ते की तरफ आना है। ऐसा इस लिए कि मानुषी व श्रुति को गॉव तथा खेत देखने जाने की जानकारी अगर सोनिया द्वारा सत्यम सिंह को होती है तो वो ज़रूर अपने ससुर कीर्तिमान सिंह को रामगंज छोंड़ कर वापस शीघ्रता से मुख्य रास्ते से आएगा। ये भी संभव है कि वो अपने साथ मंत्री के आदमियों को अथवा कुछ ऐसे किराए के टट्टुओं को ले आए जो उन्हें रास्ते में ही मिल जाएॅ तो मुसीबत हो जाए।

इन्हीं सब बातों को सोच कर ही विक्रम ने मानुषी से माधोपुर की तरफ ही आने को कहा था। सोनपुर के बगल से ही माधोपुर था उसके बाद चिमनी गॉव। उधर विक्रम खुद भी रामगंज के दस किलो मीटर पहले ही बसे गॉव रेवती से मुख्य मार्ग से न आ कर घूमते हुए इस तरफ आने वाला था।

मानुषी व श्रुति दोनो ही ऐसा ज़ाहिर कर रही थीं जैसे सचमुच ही वो दोनो गॉव देखने निकली हैं हवेली से। विक्रम ने ये भी कहा था कि संभव है उनके पीछे उसकी मॉम ने और भी ऐसे आदमी लगा दिये हों जो उसकी गतिविधि को नोट करते हुए छुप कर उनका पीछा कर रहे हों। अतः इस बात का ख़याल रखें और अगर वो दिखें तो उनकी वस्तुस्थित से उसे ज़रूर अवगत कराए किन्तु सावधानी से।

मानुषी श्रुति को बताती जा रही थी कि जब वो छोटी थी तो वो इन जगहों पर कभी कभी घूमने आया करती थी। दोनो ही बातें कर रहीं थी। अब तक दोनो ही गॉव की सीमा के बाहर की तरफ आ गईं थी। तभी एक जगह ड्राइवर ने जीप को रोंक दिया। ये देख कर दोनो ही चौंकी।

" मैडम अब किधर जाना है ?" ड्राइवर ने पीछे पलट कर उन दोनो से पूछा था __" आप तो जानती हैं कि हम दोनो खुद ही यहॉ पर नये हैं इस लिए हमें रास्तों का कुछ पता नहीं है। अतः आपको जहॉ जहॉ घूमना हो हमें बता दीजिए। वैसे आपके भाई जयदीप जी ने कहा था कि आपको ये सारा गॉव देखना है और फिर खेतों की तरफ भी जाना है। इस लिए अब आप

बताइये कि यहॉ से किधर चलना है ?"

ड्राइवर की बात सुन कर मानुषी के दिमाग़ की बत्ती एकाएक ही रौशन हो उठी और वह मन ही मन ये सोच कर खुशी से झूम उठी कि ड्राइवर को तो यहॉ के बारे में कुछ पता ही नहीं है। यानी वो अगर चाहे तो कहीं भी चलने को कह सकती है उसे। मगर एकाएक ही उसका मन मयूर ये सोच कर मुरझा भी गया कि कहीं ऐसा तो नहीं कि इन दोनो को जयदीप ने ऐसा ही कुछ पूछने के लिए कहा हो। ताकि मैं अपने तरीके से उसे उस तरफ चलने को कहूँ जिस तरफ जाने से उसे किसी प्रकार की कोई शंका हो और फिर ये जयदीप को मैसेज द्वारा इस सबके बारे में सूचित भी कर दे।

मानुषी को अपना ये ख़याल जॅचा। इस लिए उसने ऐसा वैसा कुछ भी करने का ख़याल दिमाग़ से निकाल दिया। किन्तु ये भी उसे पता था कि माधोपुर की तरफ ही उसे जाना है। अतः वो उस तरफ जाने के लिए कोई बहाना मन ही मन में सोचने लगी।

" अरे मानुषी। " सहसा श्रुति एक तरफ हाथ का इशारा करते हुए बोल पड़ी __" वो उस तरफ क्या है ?"

"क .. कहॉ दीदी ?" मानुषी ने भी जल्दी से उस तरफ देखते हुए पूछा जिस तरफ श्रुति हाथ से इशारा कर रही थी।

" अरे वहॉ पर। " श्रुति ने अपने उठे हुए हाथ को हल्का सा मूवमेंट देते हुए कहा __" उस तरफ देख न। ऐसा लगता है जैसे वहॉ पर कोई बड़ा सा मंदिर है। "

" अच्छा वो। " मानुषी को जैसे दिख गया __" हॉ वो मंदिर ही है। यहॉ पर वही एक मंदिर है जो कि काफी प्राचीन मंदिर है। हर साल वहॉ पर मेला भी लगता है। "

" मुझे उस मंदिर को देखना है मानुषी। " श्रुति ने सहसा जैसे रिक्वेस्ट की __" मुझे मंदिर में देवी देवताओं के दर्शन करना बहुत अच्छा लगता है। प्लीज इनसे कहो न कि ये मंदिर की तरफ चलें। "

" ठीक है दीदी। " मानुषी का मन मयूर एकाएक ही खुशी से फिर झूम उठा था। दरअसल वो मंदिर बगल के ही गॉव माधोपुर में ही स्थित था। मंदिर को देख कर श्रुति ने उसे देखने की इच्छा ज़ाहिर की तो मानुषी ये सोच कर खुश हो गई कि अब उस तरफ जाने का शानदार बहाना भी मिल गया है। अतः उसने तुरंत ही ड्राइवर से कहा कि जीप को मंदिर की तरफ मोड़ ले।

ड्राइवर ने ऐसा ही किया। उसे इस सबमें कुछ भी अटपटा नहीं लगा इस लिए वो भी बिना कोई भाव चेहरे पर लाए जीप को मोड़ दिया उस तरफ। इधर जैसे ही जीप माधोपुर में स्थित उस मंदिर की तरफ मुड़ कर चली तो सहसा श्रुति ने बड़े ही रहस्यमय ढंग से मानुषी की तरफ देखा।

मानुषी उसके इस तरह देखने से अभी बुरी तरह चौंकने ही वाली थी कि सहसा उसे ख़याल आया कि ड्राइवर के पास ही लगे बैकमिरर से ड्राइवर उसे चौंकते हुए देख भी सकता है। अतः उसने जल्दी से अपने चेहरे के भावों को छुपाया और फिर श्रुति को सामान्य लहजे में ही बताने लगी कि एक बार वो भी उस मंदिर में मेले के समय गई थी।

मानुषी आस पास का नज़ारा देखते हुए ही थोड़ी थोड़ी देर के अंतराल में पीछे भी देख रही थी। विक्रम ने उससे कहा था कि संभव है कि उसके पीछे और भी कुछ आदमी छुप कर आएॅ। अतः उन्हीं को देख रही थी मानुषी, मगर अभी तक उसे ऐसा कुछ नज़र न आया था। ये देख कर उसे लगने लगता कि विक्रम बेवजह ही इतनी दूर की सोच रहा है। जबकि यहॉ तो ऐसा कुछ भी नहीं है और अगर होता तो क्या ऐसा कुछ नज़र न आता?

मानुषी के एक हाथ में पहले से ही मोबाइल था। अतः उसने सामान्य तरीके से ही किन्तु सामने की सीट पर बैठे दोनो ही आदमियों की नज़रों को बचा कर मोबाइल की तरफ देखा। मानुषी ने बड़ी सावधानी से मोबाइल खोला और फिर विक्रम को मैसेज करके बताया कि वो अब कहॉ पहुॅचने वाली है।

विक्रम का ख़याल एकदम सही था। सत्यम सिंह को जब सोनिया के द्वारा ये पता चला कि मानुषी व श्रुति गॉव तथा खेत देखने गईं हैं तो वो सचमुच रामगंज से चल दिया था। किन्तु चलने से पहले उसने अपने एक ऐसे आदमी को भी फोन किया जो रामगंज में ही रहता था तथा कई तरह के ग़ैर कानूनी धंधे करता था। उस आदमी का नाम जावेद खान था। सत्यम सिंह ने जावेद को फोन करके उसे सारी सिचुएशन से अवगत कराया और फिर तुरंत ही अपने गुर्गों को लेकर चलने को कहा था।

इस वक्त सत्यम सिंह और जावेद खान दोनो एक ही कार में थे जबकि जावेद खान के बाकी सभी गुर्गे पीछे अलग अलग तीन जीपों में थे। सभी के हाथो में हथियार के रूप में मौत का सामान था। सत्यम सिंह के पास भी एक रिवाल्वर था जो कि उसने जावेद खान से लिया था।

" तो ये वही लड़का है ठाकुर साहब। " सत्यम सिंह की कार में पैसेंजर सीट पर बैठा जावेद खान बोलाा __" जो आपका भतीजा है तथा जिसने आपका जीना हराम कर रखा है। आपने बताया था कि कैसे इसने आपकी फैक्ट्री में आग लगा दी थी जिसमें आपका बहुत तगड़ा नुकसान हुआ थाा ?"

" हॉ खान। " सत्यम सिंह सहसा दॉत पीसते हुए कह उठाा __" ये वही हरामज़ादा है और अब तो उसकी इतनी हिम्मत बढ़ गई है कि इसने पिछले दिन हमें अपने नकली सी.बी.आई. के आदमियों के जाल में फॉस कर कैद भी कर लिया था। मेरी बड़ी बेटी जो पुलिस में इंस्पेक्टर है उसे भी इस कम्बख्त ने अपनी तरफ मिला लिया है। ख़ैर , मुझे अपनी औलाद से ये उम्मीद नहीं थी खान कि वो अपने ही मॉ बाप के खिलाफ़ हो जाएगी। जैसे औलाद अगर बिगड़ी हुई हो और वो हज़ार पाप कर डाले तब भी मॉ बाप के लिए वो प्रिय ही होती है और वो उसके अपराधों को क्षमा कर देते हैं उसी तरह क्या औलाद नहीं कर सकतीी ? मैंने जो

कुछ भी किया था सिर्फ अपने बीवी बच्चों के उज्वल भविष्य के लिए ही किया था। साला अब तक तो उसी पाप के पैसों को खुश होकर उड़ाती रही थी वो। मगर आज उसे हमसे तथा हमारे उसी पैसों से नफ़रत हो गई ? खान , ये मैं जानता हूँ कि बेटी की इस बगावत से मुझे कितनी तक़लीफ हुई है। उसे इस बात का ज़रा भी ख़याल नहीं आया कि उसके द्वारा ये सब करने से उसके मॉ बाप पर क्या गुज़रेगी ?"

" ये सब उस लड़के की वजह से ही हुआ है ठाकुर साहब। " जावेद खान ने कठोरता से कहा __" उसी ने साक्षी बिटिया को बरगलाया होगा। वरना वो ऐसा कभी न करती। "

" नहीं खान। " सत्यम सिंह ने मजबूती से अपने सिर को इंकार में हिलाते हुए कहा __" ये सब उस लड़के के बरगलाने से नहीं हुआ है। क्योंकि इसके पहले मेरे साथ साथ मेरे बच्चे भी उस विक्रम से नफ़रत करते थे और उसकी तथा उसके परिवार में किसी की शक्ल तक देखना पसंद नहीं करते थे। ये सब तो किसी और ही वजह से हुआ है खान। दरअसल मेरी दोनों ही बेटियों को सच्चाई की राह पर चलना शुरू से ही पसंद था। उन्हें ये पता नहीं था कि उनका बाप वास्तव में कैसा है ? ख़ैर , इस मामले में मेरा बेटा मुझ पर गया है। मुझे खुशी है कि वो मेरे जैसा है और सच कहूँ तो मुझे उस पर नाज़ भी है। मगर अब मैने भी फैंसला कर लिया है कि मेरे इस दिल की आग तभी शान्त होगी जब उस विक्रम के साथ साथ मैं अपनी उन दोनो बेटियों को भी अपने हाथो से बद से बदतर मौत दूँगा। "

जावेद खान देखता रह गया सत्यम सिंह को। वो देख रहा था कि इस वक्त सत्यम सिंह के चेहरे पर ज़लज़ले के से भाव थे। यकीनन उसके अंदर गुस्सा, क्रोध व अपमान ये तीनो ही अपने पूरे जलाल पर थे।

" ख़ैर छोंड़िये इस बात को। " जावेद खान ने जैसे पहलू बदला __" ये बताइये कि उन सबको पकड़ने के लिए क्या प्लानिंग की है आपने ?"

" प्लानिंग में कोई कमी नहीं है खान। " सत्यम सिंह ने गहरी सास लेते हुए कहा __" मेरी बीवी के पास भेजा फ्राई कर देने वाला दिमाग़ है। उसने मुझे बताया था कि उसने उन दोनो के साथ पहले तो सामान्य सिचुएशन बनाए रखने के लिए दो ऐसे आदमियों को जीप में भेजा है जो तगड़े फाइटर कहे जाते हैं। उनके जाने के बाद उसने अलग से उन जैसे ही आदमियों की एक टीम बना कर उनके पीछे इस तरह लगा दिया है कि मानुषी व श्रुति को वो टीम नज़र ही न आए। उस टीम का काम ये है कि अगर सच में विक्रम मानुषी व श्रुति को लेने आ रहा है तो वो यकीनन पहले मानुषी व श्रुति के साथ गए उन दो आदमियों से भिड़ेगा। अतः हमारी टीम के वो लोग बैकअप के रूप में अपने आदमियों की मदद करेंगे। यानी इस सिचुएशन को देखते हुए ही हमारी दूसरी टीम के आदमी जल्द ही वहॉ पहुँच जाएँगे। मेरी बीवी सोनिया के अनुसार अगर बैकअप के रूप में विक्रम ने भी कोई ऐसा इंतजाम किया होगा तो यकीनन वो भी विक्रम का पलड़ा कमज़ोर पड़ते देख कर उन सबके बीच टूट पड़ेंगे। उस सूरत में यहॉ से हम सब भी पहुँच जाएँगे और विक्रम तथा उसके आदमियों का काम

तमाम करेंगे। हम लोग एक तरह से डबल बैकअप के रूप में होंगे अपने आदमियों के पीछे। मुझे यकीन है कि इतना कुछ होने के बाद विक्रम एण्ड पार्टी ज्यादा देर तक हमारा सामना नहीं कर पाएगी और अंततः उन्हें हमारे सामने खुद को सरेण्डर करना ही पड़ेगा। "

" ओह। " जावेद खान प्रभावित लहजे में बोलाा __" प्लान तो यकीनन आपका शानदार है। सचमुच इस सूरत में आपका वो भतीजा और उसके सभी आदमी घुटने टेक देंगे। "

" बिलकुल। " सत्यम सिंह ने कहाा __" इस सबके बाद विक्रम और उसके साथ साथ मेरी दोनो बेटियॉ मेरे कब्जे में होंगी। तब मैं उस हरामी के पिल्ले से अपने साथ हुए इतने भारी नुकसान का गिन गिन के बदला लूँगा। मुंबई में सुरक्षित बैठी उसकी मॉ बहन को यहॉ मेरे पास मेरे पैरों तले आना ही पड़ेगा। उसके बाद तो दुनियॉ देखेगी कि ठाकुर सत्यम सिंह के साथ ऐसा दुस्साहस करने वालों का क्या अंजाम होता हैै ?"

" ऐसा ही होगा ठाकुर साहब। " जावेद खान ने दृढ़ता से कहाा __" आपने जिस तरह से प्लान बनाया है उस हिसाब से यकीनन आपका वो भतीजा तथा आपकी दोनो बेटियॉ आपके चंगुल में आ जाएॅगी। मैं अपने साथ अपने लगभग बीस के आस पास आदमी लाया हूँ। सबके सब आधुनिक हथियारों से लैश हैं। अगर ये सच है कि आपका वो भतीजा उन दोनो को लेने आ रहा है तो यकीनन तगड़ी मुठभेड़ होगी और उस मुठभेड़ में वो लोग बुरी तरह आपसे मात खाएॅगे। "

" इस बार वो हरामी की औलाद नहीं बचेगा खान। " सत्यम सिंह ने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहाा __" इस बार वो मेरी मुट्ठी में ज़रूर कैद होगा और पिंजरे में कैद परिंदे की तरह फड़फड़ाएगा भी। साले की ऐसी दुर्गति करूँ गा कि मौत और रहम दोनो की ही भीख मागेगा मुझसे। "

सत्यम सिंह की इस बात पर जावेद खान बोला तो कुछ नहीं किन्तु उसके जबड़े भिंच गए थे, जैसे जंग के लिए पूरी तरह से तैयार हो गया हो। इसके साथ ही कार के अंदर ख़ामोशी छा गई। कार सोनपुर की तरफ तेज़ी से बढ़ी जा रही थी। उनके पीछे पीछे तीन तीन जीपों में सवार जावेद खान के गुर्गे भी चले आ रहे थे।

इधर हम तीनों भी कार में बैठे पूरी रफ्तार से माधोपुर की तरफ बढ़े चले जा रहे थे। हम तीनो के बीच काफी देर से ख़ामोशी छाई हुई थी। कदाचित आने वाले समय के बारे में सब कोई सोचे जा रहा था। कुछ देर पहले साक्षी दीदी ने फोन पर किसी से बात की थी। उनकी बातें ऐसी थी जो उस वक्त मुझे बिलकुल भी समझ में नहीं आई थी। मैने फोन करके अनुप के मौसा जी से उनकी करेंट लोकेशन के बारे में पूछा था। उन्होंने बताया कि वो हमारे पीछे ही आ रहे हैं किन्तु फॉसला बना कर।

अभी हमारे बीच ख़ामोशी ही थी कि तभी साक्षी दीदी का मोबाइल फोन बज उठा। साक्षी दीदी ने मोबाइल की स्क्रीन पर फ्लैश कर रहे नंबर को देखा और फिर काल रिसीव कर मोबाइल

कान से लगा लिया।

" हॉ प्रकाश बोलो। " फिर साक्षी दीदी ने कहा __" क्या ख़बर है वहॉ की ?"

".....। " उधर से कुछ कहा गया।

" ओह आई सी। " साक्षी दीदी के होठों पर मुस्कान फैल गई __" कितने लोग हैं वो ?"

".....। " उधर से फिर कुछ कहा गया।

" चलो अच्छी बात है प्रकाश। " साक्षी दीदी ने कहा _" और हॉ बहुत बहुत धन्यवाद इस ख़बर के लिए। चलो रखती हूॅ , तुम ज़रा होशियार रहना। "

" क्या बात है दीदी ?" काल कट होते ही मैने उनकी तरफ देखते हुए पूछा __" किसका फोन था ?"

" तुझे बताया था न मैने। " साक्षी दीदी ने कहा __" कि हवेली में प्रकाश नाम का एक आदमी सुरक्षा गार्ड के रूप में काम करता है। ये उसी का फोन था। उसने बताया कि मॉम ने मानुषी व श्रुति के हवेली से निकलने के कुछ देर बाद ही दो जीपों में लगभग दस आदमी उन दोनो के पीछे लगाया है। इसका मतलब मेरा अंदाज़ा सही था। मॉम ने तुम्हारी सोच को ताड़ते हुए बैकअप के रूप में मानुषी व श्रुति के पीछे कुछ और आदमियों को लगा दिया है। "

" हॉ इस बात का अंदेशा तो मुझे भी था दीदी। " मैने सामने रास्ते की तरफ देखते हुए कहा __" मुझे अंदेशा था कि बड़ी मॉ ऐसा कर सकती हैं। लेकिन फिक्र की कोई बात नहीं है दीदी। हमारे पास भी बैकअप के रूप में आदमियों की कोई कमी नहीं है। "

" तुम मेरे डैड को भूल गए विक्रम। " साक्षी दीदी ने कहा __" मॉम ने इस बारे में ज़रूर बताया होगा और अब वो भी आ ही रहे होंगे रामगंज से। संभव है कि उनके साथ भी कुछ आदमी हों। "

" बिलकुल हो सकते हैं दीदी। " मैने कहा __" इसी लिए तो मैं सीधे रास्ते से नहीं बल्कि माधोपुर वाले रास्ते की तरफ जा रहा हूॅ ताकि इस रास्ते में उनसे हमारा सामना ही न हो। "

" इसके पहले मैने जिससे फोन पर बात की थी। " साक्षी दीदी ने कहा __" वो एक मुखबिर था। जिसे मैने शुरू से ही डैड के पीछे लगाया हुआ था। ताकि वो डैड की हर गतिविधि के बारे में मुझे सूचित करता रहे। ख़ैर उसने बताया कि डैड मुख्य रास्ते से ही आ रहे हैं किन्तु उनके साथ काफी सारे लोग भी हैं जो आधुनिक हथियारों से लैश हैं। मतलब साफ है कि वो खुद भी पूरी तैयारी के साथ आ रहे हैं। अब तुम समझ सकते हो कि इस सबसे उनकी स्थित हमारी स्थित से ज्यादा मजबूत व भारी है। "

" अगर ऐसा है। " सहसा पिछली की सीट पर बैठा अमर बोल पड़ा __" तो यकीनन हम

उनके बीच फॅस जाएॅगे। इस लिए हमें कुछ ऐसा इंतजाम करना पड़ेगा जिससे हमारी स्थित उनकी स्थित से बेहतर हो जाए तथा हम उन्हें हरा कर मानुषी व श्रुति को सुरक्षित वहॉ से ला सकें। "

" फिक्र मत करो अमर। " साक्षी दीदी ने कहा __" उसका भी इंतजाम मैने कर दिया है और वो इंतजाम ऐसा होगा कि डैड ही क्या कोई भी कुछ नहीं कर पाएॅगा और हम मानुषी व श्रुति को सहज ही उनके चंगुल से छुड़ा लाएॅगे। "

" ये तो कमाल ही हो गया दीदी। " मैने मुस्कुराते कहा __" अगर ऐसा है तो फिर यकीनन फिक्र की कोई बात नहीं है। मगर सवाल ये है कि आपने ऐसा क्या हैरतअंगेज इंतजाम किया है जिसके तहत हम बड़ी सहजता से मानुषी व श्रुति दीदी को ले आएॅगे ?"

" सब्र कर मेरे प्यारे भाई। " साक्षी दीदी ने मुस्कुरा कर कहा _" और बस देखता जा कि क्या होता है। "

" इसका मतलब कि आप। " मैने हॅस कर कहा __" इस बारे में हमें न बता कर हम दोनो के लिए सस्पेन्स क्रियेट कर रही हैं ?"

" तू अपने आपको बड़ा तीसमारखां समझता है न। " साक्षी दीदी ने मुस्कुराते हुए कहा __" तो फिर खुद ही सोच ले कि मैने ऐसा क्या इंतजाम किया हो सकता है कि उसकी वजह से सब कुछ सहज ही हो जाएगा। इतना ही नहीं बल्कि उस वजह से कोई कुछ कर भी नहीं पाएगा। "

" ओहो ये तो चैलेन्ज देने वाली बात हो गई दीदी। " मैंने ऑखें फैलाते हुए उन्हें देखा।

" हॉ तो क्या हुआ ?" साक्षी दीदी भी मुस्कुराई __" अगर तू इसे चैलेन्ज समझता है तो यही सही। अब सोच कर बता कि ऐसा क्या हो सकता है इंतजाम ?"

" जाने दीजिए दीदी। " मैने नाटकीय अंदाज़ से कहा __" खामखां आपके दिमाग़ का कचरा हो जाएगा। इस लिए बेहतर है कि आप मुझसे ना ही पूछो। "

" ओये चल चल हवा आने दे। " साक्षी दीदी ने मानो घुड़की सी दी मुझे __" बड़ा आया मेरे दिमाग़ का कचरा करने वाला। भूल मत कि मैं उसकी बेटी हूॅ जिसके दिमाग़ को तू खुद भी सलाम करता है। "

साक्षी दीदी की इस बात से मैं एकदम से चुप हो गया। सच ही तो कहा था उन्होंने। बड़ी मॉ के दिमाग़ को यकीनन सलाम करने का दिल करता था मेरा। मैं हमेशा सोचता था कि अगर उनका यही शातिर दिमाग़ अच्छाई के लिए उपयोग होता तो कितनी ऊॅची शख्सियत बन सकती थीं वो। ये उनका दुर्भाग्य था या फिर वो ऐसी ही थी। किन्तु एक बात सच थी कि अपने पति से बेहद प्यार करती थीं वो। कदाचित यही वजह है कि उन्होंने पति के कहने पर हर वो काम किया था जो कि हर तरह से अनैतिक व ग़लत था।

" क्या हुआ बच्चे ?" मुझे सोचों में गुम देख सहसा साक्षी दीदी ने मुस्कुराते हुए कहा __" मेरी मॉम का सुनकर हवा निकल गई क्या तेरी ? होता है बेटा , ऐसा होता है कि ऐसी हस्तियों का ज़िक्र होते ही अच्छे अच्छों की हवा निकल जाती है। तू तो फिर भी अभी बच्चा है। "

" ये कुछ ज्यादा ही नहीं हो गया दीदी ?" मैने मासूम सी शक्ल बना कर कहा।

" अब हो गया तो हो गया न। " साक्षी दीदी मेरे द्वारा अपनी मासूम सी शक्ल बना लेने पर मुस्कुराईं ___" कम से कम तू मेरे मॉम का सुन कर अब ज्यादा उड़ेगा तो नहीं। "

" ये सच है दीदी। " मैने सहसा गंभीर होकर कहा __" कि वो भले ही बुराई का साथ दे रही हैं मगर जाने क्यों उनके लिए मेरे दिल में इज्ज़त आज भी है। हलॉकि उन्होंने मेरी मॉ के साथ बुरा करने में कोई कसर नहीं छोंड़ी थी। फिर भी ये मेरी मॉ के दिये हुए अच्छे संस्कार ही हैं कि मैं आज भी अपने से बड़ों को सम्मान देता हूॅ , भले ही उन लोगों ने हमारे साथ कितना ही बुरा किया है। "

" मैं जानती हूॅ विक्रम। " साक्षी दीदी भी गंभीर हो गई __" और मुझे इस बात की बेहद खुशी भी है कि तेरे और तेरी मॉ बहन के साथ भले ही बद से बदतर सुलूक किया था मेरे मॉम डैड ने मगर इसके बाद भी तू उनकी इज्ज़त करता है। तेरी यही खूबी तुझे सबसे अच्छा और सबसे महान बनाती है। मुझे ईश्वर से इस बात की शिकायत ज़रूर है कि क्यों उसने मुझे ऐसे इंसान की बेटी बनाया जो सिर्फ और सिर्फ पाप करना जानते हैं , मगर इस बात का उसी ईश्वर से धन्यवाद भी करती हूॅ कि उसने मुझे तेरे जैसा नेक दिल भाई दिया। आज तुझे पा कर मैं बेहद खुश हूॅ विक्रम । मुझे पता है कि इस जंग का अंत में अंजाम क्या होगा ? यानी कि अधर्म व पाप करने वाले मेरे मॉम डैड तथा मेरा वो कमीना भाई अंत में अपने अधर्म व पाप कर्म करने के चलते या तो मारे जाएॅगे या फिर हमेशा के लिए जेल की सलाखों के पीछे कैद होकर रह जाएॅगे। मुझे इस सबका दुख तो यकीनन होगा भाई क्योंकि आख़िर वो सब हैं तो मेरे अपने ही मगर ये सोच कर खुद को तसल्ली भी दूॅगी कि बुरा करने वालों की नियति तो यही होती है न। उनके बदले मुझे तू मिला है और तेरे साथ साथ रेणुका चाची , अपर्णा चाची तथा गुड़िया जैसी बहन मिल जाएॅगी। ये सब भी तो मेरे अपने ही हैं। "

" छोंड़िये इन सब बातों को दीदी। " मैने माहौल को सामान्य बनाने की गरज़ से कहा ___" मुझे भी तो इस सबका दुख होगा मगर आप भी जानती हैं कि इस सबके अलावा दूसरा कोई चारा नहीं है। इस लिए इन सब बातों पर ज्यादा सोच विचार मत कीजिए। "

अभी मैंने ये कहा ही था कि सहसा मेरे मोबाइल फोन पर मैसेज टोन बजी। जिससे मेरा ध्यान सामने ही डैशबोर्ड के पास रखे अपने मोबाइल पर गया। मैने साक्षी दीदी को मोबाइल उठा कर देखने को कहा। उन्होंने मेरा फोन उठाया और उसमे आए हुए मैसेज को देखने लगीं।

" मानुषी का मैसेज है विक्रम। " फिर साक्षी दीदी ने मुझसे कहा __" उसने मैसेज में बताया है कि वो श्रुति के साथ ही माधोपुर वाले मंदिर की तरफ जा रही है। "

" ओह ये तो अच्छी बात है। " मैने कहा __" इसका मतलब उस तरफ जाने का उसने कोई न कोई बहाना बनाया होगा। किन्तु ये भी सच है कि उसके पीछे पीछे ही कोई उनके पीछे भी लगा होगा। ख़ैर ये तो होगा ही , हमें अब उन सबसे निपटने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। हम बस पहुँचने ही वाले हैं उस जगह। "

" क्या हम उसी तरफ जा रहे हैं विक्रम ?" पीछे से अमर ने सामने की तरफ इशारा करते हुए कहा __" जहाँ पर वो ऊँचा सा मंदिर का गुंबद दिखाई दे रहा है ?"

" हाँ दोस्त। " मैने कहा __" हम माधोपुर के उसी मंदिर के पास जा रहे हैं। लेकिन वहाँ पर एक समस्या भी हो सकती है। "

" समस्या ???" अमर के साथ साथ साक्षी दीदी भी बोल पड़ी थीं __" कैसी समस्या हो सकती है ?"

" समस्या यही होगी कि हम सब मंदिर के पास ही इकट्ठा होंगे। " मैने कहा __" और मंदिर के पास ही हम सबका आमना सामना होगा। ये भी सच है कि हम सबके बीच इस लड़ाई में खून ख़राबा भी होगा जो कि मंदिर के पास नहीं होना चाहिए। "

" अरे ये तो अच्छी बात है विक्रम। " साक्षी दीदी ने कहा __" देवी माँ के सामने ही हर चीज़ का फैंसला होगा और यकीनन हमारी ही जीत होगी। यानी कि अंततः हम मानुषी व श्रुति को लेकर ही आएँगे। भला देवी माँ के सामने अधर्म व पाप की जीत कैसे हो सकेगी ?"

" मैं साक्षी की इस बात से सहमत हूँ भाई। " पीछे से अमर ने कहा __" दूसरी बात ये संयोग भी देवी माँ ने बनाया है कि हम सब उनके सामने ही एकत्रित होंगे और हर चीज़ का फैंसला वो खुद करेंगी। "

" हाँ यार। " मैने सहसा खुशी से कहा __" इस तरफ तो मेरा ध्यान ही नहीं था। सच कहा है बड़े बड़े संतों ने कि इस संसार में सब कुछ ईश्वर की ही मर्ज़ी से होता है। वो हमें वहीं ले जाता है जहाँ के बारे में हमने सोचा भी नहीं होता है। सोचने वाली बात है न दीदी , मैने तो मानुषी से सिर्फ यही सोच कर वहाँ पर आने को कहा था कि सबसे निपटने के बाद हम उसी रास्ते से वापस भी हो जाएँगे ताकि बड़े पापा से हमारा सामना ही न होने पाए। इस बारे में तो हमने सोचा ही नहीं था हर चीज़ का फैंसला करने के लिए वहाँ पर देवी माँ भी मौजूद होंगी। भला उनकी इच्छा के बग़ैर कोई काम कैसे हो सकता था ?"

" अब हमारी जीत यकीनन होगी विक्रम। " अमर ने कहा __" देवी माँ को भी पता है कि हम धर्म की राह पर हैं। अतः उनके आशीर्वाद से सब कुछ हमारे ही हक़ में होगा और इसका मुझे पूरा विश्वास है। "

" हम सबको विश्वास है अमर। " साक्षी दीदी ने कहा _" इस लिए अब हम सब देवी माँ

को मन ही मन प्रणाम करके काम का श्रीगणेश करेंगे। बोलो जय माता दी। "

" जय माता दी। " दीदी के कहने पर हम सबने एक साथ जय माता दी कहा और फिर मैं एक्सीलेटर पर अपने पैर को और ज़ोर से दबा दिया। परिणामस्वरूप कार की रफ्तार और भी तेज़ हो गई।

कुछ ही देर में हमारी कार माधोपुर गॉव के बाहर बने उस देवी मॉ के मंदिर के पास पहुॅच गई। उसके पहले ही मैने साक्षी दीदी तथा अमर को कार से उतार दिया था। ऐसा इस लिए कि हम तीनों का एक साथ रहना ठीक नहीं था। उससे हम एक साथ एक ही जगह पर फॅस सकते थे। इस लिए मैने साक्षी दीदी व अमर को मंदिर से लगभग पचास मीटर पहले ही उतार दिया था और खुद कार लेकर मंदिर की तरफ बढ़ चला था। मुंबई से जब मैं चला था तो उमाकांत अंकल ने मुझे तीन कवच दिये थे जो कि बुलेट प्रूफ थे। इस वक्त हम तीनो ने ही अपने कपड़ों के अंदर उस बुलेटप्रूफ कवच को पहना हुआ था। ये उमाकांत अंकल की दूरदर्शिता का ही कमाल था कि उन्होंने हम लोगों की सुरक्षा का ऐसा इंतजाम किया था।

माधोपुर गॉव में लगभग पचास या साठ के आस पास मकान बने हुए थे। देवी मॉ का ये प्राचीन मंदिर गॉव के बाहर बना हुआ था। मंदिर से लगभग पचास या साठ मीटर के फासले से ही गॉव की आबादी शुरू होती थी। कहने का मतलब ये कि हमारी इस मुठभेड़ में गॉव के लोगों पर कोई आॅच नहीं आ सकती थी। ये हमारे लिए सबसे अच्छी बात थी। आस पास का इलाका दूर दूर हरे भरे तथा ऊॅचे ऊॅचे पेड़ पौधों से सुशोभित था। ये सभी गॉव चारो तरफ के पहाड़ों से घिरे हुए थे। एक नहर थी जो कि माधोपुर और सोनपुर के बीच से निकलती थी। चिमनी की तरफ जाते जाते ये नहर दो भागों में बॅट जाती थी। जिसका एक भाग चिमनी की तरफ तथा दूसरा भाग एक अन्य गॉव गुमटी की तरफ जाती थी किन्तु गुमटी के बाहरी इलाके की तरफ से। नहर के होने का सबसे बड़ा फायदा ये था कि यहॉ के सभी गॉवों में पानी का अभाव नहीं था। सभी गॉवों में खेतों की सिंचाई के लिए इसी नहर के पानी का उपयोग होता था। जिसका नतीजा ये होता था कि आस पास के सभी गॉवों में फसल की पैदावार अच्छी खासी होती थी।

मंदिर के नज़दीक ही मंदिर के पिछले हिस्से की तरफ मैने कार को रोंक दिया था। मैने देख लिया था कि मंदिर के सामने की तरफ एक ऐसी जीप खड़ी थी जिसके ऊपर छत नहीं थी। वो जीप यकीनन वही थी जिसमें मानुषी व श्रुति आई हुई थीं। चारो तरफ इस समय ख़ामोशी तो थी किन्तु मैं जानता था कि ये ख़ामोशी कुछ ही समय की मेहमान थी यहॉ पर। ख़ैर, मैने देवी मॉ को प्रणाम किया और फिर धड़कते हुए दिल के साथ मंदिर के सामने की तरफ आहिस्ता आहिस्ता बढ़ने लगा।हलॉकि मैं पूरी तरह सतर्क था तथा किसी भी खतरे से निपटने के लिए पूरी तरह से तैयार था।

आस पास का बहुत ही बारीकी से जायजा लेते हुए मैं मंदिर की दीवार से सट कर चलते हुए मंदिर के सामने वाले भाग की तरफ बढ़ रहा था। ये मेरे जीवन का पहला अवसर था जबकि मैं इस तरह की सिचुएशन को फेस करने वाला था और आने वाले समय की सिचुएशन को भी। थोड़ी ही देर बाद मुझे अपनी जगह पर रुक जाना पड़ा। क्योंकि मैने देखा कि मंदिर के सामने

किन्तु कुछ ही दूरी पर वो जीप खड़ी थी तथा उस जीप के पास ही वो दो हट्टे कट्टे आदमी भी खड़े थे जिन्हें बड़ी माँ ने मानुषी व श्रुति की सुरक्षा के रूप में भेजा था। वो दोनो आपस में बातें तो कर रहे थे किन्तु उनके हाव भाव से नज़र आ रहा था कि वो किसी भी खतरे से निपटने के लिए भी तैयार थे। यानी कि उन्हें बताया गया था कि ऐसा कुछ होगा।

मैं जानता था कि मेरे पास ज्यादा समय नहीं है क्योंकि अभी कुछ ही समय में यहाँ पर आदमियों की फौज भी नज़र आने लगेगी। ये भी संभव था कि आ ही गई हो। हलाँकि मैने आस पास बहुत बारीकी से देख चुका था किन्तु मुझे ऐसा कुछ नज़र नहीं आया था जिससे पता चले कि यहाँ पर कोई और भी है।

मैने अपने पैन्ट के पीछे बेल्ट पर फँसे रिवाल्वर को निकाला। उसके बाद मैने अपनी जैकेट से एक ऐसी चीज़ निकाली जिसे साइलेंसर कहा जाता है। मैने उस साइलेंसर को रिवाल्वर की नाल पर फिट किया। मैं चाहता था कि जो काम छुप कर हो जाए उसे अंजाम दे देना चाहिए। हलाँकि ये तो तय था कि खुल कर मुकाबला करना ही पड़ेगा। मगर मेरी सोच थी कि दुश्मन को मौका ही क्यों दिया जाए?

रिवाल्वर की नाल पर साइलेंसर फिट करने के बाद मैने उन दोनो की तरफ देखते हुए अपने रिवाल्वर वाले हाथ को हवा में उठाया और फिर एक आदमी की गर्दन पर निशाना साध कर ट्रिगर दबा दिया। परिणाम स्वरूप हल्की सी पिट् की आवाज़ हुई और एक अजीब सी चीज़ पलक झपकते ही उनमें से एक आदमी की गर्दन पर जा लगी। मैने इतने पर ही बस नहीं किया बल्कि उसी पल रिवाल्वर का रुख मोड़ कर फिर से ट्रिगर दबा दिया था। दो पल के अंदर ही वो दोनो आदमी लहराते हुए जीप के पास ही कच्ची ज़मीन पर भरभरा कर गिरे और शान्त पड़ गए। उन दोनो की गर्दन से कोई खून नहीं बह रहा था बल्कि एक एक सुई चुभी हुई थी। आप समझ सकते हैं कि वो सुई क्या हो सकती थी। मेरा इरादा उन्हें जान से मारने का हर्गिज़ भी नहीं था बल्कि सिर्फ बेहोश करना था। इस लिए वो दोनो अब सुई के प्रभाव से कम से कम दो से तीन घंटे के लिए बेहोश हो चुके थे।

मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि आते ही मुझे इस तरह सहजता से पहले पड़ाव पर ही कामयाबी मिल जाएगी। मगर सबूत चूँकि सामने ही ज़मीन पर बेहोश पड़े थे इस लिए यकीन करना ही था। उन दोनो के बेहोश ओ जाने के बाद मैने एक बार पुनः आस पास का बारीकी से जायजा लिया और फिर मंदिर के सामने की तरफ बढ़ चला किन्तौ सावधानी से ही। अभी मैं बढ़ ही रहा था कि तभी मंदिर के अंदर से घंटे के बजने की दो बार आवाज़ आई। मैं समझ गया कि मानुषी व श्रुति दीदी मंदिर के अंदर हैं।

मैं आस पास देखते हुए तेज़ी से आगे बढ़ा और मंदिर के जस्ट बगल पर ही सीढ़ियों के पास आ गया। एक बार पुनः आस पास का जायजा लिया और फिर मैने पैन्ट की जेब में हाथ डाला तो चौंक पड़ा। मैं मोबाइल कार में ही भूल आया था। इस वक्त मैं मानुषी को मैसेज कर बोलना चाहता था कि वो दोनो मंदिर के बाहर आ जाएॅ और जल्दी से मेरे साथ चलें यहाँ से। मगर मेरा मोबाइल कार में ही रह गया था। ख़ैर, मैने सोचा चलो कोई बात नहीं मंदिर के अंदर

जाकर देवी मॉ के दर्शन भी तो करना चाहिए।

मैं तेज़ी से सीढ़ियॉ चढ़ते हुए मंदिर के मुख्य दरवाजे पर पहुॅचा तो देखा कि मंदिर के अंदर मानुषी व श्रुति दोनो ही देवी मॉ की मूर्ति के सामने अपने दोनो हाथ जोड़े खड़ी थी। ये देख कर मैं मुस्कुराया और फिर तुरंत ही मंदिर के दरवाजे की चौखट को छूकर पहले प्रणाम किया और फिर चौखट को पार गया।

अंदर आते ही मैने मानुषी व श्रुति दीदी के पीछे ही खड़े होकर तथा अपने दोनों हाथ जोड़ते हुए देवी मॉ को असीम श्रद्धा से प्रणाम किया। मगर अगले ही पल मेरे मुख से घुटी घुटी सी चीख़ निकल गई साथ ही मैं पीछे की तरफ लहराते हुए चौखट के बाहर आकर पीठ के बल ज़मीन पर गिरा। मेरी ऑखों के सामने कुछ पल के लिए अंधेरा सा छा गया। मेरी नॉक से खून बहने लगा था तथा मेरे मुख के बाएॅ साइड की तरफ होंठों से भी खून बहने लगा था। किसी ने बड़ी ज़ोर से मुझ पर वार किया था।

अभी मैं अपने होशो हवाश में आते हुए ज़मीन से उठ ही रहा था कि तभी मेरे पेट में फिर से बड़े ज़ोर का प्रहार हुआ। जिसके प्रभाव से मैं किसी फुटबाल की तरह हवा में उड़ता हुआ सीधा सीढ़ियों के नीचे आ कर गिरा। इन कुछ ही पलों ये सब इतना तेज़ी से हुआ था कि मुझे कुछ समझने का मौका ही नहीं मिल पाया था। सीढ़ियों के ऊपरी भाग से सीधा नीचे कच्ची ज़मीन पर गिरने से एक बार फिर से मैं बुरी तरह दर्द से बिलबिला उठा था। किन्तु अब तक मैं समझ गया था कि ये एक जाल था जिसमें मैं फॅसाया गया था।

कच्ची ज़मीन से मैं उछल कर खड़ा हो गया और सीढ़ियों के ऊपर की तरफ देखा ही था कि पीछे से किसी ने मेरी पीठ पर ज़बरदस्त वार किया। मैं इसके लिए बिलकुल भी तैयार नहीं था और ना ही मुझे इसकी उम्मीद थी। अतः इस बार मुह के बल उसी कच्ची ज़मीन पर गिरा। मुझे एकाएक ही भारी खतरे का आभास हुआ और मैने अपनी संपूर्ण ताकत लगाते हुए फिर से उछल कर खड़ा हुआ। अभी मैं खड़ा ही हुआ था कि पलक झपकते ही मुझे नीचे भी झुक जाना पड़ा वरना पीछे की तरफ से जिसने वार किया था उसकी फ्लाइंग किक सीधा मेरी गर्दन पर पड़ती और यकीनन मेरी गर्दन की हड्डी टूट जाती।

मैने झुकने के साथ ही अपनी एक टॉग को बिजली की सी तेज़ी से चलाया था, नतीजा ये हुआ कि फ्लाइंग किक मारने वाले का जो अकेला पैर ज़मीन पर टिका था वो ज़मीन से उखड़ गया और वो भरभरा कर ज़मीन पर गिरा। मैं ये देख कर आश्चर्य चकित रह गया कि ये तो वही आदमी था जिसे अभी थोड़ी ही देर पहले मैंने सुई के द्वारा बेहोश किया था। मुझे समझ न आया कि ये बेहोशी से होशो हवाश में कैसे आ गया। मैने पलट कर दूसरे आदमी की तरफ देखा तो वो भी एक तरफ पोजीशन लिए खड़ा मुस्कुरा रहा था। ये देख कर मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न रही। साला ये दोनो चीज़ क्या थे कि इन पर उस बेहोश करने वाली सुई का भी असर नहीं हुआ?

सच तो ये था कि मैं कुछ भी नहीं समझ पा रहा था। एक तो इन दोनो पर सुई का असर न हुआ दूसरे मंदिर के अंदर से मुझे इस तरह बाहर लगभग फैंक दिया गया। सबसकुछ इतनी तेज़ी से हुआ कि मुझे कुछ समझ ही नहीं आया था। किन्तु अब मैं समझ चुका था कि ये सब क्या था। मतलब साफ था कि बड़ी माँ के द्वारा भेजा गया बैकअप यहाँ पहुँच चुका था और उसके कुछ आदमी मंदिर के अंदर छुपे मेरे आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। मैं जैसे ही मंदिर के अंदर गया और देवी माँ को प्रणाम करने लगा वैसे ही उन लोगों ने मुझ पर वार कर दिया था। इधर जिन्हें मैं बेहोश समझ रहा था वो होश में होते हुए मेरे इस तरह नीचे आ जाने का इंतज़ार कर रहे थे। उसके बाद जैसे ही मैं नीचे गिरा वैसे ही इन दोनो ने भी मुझ पर हमला कर दिया। कहने का मतलब ये कि कहीं से भी मुझे सम्हलने का या सोचने का मौका ही नहीं मिल पाया था।

अभी मैं ये सब सोच ही रहा था कि सहसा मुझे साक्षी दीदी व अमर का ख़याल आया। मुझे उन दोनो की बेहद चिंता होने लगी। कहीं वो दोनो भी न फँस गए हों। मैने मन ही मन देवी माँ से कहा___"ये सब क्या है माँ? इन लोगों ने मुझे आपको ठीक से प्रणाम भी नहीं करने दिया और आपने भी इन्हें रोंका नहीं? ऐसी तो उम्मीद नहीं मुझे? ख़ैर कोई बात नहीं, मुझे अपना आशीर्वाद दीजिए कि मैं इन सबका मुकाबला कर सकूँ और अपने सभी चाहने वालों को यहाँ से सुरक्षित ले जा सकूँ।"

" कैसी लगी बच्चे ?" तभी मेरे कानों में ऊपर सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए एक हट्टे कट्टे आदमी की आवाज़ पड़ी , वो मुस्कुराते हुए कह रहा था __" ज्यादा चोंट तो नहीं आई न तुम्हें ? वैसे मैं हैरान हूँ कि तुम जैसे मामूली से लड़के के लिए हमारे बॉस इतना ज्यादा परेशान थे। सचमुच यकीन नहीं होता कि तुम जैसा पिद्दी सा लड़का हमारे बॉस की नींदें हराम किये हुए था। जबकि तुम्हें तो जब चाहे चीटियों की तरह मसला जा सकता था। बट डोन्ट वरी , जो पहले नहीं हुआ वो अब हो जाएगा। "

" कहते हैं ऊँट जब तक पहाड़ के नीचे नहीं आता। " मैने मुस्कुराते हुए कहा __" तब तक उसे यही लगता है कि वो इस संसार में सबसे ऊँचा है और उसकी बराबरी कोई कर ही नहीं सकता। वही हाल तुम्हारा है भाड़े के कुत्ते। अपने बॉस लोगों के सामने कुत्तों की तरह दुम हिलाने वाले कुत्तो इस भरम में न रहो कि तुम लोगों ने मुझे इस तरह फँसा कर कोई तीर मार लिया है। बल्कि खेल तो अब शुरू होगा। "

" काफी कड़वी ज़बान है तेरी लड़के। " सीढ़ियों से नीचे उतर आए उस आदमी ने सहसा दाँत पीसते हुए गुस्से से कहा ___" अगर बॉस ने मना न किया होता तो यहीं पर तुझे चीटी की तरह मसल कर तेरी जीवन लीला समाप्त कर देता। "

" अगर एक ही मर्द की औलाद है। " मैने भी तैश में आकर कहा __" तो अकेले मुझसे मुकाबला कर , फिर देखना कि चींटी की तरह कौन मसला जाता है ?"

" ओहो ऐसा क्या ?" वो आदमी ब्यंगात्मक भाव से आँखों को फैलाते हुए बोला __" चल ठीक है , तेरी ये इच्छा तो पूरी करनी ही चाहिए। " ये कहने के साथ ही उसने अपने बाकी

साथियों की तरफ देखते हुए कहा __" तुम में से कोई भी इस लड़के को हाथ नहीं लगाएगा। ये मुझे दिखाना चाहता है कि चींटी की तरह हम दोनो में से कौन मसला जाता है। अतः अब मुकाबला सिर्फ हम दोनों के बीच ही होगा। "

उसके सभी साथियों सहमति में सिर हिला दिया। सबके होठों पर जानदार मुस्कान थी। जैसे उन्हें मेरी मूर्खता पर हॅसी आ रही हो। हलॉकि मुझे भी पता था ये समय इस तरह के मुकाबले का बिलकुल भी नहीं है, मगर तैश में आकर मेरी ज़बान से निकल ही गया था। अतः अब बात ज़बान की थी तथा अपने स्वाभिमान की। समय ऐसा था कि अपनी जगह रुकने वाला नहीं था। हर पल के बीतने के साथ इस बात की भी संभावना बढ़ती जा रही थी कि जो यहॉ नहीं पहुॅचे हैं वो किसी भी वक्त पहुॅच सकते हैं और फिर हालात और भी विकट हो जाएॅगे।

इधर बाकी सब आदमियों की सहमति मिलते ही मैने पोजीशन ले ली। जबकि छिसके साथ मेरा मुकाबला होने जा रहा था उसने झटके से अपने जिस्म के ऊपरी हिस्से के कपड़े निकाल कर अपने एक आदमी की तरफ उछाल दिया। सहसा मेरी नज़र ऊपर मंदिर के दरवाजे के बाहर खड़ी मानुषी व श्रुति पर पड़ी। वो दोनो ही दोनो तरफ से एक एक आदमी से घिरी हुई खड़ी थीं। उनके चेहरों पर इस वक्त डरे सहमे से भाव कायम थे। मैं उन दोनो की तरफ देख कर अजीब तरह से मुस्कुराया और फिर अपने प्रतिद्वंदी की तरफ देखने लगा।

मैने देखा कि उसके जिस्म से कपड़ा हटते ही उसका हट्टा कट्टा जिस्म नुमायॉ हो उठा। कोई आम इंसान उसकी इतनी खतरनाक बॉडी देख कर ही डर जाए। उससे लड़ने का ख़याल तो वो आने वाले सात जन्मों में भी न करे। ख़ैर उसने अपने दोनो हाथो को अगल बगल उसे ऊपर उठा कर मुझे अपने डोले दिखाए। जैसे कह रहा हो कि देख बच्चे जितने मेरे ये डोले हैं उतने में तो तेरे जिस्म का कोई हिस्सा भी फिट नहीं बैठता। ये देख कर मैं मुस्कुराया और फिर अपने दोनो हाथो के इशारे से उसे अपनी तरफ मुकाबले के लिए बुलाया।

मेरे ऐसा करने पर उसके चेहरे के भाव एकदम से बदले और वो पलक झपकते ही गुस्से में डूबा दिखाई देने लगा। कदाचित अपने डोले दिखा कर वो मुझे डराना चाहता था मगर जब मैं उसे डरा हुआ नज़र नहीं आया तो उसे गुस्सा आ गया था।

" अपने भगवान को याद कर ले बच्चे। " फिर उसने मेरी तरफ खतरनाक भाव से बढ़ते हुए कहा __" उनसे दुवा कर कि तेरे जिस्म की हड्डियॉ सलामत रहें। "

" ये डॉयालग मैं भी बोल सकता हूॅ तुम्हारे लिए। " मैने मुस्कुरा कर कहा __" पर ये सोच कर नहीं बोला कि फालतू की डींगें मारना मेरी फितरत नहीं है। "

मेरी ये बात सुन कर वो जैसे बुरी तरह तिलमिला गया था। मुझे पता था कि उसके सामने मैं कुछ भी नहीं हूॅ। अगर मैं एक बार भी उसके फौलादी शिकंजे में फॅस गया तो फिर शायद भगवान ही मालिक होगा मेरा। मगर मुझे खुद पर और अपने गुरू की सिखाई हुई कला पर पूर्ण विश्वास था।

वो पूरे वेग से मेरी तरफ बढ़ा और अपने दाहिने हाथ को भी उसी वेग से मुझ पर चलाया था। मैं फुर्ती से नीचे झुका मगर झुकते ही मेरे हलक से चीख निकल गई। कारण उसने हाथ चलाने के बाद ही अपने दाहिने पैर को उठाकर उसका घुटना भी चला दिया था जो सीधा मेरे झुके हुए चेहरे से टकराया था। मैं उछलते हुए सीधा हुआ ही था कि उसने बिजली की सी फुर्ती से घूम कर मेरे सीने पर फ्लाइंग किक जमा दी। नतीजा ये हुआ कि मेरे हलक से ज़ोर की हिचकी निकली और मैं पीछे की तरफ हवा में लहराते हुए ही नीचे कच्ची ज़मीन पर चारो खाने चित्त जा गिरा। गिरते ही मेरी ऑखों के सामने अनगिनत तारे नॉच गए। कुछ पल के लिए तो ऑखों के सामने अंधेरा भी छा गया। प्रहार इतना ज़बरदस्त था कि मुझसे तुरंत उठा न गया। सीने में बड़ी असहनीय पीड़ा महसूस हुई मुझे। मेरे कानो में मानुषी व श्रुति की चीखें भी टकराई। कदाचित मुझे इस तरह गिरते देख वो बेहर डर गई थी और मुझे कुछ हो जाने की आशंका से वो बुरी तरह चीखी थीं।

सहसा मेरी नज़र मेरे नज़दीक ही पहॅुच चुके उस आदमी पर पड़ी। मेरे क़रीब पहॅुचते ही उसने अपने पैर को उठाया और ज़मीन पर चित्त गिरे मेरे पेट की तरफ तीब्र वेग से चलाया। मैं बिजली की सी फुर्ती से कई पलटा खाते हुए दूसरी तरफ हो गया तथा साथ ही उछल कर खड़ा भी हो गया। ये अलग बात है इस तरह उछल कर खड़े होने से अचानक ही मुझे अपने सीने पर पीड़ा का एहसास हुआ। मैं समझ चुका था कि अगर ये आदमी इसी तरह मुझ पर और दो चार प्रहार करने में सफल हो गया तो यकीनन मेरा काम तमाम हो जाना है। अतः अब मैं उससे पूरी तरह सतर्कता से मुकाबला करने के लिए तैयार हो गया।

८७

मंत्री रजतकुमार रस्तोगी इस वक्त रामगंज में ही एक ऐसी जगह पर था जहॉ पर उसके ही किसी खास जान पहचान वाले के मॉल का उद्घाटन समारोह था। मॉल का मालिक या यूँ कहिए कि मंत्री के उस जान पहचान वाले खास आदमी का नाम पुरुषोत्तम बंसल था। जो मुख्य रूप से आगरा का रहने वाला था। बहुत पहले ही उसकी मुलाक़ात मंत्री से हुई थी। कहते हैं कि जो जैसा होता है उसे वैसा मिल ही जाता है फिर चाहे वो दुनियॉ के किसी भी कोने में चला जाए।

पुरुषोत्तम बंसल और मंत्री के बीच क्या मंत्रणा हुई थी इस बारे में तो ख़ैर वो दोनो ही बता सकते थे किन्तु मंत्री के कैरेक्टर के हिसाब से सोचने पर पता चलता था कि पुरुषोत्तम बंसल भी मंत्री के ही जैसे कैरेक्टर का आदमी था। इसका खुलासा तब हुआ जब मंत्री ने पुरुषोत्तम को अपने यहॉ कारोबार के रूप में एक बड़ा सा मॉल स्थापित करने का प्रस्ताव दिया था। मंत्री के ही सहयोग से तथा उसके ही निर्देशन पर रामगंज में अच्छी खासी ज़मीन पर ग़ैर कानूनी रूप से कब्जा कर उस स्थान पर बहुत ही कम समय में एक बड़ा सा मॉल बन कर तैयार हो गया था जिसका उद्घाटन आज खुद मंत्री के द्वारा हुआ था।

मंत्री के निर्देशन में बना ये मॉल सबकी नज़र में मॉल ही था जहॉ पर हर तरह का उपयोगी सामान लोगों को ख़रीदने पर मिल जाता मगर कोई नहीं जानता था इसी मॉल के बेसमेन्ट में दरअसल मंत्री व पुरुषोत्तम बंसल ग़ैर कानूनी धंधे को अंजाम देने की बुनियाद भी रख चुके थे।

मॉल का उद्घाटन तथा वहॉ पर कुछ ज़रूरी मीटिंग करने के बाद मंत्री मॉल से बाहर आकर अपने सुरक्षा कर्मियों से घिरा अपनी कार के पास पहुँचा ही था कि सहसा उसकी कोट की जेब में मौजूद मोबाइल बज उठा। एक हाथ से मोबाइल को निकालने के साथ ही मंत्री अपनी कार की पिछली सीट पर बैठ गया। उसके बाद उसने बज रहे मोबाइल की स्क्रीन की तरफ देखा। उसके बैठते ही उसके साथ आगे पीछे उसके सुरक्षा गार्ड भी बैठ गए। इसके बाद कार आगे बढ़ चली।

" हॉ कहो जॉर्ज। " मोबाइल की स्क्रीन पर डिटेक्टिव जॉर्ज का नाम देख कर मंत्री ने फौरन ही काल को रिसीव कर मोबाइल को कान से लगाने के साथ ही कहा __" क्या बात है ? कहीं ऐसा तो नहीं कि तुमने उस सारे काम को कर लिया है जिस काम को करने के लिए हमने तुम्हें लगाया था ? अगर ऐसा है तो भाई मान गए तुम्हें। इतने कम समय में तो दुनियॉ का कोई भी जासूस काम को अंजाम नहीं दे सकता। अभी कल ही तो लगे थे तुम काम में। "

" आप ग़लत समझ रहे हैं रस्तोगी साहब। " उधर से जॉर्ज का स्वर उभरा __" जिस काम के लिए आपने मुझे लगाया है वो काम भला इतना जल्दी कैसे हो जाएगा ?"

" ओह ऐसा क्या। " मंत्री ने बुरा सा मुह बनाया __" हम तो मियॉ खांमखां ही तुम्हें जेम्स

बाण्ड का बाप नहीं बल्कि दादा समझ बैठे थे। ख़ैर , ये बताओ कि अगर काम नहीं हुआ है तो तुमने हमें फोन किस बात के लिए किया है ?"

" दरअसल मैने। " उधर से जॉर्ज ने कहा __" बहुत ही ज़रूरी बात बताने के लिए आपको फोन किया है। "

" अरे तो मियॉ। " मंत्री तपाक से बोला __" बात क्यों बढ़ा रहे हो ? ज़रूरी बात तो तुमें अति शीघ्र बताना चाहिए न। ख़ैर जल्दी बताओ कौन सी ज़रूरी बात है ?"

" कल आपके यहॉ से जाने के बाद। " उधर से जॉर्ज कह रहा था __" मैने सत्यम सिंह का पता किया और उसके पीछे लग गया। मैं देखना चाहता था कि उसने जो कुछ आपसे कहा था उसमें कितनी सच्चाई थी तथा वो आपके प्रति कितना वफ़ादार है ?"

" ओह। " मंत्री के कान खड़े हो गए __" तो क्या देखा और क्या जाना तुमने ?"

" कल तो उसने कुछ खास नहीं किया था। " जॉर्ज ने कहा __" किन्तु आज सुबह नौ या दस बजे के क़रीब वह अपनी कार में किसी आदमी को लिए रामगंज के रेलवे स्टेशन आया था। स्टेशन से बाहर वो अकेला निकला था। मतलब कि उसके साथ जो दूसरा आदमी था उसे वो शायद रेलवे स्टेशन छोंड़ने आया था। स्टेशन के बाहर जब वह आया तो उसी समय उसके मोबाइल पर किसी का काल आया तथा उसने किसी से कुछ देर तक बातें की। बात करने के बाद ही एकदम से उसके हाव भाव बदले से नज़र आए जिसके तहत वो अपनी कार में बैठ कर फौरन स्टेशन से बंदूख से छूटी गोली की तरह हवा हो गया। मैं उसके पीछे ही था कि अचानक कुछ देर बाद उसके पास तीन अलग अलग जीपों में ढेर सारे आदमी हथियारों से लैस आए। उनमें से एक आदमी सत्यम सिंह की कार में बैठ गया। उसके बाद सत्यम सिंह की कार के चलते ही बाकी तीनों जीपों में सवार आदमी भी सत्यम सिंह के पीछे पीछे चल पड़े। "

" अब बस भी करो मियॉ। " सहसा मंत्री जॉर्ज की बात बीच में ही काटते हुए किन्तु परेशान भाव से कह उठा __" तुम तो इस तरह शुरू हो गए जैसे कोई टेप रिकार्डर शुरू हो जाता है। मुख्य बात बताओ कि मामला क्या हुआ है बस। "

" मुख्य बात ये है कि। " उधर से जॉर्ज ने कहा __" इस वक्त जहॉ पर मैं हूँ वहॉ पर एक से बढ़ कर एक धुरंधर लोगों की पूरी फौज आई हुई है। इतना ही नहीं यहॉ पर एक मंदिर है जिसके सामने कई सारे हट्टे कट्टे लोग खड़े हैं। एक हट्टा कट्टा आदमी एक मामूली से लड़के से ज़बरदस्त लड़ाई कर रहा है। सत्यम सिंह तथा उसके साथ आए सब लोग लड़ाई देख रहे हैं। मैने तो सत्यम सिंह को ये भी कहते सुना है कि इस हराम के पिल्ले को इतना मारो कि हगने मूतने के भी काबिल न बचे। मंदिर के पास ही दो लड़कियॉ दो आदमियों से घिरी खड़ी हैं तथा बुरी तरह रोये जा रही हैं। उनके मुख से बार बार एक ही बात निकल रही है कि प्लीज उसे कुछ मत करो। इसका मतलब ये हुआ रस्तोगी साहब कि ये वही लड़का है जिसका नाम विक्रम है। सत्यम सिंह ने कदाचित उसे घेर लिया है और अब वह उसके आदमियों के रहमो

करम पर है। "

" ओह तो ये बात है। " मंत्री के जिस्म में जाने क्या सोच कर झुरझुरी सी हुई , बोलाा __" चलो अच्छा ही हुआ कि वो साला ठाकुर की पकड़ में आ गया है। अब सब कुछ सही हो जाएगा जॉर्ज। "

" यकीनन। " उधर से जॉर्ज ने कहाा __" आपका दुश्मन सत्यम सिंह की पकड़ में आ चुका है। अब आप अगर चाहें तो इस मौके का फायदा उठा सकते हैं। यानी आप भी यहॉ आ जाइये और बहती गंगा में डुबकी लगा कर अपना काम भी कर लीजिए। "

" अब हमें वहॉ आने की ज़रूरत नहीं है जॉर्ज। " मंत्री ने कहाा __" वो लड़का तो अब सत्यम सिंह की पकड़ में आ ही गया है। अतः सत्यम सिंह अपने वादे के अनुसार उसे हमारे हवाले भी कर देगा। उसके बाद तो उसे हमारी हर चीज़ लौटानी ही पड़ेगी। फिर हम उसका क्या हस्र करेंगे इसके बारे में उसने सोचा भी न होगा। "

" तो फिर मेरे लिए क्या आदेश है रस्तोगाी साहब ?" उधर से जॉर्ज ने कहाा __" मुझे नहीं लगता कि अब इसके बाद भी मेरा कोई काम है यहॉ। यानी आपका दुश्मन ठाकुर सत्यम सिंह से देर सवेर आपको मिल ही जाएगा और फिर आप उससे जैसे चाहेंगे वैसे अपने वो वीडियोज तथा अपने बच्चे वापस ले सकेंगे। "

" ठीक कह रहे हो तुम जॉर्ज। " मंत्री ने कहाा __" अगर यही आलम है वहॉ का तो फिर अब रह ही क्या गया है तुम्हारे कुछ करने के लिए ? इस लिए अगर तुम चाहो तो वापस आ सकते हो या फिर ऐसा करो कि अभी फिलहाल तुम वहीं पर रहो और देखते रहो कि नतीजा क्या निकलता हैै ? जैसा कि इस सबके बारे में ठाकुर ने हमें सूचना तक नहीं दी है इस लिए संभव है कि उसके मन में हमारे प्रति कोई खोट हो। इस लिए तुम ठाकुर की कार्यवाही के बारे में अंत तक देखते रहो। अगर ठाकुर इसके बाद भी हमें उस सबके बारे में नहीं बताता है तो हम उसे भी देख लेंगे। तुम ये ज़रूर देखना कि ठाकुर उस लड़के को तथा अपनी बेटी को कहॉ कैद करके रखता हैै ?"

" ठीक है रस्तोगाी साहब। " उधर से जॉर्ज के ऐसा कहने के साथ ही मंत्री ने काल कट कर दी। जॉर्ज से बात करने के बाद मंत्री इस सबके बारे में सोचने लगा। उसे उम्मीद तो थी कि ठाकुर उससे गद्दारी नहीं करेगा किन्तु उसे इस बात का भी एहसास था कि ठाकुर साला जब अपनों का ही नहीं हुआ तो भला उसका क्या होगाा ?

साक्षी और अमर इस वक्त दो अलग अलग पेड़ों पर चढ़े हुए थे। जहॉ से उन दोनों को मंदिर के सामने का नज़ारा स्पष्ट दिख रहा था। विक्रम के साथ क्या क्या हुआ था ये उन दोनो ने अपनी ऑखों से देखा था। दोनो ही विक्रम के लिए बेहद चिंतित व परेशान थे। उन दोनो को उम्मीद नहीं थी कि अचानक ही ऐसा कुछ हो सकता है।

विक्रम को इस तरह मार खाते देख अमर तुरंत पेड़ की शाखा से नीचे कूदने ही वाला था कि साक्षी ने उसे रुकने का इशारा किया था। उसे उसने समझाया था कि उसके जाने से भी इस वक्त कुछ नहीं हो सकता था। उल्टा वो खुद भी विक्रम की तरह पकड़ में आ सकता है। अमर को साक्षी से ये उम्मीद नहीं थी किन्तु फिर उसे भी लगा कि साक्षी सही कह रही है। इस वक्त वहॉ पर जाना खतरे से खाली नहीं था। संभव था विक्रम उसकी वजह से कमज़ोर ही पड़ जाता।

दोनो के पास अब कोई दूसरा चारा नहीं था। हलॉकि साक्षी के मन में कुछ और ही चल रहा था। उसके चेहरे के भाव बता रहे थे कि वो इस सिचुएशन पर ज्यादा गंभीर नहीं हुई है। कदाचित उसे बस समय का इंतज़ार था।

अमर की नज़र सहसा अनुप के मौसा यानी केशव की तरफ पड़ी। केशव जी के साथ तीन जीपों में आदमी थे जिनके हाथो में बंदूख, लट्ठ तथा हॉकी जैसे हथियार नज़र आ रहे थे। जिन पेड़ों पर ये दोनो चढ़े हुए थे उन्हीं पेड़ों के बीच से होते हुए केशव और उसके आदमियों की जीपें गुज़री थीं। ये देख कर अमर ने साक्षी की तरफ देखा। साक्षी ने भी अमर की तरफ देखा मगर उसने कोई रिएक्शन नहीं दिया। पता नहीं क्या चल रहा था उसके मन में??

इधर मेरी तरफ।

मैं समझ गया था कि मेरा प्रतिद्वंदी ताकत के मामले में मुझसे कहीं ज्यादा है। अतः अब ताकत के साथ साथ दिमाग़ से भी काम लेना ज़रूरी था। उधर वो आदमी मेरी तरफ इस तरह देख देख कर मुस्कुरा रहा था जैसे वो मुझे सचमुच में चींटी ही समझ रहा हो और जब चाहे मुझे मसल कर रख दे किन्तु अभी वो मुझे जैसे खिला रहा था।

" क्यों बच्चे दर्द तो नहीं हो रहा न ?" उस आदमी ने ब्यंगात्मक लहजे में मुस्कुरा कर कहा __" वैसे अभी तो मैने तुम पर ताकत से कोई वार ही नहीं किया है। वरना तुम इस तरह सही सलामत खड़े न रहते बल्कि अपने हाथ पैर की हड्डियॉ तुड़वाए ज़मीन पर पड़े रहते। "

" मैं भी अभी तक सिर्फ देख ही रहा था कि। " मैने कहा __" भाड़े के कुत्तों में कितना दम होता है ?"

" अच्छा। " वह तिलमिलाया तो ज़रूर मगर फिर भी मुस्कुरा कर ही बोला __" तो क्या देखा और क्या समझ आया तुझे ?"

" यही कि। " मैने मुस्कुरा कर कहा __" कुत्ते तो कुत्ते ही होते हैं वो कभी शेर का शिकार नहीं कर सकते। "

" यू बास्टर्ड। " वो बुरी तरह क्रोध में आते हुए मेरी तरफ बढ़ा और गुस्से में आग बबूला होते हुए मुझ पर हमला कर दिया।

मैं तो अब पूरी तरह से सतर्क हो चुका था और उसके किसी भी हमले के लिए पूरी तरह से तैयार था। जैसे ही उसने मेरी नॉक में अपने दाहिने हाथ का पंच मारा मैं फुर्ती से एक तरफ हुआ और बिजली की सी स्पीड से पलट कर उसकी तरफ पीठ करते हुए उसके उस हाथ को दोनो हाथो से पकड़ कर अपने दाहिने कंधे पर रखा और फिर पूरी ताकत से नीचे की तरफ ज़ोर का झटका दिया। परिणामस्वरूप कड़कड़ की आवाज़ के साथ ही उसका हाथ बीच से टूट गया। हाथ के टूटते ही वह हलाल होते बकरे की तरह चिल्लाया। जबकि मैंने इतने पर ही बस नहीं किया बल्कि फुर्ती से घूम कर उसके पीछे आया और इससे पहले कि वो कुछ समझ पाता मैने फुर्ती से उसके सिर को दोनो हाथो से पकड़ा और ज़ोर से बॉई तरफ को झटक दिया। नतीजा ये हुआ कि एक बार पुनः फिज़ा में कड़कड़ की आवाज़ हुई और उसकी गर्दन एक तरफ को झूल गई, साथ ही वह लहराते हुए ज़मीन पर गिरा और शान्त पड़ गया। उसे देख कर अब कोई भी कह सकता था कि वो मर चुका है।

आस पास खड़े उसके सभी हट्टे कट्टे आदमी ये नज़ारा देख कर आश्चर्यचकित रह गए। किसी को भी इस सब पर यकीन न आया कि ये दो पल में अचानक क्या हो गया है? अपनी अपनी जगह पर खड़े सबके सब बुत से बन गए थे। ऊपर मंदिर के दरवाजे के जस्ट सामने ही दोनो तरफ से एक एक आदमी से घिरी मानुषी व श्रुति दीदी भी ये सब देख कर हक्का बक्का रह गई थी।

" ओये मारो रे इस हरामज़ादे को। " सहसा फिज़ा में छा चुके सन्नाटे को एक आदमी ने ज़ोर से चिल्लाते हुए भंग किया , बोला __" इसने अब्दुल को जान से मार दिया। इस साले की हड्डी पसली तोड़ डालो सब। "

उस आदमी की इस बात से सब जैसे होशो हवाश में आए और फिर चारो तरफ से मेरी तरफ दौड़ पड़े। मैं जानता था कि सबके सब साले सांड हैं। इस वक्त गुस्से में ये सब सचमुच मेरी हड्डियॉ तोड़ सकते थे। अभी वो सब मेरे नज़दीक पहुॅचे भी नहीं थे कि तभी बहुत सारे आदमी हाथो में बंदूख, लट्ठ व हॉकी जैसे हथियार लिए चारो तरफ से उन सब आदमियों पर टूट पड़े। मैं समझ गया कि ये सब केशव जी के आदमी हैं। ये देख कर मैने राहत की सास ली।

केशव जी के वो आदमी बिना कुछ सोचे समझे तथा बिना कुछ बोले एकदम से टूट पड़े थे उन हट्टे कट्टे आदमियों पर। नतीजा ये हुआ कि वो सब जिन जिन के निशाने पर आए वो सब देखते ही देखते लहू लुहान नज़र आने लगे। मंदिर के बाहर इतने सारे आदमी और उनके शोर से वातावरण गूॅज उठा। अभी ये सब हंगामा मचा ही हुआ था कि तभी अलग अलग दिशाओं से एक बार पुनः वैसे ही हट्टे कट्टे आदमी निकल कर आए और केशव जी के उन आदमियों पर पिल पड़े। हलॉकि उन सबके हाथ खाली थे किन्तु जल्द ही उनके हाथो में भी हथियार नज़र आने लगे। उन लोगों ने केशव जी के आदमियों से उनके ही हथियार छीन कर उन पर प्रहार करना शुरू कर दिया था।

केशव जी के जिन आदमियों के पास बंदूखें थी वो गोलियॉ बरसाए जा रहे थे। जिसका नतीजा ये हो रहा था कि जिन पर भी गोली लगती वो सीधा यमलोक ही पहुॅच रहा था। इधर मैं आस पास देख रहा था कि अमर व साक्षी दीदी कहॉ हैं? मैं हैरान था कि वो दोनो अभी तक आए क्यों नहीं? मैं खुद भी इस मुठभेड़ में किसी न किसी से लड़े जा रहा था।

" सबके सब अपनी अपनी जगह रुक जाओ। " सहसा इस आवाज़ की गर्जना को सुन कर मैं चौंक गया। पलट कर देखा तो ऊपर जहॉ पर मानुषी व श्रुति दीदी खड़ी थी उनके पास ही बड़े पापा यानी सत्यम सिंह खड़े थे। उनके हाथ में रिवाल्वर थी जिसे वो श्रुति की कनपटी पर लगाए खड़े थे। उन आदमियों का पता ही नहीं था जो इसके पहले मानुषी व श्रुति दीदी को कवर किये खड़े थे। शायद सबके आते ही वो भी लड़ाई में शामिल हो गए थे।

सत्यम सिंह की ज़ोरदार आवाज़ को सुन कर सबके सब जहॉ के तहॉ रुक गए। उन सब के रुकते ही सत्यम सिंह के साथ आए जावेद खान के सभी आदमियों ने केशव तथा उनके आदमियों को गन प्वाइंट पर ले लिया। सब कुछ एकदम से बदल गया। अभी कुछ ही देर पहले तो हालात हमारे हक़ नज़र आए थे किन्तु अब बाज़ी फिर से पलट गई थी।

" तुम लोगों ने बहुत तमाशा कर लिया है। " शान्त पड़ गए माहौल में सत्यम सिंह की आवाज़ गूॅजी __" अब ज़रा मेरी बात कान खोल कर सुनो सबके सब। अगर मेरे आदमियों के अलावा कोई दूसरा आदमी अपनी जगह से हिला तो समझ लो वो अपनी मौत का जिम्मेदार खुद होगा। "

सत्यम सिंह की इस बात से कोई कुछ न बोला। कुछ देर की ख़ामोशी के बाद सहसा सत्यम सिंह ने मेरी तरफ देखा और फिर मुस्कुरा कर कहा__"तो आख़िर तुम मेरी पकड़ में आ ही गए भतीजे? बहुत सताया तुमने और बहुत ज्यादा तड़पाया भी मुझे। मगर कोई बात नहीं, मैं उस सबका ब्याज सहित हिसाब ले ही लूँगा। मगर उससे पहले मैं ज़रा अपनी बेटियों से तो मिल लूँ।"

कहने के साथ ही सत्यम सिंह ने एक हाथ बढ़ा कर मानुषी को उसके सिर के बालों से पकड़ कर ज़ोर से अपनी तरफ खींचा। मानुषी के हलक से दर्द में डूबी चीख़ निकल गई। हलाँकि उसकी व श्रुति दीदी दोनो की ही हालत बहुत ख़राब हो चुकी थी। उनके चेहरों पर मौत जैसा ख़ौफ़ मानो ताण्डव सा कर रहा था।

" क्यों बिटिया रानी। " सत्यम सिंह ने दाँत पीसते हुए मानुषी के चेहरे के पास अपना चेहरा लाते हुए कहा __" तुम्हारे इस बाप के लिंग में ऐसी क्या कमी नज़र आ गई थी जो तुम दोनो बहनों ने अपने इस भाई के लिंग को थाम लिया ?"

" सत्यम सिंह। " मैं पूरी शक्ति से चिल्लाया __" ज़ुबान संभाल कर बात कर। ये मत भूल कि जिससे तू इस घिनौने तरीके से बात कर रहा है वो खुद तेरी ही बेटी है। मेरे दिलो दिमाग़ में तेरे लिए जो इज्ज़त बाकी थी उसे भी आज तूने ये घिनौनी बात बोल कर खत्म कर ली है। यकीनन तू इस संसार का सबसे गंदा और सबसे पापी इंसान है , बल्कि इंसान ही नहीं है तू , राक्षस है राक्षस। "

" मैं चाहूँ तो इसी वक्त तेरी इस कड़वी ज़ुबान को तेरे हलक से निकाल कर चील कौवों को खिला दूँ। " मेरी बातों से तिलमिलाया हुआ सत्यम सिंह गुर्राया __" मगर जैसा कि मैने कहा न कि पहले मैं अपनी बिटियों से मिल लूँ , उसके बाद तुझसे भी अच्छे से मिलूँगा। "

" आप सच में बहुत गंदे हैं डैड। " मानुषी ने बुरी तरह रोते हुए कहा __" काश ये सब सच न होता। अच्छा होता कि इस सबके बारे में मुझे पता ही न चलता। साक्षी दीदी ने बहुत अच्छा किया था जो उन्होंने आप जैसे गंदे व पापी माँ बाप को ठुकरा दिया है और अभी जिस तरीके से आपने मुझे वो शब्द कहे हैं उससे आपने बता दिया कि आपके मन में अपनी ही बहू बेटियों के प्रति क्या है ?"

" इन सब बातों का अब कोई मतलब नहीं रह गया है बिटिया रानी। " सत्यम सिंह ने अजीब भाव से कहा __" ये सच है कि मैंने हमेशा अपने ही घर की औरतों व बेटियों को अपने नीचे सुलाने की ख्वाहिश की है। मगर इसमें बुरा क्या किया है मैने ? हर इंसान को अपनी इच्छा पूरी करने का हक़ होता है। मैने भी अपनी इच्छाओं को पूरा ही तो करना चाहा है। ख़ैर छोंड़ , ये बता कि तुझे यहीं पर नंगा करू या हवेली ले जाकर आराम से तुझे लड़की से औरत बनाऊँ ?"

" तू कुत्ते की मौत मरेगा सत्यम सिंह। " मैं पूरी शक्ति से दहाड़ते हुए बोला __" तेरे जिस्म

में कीड़े पड़ेंगे। तू सड़ सड़ कर मरेगा। तू वासना और हवस में इतना अंधा हो चुका है कि तुझे रिश्ते नाते भी नज़र नहीं आ रहे हैं। "

" कुत्ते की मौत तो मैं तुझे मारूँगा भतीजे। " सत्यम सिंह ने कहा __" लेकिन उससे पहले मैं तेरी माँ रेणुका , तेरी बहन निशा , व तेरी चाची अपर्णा इन तीनो को जी भर के तेरे ही सामने पेलूँगा , वो भी आगे पीछे दोनो तरफ से। उसके बाद उन सबको रंडी बज़ार में बेंचूँगा भी , तब तुझे मारूँगा। "

" अपने जैसे ही हिजड़ों की फौज ले कर आया है। " मैने कहा __" और इन्हीं हिजड़ों की फौज के बलबूते पर तू इतना कुछ बोल पा रहा है। तुझमें अगर दम है तो मुझसे खुद मुकाबला कर। "

" इसे मारो रे। " सत्यम सिंह ज़ोर से चिल्लाया __" इस हराम के पिल्ले को इतना मारो कि हगने मूतने के भी काबिल न बचे। बहुत देर से ये हरामज़ादा बड़ बड़ किये जा रहा है। पहले इसकी ही हड्डियॉ तोड़ो। "

सत्यम सिंह के कहने की देर थी। चारो तरफ से वही हट्टे कट्टे आदमी मेरी तरफ बढ़ते हुए आ गए। वो चार थे और मैं अकेला। मैं सत्यम सिंह की उन अश्लीलतापूर्ण बातों से बुरी तरह क्रोध व गुस्से से भन्ना उठा था। जैसे ही एक मेरी तरफ झपटा मैने बिजली की तरह फुर्ती दिखाई और उछल कर एक ज़बरदस्त फ्लाइंग किक उसकी गर्दन पर जड़ दी। उसके मुख से घुटी घुटी सी चीख निकली साथ ही कड़कड़ की आवाज़ भी हुई। ज़मीन पर औंधे मुह जब वह गिरा तो फिर उठ न सका।

ये देख कर मानुषी को उसके बालों से पकड़े सत्यम सिंह हक्का बक्का रह गया। कदाचित उसे मुझसे ऐसे किसी चमत्कार की स्वप्न में भी उम्मीद नहीं थी। वो ऑखें फाड़े मुझे देखने लगा था। इधर उस आदमी के गिर कर शान्त पड़ते ही बाकी तीन थोड़ी देर के लिए ठिठके और फिर एक साथ मेरी तरफ झपटे। मैंने अपनी जगह से ऊँची छलांग लगाई तथा हवा में ही कलाबाज़ी खाते हुए उन तीनों के बीच से बाहर उनके पीछे आ खड़ा हुआ। जबकि वो तीनों ही झोंक में आकर आपस में ही टकरा गए।

" रुक जा सुअर की औलाद। " तभी सत्यम सिंह चिल्लाया __" वरना मेरे एक ही इशारे पर मेरे साथ आए मेरे ये सब हथियारों से लैश आदमी तुझे पल भर में गोलियों से भून कर छलनी कर देंगे। "

" तू मुझे गोलियों से छलनी नहीं कर सकता कुत्ते। " मैने कहने के साथ ही अपनी टॉग चला दी एक की पीठ पर। जिसकी पीठ पर लात का प्रहार पड़ा था वो अपने साथ दूसरे को साथ लिए ही ज़मीन पर गिर गया , जबकि तीसरा अभी पलटा ही था कि मैने पैर के घुटने का वार उसके पेट में किया तो वो बिलबिला उठा। साथ ही बोलता भी जा रहा था ज़ोर से ___" तेरे लिए तो मैं एक तुरुप के इक्के की तरह हूँ न। मुझे बंधक बना कर ही तो तू बाकी सबको

मुंबई से यहॉ बुलाएगा। अगर मैं ही मर गया तो तू कैसे बुला सकेगा उन सबको ?"

" ज्यादा बकवास न कर समझा। " सत्यम सिंह पहले तो सकपकाया , फिर चिल्लाया __" मैं कहता हूँ ये उछलना कूदना बंद कर वरना मैं मानुषी को यहीं पर नंगा कर दूँगा। "

" नहींऽऽऽ। " अपने बाप की ये बात सुन कर मानुषी तो बुरी तरह रोते हुए चीखी ही उसके साथ में श्रुति भी चीख पड़ी थी। इधर सत्यम सिंह का वाक्य जैसे ही मेरे कानों से टकराया मैं एकदम से रुक गया। मैं जानता था कि सत्यम सिंह ये ज़रूर कर सकता था। उसे इस वक्त अपनी व अपनी बेटी की इज्ज़त की कोई परवाह नहीं थी।

" तुम मेरी इज्ज़त की परवाह मत करो विक्रम। " सहसा मानुषी रोते हुए चिल्लाई __" वैसे भी मुझे इस नीच आदमी की ऐसी बेहूदा बातें अपने लिए सुन कर जीने की इच्छा मर गई है। इस लिए तुम मेरी चिन्ता मत करो और इन सारे राक्षसों का वध कर दो। "

" ओहो क्या बात है। " सत्यम सिंह चमका __" देखो तो क्या इज्ज़त दी है मेरी बिटिया रानी ने मुझे। ख़ैर कोई बात नहीं , पर हॉ मरना तो है ही तुझे और तुझे ही बस क्यों बल्कि तेरी बड़ी बहन को भी मरना होगा। मुझे ऐसी औलाद के जीने मरने से अब कोई फर्क़ नहीं पड़ेगा जो अपने ही मॉ बाप के मौत का सामान करती फिरे। बचपन से अब तक मैंने तुम दोनो को हर चीज़ दी है। जिस चीज़ पर तुम दोनो ने हाथ रखा उस चीज़ को मैने तुम दोनो के नाम कर दी। मगर बदले में दिया क्या तुम दोनो ने ?? अरे देने की तो बात दूर बल्कि मेरे दुश्मन का साथ देकर मेरी मौत चाही तुम दोनो ने। अरे मॉ बाप जैसे भी हों मॉ बाप ही होते हैं। ख़ैर जाने दो , मुझे इस बात का दुख नहीं है कि इस लड़के ने मेरा इतना ज्यादा नुकसान करके मेरा जीना हराम किया है बल्कि इस बात का दुख है कि मेरी अपनी बेटियॉ मुझे और अपनी मॉ तथा भाई को त्याग कर इसका साथ दिया। इस लिए इसकी सज़ा तो मिलेगी तुम दोनो को। मगर उससे पहले तुम दोनो के साथ मैं वो करू गा जो दुनियॉ में किसी भी बाप ने न किया होगा। "

" तुझ जैसे इंसान से और किसी बात की उम्मीद भी क्या की जा सकती है। " मानुषी ने सहसा ज़हरीले भाव से कहा __" जो अपनी ही औलाद को अपने नीचे सुलाना चाहता हो उसके जैसा नीच व पापी दूसरा कौन होगा ? उस दिन सोचते सोचते मेरा बुरा हाल हो गया था कि आख़िर ऐसा क्या हो गया है जिसकी वजह से दीदी ने अपने ही मॉ बाप को त्याग दिया है , मगर उस रात जब मैने अपने कानों से सब कुछ सुना तो मेरे पैरों तले से ज़मीन खिसक गई। इतना बड़ा धोखा , इतना बड़ा कुकर्म किया तूने जिसके बारे में अगर किसी को पता चल जाए तो तुझ पर थूँकना तक पसंद न करे। "

" हरामज़ादी कुतिया। " सत्यम सिंह बुरी तरह तमतमा गया , और फिर दो तीन थप्पड़ जल्दी जल्दी मानुषी के गालों पर जड़ दिया उसने। ये देख कर श्रुति उसे पकड़ने के लिए आगे बढ़ी तो सहसा वहीं पर आ गए जावेद खान ने उसे गन प्वाइंट पर रख लिया। इधर मानुषी के गालों पर थप्पड़ पड़ते ही मेरा खून भी खौल गया।

" लड़की पर क्या हाथ उठाता है नीच इंसान ?" मैने दहाड़ते हुए कहा __" असली मर्द है तो इधर आ और मुझसे दो दो हाथ कर। कसम पैदा करने वाले की तेरे जिस्म की एक एक हड्डियों को न तोड़ा तो अपने बाप ठाकुर शिवम सिंह की औलाद नहीं। "

" तेरी गर्मी का इलाज अब करना ही पड़ेगा। " सत्यम सिंह पलट कर गुर्राया , फिर उन्हीं हट्टे कट्टे आदमियों की तरफ देखते हुए कहा __" खड़े क्या हो तुम लोग ? इस साले को इतना मारो कि इसकी सारी हेकड़ी निकल जाए। "

बस फिर क्या था? उन तीनों ने मुझे धोना शुरू कर दिया। मैं कुछ करने की हालत में नहीं था। अगर कुछ करता तो सत्यम सिंह फिर से मानुषी के साथ कुछ उल्टा सीधा करने लगता। अभी मैं मार खा ही रहा था कि सहसा मेरे अलावा किसी और की भी चीख गूँजी वहाँ। मैने सिर उठा कर देखा तो चौंक गया। अमर एक आदमी को बुरी तरह मारे जा रहा था। अमर के अचानक ही इस तरह आ जाने से बाकी खड़े सब भौचक्के से रह गए।

" तुम यहाँ क्यों आ गए अमर ?" मैंने सहसा हताश भाव से कहा __" तुम्हें यहाँ नहीं आना चाहिए था। "

" ज्यादा बकवास मत करो समझे। " अमर ने तीखे भाव से कहा __" मैं कायर नहीं हूँ जो इतनी देर से चुपचाप तुम्हें इस तरह मार खाते देखता रहता। बहुत देर से साक्षी के कहने पर रुका हुआ था मगर अब और नहीं रुक सकता था मेरे यार। तेरा साथ भी न दिया तो साला धिक्कार है मुझ पर। "

मैं अब क्या कहता उसे। उधर अमर के आ जाने से सत्यम सिंह भी चौंका था। उसे नहीं पता था कि अमर कौन है, किन्तु इतना तो वो समझ ही गया था कि अमर कदाचित मेरा ही साथी है। अतः उसने शीघ्र ही ऊँची आवाज़ में मुझसे कहा__"अपने साथी को बोल भतीजे कि ज्यादा उछल कूद न करे। अगर यहाँ पर ये तेरी तरह मार खाने ही आया है तो चुपचाप अब ये भी मार खाए।"

" तुझे तो मैं कुत्ते की तरह मारूँगा हरामज़ादे। " अमर चीखा __" इतनी देर से देख रहा हूँ कि तू भाड़े के इन टट्टुओं की वजह से ही शेर बना हुआ है , जबकि खुद तुझमें कितनी मर्दानगी है वो तो तू भी जानता ही होगा साले। कितनी बार मेरे दोस्त ने तुझे लड़ने के लिए ललकारा मगर तू इससे लड़ने नहीं आया। मतलब साफ है कि तू इससे डरता है और खुद भी जानता है कि तू अपने भतीजे से टक्कर नहीं ले सकता। हाहाहाहा विक्रम यार , तेरा ये ताऊ तो कायर और डरपोंक निकला। "

" ठाकुर साहब। " सहसा जावेद खान बोल पड़ा __" आप कहें तो एक ही झटके में इस आदमी का काम तमाम कर दूँ। इसकी हिम्मत कैसे हुई आपसे ऐसे बात करने की ?"

" कोई बात नहीं खान। " सत्यम सिंह बोला __" इसे भी खुजली हो रखी है। इस लिए इसकी भी धुनाई शुरू करवा दो। कुछ देर में ही हमसे रहम की भीख माँगने लगेगा। "

" ठीक है ठाकुर साहब। " जावेद खान ने कहा और फिर अपने आदमियों को हुक्म दिया।

कुछ ही देर में हम दोनो की धुनाई शुरू हो गई। ये देख कर मानुषी व श्रुति दीदी बुरी तरह रोये जा रही थी और साथ ही सत्यम सिंह से हमें ना मारने के लिए कहे भी जा रही थी। मगर उनके कहने का सत्यम सिंह पर कोई असर न हुआ।

अभी ये सब हो ही रहा था कि एकाएक ही संपूर्ण वातावरण में पुलिस सायरन की आवाज़ें आने लगी। इन आवाज़ों को सुन कर सत्यम सिंह व जावेद खान बुरी तरह चौंक पड़े। उन्हें समझ न आया कि यहॉ पुलिस कैसे आ गई? देखते ही देखते मंदिर के चारो तरफ से ढेर सारे पुलिस वालों का हुजूम उमड़ पड़ा।

" तुम सबको पुलिस ने चारो तरफ से घेर लिया है। " सहसा तभी माइक पर किसी की आवाज़ गूॅजी __" इस लिए सब अपने अपने हथियार नीचे रख कर अपने आपको पुलिस के हवाले कर दो। वरना हमें तुम सब पर गोलियॉ चलाने में भी कोई हिचकिचाहट नहीं होगी। "

" ठाकुर साहब। " सहसा बुरी तरह घबराया हुआ जावेद खान कह उठा __" ये पुलिस वाले यहॉ कैसे आ गए ? अब हम सब पुलिस के द्वारा पकड़ लिए जाएॅगे। कुछ कीजिए ठाकुर साहब। आप तो जानते हैं कि पुलिस को मेरी और मेरे आदमियों को बड़ी शिद्दत से तलाश है। मैं और मेरे साथी पुलिस के हाथ नहीं लगना चाहते। खुदा के लिए कुछ कीजिए। "

" मुझे पता है कि। " सत्यम सिंह ने सोचने वाले भाव से कहा __" इन पुलिस वालों को यहॉ किसने बुलाया है ? हॉ खान , ये सब साक्षी का किया धरा है। उसी कुतिया ने इन पुलिस वालों को बुलाया है। इतनी देर से देख रहा हूॅ वो हरामज़ादी कहीं दिखाई नहीं दे रही है। ज़रूर पुलिस वालों के साथ ही होगी। "

" किसी का भी किया धरा हो ठाकुर साहब। " जावेद खान ने कहा __" मामला तो बिगड़ ही गया है अब। मगर समझदार आदमी वही है जो ऐसे समय पर भी खुद को बचा ले और अपने दुश्मन को मात दे दे। "

" सही कहा तुमने खान। " सत्यम सिंह ने कहा ___" मुझे ऐसा ही कुछ करना होगा। अरे हॉ एक काम करता हूॅ। इन दोनो को यहॉ से अपने साथ ले चलते हैं। वो साला इन्हीं दोनो को लेने आया था न। अब जब इन्हें नहीं ले जा पाएगा तो यकीनन ये उसकी ज़बरदस्त हार होगी। अब वो इन दोनो के लिए मेरे पास सिर के बल आएगा। "

" बिलकुल सही कहा आपने। " जावेद खान ने कहा _" किन्तु अब हमें देर नहीं करनी चाहिए। यहॉ से इन दोनो को लेकर बड़ी होशियारी से खिसक लेना चाहिए। "

" ठीक है। " सत्यम सिंह ने कहा __" चलो इन दोनो को एक एक करके उठा कर ले चलते हैं। इससे पहले कि पुलिस हम तक पहुॅचे हम पीछे के इस वाले हिस्से से निकल लेते हैं। मुख्य

रास्ते की तरफ जाना यकीनन खतरे से खाली नहीं होगा। मेरी कार इसी वाले हिस्से की तरफ है। अच्छा हुआ कि कार ज्यादा पीछे की तरफ उस मुख्य रास्ते की तरफ नहीं खड़ी की थी मैने। "

सत्यम सिंह की बातें सुन कर मानुषी व श्रुति दीदी बुरी तरह घबरा गई और उनके चंगुल से छूटने के लिए छटपटाने लगी थी। मगर कदाचित सत्यम सिंह को उनसे इसी बात की उम्मीद थी। यही वजह थी कि उसने मजबूती से उन्हें पकड़ा हुआ था। किन्तु अब उसकी बात से जावेद ने भी श्रुति दीदी को पकड़ लिया। यानी एक एक को ले कर मंदिर के बगल से सीढ़ियॉ उतरने लगे वो दोनो।

मानुषी व श्रुति जब खुद को उनके चंगुल से न छुड़ा पाई तो पूरी शक्ति से चिल्लाने लगीं। इधर पुलिस के आ जाने से मैं और अमर पहले तो हैरान हुए उसके बाद तुरंत ही बात समझ में आ गई कि ये सब साक्षी दीदी का लास्ट बैकअप प्लान था जिसके बारे में उन्होंने सस्पेंस बनाया हुआ था उस समय। ख़ैर पुलिस वालों ने सबको घेर लिया। इधर मानुषी व श्रुति दीदी के चिल्लाने से मेरा और अमर का ध्यान उस तरफ गया तो देखा सत्यम सिंह व जावेद खान ज़बरदस्ती उन दोनो को अपने साथ लिए सीढ़ियॉ उतरते चले जा रहे थे।

मैंने अमर की तरफ देखा और फिर हम दोनो ही उनकी तरफ तेज़ी से दौड़ पड़े। अभी हम सीढ़ियों के पास भी न पहुँचे थे कि सहसा वातावरण में गोली चलने की आवाज़ आई और साथ ही चीख़ की भी। हम दोनो ये देख कर चौंके कि श्रुति दीदी को साथ लिए उतर रहा जावेद खान का अचानक ही बैलेंस बिगड़ा और उसके हाथ से श्रुति का हाथ छूट गया, साथ ही वह सीढ़ियों पर लुढ़कता हुआ नीचे चला गया। उसके हाथ से उसका रिवाल्वर छूट कर जाने कहॉ गिर कर गुम सा हो गया था। उसके बाएॅ पैर की टॉग से खून बहता हुआ नज़र आया।

गोली की आवाज़ और जावेद खान को यूॅ लुढ़कते देख सत्यम सिंह बुरी तरह उछल पड़ा। भौचक्का सा पहले तो उसने जावेद खान को लुढ़कते हुए देखता रहा उसके बाद जैसे उसे होश आया तो फौरन ही इधर उधर नज़र घुमाई उसने। किन्तु तब तक देर हो चुकी थी। उसी वक्त सीढ़ियों के बगल से ही साक्षी दीदी मानो प्रगट सी हुई और तेज़ी से अपने बाप के पैर को पकड़ कर झटक दिया। जिसका नतीजा ये हुआ कि बुरी तरह घबरा कर चीखते हुए सत्यम सिंह भरभरा कर सीढ़ियों पर पिछवाड़े के बल गिर पड़ा। किन्तु उसके साथ ही मानुषी भी गिर पड़ी थी। क्योंकि सत्यम सिंह ने उसका हाथ उस वक्त तक छोंड़ा ही नहीं था। छोंड़ा भी तो तब जब उसके साथ ही साथ मानुषी भी अनबैलेंस होकर गिर पड़ी थी। मानुषी के मुख से दर्द में डूबी कराह निकल गई।

ये सब हो ही रहा था कि हम दोनो भी उनके पास पहुॅच गए। अमर ने तो आते ही जावेद खान को धर लिया। जबकि मैने सीढ़ियों पर गिरने के बाद उठ रहे सत्यम सिंह को उसके कालर से पकड़ कर उठाया और बिना कुछ बोले पैर के घुटने का वार उसके पेट पर जड़ दिया। सत्यम सिंह दर्द से चीख पड़ा।

" रुक जाओ विक्रम। " सहसा मेरे क़रीब पहुँचते ही साक्षी दीदी ने कहा ___" ये इंसान यकीनन सिर्फ और सिर्फ तुम्हारा ही शिकार है मगर , उससे पहले मुझे इस नीच व पापी इंसान से दो चार बातें तो कर लेने दो। "

दीदी की बात सुन कर मैने सत्यम सिंह को छोंड़ दिया। सत्यम सिंह इस वक्त अजीब सी हालत में था। ऐसी हालत में कि उसका वर्णन करना भी कठिन था। इधर मेरे एक तरफ हटते ही साक्षी दीदी अपने बाप के सामने आ कर खड़ी हो गई।

" सुना है कि मॉ बाप से बढ़ कर। " फिर साक्षी दीदी ने बड़े ही गंभीर भाव से कहा __" संपूर्ण सृष्टि में कोई नहीं होता। यहॉ तक कि भगवान भी नहीं। इसी लिए मॉ बाप को श्रेष्ठ व महान कहा जाता है। मगर मॉ बाप भी ऐसे ही महान नहीं बन जाते हैं बल्कि अच्छे कर्मों से महान बनते हैं। तुम मानुषी से कह रहे थे कि तुमने हमें सब कुछ दिया है बदले में हमने क्या दिया ? इसका जवाब ये है कि हर मॉ बाप अपने बच्चों के लिए बहुत कुछ करते हैं , यहॉ तक कि ज़रूरत पड़ने पर अपना बलिदान भी दे देते हैं। मगर बच्चे सच में उनके लिए कुछ नहीं कर पाते ऐसा। मगर हम ऐसे नहीं थे , हमने बचपन से लेकर अब तक आप दोनो को दुनिया का सबसे अच्छा माता पिता माना मगर जब सच का पता चला तो रूह कॉप गई हमारी। दुनियॉ में ऐसे कौन माता पिता हैं जो अपनी ही बेटियों को अपने नीचे सुलाने के बारे में सोचते हैं ? मुझे अपनी सिर्फ एक अच्छाई के बारे में बता दो सत्यम सिंह जो कि तुमने अपने आज तक के जीवन में की हो। अगर तुमने अपनी एक भी अच्छाई के बारे में बता दिया तो इसी वक्त तुम्हारी ये बेटी अपने मॉ बाप के पास वापस लौट आएगी। "

साक्षी दीदी की इस बात पर सत्यम सिंह कुछ बोल न सका। किन्तु हॉ कठोर भाव से देख ज़रूर रहा था। जबकि उसकी इस कठोरता से देखने की ज़रा भी परवाह न करते हुए कहा दीदी ने कहा__"तुम वो इंसान हो सत्यम सिंह जिसने एक हॅसते खेलते, भरे पूरे व खुशहाल परिवार का बेड़ा गर्क कर दिया। इतना तो मैने भी अपनी ऑखों से देखा था कि शिवम चाचा कभी भी तुमसे ऑखें मिला कर बात नहीं करते थे। हम इतने भी अबोध व अज्ञानी नहीं थे कि हमें कुछ समझ न आए। सच्चाई का पता चलने के बाद ही सही मगर मुझे पिछली वो सब बातें याद आईं जो मेरे सामने होती थीं। तब उनके बारे में नहीं सोचती थी क्योंकि तब तुम्हारी सिखाई हुई बातें मुझे उनके बारे में सोचने की भी ज़रूरत महसूस नहीं कराती थी। मगर अब सब कुछ खुली किताब की तरह हो गया है। तुमने धन दौल त के लालच में तथा रेणुका चाची को हासिल करने के जुनून में अपने देवता जैसे भाई को ज़हरीले सर्प से डसवा कर मौत के घाट उतार दिया। उसके बाद झूठ मूठ कर आरोप लगा कर मेरी देवी समान चाची को चरित्रहीन बना दिया। इतना ही नहीं एक रात तुम दोनों की बातों को जब दादा जी ने सुन लिया और वो जब गुस्से से तुम्हारे कमरे में आ धमके और तुम्हें खरी खोटी सुनाने लगे तो तुमने उन्हें भी जान से मार देने की धमकी दी। ये भी कहा कि अगर उन्होंने किसी के सामने ज्यादा गला फाड़ने की कोशिश की तो तुम उनकी छोटी बेटी यानी कि गीता बुआ को उठवा लोगे। दादा जी उस वक्त ये सोच कर डर गए कि तुम वाकई में ऐसा कर सकते हो। जो अपने भाई का न हुआ वो भला किसका हो जाएगा? दादी जी रोते हुए अपने कमरे में चले गए। उन्होंने दादी से तुम्हारा सारा काला चिट्ठा बताया जिसे सुन कर बेचारी दादी का भी बुरा हाल हो गया। दूसरे दिन सुंदर चाचा स्कूल पढ़ाने गए हुए थे, उस समय दादा दादी तैयार होकर

शिवम चाचा की दी हुई कार से जब कहीं जाने लगे तो तुमने पूछा कि वो कहॉ जा रहे हैं तब उन्होंने एक बार फिर से गुस्सा होते हुए साफ साफ तुमसे कहा कि वो पुलिस स्टेशन जा रहे हैं। ताकि तुम्हारी रिपोर्ट कर सकें। दादा जी की बात सुन कर तुम्हारी हवा निकल गई। तुम फौरन ही मॉम के पास गए और मॉम को सारी बात बताई तब मॉम ने कहा कि इससे बचने का एक ही तरीका है कि दादा दादी को खत्म कर दिया जाए। तुम्हारे पास इसके अलावा कोई दूसरा चारा भी नहीं था। इस लिए फौरन ही अपनी कार लेकर निकल लिये। रास्ते में ही तुमने अपने इसी जावेद खान नाम के साथी को फोन लगाया और इसे दादा दादी को जान से मार देने की सुपारी दी। इसने फौरन ही तुम्हारी बात मान कर रास्ते में ही ट्रक द्वारा दादा जी की कार को टक्कर मार दी। ट्रक की ज़ोरदार टक्कर से दादा जी की कार सड़क पर ही दो तीन पलटियॉ खाईं। ये देख क र ये खान फौरन ही वहॉ से ट्रक लेकर फरार हो गया। सुनसान सड़क पर उलटी पड़ी कार के अंदर दादा दादी खून से लथपथ बेहोश पड़े थे। तभी कोई वाहन वाला उसी रास्ते से आया और उसने जब वो सब देखा तो उसने इसकी सूचना पुलिस को दी। पुलिस वहॉ पहुॅची और कार के अंदर खून से लथपथ पड़े दादा दादी को चेक किया तो वो दोनो ही ज़िंदा थे उस वक्त। अतः फौरन ही उन्हें बेहतर इलाज़ के लिए रामगंज ले गए। तहकीक़ात में ही पता चला कि जिनका एक्सीडेंट हुआ था वो दरअसल सोनपुर के ठाकुर देवेंद्र सिंह भाटी तथा उनकी धर्मपत्नी सावित्री सिंह भाटी हैं। इस बात का पता चलते ही तुम्हें सूचित किया पुलिस ने। तुम ये जान कर बुरी तरह घबरा गए कि दादा दादी तो ज़िंदा हैं अभी और वो पुलिस को सब कुछ बता भी देंगे। अतः तुम फौरन ही रामगंज के लिए हवेली से रवाना हो गए। ख़ैर दादा दादी के सिर पर बड़ी गंभीर चोंटें आई थी जिसकी वजह से वो दोनो ही कोमा में चले गए। डाक्टर अब भला क्या कर सकता था। उसने साफ कह दिया था कि अब तो बस समय का ही इन्तज़ार करें कि कब वो दोनो कोमा से बाहर आते हैं। डाक्टर की बात सुन कर तुमने फिलहाल के लिए तो राहत महसूस की मगर तुम भी जानते थे कि कोमा एक ऐसी चीज़ होती है जिसमें गया इंसान कभी भी होश में आ सकता है। यानी तुम्हें डर था कि दादा दादी अगर कोमा से बाहर आ गए तो तुम्हारे लिए अच्छा नहीं होगा। अतः तुमने फिर से मॉम के परामर्श किया और फिर दादा दादी को बेहतर इलाज़ का कह कर एक ऐसी जगह ले गए जहॉ के बारे में ज्यादा किसी को पता ही नहीं था। ख़ैर छोंड़ो ये सब, तुम्हारे जुर्म की दास्तान तो बहुत लम्बी है मगर मैंने तुमसे ये सब इस लिए कहा है कि तुम जान सको कि मुझे सब कुछ पता है। तुमने इतने अपराध व पाप किये हैं कि इसके लिए शायद भगवान भी माफ़ नहीं करेगा और करना भी नहीं चाहिए।"

साक्षी दीदी की बात सुन कर सत्यम सिंह का मुह लटक गया इस बार। उसके चेहरे पर शर्म व अपमान के भाव एकाएक ही उभर आए थे। तभी इस बीच मानुषी आई और साक्षी के गले लग कर सिसक सिसक कर रोने लगी। श्रुति दीदी भी सिसक रही थी। उधर अमर ने जावेद खान को मार मार कर अधमरा कर दिया था। उसमें अब हिलने तक की शक्ति नहीं बची थी। तभी दो पुलिस वाले आए और जावेद खान को उठा कर ले गए।

जावेद खान के जितने भी आदमी थे तथा सोनिया ने जो आदमी भेजे थे उन सबको पुलिस ने पकड़ लिया था। ये सारी पुलिस फोर्स रामगंज में नये नये आए एसीपी रमाकांत शुक्ला के द्वारा लाई गई थी। सबको पकड़ने के बाद एसीपी रमाकांत शुक्ला चल कर सत्यम सिंह के पास आया।

" अब आपके भी ससुराल चलने का वक्त हो चुका है ठाकुर साहब। " एसीपी ने मुस्कुराते हुए कहा __" उम्मीद करता हूँ कि ससुराल में आप खुद को बेहतर महसूस करेंगे। "

" नये नये आए लगते हो ऑफिसर। " सत्यम सिंह ने उसकी तरफ तिरछी नज़र से देखते हुए कहा __" इस लिए इतना अकड़ रहे हो। मगर ज्यादा खुशफहमी में मत रहना कि तुम मुझे सुसराल में ज्यादा देर तक रख पाओगे। "

" जानता हूँ। " एसीपी पुनः मुस्कुराया __" मगर फिलहाल तो मेरे साथ चलना ही पड़ेगा आपको। बाद का बाद में देखा जाएगा। वैसे भी हम तो यहाँ जावेद खान जैसे वान्टेड मुजरिम को ही पकड़ने आए थे। हमें सूचना मिली थी कि यहाँ पर वो मुज़रिम अपने पूरे दलबल के साथ मौजूद है। इस लिए आ धमके यहाँ। मगर हमें क्या पता था कि उसके साथ साथ मुझे आप जैसी कमीनी शख्सियत को भी धर लेना पड़ेगा। "

" तमीज़ से बात करो ऑफिसर। " सत्यम सिंह बुरी तरह तिलमिलाते हुए तीखे भाव से बोला __" वरना ऐसा न हो कि इस बददमीजी के लिए तुम्हें बाद में पछताना पड़े। "

" रस्सी जल गई मगर कसबल बाकी हैं अभी। " एसीपी ने कठोर भाव से कहा __" वैसे तुम्हारी जानकारी के लिए बता दूँ कि मैं किसी के बाप से भी नहीं डरता। इस लिए मुझ पर धौंस जमाने की सोचना भी मत। वरना मेरे हाथ में आया हुआ मुजरिम मुख से कम बल्कि पिछवाड़े से ज्यादा चिल्लाता है। अब इज्ज़त से चलो मेरे साथ वरना ले जाने के तरीके तो हम पुलिस वालों को बड़े शानदार भी आते हैं। "

एसीपी के गरम होते मिजाज़ को देख कर सत्यम सिंह अंदर ही अंदर अपमान का कड़वा घूँट पी कर रह गया। फिर उसने आग उगलती ऑखों से पहले मुझे देखा फिर साक्षी दीदी को उसके बाद एसीपी रमाकांत शुक्ला के साथ चल दिया। कुछ दूर जाने के बाद सहसा सत्यम सिंह रुका और फिर पलट कर बोला__"अभी तो मैं जा रहा हूँ मगर जल्द ही लौटूँगा और इस बार जब लौटूँगा न तो तुम में से किसी को भी ज़िंदा नहीं छोंड़ूँगा।"

सत्यम सिंह की ये बात सुन कर मैं, अमर, साक्षी दीदी व श्रुति दीदी ने तो कुछ न कहा किन्तु मानुषी को जाने क्या हुआ कि वो तेज़ी से अपने बाप के पास गई और इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता "चटाऽऽक"। सत्यम सिंह का दाहिना गाल झन्ना गया।

" ये तमाचा मामूली भले ही है। " फिर मानुषी ने गुर्राते हुए कहा __" मगर ये तुम्हें इस बात की याद ज़रूर दिलाएगा कि तूने क्या पाप किया है जिसके तहत ये इनाम के रूप में मिला है तुझे तेरी ही बेटी से। अब जा यहाँ से , मुझे तेरी शक्ल भी देखना अब गवाँरा नहीं है। "

सत्यम सिंह से इतना कहने के बाद रोती हुई मानुषी हमारे पास आ गई जबकि अपनी ही बेटी से ऐसा इनाम पा कर सत्यम सिंह मानो गर्त में डूबता चला गया। वह फिर रुका नहीं बल्कि एसीपी के साथ दूर होता चला गया। उसके जाते ही हम सब भी एक तरफ चल पड़े। मगर

तभी गज़ब हो गया।

वातारण में धांय से गोली चलने की आवाज़ हुई और फिर फिज़ा में मानुषी की चीख भी गूँज गई। दरअसल मानुषी के थप्पड़ मारने पर सत्यम सिंह अपमान में जल उठा था। वो एसीपी के साथ ही बगल से चल रहा था। तभी उसकी नज़र एसीपी के होलेस्टर में फँसी उसकी रिवाल्वर पर पड़ी थी। सत्यम सिंह ने पलक झपकते ही जैसे निर्णय ले लिया था और फिर बेहद फुर्ती से उसने एसीपी के होलेस्टर से रिवाल्वर निकाला और पलट कर उसने मानुषी पर गोली चला दी थी। हम में से किसी को भी इसकी उम्मीद नहीं थी। उधर गोली चलने की आवाज़ से एसीपी भी बौखला गया था। उसने जैसे ही पलट कर सत्यम सिंह की तरफ देखा तो चौंक पड़ा। कारण सत्यम सिंह ने मुस्कुराते हुए खुद ही उसका रिवाल्वर उसे दे दिया। एसीपी उसके इस बिहैवियर से दंग रह गया था।

गोली मानुषी की पीठ के दाहिने भाग के थोड़ा सा नीचे लगी थी। मानुषी की पीठ से खून की तेज़ धार बहने लगी थी। वो लहरा कर गिर ही जाती अगर मैने फुर्ती से उसे पकड़ न लिया होता। सिचुएशन एकदम से ही बदल गई थी। मानुषी को गोली लगने से हम सब बुरी तरह घबरा गए थे। उसकी प्रतिपल बिगड़ती हालत से हम सब रो पड़े। मैने उसे अपनी गोंद में उठा लिया और तेज़ी से मंदिर के पीछे खड़ी अपनी कार की तरफ भाग चला। मेरे पीछे ही बाकी सब दौड़ने लगे थे।

पुलिस और एसीपी ने सबको पकड़ा था किन्तु केशव जी तथा उनके साथ आए लोगों को नहीं पकड़ा था। ये मेरे लिए हैरानी की बात थी। किन्तु इस वक्त उनसे इसके बारे में पूछने का किसी को होश न था। साक्षी व श्रुति दीदी बुरी तरह रोये जा रही थी। शीघ्र ही मैं मानुषी को लिए कार के पास पहुँचा। अमर ने जल्दी से कार का पिछला गेट खोला तो मैने मानुषी को पिछली सीट पर किसी तरह लेटाया और जगह बनाते हुए खुद भी सीट पर बैठ गया। सीट पर बैठने के बाद मैने मानुषी को खुद से छुपका लिया तथा उसकी ठीठ पर हाथ रख कर दबा दिया ताकि खून ज्यादा बहने न पाए। मेरे बैठते ही अमर ने कार की ड्राइंविंग सीट संभाली।

केशव जी ने साक्षी दीदी से कहा कि वो श्रुति दीदी को अपनी कार में बैठा लेंगे। क्योंकि मेरी कार में आगे की सीट पर साक्षी दीदी बैठ गई थी और पीछे अब जगह ही नहीं थी। किन्तु श्रुति दीदी न मानी। वो बुरी तरह रोये जा रही थी और कह रही थी कि वो मानुषी के पास ही रहेंगी। मैने भी ज्यादा समय बरबाद न करते हुए गेट की तरफ खिसक लिया। श्रुति दीदी दूसरी तरफ से आकर मानुषी के पैरों की तरफ सीट पर ही बैठ गईं। ख़ैर सबके बैठते ही अमर ने कार को तेज़ी से दौड़ा दिया। हमारे पीछे पीछे ही केशव जी तथा उनके आदमी जीपों में आ रहे थे।

८९

" ये तुम क्या कह रहे हो जॉर्ज ?" अपने आवास के ड्राइंग रूम में लैण्डलाइन फोन के रिसीवर को कान से लगाए मंत्री ने बुरी तरह चौंकते हुए कहा था ___" ठाकुर और उसके आदमियों को पुलिस पकड़ कर ले गई ?"

".....। " उधर से जॉर्ज ने कुछ कहा।

" क्या कह रहे हो तुम। " रस्तोगी हैरान __" वहॉ पर भारी मात्रा में पुलिस आई हुई थी ?? मगर पुलिस वहॉ आई कैसे ? हमारा मतलब है कि पुलिस को वहॉ पर किसने बुलाया होगा ? एक मिनट जॉर्ज .... एक मिनट , हम सब समझ गए। ये ज़रूर उस थानेदारनी का काम होगा। उसी ने पुलिस को बुलवाया होगा। ठाकुर के इतने सारे आदमियों को पंगु बना देने का यही तो सबसे ज़बरदस्त तरीका था जॉर्ज । साली तगड़ा गेम खेल गई। एक ही झटके में सारा खेल ही खत्म कर दिया उसने। "

".....। " उधर से जॉर्ज ने फिर कुछ कहा।

" ओह तो ठाकुर ने जाते जाते अपनी ही बेटी को गोली मार कर लहूलुहान कर दिया। " रस्तोगी के चेहरे पर मौजूद भावों में परिवर्तन हुआ __" और अब विक्रम एण्ड पार्टी ठाकुर की उस लड़की को मरने से बचाने के लिए फौरन ही हॉस्पिटल लेकर आ रहे हैं। उन्हें आने दो जॉर्ज , वो ज़रूर यहीं आएँगे। ताकि रामगंज के ही किसी अच्छे से हॉस्पिटल में उसे भर्ती करा सकें और उसका बेहतर से बेहतर इलाज़ करा सकें। उन्हें आने दो यहॉ हम उन सबका बहुत अच्छे से स्वागत करेंगे। तुम बस उनके पीछे ही रहना और हमें हालातों की ख़बर देते रहना। "

".....। " जॉर्ज ने उधर से फिर कुछ कहा।

" वो सब हम देख लेंगे जॉर्ज। " रस्तोगी ने कहा __" हम कमिश्नर से इस बारे में पता करेंगे तथा ठाकुर से भी मिलेंगे। अगर उसने हमसे ये कहा कि वो ये सब करने के बाद ही इस सबके बारे में बताने वाला था तो ज़रूर उसकी ज़मानत करवाएँगे हम। वरना भला हमें क्या पड़ी है उसे जेल से छुड़ाने की ? जिस काम के लिए हमने उससे संपर्क बनाया था वो काम तो तुमने बखूबी कर ही दिया है और अब हमें पल पल की ख़बर भी दे रहे हो कि हमारे दुश्मन कहॉ आ रहे हैं। इस लिए अब ज्यादा फिक्र की बात ही नहीं है। "

".....। " उधर से जॉर्ज ने कुछ कहा।

" हॉ ये भी सही कहा तुमने। " रस्तोगी ने कहा __" यानी हमें इस वक्त अभी उन पर हाथ नहीं डालना चाहिए। बल्कि उनके असल ठिकानों के बारे में पता करना चाहिए। उसके बाद ही हमें उन पर कार्यवाही करनी चाहिए। ये तुमने सही सलाह दी है जॉर्ज । बात भी सही है , अभी अगर हमने उन पर हाथ डाला तो संभव है कि इससे हम पर या हमारे बच्चों पर ही कोई

संकट आ जाए। क्या पता उसका कोई आदमी हमारी गतिविधि यों पर नज़र रखे हुए हो , उस सूरत में वो हमें ही नुकसान पहुँचा सकता है। अतः ये ज़रूरी है कि हम अभी चुप ही रहें और उसके असल ठिकाने का तुम्हारे द्वारा पता करने की कोशिश करें। "

".....। " उधर से जॉर्ज ने फिर कुछ कहा।

" ठीक है जॉर्ज। " फिर रस्तोगी ने कहा __" अब ऐसा ही करेंगे। तुम बस उनके पीछे ही लगे रहना और हॉ ये बताने की आवश्यकता नहीं है कि उनसे ज़रा सावधान रहना। "

इसके साथ ही रस्तोगी ने रिसीवर वापस केड्रिल पर रख दिया। इस वक्त उसके चेहरे पर राहत के भाव थे। खुशी की एक अलग ही चमक उसके चेहरे पर दिखाई देने लगी थी। रिसीवर रखने के बाद वह आया और फिर से सोफे पर बैठ गया। उसके सामने ही अगल बगल के सोफों पर अवधेश, अशोक व सुनीता आदि बैठे हुए थे।

" हमारे इस काम में उस जासूस के लिए ये सब करना कोई मुश्किल काम नहीं था। " फिर मंत्री ने सिगार सुलगाने के बाद कहा __" और ना ही ये ऐसा केस था जिसमें उसे अपना माथा पच्ची करना पड़ता। ये सब तो हम भी कर सकते थे किन्तु तब जब करने की स्थि ति में होते। ख़ैर , जो भी हो , अच्छी बात ये है कि हालात अब हमारे हक़ में बहुत हद तक आ चुके हैं। "

" क्या कहा जॉर्ज ने ?" अशोक के पूछने पर रस्तोगी ने सबको सब कुछ बता दिया। सारी बातें जानने के बाद उन तीनों के भी चेहरों पर राहत व खुशी के भाव उभर आए।

" हालात तो वाकई हमारे पक्ष में हैं रस्तोगी साहब। " अशोक ने कहा __" और ये हमारे लिए खुशी की बात भी है। किन्तु ठाकुर के साथ आज जो कुछ भी हुआ वो अगर न होता तो यकीनन आज उसकी गिरफ्त में उसका भतीजा तथा उसकी बेटी होती। उसके बाद वो हमें इस बात की जानकारी देता। कहने का मतलब ये कि इतना कुछ हो जाने के बाद हम अति शीघ्र ही अपने दुश्मन से मिलते और उसके कब्जे से अपनी हर चीज़ ले भी लेते। लेकिन ऐसा हो नहीं सका , पुलिस ने ऐन मौके पर आकर सारा खेल ही ख़राब कर दिया। "

" इस मामले में पहली बार पुलिस का हाथ भी दिखाई दिया है रस्तोगी साहब। " अवधेश ने कहा ___" और जिस तरह से इतनी सारी पुलिस फोर्स को लेकर वो एसीपी वहॉ पहुँचा था इससे ज़ाहिर होता है कि कहीं न कहीं पुलिस का भी इस मामले में दखल है। बल्कि ये कहना चाहिए कि शुरू से ही दखल था। ये अलग बात है कि इसके पहले पुलिस ने खुले तौर पर इस बात को ज़ाहिर नहीं किया था। "

" ये बात तो मैने उसी दिन कही थी। " सहसा अशोक ने तपाक से कहा __" कि संभव है कि पुलिस इस सारे मामले में गुप्त रूप से शामिल हो और आज इस बात का सबूत के रूप में पता भी चल गया हमें। "

" हम कमिश्नर से इस बारे में अभी बात करेंगे। " मंत्री ने कहने के साथ ही अपना मोबाइल निकाला ___" उसे अब साफ साफ बताना ही पड़ेगा कि माज़रा क्या है तथा उसने हमें धोखे में रखने की हिम्मत कैसे की ?"

कहने के साथ ही मंत्री ने पुलिस कमिश्नर को काल लगा कर मोबाइल अपने कान से लगा लिया। दूसरी तरफ काफी देर तक रिंग जाने के बाद काल रिसीव की गई।

" जी कहिए मंत्री जी। " उधर से कमिश्नर की आवाज़ उभरी __" आज इस नाचीज़ को कैसे याद किया आपने ?"

" ये ड्रामेबाज़ी छोंड़ो कमिश्नर। " रस्तोगी ने सपाट लहजे में कहा __" और ये बताओ कि ये सब क्या चक्कर चला रहे हो तुम ?"

"च .. चक्कर ???" उधर से कमिश्नर का चौंका हुआ स्वर उभरा ___" ये आप क्या कह रहे हैं मंत्री जी ?"

" देखो कमिश्नर। " रस्तोगी ने तीखे भाव से कहा __" हमें फालतू की बकवास बिलकुल भी पसंद नहीं है। तुम अच्छी तरह जानते हो और समझते भी हो कि हम किस बारे में बात कर रहे हैं ?"

" बड़ी अजीब बात कर रहे हैं आप मंत्री जी। " उधर से कमिश्नर ने कहा __" भला जिस बात को आप बताएँगे ही नहीं उस बात के बारे में मैं कैसे कुछ जान पाऊँगा ? आप तो जानते हैं कि इंसान अंतर्यामी तो होता ही नहीं है। "

" हम सोनपुर में आधा घंटा पहले घटी घटना के बारे में बात कर रहे हैं। " रस्तोगी ने मन ही मन दाँत पीसते हुए कहा __" अब ये मत कहना कि तुम इस घटना के बारे में भी नहीं जानते। "

" ओह तो आप उस घटना की बात कर रहे हैं ?" उधर जैसे कमिश्नर की अब बात समझ में आई थी , बोला __" उस घटना के बारे में तो मुझे अच्छी तरह पता है मंत्री जी। लेकिन आपका उस घटना से क्या लेना देना है ? जबकि हमारे डिपार्टमेंट के एसीपी ने तो वहाँ पर एक मोस्ट वान्टेड अपराधी को पकड़ने के लिए घेराबंदी की थी और फिर अपराधी को पकड़ कर अपने साथ ले भी आए। "

" किस अपराधी को पकड़ने गई थी तुम्हारी पुलिस ?" मंत्री ने पूछा।

" यूँ तो शहर कई तरह के मुजरिमों से भरा पड़ा है मंत्री जी मगर। " उधर से कमिश्नर ने कहा __" हमारी पुलिस फोर्स ने जिस मोस्ट वान्टेड अपराधी को पकड़ने के लिए सोनपुर के पास वाले गाँव माधोपुर में घेराबंदी की थी उसका नाम जावेद खान है। इस नाम के अपराधी के बारे में तो आपने भी काफी सुना होगा। आप तो जानते हैं कि ये अपराधी कब से पुलिस व

कानून के लिए सिर का दर्द बना हुआ था। आज हमारे ही एक विश्वासपात्र मुखबिर ने हमें बताया कि जावेद खान अपनी गैंग के साथ इस समय माधोपुर में मौजूद है। बस फिर क्या था , हमने उसे पकड़ने के लिए अभी हाल ही में नये नये आए एसीपी रमाकांत शुक्ला को भेज दिया। मगर मेरी समझ में ये नहीं आता कि आपको इस मामले से क्या लेना देना हो गया ? अगर मुनासिब समझें तो मुझे भी बताइये मंत्री जी। "

" नहीं ऐसी कोई बात नहीं है। " रस्तोगी ने बात को टालने की गरज़ से कहा __" वैसे पता चला है कि तुम्हारी पुलिस ने सोनपुर के ठाकुर सत्यम सिंह को भी गिरफ्तार कर लिया है। भला ये क्या चक्कर है कमिश्नर ? क्या वो ठाकुर भी जावेद खान की तरह मोस्ट वान्टेड अपराधी है ?"

" ठाकुर सत्यम सिंह को तो ज़रूरी पूँछताँछ के लिए गिरफ्तार किया गया है मंत्री जी। " उधर से कमिश्नर ने कहा __" दरअसल हमारे मुखबिर ने बताया था कि जावेद खान सोनपुर के ठाकुर सत्यम सिंह की कार में ही बैठा हुआ था। इस लिए उन्हें गिरफ्तार करना पड़ा। तहकीक़ात में उनसे पूछा जाएगा कि जावेद खान नाम का खतरनाक अपराधी उनकी कार में उनके साथ क्यों बैठा हुआ था ? आख़िर उनका जावेद खान से क्या संबंध है ?"

" ओह तो ये बात है। " रस्तोगी को मानो बात समझ में आ गई , बोला ___" वैसे सुना है कि ठाकुर और उसके भतीजे के बीच किसी मामले में तगड़ी रंजिश है। सुना तो ये भी है कि ठाकुर की बेटी खुद तुम्हारे पुलिस डिपार्टमेंट की इंस्पेक्टर है और वो अपने ही माँ बाप के खिलाफ़ होकर ठाकुर के दुश्मन भतीजे का साथ दे रही है। "

" बाकी सारी बातों के बारे में तो मुझे कुछ नहीं पता है मंत्री जी। " उधर से कमिश्नर ने कहा __" लेकिन ये सच है कि ठाकुर सत्यम सिंह की बेटी हमारे पुलिस डिपार्टमेंट में इंस्पेक्टर के रूप में कार्यरत है। बहुत ही इमानदार तथा बहादुर ऑफीसर है वो। "

" अब इस बारे में तो तुम्हें ही पता होगा कमिश्नर। " रस्तोगी ने कहा __" आफ्टरआल वो तुम्हारे पुलिस महकमे से है। चलो कोई बात नहीं , अच्छा अब हम फोन रखते हैं। "

इतना कह कर रस्तोगी ने काल कट कर दी। फिर बुझ चुके सिगार को सामने टेबल पर रखे ऐशट्रे में रखा और दूसरा सिगार निकाल कर सुलगा लिया। सिगार के दो तीन गहरे गहरे कश लेने के बाद उसने ढेर सारा धुआँ ऊपर की तरफ उछाला।

" क्या कहा कमिश्नर ने रस्तोगी साहब ?" अवधेश मुखर्जी पूछे बग़ैर न रह सका था।

" बेवकूफ़ बनाने की कोशिश कर रहा था हमें। " रस्तोगी ने कहा __" उस साले को ये पता ही नहीं है कि वो किसे बेवकूफ बनाने चला था ? साला राजनीति का खेल हम खेलते हैं और वो हमसे राजनीति कर रहा था। "

" ऐसा क्या कह रहा था वो आपसे ?" अशोक ने पूछा।

मंत्री ने उसे सारी बातें बता दी, उसके बाद उसने फिर से सिगार का एक कश लिया फिर बोला__"जबकि साफ पता चलता है कि सच्चाई क्या है? डिटेक्टिव जॉर्ज के अनुसार विक्रम एण्ड पार्टी ठाकुर की दूसरी बेटी को लेने गए थे। किसी तरह से इस बात की जानकारी ठाकुर को हुई और वह जावेद खान को उसके गुर्गों के साथ माधोपुर जा धमका, जहॉ पर उसका आमना सामना विक्रम एण्ड पार्टी से हुआ। विक्रम को अंदेशा रहा होगा कि उसका ताऊ उसे पकड़ने का ऐसा ही कुछ इंतजाम करके आएगा। इस बात को ध्यान में रखते हुए उन लोगों ने भी ठाकुर से बचने का उपाय सोचा होगा। ठाकुर की बेटी क्योंकि अब विक्रम के साथ ही है इस लिए ठाकुर से बचने के लिए उसने अपने पुलिस महकमें का सहारा लिया। उसे पता था कि पुलिस के आ जाने से सत्यम सिंह कुछ कर नहीं पाएगा। बात भी सही है कि पुलिस से पंगा करने का कोई मतलब ही नहीं था। यानी वो सब पुलिस की मदद से बड़े आराम से ठाकुर की दूसरी बेटी को ले आएॅगे और ठाकुर कुछ भी नहीं कर पाएगा।"

" यकीनन रस्तोगी साहब। " अवधेश ने गहरी सास लेते हुए कहा __" ठाकुर ने विक्रम एण्ड पार्टी को घेर कर पकड़ने का ज़बरदस्त प्लान बनाया था। ये अलग बात है कि बदकिस्मती से उसके उस ज़बरदस्त प्लान की खुद उसकी ही बेटी ने धज्जियॉ उड़ा दी। इतना ही नहीं पुलिस को बुलवा कर वो अपनी छोटी को बहन को तो अपने साथ ले ही गई ऊपर से अपने बाप को भी गिरफ्तार करवा दिया। "

" लेकिन ठाकुर भी कम कमीना नहीं था। " अशोक ने झट से कहा __" पुलिस के साथ जाते जाते भी उसने एसीपी का रिवाल्वर निकाल कर अपनी छोटी बेटी को गोली मार दी। ये इस बात का सबूत है रस्तोगी साहब कि उस वक्त वह अपनी औलाद से किस क़दर ख़फा था और फिर गुस्से में आकर उसने बेटी को जान से मारने की कोशिश की। अगर समय रहते उसकी बेटी का विक्रम एण्ड पार्टी ने इलाज़ करवा लिया तब तो ठीक है वरना ठाकुर ने तो अपनी बेटी का काम तमाम कर ही दिया है समझिये। "

" जो भी होता है अच्छे के लिए ही होता है। " मंत्री रजतकुमार रस्तोगी ने कहा __" इस सबकी वजह से हमारा फायदा ये हुआ है कि हमारा दुश्मन हमारे जासूस जॉर्ज की नज़र में आ गया है। जॉर्ज विक्रम एण्ड पार्टी के पीछे साये की तरह लगा रहेगा। अभी तो वो सब किसी हॉस्पिटल में ही गए होंगे क्योंकि ठाकुर की बेटी को मौत से बचाना उन सबकी पहली प्राथमिकता होगी। उसके बाद वो यकीनन उस जगह जाएॅगे जहॉ पर उन लोगों ने अपना ठिकाना बनाया होगा। जॉर्ज को जैसे ही उनके ठिकाने का पता चल जाएगा वैसे ही वो हमें सूचित कर देगा। बस , उसके बाद क्या होगा ये बताने की ज़रूरत नहीं है शायद। "

" ये तो वाकई हमारे ही हक़ में है। " सहसा इस बीच सुनीता बोल पड़ी __" ठाकुर की घटना ने उसे भले ही करारी शिकस्त दी हो मगर इस सबमें हमारा यकीनन फायदा हो गया है। दूसरी बात जासूस जॉर्ज को इस काम के लिए बुलाने का भी बहुत अच्छा निर्णय साबित हुआ हमारा। "

" बिलकुल सही कहा तुमने। " रस्तोगी ने कहा __" अगर जॉर्ज को हमने बुलाया न होता

तो हमें इतनी बड़ी सफलता हर्गिज़ भी नहीं मिल सकती थी। क्योंकि इस बात का हमें पता ही न चलता कि विक्रम एण्ड पार्टी और ठाकुर के बीच क्या हुआ है ? ठाकुर का भी कोई भरोसा नहीं था कि वो हमें इस बारे में कुछ बताता भी या नहीं। "

" ख़ैर , जो भी हो। " अवधेश ने कहा __" इस सबसे हमें फायदा तो यकीनन ही हुआ है मगर इस बीच हमारे लिए ये सोचना भी महत्वपूर्ण है कि इस मामले में पुलिस का दखल किस उद्देश्य से हुआ है ? क्या सचमुच ही वो मोस्ट वान्टेट अपराधी जावेद खान को ही पकड़ने के उद्देश्य से वहाँ पर पहुँची थी या फिर इसके पीछे भी पुलिस की कोई ऐसी चाल थी कि वो एक तीर से दो शिकार कर सके। कहने का मतलब ये कि ज़ाहिर तौर पर उसने हमें यही दिखाया हो कि उसका दखल महज जावेद खान को ही पकड़ना था जबकि असल में उसका मकसद कुछ और ही रहा हो , जिसका संबंध हमसे हो। "

" हो सकता है। " रस्तोगी के चेहरे पर सोचने वाले भाव उभर आए ___" किन्तु कमिश्नर की बातों से भी कुछ ज़ाहिर नहीं हो सका। या तो उसने जान बूझ कर हमें घुमा दिया है या फिर ऐसा कुछ हो ही न। यानी हो सकता है कि हम जिस चीज़ की शंका कर रहे हैं वो बेवजह ही हो। "

" शंका तो शंका ही होती है रस्तोगी साहब। " अशोक ने कहा __" भले ही वो बेवजह ही हो मगर हमारे मन में शंका तो है न। इस लिए जब तक हमें इस मामले में सच्चाई का पता नहीं चलता तब तक हमारी ये शंका हमारे अंदर से जाएगी भी नहीं। "

" चलो अगर ऐसा है भी। " रस्तोगी ने कहा __" तो वो आने वाले समय में ज़ाहिर तो हो ही जाएगा। तब हम देख लेंगे कि हमें उस बारे में क्या करना है। अभी के हालात में जो ज़रूरी है , हमे उस पर ज्यादा ध्यान देना है। हमें किसी भी कीमत पर अपने बच्चे तथा हमारे लिए डायनामाइट बने उन वीडियोज को हासिल करना है। मौजूदा हालातों पर ग़ौर करें तो ये स्पष्ट हो चुका है कि बहुत जल्द जॉर्ज के द्वारा हमें इस सबमें सफलता मिलेगी। "

रस्तोगी की बात सुन कर सबके सिर सहमति में हिले। उसके बाद कुछ और इधर उधर की बातें हुई उन लोगों के बीच। फिर सब अपने अपने काम पर चले गए।

९०

इधर अमर ऑधी तूफान की तरह दौड़ाते हुए कार को हॉस्पिटल की तरफ लिए जा रहा था। मानुषी की हालत की वजह से हम सब बेहद दुखी हो गए थे। मैं बार बार मानुषी को पुकार रहा था। उसकी पलकें बार बार बंद हो जाती थी। मैने अपने एक हाथ की हॅथेली को मानुषी की पीठ पर कस के लगाया हुआ था ताकि उसका खून न बहने पाए। मानुषी पहले तो दर्द और पीड़ा से कराह रही थी किन्तु अब वो प्रतिपल शान्त पड़ती जा रही थी। उसकी ये हालत देख कर मैं बदहवाश सा था और बार बार उसे पुकार रहा था। मेरे बाएॅ साइड ही मानुषी के पैरों के पास बैठी श्रुति दीदी अभी भी सिसक रही थीं। वो खुद भी पागलों की तरह मानुषी को पुकारे जा रही थी।

साक्षी दीदी आगे बैठी हुई थी। उनके चेहरे पर भी पीड़ा के भाव उभर आते थे किन्तु उन्होंने खुद को संभाला हुआ था। उनके चेहरे पर मौजूद भाव प्रतिपल बदल रहे थे। कभी कभी तो ऐसे भाव उभर आते थे जैसे उन्होंने किसी बात के लिए कठोर फैसला किया हो। अमर फुल स्पीड से कार को भगा रहा था। तभी डैश बोर्ड के पास ही रखा मेरा मोबाइल फोन बज उठा। फोन के बजने से जैसे साक्षी दीदी की तंद्रा टूटी। उन्होंने हाथ बढ़ा कर मोबाइल उठाया और स्क्रीन पर फ्लैश कर रहे मौसा जी नाम को देख कर काल रिसीव की उन्होंने।

उधर से मौसा जी ने जाने ऐसा क्या कहा कि साक्षी दीदी एकदम से चौंक पड़ी, साथ ही कार की खिड़की से इधर उधर देखने भी लगी थी। फिर उन्होंने ये कह कर फोन रख दिया कि__"आपने यकीनन ये बहुत बड़ी ख़बर दी है मौसा जी। किन्तु उसे बोलिए कि अगर संभव हो सके तो उसे पकड़ ले। आप भी जल्दी से उसके पास जाइये और जाकर उसे अपने कब्जे में ले लीजिए।"

" क्या हुआ साक्षी ??" कार चलाते हुए अमर ने सहसा एक नज़र साक्षी दीदी की तरफ डालते हुए पूछा।

" मंत्री मेरी चेतावनी के बावजूद अपनी हरकतों से बाज नहीं आया। " साक्षी दीदी ने कहा __" उसने जब देखा कि वो खुद कुछ नहीं कर सकता है तो उसने अपने काम के लिए एक जासूस को बुलवाया और उस जासूस को हमारे पीछे लगा दिया। "

" ये क्या कह रही हो तुम ?" अमर साक्षी की बात सुन बुरी तरह चौंका था , फिर बोला __" मगर तुम्हें ये सब कैसे पता चला ?"

" मुझे नहीं। " साक्षी दीदी ने कहा __" बल्कि मौसा जी के एक आदमी को पता चला है। उसी ने बताया है मौसा जी को। दरअसल हम सब लोग तो वहॉ से चले आए मगर मौसा जी का एक आदमी ग़लती से वहीं रह गया। मौसा जी बता रहे थे कि उनका वो आदमी उस वक्त अपना पेट साफ करने चला गया था। इसी बीच हम सब वहॉ से जल्दबाज़ी में निकल आए। कुछ देर में जब वो अपना पेट साफ करके आया तो हम लोगों को दूर जाते हुए देखा उसने। वो

वहॉ से चलते हुए कुछ दूर आया। फिर उसने अपना मोबाइल निकाल कर मौसा जी को फोन करने ही वाला था कि तभी उसे किसी के बात करने की आवाज़ सुनाई दी। वो आवाज़ की दिशा में गया तो उसने देखा कि मंदिर से लगभग पचास मीटर की दूरी पर एक आदमी पेड़ की ओट में खड़ा किसी से फोन पर बातें कर रहा था। मौसा जी का आदमी उससे कुछ ही दूरी पर था। उसने उस आदमी के कुछ पास जाकर उसकी बातें सुन ली। उसकी बातों में डैड के अलावा हमारा भी ज़िक्र था , साथ ही वह जिससे बात कर रहा था उसे वह रस्तोगी साहब कह कर संबोधित कर रहा था। मौसा जी के आदमी को उसकी बातों से समझ आ गया कि वो हम सबके पीछे ही लगा हुआ है। अतः उसने तुरंत ही इस बात की सूचना मौसा जी को फोन लगा कर दे दी। "

" ओह तो ये बात है। " अमर ने कहा।

" हाॅ , मैने अपने मुखबिरों को मंत्री तथा उसके सभी साथियों के पीछे लगाया हुआ था। " साक्षी दीदी ने कहा __" उन सबकी रिपोर्ट यही थी कि मंत्री या उसके साथियों ने ऐसा वैसा कुछ नहीं किया है। बल्कि उन सबकी दिन चर्या तथा कार्य सामान्य ही था। मुझे भी उम्मीद नहीं थी कि वो कमीना अपने इस काम के लिए किसी जासूस को हायर कर लेगा। मगर कोई बात नहीं , ये बहुत अच्छा हुआ कि मंत्री के उस जासूस का पता चल गया। कहते हैं कि ईश्वर जो भी करता है उसके पीछे कोई ठोस वजह ज़रूर होती है। वरना सोचने वाली बात है कि मौसा जी जिन आदमियों को अपने साथ लेकर आए थे उन आदमियों में से किसी एक को उस वक्त टायलेट क्यों आता ? ये ईश्वर की ही मर्ज़ी थी कि उसे उस वक्त टायलेट आया और वो टायलेट के लिए हमसे दूर चला गया। उसके बाद जब वह आया तो हम सब उस जगह से निकल चुके थे जबकि वो वहीं छूट गया। ईश्वर हमारे साथ है अमर , वो नहीं चाहता कि किसी वजह से हम फॅस जाएॅ। हमें नहीं पता था कि मंत्री ने कोई जासूस हमारे पीछे लगाया हुआ है अतः ईश्वर इस सबके द्वारा हमें उस जासूस के बारे में भी बता दिया। "

" सचमुच। " अमर कह उठा __" कुदरत का हर काम हैरतअंगेज़ होता है। ख़ैर , अब उस जासूस का क्या करना है ?"

" अभी तो फिलहाल उसे किसी भी तरह से पकड़ लेने के लिए मैंने मौसा जी से कहा है। " साक्षी दीदी ने कहा __" उसका पकड़ में आना भी बेहद ज़रूरी है वरना वो हमारा पीछा करता रहता और अंततः हमारे ठिकाने तक पहुॅच जाता। उसके बाद वो हमारे ठिकाने के बारे में मंत्री को बता देता। बस फिर तो खेल ही खत्म हो जाना था। "

" सचमुच। " अमर ने कहा __" बहुत बड़ी मुसीबत में फॅसने वाले थे हम सब। "

" हॉ अमर। " साक्षी दीदी ने कहा __" मंत्री अपने दलबल के साथ अगर हमारे ठिकाने पर आ धमकता तो हम उस हालात में उस वक्त कुछ कर नहीं पाते और फिर हम सबके साथ मंत्री क्या सुलूक करता इसका अंदाज़ा भी नहीं लगाया जा सकता। "

" शुकर है। " अमर ने कहा __" ईश्वर ने हमें बचा लिया। अब तो यही दुवा करो कि वो जासूस मौसा जी की पकड़ में आ ही जाए। वरना अगर वो हाथ से निकल गया तो मुसीबत

एक बार फिर से हम पर आ जाएगी। ईश्वर बार बार ऐसा संयोग नहीं बनाएगा। "

" सही कहा तुमने। " साक्षी दीदी ने कहा __" देखते हैं मौसा जी तथा उनके आदमी क्या करते हैं ? इस वक्त तो हमें मानुषी को बचाना है। "

" वैसे एक बात कहूँ साक्षी। " अमर ने कहा __" तुम्हारे जैसा कमीना बाप मैने आज तक न कहीं देखा है और ना ही कहीं सुना है। खुद पापों की गठरी लिए फिरता है और अपनी ही बेटी के साथ ..... छि: .. मुझे तो सोच कर ही ऐसे आदमी से घृणा हो रही है। "

" अगर मेरी बहन को कुछ हुआ न अमर। " सहसा साक्षी दीदी के मुख से ज़हर में डूबे शब्द निकले __" तो उस इंसान का मैं वो हाल करू गी कि बड़े से बड़ा जल्लाद भी उसका हाल देख कर थर्रा जाएगा। "

" अब तो उसकी नियति ही ऐसी बन चुकी है। " अम र ने कहा __" कि उसकी जब भी मौत होगी तो यकीनन बहुत भयानक तरीके से होगी। "

अमर की बात पर साक्षी दीदी कुछ न बोली। किन्तु उनके चेहरे के भाव बता रहे थे कि अपने अंदर के तूफान को उन्होंने कितनी मुश्किल से रोंका हुआ है। मैं उन दोनों की सारी बातें सुन रहा था। तभी साक्षी दीदी ने किसी को फोन लगाया और उससे कुछ बातें की। अमर ने बहुत ही कम समय में कार को हॉस्पिटल पहुँचा दिया।

हॉस्पिटल के सामने कार के रुकते ही मैने जल्दी से गेट खोला और मानुषी को सावधानी से निकाल कर अपनी गोंद में लिया और बिना किसी की तरफ देखे हॉस्पिटल की तरफ लगभग दौड़ते हुए जाने लगा। मेरे पीछे ही बाकी सब भी आ रहे थे। कुछ ही देर में मैं मानुषी को लिए हॉस्पिटल के अंदर आ गया। वहाँ का माहौल देख कर ऐसा लगा जैसे वहाँ के डाक्टर तथा कर्मचारी हमारा ही इन्तज़ार कर रहे थे। जल्द ही दो आदमी स्ट्रेचर लिये मेरे पास आए। मैने आहिस्ता से मानुषी को स्ट्रेचर पर लिटा दिया। मेरे लेटाते ही वो दोनो आदमी स्ट्रेचर को तेज़ी से ठेलते हुए ले जाने लगे। मैं, अमर, साक्षी व श्रुति दीदी भी साथ ही साथ चलने लगे थे। थोड़ी ही देर में वो दोनो आदमी मानुषी को स्ट्रेचर सहित ओटी में ले गए। डाक्टर ने हम सबको ओटी के बाहर ही रोंक दिया और खुद अंदर चला गया।

हम चारो वहीं पर खड़े रह गए थे। हम चारों के मन में बस एक ही बात थी कि मानुषी को कुछ न हो। अभी हम सब वहाँ पर खड़े ही थे कि तभी वहाँ पर एसीपी रमाकांत शुक्ला भी आ गया। उसने आते ही साक्षी दीदी से मानुषी के बारे में पूछा तो दीदी ने बता दिया कि अभी अभी उसे ओटी में ले जाया गया है। एसीपी ने साक्षी दीदी से कहा कि उसने समूचे हॉस्पिटल में अंदर बाहर पुलिस के आदमी सादे कपड़ों में तैनात कर दिये हैं। इस लिए अब किसी का ख़तरा नहीं है। एसीपी की बात सुन कर साक्षी दीदी ने उसे इसके लिए धन्यवाद किया। कुछ देर बाद एसीपी ये कह कर चला गया कि वो मानुषी का हाल चाल लेने फिर आएगा।

एसीपी के जाने के कुछ देर बाद हम चारों वहीं गैलरी पर दीवार से सटी हुई रखी लम्बी चेयर्स

पर बैठ गए। कुछ देर बाद मैं उठा और हॉस्पिटल से बाहर पानी लाने के लिए चला गया। पानी लाकर मैने साक्षी दीदी व श्रुति दीदी को दिया। उसके बाद उसी कुर्सी पर बैठ कर हम सब डाक्टर के बाहर आने का इन्तज़ार करने लगे। हम सबके लबों से बस एक ही दुवा निकल रही कि मानुषी को कुछ न हो।

९१

उधर हवेली में।

ड्राइंग रूम में सोफे पर बैठी सोनिया अपने मोबाइल से बार बार अपने पति सत्यम सिंह के मोबाइल पर फोन लगा रही थी किन्तु सत्यम सिंह का फोन बंद बता रहा था। सत्यम सिंह का फोन बंद बताने से सोनिया को किसी अनहोनी आशंका होने लगी थी। उसके चेहरे पर एकाएक ही गहन चिंता , परेशानी तथा बेचैनी के भाव उभर आए थे। उसे समझ नहीं आ रहा था कि सत्यम ने अपना फोन क्यों बंद कर रखा है ? वो सत्यम सिंह से फोन पर बात करके ये जानना चाहती थी कि वो इस वक्त कहाँ है तथा बाँकियों के हालात कैसे हैं ? मगर सत्यम सिंह का फोन बंद बताने से सोनिया को अब प्रतिपल बेचैनी सी होने लगी थी। उसके मन में तरह तरह के ख़यालों का आवागमन शुरू हो गया था।

उसके सामने ही दूसरे सोफे पर जयदीप किसी और ही दुनियाँ में खोया हुआ नज़र आ रहा था। उसे जैसे अपने माँ बाप की कोई ख़बर ही नहीं थी। वो तो बस श्रुति के ख़यालों में खोया हुआ था। मानुषी व श्रुति को अब तक तीन से चार घंटे हो गए थे। मगर वो दोनो अब तक वापस नहीं लौटी थी। किन्तु जयदीप को जैसे समय का ख़याल ही नहीं था। वो तो बस अपनी आँखों के सामने नज़र आ रहे श्रुति के खूबसूरत चेहरे को ही अपलक देखे जा रहा था। हलाँकि जब सोनिया ने उसे इस बात से अवगत कराया कि वो दोनो यहाँ से भागने का सोच कर ही गई हो सकती हैं तो जयदीप का दिल एकदम से बैठ सा गया था। बाद में सोनिया के ही निर्देश पर उसने कुछ नये आदमियों की मजबूत टीम बना कर उनके पीछे लगा दिया था।

" उफ्फ क्या करूं इस इंसान का। " सहसा तभी सोनिया की खीझी हुई इस आवाज़ से जयदीप हकीक़त की दुनियाँ में आया , जबकि सोनिया कह रही थी ___" कभी कोई काम ठीक से नहीं कर सकते हैं। ये तो हद हो गई , इतना लापरवाह इंसान मैने आज तक नहीं देखा। "

" क्या हुआ मॉम ?" जयदीप ने सोनिया के एकाएक ही तमतमा गए चेहरे को देखते हुए कहा ___" किस लापरवाह इंसान की बात कर रही हैं आप ?"

" तुम्हारे बाप की। " सोनिया ने आवेश में कहा __" जो कि हद दर्ज़े का लापरवाह और बेवकूफ इंसान है। "

" अरे ये आप क्या कह रही हैं मॉम ?" जयदीप अपनी माँ की बातों से बुरी तरह हैरान रह गया।

" सच ही तो कह रही हूँ मैं। " सोनिया ने कहा __" वरना कौन ऐसा करता है कि इतनी ख़राब सिचुएशन में होकर अपना फोन ही बंद कर दे ?"

" क्या मतलब ???" जयदीप जैसे चकरा सा गया।

" तुम्हारे बाप से फोन द्वारा पूछना चाहती थी कि वहॉ के हालात कैसे हैं ?" सोनिया ने कहा __" मगर महाशय का मोबाइल फोन ही ऑफ बता रहा है। अब तुम ही बताओ कि ऐसे हालात में कौन अपना फोन कर बंद करके रखता है ?"

" बात तो आपने सही कही मॉम। " जयदीप के चेहरे पर एकाएक सोचने वाले भाव उभरे ___" ऐसे हालात में कोई भी अपना फोन ऑफ नहीं रख सकता। हॉ अगर मोबाइल ही डिस्चार्ज़ हो गया हो तो अलग बात है। लेकिन मॉम मुझे यकीन है डैड अपना फोन ऑफ नहीं करेंगे ऐसे वक्त में। ज़रूर कोई बात हो गई होगी। "

" चुप कर तू। " सोनिया अंदर ही अंदर जाने क्यों बुरी तरह हिल गई , बोली __" जो मुह में आता है बिना सोचे समझे बोल देता है। "

" ऐसा नहीं है मॉम। " जयदीप ने नर्म भाव से कहा __" लेकिन आप खुद सोचिए कि क्या डैड ऐसे वक्त में अपना फोन ऑफ कर सकते हैं , नहीं ना ? उन्हें भी पता है कि हालात कितने गंभीर हैं। लेकिन ये भी सच है कि अगर डैड का फोन ऑफ बता रहा है तो ज़रूर कोई ऐसी बात होगी जिसके बारे में फिलहाल हमें कुछ भी पता नहीं है। "

जयदीप की इस बात पर सोनिया तुरंत कुछ बोल न सकी। उसके चेहरे पर गहन सोचों के भाव ज़रूर उभर आए थे। जैसा सोच रही हो कि क्या सच में ऐसा कुछ हुआ होगा? उधर अपनी मॉम को सोचों में गुम देख कर जयदीप पुनः कह उठा___"इस तरह बैठने से कुछ नहीं होगा मॉम। मुझे लगता है कि हमें डैड का पता करना चाहिए। जैसा कि आपने मुझे बताया था कि आज विक्रम साक्षी दीदी के साथ मानुषी व श्रुति को लेने आने वाला है शायद, इसी लिए आपने उनके पीछे अलग से एक मजबूत टीम बना कर मेरे द्वारा भेजवाया था। वहीं दूसरी तरफ से डैड भी अपने साथ कुछ आदमियों को लिए आ रहे हैं। इस बात से यही ज़ाहिर होता है कि अगर विक्रम सचमुच आ रहा है तो डैड तथा हमारे आदमियों के साथ उसकी भिड़ंत अनिवार्य है। इस भिड़ंत में यकीनन हमारी जीत होगी। यानी कि अंततः विक्रम साक्षी दीदी के साथ पकड़ा ही जाएगा। उसके बाद डैड उन सबको फार्महाउस ले जाएॅगे। फार्महाउस पहुॅचने के बाद ही वो हमें फोन करने वाले थे। किन्तु उनके फोन बंद बताने से ऐसा प्रतीत होता है जैसे हमने जो उम्मीद की थी वो हुआ ही नहीं है।"

" नहीं नहीं। " सोनिया ने पूरी मजबूती से इंकार में सिर हिलाया , बोली __" ऐसा नहीं हो सकता बेटा। इस बार मैने और तेरे डैड ने उस विक्र म की सोच से बहुत आगे बढ़ कर प्लान बनाया था। मुझे उसकी सोच का अब अंदाज़ा हो चुका था , इसी लिए तो डबल बैकअप रखा था हमने। एक हमारे आदमियों का दूसरा तेरे डैड के साथ आए आदमियों का। डबल बैकअप के बाद तो जीत हमारी ही होनी निश्चित थी बेटा। "

" काश ! ऐसा ही हुआ हो मॉम। " जयदीप ने कहा __" उन सबके साथ साथ मानुषी व श्रुति भी तो पकड़ ली गई होंगी। उफ्फ ! कितना भरोसा था मुझे कि श्रुति ये गॉव तथा हमारे खेते घूम कर वापस यहीं आएगी। मगर कदाचित मानुषी ने उसे भी सब कुछ बता दिया था तभी तो दोनो एक साथ चली गईं। मगर अब मैं अपने दिल का क्या करू मॉम ? ये तो

उसी का होकर रह गया है। "

जयदीप की इस बात का सोनिया अभी कुछ जवाब देने ही वाली थी सहसा तभी ड्राइंग रूम में बड़े वेग से एक आदमी दाखिल हुआ। उसके चेहरे से ही लग रहा था कि वो कहीं से मैराथन दौड़ लगा कर आया है। बुरी तरह हॉफ रहा था वह। सोनिया व जयदीप उसे देख कर बुरी तरह चौंक पड़े।

" क्या बात है हैदर ?" जयदीप ने उसकी तरफ हैरानी से देखते हुए कहा __" तुम इतना हॉफ क्यों रहे हो ? और ... और तुम यहॉ कैसे , तुम तो टीम के साथ ही गए थे न ?"

" हॉ छोटे ठाकुर। " हैदर नाम के उस आदमी ने हॉ में सिर हिलाते हुए कहा __" गया तो मैं टीम के साथ ही था। मगर ,

" मगर क्या ???" जयदीप उतावलेपन में पूछ बैठा।

" सब कुछ गड़बड़ हो गया छोटे ठाकुर। " हैदर ने दीनहीन दशा में बोला ___" ठाकुर साहब ने तो सबको पकड़ ही लिया था और बाज़ी भी हमारे ही हाथ में थी। मगर ऐन वक्त पर वहॉ पुलिस की पूरी फौज आ गई और फिर एसीपी के निर्देश पर सबको हिरासत में ले लिया गया। यहॉ तक कि ठाकुर साहब को भी वो एसीपी गिरफ्तार करके ले गया है। मैं किसी तरह छुपता छुपाता वहॉ से निकल कर ये सब बताने के लिए आपके पास आया हूँ। "

हैदर की बात सुन कर जयदीप तथा सोनिया दोनो को ही जैसे सॉप सूँघ गया। दोनो के ही चेहरों की हालत ऐसे हो गई जैसे कपड़े से पानी निचोड़ लेने पर कपड़े की हो जाती है। सोनिया को तो ऐसा लगा जैसे दिल का दौरा पड़ जाएगा। उसकी ऑखों के सामने अंधेरा सा छा गया। जयदीप की नज़र जब सोनिया पर पड़ी तो वह अपने सोफे से उठ कर बड़ी तेज़ी से उसके पास आकर उसे संभाला। हालत तो उसकी भी ख़राब हो चुकी थी। किन्तु जवान खून था अभी इस लिए हैदर की इस डायनामाइट जैसी बात को हजम कर गया था।

" सब कुछ खत्म हो गया बेटा। " सोनिया अपने बेटे की बाहों में सिमटी एकदम से असहाय भाव से बोली __" अब कुछ भी शेष नहीं रहा। तेरी बहन साक्षी ने अपने महकमे का सहारा ले कर अपने बाप को एक और क्षति पहुँचा दी। उसने अपने बाप के माथे पर एक और नाकामी की मुहर लगा दी। इस बात से ज़ाहिर होता है कि उसके दिल में अपने मॉ बाप के प्रति ज़रा सी भी जगह नहीं रह गई है। "

" मैं उस कुतिया को ज़िंदा नहीं छोड़ूँगा मॉम। " जयदीप के मुख से सहसा गुर्राहट निकली __" डैड को जेल भिजवा कर उसने ये अच्छा नहीं किया है। भला उसकी हमसे क्या दुश्मनी है मॉम , दुश्मनी तो विक्रम से है। "

" मैडम , ठाकुर साहब ने गुस्से में आकर अपनी छोटी बेटी मानुषी को गोली भी मार दी है। " सहसा हैदर ने ये कह कर मानो धमाका सा किया ___" मानुषी की हालत बहुत ही गंभीर

है। उसे वो लोग यकीनन हॉस्पिटल ले गए होंगे। "

" ये क्या कह रहे हो तुम ??" सोनिया हैदर की ये बात सुन कर सकते में आ गई। चेहरा सफेद फक्क पड़ गया।

" हॉ मैडम। " हैदर ने कहा __" गुस्से में पागल हुए ठाकुर साहब ने एसीपी का रिवील्वर निकाल कर मानुषी पर फायर कर दिया था। गोली मानुषी की पीठ पर लगी थी। जहॉ से खूॅन बहे जा रहा था। "

" हे भगवान!। " सोनिया की ऑखें छलक पड़ीं __" ये कैसा दिन दिखा रहे हो हमे ? एक बाप अपनी ही बेटियों के खून का प्यासा हो चुका है। "

" लेकिन हैदर। " सोनिया के रुदन पर ज़रा भी ध्यान दिये बग़ैर जयदीप ने पूछा __" डैड ने मानुषी पर गोली क्यों चलाई थी ?"

हैदर ना शुरू से लेकर अंत तक की सारी राम कहानी संक्षेप में कह सुनाई। उसकी इस राम कहानी में वो सीन भी था जिसमें सत्यम सिंह ने अपनी ही बेटी मानुषी से अश्लील बातें की थी। ये भी कि अंत में कैसे मानुषी ने ठाकुर साहब को थप्पड़ मारा था जिसकी वजह से गुस्से में आकर सत्यम सिंह ने एसीपी का रिवाल्वर छीन कर मानुषी पर गोली चलाई थी। सारी बातें सुनने के बाद जयदीप तो बस हैरान ही था किन्तु सोनिया एकदम से मानो बुत बन गई थी। उसका चेहरा एकदम से तेज़हीन सा हो गया था।

" अब मेरे लिए क्या आदेश है छोटे ठाकर ?" हैदर ने कहा।

" तुम जाओ हैदर। " जयदीप ने गंभीरता से कहा __" गेस्ट हाउस में आराम करो। हम सोचते हैं कि अब इसके आगे हमें क्या करना है ?"

जयदीप के कहने पर हैदर वहॉ से चला गया। उसके जाने के बाद ड्राइंग रूम में मरघट जैसा सन्नाटा छा गया। काफी देर तक मॉ बेटे के बीच यही आलम रहा। जैसे उनमें से किसी को कुछ सूझ ही न रहा हो कि अब क्या बात करें?

" आख़िर जिस चीज़ की नियति बन चुकी थी। " सहसा सोनिया ने कहीं खोये हुए से कहा __" उसका आग़ाज हो ही गया। इस लड़ाई में किसी न किसी को तो शहीद होना ही है। फिर चाहे वो मानुषी ही क्यों न हो ?"

" आपने बिलकुल सही कहा मॉम। " जयदीप ने भी गंभीर भाव से कहा __" किसी न किसी के साथ तो ये होना ही है। मगर एक बात तो मैं भी कहूॅगा , और वो ये कि डैड ने मानुषी पर गोली चला कर अच्छा नहीं किया। मैं जानता हूॅ कि आपको मेरी ये बात नागवार लग सकती है। मगर इसके बावजूद कहूॅगा मैं कि डैड को मानुषी पर गोली नहीं चलाना चाहिए था। मैं मानता हूॅ कि मेरी दोनो बहनों ने हमसे बगावत करके ग़लत किया है। उन्हें सोचना चाहिए था कि मॉ बाप कैसे भी हों हैं तो अपने ही। वैसे ही डैड को भी सोचना चाहिए था

मॉम। हम उन्हें उनके किये की सज़ा ज़रूर देते मगर इस तरह नहीं कि उनको जान से ही मार दें। ये सब उस विक्रम की वजह हे हुआ है , उसी ने मेरी दोनो बहनों को बहकाया है। उसी ने उन दोनो का ब्रेनवाश किया है , वरना उनके दिलो दिमाग़ में कम से कम ये सोच तो रहती ही कि मॉ बाप जैसे भी हों , वो अपने ही होते हैं। "

सोनिया जयदीप की ये बातें सुन कर मन ही मन हैरान थी। जयदीप का बदला हुआ ये रवैया उसे हजम नहीं हो रहा था। किन्तु उसे ये भी पता था कि जयदीप अपने बाप की कॉपी है। यानी सूरज कभी पश्चिम से उदय नहीं हो सकता।

" क्या बात है। " सोनिया ने हैरानी से कहा __" आज अपनी बहनों से इतनी हमदर्दी ? क्या ये श्रुति से हुए इश्क़ का असर है बेटा ? जिसने तेरी सोच को इस हद तक बदल दिया है ?"

" मुझे खुद पता नहीं है मॉम। " जयदीप ने नज़रें चुराते हुए कहा __" मैं सिर्फ इतना समझ रहा हूँ कि डैड ने मानुषी पर गोली चला कर अच्छा नहीं किया। अगर वही गोली वो विक्रम पर चला देते तो शायद मुझे उनसे कोई शिकायत न रहती। "

" ख़ैर छोंड़। " सोनिया ने इस मैटर को ज्यादा न बढ़ाने की गरज़ से कहा __" अब हमें ये सोचना है कि तेरे डैड को पुलिस से कैसे छुड़ाया जाए ? उन पर मानुषी को जान से मारने की कोशिश का भी केस लग सकता है , और संभव है कि उस एसीपी ने ये केस लगा भी दिया हो उन पर। अत: हमें अब किसी क़ाबिल वकील से मिलना पड़ेगा। ताकि वो उनको जेल से किसी तरह छुड़ा सके। "

" हॉ ये सच कहा आपने। " जयदीप ने कहा __" डैड को जेल से तो छुड़ाना ही पड़ेगा। "

" रुको मैं पता करती हूँ। " सोनिया ने कहा __" मेरी जानकारी में एक क़ाबिल वकील है जो सत्यम को जेल से छुड़ा सकती है। मेरी एक कॉलेज फ्रैण्ड है। मैने और अनीता ब्यास ने एक साथ ही एलएलबी किया था। उसके बाद उसने वकालत को ही अपना पेशा बना लिया जबकि मैं सत्यम के साथ घर बसा कर सिर्फ एक हाउसवाइफ बन कर रह गई। हलॉकि सत्यम ने मुझे इस बात के लिए कभी भी मना नहीं किया कि मैं वकालत न करू । बल्कि हमने तो साथ में ही इसकी पढ़ाई की थी। सत्यम तो चाहते थे कि हम दोनो वकील बन जाएॅ। मगर मैने ही इंकार कर दिया था। किन्तु आज सोचती हूँ कि काश मैं बन ही जाती तो आज अपने सत्यम को चुटकियों में जेल से छुड़ा लाती। "

" वकालत तो आप आज भी कर सकती हैं मॉम। " जयदीप ने कहा __" आपके पास इस सबके राइट्स तो होंगे ही। "

" सब कुछ है बेटा। " सोनिया ने कहा __" मगर ये सब अब इतना आसान भी नहीं है। उसके लिए पहले इस सबकी बारीकियों को समझना पड़ता है। कई तरह के केसों का अध्ययन करना पड़ता है। मैं कभी कोर्ट के अंदर वकील का चोंगा पहन कर नहीं गई , इस लिए मुझे इसका तज़ुर्बा भी नहीं है। दूसरी बात अनुभव भी कोई चीज़ होती है। जो कि मुझे

नहीं है। हर चीज़ का एक क्रम होता है। अगर आप समय के साथ ही साथ लाइन पर चल रहे हैं तब तो आप सीधी लाइन पर ही बिना किसी रुकावट के चलते रहेंगे पर अगर आपने लाइन को बहुत पहले ही छोंड़ दिया है तो फिर लंबे समय बाद उसी लाइन पर चलना ज़रा मुश्किल सा हो जाता है। वो फिर तभी अपनी लय पर आएगा जब उसकी नियमित प्रैक्टिस हो। ख़ैर , छोंड़ इस बात को। मैं अनीता को फोन लगा कर उससे बात करती हूँ। मेरे फ्रैण्ड सर्कल में एक वही है जो अब तक मेरे टच में में है। बॉकियों का तो कहीं पता ही नहीं है। "

कहने के साथ ही सोनिया ने अपने मोबाइल को अनलॉक करके उस पर अनीता ब्यास का नंबर ढूँढ़ने लगी। जबकि जयदीप ये कह कर सोफे से उठा कि वो कुछ देर में आता है अभी।

९२

केशव जी के जिस आदमी ने फोन पर उस जासूस के बारे में सूचित किया था उसका नाम निरंजन त्रिपाठी था। साक्षी ने जब केशव जी से कहा कि वो अपने उस आदमी से कहे कि उसे पकड़ने की कोशिश करे और खुद भी वापस जाएॅ वहॉ तो केशव ने वैसा ही किया था। उन्होंने निरंजन को फोन करके उससे पूछा था कि क्या वो अकेले उस जासूस को पकड़ सकता है तो निरंजन ने कहा कि वो इस बारे में कुछ कह नहीं सकता है। क्योंकि उसने सुना था कि कोई कोई जासूस लड़ने के मामले में भी काफी निपुण होते हैं। इस लिए बेहतर यही होगा कि वो उस पर सिर्फ नज़र रखे और फिर जब वो सब आ जाएॅगे तो उसे जल्द ही घेर लिया जाएगा। केशव जी को भी निरंजन की बात सही लगी। इस लिए वो फुल स्पीड में अपने आदमियों को लिए आ रहे थे।

इधर निरंजन बड़ी सफाई से जॉर्ज पर नज़र रखे हुए था। किन्तु उसे भी पता था कि ये जासूस यहॉ पर ज्यादा देर तक रुकने वाला नहीं है। उसके पास काले रंग की एक पल्सर बाइक थी। इस वक्त वह बाइक के ही पास नीचे बैठा बाइक में कुछ कर रहा था। निरंजन को समझ नहीं आ रहा था कि वो बाइक के पास इस तरह बैठ कर क्या कर रहा है? निरंजन उससे बस कुछ ही दूरी पर एक पेड़ की ओट में छुप कर खड़ा था और उस पर नज़र रखे हुए था। उसके पास हथियार के रूप में कुछ भी नहीं था। जबकि उसे पूर्ण विश्वास था कि उस जासूस के पास रिवाल्वर ज़रूर होगा। यही वजह थी कि वो खुल कर उसके सामने नहीं जा रहा था।

निरंजन के चेहरे पर प्रतिपल बेचैनी बढ़ती जा रही थी। क्योंकि उसे पता था कि जासूस अगर यहॉ से चला गया तो फिर उसे ढूॅढ़ पाना मुश्किल होगा। अतः वह बार बार देवी मॉ से प्रार्थना कर रहा था कि केशव जी सारे आदमियों को लेकर जल्दी आ जाएॅ। उसकी नज़र सामने ही थी। जहॉ पल्सर बाइक के पास नीचे बैठा वो जासूस कुछ कर रहा था। जासूस का चेहरा उसके बगल से दिख रहा था। निरंजन के मन में कई बार ये ख़याल आया था कि वो चुपके से जाए और उस जासूस को दबोच ले मगर अगले ही पल वो उसके पास जाने का अपना ये ख़याल त्याग देता था। क्योंकि बार बार उसे उसके पास रिवाल्वर होने का बोध करा देता था। उसने आस पास देख भी लिया था। पास में कहीं भी उसे कोई डंडे जैसी वस्तु भी न नज़र आई थी जिसे लेकर वो उस जासूस के पास चला जाता।

अभी निरंजन उस जासूस को देख ही रहा था कि तभी वो जासूस उठ कर खड़ा हुआ और अपने दाहिने पैर को बाइक के आगे वाले पहिये पर रिम में रख कर उस पर ज़ोर से दबाव बनाया। ये देख कर निरंजन के मस्तिष्क में झनाका सा हुआ। एकाएक ही उसके दिमाग़ की बत्ती जल उठी। साला इतनी देर से वो समझ नहीं पा रहा था कि ये जासूस बाइक के पास बैठा कर क्या रहा था? अब उसे समझ आया था। दरअसल बाइक का अगला पहिया पंचर था अथवा उसमें हवा कम थी। पहिये पर निरंजन का ध्यान पहली बार गया था। उसने ग़ौर से देखा पहिये पर जहॉ पर से हवा भरी जाती है वहॉ पर कोई पतली सी तार या फिर यू कहें कि पतला सा पाइप लगा हुआ था। जिसका दूसरा सिरा इस वक्त उस जासूस के दाहिने हाथ में

था।

निरंजन को समझ न आया कि अगर बाइक का अगला पहिया पंचर है या उसमे हवा कम है तो वो जासूस यहॉ पर उसे ठीक कैसे कर लेगा और ये पतला सा पाइप क्यों लगा रखा है उसने पहिये की निब पर? तभी वो जासूस पुनः बैठ गया। इस बार निरंजन ने भी अपनी जगह बदली और फिर ध्यान से देखा उसने। पाइप का दूसरा सिरा उस जासूस ने अपने होठों पर दबाया और फिर निरंजन ने देखा कि जासूस के दोनो गाल फूल गए। ये देख कर निरंजन की हॅसी छूट ही गई होती अगर उसने जल्दी से अपने मुह को अपने हाथो से भींच न लिया होता तो। दरअसल वो जासूस पाइप लगा कर मुह से हवा भर रहा था पहिये पर। बस यही देख कर निरंजन को बड़ी ज़ोर की हॅसी आ गई थी। उसने सोचा कि इसे जासूस किसने बना दिया? भला मुह से भी कोई बाइक के पहिये पर हवा भरता है? ये तो दुनिया का सबसे बड़ा आश्चर्य ही है।

निरंजन ने भी सोचा कि बेचारा यहॉ पर बाइक में हवा भरवाए भी तो कैसे? किन्तु मुख से हवा तो भरने से रही। कहने का मतलब ये कि जासूस की इस क्रिया पर निरंजन उसे बेवकूफ ही समझ रहा था। मगर वो उस वक्त हैरान रह गया जब वो जासूस पुनः उठा और पहले की भॉति अपना दाहिना पैर रिम में रख दबाव बनाया। उसके चेहरे से ज़ाहिर हुआ कि अब वो संतुष्ट है। उसने झुक कर तुरंत ही पाइप को पहिये के निब से निकाला। निरंजन ने देखा कि निब के पास लगे पाइप के उस छोर पर कोई चीज़ लगी हुई थी। ये देख कर निरंजन का दिमाग़ घूम गया। चकित होकर वह उस जासूस को देखे जा रहा था। अब उसे समझ आया कि वो जासूस यूॅ ही तो नहीं बन गया होगा। ज़रूर उसमें काबीलियत थी।

अभी निरंजन ये सब सोच ही रहा था कि तभी उसने देखा कि वो जासूस उस पाइप को लिए बाइक के बाएॅ साइड आया और फिर अपनी दाहिनी टॉग उठा कर बाइक की सीट पर बैठ गया। ये देख कर निरंजन एकदम से हड़बड़ा गया। वो समझ गया कि अब ये जासूस यहॉ से चला जाएगा। निरंजन को समझ न आया कि वो उसे कैसे यहॉ से जाने से रोंके? वो खुद निहत्था था वरना वो कोई जोखिम उठाने का सोचता भी। उसे पूरा यकीन था कि उस जासूस के पास पिस्तौल होगी। यही वजह थी कि वो उसके पास खुल कर जा नहीं रहा था। किन्तु अब हालात बदल गए थे। क्योंकि निरंजन की ऑखों के सामने ही वो जासूस बाइक पर बैठ चुका था और अब ये भी तय था कि वो बाइक को स्टार्ट कर यहॉ से चला ही जाएगा।

निरंजन ने देखा कि बाइक पर बैठा जासूस उस पतले से पाइप को गोल गोल छल्ली की शक्ल देकर समेट रहा था। उसकी पीठ निरंजन की तरफ ही थी। पाइप का दूसरा सिरा जासूस की दाहिनी जॉघ से थोड़ा ही नीचे झूल रहा था और प्रतिपल ऊपर की तरफ उठता भी जा रहा था। ये देख कर निरंजन के दिमाग़ की बत्ती जली। उसके चेहरे पर एकाएक ही कुछ सोच कर चमक आ गई। वो फुर्ती से अपनी जगह से हिला और फिर बड़ी सावधानी व सतर्कता से लंबे लंबे क़दम बढ़ाते हुए जासूस के पीछे पहुॅच गया।

जॉर्ज को सहसा अपने पीछे किसी की मौजूदगी का एहसास हुआ। उसने इस एहसास के

तहत ही जल्दी से पीछे मुड़ कर देखना चाहा मगर अगले ही पल जैसे बिजली सी कौंधी। निरंजन ने डर व भय की वजह से बड़ी ही फुर्ती का प्रदर्शन किया था। उसने जासूस के मुड़ने से पहले ही झुक कर जासूस के नीचे जॉघ के पास झूलते उस पाइप को पकड़ा और फिर तेज़ी से खड़े होकर उसी छोर से दूसरा हाथ सरका कर उसने जासूस के सिर से अपनी एक कलाई घुमा कर बड़ी फुर्ती से उस पाइप को जासूस की गर्दन पर कस दिया।

जॉर्ज को ज़रा भी उम्मीद नहीं थी कि उसके साथ पलक झपकते ही ऐसा कुछ हो सकता है। वह एकदम से हकबका कर रह गया था। हलॉकि उसने खुद को बड़ी तेज़ी से संभाला था मगर तब तक उसके गले में निरंजन ने उस पाइप को किसी फॉसी के फंदे की तरह कस दिया था। निरंजन ये सोच कर जी जान लगाए हुए था कि अगर उसने ज़रा सी भी ढील दी तो ये जासूस उसे जान से मार देगा। निरंजन के दिमाग़ में बस एक यही बात थी , बाकी उसे किसी बात का कोई होश ही नहीं था। उसे इस बात का ज़रा भी इल्म नहीं रह गया था कि उसके द्वारा इतनी ताकत से गले में पाइप को कसने से वो जासूस कुछ ही पलों में मर भी सकता है।

उधर जॉर्ज जल बिन मछली की तरह छटपटाए जा रहा था। वो अपने दोनो हाथो से अपने गले में फॅसे पाइप को पकड़ने की कोशिश कर रहा था मगर पाइप में निरंजन की पूरी ताकत लगी हुई थी। जिसकी वजह से जॉर्ज उसे हिला भी नहीं पा रहा था। देखते ही देखते जॉर्ज का बुरा हाल हो गया। उसका गोरा चेहरा लाल सुर्ख पड़ गया। चेहरे पर पसीना और तड़प साफ पता चल रही थी। किसी किसी पल वह खॉसने भी लगता था। उसकी ऑखों की पुतलियॉ जैसे बाहर कूद पड़ने को आतुर हो उठी थीं।

जॉर्ज की हालत प्रतिपल बिगड़ती जा रही थी। बाइक पर बैठा वह बुरी तरह खुद को झटके भी दे रहा था मगर मजाल है कि निरंजन की पकड़ में ज़रा सा भी ढीलापन आया हो। कहते हैं कि मौत से बचने के लिए इंसान अंत तक हर तरह से प्रयास करता है फिर भले ही उसके प्रयास विफल ही होते रहें। निरंजन के सिर पर जुनून सवार था और वो किसी यमराज की तरह जॉर्ज के सिर पर आ खड़ा हुआ था। जॉर्ज को एहसास हो गया कि अब वो मरने ही वाला है। उसे अब सास लेना भी मुश्किल पड़ रहा था। बुरी तरह छटपटाते हुए जॉर्ज ने एकाएक अपने एक हाथ को गले में फॅसे पाइप से हटा कर उसी हाथ की कुहनी का वार बड़ी तेज़ी से पीछे निरंजन के पेट के हल्का ऊपरी भाग पर किया। उसके इस वार से निरंजन के हलक से पीड़ा भरी कराह निकल गई और उसकी पकड़ तथा उसकी ताकत कमज़ोर पड़ गई। हलॉकि उसने जल्दी से उस दर्द को बर्दाश्त करके पुनः पाइप को कसना चाहा मगर तक मानो देर हो गई। क्योंकि जैसे ही निरंजन ने पुनः ताकत लगाई वैसे ही जॉर्ज ने कुहनी का वार जल्दी जल्दी कई बार निरंजन के पेट में कर दिया था। नतीजा ये हुआ कि निरंजन की पकड़ काफी ज्यादा ढीली व कमज़ोर पड़ गई। वह बुरी तरह दर्द व पीड़ा से बिलबिला उठा था।

निरंजन के कमज़ोर पड़ते ही जॉर्ज ने बड़ी तेज़ी से अपने गले से उस पाइप को पकड़ कर खींचा और फिर उसे ऊपर करते हुए सिर से निकाल दिया। हालत तो उसकी अब भी बहुत

ख़राब थी। बुरी तरह खॉस रहा था तथा बुरी तरह गहरी गहरी सासें भी ले रहा था। गोरा चेहरा लाल सुर्ख पड़ गया था। चेहरे पर ढेर सारा पसीना उभर आया था। गले से पाइप को निकालते ही वह बाइक से खुद को बाएॅ साइड गिरा लिया था तथा साथ ही कई पलटियॉ भी खा लिया था। मगर तब तक उसकी पसली में निरंजन के बूट की ज़बरदस्त ठोकर लग चुकी थी। निरंजन जानता था कि अगर वह अब भी उसे सम्हलने का मौका दिया तो वो उसके लिए काल बन सकता है। अतः वह मौत के डर से उस पर वार पे वार किये जा रहा था।

जॉर्ज अभी अभी मौत से बच कर निकला था। इस लिए उसे खुद पर नियंत्रण पाने के लिए कुछ समय चाहिए था मगर निरंजन था कि उस पर प्रहार किये जा रहा था। अचानक ही निरंजन ने देखा कि जासूस ने अपने हाथ को पीछे ले जाकर रिवाल्वर निकाल रहा है। ये देख कर निरंजन के समूचे जिस्म में मौत की सिहरन दौड़ गई। जैसे ही जॉर्ज ने रिवाल्वर निकाल कर अपने हाथ को निरंजन की तरफ उठाना चाहा वैसे ही मौत के डर से निरंजन ने उसकी उस कलाई पर अपनी टॉग चला दी। नतीजा ये हुआ कि जॉर्ज के हाथ से रिवाल्वर छूट कर दूर जा गिरा तथा कलाई पर तेज़ ठोकर लगने से वो दर्द से कराह उठा।

निरंजन ने देखा कि रिवाल्वर उसकी पहुॅच में ही है इस लिए वो जल्दी से रिवाल्वर की तरफ लपका मगर तभी वह मुह के बल ज़मीन पर गिरा। गिरते ही उसके मुख से चीख़ निकल गई। जॉर्ज ने पलट कर उसका पैर पकड़ कर खींच लिया था जिससे वो अनबैलेंस होकर मुह के बल गिरा था। रिवाल्वर उसकी पहुॅच से लगभग डेढ़ दो हाथ ही दूर था। इधर निरंजन का पैर पकड़ कर खींचते ही जॉर्ज उसके ऊपर एकदम से आने की कोशिश की तो निरंजन घबरा कर पलट गया। नतीजतन इस बार जॉर्ज मुह के बल गिरा। किन्तु उसके एक हाथ में निरंजन का पैर अभी भी था।

निरंजन ने अपने पैर को उससे छुड़ाने के लिए ज़ोर से झटका दिया मगर उसका पैर तो न छूटा किन्तु झटकने से उसका पैर जॉर्ज की छाती से टकराया। निरंजन आवेश और घबराहट में अपने पैर को झटका देता ही रहा, जिसका नतीजा ये हुए कि बार बार छाती पर उसका पैर ज़ोर से लगने से आख़िर जॉर्ज को उसका पैर छोंड़ना ही पड़ा। इधर निरंजन जो कि दोनो हाथ पीछे की तरफ ज़मीन पर टिका कर बैठ चुका था वो अपने पॉव के आज़ाद होते ही तेज़ी से रिवाल्वर की तरफ पलट कर लगभग उस पर कूद सा गया। उसके हाथ में रिवाल्वर आ चुका था। अभी वह रिवाल्वर के साथ पलटा ही था कि तभी जॉर्ज उसके ऊपर जंप मार कर आ गया।

जॉर्ज ने तुरंत ही निरंजन के रिवाल्वर वाले हाथ को पकड़ने के लिए अपना एक हाथ बढ़या तो निरंजन ने अपने उस हाथ को ऊपर अपने सिर के पीछे साइड कर लिया। जॉर्ज जैसे ही उसे पकड़ने के लिए उस तरफ झुका वैसे ही निरंजन ने अपना दूसरा हाथ छुड़ा कर ज़ोर से एक मुक्का जॉर्ज की कनपटी में मारा जिससे जॉर्ज उसके ऊपर से दूसरी तरफ पसर गया। इधर जॉर्ज के गिरते ही निरंजन लेटे लेटे ही एक साथ तीन चार पलटियॉ खाता चला गया। जब तक जॉर्ज उठ कर उसके पास पहुॅचता तब तक निरंजन उठ कर बैठ चुका था, साथ ही रिवाल्वर वाला हाथ भी ऊपर उठा कर उस पर तान चुका था।

" रुक जा । " निरंजन आवेश में जल्दी से चिल्लाया था __" वरना इस रिवाल्वर की सारी गोलियॉ तेरे सीने में उतार दूँगा और ये मैं यूँ ही नहीं कह रहा हूँ बल्कि सचमुच ऐसा कर भी दूँगा। क्योंकि तुझे जान से मार देने पर भी मुझे कुछ नहीं वाला। बल्कि इनाम ही मिलेगा मुझे। "

जॉर्ज निरंजन का ये डायलॉग तथा उसके खतरनॉक लहजे को देख कर एकदम से अपनी जगह पर गया। उसके चेहरे पर पहली बार डर व भय के चिन्ह नज़र आए। किन्तु उसे ये समझ नहीं आया कि ये आदमी है कौन और उसके पीछे उसकी मौत बन कर कहॉ से आ गया था? क्या ये विक्रम व साक्षी का आदमी है जो उसके पीछे ही लगा हुआ था?

" कौन हो तुम ?" जॉर्ज ने सतर्क भाव से पूछा __" और इस तरह मुझ पर जानलेवा हमला करने का क्या मतलब है तुम्हारा ?"

" जिस तरह तू मंत्री का कुत्ता बन कर हमारे बॉस के अज़ीज़ लोगों के पीछे लगा हुआ था। " निरंजन ने लहजे को कठोर बनाते हुए कहा __" उसी तरह मैं भी तेरे पीछे लगा हुआ था। ख़ैर , अब तू पकड़ में आ ही चुका है तो ये भी समझ गया होगा कि अब तेरा क्या हस्र होने वाला है ?"

" ओह तो तुम्हें ये ग़लतफहमी है। " जॉर्ज ने बड़े अजीब भाव से कहा ___" कि तुमने मुझे पकड़ लिया है ?"

" ज्यादा शेखी मत झाड़। " निरंजन उसकी बात पर गड़बड़ा सा गया , फिर बोला __" वरना बता ही चुका हूँ कि तुझे जान से मार देने पर मुझे कुछ नहीं होगा बल्कि इनाम ही मिलेगा। "

" अच्छा। " जॉर्ज सहसा मुस्कुराया __" तो फिर देर किस बात की है प्यारे ? तुम्हारे निशाने पर हूँ , खत्म कर दो मुझे और जल्दी से अपना इनाम भी हासिल कर लो। "

" लगता है। " निरंजन अंदर ही अंदर हैरान __" कि तुझे मरने की बहुत जल्दी है। "

" क्या करें दोस्त ?" जॉर्ज ने कहा __" अब जब तुमने कह ही दिया है ऐसा तो फिर देर किस बात की करना ? मुझे लगता है कि तुम्हें भी अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहिए। अतः मेरी सलाह मानो और जल्दी से मुझे खत्म कर दो। "

निरंजन उसकी इस बात पर समझ न सका कि ये जासूस आख़िर है किस किस्म का व्यक्ति? मौत सामने खड़ी है और ये ऐसी बातें कर रहा है। इसे ज़रा भी मौत का ख़ौफ नहीं है। जबकि निरंजन तो बस उसे डरा और धमका ही रहा था। ताकि वह कोई बेजा हरकत करने की कोशिश न करे। उसे पता था थोड़ी ही देर में उसके बॉस यानी कि केशव शर्मा अपने आदमियों सहित यहॉ पहुँच ही जाएँगे। अतः तब तक उसे इस जासूस को रोंके रखना था। मगर उसकी इन ऊल जुलूल बातों ने उसका सिर चकरा कर रख दिया था।

" क्या सोचने लगे प्यारे ?" जॉर्ज उसे चुप देख कर कह उठा __" अरे भई चलाओ गोली मुझ पर और खत्म करो मुझे। तुम तो यार लगता है बस डींगे ही मारना जानते हो। जबकि मुझसे अब इन्तज़ार नहीं हो रहा। "

" ओये ज्यादा बकवास न कर समझा। " निरंजन ने उत्तेजित भाव से कहा __" वरना सच में तेरा राम नाम सत्य कर दूँगा मैं। "

जॉर्ज कोई मामूली इंसान नहीं था। घुटा हुआ जासूस था, उसे समझते देर न लगी कि निरंजन उसे सिर्फ धमका रहा है। अगर उसे जान से मारना ही होता तो इतनी बातें न करता बल्कि कब का उसे यमलोक पहुँचा दिया होता। अतः उसने पूरी सतर्कता से निरंजन की हर गतिविधि को नोट करते हुए बेख़ौफ निरंजन की तरफ बढ़ने लगा। ये देख कर निरंजन अंदर ही अंदर बुरी तरह घबरा गया। साथ ही उसके दिमाग़ ने काम करना भी बंद कर दिया। उसे समझ न आया कि ये साला अब उसकी तरफ क्यों बढ़ रहा है?

" ये ... ये तू क्या कर रहा है ?" बुरी तरह बौखलाते हुए निरंजन हकलाते हुए बोल उठा ___" मैं कहता हूँ रुक जा वरना सच में गोली मार दूँगा तुझे। "

" मैं भी तो यही चाहता हूँ प्यारे। " जॉर्ज ने मुस्कुराते हुए कहा __" मगर तुम हो कि मुझे जान से मारते ही नहीं। इस लिए अब मैं खुद ही तुमसे रिवाल्वर लेकर खुद को गोली मार लूँगा। मुझे समझ आ गया है कि तुमसे रिवाल्वर चलाया नहीं जाएगा। "

" तू ... तू पागल है क्या रे ?" निरंजन हैरान परेशान सा बोल पड़ा __" देख मेरी तरफ मत आ। वरना अगर मेरा भेजा गरम हो गया न तो तू सच में मेरे हाथो मारा जाएगा। "

" नहीं प्यारे। " जॉर्ज बोला __" मुझे पता चल गया है कि अब तुम मुझे गोली नहीं मार सकते। क्योंकि तुम्हें मुझसे अचानक ही बेइंतहां मोहब्बत हो गई है। हाय , ये मोहब्बत भी न बहुत बुरी चीज़ होती है कम्बख़्त। "

" साले। " निरंजन उसकी बातों से बुरी तरह भन्ना गया , बोला __" तुझे एक बार में बात समझ में नहीं आती है क्या ? अब अगर एक क़दम भी आगे बढ़ाया तूने तो देख लेना यहीं पर ढेर हुआ नज़र आएगा। "

" ऐसा ग़ज़ब मत करना प्यारे। " जॉर्ज चहका __" ऐसा लगता है कि तुम्हारी तरह मुझे भी तुमसे मोहब्बत हो रही है। ओह नहीं नहीं .... मुझे किसी से भी मोहब्बत नहीं हो सकती। खास कर उससे तो हर्गिज़ भी नहीं जो खुद ही मेरी तरह औज़ार लिए फिरता हो। "

निरंजन बोला तो कुछ नहीं किन्तु उसे एहसास हुआ कि फालतू की बकवास करते हुए ये जासूस उसके काफी पास आ गया है। अभी निरंजन ये सोच ही रहा था कि अचानक ही मानो बिजली सी कौंधी। जॉर्ज ने हैरतअंगेज़ कारनामा किया था। पलक झपकते ही उसका जिस्म हवा में लहराया और इससे पहले की निरंजन कुछ समझ पाता जॉर्ज उसको लिए ज़मीन पर कई पलटियॉ खाता चला गया। निरंजन के हाथ से रिवाल्वर जाने कब छूट गया था। अपने

ऊपर हुए इस अप्रत्याशित हमले से निरंजन बुरी तरह बौखला गया था। जब तक उसे कुछ होश आया तब तक देर हो चुकी थी।

पलटियॉ खाने के बाद जॉर्ज सबसे पहले उठा और फिर उसने निरंजन को कुछ भी करने का अवसर नहीं दिया। लात घूँसों की बरसात सी कर दी उसने। निरंजन की चीख़ें फिज़ा में गूँजती रही।

" हमने कहा था न प्यारे। " जॉर्ज निरंजन की छाती पर बैठा हुआ बोलाा __" कि तुमसे रिवाल्वर नहीं चलाया जाएगा। हमने तो ये भी कहा था कि हमें खत्म कर दो मगर नहीं तुम्हें तो हमसे मोहब्बत हो गई थी न। अब भुगतो मेरी जान। पीछे से वार करने वाला कायर बुज़दिल व हिंजड़ा होता है और ये सब बातें तुम में हैं , ये तुमने पहले ही साबित कर दिया था। "

अभी जॉर्ज ये सब निरंजन को बोल ही रहा था कि तभी वातावरण में वाहनों के आने का शोर गूँजा। जॉर्ज ये महसूस करते ही बुरी तरह उछल पड़ा। उसने पलट कर देखा ही था कि निरंजन ने तेज़ी से एक मुक्का उसकी गर्दन के पास जड़ दिया। जिससे एक चीख़ के साथ जॉर्ज पलट कर नीचे गिर गया। उसके गिरते ही निरंजन उठा और सबसे पहले उसने जॉर्ज की पसली में बूट की ज़ोरदार ठोकर मारी। ठोकर लगते ही जॉर्ज दर्द से बिलबिला उठा।

इधर देखते ही देखते चारो तरफ से केशव जी ने तथा उनके आदमियों ने दोनो को घेर लिया। कुछ लोग दौड़ते हुए आए और जॉर्ज को पकड़ लिया। जॉर्ज समझ गया कि अब कुछ नहीं हो सकता। अतः उसने भी समझदारी का परिचय दिया और बिना कोई हील हुज्जत किये उनके द्वारा पकड़ कर ले जाने से चला गया। थोड़ी ही देर में वह केशव जी के आदमियों के बीच जीप में बैठा था। उसके दोनो हाथ पीछे की तरफ करके रस्सी से बाँध दिये गए थे। उसका जो रिवाल्वर लड़ते वक्त निरंजन के हाथ से छूट कर गिर गया था उसे निरंजन ने फिर से उठा कर अपने पास रख लिया था। जॉर्ज को लिए वो काफिला वापस रेवती के लिए चल पड़ा था। केशव जी जॉर्ज को पकड़ कर बेहद खुश थे। उन्होंने निरंजन को इसके लिए शाबाशी दी तथा ये भी कहा कि उसने वास्तव में बहुत बड़ा काम किया है इस लिए उसे इसके लिए इनाम ज़रूर मिलेगा। निरंजन इनाम की बात से बेहद खुश हो गया था। इतना ही नहीं जासूस को पकड़वाने से उसका सिर गर्व से ऊँचा हो गया था।

९३

उधर हॉस्पिटल में ।

हम सब बुझे बुझे से बैठे थे। मानुषी के लिए हर कोई चिंतित व परेशान था। हम में से किसी को भी ये उम्मीद नहीं थी कि सत्यम सिंह ऐसा कुछ कर सकता है। वरना ऐसा होता ही नहीं। ख़ैर , लंबे इन्तज़ार के बाद आख़िर ओटी का दरवाजा खुला और डॉक्टर बाहर आया। हम सब उसे देख कर एक साथ एक ही झटके से उस लम्बी चेयर से उठ कर खड़े हो गए थे। फिर लगभग एक साथ ही डॉक्टर की तरफ लपके थे।

" डॉक्टर साहब। " मैने उतावलेपन से किन्तु बेहद ही अधीर भाव से पूछा __" सब कुछ ठीक तो है न ? मानुषी ठीक तो है न ?"

" डोन्ट वरी यंग मैन। " डॉक्टर ने कहा __" वो अब ख़तरे से बाहर हैं। शुकर था कि बुलेट उनकी राइट साइड की पीठ पर थोड़ा निचले हिस्से पर लगी थी। अगर लेफ्ट साइड थोड़ा ऊपर लगती तो यकीनन वो गोली उनके दिल को भेद सकती थी। हमने बुलेट निकाल दिया है। अब वो ठीक हैं। थोड़ी देर बाद उन्हें दूसरे कमरे में शिफ्ट कर दिया जाएगा तो आप सब उनसे मिल सकेंगे। "

" ओह थैंक्यू डॉक्टर। " अमर बोल पड़ा __" थैंक्यू सो मच। आपने बहुत बड़े संकट से बचा लिया। "

" थैक्यू तो आप लोगों का भी करना चाहिए। " डॉक्टर ने कहा __" जो आप वक्त रहते उन्हें यहॉ लाने में कामयाब हो गए। वरना सचमुच कुछ भी हो सकता था। मुझे फोन पर एसीपी साहब ने इस बारे में बता दिया था और कहा भी था कि जैसे ही आप लोग यहॉ आए वैसे ही हम उनका तुरंत इलाज़ शुरू कर दें। "

थोड़ी देर डॉक्टर से और बातचीत हुई उसके बाद वो चला गया। हम सब अब खुश थे कि मानुषी अब ठीक है। थोड़ी ही देर में एक नर्स आई उसने बताया कि हम मानुषी से मिल सकते हैं। अतः उसके कहने के साथ ही हम सब लगभग दौड़ते हुए नर्स के पीछे पीछे गए और उस कमरे में दाखिल हो गए जिसमें मानुषी को शिफ्ट किया गया था।

कमरे में पहुँचते ही हमने देखा कि हॉस्पिटल वाले बेड पर मानुषी करवॅट के बल लेटी हुई थी। उसका चेहरा दरवाजे की तरफ ही था किन्तु ऑखें बंद थी। हम लोगों के आने की आहट पाते ही उसने अपनी ऑखें खोल दी। जैसे ही उसने हमे देखा उसके चेहरे पर एक साथ कई तरह के भाव आए और फिर सहसा उसके होठों पर फीकी सी मुस्कान फैल गई।

साक्षी दीदी व श्रुति दीदी एक साथ ही उसकी तरफ बढ़ीं और उसके पास खड़ी हो गई। साक्षी दीदी ने नम ऑखों से उसके माथे से होते हुए सिर पर हाथ फेरा और फिर झुक कर उसके माथे को चूम लिया। उनके मुख से कोई लफ्ज़ नहीं निकला। कदाचित कुछ कहने की हिम्मत

ही न हुई थी उनमें। किन्तु इस क्रिया से ही उन्होंने जता दिया कि उसके ठीक होने पर उन्हें कितनी खुशी हुई है। श्रुति दीदी भी नम ऑखों से मानुषी को देख रही थी।

" भगवान का लाख लाख शुकर है मानुषी। " श्रुति दीदी उसे प्यार से मानुषी कहा करती हैं , बोली ___" उसने तुझे कुछ नहीं होने दिया वरना जब तुझे गोली लगी थी न तो जैसे हम सबके जिस्मों से प्राण ही निकल गए थे। "

" ये ज़िंदगी उसी गंदे इंसान की दी हुई थी दीदी। " मानुषी ने करुण भाव से कहा __" जिसे उसने गोली मार कर अपनी तरफ से अब खत्म कर दिया है। अब ये मेरा दूसरा जन्म है जिसमें अब उसका कोई हक़ नहीं है। बल्कि आप लोगों का है। " कहने के साथ ही मानुषी ने साक्षी दीदी की तरफ देखा फिर बोली __" मुझे आप पर नाज़ है दीदी कि आपने विक्रम का साथ दिया और सच्चाई का साथ दिया। आज आपकी ही वजह से हम सब उस शैतान से बच कर यहॉ आ गए हैं। "

" साथ तो हमेशा उसी का देना चाहिए मानुषी। " साक्षी दीदी ने कहा __" जिसका साथ देने से हमारे ज़मीर तथा हमारी आत्मा को तक़लीफ न हो बल्कि उन्हें तृप्ति का एहसास हो। मॉ बाप हमेशा वंदनीय होते हैं और वो मेरे लिए भी हमेशा रहेंगे किन्तु वो मॉ बाप जिनकी अच्छी छवि में मन में है ना कि वो जो अपनी ही बहू बेटियों के बारे में ग़लत सोचते हैं। थोड़ा बहुत जो सम्मान बाकी था उनके लिए वो आज की इन घटनाओं से पूरी तरह खत्म हो चुका है। अब इस दिल में उनके लिए सिर्फ और सिर्फ नफ़रत व घृणा है। आज अगर तुझे कुछ हो जाता न तो क़सम ऊपर वाले की मैं उस इंसान का वो हाल करती कि दुबारा इस धरती पर पैदा होने से इंकार कर देता। "

" जाने दीजिए दीदी। " मानुषी ने कहने के साथ ही मेरी तरफ देखा , फिर मुस्कुरा कर बोली ___" एक तरह से ये अच्छा ही हुआ। इसी बहाने सही मगर मुझे आज अपने इस भाई का अपने लिए इतना सारा प्यार व तड़प तो देखने को मिल गई। मैं महसूस कर रही थी उस वक्त जब मैं इसकी बाहों में असहाय सी पड़ी थी। मेरे कानों में इसकी हर बात सुनाई दे रही थी। मैं सोच रही थी कि एक मेरा वो भाई था जिसने कभी ये नहीं जताया कि वो अपनी बहनों से कितना प्यार करता है और एक ये भाई है जिसे हमने बचपन से जलील करके दुख दिया आज वो मुझे उस हालत में देख कर ऐसे तड़प रहा था जैसे गोली मुझे नहीं बल्कि इसको लगी थी। ये ख़याल बार बार मन में आता है कि इतना प्यार करने वाले भाई से हमने अब तक इतनी घृणा कैसे की थी ?"

" ओये बंदरिया। " मैं एकदम से उसके पास आकर बोल पड़ा ___" ये क्या बकवास किये जा रही है तू ? तुझसे मैं कोई प्यार , व्यार नहीं करता समझी। उस वक्त तो मैं वो सब नाटक कर रहा था। "

" चल ठीक है भाई। " मानुषी ने मुस्कुरा कर कहा __" मान लिया कि वो सब तेरा नाटक था मगर सच कहूँ तो मुझे वो तेरा नाटक भी बहुत भाया विक्रम । मैं चाहती हूँ कि तू जीवन भर मेरे साथ ऐसा ही नाटक करता रहे। "

" अब तुम दोनो यहीं पर न शुरू हो जाना। " सहसा श्रुति दीदी ने मुस्कुराते हुए कहा __" जाओ जाकर पता करो डॉक्टर से कि हम इसे यहॉ से कब तक ले जा सकते हैं ?"

" अरे इसकी क्या ज़रूरत है दीदी ?" मैने मुस्कुरा कर कहा __" मैं तो कहता हूॅ कि इसे यहीं पर पड़ी रहने देना चाहिए और हम लोगों को अब घर चलना चाहिए। "

" तू न अब मुझसे पिटेगा सच में। " श्रुति दीदी ने ऑखें दिखाते हुए कहा __" अब जा जल्दी यहॉ से। "

" जो हुकुम आपका। " मैने अदब से सिर झुका कर कहा और फिर कमरे से बाहर चला आया। मेरे पीछे पीछे अमर भी मुस्कुराता हुआ चला आया।

" मेरे भाई को इस तरह भगा कर आपने अच्छा नहीं किया दीदी। " सहसा मानुषी ने कहा __" जब वो मुझे इस तरह चिढ़ाता है तो मुझे भी बड़ा अच्छा लगता है। मैं भी उसके जैसा ही बर्ताव करने लगती हूॅ। मैं चाहती हूॅ कि जिन चीज़ों के लिए वो बचपन से तरसा था वो उन सभी चीज़ों को आज जी भर के जिए। हमारी वजह से अब तक जितना उसका दिल दुखा है अब वो हमारे साथ ऐसी ही नोंक झोंक करके अपने उस दिल को खुश रखे। "

" मुझे पता है । " श्रुति दीदी ने कहा __" मुझे भी अच्छा लगता है जब वो तुझे इस तरह बंदरिया कह कर चिढ़ाने लगता है। किन्तु मैं उसे ये सब कह कर इस लिए रोंक देती हूॅ कि मुझे भी बड़े होने का इस तरह से फायदा उठाने में मज़ा आता है। मैं ये देख कर खुश हो जाती हूॅ कि कैसे वो अपने से बड़ों की बात सहजता से मान जाता है। अब साक्षी से ही पूछ ले , ये तो उसके साथ ही रहती है। संभव है कि ये भी मेरी तरह अपने बड़े होने का फायदा उठाती हो। क्यों साक्षी सच कहा न मैने ?"

" सबकी सोच अलग अलग होती है श्रुति। " साक्षी दीदी ने कहा __" तुम दोनो को ऐसा करके खुशी मिलती है जबकि मेरा कुछ और ही हिसाब है। तुम तो जानती ही हो कि मेरा स्वभाव कैसा है ?"

" हॉ जानती हूॅ। " श्रुति दीदी ने कहा __" कि तेरा स्वभाव हिटलर वाला है। मगर कभी खुद को बदल कर भी देख। संभव है कि कुछ नया नज़र आये। "

श्रुति दीदी की इस बात पर साक्षी दीदी मुस्कुराई और कुछ पल के लिए कहीं खो सी गईं फिर जैसे उन्होंने तुरंत ही खुद को संभाला और ये कह कर बाहर की तरफ चली गईं कि उसे कुछ ज़रूरी फोन काल करना है। साक्षी दीदी के जाने के बाद श्रुति दीदी ने वापस मानुषी की तरफ देखा।

" तो आपको भी विक्रम के साथ ऐसा करने में मज़ा आता है ?" मानुषी ने मुस्कुराते हुए कहा।

" अरे नहीं रे। " श्रुति दीदी ने अजीब भाव से कहा __" ऐसी कोई बात नहीं है। मैं तो ऐसे

ही कह रही थी। ख़ैर छोंड़ , अब तू ठीक है न ? तुझे पीठ पर पेन तो नहीं हो रहा न अभी ?"

" नहीं दीदी। " मानुषी ने कहा __" अब अच्छा लग रहा है। बस सीधा लेटने में प्राब्लेम हो रही है। "

" वो तो होगी ही। " श्रुति दीदी ने कहा _" अभी नया नया ज़ख्म है। इस लिए तुझे सीधा लेटने में कुछ दिन प्राब्लेम होगी। तुझे भी इस बात का ख़याल रखना होगा और हॉ विक्रम के साथ ज्यादा उछल कूद मत करने लगना। वरना तेरा ये ज़ख्म फिर से ताज़ा हो जाएगा। "

" ऐसा तो तभी संभव है दीदी। " मानुषी ने मुस्कुराते हुए कहा __" जब वो मेरे सामने ही न आए। क्योंकि जैसे ही वो मेरे सामने आएगा। मैं फिर उसे छेंड़ूँगी और फिर क्या होगा ये तो आप जानती ही हैं। "

" तू नहीं सुधरने वाली। " श्रुति दीदी ने हैरानी से देखते हुए कहा __" अरे पागल कुछ दिन तो सबर कर ले। "

" हाय दीदी ! कुछ दिन विक्रम से झगड़ा किये बिना कैसे रह पाऊँगी मैं ?" मानुषी ने आह सी भरते हुए कहा __" पता नहीं क्यों पर उससे झगड़ा करने का हर पल दिल करता है मेरा। मैं अकेले में सोचा करती हूँ कि हर वक्त विक्रम को छेंड़ना क्या अच्छी बात है ? मगर ये सब सोचने के बावजूद ऐसा हो जाता है। आप ही बताइये मैं क्या करू दीदी ?"

श्रुति दीदी मानुषी की बात सुन कर बस मुस्कुरा कर रह गई। उसके चेहरे पर कई तरह के भाव आए और चले गए। जबकि उसकी मनोदशा से अंजान मानुषी ने इस बार ज़रा गंभीरता से कहा__"एक बात कहूँ दीदी??"

" हम्म कहो। " श्रुति दीदी ने धीरे से कहा।

" काश ! विक्रम मेरा भाई न होता। " मानुषी ने धड़कते हुए दिल के साथ कहा।

" ये ... ये क्या कह रही हो तुम ??" श्रुति दीदी उसकी इस बात पर बुरी तरह चौंकी। ऑखों में हैरत के चिन्ह लिए वो बोली __" इसके पहले तो कह रही थी कि विक्रम जैसा भाई पा कर तू बहुत खुश है। फिर अब ऐसा क्यों कह रही है ?"

" हर लड़की सोचती है कि उसे ऐसा जीवन साथी मिले जो उससे बहुत ही ज्यादा प्यार करे। " मानुषी ने कहीं खोये हुए से कहा __" उसकी केयर करे तथा उसे एक पल के लिए भी खुद से दूर न करे। उसे कभी किसी बात पर दुखी न होने दे। ये सारी खूबियॉ विक्रम में हैं दीदी। मुझे पता है कि वो अपनी बहनों पर अपनी जान छिड़कता है। मगर उसे देख कर ये ख़याल भी मन में आता है कि काश विक्रम के जैसा ही हमें जीवन साथी मिले। मगर आज के समय में ये संभव नहीं है और अगर मान भी लें कि ऐसे इंसान इस दुनियॉ में मिल भी सकते हैं तो क्या उनमें से कोई हमारा जीवन साथी बनेगा ?"

" तो तू कहना क्या चाहती है ?" श्रुति दीदी के चेहरे पर सशंक भाव उभरे।

" आपको मेरी बातें यकीनन बुरी अथवा ग़लत लगेंगी दीदी। " मानुषी ने उसी गंभीरता से कहा __" मगर ये सच है कि मेरे मन में कभी कभी ये ख़याल आता है कि काश विक्रम मेरा भाई न होता तो मैं उसे ही अपना जीवन साथी बना लेती। विक्रम को देखते ही उस पर निसार हो जाने का दिल करता है दीदी। उसे देख कर मैं भूल जाती हूँ कि वो मेरा भाई है , और फिर जब ख़याल आता है कि वो मेरा भाई है तो जाने क्यों इस बात से दिल में दर्द होने लगता है ? अंदर से एक टीस उभरती है और फिर समूचा जिस्म कॉप कर रह जाता है। "

" तू न कुछ भी बोलती रहती है। " श्रुति दीदी ने बुरा सा मुह बनाया। ये अलग बात है कि मानुषी की इन बातों से उसके अंदर एक अजीब से एहसास की झुरझरी सी दौड़ गई थी , बोली __" चल अब ज्यादा इस बारे में मत सोच। विक्रम आता ही होगा अभी। तुझे यहाँ से लेकर भी तो चलना है न। "

" आप मेरी बातों को नज़रअंदाज़ कर रही हैं न ?" मानुषी ने श्रुति दीदी के चेहरे को ग़ौर से देखते हुए कहा __" ऐसा मत कीजिए न दीदी। एक आप ही हैं जिनसे मैं अपने दिल की हर बात कर सकती हूँ। इस लिए मेरी बात सुन लीजिए और उस पर अपनी राय भी दीजिए कि मैं जो कुछ कह रही हूँ वो सही है या ग़लत ?"

" क्या राय दूँ मैं ?" श्रुति दीदी ने मानुषी की ऑखों में झाँकते हुए कहा __" तूने तो सब कुछ कह कर ये ज़ाहिर कर ही दिया है कि तेरे मन में विक्रम के प्रति अब क्या है ? अब अगर मैं इस पर ये कहूँ कि ये सब सोचना भी ग़लत है तो क्या फर्क़ पड़ता है उससे ? इतना तो मैं समझ ही सकती हूँ कि अगर विक्रम के प्रति तेरे मन में ऐसे ख़याल आ चुके हैं तो इसका साफ मतलब है कि कहीं न कहीं तेरे दिल में विक्रम के प्रति भाई वाली फीलिंग के अलावा भी एक अलग फीलिंग्स आ चुकी है। अत: ऐसी फीलिंग्स जब एक बार किसी के दिल में आ जाती हैं तो फिर उसकी सोच भी बदल जाती है। वो उसे ही सही मानता है फिर चाहे भले ही वो सबसे ज्यादा अनैतिक अथवा ग़लत हो। "

" मुझे पता है दीदी। " मानुषी की ऑखें एकाएक ही सजल हो उठीं , बोली __" विक्रम के प्रति ऐसी फीलिंग्स रखना ग़लत बात है। मगर ये भी सच है कि अब ये फीलिंग्स मेरे दिल से आसानी से जाएगी नहीं। इस लिए मैने अब एक फैंसला किया है। "

"फ .. फैंसला ???" श्रुति दीदी चौंकी __" कैसा फैंसला ?"

" यही कि मैं विक्रम के क़रीब नहीं रहूँगी। " मानुषी ने दृढ़ता से कहा __" बल्कि उससे दूर चली जाऊँगी। इस लड़ाई के बाद ये सच है कि मेरे माँ बाप व भाई या तो ज़िन्दगी भर जेल की सलाखों के पीछे कैद हो कर रह जाएँगे या फिर ऐसे भी हालात बन सकते हैं कि वो सब जान से मारे जाएँ। तब तो हम दोनो बहनें अनाथ ही हो जाएँगी। हलाँकि इसके बाद भी मेरे अपनों में रेणुका चाची , सुंदर चाचा और अपर्णा चाची आदि सब भी होंगे मगर इनके पास रहने से अक्सर मेरा सामना विक्रम से होता ही रहेगा। उस सूरत में मेरे मन में ना चाहते

हुए भी उसके प्रति आकर्ष ण बढ़ेगा जिसे शायद मैं रोंक भी नहीं पाऊँगी। इस लिए बेहतर है कि इस सबके बाद मैं आपके साथ मुंबई में मौसी के पास ही रहूँ। विक्रम से दूर रहने से कम से कम ये तो होगा कि धीरे धीरे मैं अपने दिल से उसे निकाल पाने में सफल हो सकती हूँ। "

" इसका मतलब। " श्रुति दीदी ने कहा __" ये सच है कि तू अपने ही भाई विक्रम को अब एक प्रेमी की दृष्टि से देखने लगी है और उसके प्रति तेरे अंदर चाहत की भावना प्रतिपल बढ़ती ही जा रही है ?"

" शायद यही सच है दीदी। " मानुषी ने सहसा आहत भाव से कहा __" विक्रम ने मेरी इज्ज़त की रक्षा जिस तरह से की थी उसके बाद से ही मुझे ये महसूस हुआ था कि विक्रम के बारे में अब तक जो कुछ मैं अपने मॉम डैड के द्वारा पढ़ाए गए पाठ के तहत सोचती थी वो सब सिरे से ही ग़लत था। मेरे अंदर इस बात के एहसास होने के साथ ही विक्रम के प्रति कोमल भावनाओं का उदय हुआ था। उसके बाद मुझे नहीं पता कि मैं उसके बारे में सोचते सोचते कब उसे चाहने लगी ? जब उसने अचानक ही कॉलेज आना बंद कर दिया था तब मैं यही सोच कर रोती थी कि वो आज के समय में मुझसे कितनी नफ़रत करने लगा है कि अब उसने मेरी वजह से कॉलेज आना भी बंद कर दिया। ये सब सोच सोच कर मुझे अपने आप से घृणा होने लगी थी कि मैने अपने उस भाई का बचपन से दिल दुखाया जिसका कभी कोई दोष था ही नहीं। बल्कि उसके दिल में तो हम दोनों बहनों के लिए वैसा ही प्यार व सम्मान था जैसा उसके दिल में गुड़िया(निशा) के लिए है। उसके बाद जब वो दुबारा मेरी इज्ज़त की रक्षा करते हुए मुझे ट्रेन पर मिला तो एक बार फिर से मेरा अंतर्मन ये सोच कर ज़ार ज़ार रो पड़ा कि उसने एक बार फिर से मेरी इज्ज़त की रक्षा की। यानी उसके दिल में आज भी हम दोनो बहनों के लिए वही प्यार व सम्मान है और चाहता है कि हम दोनों को कभी कोई ऑच तक न आए। बस उसके बाद तो जैसे सब कुछ बदल गया दीदी। जब मैने ये महसूस किया कि वो मुझसे झगड़ा करते हुए फिर से अपने बचपन को जीना चाहता है तो मैंने भी उसकी चाहत में उसका पूरा साथ दिया। मुझे भी उसे खुश देखने में अच्छा लगने लगा। इन्हीं सब बातों के बीच ही शायद ऐसा हुआ है कि मेरे दिल में उसकी अच्छाई और खूबियों को देख कर ऐसी चाहत जागी है। आज जब उसने मुझे अपनी बाहों में समेटे तथा मुझे उस हालत में देख कर पागल हुआ जा रहा था तो मैं उस हालत में भी ये सोच रही थी कि ये इतना अच्छा कैसे हो सकता है ? इससे कोई नफ़रत कैसे कर सकता है ? बस उसके बाद मैंने पहली बार अपने दिल की आवाज़ को सुना और फिर उसकी हो गई। मुझे पता है कि ये ग़लत है। अगर विक्रम को मेरे दिल की बात पता चल गई तो संभव है कि वो मुझे ग़लत समझ बैठे। वो सोचेगा कि जैसे मॉ बाप थे वैसी ही उसकी औलाद भी है। जो अपने ही सगे रिश्तों के प्रति ऐसी सोच रखती है। "

" अगर यही सब बात है। " श्रुति दीदी ने कहा __" और अगर ये भी कि तुम उसकी हो गई हो तो फिर ये अचानक उससे दूर हो जाने का फैंसला क्यों किया तुमने ? क्या सिर्फ इस लिए कि विक्रम तुझे ग़लत समझेगा ?"

" ये वजह तो है ही दीदी। " मानुषी ने सहसा कुछ सोचते हुए कहा __" किन्तु एक दूसरी

महत्वपूर्ण वजह और भी है। "

" दूसरी ऐसी कौन सी वजह हो सकती ह ै ?" श्रुत ि दीदी के चेहरे पर सोचों के भाव नुमायां हुए।

" आपने शायद ग़ौर नहीं किया दीदी। " मानुष ी ने फीकी सी मुस्कान के साथ कह ा __" किन्तु मैने बहुत अच्छे से ग़ौर किया है। "

" क्या मतलब ??" श्रुत ि दीदी चकरा सी गईं।

" आप और मैं। " मानुष ी ने कह ा __" जिस साक्ष ी दीदी को हिटलर समझते ह ं , उन्हीं हिटलर दीदी की ऑखों में आज मुझे उस वक्त थोड़ी देर के लिए कुछ खास नज़र आया जब आपने उनसे कहा था क ि ___' कभी खुद को बदल कर भी देख। संभव है कि कुछ नया नज़र आये। ' उस वक्त उनकी ऑखों में पल भर के लिए एक टीस सी नज़र आई थी फिर उन्होंने जल्दी ही खुद को संभाल लिया था। कहते हैं कि चोंट के दर्द का एहसास वही कर सकता है जिसे कभी वैसी ह चोंट लगी हो। उस वक्त उनकी ऑखों में जो भाव थे उन भावों ने मुझे बता दिया कि वो दरअसल क्या ह ै ?"

" ये तू क्या अनाप शनाप बके जा रही है मानुष ी ?" श्रुत ि दीदी ने हैरत से कह ा __" कहीं तू ये तो नहीं कहना चाहती है कि साक्ष ी भी विक्रम से प्यार करती ह ै ? ओह माई गाड , ऐसा कैसे हो सकता ह ै ? नहीं नही ं ... साक्ष ी ऐसा नहीं कर सकती मानुष ी । वो एक सुलझी हुई तथा समझदार लड़की है। उसे पता है कि ऐसा सोचना भी पाप होता है। "

" प्यार तो हर मायने में पवित्र ही होता है दीदी। " मानुष ी ने फीकी सी मुस्कान के साथ कह ा __" फिर चाहे वो किसी से भी हो गया हो। दूसरी बात , जब किसी को किसी से प्यार हो जाता है न तब सबसे पहले उस इंसान का विवेक शून्य हो जाता है। प्यार में पड़ा हुआ इंसान उसी को सही मानता है जिसे आम इंसान अनैतिक व पाप की संज्ञा देता है। मैने साक्ष ी दीदी की ऑखों में उस पवित्र प्यार को देखा है दीदी। मुझे नहीं पता कि ये सब कैसे संभव हो सकता ह ै ? मगर ऑखें कभी ग़लत नहीं होती हैं। ख़ैर मुझे इससे कोई प्राब्लेम नहीं है बल्कि मैं खुश हूँ कि मेरी जो दीदी लड़कों की ज़ात से नफ़रत करती थी तथा प्यार व्यार को बकवास कहती थीं आज वो खुद विक्रम की चाहत में गिरफ्तार हैं। यकीनन उनकी सोच बदल गई होगी और अब उनके सीने में एक ऐसा दिल धड़कता होगा जो बहुत ही नाज़ुक हो चुका होगा तथा जिसमें किसी के लिए बेपनाह प्यार का सागर हिलोरें लेता होगा। अब जबकि मुझे इस बात का एहसास हो ही चुका है तो क्यों मैं उनकी राह का रोड़ा बनूँ दीद ी ? मेरी दीदी के दिल में जीवन में पहली बार किसी के लिए ऐसी भावनाओं का उदय हुआ है।

" तू इतनी गहरी बातें कर सकती है यकीन नहीं होता मानुष ी। " श्रुत ि दीदी की आवाज़ भर्रा गई __" तेरा इतना बड़ा दिल होगा मैने सोचा भी नहीं था। अपनी दीदी के लिए इतना बड़ा त्याग करना कोई मामूली बात नहीं है। इसके पहले मैं तेरी बातों से सचमुच तुझे ग़लत समझ बैठी थी किन्तु आख़िर की तेरी इस बात ने मुझे ये एहसास करा दिया कि ये प्यार भले ही अपने भाई से हो गया हो मगर इसमें कोई गंदगी तथा कोई पाप नहीं है। "

अभी श्रुति दीदी ने ये कहा ही था कि तभी कमरे के दरवाजे पर दस्तक हुई और फिर मैं अमर के साथ अंदर आ गया। आते ही मैने अपने अंदाज़ में सबसे पहले मानुषी को छेंड़ा जिस पर वह बस मुस्कुरा कर रह गई। उसके बाद मैंने उसे कहा कि डॉक्टर ने कहा है कि हम तुम्हें ले जा सकते हैं। अतः अब चलो यहॉ से। ख़ैर थोड़ी ही देर में मैं मानुषी को लिए हॉस्पिटल से बाहर आया और कार की पिछली सीट पर उसे वैसे ही लेकर बैठ गया जैसे आते समय लेकर बैठा था। श्रुति दीदी भी मेरे दूसरी साइड बैठ गईं। अमर कार की ड्राइविंग सीट पर बैठा ही था कि साक्षी दीदी भी आ गईं। साक्षी दीदी के बैठते ही अमर ने कार को आगे बढ़ा दिया।

लगभग पंद्रह मिनट में ही हम रेवती में अनुप के घर के सामने पहुॅच गए। हम सब कार से बाहर आये। मानुषी ने कहा कि वो अब ठीक है और खुद अपने पैरों पर चल सकती है। अतः मैने उसे सहारा देकर कार से बाहर ले आया। उसके बाद हम सब घर के अंदर आ गए। अंदर ड्राइंग रूम में गीता बुआ तथा केशरमाँ काकी थी। गीता बुआ ने जैसे ही हम सबको देखा वो भाग कर आईं और मानुषी को अपने गले से लगाया ही था कि मानुषी के मुख से कराह निकल गई। दरअसल गीता बुआ ने मानुषी की पीठ के उस हिस्से पर अपनी बॉह का कसाव कर दिया था गलती से, जहॉ पर उसे गोली लगी थी।

मानुषी की कराह सुन कर गीता बुआ जल्दी से मानुषी से अलग हुईं और फिर उससे माफ़ी मॉगने लगीं। उनकी ऑखों में ढेर सारे ऑसू थे। कदाचित केशव जी यहॉ आए थे और उन्होंने बुआ को सब कुछ बता दिया था। यही वजह थी कि गीता बुआ मानुषी को देख कर भागते हुए आईं थी। ख़ैर, उसके बाद मैं श्रुति के साथ मानुषी को सहारा देते हुए उसे उसके रूम में ले आया और बेड पर करवॅट के बल आहिस्ता से लेटा दिया। मेरे पीछे पीछे ही बाकी सब आ गए थे। केशरमाँ काकी की भी ऑखों में ऑसू थे। साक्षी दीदी थोड़ी पीछे खड़ी हुई थीं, उनकी ऑखें हल्का सुर्ख नज़र आ रही थीं। ऐसा लगता था जैसे वो रोई हों। मैं उन्हें देख कर चौंका और ऑखों के इशारे से ही पूछा कि क्या हुआ आपको? जवाब में उन्होंने सिर हिला कर बताया कि कुछ नहीं बस ऐसे ही।

इधर गीता बुआ मानुषी के पास ही बेड पर बैठ गईं थी और उससे थोड़ी बहुत बातें कर रही थी। साथ ही अपने भाई को बुरा भला भी कहे जा रही थी। मैं कुछ देर तक रूम में रहा और फिर अमर के साथ ही बाहर आ गया।

९४

मंत्री रजतकुमार रस्तोगी के आवास पर।

सत्यम सिंह इस वक्त उसके पास ही सामने वाले सोफे पर बैठा था। अभी कुछ ही देर पहले रस्तोगी उसे अपने सोर्स से तथा अपने वकील को लेकर ज़मानत पर छुड़ा कर लाया था। रामगंज में नया नया आया एसीपी उसे काफी सख्त मिजाज़ लगा था। किन्तु रस्तोगी का तो ये इलाका ही था अतः वो खुद भी किसी से डरने वाला नहीं था। कहने का मतलब ये कि बड़ी आसानी से वो सत्यम सिंह को छुड़ा लाया था। इस वक्त सत्यम सिंह अपना मुह लटकाए बैठा हुआ था। ड्राइंग रूम में इस वक्त वो दोनो ही थे।

" इतनी शातिर दिमाग़ वाली बीवी के रहते हुए भी तुम इतनी बुरी तरह से मात खा गए ठाकुर। " सहसा रस्तोगी ने सत्यम सिंह की तरफ देखते हुए कहा __" हैरत की बात है। अच्छा होता कि तुम हमें इस मामले में पहले से बताए होते तो हम इसमें ज़रूर तुम्हारी मदद करते। हमारे दखल पर यहॉ की पुलिस में इतनी हिम्मत ही नहीं होती कि वहॉ जा कर तुम सबको गिरफ्तार कर लेती। हम बड़ी आसानी से तुम्हारे उस भतीजे को और तुम्हारी दोनो बेटियों को पकड़ लेते। उसके बाद तो उनका खेल खत्म ही हो जाना था। "

" डबल बैकअप का प्लान भी अपनी जगह कमज़ोर नहीं था रस्तोगी साहब। " सत्यम सिंह ने गंभीरता से कहा __" हमने उन सबको लगभग पकड़ ही लिया था। मगर हमारी उम्मीद से परे वहॉ भारी संख्या में पुलिस फोर्स आ गई और सबकुछ हमारे हाथ से निकल गया। "

" इसमें यकीनन तुम्हारी ग़लती है ठाकुर। " रस्तोगी ने पुरज़ोर लहजे में कहा __" तुम्हें और तुम्हारी पत्नी को इस बात पर भी ग़ौर करना चाहिए था कि तुम्हारी बेटी , तुम्हारी बेटी होने के साथ साथ एक पुलिस वाली भी है जो ऐसे हालात पर अपने डिपार्टमेंट से पुलिस फोर्स को भी बुलवा सकती है। उस सूरत में तुम्हें हमसे संपर्क करना चाहिए था। हम इस समस्या का तुरंत समाधान करते। हम मंत्रियों के पास ऐसे हालात में पुलिस फोर्स को मनचाही जगह पर ले जाने का बहुत आसान तरीका आता है। कहने का मतलब ये कि हम आनन फानन में किसी जगह का दौरा करते जहॉ पर भारी मात्रा में हम पुलिस को अपने पास बुला लेते। पुलिस डिपार्टमेंट को इतना जल्दी इतनी पुलिस फोर्स वहॉ पर भेजने के लिए सोचना पड़ जाता। "

" मैं मानता हूँ रस्तोगी साहब। " सत्यम सिंह ने नज़रें चुराते हुए कहा __" कि मैने आपको इस बारे में न बता कर भारी ग़लती की है। वरना आज ऐसा नहीं होता। मगर इसमें भी मेरी आपके लिए एक पाक़ भावना ही थी। मैं चाहता था कि ये सब होने के बाद मैं आपके सामने आपके उन दुश्मनों को लाकर आपको सर्प्राइज दूँगा और यही मेरी दोस्ती व वफ़ादारी का प्रमाण भी होता। मगर अफसोस ऐसा नहीं कर पाया मैं। इसके लिए आप मुझे माफ़ कर दीजिए मंत्री जी। आपने मुझे अपना समझ कर जेल से भी छुड़ा लिया। इसके लिए मैं जीवन भर आपका आभारी और ऋणी रहूँगा। "

" कोई बात नहीं ठाकुर। " रस्तोगी ने कहा __" जीवन में हार जीत का खेल तो चलता ही रहता है। इस लिए इसमें ज्यादा चिंता करने की कोई बात नहीं है। इस सबके बाद भी हम उन लोगों को बहुत जल्द पकड़ लेंगे। क्योंकि हमने इस सबके लिए एक जासूस को लगाया हुआ है। आज उसी ने बताया था कि माधोपुर में क्या हो रहा था ? उस समय के हालात के अनुसार हमें लगा कि तुम यकीनन उनको पकड़ लोगे और फिर उन्हें हमारे सामने ले आओगे। इसी लिए हमने भी कोई ऐक्शन नहीं लिया। बाद में उस जासूस ने बताया कि वहाँ पर भारी मात्रा में पुलिस फोर्स आई और तुम सबको पकड़ कर ले भी गई तो हमने सोचा चलो कोई बात नहीं तुम्हें तो हम जेल से छुड़ा ही लेंगे। किन्तु हमने जासूस को ये भी कहा कि ठाकुर की बेटी को गोली लगी है तो वो लोग उसका इलाज कराने हॉस्पिटल ज़रूर जाएँगे। उसके बाद वो उस जगह जाएँगे जहाँ पर उन लोगों ने अपना ठिकाना बनाया हुआ है। बस उसके ठिकाने का पता चलते ही हम उसे उसके ही ठिकाने पर घेर लेंगे। हम चाहते तो उन लोगों को हॉस्पिटल में भी घेर सकते थे किन्तु हमने ऐसा नहीं किया। क्योंकि हमें सबसे पहले अपने बच्चों को तलाशना था और ये तभी हो सकता था जब वो लोग हॉस्पिटल के बाद अपने ठिकाने पर जाते। हमने उस जासूस को इसी का पता लगाने के लिए लगा रखा है। वो हमें बहुत जल्द सूचित करेगा कि उन लोगों का ठिकाना कहाँ है। उसके बाद हम अपने आदमी लेकर जाएँगे और उसके ठिकाने पर धावा बोल देंगे। "

" ये तो बहुत ही अच्छा किया है आपने। " सत्यम सिंह के चेहरे पर एकाएक ही रौनक आ गई __" इसका मतलब ये हुआ कि हम पूरी तरह से हारे नहीं हैं। बल्कि बाज़ी अभी भी हमारे हाथ में हैं। "

" बिलकुल। " रस्तोगी ने मुस्कुरा कर कहा __" बस जासूस के फोन आने की देर है। जैसे ही उसका फोन आया और उसने हमें बताया वैसे ही हम यहाँ से चल पड़ेंगे। "

" वाह रस्तोगी साहब। " सत्यम सिंह के चेहरे पर खुशी की चमक आ गई __" मानना पड़ेगा आपको। आपने भी ऐसा कारनामा कर रखा है जिसके बारे में वो लोग सोच भी नहीं सकते हैं। "

सत्यम सिंह की बात पर रस्तोगी बस मुस्कुरा कर रह गया। कुछ देर उन दोनो के बीच और भी कुछ बातें हुईं उसके बाद सत्यम सिंह रस्तोगी से इजाज़त लेकर उसके आवास से अपने गॉव सोनपुर के लिए निकल लिया। रस्तोगी ने उसे जाने के लिए अपनी एक जीप दे दी थी।

९५

अमर के साथ जब मैं नीचे आया तो देखा ड्राइंग रूम में केशव जी बैठे थे। हम दोनो को देखते ही उनके होठों पर मुस्कान उभर आई। उसके बाद उन्होंने मुझसे मानुषी के बारे में पूछा तथा ये भी कहा कि वो खुद उसे देखना चाहते हैं। अतः मैं उन्हें अपने साथ ऊपर मानुषी के कमरे में ले गया। कमरे में पहुँच कर उन्होंने सबके सामने ही मानुषी को देखा और फिर बड़े प्यार से उससे उसकी तबीयत का पूछा। उनके पूछने पर मानुषी ने भी बड़ी शालीनता से अपनी तबीयत के बारे में उन्हें बता दिया। उसके बाद वो कमरे से बाहर आ गए और मेरे साथ ही नीचे आ गए। नीचे आकर मैं अमर के साथ बैठा ही था कि साक्षी दीदी भी आ गईं।

" उस जासूस का क्या हुआ मौसा जी ?" नीचे आते ही साक्षी दीदी ने केशव जी की तरफ देखते हुए भावहीन स्वर में पूछा __" क्या आप उसे पकड़ने में कामयाब हुए ?"

" हमारी किस्मत बहुत अच्छी थी साक्षी बेटा। " केशव जी ने कहा __" जिसके तहत वो हमारे हाथ लग गया। मेरा वो आदमी जिसने हमें उसके बारे में फोन पर बताया था उसका नाम निरंजन त्रिपाठी है। उसने बड़ी बहादुरी का काम किया है। उसने मुझे बताया कि अगर उस जासूस की बाइक के अगले पहिये की हवा न निकली होती तो वो हमारे हाथ न लगता। "

" ये आप क्या कह रहे हैं मौसा जी ?" साक्षी दीदी के साथ साथ हम सब भी हैरान हो गए , फिर दीदी ने कहा __" उस जासूस की बाइक की वजह से वो हमारे हाथ लगा है ?"

साक्षी की इस बात पर केशव जी ने निरंजन और उस जासूस की सारी राम कहानी बताई। सारी बात सुनने के बाद हम तीनों ही चकित रह गए थे। कुछ देर तक कोई कुछ न बोला।

" ये तो बड़े ही आश्चर्य की बात है मौसा जी। " मैने सोचने वाले भाव से कहा __" उस जासूस की बाइक के अगले पहिए में हवा नहीं थी इस लिए वो उतने समय तक वहाँ रुका रहा। आपका वो आदमी भी वाकई में बड़ा काम का साबित हुआ। उसने उस जासूस को पकड़ने में अपनी जान तक दाँव पर लगा दी। वरना अगर वो जासूस हाथ से निकल जाता तो यकीनन हमारे लिए बहुत बड़ा संकट हो सकता था। "

" बेशक। " केशव जी ने कहा __" अगर उसके बारे में हमें पता न चलता तो वो हमारा पीछा करता ही रहता और फिर जब उसे तुम लोगों के इस ठिकाने का पता चल जाता तो वह तुरंत ही मंत्री को सब कुछ बता देता। उसके बाद मंत्री क्या करता इसका तुम बखूबी अंदाज़ा लगा सकते हो। "

" अब इस मंत्री का खेल खत्म करना ही पड़ेगा। " सहसा साक्षी दीदी ने कठोर भाव से कहा __" मेरी चेतावनी के बावजूद इसने इतना बड़ा दुस्साहस किया और हमारे पीछे किसी जासूस को भी लगाया। अब तो इसका किस्सा खत्म करना ही पड़ेगा। बहुत हो गया अब। "

" मेरा भी यही ख़याल है दीदी। " मैने कहा __" कम से कम इससे इसकी तरफ से तो हम बेफिक्र हो जाएंगे और फिर खुल कर तथा बेझिझक बड़े पापा से मुकाबला कर सकेंगे। "

" सही कहा तूने। " साक्षी दीदी ने कहा __" किन्तु उससे पहले हमें उस जासूस से मिलना भी होगा। उसे हम ऐसे ही नहीं छोंड़ सकते हैं। उसका भी कोई न कोई इंतजाम करना पड़ेगा हमें। "

" मेरे ख़याल से उसे हम तब तक अपने पास रखते हैं जब तक कि मंत्री का किस्सा खत्म नहीं हो जाता। " सहसा अमर कह उठा __" उसके बाद हम उसे छोंड़ सकते हैं। जब मंत्री ही नहीं रहेगा तो वो किसके लिए हमारे पीछे लग कर जासूसी करेगा ?"

" अमर की बात एकदम करेक्ट है दीदी। " मैने कहा _" ऐसा ही करना चाहिए हमें। "

" आपका क्या कहना है मौसा जी ?" साक्षी दीदी ने सहसा केशव की तरफ देखते हुए कहा __" ये तो सच है कि हम उस जासूस को मौजूदा हालात में छोंड़ नहीं सकते हैं और ना ही उसे जान से मारने का सोच सकते हैं। क्योंकि वो निर्दोष है। उसने वही किया है जो एक जासूस को करना चाहिए था। ये उसका पेशा ही है , अतः आप भी अपनी राय दीजिए कि क्या किया जाए ?"

" देखो मैं तो एक ही बात जानता हूँ बेटा। " केशव जी ने कहा __" कि ऐसे हर उस आदमी को खत्म कर दो जिससे हमें किसी प्रकार के ख़तरे का अंदेशा हो। किन्तु मामला चूँकि एक जासूस का है इस लिए उसे खत्म करना ग़लत होगा। अतः मैं भी अमर की बात से सहमत हूँ। यानी कि उसे तब तक यहाँ कैद करके रखा जाय जब तक कि मंत्री का कल्याण नहीं हो जाता। मगर ,

" मगर क्या मौसा जी ?" साक्षी दीदी के माथे पर शिकन उभरी।

" मगर मुझे एक बात समझ नहीं आई। " केशव जी ने सोचने वाले अंदाज़ में कहा __" और वो ये कि जब मंत्री के खिलाफ़ तुम्हारे पास ऐसा डायनामाइट जैसा सबूत है तो उसे अब तक छोंड़ क्यों रखा था तुमने ? जबकि होना तो यही चाहिए था कि उसे तुरंत ही कानून की चपेट में ले लिया जाता। "

" आपका सोचना बिलकुल सही है मौसा जी। " साक्षी दीदी ने कहा __" किन्तु मंत्री को अब तक छोंड़े रखने के दो कारण थे। पहला ये कि उसे एहसास कराना था कि जब उसके खुद के बच्चों के साथ बहुत बुरा होता है तब कैसा महसूस होता है ? दूसरा कारण ये कि उसके संबंध ऐसे ऐसे लोगों से हैं जिनकी पूर्ण जानकारी हमारे पास अभी भी नहीं है। ये तो लगभग सब जानते हैं कि वो कैसे कैसे ग़ैर कानूनी धंधा करता है किन्तु पुलिस के पास उसके खिलाफ़ ऐसे कोई सबूत नहीं हैं जिसकी वजह से उसे गिरफ्तार किया जा सके। मेरे पास भी उन वीडियोज के अलावा और कुछ नहीं है। मैं चाहती थी कि ये वाला मामला निपट जाने के बाद मंत्री के खिलाफ मौजूद उन सबूतों का पता करू गी। यही वजह थी कि मंत्री के मैटर को

इतना लम्बा खींचना पड़ा। किन्तु अब ऐसा लगता है कि मंत्री को सबक सिखाना ही पड़ेगा। उसके सामने खुल कर जाना ही पड़ेगा और फिर उसकी ऑखों में ऑखें डाल कर उसे बताना पड़ेगा कि वो हमारा कुछ नहीं कर सकता है जबकि हम चाहें तो उसका कुछ भी कर सकते हैं। "

" ओह आई सी। " केशव जी ने कहा __" तो ये बात है। ठीक है फिर , जैसा तुम्हें बेहतर लगे वैसा करो। किन्तु हॉ उससे पहले चलो उस जासूस से भी तो मिल लो तुम लोग। संभव है कि उससे भी कोई महत्वपूर्ण जानकारी मिल जाए। "

केशव जी की इस बात से हम सब सोफों से उठ कर खड़े हो गए और फिर केशव जी के साथ ही बाहर की तरफ चले गए। बाहर आकर हम सब केशव जी की कार में बैठ गए। अमर केशव जी के बगल में आगे की सीट पर बैठ गया था जबकि मैं और साक्षी दीदी पिछली सीट पर बैठ गए थे। हम सबके बैठते ही केशव जी ने कार को आगे बढ़ा दिया।

लगभग पॉच मिनट बाद ही केशव जी ने कार को एक मकान के पास ले जाकर रोंका। कार के रुकते ही हम सब कार से बाहर आ गए। हम सबकी नज़र उस मकान पर पड़ी जिसके सामने के पोर्च पर एक लकड़ी का तखत रखा हुआ था और उसमे चार सॉवले रंग के आदमी बैठ कर ताश खेल रहे थे। कार की आवाज़ से ही उनका ध्यान हमारी तरफ गया था। जिससे उन चारों ने ताश खेलना बंद करके तखत से उतर गए थे।

हम तीनों केशव जी के पीछे पीछे मकान के पोर्च में आ गए। पोर्च में रुक कर केशव जी ने अपने एक आदमी से कहा सब ठीक है न? जवाब में आदमी ने बड़े अदब से हॉ में सिर हिलाया। उस आदमी की हॉ देख कर केशव जी मकान के अंदर की तरफ बढ़ चले। उनके साथ हम तीनों भी बढ़ चले थे।

ये मकान यूॅ तो पक्का ही था किन्तु इसकी हालत देख कर तथा केशव जी की छवि देख कर यही लगता था कि इस मकान पर केशव जी अपने आदमियों को रखते थे। या फिर उनके रहने की जगह ही यही थी। हलॉकि सोचने वाली बात तो ये भी थी कि केशव जी का कैरेक्टर ऐसा क्यों था कि उनके अंडर में ऐसे ऐसे लोग थे और उनका हर कहा भी मानते थे? इस बारे में हम सबके दिमाग़ में सवाल तो उभरा था किन्तु केशव जी से इस बारे में पूछने का या तो समय ही नहीं मिला था हमें या फिर हम उनकी निजी ज़िंदगी में कोई हस्ताक्षेप ही नहीं करना चाहते थे। हमारे लिए यही बहुत था कि वो हमारी मदद कर रहे थे।

मकान के अंदर भी कुछ लोग नज़र आए हमें जो कि अलग अलग जगहों पर इस वक्त खड़े दिख रहे थे। बाहर से अंदर आते ही सबसे पहले एक छोटा सा हाल था उसके बाद दोनो तरफ तीन तीन कमरे बने हुए थे। सामने की तरफ ऊपर के फ्लोर में जाने के लिए चौड़ी सीढ़ी थी। उस सीढ़ी के अगल बगल भी एक एक कमरा था। केशव जी के साथ हम तीनो सीढ़ी के दाहिने साइड वाले कमरे की तरफ बढ़ गए।

केशव जी के कहने पर ही एक आदमी ने उस कमरे का ताला खोला और फिर उसके बाद दरवाजा भी खोला। ये देख कर हमें समझते देर न लगी कि केशव जी इस मामले में काफी होशियारी से काम ले रहे थे। ख़ैर कमरे के अंदर हम सब दाखिल हुए तो बॉए साइड ही दीवार से सट कर खड़े उस जासूस पर हमारी नज़र पड़ी। उसके दोनो हाथ ऊपर की तरफ एक साथ मोटी रस्सी से बँधे थे। इतना ही नहीं उसके मुख पर एक टेप भी चिपका हुआ था ताकि वह चीखे चिल्लाए न। उसके दोनो हाथ तो ऊपर की तरफ रस्सी से बँधे हुए थे ही साथ ही उसके दोनो पैर भी अलग अलग दिशा में फैले हुए रस्सी से बँधे थे।

ये कमरा अंदर से एकदम खाली था। जासूस की स्थित देख कर ये समझना ज़रा भी मुश्किल नहीं था कि केशव जी ने उसका तगड़ा इंतजाम किया था। उसे इस हालत में देख कर मैं केशव जी की समझदारी का कायल हो गया।

" आपने तो मेहमान का बहुत अच्छे तरीके से स्वागत कर रखा है मौसा जी। " मैंने जासूस की तरफ एक नज़र डालने के बाद केशव जी से कहा __" ख़ैर कोई बात नहीं। इनके मुह से ज़रा ये टेप तो हटाइए। इन महानुभाव की मनमोहक आवाज़ सुनने का बहुत दिल कर रहा है। "

मेरी बात पर केशव जी मुस्कुराए और फिर जॉर्ज के मुख से टेप निकाल दिया। टेप के हटते ही जॉर्ज गहरी गहरी सासें लेने लगा। यद्यपि टेप तो सिर्फ उसके मुख पर ही चिपकाया गया था, सास लेने के लिए उसकी नॉक तो खुली ही थी।

" हॉ तो मिस्टर डिटेक्टिव। " मैने उस जासूस के बिलकुल पास आते हुए कहा __" आप इज्ज़त से खुद ही सब कुछ बताएंगे या फिर मुझे आपके मुख से कुछ भी उगलवाने के लिए कोई दूसरा हथकंडा इस्तेमाल करना पड़ेगा ? हलॉकि मुझे उम्मीद है कि आप खुद ही सब कुछ बता देंगे। क्योंकि आप जासूस हैं और आपको पता है कि ऐसी परिस्थितियों में क्या होता है ? ख़ैर , मैं आपकी जानकारी के लिए बता दूँ कि जिस मंत्री के लिए आप जासूसी कर रहे थे वो इस प्रदेश का निहायत ही घटिया व्यक्ति है। ऐसा कोई कुकर्म तथा ऐसा कोई जुर्म नहीं है जो वो करता न हो। यहॉ तक कि दूसरों की बहू बेटियों के साथ ग़लत तो करता ही है साथ ही उनका सौदा भी करता है। मैं ये सब बातें आपसे इस लिए बता रहा हूँ ताकि आपको भी पता होना चाहिए कि आप जिसके लिए हमारा बेड़ा गर्क करने चले हैं वो कैसा इंसान है ? अपने ज़मीर को जगाइये जासूस महोदय। जीवन में रुपया पैसा कमाने के लिए और भी कई अच्छे रास्ते हैं। जासूस का मतलब ये नहीं होता कि आप किसी के लिए भी काम करना शुरू कर दें। बल्कि उस व्यक्ति के लिए काम करें जिसे आप समझते हों कि ये अच्छा व्यक्ति है तथा इसे किसी बुरे इंसान ने सताया है। "

मेरी ये बातें सुन कर वो जासूस कुछ न बोला। बस मेरी तरफ देखता रहा। उसके चेहरे पर ऐसे भाव उभर आए थे जैसे एकाएक ही वह किन्हीं विचारों के आधीन हो गया हो। मैं कुछ देर तक उसे देखता रहा।

" आपको पता है ये कौन हैं ?" मैने साक्षी दीदी की तरफ इशारा करके उस जासूस से कहा __" ये मेरी बड़ी बहन हैं और पुलिस में इंस्पेक्टर हैं। इन्होंने जब ये जाना कि कानूनन ये मंत्री के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं कर सकती हैं तो इन्होंने कानून को अपने हाथ में ले लिया।इन्होंने इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं की कि इसके लिए इन्हें कानून खुद कठोर सज़ा दे सकता है तथा अगर ये मंत्री जैसे राक्षस इंसान के पकड़ में आ गईं तो मंत्री इनका क्या हस्र कर सकता है। कहने का मतलब ये कि अपनी जान को जोखिम में डाल कर इन्होंने मंत्री के खिलाफ बिगुल बजाया हुआ है। सिर्फ इस लिए कि इस प्रदेश से मंत्री रजतकुमार रस्तोगी जैसे लोगों की गंदगी दूर हो सके तथा ऐसे लोगों से मासूम व निर्दोष जनता को निजात मिल सके। रुपया पैसा सबकी ज़रूरत है जासूस महोदय किन्तु उससे बढ़ कर अपनी जान भी प्यारी होती है। हम सब सच्चाई की राह पर चलने वाले वो इंसान हैं जिनके सिर पर क़फन बँधा हुआ है। "

" ये सब तुम क्या बातें सुना रहे हो दोस्त। " सहसा अमर ने कहा __" क्या तुम समझते हो कि तुम्हारी इन बातों से इस जासूस के विचार बदल जाएँगे। नहीं भाई , इन्हें तो सिर्फ पैसों से मतलब हैं। इन्हें इस बात से कोई मतलब नहीं है कि प्रदेश में आम इंसानों के साथ क्या अत्याचार हो रहा है ? मैं तो कहता हूँ कि इससे कुछ पूछना ही बेकार है। हमारे पास जो भी सबूत मंत्री के खिलाफ है उसी के आधार पर हम उसे धर लेंगे। "

" आप लोग क्या जानना चाहते हैं मुझसे ?" सहसा जासूस गंभीर भाव से बोल पड़ा __" पूछो , मैं सब कुछ बताने को तैयार हूँ। मुझे भी इस बात का अंदेशा है कि मंत्री के खिलाफ़ खुद पुलिस विभाग गुप्त रूप से लगा हुआ है। मुझे पता है कि मंत्री तथा उसके साथी बहुत ही अपराधी किस्म के इंसान हैं। तुमने मुझे एहसास करा दिया है कि वाकई मैं ग़लत व्यक्ति यों का साथ दे रहा था। तुमने बिलकुल सही कहा भाई कि जीवन में पैसा ही सब कुछ नहीं होता है। "

" तो फिर बताइये। " मैने मन ही मन हैरान होते हुए कहा __" कि मंत्री ने आपको किस किस काम के लिए हमारे पीछे लगाया था ?"

" आप लोगों ने मंत्री को तथा उसके साथियों को इस लायक छोंड़ा ही नहीं है कि वो खुद इस मामले में कोई ऐक्शन ले सके। " जासूस ने कहा __" इस लिए उसने इस काम के लिए मुझे हायर किया। एक और महत्वपूर्ण बात है जो कि तुम्हारे लिए जानना बेहद ज़रूरी है। वो बात ये है कि मंत्री सत्यम सिंह के साथ भी मिला हुआ है। मैं सत्यम सिंह के ही पीछे लगा था और उसी का पीछा करते हुए मैं आज उस जगह पहुँचा था जहाँ तुम्हारा और सत्यम सिंह का आमना सामना हो रहा था। मैने उस सबकी सूचना फोन द्वारा मंत्री को दी थी। मंत्री को मैने कहा भी था कि वो अगर चाहें तो इस मौके पर खुद भी आकर तुम लोगों के साथ कुछ भी कर सकते हैं। मगर मंत्री ने शायद ये सोच कर इसके लिए बाद में मना कर दिया कि संभव है कि उस सूरत में तुम्हारे द्वारा उसके बच्चों का कुछ अहित हो जाता। इस लिए उसने मुझसे बस यही कहा कि मैं तुम लोगों के पीछे लग कर तुम्हारे ठिकाने का पता करूं । जैसे ही मेरे द्वारा उसे तुम लोगों के ठिकाने का पता चल जाता वैसे ही वो अपने दलबल के साथ तुम लोगों के ठिकाने पर धावा बोल देता। "

जॉर्ज की बात सुन कर हम सब बुरी तरह हैरान रह गए थे। हम सब ये जान कर चौंके थे कि सत्यम सिंह मंत्री से मिला हुआ है। इस तरफ तो हमने सोचा ही नहीं था और यकीनन ये हमारी सबसे बड़ी ग़लती भी थी। ख़ैर अब तो जासूस द्वारा हमें इस बात का पता चल ही चुका था।

" एक और बात। " तभी जॉर्ज ने फिर कहा __" जब मैने मंत्री से फोन पर बात की थी तो ये सवाल भी उभरा था कि संभव है कि सत्यम सिंह उसे धोखा दे रहा हो। क्योंकि उसने मंत्री को बताए बिना ही तुम सबको पकड़ने के लिए वो सब किया था। जबकि मंत्री से हुई दोस्ती के अनुसार उसे उस सबके बारे में मंत्री से बताना चाहिए था। इस बात पर मंत्री ने कहा था कि अगर सत्यम सिंह सचमुच उसे धोखा दे रहा है तो वो उसे इसके लिए सज़ा ज़रूर देगा। किन्तु अगर उसने ये सब ये सोच कर किया है कि बाद में वो हमें अपने भतीजे को तथा अपनी बेटी को हमारे सामने ले आएगा और अपनी दोस्ती का प्रमाण देगा तो यकीनन हम उसे जेल से भी छुड़ाएँगे। मंत्री की इस बात से तुम लोग समझ सकते हो कि सत्यम सिंह जेल से उसके द्वारा छूट भी सकता है। अगर ये कहूँ तो भी ग़लत न होगा कि वो अब तक छूट ही गया होगा। "

" ऐसा कैसे कह सकते हो तुम ?" केशव जी ने पूछा।

" सीधी सी बात है। " जॉर्ज ने कहा __" बात चाहे जो भी हो किन्तु मंत्री एक बार सत्यम सिंह से मिलना ज़रूर चाहेगा और मिल कर ये भी जानना चाहेगा कि उसने वो सब कारनामा उसको बिना बताए कैसे अंजाम दिया था ? क्या इसके पीछे उसकी गद्दारी थी या फिर कुछ और ? मंत्री की इस बात पर सत्यम सिंह ज़रूर यही कहेगा कि वो ये सब करके अपने भतीजे और अपनी बेटी को उसके सामने ले आकर उसे सरप्राइज के रूप में तोहफा देना चाहता था। किन्तु ऐसा हो न सका। सत्यम सिंह की ये बात सुन कर मंत्री को भी लगेगा कि सत्यम सिंह वास्तव में उसके लिए ये सब पाक़ भावना से करना चाहता था। अतः ये सोच कर मंत्री उसे जेल से ज़रूर छुड़ाएगा। जिस समय मैने उसे फोन पर सत्यम सिंह को पुलिस द्वारा ले जाने के बारे में बताया था। उस समय और अब के समय के बीच कई घंटों का फर्क़ हो चुका है। इस लिए ये संभव है कि अब तक मंत्री ने सत्यम सिंह को जेल से छुड़ा ही लिया होगा। "

" हम भी तो यही चाहते हैं जासूस महोदय। " मैने मुस्कुराते हुए कहा __" कि वो जेल से छूट कर फिर से बाहर आ जाए और इसी लिए साक्षी दीदी ने उसके छूट जाने का इंतजाम भी किया हुआ था। "

" क्या मतलब। " जॉर्ज बुरी तरह चौंका __" भला तुम लोग ऐसा क्यों चाहते हो ? बात कुछ समझ में नहीं आई। ये सब क्या चक्कर है ?"

" मंत्री को और सत्यम सिंह को अगर जेल में सड़ाना ही होता। " मैने कहा __" तो ये काम तो हम बहुत पहले ही कर चुके होते। मगर ऐसा किया नहीं क्योंकि इनके गुनाहों की सज़ा हम अपने तरीके से ही देना चाहते हैं। साक्षी दीदी ने पुलिस कमिश्नर से जब पुलिस प्रोटेक्शन की बात की तभी ये तय हो गया था कि सत्यम सिंह को सबके साथ पकड़ कर ले तो जाएँगे

मगर उस पर कोई केस नहीं बनाया जाएगा। केस न बनने से सत्यम सिंह का जेल से छूट जाना आसान ही हो जाना था। वरना आप खुद सोचिए जासूस महोदय कि उसने तो अपनी ही बेटी को जान से मारने की कोशिश की थी वो भी एसीपी के रिवाल्वर से। उस सूरत में तो वो लंबे से नप सकता था। एसीपी रमाकांत शुक्ला तो गुस्से में आकर सत्यम सिंह पर केस बनाने के लिए तैयार भी हो गया था किन्तु कमिश्नर साहब ने इसके लिए उसे मना कर दिया। वरना अगर केस बन जाता तो मंत्री इतनी सहजता से सत्यम सिंह को छुड़ा न पाता। उसकी पहुँच का भी कोई असर न होता। क्योंकि एसीपी कोई मामूली व्यक्ति नहीं था। उसे केन्द्र से भेजा गया है , इस लिए उसके काम में किसी की भी दखलअंदाज़ी नहीं चलती। "

" अगर ऐसी बात है। " जॉर्ज ने कहा __" तो फिर वो इस सबके लिए राजी कैसे हो गया ? मेरे कहने का मतलब ये है कि जैसा कि तुमने कहा कि एसीपी को केन्द्र सरकार ने भेजा है तथा उसके काम में कोई हस्ताक्षेप भी नहीं कर सकता तो फिर ये कैसे हो गया कि उसने सत्यम सिंह पर कमिश्नर के मना कर देने पर केस ही नहीं बनाया ? जबकि उसे तो इस मामले में सख्त से सख्त कार्यवाही ही करनी चाहिए थी। "

" वो यहाँ सख्त कार्यवाही के लिए ही आया था। " साक्षी दीदी ने हस्ताक्षेप किया __" किन्तु कमिश्नर साहब ने उसे यहाँ के सारे हालातों के बारे में बताया , ये भी कि कैसे मैं अपने ही माँ बाप के खिलाफ हूँ और कैसे मंत्री का काम तमाम करने के काम पर लगी हुई हूँ ? सारे हालातों पर ग़ौर करने के बाद वो इसके लिए तैयार हो ही गया। दूसरी बात ये भी थी कि उसे यहाँ भेजा ही इस लिए गया है कि वो मंत्री जैसे लोगों की गंदगी को इस प्रदेश से मिटा सके और ये काम तो मैं कर ही रही हूँ। उसे तो इस प्रदेश की गंदगी मिटाने से मतलब है फिर चाहे वो किसी भी तरीके से मिटाई जाए। "

" ओह तो ये बात है। " जॉर्ज को जैसे सब कुछ समझ आ गया था , फिर बोला __" किन्तु शुरू में मैने महसूस किया था कि मैने जब मंत्री और सत्यम सिंह के एक होने की बात बताई तो तुम सब उस बात से हैरान हो गए थे। इसका मतलब ये हुआ कि तुम लोगों को इस बात का अंदेशा तक नहीं था कि सत्यम सिंह और मंत्री आपस में मिले भी हो सकते हैं ?"

" कमिश्नर साहब ने फोन पर मुझे ये ज़रूर बताया था। " साक्षी दीदी ने कहा __" कि मंत्री ने उन्हें फोन किया था तथा फोन पर वो ऐसे सवाल जवाब कर रहा था जैसे ये जानना चाहता हो कि पुलिस गुप्त रूप से कहीं उसके पीछे तो नहीं लगी हुई है। उसने बातों बातों में इस बात को भी पूछा था कि सोनपुर के ठाकुर सत्यम सिंह को पुलिस पकड़ कर ले गई है तो ये सब क्या चक्कर है ? उसने कमिश्नर से घुमा फिरा कर ये भी कहा कि सुना है कि सत्यम सिंह की बेटी पुलिस में है और अपने बाप के खिलाफ भी है। मंत्री के पूछने पर कमिश्नर साहब ने यही कहा कि ये सब पारिवारिक मामला है अतः उन्हें इस बारे में ज्यादा पता नहीं है। कहने का मतलब ये कि ये तो समझ में आया कि मंत्री ने कमिश्नर से सत्यम सिंह का ज़िक्र किया मगर उसकी बातें ऐसी थी कि उससे इस बात का अंदेशा उस वक्त मुझे न हो पाया था कि वो सत्यम सिंह से वास्तव में मिला हुआ ही हो सकता है। दूसरी बात ये कि मेरे मुखबिरों ने भी ऐसी किसी बात का ज़िक्र नहीं किया। जबकि मैने तो दोनो के ही पीछे मुखबिर लगाए हुए थे।

"

" कमाल की बात है। " जॉर्ज मुस्कराया __" कैसे मुखबिर थे जो ये भी न पता लगा सके कि सत्यम सिंह और मंत्री कब कहाँ किससे मिलते हैं ? जैसा कि तुमने बताया कि तुमने इन दोनो के पीछे मुखबिर लगाया हुआ था तो ये कैसे हो सकता है कि तुम्हारे मुखबिरों को इन दोनो की गतिविधियों का पता ही न चल सके ? सत्यम सिंह के पीछे लगा हुआ मुखबिर बड़ी आसानी से पता लगा सकता था कि वह कब कहाँ जाता है ? यानी अगर वो मंत्री से मिलने उसके आवास पर जाता तो क्या ये सब उस मुखबिर ने अपनी आँखों से नहीं देखा होता ? इसका तो यही मतलब हुआ कि तुम्हारे मुखबिरों ने अपना काम इमानदारी से किया ही नहीं बल्कि तुम्हें धोखे में ही रखा। "

जॉर्ज की इस बात से साक्षी दीदी तुरंत कुछ बोल न सकीं थी। मैने भी हैरानी से उनकी तरफ देखा था। साक्षी दीदी के चेहरे पर कई तरह के भाव आए और चले भी गए। सहसा उनके चेहरे पर कठोर भाव उभर आए।

" यकीनन ऐसा ही है। " फिर उन्होंने गहरी सास लेकर कहा __" मेरे मुखबिरों ने अपना काम सही से नहीं किया। इसके लिए उन्हें कठोर दंड ज़रूर मिलेगा। दोनो तरफ की घटनाओं से इस बात की तरफ मेरा ध्यान भी नहीं गया। दूसरी बात मुझे अपने मुखबिरों से इस बात की उम्मीद भी नहीं थी कि वो कमीने ऐसी लापरवाही करेंगे। "

" चलो कोई बात नहीं साक्षी बेटा। " सहसा केशव जी ने कहा __" माना कि तुम्हारे मुखबिरों ने इस काम में थोड़ी नहीं बल्कि बहुत ही ज्यादा लापरवाही दिखाई किन्तु इससे हमें नुकसान तो नहीं हुआ न ? अतः इस बात को छोंड़ो और अब ये सोचो की आगे क्या करना है ?"

" मैं भी ये कहना चाहता हूँ कि। " साक्षी दीदी के बोलने से पहले ही जॉर्ज बोल पड़ा ___" अब आप लोगों को भी मुझे यहाँ से जाने देना चाहिए। आप लोगों को मैने पूरी इमानदारी से सारी बातें सच सच बता दी हैं। अतः अब मुझे इस तरह यहाँ कैद करके रखने का तो कोई मतलब नहीं बनता न। "

" ज्यादा होशियारी दिखाने की कोशिश मत करो जासूस महोदय। " मैने कहा __" माना कि आपने हमें सारी बातें सच सच बता दी हैं। मगर मौजूदा हालात में इसके बावजूद हम आपको यहाँ से जाने नहीं दे सकते। क्योंकि इतना तो हम भी सोच सकते हैं कि आपने ये सब ये सोच कर बता दिया हमे कि सब कुछ सुनने के बाद हमें यही लगे कि अब आप हमारे ही हक़ में हैं और हमारा किसी भी तरह का नुकसान नहीं कर सकते हैं। इस लिए हम आपको छोंड़ देंगे। जबकि यहाँ से छूटते ही आप पुनः अपना रंग बदल सकते हैं और हमारा काम तमाम करवा सकते हैं। इस लिए जासूस महोदय आपको छोंड़ देने का काम तो फिलहाल हम किसी भी सूरत में नहीं कर सकते। अतः आप अपने दिमाग़ से छूटने का ख़याल निकाल दें। किन्तु हाँ हम ये वादा करते हैं कि यहाँ आपको कोई तक़लीफ नहीं होने देंगे और जैसे ही मंत्री का काम

तमाम हो जाएगा वैसे ही आपको भी यहॉ से आज़ाद कर दिया जाएगा। "

" सबसे पहली बात तो तुम मुझे जासूस महोदय कहना बंद करो। " जॉर्ज ने कहा __" मेरा नाम जॉर्ज है। अतः मुझे जॉर्ज कह कर संबोधित कर सकते हो। दूसरी बात तुम बेवजह ही ये शक कर रहे हो कि यहॉ से छूटते ही मैं ऐसा वैसा कुछ कर दूँगा। मेरा यकीन करो यंग मैन , मुझे रियलाइज हो चुका है कि मैं जो कुछ भी अब तक मंत्री के लिए कर रहा था वो उचित नहीं था। मुझे पता है कि मंत्री और उसके सभी साथी जुर्म व अपराध करने वाले महान पापी हैं। इस लिए अब मैं उनके लिए कोई काम नहीं करूगा। बल्कि यहॉ से छूटने के बाद मैं वापस अपने शहर लौट जाऊँगा। "

" हो सकता है कि आपकी बातें सच ही हों मिस्टर जॉर्ज। " मैने कहा __" मगर चूँकि आप एक जासूस हैं अतः आप भी समझ सकते हैं कि मौजूदा हालात मैं हम आपको छोंड़ देने का जोखिम नहीं उठा सकते। इस लिए आप इसके लिए हमे माफ़ करें और यहीं रहें। "

मेरी बात सुन कर जॉर्ज बेबस भाव से मुझे देखता रह गया। फिर एकाएक ही उसके होठों पर मुस्कान उभर आई, बोला__"सही कहते हो भाई। मैं समझ सकता हूँ कि ऐसे हालात में तुम मुझे यकीनन छोंड़ देने का जोखिम नहीं उठा सकते। ख़ैर कोई बात नहीं, जैसा तुम्हें अच्छा लगे करो। और हॉ मेरी तरफ से बेस्ट ऑफ लक इसके लिए।"

जॉर्ज की ये बात सुन कर हम सब मुस्कुराए और फिर केशव जी के इशारे पर एक आदमी ने पुनः जॉर्ज के मुख में टेप चिपका दिया। उसके बाद सभी आदमियों को कुछ ज़रूरी हिदायतें दे कर हम सब वहॉ से बाहर की तरफ चल पड़े।

१६

उधर सत्यम सिंह जब हवेली पहुँचा तो शाम के चार बज चुके थे। सत्यम सिंह को सोनिया ड्राइंग रूम में ही बैठी मिली थी। उसके चेहरे से साफ पता चल रहा था कि वो अपने पति के लिए कितनी चिंतित व परेशान थी। उसने अपनी वकील दोस्त अनीता ब्यास से फोन पर बात की थी। अनीता के पूछने पर उसने संक्षेप में कुछ बातें बताई थी उसे। उसकी उस दोस्त ने उसे आश्वस्त किया था कि वो चिंता न करे, वो उसके पति को छुड़ाने की पूरी कोशिश करेगी। उसने सोनिया से कहा था कि वो शाम को उससे मिलने भी आएगी।

इधर सत्यम सिंह जैसे ही ड्राइंग रूम में दाखिल हुआ तथा सोनिया के बगल वाले सोफे पर बैठा वैसे ही कहीं खोई हुई सोनिया का ध्यान सत्यम सिंह की तरफ गया। उसे पहले तो यकीन नहीं हुआ किन्तु फिर एकाएक ही उसके चेहरे पर पहले हैरानी के भाव उभरे उसके बाद तुरंत ही खुशी के भावों ने उसका मुरझाया हुआ चेहरा ताज़े खिले गुलाब की मानिन्द खिला दिया।

" ओह सत्यम तुम आ गए। " खुशी से फूली न समाती हुई सोनिया ने मुस्कुराते हुए कहा था किन्तु तुरंत ही उसके चेहरे पर हैरानी व उलझन के भाव भी उभर आए , बोली __" मगर तुम वहाँ से आ कैसे गए सत्यम ? तुम्हें तो पुलिस का वो एसीपी गिरफ्तार करके ले गया था न ? फिर तुम पुलिस से छूट कर आ कैसे गए ? क्या पुलिस ने तुम्हें यूँ ही छोंड़ दिया या फिर तुमने कुछ ऐसा वैसा किया है ?"

" मैने कुछ भी ऐसा वैसा नहीं किया है सोनिया। " सत्यम सिंह ने सपाट लहजे में कहा __" बल्कि मुझे मंत्री जी ने पुलिस से ज़मानत पर छुड़ाया है। मगर ...। "

" मगर क्या सत्यम ??" सोनिया के माथे पर बल पड़ा।

" यही कि मंत्री का तो नाम ही है कि उसने मुझे पुलिस से छुड़ाया है। " सत्यम सिंह ने सोचने वाले भाव से कहा __" सच तो ये कि पुलिस मुझे खुद ही छोंड़ देना चाहती थी। "

" ये .. ये क्या कह रहे हो तुम ?" सोनिया हैरान __" भला पुलिस तुम्हें क्यों छोंड़ना चाहेगी ? और .... और ऐसा भला तुम कैसे कह सकते हो ?"

" बेवकूफी भरे सवाल मत करो सोनिया। " सत्यम सिंह ने नाराज गी के साथ कहा __" साधारण मामला होता तो सोचा भी जा सकता था कि पुलिस ने मामूली बात पर पकड़ा और फिर छोंड़ भी दिया। किन्तु ये मामला साधारण नहीं था। मैने एसीपी का रिवाल्वर छीन कर उसके सामने ही मानुषी को गोली मारी थी। इस लिए इस अपराध के लिए तो मुझे लंबे से नप जाना चाहिए था। मुझ पर साफ साफ अटेम्प्ट टू मर्डर का केस लगता। तुम अच्छी तरह जानती हो कि इस केस के तहत मेरा कानून से छूटना उस सूरत में तो नामुमकिन ही था जबकि उस संगीन अपराध का चश्मदीद गवाह खुद एसीपी ही था। इतने बड़े अपराध के

बावजूद वो मंत्री मुझे बड़ी आसानी से छुड़ा लाया। वो साला समझता होगा कि ये सब उसके रुतबे तथा दबदबे का कमाल है जबकि ऐसा है नहीं। बल्कि सच्चाई यही है कि पुलिस खुद चाहती थी कि मैं सहजता से छूट जाऊँ। इसका मतलब ये भी हुआ कि उस संगीन अपराध के लिए एसीपी ने मुझ पर कोई केस ही नहीं बनाया है। "

" बात तो तुम्हारी यकीनन सौ परसेंट सही है। " सोनिया के चेहरे पर सोचने वाले भाव उभरे __" किन्तु सवाल ये है कि पुलिस ऐसा क्यों चाहेगी कि तुम उसकी गिरफ्त से आसानी से छूट जाओ ? दूसरी बात , अगर पुलिस को तुम्हें इस तरह सहजता से छोंड़ ही देना था तो उस वक्त उसने तुम्हें गिरफ्तार ही क्यों किया था ?"

" कमाल है। " सत्यम सिंह ने हैरानी से सोनिया की तरफ देखा , फिर बोला __" ये सब तुम पूछ रही हो सोनिया ? जबकि तुम तो छोटी सी छोटी बात को पकड़ कर उलझी हुई बातों को सुलझाने में माहिर हो। "

" हॉ मगर। " सोनिया ने कहा __" तब जब मन में तुम्हारे प्रति ऐसी चिंता नहीं होती। हलॉकि सोच तो मैं अभी भी सकती हूँ। किन्तु तुम खुद ही बता दो तो क्या बुराई है ?"

" ये तो साबित हो चुका है कि। " सत्यम सिंह ने कहा __" विक्रम मुझसे कानूनी रूप से कोई बदला नहीं लेना चाहता। क्योंकि अगर उसे इस तरीके से लेना ही होता तो वो ये काम पहले ही कर लेता। यानी कि मेरे खिलाफ उसके पास जो सामान है उसे वो पुलिस को सौंप देता और बता देता कि ये सब उसके ताऊ यानी कि मेरा है। बस खेल खत्म। किन्तु उसने ऐसा नहीं किया। मतलब साफ है कि वो जो कुछ भी करेगा अपने तरीके से तथा अपने बलबूते पर करेगा। मानुषी व श्रुति को यहॉ से ले जाने वाला वाक्या जब सामने आया तो उसे बखूबी पता था कि हम उसके मंसूबों को नाकाम करने की जी तोड़ कोशिश करेंगे। ये सोच कर उसने भी अपने पक्ष को मजबूत किया। साक्षी ने उसे सुझाव दिया होगा कि अगर इसके बावजूद उसका पलड़ा कमज़ोर पड़ता है तो उस सूरत में वो पुलिस का सहारा लेगी। पुलिस फोर्स के आ जाने से सारा मामला ही उलट जाएगा और फिर वो बड़ी आसानी से मानुषी व श्रुति को अपने साथ ले जाएॅगे और कोई कुछ कर भी नहीं पाता। ऐसा हुआ भी। किन्तु उसे ये उम्मीद नहीं थी कि इस सबके बीच मानुषी को मेरे द्वारा गोली भी मार दी जाएगी। उनका मकसद तो इतना ही था कि पुलिस के आने के आने के बाद जब मैं और मेरे आदमी कुछ नहीं कर पाएॅगे तो वो बड़े आराम से मानुषी व श्रुति को ले जाएॅगे और मेरे माथे पर एक और हार व नाकामी की मुहर लगा जाएॅगे। किन्तु मानुषी को गोली लगने से मामला थोड़ा बिगड़ गया। उसे लगा कि सबके साथ मुझे गिरफ्तार तो होना ही था और फिर बाद मुझे छोंड़ ही दिया जाना था , किन्तु मानुषी को गोली मार देने से केस बन जाने वाली बात हो गई थी। केस बन जाने की सूरत में मेरा पुलिस से छूटना मुश्किल हो जाता। जो कि विक्रम हर्गिज़ भी नहीं चाहता था। तब उसने साक्षी से कहा होगा कि वो कुछ ऐसा करे कि मुझ पर कोई केस ही न बने। उस सूरत में फिर जब कोई मुझे ज़मानत पर छुड़ाने आएगा तो मैं आसानी से छूट जाऊँगा। विक्रम के इस सुझाव को या यूँ कहो कि उसकी इस इच्छा को साक्षी ने तुरंत मान लिया होगा और फिर उसने ऐसा ही कोई इंतजाम कर दिया होगा। जिसका नतीजा ये

निकला कि बाद में मंत्री मुझे बड़ी आसानी से छुड़ाने में कामयाब हो गया। दैट्स आल। "

" ओह तो ये बात है। " सोनिया ने कहा __" वैसे कमाल की बात है कि आज तुम्हारा दिमाग़ भी काफी शार्प साबित हुआ जो इतनी बारीकी से ये सब सोचा और इस सबका जूस निकाल कर भी रख दिया। मगर ....। "

" अब क्या हुआ ??" सत्यम सिंह बोल पड़ा।

" तुमने मानुषी को जान से मारने की कोशिश क्यों की सत्यम ?" सोनिया ने सहसा गंभीर होकर कहा __" उसने तो हमारे साथ ऐसा वैसा कुछ भी नहीं किया था। उस वक्त भी उसने तुमसे उस लहजे में सिर्फ इसी लिए बात की क्योंकि तुमने उससे बात ही ऐसे गंदे तरीके से की थी। तुम खुद सोचो सत्यम कि तुमने जीत के अहंकार तथा आवेश में आकर कितना ग़लत व्यवहार किया था। सबके सामने तुम्हें अपनी ही बेटी से उस तरीके से बात नहीं करनी चाहिए थी। क्योंकि इसका असर हमारे ही आदमियों पर पड़ेगा। वो सोचेंगे कि जो इंसान सबके सामने अपनी ही बेटी के साथ ऐसी अश्लीलता और ऐसी कूरता कर सकता है वो वास्तव में कितना घटिया होगा। हॉ सत्यम , इससे हमारी ही इमेज ख़राब होती है। कोई भी सभ्य लड़की ये बर्दाश्त नहीं कर पाएगी कि सबके सामने उसका ही बाप उससे ऐसी अश्लीलता से बात करके उसे जलील व शर्मसार करे। "

" यकीनन सच कह रही हो तुम। " सत्यम सिंह ने गहरी सास लेकर कहा __" बाद में मुझे भी एहसास हुआ कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। मगर उस वक्त हालात ही ऐसे बन गए थे कि मैं आपे से बाहर हो गया था। एक तो मैं उस हरामज़ादे की बातों से तथा उसे देख कर पागल हुआ जा रहा था जिसने अब तक मुझे शिकस्त ही दी थी। साला ऐसे ऐसे डॉयलाग बोल रहा था कि मेरे अंदर उन डायलाग को सुनकर उन्हें सहने की शक्ति ही नहीं बची थी। मुझे लग रहा था कि उस हराम के पिल्ले को कैसे भी करके खत्म कर दूँ और ऐसा होता भी अगर वहॉ पुलिस फोर्स न आ गई होती तो। मैं अंदर ही अंदर एक और हार व नाकामी से पागल व ब्यथित हुआ जा रहा था ऊपर से मेरी दोनो बेटियों ने सामने आकर जो कुछ कहा उसने मेरे गुस्से को और भी बढ़ा दिया था। रही सही कसर मानुषी ने सबके सामने मुझे थप्पड़ मार कर पूरी कर दी थी। बस उसके बाद मैंने अपना आपा खो दिया और वो सब कर बैठा। तुम खुद अंदाज़ा लगा सकती हो सोनिया कि उस वक्त मैं किस मानसिक हालत में रहा होऊँगा ?"

" चलो ये सुन कर अच्छा लगा कि तुम्हें मानुष ी को गोली मारने वाली बात पर अपनी ग़लती का एहसास हुआ। " सोनिया ने कहा __" किन्तु क्या तुम्हारे मन में ये विचार भी उठा है कि तुम्हें एक बार मानुषी का हाल चाल जान लेना चाहिए ? कुछ भी हो आख़िर वो है तो हमारी बेटी ही। "

" नहीं सोनिया। " सत्यम सिंह का चेहरा एकाएक कठोर हो गया , बोला __" मेरे लिए मेरी दोनो बेटियॉ अब मर चुकी हैं। इस दुनियॉ में अब तुम्हारे और हमारे बेटे के अलावा मेरा कोई नहीं है। एक बात और आज के बाद तुम मुझसे उन दोनो के बारे में कोई भी बात नहीं

करोगी। ये मेरी पहली और आख़िरी वार्निंग है। "

" मर्द कभी नहीं समझ सकता एक औरत की पीड़ा को। " सोनिया ने सहसा भारी स्वर में कहा __" मगर मुझे तुमसे उम्मीद थी सत्यम कि तुम मेरी पीड़ा को समझोगे। "

" कहना क्या चाहती हो तुम ?" सत्यम सिंह ने अजीब भाव से सोनिया की तरफ देखा।

" तुम जानते हो सत्यम कि मैं आज भी तुमसे उतना ही प्यार करती हूँ जितना पहले करती थी। " सोनिया ने कहा __" और मैं जाने कितनी बार तुम्हें अपने बेपनाह प्यार का सबूत भी दे चुकी हूँ। तुम्हारे सिर्फ एक इशारे पर मैं पराए मर्द के नीचे खुशी खुशी लेट गई। कभी इसके लिए तुमसे शिकायत नहीं की और ना ही तुमसे नाराज हुई। तुम्हारी हर खुशी में मैने अपनी खुशी देखी। तुम्हारी तरह सबके लिए कठोर भी बन गई। मगर मैं एक औरत के साथ साथ एक माँ भी हूँ सत्यम । औलाद चाहे जैसी भी हो वो अपनी माँ के लिए सबसे सुंदर व सबसे अनमोल होती है। मुझे अब तक इतनी ज्यादा तकलीफ़ नहीं हुई थी किन्तु इस हादसे से हुई है। मैं मानती हूँ कि मेरी दोनो बेटियों ने हमारे खिलाफ जा कर ग़लत किया है मगर जब ये सोचती हूँ कि उन दोनो ने ऐसा क्यों किया तब इस क्यों के जवाब को सोच कर ही दिल दहल जाता है। आख़िर अपने सामने तो इस सच्चाई को हमें भी मानना ही पड़ेगा न कि हमने अपनी ही बेटियों के साथ तथा बाकी सबके साथ ग़लत सोचा और ग़लत किया भी। "

" इन सब बातों को कहने का क्या मतलब है ?" सत्यम सिंह ने कहा __" और .... और आज अचानक ये बातें ही क्यों ? नहीं सोनिया , अब इन सब बातों को सोचने का कोई मतलब नहीं है और सोचना भी नहीं। क्योंकि अब बात बहुत आगे निकल चुकी है। अब तो इसका फैसला दो पक्षों में से किसी एक पक्ष के खत्म हो जाने पर ही होगा। उसके पहले तो कुछ हो ही नहीं सकता। इसके पहले तो ये था कि मैंने ये सब अपने बीवी बच्चों के लिए किया किन्तु अब ये भी है कि जिन चीज़ों की ख्वाहिश थी उसे हर हाल में पूरा करना है। अगर मेरे द्वारा वो सब बरबाद हुए हैं तो उनके द्वारा मेरा भी तो बहुत कुछ नुकसान हुआ। इस लिए अब ऐसी बातें अपने ज़हन में मत लाओ। ख़ैर छोंड़ो , मुझे भी ज़रा फ्रेश होना है। एक बात और , चिंता की कोई बात नहीं है। विक्रम भले ही मुझे शिकस्त देकर चला गया है मगर बहुत जल्द उसका भी किस्सा खत्म होने वाला है। क्योंकि मंत्री ने उसके पीछे जासूस लगाया हुआ है। वो जासूस बहुत जल्द उसके ठिकाने का पता मंत्री जी को देगा उसके बाद मंत्री विक्रम के ठिकाने पर धावा बोल देगा। उस साले विक्रम के साथ साथ तुम्हारी दोनो बेटियों का भी खेल खत्म हो जाएगा। "

ये सब कहने के बाद सत्यम सिंह उठा और अंदर कमरे की तरफ बढ़ गया। जबकि उसकी बातें सुनने के बाद सोनिया पहले तो हैरान हुई फिर सामान्य हो कर बैठी रही। चेहरे पर कई तरह के भाव आते जाते रहे।

१७

उस वक्त रात के दो बज रहे थे।रामगंज स्थित मंत्री रजतकुमार रस्तोगी के बंगले के पिछले भाग पर जहॉ कि अशोक व देवदार जैसे पेड़ लगे हुए थे दो काले साए अॅधेरे में छिपे खड़े थे। दोनो के ही जिस्मों पर काला स्याह लबादा था। यहॉ तक कि दोनो के चेहरे तथा हाथ तक काले कपड़ों से ढॅके हुए थे। चेहरे व सिर पर चढ़े काले मास्क से सिर्फ उनकी ऑखें ही झॉक रही थी या फिर ये भी कि जब वो दोनो बात करने के लिए मुह खोलते तो उनके दॉत चमक उठते थे। कहने का मतलब ये कि वो दोनो ही सिर से लेकर पॉव तक काले किन्तु चुस्त दुरुस्त कपड़ों से ढॅके हुए थे।

बंगले के चारो तरफ बाउण्ड्री वाल थी जिसमें थोड़ी थोड़ी दूरी पर रोशनी के लिए मध्यम साइज के एलईडी बल्ब लगे हुए थे। बाउण्ड्री वाल के अंदर तथा बाहर दोनो तरफ हाथो में गन लिए गार्ड्स भी खड़े नज़र आ रहे थे। रात के इतने समय भी वो सब मुस्तैदी से खड़े थे। उन सभी के जिस्मों पर भी काले ही कपड़े थे तथा सिर पर काली कैप थी।

बंगले का मुख्य दरवाजा जो कि खालि स्टील का ही था। उस दरवाजे के पास भी दोनो तरफ गनमैन तैनात थे। ख़ैर हम बात कर रहे थे उन दो रहस्यमय सायों की। ये दोनो ही साए क़रीब दस मिनट से उन पेड़ों के पास अॅधेरे में छिपे खड़े थे। बारह फीट ऊॅची बाउण्ड्री वाल को दोनो ने बड़ी ही दक्षता से लॉघ लिया था। जिसके लिए उन्हें रस्सी की मदद लेनी पड़ी थी। उनकी चारो ऑखें बड़ी बारीकी से चारो तरफ का अध्ययन कर रही थीं। दोनो ने एक बात नोट की कि जितने भी गनमैन वहॉ तैनात थे वो सब अपनी जगह पर ही कायम थे। यानी वो सब अपनी पोजीशन नहीं बदलते थे। सिर्फ दो ही ऐसे गनमैन थे जो हर पॉच मिनट में इस तरफ आते थे और फिर इधर उधर सरसरी सी नज़र डाल कर वापस लौट जाते थे।

बाउण्ड्री वाल से बंगले की इमारत की दूरी लगभग बीस फुट थी। नीचे ज़मीन पर चारो तरफ विदेशी घॉस उगी हुई थी। बाउण्ड्री वाल की तरफ ही ये सारे पेड़ लगे हुए थे। हलॉकि बीच बीच में ऐसे छोटे छोटे पौधे भी लगे हुए थे जो अक्सर बाग़ों की शोभा बढ़ाने के उपयोग में आते थे। किन्तु ये पौधे दो तरफ ही दिख रहे थे। सामने की तरफ विदेशी घॉस तो थी ही साथ ही बीचो बीच सफेद मारबल लगा हुआ था जो कि मुख्य दरवाजे तक था।

इस बार जब वो दोनो गनमैन आकर वापस लौटे तो उन दोनो सायों की नज़रें आपस में मिलीं और फिर दोनो ही बारी बारी पेड़ के पास से निकल कर बड़ी तेज़ी से इमारत की दीवार की तरफ उस हिस्से की तरफ बढ़े जहॉ पर लगभग पंद्रह फुट की ऊॅचाई पर एक शीशे की खिड़की थी तथा उस खिड़की के सामने ही छोटी सी बालकनी थी। खिड़की पर देखने से ऐसा प्रतीत होता था जैसे अंदर अंधेरा हो। बालकनी में भी स्टील की रेलिंग लगी हुई थी। ये हिस्सा बंगले के बाएॅ साइड था।

बालकनी के नीचे पहुॅचते ही एक साए ने तुरंत ही अपने हाथ में ली हुई रस्सी को एक हाथ से

गोल गोल घुमाया और फिर तेज़ी से ऊपर की तरफ उछाल दिया। रस्सी बड़े वेग से लहराती हुई ऊपर की तरफ गई और रेलिंग के ऊपरी भाग से ऊपर उठ कर वापस नीचे की तरफ आने को हुई तो वो रेलिंग के दूसरे हिस्से से पर फॅस गई। हलॉकि रस्सी के छोर पर लगे लोहे के मामूली से रांड से आवाज़ हुई किन्तु वो आवाज़ बहुत धीमी हुई थी। क्योंकि वो रांड स्टील में लगने के साथ ही नीचे से ऊपर की तरफ उठा तो वो बीच से निकल कर नीचे दीवार पर टकरा गया था।

" जल्दी करो। " दूसरे साए ने धीमी आवाज़ में उस पहले साए से कहा जिसने रस्सी को ऊपर बालकनी की तरफ उछाला थ ा , बोल ा __" हमें पॉच मिनट से पहले ऊपर पहुॅचना होगा। वरना वो दोनो गनमैन फिर से इधर आ जाए ॅगे। "

" बस हो ही गया है। " पहले साए ने ऊपर देखते हुए अपने एक हाथ को हल्का सा झटका दिया। परिणामस्वरूप दीवार के पास ही झूल रहा वो मामूली सा रॉड तेज़ी से नीचे सरका और कुछ ही पलों में पहले वाले साए के हाथ में आ गया। रॉड के हाथ में आते ही उसने दूसरे साए की तरफ देख कर बोल ा __" गो। "

पहले साए की बात सुनते ही दूसरा साया तेज़ी से आगे बढ़ा और रस्सी के दोनो भागों को पकड़ कर पहले उसे हल्का सा अपनी तरफ खींचा। जैसे चेक कर रहा हो कि सब ठीक है कि नहीं। उसके बाद वो दोनों हाथो से रस्सी को थोड़ा और ऊपर से पकड़ा और फिर झूल गया। कुछ ही पलों में वो रस्सी में झूलता हुआ ऊपर बालकनी के पास पहुॅच गया। नीचे खड़ा पहला साया चारो तरफ देख रहा था। तभी ऊपर पहुॅच गए साये ने रस्सी को झटका दिया तो नीचे खड़े साए ने उसकी तरफ देखा। ऊपर पहुॅच चुके साए ने हाथ के इशारे से उसे ऊपर आने को कहा।

उसका इशारा मिलते ही पहला वाला साया भी रस्सी को पकड़ कर ऊपर झूलते हुए कुछ ही पलों में पहुॅच गया। उसके पहुॅचते ही दूसरे साए ने रस्सी को ऊपर खींच लिया। तभी पहले वाले साए ने नीचे देखा, वो दोनो गन मैन इसी तरफ आ रहे थे। ये देख कर दोनो साए वहीं बालकनी पर बैठ कर छिप गए। थोड़ी ही देर में उन्होंने देखा कि वो दोनो गन मैन वापस जा रहे हैं तो ये दोनो भी उठ गए।

" चलो अब काम पर लग जाओ। " दूसरे साए ने धीमी आवाज़ में कह ा __" किन्तु सावधानी से। "

" जो हुकुम। " पहले साए ने अदब से सिर को हल्का सा खम करते हुए धीमी आवाज़ में कहा।

पहले वाले साए ने पलट कर खिड़की को देखा। उस खिड़की पर शीशा लगा हुआ था तथा दो पल्लों की खिड़की थी। पहले साए ने खिड़की में हाथ लगा कर उसे अंदर की तरफ हल्के से पुश किया तो कुछ न हुआ। मतलब साफ था खिड़की के दोनो पल्ले अंदर से बंद थे।

" ये अंदर से बंद है। " पहले वाले साए ने पलट कर दूसरे साए से कहा __" शुकर है कि हम कॉच काटने वाला हीरा लेकर आए थे , लाओ उसे। "

" ऐसे काम के लिए। " दूसरे साए ने धीरे से कहा __" ऐसी चीज़ की ज़रूरत तो पड़ती ही है। "

दूसरे साए ने कहा और अपने काले लबादे से हीरा निकाल कर पहले वाले साए के हाथ में दे दिया। हीरा लेकर पहला साया वापस मुड़ा और दाहिने पल्ले में एक हाथ जमा कर हीरे से पल्ले पर लगे शीशे को खास तरीके से काटना शुरू कर दिया। उसके दूसरे हाथ में एक अजीब सी चीज़ थी जो कि शीशे से ही चिपकी हुई थी। कुछ ही देर में शीशे का एक आयताकार टुकड़ा कट गया। पहले साए ने अपने दूसरे हाथ को अपनी तरफ बहुत ही सावधानी से खींचा। नतीजा ये हुआ कि वो कटा हुआ टुकड़ा उस अजीब सी चीज़ से चिपका हुआ अपनी जगह से बाहर आ गया।

अभी पहला साया उस टुकड़े को खींचा ही था कि दूसरे साए ने धीरे से कहा कि जल्दी से किन्तु सम्हल कर बैठ जाओ, क्योंकि नीचे वो दोनो गन मैन इस तरफ वापस आ गए हैं। अगर हम दोनो बालकनी में खड़े रहेंगे तो संभव है कि वो ऊपर देखें और फिर उनकी नज़र हम दोनो पर पड़ जाए। साये की बात सुन कर दोनो ही वहीं पर दुबक कर बैठ गए थे। ख़ैर कुछ ही देर बाद जब वो दोनो गन मैन वापस चले गए तो ये दोनो साए भी उठ कर खड़े हो गए।

पहले वाले साए ने कॉच का वो टुकड़ा बैठे समय ही बालकनी में एक तरफ रख दिया था। अतः अब उसने खिड़की के कटे हुए हिस्से में अपना दाहिना हाथ सावधानी से डाला और फिर अंदर से ही नीचे की तरफ लाकर उसने खिड़की की कुण्डी को तलाशा और उसे ऊपर उठा कर खोल दिया। उसके बाद उसने अंदर से ही दूसरे पल्ले की कुण्डी को भी खोल दिया। साये को अंदर की तरफ पर्दा लगा होने का भी पता चला। ख़ैर, अपना हाथ सावधानी से बाहर निकाल कर उसने खिड़की के दोनो पल्लों को अंदर की तरफ पुश किया तो हल्की सी आवाज़ हुई किन्तु दोनो ही पल्ले अंदर की तरफ खुले न। पहले साये को समझते देर न लगी कि पल्लों के अंदर की तरफ ऊपर भी कुण्डियॉ हैं जो कि बंद हैं। अतः साए ने फिर से उसी कटे हुए भाग से अंदर हाथ डाला और फिर ऊपर हाथ करके ऊपर की कुण्डी को नीचे की तरफ हल्के से खिसका दिया। ऐसा ही उसने दूसरे पल्ले पर भी किया।

थोड़ी ही देर में खिड़की के दोनो पल्ले अंदर की तरफ पुश किये जाने से खुलते चले गए। ये देख कर दोनो सायों के होठों पर मुस्कान उभर आई। जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि खिड़की के अंदर ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कि अंधेरा था। हलॉकि खिड़की में अंदर की तरफ पर्दे लगे होने की वजह से भी अॅधेरे का आभास हो सकता था। अतः पहले साए ने पल्ले खोलने के बाद अॅधेरे में डूबे पड़े कमरे की तरफ अपने कान लगा दिया। कदाचित इस लिए कि वो अंदर की किसी भी चीज़ की आहट को सुन सकें। किन्तु अंदर से कोई भी बारीक से बारीक आवाज़ नहीं आ रही थी। मतलब साफ था कि कमरा पूरी तरह खाली था। उसमें किसी भी आदमी का कोई वजूद नहीं था।

पहले साए ने एक छोटी सी पेंसिल टार्च अपने लबादे से निकाली और कमरे के अंदर की तरफ एक हाथ से पर्दे को हटा कर उसे रौशन किया। पेंसिल टार्च के प्रकाश का हल्का सा फोकस कमरे के अंदर की हर चीज़ पर साए के द्वारा हाथ से घुमाने पर घूमने लगा। कमरे के बाएॅ तरफ ही एक आलीशान बेड नज़र आया। उसके कुछ ही फॉसले पर दो सोफे रखे नज़र आए। खिड़की के नीचे लगभग तीन फुट की दूरी पर कमरे का फर्श था जिसमें बेहतरीन टाइल्स लगी हुई नज़र आई। सारी चीज़ों को देखने के बाद पहला साया आराम से पर्दा हटा कर खिड़की के रास्ते कमरे में आ गया। उसके बाद दूसरा साया भी आ गया।

कमरे में आते ही दूसरे साए ने खिड़की के दोनो पल्ले बंद किये और फिर सावधानी से पर्दा खींच दिया। उसके बाद पेंसिल टार्च की मदद से ही हर जगह को बारीकी से देखने लगे। दीवार पर लगी पेंटिंग्स से ही पता चला कि ये कमरा मंत्री के बेटे विवेक रस्तोगी का है। दीवार पर कई जगह उसकी खुद की भी फोटो लगी हुई थी साथ ही कई जगह ऐसी पेंटिंग्स भी लगी हुई थी जो कि लड़कियों व औरतों की नग्नता को उजागर कर रही थी।

" ज़रा चेक करो कि कमरे का दरवाजा अनलॉक है या नहीं। " दूसरे साए ने धीरे से कहा __" और अगर अनलॉक है तो तुम यहॉ से उस कमरे में जाने की कोशिश करो जो कमरा खुद मंत्री का हो। वहॉ जा कर बारीकी से हर चीज़ को देखो। इस वक्त मंत्री अपने इस आवास पर नहीं है। किसी ज़रूरी काम से बाहर गया हुआ है। फिर भी ज़रा सावधानी से काम लेना। अब जाओ। "

दूसरे साए की बात सुन कर पहला साया कमरे के दरवाजे की तरफ बढ़ा। दरवाजे के पास पहुॅच कर उसने दरवाजे के हैण्डल को पकड़ कर घुमाया मगर वह घूमा नहीं। इसका मतलब कमरा बाहर से लॉक था। बात भी जायज़ थी, मंत्री का बेटा तो यहॉ था नहीं इस लिए मंत्री ने या फिर उसके किसी कर्मचारी ने इस कमरे को बाहर से लॉक कर दिया होगा। ख़ैर, दरवाजे को लॉक जान कर वो साया पलट कर दूसरे साए के पास आया और उसे बताया कि दरवाजा बाहर से लॉक है। उसकी बात सुन कर दूसरे साए ने अपने लबादे से निकाल उसके हाथ में कोई चीज़ दी।

पहले साए ने पेंसिल टार्च की रोशनी में उस चीज़ को देखा तो अनायास ही उसके होठों पर मुस्कान उभर आई। दरअसल वो चीज़ "मास्टर की" थी। फिर क्या था, मास्टर की लेकर पहला साया तुरंत दरवाजे के पास गया और दरवाजे पर लगे हैण्डिल के कीहोल में उस मास्टर की को डाला और विपरीत दिशा में घुमा दिया। नतीजा ये हुआ कि दरवाजा अनलॉक हो गया। ये देख कर वो साया एक बार फिर मुस्कुराया और फिर दरवाजे को अपनी तरफ सावधानी से खींचा। दरवाज़े के बाहर गैलरी थी जो कि एलईडी ट्यूब लाइट तथा बल्बों के प्रकाश से रौशन थी।

बाहर बल्बों का प्रकाश देख कर साया अपनी जगह रुक गया। कदाचित वो सोचने लगा था कि रोशनी में वो आगे कैसे बढ़े? किन्तु शायद बढ़ना ज़रूरी था। अतः उसने दरवाजे से अपना सिर बाहर निकाल कर गैलरी के दोनों तरफ देखा। गैलरी पूरी तरह सुनसान पड़ी थी। हलॉकि

गैलरी बहुत लम्बी नहीं थी, बल्कि कुछ ही दूरी पर वो विपरीत दिशा में मुड़ गई थी। साये ने कुछ देर सोचने में लगाया और फिर बड़ी सावधानी से दरवाजे से बाहर गैलरी में आ गया। सनसान गैलरी पर सावधानी से चलते हुए वो मोड़ तक आ गया। मोड़ पर ठिठक कर उसने दूसरी तरफ की किसी भी आहट को सुनने के लिए दीवार के किनारे की तरफ अपना कान सटा दिया।

थोड़ी ही देर में वह अपनी जगह से हिला और गैलरी के मोड़ पर मुड़ गया। किन्तु थोड़ी ही दूर जाने के बाद उसे वापस लौटना पड़ा क्योंकि आगे गैलरी समाप्त थी। आगे कोई रास्ता नहीं था। साये को समझ आ गया कि वह दूसरी तरफ आ गया है। तभी तो उसे यहॉ पर कहीं कोई दूसरे कमरे का दरवाजा नहीं दिखा था। ख़ैर, वापस उसी जगह आकर वह दूसरी साइड वाली गैलरी की तरफ बढ़ चला। आठ दस कदम चलने के बाद ही उसे अंदर की तरफ वाली बालकनी की रेलिंग नज़र आई। रेलिंग के पास पहुॅच कर उसने देखा कि बालकनी दोनो तरफ थी लगभग बीस कदम की दूरी पर उसे नीचे जाने के लिए सीढ़ियॉ नज़र आई। रेलिंग के दूसरी तरफ नीचे काफी बड़ा ड्राइंग रूम नज़र आया। अपने स्थान पर खड़ा साया कुछ देर तक कुछ सोचता रहा फिर वह बाएॅ साइड की तरफ बढ़ चला। कुछ ही दूरी पर उसे एक और गैलरी नज़र आई। उसने गैलरी की तरफ देखा तो उसे एक कमरे का दरवाजा नज़र आया। दरवाज़ा देख कर वह तेज़ी से उसकी तरफ बढ़ा। थोड़ी ही देर में वो दरवाजे के पास पहुॅच गया। दरवाजे के हैण्डिल को पकड़ कर उसने उसे घुमाया तो पता चला कि वो लॉक है। ये देख कर उसने फौरन ही अपने लबादे से वो मास्टर की निकाली और की होल में चाभी डाल कर घुमा दिया। दरवाजा हल्की सी आवाज़ के साथ खुल गया।

उसने बहुत ही आहिस्ता से दरवाजे को अंदर की तरफ पुश किया तो पता चला अंदर अंधेरा है। साया कुछ देर तक किसी तरह की आवाज़ को सुनने की कोशिश करता रहा मगर कोई आवाज़ उसे अंदर की तरफ से सुनाई नहीं दी। ये महसूस कर उसने लबादे से पैंसिल टार्च निकाली और उसके प्रकाश को कमरे के अंदर की तरफ फोकस किया। फोकस जिस चीज़ पर पड़ा वो बेड था। किन्तु बेड पर कोई इंसान सोया हुआ नज़र न आया। साया बेख़ौफ अंदर दाखिल हो गया। कमरे के अंदर हर चीज़ को उसने पैंसिल टार्च की रोशनी में देखा। मगर उसे ऐसा कुछ नज़र न आया जिसे शायद उसे तलाश थी।

लगभग दस मिनट बाद वह कमरे से वापस बाहर आ गया। अभी वह दरवाजे से बाहर निकला ही था किसी से टकरा गया। किसी दूसरे व्यक्ति के होने की आशंका से ही वह बुरी तरह हड़बड़ा गया। किन्तु जैसे ही टकराने वाले पर उसकी नज़र पड़ी तो सामान्य हो गया। टकराने वाला वो दूसरा साया था जो उसके साथ ही यहॉ इस तरह आया था।

" क्या हुआ ?" उस दूसरे साये ने धीमी आवाज़ से पूछा __" कुछ मिला क्या ??"

" नहीं। " पहले वाले ने कहा __" अभी तो यही नहीं पता चल रहा कि मंत्री का निजी कमरा कौन सा है ? वो यहॉ ऊपर है या फिर नीचे है। "

" पता तो करना ही पड़ेगा। " दूसरे साए ने कहा __" मंत्री के परिवार में उसके दो बच्चे ही

हैं। बीवी कुछ साल पहले ही ईश्वर को प्यारी हो चुकी है। ख़ैर , इस वक्त क्योंकि मंत्री अपने आवास पर नहीं है इस लिए ये बॅगला अंदर से खाली ही है। बाहर गनमैन तैनात हैं। हमें जल्द से जल्द मंत्री के कमरे को ढूँढ़ना होगा। "

" ठीक है। " पहले वाले ने कहा __" मैं नीचे की तरफ चेक करता हूँ। "

" ओके। " दूसरे वाले ने कहा __" अगर तुम्हें या मुझे मंत्री का कमरा मिलता है तो तुरंत फोन पर मिस काल देना है। फोन बाइब्रेशन पर है अतः बाइब्रेशन से ही पता चल जाएगा। अब जाओ तुम। "

दूसरे साए की बात सुन कर पहला साया सीढ़ियों की तरफ तेज़ी से बढ़ गया। आख़िर काफी मशक्कत के बाद मंत्री का कमरा मिल ही गया। मंत्री का कमरा नीचे ही था। पहले साये ने दूसरे साये को फोन पर मिस काल देकर सूचित कर दिया। थोड़ी ही देर में वो दोनो मंत्री के कमरे में थे।

मंत्री चूँकि बंगले में नहीं था इस लिए बंगले के अंदर कोई था ही नहीं। बंगले के बाहर गनमैन ज़रूर तैनात थे किन्तु उनमें से किसी को भी इस बात का अंदेशा नहीं था कि बंगले के अंदर दो चोर बड़ी सफाई से उनकी ऑखों में धूल झोंक कर घुस चुके हैं। ख़ैर, दोनो सायों ने मंत्री के कमरे में जाकर सबसे पहले तो दरवाजे को अंदर से बंद किया उसके बाद जिस काम के लिए आए थे उस काम में लग गए। कमरे में पहले से ही नाइट बल्ब जल रहा था। किन्तु पहले वाले साए ने तेज़ रोशनी के लिए मेन बल्ब भी जला दिया। अब कमरे में तेज़ प्रकाश था तथा कमरे में रखी हर चीज़ स्पष्ट नज़र आने लगी थी।

दोनो ने बहुत ही बारीकी से हर चीज़ को देखना शुरू कर दिया। दोनो के हाव भाव से ऐसा लग रहा था जैसे वो इस काम में काफी माहिर हों। लगभग बीस मिनट की मेहनत के बाद वो दोनो ही इस तरह एक दूसरे के पास खड़े हो गए जैसे किसी चीज़ के न मिलने से बेहद चिंतित व परेशान हो गए हों।

" लगता है यहॉ कुछ नहीं है। " पहले साए ने धीमी आवाज़ से कहा __" मंत्री ने उन चीज़ों को ज़रूर किसी ऐसी जगह छुपाया होगा जहॉ पर वो चीज़ें किसी बाहरी आदमी को किसी सूरत में न मिल सकें। "

" वो चीज़ें ऐसी हैं भी नहीं जो इतनी आसानी से हमें मिल जाएॅगी। " दूसरे साये ने कहा __" ऐसी चीज़ों को तो हर इंसान सात तिज़ोरियों के अंदर ही छुपा कर रखता है। इस लिए हमें ऐसी ही किसी जगह को तलाश करना होगा जहॉ पर हमारी नज़रें पड़ी तो हों किन्तु हमने उस जगह को अंजाने में नज़रअंदाज़ कर दिया हो। "

" हॉ ये भी सही कहा। " पहले साए ने इधर उधर नज़रें घुमाते हुए कहा __" तो ठीक है एक बार फिर से हम हर जगह बारीकी से चेक करते हैं। संभव है कि इस बार हमारे हाथ कुछ लग ही जाए। "

पहले साए की बात सुन कर दूसरे साए ने सहमति में सिर हिलाया और फिर से वो हर जगह का बारीकी से मुआयना करने में लग गया। कमरे में मौजूद हर चीज़ बेसकीमती थी। फिर चाहे वो मंत्री का बेड हो, सोफे हों, फर्श में बिछा कालीन हो या फिर दीवारों पर लगी पेंटिंग्स।

पहला साया बेड के दाहिने साइड की दीवार की तरफ देख रहा था। उस दीवार पर हर दीवार की तरह ऊँचाई पर पेंटिंग्स लगी हुई थी किन्तु पेंटिंग्स के नीचे दीवार पर नीचे से लगभग छः फुट की ऊँचाई पर ऐसे नक्काशी की गई थी जैसे किसी बड़े से आदम कद शीशे के फ्रेम पर खूबसूरत नक्काशी की हुई होती है। दरअसल दीवार पर वो एक फ्रेम जैसा ही कुछ बना हुआ था। किन्तु फ्रेम के अंदर का भाग खाली था। यानी कि उसमें कोई चित्र वगैरह नहीं बना हुआ था। बल्कि ऐसा लगता था जैसे कि किसी बड़ी सी चीज़ का सिर्फ फ्रेम बना दिया गया हो। पहला साया दीवार में बने उस खाली फ्रेम को बड़े ध्यान से देखने लगा। एकाएक ही उसकी ऑखें सिकुड़ीं। उसने तुरंत ही दीवार के इधर उधर किसी खास चीज़ की तलाश में अपनी नज़रें दौड़ाईं।

दीवार पर बने उस फ्रेम के बाईं तरफ एक मध्यम साइज़ की पेंटिंग लगी हुई थी। पहला साया जाने क्या सोच कर उस पेंटिंग की तरफ बढ़ा। पेंटिंग के पास पहुँच कर उसने अपने एक हाथ से पेंटिंग के फ्रेम को पकड़ कर बाईं तरफ किया। पेंटिंग के निचले भाग के बाईं तरफ होते ही जो चीज़ नज़र आई उसे देख कर साये की ऑखें पहले तो हैरत से फटीं फिर एकाएक ही उनमें चमक आ गई। उसने तुरंत ही पलट कर दूसरे साये को धीमी आवाज़ देकर अपने पास बुलाया।

दूसरे साये के पास आते ही उसने उस साये को भी पेंटिंग के पीछे दीवार पर नज़र आ रही उस चीज़ को दिखाया। दरअसल वो चीज़ एक छोटे से कम्प्यूटर के मॉनीटर जैसी थी। ऊपरी तरफ दीवार से चिपकी हुई स्क्रीन और स्क्रीन के नीचे कीबोर्ड। स्क्रीन के ऊपरी भाग पर दो कलर की बत्तियॉ थीं। जिनमें से एक हरी तथा दूसरी लाल कलर की थी। लाल कलर वाली बत्ती इस वक्त रौशन थी। स्क्रीन पर लिखा था "प्लीज इन्टर योर पासवर्ड"।

" मुझे लगता है कि। " पहले साए ने धीमे स्वर में कहा __" ये किसी ऐसी जगह के लिए है जहॉ पर जाने के लिए इसमें सबसे पहले पासवर्ड डालना पड़ता है। "

" बिलकुल ठीक कहा तुमने। " दूसरे साये ने दीवार पर इधर उधर नज़र दौड़ाते हुए कहा ___" किन्तु यहॉ पर ऐसा तो कुछ नज़र नहीं आ रहा जिससे ऐसा प्रतीत होता हो कि यहॉ से कहीं दूसरी जगह जाने का कोई रास्ता हो। "

" ज़रा इस चीज़ को देखिए। " पहले साए ने दाहिनी तरफ दीवार पर नज़र आ रहे उस खाली फ्रेम की तरफ इशारा करते हुए कहा __" इस दीवार पर ये छः फीट ऊँचा तथा साड़े तीन फीट चौड़ा फ्रेम भला किस उद्देश्य से बनवाया गया होगा ? अगर ये मान कर चलें कि ये दीवार पर महज शोभा बढ़ाने के लिए बनवाया गया है तो फिर इसी तरह के सेम फ्रेम दो तरफ की दीवारों पर भी बने होने चाहिए थे। एक तरफ तो कमरे का दरवाजा है। अतः उस तरफ ना भी बनवाया जाता तो कोई बात न थी। किन्तु ऐसा फ्रेमनुमा डिजाइन सिर्फ इसी एक तरफ की

दीवार पर क्यों बनवाया गया हो सकता है ?"

" यकीनन तुम्हारी बात में प्वाइंट है। " दूसरे साए ने दीवार पर बने उस फ्रेम की आकृति को गौर से देखते हुए कहा __" अगर इस स्क्रीन से ये पता चलता है कि ये किसी चीज़ के लिए पासवर्ड मॉग रहा है तो ये भी हो सकता है कि यहॉ पर कोई ऐसी जगह हो सकती है जहॉ जाने के लिए हमें इसमें पासवर्ड डालना होगा। इसका मतलब ये हुआ कि यहॉ पर कहीं कोई दूसरी जगह भी है जहॉ जाने का रास्ता बना होगा। जोकि फिलहाल हमें नज़र नहीं आ रहा। हलॉकि ऐसा भी हो सकता है कि ये मॉनीटर सिस्टम किसी और ही चीज़ के लिए हो। "

" बिलकुल हो सकता है। " पहले साए ने कहा __" किन्तु इस कमरे में ऐसे खास सिस्टम का उपयोग भला किस चीज़ के लिए हो सकता है ? मुझे लगता है कि ये इलेक्ट्रिक सिस्टम लगाया ही इस लिये गया है कि इसके माध्यम से ही हमें कहीं जाने का रास्ता नज़र आए। कहने का मतलब ये कि अगर हम इस स्क्रीन पर सही पासवर्ड डाल दें तो मुमकिन है कि किसी जगह जाने का रास्ता नज़र आ जाए या फिर रास्ता ही बन जाए। या फिर ऐसा भी हो सकता है कि कुछ और ही हो जाए। "

" हॉ ये सही कहा तुमने। " दूसरे साए ने कहने के साथ ही दीवार पर बने उसी फ्रेम की तरफ पुनः देखा __" कहीं ऐसा तो नहीं कि ये फ्रेम ही वो रास्ता हो। बेशक ऐसा ही हो सकता है क्योंकि ये फ्रेम नीचे फर्श से ऊपर की तरफ है। दूसरी बात इसका साइज बिलकुल वैसा ही है जैसे किसी दरवाजे का होता है। वरना सोचने वाली बात है कि अगर ऐसा कोई फ्रेम सिर्फ कमरे की शोभा बढ़ाने के लिए बनाया गया होता तो ये फर्श से लगा हुआ नहीं होता बल्कि फर्श से एक या दो फीट की ऊॅचाई से बना हुआ होता। तीसरी बात ये बनाया ही इस तरह गया है कि आम इंसान इसे देख कर यही समझेगा कि ये सिर्फ एक फ्रेम ही है जो कि कमरे की शोभा बढ़ाने के लिए एक तरफ की दीवार पर बनाया गया है। "

" इसका मतलब कि ये साबित होता हुआ नज़र आ रहा है कि ये फ्रेम कहीं जाने का दरवाजा ही है। " पहले साये ने कहा __" और ये तभी खुलेगा जब हम इस इलेक्ट्रिक सिस्टम में पासवर्ड डालेंगे ?"

" करेक्ट। " दूसरे साये ने कहा ___" अब सवाल ये है कि इसका पासवर्ड क्या होगा ?"

" इसका कीबोर्ड बिलकुल वैसा ही है जैसे किसी कम्प्यूटर का होता है। " पहले साये ने उस स्क्रीन से लगे ही कीबोर्ड की तरफ देखते हुए कहा __" इसका पासवर्ड किसी के नाम से अथवा किन्हीं संख्याओं से भी हो सकता है। "

" बेशक हो सकता है। " दूसरे साए ने कहा __" और ये हमारे लिए काफी चिंता का विषय भी हो गया है। क्योंकि अगर हमें इसका सही पासवर्ड न मिला तो ये दरवाजा नहीं खुलेगा। मुझे पूरा यकीन है कि इस दरवाजे के पार ही ऐसी वो जगह है जहॉ पर हमें वो चीज़ें मिल सकती हैं जिसके लिए हम यहॉ आए हैं। हलॉकि ये सिर्फ हमारा अंदेशा ही है कि यहॉ पर कोई दरवाजा हो सकता है जहॉ पर जाने के लिए ये इलेक्ट्रिक सिस्टम लगाया गया है। ऐसा भी हो

सकता है कि इसका उपयोग इसके अलावा भी किसी और चीज़ के लिए हो। किन्तु एक बार चेक तो करना ही चाहिए हमें। संभव है कि वैसा ही हो जैसे का हमें अंदेशा है। "

" कुछ भी हो सकता है। मगर चेक तो यकीनन करना ही पड़ेगा। ख़ैर , क्या ऐसा नहीं हो सकता कि इसका पासवर्ड यहीं कहीं मौजूद हो ?" पहले साये ने कहा __" मेरे कहने का मतलब है कि इसका पासवर्ड मंत्री ने आलमारी में ही कहीं छुपा कर रखा हुआ हो। मैं ऐसा ये सोच कर कह रहा हूँ कि जब ये सिस्टम लगवाया गया होगा तब इसका सबकुछ नया नया ही रहा होगा। शुरू शुरू में किसी भी चीज़ का पासवर्ड हमें इतना जल्दी याद नहीं होता और अगर याद हो भी गया तो उसके भूल जाने के चान्सेस ज्यादा रहते हैं। ऐसा हम सबके साथ होता है। इस लिए ऐसा मुमकिन है कि जैसे हम किसी चीज़ का पासवर्ड अलग से लिख कर उसे संभाल कर रख लेते हैं वैसे ही मंत्री ने भी किया हो। "

" सही कहा तुमने। " दूसरे साये ने कहा __" ऐसा हो सकता है। मंत्री ने इसका पासवर्ड यहीं कहीं छुपा कर रखा होगा। अतः हम कमरे में रखी इन आलमारियों की तलाशी लेते हैं। "

दूसरे साये की बात सुन कर पहले साये ने हाँ में सिर हिलाया और फिर दोनो ही कमरे में रखी तीन तीन आलमारियों की तरफ बढ़े। उन तीन आलमारियों में एक अनलॉक थी जबकि बाकी की दो आलमारियाँ लॉक थी। दोनो ने एक एक लॉक आलमारी को संभाल लिया। मास्टर की से दोनो आलमारियों को अनलॉक किया और फिर उसके अंदर तलाशी अभियान शुरू कर दिया।

दोनो ही आलमारियों में कई तरह के काग़जात भरे पड़े थे। जिन्हें उलट पलट कर वो दोनो ही साये बारीकी से देख रहे थे। किन्तु उन कागजातों में उन्हें उस सिस्टम का पासवर्ड जैसा कुछ न मिला। आलमारी के अंदर ही एक और लॉकर था जोकि बंद था। उन दोनों ने उन लॉकरों को भी मास्टर की से खोला। अंदर वाले लॉकर्स में काफी सारी ज्वेलरी तथा बैंक की कॉपी पासबुक वगैरह थी तथा काफी सारे नोटों के बंडल भी थे।

तभी दूसरे साये को उस लॉकर से कुछ मिला जिसे उसने लॉकर से बाहर निकाला। वो एक डायरी थी। दूसरे साये ने उस डायरी को खोल कर उसके हर पेज को बारीकी से देखना शुरू कर दिया। उसमें काफी कुछ चीज़ें लिखी हुई थी। काफी सारे पेज़ देखने के बाद सहसा एक पेज पर साये की नज़र ठहर गई।

" मिल गया। " साये के मुख से ज़रा ऊँची आवाज़ निकल गई। मारे खुशी के उसे होश ही नहीं रह गया था कि वो दोनो इस वक्त मंत्री के बंगले में चोर की हैंसियत से आए हुए हैं। वो तो शुकर था कि बंगले के अंदर कोई था नहीं वरना उसकी इस आवाज़ से ज़रूर किसी न किसी को पता चल जाता। ख़ैर उसकी आवाज़ से और तो किसी को पता न चला किन्तु पहला साया ज़रूर चौंक कर उसकी तरफ देखने लगा था। दूसरे साये को भी तुरंत ही ख़याल आ गया था कि खुशी के आवेश में उसके मुख से कुछ ज्यादा ही ऊँची आवाज़ निकल गई थी। दोनो ही कुछ देर अपनी सास ें रोंके खड़े रहे।

पहला साया दूसरे वाले के पास आया और फिर उसकी तरफ देख कर बोला__"बाहर जो गनमैन तैनात हैं उन्हें यहॉ बुलाना है क्या?"

" सॉरी। " दूसरा साया बोलाा __" मारे खुशी के याद ही नहीं रह गया था कि हम यहॉ चोर बन कर आए हुए हैं। ख़ैर , ये देखो। हमें जिसकी तलाश थी वो इस डायरी में है। तुम्हारा कहना बिलकुल सही था कि मंत्री ने उस सिस्टम का पासवर्ड अलग से कहीं लिख कर छुपाया हुआ होगा। "

" तो फिर देर किस बात की है ?" पहले साये ने धीमें स्वर में मुस्कुराते हुए कहाा __" हमें यहॉ पर आए हुए काफी समय हो गया है। इस लिए अब हमें जल्दी जल्दी अपने काम को अंजाम देना होगा। ऐसा न हो कि मंत्री वापस लौट आए यहॉ। साला दुर्भाग्य को कोई नहीं जानता कि कब किसके सिर पर आ धमके। "

" सही कहा तुमने। " दूसरे साये ने कहाा __" आओ फिर शुरू करते हैं। "

कहने के साथ ही दूसरा साया उस सिस्टम की तरफ बढ़ चला, उसके पीछे पीछे ही पहला साया भी बढ़ चला था। सिस्टम के पास पहुॅच कर दूसरे साये ने डायरी पर लिखे पासवर्ड को सिस्टम पर बड़ी सावधानी से डाला और फिर इंटर का बटन दबा दिया। इन्टर का बटन दबाते ही स्क्रीन के ऊपर लगी हरी बत्ती जल उठी साथ ही स्क्रीन पर "वैलकम" लिखा नज़र आया। ये देख कर वो दोनो साये अभी मुस्कुराये ही थे कि तभी उनके दाहिनी तरफ हल्की सी आवाज़ हुई। दोनो ने पलट कर उस तरफ देखा।

दीवार में जिस जगह वो फ्रेम बना हुआ था उसी फ्रेम के बीचों बीच से एक दरवाजा खुलता हुआ अंदर की तरफ जाने लगा था। वो एक ही पल्ले का मोटा सा दरवाजा था। जो बंद होने पर बिलकुल दीवार की तरह ही नज़र आता था। कुछ ही पलों में वो दरवाजा पूरा खुल कर दाहिने साइड हो गया। दरवाजे के उस तरफ अंधेरा था जो कि इस तरफ के उजाले से थोड़ा दूर हो गया था। दोनो ही साये दरवाजे के पास आकर खड़े हो गए। दरवाजे से आगे लगभग तीन फीट पर फर्श था उसके बाद नीचे जाने के लिए सीढ़ियॉ नज़र आ रही थीं।

" कमाल है। " पहला साया बोल पड़ाा __" ये तो बेसमेंट लगता है। कोई सोच भी नहीं सकता था कि यहॉ पर ऐसा कुछ हो सकता है। "

" ऐसे लोग। " दूसरे साये ने कहाा ___" ऐसे कामों के लिए ऐसी ही जगहों का ज्यादातर चुनाव करते हैं और इससे सेफ्टी भी रहती है। वरना खुद सोचो कि कोई दूसरा यहॉ तक कैसे पहुॅच जाएगाा ? ख़ैर छोंड़ाो , आओ इसके अंदर चलते हैं। "

" मुझे लगता है कि। " पहले साये ने कहाा __" हम में से किसी एक को ही अंदर जाना चाहिए जबकि किसी एक को यहीं पर रहना चाहिए। क्योंकि ऐसा भी हो सकता है कि बाहर तैनात गनमैनों में से कोई बंगलाे के अंदर ये सोच कर आ जाए कि एक बार अंदर की तरफ का हाल चाल भी देख लिया जाए। अतः अगर ऐसी वैसी कोई बात होती है तो कम से कम हम में से कोई एक यहॉ रह कर उसे संभालनाे की कोशिश तो करेगा। "

" ये भी सही कहा तुमने। " दूसरे साये ने कहा __" तो ठीक है तुम यहीं रहो। इसके अंदर जाने का काम अब मेरा है। "

" ओके बेस्ट ऑफ लक। " पहले साए ने कहने के साथ ही अपने दाहिने हाथ का अँगूठा दिखाया उसे __" लेकिन हॉ ज़रा संभाल कर। "

दूसरे साये ने हॉ में सिर हिलाया और दरवाजे के उस पार बढ़ चला। उस पार के फर्श पर आकर वह ठिठका और दोनो तरफ देखा तो उसे बाईं तरफ दीवार पर एक स्विच नज़र आया। उसने उस स्विच को पहले ध्यान से देखा उसके बाद उसने हाथ बढ़ा कर स्विच का बटन दबा दिया। परिणामस्वरूप सीढ़ियों के ऊपर लगी एक ट्यूबलाइट रौशन हो गई। अब वहॉ पर काफी प्रकाश था।

दूसरा साया सामने की तरफ मुड़ कर बड़ी सावधानी से सीढ़ियों पर उतरता चला गया। जबकि कमरे में दीवार के पास ही खड़ा पहला साया उसे जाते हुए देखता रहा। उसके दिल की धड़कनें अनायास ही बढ़ गईं थी। उधर कुछ ही पलों में दूसरा साया सीढ़ियॉ उतर कर बेसमेंट में पहुँच गया। नीचे की लास्ट सीढ़ी से थोंड़ी ही दूरी पर दाहिनी तरफ की दीवार में एक और स्विच नज़र आया। साये ने उस स्विच का बटन ऑन कर बेसमेंट की लाइट जला दी। लाइट के जलते ही बेसमेंट में तीव्र प्रकाश फैल गया।

तीव्र रौशनी में बेसमेंट की हर चीज़ स्पष्ट नज़र आने लगी थी। किन्तु जिस खास चीज़ पर साये की नज़र पड़ी उसे देख कर उसकी ऑखें फटी की फटी रह गईं। बेसमेंट काफी बड़ा था। ऐसा लगता था जैसे ये कोई लम्बा चौड़ा हाल हो। चारो तरफ की दीवारों पर अलग अलग चीज़ों का क्रमशः स्टाक था यहॉ। किन्तु सबसे खास चीज़ ये थी कि हाल के सामने अंतिम छोर के फर्श पर ही एक बड़ी सी ट्राली थी जिसके ऊपर दो हज़ार के तथा पॉच सौ के नोटों के बंडल नीचे से ऊपर की तरफ रखे हुए थे। ये सब न्यू करेन्सी थी। जोकि पॉलिथिन में बंद थी। इतने सारे रुपये को देख कर किसी की भी ऑखें फटी की फटी रह जातीं। उस ट्राली के आगे दीवार से सटे स्टील के खॉचे बने हुए थे जिनके दो खॉचों में चमचमाते हुए गोल्ड के बिस्किट रखे हुए थे। बिस्किट के वो दोनो ही खॉचे पारदर्शी शीशे से बंद थे। बाकी के खॉचों में लकड़ी के बाक्स थे। फर्श पर भी काफी सारे बॉक्स रखे हुए थे।

ये सारी चीज़ें देख कर साये की ऑखें फटी हुई थी। किन्तु जल्द ही उसने खुद को मानो संभाला और आगे की तरफ बढ़ चला। लकड़ी के एक बाक्स के पास पहुँच कर उसने बाक्स के ऊपर लगे लकड़ी के ही ढक्कन रूपी पटरे को पकड़ कर अपनी तरफ खींच कर उसे निकाला। ढक्कन के हटते ही बाक्स में रखी हुई जो चीज़ नज़र आई उसे देख कर साये की ऑखें एक बार पुनः हैरत से फैलीं। बाक्स में एक जैसी कई सारी गन रखी हुई थी। मतलब साफ था कि यहॉ पर जितने भी ऐसे बाक्स थे उन सब में तरह तरह की गन्स ही थीं।

साये ने चारो तरफ नज़र घुमा कर बारीकी से देखना शुरू कर दिया। दाएॅ तरफ एक केबिन जैसा बना हुआ था। साया उस तरफ बढ़ गया। केबिन में पहुँच कर उसने देखा कि ये एक छोटा सा केबिन है जिसमें एक तरफ ऊँची सी मेज थी तथा मेज के ऊपर एक कम्प्यूटर रखा

हुआ था। मेज में कई सारे दस्तावेज थे। साये ने एक एक करके सभी दस्तावेज को खोल कर देखा। उन सब में कई तरह की रसीद व काग़जात थे तथा कई सारी फाइलें भी थीं। साये ने उन सभी फाइलों को बारीकी से देखना शुरू कर दिया।

फाइलों में से कुछ फाइलों को उसने अलग करके एक तरफ रखा। उसके बाद उसने एक नज़र कम्प्यूटर पर डाली। कुछ देर तक वह उसे देखते हुए सोचता रहा। फिर वह अलग की हुई फाइलों को लेकर केबिन से बाहर आ गया। जैसा कि बताया जा चुका है कि बेसमेंट काफी बड़ा था। साया हर जगह जा जा कर बारीकी से देखने लगा। तभी एक तरफ उसे एक बड़ा सा दरवाजा नज़र आया। ये दरवाजा ठीक वैसा ही था जैसा कि बेसमेंट में आने के लिए उस कमरे में था। इस दरवाजे के बाईं तरफ वैसा ही एक और सिस्टम लगा हुआ था। जिसमें पासवर्ड डालने के लिए स्क्रीन पर "प्लीज इन्टर योर पासवर्ड" लिखा हुआ था। साये ने कुछ सोचते हुए अपने लबादे से एक छोटा सा मोबाइल निकाला और उसमें से हरा बटन दबाया। हरा बटन दबाते ही उसमें डायल काल की लिस्ट में एक ही नंबर दिखा जिसे उसने पुनः हरा बटन दबा कर डायल कर दिया। डायल करते ही मोबाइल को कान से लगा लिया उसने, कुछ ही सेकण्ड में दूसरी तरफ से काल रिसीव किया गया।

" यहॉ पर वैसा ही एक और दरवाजा है। " काल रिसीव किये जाने पर साये ने तुरंत बिना किसी भूमिका के धीमे स्वर में कहा __" अतः तुम उस डायरी में देखो कि क्या इसका भी पासवर्ड उसमें है या फिर इन दोनो दरवाजों का एक ही पासवर्ड है। जल्दी से देख कर मुझे बताओ। "

उधर यकीनन पहला वाला साया ही था। दूसरे साये को अपने कान में कुछ देर सुरसराहट की आवाज़ आती रही उसके बाद कुछ कहा गया। जिसके जवाब में साये ने कहा__"ओह एक मिनट।"

कहने के साथ ही ये साया दरवाजे के बाएॅ साइड दीवार पर लगे सिस्टम के पास तेज़ी से गया। सिस्टम के पास पहुॅचते ही बोला__"हॉ अब बताओ।"

उधर से शायद पहला वाला साया इस साये को पासवर्ड बता रहा था जिसे ये वाला साया उसके बताने के साथ ही कीबोर्ड पर अपनी एक उॅगली से पंच करता जा रहा था। थोड़ी ही देर में साये के द्वारा "इन्टर" का बटन दबाए जाते ही सिस्टम पर लगी हरी बत्ती जल उठी। बत्ती के जलते ही वो दरवाजा हल्की आवाज़ के साथ इस तरफ ही खुलता चला गया। दूसरी तरफ अंधेरा था जोकि इधर की रौशनी से हल्का सा दूर हो गया। हल्की रोशनी होते ही सामने सीढ़ियॉ नज़र आईं जो कि ऊपर की तरफ जा रही थी। साया उन सीढ़ियों को देख कर पहले कुछ देर कुछ सोचा फिर आगे बढ़ कर उन सीढ़ियों पर चढ़ता चला गया। सीढ़ी के ऊपर आकर उसने देखा कि सामने एक और दरवाजा है किन्तु ये दरवाजा लोहे का था। दरवाजे के निचले भाग की दरार में हल्की रोशनी दिख रही थी। मतलब साफ था दरवाजे के दूसरी तरफ कुछ और भी था किन्तु क्या? इस सवाल का जवाब तो उस तरफ पहुॅच कर ही मिल सकता था।

साये ने देखा कि दरवाजा इस तरफ से ही बंद है। क्योंकि मोटा सा ताला कुण्डे पर झूल रहा था। ऐसा ताला साये ने पहली बार ही देखा था। कुण्डे के पास ही एक छिद्र था, वो छिद्र ऐसा था जैसे कीहोल हो। यानी कि ये दरवाजा दो तरह से लॉक था। साये ने झुक कर कीहोल से अपनी एक ऑख सटा दी। दूसरी तरफ काफी उजाला था तथा उस उजाले में ही उसे ऐसा नज़र आया जैसे उस तरफ कोई फैक्ट्री हो। कुछ लोग भी उस तरफ नज़र आए। जिनमें कुछ आम आदमियों के साथ साथ हाथो में गन लिए कुछ गार्ड्स भी थे।

उस तरफ का नज़ारा देख कर साये ने कीहोल से अपनी ऑख हटा ली। उसके बाद वह एक पल के लिए वहॉ नहीं रुका बल्कि पलट कर वापस चल दिया। बेसमेंट में आकर उसने दरवाजे को बड़ी सावधानी से बंद किया। दरवाजा जैसे ही पूरा बंद हुआ वैसे ही बगल से दीवार पर लगे उस सिस्टम के स्क्रीन पर "डोर हैज बीन क्लोज्ड" लिखा नज़र आया और साथ ही ऊपर लगी लाल बत्ती जल उठी। लाल बत्ती के जलते ही स्क्रीन पर फिर से "प्लीज इन्टर योर पासवर्ड" लिख गया।

कुछ ही देर में बेसमेंट से चलता हुआ वो साया सीढ़ियों के पास आया और फिर सीढ़ियॉ चढ़ते हुए कमरे में पहले वाले साये के पास आ गया। दरवाजे को बंद करने के बाद उसने पहले गहरी गहरी सासें ली। उसके बाद उसने पहले साए की तरफ देखा तो हल्के से चौंका।

" ये क्या है ?" दूसरे साये ने पहले साये के हाथ में बैग देख कर पूछा।

" इसमें मंत्री का लैपटॉप है। " पहले साये ने कहा __" ये मुझे इस बेड के नीचे बने बाक्स में मिला है। मैने इसे अभी देखा नहीं है। हो सकता है कि इसमें भी पासवर्ड वाला चक्कर हो इस लिए इसे हम अपने साथ ही ले चलेंगे। "

" ये बहुत अच्छा हुआ। " दूसरे साए ने कहा __" मंत्री के लैपटॉप में भी काफी कुछ मसाला मिल सकता है। ख़ैर , इन फाइलों को भी इस बैग में डाल लो। उसके बाद हमें तुरंत यहॉ से निकलना है। अब यहॉ पर ज्यादा देर रुकना ठीक नहीं है। "

" ठीक है। " पहले साए ने कहने के साथ ही बैग को बेड पर रखा और दूसरे साये से फाइलें लेकर बैग में डाल लिया।

उसके बाद ये दोनो ही शातिर चोर जिस तरह छुपते छुपाते हुए यहॉ बड़ी होशियारी से आए थे वैसे ही यहॉ से निकल भी गए। बालकनी से जब दोनो नीचे ज़मीन पर उतर आए तो बालकनी में इनकी वो रस्सी ही फॅस गई। वो तो शुकर था कि इस तरफ आने वाले वो दोनो गनमैन इस तरफ आए ही नहीं। वरना उन्हें बालकनी की रेलिंग से झूलती हुई ये रस्सी ज़रूर दिख जाती और ये दोनो भी। ख़ैर दोनो ने किसी तरह उस रस्सी को निकाल ही लिया और फिर उसी रस्सी के द्वारा बाउण्ड्री वाल के उस पार भी चले गए। थोड़ी ही देर में वो दोनो अॅधेरे का लाभ उठाते हुए कहीं गायब से हो गए।

९८

सुबह हुई।

मंत्री रजतकुमार रस्तोगी एक विशेष दौरे पर गया हुआ था। किन्तु दौरे पर भी उसका पूरा ध्यान अपने जासूस उस जॉर्ज के फोन पर ही था। उसे पता था कि जॉर्ज बहुत जल्द उसे विक्रम और साक्षी के ठिकाने का पता फोन पर बताएगा। पिछला सारा दिन और फिर लगभग सारी रात गुज़र गई थी मगर जॉर्ज का फोन अब तक न आया था उसके पास। उसने सोचा कि संभव है कि विक्रम और साक्षी अभी हॉस्पिटल में ही अपनी बहन मानुषी का इलाज़ करवा रहे होंगे। जिसके चलते वो लोग अभी अपने ठिकाने पर वापस न गए होंगे। शायद यही वजह होगी कि जॉर्ज ने उसे अब तक कोई फोन न किया था। ख़ैर उम्मीद पर तो दुनियॉ कायम है। यही हाल रस्तोगी का था। पिछली शाम को ही वह दौरे पर निकल गया था। उसका प्रोग्राम पहले से ही फिक्स था। अतः दौरे से लौटने में उसे दूसरा दिन शुरू हो जाना था।

सुबह मंत्री की ऑख उसके मोबाइल फोन के बजने से ही खुली थी। उसने उठ कर टाइम देखा तो सुबह के साढ़े पॉच बज रहे थे। मोबाइल की स्क्रीन पर जॉर्ज का नाम देख कर उसके होठों पर मुस्कान उभर आई, साथ ही चेहरे पर चमक भी पैदा हो गई। उसने बेहद खुशी के साथ काल को रिसीव कर मोबाइल को कान से लगाया था और खुशी खुशी पूछा भी था कि 'बोलो जॉर्ज सुबह सुबह खुश ख़बरी सुनने के बहुत उतावले हो रहे हैं हम'। उसकी इस बात पर जॉर्ज ने उधर से खुशी वाले लहजे में ही कहा था कि रस्तोगी साहब आपका काम संपन्न हो गया है। इस लिए आप जल्दी से अपने आवास पर आ जाइये।

जॉर्ज की ये बात सुन कर रस्तोगी खुशी से फूला नहीं समाया था। वह फोन पर ही सारी बात जान लेना चाहता था मगर जॉर्ज ने कहा कि आमने सामने बात करने का मज़ा ही कुछ और होगा। इस लिए आप आइये और अपने सभी साथियों को भी बुला लीजिएगा। उसके बाद ही तसल्ली से सारी बात बताई जाएगी। जॉर्ज की इस बात से मंत्री ने हॅसते हुए कहा था कि ठीक है जॉर्ज हम जल्द से जल्द पहुॅच रहे हैं।

मंत्री जब अपने दलबल के साथ वापस लौट कर रामगंज स्थित अपने आवास पर आया तो उस वक्त सुबह के सात बज गए थे। उसने अपने साथियों को जॉर्ज से बात करने के बाद ही फोन पर अपने आवास पर आ जाने को कह दिया था। शानदार बंगले के अंदर पहुॅचते ही मंत्री रजतकुमार रस्तोगी को ड्राइंग रूम में अपने सभी साथी सोफों पर बैठे मिल गए। किन्तु जॉर्ज उसे कहीं नज़र न आया। ये देख कर उसके चेहरे पर चौकने के भाव उभरे। बाकी उसके साथी लोग तो सामान्य ही बैठे हुए थे।

" अरे अवधेश। " मंत्री ने सोफे पर बैठने के बाद अवधेश की तरफ देखते हुए कहा __" जॉर्ज कहॉ गया भई ? उसने तो हमें सुबह फोन करके जल्द से जल्द यहॉ आने को कहा था और अब वह खुद ही यहॉ नहीं है। कमाल है भाई , इन जासूसों का भी कुछ समझ नहीं आता। कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। "

" मैं तो यहीं हूँ रस्तोगी साहब। " सहसा तभी जॉर्ज की चिर परिचित आवाज़ ड्राइंग रूम में गूँजी __" और अपने साथ आपके लिए ऐसा तोहफा भी लेकर आया हूँ कि आप उस तोहफ़े को देखेंगे तो यकीनन आप मुझ पर अपनी ये सारी दौलत लुटा देंगे। "

जॉर्ज की इस आवाज़ को सुन कर रस्तोगी ने पलट कर जॉर्ज की तरफ देखा। जॉर्ज के साथ साथ आ रहे जिन दो इंसानी चेहरों पर उसकी नज़र पड़ी उन्हें देख कर उसके चेहरे पर सोचने वाले भाव उभरे। यहाँ पर एक अजीब बात ये भी हुई कि रस्तोगी के बाकी साथियों पर जॉर्ज की इस बात का कोई भी प्रभाव न पड़ा था। वो तीनो ऐसे चुपचाप बैठे थे जैसे कि वो माटी के पुतले में तब्दील हो गए हों।

" ओह तो तुम यहीं हो। " जॉर्ज के साथ साथ उन दो चेहरों को भी देखते हुए रस्तोगी ने कहा __" हमें लगा कि हमें शीघ्र बुला कर तुम खुद ही गायब हो। ख़ैर , ये बताओ कि किस तोहफ़े की बात कर रहे थे तुम ?"

" यही तो हैं। " जॉर्ज मुस्कुराते हुए अपने साथ आए उन दोनो की तरफ इशारा करते हुए कहा __" हाँ रस्तोगी साहब , ये दोनो ही तो तोहफ़े हैं आपके लिए जिन्हें मैं अपने साथ लेकर आया हूँ। क्या आपने इन दोनो को पहचाना नहीं ?"

जॉर्ज की ये बात सुन कर रस्तोगी एकदम से चौंका। बड़े ग़ौर से उन दोनो को देखने लगा था वह। रस्तोगी जिन दो चेहरों को ग़ौर से देखे जा रहा था वो दोनो उसे इस संसार के सबसे खूबसूरत कपल नज़र आए। ऐसा लग रहा था जैसे वो दोनो सबसे अलग हों। इस वक्त वो दोनो रस्तोगी को देख कर मुस्कुरा रहे थे।

" ये दोनो खूबसूरत कपल कौन हैं भाई ?" रस्तोगी के माथे पर उलझन के भाव आए थे __" और ये दोनो भला हमारे लिए तोहफे जैसे कैसे हो सकते हैं ?"

" आप भी कमाल करते हैं रस्तोगी साहब। " जॉर्ज ने ठहाका लगा कर हँसने के बाद कहा __" आप इन दोनो को नहीं पहचानते हैं ? ये तो दुनियाँ का सबसे बड़ा आश्चर्य है। अरे ये दोनो तो वही हैं रस्तोगी साहब जिन्होंने आपकी रातों की नींद हराम कर रखी थी। जी हाँ , ये वही हैं जिन्होंने आपके बच्चों को अपने कब्जे में लिया हुआ था और उन वीडियोज के बल पर आपको भीगी बिल्ली बनाया हुआ था। "

" क्याऽऽऽ ????" सोफे पर बैठा रस्तोगी जॉर्ज की इस बात को सुन कर इस तरह उछल पड़ा था जैसे अचानक ही उसके पिछवाड़े के निचले हिस्से की सोफे की पुश्त गर्म तवे में तब्दील हो गई हो। आश्चर्य से आँखें फाड़े वह कुछ देर तक हकबकाया सा देखता रहा। फिर जैसे उसे होश आया तो अजीब भाव से बोला __" ये .. ये दोनो वही हैं ?? नहीं नहीं जॉर्ज .... ये दोनो तो बहुत मासूम दिख रहे हैं , ये भला इतना बड़ा काण्ड कैसे कर सकते हैं ?"

" लो भाई। " जॉर्ज फिर हँसा और फिर मेरी तरफ देखते हुए कहा __" अब तुम ही बताओ

इन्हें। "

जॉर्ज की बात सुन कर मैं मुस्कुराया और फिर मैं रस्तोगी के क़रीब आ गया। मेरे साथ ही साक्षी दीदी भी आ गई।

" तुझे मंत्री किसने बना दिया रस्तोगी ?" मैने सहसा तीखे भाव से कहा __" तुझमें तो इतनी भी समझ नहीं है कि मौजूदा हालात में तुम्हारे लिए तोहफे के रूप में जॉर्ज किसे ला सकता है ? अगर समझ होती तो फौरन ही समझ जाता कि हम दोनो कौन हैं ?"

" ज़बान को लगाम दे लड़के। " बुरी तरह तिलमिलाया हुआ रस्तोगी सहसा गुर्रा उठा __" तुझे पता नहीं है कि तू इस वक्त कहॉ खड़ा है ? हमसे इस लहजे में बात करने वालों का बहुत ही भयावह अंजाम होता है। "

" अंजाम का डर उन्हें होता है रस्तोगी। " मैने कहा __" जिन के पिछवाड़े में दम नहीं होता। तुझे तो इतना भी एहसास नहीं हो रहा कि तेरे आवास में आकर मैं तेरे ही सामने तुझसे इस लहजे में बात कैसे कर सकता हूॅ ?"

" जब किसी की मौत आती है तो वो ऐसे ही तेरे जैसे अनाप शनाप बकने लगता है। " रस्तोगी ने कहा।

" तुझे क्या लगता है ?" साक्षी दीदी ने कहा __" हम लोग तेरे सामने जॉर्ज की वजह से आए हैं ? नहीं रस्तोगी , ये सब तो हमारा ही खेल है। हमने ही जॉर्ज के द्वारा फोन करवा के तुझे यहॉ बलवाया है। तेरे ये सभी साथी इतनी देर से पुतले की तरह क्यों बैठे हैं क्या तुझे कुछ समझ नहीं आया ?"

साक्षी दीदी की बात सुन कर रस्तोगी के मस्तिष्क में मानो एकाएक ही विस्फोट सा हुआ। दिमाग़ की सारी बत्तियॉ रौशन हो उठी। सारी बातें बड़ी तेज़ी से उसके मन में चलने लगी। उसने अजीब भाव से अपने साथियों की तरफ देखा और फिर जॉर्ज की तरफ।

" खेल खत्म हो चुका है रस्तोगी साहब। " जॉर्ज तुरंत बोल उठा __" मैं तो कल ही इनके आदमियों के द्वारा पकड़ लिया गया था। उसके बाद इन लोगों ने मुझसे सब कुछ पूछ लिया और मुझे बताना ही पड़ा। मुझे भी इस बात का अंदेशा था कि आपके पीछे गुप्त रूप से कार्यवाही की जा रही है। अतः मैने सोचा कि अगर मैने आपके लिए काम किया तो निश्चय ही मैं भी कानून की चपेट में आ जाऊॅगा इस लिए मैंने वही रास्ता चुना जो सच्चा था और मेरे लिए बेहतर भी था। "

" गद्दार। " रस्तोगी पूरे क्रोध में बोल पड़ा __" अपनी सलामती के लिए तूने हमें फॅसवा दिया। तुझे ज़िंदा नहीं छोड़ेंगे हम। तुम सबको अब मौत ही मिलेगी। तुम लोग अब यहॉ से ज़िंदा वापस नहीं जा सकते। "

" जिनके दम पर तू हमें मौत देने की बात कर रहा है न वो सब तो पुलिस की गिरफ्त में आ चुके हैं। " मैने सहसा झुक कर रस्तोगी की ऑखों में ऑखें डाल कर कहा __" और तेरे में इतना दम ही नहीं है कि तू मेरा बाल भी उखाड़ सके। "

मेरी इस बात से रस्तोगी को सॉप सा सूँघ गया। अनुभवी आदमी था। उसे समझते देर न लगी कि जिस अंदाज़ से मैं उससे बात कर रहा था वो तभी संभव था जब वो कुछ भी कर पाने की पोजीशन में न हो। अभी मैं उसे देख ही रहा था कि सहसा तभी बाहर से ढेर सारे पुलिस के आदमी अंदर दाखिल हुए। उन सभी पुलिस वालों के बीच से ही एसीपी रमाकांत शुक्ला चलता हुआ हमारे पास आया।

" वेल डन इंस्पेक्टर साक्षी। " फिर उसने दीदी की तरफ देख कर कहा __" यकीनन तुम दोनो ने बहुत ही बड़ा काम किया है। " कहने के साथ ही एसीपी रस्तोगी की तरफ पलटा __" दुनियॉ की कोई भी ताकत अब तुम्हें कानून की सलाखों के पीछे से नहीं निकाल सकती। तुम्हारे खिलाफ़ हमें इतने सबूत मिल चुके हैं कि अब तुम किसी भी कीमत पर बच नहीं सकते। "

" किन सबूतों की बात कर रहे हो आफीसर ?" रस्तोगी ने हैरानी से कहा __" और ये इतनी सारी पुलिस फोर्स यहॉ किस लिए लेकर आए हो तुम ?"

" देखते जाओ रस्तोगी। " एसीपी ने कहा __" कुछ ही देर में सब कुछ पता चल जाएगा तुम्हें। "

पुलिस वालों को कदाचित पहले ही समझा दिया गया था कि क्या करना है। अतः वो यहॉ आते ही अपने काम पर लग गए थे। रस्तोगी ये सब देख कर एकाएक बुरी तरह बौखला गया। उसके चेहरे पर डर व घबराहट के भाव उभर आए। चिंता व परेशानी के चलते पूरा चेहरा पसीने पसीने हो गया उसका। उसके साथियों का भी वही हाल था।

कुछ ही देर में वहॉ पर पुलिस महकमे के कुछ और आला अधिकारी आ गए। रस्तोगी को कुछ भी करने का मौका न मिला। वो तो यही नहीं समझ पा रहा था कि इतनी सारी पुलिस फोर्स इतनी जल्दी यहॉ कैसे आ गई? अंदर की तरफ गए हुए पुलिस वाले थोड़ी ही देर में बाहर आए और उन्होंने जो कुछ बताया उसे सुन कर रस्तोगी के सिर पर सारा आसमान भरभरा कर गिर गया। उसका चेहरा एकदम से निस्तेज पड़ गया।

लगभग एक घंटे की कठोर कार्यवाही के बाद आला अधिकारियों के साथ मंत्री को गिरफ्तार कर बंगले से बाहर ले जाया जाने लगा। बाहर आते ही रस्तोगी ने देखा कि बाहर भीड़ जमा है। उस भीड़ में प्रेस व मीडिया के लोग थे जो मंत्री व पुलिस के आला अधिकारियों से तरह तरह के सवाल पूछने लगे थे। प्रेस व मीडिया वालों को संक्षेप में उनके सवालों के कुछ जवाब देकर रस्तोगी को लेकर पुलिस वाले चले गए। मंत्री के आवास को सील कर पुलिस सिक्योरिटी लगा दी गई।

ये मामला ही ऐसा था कि पलक झपकते ही मंत्री की गिरफ्तारी की ख़बर प्रदेश में हर तरफ फैल गई। मंत्री के चाहने वाले तथा पार्टी के उसके सहयोगियों ने विरोध प्रदर्शन तो किया किन्तु उस सबको पुलिस वालों ने संभाल लिया। मैं और साक्षी दीदी मंत्री के इस किस्से को खत्म करके वापस लौट आए थे। जॉर्ज को खुशी खुशी हमने छोंड़ दिया था। वो खुद भी इस सबसे खुश था कि उसने अच्छाई का साथ दिया। जॉर्ज जाते जाते हम लोगों के कान्टैक्ट नंबर ले गया था।

९९

उधर मंत्री के पकड़े जाने की ये ख़बर हवेली में सत्यम सिंह को भी हो गई। इस ख़बर ने सत्यम सिंह की हालत को लकवा मारने जैसी बना दिया। कुछ समय के लिए तो उसे ऐसा लगा जैसे इस संसार में अब कुछ बचा ही नहीं है बल्कि सब कुछ शून्य में ही खो गया है। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि ऐसा कुछ हो जाएगा। विक्रम और साक्षी ने उसके लिए जैसे हर तरफ से रास्ता ही बंद कर दिया था। कहाँ वह मंत्री के फोन द्वारा ये पता चलने का इन्तज़ार कर रहा था कि उसका भतीजा और उसकी बेटी आदि सब पकड़ लिए गए हैं और कहाँ अब इस ख़बर ने उसके मुकम्मल वजूद को ही हिला कर रख दिया था।

सत्यम सिंह मंत्री के पकड़े जाने से चिंतित व परेशान तो था ही साथ ही वह इस बात के लिए भी बेहद परेशान हो गया था कि उसके दोस्तों ने अपने जिन आदमियों को उसकी सहायता के लिए भेजा था वो सब पुलिस द्वारा पकड़ लिए गए थे। सुबह से फोन पर फोन आ रहे थे उसे। ये सब फोन उसके उन दोस्तों के ही थे। जो कह रहे थे कि उन्हें अपने आदमियों के पकड़े जाने का इतना दुख नहीं है बल्कि चिंता इस बात की है कि उनके वो सब आदमी पुलिस के सामने अपना मुह न खोल दें जिसकी वजह से वो सब भी कानून की चपेट में आ जाएॅ। अतः इससे बचने के लिए वो सब सत्यम सिंह से कोई न कोई समाधान चाह रहे थे। मगर सत्यम सिंह कुछ कहने की हालत में ही नहीं था। वो तो खुद भी अब मंत्री की वजह से असहाय सा हो गया था। मंत्री का कानूनन इस तरह पकड़े जाना उसके लिए बहुत बड़ी क्षति थी। क्योंकि अब उसे मंत्री पर ही भरोसा था कि वो उसे इस सारे खेल में जीत दिलाएगा। मगर अब सब कुछ जैसे स्वाहा हो चुका था।

सोनिया और जयदीप सुबह से उसके पास ही थे। इस वक्त दोपहर हो चुकी थी। सत्यम सिंह अकेला ही ड्राइंग रूम में गुमसुम सा बैठा था। सोनिया किसी काम से बाहर गई हुई थी। जयदीप अपने कमरे में था। सोफे पर बैठा सत्यम सिंह सिगार पे शिकार फूके जा रहा था। मीनाक्षी जो उसकी घरेलू नौकरानी थी उसने उसे अब तक जाने कितनी बार चाय बना कर पिलाया था। हालात की गंभीरता का उसे भी एहसास था। उसे इस हवेली का सब कुछ पता था किन्तु उसने कभी इस मामले में हवेली के किसी भी सदस्य से कोई बात नहीं की थी। उसे पता था कि इस बारे में बात करने का सबसे पहले तो उसका कोई हक़ ही नहीं है दूसरी बात उसकी बातों को कोई सुनना पसंद भी नहीं करता।

सारी बातों को सोचते सोचते सत्यम सिंह इतना परेशान हो चुका था कि उसका सिर दर्द करने लगा था। वह उठा और मीनाक्षी को आवाज़ दे कर कहा कि वो उसके सिर की बढ़िया से मालिश कर दे। ये कह कर सत्यम सिंह अपने कमरे की तरफ बढ़ गया। मीनाक्षी चालीस के आस पास की सॉवली सी औरत थी। उसका पति उसे बरसों पहले छोंड़ कर चला गया था। मीनाक्षी और उसका पति पहले खेतों पर ही काम करते थे। बाद में उसका पति जब वापस लौट कर न आया तो देवेंद्र सिंह ने उसे हवेली के काम धाम पर लगा लिया। मीनाक्षी को हवेली में रहते हुए लगभग दस साल हो गए थे। उसने इस हवेली के अंदर अब तक क्या क्या

हुआ सब कुछ देखा सुना था। मगर उसने कभी इस बारे में कोई दखलअंदाज़ी न की थी। उसे ये भी पता था कि सत्यम सिंह का परिवार कैसा है तथा ये भी कि ये रिश्तों को नहीं मानते। उसने जयदीप को अपनी ऑखों से अपनी ही मॉ को सहवास करते देखा था। उस दिन उसे लगा था कि कलियुग वाकई आ चुका है।

सत्यम सिंह ने मीनाक्षी के साथ जाने कितनी बार सहवास किया था इसका उसे खुद पता नहीं था। कई बार वह पेट से भी हुई थी किन्तु सत्यम सिंह ने हर बार उसके पेट से अपना बीज गिरवा दिया था। मीनाक्षी ने परिस्थितियों के साथ पहले ही समझौता कर लिया था। उसका अपना कोई नहीं था। साक्षी व मानुषी को वो अपनी ही बेटी की तरह मानती थी और हमेशा दुवा किया करती थी कि वो दोनो खुश रहें। साक्षी व मानुषी भी उसे बहुत इज्ज़त व सम्मान देती थीं। उन दोनो ने कभी उसे नौकरानी नहीं समझा था। बल्कि हमेशा उसे काकी ही कहती थी। हलॉकि जयदीप का व्यवहार अपने बाप की तरह ही था। किन्तु मीनाक्षी के साथ ज़बरदस्ती करने की हिम्मत उसमे कभी न हुई थी। मीनाक्षी एक तंदुरुस्त तबीयत की औरत थी। मेहनत कर करके वह बेहद मजबूत हो गई थी। वह दिखती भी ऐसी थी कि जयदीप जैसा छोकरा उससे ज़बरदस्ती करने की हिम्मत कर ही नहीं सकता था। पिछले कुछ सालों से सत्यम सिंह ने मीनाक्षी को भोगना बंद कर दिया था। इस बात से मीनाक्षी को राहत महसूस हुई थी। सत्यम सिंह के मीनाक्षी के साथ संबंधों की जानकारी सोनिया को शुरू से ही थी। किन्तु उसे इस बात से कोई आपत्ति नहीं थी।

थोड़ी ही देर में मीनाक्षी अपने हाथ में एक कटोरी लिए सत्यम सिंह के कमरे में दाखिल हुई। कटोरी में शुद्ध सरसो का तेल था। कमरे में पहुॅचते ही मीनाक्षी ने देखा कि सत्यम सिंह बेड पर लेटा हुआ है। आज काफी समय बाद अकेले कमरे में सत्यम सिंह के पास आते हुए मीनाक्षी को थोड़ा असहज सा लगा। किन्तु उसे पता था कि मालिश तो उसे करनी ही पड़ेगी और अगर सत्यम सिंह ने उसके साथ सहवास करने की इच्छा ज़ाहिर की तो उसे उसकी वो इच्छा भी पूरी करनी पड़ेगी।

सत्यम सिंह की नज़र हाथ में कटोरी लिए आई मीनाक्षी पर पड़ी तो उसने उसे ऊपर से नीचे तक देखा। पहले की अपेक्षा मीनाक्षी का जिस्म काफी आकर्षक सा हो गया था। हर अंग अपनी जगह सही से ढला हुआ था। ऊम्र का असर उसके सिर के बालों से दिख रहा था। बाकी उसका समूचा जिस्म कसा हुआ था। सीने के उभार सोनिया से कतई कम न थे। ब्लाऊज फाड़ कर बाहर आने को आतुर थे। सत्यम सिंह को ग़ौर से अपनी तरफ देखते देख मीनाक्षी के संपूर्ण जिस्म में झुरझुरी सी दौड़ गई।

" चलिए मालिक। " फिर उसने खुद को सामान्य बनाते हुए कहा __" आपके माथे पर मालिश कर देती हूॅ। "

" ओह हॉ हॉ। " सत्यम सिंह उसकी बात सुनते ही कुछ झेंप सा गया __" इस वक्त मालिश की वाकई बहुत ज़रूरत है मीनाक्षी । सोनिया बाहर गई हुई है वरना तुम्हें तक़लीफ न देता। वो खुद भी बहुत अच्छी मालिश कर लेती है। "

" कोई बात नहीं मालिक। " मीनाक्षी ने बेड के क़रीब आते हुए कहा __" मैं तो अक्सर मालकिन की मालिश करती ही रहती हूँ। आज आपकी भी कर देती हूँ। चलिए लेट जाइये अब। "

" इन कपड़ों को उतार दूँ क्या ?" सत्यम सिंह ने अपने बदन के ऊपर पहने कपड़ों की तरफ देखते हुए कहा।

" मालिश तो माथे पर करनी है न मालिक। " मीनाक्षी ने जल्दी से कहा __" कपड़े उतारने की क्या ज़रूरत है ?"

" बात तो ठीक ही है तुम्हारी। " सत्यम सिंह कहने के साथ ही मुस्कुराया __" पर अगर पूरे बदन की मालिश कर दोगी तो क्या बुराई है ? मुझे भी तो पता चले कि तुम अपनी मालकिन की किस तरह से मालिश किया करती हो ?"

सत्यम सिंह की बात सुन कर मीनाक्षी को सॉप सा सूँघ गया। उसका दिल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा था। ऐसा नहीं था कि उसने सत्यम सिंह को बिना कपड़ों के देखा नहीं था बल्कि उसने तो इसके पहले न जाने कितनी बार खुद बिना कपड़ों के उसके साथ सहवास किया था किन्तु एक दो सालों से ये रिश्ता लगभग मिट सा गया था। इस लिए उसे इस बात का अंदेशा था कि कहीं आज फिर ऐसे हालात न बन जाएँ कि उसे सहवास करना पढ़ जाए। दूसरी बात ये भी थी कि अब वो किसी सूरत में नहीं चाहती थी कि वो इस आदमी के साथ वो सब करे। उसने मन ही मन ईश्वर को याद किया कि उसे इस परिस्थिति से बचाए।

उसकी इस फरियाद को मानो ईश्वर ने सुन भी लिया, क्योंकि तभी कमरे में एक तरफ टेबल पर रखे लैण्डलाइन फोन की घंटी घनघना उठी थी। फोन के बजने से सत्यम सिंह के चेहरे पर अप्रिय भाव उभरे। फिर उसने बेड के किनारे पर खिसक कर फोन के रिसीवर को उठा कर कान से लगाते ही हैलो कहा।

".....। " उधर से जाने क्या कहा गया। किन्तु इतना ज़रूर हुआ कि उसके चेहरे पर बुरी तरह चौंकने के भाव उभरे और फिर सहसा उसने पलट कर मीनाक्षी को कमरे से चले जाने को कहा। उसके इस तरह चले जाने का सुन कर पहले तो मीनाक्षी चौंकी फिर जल्द ही वापस कमरे से बाहर की तरफ चल पड़ी।

कमरे से बाहर आते ही मीनाक्षी ने राहत की सास ली और फिर किचेन की तरफ बढ़ गई। किचेन में उसने तेल की कटोरी को रखा और फिर किचेन से बाहर ड्राइंग रूम की तरफ बढ़ गई। ड्राइंग रूम में आते ही उसकी नज़र मालकिन यानी की सोनिया पर पड़ी जो एक तरफ टेबल पर ही रखे फोन के रिसीवर को कान से लगाए खड़ी थी। उसका चेहरा दूसरी तरफ था। मीनाक्षी अपनी मालकिन को देख कर वापस अंदर की तरफ चली गई।

उधर कमरे में सत्यम सिंह काफी देर तक किसी से बात करता रहा। उसके चेहरे पर कई तरह के भावों का आवागमन चालू था। ख़ैर कुछ देर बाद उसने अपने कान से हटा कर रिसीवर को

वापस केड्रिल पर रख दिया। रिसीवर रखने के बाद उसने एक गहरी सास ली और फिर सहसा जाने क्या सोच कर मुस्कुरा उठा।

अभी सत्यम सिंह मुस्कुरा ही रहा था कि तभी कमरे में सोनिया दाखिल हुई। सोनिया को देख कर सत्यम सिंह की मुस्कान और गहरी हो गई। उसके होठों पर फैली इस मुस्कान को देख कर सोनिया के होठों पर भी मुस्कान फैल गई।

" क्या बात है जनाब। " फिर सोनिया ने उसके समीप आते हुए कहा __" बहुत मुस्कुरा रहे हो। कारून का कोई ख़जाना मिल गया है क्या ?"

" ऐसा ही समझो डियर। " सत्यम सिंह कहने के साथ ही आलमारी की तरफ बढ़ा , फिर बोला __" बल्कि अगर ये कहूँ तो ग़लत न होगा कि कारून का ख़जाना भी उसके सामने कुछ नहीं है। "

" ओह ऐसा क्या ?" सोनिया की ऑखें फैली __" ज़रा मुझे भी तो बताओ कि ऐसा कौन सा ख़जाना मिल गया है जिसके सामने कारून के ख़जाने की कोई औकात ही नहीं है। "

" ज़रूर बताऊँगा सोनिया। " आलमारी से कोट निकालने के बाद सत्यम सिंह ने कहा __" पहले ख़जाने को मेरे हाथ तो लगने दो। "

" क्या मतलब ??" सोनिया के चेहरे पर चौंकने के भाव उभरे __" क्या वो ख़जाना अभी तुम्हारे हाथ नहीं लगा है ?"

" लग जाएगा माई डियर। " सत्यम सिंह ने कोट पहनते हुए कहा __" और इस ख़जाने को मेरे हाथ लगने से भगवान भी नहीं रोंक पाएँगे। "

" बड़ी अजीब बातें कर रहे हो आज। " सोनिया ने सहसा तिरछी नज़रों से देखते हुए कहा __" कहीं तुम्हारे इस ख़जाने का संबंध साक्षी अथवा विक्रम से तो नहीं है ?"

" ज्यादा दिमाग़ मत चलाओ सोनिया। " सत्यम सिंह ने सपाट लहजे में कहा __" बस समय का इन्तज़ार करो। ख़ैर , मैं ज़रूरी काम से बाहर जा रहा हूँ शाम तक लौटूँगा। जयदीप से कहना वो कहीं बाहर न जाए बल्कि हवेली में ही रहे। "

सोनिया की प्रतिक्रिया सुने बिना ही सत्यम सिंह कमरे से बाहर निकल गया। उसके जाते ही सोनिया के चेहरे पर सहसा गहन पीड़ा के भाव उभरे और फिर एकाएक ही उसकी ऑखें छलक पड़ीं। आगे बढ़ कर वह बेड पर धम्म से बैठ गई। उसके मनो मस्तिष्क में ऑधियॉ सी चलने लगी थी।

१००

उधर मंत्री रजतकुमार रस्तोगी के अपने साथियों सहित पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिए जाने की सूचना मैने मंत्री के बेटे विवेक रस्तोगी व उसके तीनो साथियों को भी दे दी। चारो इस ख़बर को सुन कर बिलकुल असहाय से हो गए। ऐसा लग रहा था जैसे उनके जिस्मों में जान ही न रह गई हो। चारो की हालत वैसे भी बहुत ही दयनीय हो चुकी थी। भरपेट खाना न मिलने की वजह से तथा शारीरिक व मानसिक यातनाओं के चलते वो चारो ही बेहद कमज़ोर लगने लगे थे। दूसरे कमरे में मंत्री की बेटी को भी साक्षी दीदी ने उसके बाप के संबंध में सूचित कर दिया था। रचना रस्तोगी इस ख़बर से बुत बन कर रह गई थी। किन्तु जब उसके मुख से लफ्ज़ निकले तो बड़े अजीब थे। उसका कहना था कि मेरे बाप भाई ने जितने पाप कर्म किये थे उसका अंजाम तो यही होना था न।

विवेक रस्तोगी व उसके तीनो दोस्त हर तरह से टूट चुके थे। मौत की भीख मॉग रहे थे चारो मगर मौत मिलना इतना आसान नहीं था। इस बीच मैने फैंसला किया कि इन सबको यहॉ से आज़ाद कर दिया जाए। उन चारो की हालत देख कर मुझे इस बात का बोध हो चुका था कि वो पश्चाताप की आग में जल रहे हैं। बड़े से बड़े अपराध के लिए भी इंसान को क्षमा कर दिया जाता है और उसे सुधरने का एक मौका दिया जाता है। दूसरी बात, ये सब करके मुझे मेरी प्राची तो मिलनी नहीं थी। उसके साथ हुए अत्याचार का मैने बदला ले लिया था इन लोगों से।

उन चारों को आज़ाद कर देने वाले मेरे फैंसले से थोड़ी न नुकुर के बाद आख़िर सब राजी हो गए थे। किन्तु सवाल ये था कि वो आज़ाद होने के बाद जाएंगे कहॉ? क्योंकि मंत्री का बॅगला तो पुलिस द्वारा सील कर दिया गया था। इस सवाल का जवाब साक्षी दीदी ने दिया, ये कह कर कि ये सब चिमनी में अपने पुश्तैनी घर जा सकते हैं। साक्षी दीदी की इस बात से समस्या का समाधान हो चुका था। अतः अब यही फैंसला हुआ कि इन सबको बेहोश करके चिमनी भेज दिया जाए।

मैने मौसा जी को फोन करके सारी बात बताई और उनसे आग्रह किया कि क्या वो इन चारो को चिमनी भेजने का काम करवा सकते हैं? मेरी इस बात पर वो हॅस कर बोले इसमें संकोच की क्या बात है बेटा? थोड़ी ही देर में केशव जी अपने कुछ आदमियों को लेकर हमारे पास आ गए। मैने और अमर ने चारो को बेहोश कर दिया और केशव की गाड़ी में उन सबको डलवा दिया। उनके साथ ही रचना को भी बेहोश करके डाल दिया था। ये सब होने के बाद केशव जी अपने आदमियों के साथ चिमनी गॉव के लिए निकल गए।

उन सबको आज़ाद करने के बाद मन को थोड़ा शान्ति सी मिल गई थी। इस वक्त ड्राइंग रूम में मैं साक्षी दीदी तथा अमर बैठे हुए थे। गीता बुआ व श्रुति दीदी मानुषी के पास उसके कमरे में थीं।

" चलो मंत्री और उसके बच्चों से छुटकारा मिल गया आख़िर। " सहसा अमर ने कहा __"

अब हम सारा फोकस तुम्हारे ताऊ पर लगा सकते हैं। वैसे मुझे तो लगता है कि अब हमें खुल कर हवेली में उसके सामने ही चले जाना चाहिए और फिर उन सबका भी काम तमाम कर देना चाहिए। सत्यम सिंह मौजूदा हालात में कुछ भी कर सकने की पोजीशन में नहीं है। उसकी आख़िरी उम्मीद निःसंदेह मंत्री ही था जोकि अब वो भी कानून की लम्बी चपेट में आ चुका है। दूसरी बात उसके जितने भी आदमी थे उन सबको भी पुलिस गिरफ्तार कर चुकी है। कहने का मतलब ये कि इस वक्त सत्यम सिंह निहत्था व असहाय अवस्था में है। हम बड़ी आसानी से उसे लपेटे में ले सकते हैं और उसका हिसाब किताब कर सकते हैं। "

" इस बात का एहसास तो उसे भी हो ही गया होगा मेरे यार। " मैने कहा __" वो भी इस बात को समझता होगा कि मौजूदा हालात में हम उसके बारे में क्या सोच रहे होंगे ? इस लिए वो पूरी कोशिश करेगा कि वो हमारी सोच को सही साबित न होने दे। यानी कि वो कुछ ऐसा ज़रूर करेगा जिससे हम उसके सामने इस तरह न जा सकें जिस तरह की तुम बात कर रहे हो। "

" विक्रम बिलकुल सही कह रहा है अमर। " साक्षी दीदी ने गहरी सास लेकर कहा __" मैं अपने डैड को बहुत अच्छी तरह से जानती हूँ। वो इस परिस्थिति में भी कोई ऐसा जुगाड़ कर ही लेंगे कि हम उनके पास इस तरह से उनका तिया पॉचा करने न पहुँच सकें। "

" तुम्हारे हिसाब से वो ऐसा क्या जुगाड़ कर सकता है अब ?" अमर ने पूछा __" जबकि मौजूदा हालात साफ शब्दों में बता रहे हैं कि वो अब कुछ भी करने की पोजीशन में नहीं रह गया है। "

" इस बारे में मैं कुछ कह नहीं सकती। " साक्षी दीदी ने सोचने वाले अंदाज़ से कहा __" किन्तु उनके संबंध कई ऐसे लोगों से रहे हैं अथवा ये कहूँ कि हैं जो ऊँचे दर्ज़े के अपराधी हैं। अतः संभव है कि डैड अपने ऐसे ही किन्हीं अपराधी दोस्तों से मौजूदा हालात में मदद की गुहार लगाएँ। "

" चलो ये मान लिया कि तुम्हारे डैड के ऐसे लोगों से संबंध हैं और वो उन लोगों से इस समय मदद मॉग सकते हैं। " अमर ने कहा __" किन्तु यहॉ पर मैं एक सलाह देना चाहता हूँ , और वो सलाह ये है कि तुम्हारे डैड को उस आधार पर भी तो बड़ी आसानी से भीगी बिल्ली बना कर अपने पास बुलाया जा सकता है जो आधार इस वक्त विक्रम के पास मौजूद है , यानी कि सत्यम सिंह का ग़ैर कानूनी सामान। उस सामान के आधार पर सत्यम सिंह यकीनन भीगी बिल्ली बन कर हमारे पास खुद ही आ जाएगा। "

" ऐसा नहीं हो सकता अमर। " मैने कहा __" क्योंकि अब तक ये बात मेरे ताऊ को भी ताई के समझाने पर समझ आ ही गई होगी कि मैं उन्हें उनके ग़ैर कानूनी सामान के आधार पर कोई क्षति नहीं पहुँचाना चाहता बल्कि अपने बलबूते पर ही अपने व अपने परिवार के साथ हुए हर अत्याचार का बदला लेना चाहता हूँ। अगर मुझे उस सामान के आधार पर ही अपने ताऊ का क्रियाकर्म करना होता तो मैं ये काम बहुत पहले ही कर चुका होता। इस लिए इस बात पर

सोचने का कोई मतलब ही नहीं है दोस्त। "

" मैं तुम्हारी बातों से पूर्णतया सहमत हूँ। " अमर ने कहा __" किन्तु उन्हें ये भी तो पता होगा न कि अगर तुम अपने बलबूते पर अपने ताऊ का कोई भी बाल बाँका न कर पाए तो फिर तुम्हारे पास अंतिम चारा वो ग़ैर कानूनी सामान ही तो होगा। यानी कि तुम उस सामान के आधार पर ही आख़िरी चारे के रूप में अपने ताऊ का काम तमाम करोगे। कहने का मतलब ये कि इस वक्त अगर तुम उसी ग़ैर कानूनी सामान की धमकी देकर अपने ताऊ को भीगी बिल्ली बना कर अपने पास आने पर मजबूर करोगे तो वो यही समझेंगे कि शायद तुम्हारे पास अब यही एक चारा रह गया था जिसके तहत तुमने सत्यम सिंह के उस ग़ैर कानूनी सामान का सहारा लिया है और उसे अपने पास इस तरह बुला रहे हो। "

" मनोविज्ञान की दृष्टि से तुम्हारा ये सोच कर कहना यकीनन सही है। " मैने कहा __" किन्तु मत भूलो कि उस तरफ बड़ी माँ हैं जो खुद दिमाग़ के मामले में हम सबसे बीस ही हैं। कहने का मतलब ये कि सारे हालातों पर ग़ौर करने के बाद वो इसी नतीजे पर पहुँचेंगी कि इतना कुछ होने के बाद तो हमारा पक्ष पहले से और भी ज्यादा मजबूत हो गया है , तो फिर अचानक ये गैर कानूनी सामान को आधार बना कर सत्यम सिंह को हम क्यों अपने पास बुला रहे हैं ?"

" अरे तो उनके नतीजों से हमें क्या लेना देना भाई ?" अमर ने कहा __" वो सारे हालातों पर ग़ौर करके क्या नतीजा निकालती हैं इससे हमें क्या फर्क़ पड़ता है ? हमें तो अपने काम से मतलब है , फिर चाहे वो जैसे भी हो। "

" और मेरे सिद्धान्तों व उसूलों का क्या ?" मैने अमर की तरफ अजीब भाव से देखते हुए कहा __" हम सच्चाई व धर्म की राह पर चल रहे हैं दोस्त। हम भले ही अब तक धोखे से या किसी चाल से यहाँ तक पहुँचे हैं किन्तु प्यार व जंग में ये जायज था। मगर यहाँ पर एक नियम अथवा एक सिद्धान्त तो मैंने उन्हें जता ही दिया था कि मैं सत्यम सिंह के खिलाफ उसके ग़ैर कानूनी सामान के आधार पर कोई ऐक्शन नहीं लूँगा , बल्कि सब कुछ अपने बलबूते पर ही करूँ गा। इस बात को मैं अब तक निभाता भी आया हूँ और आगे भी इसे निभाना चाहता हूँ। ये मेरे जिगर व मेरी मर्दानगी का सबूत भी होगा भाई कि मैने अपने बलबूते पर ही सब कुछ किया। इसके विपरीत अगर मैने जंग के आख़िर में ये क़दम उठाया तो फिर मेरी साख़ का क्या औचित्य रह जाएगा ? मेरा ताऊ इस बात को भले ही न समझ पाए मगर मुझे यकीन है कि मेरी इस मनोभावना को बड़ी माँ ज़रूर समझेंगी , और मैं चाहता भी हूँ कि उनके मन में मेरे कैरेक्टर का ये मैसेज जाए। दूसरी बात , हमे ऐसा करने की ज़रूरत भी क्या है दोस्त ? आप दोनो के रहते तो मैं सारी दुनिया को फतह कर सकता हूँ। "

" एक सच्चा इंसान तथा एक सच्चा वीर ऐसा ही होना चाहिए। " सहसा साक्षी दीदी ने मेरी तरफ प्रशंसा भरी नज़रों देखते हुए कहा __" मुझे तुझ पर नाज़ है मेरे भाई। मेरा दिल करता है कि तेरे लिए अपनी अंतिम सास तक निसार कर दूँ। "

" ऐसा मत कहिए दीदी। " मैने सहसा भावुकतावश उनकी तरफ देखते हुए कहा __" अभी तो हम सबको एक साथ बहुत सारी खुशियॉ बॉटनी हैं। इस सबके बाद हम एक नये संसार का शुभारम्भ करेंगे। उस नये संसार में बेपनाह प्यार और बेपनाह खुशियॉ होंगी। "

" और मुझे अपनी उन खुशियों से किनारा कर दोगे क्या तुम लोग ?" अमर मुस्कुराते हुए बोल पड़ा __" ऐसा सोचना भी मत विक्रम । वरना देख लेना तुम्हारे घर के बाहर धरना देकर बैठ जाऊॅगा। "

" ऐसा मत करना दोस्त। " मैने मुस्कुराते हुए कहा __" गॉव के लोग धरने के रूप में एक ही आदमी को बैठा देखेंगे तो उसे कुछ और ही समझ लेंगे। "

" ओ हैलो। " अमर ने ऑखें दिखाई __" क्या मतलब है तुम्हारा ? क्या समझ लेंगे गॉव के लोग __ भिखारी ?? चल कोई बात नहीं यार। तुम्हारे लिए ये भी बन जाऊॅगा। "

" तुम्हें बाहर धरने पर बैठने की ज़रूरत नहीं है अमर। " साक्षी दीदी ने कहा __" रक्षाबंधन आने वाला है। इतने वर्षों में पहली बार मैं विक्रम को राखी बाधूॅगी। विक्रम की तरह तुम भी मेरे भाई ही हो। मैं और भी बहुत खुश हो जाऊॅगी कि तुम्हारे जैसा एक नेक दिल इंसान मेरा भाई बन जाएगा। "

" कितनी सुंदर बात कही है तुमने। " अमर सहसा किसी गहरे ख़यालों में खोता नज़र आया __" तुम्हारे ही जैसी एक बहन थी मेरी __ प्रतीक्षा। मेरी लाडली थी वो , हर साल रक्षाबंधन के दिन मेरी कलाई पर एक साथ ढेर सारी राखियॉ बॉध देती थी। फिर कहती कि सभी राखियों का वो अलग अलग पैसा लेगी मुझसे। " कहने के साथ ही अमर की ऑखों से ऑसू छलक पड़े , बोला __" मगर चार साल पहले अपने प्यार में धोखा खाने की वजह से उसने खुदखुशी की कोशिश की। दो मंजिला मकान की छत से कूद गई वो। हॉस्पिटल में इलाज चला मगर डाक्टर ने बताया कि वो कोमा में जा चुकी है। आज चार साल हो गए। आज भी वो लाश बनी पड़ी है। जिस लड़के ने उसे धोखा दिया था उसे ऐसी सज़ा दी थी मैने कि वो किसी भी लड़की से संबंध बनाने का सोच ही नहीं सकता अब। "

अमर की ये बातें सुन कर मैं और साक्षी दीदी भी सीरियस हो गए। साक्षी दीदी उठ कर अमर के पास गई और उसे अपने से छुपका लिया। मैं खुद भी अमर की दूसरी तरफ बैठ कर उसके कंधे को थपथपा रहा था।

" दुखी मत हो अमर। " साक्षी दीदी ने कहा __" प्रतीक्षा जल्द ही ठीक हो जाएगी। चलो अब शान्त हो जाओ। देखो ये ईश्वर का विधान ही तो था कि मैं तुम्हारी बहन के रूप में तुम्हें मिली और चार साल से सूनी पड़ी तुम्हारी कलाई में राखी भी बाधूॅगी। "

" भगवान का बहुत बहुत शुक्रिया। " अमर ने साक्षी दीदी से अलग होते हुए ऊपर की तरफ सिर करके कहा __" जो उसने मुझे बहन के रूप में मेरी प्रतीक्षा को मेरे पास भेज दिया। मैं तुमसे यही कहूॅगा साक्षी कि तुम भी प्रतीक्षा की तरह मेरी कलाई पर ढेर सारी राखियॉ

बॉधना। "

" जैसी तुम्हारी इच्छा। " दीदी ने मुस्कुरा कर कहा __" तुम दोनो बैठो मैं ज़रा काकी(केशरमाँ) को चाय बनाने के लिए कहने जा रही हूॅ। "

" ठीक है। " अमर ने कहा। उसके बाद साक्षी दीदी उठ कर अंदर की तरफ चली गईं। जबकि मैं और अमर वहीं बैठे रहे।

१०१

उधर मुंबई में।

उमाकांत पाटिल बंगले के बाहर लान में एक तरफ हरी हरी विदेशी घॉस के बीचो बीच रखी कुर्सी पर बैठा शाम का अखबार पढ़ रहा था। इस वक्त वह यहॉ पर अकेला ही था। उसके सामने की बाकी सभी कुर्सियॉ खाली थी। तभी मेन गेट से अंदर आती हुई एक कार की आवाज़ से उसका ध्यान मेन गेट की तरफ गया।

मेन गेट से अंदर दाखिल हुई कार चलते हुए सीधा पोर्च में जाकर रुकी। कार के रुकते ही पैसेंजर सीट की तरफ का गेट खुला और सुंदर सिंह अपने पैर पोर्च के फर्श पर रखते हुए बाहर निकला। बाहर आते ही उसने लान में एक तरफ कुर्सी में बैठे उमाकांत पाटिल की तरफ देखा। उमाकांत पाटिल को देखते ही उसके होठों पर मुस्कान उभर आई और वह उस तरफ ही बढ़ता चला गया।

" कहो भाई क्या कहा डाक्टर ने ?" सुंदर के कुर्सी पर बैठते ही उमाकांत पाटिल ने मुस्कुराते हुए उससे पूछा __" वैसे तुम्हारे चेहरे की चमक देख कर ज़ाहिर हो रहा है कि रिपोर्ट पॉजिटिव ही है। "

" बिलकुल सही कहा आपने भाई साहब। " सुंदर सिंह ने खुशी से कहा __" रिपोर्ट एकदम सही है। बस कुछ ही दिनों में सब कुछ सही हो जाएगा और ये सब आपकी वजह से ही संभव हो सका है। इसके लिए मैं आपका हमेशा आभारी रहूॅगा। "

" अरे इसमें मेरा आभारी रहने की क्या बात है भई ?" उमाकांत पाटिल ने कहा __" सब कुछ करने वाला तो ऊपरवाला है। हम तो बस माध्यम ही होते हैं। "

" ऊपरवाले को भी तो कुछ करने के लिए किसी न किसी माध्यम की आवश्यकता ही पड़ती है भाई साहब। " सुंदर सिंह ने कहा ___" ये उसी का नतीजा है कि आप इस सबके लिए माध्यम बने और ये सब हुआ वरना अब तक जो कुछ भी हुआ है उसके बारे में तो हम में से कोई ख़्वाब में भी नहीं सोच सकता था। "

" पर इसमें भी सबसे बड़ा योगदान रेणुका बहन का है सुंदर भाई। " उमाकांत पाटिल ने कहा __" उसने अपर्णा बहन से कुरेद कुरेद कर तथा ज़बरदस्ती पूछा था और तब अपर्णा ने बताया कि तुममें समस्या क्या है ? रेणुका बहन ने वो बात बहाने से ही सही किन्तु मुझसे कही। मैं तो सोच भी नहीं सकता था कि तुम में ये समस्या हो सकती है। तुम भी अपने बिना मतलब के स्वाभिमान व शर्म के चलते इस बारे में किसी से कहना नहीं चाहते थे। बेकार की सोच और बेकार के सिद्धान्त लिए बैठे थे। तुम्हें अपनी पत्नी की इच्छाओं का खुशियों का कोई ख़याल ही नहीं था। ख़ैर , जो भी हुआ अच्छा ही हुआ। अब खुशी की बात ये है कि तुम फिजिकली अब कुछ ही दिनों में पूरी तरह से ठीक हो जाओगे और तुम्हारे पति पत्नी के रिश्तों

के बीच फिर से खुशियॉ भी आ जाएॅगी। "

" सचमुच रेणुका भाभी को सबका ख़याल रहता है। " सुंदर सिंह ने मुग्ध भाव से कहा __" वो यकीनन देवी हैं भाई साहब। कभी कभी सोचा करता हूॅ कि इतने अच्छे लोगों के साथ ईश्वर ऐसा अन्याय कैसे कर देता है ? भला क्या बिगाड़ा था किसी का उन्होंने ?"

" एक नये अध्याय को शुरू करने के लिए पुराने ख़राब हो चुके अध्याय को खत्म करना ही पड़ता है। " उमाकांत पाटिल ने कहा __" हम आम इंसान ईश्वर के क्रिया कलाप को समझ नहीं पाते हैं जबकि सबसे ज्यादा उसे ही पता होता है कि हमारे लिए क्या अच्छा हो सकता है ? ईश्वर ने मेरे साथ क्या कुछ नहीं कर दिया है। आज से पहले अरब पति होते हुए भी मैं इतनी बड़ी सल्तनत में अकेला था किन्तु आज मेरे पास रेणुका जैसी बहन है और विक्रम व निशा जैसे मेरे बच्चे हैं। उनके साथ साथ तुम सब भी मिल गए। इन सभी रिश्तों में मुझे प्यार व सम्मान हद से ज्यादा मिल रहा है। अब इससे ज्यादा क्या चाहिए मुझे ? इस दुनियॉ में हम क्या लेकर आए थे और क्या लेकर जाएॅगे ? सब कुछ यहीं रह जाएगा , असली दौलत व असली सुख तो इन्हीं में है। आज ईश्वर के इस न्याय से मैं बहुत खुश हूॅ। "

" सही कहा आपने भाई साहब। " सुंदर सिंह ने कहा __" काश हर इंसान आप जैसी सोच वाला हो जाए तो ये संसार कितना खूबसूरत हो जाए। एक मेरे बड़े भाई साहब हैं जिन्होंने अपने मतलब के लिए हर रिश्ते की बलि चढ़ा दी तथा अपनों के साथ इतना बड़ा अत्याचार कर डाला। क्या उन्हें ये बात नहीं पता होगी कि उन्होंने जिन चीज़ों के लिए ये सब किया वो चीज़ें मरने के बाद उनके साथ नहीं जाएॅगी। बल्कि उनके इस कर्म से उनके मरने के बाद भी लोग उन्हें बुरा भला ही कहेंगे। "

" इस संसार में हर तरह के इंसानों का होना ज़रूरी है सुंदर। " उमाकांत ने कहा __" ईश्वर हर तरह के प्राणियों की रचना करता है , फिर उन्हीं के द्वारा खेल भी रचाता है और उस खेल का आनंद भी लेता है। उसने हम इंसानो के लिए नियम बनाए और उन नियमों पर चलने के लिए उसने समय समय पर हमें किसी न किसी माध्यम से रास्ता भी बताया। ख़ैर ये प्रसंग तो बहुत बड़ा है भई , इसे समझना और इस पर अमल करना बहुत कठिन है। तुम बताओ क्या कहा डाक्टर ने ?"

" बाकी का तो आपको पता ही है। " सुंदर सिंह ने कहा __" उस दिन की रिपोर्ट के अनुसार इलाज शुरू हो चुका था। आज उसने टेस्ट लिया तो रिजल्ट बेहतर निकला। उसने बताया कि बहुत जल्द पहले जैसी बात हो जाएगी। "

" चलो ये तो अच्छी बात है। " उमाकांत पाटिल ने कहा __" तुम भी ज़रा संजम और संयम का ख़याल रखना और दवा दारू समय समय पर करते रहना। ईश्वर ने चाहा तो बहुत जल्द सब कुछ ठीक हो जाएगा। "

" जी बिलकुल। " सुंदर सिंह ने कहा __" अच्छा भाई साहब मैं ज़रा आज की दवाइयों को

अंदर रख कर आता हूँ। वो अभी कार में ही रखी हुई हैं। "

" ओह हॉ। " उमाकांत पाटिल ने कहा __" और हॉ अंदर रेणुका बहन से कहना ज़रा गरमा गरम चाय तो बना कर पिलाए। "

उमाकांत पाटिल की बात सुन कर सुंदर सिंह ने हॉ में सिर हिलाया और कुर्सी से उठ कर कार की तरफ बढ़ गया। कार से उसने एक प्लास्टिक की थैली निकाली और उसे लेकर बंगले के अंदर चला गया।

वहीं एक तरफ निशा के कमरे में निशा और आशा बेड पर बैठी हुई थी। पिछले दिन हुई बातचीत से निशा आशा के सामने आने से थोड़ा असहज सा महसूस करती थी, किन्तु आशा के समझाने पर उसकी झिझक व शर्म बहुत हद तक दूर हो गई थी। आशा पहले भी ज्यादातर उसके पास ही रहती थी किन्तु जब से उसके सामने ये बात खुल गई थी कि निशा विक्रम से प्यार करती है तब से वो और भी निशा के समीप ही रहती थी। आशा उमर में साक्षी जैसी ही थी तथा एक समझदार व सुलझी हुई लड़की थी इस लिए वो निशा को एक पल के लिए उदास या मायूस नहीं होने देती थी।

आशा के ही पूछने पर निशा ने उसे बताया कि कैसे उसे अपने भाई से प्यार हुआ और कैसे उसने अपने उस प्यार को विक्रम के सामने उजागर भी किया था। आशा सारी बातें सुन कर हैरान थी। सबसे ज्यादा इस बात पर कि निशा ने विक्रम से अपने प्यार का इज़हार भी कर दिया है। ये अलग बात है कि विक्रम ने इसे अनुचित व ग़लत कहते हुए उसे इस संबंध में समझाया था। उसने उसे ये भी समझाया था कि इस रिश्ते को दुनियाँ वाले कभी स्वीकार नहीं कर सकते और ना ही उसके घर वाले। विक्रम अपनी इस लाडली को जी जान से चाहता था किन्तु एक बहन भाई के रूप में। वो नहीं चाहता था कि उसकी कठोरता से निशा को ज्यादा दुख पहुँचे। छोटी ऊम्र का आकर्षण कभी कभी ज़िद के चलते इतना उग्र रूप धारण कर लेता है कि अगर उसे समय रहते संभाला न गया तो परिणाम गंभीर भी निकल आते हैं।

शुरू शुरू में आशा को भी यही लगा था कि निशा अपने भाई पर महज आकर्षित है। किन्तु जब उसने निशा से इस संबंध में सारी बातों को जाना और उसकी डायरी के हर पेज पर दिल को झकझोर कर रख देने वाले मजमून को पढ़ा तो उसे महसूस हुआ कि ये महज आकर्षण नहीं है बल्कि ये बेपनाह मोहब्बत का प्रत्यक्ष सबूत है। आशा ने निशा की इजाज़त से ही उसकी डायरी को पढ़ना शुरू किया था। यूँ तो डायरी में लिखी हर बात अपने आप में निशा की तड़प बयां करती थी किन्तु निशा के द्वारा लिखी गई ग़ज़लें ऐसी थीं जो आशा के दिल को बुरी तरह तड़पा देती थी। उसे ऐसा लगता जैसे ग़ज़ल की हर बात में उसी का हाले दिल बयां किया गया है। निशा अपने आपको बहलाने के लिए ज्यादातर किताबों में ही डूबी रहती थी। आशा उसकी पढ़ाई में कोई हस्ताक्षेप नहीं करती थी। किन्तु उसे भी पता था कि किसी चीज़ में अति हानिकारक होती है। इस लिए वो निशा का हर तरह से ख़याल भी रखती थी। इस वक्त भी वह उसके लिए चाय लेकर आई थी।

निशा ने चाय पिया और फिर कुछ देर इधर उधर की बातें करने के बाद वह फिर से किताबों में डूब गई थी। जबकि आशा बेड पर सिरहाने की तरफ रखे पिल्लो के नीचे से निशा की डायरी निकाल कर उसे पढ़ने लगी थी। उसमें एक ग़ज़ल थी जिसे वो बार बार पढ़े जा रही थी।

आशा ने इन ग़ज़लो को बार बार पढ़ा। उसके दिल में अजीब सी हचचल होने लगी थी। काफी देर तक वो उसके बारे में सोचती रही। वो हैरान भी थी कि निशा इतना कुछ कैसे लिख सकती है? पर सबूत तो उसकी ऑखों के सामने ही था। आशा ने निशा से पूछा भी था कि ये किस

शायर की लिखी हुई ग़ज़ल है, जवाब में निशा ने बस मुस्कुरा दिया था। जब आशा ने ज़ोर दिया तो उसने बताया कि ये उसके ही दिल की आवाज़ है जिसे उसने शब्दों में पिरो कर ग़ज़ल का रूप दे दिया है। निशा की इस बात पर आशा सोचों में गुम हो गई। फिर जैसे उसने खुद को संभाला। उसकी नज़र डायरी के दाहिने वाले पेज़ पर लिखी एक और ग़ज़ल पर पड़ी। उसने उस ग़ज़ल को भी पढ़ना शुरू किया।

उस ग़ज़ल को पढ़ कर आशा के संपूर्ण जिस्म में झुरझुरी सी हुई। दिल में इक हूक सी उठी जिसने उसकी ऑखों में पलक झपकते ही ऑसुओं का सैलाब सा ला दिया। उसने पलट कर चुपके से निशा की तरफ देखा। निशा पूर्व की भाँति ही किताबों में खोई हुई थी। ये देख कर आशा को ऐसा लगा जैसे उसका दिल एकदम से धड़कना बंद कर देगा। उसने बड़ी मुश्किल से अपने अंदर के प्रबल वेग में मचलने लगे जज़्बातों को संभाला और फिर डायरी को बंद कर बेड पर चुपचाप ऑखें बंद करके लेट गई। दिलो दिमाग़ एकदम से शून्य सा हो गया था उसका। उसे निशा के दर्द का बखूबी एहसास हो चुका था। किन्तु दिमाग़ में ये सवाल ताण्डव सा करने लगा कि कोई लड़की इस हद तक कैसे किसी को चाह सकती है कि उसके प्रेम में इस तरह बावरी सी होकर ग़ज़ल व कविता लिखने लग जाए? मन ही मन जाने क्या क्या सोचते हुए आशा को पता ही नहीं चला कि कब नींद ने उसे अपनी आगोश में ले लिया था।

१०२

सत्यम सिंह तेज़ रफ्तार से कार चलाते हुए शहर की तरफ जा रहा था। इस वक्त उसके चेहरे पर पत्थर सी कठोरता विद्यमान थी। उसकी नज़र बार बार कार के अंदर लगे बैक मिरर पर पड़ जाती थी। वह काफी समय से देख रहा था कि उसके पीछे लगभग सौ मीटर के फॉसले पर एक जीप लगी हुई है। पहले उसे लगा था कि शायद कोई लोकल आदमी होगा जो उसकी तरह ही शहर जा रहा है किन्तु फिर जाने क्या सोच कर सत्यम सिंह ने उसे परखने का सोचा थ ा ? सत्यम सिंह ने कई बार अपनी कार की रफ्तार को धीमा किया थ ा , ये सोच कर कि पीछे आने वाली जीप उसे ओवरटेक करके उसके आगे निकल जाएगी मगर ऐसा एक बार भी नहीं हुआ था। बल्कि उसकी कार के धीमा होते ही उस जीप की रफ्तार भी धीमी हो जाती थी।

अनुभवी सत्यम सिंह को समझते देर न लगी कि पीछे लगी जीप वास्तव में उसका पीछा कर रही है। इस बात के समझते ही उसे ये भी समझ आ गया कि संभव है ऐसा उसके साथ अब से पहले भी हो चुका हो। उसके मस्तिष्क में दो नाम आए साक्षी और विक्रम। यकीनन इन दोनो ने उसकी हर गतिविधि पर नज़र रखने के लिए कोई आदमी उसके पीछे लगा रखा था। सत्यम सिंह को अब सब समझ आ गया था कि क्यों वो बार बार मात खा रहा था अपने दुश्मन से। उसके दुश्मन को उसकी हर ख़बर रहती थी तभी तो वो उससे चार क़दम आगे रहता था। सत्यम सिंह को अपने आप पर बेहद गुस्सा भी आया कि उसने इस बारे में पहले क्यों नहीं सोचा था? जबकि ये एक अहम बात थी। उसकी बेटी के लिए ये सब करना महज बाएॅ हाथ का खेल था। वो एक पुलिस वाली थी, जिसके तहत मुजरिमों को खोजने के लिए उसके अपने गुप्त मुखबिर होना लाजमी बात थी। किन्तु अब भला इस बारे में सोचने का क्या फायदा था? जो होना था वो तो हो ही चुका था, मगर अब जो होने वाला था ये उसने सोच लिया था।

सत्यम सिंह ने अपने पीछे लगी उस जीप को चकमा देने का मन बना लिया था। अब वो अपनी गतिविधियों की जानकारी अपने दुश्मन तक नहीं पहुॅचने देना चाहता था। उसने कार को तेज़ रफ्तार से दौड़ा दिया और कुछ ही समय में शहर के अंदर दाखिल हो गया। बैक मिरर पर उसकी नज़र बराबर थी। वो देख रहा था कि पीछे लगी जीप भी उसी रफ्तार से आ रही थी। सत्यम सिंह को पता था कि उस जीप को चकमा देने का काम वो शहर में ही कर सकता था। क्योंकि यहॉ पर आबादी थी तथा कई सारे रास्ते थे जहॉ पर पल में गुम हो सकता था। सत्यम सिंह ने ऐसा ही किया, यानी शहर में दाखिल होते ही कई सारे रास्तों से चलते हुए पीछे लगी जीप की पहुॅच से दूर हो गया। इस बीच उसने किसी से फोन पर बात भी की थी।

थोड़ी ही देर में सत्यम सिंह ने कार को सड़क के किनारे रोंक दिया। वह बैक मिरर पर अभी भी देख रहा था। लगभग दस मिनट गुज़र गए। पीछे लगी जीप का कहीं कोई पता न था। अलबत्ता इस बीच एक कार ज़रूर उसके सामने आकर रुकी। कार से एक साधारण कद काठी का आदमी बाहर निकला और चल कर सत्यम सिंह के पास आया। उस आदमी को देख कर

सत्यम सिंह अपनी कार से नीचे उतरा। सत्यम सिंह के उतरते ही वो आदमी सत्यम सिंह की कार में बैठ गया। कार में बैठते ही उसने कार को आगे पीछे करके यू टर्न लिया और वहाँ से चला गया। उस आदमी से सत्यम सिंह ने कोई बात न की थी, शायद उसने फोन पर ही उसे सब कुछ समझा दिया था। ख़ैर उस आदमी के जाते ही सत्यम सिंह भी उस आदमी की कार के पास पहुँचा और कार की ड्राइविंग सीट पर बैठ कर कार को आगे बढ़ा दिया।

कुछ ही समय में सत्यम सिंह की ये कार जिस जगह रुकी उसके बाएॅ तरफ एक ऊँची सी बिल्डिंग थी। ये बिल्डिंग पाँच मंजिला थी। नीचे के ग्राउंड फ्लोर पर कई दुकानें थी जबकि दूसरे फ्लोर पर बिल्डिंग की बाहरी दीवार पर स्टील के बड़े बड़े अच्छरों से "द जिम" लिखा था।

कार से उतर कर सत्यम सिंह उसी बिल्डिंग की तरफ बढ़ चला। बिल्डिंग के ऊपरी फ्लोर पर जाने के लिए दोनो तरफ की दुकानों के बीच एक बड़ा सा चैनल गेट लगा था। उस चैनल गेट से ही सीढ़ियाँ लगी थी। सत्यम सिंह तेज़ तेज़ क़दमों से चलता हुआ उस चैनल गेट के पास पहुँचा और फिर सीढ़ियाँ पर चढ़ता हुआ ऊपर की तरफ चला गया। कुछ ही देर में वो दूसरे फ्लोर यानी कि "द जिम" वाले हिस्से के एक बड़े से मीटिंग हाल में दाखिल हुआ। मीटिंग हाल में पहले से ही कुछ गिनती के लोग बैठे हुए थे।

" हैलो फ्रैण्ड्स। " सत्यम सिंह उन सबकी तरफ देखते हुए कहा और फिर फ्रंट की मुख्य कुर्सी पर बैठ गया।

" अच्छा हुआ ठाकुर साहब। " उनमे से एक ने सत्यम सिंह की तरफ देखते हुए कहा __" कि आपने ये मीटिंग की और हम सबको यहाँ बुला लिया। हम खुद भी चाहते थे कि सामने बैठ कर इस बारे में तसल्ली से बात करें। हम सबने आपकी मदद के लिए अपने अपने आदमियों को आपके पास भेजा था किन्तु उस दिन के हादसे में हमारे वो सब आदमी पुलिस द्वारा पकड़ लिए गए। ये हमारे लिए बिलकुल भी अच्छा नहीं हुआ है। आप समझ सकते हैं कि पुलिस के पास पत्थरों का भी मुह खुलवा लेने की कूवत होती है। इस लिए अगर हमारे आदमियों ने पुलिस के सामने अपना अपना मुह खोल दिया तो उसका अंजाम यही होगा कि बहुत जल्द हम सब भी पुलिस के द्वारा धर लिये जाएॅगे। "

" मामला वाकई बेहद गंभीर हो गया है कमलकांत। " सत्यम सिंह ने कहने के साथ ही सिगार सुलगा लिया , फिर बोला __" इस मामले को हम बड़ी आसानी से सुलझा लेते मगर आज मंत्री जी की गिरफ्तारी से बहुत बड़ा झटका लगा है। हम में से किसी को भी ये उम्मीद नहीं थी कि मंत्री जैसा चतुर व शातिर इंसान इस तरह पलक झपकते ही पुलिस के द्वारा धर लिया जाएगा। ख़ैर , आप सब चिंता न करें , क्योंकि मुझे ऐसा लगता है कि पुलिस उन सबको छोंड़ देगी। "

" क्याऽऽऽ ???" मीटिंग हाल में बैठे वो सब इस बात को सुन कर उछल पड़े थे , एक अन्य बोला __" ऐसा आप कैसे कह सकते हैं ठाकुर साहब ? जबकि ये असंभव बात है। पुलिस भला ऐसे संगीन अपराधियों को कैसे छोंड़ देगी ?"

" उसकी एक ठोस वजह है। " सत्यम सिंह ने कहा __" इस शहर की पुलिस का सारा महकमा भले ही बदल गया था किन्तु इस बात को गुज़रे हुए काफी समय हो गया है। इस देश में ऐसे पुलिस वालों की कमी नहीं है जिनका इमान थोड़े से पैसों के लिए डगमगा जाता है। कहने का मतलब ये कि पुलिस महकमे में एक खास पुलिसिया ऐसा ही है जिसका इमान हमने पैसे से डगमगा दिया है। उसी ने हमे फोन पर इस सबके बारे में जानकारी दी थी। "

"क .. कैसी जानकारी ठाकुर साहब ?" कमलकांत के चेहरे पर हैरानी के भाव आए।

" यही कि पुलिस ने हमारे जिन आदमियों को गिरफ्तार किया था। " सत्यम सिंह ने कहा __" उनके खिलाफ कोई केस फाइल नहीं किया गया है अब तक और महकमे के अंदर का माहौल भी यही ज़ाहिर कर रहा है कि आगे भी अभी उन पर कोई केस फाइल होने की संभावना नहीं है। दरअसल पुलिस डिपार्टमेंट अभी मंत्री की गिरफ्तारी पर ज्यादा ज़ोर दे रहा है। पुलिसिये ने बताया कि एसीपी रमाकांत शुक्ला को केन्द्र से भेजा गया था मंत्री और उसके साथियों के खिलाफ़ गुप्तरूप से सबूत इकट्ठा कर उन्हें गिरफ्तार करने के लिए। ताकि इस प्रदेश से गंदगी दूर हो सके। "

" वो सब तो ठीक है ठाकुर साहब। " निशिकांत पाठक नाम का आदमी बोल पड़ा __" लेकिन इससे ये तो साबित नहीं होता कि मंत्री की वजह से पुलिस हमारे आदमियों पर कोई केस फाइल नहीं करेगी। बल्कि पुलिस का तो काम ही यही है मुजरिमों को सज़ा दिलाना। अतः देर सवेर पुलिस अपना काम ज़रूर करेगी। "

" पूरी बात तो सुनो भाई। " सत्यम सिंह बोला __" एसीपी मंत्री तथा मंत्री के साथियों को लेकर यहाँ से जा चुका है। उनका फैसला अब अदालत में होगा और ज़ाहिर है कि प्राप्त सबूतों के आधार पर उन सबको संगीन से संगीन सज़ा होगी। एसीपी का काम सिर्फ इतना ही था यानी अब यहाँ पर वो नहीं आएगा। उसी पुलिसिये ने बताया था कि पुलिस कमिश्नर की उसने बातें सुनी थी जो वो मेरी बेटी से कर रहे थे। मामला ये है कि ये सारा फसाद साक्षी और विक्रम ने पुलिस कमिश्नर की सहमति से ही किया था। दूसरी महत्वपूर्ण बात ये है कि कमिश्नर की बातों से ये पता चला है कि उसे इस बात की जानकारी विक्रम या साक्षी द्वारा नहीं दी गई है कि उनके पास हमारे खिलाफ ऐसा डायनामाइट सबूत है जिसके बेस पर वो हमे जब चाहे कानून की चपेट में ला सकते हैं। कहने का मतलब ये कि कमिश्नर की समझ में मामला यही है कि ये महज एक पारिवारिक मामला है जिसमें हमने विक्रम व उसकी फैमिली के साथ ग़लत किया है , जिसके लिए वह हमसे अपने हक़ की लड़ाई लड़ रहा है। विक्रम का साथ साक्षी दे रही है जो कि कमिश्नर की सहमति पर ही है। अब सोचने वाली बात ये है कि जब कमिश्नर को इस बारे में पता ही नहीं है कि हम क्या धंधा करते हैं तो फिर भला वो हमारे आदमियों किस बारे में पूछताँछ करेगा ? और अगर करेगा भी तो वो यही कहेंगे कि उन लोगों को हमने किराए पर हायर किया था। यानी उनमे से कोई आप लोगों का नाम नहीं लेगा। रही बात उस हादसे की जिसके कारण वो गिरफ्तार किये गए थे तो वो भी साक्षी की ही वजह से हुआ था। उस हादसे में ग़ैर कानूनी तरीके से हमारा साथ देने के लिए उन लोगों को सज़ा के तौर पर थोड़ी बहुत सज़ा मिल सकती है अथवा ज़ुर्माना भरवा कर उन्हें छोंड दिया जा सकता है। "

" अगर ऐसा है। " कमलकांत बोलाा __" तब तो ठीक है ठाकुर साहब। हम किसी तरह से अपने आदमियों को छुड़ाने की कोशिश कर लेंगे। किन्तु आपसे गुजारिश है ऐसा फिर न हो। "

" ऐसा भी इसी लिए हो गया कमलकांत। " सत्यम सिंह ने पुरज़ोर लहजे में कहाा __" क्योंकि हमें उस सबकी ज़रा भी उम्मीद नहीं थी। हलाॅकि वो हमारी ग़लती थी। हमें इस बात की तरफ भी ध्यान देना चाहिए था कि दुश्मन की तरफ हमारी बेटी है जो एक पुलिस वाली है और वो इस सबके लिए अपने पुलिस महकमे का सहारा ले सकती है। ख़ैर , छोंड़िये इस बात को। हमने वकील से बात कर ली है वो सब आदमी बहुत जल्द छूट जाएॅगे। "

" अब आगे का क्या प्रोग्राम है आपकाा ?" निशिकांत पाठक ने कहाा __" उस हादसे की वजह से जीती हुई बाज़ी आप हार गए थे। इस लिए इसके आगे क्या करने का सोचा है आपनेे ?"

" कहते हैं कि समय हमेशा एक जैसा नहीं रहता। " सत्यम सिंह ने दार्शनिकों वाले अंदाज़ से कहाा __" हार जीत जंग करने वाले हर व्यक्तिि के हिस्से में आती है। कभी वह हारता है तो कभी जीतता भी है। कहने का मतलब ये कि दुर्भाग्य की वजह से अब तक हम हारते ही आए थे मगर अब ऐसा नहीं होगा। "

" क्या मतलब है आपकाा ?" कमलकांत के माथेे पर शिकन उभरीी , बोलाा __" आप तो ऐसे कह रहे हैं जैसे कि आपके पास अपने दुश्मन के खिलाफ कोई बहुत बड़ा सबूत लग गया है जिसके तहत आप अपने दुश्मन को बड़ी आसानी से अपने पंजे पर दबोच लेंगे। "

" बिलकुल सही कहा कमलकांत। " सत्यम सिंह के चेहरे पर चमक थीी , बोलाा __" ऐसा ही हुआ है। उसने हमारे साथ बहुत खेल खेला अब एक खेल हम भी दिखाएॅगे उसे। एक ऐसा खेल जिसके बारे में उसने ख़्वाब में नहीं सोचा होगा। सबके सब एक ही झटके में हमारे क़दमों तले पालतू कुत्तों की तरह दुम हिलाते नज़र आएॅगे। "

" ऐसी क्या बात हो गई है ठाकुर साहब ?" निशिकांत के चेहरे पर हैरानी थीी __" जिसके तहत आप इतनी दृढ़ता व इतने विश्वास के साथ कह रहे कि सबके सब आपके पैरों तले आ जाएॅगेे ?"

" बस देखते जाओ पाठक। " सत्यम सिंह ने प्रभावशाली लहजे में कहाा __" सब कुछ बहुत जल्द समझ आ जाएगा। ख़ैर , हम ये कह रहे हैं कि हमें इसी वक्त वैसे ही कुछ आदमी चाहिए जैसे आप लोगों ने हमारी मदद के लिए भेजे थे। "

सत्यम सिंह की इस बात पर वहाॅ बैठे सभी लोग कुछ देर तक तो चकित भाव से उसे देखते रहे फिर उन लोगों सहमति में सिर हिलाया। कुछ देर बाद ही मीटिंग खत्म हो गई। सत्यम सिंह के उठते ही बाकी सब भी अपने अपने रास्तों पर चले गए।

१०३

बड़ा ही सनसनीखेज मंज़र था।

ये कोई फार्महाउस था जो कि शहर की आबादी से दूर था। फार्महाउस काफी बड़ा था। बीचो बीच दो मंजिला इमारत बनी हुई थी। चारो तरफ हट्टे कट्टे तथा काली वर्दी पहने गनधारी तैनात थे। इमारत के सामने विशाल मैदान में कई कार व जीपें खड़ी हुई थी। किन्तु इस बीच सबसे सनसनीखेज बात ये थी कि इमारत के बगल से बने गेस्टहाउस के आकार का जो घर बना था उसके सामने की दीवार पर कुछ लोग रस्सियों में बॅधे खड़े थे। सबके हाथ आपस में बॅधे ऊपर की तरफ घर की रेलिंग से झूलती रस्सियों पर बॅधे हुए थे।

विक्रम, रेणुका, निशा, सुंदर, अपर्णा, सृष्टि, रणदीप, आशा, रुक्मिणी, अमर, साक्षी, श्रुति, मानुषी, गीता, केशरमाँ तथा शंकर व हरिया ये सब मोटी मोटी रस्सियों में बॅधे हुए छटपटा रहे थे। विक्रम, साक्षी व अमर के चेहरों पर जहॉ कठोरता के भाव थे वहीं बाकी सबके चेहरे दहशत से भरे पड़े थे। जबकि इन सबके सामने खड़े थे सत्यम सिंह, सोनिया, जयदीप तथा उनके कई सारे हथियारबंद आदमी। सबके होठों पर जानदार व विजयात्मक मुस्कान छाई हुई थी। सत्यम सिंह कुछ देर पहले ही ज़ोर ज़ोर से अट्ठहास लगा रहा था। किन्तु उसके तुरंत बाद ही उसका चेहरा गुस्से से आग बूबला नज़र आने लगा था। यही हाल सोनिया व जयदीप का भी था। इन तीनों के चेहरों पर इस वक्त गुस्सा व नफ़रत के बेशुमार भाव गर्दिश कर रहे थे।

" हर व्यक्ति से चुन चुन के हिसाब लूॅगा। " वातावरण में मानो सत्यम सिंह की दहाड़ गूॅजी __" बहुत तड़पाया है तुम सबने मुझे। मेरे दिन का चैन व रातों की नींद हराम कर रखी थी तुम लोगों ने। सबका हिसाब सूद समेत लूॅगा मैं। " कहने के साथ ही सत्यम सिंह विक्रम के नज़दीक आया फिर उसके जबड़े को अपने दाहिने हाथ से सख्ती से पकड़ते हुए कहा __" क्या समझता था तू अपने आपको ? दो चार बार मुझे करारी शिकस्त क्या दे दी साला अपने आपको जेम्स बॉण्ड का बाप समझने लगा। अरे तेरे जैसे जेम्स बाण्ड तो मेरे कच्छे के अंदर पाये जाते हैं समझा ? देख लिया न , एक ही झटके में चारो खाने चित्त कर दिया है तुम सबको मैने। मैं चाहूॅ तो इसी वक्त तुम सबके साथ जो चाहूॅ वो कर सकता हूॅ , और करूॅ गा भी। अपने हर नुकसान का बदला लूॅगा मगर उससे पहले अपनी ख़्वाहिशों को पूरा करूॅ गा मैं। मेरी ख्वाहिशों के बारे में तो तुम सब बहुत अच्छी तरह जानते हो न। "

" एक बार मेरे ये हाथ खोल कर देखो बड़े भैया। " सहसा सुंदर गुस्से से उबलता हुआ बोल पड़ा __" अकेले तुम तीनों का राम नाम सत्य न कर दिया तो ठाकुर देवेंद्र सिंह भाटी की औलाद न कहलाऊॅ। "

" यही , बस यही। " सत्यम सिंह तपाक से बोला __" यही अकड़ तो तुम सबकी निकालनी है मुझे। तुम सबके गुरूर और स्वाभिमान को अपने पैरों के तले रौंदना है मुझे। उसके बाद यहॉ सबके सामने तुम सबके साथ ऐसा नंगा नाच करूॅ गा कि ऊपर बैठे फरिश्तों का कलेजा भी दहल जाएगा। "

" डैड आपको जो भी करना है करिये। " सहसा सत्यम सिंह के पीछे से आता हुआ जयदीप बोल उठा ___" किन्तु अब मुझसे बरदाश्त नहीं हो रहा। आप तो जानते हैं कि मेरी ख्वाहिश क्या है। अतः आप मुझे मेरी इस जाने बहार निशा का जी भर के रस पान करने की इजाज़त दीजिए। "

" अरे इजाज़त क्यों मॉगता है शहज़ादे ?" सत्यम सिंह ने ज़ोर का ठहाका लगाते हुए कहा ___" ये सब तो यहॉ आए ही इसी सबके लिए हैं। तुझे जो पसंद आए उसे भोगना शुरू कर दे। मेरा शिकार तो ये रेणुका है। कसम से इसे पाने के लिए मैं कितना तड़पा हूॅ ये तो सिर्फ मैं ही जानता हूॅ। "

" हरामज़ादे। " रस्सियों से बॅधा विक्रम बुरी तरह दहाड़ते हुए चिल्ला उठा ___" अगर मेरी मॉ बहनों को हाथ लगाने की कोशिश की तो समझ लेना तेरे हाथ उखाड़ कर कुत्तों के सामने डाल दूॅगा। "

" चिल्ला मेरे भतीजे। " सत्यम सिंह ज़ोर से हॅसा __" और ज़ोर से चिल्ला। क्योंकि अब तू सिर्फ यही कर सकता है। जबकि मैं और मेरा बेटा यहॉ मौजूद हर औरत व लड़की का रसपान करेंगे। उसके बाद यहॉ मौजूद मेरे सभी आदमी उन्हें जी भर के भोगेंगे। उफ्फ ! बढ़े मुद्दत के ये दिन आया है जिसका मुझे शिद्दत से इन्तज़ार था। "

सत्यम सिंह की इस बात पर रस्सियों में बॅधे विक्रम, अमर, सुंदर, हरिया व शंकर जैसे मर्द बुरी तरह छटपटा कर रह गए। गुस्सा, अपमान, व जलालत का कड़वा घूॅट पी जाने के सिवा जैसे उनके पास कोई दूसरा चारा ही नहीं था। जबकि सत्यम सिंह की बात तथा उसके मंसूबों का देख कर सभी औरतों व लड़कियों की रूह तक फना हो गई।

इधर ज़ोरदार ठहाके लगाते हुए सत्यम सिंह व जयदीप अपने अपने पसंदीदा शिकार की तरफ बढ़ चले। रस्सियों में बॅधे सबके सब बुरी तरह छटपटा रहे थे। औरतों व लड़कियों की हालत पल भर में ख़राब हो गई। कुछ ही पलों में सत्यम सिंह व जयदीप अपने अपने शिकार यानी कि रेणुका व निशा के पास पहुॅच गए।

" उफ्फ। " निशा के क़रीब पहुॅचते ही जयदीप ने ज़हरीली मुस्कान के साथ कहा __" मेरी रांड बहन तो पहले से और भी ज्यादा खूबसूरत हो गई है। लगता है मुंबई का पानी काफी सूट किया है तुझे। चल ये तो और भी बहुत अच्छा हुआ। तेरी इस मादक किन्तु कच्ची जवानी का रसपान करने में अब और भी मज़ा आएगा। "

" हरामज़ादे कुत्ते। " विक्रम पूरी शक्ति से बंधनों को खींचते हुए चिल्लाया ___" मेरी बहन से इस तरह बात करने का अंजाम बहुत भयंकर होगा। अगर अपनी खैरियत चाहता है तो दूर हट जा गुड़िया से वरना मॉ कसम यहीं ज़िंदा गाड़ दूॅगा तुझे। "

" ये गीदड़ भभकी किसी और को देना बेटा। " जयदीप ने ज़हरीली मुस्कान के साथ कहा

__" चिन्ता मत कर , तेरा भी हिसाब करना है मुझे। तूने उस समय मुझ पर हाथ उठाया था न। उसका हिसाब तो ज़रूर लूँगा तुझसे। मगर उससे पहले अपनी जाने जिगर से अपना मूड तो बना लूँ। "

जयदीप की बात पर विक्रम बुरी तरह छटपटा कर रह गया। उसे अपनी बेबसी पर बेहद क्रोध भी आ रहा था और रोना भी। उधर सत्यम सिंह भी रेणुका के पास पहुँच चुका था। उसने रेणुका को बहुत ही नज़ाकत से ऊपर से नीचे तक कई बार देखा और फिर उसकी ऑखों में देखते हुए मुस्कुराया।

" सचमुच। " फिर सत्यम सिंह ने मानो मंत्रमुग्ध हो चुके भाव से कहा __" आज भी वैसी ही हो जैसे तब थी जब मैने तुम्हें पहली बार देखा था। वही सादगी , वही तीखे नैन नक्श , वही सॉचे में ढला हुआ मदमस्त कर देने वाला गदराया हुआ जिस्म। कसम से रेणुका , तुम्हें अगर हज़ार बार भी भोग लूँ तो मेरी प्यास न बुझेगी। तुम्हें पता है , तुम वो दूसरी स्त्री हो जिससे मुझे सचमुच का प्यार हो गया था। मैं चाहता था कि तुम खुशी खुशी मेरी आगोश में आ जाओ। मगर जब तुम नहीं आई तो मुझे हर वो रास्ता अख्तियार करना पड़ा जिसके तहत मुझे लगता था कि तुम मेरी आगोश में आ सकती हो। पर कदाचित मैं ग़लत था रेणुका या फिर मेरे प्यार में वो बात ही नहीं थी जिसके तहत तुम मेरी हो जाती। "

" भाभी से तमीज़ से बात करो बड़े भैया। " सुंदर बुरी तरह छटपटाते हुए बोला __" इतनी भी नीचता मत दिखाओ कि ईश्वर को भी शर्म आ जाए। "

" ओहो। " सत्यम सिंह ने ब्यंगात्मक भाव से उसे देखते हुए कहा __" तो मेरा छोटा भाई भी अब मुझसे इस ज़ुबान में बात करेगा। लगता है रेणुका ने थोड़ा बहुत अपनी मदमस्त जवानी का स्वाद चखा दिया है तुम्हें। "

" ख़ाऽऽऽमोश। " सुंदर सिंह पूरी शक्ति से दहाड़ा था , बोला ___" अपनी ज़बान को लगाम दे बेशर्म इंसान। बस एक बार मुझे इस बंधन से आज़ाद कर दे। उसके बाद देख कि क्या हस्र करता हूँ तेरा। "

" इस तरह चिल्लाने का कोई फायदा नहीं है छोटे। " सत्यम सिंह ने पूरी ढिठाई से कहा ___" क्योंकि अब यहॉ पर वही होगा जो सिर्फ और सिर्फ मैं चाहूँगा। तुम सबकी ऑखों के सामने हम दोनो बाप बेटे एक एक औरत व एक एक लड़की की इज्ज़त का मर्दन करेंगे। "

इतना कहने के साथ ही सत्यम सिंह पलटा और पुनः रेणुका के समीप आ गया। उसने जैसे ही हवस भरी ऑखों से रेणुका की तरफ देखा वैसे ही रेणुका ने नफरत व घृणा से उसके चेहरे पर थूँक दिया। ये देख कर सत्यम सिंह तो आग बबूला हुआ ही किन्तु इस बीच रेणुका के समीप तेज़ी से आकर सोनिया ने उसके गाल पर एक झन्नाटेदार थप्पड़ जड़ दिया।

" साली कुतिया। " सोनिया किसी शेरनी की भॉति गुर्राते हुए बोली __" तेरी हिम्मत कैसे हुई सत्यम के चेहरे पर थूँकने की ? अपने आपको बड़ी सती सावित्री समझती है न। अभी

यहीं सबके सामने तेरे इस जिस्म को नुचवाती हूँ। अपने रूप और सौंदर्य का बहुत घमंड है न तुझे , रुक ऐसा हाल करवाऊँगी कि सब थूँकेंगे तुझ पर। " कहने के साथ ही सोनिया एक झटके से सत्यम सिंह की तरफ पलटी , फिर गुस्से से फुंफकारते हुए बोली ___" देख क्या रहे हो सत्यम ? आगे बढ़ो और चीर फाड़ कर फेंक दो इस रंडी के जिस्म से इसके सारे कपड़े। ज़रा भी रहम न करना इस दो टके की रांड पर। "

सोनिया का भभकता हुआ चेहरा तथा उसकी बातें सुन कर सत्यम सिंह पर तुरंत प्रतिक्रिया हुई। वह झटके से आगे बढ़ा और रेणुका के जिस्म पर मौजूद सफेद साड़ी के ऑचल को पकड़ कर एक झटके से अपनी तरफ खींच लिया। जिससे रेणुका का ऊपरी जिस्म अर्धनग्न सा हो गया। सफेद ब्लाउज पर कसे हुए उसके बड़े बड़े उन्नत उभार सबकी नज़रों में आ गए। उधर सत्यम सिंह की इस हरकत से वातावरण में कई सारी चीखें गूँज गईं। रेणुका तो लाज व शर्म की वजह से चिल्लाई ही थी किन्तु उसके साथ ही विक्रम आदि सब भी चीख पड़े थे। एकदम से जैसे वातावरण में कोलाहल सा मच गया था।

" हरामज़ादे। " विक्रम के सब्र का बॉध मानो टूट गया। भयंकर गुस्से में भभकते हुए उसने अपने दोनो हाथो को नीचे की तरफ पूरी ताकत से खींचा। उसका गोरा चेहरा लाल सुर्ख पड़ता चला गया। कुछ ही पलों में रस्सी टूटती चली गई। रस्सी के टूटते ही वह तीव्र वेग से नीचे ज़मीन पर गिरा और फिर गुलाटियॉ खाता चला गया। किन्तु तुरंत ही बिजली की स्पीड से उठ कर खड़ा भी हो गया। उसके दोनो हाथ आपस में अभी भी रस्सी से बॅधे हुए थे। वह उसी हालत में सत्यम सिंह की तरफ दौड़ पड़ा।

पलक झपकते ही वह सत्यम सिंह के ऊपर छलांग चुका था। सत्यम सिंह के ऊपर विक्रम का जिस्म बड़े वेग से टकराया था जिसके परिणाम स्वरूप वो भरभरा कर वहीं ज़मीन पर गिरा। विक्रम पहले तो उसके ऊपर ही था किन्तु ज़मीन पर दोनो के गिरते ही विक्रम उसके ऊपर से दूसरी तरफ लुढ़कता चला गया था। किन्तु वह फौरन ही उठा और पल भर में सत्यम सिंह के सीने में सवार हो गया। उसके सीने पर सवार होते ही वह अपने दोनो बॅधे हाथो का दुहत्थड़ उसके सीने पर पूरे वेग से मारने लगा। ये सब इतनी जल्दी हुआ कि कुछ देर तक तो कोई कुछ समझ भी न पाया। हर कोई हक्का बक्का रह गया था।

सबको होश तो तब आया जब वातावरण में सत्यम सिंह की दर्द भरी चीखें गूँजने लगी थी। चारो तरफ तैनात गनमैन तुरंत ही हरकत में आ गए। वो एक साथ उस तरफ बढ़े जहॉ पर विक्रम सत्यम सिंह के ऊपर चढ़ा हुआ उस पर दुहत्थड़ बरसाए जा रहा था।

" आज तुझे ज़िंदा नहीं छोंड़ूँगा हरामज़ादे। " विक्रम मारने के साथ साथ गुस्से में बोलता भी जा रहा था __" तूने मेरी देवी जैसी मॉ का अपमान किया है। उन पर अपनी गंदी दृष्टि डाली है। तुझ जैसे पापी का इस दुनियॉ में जीने का कोई अधिकार नहीं है। "

विक्रम अभी ये सब बोल ही रहा था कि तभी चारो तरफ से दौड़ते हुए आए गनमैनों ने उसे पकड़ कर सत्यम सिंह के ऊपर से खींच कर दूर कर दिया। गनमैनों के बंधन में जकड़ा हुआ

विक्रम बुरी तरह चीखे जा रहा था तथा खुद को उनकी पकड़ से छुड़ाने के लिए पूरी ताकत लगाए जा रहा था। किन्तु चारो तरफ से हाथ पैर पकड़े गनमैनों की पकड़ से वह छूट नहीं पा रहा था। ये अलग बात थी कि गनमैनों को उसे संभालने में काफी ज़ोर आजमाईश करनी पड़ रही थी।

इधर विक्रम के हटते ही सत्यम सिंह ज़मीन से उठा और तमतमाया हुआ वह गनमैनों द्वारा पकड़े विक्रम की तरफ बढ़ा और फिर जल्दी जल्दी उसने विक्रम पर लात घूँसों की बौछार कर दी। सत्यम सिंह यहीं पर ही नहीं रुका बल्कि उसने झपट कर एक गनमैन से उसकी गन छीनी और दो कदम दूर हटते हुए उसने विक्रम की तरफ गन का दहाना खोल दिया। परिणामस्वरूप दो पल के भीतर ही गन से निकली गोलियॉ विक्रम के जिस्म को छलनी करती चली गईं। वातावरण कई सारे गलों से निकली चीख़ व चिल्लाहट से गुंजायमान हो उठा। उधर गोलियों से छलनी हो गए विक्रम का समूचा जिस्म उसके ही लाल सुर्ख खून से नहाता चला गया।

" विक्र ऽऽऽऽऽम। " अपने कमरे में बेड पर गहरी नींद में सोई पड़ी रेणुकॉ पूरी शक्ति से चिल्लाते हुए हड़बड़ा कर उठ बैठी। उसकी इस चीख से रात के गहरे सन्नाटे में डूबा समूचा बॅगला मानो झनझना कर रह गया। बेड पर बदहवाश सी बैठी रेणुकॉ विछिप्त सी हालत में इधर उधर देखे जा रही थी। उसका चेहरा भय व दहशत से पीला ज़र्द पड़ा हुआ था। समूचा जिस्म पसीने से तर बतर था। बुरी तरह हॉफे जा रही थी वह।

रेणुका की इस भयानक चीख़ से बंगले के अंदर अपने अपने कमरों में बेड पर सोया हुआ हर इंसानी जीव बुरी तरह उछल कर उठ बैठा था। जैसे ही उन्हें ये एहसास हुआ कि चीख़ रेणुका के कमरे से आई है तो सब के सब अपने अपने कमरों से दौड़ पड़े। किसी को होश भी नहीं था कि कौन किस हालत में बेड पर सोया हुआ था?

थोड़े ही समय में सबके सब रेणुका के कमरे के दरवाजे पर ऑधी तूफान की तरह पहुॅचे। सुंदर व रौनक ने दरवाजे को पूरी ताकत से थपथपाया। किन्तु दरवाजा तो खुलता चला गया। यानी कि दरवाजा अंदर से बंद नहीं था। शायद रेणुका को दरवाजा बंद करने का ख़याल ही नहीं आया था। आता भी कैसे, उसके ख़यालों में तो हर पल उसका बेटा रहता था। जो उसकी ऑखों का तारा था, उसके जीने का आख़िरी सहारा था। उसे पता था कि वो इस समय मौत के मुह में है। ख़ैर, दरवाजे को खुलता देख रौनक ने जल्दी से दरवाजे को पूरा धकेला और फिर सबके सब कमरे में दाखिल हो गए।

कमरे में दाखिल होते ही सबकी नज़र एक साथ बेड पर पागलों की सी हालत में बैठी रेणुका पर पड़ी। रेणुका को इस वक्त किसी बात का होश नहीं था और ना ही उसे अपनी हालत का ख़याल था। उसकी सफेद साड़ी का ऊपरी हिस्सा बेड सीट पर ही एक तरफ गिरा हुआ था। उसकी इस हालत को देख कर अपर्णा तेज़ी से उसकी तरफ बढ़ी और उसने उसके ऑचल को उसके सीने पर ढॅकते हुए खुद भी बेड के किनारे बैठ कर उसे दोनो हाथो से संभाल लिया।

" क्या हुआ दीदॉ ???" अपर्णॉ सहसा दुखी भाव से रेणुकॉ के बुत बने जिस्म को

झकझोरते हुए बोलीं __" आप इतनी ज़ोर से क्यों चीखी थीं ? बताइये न दीदी , क्या हुआ है ?"

" विक्र .. क्र .. क्र. ..म। " सहसा रेणुका के थरथराते हुए लबों से बड़ी अजीब सी आवाज़ निकलीं __" मे .. मेरे .. बेटे .. को मार दिया उन लोगों ने। उन हत्यारों ने मेरे जिगर के टुकड़े को गोलियों से भून दिया। मेरा बेटा खून से लथपथ हो गया है। वो रो रहा है ... वो माँ माँ कह कर मुझे पुकार रहा है। हाय रे ... मेरे बेटे को जान से मार दिया उन कंजरों ने। " कहने के साथ ही रेणुका दहाड़ें मार मार कर रो पड़ीं __" मुझे मेरे बेटे के पास जाना है। मुझे मेरे बेटे के पास पहुँचा दो। मुझे अपना बेटा जीवित चाहिए। ईश्वर मेरे बेटे को मुझसे नहीं छीन सकता। अगर ऐसा हुआ तो उसे मेरी बद्दुवा लगेगी। मुझे मेरे बेटे के पास जाना है। "

इतना सब कहने के साथ ही रेणुका को चक्कर सा आ गया और वह अपर्णा की बाहों में अचेत सी लुढ़क गई। रेणुका की इन बातों ने सबको जैसे सकते में ला दिया। सबके पैरों तले से मानों ज़मीन गायब हो गई। सबके सब उसकी बात सुन कर इस तरह अवाक से अपनी अपनी जगह खड़े रह गए थे मानों सबको एक साथ ही लकवा मार गया हो। होश तब आया जब अपर्णा की करुण चीखें सबके सुन्न पड़ चुके कानों में पड़ी।

कुछ ही पल पहले मानो वक्त ठहर सा गया था। अपर्णा की चीख ने मानो सबके जिस्मों में प्राणों का संचार कर दिया था। वस्तुस्थित का एहसास होते ही सबसे पहले निशा के हलक से आवाज़ निकली। वह रोते हुए रेणुका की तरफ दौड़ पड़ी और उससे लिपट कर रोने लगी। उसके बाद तो सब के सब अपनी अपनी भावनाओं के साथ रेणुका के पास पहुँच गए थे। किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें? रेणुका की इस हालत ने सबको मानों विवेकहीन सा कर दिया था। रुक्मिणी व आशा ने आगे बढ़ कर रेणुका को संभाला और उसे ध्यान से देखा।

" जल्दी से कोई पानी ले आओ। " फिर रुक्मिणी ने दुखी भाव से लगभग ज़ोर से चिल्ला कर कहा __" इसे चक्कर आया हुआ है। इसने ज़रूर कोई बहुत ही बुरा सपना देखा है। उसी की वजह से यह इतनी ज़ोर से चीखी थी। "

रुक्मिणी की बात सुन कर रौनक जो पास ही खड़ा था वो तुरंत कमरे से बाहर की तरफ दौड़ते हुए गया और कुछ ही पलों में एक स्टील के मग में पानी ले कर आ गया। सुंदर ने आगे बढ़ कर उससे पानी से भरा स्टील का मग लिया और उससे चुल्लू में पानी डाल कर रेणुका के चेहरे पर छिड़कने लगा। सुंदर सिंह की ऑखों में ऑसू व चेहरे पर पीड़ा के भाव थे। कदाचित अपनी देवी समान भाभी की इस हालत से वह खुद भी बेहद दुखी हो गया था।

उमाकांत पाटिल बंगले में नहीं था। वो शाम के लगभग सात बजे ही कहीं बाहर चला गया था। उसने बताया था कि वह बिजनेस के संबंध में किसी ज़रूरी काम से जा रहा है। ख़ैर, कुछ ही देर में रेणुका को पुनः होश आ गया। होश में आते ही वह रोते हुए विक्रम विक्रम चिल्लाने लगी। उसे यूँ रोता देख सबकी ऑखें छलक पड़ीं। बड़ी मुश्किल से उसे संभाला सबने। वो बार बार यही कहती कि उसे अपने बेटे के पास जाना है। उसके बेटे को हत्यारों ने गोलियों से

छलनी कर दिया है।

काफी देर तक सबके समझाने बुझाने के बाद आख़िर वह कुछ शान्त हुई। सबने उसे समझाया और यकीन दिलाया कि उसके बेटे को किसी ने कुछ नहीं किया है बल्कि उसका बेटा पूर्णतया सुरक्षित है। सबने अपने अपने तरीके से रेणुका को समझाया तो था और तसल्ली भी दी थी किन्तु मॉ का हृदय पूरी तरह से शान्त न हो सका था। उसका अंतर्मन संतुष्ट नहीं था। मगर सबको दिखाने के लिए वह शान्त ज़रूर हो गई थी। कदाचित उसने भी सोचा कि ये महज एक ख्वाब ही था और इसकी वजह से उसे सबको दुखी या चिंतित नहीं करना चाहिए।

लगभग एक घंटे बाद सब अपने अपने कमरों में चले गए। रेणुका के पास केवल रुक्मणि रह गई थी। अपनी मॉ की इस हालत से निशा भी काफी ब्यथित हो गई थी। खास कर इस बात को सुन कर कि उसके भाई को या यूॅ कहिए कि उसके प्यार को गोलियों से छलनी कर दिया है हत्यारे ने। रेणुका के इस स्वप्न ने सबको झकझोर कर रख दिया था। उस रात फिर कोई भी ठीक से सो नहीं पाया था। कदाचित इस लिए भी कि एक ये सच्चाई तो थी ही कि विक्रम मौत के मुह में था। साक्षी तथा साक्षी की पुलिस भले ही उसके साथ थी किन्तु दुर्भाग्य कभी किसी को बता कर नहीं आता। हर कोई विक्रम के लिए चिंतित था और हर वक्त उसकी सलामती के लिए भगवान से दुवाएॅ कर रहा था।

१०४

मैं और अमर बाहर से घूम फिर कर शाम को लगभग सात बजे घर पहुँचे। अंदर आते ही अमर ने कहा वो फ्रेश होने अपने कमरे में जा रहा है। उसके जाने के बाद मैं सीधा मानुषी के कमरे में उसको देखने के लिए चला गया। मानुषी के कमरे का दरवाजा पूरी तरह से बंद नहीं था बल्कि थोड़ा सा खुला हुआ था। मैने उस खुले हुए हिस्से के पास चेहरा ले जाकर पहले श्रुति दीदी को आवाज़ दी। किन्तु जब अंदर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई तो मैं कुछ पल सोचने के बाद खुद ही दरवाजा खोल कर कमरे के अंदर आ गया।

कमरे में रखे शानदार बेड पर मानुषी करवॅट के बल लेटी हुई थी। उसकी ऑखें बंद थी इस वक्त। कदाचित सो रही थी या फिर ऑखें बंद करके आराम कर रही थी। मैं उसके क़रीब जा कर बेड के पास ही खड़ा हो गया। मेरी नज़र उसके मासूम व खूबसूरत से चेहरे पर पड़ी। इस वक्त वो किसी छोटी सी बच्ची की भॉति मासूम दिख रही थी। मुझे उसकी इस मासूमियत पर बेहद प्यार आया। मेरे होठों पर मुस्कान फैल गई। तभी अचानक मेरे मन में उसे छेंड़ने का ख़याल आया मगर फिर मैंने अपने मन से उसे छेंड़ने का ख़याल झटक दिया। मुझे लगा इस वक्त इसे आराम से सोने देना चाहिए। ये सोच कर मैं उसके चेहरे के क़रीब झुका और प्यार से उसके माथे पर हौले से चूॅम लिया। उसके बाद मैं पुनः सीधा खड़ा हुआ और फिर बिना कुछ बोले ही पलट कर कमरे से बाहर की तरफ जाने के लिए बढ़ा ही था कि सहसा तभी मैं चौंक पड़ा। पीछे से मानुषी ने उसी वक्त मेरी दाहिनी कलाई को पकड़ लिया था।

उसके इस तरह मेरी कलाई पकड़ लेने पर मैं बरबस ही मुस्कुरा उठा। मेरे दिमाग़ में तुरंत ही ये बात आई कि मानुषी ने कदाचित मुझे छेंड़ने के लिए ही मेरी कलाई पकड़ ली है। अतः ये सोचते हुए मैं पूर्वत मुस्कुराते हुए उसकी तरफ पलटा। मानुषी ने अपने एक हाथ से मेरी कलाई को पकड़ा हुआ था, किन्तु उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था। वो बस मुझे एकटक देखे जा रही थी। उसकी ऑखों में कुछ था जो फिलहाल मेरी समझ में नहीं आया कि वो क्या था?

" क्या बात है बंदरिया ?" मैने उसे इस तरह देखते देख छेंड़ने वाले भाव से कहा __" क्या मुझसे पंगा लेने का इरादा है ? देख अगर ऐसा है तो फिलहाल अपने ज़हन से इस ख़याल को निकाल दे। क्योंकि इस हालत में तुझको मुझसे पंगा लेना भारी पड़ जाएगा। इस लिए मेरी बात मान पहले तू ठीक हो जा। उसके बाद तू शौक से मुझसे जैसे चाहे पंगे ले लेना। "

" ऐसी कोई बात नहीं है विक्रम। " मानुषी ने सहसा गंभीरता से कहा __" तुमसे तो मैं इस हाल में भी पंगा लेने को तैयार हूॅ और यकीन मानो मुझे पंगे के भारी पड़ने की कोई फिक्र नहीं है। मगर मैं इस वक्त तुमसे कुछ और ही बात कहना चाहती हूॅ। "

" ओह आई सी। " मैने उसे गंभीर हालत में देखते हुए ज़रा खुद भी कुछ गंभीरता का नाटक करते हुए कहा __" तो ये बात है। फरमाइए , क्या कहना चाहती हैं आप ?"

" कहने को तो बहुत कुछ है मेरे दिल में। " मानुषी की आवाज़ सहसा लड़खड़ा सी गई , किन्तु तुरंत ही जैसे उसने खुद को मजबूती से संभालते हुए कहा __" मगर सिर्फ यही कहना चाहती हूँ कि मेरी साक्षी दीदी का हमेशा ख़याल रखना। मैं नहीं चाहती कि उनका मोम का बन चुका दिल फिर से पत्थर में तब्दील हो जाए। "

" क्या मतलब ???" मैं मानुषी की इस बात से एकदम से चकरा सा गया , बोला __" ये क्या ऊल जुलूल बोल रही हो तुम ?"

" एक गुजारिश भी है तुमसे। " मानुषी ने मेरी बात पर ज़रा भी ध्यान न देते हुए फीकी मुस्कान से कहा __" इतने कम समय में भी मुझे एहसास हो चुका है कि तुम्हारे दिल में हम सबके लिए बेपनाह प्यार व सम्मान की भावना है। इस लिए मेरी गुज़ारिश है कि हमेशा ऐसे ही बने रहना। चाहे जैसी भी परिस्थितियाँ आ जाएँ मगर तुम खुद को नहीं बदलना। "

" ये तुम कैसी बातें कर रही हो मानुषी ?" मैं मानुषी की इन बातों से बुरी तरह हैरान व चकित रह गया था , फिर बोला __" देखो किसी भी तरह की पहेलियाँ मत बुझाओ। जो भी बात है उसे साफ साफ कहो। "

" अब इससे ज्यादा साफ साफ नहीं कह सकती मेरे भाई। " मानुषी ने भारी आवाज़ में कहा __" मुझे पता है कि तुम बेहद समझदार हो , इस लिए मैं उम्मीद करती हूँ कि तुम मेरी बातों को समझ जाओगे। "

" देखो अगर तुम्हारे ये सब कहने का मतलब। " मैने इस बार ज़रा गंभीर भाव से कहा __" इस बात से है कि इस सबके बाद क्या होगा तो तुम इस बात से बेफिक्र रहो। मैं जानता हूँ कि इस जंग का अंत यकीनन बेहद दुखदायी होगा। मगर होनी तो अटल है न। पाप और बुराई का अंत तो निश्चित है। किन्तु उसके बाद हम सब साथ मिल कर एक नया संसार बनाएंगे। उस नये संसार में हम सब एक साथ ढेर सारी खुशियों का हिस्सा होंगे। मैं तुमसे वादा करता हूँ कि जीवन में कभी भी किसी को मैं उदास या दुखी होने का मौका नहीं दूँगा। "

" मुझे पता है विक्रम। " मानुषी ने फीकी सी मुस्कान के साथ मेरी तरफ देखते हुए कहा ___" मैं जानती हूँ कि तुम्हारे रहते कोई भी जीवन में दुखी नहीं हो पाएगा। किन्तु मेरे ये सब कहने का मतलब इन सब बातों से नहीं था भाई , बल्कि मैं तो बस साक्षी दीदी के लिए वो सब कह रही थी। "

" क्या मतलब ??" मेरे चेहरे पर सोचने वाले भाव उभरे।

" यही तो विवश ता है विक्रम। " मानुषी ने बेबस भाव से मेरी तरफ देखा __" कुछ बातें ऐसी होती हैं जिन्हें मुख से नहीं कहा जाता बल्कि सामने वाले को खु ही समझ जाना होता है और मैं तुमसे यही उम्मीद करती हूँ कि तुम बिना कुछ बताए सब कुछ समझ जाओगे। "

" कमाल है। " मैं चकित भाव से कह उठा ___" भला ये क्या बात हुई ? मैं कोई अंतर्यामी

हूॅ क्या जो किसी के बताए बिना ही सब कुछ जान लूॅगा या फिर समझ लूॅगा ?"

" क्यों नहीं विक्रम। " मानुषी ने बड़े ग़ौर से मेरी तरफ देखते हुए कहा ___" तुम यकीनन बिना कुछ बताए सब कुछ समझ सकने की काबीलियत रखते हो और मुझे ऐसा लगता भी है कि तुम सब कुछ समझते भी हो। "

" अब ये क्या बात हुई यार ?" मैं बुरी तरह चौंका।

" पता नहीं क्यों ?" मानुषी ने पूर्वत मेरी तरफ बड़े ग़ौर से देखते हुए ही कहा __" पर मुझे ऐसा लगता है कि तुम जानते समझते सब कुछ हो मगर प्रत्यक्ष रूप में ज़ाहिर यही करते हो कि तुम्हें सामने वाले की कोई भी बात समझ में नहीं आई है। है ना ?"

" और मुझे ऐसा लग रहा है। " मैने कहा __" कि जैसे तुम मुझसे पंगा लेने के मूड हो। क्योंकि तुम्हारी ये बेसिर पैर की बातें इसी बात का इशारा करती हैं। मगर मिस मानुषी , जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हूॅ तुमसे कि तुम इस वक्त मुझसे पंगा लेने की हालत में नहीं हो। इस लिए बेहतर होगा कि अपने ज़हन से पंगा लेने वाले ख़याल निकाल दो। "

मेरी इस बात से मानुषी कुछ न बोली। बस एकटक देखती रही मेरी तरफ। मैं खुद भी उसी की तरफ देख रहा था। उसके चेहरे पर कई तरह के भावों का आवागवन चालू था। ऐसा लग रहा था जैसे किसी बात के लिए उसे अपने आपसे काफी ज़द्दो जहद करनी पड़ रही हो। एकाएक ही उसने मेरे चेहरे से अपनी नज़रें हटाईं और अपने सिर को दूसरी तरफ कर लिया। मैं ये देख कर बुरी तरह चौंका कि दूसरी तरफ सिर किये मानुषी की ऑखों से ऑसू छलक पड़े थे। मुझे कुछ समझ न आया किन्तु इतना ज़रूर हुआ कि उसकी ऑखों से इस तरह ऑसू छलकते देख मैं बेचैन हो गया।

" अरे ये क्या मेरी प्यारी सी बहन की ऑखों से ऑसू क्यों छलक पड़े ?" मैं एकदम से उसके समीप ही बेड के किनारे पर बैठ गया और फिर उसके हाथ को अपने हाथ में लेकर बोला __" देख अगर तुझे मेरी किसी बात से बुरा लगा हो तो मुझे माफ़ कर दे। मैं तुझे इस तरह ऑसू बहाते नहीं देख सकता। तू तो जानती ही है कि मैं कितना बेवकूफ हूॅ। मुझमें किसी की भावनाओं को समझने का ज्ञान नहीं है। अतः अगर तुझे मेरी किसी बात से तक़लीफ हुई है तो प्लीज माफ़ कर दे मुझे। "

" ऐसा मत कह विक्रम। " मानुषी एकदम से मेरी तरफ पलट कर सिसक उठी ___" तू तो ऐसा है जो भूल से भी किसी को कोई तक़लीफ नहीं दे सकता। मुझे खुशी है दुनियॉ में सबसे खूबसूरत दिल का लड़का मेरा भाई है। ये ऑसू तो फक़त ऐसी ही खुशी के तहत छलके हैं। मैं नहीं जानती कि किसके जीवन में क्या क्या खोना और पाना लिखा है मगर मेरी हसरत तो यही है कि मेरी साक्षी दीदी को हर वो चीज़ मिल जाए जिस चीज़ की उन्होंने रज़ा की हो। "

" मेरे रहते मेरी बहनों को कभी भी किसी चीज़ की कमी का एहसास तक नहीं होगा मानुषी। " मैने कहा __" मैं बहनें मेरी जान हैं , उनके लिए कुछ भी कर सकता हूॅ मैं। साक्षी दीदी

ही बस क्यों मैं तो अपनी सभी बहनों को बराबर प्यार व सम्मान दूँगा। "

" जैसा तुम्हें अच्छा लगे वैसा करना विक्रम। " मानुषी ने गहरी सास ली ___" अब तुम जाओ और गीता बुआ या श्रुति दीदी में से किसी को भेज दो। मेरा सिर ज़रा भारी भारी सा लग रहा है। "

" सिर भारी लग रहा है ???" मैं चौंका __" इतनी सी बात के लिए उनको क्यों कष्ट देना ? लाओ मैं तुम्हारे सिर की मालिश कर देता हूँ। इतना तो मैं भी कर सकता हूँ। "

" तुम रहने दो विक्रम। " मानुषी ने कहा __" तुम परेशान न हो। श्रुति दीदी को भेज देना। "

" ओये चिंता मत कर यार। " मैं सहसा मुस्कुराया __" सिर की मालिश ही करू गा , तेरा गला नहीं दबाऊँगा मैं। "

" काश ! तू मेरा गला ही दबा दे भाई। " मानुषी की आवाज़ एक बार पुनः जाने क्या सोच कर भर्रा गई __" तेरे पास तेरी ही बाहों के दरमियां इस दुनियाँ से रुख़्सत हो जाऊँगी। "

" ज्यादा बकवास मत कर। " मैने सहसा कठोर भाव से कहा __" वरना कान के नीचे एक लगाऊँगा तो सारा सेन्टिमेंट निकल जाएगा तेरा। अब अगर कुछ बोला तो देखना फिर। "

मेरी बात सुन कर मानुषी बस मुस्कुरा कर रह गई। जबकि मैं उसके सिरहाने के क़रीब ही बैठ कर उसके माथे पर हाथ से मालिश का दबाव आहिस्ता आहिस्ता करने लगा और साथ ही सोचने लगा कि मानुषी ने आख़िर ऐसी बात क्या सोच कर कही हो सकती है? अभी मैं मानुषी की बातों के बारे में सोच ही रहा था कि तभी कमरे में गीता बुआ व श्रुति दीदी एक साथ ही आ गईं। मुझे इस तरह मानुषी का सिर दबाते देख वो दोनो ही चौंकते हुए एक जगह ठिठक गईं।

" ओहो। " फिर सहसा गीता बुआ ने मुस्कुराते हुए कहा __" क्या बात है विक्रम , अपनी लाडली बहन की बड़ी सेवा कर रहे हो तुम। वैसे मैने सुना है कि तुम दोनो आपस में बड़ा लड़ते झगड़ते हो। फिर ये सेवा भाव कैसे ?"

" क्या बताऊँ बुआ ?" मैने बड़ी मासूमियत से कहा _" मैं इससे चाहे जितना भी लड़ूँ झगड़ूँ लेकिन आख़िर है तो ये मेरी प्यारी बहन ही न ? बेचारी का सिर भारी भारी सा हो रहा था तो कहने लगी कि मैं आप में से किसी को बुला दूँ। मैने सोचा कि इतनी सी बात पर भला आप लोगों को क्यों कष्ट देना ? अब जब मैं खुद ही यहाँ पर मौजूद हूँ तो क्या थोड़ी देर इसके सिर की मालिश करके इसके सिर का भारीपन नहीं दूर कर सकता ? बस यही सोच कर सेवा करने लगा था इस बेचारी की मगर हाय रे मेरी किस्मत ! ये तो इस हाल में भी मेरा भेजा फ्राई करने पर तुल गई। अच्छा हुआ कि आप दोनो यहाँ आ गईं , अब आप ही इसे संभालिये । मैं तो अब यहाँ से अब नौ दो ग्यारह ही हो जाऊँगा। "

" अरे अब बस भी कर विक्रम। " श्रुतिं दीदी हैरानी से मेरी तरफ देखते हुए कह उठीं __" कितना बोलता है तू। हर वक्त उसे बस तंग ही करने का सूझता है तुझे। "

" लो कर लो बात। " मैने कहा __" ख़ैर क्या कहूँ अब ? ठीक है जा रहा हूँ मैं। अब आप ही देखो इस बंदरिया को। गुड बाय। "

इतना कहने के बाद ही मैं पैर पटकते हुए कमरे से बाहर चला गया। जबकि मुझे इस तरह जाते देख श्रुति दीदी व गीता बुआ खिलखिला कर हँस पड़ीं। मानुषी के होठों पर भी फीकी सी मुस्कान थी। किन्तु उसके चेहरे के भावों से ऐसा लगता था जैसे किसी किसी पल वो कहीं खो सी जाती थी।

कमरे से बाहर जैसे ही मैं आया तो मेरे पैंट की जेब में पड़ा हुआ मेरा मोबाइल फोन बज उठा। मैं तेज़ तेज़ क़दमों के साथ चलता हुआ नीचे आया और फिर बाहर की तरफ निकल गया। इस बीच मैने मोबाइल पर आ रही काल को रिसीव कर मोबाइल को कान से लगा लिया था।

१०५

उस वक्त रात के लगभग बारह बज रहे थे। सारा शहर सोया पड़ा था। कही दूर किसी घंटाघर में लगे हुए घंटे ने बारह बजते ही ज़ोर की आवाज़ दी। खाली पड़ी सड़कों पर अभी कुछ ही देर पहले गहन सन्नाटा छाया हुआ था किन्तु कुछ ही पलों के भीतर इस सन्नाटे को भेदते हुए कई सारी गाड़ियॉ सड़क पर सरपट दौड़ती हुई आईं और फिर एकाएक ही उन सबकी रफ्तार आश्चर्यजनक रूप से धीमी हो गई। वो लगभग चार गाड़ियॉ थीं। जिनमें से एक टाटा सफारी थी बाकी कि तीनों बुलैरो थीं।

धीमी रफ्तार से चलती हुई वो चारों ही गाड़ियॉ एक के बाद एक आगे के मोड़ पर दाहिने साइड मुड़ गईं। कुछ ही देर में वो चारो एक ऊॅचे मकान के सामने आकर रुकीं। गाड़ियों के रुकते ही चारो गाड़ियों के दरवाजे एक साथ मगर आहिस्ता से खुले। सभी गाड़ियों के खुल चुके दरवाजों में से एक के बाद एक आदमी बाहर निकले। सभी आदमियों के हाथ में पिस्तौल स्पष्ट नज़र आ रही थी। टाटा सफारी से दो आदमी बाहर निकले थे। उनमें से एक आदमी की कद काठी से प्रतीत होता था कि वह कोई युवक ही था किन्तु दूसरा आदमी कुछ वयस्क नज़र आ रहा था।

तीनो बुलैरो गाड़ियों से निकले हुए पिस्तौल धारी आदमी पलक झपकते ही उस ऊॅचे मकान के सामने की दीवार तथा मुख्य दरवाजे के इतर बितर मुस्तैदी से तैनात हो गए। उनकी मुस्तैदी देख कर ऐसा लग रहा था जैसे वो किसी महत्वपूर्ण मिशन पर आए हुए हैं। जबकि टाटा सफारी से निकले हुए वो दोनो ही आदमी आराम से किन्तु बेआवाज़ चलते हुए मुख्य दरवाज़े के क़रीब आ कर खड़े हो गए। दरवाजे के पास खड़े हो कर वो दोनो ही बाएॅ साइड देखने लगे।

बाईं तरफ एक आदमी बड़ी दक्षता से रस्सी को ऊपर की बालकनी की रेलिंग में फॅसा कर ऊपर की तरफ चढ़ता चला जा रहा था। सबकुछ मानो पहले से ही प्लानिंग की गई थी कि यहॉ पहुॅच कर कौन कब क्या करेगा। ख़ैर, कुछ ही देर में वो आदमी रस्सी के द्वारा ऊपर बालकनी में पहुॅच गया। ऊपर बालकनी से चलता हुआ वो दाईं तरफ की खिड़की के पास पहुॅचा। खिड़की के पास पहुॅच कर उसने बड़े एहतियात से खिड़की के पल्लों को अंदर की तरफ पुश किया। किन्तु खिड़की के पल्ले टस से मस न हुए। ये देख कर उस आदमी ने फौरन ही अपने एक हाथ को अपने काले लबादे में डाला और कोई चीज़ बाहर निकाली।

यकीनन वो चीज़ खिड़की के पल्लों पर लगे शीशों को काटने वाला हीरा था। उस आदमी ने बड़े एहतियात से तथा बड़ी सफाई से उस हीरे के द्वारा पल्ले पर लगे शीशे को काटा और उसका कटा हुआ टुकड़ा सावधानी से निकाल कर बालकनी में ही नीचे एक तरफ रख दिया। उसके बाद उसने कटे हुए पल्ले में हाथ डाल कर खिड़की के पल्लों की कुण्डी को खोल दिया। कुछ ही देर में खिड़की के दोनो ही पल्ले पूरी तरह अंदर की तरफ खुलते चले गए। अंदर की तरफ यूॅ तो अंधेरा ही था किन्तु खिड़की के अंदर की तरफ से लगे पर्दों को हटा कर उस

आदमी ने अंदर किसी भी तरह ही चीज़ की आहट को सुनने के लिए अपने कान खड़े कर दिये थे। कुछ देर तक वह ऐसी ही पोजीशन में रहा फिर वह एकदम से खिड़की पर चढ़ कर अंदर कमरे की तरफ अंदाज़े से अपने पैर आहिस्ता आहिस्ता रखता चला गया।

कमरे में आते ही उसने सबसे पहले अपने लबादे से कोई चीज़ निकाली। कुछ ही पलों में पेंसिल टार्च का मध्यम प्रकाश कमरे के फर्श पर उसके पास ही उत्पन्न होता हुआ दिखा। उस आदमी ने पेंसिल टार्च के फोकस को धीरे धीरे आगे बढ़ाते हुए उस दिशा की तरफ किया जिस तरफ से उसे कुछ देर पहले किसी चीज़ की आवाज़ महसूस हुई थी। पेंसिल टार्च का फोकस बढ़ता हुआ कमरे में एक तरफ रखे शानदार बेड की तरफ पहुँचा। बेड में दोनो किनारों पर दो दो पैर नज़र आए। आदमी ने टार्च के फोकस को थोड़ा ऊपर किया तो पता चला कि बेड पर दो खूबसूरत लड़कियाँ गहरी नींद में सोई हुई हैं।

दो लड़कियों को गहरी नींद में सोते देख वो आदमी पहले तो अजीब तरह से मुस्कुराया फिर एकाएक ही वह अपनी एड़ियों पर घूम गया। घूमने के बाद वह बड़ी सावधानी से कमरे के दरवाजे की तरफ बढ़ता चला गया। दरवाजे के पास पहुँच कर उसने दरवाजे पर लगे हैण्डिल को घुमाया जिससे दरवाजा खुल गया। दरवाजे को हल्का खोल कर उसने पहले बाहर की तरफ हल्का सा सिर निकाल कर इधर उधर देखा, उसके बाद वह दरवाजे को खोल कर बड़े आराम से कमरे से बाहर आ गया।

कमरे के बाहर सफेद ट्यूब लाइट का प्रकाश था। हर चीज़ स्पष्ट देखी जा सकती थी। इस वक्त समूचे मकान में गहन सन्नाटा छाया हुआ था। वो आदमी बड़ी सावधानी से आगे बढ़ता हुआ सीढ़ियों के पास आ कर रुक गया। सीढ़ियों के पास ही एक मोटे से खंभे की आड़ में छिप कर उसने पहले इधर उधर देखा उसके बाद नीचे चारो तरफ बारीकी से देखने लगा। सब कुछ बेहतर समझ कर वह खंभे की ओट से निकल कर सीढ़ियों से नीचे की तरफ बेआवाज़ उतरता चला गया।

सीढ़ियों से नीचे आकर वह दाई तरफ बढ़ा। कुछ ही देर में वह मुख्य दरवाजे के पास पहुँच गया। मुख्य दरवाजा अंदर की तरफ से बंद था। उस आदमी ने बड़ी सावधानी से मुख्य दरवाजे के मोटे से हैण्डिल को घुमा कर दरवाजा खोल दिया। दरवाजा खुलते ही सामने वो दोनो ही आदमी खड़े नज़र आए जो टाटा सफारी से बाहर निकले थे। इतने से काम में ही उस आदमी को लगभग दस से पंद्रह मिनट का समय लग गया था। किन्तु वो सब इस बात से बेफिक्र से नज़र आए।

दरवाजा खुलते ही टाटा सफारी से उतरे हुए वो दोनो आदमी मकान के अंदर की तरफ दाखिल हो गए। उनके साथ ही कुछ और लोग भी अंदर की तरफ दाखिल हुए जबकि कुछ लोग बाहर ही मुस्तैदी से खड़े रहे। मुख्य दरवाजे से अभी वो आठ या दस कदम ही आगे बढ़े होंगे कि तभी किसी चीज़ के गिर कर टूटने की तेज़ आवाज़ हुई। इस आवाज़ ने उन सबकी रूह तक को कॅपकॅपा कर रख दिया। सारी सावधानी सारी सतर्कता धरी की धरी रह गई थी। किन्तु अब क्या हो सकता था?

आवाज़ होने के बाद वो सब काफी देर तक अपनी जगह चुपचाप खड़े रह गए थे। जब उस आवाज़ की वजह से कहीं से कोई भी प्रतिक्रिया न हुई तो ये सब अपनी अपनी जगह से हिले। किन्तु अभी चार कदम ही आगे बढ़े थे कि तभी उन सबके कानों में किसी नारी की आवाज़ पड़ी। जो बाईं तरफ से आती हुई नज़र आ रही थी। आते हुए ही उसने कहा था कि "कौन है वहाँ"?

चालीस के आस पास की ऊम्र की उस मध्यम कदकाठी व शक्लो सूरत की औरत को देखते ही सबको पहले तो मानो साँप सा सूँघ गया किन्तु फिर जैसे अचानक ही बिजली सी कौंधी। पास आ चुकी औरत पर दो पिस्तौल धारी झपट पड़े थे। अचानक हुई इस क्रिया से वो औरत बुरी तरह डर कर अभी भयानक आवाज़ में चीखने ही वाली थी कि तभी एक पिस्तौल वाले के एक हाथ की हँथेली किसी कुकर के ढक्कन की भाँति उसके मुह से चिपक गई।

मुह पर हँथेली रूपी ढक्कन चिपकते ही औरत गूँ-गूँ करती रह गई। वह उन दोनो से छूटने के लिए बुरी तरह छटपटाए जा रही थी। तभी एक तीसरा पिस्तौल वाला आदमी उसके पास सामने से पहुँचा और बेहद धीमें किन्तु खतरनाँक भाव से बोला___"ज्यादा छटपटा मत वरना देख रही है न, इस पिस्तौल की सारी की सारी गोलियाँ तेरे भेजे में उतार दूँगा। पलक झपकते ही तेरी रूह ऊपर बैठे खुदा के दरबार में हाज़िरी बजाती नज़र आएगी।"

उस आदमी के द्वारा कहे गए इन खतरनाक वाक्यों का तुरंत ही उस औरत पर असर हुआ। वो एकदम से बुत सी बन गई। मगर मुसीबत अभी टली न थी क्योंकि इधर जैसे ही औरत ने छटपटाना बंद किया वैसे ही उधर इस बार एक मर्दाना आवाज़ उभरी। ये आवाज़ उसी तरफ से आई थी जिस तरफ से ये औरत आई थी। मर्दाना आवाज़ में कहा गया वाक्य ये था कि___"का हुआ रे केशरमाँ? ई बखत ससुरी ना खुद सोवत है तू अउर ना हमका सोने देत है।"

इस वाक्य के साथ ही बाकी आदमियों की सिट्टी पिट्टी गुम होती नज़र आई। मगर चूँकि ओखली में तो सिर पड़ ही चुका था इस लिए अब मूसल से क्या डरना वाली बात हो गई थी? कहने का मतलब ये कि जैसे ही वो आदमी ये सब कहते हुए सामने आया वैसे ही उसकी नज़र केशरमाँ को पकड़े दो आदमियों पर पड़ी। वह एकदम से हक्का बक्का रह गया। इससे पहले कि वह अपने होशो हवाश में आ पाता दो आदमियों ने फौरन ही उसे दबोच लिया। उसके बाद वैसा ही हाल उसका भी हुआ जैसे अभी कुछ देर पहले केशरमाँ का हुआ था।

" ओहो तो तू भी यहीं है हरिया। " टाटा सफारी से आए हुए दो आदमियों में से एक ने आगे बढ़ते हुए बड़े ही नाटकीय अंदाज़ में कहा ___" वाह बहुत खूब। वैसे अच्छा सिला दिया नमक हलाली का। हमने तो समझा था कि हमने अपने सभी फार्महाउस पर बड़े ही वफ़ादार कुत्तों को रखा हुआ है मगर , हमें क्या पता था कि हमारे रखे हुए कुत्ते एक दिन हमें ही काटने पर उतारू हो जाएँगे। ख़ैर , कोई बात नहीं। इसकी सज़ा तो तुम सबको मिलेगी ही मगर उससे पहले बाकी लोगों का भी तो अच्छी तरह से प्रबंध कर लिया जाए। "

वो आदमी यकीनन सत्यम सिंह था जबकि दूसरा वो युवक खुद उसका ही बेटा जयदीप था।

हरिया ने सत्यम सिंह की इस बात का कोई जवाब न दिया। बल्कि सत्यम सिंह को इस वक्त यहॉ अपने दलबल के साथ देख कर उसकी सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। उसके चेहरे से ही पता चल रहा था कि वह बुरी तरह डर गया था।

इधर सत्यम सिंह अभी पुनः कुछ कहने ही वाला था कि ऊपर सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए किसी के आने की आहट हुई। सत्यम सिंह तथा उसके आदमियों ने फौरन ही इधर उधर होकर छिपने का उपाय किया। सीढ़ियों से नीचे आने वाली गीता थी। इस वक्त उसके जिस्म पर नाइट सूट था। सीढ़ियों से नीचे उतर कर वह अपनी ही धुन में किचेन की तरफ बढ़ती चली गई। सत्यम सिंह को समझते देर न लगी कि उसे इस वक्त के हालात के बारे में कोई अंदेशा तक नहीं है। अतः सत्यम सिंह ने फौरन ही अपने एक अन्य आदमी को इशारा किया।

सत्यम सिंह का इशारा पाते ही वो आदमी बड़ी सावधानी से तथा बेआवाज़ किचेन की तरफ बढ़ता चला गया। कुछ ही देर में जब वो वापस आया तो वह अपनी दोनों बाहों के सहारे उठाए हुए गीता को आता दिखाई दिया। गीता कोई भी हरकत नहीं कर रही थी। मतलब साफ था कि उस आदमी ने गीता को बड़ी सफाई से बेहोश कर दिया था।

" ज्यादा समय नहीं है हमारे पास। " उस आदमी के आते ही सत्यम सिंह ने धीमे स्वर में कहा __" इस लिए जैसा कहा गया था फौरन ही वैसा करो। उसके बाद जल्दी से यहॉ निकलना भी है। "

सत्यम सिंह की इस बात को सुन कर उसके अन्य आदमी फौरन ही हरकत में आ गए। कुछ लोग नीचे की तरफ के कमरों की तलाशी लेने लगे और बाकी लोग सीढ़ियों के द्वारा ऊपर की तरफ चले गए। लगभग दस मिनट बाद ही मंज़र ये था कि ऊपर से आने वाले आदमियों के कंधों पर एक एक इंसानी जीव बेहोश अवस्था में लदा हुआ नज़र आ रहा था। नीचे के एक कमरे से एक आदमी शंकर के बेहोश जिस्म को कंधे पर लादे आ रहा था।

उन सबके आते ही सत्यम सिंह केशरमाँ व हरिया को पकड़े आदमियों को भी इशारा किया। इशारा मिलते ही उन आदमियों ने पलक झपकते ही खतरनॉक हरकत की। जिसका नतीजा ये हुआ कि कुछ ही पलों में केशरमाँ व हरिया दोनो ही बेहोश हो चुके थे। सबको लेकर बाहर की तरफ बढ़ चले वो लोग।

कुछ ही देर में सभी बेहोश हो चुके लोगों को बाहर खड़ी गाड़ियों पर भूसे की तरह ठूँस दिया गया। उसके बाद सभी आदमी अपनी अपनी गाड़ियों पर बैठ गए। टाटा सफारी के चलते ही बाकी तीनों गाड़ियॉ भी उसके पीछे चल दी। गहरी नींद में सोये शहर वासियों को इस सबका ज़रा भी इल्म न हुआ कि रात के सन्नाटे में यहॉ क्या कुछ हो चुका था? जबकि सत्यम सिंह सबको लेकर अपने नियत स्थान की तरफ ऑधी तूफान की तरह बढ़ा चला जा रहा था।

१०६

सुबह हुई।

उधर मुंबई मे ं ,

उस वक्त सब लोग सुबह का नास्ता कर रहे थे जब एकाएक ही रौनक के मोबाइल फोन की घंटी बजी थी। रौनक अपने कमरे से तैयार होकर ही नास्ता करने आया था। नास्ता करने के बाद उसे कंपनी चले जाना था। डायनिंग हाल में कुर्सी पर बैठे रौनक का मोबाइल उसकी पैन्ट की जेब में बज रहा था। चारो तरफ कुर्सियों पर बैठे बाकी सबका ध्यान भी उसके मोबाइल की रिंगटोन पर गया। सबका ध्यान एक साथ जाने की विशेष बात ये थी कि रौनक के मोबाइल की रिंग टोन पर " ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे , तोड़ेंगे दम मगर तेरा साथ ना छोंड़ेंगे " बज रही थी।

रौनक पहले तो हड़बड़ाया फिर सबकी तरफ देखते हुए वह कुर्सी से उठा और अपनी बाईं जेब से मोबाइल निकाला। मोबाइल की स्क्रीन पर "विक्रम" लिखा नज़र आ रहा था। यानी कि उसके मोबाइल पर विक्रम की काल आ रही थी। ये देख कर रौनक के चेहरे पर सहसा खुशी की चमक उभर आई। उसने मुस्कुराते हुए तुरंत ही काल को रिसीव किया और फिर जाने क्या सोच कर उसने मोबाइल का स्पीकर ऑन करके बोला__"आख़िर तुझे इतने दिनों बाद ही सही मगर मेरी याद आ ही गई न विक्रम।"

" हमें तो तुम सबकी ही बहुत ज़ोरों से याद आती है बर्खुरदार। " मोबाइल पर उधर से सत्यम सिंह की इस आवाज़ को पहचानने में किसी को ज़रा सी भी देर न हुई। सबके सब इस आवाज़ को सुन कर एकदम हक्के बक्के से रह गए। जबकि उधर से स्पीकर पर पुनः सत्यम सिंह की इस बार ज़रा कठोर आवाज़ उभरी ___" मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि इस वक्त इस नंबर से मेरी आवाज़ सुन कर तुम सबके पैरों तले से ज़मीन गायब हो गई होगी। हर किसी को सॉप सा सूँघ गया होगा। ख़ैर मुझे लगता है कि तुम में से किसी को भी मुझे ये बताने की या फिर समझाने की ज़रूरत नहीं है कि इस वक्त तुम लोगों का वो मसीहा विक्रम तथा उसके साथ साथ और भी बाकी लोग मेरे रहमो करम पर हैं। इस लिए बेहतर होगा कि बग़ैर मेरी किसी चेतावनी के तुम सब वहॉ से फौरन मेरे पास या यूँ कहो कि मेरे सामने आकर घुटनों के बल मेरे पैरों पर झुक जाओ। "

स्पीकर से उभर रहे सत्यम सिंह के ये वाक्य डायनिंग टेबल पर मौजूद लगभग सभी के मनो मस्तिष्क में ऐसा धमाका कर रहे थे जिसकी भीषण गूँज से सभी के कानों के पर्दे तक झनझना रहे थे। और फिर ऐसा लगा जैसे एक ही पल में सब कुछ खत्म हो गया हो। चारो तरफ कुर्सियों पर बैठे सबके सब मानो किसी ऋषि के द्वारा दिए गए भयंकर श्राप की वजह से अचानक ही पत्थर की शिला में तब्दील होते चले गए हों। एक ही पल में वक्त मानो ठहर सा गया था। जो जिस हालत में बैठा था वो वैसी ही हालत में स्टेच्यू में तब्दील हो गया था।

सबकी चेतना तब जागृत हुई जब पुनः स्पीकर से सत्यम सिंह की आवाज़ के साथ साथ ज़ोरों का अट्ठहास गूँजा था__"देखा, मैने कहा था न कि तुम सबको सॉप सा सूँघ जाएगा। मगर सॉप सूँघ जाने से कुछ नहीं होगा मेरे प्यारो बल्कि जो कुछ भी होगा मेरे पास आने के बाद ही होगा। इस लिए फौरन वहॉ से चले आओ। वरना तुम लोग सोच भी नहीं सकते कि यहॉ पर मैं तुम्हारे उस मसीहा के साथ साथ बाकी सबका भी क्या हस्र कर सकता हूँ?"

अभी स्पीकर पर सत्यम सिंह का ये वाक्य पूरा ही हुआ था कि सहसा डायनिंग हाल में एक भयंकर चीख़ गूँज उठी, साथ ही फर्श पर किसी चीज़ के गिरने की ज़ोरदार आवाज़ हुई। इस चीख़ व आवाज़ को सुन कर सबके सब बुरी तरह उछल पड़े। जैसे ही सबने चीख़ की दिशा में देखा तो सबके होश उड़ गए। दरअसल ये चीख रेणुका के हलक से खारिज़ हुई थी। वो अपने हाथ में बर्तन पर कुछ लिए हुए किचेन से आ रही थी और डायनिंग हाल में आते ही उसने स्पीकर पर उभर रही सत्यम सिंह की उस आवाज़ के साथ साथ उसके संपूर्ण वाक्य को सुन लिया था। उसके बाद ही उसके हलक से ये भयंकर चीख़ निकली थी।

रौनक के हाथ से मोबाइल छूटते छूटते बचा। उधर रेणुका की चीख़ सुन किचेन से रुक्मिणी व अपर्णा भी भागती हुई डायनिंग हाल की तरफ आ गई थीं। रेणुका को डायनिंग हाल के फर्श पर अजीब हालत में लुढ़की पड़ी देख कर भौचक्की सी रह गई वो दोनो। इधर डायनिंग टेबर के चारो तरफ रखी कुर्सियों पर बैठे बाकी सब लोग भी अपनी अपनी जगहों से उठ कर रेणुका की तरफ दौड़ पड़े थे। देखते ही देखते डायनिंग हाल में रोना धोना शुरू हो गया। यहॉ का रोना धोना चालू मोबाइल के द्वारा सत्यम सिंह भी सुन रहा था और ज़ोरों से हॅसे जा रहा था।

" हाहाहाहाहा ... यही। " उधर से सत्यम सिंह की आवाज़ पुनः उभरी ___" अब यही हाल होगा तुम सबका। मगर जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हूँ इस सबसे कुछ नहीं होगा बल्कि यहॉ आने पर ही होगा। इस लिए अब मैं आख़िरी बार कह रहा हूँ कि तुम सब वहॉ से फौरन ही मेरे सामने हाज़िर हो जाओ। कल दोपहर तक तुम सब मेरी ऑखों के सामने होने चाहिए। दोपहर तक अगर तुम सब नहीं आए तो समझ लेना कि इसका परिणाम कितना घातक हो सकता है। "

इन वाक्यों के साथ ही सत्यम सिंह कहकहे लगा कर हॅसा और फिर काल कट हो गई। किन्तु उसके इन वाक्यों को सुनने की हालत में यहॉ था ही कौन? यहॉ तो बस रोना धोना तथा चीख़ पुकार ही मचा हुआ था। बड़ी मुश्किल से एक दूसरे को संभाला सबने।

उधर होश में आते ही रेणुका दहाड़ें मार मार रोने लगी और चीख़ चीख़ कहने लगी___"मैने कहा था न कि हत्यारे ने मेरे बेटे को मार दिया है। हे भगवान! अब अगर मेरा बेटा ही नहीं तो मैं भला जी कर क्या करूगी? मुझे भी मौत दे दे भगवान। मैं अपने बेटे के बग़ैर एक पल भी जीवित नहीं रहना चाहती।"

" शान्त हो जाइये भाभी। " सुंदर सिंह सिसकते हुए बोल उठा __" हमारे विक्रम को कुछ नहीं होगा। वो तो बस गीदड़ भभकियॉ ही दे रहा था। जबकि मैं जानता हूँ कि वो मेरे भतीजे

का बाल भी बॉका नहीं कर सकता। मेरा भतीजा शेर है शेर .... ये साले सब गीदड़ हैं भाभी। भगवान के लिए भरोसा कीजिए और शान्त हो जाइये। सब कुछ ठीक हो जाएगा। "

" कुछ भी ठीक नहीं होगा सुंदर। " रेणुका बुरी तरह बिलखते हुए बोली __" वो हत्यारा मेरे बेटे को गोलियों से छलनी छलनी कर देगा। वो मेरे बेटे के खून प्यासा है। मुझे मेरे बेटे के पास पहुँचा दो सुंदर मैं तुम्हारे पॉव पड़ती हूँ। "

रेणुका पागल सी हो गई थी। सचमुच ही वो सुंदर के पैरों पर गिर पड़ी। सुंदर का कलेजा ये देख कर हाहाकार कर उठा। बुरी तरह तड़प उठा वह। तेज़ी से वह पीछे की तरफ हटा और फिर तुरंत ही रेणुका को दोनो कंधों से पकड़ कर ऊपर किया।

" क्यों मुझे पाप के सागर में डुबा रही हैं भाभी ?" सुंदर सिंह रो पड़ा ___" आप जानती हैं कि मैंने हमेशा आपको अपनी मॉ की तरह समझा है। मेरे पैरों में गिर कर मुझे ऐसे गर्त में मत डुबाइये कि जहॉ से मैं फिर कभी निकल ही न पाऊँ। "

" मुझे मेरे बेटे के पास पहुँचा दो कोई। " रेणुका पागलों की तरह सबकी तरफ याचना भरी दृष्टि से देखते हुए बोले जा रही थी __" मेरा बेटा बहुत कष्ट में है। वो सब मिलके उसे मार देंगे। मुझे अभी के अभी मेरे बेटे के पास जाना है और अगर तुम लोग मुझे नहीं पहुँचाओगे तो मैं खुद ही चली जाऊँगी। मुझे यहॉ अब नहीं रहना। मेरे बेटे को मार देंगे वो लोग। "

इतना सब कहने के साथ ही रेणुका को चक्कर आ गया और वह रुक्मिणी की गोंद में ही शिथिल पड़ गई। उसकी हालत देख कर हर कोई रो रहा था। निशा की हालत बेहद ख़राब थी। वो अपनी मॉ को अपने बेटे के लिए इस तरह तड़पते देख खुद भी तड़पी जा रही थी। हालत तो सबकी ही ख़राब थी।

" ऐसे कब तक यहॉ इन्हें रोता तड़पता हुआ देखते रहेंगे सुंदर चाचू ?" सहसा रौनक ऊँचे स्वर में मानो चीख सा पड़ा __" मेरा दोस्त वहॉ भयंकर संकट में है। मैं खुद भी अब यहॉ एक पल के लिए भी रुकना नहीं चाहता। उस कसाई का कोई भरोसा नहीं है। वो कुछ भी कर सकता है। "

" सही कहते हो तुम। " सुंदर सिंह ने सहसा अपने ऑसुओं को पोंछते हुए बोला ___" फौरन यहॉ से चलने की तैयारी करो रौनक । रेणुका भाभी को अगर विक्रम के पास न ले जाया गया तो ये यहीं पर अपना सिर पटक कर मर जाएँगी। वैसे भी जिस तरह से उसने चेतावनी देकर हम सबको वहॉ बुलाया है तो हम सबको फौरन जाना ही पड़ेगा। इसके सिवा दूसरा कोई चारा नहीं है। मौजूदा हालात में वो कुछ भी कर सकता है। इंसान से राक्षस बन गया है वो। मगर भवानी मॉ की कसम अगर उसने मेरे भतीजे को ज़रा सी भी चोंट पहुँचाई तो सारी दुनियॉ को आग लगा दूँगा मैं। "

" ठीक है चाचू। " रौनक ने कहा __" आप इन्हें देखिये। मैं तब तक सबकी टिकटों का

इंतजाम करता हूॅ। वैसे मुमकिन तो नहीं मगर देखता हूॅ शायद सबके लिए टिकटें मिल ही जाएॅ। "

" आप एक बार उमाकांत भाई साहब को भी फोन पर इस बारे में सब कुछ बता दीजिए। " रौनक के जाते ही अपर्णा ने सुंदर सिंह की तरफ देखते हुए दुखी भाव से कहा __" आख़िर इस बारे में जानकारी तो उन्हें भी होनी ही चाहिए कि हम अचानक यहॉ से किस वजह से जा रहे हैं ?"

" सही कहा तुमने। " सुंदर सिंह ने कहने के साथ पैन्ट की जेब से अपना मोबाइल निकाला , फिर बोला __" भाई साहब को बताना बेहद ज़रूरी है। वैसे भी वो हमें अपने सगे जैसा ही मानते हैं। उन्हें इस बारे में बताना ही चाहिए। रुको मैं अभी बात करता हूॅ उनसे। "

कहने के साथ ही सुंदर ने उमाकांत पाटिल को फोन लगाया। कुछ देर तक टुक टुक की आवाज़ आती रही, उसके बाद सहसा मोबाइल से आवाज़ उभरी__"आप जिस उपभोक्ता से बात करना चाहते हैं वो इस समय उपलब्ध नहीं है अथवा नेटवर्क क्षेत्र से बाहर हैं।"

ये सुन कर सुंदर सिंह परेशान सा हो गया। उसने पुनः नंबर रिडायल कर फोन लगाया। किन्तु फिर से वही जवाब मिला। सुंदर ने कई बार फोन मिलाया मगर हर बार यही बताया गया कि वो इस समय उपलब्ध नहीं है अथवा नेटवर्क क्षेत्र से बाहर हैं। सुंदर को चिंतित व परेशान देख कर अपर्णा ने उससे पूछा कि क्या हुआ? उसके सवाल पर सुंदर सिंह ने उसे सब कुछ बता दिया। जिसे सुन कर वो भी चिंता में पड़ गई।

ख़ैर, जितना जल्दी हो सकता था उतना जल्दी किया गया। यानी फौरन ही सबको तैयार कर चलने के लिए कहा गया। किन्तु यहॉ किसी को भला क्या तैयार होना था? जो जिन कपड़ों में था वो वैसे ही चलने को तैयार हो गया था। लगभग एक घंटे बाद रौनक सिंह बंगले पर आया। उसने बताया कि रिज़र्व में सिर्फ पॉच ही टिकटों का इंतजाम हो सका है। बाकी की सब वेटिंग या आरएसी की टिकटें मिली हैं। रौनक की बात सुन कर सुंदर ने कहा कोई बात नहीं। जाना तो अनिवार्य ही है फिर चाहे भले ही जनरल में ही क्यों न जाना पड़े। रौनक ने बताया कि ट्रेन शाम की है। उससे पहले एक और थी जो कि सुबह नौ बजे की थी मगर वो जा चुकी है।

रौनक की इस बात ने सबको निराश व मायूस सा कर दिया। सबके सब अतिशीघ्र यहॉ से जाना चाहते थे। मगर जाने का साधन तो अब शाम को ही मिलने वाला था। अतः शाम का इन्तज़ार करना ही सबकी नियति थी। कहते हैं कि जब हम बड़ी शिद्दत से चाहते हैं कि वक्त गुज़र जाए तब ऐसा कदापि नहीं होता। बल्कि एक एक पल मानो सदियों में तब्दील हो जाता है। कुछ ऐसा ही आलम था यहॉ पर।

सारा दिन सबके बीच ऐसा आलम रहा जैसे कोई हमारे बीच का दुनियॉ से ही जा चुका हो। डायनिंग टेबल पर नास्ते के लिए परोसी गई थाली व प्लेट सब वैसी की वैसी ही रखी रह गई थी। किसी ने उस तरफ देखा तक न था और ना ही कोई अपने कमरे की तरफ गया था। बंगले

के नौकर चाकर तक संजीदा थे इस सबसे। सुंदर सिंह सुबह से अब तक हज़ारों बार उमाकांत पाटिल को फोन लगा चुका था किन्तु उसका नंबर अभी भी नेटवर्क क्षेत्र के बाहर ही बता रहा था।

बड़ी मुश्किल से ही सही किन्तु वक्त अतिमंद्र गति से गुज़र ही गया। ट्रेन के निर्धारित समय से आधा घंटा पहले ही सबके सब रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर पहुच गए। रुक्मिणी व अपर्णा रेणुका के साथ ही थी। हर कोई उदास व दुखी था। आधे घंटे बाद जब ट्रेन आई तो सब ट्रेन की तरफ लगभग भागते हुए बढ़े। ट्रेन में चढ़ कर हर कोई सीट पर बैठ चुका था। रिज़र्व सीटों पर औरतों और लड़कियों को बैठा दिया गया था। हलॉकि रिज़र्व में पाच ही सीटें मिली थी। जिनमें रेणुका रुक्मिणी अपर्णा निशा व सृष्टि को बैठा दिया गया था। रणदीप सृष्टि के साथ ही बैठा हुआ था। जबकि रौनक सुंदर व आशा ट्रेन के फर्श पर ही खड़े थे।

रेणुका को रुक्मिणी व अपर्णा ने बड़ी मुश्किल से संभाला हुआ था। सारा दिन रोती रही थी वो जिसकी वजह से उसकी ऑखें लाल सुर्ख पड़ चुकी थीं। चेहरे पर ऐसी वीरानी थी जैसे इस चेहरे ने कभी किसी तरह की खुशियो से भरी बहार को देखा ही न हो। कुछ ही समय बाद ट्रेन अपने गंतब्य स्थान के लिए चल पड़ी। ट्रेन के चल पड़ने से सबके मन में थोड़ी राहत के भाव उभर आए थे। आने वाले समय में किसके साथ क्या क्या होने वाला था इसकी कल्पना से ही सबकी रूहें कॉप जाती थी।

१०७

दूसरे दिन।

उस वक्त दोपहर हो चुकी थी।

सत्यम सिंह के इस विशाल फार्महाउस पर इस वक्त अलग ही नज़ारा था। ये दृष्य तो रेणुका के स्वप्न की तरह ही था किन्तु उससे थोड़ा भिन्न ही था। लंबे चौड़े फार्महाउस के बीचो बीच दो मंजिला बड़ा सा मकान बना हुआ था। चारों तरफ हरी हरी घॉस से भरा हुआ विशाल मैदान तथा हर तरफ लगे हुए तरह तरह के पेड़ पौधे यहॉ की खूबसूरती का एक बड़ा ही सुंदर नज़ारा पेश कर रहे थे। किन्तु इस वक्त इस खूबसूरत नज़ारे में भी जैसे ग्रहण सा लगा हुआ था।

मैदान में लगे पेड़ पौधों के बीच का ही दृष्य था ये। कतार में लगे पेड़ों पर कई सारे लोग रस्सियों से बॅधे जकड़े हुए थे। विक्रम, साक्षी, अमर, गीता, श्रुति, मानुषी, केशरमाँ, हरिया व शंकर आदि सब कतार से ही पेड़ों से रस्सियों द्वारा बॅधे हुए थे। विशाल मैदान में चारो तरफ काली वर्दी में तैनात गुंडे मवालियों जैसी शक्ल के काफी सारे लोग हाथो में बंदूखें लिए खड़े थे। मैदान में एक तरफ कुछ दूरी पर कई सारी गाड़ियॉ भी खड़ी हुई थी।

उन्हीं पेड़ों की गहरी छॉव में सत्यम सिंह एक कुर्सी पर बैठा हाथ में लिए हुए रिवाल्वर को बार बार अपनी उॅगली पर नचा रहा था। उसके पीछे उसका बेटा जयदीप खड़ा था। उसकी कमर में भी एक रिवाल्वर ठुॅसा हुआ था। सत्यम सिंह की पत्नी यानी कि सोनिया भी सत्यम सिंह के पास ही खड़ी हुई थी। वातावरण में चारो तरफ एक अजीब सा भयावह सन्नाटा फैला हुआ था।

" दोपहर तो हो चुकी है ठाकुर साहब। " तभी सहसा एक आदमी सत्यम सिंह के पास आता हुआ बोलाा ___" किन्तु आपके बाकी शिकार तो अभी तक यहॉ नहीं पहुॅचे। कहीं ऐसा तो नहीं कि वो लोग पुलिस के पास चले गए हों सहायता मॉगने के लिए ? अगर ऐसा हुआ तो यकीन मानिए हमारे सारे किये कराए पर पानी फिर जाएगा और हम सब जेल के अंदर चक्की पीसते नज़र आएॅगे। "

" नहीं पाठक। " सत्यम सिंह ने कठोर भाव से कहाा __" वो लोग पुलिस के पास जाने का सोच भी नहीं सकते हैं। वो जानते हैं कि अगर उन लोगों ने इस मामले में पुलिस को कुछ भी बताया तो उसका अंजाम बहुत ही खतरनॉक हो सकता है। इस लिए तुम इस बात से बेफिक्र रहो। वो सब सिर के बल भागते दौड़ते हुए रेलवे स्टेशन से सीधा यहीं आएॅगे। उसके बाद क्या होगा ये समझाने की ज़रूरत नहीं है तुम्हें। "

" हॉ ये तो सही कहा आपने। " निशिकांत पाठक ने कमीनी मुस्कान के साथ कहाा __" आज यहॉ पर एक अनोखा इतिहास लिखा जाएगा। आने वाले बाकी शिकार यहॉ आ तो जाएॅगे मगर तुरंत ही हमारे आदमियों द्वारा धर लिए जाएॅगे और फिर वो सब भी इन लोगों

की तरह पेड़ों पर रस्सियों में बॅधे नज़र आने लगेंगे। "

" मुझसे तो अब बरदाश्त ही नहीं हो रहा डैड। " जयदीप अपने बाप के सामने आते हुए बोलाा ___" एक एक पल कैसे काट रहा हूॅ ये सिर्फ मैं जानता हूॅ। मेरी ऑखों के सामने ही मेरी ये बहने रस्सियों में बॅधी पेड़ों पर चिपकी खड़ी हैं और आप मुझे कुछ करने ही नहीं दे रहे हैं। "

" बस थोड़ी देर और सब्र करो मेरे बेटे। " सत्य म सिंह ने गहरी सास लेते हुए कहाा __" उसके बाद तुम्हें जो करना हो करते रहना। मज़ा तो तभी आएगा न जब बाकी के लोग भी यहॉ पर हर तरह का तमाशा देखने के लिए पहुॅच जाएॅ। "

" ठीक है डैड। " जयदीप ने मन मसोस कर कहाा __" आप कहते हैं तो मैं थोड़ी देर और सब्र कर लेता हूॅ। "

" ये हुई न बात। " सत्यम सिंह मुस्कुरायाा , फिर पाठक की तरफ देखते हुए बोलाा __" अपने आदमियों को पूरी तरह से सतर्क रहने का अल्टीमेटम दे दिया है न पाठक तुमने ?"

" डोन्ट वरी ठाकुर साहब। " निशिकांत पाठक ने कहाा __" हमारे आदमी पूरी तरह से सतर्क हैं। उनकी नज़र से एक परिंदा भी यहॉ से छूट कर नहीं जा सकेगा। "

" वेरी गुड। " सत्यम सिंह ने कहाा ___" उन लोगों के आते ही हमारे आदमी उन सबको धर लेंगे और फिर उन्हें भी इन लोगों की तरह यहॉ के पेड़ों पर रस्सियों से बॉध देंगे। ये फाइनल गेम है पाठक और इस गेम का विनर सिर्फ और सिर्फ हम ही होंगे। असली खिलाड़ी वही है जो सामने वाले को पूरी तरह से पस्त करके उसे नेस्तनाबूत कर दे। "

अभी सत्यम सिंह ने इतना कहा ही था कि पीछे की तरफ से किसी के ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने की आवाज़ें सुनाई देने लगी थीं। चिल्लाने की आवाज़ें सुनते ही सबका ध्यान उस तरफ गया। कई सारे बंदूख धारियों से घिरे हुए सुंदर, रौनक, रेणुका, रुक्मिणी, अपर्णा, आशा, निशा, सृष्टि व रणदीप, इस तरफ ही चले आ रहे थे। ये सब देख कर सत्यम सिंह के साथ साथ पाठक, जयदीप व सोनिया के होंठो पर जानदार मुस्कान उभर आई।

देखते ही देखते कुछ ही देर में सबको अलग अलग पेड़ों पर रस्सियों से बॉध दिया गया। रस्सियों में जकड़ी रेणुका बुरी तरह छटपटाए जा रही थी। उसकी नज़र जैसे ही रस्सियों में बॅधे अपने बेटे विक्रम पर पड़ी वैसे ही वह बुरी तरह तड़प कर रोने लगी थी। विक्रम के साथ साथ साक्षी मानुषी श्रुति अमर आदि को रस्सियों में बॅधे थे, किन्तु इस वक्त ये सब अचेत अवस्था में थे।

" तो आख़िर तुम सब लोग यहॉ पर मरने के लिए आ ही गए। " सत्यम सिंह उन सबके बीच ज़मीन पर चहल क़दमी करते हुए कठोर भाव से बोलाा __" वैसे क्या समझते थे तुम सब

लोग कि मेरे क़हर से बचे रहोगे ? हाहाहाहा ऐसा कभी नहीं हो सकता। जब तक मेरे द्वारा तुम सबको सज़ा नहीं मिल जाती तब तक तुम लोग किसी भी चीज़ से मुक्त नहीं हो सकते थे। "

" मेरे बेटे को कुछ मत करना। " सहसा रेणुका ने रोते हुए कहा ___" मैं आपके सामने हाथ जोड़ती हूँ। भगवान के लिए उसे छोंड़ दो। उसके किये की सज़ा मुझे दे लो मगर मेरे बेटे को कुछ मत करना। "

" हाय ! मेरी बुलबुल ये क्या हालत बना ली है तुमने ?" सत्यम सिंह रेणुका के क़रीब आते हुए चहका __" यकीन मानो तुम्हारी ये हालत देख कर मेरे दिल को बहुत दुख हो रहा है। अरे तुम तो मेरी जाने बहार हो डियर। कभी मेरे दिल के बारे में भी सोचा होता तो समझ में आता तुम्हें कि कोई किस क़दर चाहता है तुम्हें ? मगर तुमने तो कभी मेरे बारे में सोचना तक गवारा न किया। आख़िर क्या कमी थी मुझमें ? तुम्हारे उस अनपढ़ गवार पति से तो लाख गुना अच्छा था मैं। उससे कहीं ज्यादा अच्छी हैंसियत भी है मेरी। वो तो खेतों पर दिन रात काम करने वाला महज एक मजदूर था जबकि मैं तो यहाँ का सम्पन्न राजा था। तुमको दुनियाँ हर ऐशो आराम व सुख देता। मगर तुमको तो उस मजदूर से ही प्रेम था। "

" कोई भी इंसान धन दौलत से राजा नहीं बन जाता नीच इंसान। " रेणुका का लहजा एकाएक कठोर हो उठा __" राजा बनने के लिए दूसरों के प्रति अपनी खुशियों का तथा अपने हर सुखों का त्याग करना पड़ता है। तुझमें तो सिर्फ एक ही खूबी है बेग़ैरत इंसान और वो है हर रिश्तों की मान मर्यादा का हनन करना। तेरे जैसे कुकर्मी के लिए सिर्फ और सिर्फ नफ़रत व घृणा ही हो सकती है। "

" उफ्फ। " सत्यम सिंह ने बुरा सा मुह बनाया __" मेरे प्रति इतनी घटिया बात कैसे सोच सकती हो तुम ? अरे तुम कहती तो मैं तुम्हारे लिए खुद को पूरी तरह बदल भी देता मेरी जान। मैं वो सब बनने को तैयार हो जाता जो तुम मुझे बनने को कहती। मगर तुमने तो मुझसे इस बारे में कभी कुछ कहा ही नहीं। इसमे भला मेरा क्या कसूर है रेणुका ? मैं तो बस अपने दिल के हाथो मजबूर था और वही करता चला गया जो मेरा दिल कहता रहा था। मगर कोई बात नहीं डियर , अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है। तुम कहोगी तो मैं अब भी वैसा ही बन जाऊँगा जैसा तुम कहोगी। ये समझ लो कि तुम्हारी स्वीकृति से सब कुछ एक पल में बदल जाएगा। कहने का मतलब ये कि तुम अगर अब भी मेरी हो जाओ तो ये सब लोग मेरे क़हर से बच जाएँगे। "

" तू अपने और अपने इस सपोले के बारे में सोच हरामज़ादे। " होश में आते ही मेरी आवाज़ वातावरण में गूँज उठी __" तू अगर ये समझता है कि तूने हम सबको रस्सियों में इस तरह बाँध कर बहुत बड़ा तीर मार लिया है तो इस गलत फहमी में मत रह तू। दुनियाँ की कोई भी ताकत तुझको मेरे हाथो मरने से बचा नहीं सकती। "

" तू अब कुछ नहीं कर सकता भतीजे। " सत्यम सिंह ने विक्रम की तरफ देखते हुए कहा

__" तेरा सारा उछलना कूदना समाप्त हो चुका है। अब तक तुझे जो कुछ भी करना था वो सब कर लिया है तूने। अब तो मेरी बारी है और यकीन मान मैं अपनी बारी में अब कोई कसर नहीं छोंड़ूँगा कुछ भी करने में। ख़ैर , अभी तो तुझे ये भी पता नहीं है कि मेरे एक ही झटके में तू और ये सब मेरी कैद में कैसे आ गए ? तुझे पूछना चाहिए भतीजे कि मुझे तेरे ठिकाने का कैसे पता चलाा ? और फिर कैसे तुम सब यहाँ पहुँच गए ?"

सत्यम सिंह की इस बात पर सन्नाटा सा छा गया। ये सच था कि विक्रम एण्ड पार्टी को होश आते ही सबसे पहले उनके मन में यही सवाल उभरा था कि वो अचानक यहाँ कैसे आ पहुँचे हैं? एक के बाद एक सब कोई होश में आ चुका था। खुद को इस तरह रस्सियों में बँधे देख वो सब बुरी तरह चौंके थे तथा बुरी तरह छटपटाने लगे थे। किन्तु जब यहाँ के दृष्य व माहौल पर सबकी नज़र पड़ी तो जैसे सबके पैरों तले से ज़मीन ही गायब हो गई थी। विक्रम और साक्षी ये देख कर आश्चर्यचकित थे कि मुंबई से बाकी सब लोग भी यहाँ आ चुके हैं और वो सब भी उनकी तरह रस्सियों से बँधे हुए हैं।

" हाहाहाहाहा क्यों भतीजे ज़बान को लकवा क्यों मार गया तुम्हारे ?" सत्यम सिंह ठहाका लगा कर हँसाा __" पूछ न कि ये सब कैसे हुआ ? खुद को बड़ा तीसमारखां समझ रहा था न तू ? अब पूछ कि ये सब कैसे हो गयाा ? एक ही झटके में तू भी यहाँ आ गया और मुंबई में रह रहे तेरे ये सब चाहने वाले भी यहाँ आ गए। होश में आने के बाद तुझे सबसे पहले यही पूछना चाहिए था। "

" तुम बताने के लिए इतना ही मरे जा रहे हो तो खुद ही बता दो। " अमर ने कहाा ___" वैसे मुझे पूरा यकीन है कि इसमें भी तेरे जैसे कूढ़मगज का अपना कोई दखल नहीं होगा। "

" इससे कोई फर्क़ नहीं पड़ता बेटा। " सत्यम सिंह ने कहाा __" जंग में सेना का सारा ही योगदान होता है किन्तु जंग की जीत का सारा श्रेय राजाा को ही जाता है। ख़ैर , अगर मेरा भतीजा ये जान जाए कि ये सब कैसे हुआ है तो यकीनन उसे दिल का दौरा पड़ जाएगा। "

" क्या मतलब ??" मैं चकरा सा गया।

" छोटे को रस्सियों से मुक्त कर दो पाठक। " सत्यम सिंह ने निशिकांत पाठक की तरफ देखते हुए कहाा __" मुझे लगता है कि ये खुद ही बताए तो ज्यादा बेहतर होगा। "

सत्यम सिंह की इस बात से हर कोई भौचक्का रह गया। सचमुच सबके पैरों के तले से ज़मीन खिसक गई किन्तु अभी भी बात पूरी तरह से समझ में नहीं आई थी। उधर सत्यम सिंह के कहने पर निशिकांत पाठक ने एक आदमी को इशारा किया तो उसने जा कर सुंदर सिंह को रस्सियों से मुक्त कर दिया। रस्सी से छूटते ही सुंदर सिंह मुस्कुराया और फिर अपने कपड़ों को झाड़ता हुआ सत्यम सिंह के पास आ कर खड़ा हो गया।

सुंदर सिंह के होठों पर इस वक्त बहुत ही रहस्यमय मुस्कान थी। मैं ही क्या हम सब भी उसे इस तरह देख कर चकित थे। जबकि सुंदर सिंह कुछ देर हम सबकी तरफ उसी रहस्यमय

मुस्कान के साथ देखता रहा।

" माफ़ करना विक्रम। " सुंदर सिंह ने मेरी तरफ देखने के बाद मॉ की तरफ देखा __" आप भी मुझे माफ़ कीजिएगा भाभी जी। मगर मैं क्या करता ? इस दुनियॉ में हर कोई सिर्फ और सिर्फ अपने बारे में ही तो सोचता है। "

" सुं... . सुंदर तुम। " रेणुका के होठ बुरी तरह थरथरा कर रह गए , बोली __" तुमने ये सब किया है ??"

" करने वाले तो बड़े भैया ही हैं भाभी। " सुंदर सिंह ने मुस्कुरा कर कहा __" मैने तो सिर्फ इन्हें फोन पर विक्रम के ठिकाने के बारे में बताया था। आप सब समझ सकते हैं कि विक्रम के ठिकाने का पता चल जाने के बाद बड़े भैया के लिए ये सब कर लेना कितना आसान रहा होगा। "

" नहींऽऽऽ। " रेणुका के कुछ बोलने से पहले ही अपर्णा बुरी तरह रोते हुए चीख पड़ी ___" आप ऐसा नहीं कर सकते। आप ऐसे नीच इंसान का साथ कैसे दे सकते हैं जिसके बेटे ने खुद आपकी पत्नी व बेटी के साथ ग़लत करने की कोशिश की थी ? नहीं नहीं , आप इस नीच आदमी की तरह नहीं हो सकते। भगवान के लिए कह दीजिए कि ये सब आपने नहीं किया। "

हम सब सुंदर सिंह की इस बात से हक्के बक्के थे। मुख से कोई बोल ही नहीं फूट रहा था। सुंदर सिंह का इस तरह पलटी मारना हम सबके लिए यकीनन अविश्वसनीय था। किन्तु सच्चाई तो अब सबके सामने ही थी। उसे कैसे कोई नकार सकता था?

" वाह सुंदर। " रेणुका ने हताश भाव से कहा __" क्या खूब बेटे होने का फर्ज़ निभाया है तुमने। कल तक तो बड़ा कह रहे थे कि तुमने हमेशा मुझे अपनी मॉ की तरह समझा है। फिर आज ऐसा क्या हो गया कि एक झटके में तुम फरिश्ता से राक्षस बन गए ? आख़िर मैंने या मेरे बच्चों ने ऐसा क्या बुरा कर दिया था तुम्हारा कि तुमने हम सबको इस आदमी के सामने ला कर इस तरह खड़ा कर दिया ?"

" मैने कहा न भाभी। " सुंदर सिंह ने कहा __" हर कोई सिर्फ अपने बारे में ही सोचता है। बड़े भैया ने अपने बारे में सोचा था इस लिए उन्होंने वो सब किया। किन्तु क्या किसी ने मेरे बारे में सोचा कभी ? भगवान ने एक बेटा दिया वो भी दिमाग़ से डिस्टर्ब। आपके बेटे को अरबपति आदमी ने अपनी संपूर्ण दौलत से नवाज दिया। इस लिए आप भी खुश हो गए। मगर मेरा क्या ??? मेरा तो कहीं कोई महत्व ही न रह गया। दिमाग़ से डिस्टर्ब बेटा है , उसका क्या भविष्य हो सकता है ये बताने की ज़रूरत नहीं है। इस लिए मैने बहुत सोच समझ कर एक सौदा किया। "

" स सौदा ???" रेणुका के होंठ कॉपे। हम सब के चेहरों पर भी गहन उलझन के भाव उभर आए।

" हॉ भाभी। " सुंदर सिंह ने कहा ___" मैने बड़े भैया को फोन लगाया और उनसे कहा कि अगर आपको इस जंग में जीत हासिल करनी है तो आपको मेरा कहना मानना पड़ेगा। वरना आप किसी भी तरह से इस जंग में जीत नहीं पाएँगे। क्योंकि इनकी सबसे बड़ी कमज़ोरी तो विक्रम के पास रखा इनका वो सब ग़ैर कानूनी सामान है। उस सामान के तहत विक्रम इन्हें जब चाहे कानून की गिरफ्त में जीवन भर के लिए डलवा सकता है। ये बात इन्हें भी अच्छी तरह पता है। तब इन्होंने मुझसे कहा कि मैं इस जंग में क्या कर सकता हूँ ? मैने बताया कि इनका सारा ग़ैर कानूनी सामान आज की तारीख़ में मेरे कब्जे में है। इस सामान की कीमत ये होगी कि ये मेरे बेटे का बेहतर से बेहतर इलाज़ करवाएँगे , साथ ही ज़मीन जायदाद में आधा हक़ मेरा होगा। इन्हें मेरा वो सौदा मंजूर था , इस लिए बात को आगे बढ़ा दिया गया। ये उसी का नतीजा है कि आज आप सब यहॉ हैं। कल उमाकांत पाटिल का फोन इसी लिए नहीं लग रहा था क्योंकि मैं ग़लत नंबर पर काल लगा रहा था। मैं नहीं चाहता था कि उस सिचुएशन में उमाकांत वहॉ आ जाए और मेरे काम में कोई अड़चन आ जाए। ये मेरी ही स्कीम थी कि सुबह नास्ते के समय में बड़े भैया विक्रम के फोन से रौनक के फोन पर काल करें ताकि वैसे हालात बन जाएँ। हलॉकि जैसा मैने सोचा था उससे बेहतर ही माहौल बन गया था। क्योंकि रौनक ने अपने मोबाइल का स्पीकर खुद ही ऑन कर दिया था। "

" ओह तो तुमने सिर्फ इस वजह से हम सबके साथ इतना बड़ा धोखा किया है। " रेणुका ने कहा ___" तुम्हें क्या लगता है कि सुंदर जिस आदमी के साथ तुमने हम सबका सौदा किया है वो आदमी तुम्हारे लिए इतना कुछ करेगा ? अरे जिसने ज़मीन जायदाद के लिए अपने मॉ बाप व भाई तक को जान से मार दिया वो तुम्हें भी तो मार सकता है। रही बात तुम्हारे बेटे के इलाज़ की तो वो हम भी करवा देते। मैने तो इस बारे में सोच भी लिया था। याद करो मैने ही इस बात के लिए ज़ोर दिया था कि तुम खुद की समस्या को भी दूर कर लो। मैने उमाकांत भाई साहब से बात की और फिर तुम्हारा इलाज हुआ। मैं नहीं जातनी कि इस सबके बाद भी तुम्हारे अंदर ये बात कैसे आ गई कि हम सबको एक ही झटके में इस तरह मौत के मुह में डाल दिया जाए ?"

रेणुका की ये बातें सुन कर सुंदर सिंह तुरंत कुछ बोल न सका। कदाचित रेणुका की इस बात ने उसे सोचने पर मजबूर किया कि "एक तो सत्यम सिंह अपने स्वार्थ के लिए किसी भी हद से गुज़र सकता है दूसरी ये कि वो खुद उसके बेटे के बेहतर इलाज़ के बारे में सोचे बैठी थी"। इधर सुंदर सिंह को एकदम से चुप हो जाते देख सत्यम सिंह मन ही मन बुरी तरह चौंका।

" ये औरत तुझे बरगलाने की कोशिश कर रही है छोटे। " सत्यम सिंह ने तपाक से कहा __" ये ऐसा कुछ भी नहीं कर सकती जिसकी इस वक्त ये बातें गढ़ रही है। तुम्हारे बेटे का बेहतर इलाज़ मैं करवाऊँगा। बल्कि अगर ये कहूँ तो ज्यादा उचित होगा कि मैंने तो इस बारे में शुरूआत भी कर दी है। तुम अपने बच्चे के लिए बिलकुल भी फिक्र मत करो छोटे। उसका इलाज़ मैं खुद विदेश में करवाऊँगा। "

" तुम अपनी मर्ज़ी से कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र हो सुंदर। " रेणुका ने कहा __" ईश्वर जानता है कि मैने या मेरे मरहूम पति ने कभी किसी का बुरा नहीं चाहा था। हॅसते खेलते घर में

आग लगाने वाला तो सिर्फ यही एक शख्स था। इतना तो अब तुम भी समझ ही गए हो कि इसने अपनी खुशी के लिए तथा अपने स्वार्थ के लिए हम सबके साथ क्या कुछ नहीं किया है। ज़मीन जायदाद और हवेली को हड़पने के चक्कर में इसने अपने ही भाई को ज़हरीले सर्प से डसवा कर मार डाला। उसके बाद अपनी करतूत को छुपाने के लिए इसने मॉ बाबू जी का एक्सीडेन्ट करवाया। आज जब ईश्वर ने इंसाफ किया तो तिलमिला उठा ये। मैं हैरान हूॅ कि तुम सब कुछ जानते बूझते हुए भी इसका साथ देने के लिए अथवा इससे इस तरह का सौदा कैसे कर बैठे ? हमें इस बात का दुख नहीं है कि तुमने हम सबको धोखा दिया और फिर यहॉ ले आए। क्योंकि जीवन में इतना कुछ पा लिया है और सहन कर लिया है कि अब किसी बात से कोई फर्क़ ही नहीं पड़ता। किन्तु हॉ इस सबके बाद भी तुम्हारे प्रति यही दिल करता है कि तुम ऐसी मुसीबत में न फॅस जाओ जिसके तहत एक बार फिर से ये कहानी दोहरा दी जाए। "

" मॉ की बात सही है चाचा जी। " सहसा मैने भी इस बीच हस्ताक्षेप किया ___" दूसरी बात , आपको क्या लगता है कि मैं ये सब अपने हक़ को पाने के लिए कर रहा हूॅ ?? नहीं चाचू , आप तो देख ही चुके हैं कि आज के समय में मैं अगर चाहूॅ तो इस पूरे गॉव को एक पल में खरीद लूॅ। बात ज़मीन जायदाद या किसी प्रापर्टी की नहीं है बल्कि बात है अपने साथ हुए अन्याय की और अत्याचार की। सवाल उठता है कि आख़िर इन्हें किस चीज़ की कमी थी ? दादा जी की ज़मीन जायदाद में तो उनके सभी बेटों का बराबर ही हक़ था। ज़मीनों में रात दिन खून पसीना बहा कर मेरे पिता जी ने एक मामूली से घर को इतनी बड़ी हवेली में तब्दील कर दिया। घर में हर सुख सुविधाएॅ हो गईं , यहॉ तक कि मेरे ही पिता जी के खून पसीने की कमाई से इनके खुद के कारोबार की बुनियाद भी रखी गई। बदले में इन्होंने कभी कुछ दिया नहीं था और ना ही किसी ने इनसे कुछ पाने की आशा की थी कभी। अब सवाल ये उठता है कि ऐसी क्या वजह थी कि इन्होंने एक हॅसते खेलते परिवार को ख़ाक में मिला दिला ? अगर इन्हें ज़मीन जायदाद की इतनी ही भूॅख थी तो खुल के कहते। मुझे पूरा यकीन है कि उस समय मेरे पिता जी इनकी भूॅख को शान्त करने की पूरी कोशिश करते। भले ही उन्हें अपने बीवी बच्चों को लेकर घर से निकल जाना पड़ता। "

" देखो तो। " सत्यम सिंह अंदर ही अंदर बुरी तरह भिन्ना गया था , बोला ___" साला आज का छोकरा , कैसी भाषणबाज़ी कर रहा है। इसे तो इतनी भी तमीज़ नहीं है कि जब बड़े आपस में बात कर रहे हों तो बच्चों को बीच में नहीं बोलना चाहिए। "

" और जब बड़े ही पाप करने की हर सीमा लॉघ जाएॅ तो उसका क्या ?" सहसा साक्षी दीदी बोल पड़ीं ___" इस लड़ाई में किसके साथ क्या होगा इस बात का फैंसला तो ऊपर वाला कर ही देगा। किन्तु यहॉ पर मैं भी ये कहना चाहती हूॅ कि दुनियॉ में ऐसा कौन सा बाप है जो अपनी ही बेटियों को अपने नीचे सुलाने का तसव्वुर भी करता हो ? आप कहते हैं कि विक्रम को तमीज़ नहीं है बात करने की। जबकि सच्चाई तो ये है कि तमीज़ , मान मर्यादा , इज्ज़त इन सब चीज़ों का अगर किसी में हद से ज्यादा अभाव है तो वो सिर्फ और सिर्फ आप में है। इस जन्म में तो किसी तरह ये जीवन काटना ही होगा मुझे , क्योंकि मैने अपना ये जीवन अपने सच्चे भाई विक्रम की सुरक्षा में अर्पण कर दिया है। किन्तु मरने के बाद ईश्वर से सिर्फ यही फरियाद करू गी कि किसी ग़रीब बाप की औलाद बना देना मगर आप जैसे किसी पापी की औलाद न बनाना। " कहते कहते साक्षी दीदी की ऑखें छलक पड़ी थीं ,

फिर वो सुंदर सिंह की तरफ देखते हुए बोलीं __" आपसे ये उम्मीद नहीं थी चाचू कि आप अपने बेटे के बेहतर इलाज़ के स्वार्थ में अपने इस नीच व घटिया भाई का साथ देंगे। इससे अच्छा तो यही होता कि आपका बेटा जीवन भर वैसा ही रहा आता। "

" तुम ठीक कहती हो साक्षी। " अपर्णा ने रोते हुए कहा __" मेरा बेटा ऐसे ही अच्छा है। मुझे इसका कोई इलाज विलाज नहीं करवाना। इस नीच आदमी के पैसे का एक आना भी अपने बेटे पर नहीं लगाना चाहती मैं। " कहने के साथ ही अपर्णा ने सुंदर सिंह की तरफ देखा और फिर बोली ___" कितना अभिमान था मुझे कि कम से कम मेरा पति अपने मॅझले भाई की तरह नेक दिल तो है। मगर आज आपने मेरे उस अभिमान को चकनाचूर कर दिया है सुंदर सिंह। किन्तु एक बात कान खोल कर सुन लो , ये मेरा बेटा है। मैं इसे खुद जान से मार देना पसंद करू गी मगर इस आदमी के पाप का पैसा इस पर नहीं लगाऊँगी। और अगर आपने मुझे मजबूर किया तो देख लेना अच्छा नहीं होगा। मैं अपने बच्चों के साथ खुद ज़हर खा कर जान दे दूँगी। "

" नहींऽऽऽ अपर्णा नहीं। " सुंदर सिंह पूरी शक्ति से चीख़ पड़ा , बुरी तरह तड़प कर बोला ___" तुम ऐसा कुछ भी नहीं करोगी। मुझसे ग़लती हो गई अपर्णा , प्लीज मुझे माफ़ कर दो। मेरी मति मारी गई थी जो मैने इस आदमी के साथ ऐसा सौदा कर लिया। " कहने के साथ ही सुंदर सिंह रेणुका की तरफ बढ़ा फिर बोला ___" मुझे माफ़ कर दो भाभी। आपने मेरे लिए इतना कुछ किया और मेरी जानकारी के बिना भी मेरे बेटे के इलाज़ करवाने का सोचा , और मैं मूरख आप ही के साथ इतना बड़ा पाप कर बैठा। हे भगवान ! तू मुझे इस सबके लिए माफ़ न करना। "

सुंदर सिंह को इस तरह पलटी खाते देख सत्यम सिंह भौचक्का सा रह गया। किन्तु फिर जल्द ही सम्हल भी गया वह। कदाचित उसे अंदेशा था कि सुंदर सिंह अपनी बातों से मुकर जाएगा। अत: उसने फौरन ही पाठक की तरफ देखते हुए कहा___"इस नामुराद को फौरन रस्सियों में बॉधो पाठक। मुझे पता था ये अपनी बात पर कायम नहीं रह पाएगा। शायद इसका भी इन लोगों के साथ ही मरना लिखा है तो यही सही।"

सत्यम सिंह की बात सुन कर पाठक फौरन ही हरकत में आया। उसने अपने आदमियों को भी इशारा किया और खुद भी सुंदर सिंह की तरफ लपका। उधर सत्यम सिंह की ये बात सुंदर सिंह के भी कानों में पड़ चुकी थी। जैसे ही पाठक उसके पीछे पहुँचा वैसे ही सुंदर सिंह तेज़ी से पलटा और पलक झपकते ही उसने एक हाथ से पाठक को उसकी गर्दन से पकड़ कर अपनी बाहों में कसा और दूसरे हाथ में लिए रिवाल्वर को उसकी कनपटी पर रख दिया।

सत्यम सिंह ये देख कर हक्का बक्का रह गया। उसे समझ न आया कि सुंदर सिंह के पास रिवाल्वर कहॉ से और कब आ गया? उधर सुंदर सिंह के बंधनों में जकड़ा निशिकांत पाठक उससे छूटने के लिए छटपटाए जा रहा था।

" अपने आदमियों से कह पाठक। " सुंदर सिंह ने खतरनाक भाव से कहा __" कि ये सब

अपने अपने हथियार फेंक दें और फिर इन सब को रस्सियों के बंधन से मुक्त कर दें। वरना तेरा काम तमाम करने में मुझे ज़रा भी समय नहीं लगेगा। "

"फ .. फेंक दो। " मौत के डर से थरथराता हुआ पाठक एकदम से चीखा ___" अपने अपने हथियार फेंक दो और वही करो जो इसने कहा है। "

" कोई भी अपने हथियार नहीं फेंकेगा पाठक। " सत्यम सिंह ने कहा __" और हॉ डरो मत। ये तुम्हें कुछ नहीं करेगा। "

" मैं मरना नहीं चाहता ठाकुर साहब। " पाठक बुरी तरह छटपटाते हुए बोला __" इस आदमी का लहजा बता रहा है कि ये इस वक्त कुछ भी कर सकता है। हॉ ठाकुर साहब अगर मैने अपने आदमियों को हथियार फेंकने के लिए नहीं कहा तो ये मुझे खत्म कर देगा। "

" बड़े भैया। " सुंदर सिंह गुर्राया ___" आजमाने की कोशिश मत करो। समय की नज़ाकत को देख कर काम करो। और हॉ एक बात याद रखो , मुझे मरने का कोई डर नहीं है। अब तो बस हर जगह मुझे मौत ही मौत दिखाई दे रही है। इस लिए अगर भलाई चाहते हो तो वही करो जो मैने कहा है। "

सत्यम सिंह अपने छोटे भाई के गुस्से से भलीभॉति परिचित था। इस लिए उसने उसका कहा मानने में ही अपनी भलाई समझी। वो देख रहा था कि इस वक्त सुंदर सिंह पाठक को अपने आगे किये हुए है और हर तरफ उसकी पैनी नज़र है। छोटी सी एक ग़लती पाठक का भेजा उड़ा सकती थी और पाठक के मर जाने से उसके आदमी उसका कोई आदेश नहीं मानेंगे।

बहुत ही मजबूर व लाचार भाव से सत्यम सिंह ने एक बार सबकी तरफ देखा उसके बाद उसने सभी गनमैनों की तरफ देखते हुए हॉ में अपने सिर को हिलाया। सोनिया व जयदीप ये सब देख कर बुरी तरह आतंकित से नज़र आने लगे थे। ख़ैर सत्यम सिंह के इशारे से सभी गनमैनों ने अपने हथियार फेंक दिये।

" अब इन सबके बंधनों को भी खोलो। " सुंदर सिंह ने गनमैनों को हुक्म सा दिया।

सत्यम सिंह का दिमाग़ बड़ी तेज़ी से दौड़ रहा था। वो जानता था कि ऐसे में वह जीती हुई बाज़ी हार जाएगा। अतः वह कोई न कोई जुगत लगाने में लगा हुआ था। उधर सुंदर सिंह के कहने पर कुछ गनमैन आगे बढ़े और सबके बंधनों को खोलने लगे।

सुंदर सिंह पूरी तरह सतर्क था। वह पाठक की कनपटी पर रिवाल्वर सटाए हर तरफ देख रहा था। किन्तु ज्यादा देर तक उसकी सतर्कता उसके काम न आ सकी। अचानक ही एक तरफ से धॉय की आवाज़ हुई थी और फिर सुंदर सिंह के हलक से दर्द में डूबी चीख़ निकल गई। रिवाल्वर की गोली सीधा उसके कान को छू कर गुज़र गई थी। गर्म गर्म शोला कान की लौ को मानो भीषण तपिश देकर गुज़रा था। जिसका असर ये हुआ कि सुंदर सिंह छिटक कर दूर हट

गया था। रिवाल्वर जाने कब उसके हाथ से निकल गया था। पाठक उसकी गिरफ्त से छूटते ही एक तरफ को सरपट भागा था।

इधर सुंदर सिंह के साथ हुए इस हादसे ने सत्यम सिंह के पलड़े को पुनः मजबूत करने की राह पकड़ ली। सबके बंधनों को छुड़ाने में लगे गनमैन इस हादसे के होते ही फौरन अपनी अपनी गन्स की तरफ लपके। उधर अमर, साक्षी, मैं और रौनक जल्दी जल्दी अपने बंधन खोलते जा रहे थे। दरअसल जो गनमैन हमारे बंधनों को खोल रहे थे वो इस हादसे के होते ही उसे वैसी ही हालत में छोंड़ कर अपने अपने हथियारों की तरफ दौड़ पड़े थे।

उधर सुंदर सिंह जब तक खुद को संभालता सत्यम सिंह उसके पास पहुॅच चुका था। उसने ज़ोर की लात सुंदर सिंह के पेट में मारी। सुंदर सिंह लहराता हुआ दूर जा कर गिरा। सत्यम सिंह इस वक्त हिंसक जानवर की तरह लग रहा था। अफरा तफरी के माहौल को देख कर जयदीप का भी दिमाग़ चल गया। वह फौरन ही इधर उधर देखने लगा। तत्काल ही उसकी नज़र श्रुति पर पड़ी। वह तेज़ी से उसकी तरफ बढ़ा। श्रुति के पास पहुॅच कर उसने बेख़ौफ होकर उसकी दाहिनी कलाई को पकड़ लिया फिर बोला__"आओ मेरी जान। हम भी अपना प्रोग्राम बनाते हैं। सोचा था कि दिल की बात मान कर इस सबसे तौबा कर लूॅगा। मगर कदाचित ये मेरी किस्मत में ही नहीं है।"

" छोंड़ दे मुझे। " श्रुति ने अपनी कलाई को उससे छुड़ाते हुए कहा ___" तेरे जैसा घटियॉ इंसान तो सारे संसार में भी न होगा। अपनी ही बहन के बारे में इतना गंदा सोचने में तुझे ज़रा भी शर्म नहीं आती। "

" यही तो बात है श्रुति। " जयदीप अपने से बड़ी ऊम्र की बहन को पूरी ढिठाई से उसके नाम से संबोधित करते हुए कहा __" जब मुझे पता चला कि मुझे तुमसे प्यार हो गया है तो मैने भी सोचा चलो अच्छा ही हुआ। दुनियॉ की एक हसींन लड़की से अगर मेरी शादी हो जाएगी तो मेरा जीवन धन्य हो जाएगा। मगर जल्द ही समझ में आ गया कि प्यार मोहब्बत साली होती ही उसी से है जो हमें कभी मिलने वाला नहीं होता। मुझे लगा यार इससे अच्छा तो वही था जबकि मैं सिर्फ रासलीला से ही खुश रहता था। "

" मुझे तेरी ये बकवास नहीं सुननी कमीने। " श्रुति ने गुस्से में कहा ___" मैं कहती हूॅ छोंड़ दे मेरा हाथ वरना तेरे लिए अच्छा नहीं होगा। "

" पर अगर तुम चाहो तो मैं अब भी बदल सकता हूॅ। " जयदीप ने उसकी बात पर ध्यान दिये बिना ही बोला __" हॉ श्रुति , तुम मेरी मोहब्बत को स्वीकार कर लो और मुझसे शादी कर लो। हलॉकि मैं जानता हूॅ कि हम दोनो के मॉ बाप इस रिश्ते के लिए एग्री नहीं होंगे। इस लिए हम कहीं दूर चले जाएॅगे। वहीं कहीं एक नया संसार बसाएॅगे। मैने तो सबकुछ सोच भी लिया है श्रुति । तुम किसी भी बात की चिन्ता मत करो। धन दौलत बहुत है , उसी में हम जीवन भर ऐश करेंगे। क्या कहती हो ... आहहहहह। "

अभी जयदीप का वाक्य पूरा ही हुआ था कि तभी उसके गाल पर झन्नाटेदार थप्पड़ पड़ा था।

उसके कान एकदम से झनझना कर रह गए थे। अपने गाल को सहलाता हुआ जयदीप जब सीधा हुआ तो उसकी नज़र विक्रम पर पड़ी। विक्रम को देखते ही उसकी नानी मर गई।

" इससे बेहतर मौका नहीं मिलेगा बेटा। " मैने उसकी ऑखों में झॉकते हुए कहा __" सुना है मुझसे दो दो हाथ करने के लिए बड़ा फुदकता था तू। अब आ गया हूॅ सामने तो हो जाए दो दो हाथ ? क्या कहता है ?"

" सब वक्त वक्त की बातें हैं भाई। " जयदीप ने सहसा फीकी सी मुस्कान के साथ कहा ___" हो सकता है कि मैं पहले भी तुमसे दो दो हाथ करने के काबिल न रहा होऊॅ किन्तु फिर भी दो दो हाथ करने की हिमाकत ज़रूर करता मगर अब वो बात नहीं रह गई। "

" क्यों क्या हुआ ?" मैने मुस्कुरा कर कहा __" शेर का सामना होते ही सारी हेकड़ी निकल गई ?"

" हेकड़ी तो अभी भी है भाई। " जयदीप ने कहा __" मगर जैसा कि मैने कहा न कि अब वो बात नहीं रह गई। अब तो बस बात ये है कि किसी से इश्क़ हुआ और हम खुद ही मर गए। अब अगर तुम एक मरे हुए को मारना चाहते हो तो ठीक है लो हाज़िर हूॅ , जो जी में आए कर लो। वादा करता हूॅ कि उफ्फ तक नहीं करू गा। "

जयदीप की ये बात सुन कर मैं बुरी तरह हैरान रह गया। मुझे समझ न आया कि ये बद्जात बोल क्या रहा है। जबकि मेरी उलझन को देखते हुए श्रुति दीदी ने कहा__"ये कमीना कहता है कि ये मुझसे प्यार करता है और अब शादी भी करना चाहता है।"

" क्याऽऽऽ ?????" श्रुति दीदी की बात सुन कर मैं बुरी तरह उछल पड़ा। आश्चर्य से जयदीप की तरफ देखते हुए बोला __" आख़िर गंदा खून कर भी क्या सकता है ? जिसका बाप हमेशा अपने ही घर की बहू बेटियों पर नीयत ख़राब करता रहा हो उसका बेटा भला कैसे दूध का धुला हुआ हो जाएगा ?"

" इस बारे में बात करने का कोई फायदा नहीं है भाई। " जयदीप ने कहा __" क्योंकि इश्क़ जब किसी के सिर चढ़ जाता है न तो फिर उसे भगवान भी नहीं समझा सकता। अतः तुम इस चक्कर में मत पड़ो। बल्कि उस चक्कर में पड़ो जिसके लिए तुम्हें पड़ना चाहिए। इस वक्त तुम खुद के साथ साथ अपने लोगों की जान की फिक्र करो। एक बात और , मेरी तरफ से बेफिक्र रहना। "

जयदीप ने इतना कहा और फिर बड़े ही करुण भाव से श्रुति की तरफ देखा। उसके बाद वह एक पल के लिए भी उस जगह नहीं रुका। मैं उसकी इस विचित्र सी हरकत से तथा उसकी बातों से बुरी तरह चकित था। तभी वातावरण में गोलियॉ चलने की आवाज़ें आने लगी। मैं एकदम से फिरकिनी की मानिंद घूमा।

अमर, साक्षी दीदी व रौनक के हाथो में गनें थी और वो अधाधुंध गोलियॉ बरसाए जा रहे थे। रौनक का तो निशाना ही नहीं लग रहा था। ये देख कर मैं मुस्कुराया। साले ने जीवन में कभी खिलौने का तमंचा तक न देखा था और आज दोस्ती के लिए गन लिए मौत का ताण्डव कर रहा था। मैने चारो तरफ देखा, मुझे औरतों में कहीं कोई दिखाई न दिया। ये देख कर मैं बुरी तरह चौंक गया। मन में सवाल उभरा कि ये सब कहॉ गईं? कहीं किसी को कुछ हो तो नहीं गया। मैं श्रुति दीदी को छोंड़ कर एक तरफ को भागा।

साक्षी दीदी, अमर व रौनक पेड़ों की ओट में पोजीशन लिए हुए थे। सत्यम सिंह, सोनिया, सुंदर चाचा, व पाठक कहीं दिख नहीं रहे थे। संभव है उन्होंने भी किसी पेड़ की ओट में पोजीशन लिया हुआ था। मैं छिपते छिपाते हुए फार्महाउस की इमारत के पिछले भाग में आ गया। यहॉ आ कर मैने चारों तरफ देखा। कहीं कोई नहीं था। नीचे ज़मीन पर मरे हुए गनमैन अपने ही खून में नहाए पड़े थे।

मॉ लोगों को कहीं न देख कर मैं बहुत ज्यादा चिंतित व परेशान हो गया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि ये सब इतना जल्दी कहॉ चले गए? मैं इमारत के पिछले भाग से निकल कर सामने की तरफ आया ही था कि तभी धॉय की आवाज़ हुई। कहीं से गोली चली थी जो कि मेरे दाहिने बाजू को छू कर निकल गई थी। मैं इस सबसे बेखबर सा हो गया था। मेरे ज़हन में सिर्फ मॉ लोगों का ही ख़याल तारी था।

गोली की आवाज़ से तथा अपनी बाजू में उसकी छुवन से मैं बुरी तरह उछल पड़ा था और इसी उछलाहट में मैं फौरन ही एक पेड़ की ओट में आ गया। ओट से सिर निकाल कर मैंने आस पास का बारीकी से मुआयना किया। तभी मेरे कानों में इमारत के अंदर से कुछ लोगों की आवाज़ सुनाई दी। मैं आवाज़ों को सुनने के लिए ग़ौर से ध्यान लगाया। तभी मेरे कानों में मेरी मॉ की आवाज़ पड़ी। वो कह रही थी___"मुझे बाहर जाने दो। वहॉ मेरा बेटा गोलियों के बीच में खड़ा है और तुम सब कहती हो कि मैं यहीं पर रहूँ। अरे मेरे बेटे को कुछ हो गया तो मेरे ज़िन्दा रहने का क्या मतलब रह जाएगा?"

मैं सब समझ गया। मतलब मॉ लोग सब इमारत के अंदर हैं और शायद सुरक्षित भी हैं। वरना वो ऐसी बात उन लोगों को न कहतीं। ये सोच कर मैं फौरन ही जम्प मार कर दूसरे पेड़ की तरफ भागा। मेरे ऐसा करते ही एकदम से गोलियों की आवाज़ें आने लगीं। किसी तरह बचते बचते मैं अमर के पास पहुँच ही गया। अमर ने मुझे देखा तो इशारे से ही पूछा बाकी सब कैसे हैं? तो मैने बताया सब ठीक हैं।

अभी मैं अमर को इशारे से ये बताया ही था कि तभी श्रुति दीदी की चीख़ गूज उठी। ऐसा लगा जैसे उन्हें कोई मार रहा हो। मैने फौरन ही उस तरफ देखने की कोशिश की। बॉई तरफ सत्यम सिंह श्रुति दीदी को उनके सिर के बालों से पकड़े घसीटते हुए लिए आ रहे थे। उनके एक हाथ में रिवाल्वर भी था। ये देख कर मैं सकते में आ गया।

" अगर इस लड़की को ज़िन्दा देखना चाहते हो तो तुम सब सामने आ जाओ। " सत्यम सिंह

की आवाज़ गूँजी __" और हॉ अपने अपने हथियार फेंक कर ही आना , वरना मैं इस लड़की को गोली मार दूँगा। "

सत्यम सिंह की इस धमकी पर हम में से कोई कुछ न बोला। कुछ पलों तक सत्यम सिंह इधर उधर देखते हुए खड़ा रहा। उसके बाद फिर बोला__"मैं सिर्फ तीन तक गिनूँगा। अगर मेरे तीन गिनने तक तुम लोग मेरे सामने नहीं आए तो समझ लो ये लड़की अपनी जिंदगी से हाथ धो बैठेगी।"

सत्यम सिंह ने गिनना शुरू कर दिया। पेड़ों की ओट में छुपे हम सब को बाहर निकलना अब अनिवार्य था। सत्यम सिंह ने जैसे ही तीन कहा हम सब उसके सामने आ गए। हम लोगों को देख कर सत्यम सिंह मुस्कुराया किन्तु फिर एकाएक ही उसके चेहरे के भाव खतरनॉक रूप से बदले। उसने रिवाल्वर वाला हाथ उठाया और बिना कुछ कहे फायर कर दिया। गोली सीधा साक्षी दीदी के पेट में लगी। फिज़ा में साक्षी दीदी की हृदयविदारक चीख़ गूँज गई।

सत्यम सिंह से अचानक इस कृत्य की कल्पना हम में से किसी ने न की थी। उधर पेट में गोली लगते ही साक्षी दीदी कटे हुए वृक्ष की तरह लहरा कर वहीं ज़मीन पर गिरने लगी। मैं बिजली की सी तेज़ी से उनकी तरफ लपका। साक्षी दीदी को बॉहों में संभाले मैं बुरी तरह रोते हुए चीखने लगा। वो मेरी बॉहों में थीं। उनके चेहरे पर पीड़ा के असहनीय भाव थे किन्तु ऑखें मुझ पर स्थिर थीं।

" दीदी , ये क्या हो गया दीदी ?" मैं उन्हें संभालते हुए वहीं ज़मीन पर उकड़ू सा बैठ गया ___" नहीं नहीं , आपको कुछ नहीं हो सकता। "

" अभी जंग खत्म नहीं हुई पगले। " साक्षी दीदी ने पीड़ित भाव से कहा ___" अभी तो इस धरती पर वो इंसान जीवित है जिसने अपना आख़िरी सबूत ये दे दिया है कि उसके दिल में किसी के लिए भी कोई रहम अथवा प्यार नहीं है। ऐसे इंसान को जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं है। "

" मैं उसे ज़िंदा नहीं छोंड़ूँगा दीदी। " मैने सिसकते हुए कहा __" बस आप को कुछ नहीं होना चाहिए। मैं आपको खोना नहीं चाहता। "

" होनी को कौन टाल सकता है विक्रम ?" दीदी ने सहसा मेरे चेहरे को एक हाथ से सहलाते हुए कहा __" बड़ी आरज़ू थी कि जीवन भर तेरे साथ रहूँगी। तुझे खुद से दूर नहीं जाने दूँगी। मगर देख ले , आज खुद ही तुझसे दूर जा रही हूँ। "

" नहीं नहीं। " मैने उन्हें खुद से छुपका लिया और बुरी तरह रोते हुए बोला __" आप कहीं नहीं जा रही हैं। मैं आपको कहीं जाने भी नहीं दूँगा। मुझे मेरी दीदी सही सलामत चाहिए। मैं आपके बिना जी नहीं पाऊँगा। "

" इतना प्यार मत दिखा विक्रम। " साक्षी दीदी की आवाज़ लड़खड़ा गई ___" वरना मरने के

बाद भी मुझे शान्ति नहीं मिलेगी। ख़ैर , अभी तू जा मेरे भाई। वरना वो राक्षस फिर किसी को गोली मार देगा। देख तुझे मेरी कसम है , तू जा विक्रम। "

दीदी की कसम ने मुझे मजबूर कर दिया। मैं भारी मन से उन्हें वहीं पर छोंड़ कर पलटा। इधर साक्षी के साथ हुए इस हादसे ने अमर रौनक व सुंदर चाचा को भी अचेत सा कर दिया था। वो सब ठगे से ऑखें फाड़े देखे जा रहे थे।

" अपनी ज़िद व अपने अहंकार में किस किस को मारोगे सत्यम ?" सहसा इस बीच सोनिया ने सत्यम सिंह की तरफ देखते हुए बेहद ही करुण भाव से रोते हुए कहा __" उस दिन भी तुमने मानुषी को जान से मार ही दिया था और आज एक और बेटी को जान से मार दिया। आख़िर किस किस को जान से मारोगे तुम ? ये दौलत ये ज़मीन जायदाद किसके भोगने के लिए बनाई है तुमने ? मुझे भी मार दो , अपनी ऑखों के सामने अपनी बेटियों को इस तरह मरते देख कर भला कैसे चैन से जी पाऊँगी मैं ?"

" ये मेरी कोई नहीं लगती सोनिया। " सत्यम सिंह गुर्राया __" अगर लगती तो आज ये अपने बाप के साथ खड़ी होती ना कि अपने बाप के दुश्मनों के साथ। "

" तो क्या ग़लत किया इन्होंने ?" सोनिया ने बिफरे हुए लहजे से कहा __" अरे इन लोगों ने तो वही किया जो हर लड़की को करना चाहिए। अपने इज्ज़त और सम्मान की रक्षा करना हर लड़की या औरत का धर्म है। तुम तो उसके बाप हो न , तुम्हें तो खुद अपने घर की इज्ज़त की हर तरह से रक्षा करना चाहिए थी। मगर तुम तो खुद ही अपनी ही बहू बहन व बेटियों की अस्मत को लूटने वाले बन गए। "

" ये तुम कौन सी भाषा बोल रही हो सोनिया ?" सत्यम सिंह की ऑखें फैली ___" आज तुम्हारे मुख से ऐसी बातें कैसे निकलने लगी ? क्या सब कुछ भूल गई हो तुम ? तुम तो खुद भी उतनी ही गुनहगार हो जितना कि तुम इस वक्त मुझे समझ रही हो। इस लिए ऐसी बात मत करो , क्योंकि ये सब तुम पर शोभा नहीं देती हैं। "

" मैं मानती हूँ कि मैं इस सबमें बराबर की गुनहगार हूँ सत्यम। " सोनिया ने कहा __" मगर ये भी एक सच है कि इस सबके लिए भी सिर्फ तुम ही जिम्मेदार हो। मैं तो तुमसे अंधाधुंध प्यार ही करती थी। किन्तु अपने मतलब के लिए तुमने ही मुझे ऐसे काम को करने के लिए प्रेरित किया था। तुम्हारे प्यार में अच्छा बुरा ऊँच नीच कभी नहीं सोचा मैने। सिर्फ यही सोचा कि मेरे किसी भी काम से सिर्फ तुम खुश रहो। मगर अब ये जो कुछ भी हो रहा है उसने मुझे इस बात का एहसास करा दिया है कि तुमने कभी मुझे प्यार किया ही नहीं था। तुम्हें तो सिर्फ खुद से और अपनी ख़्वाहिशों से ही प्यार था। अगर ऐसा न होता तो आज तुम इस तरह अपनों के दुश्मन न बन गए होते और ना ही इस तरह क्रूरता से अपनी ही बेटियों को जान से मार देने का सोचते। ख़ैर , देर से ही सही मगर मैं ये स्वीकार कर चुकी हूँ कि मैंने तुम्हारे प्यार के चलते सबके साथ ऐसा गुनाह व पाप किया है जो कदाचित माफ़ी के लायक हो ही नहीं सकता है। मुझे भी किसी से माफ़ी की इच्छा नहीं है। इतना कुछ होने के बाद तो वैसे भी अब जीने का

दिल नहीं करता। मेरा वजूद इतना घिनौना हो चुका है कि दुनिया का गिरा से गिरा हुआ इंसान भी कदाचित मेरी तरफ देखना भी पसंद न करे। किन्तु सुना है पश्चाताप करने से और नेक काम करने से मन को शान्ति मिलती है। इसी लिए मैने पश्चाताप के रूप में वो किया जो मुझे बहुत पहले करना चाहिए था। "

" क्या मतलब ???" सत्यम सिंह चौंकाा ___"क .. क्या किया है तुमने ?"

" अब तक तो दिमाग़ पर दिल ही हावी था सत्यम। " सोनियाा ने कहाा __" मगर जब दिल ही टूट कर बिखर गया तो दिमाग़ का ज़ोर पड़ ही गया उस पर। उस शाम जब तुम फोन पर सुंदर से बातें कर रहे थे तब मैने भी ड्राइंग रूम में रखे फोन पर तुम दोनो की बातें सुनी थी। तुम तो जानते हो कि वो दोनो ही फोन एक ही हैं। अगर एक पर किसी का फोन आएगा तो उस दूसरे फोन के माध्यम से भी दूसरा व्यक्ति पहले वाले फोन पर हो रही बातचीत को बड़े आराम से सुन सकता है। ख़ैर तुम दोनो की बातें सुनी मैने और तब मुझे पूरी तरह समझ आ गया कि सारी ज़िंदगी तुम्हारे लिए अपना सब कुछ लुटाने वाली मैं कितनी पापिन थी जो कभी तुम्हारी खुशियों के सिवा किसी और पर होते अत्याचार को न देख सकी थी। तुमने सुंदर को विश्वास दिलाया कि तुम उसके बेटे का बेहतर इलाज़ करवाओगे और ज़मीन जायदाद में आधा हिस्सा भी दोगे। बदले में तुम्हें तुम्हारा वो ग़ैर कानूनी सामान व विक्रम के सभी चाहने वाले अपने पास चाहिए। सुंदर तो अपने बेटे के लिए अपना विवेक खो कर यकीन के साथ तुमसे इतना बड़ा सौदा कर बैठा जबकि मैं जानती थी कि तुम वैसा कभी नहीं करोगे जिस बात के लिए तुमने सुंदर को विश्वास दिलाया था। अपना मतलब निकल जाने के बाद तुम वही करोगे जो सबके साथ करना चाहते हो। मैं हैरान थी कि पढ़ा लिखा सुंदर इतनी बड़ी बेवकूफी व अपनों के साथ सिर्फ अपने बेटे के बारे में सोच कर इतना बड़ा विश्वासघात कैसे कर सकता है ? लेकिन जल्द ही मुझे समझ आया कि भाई किसका है। मेरे दिमाग़ में ये बात भी आई कि संभव है कि सुंदर ने कोई दूर की कौड़ी सोची हुई है। कहने का मतलब ये कि इस जंग में अगर तुम्हारे साथ साथ मैं व हमारा बेटा मारे गए या कानून की चपेट में आ गए तो ये विक्रम को भी किसी तरह अपने रास्ते से हटा देगा। उस सूरत में सारी ज़मीन जायदाद का ये अकेला हक़दार हो जाएगा। ये सब बातें सोच कर मुझे एहसास हुआ कि जिसने इस सारी ज़मीन जायदाद को हीरे की शक्ल दी तथा जिसका कहीं कोई कसूर ही नहीं था उसे उसके भाई ने तो पहले ही मिटा दिया था और अब एक और भाई आ गया उसी इतिहास को दोहराने के लिए।

मुझे पहली बार रेणुकाा के बारे में सोच कर उस पर तरस आया। एकाएक ही मेरा हृदय झनझना उठा। अंदर कहीं से कोई बड़े ज़ोर से चीख कर कहा ' इस बेचारी ने ऐसा कौन सा पाप किया था जिसकी वजह से इसके साथ इतना कुछ हो गयाा ?' इंसान को बदलने के लिए सिर्फ एक ही मामूली सी चीज़ काफी होती है। अगर हम किसी के बारे में एक बार इस तरह से सोच लें तो फिर बहुत मुमकिन है कि फिर हमें उसकी अथवा अपनी वास्तविकता का बोध होने लगता है। वही हुआ मेरे साथ। हृदय परिवर्तन तो अपनी बेटी के साथ हुए हादसे से ही होने लगा था किन्तु उस फोन की वजह से पूरी तरह से ही हो गया। सारी बातों को सोचने के बाद मैने फैंसला कर लिया कि अब वो नहीं होंने दूँगी जिसके लिए तुमने एक हॅसते खेलते परिवार की बलि चढ़ाई थी। हॉ सत्यम , जैसे सुंदर ने अपने स्वार्थ के लिए अपनों के साथ विश्वासघात कर तुमसे वो सौदा किया उसी तरह मैने भी एक फोन किया। "

" क्या मतलब ??" सत्यम सिंह बुरी तरह चौंकाा __" कैसा फोन किया तुमनेे ?"

" मेरे पास विक्रम का नंबर नहीं था। " सोनियाा ने कहाा __" और मेरी बेटी मेरा फोन उठाती ही नहीं थी। तब मैने सीधा पुलिस कमिश्नर को फोन किया। पुलिस कमिश्नर को इस लिए क्योंकि मौजूदा वक्त में जो कुछ भी हुआ उससे ये बात साबित हो चुकी थी कि साक्षीी अपने पुलिस महकमें की सह पर ही वो सब कर रही थी। हलाँकि मैं पूरी तरह श्योर नहीं थी। किन्तु फिर भी मैने एक बार कमिश्नर से बात करने का ही सोचा और फिर उन्हें फोन लगाया। फोन पर मैने कमिश्नर से साफ साफ शब्दों में बता दिया कि सिचुएशन क्या है। उसके बाद मैंने उनसे कहा कि मुझे एक बार विक्रम से बात करना है। उन्होंने मेरी बातों को बारीकी से सोचा समझा और फिर साक्षीी को फोन किया और उससे विक्रम का नंबर लेकर मुझे दिया। "

" उस वक्त मैं और अमर बाहर घूमने गए थे जब मेरे फोन पर बड़ी माँ का फोन आया था। " बड़ी माँ की बात खत्म होते ही मैने तुरंत कहाा __" इन्होंने मुझे फोन पर सारी बातें बता दी। हलाँकि मुझे शुरू शुरू में इनकी बात पर ज़रा भी यकीन न हुआ। क्योंकि मैं सोच ही नहीं सकता था कि सुंदर चाचा हमारे साथ ऐसा कर सकते हैं। तब इन्होंने कहा कि ये अपनी बातों का सबूत तो नहीं दे सकती हैं मगर मैं खुद इस बात की जाँच पड़ताल तो कर ही सकता हूँ। दूसरी बात मुझे भी कहीं न कहीं लग रहा था कि अपनी बेटी के साथ हुए हादसे के चलते बड़ी माँ में कुछ तो परिवर्तन आना ही चाहिए था। ख़ैर , इनकी ख़बर के बाद मैने भी वहाँ पर साक्षीी दीदी आदि को सब कुछ बता दिया और रात में ये सब होने का इंतज़ार करने के लिए कह दिया। वहीं मैने मुंबई में भी रौनक को फोन कर दिया था। उसे मैने समझाया था कि वो इस बारे में किसी से कुछ न कहे किन्तु अगर बड़े पापा का फोन उसके पास आए तो वो फोन का स्पीकर ऑन करके ज़रूर सबको इनकी बात सुनाए। क्योंकि उसके बाद तो उन्हें यहाँ आना ही था। मैं भी अब खुल के इनके सामने आना चाहता था। किन्तु ये सब बहुत ही ज्यादा खतरनाक भी था। क्योंकि इससे किसी को भी कुछ भी हो सकता था। ख़ैर साक्षीी दीदी ने कमिश्नर से बात की और उन्हें सारी बातों से अवगत कराया और पुलिस प्रोटेक्शन की माँग भी की। कमिश्नर ने हमें बेफिक्र रहने को कहा।

कल रात जब आप अपने दलबल के साथ हमारे ठिकाने पर पहुँचे तब हम सब जाग रहे थे। आप ये समझ रहे हैं कि आप बड़ी आसानी से हम सबको बेहोश कर यहाँ ले आए जबकि सच्चाई तो यही है कि आपका काम हमने खुद आसान किया था। वरना आप ही सोचिए कि ऐसे आलम में इतने लापरवाह हम कैसे हो जाएँगे कि कोई आए और हम सबको बड़ी सहजता से बेहोश करके अपने साथ जहाँ चाहे ले जाए। जबकि मैं चाहता तो उसी वक्त आप और आपके सभी आदमी मौत के घाट उतर चुके होते। मगर मैने अपने दोस्त अनुप के मौसा जी को उस रात वहाँ पर सिक्योरिटी रखने से मना कर दिया था। उसके बाद क्या हुआ वो तो आप अच्छी तरह जानते ही हैं। "

" चलो अच्छा हुआ कि तुमने खुद ही ये सब बता दिया। " सत्यम सिंह ने भभकते हुए लहजे से कहने के साथ ही बड़ी माँ की तरफ देखाा __" पर तुमने ये सब करके अच्छा नहीं किया सोनियाा और इसके लिए तुम्हें मौत से कम सज़ा तो हर्गिज़ भी नहीं मिल सकती। "

" कितनी आश्चर्य की बात है न सत्यम। " सोनिया ने फीकी सी मुस्कान के साथ कहा __" इतना कुछ होने के बाद भी तुम्हारा हृदय परिवर्तन नहीं हुआ। तुम्हें ज़रा भी एहसास नहीं हुआ कि ये जो कुछ भी तुमने किया है वो कितना ग़लत था। बल्कि अभी भी तुम वही सब करने पर आमादा हो जिसका नतीजा तुम्हारे लिए किसी भी सूरत में अच्छा नहीं हो सकता। आज तुम्हारी इस हालत को देख कर सचमुच मुझे तरस आ रहा है। आज मैं ये सोचने पर मजबूर हूँ कि पच्चीस साल पहले मैने तुममे ऐसा क्या देखा था कि तुमसे इस क़दर प्यार कर बैठी थी ? तुम किसी के नहीं हो सकते सत्यम , तुम अकेले ही ऐसी मौत मरोगे जिसकी लाश पर कीड़े पड़ेंगे। "

" हरामज़ादी कुतिया। " गुस्से में तिलमिलाए हुए सत्यम सिंह ने बड़ी तेज़ी से अपने रिवाल्वर वाले हाथ को ऊपर हवा में उठाया और फिर __ धॉय।

सोनिया के सबसे क़रीब सुंदर सिंह ही था। माहौल की नज़ाकत का जैसे उसे बखूबी एहसास था तभी तो उन्होंने गोली के चलते ही जम्प लगाई थी। किन्तु गोली की स्पीड ने अपना काम तमाम करने में कोई कसर न छोंड़ी थी। सोनिया को बचाने के चक्कर में गोली सुंदर सिंह के कंधे पर जा लगी थी। फिज़ा में सुंदर सिंह की दर्द से डूबी चीख़ निकल गई थी। सुंदर सिंह सोनिया को लिए ज़मीन पर उलटता चला गया था।

इधर इस नज़ारे को देख कर मैने भी सत्यम सिंह पर जम्प लगाई थी। मगर मेरे जम्प लगाने से पहले ही उसने एक और फायर कर दिया था। जिसका नतीजा ये हुआ कि इस बार गोली सुंदर सिंह के पेट में लगी थी। उस वक्त वो जल्दी से उठने की कोशिश कर रहा था तभी गोली आकर उसके पेट में लग गई थी। एक साथ कई चीखें फिज़ा में गूँज गई थी। इधर तीसरा फायर करने से पहले ही मैं सत्यम सिंह के ऊपर आ गिरा था। इस गुत्थम गुत्था में श्रुति दीदी भी लोट पोट हो गई थीं। सत्यम सिंह की पकड़ से छूटते ही श्रुति दीदी सुंदर सिंह व सोनिया की तरफ चिल्लाते हुए दौड़ पड़ी थी।

इधर मैने सत्यम सिंह के उस हाथ में एक कराट मारी जिसमें वो रिवाल्वर लिये हुए था। कराट लगते ही सत्यम सिंह के हाथ से रिवाल्वर छूट कर गिर गया। मैने उस पर लात घूँसों की बरसात कर दी। सत्यम सिंह हलाल होते बकरे की तरह चिल्लाने लगा। वह खुद भी हाथ पैर चला रहा था किन्तु सब ब्यर्थ। मैं उसके ऊपर से उठा और फिर उसे उठा कर पूरी ताकत से दूर फेंक दिया। हवा में लहराते हुए सत्यम सिंह दूर जा कर गिरा।

जहॉ पर सत्यम सिंह गिरा था वहीं पर एक गन पड़ी थी। जिसे देख कर वह अपना हर दर्द भूल गया और झपट कर उसने उस गन को उठा लिया। तभी फिज़ा में पुलिस सायरन की आवाज़ गूँजने लगी। सत्यम सिंह गन लेकर तुरंत पलटा और मेरी तरफ देखते हुए गन को ऊपर करने लगा। इससे पहले की वह गन का ट्रिगर दबा पाता कहीं से एक साथ दो फायर हुए। एक गोली सीधा सत्यम सिंह के सीने में दिल वाले स्थान पर लगी जबकि दूसरी उसके थोड़ा नीचे। पलक झपकते ही उन दोनो जगहों से खून की धार फूट पड़ी और सत्यम सिंह कटे हुए वृक्ष की भॉति लहरा कर ज़मीन पर गिरा और फिर एकदम से शान्त पड़ गया।

फायर की आवाज़ से मैं बिजली की तरह पलटा था। सत्यम सिंह के दाहिनी तरफ कुछ ही दूरी पर जयदीप रिवाल्वर लिए खड़ा था। उसके चेहरे पर अजीब से भाव थे। मैं उसे चकित भाव से देखे जा रहा था। जबकि वह अपने बाप को मारने के बाद पलटा और मेरी तरफ देखते हुए बोला___"अपने हाथ इस पापी के खून से मत रँगो भाई। इसे इससे बड़ी सज़ा और क्या मिलेगी कि इसने जिसे सबसे ज्यादा प्यार किया उसी ने इसकी सासें छीन ली। नफ़रत के इस पुजारी को मर ही जाना चाहिए था।"

" मगर तूने ..। " मेरा वाक्य अधूरा रह गया।

" कुछ मत कहिए भाई। " जयदीप की आवाज़ लड़खड़ा गई , बोला __" मैं नहीं जानता कि मुझसे ये सब कैसे हो गया। मगर अंदर से कोई कह रहा है कि बहुत अच्छा किया तुमने। मॉ बाप अपने बच्चों को अच्छे संस्कार व स्वावलम्बी बनने की सीख देते हैं मगर मेरे इस बाप ने तो मुझे अपनी ही तरह बनने की सीख दी। ख़ैर छोंड़िये भाई , मुझे भी अब खुशी हो रही है कि मैने आज कोई अच्छा काम किया है। ये नियति मैने खुद चुनी है। अपने बाप के कत्ल के इल्ज़ाम में या तो मुझे फॉसी हो जाएगी या फिर ऊम्र कैद। किसी से बेपनाह इश्क़ भी हुआ मगर सिर्फ मुझे ऊम्र भर तड़पाने के लिए। मैने अपने इस छोटे से जीवन में ही इतने ऊँचे दर्ज़े के पाप किये हैं जिसके लिए ईश्वर मुझे कभी माफ़ नहीं करेगा। "

" ये तू कैसी बकवास कर रहा पगले ?" उसकी बातें सुन मेरा गला रुँध सा गया। जाने क्यों इस वक्त वो मुझे बहुत प्यारा सा लगा जिसके लिए मेरा दिल रोने लग गया था। हलॉकि उसने भी अपने बाप की तरह हमें जलील करने में कोई कसर न छोंड़ी थी।

" जाइये भाई। " तभी जयदीप ने कहा ___" अब तो सब खेल खत्म हो गया है। पुलिस भी आ गई है और अब वो मुझे कानूनन फॉसी के फंदे पर झुलाने के लिए यहॉ से ले जाएगी। सबकी देख भाल करना भाई , और सबको ढेर सारी खुशियॉ देना। एक नया संसार बनाइये और उसमें सबको खुश रखिये। "

अभी जयदीप अपनी इन बातों से मुझे चकित ही किये था कि हर तरफ पुलिस के आदमी फैलते हुए आ गए। मेरी नज़र दूर से ही कमिश्नर पर पड़ी। मैने पलट कर देखा तो जयदीप अपने बाप के मृत शरीर के पास ही अपने हाथ में रिवाल्वर लिए बैठ गया था। मतलब साफ था कि वो पुलिस को दिखाना चाहता था कि उसने खुद ही अपने बाप का खून किया है और अब पुलिस को उसे गिरफ्तार कर लेना चाहिए। बड़ी अजीब बात थी वो चाहता तो खुद को बचा भी सकता था। क्योंकि खून करते हुए पुलिस ने उसे देखा ही नहीं था और हम लोग ये बात पुलिस को बताने के बारे में सोच भी सकते थे या नहीं भी।

कमिश्नर जब जयदीप के पास पहुँचा तो जयदीप उसकी तरफ देख कर बोला__"अच्छा हुआ कि आप आ गए। आज इस पापी को इसके ही पापी बेटे ने मौत के घाट उतार दिया है। लीजिए अब मुझे गिरफ्तार कर लीजिए।"

जयदीप की इस बात पर कमिश्नर बुरी तरह हैरान रह गया। किन्तु अपराधी जब खुद ही अपना

गुनाह कबूल कर रहा था तो भला उन्हें क्या आपत्ति हो सकती थी? कमिश्नर ने अपने साथ आए एक एसआई को इशारा किया। एसआई ने जयदीप के हाथ से रिवाल्वर को रुमाल में लपेट कर लिया और फिर उसके दोनो हाथो में हॅथकड़ी डाल दी।

मैं दौड़ते हुए साक्षी दीदी के पास आया था। साक्षी दीदी को अमर अपनी गोंद में लिए बैठा था। साक्षी दीदी की सासें अभी चल रही थी। रौनक सुंदर चाचा के पास चला गया था। जहॉ पर सोनिया सुंदर की हालत को देख कर रो रही थी। सुंदर चाचा की हालत भी काफी ख़राब थी। उनका पूरा जिस्म उनके खून से नहाया हुआ था। सोनिया बार बार एक ही बात कह रही थी कि मुझे मर जाने दिया होता। मुझ पापिन को क्यों बचाया तुमने?

पुलिस सायरन की आवाज़ सुन कर इमारत के अंदर से बाकी सब लोग भी आ गए थे। यहॉ का मंज़र देख कर सबकी चीख़ें निकल गई थी। मॉ ने जब मुझे सही सलामत देखा तो मुझे खुद से छुपका लिया और मेरे चेहरे पर हर जगह चूमने चाटने लगीं। मैने उन्हें खुद से अलग किया और बताया कि साक्षी दीदी व सुंदर चाचा को गोली लगी है। उन्हें जल्द ही हॉस्पिटल ले जाना पड़ेगा। मेरी बात सुन कर सब लोग साक्षी दीदी व सुंदर चाचा के पास आ गए।

साक्षी दीदी व सुंदर चाचा की हालत बहुत ख़राब थी। सब लोग रो रहे थे। मैं और रौनक दौड़ते हुए कुछ ही दूरी पर खड़ी कई सारी गाड़ियों की तरफ गए। उनमें से एक गाड़ी को स्टार्ट कर मैं फौरन ही उसे इस तरफ ले आया। अमर ने साक्षी दीदी को उठा कर जल्दी से टाटा सफारी में बड़े एहतियात से बिठाया। साक्षी दीदी के बैठते ही गीता बुआ भी उनके पास आकर बैठ गईं। अमर भाग कर गया और दूसरी गाड़ी ले आया। उस गाड़ी में सुंदर चाचा को फौरन लेटाया गया। उसमें अपर्णा चाची व रुक्मिणी चाची बैठ गईं। दूसरी अन्य गाड़ियों में बाकी सब लोग भी बैठ गए। इसके बाद हम सब तेज़ी से रामगंज की तरफ बढ़ चले।

ऑधी तूफान बने हम सब आख़िर हॉस्पिटल पहुॅच ही गए। जल्दी जल्दी हमने साक्षी दीदी व सुंदर चाचा को स्ट्रेचर पर लिटा कर हॉस्पिटल के अंदर ले गए। कुछ ही देर में उन दोनो को ओटी के अंदर ले जाया गया। उन्हें अंदर ले जाते ही ओटी का दरवाज़ा बंद हो गया और हम सब बाहर ही चिंता व परेशानी की हालत में खड़े रह गए।

हम सब बेहद दुखी थे और भगवान से उन दोनो को सलामत रखने की मिन्नतें कर रहे थे। अपर्णा चाची के ऑसू बंद ही नहीं हो रहे थे। कमिश्नर साहब ने पहले ही फोन करके यहॉ पर डाक्टरों को बता दिया था ताकि यहॉ पर किसी प्रकार की परेशानी न हो सके और जल्द ही उनका इलाज़ शुरू हो जाए।

बड़ी मॉ हम सब से अलग एक तरफ गुमसुम सी खड़ी थीं। उनकी मॉग का सिंदूर मिटा हुआ था तथा हाथ की चूड़ियॉ भी कुछ टूटी हुई थीं। मतलब साफ था कि पति की मौत के बाद उन्होंने खुद को विधवा बना लिया था। इस वक्त उनके चेहरे पर संसार भर की वीरानी थी। ऑखों में सूनापन था।

अधर्म पर धर्म की तथा बुराई पर अच्छाई की जीत तो हो चुकी थी किन्तु इस जीत में सच्चाई की राह पर चलने वाले दो व्यक्ति जीवन और मृत्यु के बीच लटके हुए थे। मैं साक्षी दीदी के लिए सबसे ज्यादा दुखी था। मेरी ऑखों के सामने रह रह कर उनकी सुंदर छवि चमक उठती थी। उनके साथ बिताए हुए हर लम्हें याद आ रहे थे। साक्षी दीदी ने शुरू से लेकर अब तक मेरा कितना साथ दिया था ये बताने की आवश्यकता नहीं है। अगर मैं ये कहूँ तो ज़रा भी ग़लत न होगा कि इस जीत का सारा श्रेय ही उनको जाता है। उन्होंने क़दम क़दम पर मुझे संभाला था और मेरी रक्षा की थी। यूँ तो मैं जीवन भर उनका ऋणी ही बन चुका था किन्तु एक ये भी सच्चाई थी कि मैं उन्हें किसी भी सूरत में खोना नहीं चाहता था। मैं बचपन से ही उन्हें बेहद पसंद करता था और उनके लिए कुछ भी कर गुज़रने की चाहत रखता था। अब तक तो नहीं पर अब लग रहा था कि अगर उन्हें कुछ हो गया तो मैं एक पल भी जी नहीं पाऊँगा।

अमर मेरे पास आया और मुझसे बोला कि मैं खुद को संभालूँ और सबको भी संभालूँ। वो खुद भी बेहद दुखी था। उसने हम सबको अपना ही मान लिया था। उसने मुझे समझाया कि मैं खुद को मजबूत करू वरना सब इस सबसे दुखी होते रहेंगे। अमर की बात सुन कर मैने खुद को संभाला और फिर सबको वहीं एक तरफ लम्बी सी बेंच में बैठ जाने के लिए कहा। मेरे ज़ोर देने पर आख़िर सब लोग बैठ ही गए। मेरी नज़र दूर एक तरफ खड़ी बड़ी मॉ पर पड़ी तो मैं उनके पास चला गया।

बड़ी मॉ कहीं खोई हुई सी खड़ी एकटक शून्य को घूरे जा रही थीं। मैं उनके पास जा कर उनके कंधे पर हाथ रखा तो जैसे उनकी तंद्रा टूटी। उन्होंने मेरी तरफ अजीब भाव से देखा और फिर बिना कुछ बोले फिर से शून्य में देखने लगीं। मैने बड़ी मॉ से भी बैठ जाने के लिए कहा तो वो मेरे साथ ही दूसरी साइड की बेंच की तरफ आईं और बैठ गईं। उनके पास ही मैं भी बैठ गया। हलॉकि मेरे उनके पास बैठ जाने से सामने ही बेंच पर बैठे सब लोग मुझे घूर कर देखने लगे थे मगर मैने उनके घूरने की कोई परवाह नहीं की।

मेरे मन में बड़ी मॉ की उस वक्त की बातें गूँज रही थी जब उन्होंने मुझे फोन किया था। इतना तो मुझे पता था कि हर इंसान को एक दिन अपने गुनाहों का एहसास होता है। वक्त और हालात इंसान को ऐसी जगह ला कर खड़ा कर देते हैं जब उसे शिद्दत से अपने गुनाहों का एहसास होने लगता है। वही हाल बड़ी मॉ का भी था। एक ये भी सच्चाई थी कि उन्होंने अपने पति से ऑख बंद करके तथा बिना कुछ सोचे समझे बेपनाह प्रेम किया था। जिसका सबूत ये था कि उन्होंने सत्यम सिंह के हर गुनाह में उसका खुशी खुशी साथ दिया था। उन्होंने कभी भी अपने पति से ये नहीं कहा कि वो ग़लत कर रहा है और वो ग़लत में उसका साथ नहीं देंगी। इंसान जब बार बार गुनाह करने लगता है तब उसका ज़मीर ख़ामोश होकर बैठ जाता है। या फिर इंसान ज़बरदस्ती अपने ज़मीर का करुण क्रंदन दबाता चला जाता है। मगर अंत तो हर चीज़ का एक दिन होता ही है। फिर चाहे वो जिस रूप में हो। ख़ैर, मेरे मन में बड़ी मॉ से फोन पर हुई वो सब बातें चल रही थीं।

बड़ी मॉ से फोन पर पहले तो मैने कठोरतापूर्ण ही बातें की थी किन्तु जब उन्होंने सुंदर चाचा की असलियत और अपने पति से उनके द्वारा फोन पर हुई बातों के बारे में बताया तो पहले तो

मैं हॅसा था, क्योंकि मुझे लगा कि बड़ी मॉ मुझसे कोई चाल चलने का सोच रही हैं जिसमें वो सुंदर चाचा के खिलाफ ऐसी बातें बता कर मेरे मन में चाचा के प्रति शंका या दरार जैसा माहौल बनाना चाहती हैं। मगर उनकी बातों ने जल्द ही मुझे ये सोचने पर मजबूर कर दिया था कि भला उन्हें ऐसा करने की क्या ज़रूरत थी? दूसरी बात उन्होंने मुझसे कुछ ऐसी बातें भी कीं जिन बातों की मैं उनसे उम्मींद ही नहीं कर सकता था।

काफी समय तक हम सब ऐसे ही बैठे रहे थे। हम सबकी सासें हमारे हलक में अटकी हुई थी। ना चाहते हुए भी मन में ऐसे भी ख़याल आ जाते जिनके तहत हमारे जिस्म का रोयॉ रोयॉ तक कॉप जाता था। आख़िर लंबे इन्तज़ार के बाद ओटी के ऊपर लगा लाल बल्ब बुझा और फिर दरवाजा खुला। दरवाज़ा खुलते ही हम सब एक साथ ही खड़े होकर डाक्टर के पास तेज़ी से पहुॅचे।

" डाक्टर साहब। " सबसे पहले रेणुकाा ने ही ब्याकुल भाव से पूछाा __" मेरा बेटा और बेटी कैसी है अब ? वो दोनो ठीक तो हैं न ? जल्दी बताइये डाक्टर साहब। वो दोनो ठीक तो है न ?"

रेणुका मॉ की ब्याकुलता को देख कर डाक्टर तुरंत कुछ न बोला। ये देख कर हम सब पलक झपकते ही घबरा गए। एक साथ हम सब डाक्टर पर चढ़ दौड़े। अपर्णा चाची बुरी तरह रोने लगी थी। उन्हें इस तरह रोते देख सृष्टि भी रोने लगी थी। हम सब को इस तरह ब्यथित देख डाक्टर के चेहरे के भाव बदले।

" आप सबको इस तरह। " डाक्टर ने कहाा __" दुखी होने की ज़रूरत नहीं है। वो दोनो ही अब खतरे से बाहर हैं। हमने उनके शरीर से बुलेट निकाल दी है। फिलहाल वो खतरे से बाहर हैं किन्तु खून ज्यादा बह जाने से उनकी हालत अभी बेहतर नहीं है। ख़ैर अभी तो वो दोनो बेहोश हैं। इस लिए आप लोग उनसे बात नहीं कर सकते हैं। "

डाक्टर की बात सुन कर हम सबके निस्तेज पड़ चुके चेहरों पर जैसे नई ताज़गी सी आ गई। हम सब एक दूसरे की तरफ देख देख कर एक दूसरे से कहने लगे कि सब ठीक है। डाक्टर कुछ और भी बातें बता कर चला गया। उसके जाते ही हम सबने ईश्वर का लाख लाख धन्यवाद किया। रेणुका मॉ को अचानक ही जाने क्या हुआ कि वो पलटी और गैलरी में एक तरफ को लगभग दौड़ते हुई गईं। हम सब उन्हें इस तरह जाते देख चौंके तथा साथ ही हम सब भी उनके पीछे की तरफ तेज़ी से बढ़ चले।

कुछ ही देर में हम सब जिस जगह उनका पीछा करते हुए पहुॅचे उस जगह का दृष्य देख कर हम सबकी ऑखें नम हो गईं। दरअसल वो गणेश जी का एक छोटा सा मंदिर था। जिसके सामने अपने दोनो हाथ जोड़े बैठी मॉ नज़र आईं हमें। हम सब भी उनके पास जाकर गणेश जी के सामने अपने अपने हाथ जोड़ कर खड़े हो गए। गणेश जी की मूर्ति के सामने खड़े हो कर हम सबने उनकी स्तुति की और उनकी इस कृपा के लिए हम सबने उन्हें सच्चे दिल से धन्यवाद दिया।

जैसा कि डाक्टर ने बताया था कि अभी साक्षी दीदी व सुंदर चाचा बेहोश हैं। अतः हम सब उनके होश में आने की प्रतीक्षा करने लगे थे। ख़ैर दिन ढल चुका था। मुझे पता था कि इस सबके चक्कर में किसी ने सुबह से कुछ खाया भी नहीं था। अत: मैंने अमर व रौनक को साथ लिया और पास के ही एक होटेल से सबके लिए खाने पीने का प्रबंध किया। मेरे और अमर के ज़ोर देने पर आख़िर सबको थोड़ा बहुत खाना ही पड़ा। हलाँकि इसके लिए कोई तैयार नहीं था क्योंकि आज हमारे परिवार के एक बड़े सदस्य की मौत हो चुकी थी तथा दूसरा अपने पिता के कत्ल के इल्ज़ाम में गिरफ्तार हो चुका था। निश्चय ही उसे या तो फाँसी की सज़ा होगी या फिर ऊम्र कैद।

वो दोनो बुरे ही सही किन्तु उनसे खून का रिश्ता तो था ही। फार्महाउस पर कदाचित अभी भी सत्यम सिंह का मृत शरीर पड़ा होगा। हम सब तो साक्षी दीदी व सुंदर चाचू को लेकर हॉस्पिटल आ गए थे। उसके बाद वहाँ पर सत्यम सिंह की लाश यूँ ही लावारिश ही पड़ी रह गई होगी। या फिर ऐसा हुआ होगा कि कमिश्नर ने इस पर कोई कानूनी प्रक्रिया की होगी। जिसके तहत वो सत्यम सिंह की लाश का पंचनामा कर उसे पोस्टमार्टम के लिए ले गए होंगे। इस बारे में हमें कोई जानकारी अभी तक मिली नहीं थी, बल्कि ये महज हम सबका ख़याल ही था।

१०८

उस वक्त रात के दस बज रहे थे जब हॉस्पिटल की एक नर्स ने आ कर हमें बताया कि साक्षी दीदी व सुंदर चाचू को होश आ गया है। हम सब नर्स की ये बात सुन कर बेहद खुश हुए और फिर फौरन ही हम सब उस कमरे में पहुँचे जहाँ पर साक्षी दीदी व सुंदर चाचू को शिफ्ट किया गया था। हम सबने उन दोनो को सही सलामत देखा तो जान में जान आई। अपर्णा चाची सुंदर के पास जा कर रोने लगी थी। ये देख कर माँ ने उन्हें समझाया कि अब उसे रोना नहीं चाहिए बल्कि खुश होना चाहिए कि ईश्वर ने सब कुछ ठीक कर दिया है।

मैं साक्षी दीदी के पास ही बैठ गया था और एकटक उनके चेहरे की तरफ देख रहा था। वो खुद भी मुझे देखे जा रही थी। उनकी ऑखों में खुशी के ऑसू थे तथा होंठ कुछ कहने के लिए काँपे जा रहे थे। ये देख कर मैने उन्हें इशारे से ही शान्त रहने को कहा और फिर झुक कर उनके माथे पर चूम लिया। मेरे ऐसा करते ही उनकी ऑखें बंद हो गईं। ऐसे जैसे कि मेरे ऐसा करने से उन्हें कितना सुकून मिला हो। मानुषी, श्रुति दीदी, आशा दीदी, निशा व सृष्टि पास ही चारो तरफ से घेरे खड़ी थीं।

यहाँ पर मुझे एक चीज़ बहुत अजीब लग रही थी और वो था बड़ी माँ का बिहैवियर। वो हम सबसे अलग दूर खड़ी थीं। दूर से ही वो अपनी बेटी साक्षी को देख रही थी। उनकी ऑखों में ऑसू थे। उनसे कोई बात नहीं कर रहा था और ना ही वो किसी से बात करने की कोई कोशिश कर रही थीं। उन्होंने तो जैसे खुद को हम सबसे अलग समझ लिया था।

उस रात हम सब हॉस्पिटल में ही रहे। दूसरे दिन डाक्टर से मिले तो डाक्टर ने कुछ दिन बेड रेस्ट के लिए यहीं रहने का कहा। इस बीच कमिश्नर साहब भी हमसे मिलने आए और सबका हाल अहवाल लिया। साक्षी दीदी से वो बड़े प्यार से मिले तथा उन्हें ये भी कहा कि उन्हें उन पर नाज़ है। कमिश्नर साहब ने बताया कि सत्यम सिंह की डेड बॉडी पोस्टमार्टम के बाद आज दोपहर तक मिल जाएगी। ताकि हम उनका अंतिम संस्कार कर सकें।

सुंदर चाचा के बार बार ज़ोर देने पर माँ इस बात पर राजी हुई कि वो बाकी सबको लेकर गॉव जाएॅ। सुंदर चाचा ने बड़ी माँ से भी आग्रह किया कि वो सबके साथ गॉव जाएॅ। मैने गीता बुआ आदि को रौनक के साथ ही हवेली जाने का कह दिया। जबकि मैं और अमर साक्षी दीदी व सुंदर चाचा के पास ही रुकना चाहते थे।

आख़िर बहुत समझाने बुझाने के बाद सब जाने के लिए राजी हुए। हॉस्पिटल से बाहर आकर मैने सबको गाड़ियों में बैठा दिया। मैने केशव जी को फोन करके बुला लिया था। सारी घटना के बारे में जान कर पहले तो वो हैरान हुए उसके बाद खुश भी हुए। मैने उनके कुछ आदमियों को माँ लोगों के साथ सोनपुर जाने के लिए उनसे कहा। केशव जी मेरी बात तुरंत मान गए और फिर उन्होंने शीघ्र ही अपने आदमियों बुला लिया।

अपर्णा चाची जाने को तैयार ही नहीं हो रही थी। मैने बड़ी मुश्किल से उन्हें समझाया और कहा कि वो किसी बात की फिक्र न करें। ख़ैर उन सबके जाने के बाद मैने कमिश्नर साहब से जयदीप के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि उन्होंने जयदीप से बात की थी कि वो चाहे तो कानून से छूट सकता है। किन्तु जयदीप अपनी बात पर अडिग है। उसका कहना है कि वो इस जीवन से मुक्ति चाहता है। उसमें अब इतनी हिम्मत नहीं है कि वो वापस सबके बीच रह सके। सारी ज़िंदगी वो सबके सामने शर्म से गड़ा रहेगा और चैन से जी नहीं पाएगा। जयदीप के न मानने पर ही कमिश्नर साहब ने केस फाइल किया। अपने बाप की चिता को आग देने के लिए उसे यहॉ लाया जाएगा उसके बाद पुलिस उसे वापस जेल में बंद कर देगी। अदालत का फैसला क्या होगा इसका पता चलते ही उस पर कानूनी कार्यवाही होगी।

कमिश्नर साहब के जाने के बाद मैं और अमर वापस साक्षी दीदी व सुंदर चाचा के पास आ गए। सुंदर चाचा ने मुझसे कहा कि मैं इस सबके बारे में अपनी बड़ी बुआ यानी सीता बुआ को भी बता दूँ और यहॉ बुला लूँ। फोन पर सारी बातें बताना उचित नहीं था। चाचा की बात सुन कर मैने बुआ को फोन लगाया। थोड़ी ही देर में दूसरी तरफ से बुआ की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी। मैने उन्हें अपना परिचय दिया और जल्द से जल्द सोनपुर आने को कहा। मेरे इस तरह बुलाने पर वो चिंतित होकर पूछने लगीं कि बात क्या है? उनके पूछने पर मैने बस यही कहा कि आप बस आ जाइये।

शाम होते होते कमिश्नर साहब की मौजूदगी में जयदीप ने अपने बाप सत्यम सिंह की चिता को अग्नि दे दी। सोनपुर ही नहीं बल्कि आस पास के गॉव में भी ये ख़बर जंगल की आग की तरह फैल गई थी कि ठाकुर देवेंद्र सिंह भाटी का बड़ा बेटा अब इस दुनियॉ में नहीं रहा। शमशान पर लोगों की भारी भीड़ जमा थी। अमर को साक्षी दीदी व सुंदर चाचू के पास छोड़ कर मैं भी गॉव आ गया था।

सीता बुआ आ चुकी थी। यहॉ आ कर जब उन्हें अपने भाई की मौत का पता चला तो वो दहाड़ें मार मार कर रोने लगी थी। किन्तु बड़ी मॉ ने उन्हें संभाल लिया था और कठोर भाव से ये भी कहा कि ऐसे इंसान के मरने का शोक मत करो जिसने अपने जीवन में किसी के साथ कोई अच्छा काम ही न किया हो। बड़ी मॉ की ऐसी बातें सुन कर सीता बुआ हतप्रभ रह गई थीं। उन्हें थोड़ी बहुत पता तो था किन्तु सारी असलियत से वो अंजान थीं।

सारी क्रिया संपन्न होते ही सब अपने अपने घर चले गए। इधर हवेली में हर तरफ एक भयावह सा सन्नाटा फैला हुआ था। हवेली के नौकर चाकर सब संजीदा थे। सीता बुआ के साथ उनके पति भी आए थे। मैने उनसे सब का ख़याल रखने का कहा और जीप लेकर वापस रामगंज आ गया। ऐसे ही एक हप्ता गुज़र गया। मैं और अमर डाक्टर की परमीशन से साक्षी दीदी व सुंदर चाचा को हॉस्पिटल से घर ले आए। दोनो की हालत अभी नाज़ुक ही थी। इस लिए उनकी देख रेख के लिए सब मौजूद थे।

तेरवीं के दिन ब्राम्हणों को भोज कराया गया। सभी नात रिश्तेदार आए हुए थे। सबकी ज़ुबान पर बस एक ही बात थी कि ठाकुर खानदान में ये अचानक क्या हो गया है? हलॉकि इतना तो

सब समझते थे कि ठाकुर खानदान में कुछ सालों से ग्रहण सा लगा हुआ था। दबी ज़मान में तो लोग ये भी कहते थे कि सत्यम सिंह ने घर की खुशियों में खुद आग लगाई थी। ख़ैर, एक दिन कमिश्नर साहब का फोन आया उन्होंने बताया कि अदालत ने जयदीप को ऊम्र कैद की सज़ा सुनाई है। ये जान कर हम सबको बहुत अजीब लगा था। जयदीप ने अपनी मर्ज़ी से अपने इस अंजाम का चुनाव किया था, जबकि वो चाहता तो बड़े आराम से वो कत्ल के इल्ज़ाम से बरी हो जाता। बल्कि अगर ये कहा जाए तो ग़लत न होगा कि उस पर कत्ल जैसा कोई इल्ज़ान लगता ही नहीं। मेरे ज़हन में उससे अंतिम मुलाक़ात की वो सब बातें घूम रहीं थी। मैं समझ सकता था कि वह एकदम से जुनूनी हो चुका था। उसकी सोच ऐसी हो चुकी थी कि उसे कोई समझा नहीं सकता था।

सत्यम सिंह की मौत के बारे में मैने उमाकांत पाटिल को पहले ही सब कुछ बता दिया था। वो ये जान कर आश्चर्यचकित थे कि सुंदर चाचा ने इतना बड़ा धोखा किया था हमारे साथ। तेरवीं के दिन उमाकांत पाटिल हमारे गॉव आए थे। एक दो दिन रुक कर वो वापस मुंबई चले गए थे। साथ ही हम सबको समझाया बुझाया भी था कि अब हम सब एक नये सिरे से जीवन पथ पर आगे बढ़ें। जाते समय वो थोड़ा मायूस लगे मुझे तो मैने और मॉ ने उनसे पूँछ ही लिया कि क्या बात है? हमारे पूछने पर उन्होंने बस इतना ही कहा कि वो अकेले मुंबई में रह नहीं पाएॅगे। उनकी बातों को हम बखूबी समझते थे। इस लिए उन्हें तसल्ली दी कि वो फिक्र न करें। मॉ ने कहा कि विक्रम और गुड़िया की तो पढ़ाई ही चल रही है अभी। इस लिए वो बहुत जल्द मुंबई आ जाएॅगे।

हवेली में तीनों भाइयों का बराबर हिस्सा था तथा हवेली बनाई भी इस तरह गई थी कि सबको बराबर बराबर मिल सके। अतः हवेली में आते ही हम सब अपने अपने हिस्सों में रहने लगे थे। किन्तु इसमें नई बात ये थी कि हम सबका खाना पीना एक ही रसोई में बनने लगा था। साक्षी दीदी व सुंदर चाचा की सेहत में काफी सुधार हो गया था। साक्षी दीदी हमारे हिस्से पर ही एक कमरे में रह रही थीं। बड़ी मॉ(सोनिया) अपने हिस्से पर अकेली रहती थी। वो किसी से कोई बात नहीं करती थी और ना ही किसी के सामने आती थी। सारा दिन और रात वो अपने कमरे में ही रहती। साक्षी दीदी व मानुषी उनसे कोई बात नहीं करती थीं। हलॉकि ऐसा नहीं होना चाहिए था मगर कदाचित दिलो दिमाग़ से वो सब बातें अभी निकली नहीं थी। इस लिए उनसे कोई बात करना ज़रूरी नहीं समझता था। हलॉकि मैं अमर व रौनक उनसे बात करते थे और उनके लिए दोनो टाइम का खाना व चाय नास्ता मैं ही लेकर उनके पास जाता था और तब तक उनके पास रहता जब तक कि वो खा नहीं लेती थी।

ऐसे ही समय गुज़र रहा था। धीरे धीरे सब नार्मल हो रहे थे। किन्तु एक चीज़ ऐसी थी जिसने मुझे दुखी किया हुआ था और वो था गुड़िया(निशा) का मेरे प्रति बर्ताव। इतना कुछ होने के बाद और इतने दिन गुज़र जाने के बाद मैने ये देखा था कि उसने मुझसे कोई बात नहीं की थी और ना ही मेरे सामने आने की कोई ख़ता की थी। मैं समझ नहीं पा रहा था कि अपने दिल की इस धड़कन को कैसे मनाऊँ? मेरे मन में कई बार ये विचार आया कि मैं उसके पास जाऊँ और उससे बातें करू। उससे पूछूँ कि ऐसा क्या हो गया है कि उसने मुझसे बात करने की तो बात दूर बल्कि मेरे सामने आना भी बंद कर रखा है? मगर मैं चाह कर भी ऐसा कर नहीं पा रहा था क्योंकि गुड़िया के पास हर समय आशा दीदी बनी रहती थी। अपनी इस बेबसी को मैं

किसी के सामने ज़ाहिर भी नहीं कर सकता था।

ऐसे ही कुछ दिन और गुज़र गए। मानुषी तो अब लगभग पूरी तरह ठीक ही हो गई थी। उसकी पीठ का ज़ख्म भी अब ठीक हो चला था। मैं मानुषी को अक्सर छेंड़ता रहता था, जिसके जवाब में वो बस मुस्कुरा कर रह जाती थी। मैं उसकी इस प्रतिक्रया से हैरान भी होता और मायूस भी। हैरान इस लिए क्योंकि वो मेरे छेंड़ने पर जवाब में खुद भी मुझे छेंड़ने का कोई उपक्रम नहीं करती थी बल्कि सिर्फ मुस्कुरा कर रह जाती थी। जबकि मायूस इस लिए क्योंकि मैं उससे यही उम्मींद करता था कि वो भी मुझें छेंड़े अथवा मुझसे लड़े झगड़े। मगर जब वो ऐसा न करती तो मैं बस मायूस ही हो जाता था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मानुषी ऐसा क्यों कर रही थी। मैं महसूस कर रहा था कि मानुषी कुछ दिनों से बड़ी अजीब अजीब सी बातें करती थी। उसकी बातों में सबसे ज्यादा इसी बात पर ज़ोर होता था कि मैं साक्षी दीदी का हमेशा ख़याल रखूँ और उन्हें कभी दुखी न होने दूँ।

एक दिन सुबह के लगभग आठ बजे श्रुति दीदी व मानुषी अपने अपने हाथो में छोटा सा बैग लिए तथा तैयार होकर हम सबके बीच आईं और माँ(रेणुका) से कहा कि वो मुंबई जा रही हैं। कारण ये था कि उनके कॉलेज की पढ़ाई का नुकसान हो रहा था। बात पढ़ाई की थी इस लिए किसी ने उन दोनो को जाने से मना नहीं किया। जाते वक्त मानुषी मेरे गले लग मुझसे मिली और एक पुनः उसने साक्षी दीदी का तथा सबका ख़याल रखने का कहा और फिर मेरी तरफ अजीब भाव से देखने के बाद वह पलट कर श्रुति दीदी के साथ हवेली से बाहर निकल गई।

मानुषी के जाने से मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा कुछ छूटा जा रहा है। मानुषी की ऑखों में ऑसू के क़तरे थे। जिन्हें उसने बड़ी सफाई से पोंछ लिया था। दूसरे दिन रुक्मिणी चाची ने हम सबसे अपने घर जाने को कहा। माँ ने उनसे कहा भी मगर वो नहीं मानी। अतः उन्हें उनके सामान के साथ उनके घर भेज दिया गया। माँ ने उनसे कहा था कि उनका जब भी दिल करे वो यहाँ आती रहें।

हम सब अब फिर से एक साथ हो गए थे। इस बात से गॉव के लोग भी काफी खुश थे। दिन भर किसी न किसी का आना जाना लगा ही रहता था हवेली पर। सुंदर चाचा व मैं उन सबसे मिलते और दुनियॉ जहान की बातें होतीं। बड़ी मॉ का रवैया वही था यानी वो अपने कमरे से बाहर नहीं निकलती थीं। रौनक लोगों के जाने के बाद मुझे लगा कि अब गुड़िया से बात करने का मौका मिलेगा मगर मेरी उम्मीदों पर पानी फिर गया। क्योंकि आशा दीदी के जाने के बाद गुड़िया का सारा समय उनके घर पर ही गुज़रता था और रात में भी वो उनके घर पर ही सो जाती थी। हवेली में अगर वो आती भी तो सृष्टि व साक्षी दीदी के पास ही रहती। कहने का मतलब ये कि वो खुद को अकेली रखती ही नहीं थी। कदाचित उसे अंदेशा था कि मैं उससे मिलने की तथा उससे बात करने की कोशिश करूगा। गुड़िया के इस रवैये से मेरा दिल बहुत दुखी होने लगा था। एक नये संसार का ये रूप देख कर मैं ज़रा भी खुश नहीं था।

मेरा ज्यादातर समय या तो साक्षी दीदी के पास रहने से या फिर अमर के साथ ही गुज़र रहा था। एक दिन सुंदर चाचा ने कहा कि जब तक उनका स्वास्थ सही नहीं हो जाता मैं खेतों की तरफ का हाल चाल देख लिया करू। चाचा की इस बात से मैं और अमर खेतों पर गए और वहॉ पर सब मजदूरों से मिला। खेतों पर काम कर रहे सभी मजदूर मुझे वहॉ पर इस तरह देख कर बेहद खुश हो गए थे। सबकी ऑखों में खुशी के ऑसू थे। सब एक ही बात कह रहे थे कि हम अपने जिन मालिक को(मेरे पिता जी) देवता की तरह मानते थे उनके जाने के बाद हम सब बेहद दुखी थे। सत्यम सिंह ने तो हमेशा हम पर ज़ुल्म ही किया था। किन्तु अब वो फिर से खुश हो गए थे। अपने असल मालिक की औलाद को देख कर वो खुश थे और चाहते थे कि अब वैसा कोई बुरा समय न आए।

एक दिन सुबह जब मैं बड़ी मॉ के लिए चाय नास्ता देने उनके कमरे में गया तो कमरे में बड़ी मॉ कहीं भी नज़र न आईं। उनकी तरफ का सारा हिस्सा छान मारा मैने मगर बड़ी मॉ का कहीं पर भी कोई नामो निशान न मिला। इस बात से मैं भचक्का रह गया। मुझे अच्छी तरह याद था कि जब मैं रात में उनके पास उन्हें खाना खिलाने आया था तब वो अपने कमरे में ही थीं। मैने अपने हाथ से उन्हें खाना खिलाया था। हर रोज़ की तरह ही मेरे द्वारा खाना खिलाते समय उनकी ऑखें छलक पड़तीं थी। मैं उन्हें समझाता और कहता कि जो कुछ हुआ उसे भूल जाइये। मेरे दिल में उनके लिए कोई भी बुरा विचार नहीं है।

मैं कमरे को बड़े ध्यान से देख रहा था, इस उम्मीद में कि शायद कोई ऐसा सुराग़ मिल जाए जिससे मुझे पता सके कि बड़ी मॉ कहॉ गई हो सकती हैं। मगर लाख सिर खपाने के बाद भी मुझे कुछ न मिला। थक हार कर मैं कमरे से ही क्यों बल्कि उनके हिस्से से ही बाहर आ गया। अपनी तरफ डायनिंग हाल में आकर मैने सुंदर चाचा से बड़ी मॉ के बारे में सब कुछ बताया। मेरी बात सुन कर सुंदर चाचा और बाकी सब भी हैरान रह गए। इस सबसे हम सब ये तो समझ ही गए थे कि बड़ी मॉ शायद हवेली छोंड़ कर कहीं चली गई हैं। उनके जाने की वजह का भी हमें पता था। इस लिए हमने फैसला किया कि बड़ी मॉ की खोज की जाए।

नास्ता पानी करने के बाद मैं अमर सुंदर चाचा बड़ी मॉ की खोज में हवेली से निकल पड़े। अपने साथ कुछ आदमियों को लेकर हम निकले। सुंदर चाचा अलग गाड़ी में कुछ आदमियों के साथ अलग दिशा में चले जबकि मैं और अमर दूसरी गाड़ी में कुछ आदमियों के साथ दूसरी दिशा में। हमने आस पास के सभी गॉवों में तथा शहर रामगंज में भी सारा दिन बड़ी मॉ की तलाश में भटकते रहे मगर कहीं भी बड़ी मॉ का पता न चला। रात हो चली थी अतः हम लोग वापस हवेली आ गए। हवेली आ कर हमने सबको बताया कि बड़ी मॉ का कहीं भी पता नहीं चल सका। इस बात से सब बेहद चिंतित व परेशान हो गए।

मानुषी तो मुंबई जा चुकी थी, उसे इस बात का पता ही नहीं था। साक्षी दीदी को मैने बताया तो उन्होंने कोई जवाब न दिया। उनके चेहरे पर कोई भाव न आया था। बस एकटक शून्य में घूरती रह गई थी। उस रात हम सब ना तो ठीक से खा पी सके और ना ही सो सके। दूसरे दिन फिर से बड़ी मॉ की तलाश शुरू हुई मगर कोई फायदा न हुआ। हमने इस बारे में पुलिश कमिश्नर से भी बात की और उनसे कहा कि बड़ी मॉ की तलाश करें।

चौथे दिन सुबह हम सब नास्ता करने बैठे हुए थे। नास्ते के बाद एक ही काम था और वो था बड़ी मॉ की तलाश करना। नास्ता करते समय ही बाहर मुख्य द्वार को किसी ने बाहर से खटखटाया। सृष्टि ने जाकर दरवाज़ा खोला तो बाहर एक आदमी खड़ा था। उसकी पोशाक से ही लग रहा था कि वो पोस्टमैन है। दरवाजा खुलते ही उसने सृष्टि के हाथ में एक लिफाफा दिया और फिर चला गया।

सृष्टि उससे लिफाफा लेकर दरवाज़ा बंद किया और वापस डायनिंग हाल में आ गई। हम लोगों के पास आते ही दिव्य ने वो लिफाफा सुंदर चाचा को पकड़ा दिया। सुंदर चाचा ने लिफाफे को उलट कर देखा तो उसमें मेरा नाम लिखा हुआ था। ये देख कर सुंदर चाचा ने लिफाफा मेरी तरफ सरका दिया।

" ये तुम्हारे नाम पर आया है विक्रम। " सुंद र चाचा ने मेरी तरफ देखते हुए कहा __" देखो तो क्या है इसमें ?"

" जी अभी देखता हूँ चाचा जी। " मैने कहने के साथ ही टेबल से लिफाफा उठा लिया और फिर उसे एक तरफ से काट कर खोलने लगा। लिफाफे में एक तरफ मेरा नाम व पता लिखा हुआ था तथा दूसरी तरफ भेजने वाले के नाम में " नारायण त्यागी " तथा उसका पता लिखा हुआ था।

लिफाफे के अंदर तह किया हुआ कोई काग़ज था। मैने उसे निकाला और फिर उस तह किये हुए काग़ज को खोल कर देखा। काग़ज में पूरे पेज पर किसी की हैण्डराइटिंग से लिखा हुआ कोई मजमून था। मजमून का पहला वाक्य पढ़ कर ही मैं चौंका। मैने लिफाफे को उलट कर भेजने वाले का नाम पुनः पढ़ा। मुझे समझ न आया कि ये नारायण त्यागी कौन है और इसने मेरे नाम ऐसा कोई ख़त क्यों लिखा है? जबकि मेरी समझ में इस नाम के किसी भी व्यक्ति से मेरा दूर दूर तक कोई वास्ता ही नहीं था। मुझे हैरान व चौंकते हुए देख सुंदर चाचा ने पूछ ही लिया कि क्या बात है? मैने उन्हें बताया लिफाफा भेजने वाले को तो मैं जानता ही नहीं हूँ फिर

इसने मेरे नाम पर ये लिफाफा क्यों भेजा हो सकता हैं? सुंदर चाचा ने पूछा कि ख़त में क्या लिखा है उसने? उनके पूछने पर मैंने ख़त में लिखे मजमून को सबको सुनाते हुए पढ़ने लगा। खत में लिखा मजमून कुछ इस प्रकार था।

मेरे बेटे विक्रम*!*

सबसे पहले तो यही कहूँगी कि बेटे मुझे माफ़ कर दे।तेरे बड़े पापा के पापों में मैं भी समान भागीदार हु। सत्ता ,संपत्ती और हवस की तृष्णा ने सत्यम को अंधा कर दिया था। उसकी यह तृष्णा कभी बुझने वाली नही थी। इसी तृष्णा ने हमारे सुखी परिवार को जलाकर राख कर दिया। सत्ता और हवस की यह तृष्णा कब मुझपर हावी हुई इसका मुझे भी पता नही चला। हवस की इस तृष्णा में मुझे भी अपनी आगोश में ले लिया था।जो कुछ भी हुआ उसके लिए में शर्मिंदा हु।

बेटे तू वाकई में एक देवता जैसे इंसान का नेकदिल बेटा है और मुझे इस बात की खुशी भी है कि तू अच्छे संस्कारों वाला एक सच्चा इंसान है। ईश्वर करे तू इसी तरह नेकदिल बना रहे और सबके लिए प्यार व सम्मान रखे। जिस वक्त तुम मेरे द्वारा लिखे ख़त के इस मजमून को पढ़ रहे होगे उस वक्त मैं इस हवेली से बहुत दूर जा चुकी होऊँगी। मुझे खोजने की कोशिश मत करना बेटे क्योंकि अब मेरे अंदर इतनी हिम्मत व साहस नहीं रहा कि मैं तुम सबके बीच सामान्य भाव से रह सकूँ। जीवन में जिसके लिए सबके साथ बुरा किया उसने खुद कभी मेरी कद्र नहीं की। मेरी बेटियाँ मुझे देखना भी गवाँरा नहीं करती है ं, और करे भी क्यो ं *?* ख़ै र, मुझे उनसे कोई शिकायत नहीं है बेटे। दिल से बस यही दुवा व कामना है कि वो जीवन में सदा सुखी रहें।

मेरा जीवन पापों से भरा पड़ा है। मैने ऐसे ऐसे कर्म किये हैं जिनके बारे में सोच कर ही अब खुद से घृणा होती है। मुझमें अब इतनी हिम्मत नहीं है कि मैं किसी को अपना मुह भी दिखा सकूँ। आत्मग्लान ी, शर्म व अपमान का बोझ इतना ज्यादा है कि इसके साथ अब एक पल भी जीना मुश्किल लग रहा है। बार बार ज़हन में ये विचार आता है कि खुदखुशी कर लूँ और इस पापी जीवन को खत्म कर दूँ मगर मैं ऐसा भी नहीं करना चाहती। क्योंकि जीवन को खत्म करने से ईश्वर मुझे कभी माफ़ नहीं करेगा। मुझे इस सबका प्रयाश्चित करना होगा बेट े, बग़ैर प्रयाश्चित के भगवान भी मुझे अपने पास फटकने नहीं देगा। इस लिए बहुत सोच समझ कर मैने ये फैसला किया है कि मैं तुम सबसे कहीं दूर चली जाऊँ और अपने पापों का प्रयाश्चित करू। तुम सबके बीच रह कर मैं ठीक से प्रयाश्चित नहीं कर सकती थी।

ज़मीन जायदाद के सारे काग़जात मैने अपनी आलमारी में रख दिये हैं बेटा। वकील को मैने सब कुछ बता भी दिया है और समझा भी दिया है। अब इस सारी ज़मीन जायदाद के सिर्फ दो ही हिस्से होंगे। पहला तुम्हारा और दूसरा सुंदर का। मैने अपने हिस्से का सबकुछ तुम्हारे नाम कर दिया है। कुछ हिस्सा सुंदर के बेटे के नाम भी कर दिया है। इसे लेने से इंकार मत करना बेट े, बस ये समझ लेना कि एक माँ ने अपने बेटे को दिया है। मुझे पता है कि तुम्हारे अंदर मेरे प्रति वैसा ही आदर सम्मान है जैसा कि तुम्हारा अपनी माँ के प्रति है। ख़ै र, इसी आलमारी में वो कागजात भी हैं जो तुम्हारे दादा दादी से संबंधित हैं। उन्हें तुम देख लेना और अपने दादा दादी के बारे में जान लेना।

अंत में बस यही कहूँगी बेटे कि सबका ख़याल रखना। अब तुम ही इस खानदान के असली

कर्ताधर्ता हो। मुझे यकीन है कि तुम अपनी सूझ बूझ व समझदारी से परिवार के हर सदस्य को एक साथ रखोगे और उन्हें सदा खुश रखोगे। अपनी मॉ का विशेष ख़याल रखना बेट े, उस अभागिन ने बहुत दुख सहे हैं। हमारे द्वारा इतना कुछ करने के बाद भी उस देवी ने कभी अपने मन में हमारे प्रति बुरा नहीं सोचा। मैं किसी से अपने किये की माफ़ी नहीं माग सकती क्योंकि मुझे खुद पता है कि मेरा अपराध क्षमा के योग्य नहीं है।

मेरी बेटियों से कहना कि उनकी मॉ ने कभी भी दिल से नहीं चाहा कि उनके साथ कभी ग़लत हो। मैं जहॉ भी रहूँगी मेरे दिल में उनके लिए बेपनाह प्यार व दुवाएॅ ही रहेंगी। मुझे तलाश करने की कोशिश मत करना। अब उस घर में मेरे वापस आने की कोई वजह नहीं है और मैं उस जगह अब आना भी नहीं चाहती। मैंने अपना रास्ता तथा अपना मुकाम चुन लिया है बेटे। इस लिए मुझे मेरे हाल पर छोंड़ दो। यही मेरी तुमसे विनती है। ईश्वर तुम्हें सदा सुखी रखे तथा हर दिन हर पल नई खुशी व नई कामयाबी अता करे।

अच्छा अब अलविदा बेटे।

तुम्हारी बड़ी मा ॅ !

सोनिया।

ख़त के इस मजमून को पढ़ कर हम सबकी सासें मानों थम सी गई थी। ख़त पढ़ते समय ही पता चला कि ये ख़त तो दरअसल बड़ी मॉ का ही था। जिसे उन्होंने फर्ज़ी नाम व पते से भेजा था मुझे। काफी देर तक हम सब किसी गहन सोच में डूबे बैठे रहे।

" बड़ी भाभी के इस ख़त से। " सहसा सुंदर चाचा ने इस गहन सन्नाटे को चीरते हुए कहा ___" ये बात ज़ाहिर होती है कि अब हम चाह कर भी उन्हें तलाश नहीं कर सकते। क्योंकि ये तो उन्हें भी पता ही होगा कि हम उन्हें खोजने की कोशिश करेंगे। इस लिए अब उनकी पूरी कोशिश यही रहेगी कि हम उन्हें किसी भी सूरत में खोज न पाएॅ। कहने का मतलब ये कि संभव है कि उन्होंने खुद को किसी ऐसी जगह छुपा लिया हो जिस जगह पर हम में से कोई पहुँच ही न पाए। "

" सच कहा आपने। " मैने कहा __" ख़त में लिखी उनकी बातें यही दर्शाती हैं। किन्तु सवाल ये है कि अगर उन्होंने ख़त के माध्यम से ऐसा कहा है तो क्या हमें सच में उन्हें नहीं खोजना चाहिए ?"

" हर्गिज़ नहीं। " सुंदर चाचा ने कहा __" कम से कम हम में से कोई भी ऐसा नहीं चाह सकता कि बड़ी भाभी हमसे दूर कहीं अज्ञात जगह पर रहें। बल्कि हम सब यही चाहते हैं कि सब कुछ भुला कर हम सब एक साथ नये सिरे से जीवन की शुरुआत करें। हवेली को छोंड़ कर चले जाना ये उनकी मानसिकता की बात थी। उन्हें लगता है कि उन्होंने हम सबके साथ बहुत बुरा किया है इस लिए अब उनका हमारे साथ रहने का कोई हक़ नहीं है। सच तो ये है कि हवेली छोंड़ कर चले जाने की वजह उनका अपराध बोझ है। इसी अपराध बोझ के चलते उनके मन में ऐसा करने का विचार आया है। "

" बात चाहे जो भी हो। " सहसा इस बीच मॉ ने गंभीर भाव से कहा __" उनका इस तरह हवेली से चले जाना बिलकुल भी अच्छी बात नहीं है। उन्हें तलाश करो और सम्मान पूर्वक उन्हें वापस यहॉ लाओ। हम सब उन्हें वैसा ही आदर सम्मान देंगे जैसा उन्हें मिलना चाहिए। उन्हें वापस यहॉ पर लाना ज़रूरी है वरना कल को यही गॉव वाले हमारे बारे में तरह तरह की बातें बनाना शुरू कर देंगे। वो कहेंगे कि अपना हक़ मिलते ही हमने उन्हें हवेली से वैसे ही बेदखल कर दिया जैसे कभी उन्होंने हमें किया था। आख़िर उनमें और हम में फर्क़ ही क्या रह गया ? इस लिए सारे काम को दरकिनार करके सिर्फ उन्हें खोज कर यहॉ वापस लाने का का ही काम करो। "

" आप फिक्र मत कीजिए भाभी। " सुंदर चाचा ने कहा __" हम एड़ी से चोंटी तक का ज़ोर लगा देंगे बड़ी भाभी की तलाश करने में। हम उन्हें ज़रूर वापस लाएंगे और उनका आदर सम्मान भी करेंगे। "

" ठीक है फिर। " मॉ ने कहने के साथ ही मेरी तरफ देखा __" बेटा तू तब तक यहीं रहेगा जब तक कि तुम्हारी बड़ी मॉ वापस इस हवेली पर नहीं आ जातीं। मैं जानती हूॅ कि तुम दोनो की पढ़ाई का नुकसान होगा किन्तु इसके बावजूद तुझे सुंदर के साथ मिल कर अपनी बड़ी मॉ की तलाश करना है। "

" ठीक है मॉ। " मैने कहा __" जैसा आप कहेंगी वैसा ही होगा। मैं उमाकांत अंकल को फोन करके बता दूॅगा कि मैं और गुड़िया अभी वहॉ नहीं आ सकते। "

" पर मुझे अपनी पढ़ाई का नुकसान नहीं करना है मॉ। " सहसा तभी गुड़िया(निशा) कह उठी __" बड़ी मॉ को तलाश करने का काम मुझे तो करना नहीं है। अतः मेरा यहॉ रुकने का कोई मतलब नहीं है। रौनक भैया को भी कंपनी में काम करने के लिए जाना ही है मुंबई । मैने आशा दीदी से बात की है वो मेरे साथ मुंबई जाने को तैयार हैं। इस लिए मैं कल ही यहॉ से जा रही हूॅ। "

गुड़िया की इस बात से हम सब एकदम से उसकी तरफ हैरानी से देखने लगे थे। किसी और का तो मुझे नहीं पता किन्तु उसकी इस बात से मैं ज़रूर स्तब्ध रह गया था और फिर एकाएक ही मेरे दिल में बड़ा तेज़ दर्द हुआ। अंदर एक हूक सी उठी जिसने पलक झपकते ही मेरी ऑखों में ऑसुओं को तैरा दिया। मैं खुद को और अपने अंदर अचानक ही उत्पन्न हो चुके भीषण जज़्बातों को बड़ी मुश्किल से संभाला। अपने ऑसुओं को ऑखों में ही जज़्ब कर लिया मैने।

" ये तू क्या कह रही है गुड़िया ?" तभी मॉ की कठोर आवाज़ गूॅजी __" तूने मुझे बताए बिना ही ये फैंसला ले लिया कि तुझे मुंबई जाना है। मुझे तुझसे ऐसी उम्मीद नहीं थी। "

" मैं आपको इस बारे में बताने ही वाली थी मॉ। " निशा ने नज़रें चुराते हुए किन्तु मासूम भाव से कहा __" और वैसे भी इसमे इतना सोचने की क्या बात है ? बड़ी मॉ की खोज करने मुझे तो जाना नहीं है , बल्कि ये काम तो चाचा जी लोगों का ही है। दूसरी बात अब मेरे यहॉ रहने का फायदा भी क्या है , बल्कि नुकसान ही है। आज एक महीना होने को है

स्कूल से छुट्टी लिए हुए। इस लिए अब मैं नहीं चाहती कि मेरी पढ़ाई का और भी ज्यादा नुकसान हो। "

" बात तो तुम्हारी सही है गुड़िया। " सुंदर चाचा ने कहने के साथ ही माॅ(रेणुकाा) की तरफ देखाा __" भाभी अब जो होना था वो तो हो ही चुका है। आज महीना होने को आया उस सबको गुज़रे हुए। धीरे धीरे आगे भी सब कुछ ठीक ही हो जाएगा। रही बात बड़ी भाभी को खोजने की तो वो मैं विक्रम और अमर करेंगे ही। गुड़िया के यहाॅ रुकने से उसकी पढ़ाई का नुकसान ही है। इस लिए ये अगर जा रही है तो इसे आप जाने दीजिए। आप तो जानती ही हैं कि मुंबई में भी उमाकांत भाई साहब अकेले ही हैं। वो आप लोगों के न रहने से वहाॅ पर बिलकुल भी अच्छा महसूस नहीं कर रहे होंगे। इस लिए गुड़िया रौनक और आशा जब उनके पास पहुॅच जाएंगे तो उनका भी मन लगेगा वहाॅ। "

सुंदर चाचा की इस बात से माॅ ने तुरंत कुछ नहीं कहा। किन्तु वो अजीब भाव से निशा को देखती ज़रूर रहीं। ऐसी ही कुछ और बातों के बाद यही फैंसला हुआ कि निशा कल रौनक व आशा के साथ मुंबई चली जाएगी। इस बीच सवाल ये भी उठा कि रौनक व आशा के चले जाने से रुक्मिणी यहाॅ पर अकेली कैसे रहेंगी? इस सवाल का हल ये निकाला गया कि रौनक और आशा के जाने के बाद रुक्मिणी यहाॅ हवेली में हमारे साथ ही रहेंगी।

नास्ता पानी करने के बाद मैं, अमर व सुंदर चाचा बड़ी माॅ की तलाश में हवेली से निकल पड़े। सुंदर चाचा का स्वास्थ पहले से बेहतर था। हलाॅकि मैंने उन्हें अभी चलना फिरने से मना किया था किन्तु वो नहीं मान रहे थे। इस लिए हमने भी ज्यादा फिर कुछ नहीं कहा। दूसरे दिन निशा रौनक व आशा के साथ मुंबई के लिए निकल गई। रामगंज रेलवे स्टेशन उनको छोंड़ने के लिए मैं और अमर गए थे। इस बीच मेरा दिलो दिमाग़ बेहद दुखी व उदास था। गुड़िया के बर्ताव ने मुझे इतनी पीड़ा पहुॅचाई थी कि इतनी पीड़ा अब तक किसी भी चीज़ से न हुई थी मुझे। मगर बिना कोई शिकवा किये मैं ख़ामोशी से ये सब सह रहा था। मैं इस बात से चकित था कि मेरी सबसे प्यारी बहन जो मेरी जान थी उसने दो महीने से मेरी तरफ देखा तक नहीं था बात करने की तो बात ही दूर थी।

ट्रेन में तीनो को बैठा कर मैं और अमर वापस सोनपुर लौट आए। मेरा मन बेहद दुखी था। अमर ने मुझसे पूछा भी कि क्या बात है मगर मैने उसे ज्यादा कुछ नहीं बताया बस यही कहा कि बड़ी माॅ और गुड़िया के जाने की वजह से कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। एक हप्ते पहले अमर बड़ा खुश था जब साक्षी दीदी ने उसकी कलाई पर राखी बाॅधी थी। उसके दोनो हाथो में ढेर सारी राखियाॅ बाॅधी थी दीदी ने। जिसे देख कर अमर खुद को रोने से रोंक नहीं पाया था। उसके इस तरह रोने पर माॅ आदि सब लोग पहले तो चौंके फिर जब साक्षी दीदी ने सबको अमर की बहन प्रतीक्षा की कहानी बताई तो सब दुखी हो गए थे। सबने अमर को इस बात के लिए सांत्वना दी। माॅ ने तो ये तक कह दिया कि आज से वो मेरा बड़ा बेटा है और इस घर का सदस्य है। अमर ये सुन कर खुशी से रो पड़ा था। मेरी सभी बहनों ने राखी बाॅधी थी। गुड़िया ने भी मुझे राखी बाॅधा था किन्तु उसका बर्ताव वही था। उसके इस रूखे बर्ताव से सब चकित भी थे। माॅ ने तो पूछ भी लिया था कि ये सब क्या है मगर उसने बड़ी सफाई से बात को टाल

दिया था।

हवेली आ कर मैं अपने कमरे में चला गया था। जबकि अमर सुंदर चाचा के पास ही बैठ गया था। सारा दिन मेरा मन दुखी व उदास रहा। जब किसी तरह भी सुकून न मिला तो उठ कर साक्षी दीदी के पास चला गया। मुझे अपने पास आया देख कर साक्षी दीदी मुस्कुरा उठीं। उनको भी पता चल गया था गुड़िया वापस मुंबई चली गई है। मेरे चेहरे के भाव देख कर ही वो समझ गईं कि मैं गड़िया के जाने की वजह से उदास हूँ।

मुझे यूँ मायूस व उदास देख कर उन्होंने मुस्कुरा कर अपनी बाहें फैला दी। मैं उनकी फैली हुई बाहों के दरमियां हल्के से अपना सिर रख दिया। मेरे सिर रखते ही उन्होंने बड़े स्नेह भाव से मेरे सिर पर हाथ फेरना शुरू कर दिया। अभी मैं साक्षी दीदी की बाहों के बीच छुपका ही था कि तभी गीता बुआ भी आ गईं और बेड पर मेरे पास ही बैठ गईं।

" क्या बात है मेरा बेटा उदास है ?" गीता बुआ ने मेरे सिर के बालों पर उँगलियाँ फेरते हुए कहा ___" पर यूँ उदास रहने से क्या होगा विक्रम ? अगर कोई बात है तो उसे आपस में सलझा लेना होता है। "

" सुलझाने के लिए मौका भी तो देना चाहिए न बुआ। " मैंने दीदी की बाहों से उठते हुए कहा __" खुद ही किसी बात का फैंसला ले लेना कहाँ की समझदारी है ? उसे ज़रा भी एहसास नहीं है उसके इस रवैये से मुझ पर आज दो महीने से क्या गुज़र रही है। "

" ये हाल तो उसका भी होगा विक्रम। " साक्षी दीदी ने कहा __" वो तेरी लाडली है। ज़िद्दी भी है , इस लिए वो चाहती होगी कि पहल तू करे। "

" किस बात की पहल दीदी ?" मैने अजीब भाव से उनकी तरफ देखा।

" मुझे लगता है कि ये बात तू खुद समझता है। " साक्षी दीदी ने एकटक मेरी तरफ देखते हुए कहा __" इस लिए पूछने का तो कोई मतलब ही नहीं है। "

मैं उनकी इस बात से उनकी तरफ ख़ामोशी से देखता रहा। गीता बुआ को समझ न आया कि किस बारे में साक्षी दीदी ने ऐसा कहा था। इधर मैं खुद भी हैरान था कि आख़िर साक्षी दीदी के ये कहने का क्या मतलब था? मैने साक्षी दीदी की तरफ देखा तो उनके होठों पर फीकी सी मुस्कान उभर आई थी। फिर जाने क्या सोच कर उनके मुख से निकलता चला गया।

रात में खाना पीना करके हम सब सो गए। दूसरे दिन नास्ता पानी करने के बाद मैं और अमर सुंदर चाचा के साथ फिर से बड़ी मॉ की खोज में निकल गए। ऐसे ही हर दिन होता रहा। किन्तु कहीं भी बड़ी मॉ के बारे में कोई पता न चल सका। हम सब इस बात से बेहद चिंतित व परेशान थे और सबसे ज्यादा हैरान भी थे कि बड़ी मॉ ने आख़िर ऐसी कौन सी जगह पर खुद को छुपा लिया था जहॉ पर हम पहुॅच नहीं पा रहे थे। उनकी तलाश में ऐसे ही एक महीना गुज़र गया। इस बीच हमने सभी नात रिश्तेदारों को भी बता दिया था उनके बारे में। बड़ी मॉ के पिता जी यानी कीर्तिमान सिंह भी अपनी बेटी के बारे में सब कुछ जान कर बेहद दुखी हुए थे। किन्तु होनी तो हो चुकी थी। वो खुद भी अपनी बेटी के लापता हो जाने पर दुखी थे।

एक दिन सुंदर चाचा के कहने पर मैने साक्षी दीदी की मौजूदगी में बड़ी मॉ के कमरे में रखी आलमारी को खोला और उसमें से सारे काग़जात निकाले। उन काग़जातों में ज़मीन और जायदाद के दो हिस्से थे। तीसरा हिस्सा यानी कि सत्यम सिंह के हिस्से की ज़मीन व जायदाद तथा दौलत में से लगभग पछत्तर पर्शेन्ट हिस्सा मेरे नाम कर दिया गया था जबकि बाकी का पच्चीस पर्शेन्ट सुंदर चाचा के बेटे रणदीप के नाम पर था। उसी आलमारी में कुछ और भी काग़जात थे जो दादा दादी के बारे में थे। उनमें ये जानकारी थी कि दादा दादी को कहॉ पर रखा गया है?

सारे काग़जातों को देख कर मैने साक्षी दीदी से तथा सुंदर चाचा से बात की। मैने उनसे कहा कि मुझे उनके हिस्से का कुछ भी नहीं चाहिए बल्कि उनके हिस्से का सब कुछ साक्षी दीदी व मानुषी के नाम कर दिया जाए। मेरी इस बात से सुंदर चाचा भी सहमत थे। जबकि साक्षी दीदी ने साफ कह दिया कि उन्हें कुछ नहीं चाहिए। मगर मैं ज़मीन जायदाद पर कोई ऐसी बात नहीं बनाना चाहता था जिससे भविष्य में किसी तरह का विवाद होने का चान्स बन जाए।

एक दिन हम सब दादा दादी से मिलने शिमला गए। शिमला में ही किसी प्राइवेट जगह पर उन्हें रखा था बड़े पापा ने। शिमला में हम सब दादा दादी से मिले। वो दोनो अभी भी कोमा में ही थे। उन्हें इस हाल में देख कर हम सब बेहद दुखी हो गए थे। डाक्टर ने बताया कि पिछले महीने उनकी बॉडी पर कुछ मूवमेंट महसूस की गई थी। किन्तु उसके बाद फिर से वैसी ही हालत हो गई थी। डाक्टर ने कहा कि तीन सालों में ये पहली बार था जब पिछले महीने ऐसा महसूस हुआ था। उम्मीद है कि शायद उनके जिस्म में फिर कभी कोई मूवमेन्ट हो।

हमने डाक्टर से दादा दादी को साथ ले जाने के लिए कहा तो डाक्टर ने हमसे कहा कि घर ले जाने का कोई फायदा नहीं है, बल्कि वो अगर यहीं पर रहेंगे तो ज्यादा बेहतर होगा। क्योंकि यहॉ पर उनकी देख भाल के लिए तथा किसी भी तरह की मूवमेन्ट का पता चलते ही डाक्टर उस बात को बेहतर तरीके से संभालेंगे।

डाक्टर की बात सुन कर मॉ ने कहा कि वो मॉ बाबू जी को साथ ही ले जाएॅगी। वो खुद उनकी बेहतर तरीके से देख भाल करेंगी। उन्होंने डाक्टर से ये कहा कि वो किसी क़ाबिल नर्स को हमारे साथ ही रहने के लिए भेज दें। काफी समझाने बुझाने और बहस के बाद यही

फैंसला हुआ कि हम दादा दादी को अपने साथ ही ले जाएॅगे। डाक्टर अब क्या कर सकता था? इस लिए उसने हमारे साथ एक क़ाबिल नर्स को भेज दिया। शाम होने से पहले ही हम दादा दादी को लेकर सोनपुर आ गए थे।

बड़ी मॉ की तलाश ज़ारी थी। किन्तु अब इस तलाश में फर्क़ ये था कि हमने अपने आदमियों को चारो तरफ उनकी तलाश में लगा दिया था। पुलिस खुद भी उनकी तलाश में लगी हुई थी। सुंदर चाचा के कहने पर मैं भी अब अपनी पढ़ाई को आगे ज़ारी रखने के लिए मुंबई जाने को तैयार हो गया था। मैं तो अपनी तरफ से यही कोशिश कर रहा था कि ये जो एक नया संसार बनाया था उसमे हर कोई सुखी रहे, मगर आने वाला समय इस नये संसार के लिए क्या क्या नई सौगात लाएगा इसके बारे में ऊपर बैठे ईश्वर के सिवा किसी को कुछ पता नहीं था।

●◆■★ समाप्त ★■◆●